

| يين | ا برست معنا | 1 | معارت القرآن جلد ششم |
|------|---|------|---|
| | له يم ران حب لرسشم | اروم | فهرست متصامين مع |
| اسنح | معتاين | صفي | معتابین |
| ۵۳ | آیات ۷۷ تا ۸۲ معرخلاصتر تفسیر | | سُورة مَريَّم بِنِ |
| ۵۵ | آیات ۸۳ ما۸۸ معرضلاصته تفسیر | 18 | سورة مريم كايات اتا ٤ |
| 04 | 9267256 | 10 | آيات مرتاه ومع خلاصه تغيير |
| ۵۸ | آييت ٨٩ محه خلاصته تفسير | 14. | دعارس ابن حاجمتنري كالطبارستحب ہے |
| 71 | 14 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 7 | 10 | انبيار كالم من درات بهين جلت |
| ,,, | م دره د ب | 19 | 195775 |
| 75 | آیات اتا ۸ معه خلاصته تفسیر | ۲- | آیات ۲۰ تا ۲۱ معه خلاصر نفسیر |
| 44 | الله كي تقسيرس علمائے تقسير سے اقوال | 27. | آیات ۲۲ تا ۲۲ معدخلاصة تفسیر تمنائے موت کا حکم |
| 44 | 1859=17 | 77 | 2 |
| 46 | آبات ۱۹ و ۱۹ معر خلاصة تقسير وُدِي نُمُوسَىٰ لِنَّ أَنَارُ مُلِكَ فَاخْلَعْ لَعُلَيْكَ | TP | سكوت كارد زه متركعب الاميني منسوخ بوكميا بغررت بهاعورت بجربيدا بوجانا خلاب عقان بي |
| 19 | حفرت موسى عليار الم في حق تعالى كاكلام لفظى | 10 | اليات ٢٤ تا٣٠ مع خلاصة تقسير |
| " | بلاداسطم شناء | 19 | آيات ١٠٣٦ معد خلاصة تفسير |
| 4- | مقام ادبين وتے اتارديناادب كامقتصاب | ۳۱ | priri-it |
| " | إِنْكَ بِالْوَادِ الْمُقَدِّرِسُ طُوئِي | 27 | اآیات ۱۲ ۲۷ تا ۵۰ معه خلاصته تقسیر |
| 41 | مشران سننے کے آواب | MA | صديق كي تعريف |
| 44 | آیات > اتام | " | ابنے برطوں كونصيحت كرنے كاطراقية اوراسكے آواب |
| ۲۳ | خلاصة تفسيروم معارت ومساتل | 77 | كياسكافرك لية ستغفاركرنا مترعًا ممنوع هيه ؟ |
| 40 | آيات ١٦٦٥ ٣ معة خلاطة تعنير | 42 | آیا ت امتاءه |
| 47 | حصرت موسى عليالسلام كى وعسائين | ٣٨ | [آيت ٥٨ معه خلاصة تفسير |
| 49 | صالح رفقار وكروعبادت مين بحى مرد كارموتي بي | 11 | الفات وعدي الميت ادراس كادرج |
| 4 | アルしてくこして | " | مصلح کافرض ہے کہ اصلاح کاکام لینے اہل و |
| ۸. | آیات ۱۳۹ تا ۲۴ محد خلاطنه تفسیر | | اعیال سے متروع کرہے۔ |
| 1 | کیادی کسی ترنبی درسول کی طرف تھی آ سے ہے؟ | Pr. | رسول اورنبی کی تعرفیت میں فرق اور باہمی نسبت آیات و ۵ تا ۲۳ |
| ٨٣ | The state of the large section | 2/2/ | الماز بعدة ما بلاجها عت برطهنا |
| 26 | | W. | آیات ۱۲۳ تا ۲۷ محرخلاصد تفسیر |
| 1-1- | نذكورة الصدر قصة موسى عليه السلام سے حاصل شدہ متابح وعبرا ورقوا تدمیم تر | " | شان نزول |
| 2 | 1/2 - 1 1 1 - 1 - 0 1 (1 2) | 1 89 | معارف ومسائل |
| 1-1 | ير روي معدد يردو مير فررب ي ه حرت انگيز درة عمل | | آیات ۳۷ تا ۲۷ محه خلاصة تفسیر |
| | | | - GEORGE |

| | | | 1 | |
|-------|-----|---|---------|--|
| 20 | | ا برست معناین | ~ \ | معارف القرآن جلدست ستم |
| W. | 119 | عاد و کی حقیقت اوراس کے اقسام درشرعی حکام | 1.0 | م سارعلدا لسلام کی دالده مرمعی ایندانعام اور |
| | " | آیت. ۲ ما ۸ ۲ | | ا ذعو بي ترسر كالمك ا در اشقام |
| Ĭ | 14- | آیت ۲۹ تاه ی | " | اصنعتكار و ب اورتاح وب وغرة كيلتي أيك بشار |
|) | 11 | آيت ۷۹ معه خلاصة تفسير | 1-0 | المندتعالي كے خاص بتروں كوايك محبوسيت كى |
| 1 | ۲۳ | موسى علياب لام كاجاد وكرون كوسيني رانه خطاب | | شان عطام وتى كرمرد يحفة والاآن محبت كرمام - |
| 1 | 10 | فرعونى جادو كرون كامسلمان بوكر سجده مين برخبانا | " | فرعونى كافرشخص كالمسات وموسى عليال الام كے |
| 1 | 24 | ابلية فنسرعون آسيه كالنجام خير | | المقرموكياس كوخطاركس سارير قرار دياكيا؟ |
| 1 | " | فرعوني جاد وكرول مين عجيب انقلاب | 1-4 | صعيفول كى احدادا ورخدمت خلق دين و دنيك |
| 1 | 16 | آيت پريٽا ام | | لتے افع اورمفیدے۔ |
| 1 | 14 | آیت ۸۲ مع خلاصته تفسیر | * | وديقيرون من اجراور آجر كامعامله اوراسكي |
| 1 | 19 | مصري ككاني وقت بني المرائيل كي بعض حالات | | حكتين اور فوا ترعجبيب |
| | | اوران کی اورنشکر فرعون کی تعداد، | 1-6 | معین اور اور ایر جایید - کسی کو کوئی عمده اور ملازمت سیرد کرنیکابهترین سور |
| 1 | ٣1 | آيت ٣٠ ١٥٠ م | " | اساحرول اورسعمرول عمعالملات مكالما وق |
| 11 | 7 | حصرت موسى المستح عجلت محفظ السوال ادراس كى حكمت | 1.4 | فرعوني جادو كرون تح جادوكي حقيقت |
| 6 | " | سامری کون تھا ؟ | " | قبائل تقسيمعاشرتي معاملات كي حرتك كوني |
| | 77 | کفار کامال کس صورت مین سلمان کے لئے حلال ہے؟ بدت مشیدہ مہم | | المرموم عمل تبيين |
| | 9 | ایت ۱۹۰۰ ما ۱۹۰۰ م | 1-9 | المجاعتي انتظام كيلية خليفه اورنائب بنانا |
| | 77 | د و سغیرون میں اختلاب را سے ت | | المسلانوں کی جماعت میں تفرقہ سے بچنے کے گئے قام سے دیں میں اس است |
| | 7 | آیت ۵۶ تا ۸۹ | " | الري براي كويردات كياجات استاب- |
| 11 | 17 | سامری ی سزایی ایک لطیفه آیرین موترین | " | سنخبرانه دعوت کا ایک ایم اصول |
| 11/10 | Y2 | آيت ووتا ۱۰۸ آست و اتا ۱۸۷۷ مد خاله مرتف | 11. | 51 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 |
| ll'' | | آبیت ۱۰۹ تا ۱۱۴ مع خلاصهٔ تفسیر ربط آبات | 111 | اخلاصة تفسيرومعارف ومسائل |
| 1 | 01 | ایت ۱۳۰ تا ۱۳۰ | 11 | حصرت موسی عروض کیوں جوا ؟ |
| | 37 | آيت ١٢١ ١٢١ مع خلاصة تضير | 111 | موسیٰ علیہ سلام نے فرعون کو دعوتِ ایمان کے ساتھ اپنی قوم کومعاشی مصیبت سے بھی محیوانے |
| И., | P | الطآيات | | کھ بی و موت دی |
| 11 | 14 | بیوی کا نفقہ صرور بیسومرے ذہر ہے | " | الشرتعالى في مرجيز كوبيدا فرمايا اور بحر برايك |
| | , | الفقة واجبه صرف جارجيزسين | | کے دجود کے مناسب اس کوہدا سے فرمانی ۔ |
| 1 | 10 | ا عبيا رعليهم السلام سے بانے میں ایک اہم ہدایت | 110 | آیت اه تاه ه |
| 10 | 9 | دنیا مین ندگی اور تنگ | 110 | آبيت ۲۵ تا ۵۹ معه خلامته تفسير |
| - | 1- | آيت ۱۳۲ تا ۱۳۲ | 114 | برانسان مخرس نطفه مےساتھ اس جگه کی مطی |
| 17 | () | آبيت ١٣٣ تا ١٣٥ مع خلاصة تفسير | and the | ا بمی شامل بوتی ہے جہاں وہ دفن ہوگا۔ |
| 17 | ۳ | وشمنو كايذارساتيون علاج صبراور ذكراشرب | IIA | مادور والمعابلية دن اور قت كالعين كي حكت |
| BS | 1 | .57 | | |

| / | | Tier Tier Tier Tier Tier Tier Tier Tier | 1 | معار ن الله آن حل شيم |
|-----|------|--|------|--|
| 15 | 0 | 99 | 7 | 198 |
| L'A | ۲٠۱ | حدیث مذکورس ایک اسم بدایت اورا خلاص عمل | 170 | ودولت الشرك نز دمك مقبوليت كى علامت تهيس |
| 0.0 | | كى باركى كابسان_ | 170 | این ابل دعیال اور متعلقین کونمازی یابندی |
| Ĭ | " | حصرت إيرابيم عليا بسلام يزما يغرو دير كلزاين جاني حقيقت | | ای ماکیداوراس کی حکمت |
| | ۲۰۳ | آیت ۷۷ و ۵۵ مح خلاصة تفسیر تا | " | جوآدمی شاز اورانشر کی عبادت میں لگ جاتا ہی |
| I | r-10 | آيت ٢١ و١٤ مع خلاصة تفسير معارف مسا | | الشرتعالى اس كے لئے رزى كامعامل آسان بناتيجي |
| I | 4.0 | آيت ٨٤ تا ٨٨ مع خلاصة تفنيز | 144 | ختم سورت |
| ı | 4.4 | وه مقدمه جوحفرت دا ودادر مجرحفرت سليان | - | 14 1- :15-0 |
| | | عليهما السلام كى خدمت ميس مين بهوا، | | سوره۱سپیوپ |
| I | 4.4 | كياكسي قاصى كالبصله برلاجا سحتاهي | 144 | آیت اتا م |
| | r-9 | د وجهدا الرمتفاد فيصل رس توحق كيا موكا ؟ | 171 | آيت ٨ تا٠ (مع خلاصة تصنير |
| 1 | 11- | جانور کے جانی یا مالی نقصان پہنچانے کی صورت میں | 179 | سورة انبيار كي فضيلت |
| | | فيصله كيا بمونا جاسة ؟ | 121 | قرآن کریم عولوں کے لئے عزت وفیز ہے مار |
| ı | 711 | بہار دن اور برندوں کی سبیج تاریخہ میں جمہ کا میں میں ا | | آيت التاها مع خلاصة تفسير معاروميا |
| I | 11 | تنلادتِ قرآن بین حَسنِ صنوت مطلوب ہے نہ مین زر کر جانبہ مدحود میں مطالب ک | 124 | ایت ۱۱ تا ۲۴ |
| 9 | | زرہ بنانے کی صنعت حصرت داقد علیہ السلام کو منجانب انڈعطاک گئی۔ | 128 | آبیت ۲۹ تا ۲۹ مع خلاصته تفسیر اگام پیروستا پریون |
| 13 | " | | | آیت ۳۰ تا ۳۳ آیات سوسرمع شاه مرتبه و مداره وسمه رتا ر |
| 4 | " | جس صنعت سے مخلوقِ خدا کو فائدہ پہنچے وہ مطلوب المد فعار اندام مر | 14. | آبت ۳۳ مع خلاصة تفسير معارف مسائل المريد به سايساره |
| | 117 | اور فعل انبیاری ہے۔ حضرت سلیمان علیالسلام کے لئے ہمواکی تسخیر | 7 4 | آ آیت ۱۳۳۷ تا ۲۷ مع خلاصته تفسیر آبیت ۱۲۷ تا ۲۷ مع خلاصته تفسیر |
| I | 111 | تختب سليمان كي كيفيت | 100 | الموت كيا جيز ہے ؟ |
| ı | ۳۱۳ | حصرت سلیمان کے لئے جِنّات وشیاطین کی تسخیر | IAA | دنیاکی برنکلیف وراحت آزمائش ہے |
| | Y100 | آیت ۸۳ و ۸۴ مع خلاصهٔ تفسیر | 109 | حبد بازی مدموم ہے |
| | 710 | قصة ايوب عليه السلام | " | قيامت بين اعمال كاوزن اوراس كي ميزان |
| | 414 | حصرت الوب عليالسلام ي دعا رصبر كي خلاف بي | 19. | درز ن اعمال کی صورت |
| ľ | 414 | آيت ۵ ۸ و ۸۹ ، مع خلاصتر تفسير | " | اعمال كامحاسبه |
| ı | " | حضزت دوالكفل نبى تصياولى ان كاعجيب قيمتم | 191 | آیت ۱۳۸ تا ۵۰ مع خلاصته تفسیر |
| | 77. | آیت ، ۸ و ۸ ۸ مع خلاصهٔ تفسیر | 197 | آیت اه تاه ۲ |
| | 471 | معادب ومسائل | 192 | آيت ٢٦ تا ٢٧ مع خلاصة تفسير |
| | " | قصته يونس عليه التسلام | 196 | حفزت ابراميم عليالسلام كاقول جموط نهين |
| | rrr | دعائ يوس عليالسلام برمقصركيلية مقبول دعاري | | بلكرايك كنايه لخفا |
| Į | " | آبیت ۸۹ و ۹۰ مع خلاطئه تفنیر | 19^ | ا حد مین میں حصرت ابراہیم علیہ کسلام کی طرف انتاجہ علی است |
| 0 | 110 | آیت او تا ۱۹ مع طاصهٔ لفسیر | 1397 | ا تین جھوٹ منسوب کرنے کی حقیقت اس میں شرک خرابات استام المات |
| 11 | 441 | ایت ۱۰ ۱۰ ۱۳ م ۱۰ ۱۰ | 7 | اس <i>مدسیت کو غلط قرار دینا ج</i> مالت ہے۔ کارست |
| Vě | 9 | 20,0) | | C(1) 20 |

| 6 | ייט | ا برت مقا | 7 | معارف الفرز النجلد مستستم | |
|-----|------------|--|--------|--|--|
| 2 | 444 | آبت ١٣٣ تا ٢٥ قطامة تفسير | 442 | الم آيت ١٠٥ مع خلامة تعنيه رلط آيات | |
| 100 | +44 | اصل مقصوعادت كي صورتها بي بلكر دل كا اخلاص م | rrr | في آيت ١٠٦٦ المع خلاصة تعنسه | |
| Ĩ | 744 | آیت ۸سوتا . نم آست ۲۷ مع خلاصهٔ نفسه | 777 | وَمَا آرُ سُلُنَاكَ إِلَّا رَحْمَةٌ لِلْنُعَالِمِينَ | |
| | " | كفارك سائفهاره بيسلاحكم | 7 7 7 | اختم سورت | |
| 1 | 44. | جهادد قدال کی ایک محکمت | | 11 = == 0. | |
| | 741 | خلفا کراشرین کے حق میں قرآن کی میشین کوئی ا در | | سوره حي ي | |
| | | اس کانمور | 400 | آیت ا و۲ مع خلاصة تفنیر | |
| | 444 | أيت ١١٦٦ مع علاصة نفسير | 777 | حصوصیات سورت | |
| I | 744 | عرف بصیرت کیلئے زمین کی سیاحت مطلوبی ہے ۔ | " | زلزلهٔ قیامت کب ہوگا ؟ | |
| 1 | YKM. | آخرت کادن ایک بزارسال کابونے کا مطلب ایک سنیہ کا جواب | 772 | آبیت ۳۳ تا | |
| - | 440 | آیت ۲۵۲ می در الم | 14. | المعارف ومسأئل ابط المدستخلية إذ الاس ساسيا | |
| | PLA | ایت ۵۸ ما ۲۰ سط خلاصته تفسیر | " | بطن مادر میں تخلیقِ انسانی کے درجات ادر مختلف احوال | |
| | 449 | آبت ساد آ او ۱۱ | 441 | انسان کی ابتدائی تخلیق کے بعد عرکے مختلف | |
| | ra. | ושד גד נאד | 1 1. 2 | مراج ادران کے احوال | |
| 5 | TAT | آيت ١٩ و٠٤ مع خلاصة تفسير | 777 | | |
| 1 | rar | ایک سنبه کاجواب | 4 hh | آيت ١٦ تا ١٦ مع خلاطته تفنير وي تار | |
| 1 | " | آیت ۱۱ و۲۲ و۳۷ و ۱۲۷ | rro | 9 A. T. A | |
| 0 | FAY | مشرک کی ایک مثال | 774 | - C | |
| | 4 | آيت ٥٥ تا ٨٥ يمع خلاصة تفسير | TPA | آبيت ١٩ تا ٢٢ مع خلاصة تفسير | |
| | 400 | سورة حج كاسجدة تلاوت | 119 | | |
| ı | 119 | المتب محمرُ ميانشرتعالي كمنتخب أمتت ہے۔ | 10. | ريشم كے كيرائے فردوں كے لئے حرام ہيں۔ | |
| ł | 191 | محتم سوره مج | 701 | آيت ٢٥مع خلاعه تفسير | |
| 1 | | سُورَةُ مَوْمِنُونَ بِي | 700 | حرم مكريس سياسلما نول كے مسا دى حق كا مطلب | |
| l | Univ | | rap | آیت ۲۹ تا ۲۹ مع خلاصته تفسیر بناربیت اشرکی ابت رار | |
| ł | 197 | ایت اتا ۱۱ قضائل پنجوره به اسب تومزین | 100 | | |
| ı | 798 | فضائل وخصوصیات سورہ مؤمنون فلاح کیا چیزہی اورکہاں اورکیسے ملتی ہے ؟ | 100 | also in the second of the second of | |
| ١ | 798 | مران میں بیرا وراجان ورایط سی ہے ؟ مؤمن کا مل کے شات اوصات | 1 | اکامستل | |
| 1 | 790 797 | ناز مین خشوع کی صرورت کا درجه | 109 | افعال ج مين ترسيب كادرج | |
| | "// | دومرادصف لغوسے برمبر كرنا | " | تدركامستله | |
| 6 | " | عمرادصف زكاة | 14. | اكيدسوال اورجواب | |
| 1 | 492 | جريقا دصف مترم كابيول كى حفاظت | 111 | آیت ۳۰ تا ۱۳۳ مع خلاصة تفسیر | |
| U | 9 | 200 | - | | |

| | ا برست ميناين | | معارن الفرآن جلد شم |
|------|---|-----|--|
| WAY. | سورة نور كى لعين خصرصيات | Y91 | ما تخوال وصف اما نت كاحق اد اكرنا الما تخوال وصف اما نت كاحق اد اكرنا |
| 1 12 | زناح وعظماد رست حرائم كامحمد عين الوليخ | 4 | ا جهشا د صف عهد او راکه ما |
| Tri | اس کارمہ اسم رسخت رکھی گئے تہ م | 4 | ا به الوال وصف نماز برمجا فظت اسالوال وصف نماز برمجا فظت |
| mmm | غیرشادی شدہ کے لئے کوڈوں کی منزا اور | r99 | آبیت ۱۲ تا ۱۷ |
| 11 | شادی شره کے لئے سنگساری | ۳ | آيت ۱۸ تا ۲۲ مع خلاصهٔ تفسير |
| FVA | ایک عزوری تندیم | 4-4 | تخلیق انسانی سے شات مدارج |
| " | مزائے زنامیں تدیج کے تین درجے | " | ائك تجيب لطيفه ازاس عياس |
| " | اسلامی قانون میں عبر م کی میز اجتنی سخت ہے | ۳.۳ | تخلین انسان کا آخری مقام |
| | اس کے شوت کے لئے متراکط بھی سخت ہیں د | " | روب حقيقي اورروب حيواني |
| 449 | كيى مردياجا نورك سائحة فعل قبيح كاحسكم | r.a | انسأن كيلت آب رساً في كاعجيت وتي نظام |
| " | اسلام سي جرائم كي ابتدار برده يوسى اور شبوت | W-4 | آيت ٢٣ و ٢٣ |
| | مے بعد مزای سختی کے ساتھ شنفیڈ | 7.0 | آيت ٢٥ تا٠٣ مع خلاصة تفسير |
| 20. | آيت ٣ مع خلامة تفسيرومعارت ومسائل | ٣1. | آست ۱۳ تا ۲۸ |
| " | زنا کے متعلق دو مراحکم | 711 | آیت و ۳ تا ۲۱ مع خلاصتر نفسیر |
| TOT | آييت ٧ وه مع خلاصة تفسير | 717 | וציד את יוסת |
| " | زنائي متعلق تيسراهم متعلق تهميت زنا أور | ۳۱۳ | ا آيت ٢٦ ما ٠٥ مع خلاصة تفسير |
| | اس کی حدیمشرعی | ۳۱۳ | آیت اه تا ۲۵ |
| TOP | ایک شبه اورجواب | 710 | خلاصة تضيرومعارف ومسائل ب س |
| " | محصنت كون بن ؟ | 712 | اليت ٥٤ ما ١٢ مع خلاصر تفسير معارومسا |
| 200 | اكر مقذوت مطالبه مذكري توحد سأتموج اسكى | ٣19 | آيت ١٦٣ تا ١١ مح خلاصة تفسير |
| 204 | آبیت ۱-۱ مع خلاصه تفسیر | ۳۲۱ | غره سے کیا مرادید؟ |
| 406 | زناك متعلقات مين جوتها يحكم، لعان | ٣٢٣ | عشار کے بعد قصتہ کوئی کی ممانعت اورخاص ہرایات |
| 441 | لعان کے بعدبیوی سوہر برحرام ہوجاتی ہے | ٣٢٣ | ابل مدبر قعط كاعذاب اور رسول الترصلي الشرعليه |
| 277 | اليت ١١ ما ٢ ٢ | | وسلم کی دُعار سے اس کا دفع ہونا |
| LAL | تقيم افک وبهتان | 240 | آيت ٨٤ تا ٩٢ مع خلاصة تضيير |
| 44. | حفترت صدیقه عاکشهٔ ره کے خصوصی فصنائل و | ٣٢٢ | آبیت ۱۰۰۳ مع خلاصهٔ تفنیر |
| | كمالات اورقصة افك كابقيه | ١٣٣ | آیت ۱۰۱ تا ۱۱۵ مع خلامئة تضیر |
| MYL | حصرت صدر لفته رم کی چند خصوصیات | 220 | محشر می تومنین ادر کفار کے حالات میں فرق منابع اعلام کی منابع |
| 224 | برسلمان مزدعورت كے ساتھ اجھا گمان كھنادہ : | ۲۳۶ | وزن اعمال کی کیفیت آسیته میری در مین در تاریخ |
| 741 | vi view"This is the is self- | 777 | W Par |
| W29 | ایک مشبہ اور اس کاجواب اندا زاحہ ماتاز زواجہ اس میں مرح کے | 229 | الم مورت |
| ٣٨٠ | انسداد نواحش کاقرآنی نظام اورایک ایم تدبیرجنگی انطان ایم ترمیا تدریجی ناحیث می شد. | | المترابية |
| Š | نظراندازكري كالتيجراجكل فواجش ككرشب | mp. | اليت أوم |

| | ا نسان | 1 | المرادة المرادة المرادة |
|--------|--|------|---|
| 30 | 99) | 1 | و الماري |
| mr9 | اذن سران تربع ميس لفظ إذن كي خاص حكمت | WA1 | ا صحابة كرام رمز كواعل اخلاق كي تعليم الكرياس تنزيد |
| 10 | المؤمنين كي خاص صفات | MAM | التية المراتا ور |
| Pr. | صحابة كرام المرتجارت بليته تص | " | استينوان اوراداب ملاقات |
| 241 | ایات اس تا می مع خلاصة تفسیر | MAY | مران آداب معاسرت كاليك الهم باب |
| W Lh | آیات ۲۲ تا ۵ مع خلاصة تفسیر | | ملاقات سے پہلے اجازت لیٹا |
| proc | فوز وفلاج كے لئے جارمترطين | " | السنيذان كي هميس اورمصالح مهمة |
| * | ايك دا قعم عجيب | FAA | استيران کا مستون طريقه |
| PTA | آيت ۵۵ تا ۵۵ مع خلاصة تفسير | man | استيذان سيمتعلق جندد وسيحرمساكل |
| pr9 | شان نزول | " | الشيليقون سيمتعلق تعصن مسآئل |
| 441 | آیت مذکورہ سے خلفائے راسٹرس کی خلافت اور | 490 | آیت ۳۰ و ۳۱ مع خلاصتر تفسیر |
| | مقبوليت عندا شركا شوت | m91 | انساد فواجن اورها تعصمت ايكام با، يرة نسال |
| MAL | آبیت ۸ ۵ تا ۲۰ مع خلاصهٔ تفسیر | ۴ | بے رئین لوکوں کا حکم |
| lelala | اقارب محام كميلة خاص اوقات مين ستينزان كالسكم | " | غرم مرد كى طرف د شكھنے كا يحكم |
| rro | استينزان كے متعلق كي مسائل | p.1 | احکام پردہ سے ستنار |
| MAR | قرآن نے پاکیزہ معانزت کی تعلیم دی ہے | pr1 | زيوركي آوازغر محرمون كوساناجا تزنيس |
| 1 / | عورتوں نے احکام بردہ کی تاکیرادراس میں سے | 11 |) عورت كي آواز كالمستلم |
| Ø | ابكساور ستنناء | " | خوشبولگا كر بابر بكلنا |
| 1 rm | آنيت الامع خلاحة تفسيرومعارف مسائل | " | مرین برقع بین کرنکانا بھی ناجا ترب |
| mrg | كرون واخل بونيك بعد بعض احكام اورآداب معاشرت | 4.4 | آیت ۳۲ مع خلاصهٔ تغییر بعض احکام نکاح |
| ro. | آيت كے شان نزول بي جندوا قعات | p.9 | انكاح واجتب اسنت ما محلف مالا من ختلف مم سر |
| ral | اسى سلسلە تىرىمىياتىل | ١١٦ | 15) |
| ror | آيت ٢٢ تا ١٣ مع خلاصة تفسير | MID | 1 2 2 10 6-01 112 41 01 12 1 |
| ror | بنى كريم صلى الشعليه وللم كى محبلس كے اور عسام | P14 | آيت ٣٠٤٣ مع خلاصة تقسير |
| | معارش كي معض آداب واحكام | MTT | نوركى تعريف |
| " | ایک سوال وجواب | - 11 | نودِمَوْمن ، مشل نوره كمشكوة |
| " | امرحابع سے کیام ادہے ہ | MAL | نورنبي كريم صلى الشيطير وسلم |
| " | يظم المخضور كالحكس كيسا تقرفاص مي ياعام ؟ | " | ر دغن زیتون کی برکا ت |
| 100 | د وسراحكم لَا سَجْعُلُوا دُعًا رًا لرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ | rro | best was deline |
| " | خيم سوريت | PTY | رقع مساحد سيحمعني |
| | سُورَةً فرقانُ كِ | MYC | العص فصناتل مساجد |
| ray | آبیت ا تا ۳ مع خلاصهٔ تفسیر | PYA | مساجد کے پندرہ آداب |
| Broz | خفرُصيات سوريت | 449 | اجومكانات ذكرانش تعليم قرآن اورتعليم دمن |
| 1 | مخلوقاين برايك جزعفا صاصحمتين | - | الملئة مخصوص بو وه مي مساجد كے حكم مين بن- |
| | 5)6) | | 000 |

| 1=5 | | | | |
|------|-----|--|-------|---|
| 6 | مين | ع ﴿ فِرْسَتُ مِينَا | | معارف ألق آن جلر ششم |
| 5 | ٥٠٣ | چوکتی صفت، دا آزین سینتون لربهم | MON | آیت س یا و مع خلاصته تغییر |
| 200 | 0.0 | يا يخوس صفت، والدّن لقولون رساا صرف عنّا | N4. | مشركين كے كھاعة اصات اوران كاجواب |
| Ĭ | " | مجيم صفت، والرّن ازاا نفقوا الآية | 411 | ا آیت ۱۰تا۲۰ مع خلاصهٔ تغییر |
| I | 0.0 | ساتوس صفت، والدّبن لا يدعون مع الشرافياً آخر | 444 | المخلوق من معاشى مساداكانه بونا محمت يرميني بيء |
| I | " | المحقوب اورنوس صفت، لايقتلون لنفس | " | المات ١٦ تا ٢٢ مع خلاصة تنفسير |
| I | 0.4 | دسويس صفت، والذين لاستهدا الزور | 444 | اليت ٢٣ ما ١١ مع خلاصة تفسير |
| I | " | كيارم دس صفت دا ذا مروا بالتغومر واكراماً | pre- | اغلط کاراور بے دین دوستوں کی دوستی قیامت |
| I | ۵۰۸ | بارموس صفت، والذبن اذا ذكروا | | کے دن حسرت دندامت کا باعث ہوگی۔ یہ سے آئیس نکورسٹن عظی میں سامی |
| I | 4 | احكام دس كاصرف مطالعه كافي نهين | Pr 21 | قرآن كوعملاً ترك كرنامجي كناء عظيم او ديجور كامصداق كم |
| | 0-9 | البرموبي سفت الزئين يقولون رتباهب لناالخ | 127 | اليت ٢٠ ما ٢٠ من هل تعلير معارف وساس |
| I | ۵). | الم سوره قرقان | LIL | آیت ۲۳ تا ۲۳ مع خلاصة تفسیر معارف ومسائل |
| 1 | | ستورة الشعب راء في آيت امّا و معه خلاصرتف ير | MEA | اصحاب الرس |
| I | 011 | معادت دمساتل | " | خلاب شرع خوا بشات كى بيردى ايكقىم كى بت بري بي |
| l | 015 | آيت ١ آيا ٣٣ معه خلاصة تفسير | " | آیت ۵۷ تا ۱۲ مع خلاصتر تعنسر |
| | ۵۱۷ | اطاعت كيلة معادن اسباب كي طلب بها مرج تي نهين | P69 | ولارية خداد تدى كاعجيب شمة للخ اورسيرس ياني كا |
| 3 | -11 | حفر والماليسلام محتى بين لفظ صلال كامفوم | | الغراسلاط كم سائقه سائقه بهنا |
| 1 | , | خدات دوالجلال ك ذات وحقيقت كاعلم انسان | PAI | المخلوقات الميدي اساب دمسبيات كارشة اور |
| P | | کے لتے نامکن ہے، | | ال سبكا قدرت عن كا ما بع بونا |
| I | DIA | سيخبار مناظره كاليك ونه، مناظرے كے توثر آداب | PAT | الات مین بینداور دن مین کام کی تخصیصات |
| 1 | 019 | آیت ۱۳۳ تا ۵۱ | | مجمی برای محمت برمبنی ہیں۔ |
| ı | OYY | القواماانتم ملقون برايك شبه اوراس كاجواب | MAD | جهاد ما نقرآن لعن قرآن كى عوت كوهيلاناجها ديبير بو |
| ŀ | ٥٢٢ | آيت ۲۵ تا ۲۸ مع خلاصة تفسير | hvv | ستايي اورسياي آسانون محاندري يابابر قديم د |
| l | 224 | آبیت ۱۹ تا ۱۰۴ مع خلاصر تغییر | | حديد علم منيت ك نظر بات اور قرآن يك كم ارشادات |
| ı | 019 | قیامت مک انسانوں پر ذکر خیر رکھنے گی دعا۔ مح حل ند مرکب نیشان سر اور اور | P19 | حقائق كونيه اوروت رآن تفسيردِ آن مين سفر ما كاموافقت يا مخالفت مح معيا |
| I | " | حُسِجاه مذبوم ، مگرحنپریشرا کط کے ساتھ جائز ہے مرینے رکھاری میدائر مینیذ نہ سات شدہ | | |
| ı | ۵۳۰ | مشرکین کیلئے دُعا تر معفرت جا تزنہیں حضرت ابراہیم کے سنعفار سنبرادراس کا جواب | 1 | 1 |
| ı | ۵۳۱ | مال اولاداورها نداني تعلقات آخرت ميس بهي | MAC | " 10 11/1/2 |
| i | ٥٣٢ | بشرط ايمان نفع بهنج استحة بين - | 7.673 | 1 1 1 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 2 |
| | ۵۳۳ | آمیت ۵۰۱ تا ۱۲۲ مع خلاصه تغسیر | " | المهلا وصف ، عبدست |
| 1000 | OFF | | 4 | د دسرى صفت ايمشون على الارص برزيًا |
| | ٥٣٥ | تنزورد الساعمال اخلاق برئه كهفا ملان ورجا وستمس | | 71 1111 Level 1- :00 50 |
| 3 | 0 | DD) | | |

| 0 | | | | |
|-----------|-------|--|-----|--|
| 4 | ين | ا منا | •) | معارف القرآن جلدششم |
| 12 | ۵۲. | إِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِأَصْلِمِ إِنَّ " أَنْسَتُ مُارًا | ٥٣٥ | آیت ۱۲۵ تا ۱۳۵ ما |
| 100 | " | اسباطبجيه كواختياركرنا توكل كم منافئ بهين | 074 | آيت ٢١٦٦ ، ١٨٠ مع خلاصة تفسير |
| Ì | 041 | بوی کے ذکریس منایہ سے کام لیتا بہتر ہے | 074 | المعردرت عمارت بنانا مزموم ہے |
| l | * | فَكُمَّاجَاءً لِمَ نُورِي آنُ بُورِي آنُ بُورِي | " | آیت اسماتا ۱۵۹ مع خلاصتر تفسیر |
| | " | آك كاندك إيك نواء سنة ك محقيق | 229 | ا قوم منود کا سغیروں کی مکریب کرنا |
| ı | 275 | حصرت ابن عباس اورس بصري كي ايك روات | or- | وسيحتون من الجِبَالِ بَهُومًا فرحِينَ |
| ı | " | اوراس کی تحقیق | " | المفيد بلية حدان اتعامات بين بشرطيكه أن كو |
| I | DYM | اليت ١٩ أما ١٩ مع حلاصنه تفسير | | برُے کا موں میں سیتعال مذکریں |
| | 440 | ا نبیای میں مال کی درانت ہمیں ہوئی امیز اسچے کیاہ میں رین مات ہمات ماس سے سوری | " | البيت ١٦٠ تا ١١١ |
| ı | " | ابنى لتے جمع كاصيفہ بول جائز ہوبشرطيكة تكبراً نه ہو | OMI | آیت ۱۷۲ تا ۱۷۵ مع خلاصهٔ نفیر |
| | # | عاصلی مقدارید زس این منت مدداهاس | * | اقوم لوط کا بینجمبروں کی مکز سب کا واقعہ اغ ذما میں فیعل اسن میری سے محصرہ ان میں |
| I | 074 | علی کے اور مقبول ہونے سے باجو د جنت میں اخل ہو المذ فصنا ہے، ان ی سر نہیں مرکبا | ٦٣٢ | غرفطری تعل این بیری سے بھی حرام ہے آبیت ۱۵۲ تا ۱۸۲ |
| I | A W A | مغیر فصنیل خدا دندی سے نہیں ہوگا آبیت ۲۰ تا ۲۸ | 084 | آبیت ۱۸۳ تا ۱۹۱ مع خلامته تفنسر |
| ı | 440 | مده مرک غیرحا مزی کا قصته | " | اصحاب الايكه نے سنجمبروں كو حجستالایا |
| | 04. | ماسختوں کی خرگری عزوری ہے | app | المعداكا مجرم السناق الحل كراتاب |
| 0 | " | اليغنفس كامحاسبه | ara | アリア アリタア 二丁 |
| | 041 | طيوس مورك تخصيص سوجرا دراكك الهم عبرت | DAL | آیت ۲۱۵ تا ۲۲۷ مع خلاصئه تفسیر |
| | " | جوجانور كام ميك عى كرى معتقرل مزاد مينا عاتزيي | " | ي قرآن رب العالمين كالجعيجا بهوام. |
| I | 247 | ا نبيارعليهم السلام عالم القيب نهيس بوت | اه | اَنْزَلَ بِ رُوْرَحَ الْاَمِين |
| | " | كياجيوط آدى كوييحق بركداين برو وسيكم | " | قرآن اس كے الفاظ ومعانى كے مجبوعه كا نام ہے |
| I | | كر مجهة آيازه علم هه ؟ ير ريا | 001 | انهاز من ترجمهٔ قرآن برستا باجماع امت ناجا تز ہو۔ |
| ı | " | كياانسان كانكاح جني عورت بموسكتاب ؟ | - | قرآن تم ارد و ترجه توارد و قرآن كهنا جا تزينين داندر عسيري الا قربين |
| ı | 544 | عورت کی امارت کامستلہ | ۵۵۳ | الشد المالية فامه ما |
| ı | DLP | خطاور تخرير بحي عام معاملات مل حجب مترعيه بي | aar | ا تسریعیت اسلام میں شعر دیشاعری کادرجہ از لائے تیسے خلفات دیسال علیا ہیں نہ |
| I | " | المشركين وخط لكھنے كا حكم | ۵۵۵ | فدا ورآخرے غافل کردینے والا ہرعلم اورفن مذموم ہی |
| H | " | انسانی آخلاق کی دعامیت ہر محلس میں جاہتے | " | اکر اتباع کرنے والوں کی گراہی متبوع کی گراہی کی علامت ہوتی ہے۔ |
| | | خواه ده محلس کفارسی کی ہو آبیت ۲۹ تا ۳۲ | | ال معربت |
| | 040 | آيت ٣٦ تا٢٦ مع خلاصة تفسير | ۲۵۵ | سُوْرَةُ تَمَالُ كِ |
| | 11 | سلمان علياب لام كام رمير سے گفت گوكرنا | 204 | آيت ا تا ٢ مع خلاصة تفسير |
| 1 | 044 | حضرت سليمان علياد الم كاخطكس زبان مين تقاء | ۵۵۸ | ع آیت کا و |
| <i> .</i> | " | خطوط نوسی سے چندآداب | ٥٥٩ | آيت ١٠ تا ١٢ مع خلاصة تفسير |
| 0 | 1 | 60 | | 660 |

| 0 | اآ است معنا ی | 1 | رن القرآن حيار ششم |
|------------|--|-----|--|
| 7.4 | انفخداُ دلی ثانیه اور ثالثه کی تشیری | 044 | تب اینانام پہلے لکھے پھر مکتوب الیہ کا |
| 414 | آبیت او تا ۹۳ مع خلاصتر تعنسر | 041 | کاجواب دینانجمی سنت انبیار ہے۔ |
| 711 | سُورَةً قصص في منك | " | وطيس بسم الشركهصنا |
| - | اتا ١٣ مع خلاصة تفيه | 049 | بخررجس بين كوكي آيت قرآني تكھي پوکيائسي |
| 711 | اسورة قصيص مي سوتوں بس سے آخری سات | | مشرک کے ہاتھ میں دینا جائز ہے ؟ |
| 719 | آبت ۱۲ تا ۲۱ مع خلاصه تفسیر | " | مخفر عامع الميخ ادراتو فراندازس كلمناتي |
| 1/1 2/4 | آنيت ۲۲ تا ۲۸ مع خلاصة تف | " | امورمین مشورد اوراس کے فوائد |
| 774 | وَلَمَا تُوحَةً بِلْقَارَ مُرْسَى | ۵۸۰ | ربشيلماني مح وابس ملكة بلقيس كارة عمل |
| 4 m - | ملازمت کےمعیاری ادصاف | " | س کے قاصر کی در مارسلمانی میں حاضری |
| 444 | آئيت ٢٩ تاه ٣ مع خلاصة تفسير | anl | يه ليما تُن كى طرف بدئية ملقيس كى والسي |
| 446 | نیک عمل سے جگہ بھی مترک ہرجاتی ہے | " | كابرية تبول كرنے كامستله |
| 750 | وعظين الجى خطابت اور فصاحت مطلوب ہے | ممد | アリレアハニ |
| " | آيت ٢٣٦٦م | ٥٨٢ | بلفيس كے فاصل كا برايا والس لے جانا |
| 4 44 | آیت ۳ سمتا ۱۵ | DAR | 1 11 141 141 141 |
| 177 | بصا تريلناس كي تحقيق | ۵۸۵ | ره وكرامت ميس فرق |
| 700 | تبليخ درعوت كے لعص آداب | DAT | وبلقيس كادا قعه كرامت تحى يا تصرف |
| 4 | انست ۱۵ ما ۵۵ المست ۱۵ ما محتور صراب سے انہ مارہ اور س | 4 | Prepr = |
| מחד | الت عام مي معبولي مسوس معب ياعا المول ع | 014 | المقيس كاشام بنهتقبال كي تياري |
| 145 | دواہم ہرانیتیں | ۵۸۸ | 19 5.87 - V: C+1 W- : 2 - id |
| 474 | ا ایت و ۵ مع خلامهٔ تفییر معادف و مسامل بدایت کنی معنول مین مستنعل سے | " | pratro |
| 1 yra | أيت ١٠١١ مع خلاصة تغسر | 019 | ن وم تا ۲۵ مع خلامة تفنير |
| IOF | حرم كمرس برجيزك مخرات كالجمع بهونا خاص | 091 | 09 500 |
| | آیات قررت میں سے ہے۔ | ۵۹۳ | 4004- |
| 404 | حَيْ مَيْعِتَ فِي أَجِبَارَ سُولاً | ۵۹۵ | رکی عارا تعلاص کی بنار پر منرور تبول ہوتی ہو |
| " | احكام وقوانين بس قصبات ودبيات بشرول | 091 | I |
| | - July 1/2 1/2 - July - July 17 - Ju | 094 | ۱۷ و ۵۵ مع خلاصة تغییر |
| YOF | / · / · · · · · · · · · · · · · · · · · | " | آیات |
| | د صنروں میں زیارہ مہنمک منہو۔ | ٦٠ | ١٠٤٠ تا ٢٩ من خلاصة تفسير |
| YOK | 1 77 112 - 4 1 19 14 7 | 4- | 20.00 |
| 104 | آبیت ۸ ۲ تا ۲ ۲ مع خلاصة تفسیر | 4.4 | The second secon |
| 101 | وَرُجُكَ يَخُلُنُ مَا يَشَارُ وَيَخْبَارُ | 4-6 | ٨٨ مع خلاصد تفسير معارك مسائل |
| 3 709 | الك جيزكود وسرى جيز برايك شخص كود وسطرير | " | 7 A lee |
| 1 | نفسيلت كامعيار مح اختيار خراد ندى م | 4.4 | 1 1 62 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 |
| | (5) (5) (5) (5) (5) (5) (5) (5) (5) (5) | 4.4 | 66 |

| المن المن المن المن المن المن المن المن | | ا مضایم | F | معارف القرآن جارشش |
|--|-------|---|----------|--|
| ال ا | 271 | قباراد بشرط ليكانے كائحم | 44. | آیت موی ده به مع خلاصتر تفسیر |
| المن ال وی کواس کامال و متاع کی کام خد آیا است ۱۳ ۱۵ کام و هفتی و النخندی نہیں اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ الل | | دنها کے فنون معاش آگر آخر سے غفلت کے ساتھ | 441 | |
| المناس المنس المناس المنس المناس المنس | | | 778 | 5.07 |
| المن المن المن المن المن المن المن المن | Zw. | فائكرة عظيمه | 444 | |
| قررت کی دّو آیت می است کرد است کرد آو آیت می دورت کی دو آیت کرد آو آیت آن کرد آن ک | 471 | آیت ۲۷ تا ۲۷ | 770 | |
| ازدداجی زندگی کا مقصد سکون ہے جس کے لئے ازدداجی زندگی کا مقصد سکون ہے جس کے لئے اس کا این است و سوساً انبیاء و سلحاری نیا می آئیا ہی آئیا اس کا مقد نیک سلوک کرنے کا سختی است قدرت دینے والا بھی گنا ہمگا رہے اور خیاجی اور حجی آئیے تدرت سونا اور الا بی گنا ہمگا رہے اور خیاجی اور حجی آئی ہیں اس کا مقد نیا ہم کہ تو تو سے ایم الدی ہو اور خیاجی اس کا مقد نیا ہم کہ تو تو سے المکون ہے ؟ المسید علیا اس اس کی تو تو اس کے کہ اس کی محمد اور غلط ماحول سے الگ رہنا اس کو است کا مواد ہے ؟ المسید علیا اس اس کی تو تو اس کے کہ مواد ہو گئی تو تو اس کا مقد نیا ہوں کے مسید کی تو تو وہ تو | ۳۳ | روم وفارس كى جنگ واقعه كے بعد عبرت | 441 | قرآن وشمنول برفيح اورمقاصدي كاميابي كاذراييم |
| المناه ا | KML | قدرت كى داو آيس | | Y-11- 05-5-0 |
| الم ایمان خصوصاً انبیا و صلحا کا تنیا مین آوانتی از ایمان خصوصاً انبیا و صلحا کی تنیا مین آوانتی از ایمان خصوصاً انبیا و صلحا کی تنیا مین آوانتی از ایمان خصوصاً انبیا و صلحا کی تنیا مین آوانتی از ایمان خصوصاً انبیا و صلحا کی تنیا مین آوانتی آوانت | 250 | ازدداجى زندكى كامقصدسكون بي جس كے لئے | | سورو منبوت پ |
| الناوی دیوت دینے والا بھی گتا ہمگا رہے کا کہ ہے ۔ المال کا کہ اور کھی گتا ہمگا رہے کہ کا کہ کہ اور کھی گتا ہمگا رہے کہ المال کہ کہ اور کھی گتا ہمگا رہے کہ المال کہ | | | 447 | آیت اتا > |
| استان کی دعوت دینے والا بھی گتا ہگا رہے ۔ استان اور حیثی آیت قدرت استان ہوں ہوں کے منانی نہیں استان کے دورت دینے والا بھی گتا ہگا رہے ۔ استان کے دورت استان کے دورت استان کے دورت استان کے دورت کی منانی نہیں ہوں کے دورت کی منانی نہیں ہوں کے دورت کی منانی ہوں کے دورت کی منانی ہوں کے دورت کی دورت | | | 424 | |
| عصن اعمال کی جردار دنیا میں بھی مل جاتی ہے۔ الملہ الم کا تعرف اللہ اللہ کی نبوت اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ الل | 242 | | 1 | |
| المن المنافر المن المن المنافر المناف | " | | N 2007 | |
| التركي نزديك عالم كون هي ؟ المبرا التركي نزديك التركي ال | | | | وط عد الساام كرست |
| امثر نے نزدیک عالم کون ہے؟ امثر نے نزدیک عالم کون ہے؟ امبر نے نزدیک عالم کون ہے؟ امبر نے نزدیک عالم کون ہے ؟ امبر نظار نے خلق کا مختر جامع نسخ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ اللہ الل | 41.0 | 11 A 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 | (1) | |
| اجل المن المن المن المن المن المن المن الم | 184 | | 100 | |
| اکر اسمام گذامون سے دوکنے کا مطلب ۱۹۵۷ من اسمان کی اسمان کے گذامون کے سب کے آت ہوں کے سب کے آت ہوں کے سب کے آت ہوں کے سب کو آت ہوں کے سامنے کو | | | 1 2 | اصلاح خلق كامختصرها مع نسخر |
| اکیس شرک ہواب انسانوں موجودہ توریت انجیل کے تعداد موسے کے بین اور مصاب انسانوں موجودہ توریت انجیل کے تعداد موسے کے بین اور سرح کے بین اور سرح کے تعداد موسے کے بین اور سرح کے تعداد موسے کے بین اور سرح کے تعداد موسے کے تعداد موسے کے بین اور سرح کے تعداد کے اور سرح کے تعداد | | ف رض ہے | " | |
| عباس آبت من موجوده تودیت آبجیلی تصدیق بین است مسائب کے وقت ابتلاء دامتحان یا سزا، وعذا است و جوده تو دیت دامبیلی مذتصدیق کی کریم صل انتراک میں منظری میں انتراک میں | 404 | دنیایس برشی برسی تفیق اور مصاحب انسانول | 494 | |
| المن من المنظيه وسلم كائمي موناآب كى المن المن المن المن المن المن المن المن | | | 4.7 | كيااس آيت ميس موجوده توديث انجبل كي تصعيق س |
| المن المن المن المن المن المن المن المن | 204 | مصاسب كع وقت ابتلار وامتحان يا مزار وعذا | " | الوجوده توريت والخيل كي مذ تصديق كنجا مذ مكذيب |
| ا ا کے احکام اور شہمات کا ازالہ ا ا کے ا ا کا کہ اور شہمات کا ازالہ ا ا کہ اور شہمات کا ازالہ اور شہمات کی ازالہ اور شہمات کا ازالہ اور شہمات کا ازالہ اور شہمات کی ازائلہ اور شہمات کی ازائلہ اور شہمات کی از اور شہمات کی از اور شہمات کی ازائلہ کی ازائلہ اور شہمات کی ازائلہ کی کے ازائلہ کی کر ازائلہ کی کر از ازائلہ کی کر از ازائلہ کی کر ازائلہ کی | | المين صنى رق | 2.1 | 1 |
| المنارس المراب | 4 | | | |
| چندمسائل ہجرت آیت ۱۹۳ تا ۱۹ تا ۱۹ ا علم برعمل کرنے سے علم میں زیادتی ہوتی ہے علم برعمل کرنے سے علم میں زیادتی ہوتی ہے سکور کا می گوری جا سے گا ہ | | 2 2 | 2800 000 | ہجرت کے احکام اور سبہمات کا از الہ سخت کے فرض یا داحت موتی ہے ؟ |
| علم يعلى كرف علم من زيادتى بوتى ب ١٦٤ اله المرك كا الم | 440 | | 1000 | جند مسائل بجرت |
| مرين كولى جھوٹ ندول سے گا | 242 | | 217 | آيت ١٩٢٦ ٢٠ |
| سوره می و اپ | / 4 A | | 414 | |
| نفته نزول سورت روم اور فارس كي جنگ اور | # 165 | 02011.010/. | | سُورَةُ مُ وَمُ كِ |
| | | تتت | 219 | قصة نزول سورت روم اور فارس كي جنك |
| | | | | |



المَّوْرَةُ مريه ١٩٠٥ ١١ المُّورَةُ مريه ١٥٠١٥

معارف القرآن حب لمدشتم

سوري مرديم

صورة مريم محرس ازل بوى ادر اس مين اشا لات آيس بين ادر جو اكوعا

التَّواللهِ الرَّحْسِ الرَّحِينِ الرَّحِينِ الرَّحِينِ

شروع الله كے نام سے جو بيد مير مان نہايت رحم دالا ہے

كَهْيَعُصْ أَنَّ ذِكُورَ حَمَٰتِ رَيِّكَ عَبْنَ لَا زَكْرِيًا ﴿ الْذَنَادَى

یہ مذکور ہے تیرے رب کی دجمت کا اپنے بندہ ذکریا بر جب پنگاد اأس نے

رَبُّهُ بِنَاءً خَفِيًّا ﴿ قَالَ رَبِّ إِنِّي وَهِنَ الْعَظْمُرْمِينَ وَاشْتَعَلَ

ا پنے دب کو بھی اوا اے میرے دب بورھی ہوگئیں میری ہڈیاں اور شعلہ نکلا

الرَّأْسُ شَيْبًا وَلَهُ آكُنُ إِنْ عَايِكَ رَبِّ شَقِيًّا ﴿ وَإِنِّي

سرے بڑھا ہے کا اور بھے مانگ کر اے رب میں کبھی محسروم نہیں رہا اور میں

خِفْتُ الْمُوَالِي مِنْ وَرَاءِي وَكَانَتِ امْرَاتِي عَاقِرًا فَهَدُ

درتا بول بھائ بندوں سے این جی اور عورت میری بابھے ہے سونجش تو [در مرد اور دار سے ایس کے ایس کے ایس کی اور عورت میری بابھے ہے سونجش تو

بھ کواپ پاس سے ایک کام اُٹھانیوالا جومیری جگہ بیٹے ادر یعقوب کی اولاد کی،

وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا ﴿ يُزَكِّرِيًّا إِنَّا نُكِيِّتُمْ لِهِ بِعُلْمِ فِ السَّهُ وَاجْعَلْمِ فِ السَّهُ وَ

ادر کر اس کواے رب من مانتا اے ذکریا ہم تھے کو خوشخری مناتے ہی ایک روکے کی جسکا نام،

يَحْيَىٰ لَوْجَعَلَ لَدُ مِنْ قَدِلُ سَمِيًّا ۞ قَالَ رَبِّ ٱلنَّا يَكُونُ

یکی ہیں کیاہم نے پہلے اس نام کا کوئی دولا اے دب کہاں سے ہوگا جھے کو

لِي عَلَوْ وَكَانَتِ الْمُرَاتِي عَاقِرًا وَقَالَ بَلَغْتُ مِنَ الْحِيدِ

اور میری عورت بابخه ب اور میں بوڑھا ہوگیا یہاں کے

كَنْ لِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَىٰ هَرَبُّكُ وَقُلْ خَلَقْتُ کہا اُوہنی ہوگا فرمادیا تیرے رب نے دہ مجھ پر اسمان ہے ادر بچھ کو پیراکیا میں نے بولا اے رب تھیرائے میرے گئے کوئی نِشانی اور شر تھا تو کوی جیز كُنُكُ ٱللَّيْ وَيُحْكِدُ النَّاسَ ثَلْكَ لِمَا لَ سَوِيًّا ۞ فَخَرَجَ تیری نشانی یہ کہ بات نہ کرے تو لوگوں سے تین رات تک مسیح تندرست پھر نیکلا اپنے کولور لى خُنِ الْكِتْبُ بِقُوَّةِ ﴿ وَ التَيْنَا الْكُكُو صِبِيًّا ﴿ اُ میں ہے کتاب نرور سے اور دیا ہم نے اس کو حکم کرنا او کا بن یس شوق دیا اینی طرف سے اور شخفرای اور تھا پر ہیزگار اور شکی کرنے دالا اپنے مال با ہے اور اعَصِيًّا ﴿ وَسَلَّمُ عَلَيْهِ يَوْمَ وَلِلَّ وَيَوْمَ يَمُونَ اورسلام ہے آس پر جس دن بیدا ہوا اور جس دن وَيَوْمَ يُبِعَثُ حَيثًا ١ اورجس دن أنه كفرا بد زنده بوكر کھیںعص و (اس کے معنی توالٹ ہی کو معلوم ہیں) یا جو آئندہ قصد آتا ہے) تذکرہ ہے آپ کے بروردگار کے دہر مانی فرمانیکا پیے (مقبول) بزره (حضرت) زکریا (عدالسلام کے حال) برجبکدا تفول نے اپنے یرور دگار کو یوش وطور پر سکارا رہیں یہ عرض کیا کہ اےمیرے پرور دگار میری بڑیا ل دبوجہ بیری کے) کمز درہ وگئیں اور (میرے) سرس بالوں کی سفیدی پھیل پڑی (بعنی تمام بال سفید مو گئے ا در اس حالت کا مقتضا ریه ہے کہ میں اس حالت میں اولا د کی درخواست مذکروں مگر چو ککہ آپ کی

الا قدرت ورحمت برى كامل م) اور (مين اس قدرت ورحمت ك ظهور كانحور ميندر بابول الينيد

اس كقبل بهي)آب سے دكوى چيز) مانگئے ميں اے ميرے دب ناكام نہيں دہا ہوں داسس بنا رہ بعيد سے بعيد قصود مجي طلب كرنامضائقة نہيں) اور دأس طلب كا مرج يدامرخاص بوكيا ہےكہ) بي إيد (مرنے کے) بعد (اینے) رشتہ داروں (کی طرف) سے (یہ) اندسیشہ رکھتا ہوں دکہ میری مرصنی کے موافق شریعیت اور دین کی خدمت نه بجالادیں گے۔ بیر امر مرجے ہے طلب اولاد کے لئے جس میں خاص خاص اوصاف یا نے جادیں جن کو تو قع خدمتِ دین میں دخل ہو) اور (چونکہ میری بیرانہ سالی کے ساتھ) میری بیری (بھی) یا بچھ ہے جس کے مبھی یا وجود صحتِ مزاج کے اولادہی نہیں ہوی اسلے اسباب ادبی اولاد برنے کے محمی مفقود ہیں سو (اس صورت میں) آیے بچھ کوفاص اپنے یاس سے رہینی بلا توسط اسباب عادیہ کے) ایک ایسا دارٹ رہینی بٹیا) دید بھیج کہ وہ (میرے علوم خاصمین) میرا وارث بنے اور دمیرے جد) میقوب رعلیاستلام) کے فائدان دکے علوم متوار شمیں اُن) کا وارث بنے دمینی علیم سالقہ ولاحقہ اُس کوحاصل ہوں) اور (بوجہ یا عمل ہونے کے) اس کواے میرے دب (ایٹا) يسنديده (ومفيول) بنائي رفيني عالم بهي جوادر عامل بهي بهو-حق تعالیٰ کا بواسطه ملائکه کے ارشاد ہداکہ) اے ذکریا ہم تم کو ایک فرزند کی خوشخبری دیتے ہیں جبکا مام بھی ہوگا کہ اسکے قبل رخاص اوصا میں ہم نے کسی کواسکا ہم صفت نہ بنایا ہوگا دفین جس علم وعمل کی تم دعا کرتے ہو وہ تواس فرزند کو صرور ہی عطاکریں گے اور مزید برآں کچھ اوصاف خاصہ تھی عنایت کئے جادیں گے مثلاً خشیتِ اللہ سے خاص درجہ کی رقتِ قلب و غیرہ ۔ چونکہ اس اجا بتِ دُعامیں کوی خاص کیفیت حصولِ دلد تی بتلائی مذکئی تھی اس لئے اس کے استفساد کیلئے) ذکر یا (علیہ نسلام) نے عرض کیا کہ اسے میرے رب میرے اولاد کس طرح پر ہوگی حالا تکہ میری بی بانجھ ہے اور (ادھر) میں بڑھا ہے کے انتہائی درجہ كوبهبنج جيكا بهول رئيس معلوم منبين كه بهم جوان بهوشكي يا مجه كو د ومرانيكاح كرنا بهو كايا بحالت موجوده اولاً ہوگی ، ارشاد ہواکہ حالت (موجودہ) یوں ہی رہے گی (اور پھراولا د ہوگی اے زکریا) تہارے رب كا قول بىك بديد (امر) مجھ كو اتسان ہے اور ديدكيا اس سے برطاكام كرجيكا بول مثلاً) ميں فيم كودى) بريداكياب حالاتكه (بريدائش كے تبل) تم كيه كيم بند تقراسي طرح خود اسباب عاديد مي كوئ چيز نه ستے جب معدوم کو موجود کرنا اسان ہے تو ایک موجود سے دوسرا موجود کر دیٹاکیا شکل ہے بیسب ارتثاد تقویت رجا کے لئے تھا نہ کہ دفع شبہ کے لئے ، کیونکہ ذکریا علیالسلا کو کوئی شبہ نہ تھا جب) ذکر ما (علیہ السلام كوتوى أمتيد بهو كئي توائفوں) نے عرض كياكہ الے ميرے رب (دعدہ برتواطينان بركيا اب اس دعدہ کے تریب و توع بینی حمل کی بھی کوئ علامت میرے لئے مقرد فرمادیجئے (تاکہ زیادہ شکر کا کردن ادرخود و توع تومحوسات ظاہرہ ہی میں سے ہے) ارشاد جواکہ تھاری دو) علامت یہ ہے کہم میں رات (اورتین دن مک) آدمیوں سے بات (چیت) مذکر سکو کے حالا نکہ تندرست ہو کے دکوئ ہمادی دغیرہ

معارف القرآن جريش مي وي المصفوي

ا نہ ہوگا ادراسی دجہ سے ذکرا اللہ علیہ ساتھ تکلم پر قدرت رہے گی چنا نی باذن اللہ توالی رکریا علیہ اسلام کی این بستہ ہوگئی ایس جھے ہیں سے اپنی قوم کے ایس بہر سے ادران کو اخارہ سے فرایا رکیونکہ ذبان سے تو بول نہ سے تھے کہ آم لوگ صحادر خام فدا کی باس بہر سے اور خام فدا کی بان کیا کرو۔ ریے تبیع ادرام بالسبع یا تو حب معول تھا ہمیشہ تذکیراً زبان سے کہتے تھے آج آنا اس کی بیان کیا کرو۔ ریے تبیع ادرام بالسبع یا تو حب معول تھا ہمیشہ تذکیراً زبان سے کہتے تھے آج آنا اس کی بیان کیا کہ یا اس نمت بعد یدہ کے شارس نور ہمی تبیع کی کڑت فرما کی اوراوروں کو تھی اسی طور پر امرفسوما فرض بھر یکی علیہ السلام بریدا ہوئے ادر اس خور کو پہنچے توان کو تھم ہواکہ اسے یکی تحاب کو رفینی توریت خوص بھر کہ کہ اس وقت دہی کتاب کو رفینی توریت کو کہ اس وقت دہی کتاب سر دین کو تھم ہواکہ کا اور دونان کو تھم ہواکہ کا اور دونان کو تھم ہواکہ کا اس سے دقت قلب کو کہ سے کہ ادر اس خواج کی کران کو کھم ہواکہ کا اور دونان کو کو دونان کو کو دونان کو دونان کو دونان کو کو دونان کو کو دونان کو دونان کو کو کو دونان کو کو دو

معَارِف ومسَائِل

مورة كہمت كے بعد سورة مريم شايد اس مناسبت سے دكھى گئى كرجيے سورة كہمت بہت العالى اسے دا قوات عجيبر برشتل سے (دوح المعالى) كھيل عص حروف مقطعه اور شاہبات ميں سے ب جكاعلم الشرتعالى ہى كو ب بندوں كے لئے كس كى تفتيش مبى اچى بندوں كے لئے كس كى تفتيش مبى اچى بنيں ۔ يندك آئے خيفيد اس سے معلوم ہواكہ دُعاركا آہستہ اور خفيہ كرناا فضل ہے۔ حضرت سعد بن ابى و قاص نے دوايت ہے كہ دسول الشرصل الشرعكية لم نے فرطيا ان خاير الذكر المحفى و خاير الدين ما يكفى ، ينى بہترين ذكر خفى (آہستہ) ہے اور بہترين دزق دہ ہے جو كافى المحفى و خاير الدين ما يكفى ، ينى بہترين ذكر خفى (آہستہ) ہے اور بہترين دزق دہ ہے جو كافى المحفى و خايرالدين فى ما يكفى ، ينى بہترين ذكر خفى (آہستہ) ہے اور بہترين دزق دہ ہے جو كافى

ا بن وهن العظم من العظم من السنتك الراس شيباً، كرورى بدو ك ذكر فرماى كيونك مي المرفر الكيونك مي المرفر الكيونك مي المرف الموقع المرف المرفع المرف المرفع ال

ľ

سارف القرآن جسكة

ضعف د کمزوری کا ذکرکیا، اس کی ایک وجه تو وه بحس کی طرف خلاصتفسیرس اشاره کیاگیا ہے کمان حالا كامقتقتابيه تصاكها دلا دكى خواہش يكروں . ايك د دسرى دجه امام قرطبى نے تعنسيرس يريمي بيان فرمائ كه فعا ما نکنے کے دقت اینے صنعت وہد حالی اور حاجمتندی کا ذکر کرنا قبولیتِ دُعام کے لئے اقرہے اسی لئے علمار نے فرمایا کہ انسان کو چاہئے کہ دُعار کرنے سے پہلے استُرتنا فی کی تعمقوں اور اپنی حاجمندی کا ذکر کرے۔ موالی ، مولی کی جمع ہے۔ عربی زبان میں یہ لفظ بہت سے معانی کے لئے استعمال ہوتا ہے اُن میں سے ایک معنی جیا زاد بھائی ادر این عصبات کے بھی آتے ہیں اس جگہ دری مُراد ہے -

ا نِيًّا رَكِ مال مِين وراثت نهيم لين الريشين و يوث ورين أل يَعْفُون ، با تفاق جهور ماماراس جلدورا سے دراثت مالی مراد نہیں، کیونکہ اوّل توحصرت زکر باکے یاس کوی بڑی دونت ہونا تا بت مہم كى فكر يوكه اسكا وارث كون بوكا اور ايك بينجيركى شان سے بين الين فكركرنا بعيد سے اس كے علاوہ معج مدیث میں یرصحابہ کرام کا جماع ثابت سے اسین ہے

> انّ العلماء ورثة الإنشاء وانّ الانبياء له يورثوا دينا رًا ولاورها اغادر ثوالعلم فس اخن اخن عطوافررواه احمد وايوداؤدواين مأجه والتزونى

بينك علمار دارت بي انبيار كے كيونكرا نبياء منيهم اسلام دينارو درسم كي درائت تهين جيورة بلكهاأن كى درائت علم برتما بي حس في علم حاصل کرلیاائس نے بڑی دولت حاصل کرلی۔

یه حدیث ممتب شیعه کافی ، کلینی د نیمره میں بھی موجود ہے ، ا در صحح بخاری میں حضرت صدیقیہ عاکشہ سے دوایت ہے کہ رسول الشرصلی الشرعکی فیصرمایا:

يم انبياء كى مالى وراثت كسى كونبين ملتى بهم جومال جموري وهسب صدقر ي -

لا نورث وما تركناصدة

ادرخوداس آیت میں یومشی کے بعد و یور شون ال یخفوت کااصافداسی دیس ہے کہ دراشت مالی مُراد بنیں کیو بکے جس مرامے کی بریدائش کی دُعاکی جارہی ہے اسکا آل بیقوب کے لئے مالی وارث بننا بظا ہر حال ممكن نہیں يميونكم آل معقوب كے وارث أن كے عصبات قريب ہو بھے اور وہ وہى مكوارلى ايس جن كا ذكراس آيت مين كياكيا وه بلاشبر قرابت وعصوبت مين حضرت يجيى عليه السلام سے اقرب من اقرب كم موتى بورخ عصب بجيركو وراث، الماأصول وراثت كے خلاف ہے -

روح المعاني ميں كتب سنيعم سے يہ مي نقل كيا ہے:

روى الكليئ في الكافي عن إلى البختى إسيمان علياسلام داؤد علياسلام كدار ہوئے اور محدصلی اسٹر عکیتے کم سلیمان علیارسلام كے دارث روئے -

عن الى عبد للله قال ان سيم اوريدادد وان عمدًا صالته عليمام ورسه سليمان

خلاصة تفسير

ا در (اے محد ملی الله عکید لم) اس کتاب (معنی قرآن کے اس خاص حصّد معنی سورت) میں حضر ، مريم (عليهاالسلم) كا قصته مجى ذكر كيجة ذكه وه زكريا عليدلسلام كة قصة بذكوره سع خاص مناسبت دكه تاب اور دہ اُسوقت داقع ہوا) جب کہ دہ اپنے گھردال^ں سے بلجد (ہوکر)ایک ایسے مکان میں جومشرق کی جانب میں تھا رغسل کے لئے اکنیں پھران رکھروالے) لوگوں کے سامنے سے اُنھوں نے (درمیان میں) پردہ ڈال لیا د تاکه اس کی آڈیی فسل کرسکیں) ہیں واس حالت ہیں) ہم نے اپنے فرشنہ وجرئی علیہ لسلام) کوہیجا اور وہ د فرشتہ) اُن کے سامنے (ہاتھ یا وُں ادرصورت و شکل میں) یک بورا آدمی بن کرظا ہر جوا (جو مکہ حضرت مریم نے اُس کوانسان مجھا اسلئے گھبراکر ، کہنے لکیس کہیں تجھ سے اپنے غداکی بناہ ما تکتی ہوں اگرتو ر کھے عداتری ہے رتو بہاں سے ہٹ جاوجا) فرشتہ نے کہا کا بی بشر نہیں کہم مجھ سے ڈرتی ہو بکہ ایس توتمبالے رب کا بھیجا ہوا د فرستند، ہوں داس لئے آیا ہوں) تاکہ تم کو ایک پاکیزہ لڑکا دوں ربعنی تمہار منومیں یاگر بیان میں دُم کردوں جس کے اثر سے با ڈن الشرحمل دہ جا دے اور لڑکا بریدا ہو) دہ دلیجے) كہتے لكيں (مذكر انكارسے) كرميرے لؤكاكس طرح ہوجا ويكا حالاتكہ (كسس كى سنسرائط عاديبرميں سے مردکے ساتھ مقادبت ہے اور وہ بالکل مفقود ہے کیونکہ مجھ کوکسی بسنرنے ہاتھ تک نہیں گیا دیعنی نة توزياح بهذا) ادر نه ميں بدكار بوں ، فرشة نے كہاكہ (بس بغيركسى بشركے حيمونے كے) يُوں بى (لاكا) ہوجادے گا (ادرمیں اپنی طرف سے نہیں کہتا بلکہ) تہادے رہے نے ارشاد فرمایا ہے کہ یہ بات ذکر بغیر امباب مادید کے بچہ پیداکر دوں) مجھ کو آسان ہے اور دیریمی فرمایا ہے کہ ہم بغیر کسباب عادیہ کے) اس خاص اوريراس لئے بيداكري كے تاكم ہم اس فرزند كولوگوں كے لئے ايك نشانى (قدرت كى) النادي اور ونيزاك وربعه لوكون كوبدايت يانے كے كئے) اس كوباعث رحمت بنادي اوربه (بے بد الاے اس بچے کا بیدا ہونا) ایک طے شدہ بات ہے (جو صرور ہو کر ہے گی)۔

معارف القرآن جس ششم

مكارفث ومسائل

یافتیک کے سے ہٹ کر دور چلے جانے کے ہوئے۔ مکانگا متنی وقی استی اور والے اور میں کے ہیں۔ انتہا ذک معنی جمع سے ہٹ کر دور چلے جانے کے ہوئے۔ مکانگا متنی وقی اسی احتمالات اورا قوال مختلف ہیں ہجن کے کسی گوشہ میں جانا کس غرض کے لئے تھا اسیں احتمالات اورا قوال مختلف ہیں ہجن نے کہا کہ خسل کرنے کے لئے اُس گوشہ ہیں تھیں۔ بعض نے کہا کہ حب عادت عبادت الہی ہیں مشغول کے کہا کہ خسل کرنے کے لئے اُس گوشہ ہی کو شہ کو اختیاد کیا تھا۔ قرطبی نے اسی دو مرے احتمال کو جس قواد دیا ہے حضرت ابن عباس اس کے مستقول ہے کہ نصادای نے جو جانب مشرق کو اپنا قبلہ بٹایا اور اس جانب کی تعظیم کرتے ہیں اُس کی وجہ یہی ہے۔

قاد شکنا الکھا ڈوحنا، ماوس سے ٹراد جہور کے نز دیک حضرت جبرئیل علیہ سلام ہیں۔ اور بعبض نے کہا کہ خود حضرت عیسلی علیہ اسلام ٹمراد ہیں، الشر تعالیٰ نے اُن کے بطن سے بیدا ہونے والے بشر کی شبیہ اُن کے سامنے کردی ۔ مگر پہلا قول داج ہے بعد کے کلمات سے اسی کی تائید ہرتی ہے۔

فَتَعَنَّلُ لَهَا بَشَرًا سَوِيًا ، فرشته كواس كى اپنى الى صورت و ہدئت ميں ديجه ناانسان كے اسمان نہيں ، أس كى ہيبت غالب آجاتى ہے جيبے رسول ادلتر صلے استرعكيہ كوغا دِحرارميں اور الله الله الله الله عليہ الله الله كا مسامنے بشكل انسانى ظاہر ہوئے ۔ جب حضرت مربع علیہ السلام كے سامنے بشكل انسانى ظاہر ہوئے ۔ جب حضرت مربع في ايك انسان كوا پنے قريب ديكھا جو برده كے اندرا كي اتوخطرہ مواكه اس كا ادا دہ بُرامعلى موتا ہے اس لئے فرما یا :

رانی اعود فرالت من و دایات میں اللہ ترحمٰن کی بناہ مانگتی ہوں تجھ سے البض روایات میں ہے کرجبر سُل امین نے بیرکلہ شنا توا ملتر سے نام کی تعظیم کے لئے کھے پیچھے مبٹ گئے۔

ران کُنْتُ نَیْقیگاه یه کلماییا ہے جیے کوئی شخص کسی ظالم سے نجود ہو کرفر یاد کرے کہ اگر تو مُوُمن ہے تو جھ پرظام نہ کر۔ تیراایمان اس ظلم سے روکنے کے لئے کافی ہونا چاہئے۔ مطلب یہ ہواکہ تمہا اے لئے مناسب کہ الشر سے ڈرو، فالحا اقدام سے بچو۔ فلاصہ یہ ہے کہ آن کُنْتُ تَقِیبًا ، استعاذہ کی شرط نہیں بلکہ استعاذہ کے مُوثر ہونے کی مشرط برائے ترفیب ہے۔ اور معبن مفسرین نے فرط یا کہ یہ کلم بطور مبالغہ کے لایا گیا ہے کہ اگر تم مشقی بھی ہوت ہوتی میں تم سے اسٹری بناہ ما محتی ہوں اور اسے خلاف ہوتو معاطمہ ظاہر ہے۔ (مظہری)

رلا هنب کلی ، اس میں عطار فرزند کو جبر تیل علیاستلام نے اپنی طون اس کے منسوب کیاکدائن کا استرتعالے کے اس کام کے لئے بھیجا تھاکدائن کے گریبان میں بھو تک ماد دیں ۔ یہ تھیو تک عطار فرزند کا فرزندکا فرزندکا وراصل فعل الہٰی ہے۔

44:19 me 20 8 1320 انتكن يهمكانا قصبيا فأجاءها المخاع سی لیا اس کو میمریک و بوی اسکولیکرایک بعید مکان می ، مجفر لے آیا اسکو در در زم التَّخْلَةِ ۚ قَالَتْ يُلَيْتِنِي مِنْ قَبْلَ هٰذَا وَكُنْكُ یولی کسی طرح میں مرحکتی اس سے پہلے ستا ﴿ قَادُ بِمَا مِنْ تَحْتُمَا } يس آواز دى اسكو اسكے يتح سے كم عملين مت برد ادر بلا این طرف جَناع فَكُل وَالْتُم يم اگر تو ديڪ کوي آدمي سویات شکروں کی آج کسی آدمی ہے

فالم تنفسير

پھر (اس گفتگو کے بعد جبرئیل علیات الم ف اُن کے گریبان میں بھُونک ماد دی جس ہے)
اُن کے بیط میں او کا دہ گیا ، پھر (جب اپنے وقت پر حضرت مریم کو بچہ کی پیدائش کے آثا اله محسوس ہوئے تو) اس حمل کو لئے ہوئے (اپنے گھرسے) کسی دُور جبکہ (جنگل پہاڈییں) الگ جلی گئیں بھے۔ رجب در دسٹر مع ہوا تو) در در زہ کی دجہ سے جبحور کے درخت کی طرف آئیں (کہ اس کے سہارے بیٹھیں اُٹھیں ، اب حالت یہ تھی کہ نہ کوئ انیس نہ جلیس، در دے بے بین ، ایسے وقت بو مسامان راحت و صرورت کا ہونا چاہیئے وہ ندار نا دادھ بچہ ہوئے پر بدنا می کا خیال ، اَ تر گھراکر کھنے کی انیس کاش میں اس (حالت) سے پہلے مرکئی ہوتی ادرائی فیرست و نا بود ہوجاتی کہ کسی کو یاد بھی نہ دائی، ایس راسی وقت بھی اسلام بیٹیے ادرائ کے احترام کی دجہ سے مصرت) جبرئیل (علیا سلام بیٹیے ادرائ کے احترام کی دجہ سے مصرت) جبرئیل (علیا سلام بیٹیے ادرائ کے احترام کی دجہ سے مصرت مریم تھیں اس سے اسفل مقام میں آڑ میں آئے اور

المؤرّة من ١٩:٢٠

معارف القرآن جسكة شم

اُ تھوں) نے اُن کے داس) یائیں (مکان) سے ان کو پیکارا۔ د جس کوحضرت مریم نے بہیاناکہ یاسی فرشته کی آواز ہے جو اوّل ظاہر ہوا تھا) کہتم (بے سروسامانی سے یا خوب بدنا می سے) مغموم مت ہو، رکیونکہ ہے سروسامانی کا تو بیرا نتظام ہواہے کہ) تمہارے رب نے تمہارے پائیں (مکان) میں ایک نہر پیداکردی ہے رجس کے دیکھنے سے اور یانی سنے سے فرحت طبعی ہو ونیز حسب دوایت روح الکوال وقت بهاس محلي كلي تقى ادرحسب مستله طبيه كرم چيزون كااستعال تبل وطنع يا بعدوضع مسهل ولادت و دا نبع فصلات ومقوی طبیعت بھی ہے اور یانی میں اگر سخونت دگرمی بھی ہوجیسا بعض حتیموں میں مشابه ب توادر زیاده مزاج کے موافق ہوگا، ونیز کھجور کشیرالفذار مولیز خون اسمن ومقوی گرده کمرد مفاصل ہونے کی وجہ سے زجیر کے لئے سب غذاؤں اور دواؤں سے بہتر ہے اور حرارت کی وجہ سے جو اس كى مصرت كا احتمال ہے سواول تو رطب ميں حرارت كم ہے، دوسرے پانى سے اسكى اصلاح موسحى ہ تمیسرے مصرت کا ظہور حبب ہوتا ہے کہ عضومیں ضعف جو ورنہ کوئی چیز بھی کھھ نہ کھے مضرت سے خسالی نہیں ہوتی ونیر خرق عا دت دکرامت، کا ظہور الشر کے نز دیک بقبولیت کی علامت ہونے کی وجہ ہے موجب مسترت ر دحانی میں ہے) اوراس میجور کے تنہ کو دیکڑ کر) این طرف ہلاؤ اس سے تم پر تر و تارہ ہجوری جھڑس کی دکداس سے بھل کے کھانے میں لڈت جہمانی اور لطور خرق عادت کے بھیل کے آئے میں لذتِ روحانی مجتمع ہے) پیمر داس مجیل کو) کھادُ اور (وہ یانی) پیم ادر آئی بھیں ٹھنڈی کرو رامینی انجیرکے دیکھنے سے اور کھانے پینے سے اور علامت قبول عندالتیں وئے سے خوش رہو) میھراجب بڑی کے احتمال کا موقع آدے بعین کوئ آدمی اس قصہ برمطلع ہو تواسکا یہ انتظام ہواہے کہ ہاگرتم آدمیو میں سے کسی کو بھی دا تا اور اعتراض کرتا) دیکیھو تو رتم کچھ مت بولٹا بلکہ اشارہ سے اس سے) كبه ديناكرميں نے تواللہ كے واسط (ایسے) دوزہ كى منت مان ركھى ہے (جس ميں بولنے كى بندش ك سو (اسوحیرسے) میں آج (ون بھر) کسی آدمی سے نہیں بولوں کی (اور خداکے ذکر اور دُعایں مشغول ہوتا اور بات ہے سی تم اتنا جواب دیر ہے فکر ہرجانا، اللہ تعالیٰ اس مولود سعود کوخسرتی عادت کے طور پربون کر دیگاجس سے ظہورا عجاز دلیل نزاہت وعصمت ہوجادی غرض ہر عم كاعلاج يهوكيا-)

معارف مسائل

منائے موت کا تکم ایہ تمنائے موت اگرغم و نیاسے تقی تب تو غلبُہ حال کوا سکاعذ د کہاجا دیگاجس میں انسان من گل الوجوہ مکلف نہیں دہتا اور اگرغم دین سے تھاکہ بوگ بدنام کریں گے اور شاید مجھ اس پرصبر نہ ہوسے تو بے صبری کی معصبت میں ابتلا ہوگا، موت سے اس مصبت کی حفاظت دیگی توالیسی تمنا ممنوع نہیں ہے اور اگر شبہ ہو کہ حضرت مریم کوجو کہا گیا کہ تم کہ دینا کرمیں نے نذر کی ہے سوائنصوں نے نذر تو نہ کی تھی ، جواب یہ ہے کہ اسی سے پیچم بھی مفہوم ہوگیا کہ تم نذر مجھی کرلینا اور اس کوظا ہر کر دینا -

سکوت کاروزہ سروی ہوگیا از اسلام یہ مجی عبادت میں داخل بھاکہ ہونے کا روزہ رکھے، صبح سرات اسلامیمیں منسوخ ہوگیا کیکسی سے کلام ہے کرے۔ اسلام نے اس کومنسوخ کرکے یہ لازم کر دیا کہ مرف بڑے کلام گائی گلوج ، جھوٹ ، نمیبت وغیرہ سے بر ہیزکیا جائے ۔ عام گفتگو تزک کرنا اسلام یں کوئ عبادت نہیں رہی اس لئے اس کی ندر ما نیا بھی جائز نہیں ۔ لما دواہ ابوداؤد موف عا لایت و عبادت نہیں دہی اس سخت السیوطی والعذیوی ، مینی بچہ بالغ ہونے کے بعد العد اور مین بیتی ہوئے ادر مینی بیتی ہائی ہونے اور مین کوئی عبادت نہیں ۔ اور در دزہ میں پانی اور کھور کا استعال طبیا بھی مفید ہادر اکل در میں بانی اور کھور کا استعال طبیا بھی مفید ہادر اکل در میں بانی اور کھور کا استعال طبیا بھی مفید ہادر اکل در میں بانی اور کھور کا استعال طبیا بھی مفید ہادر اکل در میں بانی اور کھور کا استعال طبیا بھی مفید ہادر اکل در میں بانی اور کھور کا استعال طبیا بھی مفید ہادر اکل در میں بانی اور کھور کا استعال طبیا بھی مفید ہادر اکل در میں بانی اور کھور کا استعال طبیا بھی مفید ہادر اکل در میں بانی اور کھور کا استعال طبیا بھی مفید ہادر اکل در میں بانی اور کھور کا استعال طبیا بھی مفید ہوتا ہے۔ دالتہ علم

بغیرمردکے تنہاعورت سے بچیر پیچیدا ہوجانا خلافتِ عقل نہیں پیچیدا ہوجانا خلافتِ عقل نہیں ہی استبعاد ہومضا کقہ نہیں بلکہ وصفِ اعجاز کا اور زیا دہ ظہورہے کیکن

اس میں اسوجہ سے زیادہ استبعاد بھی نہیں کہ حسب تصریح کتب طب عورت کی منی میں توتب منعقدہ کے اس میں اسوجہ سے زیادہ استبعاد بھی نہیں کہ حسب تصریح کتب طب عورت کی منی میں توتب منعقدہ کے ساتھ قوتب عافقہ ہم بھی ہے اس لئے مرض رُجًا میں اعضاء کی کچھ ناتمام صورت بھی ب جاتی ہے کما صحیح کیا جہ نی القانون ، بس اگر میں قوت عافقہ اور بڑھ جائے تو زیادہ مستبعد نہیں ہے۔ (بیان القانون)

اس آیت یا افتاد تعالی نے حضرت مربیم علیہا اسلام کو کھورکا درخت بلانے کا تکم دیا اسلام کو کھورکا درخت بلانے کا تکم دیا اسلام کو کھورکا درخت بلانے کا تکم دیا اسلام کا اس کی قدرت میں بیرجی تھاکہ بغیراً ان کے جلانے کے خود ہی کھجوری اُن کی گو دمیں گرجاتیں سگر تحکمت بیرج کہ اس میں تحصیل درزق کے لئے کو سٹسٹ کرنے کا سبق بلتا ہے اور بیر بھی بتلانا ہے کہ رزق کے صاصل کرنے میں کوشش اور محنت کرنا تو تل کے خلاف نہیں ۔ (دُرْح المعکانی)

سکوی آگا ، نفظ سری کے لغوی حنی جھوٹی نہر کے ہیں۔ اس موقع پرحق تعالیٰ نے ایک جھوٹی نہر اپنی قدرت سے بلا واسطہ جاری فرمادی یا جرئیل کے ذریعہ جنہ جاری کرا دیا ، دونوں طرح کی روایتیں ہیں۔
یہاں یہ امر قابل کی اظاہے کہ حضرت مریم کی تسلی کے اسباب ذکر کرنے کے وقت تو پہلے پانی کا ذکر نسر مایا بھر کھانے کی چیز کھورکا ، اور جب استعال کا ذکر آیا تو ترتیب بدل کر پہلے کھانے کا حکم فرمایا بھر بانی چنے کا۔
کوئی کو الشکری ، وجہ غالباً یہ ہے کہ انسان کی نظری عادت ہے کہ پانی کا استمام کھانے سے پہلے کرتا ہے فصوصاً کوئی ایسی غذا کھا تا ہے بھر پانی بیتا ہے۔ (دُق الدیّاف)

سولاله هايم ١٩:١٩ محرلای اس کو اپنے لوگوں کے پاس گودمیں وہ اُس کو کہنے گئے اے مریم تو نے کی یہ جیسے بھر ہاتھ سے بتلایا آس اوکے کو بولے ہم کیونکر بات کریں لدوه ہے گود میں لڑکا وہ بولامیں بندہ ہوں اسٹرکا جھے کو آس نے کتاب دی ہے او والزَّكُوةِ مَا دُمْتُ حَيًّا ﴿ وَالرَّكُوةِ بَرًّا بِوَالِنَ اکوۃ کی جب یک یک دروں زندہ اورسلوک کرنے والااین مال سے اورائی يايا يك كو اور سلام ہے کھ بر جس دن میں بیدا ہوا اورس دن أَمُونَ وَيَوْمَ أَبُعَتُ حَيًّا ﴿ اورجي دن أكم كمرا مول زنده بوكر وغرض مريم عليها السّلام كى اس كلام سيّستى موى اورعينى عليالسّلام بدا موت) مجفروه ان كوكودمين لئے ہوئے دو إل سيستى كو حليں اور) اپنى قوم كے ياس لائيں، لوگوں نے (جود كيماكدان كى شادی تو ہوئی شریقی یہ بجیر کیسا، بر گمان ہوکر) کہا اے مربم ! تم نے بڑے غضب کا کام کیا د بعی نعو ذباتر بدکاری کی ، اور یوں تو بدکاری کوئی بھی کرے بڑا ہے لیکن تم سے ایسا نعل ہونا زیا دہ غضب کی بات ہے کیونکہ اے ہارون کی بین ! (تمہارے فاندان میں کبھی کسی نے ایسا نہیں کیا چنانچہ تہارے ہاہے ا کوئ بڑے آدمی مذ محفے دکدان سے یہ اثر تم میں آیا ہو) اور مذتمهاری ماں ید کار تخیس د کدان سے یہ ا ارتم میں آیا ہو، پھر بارون جوتمہارے دشتہ کے بھائ ہیں جن کا نام ان باردن نبی کے نام بررکھا Tr:19 200 8000 FT

معارث الفرآن جسلدشم

گیاہے وہ کیسے کھر نیک شخص ہیں ، غرض جسکا خاندان کا خاندان باک صاف ہوائس سے بیرسرکت ہوز كتنا بڑا غضت، پس مريم (عليهاالسلام) نے (بيرساري تقرييش كركيوجوابنهيں ديابلكه) بچير كي طرن اشاره كرديا ركه اس سے كهو جو كھے كہنا ہويہ جواب ديكا) وہ لوگ (مجھے كہ يہ ہمارے ساتھ مسخ کرتی ہیں) کہنے لگے کہ بھلاہم ایسے خص سے کیونکر باتیں کریں جو ابھی گود میں بچترہی ہے دکیونکہ بات ائس شخص سے کی جاتی ہے جو کہ وہ کھی بات جیت کرتا ہو، سوجب یہ بچتر ہے اور بات پر قادر منہیں ، تواس سے کیابات کریں اتنے میں) دہ بچتر دخودہی) بول اُٹھاکہ میں ایشر کا دخاص بندہ ہوں دنہ تو التذبوں جیساکہ جہلار نصاری بہیں سے اور نہ غیر مقبول ہوں جیسا یہود بھیں کے اور مبدہ ہونے کے اور پیمرفاص ہونے کے بیرا ٹار بیں کہ) اُس نے مجھ کو کتاب دیبی انجیل) دی دیسی گو اکندہ دے گا مگر بوجریقینی ہونے کے ایسا ہی ہے جیسا کہ دیدی) ادر اس نے بچھ کونبی بنایا دبینی بنا دے گا) ادر مجھ کو برکت دالا بنایا دیعنی مجھ سے خلق کو دین کا نفع پہنچے گا) میں جہاں کہیں بھی دوں رگا جھ کو برکت پہنچیگی وہ نفع تبلیغ دین ہے خواہ کوئ قبول کرے یا نہ کرے اُنھوں نے تو نفع بہنچاہی دیا) اور اس نے مجھ کو تماز ا در ذکوہ کا حکم دیا جبتک میں (ونیامیں) زندہ رہوں راورظا ہرہے کہ آسمان پرجانے کے بعار کاف مہیں رہے اور یہ دلیل ہے بندہ ہونے کی جبیبا کہ اور دلائل ہیں خصوصیت کے) اور مجھ کومیری والدہ کا خدمتگذار بنایا (اورچونکہ ہے باب بریدا ہوئے ہیں اس لئے والدہ کی تحصیص کی گئی) اور اس فے تھا کہ بدیخت نہیں بنایا دکدا وائے حق خالق یا ا دائے حق والدہ سے سرکھٹی کروں یا حقوق واعمال کے ترک سے برنجتى خريد لون) در مجه يرد الشركى جانب اسلام بيحس دورس بيدا بواا درس دور مرون كا ركه ده زمان قرب قیامت کابعد نزول من دنتهار کے بوگا) اور جس روز میں دقیامت میں) زندہ کرے اُٹھایا جاؤں گا داور الشركاسلام دليل سي قاص بنده بوق كى)-

معَارِف ومسَائِل

فَاتَتُ بِهِ قُوْمَ اَتَحْدِدُهُ ، ان الفاظ سے ظاہر بہی ہے کہ حضرت مریم کوجب فیبی بشادتوں کے ذریعہ اسکا اطبینان ہوگیا کہ اللہ تعالیٰ مجھے بدنا می اور رُسوائ سے بچادیں گے توخود ہی اپنے نو مولود بچے کوئی کہ اللہ تعالیٰ مجھے بدنا می اور رُسوائ سے بچادیں گے توخود ہی اپنے نو مولود بچے کوئی کہ ایس کی کینے دن بعد ہوئی ۔ ابن عساکر کی دوایت ابن عباس عباس سے بیاس سے جا ایس دور بعد جب نفاس سے فراغت دطہارت ہو بچی اُس دقت اپنے گھروالوں کے پاس آئیں (دُدہ المعنانی)

تَنْ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ الْعُلَا فَوَى عربي زبان ميں درصل كاشنے اور بھاڑنے كے معنی ميں آیا ہے ،جس كام يا میں چیز کے ظاہر ہونے میں غیر معمولی كاش چھانٹ ہواً س كو فرى كہتے ہیں۔ ابوحیان نے نسرمایا كہ

سارت القرآن جسالة

ہرا مرقطیم کو فری کہا جاتا ہے خواہ دہ اچھائی کے استباد سے خطیم ہویا بڑائی کے استبارے ۔اس جگہری برا ذرکے معنے میں استعال ہوا ہے اور اس نفظ کا اکثر استعال ایسی ہی چیز کے لئے معرد ف ہے جو اپنی شناعت اور بڑائ کے اعتبارے غیر حمولی اور بڑئی مجی جاتی ہو۔

کی افت ملاوی ، حضرت ہارون علیہ اسلام جو حضرت ہوئی علیہ اسلام کے بھائی اور ساتھی میں حضرت مریم کے زمانے سے سیکروں ہوں پہلے گزر بیکے سے بہاں حضرت مریم کو ہارون کی بہن قرار دیتا اللہ ہے کہ اپنے اس فلا ہری خوص کے اعتبار سے نہیں ہوسکتا اسی ائے جب حضرت مغیرہ بن شعبہ رہ کو رسول الشرصلی الشر مکی کے خابی بخران کے پاس بھیا تو انھوں نے سوال کیا کہ تہارے قرائ میں حضرت مریم کو اُخت ہارون کہا گیا ہے حالا نکہ ہارون علیہ لسلام اُن سے بہت قرنوں پہلے گزر پی ہیں جھتر مخیرہ کو اس کا جواب معلیم نہ تھا جب واپس آئے تو رسول الشرصلی الشرمکی ہے اسکا ذکر کیا آئی نے مغیرہ کو اس کا جواب معلیم نہ تھا جب واپس آئے تو رسول الشرصلی الشرمکی ہے اسکا ذکر کیا آئی نے فرایا کہ آخت ہیں اور اُن کی طوف نسبت کیا کرتے ہیں روداہ احروسلم والترفدی والنسائی اس حدرت کے مطلب میں دواحقال ہیں ۔ ایک یہ کہ حضرت مریم کی نسبت حضرت ہارون کیلوف اس لئے کہ دور آئی کی نسب میں دواحقال ہیں ۔ ایک یہ کہ حضرت مریم کی نسبت حضرت ہارون کیلوف اس لئے کہ تو بیاں ہو جیسے عرب کی گو اخت ہیں۔ دو سراا حتمال یہ تھی ہے کہ کہ قبیل میں ہارون سے مراد ہارون بنی حضرت موئی علیہ اسلام کے رفیتی مراد نہیں بکہ حضرت مریم کے ایک میں ہارون سے مراد ہارون بنی حضرت موئی علیہ استلام کے رفیتی مراد نہیں بکہ حضرت مریم کے استہار کیا دون نمی کا نام ہا دون کو اخت ہوری کے اعتبار سے درست ہوگیا ۔

مَّا کَانَ اَبُوْ اِلِهِ اَمْرُ اَسَوْءِ ، ان الفاظِ قرائن سے اس طرف اشارہ ہے کہ جَیِّف اللیا الشراور صالحین کی اولاد میں ہو وہ اگر کوئ بڑا کام کرتا ہوتہ وہ عام لوگوں کے گناہ سے زیادہ بڑا گناہ ہوتا ہے کیونکہ اس سے اُس کے بڑوں کی رُسوائ اور بدنا می ہوتی ہے اس لئے اولا دصالحین کواعمال صالحہ اور تفویٰ کی زیادہ فکر کرنا چاہئے۔

آ تی تعین الله می دوایت میں ہے کہ جوقت خاندان کے لوگوں نے حضرت مریم علیم السلام کو طامت کرنا شروع کی حضرت بیلی علیم السلام دودھ پی رہے تھے۔ جب اضوں کے ان لوگوں کی ملامت کو سنا تو دو دھ چھوڑ دیا اور اپنی بائیں کروٹ پر سہارالیکرائن کی طرف توجہ ہوئے یہ الفاظ فرائے ان تحکیل الله یعنی میں اللہ کا بعدے اور انگشت شہادت سے اشارہ کرتے ہوئے یہ الفاظ فرائے ان تحکیل الله کی دیا کہ اگرجہ میری بندہ ہوں، اس پہلے ہی لفظ میں حضرت علیلی علیا اسلام نے اس غلط فہمی کا از الدکر دیا کہ اگرجہ میری بیدائش مجرزاندا ندازسے ہوئی ہے میں فدانہ ہی فداکا بندہ ہوں تک کہ لوگ میری پرتشن میں مبتلانہ ہو جائے اللہ میں میں میں فدانہ ہی فداکا بندہ ہوں تک کہ لوگ میری پرتشن میں مبتلانہ ہو جائے

آشینی الرکتاب و جعکینی قیبیا ، ان الفاظ می حضرت عیلی علیه السلام نے اپنی شیر خوادگی کے ڈ مانے میں اللہ توائی کی طوف سے بہوت اور کتاب طے کی خبر دی ۔ حالا نکد کسی بیفیر کو چا لیس ال کی عمر سے پہلے بہوت و کتاب بہیں منی اسلئے مفہوم اسکا یہ ہے کہ اللہ تفالی نے بیہ طے فرما دیا ہے کہ بجھے اپنے دقت پر بہوت اور کتاب دیں گے اور یہ بالکل ایسا ہے جبیسا کہ رسول اللہ صلی اللہ ملکیٹی کم فرمایا کہ مجھے بوت اس وقت عطاکر دی گئی تھی جب کہ آوم علیہ السلام ا بھی پریدا بھی نہیں ہوئے تھے آن کا خمیری تیاد ہور ہاتھا! س کا مطلب فل ہر ہے کہ اس کے سوانہیں کہ عطار نہوت کا وقد محمد اللہ علیہ دیلم کیلئے تعلیم اللہ علیہ وکئی کا میری والدہ پر بدکاری کا الزام لگانا مراسر فلط ہے کیونکہ میرانی ہونا اور مجھے دسالت کا بلنا اس کی دیل ہے کہ میری والدہ پر بدکاری کا الزام لگانا مراسر فلط ہے کیونکہ میرانی ہونا اور مجھے دسالت کا بلنا اسکی دلیل ہے کہ میری بیرائش میں کسی گنا ہ کا دخل نہیں ہوئے ۔

مادف القرآن ح

آونطیقی بالمقداؤی والدیکوی می چیزکاتهم جب زیاده تاکید کے ساتھ کیا جائے تواسکو دصیّت کے نفظ سے تعبیرکرتے ہیں حضرت میلی علایسلام نے اس جگہ فرمایا کدانشر تعالیٰ نے بچھے نما زاور دکوہ کی وصیّت فرمائ اسکامفہوم میہی ہے کہ بڑی تاکیدسے ان دونوں چیزوں کا مجھے تم دیا ۔

نمازاورزگون ، ایسی عبادین بین که آدم علیه استلام سے نیکرخاتم الانبیای الشرعلیه ولم کک ہرنبی و رسول کی شریعیت میں فرض رہی ہیں البتہ مختلف شریعیتوں میل کی تفصیلات اورجز ئیات مختلف دہی ہیں حضرت عیسلی علیہ السلام کی شریعیت میں بھی نمازا در ذکوٰۃ فرض تھے ۔ رہا یہ معاملہ کرعیلے علیہ السلام توسیمی مالدادہی نہیں ہوئے ، نہ گھر بنایا نہ کچھ جمع کیا پھر ذکوٰۃ کااُن کو حکم دیناکس بنار پر جمج تواسکا مقصد واضح یہ ہے کہ آئی شریعیت میں قانون یہ بنادیا گیا تھاکہ میں شخص کے پاس مال ہوائسپر زکوٰۃ فرص ہے عیسلی علیہ السلام بھی اسکے مخاطب ہیں کہ جب بھی مال بقدر نصاب جمع ہوجا ہے تو ذکوٰۃ ادا کریں بھراکر عمر بھر میں مہمی مال جمع ہی نہوتو یہ اُس کے منا نی نہیں ۔ در درج)

مّادٌ مُتُ حَبِيًّا، بِنِي نماز اور زكوٰۃ كائكم ميرے لئے دائمی ہے جب تک زندہ ہوں نظاہِ کُو كراس سے مراد وہ حیات ہے جواس عالم دُنیا میں زمین پر ہے كیونکہ بیراعال اسی زمین پر ہوسکتے دیاللہ يہيں سے علق ہیں آسمان پر اُٹھائے جانے مے بعد نزول کے زبانے تک رخصت کا زمانہ ہے۔

بَرُّ الْبِوَالِدَ بِنَ ، اس جَدُصرف دالده كا ذكركيا والدين كا نبين اشاره كردياكمبراؤجُدُ معجزانه طور پربغيروالدكم جواب اور بجين كايم عجزانه كلام اسك كنه كافي شهادت اور دليل م -

ذلك عيسك ابن مربك عربك قول الحق الآن في في الدي والم

هرالیا ہے سی کام کارٹا اسوینی کہتا ہے اسکو کہ ہو وہ ہوجاتا ہے ب دب میراادر رب تمهادا اسواسی بندگی کرد، 121 اور ڈرمنا مے اُل کو اُس بیتا وے کے دن کا ، جب فیصل ہوسے گا هُورِفَ غَفْلَةٍ وَ هُو لَا يُؤْمِنُونَ ١٠ إِنَّا نَحْنَ اور وہ محصول رہے ہیں۔ اور وہ یقین بنیں لاتے ہم وارث ہوں گے بُرِثُ الْاَرْمَ فَى وَمِنْ عَلَيْهَا وَ النِّنَا يُرْجَعُونَ فَى اورجو کوئ ہے زمین بار اور وہ ہماری طرف پھر آئیں کے زمین کے يرين مديلي بن مريم رجن كے اقوال واحوال مذكور بوئے جس سے ان كابندة مقبول ميونامعليم ہوتا ہے شرجیے کد عیسا یوں نے ان کو بندوں کی فہرست سے خارج کر کے خدا تک بہنجادیا ہے ادد شرد سے جیساکہ میہودیوں نے ان کومقبولیت سے خارج کر کے طرح طرح کی جمتیں لگائی ہیں ہیں (بالك) يكى بات كهر ربا مول جس ميں يه دا فراط و تفريط كرنے دالے) توك تھيكر ارسيس دينانجه

1.19 m.

معارف القرآن بسكدشتم

يہودونصاري كے اتوال او پرمعلوم ہوئے اور چونكم يہود كا قول ظاہراً بھى موجب تقيم نى تھاجوكم بھ ا باطل ہے اس لئے اسکے ر دکی طرف اس مقام پر توجہ نہیں فرمائ بخلاف قونی نصارٰی کے کہ ظاہر آمثبت زیادتِ کمال تفاکه نبوت کے ساتھ فدا کا بیٹا ہونا ٹابت کرتے تھے اس لئے آگے اس کو رُ د فرماتے ہیں جسكاهاصل يرسي كداسمين تعالى كي شقيص بوجه أنكار توحيد كازم أتى ب حالا تكهر) الشرتعالى کی پیرشان نہیں ہے کہ دہ دکسی کو) اولاد بنائے دہ (بالکل) پاک ہے دکیبو نکہ اس کی پیرشان ہے کہ) وه جب کوئ کام کرنا چاہتا ہے توبس اس کو اتنا فرما دیتا ہے کہ ہوجا سووہ ہوجا آ ہے دا درا کیے كال كے واسط اولادكا بوناعقلاً نقص ہے) اور (آب ا ثباتِ توحيد كے لئے توكوں سے فرما ديجة که مشرکین بھی شن لیں کر) بیشک الشرمیرامجی رب ہے اور تمہادا بھی رب ہے سو ر صرف اسی کی عباد كرد داور) يهى دخالص خداكى عبادت كرنايعنى توحيدا ختيادكرنا دين كا) مسيدها لاستربيع وتوحید برباد جودان عقلی اورنقلی دلائل قائم مرفے کے پھرتھی مختلف گرو ہوں نے داس بارہ میں) ماہم اختلات ڈال دیا دیعنی توحید کا انکار کرمے طرح طرح کے مذاہمیا ایجا د کرنئے) سوان کا فسروں کے لئے نیک برطے (بھاری) دن کے آجا نے سے بڑی خرابی دم ونے والی) ہے د مراد اس سے قیات کا دن ہے کہ بیر دن ایکزارسال دراڑاور برونناک ہونے کی وجرسے بہت عظیم ہوگا)حیں روز بیالے (حساب وجزاکے لئے) ہمارے یاس آدیں گے (اس روز) کیسے کچھ شنوااور بینا ہوجائیں گے۔ ارکیو نکه قیامت میں بیرحقائق بیشِ نظر درجا دیں گے اور تمامنز غلطیاں رفع ہوجاویں گی الیکن پی ظالم آج د دنیامیرکیسی صریح غلطی میں دمیتلا ہورہے) ہیں ، اور آپ ان لوگوں کوحسرت کے ن سے ڈرائے جبکہ رجنت دوزخ کا) اخیرنیصلہ کر دیا جا دیگا رجسکا ذکر حدبیث میں ہے کہ جنت ادر دوزخ والوں كوموت دكھلاكراس كو ذيح كردياجا ويكا اور دولون كو خلودر بعني بميشميشراس حال میں زندہ رہنے کا حکم شنادیا جا دے گا، رواہ الشخان دالتر مذی -اور موقت کی حسرت کا بید بیوناظا چرب) در ده لوگ (آج دُنیایس) غفلت میں دیڑے) ہیں ادر ده لوگ ایمان نہیں لاتے دلیکن آخرایک دن مرس کے) اور تمام زمین اور زمین پر رہنے والوں کے وارث رہین آخرمالک) ہم ہی رہ جادیں گے اور بیرسب ہمارے ہی یاس کوٹائے جاویں گے (پھرائے کفرو مثرک کی سزامجلتی کے)۔

مئارف ومسّائِل

سمارت القرآن جریک شخص ۱۹:۱۵ می توبین در زلیل میں بہا نتک کهدیا که وه یوسف نجار کی ناجا کزادلادیس کا بیض بنادیا ۱۱ در پرود نے آن کی توبین در نرلیل میں بہا نتک کهدیا کہ وه یوسف نجار کی ناجا کزادلادیس ایس محافظ التراسی محصح حیثیت ان آیات میں داشتی فرمادی در خطبی افرمادی در خطبی اسکی واضح ترکیب نحوی یہ ہے کہ اقبول خول المحق اسک اس کی واضح ترکیب نحوی یہ ہے کہ اقبول خول المحق اسک اس کے واس صورتیس مرادیم ہوگا کہ عیشی علیا لسلام خود قول آئی ہے اور سیس قول کے لئے سنا کہ ان کو کلتہ انٹر کا لفت بھی دیا گیا ہے کیو کہ انتی بیدائش بلا واسلم سیب نام ہری کے صدرت الشر تعالی کے قول سے ہوئ ہے دقیلی الله میں کے دیا گیا ہے کیو کہ انتی بیدائش بلا واسلم سیب نام ہری کے صدرت

یوم الحسرت بونا ظاہر بہ ایک دورکو یوم الحسرت اس لئے کہا گیا ہے کہ المی جہنم کو تو یہ حسرت بونا ظاہر بہ کہا گیا ہے کہ المی وہ مومن صلانے ہوتے تو ان کو جنت ملتی اب جہنم کے عذاب میں گرفتار ہیں۔ ایک خاص تسم کی حسرت اہل جنت کو بھی جوگی جیسا کہ طبران اور ابو یعلی نے ہروایت حضرت معافریہ صدیف روایت کی ہے کہ رسول الشرصلی الشرعکی ہے فرمایا کہ اہل جنت کو کسی جیز پرحسرت نہ ہوگی بجز ان لھی وقت کے جو بغیر ذکرالشرکے گزرگئے ۔ اور بغوی ہروایت ابو ہرین نقل کرتے ہیں کہ رسول الشرصلی الشرمکی ہے فرمایا کہ ہرمرف والے کو حسرت و ندامت سے سابقہ پڑھے گا۔ صحابہ کرام شنے سوال کیا کہ یہ ندامت کی حسرت کسی بنار پر ہوگی تو آج نے فسرمایا کہ نیک اعمال کرنے والے کو اس پرحسرت ہوگی کہ اور ایک واس پرحسرت ہوگی کہ اور ایس میں ان یہ ہوگی کہ اور نیا دہ در جات جنت طبح اور بدکار آوی کو اس پرحسرت

أبت إِنَّ أَخَافُ أَنَ يُمَسَّكَ عَنَ أَبُّ أَنَّ يُمَسَّكَ عَنَ أَبُّ أُمِّنَ اے باپ سیرے میں ڈوتا ہوں کیس آگے جھ کو ایک تو ہوجائے شیطان کا ساتھی ده اولا کیا تو پھرا ہواہ نَ الِهَ فِي ثَا بُرُ هِ يُو اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ عَلَيْ اللَّهِ اللَّهُ اللَّ سرے ٹھاکروں سے اے اہراہیم اگرتو باز مرآئے گاتو بچھ کوسنگسارکرونگا اور دور ہوجامیرے يا الله قال سَلْمُ عَلَيْكَ سَالُمُ عَلَيْكَ سَاسْتَغُوْرَكَ وَرَقَى وَالَّهُ یاس سے ایک ت کہا تیری سلامتی رہے یں گناہ بختوادُں گا تیراا ہے رہے بیشک عَفِيًّا ﴿ وَآغَتَرِثُكُو وَمَا تَنْعُونَ مِنْ دُونِ وہ ہے تھے پر میر مان اور جھوڑ تا ہول مے کو اورجن کو تم ہوجتے ہو اسٹر کے سوا وَ آدُعُوا رَبِينَ اللهِ عَسَلَى آلَا آكُونَ بِدُعَاءِ رَبِّي شَقِيًّا اور نیں بن گی کرونگا ہے دب کی ، اُمیر ہے کہ نہ رہوں گا اسے دب کی بندگی کر کر نَتَا اغْتَرَ لَهُمُ وَمَا يَعْبُ لُ وَنَ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَهَبُنَا لَهُ بمرجب جُدا ہما اُن سے اور جن کو وہ پوجتے سے الترکے سوا بختاہم نے اُس کو اور یعقوب اور دولوں کو نبی کیا اور دیا ہم نے آن کو اپنی رِّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِنْ فِي عَلِيًّا ﴿ رحمت سے اور کیا اُن کے واسطے سیجا بول اُدین ادر (اے محصلی الشرعکی اید اس کتاب ربین قران) میں راد کوں کے سامنے حضرت) ا براجيم وعليه السلام) كلاقصة وكركيجة وتاكران كوتوحيد ورسالت كاستكرزياده متكشف ہوجادے) دہ دہر تول نعل میں) برائے راستی دالے فاری نیم کے داوروہ قصر سیکا ﴿ ذَكُرُكُرْنَا اسْ عِكْمُ مقصود ہے اُس وقت ہوا تھا) جب كر أتفوں تے اپنے باب سے (جوكم شكر تفا) کہا کہ اسے میرے باپتم اسی چیزگی کیوں عبادت کرتے ہوجو نہ کچھ شنے اور نہ کچھ دیکھا در نہ میرا کے کھا کا آپائے کا م آسکے (مُراد بت ہیں حالا تکہ اگر کوئی دیکھتا سُنتا کچھ کا م آسا بھی ہو گو اجبالوجود نہ ہوت بھی ماری ہو تو وہ بدرجہُ اولی لا تو تعامت سے بھی ماری ہو تو وہ بدرجہُ اولی لا تو تعامت نہ ہوگا، اسے میرے باپ میرے پاس ایسا علم پہنچا ہے جو تمہادے پاس نہیں آیا (مراد اس سے وی ہے جس میں احتمال فلطی کا ہوہی نہیں سکتا ہیں میں جو کچھ کہدرہا ہوں قطعا حق ہے جب یہ بات ہے ہی تو تم میرے کہنے پرچلو میں تم کو سیدھا رستہ تبلاؤں گا (ادروہ توجیدہ) اسے میرے باپ تم شیطان کی پرستش مت کرو (یعنی شیطان کواور اس کی عبادت کو تو تم بھی پرُرا بجھتے ہو اور بُت پرسی میں خطان ہوں کی ایسے تعلا کو اور اس کی عبادت کو تو تم ادرکسی کی ایسی اطاعت کرنا کہ حق تعلی میں اسی سیطان و حضرت و تم اور ہے کہ وہی سیرک کا نافرمانی کرنے والا ہے (تو وہ کب اطاعت کرنا کہ حق الے مقابلے میں بھی اسی اندیشہ کرتا ہوں (ادروہ الا ہے (تو وہ کب اطاعت کرنا کہ وہ کو کی عزاب نہ آپر کے (خواہ دُنیا میں با آخرت میں) اندیشہ کرتا ہوں (ادروہ کو ہے میں میں شیطان کی طوت سے کوئی عذاب نہ آپر کے (خواہ دُنیا میں باآخرت میں) عقوبت میں مشیطان کی صامتی ہوجاد (یعنی جب اطاعت میں اس کا ساتھ دو گے تو نفس عقوبت میں بھی اسکاسا تھ ہوگا گو شیطان کو دُنیا میں عذاب نہ ہوا ہو ادراس شیطان کی معیت عقوبت میں بھی اسکاسا تھ ہوگا گو شیطان کو دُنیا میں عذاب نہ ہوا ہو ادراس شیطان کی معیت اورمشار کہ نے اسکاسا تھ ہوگا گو شیطان کو دُنیا میں عذاب نہ ہوا ہو ادراس شیطان کی معیت اورمشار کہت نے اسکاسا تھ ہوگا گو شیطان کو دُنیا میں عذاب نہ ہوا ہو ادراس شیطان کی معیت اورمشار کہت نے اسکاسا تھ ہوگا گو شیطان کو دُنیا میں عذاب نہ ہوا ہو ادراس شیطان کی معیت اورمشار کہت کی اسکاسا تھ ہوگا گو شیطان کو دُنیا میں عذاب نہ ہوا ہو ادراس شیطان کی معیت اورمشار کہتا کہ اورمشار کہتا کہ اورمشار کی کا دورہ کو دی ہوگا ہوگا کو شیطان کو دُنیا میں عذاب نہ ہوا ہو ادراس شیطان کی معیت

ا براہم علیہ السّلام کی بیتمام ترنصار کے سکر) باپ نے جواب دیا کہ کیا تم میرے معود دلا سے بھرے ہوئے ہو اے ابراہم (اوراس لئے بھر کو بھی منے کرتے ہو یا درکھو) آگرتم (ال بُتوں کی ندمت سے اور بھے کو ان کی عبادت سے منے کرنے سے) باز ندائے تو بیس صرورتم کو مار بچھوں کے سنگساد کر دو تھا (پس تم اس سے باز آجاد) اور بہش ہمیش کے لئے بھر (کو کہنے سننے) سے برکنادر ہو، ابراہیم (علیہ انسلام) نے کہا (بہتر) میراسلام او (ابتم سے کہنا سے کہنا شنا بے سود ہے) اب میں تمہا اے لئے اپنے دب سے معفرت کی داس طے) درخواست کر دنگا (کہمکو جوایت کرے جس پر مغفرت مرتب ہوتی ہے) بیشک وہ مجھ پر بہت مہر بیان ہے داس لئے اس سے عرف کر دنگا جسکا قبول فسرمانا یا نہ فرمانا دونوں مختلف اعتبار سے رحمت اور مہر بانی ہے) اور (تم اور تم اور تم فرمانا یا نہ فرمانا دونوں مختلف اعتبار سے رحمت اور مہر بانی ہے) اور (تم اور تم میں تمہا ہوگی سے برگنا دیوں، سے نہیں مانے تو تم میں رہنا بھی نفول ہے اس لئے) میں تمہا کہا ہوں کے میان دیکر اس میں نہیں) اور دا طبینان سے ملیحدہ ہوگر) ابین دیکر اس کے دب کی عبا دت کر وہی نہیں) اور دا طبینان سے ملیحدہ ہوگر) ابین دہا تھی نہیں) اور دا طبینان سے ملیحدہ ہوگر) ابین دہا کہ میں نہیں) اور دا طبینان سے ملیحدہ ہوگر) ابین دیکر اسیس بھی مزاحمت ہوگی) اُمید (دینی بھین) ہیں ایک دبھی تا در کو کی اور کی کیا دہ کر اسیس بھی مزاحمت ہوگی) اُمید (دینی بھین) ہوگر)

(F)

سويري مايي : ١٩:٠٥

بعاد ف القرآن جسالة شم

کہ پنے دب کی عبادت کرکے محروم ند دہوں گا (جیسا بُٹ پرست اپنے باطل معبود دوں کی عبادت کرکے محروم دہتے ہیں، غومن اس گفتگو کے بعدائن سے اس طرح علیحدہ ہوئے کہ ملک می کیوان ہجرت کرکے چوا گئے) بس جب ان کوگوں سے اور جن کی وہ کوگ فدا کو چھوڑ کر عبادت کرتے تھے اُن سے داس طرح) علیحدہ ہوگئے (تو) ہم نے اُن کو آعی (بیٹیا) اور دیقوب دبیتا) عطا فرمایا جو کہ کہ دفاقت کے لئے اُن کی بُٹ پرست برا دری سے برد جہا بہتر سھے) اور ہم نے (ان دونوں میں) ہر آیک کو نبی بنایا اور ان سے کو ہمنے (ران دونوں میں) ہر آیک کو نبی بنایا اور ان سب کو ہمنے (طرح طرح طرح کے کمالات دبیر) ابنی رحمت کا حصتہ دیا اور (آئنکہ ہ نسلونیں) ہمنے اُنکا نام میں اور ہمنے کی اور ہمنے کی اور ہمنے کے مساتھ عمل اور تا تارک مساتھ ویکر کرتے ہیں اور آئی کی مساتھ عبل ان ہی صفات کے مساتھ عطا ہو چیکے تھے)

معارف ومسائل

صدق کا یہ مقام حاصل کرنے وہ میں مدان کے اسکانی کا یک اصطلاق انظامیہ اسکانی افتظ ہے اسکامنے اور تعربین کی تعربین کی تعربین کی تعدل ہے اسکامنے اور تعربین کی تعربین کی تعدل ہے اسکامنی کی تعدبی اسکانی کی تعدبی اسکانی کی تعدبی اسکانی کی تعدبی کے تعدبی اسکانی کی تعدبی کے تعدبی اسکا ہونوں اور ہر ترکت وسکون اسی اعتقاد اور تول کے تابع ہو۔ وقع المعانی اور تنہی و نیروسیں اسی آخری معنے کو اختیار کیا ہے اور ہم میں مقادت ہیں۔ اس اعتقاد اور تول کے تابع ہو۔ وقع المعانی اور تنہی و نیروسیں اسی آخری معنے کو اختیار کیا ہے اور ہم میں مقدیق ہونا و صعب لازم ہے مگر اس کا مکس تو بی و رسول ہی ہوسکتا ہے اور ہم نی دور اس کا مکس نہیں کہ جو جسدیت ہو اسکانی ہونا اور کی کو تو دو دور کے اسباع میں مسدق کا یہ مقام حاصل کرنے وہ میں جسکت کیا ۔ حضرت مربی کوخود و شکر آن کریم نے مسدق کا یہ مقام حاصل کرنے وہ میں جسکت کیا ۔ حضرت مربی کوخود و شکر آن کریم نے المدنی ہوں کا خطاب دیا ہے حالا نکہ جہوراً میت کے نز دیک و وہ نبی نہیں، اور کوئی عورت نبی

ا بن بروں کونصیحت کرنے کا ایک بہت ، عربی دفت کے اعتبارے یہ نفظ باپ کی تعظیم و مجت کا طریقہ اوراُس کے آداب خطاب ہے ۔ حضرت فلیل النترعلیہ الصّاوٰة دالسلام کوحی تعالیٰ فیجو مقام جامعیت اوصاف و کمالات کا عطافر مایا تھا، اُن کی یہ تقریر جو اپنے والد کے سامنے ہوری ہے اعتدال مزاج اور دعایت اصداد کی ایک بے نظیر تقریر ہے کہ ایک طرف باپ کوشرک کفراور کھی گراہی میں مذصرف مبتلا بلکہ اسکا داعی دیکھ رہے ہیں جس کے مثانے ہی کے لئے فلیل النتر پیدا کئے گئے ہیں، دوسری طرف باپ کاادب اور عظمت و محبت ہے اِن دونوں صدول کو حضرت ضابل النتر پیدا کئے گئے ہیں، دوسری طرف باپ کاادب اور عظمت و محبت ہے اِن دونوں صدول کو حضرت ضابل النتر نے کس طرح جمع فرمایا اول تو یک اُنگیت کا نفظ جو باپ کی مہر ما نی اور محبت کا

빛

داعی ہے ہر جلد کے سر وع میں اس نفظ سے خطاب کیا بھر کسی جلدیں باپ کی طرف کوئ نفظ الیسا سنسو بہنیں جس سے اسکی تو ہین یا دل آزادی ہوکہ اُس کو گراہ یا کافر کہتے بلکہ حکمت بینی برانہ کے مما تھ صرف آن کے مہون کی ہے ہی اور ہے حسی کا اظہار فرما یا کہ ان کونو دا بن خطار وش کی بلوت تو جہ ہوجائے ۔ دو مرے جلد میں اپنی اس نعمت کا اظہار فرما یا جوانٹر تعالیٰ نے آن کوعلوم نبوت کی عطافر مائ تھی تیسرے اور چو تھے جلے میں اُس انجام برسے ڈرایا جواس سِرک و کفر نے تیجہ میں اُس انجام برسے ڈرایا جواس سِرک و کفر کے تیجہ میں اُس انجام برسے ڈرایا جواس سِرک و کفر کے تیجہ میں اُس انجام برسے ڈرایا جواس سِرک و کفر کے تیجہ میں اُس انجام برسے ڈرایا جواس سِرک و کفر کے تیجہ میں اُس انجام برسے ڈرایا جواس سِرک کی ایس لو افقیار کرتے ہورے آند د کے ساتھ فطاب کیا اُکھوں نے تو خطاب اُکہ اُن کو نہا ہوتا ہا ہے تھا سرگ آزر نے ان کا نام دیکہ یکر آنگر آنہ کے بیا دے نفظ سے کیا تھا ہوتا جا ہے تھا سرگ آزر نے ان کا نام دیکہ یکر گرا آب کی جو نا ہا ہے تھا سرگ آزر نے ان کا نام دیکہ یکر گرا آب کی دھی اور کھرسے جل جانے اسکا جواب صفی اور کی اور کھرسے جل جانے اسکا جواب حضرت خلیل اور گورسے کیا ما تا ہے وہ شینے اور یا در کھنے کے قابل ہے فرمایا : صفرت خلیل اور کی طرف سے کہا ما تا ہے وہ شینے اور یا در کھنے کے قابل ہے فرمایا :

سکتھ علی اور سے معلام مقاطعہ ہوئے کے اسے ہوسکتا ہے اول یہ کہ بیرسلام مقاطعہ ہوئی کسی سے قطع تعلق کرنرکاسٹریفائہ اور دہ ذب طریقہ یہ ہے کہ بات کا جواب نینے کے بجائے افظ سلام کہہ کر ملیحدہ ہوجائے جیسا کہ قرآن کریم نے اپنے مقبول صالح بندوں کی صفت ہیں بنیان فرایا ہے: وَ اِذَا خَاطَبَهُ وَ اِنْیَ اِیسا کہ قرآن کریم نے اپنے مقبول صالح بندوں کی صفت ہیں بنیان فرایا ہے: وَ اِذَا خَاطَبَهُ وَ اِنْیَ اِیسا کہ قرآن کریم نے اپنی جب ما ہل ہوگ ان سے دو بدو ہوئیے بجائے لفظ سلام کہتے ہیں جسکا مطلب یہ ہے کہ با وجود مخالفت کے بین تھیں کوئ کر نداور تکلیف نہ بہنچاؤں کا داور دوسرامفہوم یہ ہے کہ بہاں سلام عرفی معلام نہ ہوئی اسی فقہی اشکال یہ ہے کہ کسی کافر کو ابتداؤ سلام کرنا مدیث میں ممنوع ہے معلام بیاری وظم میں حضرت الوہ ریو ہونے سے دوایت ہے کہ رسول انٹرصلی انٹر مکی نے فرک سریا لا تبدل واالیہ ودو کو النجازی بالشلاھ رینی بہود و فصاری کو ابتداؤ سلام نہ کرون کو اسٹر صلی انٹرصلی انٹر مکی کے ایک اور دوایا ت حدیث میں ایک الیے جمع کو ابتدائی سلام کرنا خود درسول انٹرصلی انٹرمکی ایک اس کے بالمقابل بیمن دوایا ت حدیث میں ایک ایے جمع کو ابتدائی سلام کرنا خود درسول انٹرصلی انٹرمکی اسے خاب سے خاب سے جمع سے بالہ میں کو ارتبدائی سلام کرنا خود درسول انٹرصلی انٹرمکی اور سالی میں دوایا ت حدیث میں ایک ایو کرسلیان سب جمع سے جیا کہ میرے بی مسلم ہی میں کو ارتبدائی سالام کرنا دوایت خاب کو کہ کو ایک اسلام میں کرنا دوایت خاب کو کہ کو ایک کو کرنا دوایت خاب کو کہ کو کہ کو کرنا کو درسول انٹرصلی انٹرمکی میں کو کرنا کو درسول انٹرملی کی کرنا کو درسول انٹرملی کو کرنا کو درسول انٹرملی کی کرنا کو درسول انٹرملی کو کرنا کو درسول انٹرملی کے کہ کو کرنا کو درسول انٹرملی کو کرنا کو کرن

اسی کے فقہار اُ مّت کااس کے جواز دعدم جواز میں اختلات ہوا یبض صحابہ آبابین اور ائمہ مجہد بین کے قول وعمل سے اسکا جواز ثابت ہوتا ہے بعض سے عدم جواز جس کی تفصیل قرطبی نے احکام القرآن میں اسی آیت کے تحت میں ان کی ہے ۔ اور امام نخی نے یہ فیصلہ فرمایا کہ اگر تمھیں احکام القرآن میں اسی آیت کے تحت میں ان کی ہے ۔ اور امام نخی نے یہ فیصلہ فرمایا کہ اگر تمھیں کو ابتدائی کا فریع ودی نصر ان سے ملنے کی کوئی دینی یا گذیوی ضرورت بیش آجائے تواس کو ابتدائی مسلام کرنے سے بچنا چاہئے۔ اسمیں مذکورہ مسلام کرنے سے بچنا چاہئے۔ اسمیں مذکورہ

معارف القرآن جسكير ششم

دونوں صریوں کی طبیق ہوجاتی ہے والتراعلم _ (قرطبی)

سا سُتَغَوِّمُ لَكَ دَرِقَ ، یہاں سی یہ اشكال ہے کہ کسی كا نسرے ہے استعفاد كرناشوا منوع و ناجائز ہے ۔ حضرت دسول الشرصلی الشر ملکی ہم نے اپنے چچاا ہو طالب سے فسر مایا تھا كہ دَاللّٰه لاستعفیٰ نَ لك مالو اللّٰہ عنہ رفینی بخدا میں آپ کے لئے اسوقت تک صرور استعفاد یعنی دعاد منفرت كرتار ہو لگا جب تک الشر تعالیٰ كی طرف سے مجھے منع نہ فرما دیا جائے) اس پر یہ آیت نا ذل ہوئی مَا كَانَ لِلنَّا بِی وَالَّذِیْنَ الْمَنْوَا اَنْ يَسْتَغَفِيمُ وَاللّٰهُ شَرِكِيْنَ رفینی نبی اور ایمان دالوں کے لئے جائز نہیں ہے کہ مشركین کے لئے استعقاد كریں ، اس آیت کے نا ذل ہونے پر آینے بچاکے لئے استعقاد كرنا جھوڑ دیا ۔

جواب اشكال كايه ہے كہ حضرت ابراہيم عليالتلام كاباب سے وعدہ كرناكه آب لئے استنفار کرونگا یہ مانعت سے پہلے کا واقعہ ہے اس کے بعد ممانعت کر دی گئی سورہ ممتحنہ میں حق تعالیٰ نے خود اس واقعہ کو بطور استثنار ذکر فرماکر اس کی اطلاع دیدی جوالد قول إَنْبِوٰهِمَ كَيْشِهِ لَرَسْتَغْفِيمَ فَ لَكَ اورأس عن ياده واضح سورة توبرسي آيت مذكوره ما كان لِلنَّيِي وَالَّذِيْنَ أَمَنُوآ أَنُ يَبُنتَغُفِمُ وَاك بعد دوسرى آيت ميں فرمايا ہے وَمَا كَانَ اسْتِخْفَادُ میں سے معلوم ہواکہ یہ استفقار اور اسکا وعدہ باپ کے کفر پر جمے رہنے اور فعدا کا دشمن ثابت ہونے سے پیلے کا تھاجب برحقیقت واضح ہوگئی تو انھوں نے بھی برارت کا علان کردیا۔ وَاعْتَذِلْكُووَمَا مَنْ عُونَ مِنْ دُونِ اللهِ وَأَدْعُوارَيِنْ ، أيك طرف توحضرت خليل الشرعليه الصلوة والسلام نے باب سے اوب و مجت کی رعایت میں بیانتہار کردی جس کا ذکراور آچکا ہے دوسری طرف میر مجی نہیں ہونے دیا کہ حق کے اظہار اور اُس پر صنبوطی کو کوئ ادفی سی تھیس لگے ، باب نے جو گھرے نیل جانے کا حکم دیا تھا اس کو اس حملہ میں بختی منظور کرایا اور ساتھ ہی یہ بھی بتلا دیا کہ میں محمادے بوں سے بیزار بوں صرف اینے رب کو بگارتا ہوں -فَلْنَا اعْتَوْلَكُمْ وَمَالِيعُبُدُونَ مِنْ وَوَ لِللَّهِ وَهَبُنَالَ الشَّيْقَ وَيَعَقُّوبَ ، اس جمل سے بہلے جمامیں ابراتيم عليه السلام كايرقول آيا ہے كمين أسيدكرتا موں كميں اسے يرورد كارے دعاكر فين اكل ونامراد نہیں ہونگا۔ظاہریہ ہے کہ گھراور فائدان سے قبدای کے بعد تنهای کی وحشت وغیرہ کے ا ٹرات سے بھینے کی دُعامُراد تھی مذکورہ جلہ میں اس دُعار کی قبولیت اس طرح بیان فرمائ گئی ہے كهجب ابراميم عليالسلام في الشرك لئة ابين كفر خا ندان ا در أن كم عبود و ل كوجهور ديا توالسُّرتفاك في اسى مكافات اس طرح فرمائ كدان كوصاحيرا ده اسحى عليدالسلام عطافرمايا اورسائه بى اس كا

ولامترنسير

منائے آیس رہی کی بڑتے ہیں جدہ میں اور روتے ہوئے

ا دراس کتاب رمعین قران میں مولی (علیالسلام) کا بھی ذکر مینے (بعنی لوگونگوشا کے ورنه كتاب مين وكركرنے والاتو في الحقيقت الله تعالى ب، وه بلاشبرالله تعالى كے خاص كئے اوے دبندے عقے اور وہ رسول می عقم بنی می عقم اور ہم نے اُن کو کوہ طور کی دارسی جانب سے آواز دی اور ہم نے اُن کوراز کی بایس کرنے کے لئے مقرب بنایا اور یم نے اُن کو اپنی رحمت (اور عنایت) سے اُن کے بھائ ہارون کونبی بناکرعطاکیا دیعنی اُن کی درخواست کے موافق اُن کونبی کیاکه اُن کی مدوکریں) اور اس کتاب میں اسماعیل دعلیابسلام) کا بھی ذکر کیجئے بلاشیہ وہ وعامے کے دیڑے) سیحے تھے اور وہ رسول بھی تھے نبی بھی تھے اور اپنے متعلقین کو نماز اور زکوۃ کارخصوصاً اور سی احکا کاموما محم کرتے رہتے تھے اور وہ اپنے پر در دگار کے نز دیک پندبیرہ تقاور کس كتاب مين ا دريس دعليالسلام كالجي ذكر كيجة ميتك ده يرسي دالتي دل يني عقم ادريم في ان كو د کمالات میں ، بلند رہ تبریک پہنچا دیا یہ (حصرات جن کا سٹر دع سورت سے بہاں تک ذکر ہوا ذكريا عليه السلام سے ادريس علىلے بسلام بحك يير) وہ لوگ ہيں جن پر الشرتعالی نے رفاص) انعمام فرمایا ہے دجنا نجیر نبوت سے بڑھ کر کوئنی نفت ہوگی منجلہ دونگر ، انبیار دعلیہ السلام ، کے دفیصف سب مذکورین میں مشترک ہے اور بیسب) آدم دعلیالسلام) کی نسل سے دیتے اور رابعضان میں) ان توگوں کی نسل سے دیتھے ، جن کوہم نے نوح د علیالسلام ، کے ساتھ دکشتی میں) سواد كياتها دجنانجر بحرادرس عليالسلام كحكدوه اجدا دنوح عليالسلام سيين بأقى سيبي وصفي ا در دبعض ان مين ابراميم دعليه السلام) ا در بعقوب دعليه السلام) كي نسل سے دعقے چنانچ وضرت وكريا ديجلي وعليى وموحى عليله لسلام دولؤل كى اولاد مين سقيم اورائحق والمعيل ولعقوب عليه السلام صرف حضرت ایرانهیم کی اولادمیں تھے) اور (بیرسب حضرات) اُن لوگوں میں سے (تھے) جنگو ہم نے ہدایت فرمائ اوران کومقبول بٹایا داور باوجود اس مقبولیت واختصاص کے ان سب حضرات موصوفین کی عیدمیت کی بیکیفیت تھی کہ) جب ان کے سامنے (حضرت) احمان کی آتیس بڑھی جاتی تئیں تو دغیایت افتقار و انکسار دانقیاد کے اظہار کے لئے) سجدہ کرتے ہے اورروق يوح (زمين ير) روات تح -

معادف ومسائل

کان گفتگی ا محکف بختی بختی ام ده خص می کوالشرتعالی نے اپنے لئے خاص کرلیا ہو معنی جس کو الشرکیط و الشرکی طرحتی کے لئے مخصوص کردیا غیرالشرکیط و نالشفات میں ہو ایس نے اپنے نفس اور تمام خواہشات کوالشرکی مرحتی کے لئے مخصوص کردیا ہو۔ یہ شان خصوصی طور پر انبیار علیہم السلام کی ہوتی ہے جیسا کہ قرائن میں دوسری جگہ اوشا دہری (تاً المُحْلَّفُ مُنا حُمُّ بِحِنَا لِحِسَة فِر کُری اللَّالِ السخام کے نفتر میں دوسری جگہ اوشا دہری الماضی و الماضی میں جو حضرات کا ملین انبیار علیہم السلام کے نفتر قدم پر ہوں اُن کو بھی اس تھام کی یا دیے گئے۔ اُست میں جو حضرات کا ملین انبیار علیہم السلام کے نفتر قدم پر ہوں اُن کو بھی اس تھام کا ایک درجہ ملت ہے اس کا علامت یہ ہوتی ہے کہ دہ قدر تی طور پر گنا ہوں اور بُرائیوں سے بچا دئیے جاتے ہی اسٹر تعالی کی حفاظت ان محمد انتھ ہوتی ہے۔

مِنْ جَادِنِ الطَّلُورِ ، بِمِشْهُور بِهِ الْمُلُ شَامِ مِن مصراد رَمُدُ بَن کے درمیانُ اتَّح بِرَ آج بھی اسی نام سے شہور ہے جن تعالیٰ نے اسکو بھی بہت سی چیز دل میں ایک خصوصیت وانتیا آدیا ہے اسی نام سے شہور ہے جن تعالیٰ نے اسکو بھی بہت سی چیز دل میں ایک خصوصیت وانتیا آدیا ہے الحق بھی علیائسلام کے اعتبار سے بتلائی گئی ہے کیے تک وہ مُدُینُ سے چلے تھے جب طور کے بالمقابل پہنچے توطور اُسکی داہنی جانب تھا ۔ جَجُینُا اُسرُوشی اور شخص سے ایساکلام کیا جائے اُس کو نجی کہا جاتا ہے ۔ اور خصوصی کلام کو مناجات اور جن خص سے ایساکلام کیا جائے اُس کو نجی کہا جاتا ہے ۔

کَوَهَمْ اللَّهُ عَنْ تُرْخَیْ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ دعاکی تفی کدان کی ایداد کے لئے حضرت ہارون کو بھی نبی بزادیا جائے یہ دُعا قبول کی گئی ای کونفظاد کھنڈنا سے تعبیر کیا گیاہے بعنی ہم نے عطیہ دیدیا مونی علیہ السلام کو ہارون کا ۔ اسی لئے حضرت ہارون کو هبتہ اللہ بھی کہا جاتا ہے ۔ (مظلوی)

قاد کی فی الگذشیرا شمیدی ، ظاہریہ ہے کہ اس سے مُواد حضرت المعیل بن ایراہم علیہ السلام ہیں سر الکون کا ذکر اُن کے والدا در بھائ ایراہیم و آئی کے ذکر کے ساتھ بنیں فرمایا بکہ حضرت موسیٰ علیہ السلام کا ذکر درمیان میں آنے کے بعد ان کا ذکر فرمایا ۔ شایداس سے مقصودان کے ذکر کا فاص ا بہتمام ہوکہ ضمنی لانے کے بجائے مستقلاً ذکر کیا گیا ادر یہاں جننے انبیار علیم السلام کا ذکر کیا گیا ہی انہیں دیکے زمان راجت کی ترتیب بنہیں رکھی کئی کیونکہ ادریس علیہ السلام جن کا ذکر ان سب کے بعد آدما ہے وہ ذمانے کے لحاظ سے ان سب سے مقدم ہیں ۔

گان مَهَادِی الْوَقْلِ ، ایفار دعده ایک ایساخلِق حن سے که ہرستریف آدمی اس کو صروری مجھتا ہے اور اس کے خلاف کرنے کو ایک رذیل حرکت قرار دیا جاتا ہے حدیث میں دعدہ خلافی کو نفاق کی علامت بتلایا ہے ، اسی لئے اسٹر کاکوئ نبی ورسول ایسا نہیں جو صادق الوعد مد ہو مگر اس سلسلہ کلام میں فاص فاص انبیار علیہ مالتلام کے ذکر کمیاتھ کوئی فاص وصف بھی ذکر کیا گیا ہے اسکایہ مطلب نہیں کہ یہ و صف دوسروں میں نہیں بلکہ اشارہ اس بات کی طوف ہے کہ انمیں یہ فاص صفت ایک انتیازی حیثیت رکھتی ہے جیسے ابھی حصرت موسلی علیہ السلام کے ذکر کے ساتھ ان کا مخلص ہونا ذکر فر مایا ہے حالا تکہ بیصفت بھی متمام انبیار علیہ مالسلام میں عام ہے مگر حضرت موسلی علیہ لسلام کو اسمیں ایک فاص انتیاز حال متحال انتیاز حال اس لئے اُن کے ذکر میں اسکا ذکر فر مایا گیا ۔

حضرت اسهاعیل هلیہ السلام کا صدقِ وعدمیں امتیا ز اس بنار پرہے کہ اُ تھوں نے جس چیز کا وعدہ الشرسے یاکسی بندے سے کیا اس کو بڑی ضبوطی اورا ہتمام سے پوراکیا، اُ تھو نے اللہ سے دعدہ کیا تھا کہ اپنے آپ کو ذیح کرنے کے لئے پیش کر دیں گے اورائس پرصبرکر نیگے اس میں پور کے اُرزے ۔ ایک شخص سے ایک جگہ ملنے کا وعدہ کیا وہ وقت پر مذایا تو اُسکے اس میں تین دن اور بعض روایات میں ایک سال اُسکا انتظار کرتے رہے (مظہری) اُو ہمارے رسول صلی الشرعکی ہے میں ترذی میں بروایت عبدالشراب ابی الحسار ایساہی واقعہ کا وعدہ کرکے تین دن تک اُسی جگہ انتظار کرنے کا منقول ہے (قطبی)

ر ایفائے وعدہ کی اہمیت ایفائے وعدہ انبیاء وصلحار کا وصفِ خاص اور تمام ستربیف انسانو بھی اور کشس کا درجیہ عادت ہے اسکے خلاف کرنا فسّاق فجآد ر ذیل توگوں کی خصلت ہے۔

عدیث میں رسول الشرصلی الشرعکی کا ارشادہ العدی جات ، وعدہ ایک قرض ہے تعنی جس طرح توضی کی ادائیگی انسان پرلازم ہے اسی طرح وعدہ بوراکرنے کا انہما بھی لازم ہے۔ دوسری ایک میسیت میں یہ الفاظ ہیں و ای المرض واجب تعنی وعدہ مون کا واجب ہے۔

 آگ سے بھیراسیں حضرت اسماعیل کی خصوصیت کیا ہے۔ بات یہ ہے کہ بیکم آگرچہ عام ہے اور اسمی مسلمان اس کے مکلف ہیں لیکن حضرت اسماعیل علیا اسلام اسکا ہتمام و انتظام میں امتیازی کوشش فرطتے تھے جیساکہ رسول الترصلے التر عکی نے صوی ہدایت می تھی کہ وَاَنْکِ مُعَیْثُ کُرُوَا وَاللّٰهُ مِلْمِیْ اللّٰهِ عَلَیْ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰمُ الللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰمُ اللّٰهُ الللّٰمُ اللّٰمُ

دوسری بات بہاں قابل غوریہ ہے کہ انبیاطلیم السلام سب کے سب پوری قوم کی ہوایت کے سعوف ہوتے ہیں ادروہ بھی کو بیغام حق بہنچاتے اورا مرائلی کا پابند کرتے ہیں اہل عیال کی خصوصیت میں کیا حکمت ہے ہجات یہ ہے کہ دعوت بیغبرانہ کے خاص اُصول ہیں اُن میں یہ اہم کی خصوصیت میں کیا حکمت ہے ہجات یہ ہے کہ دعوت بیغبرانہ کے خاص اُصول ہیں اُن میں یہ اہم بات ہے کہ جو ہوایت عام خلق اللہ کو دی جائے اُس کو پہلے اپنے گھرے سروقت کی جاسکتی ہے اور دہ جب کواسکاما نما اور منوا نانسبتہ اُسان بھی ہوتا ہے اُس کی نبرگرانی میھی ہروقت کی جاسکتی ہے اور دہ جب کسی خاص رنگ کو اختیار کر لیاج اُسیں پختہ ہوجا دیں تو اس سے ایک دینی ماحول بیدا ہو کردعوت کو عام کرنے اور دو مروں کی اصلاح کرنے میں بڑی توت بیدا ہوجادے گی ۔ اصلاح خلق کے بنے مسی سے زیا دہ موثر چیزا کے صیح دینی ماحول کا وجود میں لانا ہے ۔ تجربہ شاہد ہے کہر مصلائی یا مسی سے زیا دہ موثر چیزا کے صیح دینی ماحول کا وجود میں لانا ہے ۔ تجربہ شاہد ہے کہر مصلائی یا میکی آخری تعلیم وتعلم اور افہام وتفہیم سے زیا دہ ماحول کے ذریع تھیلتی اور بڑھتی ہے ۔

وَدَفَعَنْ مُحَاثًا عَلَيْهِا مَعِنَى مَم فَ ادرسِ عليه السلام كومقام بلندير أعقاليا - معن يهي كم ان كونبوت ورسالت اور قرب اللي كافاص مقام عطافر ماياكيا - ادر تعبن روايات يرج الكاآسان برأشانا منقول ہے ان كے متعلق ابن كيثر رم في فرمايا :

یدکوب احباد کی کمسرائیلی د دایات میں سے ہے اور اُن میں سے معبض میں تکارت د اجنبیت ہے ۔

من احن اخباركعب الاحبارالاسرائيليات وفي بعضه نكارية



44.19 mengen 16.11.14

معارف القرآن م لله شم

والمرتفيير

معارف ومسائل

خالف ، ید نفظ بسکون لام برک قائمقام برگ ادلاد کے لئے اور بفتح لام اچھے قائمقام اور الجھی اولاد کے لئے استعمال ہوتا ہے دم ظامری مجا ہورہ کا قول ہے کہ یہ واقعہ قرب تیا مت میں سلحاء اُمت کے تم ہوجانے کے بعد ہوگا کہ نما ذکا طرف الشفات نہ ہے گا اور نست و فجور گفتم گھلا ہونے لگے گا۔

مناز ہے وقت یا بلاجاعت پڑھنا اُمناعُوا المشاطوع ، نماذ کے صابح کرنے سے مراد جہود مفسری افساعت نماز اور گخاری عظیم ہے عبدالشرین سعود ۔ نختی ۔ قاسم ۔ مجا ہد۔ ابراہیم ۔ عمر بن عبدالغزیز وغیرہ کے نزدیک نماذ کو اُس کے وقت سے موخر کرکے برٹھنا ہے اور بعض حصرات نے فرمایا کہ نماذ کے اور بعض حصرات نے فرمایا کہ نماذ میں وقت بھی داخل ہے اضاعت نے کھر میں نماذ ہیں شابل ہے اور بعض حصرات نے فرمایا کہ اضاعت سے کھر میں نماذ ہیں شابل ہے اور بعض حصرات نے فرمایا کہ اضاعت سے گھر میں نماذ ہیں شابل ہے اور بعض حصرات نے فرمایا کہ اضاعت صابح اللہ عامات کے گھر میں نماذ ہیں خطری ۔ یعنی حیاط ن

حضرت فاروق عظم رمز في اين سب عُمّال حكومت كويه بدايت نامه لكه كر بهيجا عقا ا

معارف التران جسكد سوري مسير ١٩:١٩ ان اهما مركم عندى الصِّلوة _فمن ضيَّعها ميرے نزديك تبهادےسب كامون ميں سے ذمادہ اہم نمازے توجیف نمازکوضائع کرتاہے دہ دوسے فهولما سواها اضيع رمؤطاء مالك) تمام احكام دين كويهي ادر زياده صالح كرے كا -حضرت حذلینه رمز نے ایک شخص کو دیکھاکہ تماز کے آداب اور تعدیل ارکان میں کوتا ہی کرتا ہے توأس سے دریافت کیا کہم کب سے یہ نماز پڑھتے ہوؤائس نے کہا کہ چالیس سال سے ،حضرت مذیفہ من نے فرمایا کہتم نے ایک بھی نماز نہیں پڑھی اور اگرتم اسی طرح کی نمازی بڑھتے ہوئے مرکئے تو یا درکھو كه قطرت محرصى الشرعكي لم ك خلات مروك _ تر مذی میں حضرت ابوسعو د انصاری رہ سے روایت ہے کہ رسول انترصلی انترعکی الترعکی ہے في وماياكه أستنص كي تماد منيس بوتي جوتما زمين اقامت سركرے - مرادير بے كرجو د كرع ادر سجده ين اورركوع سے كھرك ہوكر ما در كروں كے درميان سيدهاكم ابونا ياسيدها بيشے كا اہتمام نه کرے اس کی تمار نہیں ہوتی۔ خلاصہ یہ ہے کہ حب شخص نے دصنور اور طہارت میں کو تا ہی کی یا نماز کے رکوع سجامے ایس یاان دو او بح درمیا سیدها کھڑے ہوئے سیھنے میں جلد مازی کی اُس نے نماز کو ضائع کردیا ۔ حضرت حسن في فاضاعت صلحة اوراتباع شهوات كے بالے ميں قرما ياكمسجدوں كو كرديا اورصنعت وتجارت اورلذّات وخواسشات بين مبتلا موكئ -امام قرطبی ان روایات کونقل کرے فراتے ہی کداج اہل علم اورمعروف بالصلاح لوگونیں اليه آدمي بلئے جانے بيں جونما زكر آدائے غافل الحض نقل وحركت كرتے ہيں۔ بير حيثى بجرى كاحال تقاجسين ايسے توك فال فال يائے جاتے تھے آئے بيصورت حال نمازيوں ميں عام ہوكئى، إلاّ ما شار الله - نَعُودُ بِاللَّهِ مِنْ شَكُورِ إِنْفُسِنَا وَإَعَمَالِنَا وَالتَّبُعُواالشَّهُونِ ، شهوات سے مُراد دُنیا کی وہ لڈتیں ہیں جوانسان کو التّٰہ کی یا دادر نمازسے غافل کریں، حضرت علی کرم الشر دجہ بے فسسر ما یا کہ شاندا رمکا بؤں کی تعمیرا درایسی شاندا سوار ہوں کی سواری میں ہر لوگوں کی نظمری اعمیں ، اور ایسالیا سجس سے عام لوگوں میل متیاز كى شان نظر آئے شہوات مذكورہ يى داخل بى دخطى) فَسُونَ يَكْفُونَ غَيّاً، لفظ عَى عربى زبان مين رشادك بالمقابل به بركعبلاي ا درخیر کو رشاد اور ہر برای اورسٹر کوغی کہا جاتا ہے حضرت عبدالشر بن سعود رہ سے نقول ہے كرغى جہتم كے ايك خاد كا نام ہے جيس سارے جہتم سے زيادہ طرح كے عنداب جمع ہيں -آبن عباس في فرسرماياكه عي جبتم كايك غاركانام بحس سيجبتم يهي يناه ما مكتي ب

سوياق مسايم ١٩: ٢٤ عا وف القرآن جسكدشم اس كوانشرتعالى فيه أس زناكاد كے الئے تياركيا ہے جوا بنى زناكارى پر مصرا درعادى ہے اور أس سرا بخور ا کے لئے جوشراب کا عادی ہے اور اس سود خو رکے نئے جوسود خو ری سے باز منہیں آتا اوران لوگوں کے نئے جو ماں باب کی ٹافرمانی کریں اور جھوٹی شہارت دینے والوں کے لئے اور اُس عورت کے لئے جوسی دوسرے کے بچے کوایتے شوہرکا بچے بنادے - (قطبی) كريسة عدون ويها كغوا ، تغوس مراد كلام باطل فضول اوركالي كلوج اورايدار ديف الكلاكم كدابل جنت إس سے پاک صاف رہی کے کوئی کلم استح کان میں ایسانہ ٹیر ٹیکا جواک کوئے وکلیف بہلے الاستلامًا، يداستناء منقطع ب مراديه بكر وبالجبكاجوكلام سنف مين آديكا ده سلامتي اور معلای اور خوشی میں اضافہ کرے گا- اصطلاحی سلام بھی اس میں داخل ہے جو اہلِ جنت آ بسیس ایک دوسرے کو کریں گے اورالٹر کے فرشتے ان سب کو کریں گے۔ (قطبی) وَلَهُوْرِي زُوْمُ وَفِيهَا فِكُرُةٌ وَعَشِيًّا، جنت مِن يَهْ نظامٌ من وطلوع وغروب الليل النهاد تونه بوكاء ايكت مى تذى بمدوقت رب كى محروات اوردن اور صبح اورشام كے انتيازات كى خاصل نواز ہے ہو بھے۔ اسی میں وشام میں اہل جنت کارزق ان کو بہنچے گا۔ یہ توظاہر ہے کہ اہل جنت کو إجسوقت جس جيزى خوامش بوكى وه أسى دقت بلاتا خير يورى كيجاوكى (وَلَهُ هُوْمَنَا يَسَنْتَهُونَ) ا ملان عام م مع بيمرس شام ي مخصيص كيوجه انساني عادت د فطرت كي بنارير به كه و صبح شام کھانے پینے کاعادی ہوتا ہے۔ عرب کہتے ہیں کرجس شخص کو بع شام کی غذا بوری ملے وہ آلام وعیش والآء حضرت انس بن مالک رصنی الله عند نے بیہ آیت تلاوت فرماکرکہاکہ اس سے علوم ہوتا ہے كرموسنين كا كهانا ون مين دومرتبر وتاب سع اورشام -اور معض حصرات نے فئے رمایا کہ بہاں جے شام کا لفظ بولکر عموم مراد ہے جیسے رات دن كانفظ ميمي يامشرق مغرب كانفظ عميم كے لئے بولا جاتا ہے كوئى فعاص قت يا جگر مراد نہين تى تومطلب بين وكاكرا تكارزق ال كي خوايش كموافق بردة ي موجودد به كا-دالشراعلم (قطبي) وَمَا نَتَ تَوْلُ إِلَّهِ مِا مُورَيِّكَ * لَهُ مَا بَيْنَ آيْدِي يُنَا وَمَا بنیں اُڑتے کی کے سے کے دب کے اُسی کا ہے ۔ و ہمارے آگے ہے خَلْفَنَا وَمَا بِينَ ذَلِكَ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِبًا ﴿ مَا بِينَ ذَلِكَ وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِبًا ﴿ مَا ب عالے اور جو اسے یے میں ہے اور تیرا رب نیس ہے جھیلے والا لتتماوت والزرض وكابينها فاغيث واضطيرلع اورزمین کا اورج آسے نے ہے سوائی کی بندگی کر اور قائم دو اسکی بندگی بر

ی کو بہجانتا ہے تو اُسکے نام کا سامنے لائیں مے جرد دونے کے گھٹٹوں مر جرے بع عُراكرلس عمري مرايك فرقدمين سے جونسا ال مين سے سخت ركھتا تھا معلوم ہے جوبہت قایل ہیں آس میں ردهاه کان علی ر ب وديكا يه دمده ترك دب ير لادم مُنَيِّى الدِّينَ اتَّعَوْ اوْ نَنْ رَالطَّلِمِينَ فِيهَا حِثْيًا بچائیں محے ہم اُن کو جو ڈرتے دے اور جوڑ دیں کے گہنگادوں کو اسیں اور مع کرے ہوئے شان تزول صیح بخاری میں حدیث سے کہ رسول الشرصلی الشرعکی فی جبریکل علیالسلام سے یہ آدرد ظامر فرمای کردرا زیاده آیا کرد ، اس بریه آیت نادل بدی ادر ریم آب کی درخواست کاجرتیل طلیالسلام کی طرف سے جواب دیتے ہیں شینے وہ یہ ہے کہ)ہم دیعنی فرشتے) برون آیجے رب سے کم کے وقتاً نوقتاً بنیں اسکتے اسی کی رطام) ہیں ہمارے آگے کی سب چیزیں دمکان ہویا زمان، مکانی ہویا زمانی) اور (اسی طرح) ہمارے پیچھے کی سب چیزیں اور جو چیزیں اُن کے درمیان میں ہیں راکے كامكان توجومنركے سامنے ہو اور پیچھے كاجوبیشت كى طرف ہو اور ما بین و لکتے سیں بیخص خو د ہو اورآ مي كا زمان جُوستقبل بردادر بيجيكا جوماصى بردادر ما بين ذك جوز مانهُ حال برد) ادر آب

رت القرآن جسكتشم كارب بجولف والانهين (چنانج بيرب أنموراب كويهد سيحلوم بن طلب بحركتهم عكويناً وتشريعاً ا پی رائے سے ایک مکان سے دوسرے مکان میں یا جب ہم چاہیں کہیں آجا نہیں سکتے لیکن جب بهيغيامصلحت موتاب توحق تعاطي بيعدية بي يراحتال نهين كرشايد مصلحت كوقت مجول جاتي مون) وہ رب ہے اسمانوں کا در زمین کا وران سب چیزوں کا جو اِن دو بوں کے درمیان میں ہیں سو رجب بیاما و مالك ب تواسم خاطب تواسخى عبادت (اوراطاعت كياكراور (ايك آده ما رنبين بلكم) اسحى عبادت يرقائم ده (اور الراس كى عبادت مذكر سيحاتوكيا دوسركى عبادت كريكا) بعلاتوكسى كواسكام صفت جأتا ر بینی کوئی اسکایم صفت نہیں تولائق عبادت بھی کوئ نہیں ، بیں اسی کی عبادت کرنا صرور ہوا) اور ا نسب ان د متكرِآخرت ، يُون كهتا ب كرمين جب مرجاً ذبيحا توكيا بصرزنده كركے قبر سے بيكالا جا دُن گا (الشرتعالی جواب دیے بیں کہ کیادیر ، افسان اس بات کونہیں تجبتاکہ ہم اس کواسے قبل (عدم سے) وجود میں لاچکے ہیں ، اور يه (اسوقت) كيه مي ند تها د جب ايسي حالت سے حيات كى طوت لانا آسكان ہے تو دوبادہ حيات دين اتو بدرجة ادانی اسمان ہے) سوسم ہے آپ کے رب کی ہم ان کو (قیامت میں زندہ کرکے موقف حشر میں ایکے کرمینے ادر (ا بحكساته) شياطين كومجى (جودنياس ان كےساتھ ره كربيكاتے سيكساتے تھے جيسادوسرى آيت سي ہے قَالَ قَرِيْنَ كُرِيْنَامَا أَطْعَيْنَ كَى بِيمِوال رسب كو دوزخ كرداكرداس حالت سے فا كرين مح كدر مارك بهيب كي كفشوں كے بل كرك بر بھے بير ران كفاركے) ہر كرده ين -رجیے یہود دنصاری وجوس برست ان نوکوں کو خداکرس کے جوان میں سب سے زیادہ انشر سے سرکشی کیا کرتے تھے (تاکہ ایسوں کو اُوروں سے پہلے دور خ میں داخل کریں) پھر (یہ بہیں کہ اس فبدا كرفيس م كوكسى تخفيقات كى ضرورت يرشي كيونكه) مم دخور) ايسے لوگوں كوخوب طانة ہیں جو دوز خ میں جانے سے زیادہ رمینی اول ستحق ہیں رہیں اپنے علم سے البیوں کو الگ کرکے ادل ان کو پھردوسرے کفار کو دوز خ میں داخل کری کے ادریہ ترتیب صرف اولیت میں ہے ، ادر المخرت ندم وفي توسيد مسادى بين اورجيتم كا وجود السالقيني بي كداسكامعا سترسب مومن كافركوكرايا جائے كاكومورت اورغرض معائنه كى مختلف بوكى كفار كولطور دخول كے اور تعذيب ابدى كے واسطے اور توسين كو بطور عبور كيل صراطاور زيا دت شكراور فرح كے واسطے كرأس كو ديكيد كرحو جنت میں مینجیں گے تو اور زیا دہ شکر کریں گے اور خوش ہو بھے) اور د بعض گنبے گا روں کوسزائے محدود سے انے جو کہ درحقیقت تطبیر ہے اسی عموم معائنہ کی خبردی جاتی ہے کہ ، تم میں سے کوئ مجی بہیں حبکا اس پر گزدند ہودکسی کا دخولاً اورکسی کا عبوراً) یہ (وعدہ کے موافق) آیے کے رب کے اعتبار سے و بطور) لازم (مؤلد کے) ہے جو رضرور کورا ہو کرنے کا بھر داس جہتم برعبورے یہ نہ سمجھا جائے کہ اسمیں مومن دکافر برایر بی بلکہ) ہم ان توگوں کو نجات دبیری کے جو خداسے ڈرز کرایان ال) سے عقے،

سعارف القرآن جركة شم ١٩٩٩ (سويرة عرب ١٩٩٥)

ر خواہ اقل ہی دفعہ میں نجات ہوجا دے جیسے مؤسنین کا ملین کو ادرخواہ بعدکسی قدر تکلیف کے جیسے کہ مؤمنین ناقصین کو) اور ظالموں کورلینی کا فروں کئے اسمیں رہمیشہ کے لئے) ایسی حالت ہیں رہنے دیں گے کہ رمارے دیج وغم کے) گھٹٹوں سے بُل کر پڑیں گے۔

محارف ومسّائل

وَاهْ طَيْلُ لِوِبَادَيْنَ ، لفظ اضطبار ك معند مشقت و بكيف بر ثابت قدم د بهنا بهاس من اشاره به كرعبادت بردوام و ثبات مشقت چا بهنا به عباد تگزاد كواس ك لئ تياند بهنا چا تي الد بهنا چا تي الد بهنا چا تي الد بهنا چا تي الد بهنا ته منظن تفخل الله تي تورستون في المرجع عبادت بين الله تعام كرين ادر بهت برستون في اگرچ عبادت بين الله تعام كر مساتھ بهت سے انسالون ، فرشتون بهت به انسالون ، فرشتون بهتور كومتر كيك كر والاتها ادران سب كو الله سين معبود كہتے تقے محرك كر في الفق الله معبود به طل كا نام كم بي نهيں ركھا - يه ايك كوينى ادر تقديرى امر تفاكه و نيا مين الله كا نام كرين نهيں ركھا - يه ايك كوينى ادر تقديرى امر تفاكه و نيا مين الله كا نام سيكي الله باطل بوسوم نهيں بورا س لئة اس مصف كے اعتباد سے بي مضمون آيت كا دافتى بهت كا دافتى بهت الله باطل بوسوم نهيں بورا س لئة اس مصف كے اعتباد سے بي مضمون آيت كا دافتى بهت كا دافتى بهت الله باطل بوسوم نهيں -

اوراکشرمفترین مجابر، ابن جبیر، تناده ، ابن عیاس رخ سے اس جگراس نفظ کے تنی مثل اور شبیر کے منقول ہیں اسکا مطلب واضح ہے کہ صفاتِ کمال میں اللہ تعالیٰ کا کوئی مثیل و

عدیل یا نظیرتہیں ہے۔

دوث القرآن جر سويري مسي ١٩:١٩ ك متبعين كوكها جاتا ج اس ك بمنى فرقه بهى يد لفظ استعال بوتا ہے ۔ اور مراد آيت كى يہ ہےكہ كفار كي ختلف فرقوں ميں جوسب سے زيادہ سركن ہوگااس كوان سب ميں ممتاز كركے مقدم کیاجادے گا۔ بعض مفترین نے فر میا کہ جہتم میں اس ترتیب سے داخل کیاجائے گاکہ حیکاج ست ذیادہ ہوگا وہ سب سے پہلے اسے بعدد وسرے اور تسیرے ورجے کے جرمین واخس جہنم کے جادیں گے - (مظہری) قران مِن كُورًا لا وَاردُها ، سين كوى انسان مُوس ياكافرايساندر بي جيكاورد ومنهم يرند يدود سيمراد دخول نيس ملكرعيور سي جيساكه ابن معود ايك دوايت ميس نفظ مرور سي آیا ہے۔ اور اگرد خول مراد لیاجادے تو مؤمنین متقین کا دخول اس طرح ہوگا کہ جہتم اُن سے لئے برُدُ وسلام بن جائے كى اُن كوائس كى كوئ كليف محسوس نه بهوكى جيساكة حضرت ابوشمكية كى دقدا میں ہے کہ رسول انٹر صلی انٹر عکیہ کے فت رمایاکہ کوئ نیک آدمی یا فاجرا دمی باتی نہ رہے گاجو ابتداءٌ جبتم میں داخل نم ہو سكر اسوقت مؤمنین متقین كے لئے جبتم ير دُوسلام بن جائے كى جیسے ابراہیم علیالتلام کے لئے نار نمرود برڈ وسلام بنادی گئی تھی اس کے بعد موسیق کو بیبا سے نجات دیکر حبنت میں لیجایا جائے گاہی مصنے آیت ہے اس اگلے جملے کے ہیں تُحَرِّ انْتَحِیقی الكين ين السَّقَون ا، يمضمون حضرت ابن عباس عباس عبى منقول ب اورقران كريم بي جولفظ ورود كاآيا ہے اكراسكے معنے دخول كے بھى لئے جا ديں تو دخول بطور عبور كے مُراد ہو كا اسلنے كوئ تضاد نہيں۔ إِذَا تُتُكَا عَلَيْهِمُ أَيْنَا بَيِتَنْتِ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُ وَالِلَّذِينَ أَمَنُوا ور جب منائ اُن کو ہماری آئیں کھلی ہوئ کہتے ہیں جو دوک کر منکر ہیں ایمان والوں دونوں فرقوں میں کس کا مکان بہتر ہے ادرکس کی اچھی لگتی ہے مجلس اورکسٹی ہلاک قَتِلَهُ مِنْ قَوْنِ الْمُمْ آخْسَنَ أَنَا عَاقَ رِئْيًا ﴿ وَلِيَّا اللَّهِ قُلْمُنَ كَا سویعاہیئے اس کو کینے لے جائے رجن لنیا یہا تک کہ جب دیکھیں مح عَدُونَ إِمَّا الْعَنَ ابَ وَإِمَّا السَّاعَةُ فَسَيَعَكُمُونَ مَنْ هُوَ جو دملاہ ہوا تھا آن سے یا آفت

وكاصرقيس

اورجب ان منکرلوگوں کے سامنے ہماری روہ کھلی گھلی آیتیں پڑھی جاتی ہیں زحبیں مؤمنین كاحق بربر تاادر كفاد كاباطل بربوتا مذكور جوتاب، تويه كافر نوك سلما يون سے كہتے بين كه ديه بتلاؤيم) دونوں زيقوں ميں ديني بم ميں اور تم ميں أدنيا ميں) مكان كس كا زيادہ اجھا ہے اور فقل س تی اچھی ہے دمینی ظاہر ہے کہ خانگی اور مجلسی سازد سامان اور اہل واعوان میں ہم بھے ہوئے ہیں۔ یہ مفدمہ توجوس ہے اور دوسرامقدمہ عرفی ہے کہ انعام داحسان ادرعطار تعمت اُستخف کے لئے بروتا ہے جو دینے والے کے ترویک مجبوب اور بیٹ رہو، ان دونوں مقارمول سے ثابت برواکہ مجم المترك مجوب ومقبول بي اورتم مغضوب ومخذول - أكے الترتعالیٰ ایك جواب الزامی اورا يكتفيٰ دیتے ہیں - پہلاجواب تو یہ ہے کہ بوگ ایسی بات کہتے ہیں) اور زیر نہیں دیکھتے کہ) ہم نے ان سے يهلے بہت سے ايے ايے آروه (ہيبت ناك سزاؤں سے كہ باليقين عذاب سے) ہلاك كئے ہيں جوسامان اورنمودسين ان سے بھي ركبين زيا ده) الجھے تھے داس مصلوم بيواكرمقدمر ثانيرغلط مينك کی حکمت اوژصلحت سے نعمتِ دنیو پیمیغوض د مردود کو بھی دی جاسکتی ہے ، آگے دو سراجواہے لها بيني سيني الشرعكي أب قرما ديجة كرجولوك كرائى مين بين ديني تم الشرتعالي أن كودهيل دیتا چلاجاریا ہے دیعنی اس نعمتِ دنیوی میں پیمت ہے کہمہلت نے کراتمام حجت کردے جيها دوسرى آيت سي ب أو كو نُعَيِّرُ كُوْمًا بَنَنَ كُوْنِيهِ مَنْ تَنَ كُولُ اوريه مهلت چندردزه مے) یہانت کس چیز کاان سے وعدہ کیا گیا ہے جب اس کو دیکھ لیں گے تواہ عذا کو درونیامیں ، خواہ قیامت کو (دوسرے عالم میں) سو راسوقت ، اُن کومعلوم ہوجا دے گاکہ برا مكان س كاب اور كرور مرد كاركس كي بن ديين ونياس جواية ايل محلس كواينامد كار سجھتے ہیں اور فح کرتے ہیں وہاں معلوم ہوگا کہ ان میں کتنا زور ہے کیونکہ وہاں تو کسی کاکوئی زور بوگایی نہیں۔ اسی کواضعت فرمایا تھا) اور دمسلما نوں کا یہ حال ہے کہ) الترتعالیٰ ہدایت والول ورئياسين توى بدايت يرفها ما يد ديني اصل سرمايديد بيك كراكرا يحسامه مال ودولت نهو مضرنہیں) احد آخرت میں ظاہر ہوگاکہ) جو نیک م ہین باتی رہنے والے بی وہ تھا اے رہنے وَ کیے تواثِ مِن احد آخرت میں ظاہر ہوگاکہ) جو نیک م ہین باتی رہنے والے بی وہ تھا اے رہنے تواثِ میں ہمی ہم ہم ہمی ہم ہم ہمیں ہمیں رہیں اُن کو تواب میں بڑی بڑی نعمتیں ملیں گی جن بیں مکان اور باغات سب بھے ہوں گے اورانجام ان اعمال کا ابد میت اور دوام ہے ال نعمتوں کا یس کیفیت اُ

مكارف ومسائل

ﷺ بھر میں پیش کیں۔ اقل ڈنیا کا مال و دولت اورسا ذوسامان دوسرے شم خدم اورا پناچھا ورجا کے دو پیزیں پیش کیں۔ اقل ڈنیا کا مال و دولت اورسا ذوسامان دوسرے شم خدم اورا پناچھا ورجا کہ یہ پیر بنا پیش کیں۔ اقل ڈنیا کا مال و دولت اورسا ذوسامان دوسرے شم خدم اورا پناچھا ورجا کہ یہ پیر بنا اہر کھا ہر کھا ہر کھا ہر کھا ہوں کے نیا دو ماصل تھی اور بین وگوں کو غلط داستوں پر ڈالد تیا ہے اور پھیلے دور کے بڑے برٹے سرمایہ داروں اور حکومت وسلطنت والوں کی عبرت خیز تاریخ سے اور پھیلے دور کے بڑے برٹے سرمایہ داروں اور حکومت وسلطنت والوں کی عبرت خیز تاریخ سے فافل کر کے اپنے موجودہ حال کو اپنا ذاتی کمال اور دائمی راحت کا ذریعہ باور کرا دیتا ہے۔ بجنز اُن لوگوں کے جو راان کی عبرت خیز تاریخ سے لوگوں کے جو راان کی می کھیلے اور اس کی دی ہوئی نہتا ہوئی کہ کو خرج کرنے میں بھر اسے برائم میں برخورت وجاہ کہ کو جائم میں بہت سے اعتمام کی با بندی کریں اور استے ہیں جیسے انبیار علیہم السلام میں، حضرت سلیمان اور واد کو دی اس کو حق تعالے نے و بڑی کا مال و دولت بھی خوب عطاف میں، حضرت سلیمان اور واد کو علی اور اسی طرح آئمت میں اور اسی اور حق تعالے نے و بڑی کا مال و دولت بھی خوب عطاف میرمایا اور دین کی دولت اور این اخورت بھی ہے انہا در دولت بھی خوب عطاف میرمایا اور دین کی دولت اور اینا خوف بھی ہے انہا در دولت اور اینا خوف بھی ہے انہا در دولت بھی خوب عطاف میرمایا اور دین کی دولت اور اینا خوف بھی ہے انہا دولت بھی خوب عطاف میرمایا اور دین کی دولت اور اینا خوف بھی ہے انہا دولت بھی خوب عطاف میرمایا اور دین کی دولت اور اینا خوف بھی ہے انہا دولی کی دولت اور اینا خوف بھی ہے انہا دولی کی دولت اور اینا خوف بھی ہے انہا دولی کی دولت کھی خوب عطاف میں میں ہو اور کی اس خوب کھی اور اینا خوف بھی اور این اور دولت بھی خوب عطاف میں میں ہو اور دولت بھی خوب کو دولت بھی اور اسی طرح اور دولت بھی دولت ہو دی

کھار کے اس مفالطہ کو قرائن تھیم نے اس طرح دُور فر مایا کہ دُنیا کی چندروزہ فہمت وہ دولت مذالت کے خزد کی علامت ہوگئی ہے مذ دُنیا ہی میں دہ کسی ذاتی کمال کی علامت ہوگئی ہے مذ دُنیا ہی میں دہ کسی ذاتی کمال کی علامت ہوگئی ہاتی ہے جاتی ہے کہ وہ نیا ہس یہ چیزیں عقظارا ور دانشمندوں سے زیادہ بل جاتی ہیں۔ بچھلی تا این اکھاکر دیکھو تو یہ حقیقت کھل جاسے گی کہ ایسی ایسی بلکران سے بھی ذیادہ کتنی وہ لیتوں اور شو کتوں کے ڈھیرز مین پر ہوتے دیکھے گئے ہیں۔

رہاحثم دفدم ادر دوست و احباب کی کثرت سواس کی حقیقت مبھی اول تو دُنیا ہی میں ظاہر ہو جاتی ہے کہ آرٹے وقت میں کوئ کام نہیں آیا۔ بھراگر دُنیامیں وہ برابرضر کرتے بھی رہے تو وہ کئے دن کی ،اس کے بعد محشر کے میدان میں اُن کاکون ساتھی ہوگا؟

٣

Or

سویاتی مان ۱۹

معادف القرآن جملة

معارف ومسائل

دآپ جوان کی گراہی سے تم کرتے ہیں تو) کیا آپ کو معلوم نہیں کہ ہم نے شیاطین کو کفاریر د! تبلارٌ ، چھوڑ رکھا ہے کہ وہ ان کو د کفرو صلال پر ، خوب اُنجار تے (اورُاکساتے) رہتے ہیں د پھر جوخودى ابت افتيارے اپنے برخواہ كے بركائے ميں آجادے اسكاكيوں عم كيا جا كا سورجب شیاطین ایتلار مسلط ہوئے میں اور تعبیل سزائے مستحق میں ابتلار دہتا نہیں تو) آپ اُن سے لئے جلدی دعذاب بونے کی درخواست) مذکیجے ہم اُن کی باتیں رجن برسزا ہوگی ،خود شاد کررہے ہیں ، داور وی سرااس روز واقع ہوگی جس روز ہم شقیوں کو رہمان رکے دارالنعیم) کی طرف مہان بناکر جمع

では

91.19 (ag

م ما دوت القرآن جر لذشم

لا وتوع من ہو مگرا ندایشہ کے قابل تو ہے۔

مكارفت ومسائل

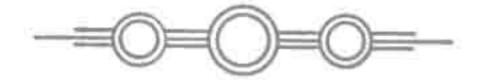
وَتَخِوْ الْبِعِمَ الْمُ اللّهِ مَنْ آمَا اللّهِ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ الله

قعَقَ هُوْ عَنْ الْمَاكِيْ وَاللَّا سَانَهُ ثَمَامِ انسانُوں کے اشخاص داعال کا پُوراعِلم کھتے ہیں۔ زیادہ ۔ ایس اُنکے سانس اُنکے قدم اُنکے لقے اور گھونٹ الشرکے نز دیک شمار کئے ہوئے ہیں نہ کم ہوئئے ہیں نہ زیادہ ۔ سینجنے کا کہائے الشرخیان ڈڈگا، بینی ایمان اور علصالح پرقائم نہنے دانوں کے لئے الشرتعالے کردیتے ہیں دوستی اور مجت ایعنی ایمان اور علی صالح جب محمل ہوں اور بیرونی عوارض سنظالی ہوں تو اُن کا خاصہ یہ ہے کہ مؤمنین صالحیین کے درمیان آیس میں بھی اُنفٹ، و محبت ہوجاتی ہے۔ ہول آئی کا خاصہ یہ ہے کہ مؤمنین صالحیین کے درمیان آیس میں بھی اُنفٹ، و محبت ہوجاتی ہے۔ ایک نیک صالح آدی دومرے تمام لوگوں اور مؤلؤ قا

طرف متوقبهم وجامًا به توالتُرتعالى تمام ابلِ ايمان كرل اسكى طرف متوقبه فرما ديت بين دفيطبى) حضرت ابراجيم خليل المترعليه الصلخ قروالسلام نے جب اين ابليه باجره اورشيرخوارصا حبزا ج اسوياته ما ١٩٠٠ م

معارف القرآن جب لدشتم

اسماعیل علیہ انسلام کو مکہ کے خشک پہاڑوں کے درمیان رنگیتان میں کیم فدا تعالیٰ جھو دکر مکسٹا ؟
واپس جانے کا ادا دہ فرمایا تواُن کے لئے بھی دُعا مانگی تھی فاجھ کے اُفید کی جُرن النّاسِ تَعَلَو کَ النّامِ تَعَلَیْ النّامِیرے بِکس اہل دعیال کے لئے آپ کچھ لوگوں کے قلوب کو مائل اور متوجہ فرما دیجئے۔ اُسی
کا نیتے ہے کہ ہڑاروں سال گزر چکے ہیں کہ مکہ اور اہل مکہ کی محبت ساری دُنیا کے دِلوں میں بھردی
گئی ہے اور دُنیا کے ہرگوشے سے بڑی بڑی محنت و مشقت اُٹھا کرا ور عمر بھر کی کمائی تربی کو کے لوگ
ہینچتے دہتے ہیں اور دُنیا کے ہرگوشہ کی چیزیں مکہ عظمہ کے بازار میں دستیاب ہوتی ہیں۔
اُڈوٹٹٹٹٹٹٹٹٹ کھوٹ دِکٹوٹ اور ڈیٹٹ کے ہرگوشہ کی چیزیں مکہ عظمہ کے بازار میں دستیاب ہوتی ہیں۔
اور کھوٹا نے کے بعد جو آواز ہوئی ہے مطلب آیت کا یہ ہے کہ یہ سب حکومت وسلطنت والے
اور شوکت و حشمت اور طاقت و توت والے جب الشرکے عذاب ہیں پھرٹے گئے اور فاکٹ کے تو



TI

عادت القرآن جسه

1:1.64 65300

سورة كالما

سُولَاقًا طَلَمْ بَكِلِيَّةِ مِنْ وَرَفِي مِنْ الْمِنْ مِنْ وَرَاسَ مَنَ اللّهِ مِنْ اللّهِ مِنْ اللّهِ مِنْ اللّهِ مِنْ وَرَاسَ مَنَ اللّهِ مِنْ اللّهِ مِنْ وَرَاسَ مَنَ اللّهِ مِنْ اللّهُ مِنْ اللّهِ مُنْ اللّهِ م

ولس والله الرحد من الرحدين

اس شورت کا دوسرا نام سورهٔ کلیم بھی ہے دکدا ذکر انتخادی، وجہ یہ ہے کہ اسیس حضرت کلیمانٹرموٹی علیالتلام کا واقعۂ فضل مذکور ہے۔

مسنده ادمی میں حضرت ابدہریرہ رہ اسے دوایت ہے کہ دسول اسٹر صفے ادشہ عکی نے فرمایا کہ حق تعالی نے اسمان وڈین بریواکر نے سے بھی دوہزار سال پہلے سورہ طلبی ویشن پڑھی دایوی فرشتوں کو مشائی، تو فرشتوں نے کہا کہ بڑی خوش نصیب اور مربادک ہے وہ اُترت جس پر بیسورتیں ناڈل ہودگی اور مبادک ہیں جو از اور مجان کو چھیں گی بہی وہ ہودگی اور مبادک ہیں جو از اور پڑھیں گی بہی وہ مبادک سورت ہے س نے دسول اولئہ صفاد شرطیے کی اور مبادک ہودی میں جو از اور اسمی والے میں معروف والے عمر بن خطائی کو ایمان قبول کرنے اور اسمی خور سے اسمی اولئے مالے کا دور مبادک ہیں گرے نیمور کر دیا جس کا واقعہ کو ایمان قبول کرنے اور آسمی خورت و شہور ہے ۔

ا بن آئی کی دوایت اس طرح ہے کہ عمر بن خطاب و ایک دور تلوا ابیکر آ مخضرت صحافیات طلبید کم سے تعلق استاری خطاب و ایک دور تلوا ابیکر آ مخضرت صحافیات کا ادادہ کم ملید کم سے تعلق سے اللہ میں تغییم بن عبداللہ لگئے ، یو چھاکہاں کا ادادہ کم عمر بن خطاب نے کہا کہ بین خطاب نے کہا کہ بین اس محرافی خص کا کام تمام کرنے کے لئے جارہا بوں جس نے شرخی بین اس محرافی خص کا کام تمام کرنے کے لئے اور ان دیا ، ان کے دین و مذہب کو بڑا کہا اُن کو بین تو قات بنایا اور انکے بتوں کو بڑا کہا یا گئی ہے ہے کہا کہ عمر میں تمہاد سے دھوکہ میں مبتلا کرد کھا ہے کیا تم یہ جھتے ہو کہ تم محدر صلی اللہ عکی ہے اس محصل ہے کہا تھیں میں مناف تھیں ڈندہ چھوڑے کا کہ زمین پر جلتے بھرتے دہو۔ آئی تم میں عقل ہے تو

سولاقطنه ۲۰۱۰ بأرف القرآن جسكتشم ایتی بین اور مینوی کی خبرلوکه وه مسلمان اور خدر صلی الشرعکتیم) کے دین کے تا اس بوجے ہیں ،عمر ا بن خطاب پر اُن کی بات از کرگئی اور بہیں سے اپنی بہن بہنوی کے مکان کی طوت پھر گئے۔ اُ اسم مكان مين حضرت خباب بن ارت صحارا من ان در ان كو قران كى سُورت ظلم بره داريس جوا يك صحيفه مين مهي مري مقي -ان لوگوں نے جب محسوس کیاکہ عمر بن خطاب آرہے ہیں تو حضرت خباب عمر- کینی کمرہ يا كوشه بين جهب كئة اورتمشيره نے فيرحيفه اپني مان كے نيچے جبياليا مكر عمر بن خطاب مركم ! وَل مبن الماب بن ادت كى ادران كے بھر يرصنے كى آداز جينے على تقى اس لئے يُوچھاكم يہ برا منظم الى كى آداز كىسى تقى جومىں نے شنى ہے ؟ انھوں نے داول بات كو اللے كے لئے) كہاكہ كھے نہيں ، تراب عمر ب خطأ نے بات کھولدی کہ مجھے بیزجرطی ہے کہ تم دو أوں محررصلی الشرعکتی کے تابع اورسلمان ہوگئے ہو ٠٠٠ يه كهرا ين بينوي سعيدين زير توف يرط مان كى بمشره فاطر في خيب يه ديكها توشوم كو بجانے كے اللے كھڑى موكميں عمر بن خطاب نے اُن كو بھى .. بر تھى كرنے ! جب توبت بہاں تک چینے کئی توبہن بہنوی وونوں نے بیک ڈیان کہاکہ میں اوہم بلاشیہ مشمان ہو چے ہیں۔انٹراوراس کے رسول پر ایمان لے آئے ہیں اب جو تم کرسکتے ہو کراد بمشرو سے زخم سے خون جاری تھا اس کیفیت کو دیکھ کرعمر بن خطاب کو کھے ندامت ہوئ ا درہن سے کہ الله وصحيف مجصد وكعلاؤ جوتم يرهدري تقين تاكرس سي ويكيمون محدر صلى الشرعكية لم) كياتعليم ا ہیں عمرین خطاب ملصے پڑھے آدمی تھے۔اسلے صحیفہ دیکھنے کے لئے ما ا ہم۔ نے بیعجیفہ اگریتہیں دے دیا تو تم اس کو صا کئے کر دویا ہے ادبی کرو۔ عمر بن خطاب نے اپنے يتول كي تسم كف كركها كم تم ينحوت مذكرومين اس كو يثره كرتهين واليس كردول كالميشيره فالميناني جب يرا وخ د كيما تواك كو كيم أميد بوكى كرشايد عمر بهى سلان بوجائي اسوقت كهاكه بهاى بات بيرب كتم نجس ناياك بواوداس حيفه كوياك آدى كے سواكورى با تھ شہيں لگاسك اگرتم ديكھتا ہى جاستے موقوعسل كراو- عررة في عسل كرايا بحرية حيفرا استحدوالدكياكيا قراسيس سورة ظلم لكى بوى تقيل ككا مشروع حصري يثره كرغمره أنسه كهاكه بيهكاؤم توبرا اجهاا ودنها بيت محترم ہے۔ خبّاب بن أدسَّ جو مكان ميں چھيے ہوئے يرسب كيم شن رہے سقے عمر انسے يہ الفاظ شنتے ہى سامنے آگئے اود كہا كه ا مے تمرین خطات مجھ اللتركي رجمت سے بيراً مبيد ہے كه الله تعالى تے تمسيں اپنے دسول كى دُعا سے نئے تمتی فرمالیا ہے کیو مکہ گزشتہ کل میں تے رسول الشرصلے الشرعکی کو یہ دُماکرتے ہوئے بنائج كم اللهق إيد الاسلام عابى الحكة بن هشام أو بعير بن الخطاب ، يا التراسل كان اند تفريت فرما الوافحكم بن بشام ديني الوجيل سح ذراييم يا بهرعمر بن خطاب ك ذرايد مطلب يديمة

باروث القراق جريان metedis 1: A کدان دو نوں میں سے کوئ مشلمان ہوجائے تومشلمانوں کی کمزور جماعت میں جان پڑجائے۔ کھیے تنات نے کہاکہ استحرم اب تواس موقع کوفنیمت جھ ، تمرین خطات نے خبات سے کہا کہ مجھ محرصلی الشرخلیدم کے پاس محلو (قطبی) آنے اوس احضور الشرعکتیدم کی خدمت میں حاصر ہو تا ادراسلام تبول كرنامشهورومعروف واقدب-لله أن ما آنو لنا عَنيك القوان لِتَشْعَى اس واسط بنیں اُٹارا ہمنے بھر پر قرآن کہ تو محنت میں پڑے ، سے نصبیت کے ن يَخْشُرُ أَن يَرُ رُدُ مِنْ مُنْ مُنْ مُنْ مُنْ الْحُرَانِ وَالسَّمَا إِنَّ الْعُر أتادا بها باسكاجس في بناى زمين عَمْرَيُ عَلَى الْعَدِشِ اسْتَوْى ﴿ لَهُ مَا فِي السَّمُوتِ وَ را مہربان عرش پر قائم ہوا اس کا ہے جو یکھ ہے آسمان وَرُضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَتَحْتَ الثَّوْاي ﴿ وَمَا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ ال زین میں ادران دونوں کے درمیان اور نیجے گیلی زمین کے اور اگر تو بات لَفُوْلِ فَإِنَّهُ يَعْكُو السِّرَّ وَ آخُوْنَ ۞ الله ١٦٠ کار کر تواس کو تو خبر ہے جیبی ہوئی بات کی ادراس سے جی چیبی ہوئ کی ،الٹرہے جیکے سوائد کی نہیں تی کی حااصة لقسير

ظلا (کے سخی توان اور ای کے معلوم ہیں) ہم نے آب ہر قرائ (مجید) اس سے بہیں اُ کادا اُر آپ کلیف اُ مطابیں بلکہ ایشے خص کی ضیعت کے لئے (اُ کادا ہے) جو (التر ہے) ڈر تا ہو یہ اس (ذات) کی طرف سے نازل کیا گیا ہے جس نے زمین کو اور بلند اسمان کو بیدا گیا ہے (ادر) دہ بڑی رحمت والا عرب پر (جو مشابہ ہے تحت سلطنت کے اس طرح) قائم (اور جلوہ فرما) ہے (جو کہ اسکی شان کے لائق ہے اور وہ ایسا ہے کہ) اسم کی بلک ہیں جو چیزیں اُسمانوں میں اور جو جیزیں زمین میں ہیں اور جو چیزیں ان دوان کے در میان میں ایس کی بند اسمان سے نیچے اور زمین نے - TYM

سوياته ظلى ٢٠:٨

بعارف القرآن جب كمدتم

اوپر) اورجہ چیزی سخت الشری میں ہیں (بینی زمین کے اند رج ترم شی ہے جبکو ٹری کہتے ہیں جو پیز کداس کے بنیچ ہے ، مراد میر کد زمین کی شرمیں جو چیز میں ہیں ہے تر الشرتعالی کی قدر و سلطنت متھی) اور (رسلم کی بیرشان ہے کہ) اگرتم (اے مخاطب) یکاد کر بات کہو تو (اس کے سننے میں تو کیا شہر ہے) وہ تو (ایسا ہے کہ) چیکے سے کہی بات کو اور (بلکہ) اس سے بھی زیادہ خفی بات کو (بینی جوا بھی دل میں ہے) جا ترا ہے (وہ) اوشرایسا ہے کہ اس کے سواکوئی معبود (ہو کیکا تحق) انہیں اس کے دیوے) جھے نام ہیں (جو اوصاف و کمالات پر دلالت کرتے ہیں سوت رات کا ایسی ذات جا مع الصفات کا نازل کیا ہوا ہے اور تھینی حق ہے) ۔

محارف ومسائل

ظلی ۱۱ سافظی تفسیر می علیار تفسیر کے اقوال بہت ہیں۔ حضرت این عباس رف سے اس کے معنی یا رحیل اورا بن عمر م سے یا جیسی منقول ہیں، بعض روایاتِ حدیث سے معلوم جوتا ہے کہ ظلیٰ اور بین آئے خضرت میں اسٹر عکیے کم کے اسار گرامی میں سے ہیں اور بے غباد ہات وہ ہے جوحضرت صدیق اکٹر اور جہور علیار نے نسر مائی کہ جس طرح قرآن کی بہت سی سور توں کے ابتدا رمیں آئے ہوئے حروف مقطعہ مثلاً المنظ وغیرہ متشابہات مینی اسرادیں سے ہیں بن اور الشرقعالی کے سواکوئ بنہیں جاتا نفظ ظلم بھی اسی میں داخل ہے۔

می آگونی انگری الفوان لیششی ، لیششی ، شکا ، سے شتی ہے جیے معی تعلیم معی تعلیم میں اللہ میں ا

وعوت كوتبول في يكيا - (تلفيص قوطي)

اس جگره امام ابن کشیر نے ایک صیح حدیث د دسری بھی نقل فرمائی ہے جو علمار کیلئے بڑی بیثارت ہے یہ حدیث طبرانی نے حضرت تعلیہ بن الحکم رمز سے د دایت کی ہے! بن کثیر نے نسرمایا کر اسناد اس کی جیتد ہے۔ حدیث یہ ہے۔

قال رسول الله على عليه وسلويقول الله تعالى للعلاء يوم القيامة ا فانقل على الله تعالى عبادة ا في لواجعل على ميه لقضاء عبادة ا في لواجعل على وحكمتى فيكوالا وا ناارب الا اغفر لا كوري ما كان منكوكلا ا بالى لا ابن كثير واساح من الموكلا ا بالى

رسول الشرصلى الشرعينيم نے فرمايا كرقيامت كے دورجب الشرتعالى بندوں كے اعمال كافيصله كرنے كے اخمال كافيصله كرنے كے لئے اپنى كرسى برتستريف فرما ہونگے تو علمار سے فرما ويلگے كر بيں نے اپنا علم وحكمت تماك سينوں سين صرف اسى لئے دكھا تھا كر ہيں تہادى مغفرت كرنا چا ہتا ہوں يا دجود ان خطاؤں كے جو مغفرت كرنا چا ہتا ہوں يا دجود ان خطاؤں كے جو تم سينوں ہيں اور تھے كوئى يروا نہيں ۔

مگریہ ظاہرہے کہ بیہاں علما رہے مراد وہی علمار ہیں جن میں علم کی مشرا نی علامت خشیت ہے موجود ہواس آیت میں نفظ لیکن تیخشی اسی طسرت اشارہ کرتا ہے جن میں یہ علامت نہو وہ اس کے مشتی نہیں۔ دالشر علم

عَلَىٰ الْعَرْشِ الشَّتَوٰى ، استواد علی العرش کے متعلق صحے بے غباد دہی بات ہے جوجہو اسلف صالحین سے منفول ہے کہ اس کی حقیقت و کیفیت کئی کو معلوم بنہیں ۔ متشابہات بی سے ہو جہو کے ۔ عقیدہ اتنا دکھنا ہے کہ استوار علی العرش حق ہے اُس کی کیفیت الشرجل شانہ کی شان کے مطابق و مناسب ہوگی جب کاادراک ونیا میں کئی کونہیں ہوسکتا .

وَمَا يَحْتُ التَّوَىٰ ، ثَرَىٰ ، مُنَاك كَيلى مثى كوكهت بين جوزمين كسود نے كے وقت "كلتى ہے مخلوقات كاعلم توصرت ثري كاك تك فتم ہوجاتا ہے ، السے اس ثرىٰ كے نيجے كيا ہے اسكا علم التركسة الدسائن كونهين اس بئ تعقيق و رئيسر ج اور سے شخ آلات اور سائنس كى انتہائى التہائى التہائى

وَ هَلَ اَ تَنْكَ حَلِينَ مُوسَى ﴿ اِذْ رَا نَادًا فَقَالَ لِاهْلِكِ الْمَالِكُولُولِهِ الْمَكْفُولُ الْمَلْكُولُ الْمَلْكُولُ الْمَكْفُولُ الْمِنْكُولُ الْمَلْكُولُ اللَّهُ الْمُؤْمُ اللَّهُ الْمُؤْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُؤْمُ اللَّهُ الْمُؤْمُ اللَّهُ الْمُؤْمُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُؤْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُؤْمُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُؤْمُ اللَّهُ اللللْهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الل

كقفالاة

فكلاصة تفسير

اور دا مے محصلی الشرعکی کیا آپ کومولی د علیہ السّلام کے قصتہ کی خبر بہنجی ہے د بعنی وہ شننے کے قابل ہے کہ اسمیں توحید و نبوت کے متعلق علوم ہیں جن کی تبلیغ نافع ہو گی وہ قصتہ یہ ہے کہ جب كراً خوں نے دئدين سے آتے ہوئے آيك رات كوس ميں سردى بجى تقى اور الے بجى محكول الكياسة كوياطورير، ايك آك ديجي ذكه واتعين وه نؤرتها مكرشكل آك كي سي تقي ، سواين كهر والوں سے دجو صرف بی بی تھی یا خادم وغیرہ بھی) فرمایا کہم ریبان ہی) عظیرے دیدر نعنی میرے المي المحص مت أناكيونكرية تواحمال أى من تفاكه بدون ان عمر كاسفركرن لليس كم مين في ایک آگ دیجی ہے دیں وہاں جاتا ہوں) شایرسی اس میں سے تمہارے یاس کوئ شعلہ دکسی كڑى وغيروميں لكاكر) لاؤن ("اكرسردى كاعلاج ہو) يا دوبان الك سے ياس رسته كابيت رجائے دالاکوی آؤمی میں مجھ کو مل جاوے سروہ جب اس داگ ، کے یاس بہنچے توران کو منجانب الشرى آواز دى كئى كدا كوئى مين تهادارب، يون، بس تم اين جُوتيال أتار ۋالو، وكيونكم عمايك ياك سيران ليني طوى مين جود يداس سيران كانام ب) اورس فيكود بني بنانے کے لئے منجلہ دیگر خلائق سے منتخب فرمایا ہے۔ و (اسوقت) جو کھھ وحی کی جارہی ہے اسکو (غورے) شن لو (وہ یہ ہے کہ) میں الشن وں میرے سواکوئ معبود (ہونے کے لائق) نہیں ، توتم میری بی عبادت کیا کروا درمیری بی یاد کے لئے نماز پڑھاکر و (دوسری بات یہ سوکہ) بلاج قیامت آنے دالی ہے میں اس کو رتمام غلائق سے پوشید، رکھنا جا ہٹا ہوں داور قیامت اس النے آوے کی بیمار پر تخص کواسکے کئے کا بدلہ ملیا و سے سوزجب قبیا سے کا آنا یقینی ہے تو) تم کو وا قیامت دیم لئے مستعدمین سے ایس آتحش باز مرکھنے یا وے جواس پرایمان نہیں رکھتا اور اپنی (نعسانی) خواہشن پرچلنا ہے دلینی تم ایسے فس کے اثر سے قیامت کے لئے تیاری کھنے سے

ہے فکر نہ ہوجانا) کمیں تم داس ہے فکری کی دجہسے، تیاہ نہ ہوجاد -

معارف ومسائل

هَلْ أَتْمَاكَ حَدِيدِينَ مُوسى، سابقة إيات مين قران كريم كى عظمت اوراس كيضمن میں تعظیم رشول کا بیان ہوا تھا اس کے بعد حصرت مولی علیالسلام کا قصماس مناسبے وکرکیاگیا کہ منصبهٔ سالت و دعوت کی ا دائیگی میں جو مشکلات اور تکلیفیں پیش آیا کرتی ہیں ا ورانبیار سابقین نے اُن کو بردا شت کیا ہے وہ آنحضرت صلی النرعکیہ کے علم میں آجائیں تاکہ آپ اس کے لئے پہلے مع متعداور تیار ہوکر تابت قدم رہیں جیساکہ ایک آیت میں ارشاد ہے و گال تُقصُّ عَلَيْكَ مِنْ آنجًا إلرُّسُلِ مَا نُتَوِيّتُ إِن فُو ادَ إِن الين رسُولوں كے يبرسب قصيم آب ساس لفي بان كرتي بن تاكه آب كا قليصنيد طرم وجائ اورمنصب نبوت كايار أشهان كے لئے تيار يوجائے -ا در مولی طلیالسلام کا بیرقصته جوبیهان مرکور سے اس کی ابتداریون بوی که جب وه مک یک بہنے کرحضرت شعیب علیہ اسلام سے مکان پر اس معاہدہ کے ساتھ مقیم ہو گئے کہ آٹھ یا دس ل تك ان كى خدمت كرس كے اور انھوں اللہ تفسير بحر محيط دغيره كى روايت محمط ابق ابعد الاجلين العنى دس مال بوركر الم توشعيب علياسلام سے رخصت جائى كميس اب ابنى والدہ اور البهن سے ملتے کے لئے مصرحاتا ہوں اور حین خطرہ کی وجہ سے مصر حیوثرا تھاکہ فرعونی سیاہی ا ن کی ا کرفتاری اورقتل سے در ہے تقے عرصہ دراز گزرجانے کے بعداب وہ خطرہ بھی باقی نہ رہا تھا۔ شعيب عليابسلام ني ان كويمة الإيهيني ايني صاحبزادي تحريجه مال اورسامان و كير رخصت فسرماديا راسته میں ملک شام سے با دشاہوں سےخطرہ تھا اس لئے عام راستہ جھیور کرغیر معروف راستہ اختیارکیا-مویم سردی کا تقااور ابلیه محترمه حامله قریب الولادت تقین که صبح شام میں ولادت کا احمّال عقا۔ غیر مروف داستدا درجبگل میں داستہ سے مث کرطور پہاڑ کی مغربی اور دا ہنی مت يں جانيكے، دات اندھيري سردي برفاني تھي اسي حال ميں اہليہ كو در د زه شروع ہوگيا۔موني مير السلام فيمردى سے حفاظت كے لئے آگ جُلانا جایا - آس زمانے ميں دياسلائ رماجيں) کے بجائے خقاق بیھراستعال کیاجاتا تھاجس کو مارنے سے آگ بیدا ہوجاتی تھی اس کواستعال کیا مگراس سے آگ مذبیکی ۔ اسی جیرانی و پریشانی کے عالم میں کوہ طور پر آگ نظراً ی جود رحقیقت بور تھا تو گھردالوں سے کہا کہ میں نے آگ دیجی ہے وہاں جاتا ہوں تاکہ تہا دے لئے آگ دن اور مكن ہے كدا كے سے ياس كوى راستر جانے والا بلجائے توراستر معى معلوم كرلوں - كھرالول يا الدي المحترب كابونا تومتعين بي معبض روايات سي علوم بوتاب كركوى خادم بمي ساته بخلاه أبي اس

79

سنوب تع طالم ۲۰: ۱۹

معادف القرآن جسكرهم

خطاب میں داخل ہے بعض دوایات میں ہے کہ کھوٹوک فیقِ سفر بھی ساتھ مقے بھر راستہ میکو لئے میں یہ اُن سے جُدا ہوگئے تفے۔ (بعرهینط)

فَلَقِنَّا النّهِ اللّهِ اللّهِ اللهِ وَوَرَ وَ وَمِي جِبِ السَّ کَي اللّهِ اللهِ عِلْمَ اللّهِ عَلَيْهِ وَوَيَ وَمِي اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللهِ اللهُ الله

14

14: r. Wh & you معارف القرآن مبسكة ان عررج وادئ طوی می انہی مقامات مقدسمیں ہے جو کوہ طور کے دامن میں ہے د قطبی وشُران سُنن كاادَب | قَاشَرْمَعُ لِمَا يُونِي ، عضرت وبهب بن مُنبة سيمنقول ہے كه تسرآن من سن سے اداب میں سے بر ہے کدانسان اسے تمام اعضار کو فضنول حرکت سے رف کے کہنے کا شغل میں کوئی عضو بھی مذککے اور نظرینی رکھے اور کلام سمجھنے کی طرف دھیان لگائے اور جوففل س ادب المركام الموكى كلام شنتاب توالشرتعالي اسكوا المي مجعفى كمى توفيق ديدية بن- (قطبي) اِسْخِينَ آيَا اللهُ لَا لَا اللهُ الرُّكَ آيَا فَاعْبُنْ فِي وَآفِوالطَّاوْعَ لِنِ كُونِي السَّكلام مِن حضرت مولی علیابسلام کو دین کے تمام اُصول کی تعلیم دیدی گئی بینی توحید، رسالت، آخسسرت فَاسْتَيْعُ لِمَا يُتُوْجِيٰ مِن رمالت كيطرف اشاره باور فَاعْبُلُ فِي كَمِعنى يه بي كهروت ميري عبادت كري، ميرب بيواكسي كي عبادت مذكري ميضمون توحيدكا بهوكيا آسك مان السّاعة أينية ميل فرت كا بيان هم - خَاعْدُن فِي محممين الرحيد نما زكا حكم معى دا قبل مي سيكن اسكوجدا كانداسك بيان فراديا كه تما ذيمًا م عيا دات مين ا فصل واعلى مجى بها ورحديث كي تصريح كي شطابي وين كاعمود اور ایمان کانورے اور ترکب تما ذکا فروں کی ملامت ہے ۔ أقِيوالصاوفة لِإِنكِيرِي كامطلب يه مه كه نمازكى رُوح ذكرالسّر اورنما زاول ساخر تك ذكرى وكرب زبان سيمى دل سيمى اور دوسر اعضار سيمى إسلة نما زمين ذكرا دلتر ا سے خفلت نہ ہونی چاہیئے اور اسکے مفہوم میں بیر بھی داخل ہے کہ اگر کوئی شخص نین رمیں مخلوب موكيا ياكسي كام ميں لگ كر مجول كيا اور نماز كاوقت نيل كيا توجب نيندس بيدارم ويا مجول برتسنة بواور نمازيادا كأسى وقت نماذكي قضاء يره الحبساكيين روايات مديث بي آيا ہے۔ ا كاد الخيفية ا ويعنى قيامت ك معامله كومين تمام مخلوقات سيحفى ركعتاجا بشامول يها نتك كدا بنيادا ورفرشتوں سے مجى اور ١ كاد سے اس طرف اشارہ ہے كداكر توكوں كو قيات وآخرت كى حكرد لاكرايمان وعلى صالح يرا بهار نامقصود منه بهوتاتواتني بات بعى طاهر ندكيجاتي كرقيامت آفي والى مع جيساكه أوير آيت مين آيا ميدان السّاعة أيتيك مقصوداس سے اخفائے قیامت میں متالغررنا ہے۔ لِتُجْزَى كُلُّ نَفْسِي بِمَا نَسَعَىٰ (تَاكرجزار دياجائي برنفس اين عمل كى) اس جله كا تعلق اگر لفظ این ایس به توسنی فل برین که قیامت کے آنے کی حکمت وصلحت به بوکد دیا تو دارالجزار تنہیں بیبال نیک دیدعل کی جزارکسی کو نہیں طبق ، ا دراگر کسجی دُنیا میں کچھ جزا ہل بھی تی ج تووه على كى بورى جسزار نہيں ہوتى ايك نمونرسا ہوتا ہے اسك صرورى ہے كہ كوى الساوقت آئے جہاں ہر نیک ویدعل کی جزار وسٹرا اوری دی جائے۔



Ĩ,

معادمت القرآن جسكت سولات طلى ٢٠٠٠

اور دحق تعالی نے مولی علیاتلام سے بیر سے فرمایاکہ) یہ تمہارے داہنے ہاتھ میں کیا چیز، ا ہے مولی! انھوں نے کہاکہ بیمیری لاتھی ہے میں دمیمی) اس پرسہادالگاتا ہوں اور در کبھی ، اسس سے اپنی براوں پر درزموں کے استے جھاڑتا ہوں اوراسیں میرے اور کھی کام و سکتے ہیں دمثلاً كندهے پر ركھ كراسياب وغيره لشكالينايا اس سے د ذى جانؤروں كو د فع كرنا وغيره وغيره) ارشاد ہواکہ اس رعصا، کور زمین یر، ڈالدو اے مولی سواتھوں تے اس کو درس یر، ڈال دیا تو يكايك وه (خداكى قدرت سے) ايك دوڑ تا مواساني بن كيا رجس سے موسى عليات الم ور کئے) ارشاد ہواکہ اس کو پکڑلو اور ڈرونہیں ہم ابھی (پکڑتے ہی) اس کو اس کی پہلی حالت پر کر دیں گے دبینی یہ بھرعصا بن جا دبیگا اورتم کو کوئ گزندنہ پہنچے گا ، ایک معجزہ تو یہ ہوا) اور (دو سرامیخ و اور دیاجاتا ہے کہ ، تم اینا (داہنا) بائھ اینی (بائیں ، بغل یں دے اور بھسر برکالو) ده بلاکسی عیب دیعنی بلاکسی مرض برص دغیره) کے دنہایت، دوشن بوکر بیکے گاکہ یہ دسری نشانی (ہماری قدرت اور محقاری بترت کی) ہوگی (ادرید محکم لاعقی کے ڈالدینے اور ہا تھ کو گربیان میں بین اس النے ہے) تاکہ ہم تم کوایتی دقدرت کی بڑی نشانیوں میں سے بعض نشانیاں دکھلائیں و تواب یہ نشانیاں بیر، تم فرعوں کے پاس جاؤ دہ بہت مدسے کل کیا ہے دکہ خدای کا دعوی کرتا ہے تم اس کو تبلیغ توحید کرد ادراگر نبوت میں شبہ کرے تو یہی معجزے د کھلادد)

وَمَا يَلْكَ رِيمَيْنِكَ يَلْمُوْمِنَى ، باركاهِ ربّ العالمين كىطرف سے حضرت مولى على الله سے بیرسوال کرناکہ آئیکے ہا تھ میں کیا جیزے مولی علیاسلام پر تطفت و کرم اور خاص مہرسربانی کا آغازها تاكرجيرت الكيزمناظ كوريكه ويكهف اوركلام رباني كم فسنف سےجو بهيت اور دمشت ال يرطاري مقى وه دُور و و التيرايك دوستانداندا وكاخطاب سي كرتهاد المراس كيا چيز ہے اس كے علاوہ اس سوال ميں يہ حكمت بھى ہے كہ آ گے اس عصا كو جواكن كے التصمين تقى أيك سانب اورا أوها بنانا تقادان كغ يهدان كومتنزكر دياكم و كيمولو تهاك ہاتھ میں کیا چیز ہے جب آتھوں نے دیکھ لیاکہ وہ لکوی کا عصا ہے تب اُس کوسانی بنانے كاسمجرة ظاہركياكيا ورية موسى عليالسلام كويدا خمال ہوسكتا تقاكميں رات كے اندهیرے میں شاید لاٹھی کی جگرسانے ہی پیکرولایا ہوں۔

قال کی عقمای ،حضرت موسی علیا ستلام سے سوال صرف اتنا ہوا تھا کہ ہاتھ ہیں کیا چیز ہے اسکا اتنا جواب کافی تھا کہ لاتھی ہے مگر حضرت موسی اعلیہ لسلام نے اس جگہ تین کو اپنی اصل سوال کے جوا ہے ڈیا دہ عرض کیں اول یہ کہ یہ عصد آمیری ہے ، دوسرے یہ کہ ہیں اس سے بہت سے کام ایتا ہوں ایک یہ کہ اس پر ٹیک لگا لیتا ہوں دوسرے یہ کہ اس سے ابنی بکر یوں کے لئے درختوں کے ہے جھا ارتا ہیں تیسرے یہ کہ اس سے اور جسی میرے بہت سے کام بکتا ہے اس کے درختوں کے ہے جھا ارتا ہیں عشق و محبت اور اس کے ساتھ دعایت اوب کی جامعیت کا کمال ظاہر ہوتا ہے ۔عشق و محبت کا تقاضا ہے کہ جب مجبوب مہران ہوکر متوجہ ہے تو بات درا ذکی جائے تاکہ اسکا ذیا دہ سے ذیا دہ فائدہ اُٹھایا جائے مگر ساتھ ہی ساتھ اوب کا مقتضایہ بھی ہے کہ بہت ہے تک لکلف ہوکر کلام ذیا دہ طویل بھی مذہو ۔ اس دو سرے ساتھ اور بھی بہت ہے کہ بہت ہے تک لکلف ہوکر کلام ذیا دہ طویل بھی مذہو ۔ اس دو سرے سے دور بھی بہت سے کام لیا کرتا ہوں اور ان کا موں کی تفصیل بیان بنہیں کی درق و مظاہری) سے اور بھی بہت سے کام لیا کرتا ہوں اور ان کا موں کی تفصیل بیان بنہیں کی درق د مظاہری) تفسیر قرطبی میں اس آئیت سے یہ مئل ذیا لا ہے کہ صرورت اور قسلمت سے ایساکر نا بھی تفسیر قرطبی میں اس آئیت سے یہ مئل ذیا لا ہے کہ صرورت اور قسلمت سے ایساکر نا بھی تفسیر قرطبی میں اس آئیت سے یہ مئل ذیا لا ہے کہ صرورت اور قسلمت سے ایساکر نا بھی تفسیر قرطبی میں اس آئیت سے یہ مئل ذیکا لا ہے کہ صرورت اور قسلمت سے ایساکر نا بھی

جائزے کہ جو بات سوال میں نہ پوچھی گئی ہواس کو بھی جائیں بیان کر دیا جائے۔ مسئلہ۔ اس آیت سے علوم ہواکہ ہاتھ میں عصا دکھنا شنت ا نبیاء ہے۔ دسول لٹ

صلهان مکتیم کی بھی میں سُنت تھی اوراسیں بیشمار دینی دینوی فوا مَد ہیں - (قطبی)

فَاذَا هِی حَبَّة عِنْ مَسْنَی ، حضرت موسی علیالسلام کے ہاتھ میں جوعصا تھی بجم رہانی اس کوڈالدیا تو وہ سانب بن گئی، اس سانب کے بالے میں قرآن کریم کی آیات میں ایک جبگہ تو یہ آیا ہے کا تھا ہے کہ اور ہادر بڑے موٹے سانب کو کہتے ہیں، دوسری جگہ آیا ہے فافلا حَیَّۃ ہِ آیا ہے یہ عام ہے ہر چھوٹے بڑے ادر پتلے موٹے سانب کو حیث سانب کو حیث ہا جا اور اس آیت میں جو لفظ حَیَّۃ ہِ آیا ہے یہ عام ہے ہر چھوٹے بڑے ادر پتلے موٹے سانب کو حیث ہا جا ہے یہ عام ہے ہر چھوٹے براے اور پتلے موٹے سانب کو چھوٹا ہو پھر سوٹا اور بڑا ہوگیا، یا یہ کہ سانب تو بڑا اور از دہا ہی تھا مگراس کو جاتی ہے تی ہم ہما ہے ہوگا سانب اس مُناسبت سے کہا گیا کہ غیظیم انشان از دہا شرعت سیر کے اعتباد سے چھوٹے سانب کی طرح تھا بھی عام عا دت کے فلاف کہ بڑے اثر دہے تیر نہیں چل کے یہ ہما ہی تھا در آیت میں انفط کا تھا سے وقت ہے فلاف کہ بڑے اثر دہے تیر نہیں چل کے یہ ہم ہوستی ہے کہ جات سے اسکونٹ اسٹادہ بھی ہوستی ہے کہ جات سے اسکونٹ اسٹادہ بھی عام و صف شرعت سیرمیں دی گئی ہے۔ دہ ظھوی ہوسکتا ہے کہ جات سے اسکونٹ اسکونٹ ایو اسکونٹ اسٹادہ بھی عام و صف شرعت سیرمیں دی گئی ہے۔ دہ ظھوی کو کہا جاتا ہے کہ جات سے اسکونٹ اسکونٹ ایو کہا جاتا ہے در اصل جانز رکے با ذو کو کہا جاتا ہے کہ خاص و صف شرعت سیرمیں دی گئی ہے۔ دہ ظھوی کو اسکونٹ اسکون

4: F. Wb &vom اس جكماني بازو كي ين بغل مين بائه لكالين كاحكم واب تاكه يه دوسرا معجزة حضرت مولى عليا لوعطاكيا جاوك كدحيب بغبل سك ينبح بالتقر والكرزكايس توآفت بكى طرح فيكف تكفه حصرت ابرعبابن تخرج بيضاء كى يى تفسير فقول ہے۔ (مظهرى) إذْ هَبْ إلى فِرْعَوْنَ ما يِنْ رسول كودوعظيم التان مجرون سي المران كوحكم دياكياكم عون سركش كو دعوت ايمان ديت كے لئے بطے جائيں ۔ ت رب الشر خرني صدري ١٥٥ و يسرر آني تَحَلُّلُ عُفَالَ فَي مِنْ لِسَالِيْ إِنْ يَفْقَهُوا فَوْ لِيَ ہادون میرا بھائ اس سےمضبوط کر میری كام بتان والامير ب كفركا ادر شریک کراسکومیرے کام میں کرتیری باک ذات کا بیان کریں بم بہت سا، تو تو ہے ہم کو قَلَ أَوْ يَنْدَى شُوْرُاكِي لِلْمُوْسِي الْ ملا بچھ کو تیرا سوال رجب موسی علیالسلام کومعلوم ہواکہ مجھ کو پیٹمبر بناکر فرعون کی فہائش کے لئے بھیجا جادہاہے تواس وقت اس مقعب عظیم کے شکلات کی اتبانی کے لئے درخواست کی اور) عرض كياكه الصير ارميرا وصله (اور زياده) فراخ كرديجة وكه تبليغ بين انقياض يا تكذبي مخالفت يس فيتى مريو) ادرميرا (بير) كام رتبلغ كا) آسان فرما ديجة ركدارباب تبليغ مع مجتم اورهانع تبلیخ کے مرتفع ہوجادیں) اورمیری زبان پرسے بھی دلکنت کی ہٹادیئے تاکہ دیک میری بات مجھ سکیں، اورمیرے واسطے میرے کئے میں سے ایک معاون تقرر کردیجے لعنی ہارون کو جومیرے بھائی ہیں اُن کے ذریعہ سے میری توت کوشتی کم دیجئے اور اُن کومیرے داس تبلیغ کے عارف القرآن جركمة

کام بین کشریک کرد یجئے (مینی ان کوئی نبی بناکر ما مور بالتبلیخ کیجئے کرہم دولؤں بہلیخ کریں اور میرے قلب کو قوت بہنچ کہ ہم دولؤں بہلیخ کریں اور میرے قلب کو قوت بہنچ کا تناکہ ہم دولؤں (ملکر تبلیغ و دعوت کے دقت) کئی کنوب کشرت سے باکی (شکرائے نقائص سے) بیان کریں اور اکپ (سکے اوصاف و کمال) کا خوب کشرت سے ذکر کریں (کیونکمہ اگر دو شخص میں بیان دوسرے کی تا ٹیدسے دا فرا در مشکا ٹر ہوگا) بیشک آپ ہم کو (اور شخص میں بیان دوسرے کی تا ٹیدسے دا فرا در مشکا ٹر ہوگا) بیشک آپ ہم کو (اور ہمال کو بخوب دیکھ در ہے ہیں داس حالت سے ہماری احتیاج اس امری کہ آیک دوسرے کے معاون ہوں آپ کومعلوم ہے) ارشا دہواکہ تمہاری (ہر) درخواست (جوکہ دَیتِ الشّی کے آپ ہیں نہواکی معاون ہوں آپ کومعلوم ہے) ارشا دہواکہ تمہاری (ہر) درخواست (جوکہ دَیتِ الشّی کے آپ ہیں نہواکی معاون ہوں آپ کومعلوم ہے) ارشا دہواکہ تمہاری (ہر) درخواست (جوکہ دَیتِ الشّی کے آپ ہیں نہواکی کہ آپ موتی ۔

سوياته ظله ٢٠ ١٢٠

معارف ومسأئل

حضرت مونی علیه اسلام کو جب کلام الہی کا سترتِ خاص حاصل ہواا در منصبِ نبوت و
رسالت عطا ہوا تو اپنی فرات اور اپنی طاقت ہر بھروسہ جھو کر خود حق تعالی ہی کی طرف متوجہ ہوگئے
کہ اس منصبِ عظیم کی ذرتہ داریاں اُسی کی مددسے پوری ہو سکتی ہیں اور اُن پر جو مصائب اور شدا مُد
اُلازی ہیں اُن کی برداشت کا حوصلہ بھی حق تعالیٰ ہی کی طرف سے عطار ہو سکتا ہے اسلئے اسوقت
کی پانچے دُعا میں ما تکیں ، بہلی دُعا آف تھے لی حک لاوی ، بیٹی میراسیدنہ کھولد ہے اسیس الیٹی سوت عطا
کی با پنچے دُعا میں ما تھیں ، بہلی دُعا آور دعوتِ ایمان کو کون سک بہنچا نے میں جو اُن کی طرف سے
کی زما دے جو علوم نبوت کا محمل ہوسکے اور دعوتِ ایمان کو کون سک بہنچا نے میں جو اُن کی طرف سے
سخت مست شننا برٹر تا ہے اس کو ہر داشت کر نا بھی اسمیں شابل ہے۔

دوسری دُما دَیسِیْ فَیْ اَفْرِی دَفِی مِیراکام میرے لئے آسان کردے) یہ ہم وفراست بھی بہوت ہی کا غرہ تھاکہ کسی کام کامشکل یا آسان ہونا بھی ظاہری تدبیروں کے تابع بہیں یہ بھی حق تعالیٰ ہی کی طوف سے عطیہ ہوتا ہے وہ اگر چاہتے ہیں توکسی کے لئے مشکل سے شکل بھادی سے بھادی کام اسمان کردیتے ہیں اور جب چاہتے ہیں تو اسمان سے آسان کام شکل ہوجاتا ہے اسی گئے مدیث سریف شریف میں مسلمانوں کو اس د عاء کی تلقین کی گئی ہے کہ اپنے کاموں کے لئے اللہ تعالیٰ سے اسلم میں اللہ ہوگا المطرح مقامان کاکریں آلڈ ہوگا المطرف تنبی ہی تو آسان کو اسمان کرنے کے اللہ میں المطرح مقامان کا کریں اللہ ہوگا المطرف میں ہے کہ اپنے کاموں کے لئے اللہ ہوگا کی تنبی ہی تھی ہوگا تیس ہوگا تی تنبی ہوگا تیس ہوگا کا کا اسال کا کا کا اسال کی تعریف کی اسلام کی کا کا کا اسال کی تعریف کی کا کا کا کا کا کا کا کا کا کی کی تعریف کی کی کے قبضہ میں ہے ۔

ردیں ہے۔ میں کہ مار والحلائے تُن السّانی کففظہ التوری میں کے اللہ اللہ کا کہ کا اللہ کا کہ کا اللہ کا کہ کا اللہ کا کہ کا ک

ں ہے کدایا۔ چھڑی ہا تھ میں تھی جس تھے کی بات پرخیال کرتے ہیں جس کوئسی چیز کی عقل نہیں اور اگراک جاہیں تو تجریہ ک اس کونسی بھلے بڑے کا متیاز نہیں۔فرعون کو تجریہ کرانے کے لئے ایک الكارے اور دومرے میں جواہرات لاكر موسى عليه السلام كے م بجیّرے میر بیخوں کی عا دت کےمُطابق آگ کے انگارے کو روش خولصورت سمجھ *ک* کی رونق پیچوں کی نظر میں السبی بہیں دو تی کہ اس نے جو کھ کیاوہ بچین کی تادانی يهال توكوي عام بخيرتهي تقاء خداتها لل كابرو في دالارسول تفاجن كي قطرت اوّل بيدا عل کسی اور فرعون کونفین آگیا که مؤ مو كنى اى كوتسران ميں عُقده كہاكيا ہے اوراس كوكھولنے كى دُعا حضرت موئى نے مائكى دمظھوي قطعي بہلی دو دعایش توعام تقیں سب کامونمیں الشرتعالی سے مروحال کرنے کے لئے تنیسری دعامیں اپنی ایک محسوس کمزوری کے ازالہ کی درخواست کی گئی کہ رسالت و دعوت میلئے زبان کی طلاقت اور نصاحت بھی ایک ضروری چیز ہے۔آگے ایک آیت میں برتبلا پاکیا ہے کہ موٹی عليه السلام كى بيرسب دُعائين قبول كرلى كنيس حيكاظا بريد بي كدر بان كى يرلكنت كفي حتم بوكن موكى مكر خود موسى على السلام في حضرت بارون كواين سائد درالت مين سريك كرنے كي جو دُعاكى هيه أسيس بيمي قرمايا هي كه هُوا فَصَحْ مِينَ لِسَانًا ، ليني اردن علياسلام أربان كاعتبار ہے برنسبت میرے زیا دہ قصیح ہیں۔ اس معلوم ہوتا ہے کہ اثر لکنت کا کھریاتی تھا۔ نیز فرعون في حضرت موى عليد السلام يرجوعيوب لكاف أن مين يهي كها كد كا يكاديبن اليدي بیراین بات کوصاف بیان نہیں کرسکتے ۔ بعض حضرات نے اسکاجواب بیر دیا ہوکہ جنرت موسى على السلام نے تودایتی و عامیں اتنی ہی بات مانگی متی که زبان کی بندش اتنی تھل جا

بارت اهران جسا سوفاق ظلم ۲۰: ۲۲ اہل میں سے ہر، محصر متعین کر کے قرمایا کہ وہ میرزیھائ ہارون ہے جس کومیں وزیر بنانا چاہۃ موں تاکہ میں اُس سے مہات رسالت میں قوت حاصل کرسکوں -حضرت ہارون علیالسلام حضرت موی علیالتلام سے تین یاجادسال بڑے تھے، ادرتین سال پہلے ہی وفات یائ ۔ جس وقت موسی علیابسلام نے یہ دعارمانگی وہ مصرس تھے الشرتعالي نے موئی علیا نسلام کی دُعاریراُن کو بھی نبی بنا دیا تو پذر بعیہ فرمشتہ اُن کو بھی مصری میں اسى اطلاع ملكى حب موى علياسلام كومصرس فرعون كى تبلغ كے لئے دوانه كيا كيا تو ان كوير بدات كردى كئى كه وه مصرے يا ہران كااستقبال كري اورايسا بى داقع ہوا - (قطبى) وَ ٱسْتُوكِنْ فِي آمْدِي ، حضرت موسى عليانسلام نے حضرت ہار دن كو اينا وزير بنايا جا ہا تویه اختیار خوداُن کو حاصِل تقا تبرگاحق تعالیٰ کی طرف سے کرنے کی دُعار کی مگرساتھ ہی وہ یہ چاہتے تھے کہ ان کو نبوت ورسالت میں اپنا شریک قراد دیں پیرا ختیا رکسی رسول و نبی کو خود نہیں ہوتااس لئے اسکی چُدا گانہ دُھاکی کہ اُن کو میرے کا دِرسالت میں شریک فرمانے اُفری فرمایا صالح رفقار ذكروعبادت كي نشيخ ك كينيزًا وَنَنْ كُلُ كَا كَيْنِرًا، يعي مضرت بارون كو یں بھی مردگار پرتے ہیں دریرادر شریک نبوت بنانے کا فائدہ یہ پر گاکہ ہم کثرت سے آپ کی نیسے و ذکر کیا کریں گئے - یہاں بیسوال ہوسکتا ہے کہ سبیع و ذکر توالیبی چیزہے کہ ہرانسان تنہا ا بھی حتینا جاہے کرسکتا ہے اس سے لئے کسی ساتھی کے علی کا کیا دخل سیکن غور کرنے سے حلوم ہوتا له ذكروسيع ميں سي ساز كار ماحول اورالشروالے ساتھيوں كا برا دخل ہوتا ہے جس كے ساتى التروالي نهرن وه اتنى عبادت نهي كرسكتا حتى وه كرسكتا بي جسكاما حول التروالون كا اور سائتى ذاكرمث على بون، اس معلوم بواكه جَيْحَض ذكرانترمين شغول دمهنا جاب اسكوماز كأ ما حول كى بھى تلاش كرنا چاہئے ۔ دُعايْنِ بِهِال حَتْم بِرِكُسِين آخر مين حق تعالىك طرف سے ان سب دُعادُ ل كے قبول ہوجا كى بىنارت دىيرى كى قال قال الدينية شۇلك يالدى يالدىكى ، يىنى آپ كى مانكى بوي سىب چیزی آب کو دیری میں۔ وَلَقَانُ مَنَتًا عَلَيْكَ مَرَّةً أَخْرَى ﴿ إِذَا وَحَيْثًا إِلَّ اوراحان کیا تھا ہم نے بھر بد ایک بار اور بھی جب سی بینیاہم نے سری أُمِّكَ مَا يُوْ كَ شَاكِنَ أَوْنِ فِيْهِ فِي التَّا بُوْتِ فَاقْنِ فِيْهِ ماں کو بوا مح شناتے ہیں کہ ڈال اسکو صندوق میں میمر اس کو ڈال دے دریا میں 빞

Cas Cas



14



معادف القرآن جسكة شتم

معارف ومسائل

وَلَقَالُ مَنَتًا عَلَيْكَ مَرَّةً أُخْرِينَ ، حضرت موسى علياسلام برجوانعامات وعنايا حق اس و قت مبذول ہوئیں کہ شرف بم کلامی سے نوازاگیا ، نبوّت ورسالت عطا ہوئ ، خاص معجزات عطام وسے اس كے ساتھ يہاں حق تعالے اپنى دہ نعمتيں سى اُن كوياد دلاتے ہيں جو ثوع پرائش سے اسوقت تک زندگی مے ہرد درسی آپ پر میڈول ہوتی رہیں اور سکا ارتمائشوں ا ورجان کے خطروں کے درمیان قدرتِ حق نے کن حیرت انگیز طریقوں سے ان کی حفاظت فرما۔ ينعتين جنكا ذكرا كے آنا ہے زمانہ وقوع كے اعتبارے بہلى ہيں بہاں جوان كو آخرى كے لفظ سے تعبير كياكياب اس تعيم معنى نهين كه ينهمتين استح بعدكى بين بلكر نفظ أخرى مجى مطلقاً دوسرے مے معنے میں مجی آتا ہے جیس مقدم مُوخر کا کوئ مفہوم نہیں ہوتا یہاں بھی بدنفظ اسی معنے میں کولات) حصرت موسى عليان المام كاير يُورا قصة مديث كي والرسيففيل كساعة أحكا في كا-الْ ٱقْتَمَيْنَا لَا أَمِنْكَ مَا يُوْسَى ، تعنى جبكه وي بيني في الله م ك يكس ايك ايسے معامله كى جو صرف وى سے بى معلوم بوسكتا تھا دہ يركه فرعونى سيابى جو كسرائيلى لوكونكونتال كرنے يرمائمور عقدان سے بچانے سے لئے اُن كى والدہ كو بذرى الى بنا ياكياكداك كوايك بوت ميں الم بند كرسم درياميس والدين اورأن مح بلاكم وفي كالنديشه بهرين م أن كوحفاظت سے ركھيں محماور بھرآ بچے پاس ہی وابس بہنچادیں کے۔ظاہر ہے کہ یہ باتیں عقل فیاس کی نہیں، اللہ تعالیٰ کا دعاد اورأن كى حفاظت كانا قابل قياس أتظام صرف أسى يطوف سے بتلا فيركسى كومعلوم إوسكتاج کیا دمی کسی غیرنبی درسول | صحیح بات بیر ہے کہ نفظ دی کے تغوی معنے ایسے تھنیر کلام سے ہیں جوجر ی طرت بھی آسکتی ہے عاطب معلوم ہو، دُوسرے اس بھللے نہوں۔ اس تعنوی معنے کے عتبار سے وحی سی سے نئے مخصوص نہیں۔ نبی ورسول اور عام تخلوق ملکہ جا اور تک سیس شامل ہوسکتے ہیں ۔ (اَ قَتَىٰ زَیْكَ إِلَى النَّحْلِ) میں شہری تھیوں کو ہزردیے، وی تعقین تعلیم کرنے کا ذکراسی معنے كامتبار سب اوراس آيت مين أو حينتاراتي أميلا مي المعنى تنوى كامتبار سي الت أنكاني يا وكول فينالا إنبيل ما بجيد حضرت مريم عيهاالسلاك كوارشات رباني ينجيه با دجود مكد باتفاق جهوراً مت وه بي دو نبيب تين اس طرح كى تعنوى وحى عمدماً بطور الهام كم بوتى بيد كرحق تعالى كسى كة طلب سي ايك مضمون ڈالدیں اوراس کواس پرمطین کرزیں کہ افتد کیطوف سے ہے جیسے عموماً اولیا رافتر کو استقیم کے الہامات موتے رہے ہیں، بلکہ ابوحیان اور مین ووسرے علمار نے کہاہے کہ اس طرح کی وحی بعض او قات میں فرشتے کے واسطے سے پی ہوسکتی ہے جیسے حصرت مریم کے واقعہیں اس کی تصریع ہے کہ جرالیا من

سوين طايم ٢٠ ١١٠ نے بشکلِ انسانی بیمثل پوکران کولفین فرمائ مگراسکا تعلق صرف اُس بخص کی ذات سے ہوتا ہے جس كويه وى الهام بردتى ہے۔ اصلارِح خلق ادر شليغ و دعوت سے اسكاكوى تعلق نہيں ہوتا بخلات وي نبو محكداسكا نشامى مخلوق كى صلاح كے لئے کسى كو كھڑاكرنا اور تبليغ ودعوت كے لئے مائوكرنا ہوتاہے اس کے ذمتہ لازم ہوتا ہے کہ اپنی وی پرخود کھی ایمان لائے اور دوسروں کو بھی اپنی نبوت کے مانے اوراین وی کے مانے کا یابند بنائے جواس کو مذمانے اُسے کافر قراردے ۔ يهى فرق ہے اس وحي الهام تعنى وحي تغوى ميں اور وحي تبوت يعنى وجي اصطلاحي ميں۔وجي تغوى بهيشه سے جارى ہےا دربہشہ رہے گی، اور نبوت اور وی نبوت حصرت خاتم الا نبیار صلی متر عکیا يرختم إو يحى ب- بعن بزركوں كے كلام ميں اسى كو دمي تشريعى وغيرتشريعى محافوان ساجير كرديا ہے جس كومرعي نبوت قادياني نے شيخ في الدين ابن عربي رح كي بعض عياد توں كے حوالہ سے اپنے دعواتے نبوت کے جواز کی دلیل بنایا ہے جوخود ابن عربی علی علی تصریحات سے باطل ہے۔ اس مسئلہ کی محمل مجت توضيع ميرى كتاب حكيم لنيقيت يرتفسيل سي مركور الم أتم مُوسى عليالتلام كانام ارمح المعَاني ميس بهكر ان كامشهورنام يؤجنان به ادرا تقان يل كا نام لحيان بنت يصرب لادى كهاب، اورائين توكول فيان كانام ياريكا بيض في بالزخت بتلاما ہے۔ بعض تعویر گنداے والے ان کے نام کی عجیب خصوصیات بیان کیا کرتے ہیں احب وح المعا نے قرمایا کہ ہمیں اسکی کوئی بنیاد نہیں معلوم ہوئ اور غالب یہ ہے کہ خرا فات میں سے ہے۔ فَلْيُلْقِدِ الْبُيرِ بِالسَّاحِلِ ، اس حَكَرِ نفظ يم بمعن درياس بظا بهن مُرادب آيت مين ا يك يحم توميني عليانسلام كى دالده ما جده كو دياكيا كهاس بيخ رموني عليانسلام) كوصندق بي بندكرك دريامين ڈالدين، دوسراحكم بجينفرامردرياك نام بےكروه اس تابوت كوكناره يردالدے قَلْيُلْقِة الْدِينَةُ بِالسَّاحِلِ، دريا يُحونكه بنظام ريض بينتوريك أس وهم ين كامفهوم سموس نهي آيا اسى كئة معض مصوات ية قراد دياكه اكرجيريها ل صيغة الريني كلم استعمال مواسي محرفراد اس سيح كم نهي بلكم خبرد بناسيحكه دريااس كوكناره بر دالد بيجا مرحققين علماء كے نز ديك بيرا مرابينے ظاہر بريا مراود تكم ای مے ادر دریا ہی اُسکا مخاطب کیونکہ اُن کے نر دیک دنیائی کوئ مخلوق درخت اور پھر تک یے عقل دیے شعور نہیں ملکہ سب میں عقل وا دراک موجود ہے اور یہی عقل وا دراک ہے ہی کے سب میر سب بیرس حسب تصریح قران ادشری بیج مین شغول بین - پال پیرفرق طرود ہے کہ انسان اورجن ا در فرمشته کے علادہ سی مخلوق میں عقل وشور اتنا تکمل نہیں جس پراحکام حلال وحوام عائد کرے مكلف بنايا جائے ، دانائے أورم في خوب فرمايا ہے -خاک دیا دو آب د آتش بنده اندینه یا من د تو مرُ ده یا حق زنده اند بيِّك

سورة ظل ۲۰:۲۰ عادف القرآن جسلة يَاخُونُ لَا عَدُولِ وَعَلَ وَ لَهُ إِلَيْنَ اسْ مَا بُوت اوراسيس بندكي مولي بحج كوساسل دریاہے ایساشخص اٹھائے محاجومیرا بھی دشمن ہے او زیونی کا بھی ، مُراد اس سے فرعون ہے فرعو كاالتذكاذيمن وتاتواس كے فركى وجہ سے ظاہر ہے گر موئى عليانسلام كا دشمن كہنااس لئے تحل غور ؟ كمراسوقت توفرعون حضرت موسى علياسلام كارشمن نهيس تفابلكأن كى بردون برزر يكشرخرج كروبإتفاجيم اس كوحضرت موسى على يستلام كادتمن فرمانا يا توانجام كاركے اعتبارے ہے كہ بالآخر فرعون كارتمن ہو جا التدتعاني كي علم مين عقا اوريه كها جائة توسى كجيد بعينين كرجها تنك فرعون كى ذات كاتعلق برده في نفسه اسوقت بھی دہمن ہی تھا۔ اُس نے حصرت مُوئ کی تربیت صرف بیوی آسیر کی خاطر کواد آئی تھی اور اس میں بھی جب اُس کوشیر ہوا تو اُسی وقت قتل کرنے کا حکم دے دیا تھا جو حضرت آسیکی دانشمند کے وراجیم ہوا (روح ومظہری) وَ الْقَيْتُ عَلَيْكَ عَلَيْكَ عَلَيْتَ مِنْ السَ عِكَدلفظ محبّت مصدر بمعن محبوبيت سے اور مطلب یہ ہے کہ حق تعالی فرماتے ہیں کہ بہنے اپنی عنایت و رحمت سے آکیے وجود میں ایک مجبوبیت کی شان رکھدی تھی کہ جوائے کو دیکھے آپ سے محبت کرنے لگے ۔حضرت ابن عباس اور عکرمہ سے ہی تفسیر منقول ہے (مظہری) وَلِنْصُنَعَ عَلَى عَيْنِي مَ لَفظ صنعت ساس حَكَمُرادعمره تربيت ہے جيے عربي صَنعَتُ تَنِیقی کا محاورہ اسی معنی میں معروت ہے کہ میں نے اپنے گھوڑ ہے کی اچھی تر بیت کی اور عَلیٰ عَیْنِیْ سے مراد على حفظى بعنى الله رتعالى تے اراده فرماليا تفاكم موسى على استلام كى بہترين تربيت براه راست حق تعالی کی برانی میں ہواس سے مصری سب سے بڑی ہی تعین فرعون سے ہاتھوں؟ اس کے گھرمیں بیکام اس طرح لیاگیا کہ وہ اس سے بے خبر تفاکہ میں اپنے ہا تھوں اپنے ڈیمن کوبال رباروں- (مظهری) ا ذُنتُه شینی اُختاف ، موسی علیالسلام کی بین کااس تابوت کے تعاقب بیں جاما اوراس کے بعد كا تصريكا اجال اس آيت بين آيا ب جس ك آخرس فرمايا ب و فَتَنْ فَا فَتُو نَا لِينَ بَمِ فِي آب ك أن ماتشكى ماد ماد (قالدابن عباس من ياآب كو مبتلات أن مايش كيابار بار (قالدالضحاك) الحكى يورئ تفصيل شنن نسائ كى ايك طويل حديث ميں بر وايت ابن عباس رم آئى ہے وہ يہ ہے-حضرت مولی عدایات الا کامفصل قصر حدیث الفتون کے نام سے طویل حدیث منافی کتالیقنیر میں بروایت ابن عبائ نقل کی ہے اور ابن کشرنے اپنی تفسیرس میں اسکوبورا نقل کرنے کے بعد فرمایا ہے ا که حضرت این عباس نے اس روایت کو مرفوع مینی نبی کریم صلی النٹر عکتیہ کم کا بئیان قرار دیا ہے اور ابن كبشر نے يمي عديث محمر فوع مونے كى توشيق كے لئے قرما يا ہے كه :-

سوينة طان ٢٠ : ١١٨

AD

معادف القرآن جب لدشم

وصد فی ذیات عنی مین اس صریت کامرفوع بونا میرے زدیک درست ہے پھراس کے ا ایک دلیل بھی بڑیان فرمائ میکن اسے بعدیہ جی نقل فرمایا ہے کہ ابن جریرا درابن ابی حاتم نے بھی اپنی ا پنی تغسیروں میں یہ روایت نقل کی ہے تھر وہ موقوت بینی ابن عیاس کا پنا کلام ہے ، مرفوع عدیث کے جھے اسیں کہیں کہیں آئے ہیں ایسا معلوم ہوتا ہے کہ ابن عباس نے یہ روایت کعیہ احبارہ سے لی ہے جیساکر بہت سے مواقع میں ایسا ہواہے سرا بن کشر جیسے نا قدِ مدیث اور نسائ جيسے امام حديث اس كو مرفوع مانتے ہيں اور حضوں نے مرفوع سليم نہيں كيا وہ بھى اسكے مضمون پر کوئی تحیر نہیں کرتے اور اکثر حصتہ اسکا توخود قران کریم کی آیات میں آیا ہوا ہے اسلنے پوری عدم كا ترجبه لكها جاتا ہے بین حضرت موسیٰ علیات لام مے تفصیلی قصے محضمن میں بہت سے کمی اور علی نوائد کھی ہیں۔ حدیث الفتون بسندامام نسائ تاہم بن ابی ابوب فرماتے ہیں کہ مجھے سعیدین تبیر نے خبردی کرمیں نے حضرت عبداللترین عباس سے اس آمیت کی تفسیرور یا فت کی جو حصرت موی عدارتدام کے بامے میں آئ ہے مینی وَفَتَنَاكَ فَتُونَا میں دریافت کیا کا سی فتون سے کیا مراد ہے؟ ابن عباس نے فرمایا کہ اسکا دا تعہ بڑا طویل ہے مبع کوسویرے آجا و توبتلادیکے بب اسك دن سع بدى توسي سوير يى ابن عباس كى فدست ميں حاصر بوكيا تاكم كل جو وعده رمایا تھا اُس کو یُوراکرا وُں حضرت این عباسٌ نے فرمایا کہسنو دایک روز) فرعون ا در اس کے کی ذرّیت میں انبیارا در با دشاہ پیدا فرما دیں گے۔ بعض شرکار محبس نے کہاکہ ہا ں بنی اس تواسى نتظرى جرمين أن كو ذرا شك ينهي كه أن كه اندركوى نبى ورشول بيدا ، د كا در يهك ان لوگون كاخيال تفاكه وه نبي يوسف بن بيقوب عليه السلام بن حبب ان كى وفات بوكئي توكينے لکے کہ ابراہیم علیاسلام سے جو وعدہ کیا گیا تھا براسے مصداق نہیں دکوی اور نبی درسول بیدا ہوگا بواس د مدہ کو بوراکر بیگا)۔فرعون نے یہ سُنا تو دائس کو فکرلائتی ہوگئی کراکر بنی اسرائیل بیں جن کو اُس نے غلام بنار کھا تھاکوئ نبی درستول بیدا ہوگیا تو دہ ان کو مجھ سے آزا د کرائے گا) کس لئے حاضری مجلس سے دریافت کیا کہ اس آفت سے بچنے کاکیا راستہ ہے بیرلوگ آپس میں مشودے كرتے دہے اور انجام كارسىكى رائے اس يرشفق ہوكئى كە دبنى اسرائيل ميں جولۇكا يبدا ہو اس كو ذيح كر ديا جائے اس كے لئے اليے سيابى مقرد كردئے كئے جن كے ہا تقول ميں ميمولال تضين اوروه بني اسرائيل محايك ايك كفرمين جاكر ديجفته تتقيمهال كوي لز كانظرا يا اسكوبي كرديا. مجهم عرصه ميسلسله جاري رسن كعيدان كويين وش آياكه بماري سب خدمتين اور مخنت شقت کے کام توبی کسرائیل ہی انجام دیتے ہیں اگریسلسلة سال کا جاری رہا توان کے بورھ توا پنی

17

موت مرجایں کے اور بچے ذیح ہوتے رہے تو آئرہ بی اسرائیل میں کوئ مرد ند اسے گا جو ہاری فاریہ انجام دے۔ نیتجہ بین و کاکرسادے مشقت سے کام ہیں خودہی کرنا پڑیں کے اسلے اب بر دانتے ہوئ لدایک مال میں بریوا ہونے والے لڑکوں کو جھور دیا جائے، دوسرے سال میں بریوا ہونے والوں کو ذبح كرديا جائے اس طرح بن اسرائيل ميں كھ جوان بھي رہيں محجوات بورصوں كى جگہ السيم ادران کی تعداداتن زیاده بھی نہیں ہو گی جس سے فرعونی حکومت کوخطرہ ہوسکے۔ یہ بات سب كويسندائ اوريبي قانون نافذكر دياتيا داب حق تعالی كی قدرت و حكمت كاظهوراس طرح مواكه ، حضرت مولى عليه بسلام كى والده كواكي عمل اسوقت بهوا جبكه بيكون كوزنده حفور دين كاسال تفاء اسمیں حصرت ہا دون مللے بسلام بیدا ہوئے فرعونی قانون کی رُوسے اُک کے لئے کوئ خطرہ نہیں تھا اسكاسال جواراكون محقتل كاسال تعااسي حضرت وللى حمل بين آئے توان كى والدہ يرائج وعشر طارى تفاكداب يدبجير بيدا بوكا توقتل كرديا جا يكا- ابن عباس في فقته كوبهال يمك بيني فرماياكه اسابن جبير فتتون تعنى أذمائش كايريهلا موقع سي كدموى عليدانسلام ابهى ونسيايي يبدا بهي نهيں موسے تھے كدائ كے قسل كا منصوبہ تياد تھا۔ اس وقت حق تعالى نے انكى والدہ لوندرى وى الهام يستى ديرى كمر لَا تَعَنَافِي وَلَا شَعَرَفِ إِنَّا رَلَدُّوعٌ إِلَيْكِ وَجَاعِلُوهٌ مِنَ الْمُسَلِيْنَ بینی تم کوئ خوف وغم نہ کرو (ہم اسکی حفاظت کریں گے اور کچھ دن جبرا رہنے کے بعد)ہم انکوتمہا س دائیں کردیں کے بھران کو اینے رسولوں میں داخل کرلیں گے -جب موسی علالسلامی ہو گئے تو اُن کی والدہ کوحق تعالے نے حتم دیاکہ اس کو ایک تا بوت میں رکھ کردریا دنیل) میں دالدو-موسی علیابسلام کی والدہ نے اس بھم کی تعمیل کردی ۔جب وہ تا بوت کو دریا سے دوالہ کھیر توشیطان نے اُن کے دل میں یہ دسوسہ ڈالاکہ یہ تونے کیا کام کیا اگر بجہ تیرے یاس رہ کردی بھی كردياجاً باتوايث بالتقول سيكفن دفن كركے كچھ توتسلى بوتى اب تواسكو دريا كے جانؤر كھائيں كے ر موسیٰ علیالسلام کی والدہ اسی نج وعم میں مبتلا تھیں کہ) دریا کی موجوں نے تا ہوت کو ایب الیسی حیان پر دالدیا جہاں فرعون کی باندیاں اوندیاں نہانے و صوفے کے لئے جایا کرتی تھیں، ا تفول نے بیر ما بوت دیکھا تو آ تھا لیا اور کھو لئے کا ادادہ کیا تو انہیں سے سے کیا کہ اگرامیں مجھ مال ہوااورہم نے کھول لیا تو فرعون کی بیوی کو یہ گمان ہوگاکہ ہم نے اسیس سے کچھ الگ کھ لیا ہو ہم کھے بھی کہیں اُس کو بقین نہیں آئے گا اس لئے سب کی رائے یہ ہوگئی کہ اس تا اوت کو اپیاح بندا تھا کر فرعون کی بوی کے سامنے پیش کر دیا جائے۔

فرعون کی بیوی نے تابوت کھولا تواسمیں ایک ایسالڑ کا دیکھا جس کو دیکھتے ہی اُس کے دل میں اُس سے اتنی مجتب ہوگئی جواس سے پہلے کسی بچے سے نہیں ہوئی متنی (جودرحقیقت

سوياخ طاله ٢٠ ١١٠ حق تعالى كماس ارشاد كاظهور تضارف الفَيْنَ عَلَيْك عَلَيْك عَبَدَة مِنْ دوسرى طرف حضرت مولى عليه السلام كى والده بوسوسيشيطانى الشرتعالى كياس دعده كوتفول كسين اورحالت يه بوكسى وَأَعْبِعَ نُوَّادُ أُنَّا مُوسىٰ في غنَّا ، تعنى حضرت موسى عليارسلام كى دالده كا دل مرخوشي اور برخميال سے خالى موكيا ر صرت موسى عليالتلام كى فكرغالب آكئي ، ا دهرجب لراكوں كے قتل برماً موريوليس والو كورو مے گھرزیں ایک لؤکا آجانے کی خبرطی تو دہ چھریاں کیکرفرعون کی بیوی کے پاس بہنے کے کہ یہ لؤکا اميں دو تاكه ذبة كردي -ابن عباسُ نے بہاں پہنچکر بھرابن جُبیر کو مخاطب کیاکہ اے ابن جُبیرفتون بینی آزمانش كالادوكسرا) واقعيم فرعون کی بیوی نے ان مشکری توکوں کو جواب دیاکہ ابھی تھیرد کہ صرف اس ایک اردے سے توبی اسسرائیل کی قوت بنیں بڑھ جائے گی میں فرعون کے یاس جاتی ہوں اور اس بیے کی جاگتی لراتی ہوں، آگرفرعون نے اسکونجنٹدیا تو یہ بہتر ہوگا ور مذتبہا اے معاطمیں دخل نہ دوں کی یہ بجیہ عمالے حوالہ وگا۔ یہ کہکروہ فرعون کے یاس کئی اور کہاکہ یہ بجیمیری اور تمہاری آسکو کی تھندکت فرعون نے کہاکہ ہاں تہاری آنکھوں کی ٹھنٹرک ہونا تومعلوم ہے گر مجھے اسکی کوئی صرورت نہیں۔ اس كے بعدا بن عباس فے فرمایا كررسول الله صلے الله علیہ لمے فرمایا كرقسم ہے اُس ذات كى جى كى تىم كھائى جاسكتى ہے اگرفرعون اسوقت بيوى كى طرح اپنے لئے بھى موسى على بسلا كے فرق العين أتكهون كى شھندك بردنے كا قراد كرلىتيا تو الله تعالى اس كوجى ہدايت كرد تيا جيساكه اس كى بيوى كو بدایت ایزان عطافرمای ـ د بہرحال میوی سے کہنے سے قرعون نے اس رہے کوفتال سے آزاد کردیا ، اب فرعون کی بیوی نے اسکو دو دھ پلانے کے لئے اپنے آس یاس کی عور توں کو کہلایا۔ سننے جایاکہ مولی علایسلا كودوده بلانے كى خدمت انجام دين محرحضرت مؤلى عليابتلام كوسى كى جھاتى ندلكتى (دَحَقَيْنَا عَلَيْمِ الْمُرَاجِعَ مِنْ قَبْلُ) اب فرعون كى بيوى كوية فكر بوكنى كرجب سى كا دوده منهي ليت توزنده یہ کیسے رہیں سے اسلے اپنی کنیزوں کے شیر دکیا کہ اس کو بازار اور لوگوں کے جمع میں بیجائیں شاید کسی عورت كا دوده بير قبول كريس -اس طرف وی علیرستام کی والدہ نے ہے جین ہو کرائی بیٹی کو کہاکہ ذرایا سے اکرنلاش کرواورلوكو ے دریا کردکواس تابوت اور بچر کاکیاانجام جوا، وه زنده ب یا دریای جانوروں کی خوراک بن حکامیے اسوقت مك أن كوانشرتعالى كاده وعده يادتهي آيا تقاجوحالت حل بن ان سيحضرت وي عليسام ا كى حفاظت اورجندروزه مفارقت بعدوابسى كاكياكيا تفاحضرت ولى كرين بالمركليس تورقدرت كا

سوياة ظلى ٢٠: ١١٨ ير شرد كياكه ، فرعون كى كنيزين اس بيخ كولية جوسة دو ده يلانے والى عورت كى تلاش ميں ين جب الفدل في به ماجرا د مكها كريه بي سي سي مورت كا دو ده نهي ليتاادر بيكنيزي بريشان إي توان سے کہاکہ میں تھیں ایک ایسے گھرلنے کا بہتر دیتی ہوں جہاں مجھے اُمیدہے کہ یہ اُن کا دودھ جی لینگے اوروہ اس کوخیرخواہی ومجتت کے ساتھ پالیں گے۔ پیشکران کنیزوں نے ان کواس شبہ یں بھولیاکہ يعورت شايداس بي كى مال ياكوى عزيز خاص بيجود توق كے ساتھ يه كهر ديرى بيك وه كھ والے اس محضر خواہ اور ہمدرد ہیں (اسوقت یہ بہن می برنشان ہوگئ)۔ ابن عباس في منه بين كريدابن مجير كونطاب كياكدية (تميسرا) دا تعدف ف يني أذاكش اسوقت موئی علایسلام کی بہن نے بات بنائ اور کہاکہ بیری مراداس گھردالوں کے بمدر دخیرخوا موز ے بی مقی کہ فرعونی درباد تک اُل کی رسمائ ہوگی اُس سے انکومنا فع بہنچنے کی اُمید ہوگی اسلے وہ اس بجے کی مجت دہمرر دی میں مسرفہ کریں گے۔ بیشنکر کنیزوں نے ان کو چھوڑ ڈیا۔ بیروالیں ایے تھے بهنچی اور مونی علیات الام کی والده کو واقعه کی خبردی وه ایکے ساتھ اس جگر بہنجیں جہاں بیکنیزی تھیں ، منیزوں مے مہنے سے مفوں نے بھی تجے کو گو دمیں بے دیا ، موسی علیار سلام فور آان کی جھا تیوں لگ كردوده بينے لكے يہال تك كربيط بحركيا - بينوشخرى فرعون كى بيوى كو بينجى كراس تجے كے لئے دوده ملافي ولى من فرعون كى بيوى في موسى عدايسلام كى والده كومبلوايا -أكفون في اكرصالا د سیصاد بیمسوس کیا که فرعون کی بیوی میری حاجت و ضرورت محسوس کردیی سے تو ذراخود داری سے كام ليا- ابلية رعون نے كہاكہ آپ يہاں دہ كراس بيكے كو دو دھ يلائيں كيو كم مجھاس بيكے سے اتنى محبت ہے کہ میں اس کواین نظروں سے غائب نہیں رکھ کئی موسیٰ علایسلام کی والدہ نے کہا کہیں تواپ کھرکو چھور کر بیاں نہیں رہ سی کیونکہ میری کو دمیں خود ایک بچیہ ہے ہی کو دودھ بلاتی موں ، ين اسكوكيد جهود ون- بان اكرات اس يردامني مون كه تجيمير الميروكري بين اين كفر دكه كراسكو دوده بلادن اوربه وعده كرتى ون كراس بي كى خبركيرى ادر حفاظت مين دراكوتا بى شكردى موى عليدت الام كى والده كواسوقت الترتعالى كا وه وعده بهى يادا كياحبين فرمايا كرهيدروز كى تجداى كے بدرهمان كوعمامه ياس وايس دبديك اسلع وه اوراين بات يرجم كسي - ابليه فرعون في مجبور وكم ان مى بات مان يى اوريداً سى دوز حصرت مولى عليادسلام كون كراين كفرا كنيس اورالترتعالى في أن كانشود عافاص طريقي يرفر مايا-جب وی علیوسلام ذرا قوی موکئے توا ہلیہ فرعون نے اُن کی والدہ سے کہا کہ سے بخیر مجھے لاکر دکھلاجا وُرکھیں سے دکھنے کیلئے بیمین ہوں) اورا ہلیفرعون نے اپنے سب دریاریوں کو تھم دیا کہ سیجیر آج ہمارے گھرمیں آر ہا ہے تم میں سے کوئی ایسا نہ رہے جواسکا کرام نہ کرے اور کوئی ہو یہ اسکو

پین رکزے اور جن خود اس کی محرافی کردن گی کہم لوگ اس معاملہ میں کیا کرتے ہو۔ اس کا اڑ میں ہوا کہ جس اوقت سولی علیا سلام اپنی والدہ کیسا ہے گھرسے بھلے اسیو قت سے اُل پر محفوں اور ہدایا کی بارش ہونے لگی ایم انسان کی اہلیہ فرعون کے باس پہنچے تو اُئے لینے باس سے خاص تحفے اور ہدئیے الگ بیش گئے ۔ اہلیہ فرعون ان کو دیکھر بیچر سرور ہوئی اور بیسب تحفے حضرت موئی علیا نسلام کی والدہ کو دیدئیے ۔ اسکے بعد اہلیہ فرعون نے کہا کہ اب بین ان کو فرعون کے باس لیجا تی ہوں وہ انکو انعابات اور تحفے دیں گےجب ان کو کیکر فرعون کے باس بہنچی تو فرعون نے ان کو ابین گود میں لے لیا ۔ موئی علیا نسلام نے فرعون کی واڑ میں کی واڑ میں کی طرف تجھ کا دیا ۔ اُسوقت در بارے لوگوں نے فرعون سے کہا کہ آبیت دیکھولیا کہ وائٹ تعالی نے لین نہ اہراہیم علیا نسلام سے جو وعدہ کیا تھا کہ بنی اسرائیل میں ایک بی بیدا ہوگا جو انگر علی ساکا وارث ہوگا ، آپ پر غالب آ گیکا اوراآ بکر بچھاڑ بیگا ، یہ وعدہ کس طرح بورا ہور ہا ہے۔ اُسکو میں عام ایک اور ت ہوگا ، آپ پر غالب آ گیکا اور آ بکر ویکھا اور بیا ہوگا ، آپ بر غالب آ گیک علی میں ایک اور قون کے کہا کہ ایس بینچکر میرا بین جبیر کو خطاب کیا کہ یہ (جو تھا) واقعہ فتھوں بھی آ ذیا تش کا کہ بیسلام کے میں میں ایک اور ت سر پر مندا لانے لگی۔ ایس عبائی نے بہاں بینچکر میرا بین جبیر کو خطاب کیا کہ یہ (جو تھا) واقعہ فتھوں بھی آ ذیا تش کا کہ کیا کہ کے میں موت سر پر مندا لانے لگی۔

ایلیہ فرعون نے ہیں دیکھا تو کہا کہ آپ تو یہ بچہ بھے دے چکے ہیں بھراب سرکیا معاملہ ہوا ہا گافرون نے کہا کہ تم بینہ ہیں دیکھتیں کہ یہ اور کا اپنے علی سے کو یا یہ دعوٰی کرد ہاہے کہ دہ مجھ کو زمین پھیاڑا کے مان میں جس سے حق بات فاہر ہوجا دے گی دکہ بچے نے یہ معاملہ بچپن کی بے خبری ہیں کیا ہے کہ دیدہ دانستہ کسی شوخی سے آپ دوا بھارے آگ کے ادر دوموتی منگوالیج وردونوں کو ایکے یا دیدہ دانستہ کسی شوخی سے آپ دوا بھارے آگ کے ادر دوموتی منگوالیج واردونوں کو ایکے مائے دیدہ دانستہ کسی شوخی سے آپ دوا بھارے آگ کے ادر کا دوسے بچین تو آپ بھر ایس کی مسائے کر دیکھاڑا ہو میں تو آپ بھر ایس کا دار آگ کے الکارون سے بچین تو آپ بھر ایس کا کہ یہ کام کسی عقل ہو الاانسا کے موسیدں کے بجائے الگارے اٹھا والاانسا کی کو ہا تھ میں نہیں آٹھا سک اور خوان کی انداز کا میں کے موسی میں ہے کہ موٹی علیا اسلام موتیوں کی طوف ہا تھ بڑھانا جا ہے انگارے اٹھا کے دوجن دوسری دوایا سے میں ہے کہ موٹی علیا اسلام موتیوں کی طوف ہا تھ بڑھانا جا ہے انگارے اٹھا کے دوجن دوسری دوایا سے میں ہے کہ موٹی علیا اسلام موتیوں کی طوف ہا تھ بڑھانا جا ہے تھے کہ جبر سُل این نے اگارے جھین کے ایک اس کی ایس کے کہ موٹی علیائے اسلام موتیوں کی طوف کے موٹی کے ایک اس کیا کہ ایک کا باتھ میں ہے کہ موٹی علیائے اسلام کے موٹی علیائے اس طرح الشر تو الی نے بھر یہ موت موٹی علیائے اسلام سے طلا دی کیو تکہ قدرتِ خداوندی کو دیکھ لیا ، اس طرح الشر تو الی نے بھر یہ موت موٹی علیائے اللام سے طلا دی کیو تکہ قدرتِ خداوندی کو دیکھ لیا ، اس طرح الشر تو الی نے بھر یہ موت موٹی علیائے اللام سے طلا دی کیو تکہ قدرتِ خداوندی کو دیکھ لیا ، اس طرح الشر تو الی نے بھر یہ موت موٹی علیائے اللام سے طلا دی کیو تکہ قدرتِ خداوندی کو دیکھ لیا ، اس طرح الشر تو الی نے بھر یہ موت موٹی علیائے اللام سے طلا دی کیو تکہ قدارتِ خداوندی کو دیکھ وال

د حضرت مولی علیابسلام اسی طرح فرعون کے شاہاندا عزاز واکرام اورشاہاند خرچ پراپنی والدہ کی بگرانی میں پرورش یا تے دیسے پہانت کہ جوان ہوگئے)۔

اگ کے شاہی اکرام واعزا ذکو دیکھ کرزعون کے لوگوں کو بنی اسرائیل پر دہ ظلم د جورا در

تذلیل و تو بین کرنے کی ہمت ہزرہی جو اس سے پہلے آل فرعون کیطوٹ سے ہیں ہیں کہ سمائیل پر ہوتا

دہتا تھا۔ایک روز موسی علیا لسلام شہر کے کسی گوشہ میں جل ہے سے تو دیکھا کہ دوآ دمی آبس میں

لادرہے ہیں جنیں سے ایک فرعونی ہے اور دو مرااسرائیلی ۔ اسرائیلی نے موسیٰ علیا لسلام کو دیکھ کر

اماد کے لئے پکا دا۔ موسیٰ علیا لسلام کوفرعونی آدمی کی جمارت پر ہمت غضہ آگیا کہ اس فیشاہی

در بادمیں موسیٰ علیا لسلام کے اعزا زواکرام کو جانتے ہوئے اسرائیلی کو ائن کے سامنے کر در کھا ہے

جبکہ وہ یہ بھی جانتا ہے کہ موسیٰ علیا لسلام اسرائیلیوں کی حفاظت کرتے ہیں اور لوگوں کو قوصرف ہے

معلوم تھا کہ ان کا تعلق اسرائیلی لوگوں سے صرف دفعا عت اور دو دھ پینے کی وجہ سے ہے ۔

مصرت موسیٰ علیا لسلام کو مکن ہے کہ اوٹر تعالی نے اُن کی والدہ یا کسی اور ذرایعہ سے یہ معلوم کرا دیا ہو

کہ یہ اپنی دودھ پلانے والی عورت ہی کے لطبن سے پیرا ہوئے اور اسرائیلی ہیں۔

غوض دینی علیابسلام نے خصہ میں آگراس فسرعونی کے ایک ممکا رسید کیا جس کو وہ بر داشت نہ کرسکااور وہیں گرکیا گراتفاق سے وہاں کوئیا وراً دمی موئی علیہ اسلام اوران دونوں لڑنے والوں کے سواموجود نہیں تھا، فرعونی توقتل ہوگیا کہ۔رائیلی اینا آ دمی تھا اس سے اسکا اندلیشہ نہ تھا کہ

یہ مخبری کردے گا۔

موسی علیا بسلام اس واقعہ کے بعد خوت و ہراس کے عالم میں بی خبری دریافت کرتے ہے در کہ اسکے فتحل پرال فرعون کا روئل کیا ہوا اور دربا دفرعون تک بید معاملہ پہنچا یا نہیں معادم ہواکہ معاملہ فرعون تک اس عنوان سے بہنچا کہ سی اسکا آستا میں اسکا آستا م اسکا آسکا معاملہ میں ان کے ساتھ کوئی ڈوھیل کا معاملہ میں اور کے مع شہادت کے میشی کرو۔

سوفة طنه ۲:۳۲ میونکه بادشاه اگرچه تهادایی بے حراس کے لئے یہ ی طرح مناسب بنیں کر بغیرشها دت سے سے تصاص ہے ہے۔ تم اسکے قاتل کو تلاش کروا ور نبوت مہیا کرو میں صرور مہا دا ا تقام بعور قصاص أس سے اون كا- الى فرعون كے لوك يوس كركلى كوچوں اور بازا رون ميں كفو من تھے كركيل كے قتل كرنے دالے كاشراغ راج الع الكران كوكوى مشراغ نہيں مل ديا تھا۔ ا چانک بیر دافعه پیش آیاکه اسکلے روز مولی علیہ بسلام گھرسے نکلے تو اُسی اسرائیلی کو دیجھ ككسى دوسر عفرعوني شخص سعمقا تله كرفيس لكابواب ادر كهراس كسراتيلي في موسى عليالسلام مدد کے لئے پیکا دامگرمونی علیہ بسلام کل کے وا تعہ برہی نادم ہواہے تھے ادرا سوقت اسی اسرائیلی محو پھر ارطتے ہوئے دیکھ کراس پر نا راض ہوئے دکہ خطااسی کی معلوم ہوتی ہے پہ تھا اوادی ہے ادر نظرتا ہی رہتاہے) مکراسے باوجود موسی علیہاسلام نے ادا دہ کیا کہ فرعونی شخص کو اس بر تمل كرفے سے روكيس تيكن كسرائيلى كو بھى بطور تنبير كے كہنے لگے تو نے كل بھى تھي گڑاكيا تقاآج بھر اور ہا؟ توزى ظالم ہے۔ كسرائيلى في موئى عليانسلام كو ديكھاكہ وہ آئے بھى أسى طرح غضے ميں ہيں جيكل مقے توائس کوموسی علیاسلام کے ان الفاظ سے پیرشیر ہوگیا کہ بیر آج مجھے ہی قتل کر دیں گئے تو فوراً بول أتفاكراك موى كياتم جابية بوكر مجهقتل كروالوجيك كلتم في ايك تعف كوقتل كردياتها .. میں بالیں ہونے کے بعد میر دولوں ایک دوسرے سے الگ ہو گئے مگر فرعونی شخص نے فرعون کے اُن لوگوں کوجوکل کے قابل کی تلاش میں تھے جاکر یہ خبر پہنچا دی کہ خود کسسراتیلی۔ موسی علیابسلام کو کہا ہے کہتم نے کل ایک آدمی قتل کر دیا ہے ۔ یہ خبر در بارفرعوں تک لئی ۔ فرعون نے اپنے سیاہی موسی علیا ستلام کوفتل کرنے کے لئے بھیجد تیے ۔ یہ سیاہی جانتے تھے کہ وہ ہم سے بچیکرکہاں جائیں گئے۔اطبینان کے ساتھ شہرکی بڑی سٹرک سے موئی علیالسلام کی تلاش میں پکلے۔ اس طرف ایک شخص کو موسی علیالسلام کے متبعین میں سے جوشہر کے کسی بعیر حقہ میں رہتا تھا اس کی خبر لگ گئی کہ فرعونی سیاہی میٹی علیہ استلام کی تلاش میں بغرض قتال نکل پیجا اس نے کسی گلی کو ہے کے چھوٹے داستہ سے آگے بہنج رحصرت موسی علیادسلام کوخبر دی۔ يهال يهنجكر كيرابن عباس في إبن جبير كوخطاب كياكها ابن جبيريه (يا يخوال) داقعه فتون مينى أزمانش كاس كموت سريرا بحي تقى الشرف أس سي نجات كاسامان كرديا-حضرت موسلى علىياسلام يرخبر أن كرفوراً شهر سن بكل كنة اور مُدَّيِّن كى طرف رُخ بهركيا -يرآج تك شابى نا زونهمت ميس يله تف كبحى محنت ومشقت كا نام ندآيا تفا مصر سنكل كفوط موے مگر داست بھی کہیں کانہ جائے تقے مگرا پنے دب پر بھروسہ تھاکہ عشی س بن آن يَقَلُهُ يَيْ سَوَّاء السَّبِيْلِ، بعني أميد به كميرارب مجهد راسته وكها وبيًا جب شهر مُدْ يَنْ كريب

mest dis 7:41 د ث القرآن جسكة بہنچے تو شہرے ہاہرائی کنویں پر تو گول کا اجتماع دیجھا جو اُس پر اینے جانور وں کو یا نی بلارہے تھے اور ديكهاكم دوعورتين اين بحريون كوسميش بوئ الك كطري بين، موسى عليدنسلام في ان عورتون سے پوچھاکتم الگ کیوں کھڑی ہو؟ انھوں نےجواب دیاکہم سے برتو ہونہیں سکتا کہم ان سب توکوں سے مزاحمت اور مقابلہ کریں اس لئے ہم اس انتظامیں ہیں کہ جب بیرسب کوک فانغ ہوجائیں نوجو کھے بچاہوا یانی ملجائے گا اُس سے ہم اینا کام بڑا لیں گئے۔ موی علیات ام نے اُن کی شرافت دیجہ کرخود اُن کے لئے کنویں سے یا تی برکا اُنا شروع کر دیا الله تعالى نے قوت فطاقت مخشى تى برى جلدى ان كى بريوں كوسيراب كرديا ـ بيعورتين يى بريال كرائي كار الم اور موى عليه السلام ايك ورخت كے سايدي علي كت اور التدرتعالى سے دُعا ى سَعِبُ إِنِّيُ مِلَا ٱنْزَلْتَ إِنَّ مِنْ خَلِيفِقِيدٌ، ليني الميرك برورد كاريس محتاج مون الله كاجوآب ميري طرف بجيجين ومطلب تفاكه كهانيكاا ورفعكانه كالوكاتفام ووجائه بيدر كيان جيث زانه سے دقت سے پہلے بکریوں کوسیراب کرے گھر پہنچیں توان کے دالدکو تعجب ہواادر فرمایا آج تو كوى نئ بات ہے، ركيوں في مولى عليه سلام كے ياني كيفينے اور بلانيكا قصر والد كوشنا ديا. والدفي اغيى سايك كو علم دياكر حب خص لے بدا حمان كيا ہے اسكوبيان بلالاؤ، وهُ بلالائ والدني مولى عليدسلام ساأن كحالات دريافت كيداد فرمايا لا تفنف بجون القوالظلمين مینی اب آپ خوف و ہراس اپنے دل سے برکالدیجے ، آپ ظالموں کے ہاتھ سے نجات یا بیکے ہیں ہم نہ فرعون كى سلطنت ين بين مذاسكاتهم يركيه كلم على سكتا ہے اب ان دولاً كيون مين سي ايك في اين والدس كها بالكبت اسْتَأْجِرُهُ إِنَّ خَيْرَ صَن اسْتَأْجَوْتَ الْفَوِيُّ الْهَايْنُ، بينى آباجان، ان كوآب المازم ركم ليج كيو مكر المازمت كے الم بہترین آدمی وہ ہے جو توی مجی ہواور امانت دار مجی ۔ والد کو اپنی لڑکی سے بیر بات سنکرغیرت سی آئی کہ میری لوگی کو یہ کیسے معلوم ہواکہ یہ قوی تھی ہیں اورا مین تھی۔ اسلنے اس سے سوال کیا كيمتين أن كي قوت كا ندازه كيسے موا اوران كي اما تداري من بات سيمعليم كي ـ روكي نے عرض كياكدان كى قوت كامشا ہدہ توان كے كنوي سے يانى تھينے سے وقت ہواكرسب جروا ہوں۔۔ يهدأ نهول في إينا كام كرديا دوسراكوى ان كى برا برنبي أسكا درامانت كاحال اسطرح معلوم بوا کر حب بیں اُن کو بلا نے کے لئے گئی اقدا ول نظر میں جب انھوں نے دیکھا کہ میں ایک عورت مول تو قوراً اینا سرینچا کرلیا اور اسوقت تک سرنہیں اُٹھایا جب تک کہیں نے ان کواپکا پینام نہیں بہنجادیا۔اس کے بعدانھوں نجھ سے فرمایاکہ تم میرے پیچھے بیچھے چلومگر مجھے ایسے گھرکاراستہ ا سجھے سے بتلاتی رہواور یہ بات صرف دہی مرد کرسکتا ہے جو امانتدار ہو۔ والد کو اولی کی اس

ت سے مسترت ہوئ اور اسکی تعہد ہتی فرمائ اور خود کھی ان کے بار سے میں تو ت ا مانت کا یقین ہوگیا۔ اُس وقت لڑکیوں کے والدنے (جوالند کے رسو سے، موئی علیالسلام سے کہاکہ آپ کو مینظور ہے کہ میں ان دونوں اور کیوں میں سے ایک موکل آب سے کردوں جس کی مشرط بہ ہوگی کہ آپ آٹھ سال تک ہمارے بیاں مزدوری کریں ، اوراگ آپ دس سال پورے کردیں تو اپنے اختیارے کردیں بہتر ہوگا مگر ہم یہ یا بندی آپ پر عائد نہیں کہتے تاكدائب برزياده مشقت منهو حضرت مولى عدايداتهام في اس كومنظورت رماييا حبكي رُوس موسى علیاسلام پرصرت آتھ سال کی خدمت بطور معاہدہ کے لازم ہو گئی باتی دوسال کا وعدہ اختیاری رہا ، انتد تعالی نے ایتے بینجبر موسی علیالسلام سے وہ وعدہ بھی یوراکراکردس ال مورے کراد تیے۔ معيدين جبيره فرماتي بين كمرايك هرتبرايك نضرافي عالم مجصے ملاءاس في سوال كيا كمرتم جانے ہوکہ دوئی علیہ نسلام نے دو بؤل میعادوں میں سے کونسی میں او پوری فرمائ جمیس نے کہا ر مجھے معلوم نہیں کیونکہ اسوقت تک ابن عباس کی یہ حدیث مجھے معلوم نہ تھی۔ اس کے بعد ہیں این عباسؓ سے ملا اُن سے سوال کیا۔ انھوں نے فرمایا کہ آٹھ سال کی میعاد پوراکرٹا تو موئی پر واجب تقااسميں کچھ کمی کرنے کا تواحتمال ہی نہیں اور یہ تھی معلوم ہوٹا چاہئے کہ اللہ تعالیٰ کواپنے ر سول کا اختیاری وعدہ بھی پورا ہی کرنامنظور تقااس لئے دس سال کی سیعاد پوری کی۔ اس کے بعید میں اس تصرا فی عالم سے ملا اور اس کو بیزجر دی توائنے کہا کہ تم نے جستحض سے یہ بات دریا فت کی ہے لیا وہ تم سے زیا دہ علم والے ہیں ، میں نے کہاکہ بیشکے مہت بڑے عالم اور ہم سب سے (دش سال کی میعا و خدمت بوری کرنے سے بعدجب) حضرت موسی علیالسلام اپنی اہلیہ محرّمہ کوسا تھ تکرشعیب علیالسلام سے وطن مُذین سے رخصت ہوئے، راستہی سخت سردی اندهیری دات ، داسته نامعلوم، بے کسی اور بے لبی سے عالم میں ایانک کوہ طور پراگ دیکھتے تھر وہاں جانے اور حیرت انگیزمنا فرکے بعد مجزہ عصاوید بیفیار اور اسکے ساتھ منصب نبوت ورکت عطام ونے کے بعد دجسکا پورا قصتہ قران میں اُور گرز رحیکا ہے، حضرت مولی علیالسلام کو بیون کر يرى كرمين فرعوني دربادكا ايك مفردر ملزم قرار دياكيا مون مجرس قبطي كأقصاص لين كالحسكم دہاں سے ہوچکا ہے اب اس کے یاس وعوت رسالت کیرجا نے کا حکم ہوا ہے، نیزائی زبان میں کلنت کا عدر بھی سامنے آیا توالٹر تعالی کی بادگاہ میں عرض محروص بیش کی ہت تعالیٰ نے ائن كى فرمائش كے مطابق أبكے بھائ حضرت ہادون كوئٹر يك رسالت بٹاكراً بكے ياس دى بھيجدى اور ا يحكم دياكه وه حضرت موسى عليبالسلام كاشهر مصر سے با ہراستقبال كري - استعمطابق موسى عليالسلام و بال پنجے۔ ہارون علمیرالسلام سے ملاقات موی دونوں بھائ د حسب لحکم، فرعون کو دعوت حق

دیے کے لئے اُس کے دربادیں بہنچے کھے وقت تک توان کو دربادیں حاصری کاموقع نہیں دیا گیا ہ دونوں در داذے پر تھرے دہے بھر بہت سے بر دوں میں گر رکر حاصری کی اجازت عی ادردونو نے فرعون سے کہا اِنَّا دَسُحُکَا دُبِّتِكَ ، لینی ہم وونوں تیرے دب کی طوٹ سے قاصدا ور پیغامبر ہیں۔ فرعون نے یوجھا فسک تُرتیکما رتو بتلاؤ عمبارا رب کون ہے) موی دہارون عیمااتلا سے دہ با كهى جن كافران في خود ذكر كرديا رَتَيْنَا الَّذِي كَاعُطِ كُلَّ شَيْ خُلْفَةُ ثُمَّ هِذَا ي واس برفرون في يؤجهاكه بيمرتم دونون كياجابية بوا درسائمة بى قبطى مقتول كا واقعه ذكر كرك حضهرت مؤى علياسلام كومجرم تضمرايا (اورايت كحرمين أن كى بردرش يا نيكاا حسان جثلايا) حضرت موسى عليبسلا نے دولوں باتوں کا وہ جواب دیاجو قرآن میں فرکوزہ ریعنی مقتول کے معاملہ میں تواپنی خطا اور خلطی کا عترات کرے نا واقعنیت کا عدر ظاہر کیا اور گھرمیں برورش پراحسان جنلانیکاجواب یہ دیارتم نے سااسے بنی اسرائیل کواپٹا غلام بٹارکھا ہے اُن پرطرح طرح کے ظلم کر رہے ہوائسی کے نتجمس برنبرتك تقديرس تمهان كحرمين بهنجا دياكيا ادرجو كجدالت كومنظورتها وه مركيااسي تمهار آلوی احسان نہیں۔ بھرموسی علیالسلام نے فرعون کوخطاب کرمے ٹوچھاکہ کیاتم اس پر دافنی ا بوكه النتريرايمان لے آدُ اور بني كسرائيل كوغلامى سے آزاد كردد -فرعون نے اس سے أسكار كي اوركها كراكر تصادم باس رسول أب بون كى كوى علامت تودكملاؤ - مولى على السلام في اين عصارمین پر ڈالدی تو وہ طیم اٹ از دہائی شکل میں مفر تھو لے ہوئے فرعون کی طرف کسی ۔ فرعون خوفز ده ۾وکرا پنے تخت کے نیجے جھ پ گیا ا درموسلی علیالسلام سے بیٹا ہ ما نگی کہ اکسس کو روك بين مرميلي عليالسلام ني اسكو بكر بيا - بصراب كريان بين ما تقد وال كريكالاتو وه جيك لكا یہ دؤسرامعجزہ فرعون سے سامنے آیا بھر دوبارہ گربیان میں ہاتھ ڈالاتورہ ا پنی ملی حالت يمآ گيا فرعون نے ہیب زدہ ہوکراینے دربار بوں سے شورہ کیا ذکہ تم دیکھ رہے ہو ہے کیب ماجرا ہے اور بہس کیا کرنا چاہئے) درباریوں فے متفقہ طور پر کہاکہ (کھون کری بات نہیں) یہ دونوں جا دوگر ہیں ایت جا دو کے ذریعہ تم کو عمارے ملک سے بکالنا جاہتے ہیں اور بحقارے بهترین دین ومذہب کو دجوائ کی نظرمیں فرعون کی پرستش کرناتھا) یہ مثاناچاہتے ہیں۔ آب ان کی کوئ بات نه مانیں (اور کوئ فکرنہ کریں) کیونکہ آب کے ملک میں بڑے بڑے جادوگر ہیں،آئے، اُن کو ملا لیجئے وہ اپنے جا دوسے ان کے جا دو پر غالب آجا میں گے -فرعون نے اپنی لکت سے سب شہروں میں مکم دیدیا کہ جینے آدمی جادوگری میں ماہ موں وہ سب دربادسیں حاصر کرد نیے جادیں ، مک جرکے جادو گرجمع ہوگئے توانھوں نے ﴿ فرعون سے يُوجِهاكد جس جا دوكرسے آپ ہمارا مقابله كرانا چاہتے ہيں وه كياعمل كرتا ہے، أسنے

アン・ア・いかかし اعلان کردیا کہ ہم التّدیر اورموسی علیہ لسلام کے لائے ہوئے دین پر ایمان ہے آئے اورہم اینے پچھلے خیالات و عقائدے تو ہر کرتے ہیں۔ اس طرح الشرتعالیٰ نے فرعون اوراسکے ساتھیں كى كمرتور دى در أنفول نے جوجال بھيلايا تھا وہ سب ياطل ہوگيا (فَغُلِبُوُاهُنَالِكَ وَانْقَلَبُوْ طب غربین) فرعون اوراس سائقی مغلوب ہو گئے اور ذلت ورسوائ کیساتھ اس میران کیسیا ہوئے جس وقت يه مقابله جور ما تقا فرعون كى بيوى آسيه مهيط يُرانے كيشے بين كرا دلتُد تعالے ہے موئی علیار نسلام کی مدد کے لئے دُعار مانگ رہی تھی اور آلِ فرعون کے لوگ یہ مجھتے رہے کہ يه فرعون كى وجهد من يريشان حال مين أسك لئة دُعاما نك دين بين حالا مكم أن كاعم وف كرسارا موسی علیالسلام مے لئے تھا (اورا تھیں کے غالب آنے کی دُعار مائک رہی تھیں) اس کے بعد حضرت موسلى علىيالسلام جب كوئ معجزه وكهاتي اورالشرتعالى كم طرت سيرأس رحجت تمام موجاتى توائسی وقت و مده کرلیتا تفاکداب میں بنی کسرائیل کو آپ کے ساتھ بھیجدوں گا مگر حب ہوتی عليالسلام كى دُعارے وہ عذاب كاخطرہ مل جاماتو اپنے وعدہ سے بھرجاماتھا) اور يہ كهديمًا تفاكه كيا آيك رب كوى اور مهى نشاني دكھا سكتا ہے۔ پيلسله چلتا رہا بالآخرانشر تعالیٰ تے قوم فرعون پرطوفان اور میری دَل اورکیٹر د ل میں جُوئیں اور برشنوں اور کھانے میں منیٹرکیوں ا درخون دغیرہ کے منداب سلط کردیئے ، جن کوت رات میں آیات مفصلات کے عنوان سے ا بیان کیا گیا ہے۔ اور فرعون کا حال میر تھا کہ جب اُن میں سے کوئ عذاب آیا اور اُس سے عافجہ ہوتا تو موسی علیاسلام سے فریاد کرتا کہ سی طرح یہ عذاب ہٹا دیجئے توہم وعدہ کرتے ہیں کے بنی اسرائیل کو آزاد کردیں گئے بھرجب عذاب ٹل جایا تو بھر برعہدی کرتا۔ یہاں تک کہ حق تعالی نے موسی علیالسلام کو بیکم دیدیاکه اپنی قوم بنی کسرائیل کوساتھ کیکرمصرسے نبکل جائیں۔حضرت موسی علیدالسلام ان سب کولکیردات کے دقت شہر سے کول کئے ف وون نے جب صبح كود ميهاكد بيرب لوك جلے كئے توا بني فوج تمام اطرات سے جمع كركے أبحے تعاقب میں جھوڑ دی۔ اُدھر الشرتعالیٰ نے اُس دریا کو جوموئی علیالسلام اور بنی کسرائیل کے داسترمین تفایی کلم در یا که جب موسی علیه بسلام تجه پرلائهی مارین تو دریامین باره داست ابن جانے چاہئیں۔ جن سے بنی اسرائیل کے بارہ قبائل الگ الگ گرز کیں۔ اور حبب یہ كر وجائيس توان كے تعاقب ميں آنے والوں پريد دريا كے بارہ حصے بھر طبائيں -حضرت مؤی علیبالسلام جب در ماکے قریب پہنچے تو یہ یادنہ رہاکہ لاکھی مادنے سے دریاس راستے بیدا بوں کے اور اُن کی قوم نے اُن سے فرماد کی اِتَّا کُان کُون مین م تو کولا لئے ا کے رکیونکہ بیجھے سے فرعونی فوجوں کوآیا دیکھ اسے مقادر آگے یہ دریا حائل تھا) اُسوفت

موسی علیہ استلام کوانشر تعالیٰ کا بیر وعدہ یا دآیا کہ دریا پر لاتھی مارنے سے اسمیں رستے پر موجایس سے اور فوراً دریا ہر اپنی لائھی ماری بیہ وہ وقت تھاکہ بنی اسرائیل کے سیج حصوں سے فرعونی ا قواج کے اسلے حصتے تقریباً مل چکے تھے۔ حضرت موی مدارلا کے سے دریا کے الگ الگ عراب ہو کر دعدہ ریانی مے مطابق بارہ راستے بن کئے اورموی عدیالتلام ا تمام بن اسرائیل ان راستوں سے گزرگئے ۔فرعونی انواج جوانی کے تعاقب میں تھی اُسعو کے دریامیں راستے دیکھ کران کے تعاقب میں اینے تھوڑے اور پیا دے ڈالدینے تو دریا کے بیر مختلف عرف بامرد بان بهرائيس إلك -جب وي علياسا ما درين اسرائيل و وي ال يريه بينع كنة توان كے اصحاب نے كہاكہ ہمیں بیخطرہ ہے كہ فرعون أبحے ساتھ غرق نہ ہوا ہوا وراً سنے یے آئے کو بچالیا ہو تومولی علیہ سلام نے دُعار فرمائی کہ فرعون کی ہلاکت ہم بینطا ہر کردے قدرت ن نے فرعون کی مرده لاش کو دریاسے باہر بھینکدیا اورسے اس بلاکت کا تکھوسے مشاہرہ کرے اس سے بعد بینی کسرائیل موئی علیاسلام کے ساتھ آگے جلے توراسترمیں ان کا گزر ا یک قوم پر بواجوا بینے بٹائے ہوئے مُبتوں کی عبا دت ادر پیشنش کر دہے تھے۔ توبیہ بنی اسرائیل وي علياسلام سي كيف لك ليموسى اجْعَلُ لَنَا إلهُ أَكْمَالَهُ وَالْهَا تَكُونَ وَوَهُمْ جَهَلُونَ هولاتر متبقيا هم فيري سين اعموى مارع الفري كوى ايسابى مبود بنا ديخ جيساعفون ر بهت سے معبود بنا رکھے ہیں -موئی علیالسلام نے نسر مایا کہ تم عجیب قوم ہو کا لیبی بہالت می باین کرتے ہو، یہ توک جو بنوں کی عبادت میں شغول ہیں آئی عبادت برباد ہونیوالی ہے ر موسی علیابسلام نے فرمایا) که تم اینے برور در گارے اتنے سجزات اور اپنے او برا ثعامات دیجہ چکے ہو مجھر میں تہادے یہ جابلانہ خیالات نہیں بدلے۔ یہ کہکر حضرت موسی علیہ اسلام ص ا بنے اکن ساتقيوں تے بہاں سے آگے بڑھے اورا یک متفام پر جاکراُن کو تھمرا دیا اور فرمایا تم سب بہاں تھرد، میں اپنے رب سے پاس جاتا ہوں تمیس دن سے بعد دایس آجاد تکا اور میرے یکھے يؤرون علىيالسّلام ميرے نائب وخليفه رہيں تھے ہر کام بيں اُن کی اطاعت كرتا -موی علیا اسلام ان سے رخصت ہو کر کوہ طور رتشریف ہے گئے اور (اشارہ رتانی سے) تيس دن دات كالمسلسل د وزه دكها تاكداسك بعدكلام ربّاني سيستغير بوسكين مرهميس دن دات محتسلسل روزه سے جوایک قسم کی بُوروزه دار کے منھ میں ہوجاتی ہے بیز فکر ہوئ کہ اس بُو کے سائقدالشرتعا للے سے شرف بم مکلامی نامناسے تو بہاڈی گھاس کے ذریعیمسواک کر مے نے صا

كرليا - جيب يا ديكا وحق مين حاصر موسئة توالشرتعالي كيطرت سے ارشا د م حاكم تم في افطار كيو كرليا

د اور التنزنعالي كومعلوم تفاكم ويلى علياسلام نے كچھ كھايا بيا نہيں بلك صرف منصصاف كريسنے كو بنيار شر

سولای والی ۲۰،۲۰ ا متیازی بنا برا فطار کرنے سے تعبیر فرمایا) مولی علیالسلام نے اس حقیقت کو سمجھ کرعوش کیا کہ اے ميرے يردردگار مجھ يه خيال مواكدات مكلام مونے كے لئے منع كى يُو دُدركركے صاف كراوں -علم ہواکہ مولی کیا تھیں خبر نہیں کہ روزہ دار سے منھ کی بُوہادے نزدیک مشک کی توشیر سے بھی زیادہ محدوب ہے ، اب آپ توٹ جائے اور دس دن مزید روزے رکھتے پھرہمانے پاس آئے موسى عليدالسلام في علم كي تعيل كي -ا د صرحیب موسی علیدانسلام کی قوم بن کسرائیل نے دیکھاکہ مقررہ مدت تیس دورگزر اورموسی علیدانسلام وایس منبی آئے توان کو بربات تاکوار بوی ، او صرحضرت بارون علیسلام نے موی علیدا نسلام کے رخصت ہونے کے بعدایتی قوم میں ایک خطبہ دیا کہ توم فرعون کے توکو کی بہت سی چیزیں جوتم نے عادیثہ مانگ رکھی تھی یا اُنھوں نے تھادے باس ود بعت رامانت ركفواركهي متى دەسبتم اينے سائد ك آئے مواكرجيد بخفارى مى بهتى چيزى قوم فسرعون مے پاس عادیت اور و دلیت کی تقیں اور آپ لوگ یہ سمجھ رہے ہیں کراُن کی یہ جیزی ہماری چیزوں کے معاوضہ میں ہم نے رکھ لی ہیں مگرمیں اس کو حلال بہیں تمجھتا کہ اُن کی عادمیت اور وديدت كاسامان تم ايين استعال ميں لاؤاور ہم اس كو دا بس بھى نہيں كرسكتے اس لئے آيك كرط ها كفود واكرسب كوحكم دياكه بيرجيزين ثواه زيورات بهون يا دوسرى استعمالي اشيارسب اس كروسے ميں ڈالدوران توكوں نے اسى تغيل كى، ہارون عليالسلام نے اس سارے ساما كے اويراك جلوا دى جس سے بيرسب سامان جل كيا ا در قرما ياكماب بير نه مارا د ما شأك كا-ان سے ساتھ ایک شخص سامری ایک ایسی قوم کافرد تھا جو گائے کی پرستش کیا کرتے تھے، ير بن كسرايل ميں سے نہ تھا مگرجب حضرت موسى اور بنى كسرائيل مصرسے بھے توبيعي الله مے ساتھ ہولیا ، اس کو بی عجیب اتفاق بیش آیاکہ اس نے رجرتی علیہ سلام کا ایک ا ترديكها (يعنى جهال أن كا قدم يرباب أسين زندگى اور نمو يبدا بوجاتا ہے) اس في اس عكم ے ایک متھی می کو اُٹھالیا ، اس کو ہاتھ میں لئے ہوئے آر ہاتھاکہ ہارون علیہ السلام سے ملاقات ہوئ، ہارون علیہانشلام نے خیال کیا کہ اس مستمی میں کوئ فرعونی زیور وغیرہ ہے اس سے کہاکہ حس طرح سب في اس كرفي والا ب تم بهي والدو، اس في كها بيه تواش رسول رجبرت ل) سے نشان قدم کی ٹی ہے جس نے تھیں دریاسے یا رکرایا ہے اور میں اس کوسی طرح نہ ڈالوں گا بجر اسك كدات يد دعادكري كرمين جر مقصد ك ك دانون وه مقصد يورا مرجائ الدون عليباله نے دُعاکا وعدہ کردیااسے دہ شی می کاس کرھے میں ڈالدی اورحسب وعدہ ہارون علیہالسلام نے دُعاکی که یا انشر جو کچهرمامری چاہتا ہے وہ بؤراکرد یجئے ، جب وہ دُعاد کر بھے توسامری نے

ف القرال ج سويلة ظلى ٢٠ :١١ كهاكه مين تويه جايتا بهون كه بيهسونا، جانزي، لويا، بيتيل جو كيمراس كره مصين والأكياب أي كَاتُ كَا بِحِيمُ ابن جائے - ما دون عليه السلام دُعاء كر چكے تقے اور وہ قبول موحكي تقي جو كھے ذلورات ا در تا نیابتیل او ہا اسی ڈالا کیا تھا سب کا ایک جھڑا بن کیاجسیں کوئ روح تو رہھی مسر گا نے كى طرح أداز زيكانا تقاعض ابن عياس نعاس دوايت كونقل كرتے موسے فرماياكر والله وه كوئ ز نده آوا زېنين تقي بلکه وا اُسکے تحفيے حصته سے داخل تو کرمند سنگلتی تقی اُس سے بيرا دا زيدا ۽ و تی تقی . يدعجيب وعربيب قصته ديكيم كربني اسرائيل كئ فرقون ين نقيم موكية ايك فرقد تيسامري سے پُوجِها کہ بیر کیا ہے اُس نے کہا ہی بھاما خدا ہے اسکن موسیٰ علیبرالسلام راستہ بھُول کر دومری طسرت چلے گئے۔ ایک فرقہ نے پیرکہا کہ ہم سامری کی اس بات کی اُسوقت تک تکلایب بنیں کرسکتے جب تک مولی علیہ الشلام حقیقت حال بتلایش اگر دا تع میں سبی ہمارا خداہے توہم اسکی مخالفت کر کے گناہ گارنہیں ہو بھے اور یہ خدا نہیں تو ہم موسی علیہ تسلام کے قول کی بیروی کریں گئے۔ ایک اور فرقد نے کہا کہ بیرسب شیطانی وصوکہ ہے یہ ہمارا دب بنیں ہوسکتا شہم اس مرامیان لا سکتے ہیں نہ اس کی تصدیق کر سکتے ہیں ۔ ایک اور قسسرقد کے دل میں سامری کی بات اُ تر کئی اوراًس نے سامری کی تصدیق کرکے اسکوایٹا خدا مان لیا۔ بإرون عليه السلام في يه فسا يخطيم د مكيها توفر مايا ليقدُّ وانتما فيتِنتُح الرَّحْلَى فَاتَبِعُونِيْ وَاطِيعُوْا أَمْرِي ، بعنى المعيري قوم تم فتنه سي ير كنة مو بلا شهه تهادا اور خدا تو رخمن ہے تم میراا تباع کروا درمیراحکم ما تو۔ اُنھوں نے کہا کہ بیرتبلائے ک كوكيا برواكه بم ستيس دن كا دعده كرم كئة تقراور وعده خلافي كي يهال تك كداب جاليس دن يورك إدر الم الله الله على الله على الله على عليه السلام الله والله عليه السلام الله والله عليه السلام الله عليه السلام الله على الله عليه السلام الله عليه السلام الله عليه السلام الله عليه الله عليه الله عليه السلام الله عليه عليه الله على الله عليه الله على الله عل ائس کی تلاش میں پھرتے ہو گئے۔ اس طرف جب جالیس دوزمے پورے کرنے کے بعدموئی علیہ السلام کوشرب بمکلامی سيب بهواتو الشرتعا لط نم اكن كواس فنتنه كي خبر دي حبيب الن كي قوم مبتلا بولكي تقى فَيْجَعَ مُوْسَى إلى قَوْمِهِ غَصْبَانَ أَسِفًا، مولى عليم السّلام وبال سرير عصصي اورافس كى حالمتين وايس أت اور آكروه بالين فرمائين جو قرأن مين تم في برهمي بين - وَأَنْقَ الْاَنْوَاحَ وَ اَخَلَ بِوَأْسِ أَيْنِيرِ يَجْزُهُ إِلَيْرٍ ، بعني موسى عليه السلام في اس غصة مين ابين بهاى بارون كركم بال يكوكرا ينى طرف تصنيح اور الوارج تورات جوكه كوه طور سائفر لائ تق بالتوين ساركه دي و يحد غدته فرو بهو نيك لعديهاى كا عذر صحح معليم كرك اسكو قبول كيا اورأن كے لئے اللہ سے استعفار كيا، معرسامری سے ماس گئے اور اُس سے کہا کہ تونے بہ حرکت کیوں کی ، اُس نے جواتیا قبضنے

قَبُضَةً بِنَ اَلْمُ النَّهِ اللّهِ عَلَى اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ

سويارة والله ٢٠ دمم

اس و قت بنی اسرائیل کو یقین آگیا کہ ہم فتنہ میں مبتلا ہوگئے تھے اور سب کو اُس جا پرغبطہ اور رشک ہونے لگا، حبکی دائے حضرت ہارون کے مطابق تھی دیبنی یہ ہمادا خسدا نہیں ہوسکتی) بنی ہسرائیل کو اپنے اس گذاہ طیم پر تعنبہ ہوا تو موسی علیالسلام سے کہاکہ اپنے رہب کے دعا کیجئے کہ ہمارے لئے تو بہ کا دروازہ کھولد ہے جس سے ہمارے گذاہ کا کفارہ ہوجائے۔

حضرت موسی علیالسلام نے اس کام کے لئے بنی اسرائیل میں سے ستر ایسے سلحار نیک اوکو
کا انتخاب کیا جو بوری قوم میں نیکی اور صلاح میں متماز سے اور جو اُن کے علم میں گو سالہ پرتی ہے بھی
دُور رہے تقے اس ا شخاب میں بڑی چھان میں سے کام لیا ۔ ان ستر منتخب سلحار بنی اسرائیل کو ساتھ
کے کرکوہ طور کی طرف چلے تاکہ النٹر تعالیٰ سے ان کی قوبہ قبول کرنے کے بارے میں عرض کریں مونی طلیالسلا کوہ طور پر بہنچے آو ڈمین میں ڈانر لہ آیا جس سے مولی علیہ السلام کو بڑی سٹر مندگی اس و ف اور کے وہ طور پر بہنچے آو ڈمین میں ڈانر لہ آیا جس سے مولی علیہ السلام کو بڑی سٹر مندگی اس و ف اور کے ماسے ہوئی اور قوم کے ماسے بھی۔ اس لئے عرض کیا دیت کو شدفت اُھلکٹہ تھی دیتی قبل کہ ڈائیا تی اس و ف اس کے ماسے کوہ اس انتخاب کر دیتے اور کھے بھی ان کے ساتھ ہلاک کر دیتے اور کھے بھی ان کے ساتھ ہلاک کر دیتے اکوا آپ اس و فر میں کھی سے اور دراصل و جہ اس انتخاب کی میں کھی سے وقوں نے گناہ کیا ہے ۔ اور دراصل و جہ اس ذراز لہ کی بیتھی کہ اس و فر میں کھی صفرت مولی علیہ استلام کی تحقیق و نفتیش کے با وجود کچھ لوگ اکمیں سے شامل ہوگئے تھے جو بہنے کو سالہ بہتی کر بھی سے اور اور اس سے گوسالہ کی عظمت ایک میں ہوگئے سے اور دوراس کی کھی و میں گوسالہ کی عظمت اور اُن کے دولوں میں گوسالہ کی عظمت اس میں ہور کھی سے دورائ کے دولوں میں گوسالہ کی عظمت اورائ کے دولوں میں گوسالہ کی عظمت استحدال کو میں کھی کھی اورائ کے دولوں میں گوسالہ کی عظمت استحدال کو میں کو کو کو کھی کھی اس کو میں کو میں گوسالہ کی عظمت کی کو میں کو کھی کو کھی کو کو کی کو میں کو میں کو کھی کی کو کھی کی کو کھی کو کھی

المستمى الوى مقى -

حضرت و تی علیا لسلام کی اس دُما، و قریاد کے جواب میں ارشاد ہوا و رُحمُونَ وَسِعَتُ عُلَقَ اللّٰهِ مِنْ فَسَا حَفْرَة بُهُ فَا لِلّٰهِ مِنْ اَللّٰهُ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰمِنِ مِنْ اللّٰمِنْ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهُ مِنْ اللّٰمِنِ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهُ مِنْ اللّٰمِنِ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهُ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰ اللّٰهُ مِنْ اللّٰمِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰهُ مِنْ اللّٰمِنْ اللّٰهِ مِنْ اللّٰمِنْ اللّٰمِنْ اللّٰمِنْ اللّٰمِنْ اللّٰمِنْ اللّٰ اللّٰمِنْ اللّٰمِنْ اللّٰمُ اللّٰمِنْ اللّٰمِنْ اللّٰمُنْ اللّٰ اللّٰمُ اللّٰمُ مِنْ اللّٰمُ اللّٰمِنْ اللّٰمُ اللّٰمُ مِنْ اللّٰمُ اللّٰمِنْ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ مِنْ اللّٰمُ اللّمُنْ اللّٰمُ الللّٰمُ الللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ الللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ اللّٰمُ ا

یہ شن کر موسی علیہ اسلام نے عرض کیا ، اے میرے پر در دگار ، میں نے آپ سے اپنی وقوم کے تو ہے بارے میں عرض کیا تھا ، آپ نے جواب میں رحمت کا عطافر مانا میری قوم کے علادہ دوسری قوم کے علادہ دوسری قوم کے متعلق ادشاد فر مایا ہو مجھرآپ نے میری پیدائش کو مؤخر کیوں نہ کر دیا کہ مجھے ہمی اُسی نبی اُسی نبی اُسی کی اُمتِ مرحومہ کے اندر پیدا فر ما دیتے داس پرا مشر تعالیٰ کی طرف بنی اُرئیل کی قوبہ تبول ہونے کی صورت یہ ہے کہ انہیں سے کی تو بہ تبول ہونے کی صورت یہ ہے کہ انہیں سے مہرخوص اپنے متعلقین میں سے باپ یا بیٹے جس سے سے اسکو تلواد سے تنل کر دے اُسی جگہ

میں جہاں یہ گوسالہ بیسی کا گناہ کیا تھا۔

اس دقت موسی علیالی مے دہ ساتھی جن کا حال موسی علیا سلام کوملوم نتھا اورائکو

ہتھ ورصالے مجھ کرساتھ لیا تھا مگر درحقیقت ان کے دل میں گوسالہ پرسی کا جذبہ ابتک تھا

دہ مجی اپنے دل میں نا دم ہو کر تائب ہو گئے اور اُنھوں نے اُس شدید کم پرعل کیا ہوان کی توبہ

قبول کرنے کے لئے بطور کھا رہ نافذ کیا تھا دیونی اپنے عزیز دا قارب کا تشل ادرجب اُنھوں نے

ہول کرنیا تو اطارتانی نے قاتل دمقتول در نوں کی خطامعات فرمادی اس کے بعد حضرت

موسی علیا لسلام نے تو مات کی الواح جن کو عصر سی ہاتھ سے دکھ دیا تھا اُنھا کرا بین توم کو

موسی علیا لسلام نے تو مات کی الواح جن کو عصر سی ہاتھ سے دکھ دیا تھا اُنھا کرا بین توم کو

المحارد من مقدر سہ دشام) کی طوت چلد ہے دہاں ایک ایسے شہر پر ہنچے جس پر جباری کا قبضہ

تھا جن کی سک وصورت اور قدر وقامت بھی ہیست ناک بھی اُن کے علم دوجوراور توت و خوکت

می کے بجیب غریب قصے ان سے کہے گئے دموسی علیالہ ماس شہر میں داخل ہونا چاہتے تھے گر

بی کے سوائیل پران جبارین کے حالات سنگر توب بھا گیاا ور کہنے گئے اسے موسی اس شہر میں اور ہم تواس شہر میں اُس شہر میں داخل ہونا چاہتے تھے گر

علی داخل نہیں ہونگے جب بک یہ جبارین وہاں موجد دیں ، ہاں دہ یہاں سنگیل جائیں تو ہو ہے میں ماش شہر میں داخل ہوسے ہیں۔

عمر ہم اُس شہر میں داخل ہوسے ہیں۔

قال کے جہلی بڑی الآزیق یکی افوان ، اس دوایت کے داویوں میں جویر بدہن ہادون ہے اس میں بوجی الیاکہ کیا این عبائ نے اس آیت کی قرارت اس طرح کی ہے ، یزید بن ہادون نے کہاکہ ہاں ابن عبائ کی قرارت ای طرح کی ہے ، یزید بن ہادون نے کہاکہ ہاں ابن عبائ کی قرارت ای قرارت کی قرارت کے دوادی ہیں جو اس شہرے کر حضرت مولی علیہ اسلام پرایمان ہے آئے تھے ، اُنھوں نے بنی اسرائیل پرا بنی قوم کا دعب طادی دیکھ کر کہا کہ ہم ابنی قوم کے حالات سے خوب واقف ہیں تم اُن کے ڈیل ڈول اورائ کی جسامت اورائ کی بڑی تعداد سے ڈر دہ ہو جو حقیقت یہ ہے کہ اُن میں دل دکی قوت) بالکل نہیں اور شرح ابنا کہ کہ مت ہے تم ذواشہر کے دروازے تک چلے چلو تو دیکھ دلیا کہ (دہ ہم تھیار ڈوالدیں گے) اور تم ہی اُن پر فالب آؤگے ۔

اور تعبق لوگوں نے مَرجُ کُن مِن الّذِنْ آن یَک اَفْوْنَ کَی تفسیر یہ کی ہے کہ یہ دو تخص حضرت مولی عدیا سلام ہی کی قوم بنی اسرائیل کے تقعے۔ قالوُ الیموُسِی اِ گا کُن نُن خُلَها اَ اِبْلُا قَا حَافُوا فِيمُوسِی اِ گا کُن نُن خُلَها اَ اِبْلُا قَا حَافُوا فِيمُوسِی اِ گا کُن نُن خُلَها اَ اِبْلُا قَا حَافُوا فِيمُهَا فَا فُو کُن اَ بِعِن بِنی اسرائیل نے ان دو اوْں اور میوں کی فصیحت سُنے کے بعد مجھی ہوئی علیہ اسلام کو کورا جواب اس بیمودگی کے ساتھ دیا کہ اے موسی اہم قواس شہر میں اُسوقت میک ہرگز نہ جائیں گے جبتک جبادین وہاں موجود ہیں اگر آپ محالا اس میں کے بہت جبادین وہاں موجود ہیں اگر آپ محالا ان سے اور بھڑ لیجئے ہم تو یہیں بیٹھے ہیں۔

 سوياته طائه ٢٠:٣٠

معادث القرآن جسائد شم

تین چٹے بہنے لگتے تھے اور بنی کسرائیل کے بارہ قبیلوں میں یہ چٹے متعین کرکے تعییم کرد نے گئے تھے تاکہ باہم تھیکڑا نہ پہدا ہو اور حبب بھی یہ لوگ سی مقام سے سفر کرتے اور بھی کہیں جاکرمنزل کے تے تو اس چھر کو دہیں موجودیا تے ستھے (قبطی)

حضرت ابن عباس نے اس عدمیت کو مرفوع کرے دسول انشر صلے انشر عکتیہ کم کا ادشاد قراد دیا ہے اور میر سے نز دیک بیر درست ہے کیونکہ حضرت معاوییؓ نے ابن عباس کو بیہ عدمیت دوایت کرتے ہوئے سُنا تو اس بات کو منکراو رغاط قرار دیا جواس عدمیت میں آیا ہے کہ حضرت مولی علایہ سلام نے حب قبطی کوفتل کیا تھا اور اسکا سُراغ قوم فرعون کونہیں مل رہا تھا تو اُس کی نخبری اُس دو سرے فرعونی شخص نے کی جس سے دو سرے دوزیہ اسرائیلی لڑ رہا تھا۔ وجہ بیکھی کہ اس فرعونی کو توکل کے واقعہ قستال کا علم نہیں تھا وہ اسی مخبری کیسے کرسکت تھا اس کی خبر تو صرف اسی لڑ نے

جب حضرت معادية نے انكى حديث كے اس واقعه كاالتكاركيا توا بن عباس كوغضه آيا، ا در حضرت معا وُلید کا ہا تھ میکو کرسعدین مالک زہری کے یاس لے گئے اور اُن سے کہا کہ اے ابو ہماق ليائمقين يادب جب على سدرسول الشرصل الشرعكيلم في فتيل موسى عليا اسلام كم يا ان من حدیث بیان فرمای ، اس را زکاا فتار کرتے والا اور فرعون کے یاس مخبری کرنے والا اسرائیلی تقایا فرعونی ۔ سعدین مالک نے فرمایا کہ فرعونی تھاکیو تکہ اُسنے اسرائیلی سے بیٹن لیا تھاکہ کل کا واقعة قتل موی علیالسلام کے ہاتھ سے ہوا تھااسے اسکی شہادت فرعون کے پاس دے دی، ا مام نسائ نے یہ توری طویل حدیث اپنی کتاب شنن کبری کی کتاب التقنیبر میں نقل فرمائ ہے۔ اور اس ٹوری حدمیث کو ابن جربرطبری نے اپنی تفسیر میں اور ابن ابی حاتم نے اپنی تفسیر میں اسی پزیدین بارون کی سندسے نقل کرے کہا ہے کہ یہ حدیث مرفوع نہیں بلکہ ابن عیاس دا کا پٹاکلام ہے جس کو انھوں نے کعب بن احبار کی اُن اسرائیلی روایات سے لیاہے جن کے نقل کرنے اور بیان کرنے کو جائز رکھا گیا ہے۔ ہاں کہیں کہیں اس کلام میں مرفوع حدیث کے جماع شامل بین-امام این کشیراین تفسیرسی اس بوری حدیث اوراً س بر مذکورالصدر تحقیق و تقدر لكيف كے يعد لكھتے ہيں كہ بمار ہے شيخ ابوالجائے مرتى بھى ابن جريرا درا بن ابى حاتم كى طسرت اس د وايت كوموقوف كاين عباس كاكلام قرار فيق عقد انتنى دنفسيان كشرا زهد الما علاما مذكورالمصدر قصد موسى علياستلام س [قران كريم في حضرت موسى علياسلام سے قصته كا استقدام الم عاصل شده ممّا تج وعيرًا ورفوا مُرقيمه فرمايا بكداكش سورتول مين اسكا يجهد فركرا بي علي

وث القرآن جب . r. Wh हिंग وجه بيه بها كمد بيرقصة مبزاد ون عبرتون اورحكمتون يرا درخدا وندسيحانه وتعالى كى قدرت كامله معظيمية مظاہر ریشتل ہے جس سے انسان کا ایمان مجنتہ ہوتا ہے اور اسمیں علی اور اخلاقی ہدایتیں تھی مبشادیں چونكماس جكرية قصته يورى تفصيل كم سائفة أكيا ب تو مناسب معلوم مواكراسك ذيل ميل يُ موي عبرتوں بصبحتوں اور ہدایتوں کا کچھ حصر بھی تکھدیا جائے۔ فرعون كى احمقانه تدبيرا درأس ير | فرعون كوجب بيعلوم بهواكه بنى كسرائيل مين كوى الوكايدا بهوكا قدرت على كاحيرت الكيزرة عمل جوفرعون كى سلطنت ك زوال كاسبب بين كاتواسرائلي ارهکوں کی پیدائش بزر کرنے سے اپنے قتل عام کا حکم دیدیا۔ بھراینی ملکی اور ذاتی مصلحت سے ایک سال سے او کو اق رکھنے اور دوسرے سال کے اور کوں سے قتل کرنے کا فیصل افاذ کردیا التترتعالى كوقدرت تقى كدمولى عليالسلام كوأس سال مين بيداكرد بية جوسال بيخول كوماقي فيورة كانتما مكر قدرت كومنظوريه بهواكه اس احمق كى اس ظالمانه تدبيركو فيدى طرح اس يراكب دياجائے ادراسكوخوب بيوقوث بنايا جائے -اس لئے موسیٰ عليالسّلام كواس سال ميں بيدا فرماياجونزكوں مے قتل کا سال مقا اورا بین حکمتِ بالغرسے صورت ایسی بریاکر دی کرمونی علیالسلام خوداس ا جباد بطالم کے تھرمیں پر درش یائیں، فرعون اور اُس کی بیری فے حضرت موسیٰ علیالسلام کوشود ورغبت سے اپنے گھرمیں بالا، سادے شہرکے اسرائیلی الاکے متوی کے شبھرس قاتل ہواہے مقے ا در مولی علیالسلام خود فرعون کے گھرمیں آرام وآسائش ادرعزت داکرام کے ساتھ اُن کے خریج پر پرورش بارہے تے ک دریه بندو دسمن اندرخانه بود مه حیلهٔ فرعون زیں افسانه بود موى على السلام كى والده يرمعجز الدانع محمد المرت عضرت موسى على السلام الرعام بيؤل كى طرح كسى أتنا اور تسرعوني تدبير كاايك اورأسقام كادود ه قبول كريسة توان كي برورش اين تتمن فرعون سے گھر مھر بھی آدام کے ساتھ ہوتی مگر موسی عداید سالام کی والدہ اُن کی جُدائی سے پر بیٹان رہتیں اورمولى على بسلام كوميى كسى كافرعورت كادوده طماء الترتعالي في اين بيغير كو كافرعورت سے دودھ سے بھی بچالیا اوران کی والدہ کو بھی جُرائ کی پرسٹانی سے بخات دی اور نجات بھی اس طرح كه فرعون كے كھروالے ان كے منون احسان موقے ان يربدايا اور تحفول كى يارش موى اور اينے ہی مجدوب بیجے کو دودھ پلانے پرفزعونی دریاد سے معاوض کی ملاا ورعام ملازموں کی طرح فرعون سے كَمريس معى بهنام يرا فَتَكَالِكَ اللهُ اللهُ أَحْسَنَ الْخَالِقِينَ -صنعت كاون وتاجرون وغيره كيلي أيك بشارت ايك حديث بين رسول الشرصلي الشرعلية سلم كا ارشاد م کرجوصنعت کارا بین صنعت و حرفت میں نیت نیک ثواب کی رکھے اُس کی مثال

न्द्र सीम . 4: MA عارف القرآن جر ستدى حضرت محكية الاهنة اسى بنا يرشترك مهندوستان مين جبكه مسلمان اور مهندو دولؤن المكريز كى حكومت مين رستة منظ كسى سلمان كے لئے بيد جائز ند ركھتے تھے كدوه كسى مندوكى جان مال برا كم كرے صنعیفوں کی امراد اور خدمت خلق حضرت موسی علیاسلام نے شہر مرین سے با ہر کنویں بر دوعورتوں دین و دنیا کے لئے نافع اور مفتیکر کو دیکھا جوا پینے صنعت کی بنا براینی مجربی کو یافی نہیں بلا محتی تقیں ، پرعورتیں بالکل اجنبی ، ا درموسیٰ علیالسلام ایک مسافر تقے منگر صنعیفوں کی امرا د دخدمت مقىقنائے شرافت اورالنتر کے نزدیک مجبوب علی تقااسلنے اُن کے واسطے محنت اُتھائی، اوراً بھی بحربين كوياني بلاديا اسكااجرد تواب توا مشرك باس براس- دُنياين مجى الشرتعالي في أيكاس على كومسافرانه بيكسى اور بيسروساما فى كاايسا علاج بنا دياجوان كى الكى زندگى أن كى شان سے مطابق سنوار نے کا ذریعیری گیا کہ مصرت شعیب علیہ السلام کی خدمت اور اُن کی دامادی شون حاصل مواء جوان موفى مع بعدجوكام أن كى والده كوكر ناتفا النتر تعالى فيغربت معالمين اين ایک بنی کے ہاتھ سے انجام داوایا-وويغيرون من اجيراود آجر كامعامله ادراس كى حكمتين ادر فوا مرعجت به الموكر فرعونى سياميون كے خوف سيطمئن موتے توحضرت شعبيب عليدو بسلام نے صاحبزادی سے مشورہ پر اُن کوا ہے بہاں اجیرد کھنے کا خیال ظاہر فسرمایا اسمیں الشرتعالیٰ کی بڑی حکمتیں اور خلق الشرسے لئے اہم ہدایتیں ہیں۔ اقل سر کوشعیب علیه السلام الشرتعالی کے نبی ورسول تھے ایک مسافر غرب امدادان مع بجيرستبعد شرمقي كه مجيوع صدابين يهال بلاكسي معاد صد خدمت محيمان وكوليت مكرفالباً أتفون في بينيرانه فراست مع موسى عليبالسلام كاعالى حوصله بونامعلوم كرك يتمجد لبيا تفاكه وه دیرتک مہمانی قبول مذکریں سے اور سی دوسری حکہ چلے گئے توان کو تکلیف ہوگی اسلنے بے تکلیف معاملہ کی صورت اختیاد کرلی جمیں دوسروں کے لئے بھی یہ ہدایت ہے کہسی کے گھرجا کرا ٹیابادات ير دُالنا سرافت كے خلات ہے۔ دوس اسي يحكت ميى كم الله تعالى مصرت موى عليدا الله كونبوت ورسا سے فائز کرنا جا ہتے تھے جس کے لئے اگر جی کوئ مجاہدہ وعمل ندسترط ہے اور ند و مسی عمل ومجاہدہ سے ذریعہ حاصل کیجا سکتی ہے وہ تو خانص الله تعالیٰ کیطرٹ سے عطیبہ اورا نعام ہوتا ہے مگرعادۃ الله یہ ہے کہ وہ اپنے پنجیروں کوئی مجاہدات اور محنت ومشقت کے دُور سے گزار تے ہیں جوا خیلاتی انسانی تی تمیل کافر دیدم اور دوسرول کی اصلاح کابراسیب بنتاہے۔ مولی علیہ سلام کی زیمگی اسوقت تك شابانه اعزاز واكرام مين كُزُرى عنى آكے ان كوفلق خداك كئے بادى دربيرادرالكا

سولاق ظلم ۲:۲۰ کمے نبنا تھا ،حصرت شعیب علایہ لئے کے ساتھ اس مزد دری دمحنت کے معاہدہ میں اُن کی اخسلاتی ترمیت کاراز بھی پوشیرہ تھا ، عارف شیرازی نے اسی کوکہا ہے ۔ شیان دادی ایمن کے دسر بمرا د به کرچیندسال بجاں خدمتِ شعیب کند تنیست جو فدمت ان سے لی گئی وہ بکر مایں چرانے کی تھی ، پیرعجیب بات ہے کہ بیہ کام اکث انبيارطيهم السلام سے ليا كيا ہے يشايد اسميں يہ داز بھي ہوكہ بحرى ايساجا نورہے جو كلے سے آگے بيجھے بھاکنے کا عادی ہوتا ہے جس پرجرائے دانے کو باربارغضتہ آتا ہے ، اس غضہ کے نیتے میں اگر دہ اس بھاگئے والی بری سے قطع نظر کرسے تو مکری ہائھ سے گئی وہ کسی بھیڑئے کا لقمہ بنے کی اور اپنی مرصی ے تابع چلانے کے بنے اسکوما رہیٹ کرے تو وہ کمزور اتنی ہے کہ ذراجوٹ مارو تو ٹانگ ٹوٹ جائے اس سے چرواہے کو بڑے صبر دجلم سے کام لینا پڑتا ہے۔ عام خلق خدا تعالیٰ کا بھی انبیار عليهم السلام كے ساتھ ايسائى حال ہوتا ہے جي انبيار ندان سے صرب نظر كرسكتے ہي اورند زيادہ تشرد كركے أن كوراسترير لاسكتے ہيں صير دهلم بى كوشيوه بنانا ير ما ہے -ى كوكوئ عهده اورملازمت سيرد اس قصه مين شعيب عليه السلام كي صاحبزادي نے جوا يينے رتے کے لئے بہترین دستورالعل والد کوئیشورہ دیاکہ ان کو ملازم رکھ لیاجائے اس مشورہ کی دیل یہ بیان فرمائ کہ بہترین اجیر وہ تخص ہوسکتا ہے جو قوی بھی ہو،ا میں تھی ۔ توی سے مرا د اس کام كى توت وصلاحيت والا يونا، بوكام أسكر سيردكرنا ہے اور آمين سے مُراديہ ہے كہ اسس كى مالفة زندگی کے حالات اس کی امانت و دیانت پرشاہد ہوں ، آجکل مختلف ملازمتوں اورسرکاری و تغیرسر کاری عمدوں کے لئے انتخاب کا جواد مول رکھا جاتا ہے اور در نواست گزار میں جن ادفعا کو دیکھاجاتا ہے اگرغور کریں توسب کے سب ان دونفطوں میں جمع ہیں بلکہ اُن کے تفصیلی شرائط میں بھی بیرجامعیت عموماً نہیں ہوتی اکیو تکدامانت و دیانت توکہیں زیر غور ہی نہیل تی مین على قابليت كى در كريال معيار إوتى بين اور آجكل جهال كهين سركارى وغيرسر كارى ادارون کے نظام میں ابتری یانی جاتی ہے وہ بیٹیراس اصول دیانت کونظرا ندا ذکر شکانیتی ہوتا ہے۔ قابل اورعاقل آدمی جب امانت و دیانت سے کوراہو تاہے تدیم دہ کام چوری اور رشوت خوری تے بھی ایسے ایسے راستے زیکال لیتا ہے کہ سی قانون کی گرفت میں نہ آسکے۔ اسی نے آج و نسیا ے مبتیتر سرکاری وغیر سرکاری ا دار دل کو مبیکا رملکه مضربنا رکھاہے -اسلامی نظام میں اسی لیے اس کورٹری اہمیت دی گئی ہے جس کے برکات دُنیانے صدیوں تک دیکھ ہیں۔ ساحرد ل اور بنیر بی محمد الآمی کھلاہوا فرق | فرعون نے بن جا دوگروں کو جسے کیا تھا اور پورے ملک د توم كاخطسره أن كے سامنے دكھ كركام كرنے كوكها تھا! سكا تقاضا يہ تھاكہ وہ خود ايناكام مجھ كر

سویاته طنی ۲۰: ۲۲ اس فدمت كودل وجان سے انجام ديتے مكر دہاں ہوا يہ كہ فدمت شرع كرتے سے بيلے سودے بازى ا شروع كردى كريمين كيا ملے گا-اس كے بالمقابل تمام البيار عليم السلام كاعام اعلان يه ترتباہے وَمَا أَسْتُلْكُوْ عَلَيْهِنَ آ تجدیه بعینی میں تم سے اپنی تعدمت کا کوئی معادحند نہیں مانگیا ، ادر ا نبیار علیهم السّلام کی تبلیخ و د توت كے مؤثر ہونے میں اُن كے اس استعناء كا بڑا دخل ہے -جب سے علماء دین اہل فتوى ایل خطابت و وعظ کی غدمت کا انتظام اسلامی بیت المال می نبین ریا ان کواینی تعلیم اور دعظ وامامت ير شخواه لين كى مجبورى بيش آئى وه اكرچيد متأخرين فقهار كنزديك بدرجه مجبوري بز قرار دی گئی مگراسیں شبہ منہیں کہ اس معاوضہ لینے کا اثر تبلیغ و دعوت اور اصلاح خلق پر شہایت بھا ہواجس نے ان کی کوششوں کا فائدہ بہت ہی کم کردیا۔ فرعونی جادو گروں سے جا دوکی حقیقت ان توگوں نے اپنی لا مقیوں اور رسیوں کو نظام رساج بناكر دكهلايا تفاكيا وه وا تعي سانب بن كئي تقين اسك متعلق الفاظ قرآن يُحَيَّلُ إلَيْهِ هِنْ سِغْرِهِمْ أَنْهَا تَسْعَىٰ سے بيدمعلوم ور تا ہے كه وه حقيقةٌ سانب نہيں بنى تھى ملكه بيدا يك قسم كالمسمريزم تفاجس نيخيالات حاصرين يرتصرت كركم ايكيسهم كىنظر بندى كردى كدح كووه چلته پهرتے سانب دكھائ دينے لگے۔ اس سے یہ لازم نہیں آنا کرکسی جا دو سے کسی شنے کی حقیقت تبدیج اتنا معلوم ہوتا ہے کدان جادوگروں کاجا دو تبدیل حقیقت کے درجہ کا نہیں تھا۔ قبائلی تقییم مکاشرتی معاملات اسلام نے وطنی ، لِسُانی ، نسبی ، قبائلی تقییموں کو قومیت کی حد تک کوئی مذموم عمل نہیں کی بنیا دبنانے پرسخت تکیر کیا ہے اوران تفرتوں کو مٹاتے کی ہرقدم ہرکام میں کوشش کی ہے بلکہ اسلامی سیاست کا شک بنیادہی اسلام کی دینی قومیت ہے جین عربی عجی احبشی، فارسی ، سندی استدعی سب ایک قوم کے فرادیں دسول الترصل الشرصلية لم في مدينه مين اسلامي حكومت كى بنياد ركھنے كے لئے سب يہلا كام مهاجرين والصارس بيكاتكت اورمواخات قائم كرنے سے ستربع فرمايا تقا اور بجر الوداع كيخطبيس قيامت تك كے لئے يہ دستورالعل ديديا تفاكه علاقائ اورتسبى اورلسانى امتيازا سب مُت بین جن کو اسلام نے توڑ ڈالا ہے ، اسکن معاشرتی معاملات میں ایک حد تک ان امتيازات كى رعايت كوكواداكياكيا ب كيونكه كعانى يين رسن مهن كرط يقي مختلف قيائل اور مختلف اوطان محالگ الگ ہوتے ہیں اُس مے خلاف کرنا سکیف شدیر ہے -حضرت موسی علیدالسلام جن بنی اسرائیلیوں کومصرسے سائق لیکر میکے تھے اگن کے

سُوْرَه ظل ۲۰ اس بادہ تبلیلے تھے ،حق تعالی نے ان تبلیوں کے امتیاز کو معامشرتی معاملہ میں جائز رکھااور در طرح دادی تیرمیں جس چھر سے بطور مجرویا بی سے چھے جاری ہوتے تھے وہ بھی بارہ ہوتے تھے ت نه بود برایک تبیله اینامقرده یانی حاصل کرے۔ کلات اعلم حضرت موی علیبالسلام تے جب آیا مینے کے لئے اپنی قوم سے الگ خليفها ورنائب بناما موكركوه طوربيعيا دت مين شغول يوناجا بإتو بإرون عليه السلام كواين غلیفه ا در ناتب بناکرسب کو ہدایت کی کہ میرے بیجھے سب ان کی اطاعت کرنا تاکہ آپس میں اختلاف ونزاع مربھوٹ پڑے - اس سے علوم ہواکہ سی جاعت یا خاندان کا بڑا اگر کہیں سفر برجائ توسننت انبياريه سيحكمسي كواينا قائم مقام خليفه بناجائ جوا تكنظم وضبط كوقائم كحق تشلمانوں کی جاعت میں تفرقہ سے بچنے | بن اسرائیل میں حضرت موسی علیدانسلام کی غیرعاصری سے مے اپنے بڑی سے بڑی مرائ کو وقت طور وقت جو کوسالہ بیستی کا فلتہ بھیوٹیا اوران کے بین فرتے ہوگئے اسحماہے۔ حضرت ہارون علیالسلام نےسب کو دعوت حق تو دی گر ی فرقه سے گلی اجتناب اور بیزا ری وعلیحد کی کاموسی علیالسہ كاشترت سے اظہار بہیں كياكہ بي آب واپس آكر تھے بدالزام نہ دیں كرتم نے بني اسرائيل ميں تفرقه پيداكر ديا ورميري بدايت كي يا بندي نبيس كي -حضرت موسی علیہ اسلام نے بھی اُن کے عذر کو غلط نہیں قرار دیا بلکہ بھے سیم کرمے اُن کے لئے دُھار واستغفاركيا!س سے يہ ہدايت تكلى ہے كەسلمانوں ميں تفرقدسے بينے كے لئے وقتی طور بر اكركسى يُرائ كرمعا ملے ير نرى برتى جائے تو درست ہے وَالنَّهُ بُنْكَانَهُ وَيَعَالَى اَعْلَعُ قصة موسى عليالسلام كى جوايات أدير تكفي كئى بين ان كے آخر ميں حصرت موسى و يادون علیهاالسلام کو فرعون کی ہدایت کے لئے بھیجنے کاحکم ایک خاص ہدایت کے ساتھ دیا گیا ہے بعینی نَعُوْلَالَهُ تُولُا لِبَيْنَالَعَلَّهُ بَيْنَالُولُو يَخْشَى - اسمين -ببنيبرانه دعوت كاليك بم اصول بربيان بوائه كه فريق نخالت كتتابي سركش اور غلط سي غلط عقائد وخيالات كاحابل بيؤاصلاح وبدايت كافريضه انجام دينے والوں يرلازم ہے كمراسے سائق بھی مدر دانہ خیرخوا ہا نہ انداز سے بات نرم کریں اسی کا بینتجید ہوسکتا ہے کہ مخاطب کچھ

سُورَة ظلى ٢٠٠٠ ٥٠ عارف القران جسلة فور و فكر بر محبور بهو حيائے اور اسكے دل ميں خدا كاخوف پيدا بهوجائے -فرعون جوخدای کا دعوبدار جتبار اورظ لم ہے، جواپنی ذات کی حفاظت کے لئے ہزار ہا بنی بسرائیل کے بچوں کے قتل کا مجرم ہے اُس کی طرف بھی اسٹرتعالیٰ اپنے خاص پیٹیسبروں کو بھیجتے ہیں تو یہ ہدایت نامہ دے کر بھیجتے ہیں کہ اس سیات نرم کریں تاکہ اسکوغور ذفکر کامو^{قع} ملے۔ اور بیراس پر ہے کہ الشرتعالی کے علم میں تھا کہ فرعون اپنی سرکشی سے اور گھراہی سے باڑ آفے دالانہیں ہے مگرا ہے بیٹی وں کواس اُصول کا یا بند کرنا تھاجس کے ذریعے خلق خداسو چنے مجصة يرمجيد م وكرخداتعا لا محفوت كى طوت آجائے - فرعون كوبدابيت بويا نه بو مكرا صول و بونا چاہتے جو ہدایت واصلاح کا ذریعیرین سے۔ آجكل جومبهت سے اہلِ علم استے اختلافات میں ایک دوسرے سے خلاف زبان درازی اورالزام تراسى كواسلام كى فدمت مجد منتهج بين أتفين اس يرمبت غور كرنا جاسية قَالَارَتِنَا إِنَّا مَنَا عَنَافَ آنَ يَغُرُطُ عَلَيْنًا آوْ آنَ يَظِعْ ١٤٥ قَا يولےا اے دب ہمادے ہم ڈرتے ہیں کہ بعبا یڑے ہم یر یاجوش میں آجائے

لاتتحافا رائين معكما أسمع وازى ﴿ قَالِيهُ فَقُولًا سوجاد اس کے پاس اورکیو میں ساتھ ہوں تہارے شنتا ہوں اور دیجفتا ہوں تَارَسُولَا رَبُّكَ فَآرُسِلَ مَعَنَا بَنِيْ إِسْرَاءِ بَنْ وَلَا ہم دونوں مصبح ہوئے ہیں بترے دب سے سومجیدے ہمارے ساتھ بنی اسرائیل کو ہم آئے ہیں بیرے باس نشانی لیکر بیرے دب کی اى الاقتارة وكالمناكات العناب على ہم کو حکم بلا ہے کہ عذاب اس برہے الال محمر كون ہے دب تم دولوں كالے موى الدَّيْ وَيَ آعْظِ كُلِّ شَيْ إِخْلَقَهُ ثُمَّ اللَّهِ وَاللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ وَاللَّهُ اللَّهُ اللَّ دب ہمارا وہ ہے جس نے دی ہر چڑکواس کی صورت محر داہ

فلاصترفسير

رجب بیکم دواوں صاحبوں کو برائے چکاتو) دواوں نے عرص کیاکہ اے ہمارے پرورد کارہم تبلیغ کے لئے ماصر ہیں تیکن) ہم کو اندلیٹہ ہے کہ دکھیں) وہ ہم پر د تبلیغ سے پہلے ہی) زیادتی نہ كر ميضے ذكه تبليغ ہى ده جادے يا يہ كه (مين تبليغ كے وقت اينے كفرميں) زيادہ شرارت بن كرنے تكے ذكرائي بك بك ميں تبليغ يزشنے يذسننے دے جس سے وہ عدم تبليغ سے برابر بوجافيے) ارشاد ہواکہ داس امرے مطلق) اندلیشہ مذکر د دکیونکہ ، میں تم دولؤں کے ساتھ ہوں سب شنتیا د تھیتا ہوں دیں تمہاری حفاظت کروں گااوراً س کو مرعوب کردوں گاجس سے پوری تبلیغ کرسکتے جبیادوسری آیت میں ہے بخو کُ کُگا سُلطاناً) سوتم دیے خوت و خطر، اس سے یاس جاؤاور (اس سے) کہوکہ ہم دولوں تیرے پر در دگار کے فرستاد سیر کرہم کو نبی بن ارتبیا ہے) سو د تو ہماری اطاعت کراصلاح عقیدہ میں بھی کہ توحید کی تصدیق کراوراصلاح اخلاق میں بھی کہ ظلم دغیرہ سے بازا اور) بن اسرائیل کو رجن یر تو ناحق ظلم کرتا ہے اپنے پنج وظلم سے باکرے) ہما ہے سائقہ جانے دے دکہ جہاں جاہیں اور جس طرح جا ہیں رہیں ، اور ان کو تکلیفیں مت بہنچا (اور) ہم (جود وای نیوت کا کرتے ہیں تو خالی خولی نہیں بلکہ ہم) تیرے یاس تیرے رب کی طوف راین ہو کا) نشان ربینی معجره میمی) لائے ہیں اور رتصدیق اور قبول حق کا نخرہ اس قاعدہ کلیہ سے معلوم اموكاكه) ایستحض كے لئے (عداب اللی سے) سلامتی ہے جو دسيدهي) راه ير چلے (اورتكذيب ورةٍ حق کے باب میں ہمارے پاس میچم بینجا ہے کہ دانشرکا) عذاب د قبر کا) اس تحص مر ہو گاجو رحق کو) جھٹلاد سے اور راس سے) روگردانی کرے رغوض بیسارا مضمون جاکراس سے کہو جنائج دونون مصرات تشریف ہے گئے اور جاکر اس سے سب کہدیا) وہ کہنے لگا کہ بھر ا یہ تو بتلاؤكه) تم دونوں كارب كون ہے دحیں كے تم اپنے كو فرستا دہ تبلاتے ہو) اے مؤلى دجواب میں ، موسیٰ دعلیالسلام ، نے کہاکہ ہمارا (دونوں کا بلہسب کا) رب وہ ہے جس نے ہر چیز کو اسکے مناسب بناوث عطافرمائ بيحر دان ميں جوجا ندار جيزي تقيں اُن کو ان کے منافع و مصالح کی طرت) رہنمائ فرمائ دچنا تحیہ ہر جالؤرا بنی مناسب غذا ا درجوڑہ اورسکن وغیرہ ڈھوٹڈلیتا آ

يس ديي بهادا بهي رب مهارف ومسائل

حضرت موئی کوخوت کیوں ہوا | را نُنْ این افغات ، حضرت موئی و ہارون علیما السّلام نے اس جگر، الشرتعالیٰ کے سامنے دوطرح کے خوف کا اظہار کیا۔ ایک ان یعن طرکے نفظ سے جس کے صلی

سُورَةُ طلى ١٢٠٠ معادت القرآن جسكدهم معنے صدسے تجاوز کرنے سے بیں تومطلب یہ واکدشا پدفرعون ہماری بات شننے سے پہلے ہی ہم بر احله كردك، ووسرا حوف ان يطف كے نفظ سے بيان فرمايا جسكا مطلب يہ ہے كه ممكن ہے ده اس سے بھی زیادہ سرمشی پراترائے کہ آپ کی شان میں نامناسب کلمات بھنے گئے۔ يهان أيك سوال بديديا موتا كه ابتداركلام مين جب حضرت موى عدايسلام كومنصب نبوت ورميالت عطا فرماياكيا اوراً محصول نے حضرت ہارون كو اپنے ساتھ ستر مكيكر كئي درخوات كى اورب درخواست قبول موى تواسى وقت حق تعالى نے ان كويه تبلاد يا تفاكه سَنَشُ الله عَصْلَ لَدُ بِأَخِبُكَ وَخَعُلَ لَكُمَا سُلْطَانًا فَالْا يَصِكُونَ إِلَيْكُمَا ، نيزيه عِي اطمينان ولادياكيا تفاكدات كى درخواست يس جوجو چيزي طلب كى كنى بين ده سب بم نے ایک و ديدين قان أدبيت مشؤلك لبشوسي ،ان مطلوب چيزون مين سترح صدر مي تقاجسكا حاصل يبي تقا كر فخالف سے كوى دل تنگى اور خوف و سراس بيدا شرو -النزتعالى كے ان وعدوں کے بعد بھر بیخو ن اوراسكا اظہاركيسا ہے اسكا ایک جواب تویہ ہے کہ پہلا وعدہ کہ ہم آپ کوغلبہ عطا کریں گے اور وہ لوگ آپ تک نہیں ہے ا بدایک مبهم وعده م که مراد غلب سے جست و دلیل کا غلبہ مبھی ہو سکتا ہے اور ما دی غلبہ مجی۔ انیز بیرخیال بھی ہوسکتا ہے کہ اُن پرغلبہ توجب ہوگاکہ وہ ان سے دلائل سیں مجزات دیکھیں مگر خطرہ یہ ہے کہ وہ کلام شنفے سے پہلے ہی اُن پر حملہ کر سیٹھے اور شرح صدر کے لئے بیرلازم نہیں کہ طبعی خوت تھی جایا رہے۔ دوسری بات یہ ہے کہ خوت کی چیزوں سے طبعی خوت تو تمام ا نبیار علیم السلام کی سنتے جو وعدول يرتيورا ايمان ويقين مو في كم با وجود مي موتا ہے خود حضرت موسى عليه السلام اپنى بى لا تقى كے سانب بن جانے كے بعدا سے كيونے سے ڈرنے لگے توحق تعالیٰ نے فرمايا لَا تَحْفَتْ دُردُ بِي اور دوسرے تمام مواقع خوف میں ایسا ہی ہو تاریا کہ طبعی اوربشری خوف لاحق ہوا بھرالشر تعالی نے بشارت مے دربیراس کورائل فرمایا۔ اسی واقعہ کی آیات میں فَخْرَجَ مِنْهَا خَالِفًا يَتَوَقَّبُ اورقاً عُبِيمَ فِي الْمُكِينَة خَالِفًا اور فَا وُجَسَ فِي نَفْسِم رِجْبُفَة مَّوْسِي كَي آيات استضمون برشاري حضرت خاتم الانبيارا ورسيدالانبيا رصل الشرعليه وسلم في اسى بشرى خوف كى وجرس مدينه مشريف کی طرف اور کھیصحابہ کرام نے پہلے حبشہ کی کھر مدمینہ کی طرف ہجرت فرمائ ۔غزوہ احزاب بیالی خوت سے بچنے کے لئے خندی کھودی والانکہ اللہ تعالی کیطرف سے دعدہ تصرت و ملب باربارا جیکا تفا مكرحقيقت بديه كدموا عيدرتاني سے تقين توان سبكو بُورا حاصل تھا مكرطبعي خوف جو عقیقنائے بشریت نبیارمیں میں ہوتا ہے دواس کے منافی نہیں۔

معارف القراق جسكدتم

شوی طورپر بابند ہے اور اسکے فالا ت کرنا آگی قدرت سے فالنج ہے ، دوسری ہدایت فاص انہا عقول انسان وجن کے لئے ہے یہ بدایت مکوئی اور جبری نہیں بلکہ فقیاری ہوتی ہے ، اسی افتیار کے نتیجہ میں اُس پر تواب یا عذاب مرتب ہوتا ہے آغطی کُل شوئا خُلفَہُ فَہُ مَلٰی مِیں پہل افتیاری ہوتی ہے ، اسی ہوتا ہے آغطی کُل شوئا خُلفہُ فَہُ مَلٰی مِیں پہل افتیار کے نتیجہ میں اُس پر تواب یا عذاب مرتب ہوتا ہے آغطی کُل شوئا خُلفہُ مُنہ میں ہولی ہوایت مرکور ہے ۔ حضرت موئی علیا اسلام فی فرعون کو سب سے پہلے رب العالمین کا انسان نے کیا ہوساری مُخلوق پر حاوی ہے اور کوئ نہیں کہ سکتا کہ یہ کام ہم نے یا کسی دوسرے انسان نے کیا ہے ۔ فرعون اسکاتو کوئ جواب نہ فیے سکا اب اور مرا دھر کی باتوں میں ٹلا یاادرایک موال موئی علیا سلام ہو گئے کہ کہ کہ اس موال موئی علیا سلام ہو گئے ہوا ہو گئے ہوا ہو گئے ہوا کہ ہو گئے انسان کے کہ بیسب وہ گئے ہو ہو تو من گراہ اور جبنی ہیں تو مجھے یہ کہنے کا موقع ملیکا کہ لویساری دُنیا ہی کو بیو قوت گراہ اور جہنی جھے ہیں اور گئے ہوئے اور امقصد پورا ہوجا گئے گئے ہوف کر اور کہنی جھے ہیں اور گئے ہوئے کا موقع ملیکا کہ لویساری دُنیا ہی کو بیو قوت گراہ اور جہنی جھے ہیں اور گئے کہ ہوئے اور اسکے کھا نہ جواب دیا جس سے اُسکا یہ صوبہ غلط ہوگیا ۔ ایسا حکیا نہ جواب دیا جس سے اُسکا یہ صوبہ غلط ہوگیا ۔ ایسا حکیا نہ جواب دیا جس سے اُسکا یہ صوبہ غلط ہوگیا ۔

قال قبرا بال الفرون الرولى فال علمها عند كرني المرافي في المهاعن كرني المرافي في المهاعن كرني المرافي في المهاعن كرني المرافي في المن المرافي المرافي في المن المرافي المرافي

= (30)=

فلاصرتفسير

اس (زمین) میں تھارے (چلنے کے) واسطے رہتے بنائے اور آئمان سے یانی برسایا بھرتم نے اس (یانی) کے ذریعیہ سے اقسام مختلفہ کے نباتات پیدا کئے (اور تم کواجازت دی کہ) خود در کھی) کھا وُ اور اینے مواشی کو دہمی جرا قران سب (مذکورہ) چیزوں میں اہل عقل کے رات رال کے) واسطے (قدرت البيركي) نشانيان بيرداورس طرح نبامات كوزمين سينكالتي بي اسىطرح المم في تم کواسی زمین سے (ابتدامیں) پراکیا، رچنانچرادم علیالتلام مٹی سے بنائے گئے سوان کے داسطے سے سب کاما دہ بعید خاک ہوئ) اور اس میں ہم تم کو (بعد موت) لے جا دیں گے (جنانی کوئی مردہ کسی حالت میں ہولیکن آخر کو کو مدتوں کے بعد ہی مگرمٹی میں حزور ملے گا) ادر دقیامت مے دوز) محرد دبارہ اسی سے تم تم كؤ كال يس كے (جيسا يہلى باراس سے بيداكر تھے ہيں) اوریم نے اس د فرعون اکواپنی دوہ) سب ہی نشانیاں دکھلائیں دیجوکہ موسی علیالسلاً)کو عطام دی تھیں) سروہ (جب بھی) تجھٹلایا ہی کیااور انکارہی کرتا رہا (اور) کہنے لگاکدا ہے موئی تم ہمارے یاس دیر دعویٰ نیکر) اسواسطے آئے ہورگے اکہ ہم کو ہمارے ملک سے اپنے جادور زور) سے نکال با ہر کرو (اورخودعوام کو فریفتہ اور تا کے بناکر رئیس بن جاؤی سواب بم بھی تہا اے مقابلے میں ایساہی جادو لاتے ہیں توہمارے اور اپنے درمیان میں ایک و عدہ مقرر کر لوجیک منهم خلات كري ادر منهم خلات كردكسي محوار ميدان مين و تاكرسب ديكه ليس موي وعدالسلام نے فرمایا تمہاہے د مقابلہ کے وعدہ کا وقت وہ دن ہے جس میں رتمہاما) میلا ہوتا ہے ، ادر رجمیں، دن چرطصے توک جمع ہوجاتے ہیں داور ظاہرے کہ میلے کاموقع اکثر ہموارہی زمین میں ہوتا ہے اسی سے مکان سوئ کی شیرط بھی یوری ہوجاو ہے گی)۔

مكارف فمسائل

قَالَ عِلْمُهُا عِنْنَ دَرِقَ فِي كِيْنِهُ كَا يَعِلْ أَدِقَ وَلَا يَسْنَى ، فرعون نے جَجِلِي اُمتو كے انجام كاسوال كيا تھا اگراسكے جابيں موئى علياتلام اُن كے گراہ اور جہنى ہونيكاصات طور سے اظہار كرتے تو فرعون كومو قع اس طعن كا علجا ما كہ يہ تو صرف ہميں ہي نہيں سادى وُ نيالو گراہ ہنى ہجھتے ہيں اور عوام اس سے شبھہ ہيں پڑ جاتے ۔ حضرت موئى علياسلام نے ايسا حكيما شرجواب دياكہ بات بھى پورى آگئى اور فرعون كو بہكانيكا موقع نہ ملا ۔ فرماياكہ اُن كاعلم ميرے رب كے پاس ہے كہ اُنكا كيا انجام ہوگا ، ميرارب نه غلعى كرنا ہے نہ بھولتا ہے ۔ فلطى كرنے سے مراد يہ ہے كہ كرنا كھوليہ موجائے كھواور بھولنے كا مطلب ظاہر ہے ۔ منظى كرنے سے مراد يہ ہے كہ كرنا كھوليہ ہوجائے كھواور بھولنے كا مطلب ظاہر ہے ۔ اور شيئی شتيت

کی جمے ہے۔ بس کے معنی ہیں تفرق۔ مُرادیہ ہے کہ نباتات کی اتنی بیٹے آتھیں بیدا فرما میں کہ اُتکی استی میں الشرقعالی نسان نہیں کرسکتا۔ بھر ہر نبات بڑای بوٹی، بھول، بھول، بھول، درخت کی چھال میں الشرقعالی نے ایسی ایسی السترقعالی نے ایسی السین کھی ہیں کہ علم طب اور ڈاکٹری کے ماہرین جیران ہیں اور نزاد اور سال سے اسکی تحقیقات کا سلسلہ جاری ہوئیے یا وجودیہ کوئ نہیں کہ بھٹ کہ اسے متعلق جو کچھ کھھ دیا گیاہے وہ حرف اُخرہ اور بیرساری نباتات کی مختلف قسیس انسان اور اسکے پالتو جا اوروں کو کھریا جو کھی جائوروں کی غذا یا دوا ہوتی ہیں، ان کی کٹری سے انسان مکانوں کی تعمیر میں کا م لیتا ہے۔ اور کھر میں انسان استعال کی ہزار دوت میں بناتا ہے فَتَ بِرَكِ اللّٰہُ اُحْسَنُ النّٰ اُحْسَنُ النّٰ اِللّٰ اِنَ فِیْ اُسی بہت می نشانسیا ں اسکے آخر میں فرمایان اور ایک فرمی ہے انہ اور میں برت می نشانسیا ں اسکے آخر میں فرمایا کی تو اور سے اور کتی ہے۔ نہی انٹی کی جمع ہے نہیۃ عقل کو اس سے کہا جا تا کہ وہ انسان کو ہُرے اور مصر کا موں سے دو کتی ہے۔

الرانسان کے خمیر میں نگطفہ کے ساتھ اس جگہ اور منظم انتخابی اور منظم کے تھا کہ انہای ضمیر زمین کی بڑی سے بداکیا

اور منظم نظر کی جہاں ہوتی ہے جہاں ہوتی ہے جہاں ہوتی ہے ہیں کہ ہم نے تم کو زمین کی بڑی سے بداکیا

مخاولب اسکے سب انسان ہیں حالا نکہ عام انسانوں کی پیدائش مٹی سے نہیں بکہ نطفہ سے ہوئ المجسز آدم علیہ السلام سے کہ اُلوں کی پیدائش براہ واست مٹی سے ہوگ تو یہ خطاب یا تواس بنار بر ہوسکتا ہے کہ انسان کی اصل اور سب کے باپ حضرت آدم علیہ ستالام ہیں انکے واسط کے سب کی خلیق مٹی کی طوف منسوب کر دینا کچھ بعید نہیں بعض صفرات نے فرمایا کہ ہم نطفہ مٹی ہی کی پیدا وا دہوتا ہے اسلے نطفہ سے تخلیق ورحقیقت مٹی ہی سے تخلیق ہوگئی امام قرطبی نے فرمایا کہ ہرانسان کی جمالات اس کی خلیق ہیں حق تفایق ہوگئی امام قرطبی کے خرمایا کی تخلیق مٹی سے ہے ۔ اور بعض حضرات نے فرمایا کہ ہرانسان کی تخلیق میں حق تعالی ایک ہرانسان کی تخلیق میں حق تعالی آبین قدرت کا ملہ سے مٹی شامل فراتے ہیں اسلے ہرایک انسان کی تخلیق میں حق تعالی ایک ہرانسان کی تخلیق میں حق تعالی آبین قدرت کا ملہ سے مٹی شامل فراتے ہیں اسلے ہرایک انسان کی تخلیق مٹی میں حق تعالی ہرایک انسان کی تخلیق میں حق تعالی آبین قدرت کا ملہ سے مٹی شامل فراتے ہیں اسلے ہرایک انسان کی تحلیق میں حق تعالی آبین قدرت کا ملہ سے مٹی شامل فراتے ہیں اسلے ہرایک انسان کی تعلیق میں حق تعالی آبین قدرت کا ملہ سے مٹی شامل فراتے ہیں اسلے ہرایک انسان کی تعلیق میں حق تعالی آبین قدرت کا ملہ سے مٹی شامل فراتے ہیں اسلے ہرایک انسان کی انسان کی اسلام کی میں حق تعالی آبی کی اسلام کی انسان کی حقول سے میں میں سے میں سے میں سے میں اسلام کی کو انسان کی میں میں سے میں سے

تخلیق کو براہ داست مٹی کی طرف منسوب کیا گیا ہے۔

امام قرطبی نے فرمایا کہ الفاظ قران کا ظاہریہ ہے کہ ہرانسان کی تخلیق مٹی سے علی بیل کہ ہر انسان کی تخلیق مٹی سے علی بیل کہ ہو اور حضرت ابوہریرہ رمز کی ایک مدیث اس پر شاہد ہے۔ ہیں دسول انٹر صلے انٹر علیہ وکم کا یہ ادشاد منقول ہے کہ ہر پیدا ہو نیوا لے انسان پر رحم ما در میں اس جگہ کی مٹی کا کچھ جزور ڈالا جاتا ہے ہی حقول ہے کہ ہر پیدا ہو نیوا لے انسان پر رحم ما در میں اس جگہ کی مٹی کا کچھ جزور ڈالا جاتا ہے ہی مقدر ہے۔ یہ حدیث ابو نیجے نے ابن سیری کے مذکرہ میں وات کہ کہ اس میں مقدر ہے۔ یہ حدیث ابو نیجے نے ابن سیری کے مذکرہ میں وہوا حد کرکے فرمایا ہے ابنا حدیث غرب من میں محدود کی دوایت حضرت عبداللہ بن مسعود کے الشقات الاحلام من اہل بصرہ ، اور اسی صفحون کی دوایت حضرت عبداللہ بن مسعود کے ہی منقول ہے اور عطار خواسانی نے فرمایا کہ جب رحم میں فطفہ قرار یا تا ہے توج و فرمشتہ اسکی

كيا- مِنْهَا خَلَقُنكُو وَفِيهَا نَعِيدُ كُو (قطه)

تفسیرظہری میں حصرت عبداللہ بن سعود رہ سے یہ روایت نقل کی ہے کہ رسُول اللہ بھسلاللہ عکیہ مسلول اللہ بھسلاللہ علی اللہ بھر بھر اللہ اللہ بھر اللہ بھر اللہ بھر اللہ اللہ اللہ بھر اللہ اللہ بھر ا

متكانًا شورى، فربون تے حضرت مولى على السلام اورجا دو كروں سے مقابلہ كے لئے یہ خود تجویز کیا کہ ایسے مقام پر ہونا جا ہتے جو آل فرعون اور حصرت موسی و بنی اسرائیل کے لئے مسافت سے اعتبار سے برابر ہو تاکہ سی فریق پر زیادہ دور جانے کی مشقت نہ پرطے جضرت موی علیابسلام نے اسکوتبول کر سے دن اور وقت کی تعیین اس طرح فرمادی صوّعِ کُ کُھُ آ ہُوّم الِدِّينَاتِ وَانْ يَيْحُتَكُرَ التَّاسُّ ضَّحَى ، بعني يه مقابله بوم الزينة مين مونا جاسِيَ مرادعب یاکسی میلے دغیرہ کے اجتماع کا دن ہے۔ آمیں اختلاف ہے کہ وہ کونسا دن تھا؟ بعض نے كہاكم آل فرعون كى كوئى عيدمفرر تقى جبيں وہ زينت كے كيارے بہنكر شہرسے با ہز بكلنے مے عادى عقے، بعض نے کہاکہ وہ نیروز کا دن تھاکسی نے کہاکہ بوم السبت لینی مفت کا دن تھاجس كى يرتوك تعظيم كرتے تھے، بعض نے كهاكه وہ عاشورار نعين محرم كى دسويں تاريخ تھى -ف امدُه الصرت مولى على السلام نے دن اور وقت كى تعيين ميں بڑى حكمت سے كام لياكہ دن اُن كى عيدكا بخور كيا جمين سب حيوث برائ برطيق كي توكون كا جماع ببلے سيتين تفا جسكانيتغبرلازي يبرتفاكه ببراجتماع بهبت برايور يستهرك توكوں يرشتل ہوجائے اور دقت صحی تعنی جاشت کارکھا جو آفتاب کے بلند ہونے کے بعد ہوتا ہے جبیں ایک سلحت تو یہ ہے كرسب توكون كوا بنى ضروريات سے فارغ بوكراس ميدان ميں أنا أسان بور دوسرى صلحت ا یمی ہے کہ بیر وقت روشنی اور فہور کے اعتبارے سارے دن میں بہتر ہے ایسے ہی وقت و ین فجعی اورسکون کے ساتھ اہم کام کئے جاتے ہیں اورا لیے وقت کے اجتماع سے جب توگ

ارف بلقرآن جر ننتشر ہوتے ہیں توبات دُور دُور تک بھیل جاتی ہے جنانجہ اس روز جب حق تعالیٰ نے موی علایسلا كوفرعوني ساحرد ن پرغلبه عطافر ما يا توانيك بى د ن بىن بورسىشېرسى بلكه دُور دُورَ بَكُ كَى شهرت بوگنى . جادد كى حقيقت ادراكى اقسام ادرشرى احكام يضمون يورى تفصيل كرساته سورة بقره باردت ومارت كے قصیمیں معارف القرآن جلدا ول صالاے صلاح سے متاہ كك بيان ہو حيكا ہے وہاں و مكھ ليا جائے۔ لن فِرْعُونُ فِجْمَعَ كَيْنَ لَا ثُمَّ آنَى ﴿ قَالَ لَهُ وَمُّوسَى وَيُكُدُّ محراً لٹا پھرا فرعوں بھرجمع کئے این سادے داؤ، بھرآیا کہا اُن کو موسی نے کم بختی متبادی لاتفْتَرُوْا عَلَى اللَّهِ كَانَ يَا فَيُسْمِ يَكُوْ بِعَنَا إِبَّ وَقَالَ خَابَ الشريد پھرفادت كردے تم كو كسى آفتے اور مراد كونہيں بنيا جس نے جھوٹ باندھا بھر مجھ کردے اینے کام بر آیس میں اور جھپ کر کیا لے مقرب یہ دولوں جادوگر ہیں چاہتے ہیں کہ نکالدیں ہے کو استجادو كورس اورموتون كرادي بهايدا عصفاص جلن كو سومقر كراد اين でかっていてですっころ一個一つかまりつ و نے کہا تومت ڈر- مقرد تونی دے گا غالب

عارف القرآن ج 11 مَ مَا صَنَعُوا السِّمَ اصَنَعُوا كَيْنُ شِحْرٌ وَلَا يَفَلِحُا ر بھل جائے جو کھے اتھوں نے بتایا ا اُن کا بتایا ہوا تو فریسے جادد گر کا، اور کھلا نہیں ہوتا جادد کر کا ني ١٠ قَا لِقِي السَّحَرَةُ سُحِكًا قَالُوْ آمَتَا لِرَبِّ هُولَا بحريكم يرك جادوكر سجده ميں بولے الم يقين لا عارب يد بادون @قال امن تُنْ لَهُ قَيْل آن أَذَن لَكُمْ "انَّهُ بولا فرعون تم نے اس کو مان دیا ہیں نے ابھی حکم نہ دیا تھا وہ ہی بَيْرُكُو الَّذِي عَلَّمَكُو السِّحُرَ ۚ قَلَّو ۚ فَطَعَرَ ۚ آيَـ متہارا بڑا ہے جس نے سکھلایا تم کو جادو سواب میں کٹواوں کا متہادے ارْجُلِكُوْرِينَ خِلَافِ قَالَا وُصَلِبَنَكُو فِي بَالْغَا اورسولی دوں گا تم کو اور دوسری طرف کے یاوں وَلَتَعْنَا مُنْ اللَّهُ الشُّكُّ عَنَا آلِكُ إِلَّا وَ الْعَيْ ﴿ وَلَا يَعْنَى ﴿ وَاللَّهُ مِنْ اللَّهُ اللَّ اور جان او کے ہم میں کس کا غداب تحتیج اور دیرتک رہے والا وه يو لے ايم بحد كو زياده مر تحي على مَا جَاءِ مَا صِنَ الْبِينَاتِ وَالَّذِي فَطَرَ مَا فَا قَضِ مَا س چیزے ہو بہنجی ہم کو صاحت دلیل اور اُس سے س نے ہم کو پیداکیا سوتو کر گزر جو تھے کو قَاضِ إِنَّمَا تَعْضَى هَٰنِ وَالْحَيْوِةَ الدُّنْيَا ﴿ إِنَّا أَمَتَا بِرَبِّنَا رنام توسی کرے گا اس دُنیا کی زندگی میں اخطاراء مآآكم فتناعلته ورزاليسخو والله تاکہ بخشے ہم کو ہما دے گناہ اورجو تونے زبردستی کردایا ہم سے یہ جادکہ ا نَّهُ مَنْ يَآتِ رَبُّهُ عِجْرِمًا قَانَ لَهُ رسدا باتی رہے والا بات ہی ہے کہ جو کوئ آیا ایٹ رب کے باس گنا ہے کر سواسے واسط دونرخ ہے الا يحيى ﴿ وَمَنْ يَالِهِ مُؤْمِنًا قَلَ ا در جو آیا اسکے پاس ایمان کے کر نیکیاں وال اوكوں كے لئے اي Tr.

三三

عادت القرآن ج مئورة طاء ٢٠ يا : ٢٤ بَجْرِي مِنْ تَخْتِهَا الْا تَهْرُخِلِدِ بَنَ فِيهَا وَ ذَلِكَ ان کے نیج سے نہریں، ہمیشہ دیا کریں گے اُن میں US 5%. 17 يدلم 🔑 اسكا جو غرض ليكن كمي فرعون (درياد ساين جكر) توكي بيمراينا مكركا (تعني جا دُوكا) سامان جمع كما شروع كيا بصرد سب كوكيكراس ميدان مين جهال وعده تههرا تقا) آيا داسوقت، مونى علياسلام) ني ان (جادُدُكر) توكون سے قرماياكم ادسيمين ماروا الله تعالى يرجينوط افترا مت كرودكم اسك وجوديا توسيدكا إنكادكرنے لكويا اسكے ظاہر كتے ہے مجزات كوسحر نبلانے لكو يہجى فدا تعالے متم كوسى قىم كى سىزا سے مالكل نیست ونابودی کرف اورچو خبوش با ندصتا ہے وہ دا فرکن ناکام رہتا ہے بس جا دو کر دیہ بات سنکر ال دونوں حضرات کے بارہ میں) باہم اپنی رائے میں اخلات کرنے لکے ۱۱ رخفیر گفتگو کرتے ہے (مالاً خر متفق ہوکر) کہنے گے کہ مبینک یہ دو بوں جا دو گر ہیں ان کا مطلب ہے کہانے جادد (کے زور) سے م کوئتهاری سرزمین سے زکال با سرکری اور تنهارے عدد (مذہبی) طریقیہ کا دفتر ہی اعظادی تواب

ملکراین تدبیر کا تظام کروا ورصفیر آلات کرے (مفاہدین) آؤ اور آج وہی کامیا ہے جو غالب

ہو دمچر، آنھوں نے دموی علیالسلام سے کہاکہ اے موئی دکھتے ، آپ دابیاعصا ، پہلے ڈالینگے یا ہم بیلے ڈالنے والے بیں آپ نے (نہایت بے یروائ سے) فرمایا نہیں تم ہی بیلے ڈالور چنا نج

انهوں نے اپنی رسیال اور لا طحیال ڈالیں اور نظر بندی کردی بس میکا یک اُن کی رسیاں اور لا کھیا اُن کی نظر بندی سے موئی د علیالسلامی کے خیال براہی معلوم ہونے گئیں جیسے رسانیے کی طرح)

جلتی دوڑتی ہوں سوموی رعلیالسلام) کے دل میں تھوڑا ساخو منے جوا دکہ جب دیکھنے میں بے

رسیان ا در لاشیان میمی سانی معلوم بردتی بین اور میراعصا بھی بہت سے بہت سانب بن جادیگا توديكيف دا كتودونون چيزون كوايك بى سائجيس كے توحق و باطل ميں اختياز كس طرح كريكا،

اور میخوت با قصنائے طبع تھا در شرحضرت موسلی علیا بسلام کویقین تھاکہ جب الشرتعالی نے یہ

علم دیا ہے تواسحے تمام نشیب و فراز کا بھی انتظام کر دیکا ادر اپنے مرسل کی کافی مدد کرے گا ادرابيا خومنطبعي جو درجة وسوستي تقاشان كمال كممنافي نهبي الغرض حبب بينوف بهوااسوقت

سمنے کہاکہ تم ڈرونیس تم ہی غالب رہو گے اوراسی صورت یہ ہے کہ) یہ تمہارے داہتے ہا تھ میں جو

سورة كل ١٠٠٠ ٢٠ ٢٠ رعصا، ہے اس کو ڈالدو، ان توکوں نے جو کچھ (سائک، بنایا ہے یہ دعصا) سب کوئیگل جادیگا یہ جو کھر بنایا ہے جا دُوگر وں کاسانگ ہے اورجا دُوگر کہیں جادے (معجزے محمقا بلے میں مبھی) کا میاب نہیں ہوتا د موسیٰ علیالسلام کوتستی ہوگئی کہ اب امتیا زخوبہوسکتا ہے جنا نجیرا نھوں کے عصا ڈالااور دا قعی دہ سب کو بھل گیا) سرجا دوگر دن (نے جو یہ نعل فوق السحد کیما تو سمجھ کیے کہ یہ بیشک معجزہ ہے اور فورا ہی سب میرہ میں گرگئے داور با داز بدن کہا کہ ہم توا یمان سے آئے ہارون اورموی علیبماالسلام سے میرور دگارمیر، فرعون نے رب واقعہ دیکھرجا دو کروں کو جمکایا ا دیا کہا کہ بدون اسکے کہ میں تم کو اجازت دوں ربینی میری خلات مرضی ہم موئی (علیہ سلام) ب ایمان ہے آئے واقعی د معلوم ہوتا ہے کہ ، وہ وسحریں ، تہادے بھی بڑے داور استاذ ، بی کہ اتفوں نے تم کو سح سکھلایا ہے داور اُستاد شاگردوں نے سازش کر کے جنگ زرگری کی ہے تاکہ مکو ریاست حاصل ہوں سو راب حقیقت معلوم ہوئ جاتی ہے) میں تم سب کے ہاتھ باؤں کٹوا آپارو ے طرف کا ہا تھ اور ایک طرف کا یا دُں اور تم سب کو تھجور دل کے درختوں پڑشکو آنا ہوں زماکہ د عجه کرعبرت حاصل کری) اور پیهی تم کومعلوم هوا جا ما ہے کہ ہم دو اوں میں ربینی مجھ میں اور رتب مو میں)کس کا عذاب زیا دہ بخت اور دیریا ہے ان توگوں نے صاف جواب دیدیا کہ ہم مجھ کو کو کھی ترجیح دیں گے بمقابلہ ان دلائل کے جوہم کو ملے ہیں اور بمقابلہ اس ذات کے جس نے ہم کو بیدا کیا ہے جھے کوچو کھ کرنا ہو (دل کھول کارڈال تو بجز اسے کہ اس دنیوی زندگانی میں کچھ کرنے اور کرہی کیاسکتا ہے بسر بهم توایت پرورد گاریرایمان لا چکے تاکہ بهارے (یکھیے) گناه رکل وغیره) معاف کردیں اور تو نے جو جا دونکے مقدمہ میں ہم پر زور ڈالا اسکو بھی معات کردیں اور الشرتعالیٰ (باعتبار ڈات وصفات کے بهی تھے) بدرجها اچھے ہیں اور رباعتیار تواب وعقاب کے بھی) زیادہ بقادا کے ہیں داور کھ کو نرخیر نصیت نه نقا توتیراکیاا نعام حبکا دعده ہم سے کیاتھا اور کیا غذا جس کی اب وعید شناتا ہے اور الله تعالے کے جس ثواب اور عداب کو بقاہے اسکا تا اون یہ ہے کہ ، جوشفس د بغاوت کا ، محب م ہوکم رمینی کافر ہوکر) اینے رب کے پاس حاضر ہوگا سوائس کے لئے دوز خومقرد) ہے اسین مری گا الدرزجة بي كا زرز مرنا توظا مرب اور رز جينا يدكرجين كاآرام رز موكا) اورجوم اس كے يكس مُومن ہوکرحا صر ہوگا جس نے نیک کام مھی کئے ہوں سوایسوں کے لئے بڑے او نیے درجے ہیں تھی ہمیشہ رہنے کے باغات جن کے نیجے نہری جاری ہوں گی وہ ان میں ہمیشہ ہمیشہ کورہیں گے اور جو خص د کفرومعصیت ہے ، یاک ہواس کا بہی انعام ہے (بیس اس قانون مے موافق ہم نے كفركة تبيوركرا بمان اختيار كرليا،

بعادت القرآن جستشم

سورة طلب ١٠٠٠

مكارف ومسايل

نجیمتم کیک ک^و ، فرعون نے اپنے کید تعنی مقابلہ موئی علیالسلام کی تدبیر میں ساحروں اور اُن کے آلات كوجمع كرليا حضرت ابن عياس عاس الادل كى تعداد بيتر منقول ہے اور دوسرے اقوال كى تعدا دیں بہت مختاف ہیں ، چارسو سے لیکر نولا کھ تک انکی تعدا دہتلائ گئی ہے اور یہ سب اپنے ایک رئیں شمعون کے ماتحت اسے حکم میطابق کام کرتے تھے اور کہا جاتا ہے کہ انکارٹیس ایک ندھاآ دی تھا ذہبی بدانتو موئی طلیالسلام کاجادد گروں کو پنیبرانه خطاب ا جا دُوکا مقابله مجزات سے کرنے سے پہلے حضرت موسلی علیال الم نے جا دُدگروں کو ہمدر دانہ نضیحت آمیز جند کلمات کہرکرا مشرکے عذاب سے ڈرایا وہ الفا يه تق وَيْكُونُ مَّفْ تَوْكُوا عَلَى اللهِ كَنِ بِمَا فَيسُحِتَكُمُ بِعَنَ ابِ وَقَالُ خَابَ مَنِ افْ تَرْى الين تهارى إلاكت سامنے آجى ہے، اللہ تعالى برا فترارا در بہتان نہ لگاؤ كہ اسكے ساتھ فدائ ميں فرعون ياكوئ ادر شریب ہے، اگرتم ایسا کردگے تو وہ تم کو عذاب میں میں ڈالیگا ادر متہاری حرا بنیا داکھاڑ دے گا اور جو شخص الشرتعالى بربهتان باندصتاب ده انجام كارناكام اور محروم بوتاب _

ظاہرہے کہ فرعون کی طاغوتی طاقت و قوت اور شم و خدم کے سہارے جولوگ مقابلہ کرنے کے لئے میدان میں آچکے تھے ان واعظانہ کلمات کا اُن پرکوی اثر ہونا بہت ہی بعید تھا گرا نبیا علیم لسلام الدائن كمتبعين كيساته حق كى ايك مخفى طاقت وشوكت بهوتى بدأن كے سادے الفاظ بمي يخت سے سخنت دلوں پر تیرونشتر کا کام کرتے ہیں ۔حضرت موسیٰ علیالسلام کے یہ جملے شن کرسا حروں کی صفول ين ايك زلزله يرط محيا اوراكيس مين اختلات وخف لكاكه يه كلمات كوى جادد كرنوي كهرسكتا يه توالتري کی طرف سے معلوم ہوتے ہیں اس لئے بعض نے کہاکہ ان کا مقابلہ کرنا مناسب نہیں ،ا دربعض اپنی ہا پرجے ہے (فَتَنَازُعُوا اَفْتُهُو بَيْنَاهُو) كا يهى مطلب ہے، پھراس اختلاف كودُود كرنے كے لئے آبس میں سرگوشی اور آہستہ مشورے ہونے لگے (وَ اَسَرُولا النَّجَوٰی) مگر بالآخر مجوعی رائے مقابلہ وَرَيْنَ هَبَا بِطَرِيْقَتِكُمُ الْمُثْلِى ، ليني يه دونوں جادُو كريس اور يه جاست بي كه اينے جا دو كے ورايس تم کولینی فرعون اورآل فرعون کو تمهاری زمین مصرے برکالدیں ،مطلب بیر ہے کہ جا دو کے ذریعیہ تمهارے ملک پراینا قبصد کرنا چاہتے ہیں اور بیک متهاراط بقد جوسے افضل و بہتر براسکومٹاوی مُنتَىٰ، أَمْتَ كَا صِيغِهُ وَنْ بِحِين كَ مِعن افضل واعلى كين، مطلب يه مقاكه بمهادا مذبهب وطريقه كه فرعون كوابنا غدا اورصاحب اغتيار اقتدار مانتة بهويهى سب سي فهل دبهة عدہ حضرت نا فع مدنی محدود کی قرارت میں اِن ھن اُن کسے حیارت منقول ہے ۔ یہ بفا مرع بی زبان کے معرف عامر ہو بی زبان کے معرف فاعدہ کے خلاف ہے محراس کا جواب یہ ہے کہ عرب کے تعیف لغات میں یہ صورت بھی جائز ہے ۔ دنصار انقرابی

معادف القرآن جسكدهم

طرنقیہ ہے یہ لوگ اس کو مِشاکر اپنا دین و مذہب پھیلانا چاہتے ہیں اور نفظ طریقہ کے ایک معنی ہے میں کہ قوم کے سرداد وں اور نمائندہ لوگوں کو اس قوم کا طریقہ کہا جاتا ہے۔ حضرت ابن عباس اور علی مرتفای رہ سے اس جگہ طریقے کی بہی تفسیر سفول ہے کہ یہ لوگ چاہتے ہیں کہ تمہادی قوم کے سردار در اور باعزت لوگوں کو ختم کر دیں ، اسلئے تم لوگوں کو چاہئے کہ مقابلہ کے لئے اپنی پوری تد بیرو تو انائی فشر کرد اور سب جادو گرصف بستہ ہو کہ کیارگی اُن کے مقابلے پر عل کرو (فَا جُومُو اَکُینُ کُونُو اَحْتُو اُنہُو اَحْتُو اَحْتُو اَنہُ کَا ایک فاص اثر ہوتا ہے اس لئے جادو کرد وں نے اپنی صف بندی کرے مقابلہ کیا۔

جادوگردن نے اپنی بے فکری اور بے پر دائی کا مظاہرہ کرنے کے لئے پہلے حضرت ہوئی علیہ اللہ اس کے کہا کہ پہل آپ کرتے ہیں یا ہم کریں بعنی پہلے آپ اپنا عمل کرتے ہیں یا ہم کریں ۔ حضرت ہوئی علیہ اللہ الم فے جواب میں فریایا بحل آ لفقو اللہ اللہ علیہ الدور اپنے جا دو کا کرشہ دکھالا وُ، حضرت موسی علیہ سلام کے اس جواب میں ہہت سی تھیں مضر تھیں۔ اول تو ا دب مجلس کہ حب جا ددگروں نے اپنا یہ حوصلہ دکھلا یاکہ مخالف کو پہلے حملہ کرنے کی اجازت دی تو اسکا مشریفا نہ جواب ہی تھا کہ ان کی اجازت دی تو اسکا مشریفا نہ جواب ہی تھا کہ ان کی طون سے اس سے زیادہ حوصلہ کے ساتھ ان کو ابتدار کرنے کی اجازت دی جائے ۔ دوسرے یہ کہ جا دوگروں کا یہ کہنا اپنے اطمینان اور ہے فکری کا مظاہرہ تھا ۔ حضرت موسی علیہ اسلام نے اُن می کو ایر انزار کرنے کا موقع دیکراپنی اور المینان کا شوت دیدیا ۔ تیسرے یہ کہ حضرت موسی علیہ اسلام کے اُن ایک کو ایر اس سے ایک جا دو کے سب کرشم آجادی اس احتراب کے حضرت موسی علیہ اسلام کے اس اور اور ایک اور احتراب موسی علیہ اسلام کے اس اور اور ایک اور احتراب موسی علیہ اسلام کے اس اور اور ایک اور اور کی تعداد میں تھیں بیک وقت نرمین پر ڈالدیں اور وہ سب کی سب بھا ہر سائی بن کرد در ڈی تی تو در کے میں اور در ڈر تی ہوئی نظر آنے لگیں ۔

سب کی سب بھا ہر سائی بن کرد در ڈر تی ہوئی نظر آنے لگیں ۔

یُخیّن اللهٔ وی آیدون آسی وی آسی اس سے معلوم ہوتا ہے کہ فرعون جادہ گرول کا جادہ آیک می نظر بندی سی جوسم رزم کے ذریعہ بھی ہوجا تی ہے کہ دیجینے والوں کو یہ لا محیاا وررسیا سانب بن کر دوڑتی ہوی دکھائی دینے گئی، وہ حقیقہ سانب نہ بن محین اوراکٹر جا دواسی می مجتے ہیں۔

المی کرخوف طاری ہواجس کو اُنھوں نے اپنے نفس می جھیپائے رکھا دوسروں پر ظاہر بہیں ہونے دیا۔

دیا۔ پنوون اگر موسی طلیالسلام کو اپنی جان کے لئے ہواتو مقتضائے بشریت سے ایسا ہونا ہوت دیا۔

ما حرول کا فلہ محرس کیا گیا توجو مقصد دعوت بنوت کا تھا وہ پُورانہ ہوسے کا اسی لئے اسے سے ایسا کو اسی لئے اسے سا اس کا فلہ کو سی کا اسی لئے اسے سے ایسا کو اسی لئے اسے ساتھا کہ اسی لئے اسے سے ایسا ہونا ہوت سے دیا جو سامنے سے دیا توجو مقصد دعوت بنوت کا تھا وہ پُورانہ ہوسے کا اسی لئے اسے سے ایسا کھا کہ اسی لئے اس

معادف القرآن جسكة 44 : 4. 1 B 015 جواب بين حق تعالىٰ كى طرف سے جوارشاد ہواً اسين بيا طبينان دلاياكيا كه جا دو كر غالب آسكين سے إ إي كوفتح اورغلبه حاصِل بوكا - الكي آيت بي لا يَخْفَ لِ ذَكْ آنْتَ الْآعَظ وَسَرِيا رَاس خطره کورُور کیا گیا ہے ۔ قاً فِينَ مَا فِي يَسِينِينَ ، موسى عليالسلام كو بذريعيه وى خطاب اواكه آيك ما تقويس جوچيزار اُس كوردالدو، مراواس سے مدیلی علیالسلام كى عصائفى مكربياں عصاكا ذكر منبي فرمايا-اشاره اس بات كيطرف تفاكدان كے جادوكى كوئى حقيقت نہيں، إسكى برروا مذكرو اورجو كچھ تھي تمبادے ہاتھيں بو والدو وہ انتے سب سانیوں کو بھل جائے گا چنا نجے الیا ہی ہوا۔ حضرت موسی علیہ نسلام نے اپنی عصاد الد وہ ایک بڑاا روما بن کران سب جادو کے سابنوں کو بھل گیا۔ فرعونی جادد گردن کامسلمان حضرت موسی علیالسلام کی عصافے از دیا بن کرجب اُن سے خیالی ساید موکر سجیده میں بڑجیانا کورنگل لیاتو چونکہ بیرلوگ جا دوکے ماہرین تحقیان کو لیتین ہوگیا کہ کیم جادُوك دربعد بنيس موسحتا بلكريه بلاشهم جزه بيجونان الشرتعالي كى قدرت سے ظاہر بوتا ہے اسلے سجدہ میں گر سکتے اورا علان کر دیا کہ ہم موئی اور ہارون کے رب یا بمان سے آئے۔ بعض روایا صریت يں ہے كه ان جا دوگروں نے مجدہ سے اُسوقت مك سرنہيں اُٹھايا جبتاك كه اُن كوجينت اور دونيخ كامشاہد قدرت نے نہیں کرا دیا درواہ عبد ابن حبید وابن ابی سکا تعریان المن وعی عکومہ - دوج) قَالَ أَمَنْ نَوْ لَكُ قَبُلُ أَنْ أَذَنَ لَكُو ، فرعون كى رُسواى الشرتعالى في استظيم الشان مجمع کے سامنے واضح کردی تو بوکھلاکرا ول توساح در کو یہ کہنے لگاکہ بغیرمیری اجازت سے تم کیسے اِن ير ايمان لائے ۔ كويا توگوں كويہ تبلانا مقاكرميرى اجازت كے بغيران جا دوگر دں كاكوى فول فعل معتبر انہیں میگر ظاہر ہے کہ اس کھکے ہوئے مجزہ کے بعد کسی کی اجازت کی صرورت کسی عاقل انسان کے نزديك كوى حيثيت منين ركفتي اس كفاب جادوكرون براس سازش كاالزام لكاياكه ابمعليم ہواکہ تم سب ہوئی سے شاکر دہوا می جا دو گرنے تہیں جادو سکھایا ہے اور تم نے سازش کرے اس کے سامنے اپنی ہار مان لی ہے۔ فَلَا تَقَطِّعَنَّ آيني بَكُو وَ ٱرْجُلكُورُ مِنْ خِلَا بِنَاب جادُور رون كوسخت سزاس ڈرایاکہ جمادے یا تھ یاؤں کا تے جائی گےجس کی صورت یہ ہوگی کہ داہنا یا تھ کے گا توبایاں یاؤں كانما جاك كا- بيصورت يا تواسلة تجويز كى كه فرعوني فانون مين سنرا كايبي طريقيه رائج بهد كايا اسلة كه اس صورت بين انسان ايك عبرت كانمون بخامًا ب وَ لَا و صِلْبَنْكُورُ فِي جُنُ وَعِ النَّكُولِ یعنی ہاتھ یاؤں کاش کرمھے۔ تشین مجورے درختوں پرسولی دیجا دیگی کہتم آن پراسی طسرح سے دہو گے بہانتک کہ مجھوک اور یاس سے مرجاؤ۔ قا اُوا اَکُنْ مَنُوْرُو اَلَا عَلَىٰ مَاجَا اَ مَنَا مِنَ الْبَيْنِيْتِ قَالَاَيْ فَاکُونَا اَنْ مَا وَرَكُون نَهِ وَاللهِ اللهِ اللهُ ا

أس بي جان جم يركرا-فرعوني جادد كرون ين عجيب نقلاب إن من يَاني دَبّه عُنِهِ مَا الى ذَيك جَزَوُا مَنْ تَزَكَىٰ

كلى توككم دياكدايك برات بيمركي جِنان أشاكراسك أوبر والدو-آسير في جب يه ديكها تو اسمان كيطرن

نظراتهائ ادمان سفريان وق تعالى في تخصرا سحاً ديركرن سيهاسى روح تبعن كرلى بهريتهم

سوره ظلم ۲:۲۰

يه كلمات اور حقائق جنكا تعلق خالص اسلامي عقائدا ورعالم آخرت سے ہے ان جا دو كروں كى زبان سے اوا مورب يرب جواجعي ابحى مسلمان فين إوراسلامى عقائدوا عال كى كوئ تعليم أن كوى منبير، يرسب خفرت موی علیانسلام کی مجت کی برکت اور اُک کے افلاص کا اثر تھاکہ حق تعالیٰ نے اُن پر دین کے تمام حقائق آن کی آن میں ایسے کھولد کیے کوان سے مقابلے میں مذابی جان کی پردادی شرسی بڑی سے بڑی سنرا اورّ تکلیت کاخوت رہا، گویاا بمان کیساتھ ساتھ ہی ان کو دلایت کا بھی وہ مقام حاصِل ہوگیا جو دوسرون كوعمر بهرك مجابدون دياضتون سيجى عاصل مدناشك ب فتلبرك الله الله أحسن الخليقين حضرت عبدالترابن عباس ادر مبيدين عميرة نے فرماياكة فدرت حق كايركر شمة كيوك ير اوك مشروع دن يس كفار جادو كر عق اورآخرون اولياء الله اورشهدا رر (اب كتاب

وَلَقَنَ أَوْحَبَيْنَآ إِلَى مُوسَى لَمْ آنَ ٱسْرِيعِيَادِي فَا خَبِرِبُ لہ نے بھل میرے بندوں کو دات سے يرخطره كرا يحرشفكا ادريز در ادرمیری بری بخشش ہے اس پرجو توہر کرے اور ا



ثملاصتر تفسير

ادر د جب قرعون اس پرهمی ایمان نه لایا اور ایک عرصهٔ مک مختلف معاملات و دا قعات اوتے اے اسوقت اہم نے مولی (علیالسلام) سے باس وی جیجی کہمادے (ان) بندوں کو رہینی بنى كسرائيل كومصري راتون دات ربابر، العجادُ داور دُور يط جادُ تاكه فرعون مخطلم دائد سے ان کو نجات ہو) پھر (داہ میں جو دریا ملے گاتو) ان کے لئے دریا میں (عصاماد کر) خشک استہ بنادينا دبيني عصامان اكراس سے خشك داسترين جا ديكا) مذتوتم كوكسى كے تعاقبكا اندليته بوگا رکیونکه اہلِ تعاقب کا میاب نہ ہو بھے گو تعاقب کریں) اور نہ اور کسی تسم کا دمثلاً غرق وغیرہ کا) نوف ہوگا دہلدامن واطمینان سے یا دہوجا دھے۔جنانجیموسی علیالسلام موافق محم کے انکوشیاشب ا بنال لے محمد اور مسم مصر میں خبر شہور ہوئ) پس فرعون اپنے سے دل کوئیکر ان کے پیجھے بلا الا اور سبني أسسراتيل موافق وعدة اللهيدس درياس يا ديو كن ادر منوز وه درياى راست السيطرح يى مالت ير عقم جيها دوسرى آيت ميس م وَا تُوَكِ الْبَحْوَرَهُوَّا إِنَّا مُحْتَدُنَّ مُّنْوَدُّونَ وَمُونِيو نے جلدی میں مجھ آگا ہی پھیاسو چانہیں، ان رستوں پر ہولئے، جب سب اندر آھئے) تو راس وقت چاروں طوف سے دریا دکایاتی سمٹ کر) ان پرجیسا ملنے کو تھ آ طلاا درسب غرق ہوکررہ کئے ا در فرعون نے اپنی قوم کوئیری راه پر لگایا اور نیک راه اُن کونه بتلای رجسکااسکو دعویٰ تف صَا اَهْلِيْ يَكُولِ لِآسِينِ لَ الرَّشَادِ، اوريُرى داه بونا ظا برب كد ونيا كابھى ضرد بواكرسب بلاك موت اور آخرت كا بهي، كيو كرجينم ميس كن جيك رايت مين وأد علوا ال فرقون الشَّدَّ العناب ميم بنى أسرائيل كوفر عون سے تعاقب اور غرق دريا سے نجات سے بعد اور متيں عنايت موئي شلاعطائے توراۃ اورمن وساؤی ،ان ممتوں کوعطاکرے ہم نے بنی اسرائیل سے فرمایاکہ) اسے بتی اسرائیل دد مجھوں ہمنے دیم کوکسی کسی فعمیں دیں کہ)تم کو تنہارے دا لیے بڑے) دشمن سے نجات دی اور یم نے تم سے لینی تہارے بغیرے تمہارے نفع کے داسطے کوہ طوری دائنی جانب آ نیکا (اوروہاں آنیکے بعدتوراہ دیئے كا) دعدة كيناور (دادى تيرير) مم نے تم يرمق وسلوى نا زل فرمايا (اورا جازت دى كر) مينے جو تفيس چیزیں دسترعاً بھی کہ حلال ہیں اور طبعاً بھی کہ لذیذیں ، تم کو دی ہیں ان کو کھا دُاوراس دکھانے ، یں حدد شرعی سے مت گزرد دمثلاً یہ کرام سے حاصل کیا جادے ، کذا فی الدریا کھا کرمنصیت

17

کی جادے کہیں میرا غصنب تمپر واقع ہوجائے ، اور جب نفس پر میرا غضب واقع ہوتا ہے وہ بالکال گیا گزرا ہواا در دنیز اُسکے ساتھ یہ بھی ہے کہ) میں ایسے توگوں کے لئے بڑا بخشنے والا بھی ہوں جو رکفر و مصیت تو بہ کریں اورا یان ہے اُویں او ذبیک عل کریں بھر داسی راہ) پر قائم (بھی) رہیں رہینی ایمان وعل صالح پر معاومت کریں میضمون ہم نے بنی اسرائیل سے کہا تھا کہ مذکبر نسمت اورا مر بالشکرد نبئ فی انہوں اور وعدر وعید بیرخود بھی دینی فعمت ہے۔

معارف ومسائل

قرآ و تحقیق کی کر توردی اور بین امرائیل حضرت موسی و با دون علیمهاالسلام می قیادت میں جمع ہوگئے تواب فرعون کی کمر توردی اور بین امرائیل حضرت موسی و بارون علیمهاالسلام می قیادت میں جمع ہوگئے تواب اُن کو بیہاں سے ہجرت کا بحتم بلتا ہے ۔ اور چونکہ فرعون کے تعاقب اور آگے دریا کے داستہ میں حائل ہونے کا خطرہ سامنے تھااس لئے دونوں چیزوں سے حضرت موسی علیالسلام کومطمئن کردیا گیا کہ دریا پر اپنی لاٹھی مادیں کے تو درمیان سے خشک راستے نیک آئیں گے اور تو تھے سے فرعون کے تعاقب خطرہ پر اپنی لاٹھی مادیں کے تو درمیان سے خشک راستے نیک آئیں گئے اور تو تھے سے فرعون کے تعاقب خطرہ نہ رہے گا جسکا تفضیلی داقعہ حدیث الفتون کے تحت میں اسی شورہ میں گر رجیکا ہے۔
حضرت موسی علیالسلام نے دریا پر لاٹھی مادی تو اسمیں بادہ سرکیں اس طرح بن کئیں کہ بانی کے تو دے بر شبحہ کی طرح دونوں طرف بہا ڈکی برا ہر کھڑے دہے اور درمیان سے داستے خشک میکل

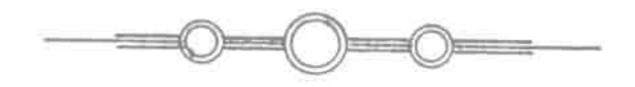
کے تودے بحر بنجد کی طرح دویوں طوف پہاڈ کی برا ہر کھڑے دہ اور درمیان سے داست خفک بنگی اسے جو یہ اسے جیساکہ سورہ شعراد میں ہے فیکان کئی فرن فی کالقلو فی العقلیم ، اور درمیان میں جو یہ یانی کی دیواریں ان بارہ مرط کوں کے درمیان تعیں اُن کو فدرت نے ایسا بنا دیا کہ ایس سرط کہ سے گزرنے والے دومرے تقے ادر باہم بابتی بھی کرنے تھے تاکہ ان کے دلوں میں یہ فوف وہراس بھی خدر ہے کہ الے دومرے قبیلو کا کیا حال ہواد وہا مصرے تعلقے کے دقت بنی مسرائیل کے دلوں میں یہ فوف وہراس بھی خدر ہے کہ بالے دومرے قبیلو کا کیا حال ہواد وہا مصرے تعلقے کے دقت بنی مسرائیل کے دلوں میں یہ فوف وہراس بھی خدر نے المعانی میں یہ دوایت ہے کہ حضرت مصرے تعلقے کے دقت بنی مسرائیل کے نظام کی تعدا دا ورتشکر فرعون کی تعدا د اورت کی تعدا دا ورتشکر فرعون کی تعدا د اورت کیا ہے۔ بنی اسرائیل نے اس سے پہلے شہر کے کوگوں میں میشہرت دیدی تھی کہ جماری طیف سے کی مرحات میں ہے اس کے تعدا دورت ہوائیل کی تعدا دائیو ہوئیل کی تعدا دائیو ہوائیل کی تعدا دائیو ہوئیل کے دورت کے بھر اسرائیل دوراس بہانے سے تبطی ہوئیل کی تعدا دائیو ہوئیل کے تعدا کہ میں مہالغہ ہوئیل کی تعدا دائیوں ہوئیل کی تعدا دائیوں ہوئیل ہوئیل کی تعدا دائیوں ہوئیل کی تعدا دائیوں ہوئیل کے تعدال کی تعدا دائیوں ہوئیل کی تعدا دائیوں ہوئیل کے دورت کے بھر کوئیل ہوئیل کی تعدا دائیوں ہوئیل کے دورت کے دورت کے دورت کے دورت ہوئیل کی تعدا دائیوں ہوئیل کی تعدا دائیوں ہوئیل کی تعدا دائیوں ہوئیل کی ہوئیل کی تعدا دائیوں ہوئیل کے دورت کے دورت کے دورت کے دورت ہوئیل کی تعدا دائیوں کی دورت ہوئیل کی تعدا دائیوں کی دورت ہوئیل کی دورت کے دورت کے دورت کے دورت ہوئیل کی دورت ہوئیل کے دورت ہوئیل کی دورت کے دورت کے دورت کے دورت کے دورت کے دورت کے دورت کی دورت ہوئیل کی دورت کے دورت کے دورت کے دورت کے دورت کے دورت کے دورت کی دورت کے دورت کے دورت کے دورت کی دورت کے دورت کی دورت کے دورت کی دورت کے دورت کے دورت کی دورت کے دورت کے دورت کی دور

14

قبيلے سے اور ہرقبيلے كى بہت بڑى تعداد تقى _ يرسى قدرت من تعالے كا يك عظيم مشا ہره نهاكه

جب پرحضرات یوسف طلیالسّلام کے زمانے میں مصراً نے تو بارہ بھائی تھے ،اب بارہ بھائیوں کے باره تبیاول کی اتنی عظیم الشان تعدا د مصرف کلی جوچه لاکه سے زائد تبلای جاتی ہے - فرعون کو جس ان كے بركل جانے كى اطلاع بلى توابنى فوجيں جمع كين جنيں ستر مبزارسياه كھوڑ ہے تھے اورك كر كے مقدم میں سات لاکھ سوار تھے۔جب بیچھے سے اس فوجی ساب کو اور آگے دریائے قلزم کو بنی کسرائیل نے ديكها توكيراً على الدموشى عليالسلام سے فريادى إناكمان دكون ،كم تو يكو الناكي - موسلى علىيالسلام في كلى دى كريات مَيى رَيِّ سَيَهُد يِن مَرَد سَاكُوم برارت ما تقدميرارت، وه مجهدراسة دیگا، پیر مجلم دبانی دریا برلائھی مادی اور اسیں بارہ سوکیں خشک مجل آئیں۔ بنی اسرائیل سے بارہ تبيلے اُن سے تزر کئے جبوقت فرعون اوراُسکا سے رہیاں بہنچاتوں کے فرعون بیرست انگیز منظر د ميكه كريم كمياكدان كے لئے دريا ميں كس طرح راستے بن كئے مكر فرعون نے اُن كوكها كر بيرسب كرشمكم میری ہیبت کا ہے جس سے دریاکی رواعی ڈک کرداستے بن گئے ہیں یہ کہ کر فوراً اسے بڑھ کر این تُقوِّرا دريا كے اس راسته ميں ڈالديا اورسب نشكر كو چيجے آئيكا حكم ديا۔ جس روست فسرعون مع ا سے تمام کشکر کے ان دریائ راستوں کے اندرسما چکے اُسی وقت حق تعالیٰ نے دریا کوروانی کاعم ويديا اور دريا كے سب حصر بل كئے فَعَيْنيك مُورِقِنَ الْيَوِيمَا عَنشِيكُورُ كايمي عاصل م وق المكا وَوْعَنْ نَكُوْجَانِبَ الطَّوْرِ الْهِ يُمِّنَ ، فرعون سے نجات اور دریاسے یار ہونے کے بعد التذرِّعاليٰ نے حضرت موسیٰ علیالسلام سے اور اُن کے داسطے سے تمام بنی اسرائیل سے یہ وعدہ فرمایا كه وه كوه طوركي دا پني جانب چلے آئيں تاكہ حضرت موسىٰ عليه السلام كو تو رات عطاكي جائے اور بني كراكي خود میں ان کے شرف ہم کلامی کا مشاہرہ کرلیں -

وَنَوْ آنَ عَلَيْكُو الْمَنْ وَالْمَنْ وَالْمَنْ وَالْمَنْ وَالْمَالُونَى ، يه وافقه أسوقت كا ہے جب بنی اسرائیل عبور دریا کے بعد آگے برط ہے اور ایک عقدس شہر میں داخل ہونیکا ان کو حکم ملا ۔ انفوں نے فلاف ورزی کی، اسکی پرسنزا دی گئی کہ اسی وا دی پر جس کو وا دئ تیر کہتے ہیں قید کرد نے گئے ۔ بہاں سے جالیں سال کی برکت سے آن پراس قید کے زمانے کے باہر نہ نوکل سکے ۔ اس منزا کے با وجود حضرت موسی علیات لام کی برکت سے آن پراس قید کے زمانے میں جس کے واج و تے ہے اور خود حضرت موسی میں سے می والوی کا انعام تھا جو ایکی غذا کیلئے دیا جا آنھا۔



شور و اطليم ٢٠ : ٩٩ 1900 عَن قَوْمِكَ لِيمُوسَمِ اوریس جاری آیا شری طرف اعمیرے رب تاکہ توراضی ہو، فرمایا ہم نے تو اور بہکایا آن کو سامری نے السفاة قال يقوم بن قوم کے یاس غصر میں بھرا بیتا یا ہوا ليا طويل ووكني تم ير لئے تعلاقت کیا تم لے میرا دمدہ یو ہے ہم نے خلاف نہیں کیا تیرا دعدہ ایت اختیارے ولیکن اُٹھوایا ہم سے بھادی ہو جھ ى إِينَةِ الْقُوْمِ فَقَانَ فَنَهَا فَكُنْ لِكَ ٱلْقَيَ الْسَامِرِيُّ الْ قوم فرعون کے نہ یور کا سویم نے اسکو پھینکدیا، پھر اس طرح ڈسمالا سامری نے خَرَجَ لَهُ عِلَا حَسَلًا لَهُ خُوارُفَقًا لُوْاهِنَ آلِالْهُكُورُ مجرينا بكالاا تك واسط ايك جهرا ايك وهر جيس أواز كائے كى ، بھر كہتے كے يرمبود ب تها دا وَ الْهُ مُوسَى م فَلَسِي ﴿ أَفَلَ يَرُونَ أَلَّهُ يَرُجُحُ الَّيْهِمُ ادر عبود ب مولی کا سوده بیکول کیا بعلاید لوگ بنین دیکھتے کہ: دہ جواب تک بنین دیا ان کو قَوْلُولُمْ قَلَ يَمْلِكُ لَهُمْ وَمُولًا قَلَ لَهُمْ الْمَالَةُ لَا نَفْعًا فَي مسى بات كا اوراختيار بنين ركفتا أن كے بڑے كا اور نہ بھلے كا

1 1 1

19: 4: 15 / 18P

معارف القرآن جسلدهم

فاصرتفسير

ا در (جب الشرتعالي كو توراة دينامنطور جوا تومولي عليالسلام كوكوه طوريرا نيكا محم فرمايا اور قوم كومين يعيى بعضون كوسائقة أبيكا يحكم بهوا ذكذا في فتح المتّان عن الباب التّاسع عشر من سفرالحن رج موی علیاسلام شوق میں سب سے آھے تہا جا پہنچا در دوسرے لوگ ا بنی جگہرہ کئے طور کا ارادہ بی شہیں کیا ، اللہ تعالی نے موئی علیالسلام سے پُوچھاکہ) اے موئی ، آپ کو اپنی توم سے آگے عبلدی آ میکاکیا سبب ہوا ، اُنھوں نے را ہے گمان مے موافق عرض کیا کہ وہ توگ مہی تو ہیں میرے ہیجھے ہیجھے (ارب ہیں) اور میں دسب سے پہلے) آپ کے یاس ربعنی اُس جگہ جہاں مکا لمت و مخاطبت کا آیے ومدفوایل جلدی سے اس لئے چلاآیا کہ آئے (زیادہ) خوش ہونگے رکیونکہ انشال امرسی میشقدمی کرنا زیادہ موجب خوشنودی کام، ارشاد ہواکہ تہاری قوم کو توہم نے عہادے (علے آنے ہے) بعدایک بلایس بشلاكردیا اودان كوسامرى في تمراه كرديا (جسكابيان آك آنام فَأَخْنَجَ لَهُمُ عِجْلًا الح اورفتنايس أى ا تبلار کو الله تعالی نے اپنی طرف منسوب اس لئے کیا کہ خالتی ہونعل کا دہی ہے در مذا صل نسبت اس فعلى سامرى كى طوف ہے جس كو اَحْدَ آهمُ السّاعِيَّ بين ظاہر فرمايا ہے ، غرض موى دعليات لام بعدانقضائے میعادی غصر اور رنج میں بھرے ہوئے اپنی قوم کیطرف والیس آئے (اور) فرمانے لگے لہ اے میری قوم کیاتم سے تمہارے رب نے ایک اچھا (اور سیحا) وعدہ نہیں کیا تھا (کہ ہم تمکو ایک تناب احکام کی دیں گے تواس کناب کا توتم کوانتظار داجب تھا) کیاتم پر رمیعاد مقرر سے بہت ، زیادہ زبانہ گزرگیا تھا دکہ اس کے طنے سے ناامیدی ہوگئی اسلے اپنی طرف سے ایک عبادت ایجاد کرلی) با د با وجود تا اُمیری شن و نے کے انم کو پیسنظور مواکرتم برئتهادے دب كاغضب داقع برواس كئے تم نے مجھے جو وعدہ كما تقادكة آپ كى واپسى تك كوئ نياكا أركيكم اوراً بيك ناتب بإرون عليالسلام كى الماعت كريكي أكے خلاف كيا وہ كہنے لگے كہم نے جوا يسے دمدہ كيا تقااسكوابين اختيارت خلات نهيل كيا (يميني نهي كركسي في أن سے زبر دستى يونول كراليا بكيه مطلب یہ ہے کہ جس رائے کوہم نے ابتدار جبکہ خالی الذہن تھے اختیار کرلیا تھا، اس کے خلاف سامری کا فعل بھارے گئے منشا ً اشتباہ بن گیا جس سے ہم نے وہ رائے سابق لینی توحید ا ختیار نه کی بلکه رائے بدل گئی گراسپرہی عمل اختیار ہی سے پیوا جنانچہ آئندہ کہا گیا) دین قوم د قبط) کے زبورسی سے بمیر بوجھ لدرہا تفاسوہم نے اسکو (سامری کے کہنے سے آگ میں) والديا بهراسي طرح سامري في رجي يا ساته كاذبور) والديا وأسكم الترتعالي قصته كي یجیل اس طرح فرماتے ہیں، بھراس دسامری نے ان لوگوں سے لئے ایک بجیمڑا دنیاکر) ظاہر

٢

(IMM)

سُورة طالم ٢٠ : ٩٩

معادت القرآن حب لدهم

کیاکہ وہ ایک قالب رفالی از کمالات) تھاجیں ایک (ہے معنی) آواز تھی سورا کی نسبت دہ تی گرف رایک دوسرے سے) کہنے گئے کہ تہاراا در بوئی کا بھی معبود تو یہ ہے دائی عبادت کرو) موئی تو بھول گئے کہ مگور پر فعرا کی طلب ہیں گئے ہیں جق تعالیٰ ان کی احمقالہ جسارت پر فراتے ہیں کہ کیا وہ لوگ آنا بھی نہیں و پیکھتے تھے کہ وہ (بواسطہ یا بلا واسطہ) نہ توان کی کسی بات کا جواب دے کہ کتا ہے اور شائ کے کسی ضرر یا نقع پر قدرت رکھتا ہے رایساناکارہ فدا کیا ہوگا اور اللہ حق بواسطہ انبیاء کے خطاب کلام ضروری فرماتا ہے)۔

معارف ومسائل

جب حضرت موئی علیدالتلام اور بنی اسرائیل فرعون کے تعاقب اور دریاسے نجات یا نے سے بعدا محيره مع توان كالزرايك من برست قوم يرجوا وران كى عبادت ويرسس كو ديكه كري امرئيل كہنے لگے كہ من طرح أنفوں نے موجو دا در محسوس جیز دں بعنی مبتوں كوا بنا الحا جنا ركھا ہے ہما دے لئے بھی کوئی ایساہی معبود بنا دیجئے ۔حضرت موسیٰ علیالسلام نے اُن کے احمقانہ سوال سےجواب میں بتلا ما كمتم براے جاہل ہو بیرثت برست لوگ توسب ہلاک ہونے والے ہی ا در ان كاطريقه باطل بح إِنَّكُوفَوْمٌ جَهُ أَوْنَ إِنَّ هَوْ كُلِومُنَا بَرْمَنَا هُمُ فِينِهِ وَلِيطِكُ مَّا كَانُوْ أَيَعُمَكُونَ الوقت مَن تعالى نه مولی علیبرانسلام سے بیر و عده فرمایا کدا بنی قوم کیسا تھ کوه طور پر آجائیے تو ہم آپ کو اپنی کتاب تورات عطاكرين كے جو آيجے اور آپ كى قوم كے لئے دستورالهل ہوگا مگرعطار تورات سے پہلے آپ تیں روز اور تمیں رات کا مسلسل روزہ رکھیں بھراسکے بعداس میعادمیں دس کااوراضافہ کرکے چاليس روز كردينے كئے اور حضرت مولى علياسلام سے اپنی قدم كے كو و طور كی طرت روانہ ہو گئے -حضرت مولی علیات لام کواس وعدة زبایی کی وجهسے شوق بھرطک اُٹھا اوراینی توم کو فیصیت كرك آ مح علے كئے كہم مجھى ميرے يتھے آنيا دُا مِن آ كے جارعبادت روزہ وغيرہ ميں شغول ہوتا ہوں جبی میحاد مجھے تیں روز تبلائ گئی ہے ، میری غیبت میں ہارون علیا اسلام میرے نائب ادر قائم مقام ہو بنگے۔ بنی اسرائیل مع ہارون علیالسلام کے اپنی رفتار سے سیھیے طلتے رہے اور حصرت ہوئی ملیالسلام جلدی کرے آھے بڑھ گئے اورخیال یہ تھاکہ قوم کے لوگ بھی تھے ہتھے کوہ طور کے قریب تیں تھے محروبان ده سامری کا فنته گوساله پرستی کابیش آگیا۔ بنی اسرائیل سے تین فرقے ہوکرا ختلاف میں مبتلا ہو گئے اور حضرت موسی علیالسلام کے سجھے سجھے سنجنے کا معاملہ اُلگا۔

حضرت وی علیالسلام جب حاضر بوت توحق تعالی نے یہ خطاب فرمایا دَمَا اَنْجَاكَ عَیْ قوم کے یاموسی ، بینی اے موسی آپ اپنی قوم سے آ کے جلدی کرکے کیوں آگئے ۔

14

منے تعل اور بوجھ کے بیں انسان کے گناہ بھی چو تکہ قیامت کے روزاس پر بوجھ بکرلادے جائیگے

اس لئے گناہ کو وزر اور گناہوں کوا وزاد کہا جاتا ہے ۔ زینۃ القوم ، لفظ زینت سے مُراد زیور ہے اللہ

قرم سے مراد قوم فرعون (قبط) ہے بین سے بی اسرائیل نے عید کا بہا نہ کرکے کچھ زیورات مستمار

لے لئے تقے اور وہ پھراُن کے ساتھ رہے ۔ اُن کواوزار کھنی گنا ہوں کا بوجھ اس لئے کہا کہ عادیت

کانام کرکے ان ہوگوں سے لئے تھے جسکاحق یہ تھاکہ اُن کو واپس کئے جادیں ہوئی دواپس بھے کہا کہ عادیت

گانام کرکے ان ہوگوں سے لئے تھے جسکاحق یہ تھاکہ اُن کو واپس کئے جادیں ہوئی ہوائی سے اُس سے تو مفصل صریف اُدیز نقل کی گئی ہے اُس سے معلوم ہوتا ہے کہ حضرت ہارون علیہ السلام نے ان ہوگوں کو اُس کے گناہ ہونے پرمتنہ کیا اور

ایک کراھے میں یہ سب نہ پورات ڈالدینے کا حکم دیا ۔ بعض دوایات میں ہے کہ سامری نے

ایک کراھے میں یہ سب نہ پورات ڈالدینے کا حکم دیا ۔ بعض دوایات میں ہے کہ سامری نے

ایک کراھے میں یہ سب نہ پورات ڈالدینے کا حکم دیا ۔ بعض دوایات میں ہے کہ سامری نے

ایک کراھے میں اسکے کہنے سے گڑھے میں ڈالے گئے ۔

ایک مطلب زیکا لئے کے لئے ان کو کہا کہ یہ ٹر پورات دو سروں کا مال ہے تمہادے لئے کس کا

دیکا دیال ہے اسکے کہنے سے گڑھے میں ڈالے گئے ۔

کقاد کا مال مسلمان کیلئے | پہاں پر سوال پیدا ہوتا ہے کہ کفا رجوا ہل ذمہ تینی مسلمانوں کی حکومت محس صورتمیں صلال ہے | بیس ان کے قانون کی پابندی کر کے بستے ہیں اسی طرح وہ کفار جن سے

سلمان کاکوی معاہدہ جان دمال دغیرہ کے امن کا ہوجائے ان کا فردن کا مال تو ظاہرہ کے مسلمان کے لئے صلال بنیں کیلن جو کا فریز مسلمان کا اہل ذخہ ہے مذائس سے الکاکوی عہد اللہ معاہدہ ہے جہ ہوں کو فقہا میں اصطلاح میں کا فرحری کہاجاتا ہے ان کے اموال توسلمان کے لئے مسلما واللہ میں پھر ہادون علیاسلام نے ان کو وزر دگان کیے قشراد دیا اور ان کے قیمت ہے کا کر شھمیں ڈالنے کا حکم کیوں دیا ۔ اسکا ایک جواب تومشہور ہے جوعامہ مفسرین نے لکھا ہے کہ کفارح بی کا مال لینا اگر جبسلمان کے لئے جا کر ہے گروہ مال کیم کیوں دیا ۔ اسکا ایک جواب تومشہور ہے جوعامہ مفسرین نے لکھا ہے کہ کفارح بی کا مال لینا اگر جبسلمان کے لئے جا کر ہے گروہ مال کیم کیوں دیا ۔ اسکا ایک جواب تومشہور ہے مال فیجہت ہے اور مال فیجہت کا قانون ہشرایی اسلام سے پہلے یہ تھا کہ کا فردن کے قبضہ سے نوکال لینا تو اسکا جائز تھا گرسلما فون کے لئے اسکا استعمال اور اس سے نفع اُٹھا ما ملال منہیں تھا کہ مال فینیت ترج کرکے کسی ٹیلہ وغیرہ پر دائمد یا جانا تھا اور آسمانی آگ (بجلی وغیرہ) کراسکو وہ ملا مت اس جہاد قبول ہوئی تھی اور جب مال فینیت کو اسمانی آگ دیا ہے باس نہ جانا۔ وسول الشرصلے کی کو سے دیس جو محضوص دیا تیس اور ہوئی ہیں اس کی تصریح ہے کہ مال فینیت کو مسلم اور سے لئے صلال کر دیا گیا جبساکہ صحیح سلم کی صوریت میں اس کی تصریح ہے۔

اس قاعدہ کے اعتباد سے بنی اسرائیل کے تبضہ میں آیا ہوا مال جو توم فرعون سے لیا

سُورهُ ظار ۲۰ : ۹۹ ماد ف القرآن جر تقامال فنيمت بى كے محم ميں قراد ديا جائے شب بھي أن كااستعال ان كے لئے جائر تہيں تقااسي دج ے اس مال کو او زمار کے نفظ سے تعبیر کیا گیا اور حضرت ہارون کے حکم سے اسکوایک گراھے میٹ الدیا گیا۔ فائده مهمسه الميك نفتى نظرے اس معامله كى جو تحقيق امام مجيزة كى كتاب سيراد داسكى سترح سخرى بير بان ى تى بى دە بىبت اېم اوراقرب الى الصواب سے۔ دە يەسىكە كافرىرى كامال بىيى بىرسالىيى مال نعیمت نہیں ہوتا بلکہ اسمی مشرطیہ ہے کہ باقاعدہ جہاد و قتال کے ذریعہ بر درشمشیران ۔عال كياجائے اسى كئے مشرح سيرس مغالب بالمحارب مشرط قرار ديا ہے اور كافر حربي كاجو مال مغالب اور محاربه کی صورت سے حاصل مذہووہ مال فلیم ت تہیں بلکہ اس کو مال فینی کہتے ہیں سر اس کے علال ہونے میں ان کقار کی رصنار وا جازت سرط ہے جیسے کوئ اسلامی حکومت ان بر نیس عائد کردے اور وہ اس پر راصنی ہوکہ ٹیکس دیدے تو اگرجہ یہ کوئ جہا دو تال نہیں مررضامندی سے دیا ہوامال مال فین سے حکم میں ہے ادر وہ مجھی حلال ہے ۔ يهال توم فرعون سے لئے ہوئے زيورات ان دونوں مرد سي داخل بہيں كيونك باكن سے عادیت کہہ کر لئے گئے تھے وہ ان کو مالکانہ طور پر فینے کے لئے رصامند مہ تھے کہ اس کوال فيى كها جائے اور كوى جهاد دقتال تو د بان بوابى منبي كرمال فينيت شماركيا جائے اسكے تراحية اسلام كى أد سے يمى يە مال ان كے لئے علال ندىقا۔ واتعه جرت مين رسول الشرصال الشرعكية لم تحب مرية طيب حائم ں عرب مے کفار کی بہت ک امانتیں رکھی تھیں کیونکہ سالاعرب آپ کوا مانتدار تھین کرتا اور امین کے نفظ سے خطاب کرتا تھا تؤرسول انشرصلی الشرعکی کے اُن کی ا ما ننوں کو دا بس کرنے کا اتناا ہتمام فرمایا کہ حصرت علی کرم التر وجہہ سے شیر دکر کے اپنے پیچھے ان کوچھوڑاا ورحکم دیا کہ حس جس کی امانت ہے اُس کو واپس کردی جائے آپ اس سے فادع ہو کر ہجرت کریں ۔اس مال کو وسول الشرصل الشرعكية لم في ما ل قليت محتت علال قرادتهي ديا ودن وه سلما لذل كاحق و كافردن كووايس كرف كاكوى سوال يي تبين تقا۔ والشراعلم فَقَانَ فَنْهَا ، ليني م في ان زيورات كويمينك دياء صريث فنون مركوره كى رو س يدعل حضرت بارون عليهالسلام مح حكم س كياكيا اور بعض روايات يس ب كرسامرى في انكو بهركاكرز بيدات كراه ين ولوادية اوردونون بالتي جمع موجائي يرهي كوى مستبعد منهي -عَكَنْ لِكَ أَلْفَى السَّامِرِيُّ ، عديث فتون مذكورس حضرت عبدالله بن عباس كا وال سے معلوم ہوتا ہے کہ حضرت ما رون علیالسلام نے جب بنی اسرائیل کے سب زیورات گڑھے ہیں دلوادي امين الك جلوادي كرسب زيورات كيل كركيجم بدجائي بصرحضرت موني اليلا)

عارف القرآن جسلة كة نے كے بعدا سكا معاملہ طے كيا جا دي كاكركيا كيا جائے ۔جب سب توك اپنے اپنے زيورات اسمين وال بيح توسامري مجي تمي بندكئم وتر بهنجاا درحصرت باردن عليالتلام سي كهاكموس میں ڈالدوں حضرت ہارون علیالسلام نے پیمجھاکداس کے ہاتھ میں بھی کوئ زیور ہوگا، فرمایا كر ڈالدو۔ اُسوقت سامرى نے ہارون عليالسلام سے كہاكەمبى جب ڈالونگاكداك بير دُھاكرى له جو کھی میں چاہتا ہوں وہ بورا ہوجائے۔ ہارون علیہ السلام کواسکا نفاق و کفر معلوم نہیں تھا دُعاكردى -ابجواس في النيخ بالتقت والاتوزيور كے بجائے متى تقى جس كواس في جبركي اسين ك كهواله المح قدم كے نيجے سے كہيں بيرت الكيزوا قعد د كي كواٹھاليا تھاكة م جكماس كا قدم پڑتا ہے وہیں ٹی میں نشو و نمااور آثار جیات بیدا ہوجاتے ہیں جس سے اُس نے بھاکداس ٹی میں آ تارحیات دکھے ہوئے ہیں،شیطان نے اس کواس برآمادہ کردیاکہ بیراس کے ذرابیدایک بھیڑا زندہ کرے دکھلادے۔ بہرحال اس می کا ذاتی اثر ہویا حضرت ہارون علیالسلام کی دُعام کا کہ بیسونے چاندی کا پکھلا ہوا ذخیرہ اس مٹی کے ڈالنے اور مارون علیالتلام کی دُعام کرنے کے ساتھ ایک زندہ بھڑا بن کر ہولئے لگا جن روایات میں ہے کہ سامری ہی نے بنی کے سرائیل کو زيورات اس كراه سيس والف كامشوره ديا تفاان مين يهي بهكدأس في زيورات كو تجهلاكرايك بجیوا ہے کی مورت تیاد کر لی تھی مگرا میں کوئ زندگی نہیں تنی ۔ بھریہ جبرتیل امین سے نشان قدم کی مٹی ڈالنے سے بعداسیں حیات پیدا ہوگئی زیدسب دوایات تفسیر قرطبی وغیرہ میں مذکودیں لی د دایات ہیں جن برا عماد نہیں کیاجا سختا مگرا نکوغلط کہنے کی بھی کوئی دلسیل موجود نہیں) فَاخْرَجَ لَهُ وَعِيْلًا جَسَلًا لَهُ حُوارً ، ليني بكال لياسامرى نے ان زيورات ایک بھیڑے کا جسم جبیں گا مے کی آواز د بھواری تھی۔ نفظ جسدا سے تعیض حضرات مفسرین نے فرمایاکه پیمحض ایک جسدا در تیم تھا زندگی اسمیں نہیں تھی ا در آدا زبھی ایک نھاض صفت کے سبب اس نے کلتی تھی، عامتہ مفسر من کا قول دہی ہے جواد پر لکھا گیا کہ اسمیں آثار زندگی کے تھے۔ فَقَالُوْ الهٰنَ ٱللهُ عَكُورُ وَإِلَّهُ مُوْسَى فَنْسِنَى ، لِينى سامرى اورا سيح ساتقى يرتجه يرا بدينے والاد يكور دوسرے بن كسرائيل سے كہنے لكے كريبى تتھاراا ور وى كا خداس موى عدارسام معول مشک کرمیں اور جلے گئے۔ یہا تک بنی اسرایل سے عذرانگ کا بیان تھا جو انفوں نے حضرت موسى على السلام تع عناب مع وقت بيش كيااس كعبد أ فَلَا يُوَقَى ٱلله يَرْجِعُمُ إِلَيْهِمْ قَوْلُ الله وَلا يَمْلِكُ لَهُمْ حَمَّ إِوَلا نَفْعًا مِن ان كَى حاقت اور كمراي كوبيان فرمايا بِ كماتر یہ فی الواقع ایک بچھڑا زندہ ہی ہوگیا اور گائے کی طرح بولنے بھی لگا توعقل وشمنو یہ توسمجھو کہ فلائ كالسكيا واسطه ب جبكه نه ده تمهارىكى بان كاجواب د كستما ب يمتهي كوى

ᅼ

متورة ظلم ٢٠ ٢٠ ضع یانقتسان پہنچاسکتا ہے تواس کوخدامانے کی حافت کاکیا جوازے۔ وَ لَقَانَ قَالَ لَهُمْ هُرُونَ مِنْ قَيْلُ يُقَوْمِ إِنَّكَ اهْتَنْتُونِهِ عِ ور کہا تھا اُن کو بارون نے پہلے سے اے قوم بات ہی ہے کہ تم بہک کئے اس کھڑے تَ رَتَكُمُ الرَّحُمْنُ فَا يَبْعُورُنَ وَ سوميري راه چيو اور مانو بات لَنْ تَبْرَحَ عَلَيْهِ عَكِفِيْنَ حَتَّىٰ يَرْجِعَ ے ہم برابر اس بر کتے بیٹے دہیں گے جب تک کوٹ کر آئے ہمادے یاس ٥٠٠ قَالَ يَهْرُونَ مَا مَنْعَكَ إِذْرَانِتَهُمْ صَلَّهُمْ لها موسی نے اے ہارون مس چیزنے روکا بھو کوجب دیکھاتھا تونے کہ دہ بہا کئے ومیرے پیچھے مذآیا کیا تونے زد کیا میرا تھم ده بولا الصميرى مال كے حف مر ي میری دادعی اور نه کے کا پھوٹ ڈالدی تینے بی اسرائیل میں ادریاد نه رکھی میری بات ادران توگوں سے ہارون (علیالتلام) نے رحضرت مؤی علیاللام کے لوشنے سے) سلے مجى كہا تھاكہ اے ميرى قوم تم اس دكوسالہ) سے سبب كمراہى ميں تھين گئے ہو دلينى كسس كى پرستشکسی طرح درست نہیں ہو تھی گھواہی ہے) اور متہار ارب دعنیقی) رحمان ہے دینکہ یہ دسالہ) سوئم (دین کے بالے میں) میری راہ پر جلوادر (اس باب میں) میراکہنا مالؤ رایسی ميرے تول دفعل كى اقتداكرو) انفوں نے جواب دياكہ ہم توجب تك موسى دعليه السلام) دایس د بوکر) آین اُسی دی عبادت، پربرابرجے بیٹے رہی کے دغرض بارون علیالسلام كاكهنا نهيس ماناتها يهانتك كدموسى عليالسلام سجى آكت اور قوم سه ادل خطاب كياجو أويراجيكا بعداس کے ہارون علیالسلام کی طرت متوجہ ہوئے اور) کہا اسے ہارون جب تم فے راتکو) دیکھا 9×: ×. 10000

معادف القرآن جسندهم

معارف ومسائل

بن اسرائیل میں گوسالہ بہتی کافتنہ بھوٹ پڑا تو حضرت ہا دون عدیاسلام فے مولی علایہ اللہ کی خلافت اور نیابت کاحق اوا کرے توم کو مجھایا گرجسیا کہ بہتے بیان ہو چکا ہے اُن میں بین فرقے ہوئے ایک فرقہ تو حضرت ہا دون کے ساتھ رہا اُن کی اطاعت کی اُس نے گوسالہ پرستی کو گرای بھا اُن کی تعدا دہارہ ہزار تبلائ گئی ہے ، کدا فی القرطبی ۔ باقی دو فرقے گوسالہ پرستی میں تو شریب ہوگئے فرق اتنا رہا کہ ان دونوں میں سے ایک فرقے نے بیدا قراد کیا کہ موسی علیا لسلام وابس آگراس سے من کریں گے توہم کو سالہ پرستی کو چھوڑ دیں گے ۔ دوسرا فرقہ اتنا پختہ تھا کہ اسکا لیمین بی تھا کہ مولی علیا لسلام ہی وابس آگراس سے علیا لسلام ہی وابس آگراسی کو معبود رہا لیں گے اور میں اس طریقے کو بہر حال چھڑ را نہیں ہے ۔ جب لن دونوں فرقوں کا یہ جا ب حضرت ہا دون نے شناکہ ہم تو مولی علیا لسلام کی وابسی ہی گوسالہ ہی عبالت پر جے دیگر توصرت ہا دون علیالسلام این ہم عقیرہ بارہ ہزاد ساتھیوں کو کیکرائن سے الگ تو ہوگئے گر

IMI

بعادت القرآن جسكتشتم

شورهٔ لانم ۲۰ ۱۳۰

حضرت مولی علیالسلام نے دالیں آکراول توبی اسرائیل کو دہ خطاب کیا جو بچھپی آیتوں میں بیا مجواب خصرت مولی علیالسلام کی طوف متوجم وکران پریخت غصتہ اور نادا ضی کا اظہاد کیا اُن کی داڑھی اور سرکے بال بکو لئے اور فرمایا کہ جب ان بنی سرائیل کو آپ نے دیکھ لیا کھ کھی گیا اُن کی داڑھی اور سرکے بال بکو لئے اور فرمایا کہ جب ان بنی سرائیل کو آپ نے دیکھ لیا کھی کھی گھراہی مینی سنرکھ کھراہ ہوگئے تو تم نے میراا تباع کیوں نہ کیا ، میرے شکم کی فلات ورزی کیوں نہ کیا ، میرے شکم کی فلات ورزی کیوں کی ۔

مَا مَنْعَكَ إِذْ رَآيْتَهُمُ مُنْكُولًا آلَا تَتَبِعُنِ واس جَدُمُونَى عليه السلام كايه الراف ویمصین میراا تباع کرنے سے سے چیز نے روکا ، اس اتباع کاایک فہوم تو دہی ہے جو فلا صر تفسیر میں اختیاد کیا کیا کہ اتباع سے مراد مولی علیا اسلام کے پاس طور پر جلاجانا ہے اور بعض مفترین نے اتباع کی مرادیہ مسرار دی کہ جب یہ لوگ گراہ ہوگئے تو آپ نے ان کا مقابلہ کیوں نرکیا کیو تکرمیری وجودگی مين ايسا موتاتوين يقيناً اس شرك كفريرقائم ريف والون عجهادا ورمقاتله كرما تمضايساكيون نركيا -دوان صورتوں میں حضرت موسی علیاسلام کی طرت سے ہارون علیاسلام پرالزام یہ تھا کا اسی عمرای كى صورت ميں يا توان سے مقاتله اورجها دكياجاتا يا پھران سے برارت اور هليحد كى اختيار كركے يے ياس آجاتے، أن مح ساتھ رہتے ہے رہنا حضرت مؤی عليالسلام سے نزديا ان كى خطاا در علطى تھى۔ خضرت ہارون علیالتلام نے اس معالے کے باوجود ادب کی پوری رعایت کے ساتھ مولی علیالسلام كونزم كرف مے لئے خطاب يكا شِنتوم كالفاظ كاليني بيرى مال كے بيٹياس خطاب بي ايك عن اشارة خى كامعامله مذكر فى كل طوت تفاكه مين آپ كابھائى ہى تو ہوں كوئ نخالف تونہيں اسلئے آپ میراً عذر شنیں۔ پھر عذریہ بیان کیا کہ مجھے خطرہ یہ پیدا ہو گیا کہ اگر میں نے ان توگوں سے مقابلہ اور مقاتبہ كرنے يرائيك آنے سے پہلے اقدام كياياً الكو حيور كرخود ماره ہزار بن اسرائيل كے ساتھ آئے ياس علاكما، تو بنى كسرائيل من تفرقه بيدا موجأيكا ورأب نے جو جلتے و قدت مجھے يہ ہدايت فرمائ كه أَخْلَفُني في تَوْقِي وَأَصْلِحُ مِين اس اصلاح كامقتصاير مجها تقاكدان مين تفرقد نديدا بونے دوں و مكن وكدا كے والبن آنے کے بعد بیسب ہی مجھ جائیں اورایمان و توحید پر والیں آجائیں) اور دوسری جگہ قران کیم ين بارون عليالسلام ك عدرس يرقول من سهكر إنّ القَوْعَ اسْتَضْعَفَوْ فِي وَكَا دُوْا يَفْتَكُونَني لعني قوم بنی اسرائیل نے مجھے ضعیف و کمزور تھے اکیو مکہ میرے ساتھی دوسروں سے مقابلہ میں بہت کم مقاسلة قريب تهاكدوه مجهة قتل كردالة _

فلاصد مند کا پر ہے کہ میں اُن کی گراہی کا ساتھی نہیں نفا جننا بجھانا اور ہدایت پر رکھنا ہیر پس میں تفاوہ میں نے قوراکیا اُن نوگوں نے میری بات نہ مانی اور میرے قتل کرنے ہوگئے ایسی صورت میں اُن سے مقاتلہ کرتا یا اُن کوجھو کرکرا تھے باس جانیکا اوا دہ کرتا تو عرف یہ بادہ ہزاد

سورة دالم ١٠٠٠ م عادت القرآن جس لاشتم بنى كسسرائيل ميرب سائقة وحقي باقى سب مقاتله اود مقابله يراتجات ادربا بمي معركه كرم وجلماءمين نے اس سے بچینے کے ایک کی والیسی تک کے لئے کچھ مساہلت کی صورت اختیار کی حضرت موئی عديدسلام نے بيمقدرستا تو بارون عديدسلام كوچھورديا اوراصل بانئ فسادسامرى كى خبرلى قراك میں بہر کہیں مذکور منہیں کہ حضرت موسی علیدالسلام نے بارون علیدالسلام کی دائے کو سیح مان لیہ يامحص أن كى خطار اجتهادى بحد كرچيورديا-دو پیغیبروں میں اختلات رائے | اس واقعہ میں حضرت مؤلی علیالسلام کی رائے ازرقے اجتہاد ادردونون طرف صواب محربيها يتقى كداس حالت مين باردن عليالسلام اوراك ما تيون كواس مشرك قوم كے سائھ نہيں دہنا چاہئے تھا ان كو حيوثر كر مؤلى عليالسلام كے ياس آجاتے جس سے اُن مے عل سے تھل بیزادی کا اظہار موجا آیا۔ حضرت بإرون عليدالسلام كى دا سے ازر د سے اجتها ديكھى كداكرانياكياكيا توجميت كے لئے بنی اسرائیل مے مکومے ہوجائیں کے اور تفرقہ قائم ہوجائے گا اور چونکہ اُن کی اصلاح کا بیر ا خمّال موجود تھا كرحضرت موسى علىيالسلام كى واپسى كے بعد اُن كے اثر سے بھريدسب ايان اور توحيد كى طرف أوط أؤين اس لئے كچھ دانوں كے لئے أن كے ساتھ مسابلت اور مساكنت كو أنكى اصلاح كى توقع تك كواد الياجائے۔ دونوں كامقصد الله تعالى كے احكام كى تعميل، ايمان و توحيد يرلوكونكوقائم كرناتها مكراكيب في مفارقت اورمقاطعه كواسى تدبير تحيا، دوسرے نے اصلاح حال كى أميدتك أن كے ساتھ مسابلت اور نرمى كے معاملہ كواس مقصد سے لئے ثافع بمجھا۔ دو بؤل جانبين ابل عقل دفهم اور فكرو نظر سمے لئے محل غور وفكر ہيں يسى كو خطاكہنا اسان منہيں جنہدين اُمت كے اجتہادى اختلافات عموماً اسى طرح كے ہوتے بين انبيكى كو كنا بيكاريا بافوان بين كها كا ر باحضرت مولى عليالسلام كا بارون عليالسلام مع بال بيرط في كامعامله تويد وين محمعاملهي الترتعالي ك الترشدت وغضب اثرتها كتحقيق حال سي يهلي انهون نع يارون عليالسلام كو ایک واصنح غلطی پر مجھااور جب ان کاعذر معلیم پر کیا تو مھرا ہے گئے اور اُن کے لئے دُعا رمغفرت - 613 قَالَ فَمَا خَطْيُكَ يُسَامِرِيُ ﴿ قَالَ بَصُرْتُ عَالَمْ يَنْجُرُوا كما موى نے اب شرى كيا حقيقت ہے اسے سامرى ، ولا ميس نے ديكھ ليا جواورول نے نہ ويكھا يه فَقَيْضَتُ قَيْضَةً مِنْ آثْرِالرَّسُولِ فَنَبَنْ ثُهَا وَكُنْ لِكَ

17

م ہمر بھرلی میں نے ایک مشی پاؤں کے پہلے سے اس کھیج ہوئے کے بھری نے دہی ڈالدی اور ہی صلاح

9A: P. - 1500 سَوَّلَتَ رَلَى نَفْسِى ﴿ قَالَ قَاذَهُ مِنْ فَإِنَّ لَكَ فِالْ لَحَيْوَةِ دی جھ کو میرے بی نے کہ سوی نے دور ہد تیرے کے زندگی بھرتو اتن سزاہے أَنْ تَغُولَ لَرْمِسَاسَ صُورِاتَ لَكَ مَوْعِنًا لَنْ تُخْلَفَهُ مت چیرو اور تیرے واسطایک وعدہ ہے وہ ہر کرنے تھے خلاف نہوگا انظر إلى الهك الآن علن عليه عاكِقًا النُحرِ قَتَهُ اور دیکھ اپنے معبور کو جس پرتمام دن تو معتکف رہتا تھا ہم اس کو جلاری کے ثُمَّ لَنَانِسِفَتَهُ فِي الْبَيِّرِ نَسْفًا ١٠٠ إِنَّهَ ۖ [اللَّهُ كُوُّ اللَّهُ الَّذِي كُلَّ بحر بجھیر دیں گے دریا میں اُڑاکہ مہارامبور تو وہی اللہ ہے حس سے سواکسی الكرار هو وسع كال شي عِعليا ١ کی بندگی بنیں سب چیز سماعتی ہے اس سے علم میں فالمترامير د پھرسامری کی طرف متوجہ ہوئے اور اس سے کہاکہ اے سامری تیراکیا معاملہ ہے دیعنی تو نے پہ حرکت کیوں کی اس نے کہا کہ مجھ کوالیسی چیز نظر آئ تھی جوا در دل کو نظر سے آئی تھی دلینی مصرت جرئيل عليه السلام كهوالم برج شع وئے جس روز درياسے بار أتر بي جو بمبعلا نصرت مومنین و اہلاک تقادے آئے ہوں گے اور تایخ طری میں سدی سے بن نقل کیا ہے کہ حضرت جرئيل موسى عليالسلام كے ياس يتكم كيكر كھوڑے يرسوار وكرائے تھے كراپ طور وير جادیں تواسوقت سامری نے دیکھا تھا) پھرمیں نے اس فرستادہ دفدا دندی کی سواری کے نقش قدم سے آیک شیمی (بھرکرفاک) آتھالی تھی دادرخود بخود میرے قلب میں یہ بات آئ کہاس میں زندگی کے اٹرات ہو بھے جس چیزیر ڈالی جائے گی اُسیس زندگی پیدا ہوجائے گی سوسیں نے وہ شمی دفاک اس بھرے کے قالب سے اندر) ڈالدی ا درمیر ہے جی کو سے بات ربھائ ادر) پسندائ آی آپ نے فرمایا تو بس تیرے گئاس (دنیوی) زندگی میں بیسزا (بخویز کی گئی) ہے كرتويه كہتا بھرنگاكر مجھ كوكوئ ہائقدند لكانا اور نيرے لئے داس سزاكے علاده) ايك درومار رحق نعانی سے عذاب کا) ہے جو تجھ سے شلنے دالانہیں ربینی آخرت میں جداعذاب ہوگا) اور تواپی اس مبود در باطل) کو دیموس د کی عبادت پر توجا بدابیماتها (دیمیم) مم اسکوجلادیگے مجراس دی داکھ) کو دریامیں بھیرکر بہادیں کے دیاکہ نام دنشان اسکامذرہے) بس تھا

14

عقی معدد توصرف الشرہے سی محسواکوئ عبادت کے لائق نہیں دہ واپنے)علم سے تمام بَصْرُتُ بِمَالَمْ يَبْضُرُوا بِهِ، رئيني ده چيز ديسي جو دوسرون نيهين يكي) اس سے مرا دجر سی امین میں ادر اُن سے دیکھنے سے واقعہ میں ایک روایت تو بیر ہے کہ حب قت حضرت موی علیاسلام کے اعجازے دریائے قلزم میں خشک داستے بن گئے ادر بنی اسرائیل ان اسو سے گرز کے اور فرعونی الے رور یامیں داخل ہور ہا تھا توجیر سیل امین گھوڑ ہے برسوار بہا موجود عقے دوسری دوایت یہ ہے کہ دریا سے یار ہونے سے بعدحضرت موسی علیالسلام کو طور پر ا نے کی دعوت دینے سے سے جبرئیل امین تھوڑے برسوار تشریف لائے تھے اسکوسامری نے دیجے لیا دوسرے توگوں کومعلوم نہ ہوسکا اسکی وجہ حضرت ابن عباس رم کی ایک روایت میں یہ ہے کہ سامری کی پر درش خود جبر سیل امین ہے ذریعہ ہوئی تھی جبو قت اسکی مال نے اسکو غارمیں ڈالدیا تھا توجبرئیل امین روزانداسکوغذا دینے کے لئے آتے تھے اس کی دجہ سے وہ آن سے مانوس تھااور بہجانتا تھا دومر ہے لوگ نہیں بہجان سکے اربیان القرآن) فَقَبَصَنْتُ قَبَضَةً مِنْ أَنْ الرَّالا سُولِ ، رسُول سے مُراداس عِكَهْ فرستادهُ فداوندی حضرت جبرتیل امین ہیں۔ سامری سے دل میں شیطان نے پیر بات ڈالی کہ جبرتیل امین سے تھوڑتے کا قدم جس جگہ پڑتا ہے وہاں کی مٹی میں حیات وزندگی کے خاص اثرات ہوں کے يمثى أتفالى جاوے اس نے نشان قدم كى منى أتفالى - يم بات حضرت ابن عباس كى دوات

فقیضت قبضہ بین اور سامری کے دل میں شیطان نے یہ بات ڈائی کہ جرس این کے حضرت جرسی امین ہیں۔ سامری کے دل میں شیطان نے یہ بات ڈائی کہ جرسی این کے محقورے کا قدم جس جگہ بڑ تا ہے وہاں کی مٹی میں حیات وزندگی کے فاص اثرات ہوں کے یہ مٹی اُٹھائی جاوے اس نے نشان قدم کی مٹی اُٹھائی ۔ یہ بات حضرت ابن عباس کی دفایت میں ہے القی فی دوعہ انت کا بلقیہ اعلیٰ شبی فیکھوُل کن کذاالاکے ان ابعیٰ سامری کے دل میں خود بخو دیہ بات بیدا ہوئ کہ نشان قدم کی اس مٹی کوجس جیزیر ڈال کر یہ کہا جا کے گاکہ افلار چیزین جاتو وہ وہ ہی چیز بن جائیگی ۔ اور بعض حضرات نے فرما یا کہ سامری نے گھوڑ ہے کے فشا فرم کا یہ اثر مشاہدہ کیا کہ جس جیز بن جائیگی ۔ اور بعض حضرات نے فرما یا کہ سامری نے گھوڑ ہے کے فشا فرم کا یہ اثر مشاہدہ کیا کہ جس جیز بن جائی گورہ میں آئی وجی اس جی اللا کا کہا کہ اس مٹی میں آئی وجی اس جی الموری نے میں میں میں اور جہور مفتر بن سے مقول کہا ہے اور اسیں آئیک ظاہر پرست توگوں نے جوشبہا ت نا بعین اور جہور مفتر بن سے مقول کہا ہے اور اسیں آئیک ظاہر پرست توگوں نے جوشبہا ت بی اب ایس میں ان سب کا جواب و یا ہے جنوا گا اللہ خیرال جزاء دیکی الفالین)

پھرجب بن کہ رائیل سے جمع کئے زیودات سے اس نے ایک بچھڑے کی ہیئت بنالی تو اپنے گمان سے مطابق کہ اس مٹی میں آٹا دِ حیات ہیں جس چیز میں ڈالی جائے گی اسمیں زنر آئی پرا ہوجائے گی اس نے بیمٹی اُس بچھڑے سے اندر ڈالدی بقد رتِ فدا و ندی اُسمیں حیات سے ا تنادى بدا جوك اور دى تى تكا - اور حديث متون جو پېلىمقىتل آچى ہے اسى يہ ہے كہ اسے حفرت اون عليات ام سے دُعاكرائ كريں اچنے ہا تہر ميں جو كچھ ہے اسى و ڈات اموں شرط يہ ہے كہ آپ يہ دُعارَ كرديں كرديں كرديں كويں اپنا اون اين اون اسكے نفاق اور گوسالا پرستى سے دُہا من مُعاكردي كويں چاہتا ہوں وہ موجاد ہے -حضرت ہا رون اسكے نفاق اور گوسالا پرستى سے دُہا من مُعاكردى اور اُسى و ماك نشان قدم كى اسيس ڈالدى تو حضرت ہا دون كى دُعاسے اسين من خيات آثار بديا ہوگئے . ايك اين اين حوالہ يہ بين كھا جا چكا ہوكم سامرى فادس يا مندوت كا باشنده ميات آثار بديا ہوگئے . ايك ايت حوالہ يو بين كھا جا كا باشنده اُس توم كا فرد تھا جو گائے كى پرستش كرتى ہے ، مصر بہنچكر حضرت موسى عليا لسلام برايمان ہے آيا بعد اُس توم كا فرد تھا جو گائے كى پرستش كرتى ہے ، مصر بہنچكر حضرت موسى عليا لسلام برايمان ہے آيا بعد اُس توم كا فرد تھا جو گائے كى پرستش كرتى ہے ، مصر بہنچكر حضرت موسى عليا لسلام برايمان ہے آيا بعد ميں چھر مرتد ہوگيا يا بيہا ہى ايمان كا فہار ايمان كا فائد ديا ہے يا دريا ہے يا دريا ہے اور موسى ا

کوئ کاف کاف با انحیادی آئ تفوی کر کرمساس ، حضرت مولی علیالسلام نے مامری کے اسے دنیا کی زندگی میں بیسزا تجویزی کرسب دیگ اس سے مقاطعہ کریں کوئ اس کے پاس جائے اور آندگی بھراسی طرح بوحتی جابوروں کی طرح سب اور اسکوھی بیٹم دیا کہ سنی بوہا تھ نہ لکانے اور آندگی بھراسی طرح بوحتی جابوروں کی طرح سب الگ دہرے الگ دہرے ۔ بیسٹرا ہو سکتا ہے کہ ایک قانون کی صورت میں ہوجوں کی با بندی امپراور دوسرے الگ دہری اسپری اسرائیل پر منجا نب مولی علیالسلام الازم کردی گئی ہو اور بیھی مکن ہے کہ قانونی بھو نہ وہ کی سنراسے آگے نو داکی ذات میں بقدرت خوا وندی کوئ ایسی بات بیراکردی گئی ہوکہ نہ وہ دوسرون کو جیون سلیالسلام کی الک جو کی دوسراالکو جیون سلیالسلام کی الک ہوگا دے ہو دونوں کو بخا دی چھو جاتا ہوگا ہو تا ہو دونوں کو بخا دی چھو جاتا ہوگا ہو تا ہو دونوں کو بخا دی چھو جاتا ہوگا ہو تا تو دونوں کو بخا دی چھو جاتا ہوگا ہو تا تو دونوں کو بخا دی کو ترب ہا تا دیجھ تا تو دورے پیٹار تا خفا اگر بیستا سی بعنی کوئی مجھے نہ چھوے ۔ تو دونوں کو بخا دی کو ترب آتا و دیجھ تا تو دورے پیٹار تا خفا اگر بیستا سی بعنی کوئی مجھے نہ چھوے ۔ مسامری کی سزایس ایک بطیف اور دوران کو بات کی دورے دی سامری کی سزایس ایک بطیف اور دوران کی خورت مولی علیالسلام نے سامری کوئ تا رک کی دوران کوئی تو دوران کو دورے دی کوئی کی دورے دی سامری کوئی کوئی کا دیا دالوں کی خوران کی دورے دی کی مدین کرنے کی دورے دی سامری کوئی کوئی کا دیا دالوں کی خورت مولی علیالسلام نے سامری کوئی کوئی کوئی کی دورے دی ال

سورة طالم ۲۰ : ١١١ ذرة ذرة كرديا جا ويكاركما في الدرالمنثور) ياكسى حيارًا كسيريد سے جلا ديا جا ويكاركما في مع المعاني اوريهي كوى امرستيعانهي كداحواق اورجلانا بطورخرق عادت ومعجزه مودا مشراعكم وبيان القران) إلى تَفْصُّ عَلِيْكَ مِنْ آنْبَاءً مَا قَلْ سَبَقَ ۚ وَقَلَ التَّيْنَاكَ اوریم نے دی کھ يُوں مُناتے ہيں آم بھو كوان كے الوال جو پہلے گرا چكے لل تا ذكر اله من آغرض عنه فاتك يحد جو کوئ من پھیراے اس سے سووہ اُٹھا نے گا ال خلوين فيه وساء كهم يومرا سدادیس کے اسمیں اور بڑا ہے اُن بر قیامت میں م يَنْ مُ يُنْفَحُ فِي الصَّوْرِ وَنَحْشَرُ الْمُجْرِمِينَ يُوهِ جدن میونکیں کے صور میں اور گھرلائیں گے ہم گنا ہگادوں کو اسدن بيكي كية بونكاليسي م نبين ال يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ الْمِثَالُهُمْ نوب معلوم ہے جو بھر کہتے ہیں جب بولے کا ان میں اچھی داہ روش والا اور بخص بوجھتے ہیں بہاڑوں کا حال سوتو کہدا امدن سيحيد دورس كي بكارنے دائے كي شرهي نہيں جي كي ب جائیں گی آوازی رہمن کے ڈر سے مجمر تو نہ شے گا نِ لِرَّ مَنْ فَعُمُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ اسدن کام شرائیگی سفادش سگر جی کو اجازت دی بي

3(800

سؤرهٔ ظلم ۲۰: اور پیند کی اُس کی بات وہ جاتا ہے جو کھے ہے ان کے آگے ورية قايومين نبين لا سيحة اسكودريافت كريم اور دروط تعبين منهد اس الله استدرين ور حراب مواحس نے بوجھ ا تھا یا ظلم کا اور جو کوی کرے کھ بھلائیاں ور وہ ایمان بھی دکھتا ہوسواسکوڈرنہیں ہے انصافی کااورنہ نقصا چیجے کا ادراسی طرح آیاراہم نے رور پھر کھیر کر ستای اسیس ڈرانے کی باتیں ڈالے ان کے دل میں سوی سومباند درجرانشر کا اس سیح اور تو جلدی شرکر قرآن کے پنے س بادشاهكا اور کیم اے دب زیادہ کر میری سمجھ ربطِ آيات مشورة الملهمين اصل بئيان توحيد، رسالت ا درآخرت محاصُّولي مسائِل كاب انبيارهيهم لسلاه العوا تعات اسى ملىدى بيان ويئ ا درحضرت ويلى علايسلام كا قصة رش تفصيل سے ذكر موابيد اور اكس سے تمن میں رسالتِ محدید کا اثبات بھی ہے اسی اثباتِ رسالتِ محدید کا بیرحصہ ہے جوا گلی آیات میں بیان ہوا ہے کہ ان واقعات وقصص کا ظہار ایک بنی اتمی کی زبان سے خود دلیل ممالت و نبوت اور وی اللی کی ہے اور ان سب کا سرحیثمہ قرآن ہے اور حقیقتِ قرآن کے ذیل میں الم تفصيل معاد وأخرت كى مجى آگئى- بيد دجس طرح بم فيموسى علياسلام كاقصه بيان كيا) سی طرح ہم آپ سے اور واقعات گزشتہ کی خبری راور حکایتیں) بھی بیان کرتے دہتے ہیں دنا وت کے دلائل میں زیادتی ہوتی جل جائے) اور سی نے آیہ کو اپنے یاس سے ایک نصیحت:

وارت القرآن جسلا دیا ہے دلعنی قرآن حس میں وہ خبری ہیں اور وہ خود بھی استقلالاً بوجدا ہے اعجاز کے دلیل نبوت ادرده تشیحت ناملیا ہے کہ) جو لوگ اس (محمضامین ماننے) سے دوکردانی کری کے سوده قیامت کے روز بڑا بھاری بوجھ (عذاب کا) لا دے ہونگے (اور) وہ اس (عذاب) میں ہمینے رہیں گے اور بد بوجھ قیامت کے روزان کے لئے بڑا (بوجھ) ہوگا جس روز صنور میں میکھونک ماری جاویگی رجی سے مرف زندہ ہوجادیں گے) اور ہم اس روز مجم رئینی کافر) توگوں کو رمسیان قیامت میں) اس حالت سے جمع کریں ہے کہ د نہایت برصورت ہو بگے کہ آ مکھوں سے) کرنے مو بكر دجوا مكعول كايترين دنك شمار موتا بها ورخوفز ده اسقدر م ديك كدى يحييت أبس مي باتیں کرتے ہوئے داور ایک دوسرے سے کہتے ہوئے کہتم لوگ دقبروں میں) صرف دس دوز رسيمونك مطلب بيركهم تويون مجه تص كم كركي زنده مونا نبي بركان توبالك غلط لبكا نذونده موناتو درکناریمی تونم اکه دیری میں زنده موتے بلکر میت ہی جلدی زنده موتے کہ وه مدت دس دوز کے برابر معلوم ہوتی ہے دجہ اس مقدار کے برابر معلوم ہونے کی کس روز کی درازی اور بول اور پریشانی ہے کر قبر میں رہنے کی مذت اس کے سامنے اسقدر کم معلق کی جی تعالیٰ فراتے ہیں کہ انسی (مدت) کی نسبت وہ بات چیت کریں گے اسکوم خوب جانتے ہیں دکہ وہ کسفا جيدان سيمين كازياده صائب الزائدي ل كتا بركاك كتابي تم توايك بى دور وقبرس المهام اداسكوصائب الرائ اسلتے فرماياكہ يوم كے اول اور دول كے اعتبار سے يبى نسبت اقراب كي i سخف کو حقیقت شدت کا زیادہ ا دراک ہوااسکے استخص کی رائے پہلے تنحف کے اعتبا سے بہتر ہے اور پیقصود نہیں کہ استخص کی بات بالکا صحع ہے کیونکہ ظاہر ہے کہ دونوں مقدار اصلى تخديد كما عتبارس صحيح نهبي اور ندان قألمين كاليقصود تفا) اور دا سيني كلى الترعليه وملم قیامت کا حال سکر بعضے اوک آپ سے پہاڑوں کی نسبت پوچھتے ہیں وکہ قیامت میں ان کاکیا حال ہوگا ہوآپ رجواب میں ، فرما دیجئے کہ میرارب ان کودریزہ ریزہ رکے ، باکس آزادیکا یکھ زمین کوایک میدان بمواد کردین کوری کا کور میں تو داے نماطب، نه ناہموادی دیجے گاا ورنہ کوئ بابی ر بهار شید وغیره کی) دیکھے گااس دورسب سے سب (خدای) بلانیوالے دبینی صور کھوکنے والے فرٹ تری کے کہتے پر ہولیں سے دلینی وہ اپنی صور تجیو تکنے کی آواڑ سے سب کو قبروں مبلا و میکاتو سب بیل پڑی گے) اسے سامنے دکسی کا) کوئی ٹیڑھا بین نہ رہے گا دکہ قبر سے زندہ ہو کر نہ بحلے جیسے دنیا میں انبیار علیهم السلام کے سامنے شرط صدیقے کہ تصدیق ندکرتے تھے) ادر د مارے ہمیت کے ہمام آدازیں التر تعالی کے سامنے ، ب جادی گی سو (اے تحاطب) تو بجر يا دُن كى آئيث محد كه ميدان مشركى طرف ييكي يكي مل رہے ہونگے) اور کچھ (اَدَاز) نومنبيگا (خوه

سورة لله ١٠٠ بوجهاس ككراسوقت بولتي بن مرجع كو دوسر صوقع يرأسة أمسة بولي جبساأديرآيا يتخافتون اورخواه بوجراس كے كد بہت آمة بولتے ہو بگے جو ذرا فاصلے سے ہو وہ مذمن سكے اُس روز رکسی کوکسی کی سفارش نفع نه دے گی سگرا یسے بیش کو دا نبیار وصلحار کی سفار نقع دیگی کرجس دی سفارش کرنے کیواسط الله تما لانے دشانعین کوی اجازت ویدی ہواور استخص كيواسط دشافع كا) بولنا يستدكرنيا بود مُرا د اس سيمنون سيحكه شافين كواسحي سفارش محے لئے اجازت ہوگی اوراس با ہمیں شافع کا بولنا بیندیدہ حق ہوگا اور کفار کیلئے سفارش کی نسى كواجازت ہى منہ دوكى يس عدم نفع بوجه عدم شفاعت كے ہے اسميل عتراص كر نوالے كفار كودراتا، ایم توشفاعت سے بھی محروم رہو گئے اور) وہ (الترتعالیٰ) ن سب کے اگئے بچھے اوال کو جا ساہے اوراس دمے معلومات کو الکاعلم حاطه نہیں کرسکتا العنی ایساتو کوئ امر نہیں جوخلق کومعلوم موا دارندہ تا كومعلوم نه بردا ورالي بهت أمور بين جوالله تعالى كومعلوم بين اورلق كومعلوم نبير بين مخلوعات سروه سب احوال عى اسكومعلوم بين جن يرشفاعت كى قابليت ياعدم قابليت مرتب سوجواسكاا بل موكااسك واسطے سفارش کرنی شانعین کو اجازت ہوگی اورجو اہل مذہر گا اسکے لئے اجازت مذہر کی) اور راس روزی تمام چیرے اس می وقیوم کے سامنے بھے ہونگے داورسب متکبرین اور منکرین کا تکثر انکا تم وجاديگا) اور داس دصف مين توسيت ترك مربي كيم آكے انيں يه فرق مو گاكه ايسانون ر ہرطری ناکام رہیگا جوظلم دیعنی تشرک ایکرآیا ہوگا اور بس نے نیک م کئے ، دل کے اور وہ ایک سواسکود کامل تواب ملیگا) نهسی زیاد تی کاا ندلینه جوگاا در مذکمی یا د مشلاً په که کوئی گنا استح نامله عال مين زياده لكهديا جا دسرياكوي نيكي كم لكهدى جا دسه ادربيركنا برب كال ثواب يس اسك مقابليس كفارس تفاب كي نفي مقصود موكى بوجه عدم موجب تواب كے كوظلم اورت ملفي كفاركى بهى شريوكى اوركفار كے نيك عال كا حساب بي ندتكها جانا يدكوئ ظلم نہيں ملكم اسلتے ہے كدان محاعمال شرطِ ا عان سے فالی بنویکی وجہ سے کالدم ہوگئے) اور ہم نے رجن طرح یہ مضامین مدکور مقام صاف صاف ادشاد کتے ہیں) اسی طرح اسکو (سارے کو) عربی قرآن کرکے نازل کیا ہے د بھے الفاظ داضع بیں) اور اسمیں ہم نے طرح طرح سے دعید رقیامت و مذاب کی بیان کی ہے رص سے عنی میں واضع ہو گئے مطلب یہ کرسادے قرآن کے مضاین ہم نے صاصا بالائے یں) تاكروه رسنت والے ، لوك راس كے ذرايير سے باكل الدرجائي داور في الحال ايان لے آئيں) یاداگر بالکل ند ڈری تو یہی ہوکہ) یہ قران ان کیلئے کسی قدر رتو سمجھ بیداکر نے دینی اگر پورا ا ترمنه و تو تقوران و ادراس طح جند بارته ورائه وراجع موركا في مقدار موجا ف اوري قت مسلمان ہوجادیں) سوالترتعالیٰ ہویا دشاہ حقیقی ہے عالی شان ہے دکہ ایسا نافع کلام نازل

ليِّك

11/2: Y. 1/2 / 10.

سعار ف القرآن جر الدشتم

فرمایا) آور (جس طرح علی کرنا اور نصیحت ما نناجواد پر ندکور پردے قرآن کی تبلیغ کاحق داجیج جمکا
اداکر ناسب شلما افر برجواحکام کے مکلف ہیں فرض ہے اسی طرح بعض آداب قرآن کی تنزیل سے
میں تعلق ہیں جن کے اداکر نیکا تعلق آپ ہے ان میں سے ایک یہ ہے کہ) قرآن (بڑھنے) ہیں قبل
اسکے کہ آپ پراسکی وحی پوری نا اور ہوچکے عجلت نہ کیا تیجئے (کہ امیں آپ توسکلیف موتی ہے کہ
جبرئیل علیالسلام سے شنااور اس کو پڑھ تا ساتھ کرنا پڑتا ہے سوالیا نہ کیجئے اور اسکا اندیشہ
نہ کیجئے کہ شاید یا دنہ رہے یا دکرانا ہمارے ذمہ ہے) اور آپ رسی یا دہونے کیلئے ہم سے) یہ دُھالیئے
کہ اے میرے رب میراعلم بڑھائے داسمیں علم حصول کی وزر شرصاعت بھنے کی اور غیر حاصل کے حصول کی اور
جو حاصل ہو نیوالا نہیں اسمیں عدم حصول ہی کو فیراور صاعت بھنے کی ادر سب علوم میں خوش نہی کی سب
میرے رب میرا کو ترک کیجئے اور تد ہیر دُھاکوا ختیار کیجئے)۔

مكارف ومسائل

يّ

14: r. 1012

معارف القرآن جي لذهم

ابن عباس است منقول ہے کہ ابتدار دی میں جب جریک امین کوئ آیت قراق کی آیت قراق کی آئے ادرار مول استے اللہ ملکے کم کوئشش فراتے تھے گہیں اسلام اللہ ملکے کا کوئشش فراتے تھے گہیں السام ہو کہ بیا دستے کہا ہوں کے ساتھ ساتھ ساتھ اس کے بیا دوہری شقت ہوتی تھی اقل قراق کو جرئیل کو سُنے ادر سمجھنے کی اسکے ساتھ اسکو یا در کھنے کے لئے ابن اسے اداکرنے کی تی تعالیٰ نے اس آیت میں نیز مسکو دی تھے ساتھ اسکو یا در کھنے کے لئے ابن اسے اداکرنے کی تی تعالیٰ نے اس آئیت میں نیز مسکو دی تھی اور کی تھی اور کو اور کہ میں نیز مسکو دی تھی اور کی تھی اور کھنے آئی ہوں اس کا یا در کھنا آبکی ذرتہ دادی منہیں وہ ہمارے ذرہ ہے ہم خود آپ کو یا دکرا دیں گئے اسلام آپ کو جرئیل این کے ساتھ ساتھ پڑھے اور زبان کو ترکت دینے کی صرودت نہیں آپ اُسوقت صرف اطمینان کے ساتھ ساتھ ساتھ پڑھے اور زبان کو ترکت دیتے کی صرودت نہیں آپ اُسوقت صرف اطمینان کے ساتھ سناکریں البتہ یہ دُعاکرتے دبیں کہ دیتے فرد نِن عِدْدُ فِنْ عِدْمُنَا ، یعنی اے میرے پروردگا دمیراعلم بڑھا دیجے اس جامے دُعایس نازل شدہ قرائن کے ناید دکھنا بھی دا فیل ہے اور غیرنا ذل شرہ کی طلب بھی اور اُسکے بچھنے کی توفیق بھی ۔
کا یا در کھنا بھی دا فیل ہے اور غیرنا ذل شرہ کی طلب بھی اور اُسکے بچھنے کی توفیق بھی ۔

DE SAL

وَلَقَنْ عَهِمُ نَا إِلَى أَدَمُ مِنْ قَيْلُ فَنَسِى وَلَوْ تَجِلُ لَدُ عَزُمً اور ہم نے تاکید کردی تھی آدم کو اس سے پہلے پھر میکول کیا اور نہ بائی ہم نے اسیس کچھ إِذْ قُلْنَا لِلْمُلْئِكَةِ أَسْجُنُ وَالْأَدْمُ فَسَجَنُ وَالْآرَةُمُ فَسَجَنُ وَالْآرَالُاكَا ب كما ہم نے فرشتوں كو سجدہ كرو آدم كو توسيدہ بيں كر براے الكو نه مانا ابليس نے لنا بَادَمُ إِنَّ هَٰنَ اعَلَى اللَّهِ اللَّهِ وَلِرُوجِ لِكَ قَالَا بَجُنْجَا پھر کہدیا ہم نے اے آدم یہ دشمن تیرا ہے اور تیرے جوڑے کا يته فتشفر إن الق الف الانتجوع فيهاو وتظمو افيها و لاتضحى ١١ قو سَوس يھر جي سي ڏالا ے آدم میں بتاؤں کھ کو درخت سدا زندہ رہنے کا ن ا قَ كَا كُلَا مِنْهَا فَكَانَةُ لَهِمُ السَّوْ أَتَّرُهُ بادشاہی جو پُرانی نہ جو محصر دونوں نے کھالیا اُسیں سے بھرگھل گئیں اُن پر انکی بڑی جیزی اور کئے

اورحكم فالاآدم نے اپنے رب كا جَتَلَمُ الْمُ تَلَةُ فَتَابِ عَلَيْهِ وَهَانِ محصر نؤاز دیا اس کو اس کے رب نے بھرمتوجہ ہوا اُس پر اور راہ پرلایا ينال سے دونوں استھے رہو ايك دوسرے كے دشمن سری طرف سے ہدایت مجھرجو چلامیری بتلائ راہ بر سووہ نہ بہے گا اور نہ وہ تکلیف میں بڑیکا عَنْ ذِكْرِي فَانَ لَهُ مَعِيشَةٌ ضَنَّا وَ نَحْشُرُكُ درجس نے منھ پھیرا میری یا دسے تو اس کو ملنی ہے گزران سنگی کی اور لائیں گے ہم اسکو وه مجه كاا عدب كيون أنهالا يا تومجوكو اندها يُرُاسَ قَالَ كُنْ لِكَ أَتَتُكُ أَيْنُنَا فَنُسِيْتُهَا * وَ فرمایا یوننی بہنچی تقیں بچھ کو ہماری آیتیں تھرتونے انکو تھا دیا ، اوراسی طرح الْيَوْمَ تُنْسَلَى ﴿ وَكُنْ إِلَّ نَجْزِى مَنَ ٱسْرَفَ وَلَمْ يُوْمِنَ آج بچھ کو مجھلادیں گے۔ اوراسی طرح بدلہ دیں گئے ہم اس کوجوصد سے پکلا اورلیتین نہ لایا اپنے بِايْتِ رَبِّمُ وَلَعَنَ الْمُ الْاحْرَةِ اللَّهُ وَكَانِقُ اللَّهِ عَرَةِ الشَّنَّ وَ النِقِي اللهِ رب کی باتوں پر اور آخرت کا غذاب خت ہے اور بہت باقی رہنے والا اوراس سے ربہت زمان پہلے ہم آدم رعدالسلام كوايك حكم دے يحكے تقے رحبكايان أكراتا مي سوان عفلت (اور براضياطي) موكني اورتم نے (اس ملم كے اشام مين) ان میں بخیتگی داور ثابت قدمی منه پائی اور داس اجال کی تفضیل آگرمطلوب ہوتو) وہ وقت یاد كروجيك م في فرشتون سارشاد فرماياكه آدم (عليالسلام) محسامن مجده وتخيت كرو

ب نے برہ کیا بجز ابلیں کے ذکری اُس نے الکادکیا بھر ہم نے دادم ہے کہاکہ اے آدم دیا درکھوں شہصہ تہارا اور تہاری بی بی کا راسوجہ سے) وہمن ہے دکہ تھا رہے معاملہ میں مردود ہوا) سوکہ تم دونوں کو جبنت سے مذرکلوا ہے ربینی اسکے کہنے سے کوئ ایسا کام مت کر مبیٹینا کہ جنت سے باہر کئے جاؤی بھرصیبت داکتیاب معاش میں پڑجاؤ داور سائھ میں بہاری بی بی بھی گرزیادہ حصة مصيبت كائم كو بھكتنا يرك ادر) يها ح بنت ميں تو نتها رے لئے يہ (آرام) ہے كہم شہمی مِصُوكے ہوگے دجس سے تکلیف ہو یااسکی تربیرمیں دیرا در پرلیٹانی ہو) اور نہ نیکے ہوگے دکہ کپڑا مذملے بااحتیاج کے اتنی دیر بعد ملے کہ تکلیف ہونے لگے) اور مذیباں بیاسے ہوگے دکہ یا نی ملے یا دیر جونے سے تکلیف ہو) اور نر دھوے میں تیو کے رکیونکر حبّت میں دھویے ہی نہیں اور مكان بمي ہرطرح بناه كے ہيں نخلاف اس حالت كے كه اكر حبّت سے بكل كردُنياميں گئے توب ساری صیبتیں پیش آدیں کی اسلے ان امور کو پیش نظر رکھکر خوب ہی ہوشیاری وبیداری سے دہنا، مجمران کوشیطان نے رجمانسہ دیا بینی بہکایا ، کہنے لگا کہاہے آدم کیا میں تم کو ہمشگی رکی فات كا درخت بتلا دول ذكراسك كهاني سے بميشر شاد و آباد رجوى اورائيسى بادشا يى بيكى منعف نہ آ دے سو داسے بہرکانے سے ، دونوں نے اس درخت سے کھالیا رحب سے عانعت ہوئ تھی اور ، اسکوشچرة الخلدکه کرد کایاتھا) تو (اسے کھا ہے ج) ان دونوں کے سترایک دوسے کھل گئے اور (ایٹابدل ڈھا تکنے کو) دونوں اینے (بدن کے) اور جنت رکے دختوں ويت چيكاني لكاور آدم ساين ربكا تصور بوكياسو (حبنت مين بميشرين كامقصا عاصل کرنے کے باب میں علطی میں رو گئے بھر دجب اتھوں نے معددت کی تو)ان کے ہے (زیاده)مقبول بنالیاسوان بردمبر بانی سے) توجر فرمائ اور راه (راست) برجمیشرقائم رکھ اكرى الشرتاك و اورجب درخت كهالياتو)الشرتعاك في ووالال كالمراكم جنت سے الدود اور دنیامیں) ایسی حالت سے جا و کدر عباد مے فرزندوں میں ایک وشمن ایک ہوگا پھراگر تہا رے یاس میری طرف سے کوئ ہدایت د کا ذربعہ بعنی رسول یا تیاب) پہنچے تو دهم میں) جو شخص میری اس بدایت کا اتباع کرے گاتو دہ نہ ر دُنیا میں اگراہ ہو گااور نہ ‹ آخرت میں استقی ہوگا، اور چوشنص میری استضیحت سے اعراض کر بیجا تواسے لئے رقیامت سے پہلے دنیااور قبرمیں بھی کا جینا ہوگا اور قیامت کے روز ہم اسکو اندھاکرکے (قبرسے) المقاين كے دہ (تعب كے كاكرا عمير الب أب في كاكرا كے كيول أشايا مين تو د دونياس المسون والاتفا (مجه سايس كياخطا بدى) ادشاد بوكاكه (جيس تجه كوسزايوي) اليابى د بھے علی ہوا تھا وہ يہكم) تيرے ياس دانبياروعالم ك واسط سے ہمائے احكام TOM

معادف القرآن حبسله

المتمام كرنا واجب -)

سُورة لطه ٢٠: ١٢٤

معرفی می میرتونے ان کا کچھ خیال ند کیا اور ایسانی آئج تیرا کچر خیال ند کیا جا وُیگا د جیسا تونے خیال نہ کیا تھا) اور د حس طرح کہ پیرسزا مناسب مل دی گئی اسی طرح دہر، اُسٹنفس کوہم دمناسب کل سزا دیں گئے جو حد دا طاعت، سے گزرجائے اور اپنے رب کی آیتوں پر ایمان نہ لا دے اور واقعی آخرت کا عذاہے ہڑا سخت اور ہڑا دیر یا دکہ اس کی کہیں انتہاں ی نہیں تواس سے بچنے کا بہت ہی

معارف ومساكل

ربط یہاں سے حضرت آدم علیالسلام کا قصر بیان ہوتا ہے یہ تفتد اس سے پہلے سورہ بقرہ ادراغ آ میں پھر کجیے سُورہ جرادر شورہ کہفٹ میں گزر بچکا ہے ادر آخر میں سورہ حَن میں آئیگا، ہر مقام پر اسکے مناسب اجزار قصہ کو مع ہدایات متعلقہ سے بیان کیا گیا ہے۔

اس مقام پر اس تعتہ کی مناسبت بجیلی آیات سے حضرات مفسرین نے فت الف بہاؤوں سے بیان فرمائی ہے انہیں سب نے ریادہ دوش اور بے غبار بات یہ ہے کہ سابقہ آیا ہیں یہ ارشادایا ہے گذری نقص علی عَبْوت و رسالت کے اشبات اور آئے گائے ما فکن سبق ، اسپیں رسول الشر صلے الشریکی ہم خطاب کر کے فرمایا گیا ہے کہ آئی نبوت و رسالت کے اشبات اور آئی گرت کو متنبہ کر نے کا تعنیا میں اسبان کرتے ہی ہم تنہ کر فی اللہ کا تعنیا کی تعنیا میں سب بے بہلا اور تعنی کی مالات و وا قعات آب سے بیان کرتے ہی جہیں حضرت مولی فلیسل کا تعنیا میں سب بے بہلا اور تعیف کا تعنیا میں سب بے بہلا اور تعیف کا تعنیا کی سب سب بہلا اور تعیف کی اللہ کے مقام بی اور کرح طرح کے حیوں میں اور محدر وارشوں و حیمیں اُمّت محدر ساب اس نے سب سے جبیل کا دو طرح طرح کے حیوں بہا نوں اور محدر وارشوں و سب سے بہلے تہا ہے ماں باپ سے اپنی ڈمنی نوکائی اور طرح طرح کے حیوں بہا نوں اور محدر وارشوں و کے جال مجیلا کرائی کو ایک لغزش میں مبتلا کردیا جس کے جال مجیلا کرائی کو ایک لغزش میں مبتلا کردیا جس کے تیجہ میں جنت سے آئر نے کے اور خور کا اور خور کا اور نور کا میا میا کہ کی معانی ہو کرائی کو رسالت و نہوت کا مقام بلند عطا ہوا۔ اس لئے تمام بنی آؤم کو اغوار شیطانی معانی ہو کرائی کو رسالت و نہوت کا مقام بلند عطا ہوا۔ اس لئے تمام بنی آؤم کو اغوار شیطانی سے بھی کی معانی ہو کرائی کو رسالت و نہوت کا مقام بلند عطا ہوا۔ اس لئے تمام بنی آؤم کو اغوار شیطانی استام کر تا جا ہے۔

وَلَقُلُ عَيْمَ نُكَا إِلَى الْدُمُ مِنْ قَبُلُ فَنَيْنَ وَكَوْنَجِهُ لَدُ عَنْمًا ، اسي نفط عَب دُنَا وَلَقُلُ عَيْمًا ، اسي نفط عَب دُنَا وَلَقُلُ عَيْمًا ، اسي نفط عَب دُنَا وَلَقَنْ عَيْمًا نَا اسْ نفط عَب بُنَا وَلَكُونَ اللّه وصيت مِن مِ وبجر محيل مطلب يه مه كهم في اس اقتار من الله محوايك وصيت كي تقي معنى تاكيدي علم ديا تفا (جسكا ذكر سُورَهُ بقره وغيره يرك بي بيك آدم عليه السلام كوايك وصيت كي تقي معنى تاكيدي علم ديا تفا (جسكا ذكر سُورَهُ بقره وغيره يرك بي بيك

100

ف القرآن جسا

114: 1. 1 5/6/5

اورآ گے بھی کھا رہا ہے کہ ایک درخت کو معین کرے بتلا دیا تھا کہ اس درخت کو بینی اس کے بھیل کھول یا سی جزر کو خہ کھا فا اوراس کے قریب بھی نہ جانا ، باتی ساری جنت کے باغات اور نعمیں بھالاے لئے گئی ہوئی ہیں اُن کو استعمال کرتے رہو ا ورجبیا کہ آگے آتا ہے یہ بھی بتلا دیا تھا کہ البیری تھا وار تنمی کہیں اسے بہکا نے میں نہ آجانا کہ تمہارے لئے مصیبت بے مگرا کہ مطلب اسلام مجھول گئے اور اُنہیں ہم نے اوا دہ کی خیتی نہ پائی ۔ یہاں دو نفطا کے ہیں ایک فیصل کے اور اُنہیں مشہور ہیں بھول میں نہ پائی ۔ یہاں دو نفطا کے ہیں ایک فیصل کے اور اور کی خوشی مصف کے اور اور کی مشہور ہیں بھول میا اور عرف کے نفطی صف کسی کا م کے لئے اپنے اور دی کو صفبوط باندھنے کے ہیں ۔ ان دونوں نفطوں سے مرا داس جگہ کیا ہے اس کے مجھنے سے پہلے یہ جان لینا افروں کی کے مصرت آدم علیہ السلام اللہ تعالی کے اولوالعزم پنجیبروں میں سے ہیں اور پینچیرسب کے سب کے مسب کے ایک سے میں دیے ہیں۔

104 104 104

معارف القرآن جسيدهم

موجیکا ہے کہ عزم سے عنی کسی کام کے ادادہ پرمضبوطی سے قائم رہنے کے بی جضرت آدم علیال الم میں رتبانی کی تعمیل کا محمل فیصلہ اور قصد کئے ہوئے منتے گر شیطانی وساوس سے اس قصدی فنبوطی میں فرق آگیا اور مجھول نے اُس برقائم نہ رہنے دیا۔ وَاللّٰمُ اعْلَمْ

وَرادُ قُلْنَا لِلْمَكَيْنَ مَن بِي أَس عهد كالمختربيّان مي جوالتُرتعالى في حضرت آدم عليه لسلام ے ایا تھا اسمیں تخلیق آدم کے بعدسب فرشتوں کوا دران سے تمن میں ابلیس کو بھی، کیونکا سوقت تک البين جنت مين فرشتون كيساته دبهتا مهتا تفاجيكم دياكياكه سب كيسب آدم عليالسلام كويجره كرين ب فرشتوں نے بحدہ کرلیا نگرا بلیس نے انکار کر دیاجس کی دجہ دوسری آیات ہیں اسکا تکبر تفاکہ میں الك سے بنا موں بیمٹی سے ، اور آگ برنسبت مٹی کے افضل داشرون ہے میں اسکو سجدہ كيوں كروں ، اس پرا ملیس توملعون ہوکرجبنت سے بیکالاگیا ۔حضرت آدم دخوا کے لئے جنت کے سب یا غات اور ساری نعمتوں کے درواڑے کھولدیے گئے اور ہرجیزے استعمال کی اجازت دی گئی صرف ایک معین درخت مصتعلق به بدایت تی تکنی که اسکو (لینی اسکے بیمل بیگول وغیرہ کو) نه کھا بیس اور اسکے قریب بھی مذجائیں۔ پیضموں مھی سور أو بقرہ واعراف كى آیتوں میں آچكا ہے بیاں اسكا ذكر كرنتے بجائے كاعق تعالى نعابينا وه الشاد ذكركيا بيجوس عهدك محفوظ ركصفه ادراس يرقائم رسف مصلسلة بي فرمايا كه ديميوشيطان البيس حبيباكه واقعيره كے وقت ظاہر ہوجكا ہے تم دولون تعني آ دم و حواكا ديمن السانة بوكه ووسي حروجيا سے دھوكرد كرتم سے اس عبدكى خلات ورزى كرا دے حبكانيجم يہ موكرتم جنت سے بكالے جاؤ - فلا يجن حَنكما مِن الْحَنّة وتشقى ، ليني يشيطان كهين تصين جنت سے ن بركوا ويصب كى وجرسة مصيبت اورمشقت مين يرجاد - نفظ تشقى شقاوت سيشتق س يدنفظ دومصف كے لئے استعمال موتا ہے ايك شقاوت آخرت، دوسرے شقاوت دُنيا بعنى جسماني مشفت ومصيبت اس جكري دوسرفيعني مُراد بوسكة بين كيونكم بيدمعني ميسكسي بنغيرك ليّ توكياكسى نميك مسلمان سمے لئے بھی يد نفظ نہيں بولاجا سكتااس لئے فراز فے اس شقا وت كى تفنيہ يركى بكرهوان يأكل من كديد يدني شقاوت ساس جكر أدير به كراين بالخفول كى محنت سے خوراک عاصل کرنا پڑے کی دخطبی اور اس حکہ قریبنر مقام بھی دوسرے ہی صنی کے لئے شاہد ہے کیونکہ اس سے بعد کی آیت میں جنت کی نعمتوں میں سے اُن چار نعمتوں کا ذکر فرمایا ہے بوہرانسان کی ڈندگی کے لئے عمودی حیثیت رکھتی ہیں اور صروریات زندگی میں سے اہم ہیں۔ لعنی کھانا، پینا، لباس افدسکن - اس آیت میں بیر ارشاد فرمایا ہے کہ بیرسے نعمتیں جبّت میں تو بلاكسى كسي اكتساب اورمحنت ومشقت كم ملتى بير -اسير اشاده يا ياكياكه بيال سن كل كم تو یعمتیں سلب ہوجائیں کی اور شایداسی اشارہ کے لئے یہاں جنت کی بڑی بڑی مون کا ذکر

رث القرآن ج سوره ظار ۲۰:۲۰ 24 بنین کیا گیا بلکهصرف اُن کاذکر کیاجن برانسانی زندگی موقوت ہے ادراس سے ڈرایا کیا کہشیطا اغوارمیں آگرہیں ایسانہ ہو کہ حبت سے بکا لیے جا وُاور سے سیسی سلیے ہوجائیں اور کھیرزمین پر ان صروریات زندگی کو بڑی منت مشقت اُس کا اصل کرنا پڑے میعہوم نفظ فَنَشْقی کا ہے جوجمہور مفسرین نے لکھاہے۔امام قرطبی نے اس جگہ بیھی ذکر کیاہے کہ آدم علیہ السّلام جب زمین پر تشربعتِ لائے تو جیرَالُ نے حبّت سے کھے دانے گیہوں جاول وغیرہ کے لاکرنیئے کہ انکوزمین میں کاشت کر دیھرجب بیربودا نیکے اوراً س پر دانے جمبیں تو اس کو کا ٹو پھر پیس کر روٹی بنا دُ اور ان سب کا مو^ں سے طریقے بھی حضرت آدم کو تنجھا دیئے اس سے مطابق آدم علیالتلام نے روتی بیجائی اورکھانے سے لت بعظم محمد روقی ہاتھ سے جھوٹ کر بہاڑے نیے لڑھا گئی آدم علیہ اسلام اسے سے حلے اورٹری محنت كركے واپس لائے توجیرتل امین نے كہاكدا ہے آدم آپ كا درآ كى اولا د كا درُق زمین پر اسی طرح محنت مشقت سے ماہل ہوگا۔ (قطبی) بيوى كانفقه ضروديه اس مقام يرشروع آيت مين حق تعالي نيحادم علياسلام كيرما توحضرت مخاه شُوہرے ذمتہ ہے کوسی خطاب میں شریک کیا عَدُدُّلُكَ وَلِنَ وْجِكَ فَلَا يُحْوِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ سیں تبلایا ہے کہ شیطان آپ کا بھی رحمن ہے اور آپ کی جوی کا بھی اور یہ کہ ایسا نہ ہوکہ تم دونوں لويجنت سن كلوا دے محراخرا بت ميں لفظ فَنَنتُه في كومفرد استعمال فرمايا بيوى كواسيں شريب نہيں ی اور مذہمقتصنائے مقام فتشفنیا کہا جاتا۔ امام قرطبی نے اس سے پرسئلہ مستنبط کیا ہے کہ صروریاتِ زندنى بيوى كى مردك ذممين ال محصول مي جمحنت ومشقنت واسكاتنها ذمه دارمرد باسى لئ فتشقى لجيغهم فرد لاكراشاره كردياكه زمين يراً ماك كئے توان حزدريات زندگى كى عصيل ميں جو كھھ محنت مشقت أتفانا يركى وه حضرت آدم عليالسلام بريرات كي يونكه حوار كانفقه اورصروريات زندگی فرایم کرناان کے ذمہے۔ نفقة واجبهصرف إقرطبى في فرماياكه اسى آيت فيهي يهي بالدياكه عورت كاجونفقه مردك چارجیسے زیں ہیں فرمتہ ہے وہ صرف جارجیزی ہیں۔ کھانا بینیا اور لباس اور سکن ۔اس سے ذائدہ کھے شوہرایی بوی کو دیتایا آس برخریے کرتا ہے دہ تبرع داحیان ہے داجی لازم نہیں ساسی سے میری معلوم ہواکہ ہوی سے علاوہ جس کا نفظہ سٹراجیت نے سی فن کے ذیر عائد کیا ہے اسمیں سی حارثین اس مے ذمر ہوا جب ہوتی ہیں جیسے مال با یہ کانفعۃ اولاد کے ذمتہ جبکہ ودمحتیاج اور معذور ہود غیر ذلک جسكي فصيل كتب فقه مي مذكور م ان كان الدي المرتبي عنه اوكر تعوى ، جنت مي صروريات زيركى كى يينيادى جارول چیزی ہے ما تھے بلامشقت ملتی ہیں۔ اور حبت یں تجوک کھنے سے پیشجھرنہ کیا جائے کہ جب تک تجوک

نہ لکے تھانے کا ذائقہ اور لڈت ہی نہیں آرکتی ، ای طبح جبتک پیاس ہو ٹھنڈے یائی کی ندت وراحت نهیں محموس وی وجرب ہے کہ جنت میں مجوک پیاس نہ لکنے کا مطلب میں ہے کہ مجوک بیاس کی کلیف نہیں اُٹھانی پڑتی کربھوک کے وقت کھانے کو اور بیای کے وقت پینے کو نہ ملے یا دیرمیں ملے بلکہ ہروہ چيرجس كوائكادل چا بے كافوراً حاصر موجود في -

فوكسوس النهو الشيطن إلى قولم وعصى أدم ربته فعوى اس آيت مس جويه والآ يدا موتے بي كرجب حق تعالى نے حضرت آدم و حواكوكسى خاص ورخت كے كا دراسكے ياس - إنس تهى روكديا تفاا درأس يرمز مدتينبيهي فرما دئ هي كه شيطان تم دونون كادشمن ہے استح مکرد كبيد سے بحقے مهنا و م كبيرتم ميں حبت سے نہ زكلوا دے اسى وانع بدايتوں تے بعد سے ير سفير عالى مقام شيطان كے دھوك ميں تس طرح آسكة اوريد كديد توكفلي نافرماني اوركناه ب حضرت آدم على السلام الشركيني ورسول بي ان سے بیگناه کیسے سرز دہواجر جمہوراً مت کا اسپراتفاق ہے کہ انبیاء ملیم اسلام ہرجیو تے بڑے گناه مے مصوم ہوتے ہیں۔ ان سب سزالات کا جواب سورہ لقرہ کی تضییر حادث ، تراہی جلدا قراص فحہ ۲ سالم زرجيكات دبان ديكونياجائے - اوراس آيت بيں جوحصرت آدم علىالشلام كي نسبت صاف لفظوں ين عصى اور معرغولى فرماياكياب اس من وجرهي شورة بقره مين بيان بردي به كدار حياة معليها كاية باشرعي قانون كي رُوسے كمناه ميں داخل نہيں تنھائيكن حضرت آدم عليابسلام التد تعالیٰ كئے شول ا در مقربین خاص میں سے ہیں اسلئے اُن کی ا دنیٰ بغر ش کوتھی بھا ری نفظوں سے عصیان کہار تعبیر کیا كياا وراس برعماب كياكيا ورنفظ غوى دؤمنى كے نئے استعال وقتاب ايك معنى زندكى ملخ وجوا فياد لائن خرابہ ہوجا نے تھے ہیں۔دوسر مے حتی گمراہ ہوجا نے یا غافل ہوجا نے تھے۔ائمہ تفسیق شیری اور قرطبی غیرہ نے اس جگہ نفظ غوی کے پہلے سی کوا ختیار کیا ہے اور مرادیہ ہے کہ حضرت آدم عدیا سلام کوجوعیث جنت میں حاصل تھادہ شرد ہا زندگی کلے ہوگئی۔

انبياعليم السّلام سم بارس بين ايك | قاضى الوكرابن عربي في احكام القران مين آيت مذكوره مين بم بدایت أنكادف احترام ك حفاظت جوالفاظ عصفی دغیره آدم علیاسلام كے باہے میں ہی اس اسلا

میں اتھوں نے ایک ہم بات ارشاد فرمائ ہے وہ آتھیں کے اندا طمیں سے۔

لا يجوز كا حد نا اليوم ان يخارب لك عن أوم الم يس كي كيك آن يه جائز نهي كدآدم علي السلام كى طرف یدنفظ عصبیان منسوب کرے بجز استحکہ قران کی اس آیت کے یا کسی صدمیث بنوی می خنمن میں آیا ہو وہ سال کر سے کین میرکہ انى طون سے يہ لفظ منسوب كرنا ہمانے اين قرى آیا و واجداد کے لئے بھی جا کر بنیں ، مجر ہمارے مب

الداذاذكنع فالثناء تولم تعالى عنما وقول نبيته، فامّان يبندى فدلك من قبل نفسم فليس بجاثزلتاف أباثنا الادنين اليناالماثلين لنافكيف فى ابيئا الاقدم الاعظم الأكرم التبى پہلے باب جو ہر حیثیت میں ہمادے آیا دسے مقدم اور منظر کارم کو اوراد اور اللہ تعالی کے بیفیر معزز ہیں جنکا عذر اللہ تعالی نے قبول فرایا اور معانی کا اعلان کردیا ان کے لئے توکسی حال میں جا کر نہیں۔

المقدّم الذى عن ربع الله سبحنان، وتعالى وتاب عليه وغفولد و ادْ تغيير قرطبي ذكره في البحر المحيط الصناً)

اسی لئے قشیری ابونصر نے فرمایا کہ اس نفط کی وجہ سے حضرت آدم علیالسلام کو عاصی اور غاوی کہنا جا نرنہیں اور قرآئ کریم میں جہاں کہیں بی یا رسول کے باسے میں ایسے الفاظ آئے ہیں یا تو وہ خلاف اولے المرزہ یں برتھے ہیں کے اسلے بعضی آیاتِ قرآن و روایاتِ حدیث توان کا تذکرہ در سے کی اپنی ظری سے اُن کی شمان میں ایسے الفاظ استعمال کرنے کی اجا ذہ نہیں (قبطیی)

را هیمطاه بختی ایم ایم ایم ایم با وجنت سے ددونوں) پیرخطاب حضرت آدم وا بلیس دونوں کے لئے بھی ہونکا ہے اور اس بسورت میں بغض کور لیک فی علی وہ کا مضمون واضح ہے کہ وُنیا میں جب کری اسلان کی دہمنی جاری ہے گئی اوراگر یہ کہا جائے کہ شیطان کو تو اس واقعہ سے پہلے ہی جنت سے پکالاجا پکا مقااب اس کو اس خطاب میں شر کی قرار دینا بعید ہے تو دوسراا حمّال بیم ہے کہ بی خطاب آدم و حواد میں ہا ہی عداوت سے مراد ان کی ادلاد میں با ہی عداوت ہوئے کو بسیان کرنا ہے اور دار دیں با ہی عداوت سے مراد ان کی ادلاد میں با ہی عداوت ہوئے۔

کافرادربرکاری زندگی دُنیامیں یہاں یہ سوال ہوتا ہے کہ دُنیا میں معیشت کی تنگی توکفار د فجارے اسلام کو سب نے کی حقیقت اسلام کوسب سے زیا دہ شدائد و مصائب اس دُنیا کی زندگی میں اُٹھائے ہڑے ہیں جی بخار المدر تنگی کو بھی بیشیں آتی ہے بکدا نبیاء ملیہ ماسلام کوسب سے زیا دہ شدائد و مصائب اس دُنیا کی زندگی میں اُٹھائے ہڑے ہیں جی بخار اور تا کی سب ماسکا و فیور یہ حدر بیٹ منقول ہے کہ رسول الدر صلی الشرعک مناسب سے زیا دہ انبیاد پر سخت ہوتی ہیں اُن کے بعد جوجس درج کا صالح اور دئی ہو اُس کی مناسبت سے اسکو یہ کلیفیں ہنچتی ہیں ۔اسکے بالمقابل عموماً کھا رونجار کو خوتحال اور میں دعشرت میں دکھا جا آس کی معیشت شک ہوگا کو خوتحال اور معیش دعشرت میں دکھا جا آس کے ساتھ ہوتا ہے و بھر ہر ادشاد قرائی کہ اُن کی معیشت شک ہوگا آخرت کے لئے قو ہوسکت ہوتا ہے ۔

معادف القرآن جسكدهم سوره طالم ۲۵:۲۰ اسكاصاف بے غبارجواب تو يہ ہے كہ بيرال دُنيا كے عذاب قبركا عذاب مُراد ہے كہ قبرال كى معیشت تنگ تر دی جادیگی خود قبرجواُن کامسکن جوگا ده اُن کوابسا دیا کیگا که اُنکی بیلیاں توشنے لکیں گی بييار يعض احاديث مي الحي تصريح ہے اور مسند بزادي بسند جيد حضرت ابوہر روا سے يہ حديث منقول م كدرسول الترصف الترطيد يم في فود اس آيت كانفظ معيد شدة خند كاك تعنيري فرماى ب كراس سفراد قبركاعالم ہے۔ (مظھرى) اورحضرت سعيدين جبر في تنظي معيشت كايمطلب على بريان كيا ب كداك سة فناعت كاوصف سلب كرلياجا ويجاا ورحرص ونبا برها دى جا ويكى رمظهري حس كانيتيريه وكاكه أسك إس متنابى مال و دولت جمع بوجائے مبئی فلبی مسکون اسکونصیب بہیں ہوگا ہمیشہ مال بڑھائے کی فکراوراسمیں نقصان كاخطره اسكو بي ين ركھ كا-اوريه بات عام ايل تموّل ميں مشاہد ومعروف ہے جكا فارل يہ ہوتا ہے كدان توكوں كے باس سامان راحت توبہت جمع ہوجاما ہے محرحبكانام راحت ب وه نسيب بنبي بوني كيونكه وه قلب ميسكون واطمينان محد بغيرها صِل بهين بوتي -فَلَوْ يَهْدِ لَهُمُ أَكُوْ أَهْلَكُنَّا فَيَعَلَّهُمْ قِبْنَ الْفَرُّونِ يَبْشُونَ فِي مَسْكِمَا سو کیا آن کو سمجھ نہ آئ اس بات سے کہ منتی فارت تربیکہ نے آن سے پہلے جاعتیں یہ نوگ بھرتے ہول م اسمیں خوب نشا نباں ہیں عقل رکھنے والوں کو اور اگر نہ ہوتی آیک بات کہ نوکل جی تیرے كريك ككان لِزَامًا وَ آجَلُ مُسَيِّق فَي فَا عَبِرَ عَلَى مَا يَقُولُونَ وَ شاید تورامنی مو أورمت بسار أيني أجمعير الم آزواجًا مِنْهُ وْزَهُونَ الْحَيُونِ اللَّهُ مُنَّامٌ لِنَفْتِنَهُمْ فِي بیزر برجو فائدہ آٹھانے کو دی ہم نےان طبح طبح سے توگوں کو رونق ڈنیا کی زندگی کی اُس سے جا پخنے کو ب كى دى يوى روزى بهترى اورسبت باقى سنة والى اورسم كرايسة ككر دالول كو نما أد كا كَ نَتِكَالُكَ رِدِ وَ قُا "نَحْرُ مُنْ وَ قُلْكَ " وَالْكَافِيَةُ لِلتَّقَوْمُ الْكَافِيَةُ لِلتَّقَوْمُ الْ ہم میں مانگنے بچو سے دوزی ہم روزی دیتے ہی جھے کو اور انجام بنلا ہے برہز گاری کا اور

مارون القران جراته مي المنافي المنافية من تربه أو كورتا مقرب بنائة ما في المحكمة المؤوّل المحكمة المؤوّل المحكمة المؤوّل المؤ

فكاصترتفسير

200

توره طالم ١٠٠٠ رف القرال ج 141 اوردن محاول واخرمیں وسینے کرنے کے داسطے اہتمام کے لئے عررکہاجاتا ہے جس سے خارجرونحر کے ذکر کی مجی اہتماماً شکر پر ہوگئی تاکہ (آپ کو تواب سے) آپ (اُس سے) خوش ہوں (مطلب یہ ک آب این توجمهد دهقی کیطرف رکھے لوگوں کی فکرند کیجے) ادر سرکر ان چیزوں کیطرف آپ آنکھ اٹھا کا بھی نر دیکھتے (جیسااب تک بھی بنہیں دیکھا)جس سے م نے کفار کے عشاه نے گروہوں کو (مثلا بہودو نصادی وششرکین کو) اُن کی آزمائش کے لئے متمقع کردکھا ہے کہ وہ دمحمن، و نیوی زندگی کی رونی ہی ومطلب أورول كوشنانا ب كرجب معصوم نبى كے لئے يدعانوت بي احتمال مجى نہيں توغير مصوم کوتواسکاامتهام کیونکرچروری ندم د گا ۔ اور آنه مائش پیر کہ کون احسان ما تنا ہے اور کون سمرشی کرتاہے اورآ کے دب کاعطب رجوآخرت میں ملیگا) بدرجهاداس سے) بہتر اور دیریا ہے دکھی فناہی نہ ہوگا۔ فلاصه كلام كاير بواكد نرأن كے إعراض بسرا لهمزه كى طرف التفات كيا جا و سے ند اسكے أغراض بفتح الهمزه ميني اسباط يش كمطرت بسب كاانجام عذابيجى ادراب متعققين كوربيني ابل خاندان كويا مؤمنين کو بھی نما دکا حکم کیتے رہئے اور خود بھی اسکے یا مبدر ہیئے دلیعنی زیادہ توجہ کے قابل یہ اُ مور ہیں ہم آ ہے اور داسی طیح دوسروں سایسے معاش دکھوانا ، تہیں جائے دجوطاعات صروریہ سے نے ہوں ، معکش تو آب کود اوراسی طرح اوروں کو ہم دیں گے رہیتی مقصود الی اکتسا بنہیں بلکہ دین اورطاعت ہیں ، اکتساب کی اتنی حالتیں اجازت یا امرہے کہ حزوری طاعت میں وہ نحل نہ ہو) ا درمیترانجام تو پر ہز گاری کا ہے۔ داسكتے بم محمد بیتے میں ذکر تند کئی ناور وَ أَمْرُ آهَاكُ اللهٰ اور معترضین سے معض احوال واقوال جو اُو پر معلوم ہوئے اس طرح اُن کا ایک اور قول بھی مذکور ہوتا ہے کہ) وہ لوگ (غیا ڈا) یوں کہتے ہیں کہ ٹیر مول ہمارے یاس کوئی نشانی (این نبوت کی) کیوں نہیں لاتے (آگے جواب ہے کہ) کماان کے یا بہلی تمایوں مے مضمون کا ظہور نہیں بہنچا د مُراد اس سے قرآن ہے کہ اس سے کتب سابقہ کے مضمون بیشین گوی کےصدق کا فہور ہوگیا مطلب یہ کہ کیا اُ بھے یاس قرائ نہیں بہنجاجس کی ہیا سے شہرت تقی کہ وہ نبوت پر کافی دلیل ہے) اور اگریم ان کو قبل قران آنے کے دسزائے کفر میں کہی مذاب سے ہلاک کرفیتے داور کھر قیامت سے روز اسلی سرالفری دی جاتی کہ وہ لازم ہی تھی) توبہ لوگ ربطور عذركے) يوں كہتے كدا سے بارے رب آت فيها دے ياس كوى رسول دونيا ميں كيوں نہيں بھيجا تھا كہ ہم آیے کے احکام برطیع قبل اسے کہم دیباں خود) بے قدر ہوں اور دوسروں کی زیکاہ میں اُسوا موں وسواب اس عذر کی بھی گنجا مش نہیں رہی، اگروہ ٹوں کہیں کہ دہ عذاب کرجے گاتو) آب کہدیجئے کہ دہم اسب أتظار كريس إسور جندے) درأتظار كربواب عنقريب تم كوريمي معادم وجاديكاك راه راست والمكون بي اور وه كون مهجو دمنزل مقصود يك بهنياد نعيى وه فيصله عنقرب بعد موت یا بعد الحشرطا سر جوجا و سے گا) م



معادف القرآن جسيدهم

معارف ومسائل

آفکڈ کیڈ کھٹ کھٹ کھٹ کی سے بہتے ہیں تا علی ہری کیطرت داخ ہے جواسی نفط کے شمن میں مذکورہے الدہ دئ ہے گراد قرآن یادسوں ہے تو مصفے یہ بیں کہ کیا قرآن یا دسول الشرصلانشر عکتی ہم نے انکولینی اہلِ مکرکویہ ہوایت نہین ی ادماس جاخبر نہیں کیا کہ تم سے بہلے تنی اُسٹیں اورجاعتیں اپنی نافر یائی کیوجہ سے عذابِ فدادندی میں گرفتار ہوکر ہلکہ ہو چکی ہیں جن کے گھروں اور دمینوں میں اب تم جیلتے بھرتے ہو اور رہی می مکن ہوکا اسی خیر فاعل الشریق کے لائے والدر معنی میں ایک میں میں استان میں استان کی کور ماریت نہیں دی۔ اکنہ

فَاصْدِوْعَنْ عَايِعَةُ وُوْنَ ، ابل مَدجوايان عبماكن كي العراح محصيلها في الماش كرت تقع ادرد مول مشرصها مشرعکتیم کومیّب برّ مے کلمات سے یا دکر تے تھے ، کدی ساتر کوئی شاعرکوئی کا ذب کہتا تھا۔ اُن کی ایناوکا ملاح قران کریم فعاسجگه دوجیزون سلایا ہے اول یہ کدای انتے کہنے کیطوٹ الشفات مذکریں ملکہ صبر کری دومرى جيزان ترتعالى كى عبادت ين تنفول جانا بي جوا كل يمكين فسيت في تيك كيالفا فرسيبان كياكيا ہے۔ وشمنوں کی ایذا وں سے بچینے کاعلاج | وشمنوں سے تو اس دُنیا میں سے چھوٹے بڑھے اُسے انسان کو صبرا درالتركی یا دین شغول وزیاب نجات بنین ملتی بیخص كاكوی نزكوی وی من موتاب اوردیمن كتنایی حقرد فنعيف موا پنے مخالف كو كھ مذكھ ايذا بہنجا أى ديتا ہے مذبا في كالي كلوج مي سامنے مت شر ہوتو ہے ہی ہی اسلے تین کی ایزا دُں سے بچنے کی فکر شخص کو ہوتی ہے۔ قران کریم نے ان کا بہترین اد كامياب بخدد وجيزدل سيمركب بيان فرماياب -ادل صبريني ابينے نفس كو قابوسيں ركھ تااور استقام كى فنكم ين نه يرنا دوسرك الشرتعالي كي يا داورعبادت بين شغول بردجانا - تجربه شابد به كه صرف بيي نسخه بيت بي ان ایزادُن سے نجات سل محتی ہے ورنہ استقام کی فکرمیں پڑنے والاکتناہی قوی اور پڑا اور صاحب اقتدا دم و باادقات مخالف سے أسقام لينے يرقادر نہيں مؤتا اور يہ فكر أسقام آيك نفل مذاب أس ميلئے بن جاتا ہے ادر حبب ا نسان کی توجّه حق تعالی کیطرف ہو جائے ادر وہ دھیان بیر کرے کہ اس دنیا میں کوئی کسی کو كسي كانقضان ياايذا بغير شيت خداوندي محنهبي بينجا سكتااوران ترتعالي محاعمال دافعال سب حكت يرمبني وحقين اسلئے جوصورت ميش آئ ہے اسيس صرور كوئ حكت ہوگى تو مخالف كى ايزا كل كيدا ونيالاغيظ دغضب خود بخدكا فور برجالاب اسى لية اخ اتيت من فرمايا كتلك تؤوها مين اس تدبرس آپ داضی خوتی بسر رسیس سے و بیتونی تی آپ این ای استرتمالی کی یا کی بیان کری آک حدوم کیسا تھ اسمیں اثناده به كرحب مبرك كوالله تعالى كانام لين يا كوعبادت كرنے كى توفيق موجائے اسكوجا الله ايناس على زباز د الخركة يجائي الترتعالي كى حمد وشكركوا ينا وظيفه بنائي يه ذكرالترياعبا دت أسى كى توفيق كانتيجه اورثمره ہے۔ اور بدلفظ سبتم بجل عام ذكرو حمد كے منے من وي ال اورفاص نما زكے منے من بي عيدًا

سورة طالم ١٠٠٠ 1414 حضرات مفترین نے اسی کولیا ہے اور کسس کے بعید جو اقطات معین کر کے تبلائے ہیں ہے مَازُوں كَا وَحَاتِ وَارِيْتِي مِثلاً فَبُلَ كَلُوعِ الشَّكُسِ سِمُوادِ مَازُ فِيرادِ وَتَبُلَ عُودُوكَا سِمُواد نماذ ظهروعصراور مِنْ أَكَامِيَا لَكِيلِ صِمْراد رات كى سب عادين مغرب عشاريها تنك كرتبي أيسالي ادر كيم نفظ أطَّرُافَ النَّهَادِت اس كى مريدتاكيد تبلاى كى ب-دولت ونياجندروزه بهيالله ولا تنمدن عينيك ،اسي رسول الشرصاع المرعكيم كوخطاب، مے زدی مقبولیت کی علامت نہیں اور دراصل ہدایت کرنا آمت کو ہے کہ دُنیا کے مالداروں ساجانیاوں جكة ون كے النے خطرہ كى جيسے نہ ہے كو تسم تسم كى و نيوى دونق اورطرح طرح كى تعميں عاصل ہيں۔ آپ أن كى طرت تظريبى مذا تهائي كيو مكه بيسب عيش فانى ادر جيندر وزه ب الشرتعالي في جوتعت آپكو ادرائیے داسطے سے مؤمنین کوعطافر مائ ہے دہ برجہااُن کی اس چندر د زور رونق جیات سے بہرے -مونیا میں تقارد فجار کی میش وعشرت اور دولت وشمت بمیشر ہی سے برخض کے لئے یہ سوال بنتی رہی ہے کہ جب یہ لوک التر کے نزدیک مبغوض اور ذلیل ہیں تو ان کے پاس پیفتیں کسی اور کیو ہیں ، او اطاعت شعاد مومنين كي غربت وافلاس كيول ؟ بها تك كه فاروق عظم جيد عالى قدر بزرگ كواس سوال نے متا ٹرکیا جسوقت وہ دسول الشرصلے الشرعكيكم كے پاس آيكے خاص حجرہ ميں واخل موتے ميں ات فلوت كزين تصاوريد وسيهاكم الصابك موفى مونى تيليول كے بورئيم يركيشے تو نے بي اوران ليد مے نشانات آئے مے بدن مبالک پر کھڑ ہے ہوگئے ہیں تو بے اختیار رویڑے اور عرض کیایا رسول اللہ يكسرى وقيصرا دراأن كامرارسي كسياعتون اور راحتون مين بين ادرات سارى مخلوق مين الشرك تخت رسول ا در محبوب ہیں ادر آت کی معبشت کا یہ حال ہے۔ رسول الشرصال الترعكي لم في فرماياكم ا ابن خطاب كياتم اب مك شك وشجه بي متلام د-یه توک تو ده زین جن کی نتات و مجبوبات الشر نے اس دنیا میں اُن کو دبیری ہیں آخرت میں ان کا کوئ حصر نہیں وہاں عذا ب ہے عذا ب ہے (اور مؤمنین کا معاملہ برعکس ہے) میں وجہ ہے کہ دسوال م صلےاللہ عکیہ کم دنیا کی زمینت اور راصت طلبی سے بالکل بے نیاز اور مے تعلق زندگی کوبیندف راتے مقے با دجود كيرات كو يورى قدرت حاصل تھى كراست كئے بہتر سے بہتر داحت كاسامان جمع كريس. اور حب من دنیا کی دولت آیک یاس بغیری محنت مشقت اور سی وطلب سے آبھی جاتی تھی تو فوراً الشركى داه مي غربار فقراريراس كوخرج كرداكة تضاوراين واسط كل ك لي كير باتى ترجيولة تقے۔ ابن ابی حاتم نے بروایت ابوسید خدری نقل کیا ہے کہ رسول الشرصلے الله عکیہ کم نے فسرمایک ان اخوت ما اخاف عليكوما يفتح الله المجمع توكون كم بالصين من چيركاست زياده خوت اور خطره به وه دولت وزينت دنيا يه وتم ركعولدي جاوي -الكومن زهرة الدنيا داين كثين

اس دریش میں رسول ادشرصلے الشرعکتی لم نے اُمّت کو پہلے ہی بین جربھی دیدی ہے کہ اُئدہ زیانے میں تھاری فتوحات و نیامیں ہوں گی اور مال و دولت اور عیش وعشرت کی فرا وانی ہوجائے گی - رع صورتِ حال کچھ ذیا دہ خوش ہونے کی نہیں بکہ ڈرنے کی چیز ہے کہ اُسیں مبتلا ہو کر الشر تعالیٰ کی یاد اور اُس کے احکام سے خفلت نہ ہوجائے ۔

ا پنے اہل وعیال اور متعلقین کو نماز ا کا مُو آھنگاف بالفہ اوق واضطید میں ایسے اہل کو کی بابندی کی تاکیدا ور اسکی حکمت اس بھی نماز کا حکم کیجئے اور خود بھی اُس پر جمے دہئے ۔ یہ بنطا ہر دو و کسکم الگ الگ وی بابندی کی بابندی کے اور خوا آپ کا ماحول آپ کے اہل وعیال اور تعلقین نماز کے بابند میں بابندی کے لئے بھی یہ صروری ہے کہ آپ کا ماحول آپ کے اہل وعیال اور تعلقین نماز کے بابند ہوں کہ بابندی کو تا ہی کا شکار ہوجاتا ہے۔

نفط اهل پین بیوی ولاد اور تعلقین بیمی داخل بین بین سے انسان کا ماحول اور معاشرہ بنتا ہے رسول انتر صلے انتر عکشی لم برحیب بیر آئیت نازل ہوئ تو آئیت دوزانہ صح کی نما زکے وقت حضرت علی ا اور فاطری کے مکان پر جاکر آواز دیتے تھے القبلوی الصلوی الصلوی (قطبی)

ادد حضرت عردہ ابن زبیرہ جبھی امرار وسلاطین کی ددات وحشت پراُن کی نظر پڑتی تو فوراً اپنے گھرمیں کوف جاتے اور گھر دالوں کونما ز کے لئے دعوت دیتے ادریہ آیت پڑھ کر سناتے سے ا اور حضرت فاروق عظم مجب دات کو تہجد کے لئے بیدا رادوتے تو اپنے گھروالوں کو بھی بیدا دکرنیتے تھے اور بھی آیت پڑھ کر سناتے تھے (قبطی)



معارف القرآن جب ليشتم

ا در تیری مختاجی کو دُور کر دونگا اور آگر تون ایسانه کیا تو بیراسینه کرا در شغل سے مجرد ذریکا ورمختاجی دُور نه کر د ن مکا د مینی جت نا

تفعل ملاءت صدرك شغلا ولمر اسدن فقرك (ابن كثير)

مال برصاحات كاحرص مى أشى بى برصى جلى جلت كى اس لئے بميشر محمّاج بى د ب كا -)

اورحضرت عبدالترب عودرم ولات ين كرس فيرسول للرصل الشرعكية كوية واتي وع مناجك :

بیخض اپنے سامے فکردن کو ایک فکرمینی آفرت کی فکر بنا دے تو امنٹر تعالی اسے دنیا کے فکر دن کی خود کفالت کرانتیا ہے اور ب کے فکر دنیا کے مختلف کا مول دیس لگے ہے تو الشرتعالی کو کوئی پردا میں کے دو الشرتعالی کو کوئی پردا

من جعل همومه هما واحل همرالمعاد كفاه الله هم دنياه ومن تشعبت بمالهموم في احوال الدنيالم يبال الله في اعلادية هلك رواه ابن ماجه دابن كمثير،

بَيِنَتَ مَا فِي الصَّحْفِ الْآوُلْ اللهِ المُعلِيلاً اللهُ اللهُ

الحك للله الذى وقعن لتكييل سورة طلى ضحى يوم الحنيس لاربعة عشى خلت من في المنال للكورم المحالية والله شعكانة وتعالى المال للكيل باق خلت من في المحتمد المحرام ساسل والله المنال المال للكيل باق العران والله المنتكان وعليد ليكلان

اسورة الانساء ١٠: ٢١ م

معَادِف القِسران جِلَدُمُ

سورة الاقتاع

سَلَقَ الْحَالِمَا لَكُونِكُمْ الْحَالِمَ الْحَالِمُ الْحَالِمُ الْحَالَةُ الْمُتَاكِمُ الْحَالَةُ الْمُتَاكِمُ الْحَالَةُ الْمُتَاكِمُ الْحَالَةُ الْمُتَاكِمُ الْمُلْكُولُولُ الْمُلْكُولُولُ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللهِ اللّهِ اللهِ اللهُ اللهُو

بِسَوْ اللَّهُ الرَّجُهِ فَالرَّحِيثُونَ شروع الفترك الم على والمان مان مهايت رقم دالاب قَتْرَبَ لِلتَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ مُّغْرِضُونَ أَ مَايَاتِ الما المول سے اُن مے حساب کا دقت اور دہ بے تجر ملا رہے میں رُمِّنَ رَبِّهُ مِنْ الْكِرُ السَّمَعُونَ وَهُمُ يَلْعَبُونَ ﴿ كَالْمُعَوْلُ وَهُمُ يَلْعَبُونَ ﴿ كَالْهِي بی اُن کو اُن کے رب سے نئی سگراس کو گئے ہیں کھیل میں گئے ہوئے کھیل میں گئے ہوئے کھیل میں گئے ہ قُلُونِهُمْ وَاسْرُواالنَّجُويُ الدِّينَ عَلَمُوا النَّجُويُ الدَّيْنَ عَلَمُوا اللَّهُ مَلْ هَٰ مَا الدَّا دل اُن کے اور چھیار مصلحت کی بے انسانوں نے یہ شخص کون ہے ایک بَشَرُّ مِتَّلُكُمُّ الْعَالَمُوْنَ السِّحْرَ وَ اَنْتُوْ تُبُصِّرُونَ ﴿ قُلَ رَبِّ يا زمين ين اوروه بي سنن والاجا نن والا اسمان میں ہد دی سے عقبہ ال کو سو ہوتھ لو باد رکھنے دالوں سے

ک

فلاصترفيير

ان د منکری توگوں سے آن کا دوقت، حساب نز دیک آپہنچا دلینی قیامت و قتأ فوقتاً نزدیک ہوتی جاتی ہے) اور یہ واکھی عفلت (ہی) میں دہرائے) ہیں داورا سے لیتین کرنے اوراس کے لئے تیاری کرنے سے) اعراض کئے ہوئے ہیں و اوران کی عقلت بہا تک بڑھ کئی ہے کہ اُن کے یاس اُ سے رب كيطرت سے جوتصيحت ماره رحسيطال اسكے أتى ہے د بجائے اسكے كدائ كو تعنقر ہوتا) ليسكواليے طور سے سنتے ہیں کہ داس کے ساتھ ہیشی کرتے ہیں (اور) اُن کے دل (اصلاً اُدھر) متوجہ بہیں جتے اور ير توكيعيى ظالم (اوركافر) توك (آيس من يحيك فيكي سركوش كرتي بن داس لئة تبنين كه انكوابال ملام كاخوت تفاكيونك يخرس كفارضعيف ند تقي بلكه اس لئة كداسلام ك خلاف خفيدما أش كرك اسكوشاش یہ یہ ریعنی محرصلی المترعکتیمی محض مجیسے ایک دمعمولی) آدمی ہیں ربعنی نبی نہیں اور بہ حوایک دکسٹ ودِلام اكلام شنات بين اس يراعجار كاشهصراوراس اعجاز سے نبوت كاخيال مذكرناكيونكه وه حقيقت میں حرامیر کلام ہے) تو کیا (باوجوداس بات کے) پھر بھی تم جادد کی بات شننے کو رائے پاس مجاد کے حالاتكه تم راس مات كوخوب، جائة ربوجهة، يوسيني رصلى الشرعكيم كوجواب دين كاحكم والاد انفوں) نے دموافق عم مے جواب میں فرمایا کہ میرادب ہر بات کو دخواہ اسمان میں جوار دخواہ أين من ن و ادرخواه ظا مربويا حقى بوخوب) عانا باوروه خوب سنن والا اورخوب الناخ والا رسو تتصار سے ان وال کفریبر کو میں جا نتاہے اور تم کو نیوب سنرا دیکااور آنھوں نے کلام تن کو طرق جاد و كهني يواكتفانهي كيا ، بلكه يول رسي ، كهاكه بيرقران ، پريشان خيالات بين دكه واقع بين دلكش مجی بنیں) بلکہ داس سے بڑھ کر یہ ہے کہ اُتھوں نے دلینی بیٹیرنے) اس کو دقصداً واختیاراً اپنے دل سے) تراش لیاہے (اور خواب کے خیالات میں تواٹسان قدرے بے اختیار اور معذور اور مبتلائے اشتباہ بھی ہوسکتا ہے اور بیرا فترار کھو قران ہی مے ساتھ فاص نہیں) بلدیہ توایک شاعر عص بین دان کی تمام باتین ایسی بی تراشیده ادرخیالی بوتی بین - خلاصه بیرکدر شول نبین بی ادر

یڑے میرعی دسالت کے ہیں) توان کو چاہئے کالیمی کوئی (بڑی) نشانی لاویں جیسا پہلے کو گئے سول بنائے تختے داود پڑے پڑے بھڑات ظاہر کئے اس وقت ہم دسول مانیں اودا بیان لائیں اور یہ کہنا بھی ایک پہانہ تھا ور ندانبیا دِسابقین کو پھی مذمانتے مقصی تعالی جاب میں فراتے ہیں کہ) اُن سے پہلے کوئ بستی والے جن کو ہے ہلاک کیا ہے ریا وجودان کے فرما تبنی مجزات ظاہر، دجانے کے) ایمان نہیں لائے سوکیا یہ لوگ دان منجزات کے ظاہر بونے ہے، ایکان لے آؤیں کے داورائسی حالت میں ایمان نہ لانے ہرمنداب نا زل ہوجا دیکا اس لئے ہم وہ مجزات ظاہر نہیں فرطتے اور قرآن مجزہ کافی ہے) اور (رسالت کے سعلق جوان كايشجه به كدرسول بشريد م ونا جائية أسكاجواب يدسه كدى بم في ات سقبل صرف ا دُمیوں ہی کو پینچیر ٹبایا ہے جن کے پیس ہم دحی بھیجا کرتے تھے سو راسے مشکرو) اگرتم کو (بدیات معادم من إو توابل كتاب سے دريافت كرلو ركيو تك يه لوك اكرج كافر بي مكر خيرمتوا ترميس راوى كاشاما يا تفتر ونا بشرط منهي، يحقرتم أن كواينا دوست يجصة موقوعتها الاز ديك في بات معتبر موتي جاسي أور داسی طرح دسمالت مصنعلتی جواس شبصری دوسری تقریر ہے کہ رسول فرشتہ ہونا جاہتے اسکا جواب یہ ہے کہ ہم نے ان دسولوں کے دجو کر ترجی ہیں، ایسے بدن نہیں بنائے تھے جو کھا نا مرکھا تے ہوں ربيني فرشته مذبايا تقا) اور دير لوك جوات كى وفات كا مظارس خوشيال منارب ين تقوله تعا كَتْكُرُ بْقُنْ بِهِ رَبْبُ الْمَنْوُنِ كَذَا فَى المَعَالَم، يه وفات بي منا فى نبوت نبي كيونك، وه وكرشة حضرات ربھی دنیامیں ہمیشہرسے والے بنیں ہوئے دیس اگر آپ کی بھی دفات ہوجائے آو نبوت میں کیا عراض لازم آیا، غرض یہ کہ جیسے پہلے رسول سے ویسے کا آپ بھی ہیں اور یہ توك جس طرح آب كى تكذيب كرتے بين اسى طبح ان حضرات كى بھى أس زانے كے كفار نے تكذيب كى) يهر يمينے جوان سے وعدہ كيا تفا (كه مكذبين كو عذاب سے بلاك كريس كے اور تم كو اور مُومنين كو مفوظ رکھیں گے ہمنے اس (وعدہ) کوسیاکیا لینی ان کواور تین کو (نجات دینا) منظور ہوا (اُس عذاہے) ہم نے نجات دی اور داس مذاب صر داطاعت، سے گزرنے والوں کو ہلاک کیا (سوال کوکوں کوورنا ما) اسے منکرداس کازیب کے بعدتم مرکز نیاوا فرت میں عذاب اوے تو تعجب نہیں کیونکہ) ہم تہاہے یاس اليى تتاب جيج يحيين كماسين تمهارى نفيحت ركافي موجود يهيكيا (باوجود اليتيبليغ موغلت عصر مجى تم بنين عصة (اورنبين مائة)-

معارف ومسائل

ا شورهٔ انبیایی فضیلت حضرت عبدالله بن مسعود را فرات بین که شورهٔ کوشف اور متریم اور اطالته اور انتظیاریه چادون شورتین نزول سے اعتبار سے ابتدائ شورتین اور میری یه قدیم دولت اور کمائی بین

معادف القرآن جسندهم

مِن كى جميشة حفاظت كرتا مول (قطبى)

آفتون بالتارسيسا المحكمة الين وه وقت قريب اكيا جبكه توكون الت التحاكات الماحات الباجاديكام الداس عند المسكافي المراحة المراحة

مقصوداس آیت سے عفلت شعار لوگوں کومتننبر کرنا ہے جبیں سب تموّی دکافر داخل ہیں،کہ دنیا کی خواہشات میں شعول جوکراس صاب کے دن کونہ مجتلا تیں کیونکہ اس کو مجقلا دبیناہی ساری

خرابیوں اور گنا ہوں کی بنیاد ہے۔

مَایَاتِیْهِهُ مِنْ وَکَمِیْنَ قَرَیْقِهُ مِنْ کَرِیَّهِهُ مِنْ کَرِیَّهِ مُنْ کُریِ اسْتَمْعُونُ کُوهُمُ کَری جولوگ آخرت اور قبر کے عذا ہے عفات اور اُس کے لئے تیاری سے اعراض کرنے والے ہیں یہ اُن کے مال کا مزید بیان ہے کہ جب ان کے سامنے قرائ کی کوئ نئی آئیت آتی اور پُری جاتی ہے قووہ آکو اس حالت میں سُلنے ہیں کہ کھیں اور بہنی مٰزاق کرتے ہیں اور ان کے دل انٹر سے اور آخرہ سے باکل عافل ہوتے ہیں ایک یہ مُزاد کھی ہوگئ ہے کہ قرائ کی آیات سننے کے وقت یہ اپنے کھیل اور شغل میں عافل ہوتے ہیں اگر ہے تھیں اور شغل میں اس طاح گئے دہتے ہیں قرآن کی طوف کوئ توجہ نہیں دیتے اور یہ منی بھی ہوسکتے ہیں کہ خود آیا ہے قرآن کی سے کھیل اور شنی میں اور بہنی میں ہوسکتے ہیں کہ خود آیا ہے قرآن کی مواسلہ کرنے گئے ہیں۔

آفتاً عُوْنَ السِّحْوَ وَ آنَاهُوَ تَبُهُورُونَ ، بِعِنْ يہ لوگ البرين آہستہ آہستہ سرگوشی کرکے بیہ

ہے ہیں کہ بہ جوا ہے کو بی اور درسول کہتے ہیں یہ تو ہم جیسے ہی انسان ہیں کوئی فرشتہ تو ہیں نہیں کہ

ہم اُلی کی بات مان لیں اور کھر اس کلام البی کو جو اُلی کے سائٹ بڑھا جاتا بھا اور اس کی حلاوت

د بلاغت اور دِلوں میں تا شرکا کوئی کا فربھی انکار مذکر سکتا تھا اُس سے دوگوں کو ہٹانے کی صورت میں کا کہ اس کو سح اور جادو قرار دیں اور پھر گوگوں کو اسلام سے روکے کے لئے بیہیں کہ جیستم مجھ گئے

کہ یہ جا دو ہے تو پھر اِن کے پاس جانما اور یہ کلام سننا دانشندی کے فلاف ہے شاید گھنے تو اُلیسی ایستہ اسلے کرتے ہے کہ مسلمان میں گے تو اُن کی احمقانہ طبیس کا بول کھولدیں گے۔

ایستہ اسلے کرتے ہتھے کہ مسلمان مُن ہیں گے تو اُن کی احمقانہ طبیس کا بول کھولدیں گے۔

ایستہ اسلے کرتے ہتھے کہ مسلمان مُن ہیں گے تو اُن کی احمقانہ طبیس کا پول کھولدیں گے۔

ایستہ اسلے کرتے ہتھے کہ مسلمان مُن ہیں گے تو اُن کی احمقانہ طبیس کا پول کھولدیں گے۔

ایستہ اسلے کرتے ہتھے کہ مسلمان مُن ہیں گے تو اُن کی احمقانہ طبیس کا پول کھولدیں گے۔

ایستہ اسلے کرتے ہیں اسی لئے اسکا ترجہ بریت ان خیالات سے کیاگیا ہے دینی ان محکرین نے اول تو تو تال کو شامل ہوجا تے ہیں اسی لئے اسکا ترجہ بریت ان خیالات سے کیاگیا ہے دینی ان محکرین نے اول تو تال تو

حادث القرآن جسكدشم مورة الانسار ١٠١٠ قران كوجا ددكها بهرأس سے آتے براسے تورینان واب لینے لکے بھراس سے آتے بڑھے تو كہنے گئے ب توفداتعالیٰ پرافتراراور بہنان ہے کہ بیاسکا کلام ہے پھر کہنے گئے کہ اصل بات یہ ہے کہ بیرکویُ شاع أدّى ہے شاعرانہ خیالات اسکے كلام میں ہوتے ہیں۔ فَلْيَا أَيْنَا بِالْيَافِي السين الربير واقعى بى ورسول بي توبهارك ما يكي بوسة فاص مخزات دكفلائي اس محجواب مين تعالى نے فرمايا كہ بھيلى اُمتون ميں اسكا بھى تجربدا ورمشا پرہ ہوجيكا ہے كہ مس طرح كا معجزه أخهول نيخود طلب كياا لتترك دسول كي يا تقول و بي معجزة ساشخة كيا مكروه بهرسى إيمان ندلائ ا دو منه ما تھے مجزے کو دیکھنے کے بعد تھی جو قوم ایمان سے گریز کرے اسکے لئے اللّٰر کا قانون یہ ہے کہ دُنیا ہی میں عذا الذن كرك ختم كرد يحاتى ب اورجونكم أمّت مرحومه كوحق تعالى نے رسول الله صلے الله عكي الم كلاء میں دنیا کے عذاب عام سے محفوظ کر دیا ہے اس لئے اُن کو اُن کے ما بھے ہوئے معجزات دکھلاناصلحت نهيئة كم أفَهُ فُو مِنْ أَن مِن اسيطرت اشاره به كركيا منه مانك معجزه كود كيم كرب الناك آئينك مُراديه كان ما كاكوى توقع منهي كياسكني اسلة مطلوبه مجرة منهي وكهاياجامًا -فَسْعَكُوا آخُلَ الذَّ كُونُ مُنْ تَعُولًا تَعَلَّمُونَ وابل الذكركُ مُراداس جَكَم علمار تورات و تجیل ہیں جورسول انٹرصلے انٹر عکیہ لم یرا بیان ہے آئے تھے مطلب پرہے کہ اگر تھیں بھیلے انبیار کاحال معلوم نهیں کہ وہ انسان تھے یا فرشتے توعلمار تورات دانجیل سے حلیم کراد کیو نکہ وہ سب جانتے ہی کہ ا نبیارسابقین انسان بی کی نوع سے تھے اسلے آگر ہیاں اہل الذکرسے طلق اہل کرا ہیں و و ونصاری ى مُراد موں توبعيد نہيں كيونكما معاملے كے بھی شاہريں خطاص كفنيرسي اسى احتمال كوا عتياد كرے تشريح کی گئی ہے۔ مسئلہ: -تفسیر قرطبی میں ہے کہ اس آیت سے معادی بواکہ جابل آدمی حیکوا حکا کا شریعیت معلی نہوں اُسپرعالمی تقلید واجب ہے کہ عالم سے دریا فٹ کرکے اسکے مطابق عمل کرے۔ قران كريم عربوں كے لئے عرت وفخرے است بال فيار ذكر كوكر اكاب سے مراد قران كاورذكر اس جگر بیعنے مشرون و فضیلت اور شہرت ہے ہے۔ تمرادیہ ہے کہ بیر قرآن جو تمہاری زبان عربی میں نا ذل برواتهما دے گئے ایک بڑی عزت اور دائمی شہرت کی چیز ہے تھیں اس تی قدر کرنا جا ہے جيباكه دُنيان ويهولياكه إلى عرب كوحق تعالي ني قران كى بركت سے سارى دنيا يرغالب اور فاتح بناديااوريور عالم مين الله كى عزت وشهرت كا دنكا بجاءاور يريمي سب كومعاوم بهك به عربوں کی مقامی یا قباطی یالسانی خصوصیت کی بناریرینیں بلکصرت قران کی بروات ہوا۔ اگرقران سرجوتما توشايد آج كوى عرب توم كانام لين والائمى بنرجوتا -

فلاصترتفسير

اورج نے بہت ی بستیاں جی کے دہنے والے ظالم دیبیٰ کافر) تھے تباہ کرڈالیں اوران کے بعد دوسری توم پیداکر دی توجب ان ظالموں نے ہمادا عذاب آثا دیکھا تواس بیتی سے بھاگنا تھوئے کیا (ٹاکہ عذاب نے جاویں جی تعالیٰ ارشاد فراتے ہیں کہ) بھاگومت اور اپنے سامان عیش اور اپنے مرکانات کی طرف واپس چلوشاید ہم سے کوئی پوچھے پاچھ دکہ تبرکیا گزری مقصوداس سے بطور تعرفی کے ان کی اجتمادت پر تربیبہ ہے کہ جس سامان اور مرکان پریم کو نا زھا اب نہ وہ سامان رہا نہ مکان نہ سی دوست ہمردکا نام و نشان رہا) وہ کوگ د نرول عذاب کے وقت کہنے لگے کہائے ہمادی کوئی ویا آگ ، جھوگئی ہو۔
ہمادی کم بی وست ہمردکا نام و نشان رہا) وہ کوگ د نرول عذاب کے وقت کہنے لگے کہائے تا اور کان کریا جست کوئی ہو۔

معارف ومسائل

ران آیات میں جی بیتیوں کے تباہ کرنے کا ذکر ہے بعض مفترین نے ان کومین کی بستیال حضوداد اور قال بہ جہاں اللہ تعالی اللہ قرار دیا ہے جہاں اللہ تعالیٰ نے اپنا آیک دسکول بھیجا تھا جس کے نام میں دوایات مختلف ہیں۔ بعض میں موسلی بن میشا اور بعض میں سنعیب ذکر کیا گیا ہے اور اگر شعیب نام ہے تو وہ مدین والے شعیب علیا اسلام کے علاوہ کوئی اور ایں ان کوگوں نے اللہ کے دسکول کو قتل کر ڈالا۔ اللہ تعالیٰ نے ان کو ایک کو ایک کافر با دشاہ مجنب نصر کے ہا تھوں تباہ کرایا۔ بُختِ نصر کو ان پرمسلط کر دیا جیساکہ نی اسرائیل

٢٤:٢١ مُورة الانبيار ٢١:٢١

معارف القران جسيدهم

نے جب فیل طین میں بے واہی اختیاد کی توان پر بھی نجنب نصر کوسلط کر کے سزاد تگئی تھی مگر صاف بات یہ ہے کہ قسران نے کسی خاص میں کو معین نہیں کیا اس لئے عام ہی دکھا جائے اسمیں بیمین کی مبتیا بھی داخل ہوں کی خلافہ اغلقہ

زمین کو اور جو کوان کے بی ب کھیلے ہوئے قو بنالية الم اين ياس لوں بنیں پر ہم چھینک مارتے ہیں ہے کو جھوٹ پر سے وہ اسکا سر محدد والناہے محصورہ جانا رہتا ہے علفظابى بالن بالون عجم بالاتير اور اس کاہے جو کوئ ہے اتحال اور آمیں م کیا تھیرائے ہیں اٹھوں نے اور معبود كر ده جلا أتفايل ك ال مروه بهت اوگ بنین مجمعة یک بات

کل

سور در العزار جرات من المراد المراد المراد المراد المراد العزار المراد المراد

فلاصترتونير

معارف القرآن جسيلة

جنتے کچھ اسمانوں اورزمین میں ہیں سب اسی کے دملوک) ہیں اور دان میں سے) جوالتر کے نز دیک دیا مقبول دمقرب) بی دان کی بندگی کی پیکیفیت ہے کہ) وہ اسکی عبادت عادینیں کرتے اور نہ تھکتے ہی ر بلکہ ہشب وروز دانشری سبیح دوتقدیس سرتے ہیں دسمسی وقت ہوتوٹ نہیں کرتے (جب انکی ہے حالت ہے تو عام مخلوق توکس شمار میں ہے میں لائتی عبادت کے دہی ہے اور حب کوی و دسراایسانہیں توسیراسکاسٹریک بجھناکسی معقلی ہے کیاد با وجودان دلائل توحید کے ان لوگوں نے فدا کے سواادرمعبود بنار کھے ہیں ریالخصوص ازمین کی چیزوں میں سے (جوکہ اور سی ادنی تراور نازل تر ہی جیسے تھریامور نیات مے ثبت ، جوکسی کو زندہ کرتے ہیں ویعنی جو جان بھی نہ ڈال سخت اجواب عاجز کب معبود ہونے قابل ہوگاادرا زمین رمیں یا) آسمان میں اگر انشرتعالی کے سواکوئ ا درمعبود (واجب الوجود) ہوتا تو دونوں (کبھی کے) درہم برہم جوجاتے دکیو تکہ عادة دونوں کے ادادوں اور افعال میں تزاتم ہوتا ایک دوسرے سے کاتے اور اس کے لئے نساد لازم ہے لین فساد واقع نہیں ہے اس لئے متی دمعبود کھی نہیں ہوئے ، سو (اِن تقريرات سے ثنابت ہواكہ الشرتعالی جوكہ مالک ہے عرش كا أنّ أمور سے ياك ہے جو كھيرير كوك بيان رد ہے ہیں دکہ تعوذ بالشراسے اوکہ شرکار بھی ہیں حالا تکہ اس کی السی عظمت ہے کہ) وہ جو کچھ کرتا ہے اس سے کوئ بازیر منہیں کرسکتا اور اور دن سے بازیرس کی جاسمتی ہے دلینی الشر تعالی بازیرس کرسکتا کو بين كوئى عظمت مين اسكامتر كيانبي موا يمرمبوديت بين كوى كيي شركيه بوسخنا ب، يها شك بطور ابطال اورنقفن واستلزام محال كے كلام تھا آ كے بطور سوال اور منع كے كلام ہےكہ كيا غدا كو تھي در را تفول فے اور میں ارکھے ہیں وان سے کہتے کہتم اپنی دلیل واس دعویٰ ہر) پیش کرود بہاں تک تو سوال اور دلیل علی سے سرک کا ابطال تھا آگے دلیل نقلی سے اندلال ہے کہ) یہرے ساتھ والوکی کتاب د بعنی قران ادر مجھ سے پہلے لوگوں کی تنا بیں دلینی تو راۃ وانجیل وزبور) موجود ہیں رجن کا صدق ادزنزل من الله يدنا دليل عقلى سے تابت ہے اور اُوروں میں گو سخر بیف ہوی ہے محرقرات میں تحریف کا حتمال نہیں ، بس جوضمون ان کستب کا قران سے مطابق ہوگا وہ بقینیا صحیح ہے اور ان سب داد کل مذکورہ کا تفتضا يرتفاكه بيرتوك توحيد كے قائل ہوجاتے نيكن بھرتھي قائل نہيں) بلكه ان بيں زيادہ دہی ہيں جو امرحق كالفين بنین کرتے سو داسوجہ سے) وہ داسے قبول کرنے سے) اعراض کررے بیں اور دیہ توحید کوئ جدید بات نہیں جس سے توقیش ہو بلکہ شرع قدیم ہے جینا بخیر ہم نے آپ سے پہلے کوئی ایسا ہی بہر نہیں جیجا جسکے یاس ہم نے سروحی نرجیجی ہو کہ میرے سواکوئ معبود (ہونے کے لائق ، نہیں نیں میری (یی) عبادت كياكروا دريد (مشرك) لوك (جوبي ان مين بعض) يُون كِنتة بين كدر نعوذ بالشر) الترتعالي في فرشتو کو) ادلاد بنا رکھی ہے (توبہ توبہ) وہ اللہ تعالیٰ اس سے پاک ہے داور وہ فرشتے اسکی ادلاد مہنیں ہیں) ا بلکه دا سے ، بندے ہیں رہاں) معز ز (بندے ہیں اسی سے بےعقلوں کو اشتباہ ہوگیااور آ کمی عبد بن

سورة الإنبياء ٢١: ٢٩ سُعادت القرال ج.

اور تکومیت اورا دب کی میکیفیت ہے کہ) وہ اس سے آگے بڑھ کر مات نہیں کرسکتے ربکہ منظر کا مہتد اوروہ اُسی کے محم مے موافق عمل کرتے ہیں واس کے فلاٹ نہیں کرسکتے کیونکہ وہ جانتے ہیں کہ) اللہ تعالیٰ ان كے الكے تھلے احوال كو دخوب) جانتا ہے ديس وظم ہو كا درجب تھم ہوگا موا فق عمت كے ہوگا اس لئے نہ علی مخالفت کرتے ہیں مذقولی مسابقت کرتے ہیں) اور دان کے اوب کی بیکیفیت ہے کہ) وہ بجزاس دیخص کے لئے دشفاعت کرنے کی غداتعالی کی اون کو اورکسی کی سفاکش نہیں رسکتے اور وہ سب اللہ تعالی کی ہیت سے ڈرتے ہتے ہیں اور (بہتر بیان تھاان کی معاوبیت اور کی کیست کا۔آگے بیان ہے اللہ تعالی کی غالبیت اور حاکمیت کا ، گو حاصل دولوں کا متقادیج بعینی) ان یں سے بوض ر بانفرض بول كي كر دنعو دبالله من علاده فدا كمعبود إون سويم اس كومزا محيم دي ك دادد ، ہمظالموں کوالیسی ہی سزا دیا کرتے ہیں ریعنی غدا کاان پر تورانس ہے جیسے اور مخلوقات پر ایھر وہ فداکی اولادیس کے لئے فدا ہونا صروری ہے کیے ہو تھے ہیں)۔

معارف ومسائر

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءُ وَالْوَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمُ الْعِيدِينَ ، لِينَ بَهُم آسَان اور زمين اوران دونوں کے درمیان کی چیزوں کو لعب اور کھیل کے لئے نہیں بٹایا - پھیلی آیتوں میں بعض بستیوں کو تباه دیلاک کرنے کا ذکراتیا تھا اس آیت میں اشارہ اس بات کی طرف ہے کہ جس طرح زمین واسما اورأن كى تمام مخلومات كى تخليق بڑى بركى اہم حكمتوں أور كحتوں يرمبنى ہے جن بستيوں كو تباه كيد كياأن كاتباه كرنا بمي مين حمت تقا- اسمضمون كواس آيت بيس تعبيراس طرح كياكياكه بيرتوجيد يا دسالت محمنكركيا يهادي قدرت كامله ا ورعلم وبصيرت كي ان نمايال نشانيول كوچوز مين وآسما کی تخلیق میں اور تمام مخلوقات کی صنعت گری میں مشاہرہ کی جارہی ہیں دیکھتے سمجھتے نہیں یا سیجھتے ہی كريم نے يرسب جيزي فضول بي محض كھيل كے لئے يبداكى ہيں-

لَاعِينَ ، لعب مَثْنَق مِي، لعب اليكام كوكها جاما محس سكوى عمقصد تعلى ش يو (داغب) اورامواس كام كو كهتين سيكوي سي ما غلط مقصدي ندموه فالى دقت كزارى كامشغله بنايا جا منكرين اسلام جورمول الشرصل الشرعكية لم اورقراك براعتراض اورتوحيد كاأ لكاركرتي بن قدرت كى العظیم الشان نشانیوں کے با دجو دنہیں مانے تو اُن کا پیمل کو یا اسکا دعویٰ ہے کہ بیسب چیزیں فضول ہی کھیل کے لئے بٹائ گئی ہیں ، اان سے جواب میں بیدار شاد ہوا کہ بیکھیل اور فضول نہیں ذرا مبھی غورو فکرسے کا او توكأنهات كے ايك ايك ذرة ميں اور تدرت كى ايك ايك صنعت ميں سزارون حمتيں ہيں اورسب كى سب معرنت حق سحان اوراس کی توحید کے خاموش سبق ہیں۔ م ہرگیا ہے کماززیں رویدی وغلاش کیا گوید

معادف القرال ج

٢٩:٢١ حورة الانبيار ٢١:٢١

کو اُ اَدُوْنَا اَنْ نَتَّخِفَ لَهُوَّا لَا شَخَفُ نَاهُ مِنْ لَدُهُ ثَلَانْ کُنَّا فَعِلِینَ ، اینی اَکریم کوی شغله بطورکھیل کے بنانا ہی چاہتے اور ہمیں یہ کام کرنا ہی ہوتا تو ہمیں انکی کیا ضرورت تھی کہ زمین واسمان غیرہ بہیداکریں بیرکام اپنے پاس کی چیزوں سے ہی ہوسکتا تھا۔

عربی زبان میں حرف آئے۔ فرصنی چیزوں کے لئے بولا جاتا ہے جسکاکوئ وجود نہ ہواس جگہ تبی اسی
حرف سے میضمون بیان ہوا ہے کہ جو تہت ان تمام علویا اور سفلیات اسمانی اور زمینی مخلوقات اور مصنوعات عجیبہ کولہو ولعب سجھتے ہیں کیا وہ اشنی بھی عقل نہیں رکھتے کہ اتنے بڑے بڑے کام لہو ولعب کیلئے نہیں ہوا
کرتے بیرکام جس کو کرنا ہو وہ اول نہیں کیا کرتا ، اسمیں اشارہ اسطونے کہ لہو ولعب کوئی گا بھی جی تعالے
کر عفلہ تب شاہ تدیمن جدیدان میں اللہ سکے رہ حصفہ داران میں سرمی رمشعت رہوں

لى عظمتِ شان توبهبت بلند و بالاسكيرى التصمعقول آدمى سے بي متصور نهيں-کہو کے مہلی اور معروث معنی بہرکاری کے مشخلہ کے بین اس کیمطابق مذکورہ تفسیر کی گئی ہے یعین حضرات مفسرين في فرما ياكه نفظ البوكمجي ميوى ك ليرا ولاد ك ليري بولا جانا ب اوربهال برمراد ليحائة تومطلب آيت كايبود ونصاري يرددكرنا بوكاجو حضرت مسح ياعز يمليها التلام كوالشركا بيستا كېتى بىن كەلگرەمىي اولا دىرى بنانى بوتى توانسان مخلوق كوكيوں بنا تىلىنىغ ياس كى مخلوق بىت بناكىيتے- دانشەملىم بَلْ نَقَيْنَ ثُ بِالْحَقِيِّ عَلَى الْبَاطِلِ ثَبَنَ مَعْهُ فَإِذَا هُوَ زَاهِنَ ، قَرْت مِ نَعْيَى الْبَاطِلِ ثَبَنَ مَعْهُ فَإِذَا هُوَ زَاهِنَ ، قَرْت مِ نَعْيَى الْبَاطِلِ ثَبَنَ مَعْهُ فَإِذَا هُوَ زَاهِنَ ، قَرْت مِ نَعْيَى الْبَاطِلِ ثَبَنَ مَعْهُ فَإِذَا هُوَ زَاهِنَ ، قَرْت مِ نَعْيَى الْبَاطِلِ ثَبَنَ مَعْهُ فَإِذَا هُوَ زَاهِنَ ، قَرْت مِ نَعْيِي يهينك مادنے كى يومع كے معنے دماغ يرعزب لكانے كي يور زائق كے منے جانے والا اور ب نام دنشان موجانيوالا مطلب آيت كاير سے كه زمين واسمان كى عجيب غريب كائنات مم نے تعيل كے لتے نہیں بلکہ ٹری محکمتوں پرمینی کرکے بنائ ہیں اُن میں سے ایک بیھی ہے کہ اُن کے ذریعہ حق و باطل كاانتياز بوتاب بمصنوعات قدرت كامشابده انسان بوحق كيطرف السي رمهري كرتا بحكه بإطل اسے سامنے مظہر نہیں سکتا۔ اسی ضمون کی تعبیر اسطرح کی گئی ہے کہ حق کو باطل کے اور مھیا ک مادا جانا ہے اس سے باطل کا دماغ رجیجا انکل جانا ہے اور وہ بے نام ونشان ہو کررہ جاتا ہے۔ وَعَنْ عِنْدَاكُ لَا يَسْتَكُيرُونَ عَنْ عِبَادَيْمَ وَلَا يَسْتَنْسِمُونَ ، يَعِيٰ بِمارے دوبدے بمادے یاس ہیں تراداس سے فرشتے ہیں وہ ہرد قت ہماری عبادت میں بغیرکسی وقعہ کے ہمیشہ مشغول ہتے ہی الرتم بمارى عبادت مروتو بهارى خدائ ميس كوئ فرق نبيس تا - انسان چونكه دوسرول كوي ي حال برقیاس کرنیکا عادی اور تو گر ہوتا ہے اسکو دائمی عبادت سے دو چیڑی مانے ہوگئی ہیں۔ ایک توبیرکدوہ سی کی عبادت کرنے کو اینے درجراور مقام کے خلاف سجھ اسلے عبادت کے یاس ہی نہ جائے دوسرے يركم عبادت تؤكرنا جائتا ہے مكردائى سلسل اس كئے نہيں كرسكتا كرىمقىقنائے بېتربيت وه تقوراكام كرك تعك جاما ہے اس ارام كرنے اورسونے كى صرورت بيش آتى ہے اسلے آخر آيت

یں فرشنتوں سے ان دوان موانع کی نفی کردی گئی کہ وہ نہ توسماری عبادت سے استکیاد کرتے ہی

سُورة الانبيار ٢١: ٢٩ فارث القسران حسلتم كهاسكوا پنی شان کے خلاف جانیں اور نہ عبادت کرنے سے سے دقت تھکتے ہیں اسی صنمون کی تکمیل بعب كى آيت مين اسطرح فرماى يُسَيِّحُونَ اللِّيلَ وَالنَّهَا دَلَا يَفْتُونَ ، بعِنى فرشْتِ رات دن جَعَرتِ رہے ہی وقت مصب بھی بنیں ہوتے۔ عبدالله بن حادث كہتے ہيں كميں نے كعب احبار سے يُوجِها كم كيا فرشتوں كوسيح كرنے كے سوا ادر کوئ کام نہیں، اگر ہے تو پھر دوسرے کاموں کیساتھ ہر دفت کی بینے کیے جاری رہی ہے۔ کعب نے فراياا ميرم بيتي كياتها الوي كام اورشفاريس سانس يسف و دكما باوركام كرفيين مخل وما نع موتا ہے حقیقت سی ہے کہ بیج فرشتوں کے لئے ایسی ہے جیسے ہماداسانس یا آئکھ حمیکنا کہ سے دونوں چیزیں ہروقت ہرحال میں جاری رہی ہیں اور کی کام میں ما نعے اور محل کہیں ہوئیں (قطبی بوجیدا) آيم ا تَحْفَذُ وْ ٱللَّهَ مُعْمِنَ الْحَرْضِ هُمْ يُنْشِرُونَ ، اسين مشركين كى جمالت كوكى طرح ظاہر فرمایا ہے۔اول یہ کہ یہ کیے احمق ہیں کہ خدا بھی بنایا توزمین کی مخلوق کو بنایا یہ توعلوی اور آسمانی مخادفات سيبرطال كمتروا بتربي دوسرے يوكه عن كوفدا بنا ياكيا ان كواتھوں نے بير كام كرتے د مكھا ہے كروكسى كوز ندة كرتے اوراسيں جان ڈالتے ہیں معبود كے لئے تو يہ بات ضرورى ہے كہموت و المعيات خلائق السيح فيضمين الد-كة كان فيني آلهة ، يتوحيد كي دليل عادى معجوعام عادات كاعتبادي مبنى ہے اور دليل حقلي كيطرت بھي اشارہ ہے بن كي مختلف تقرير بي علم كلام كى كما بونيس مذكور ہي اوردلیل عادی:س بناریر ہے کہ اگرزمین واسمان کے دو قدرا اور دونوں مالک و مختار موں توظام رہے كرد د نوں كے احكام بورے بورے زمين واسمان ميں نا فدم د نے چاہئيں اور عادة ميمكن نہيں كر وحکم ایک دے وہی دوسرا بھی دے یا جس چیز کو ایک بیندکرے دوسرا بھی اسی کولیسند كرے اسك مجمي اختان اور اختلات احكام بونا ناكزير ہے اورجب دو خدا كان كے احكام زمين وأسمان مي مختاء ، موت تونيتيران دولول كف ادكسواكيا م - ايك فدا جامياً كراسوقت دن بود دوسراجابتا برات بوراي جابتا بي باكش بو دوسراجابتا بهانهو تو دونوں کے متونما داخلام س طرح جاری ہونگے اور آگرائی مغلوب ہوگیا تو مالک فختا راور فعدا ندد یا ۔ اس پر بیٹر بھے کر دونوں آپس میں مشورہ کر کے احکام جاری کیا کریں اس میں کیا ابعد ہے کے جوابات على كلام كى كتابونيس برى تفصيل سے آئے ہيں۔ اتن بات يہاں بھى جھ ليجائے كم اگردونوں مشورہ کے پاندہ و نے ایک بغیر دوسرے کے مشورے کے کوئ کام نہ کرسکے تواس سے بیلازم آ باہی كه انبين سے ایک بھی مالات نحتار نہیں، دونوں نا قص بیں اور نا قب خدا نہیں ہوسکتا اور شایداگلی الميت لا يُسْتَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُو يُسْتَكُونَ مِن بِي اسطون اشاره يا يا جامًا بِهَ كَرْجُونُ عَلَى قانو

ک

ن کی نشایوں کو دھیاں یں نہیں لاتے اور دہی ہے جس نے بنائے دات



معارف ومسائل

-U1915

اَدَ لَقْ يَرَا لَدِّنَ كُفَنَ وَ اس مِكَه نفظ روُّتِ بَعِنْ علم مِن خواه ده آئكهوں سے بچھكر حاصل ہو یا استدلال عقلی سے کیونکہ آگے جُوضمون آئر ہاہے اُسکا تعلق کچھ مشاہرہ اور دیکھنے سے ہے کچھ علم استدلالی سے ۔

آن الشّماؤية وَالْاَرْضَ كَا نَنَا رَنُقًا فَفَنَقَنْهُمَا النّفط رَبّق كَ مِعنى بندم و في اورفتق معنى الشّماؤية والأورفيق معنى الشّماؤية والأورفيق معنى كلم من انتظام اورائس كے معنى كلم مركم انتظام اورائس كے

بعارف القرآن جسيلة شم

نبانات بلکہ جادات میں روح ادر حیات محققین سے نزدیک بت ہے اور ظاہر ہے کہ پانی کوان سب چیزوں کی تخلیق دا یجادا ور ارتقار میں بڑاد فل ہے۔

ابن کشرنے اما التی سندسے بر دایت ابو ہریرہ دخ نقل کیا ہے کہ ابو ہریرہ دخ فر مایا کہ میں نے در مایا کہ میں نے در سول اللہ صلے اللہ عکیہ کم سے عرض کیا یا دسول اللہ میں جب آپ کی دریا دہ کہ آپ فرمایا کہ میں دل باغ باغ اور آئکھیں تھند کی ہوجاتی ہیں آپ مجھے ہر خور کا خلی کے باریمیں بتلا دیجے آپ فرمایا کہ جیز بائی سے بیدا کی گئے ہے اس کے بعد ابو ہریرہ دخ نے سوال کیا کہ مجھے کوئ ایسا حمل بتلا دیے ہے جب برعمل کرنے سے میں جنت میں بہنے جا دُں ، آجینے فرمایا ؛

سلام کرنے کو عام کرد رخواہ مخاطبی بنی ہو) اور کھانا کھانا گھانا کھانا گھانا کھانا گھانا کھانا ہجرض کرد راسکومی مدیت میں عام دکھاہے کھانا کھلانا ہجرض کو خواہ کا فر فاسق ہی ہو تواہے خالی نہیں) اور صلاحی کیا کردا در رائے کو تہجد کی نما ڈیڑ ھاکرد جب سب توگ موتے ہوں تو جنت میں سلامتی کیسا تھ داخل ہوجادگے

إفش السلام واطعم الطعام وصل الاس حام وقمر بالليل والناس نيام ثقراد خل الجنة بسلام تفي د به احمل وهان السنادعلى شرط الشيخين الخ

وَجَعَلْنَا فِي الْأَنْ مِنْ ذَوَاسِي أَنْ نَهِيْلَدَ وَهُوْ، نَفَطَ مَيْنَ عَرِي أَبِان مِينَ اصْطَالِي حَركت کو کہاجاتا ہے اور مُراد آیت کی یہ ہے کہ زمین پر بہاڈوں کا بوجہ حق تعالے نے اسکا توا ڈن برنسراد رکھنے کے لئے ڈالدیا ہے تاکہ وہ اصطرابی حرکت نئر کرکے جس سے اُس کے اُو پر بینے دالوں کو نقصان ہنچے یا س کی فلسفیا نہ تحقیق کہ پہاڑوں کے بوجھ کو زمین کے قرار میں کیا دخل ہے اُسی بہال خرورت منہیں ۔ تفسیر کہر وغیرہ میں اسکا مفصل بیان اہل علم دیکھ سکتے ہیں اور بقدر صرورت سور مُنل کی تفسیر میں حضرت کی مالامتہ رم نے تفسیر بیان اکھڑ آئ بین جی کھدیا ہے ۔

کُلُ فِیْ فَلَافِی بِیَنْ بَحُونَ لَفظ فلا دراصل ہردائرے ادرگول چیزکو کہاجاتہ ای دجہر سے چرفے میں جوگول چیزانگا ہوتا ہے اسکو فلکہ المغزل کہتے ہیں (رُوج) ادراسی وجہ سے آسمان کو مجی فلک کہدیا جاتا ہے۔ یہاں مُرادِشمس دقمر کی وہ مداریں ہیں جن پر دو حرکت کرتے ہیں۔ الفاظ اسراک میں اسکی کوئ تصریح نہیں ہے یہ مداریں اسمان کے اندر ہیں یا با ہرفضا دیں۔ حالیہ خلائ تحقیقات نے داضع کر دیا ہے کہ یہ مداریں فلار اورفضاریں اسمان سے ہہت نیجے ہیں۔

اس آیت کے ظاہر سے پیمبی تفہیم ہوتا ہے کہ آفتاب بھی ایک مدار پر حرکت کرتا ہے جدید فلاسفر پہلے اسے منکر تھے اب وہ بھی اسکے قائل ہو گئے ہیں۔ مزید تفصیلات کی بیر جگہ نہیں۔ دَالشّرشِحانہ وَالْحالِمُم

سورة الاغياد ٢١: ٢٨ و ده ده جاش الا ہم تم کو جا تختے ہیں بُرای ے اور بھلای سے آزیانے اورجہاں بھے کو دیکھا مشکروں نے تو کوی کام نہیں آن کو بھے سے الد ہماری طرف پھر کر آ جاد کے اور وہ رحمٰن سے نام سيامي شفف ہے جو عام ليتا ہے منہادے معددوں كا اب د کفلا ما موں تم کوا یی نشانیا جلدی کا آدمي 2 637 شددک سکیں سے ایے ستھ سے آ ر جان لیں یہ سنکر اسوقت کو کہ اور نہ اُن کو مدد بہنچ کی کھونہیں وہ آئے گی اُن پر ناگہاں بھرائے ہوئے ودے گی ہے منہ مجھے سکیں سے اس کو اور شاان کو فرصت سے کی الت بالى معمماكر نے دالوں بار تو کہہ کون میہانی کرتا ہے تہاری دات میں ادر يااع داسط وى مجود ي کران کو بچاتے ہیں ہمارے وا دہ اپنی بھی مرد بیس کر سے بصحيون صبل مَتَعْنَا هَوْ الرَّوَ اللهِ هُوَ اللهِ وَاللهِ هُو اللهِ عَنْ مَ رف سے رفاقت ہو کوئ بنیں برہم نے میش ریا اُن کو ادر اُن کے یا ب دادوں کو بہاتک کم بڑھ تی

الأ

1(=0.2

المرافع العَمُو الْعَارِ الْمَا الْم

فالمدتوسير

سُورة الانبيار ٢١: ٢٨

TAB

معادت القرآن مسلوشم

طلب برکہ زندگی اس کئے دے رکھی ہے کہ دیکھیں کیے کیے عمل کرے آجرد) اور اس طے او کے داور سرایک کواس دیں گئے لیں ا مرہم توموت اور ما بعدالموت کی ہوا اور زندگی محض عارضی بھریہ لوگ کسس پر ا ترات بی ادر چنیسری و فات پرخوشیال مناتے بی بیرنه بولکه اس مستعار زندگی میں دولت ایان وطاعت كما لينة جوان كے كام آتى اوراكٹا مامرًا عمال سياه اوراً خرت كى منزل بھارى كرد ہے ہيں دُّرِتَے ہیں) اور دان منکرین کی بیرحالت ہے کہ) بیکا فرنوک جب آپ کو دیکھتے ہیں تو بس آپ ہونی فرا فے لگتے ہیں داور آبس میں کہتے ہیں) کہ کیا ہی دصاحب، ہی جو تھارے معبودوں کا دیرای سے) ذکر کی تے ہیں دسوات برتو بتوں کے انکار کا بھی اعتراض ہے) اور نیو دی یہ لوگ د حضرت رحمان دحل ساماً اے ذکر برانکار داورکفر ، کیاکرتے ہیں وتواعراض کی بات تو درحقیقت یہ ہے اس لئے ان کواپنی اس حالت يراستهزاركرنا جابئة تقااودان كى برحالت ب كرجب سزائ كفركامضمون سنة إي جيساوير رى ذكر إداب النينا ترجعون توبوج كذبيك اسكا تقاصا كرتے بين كريسنوا جلدا جائے ادرب تقاضا ادرعجلت كيحه انساني طبيت كاخاصته آكثريهمي سيربس اسكاطبعي بهونا ايساب حبيه آ انسان جلدی بی (کے خمیر) کا بنا مدا (سے بینی عجلت ادر جلدی مث طے یہ لوگ عذاب جلدی جلدی مانکتے ہیں اور اسمیں دیر ہو-سے کا فرویہ تھا دی علطی ہے کیونکہ اسکا وقت م داسے وقت آ ہے پر ہم کو اپنی نشانیاں وقبر کی لینی سنرائیں) دکھائے دیتے ہیں، بس تم تجوسے جلدی مت مجاد و کیو تکہ عذاب و قت سے پہلے آتا نہیں اور وقت پر شانہیں ؟ اوربيرلوك رجب ميضمون شنة بي كروقت موعود يرعذاب آويكا تورسول اورمؤمنين سے يوں كتے بن كريد وعده كس وقت آوريكا اكرتم (وتوع عذاب كى خبرس) تحيير (تو توقف كام کا جلدی ہے کیوں نہیں واقع کر دیاجاتا۔ جسل ہے ہے کہ ان کو اس مصیب کی خبرنہیں جوالیسی بے فکری کی بائیں کرتے ہیں) کاش ان کافروں کو اسوقت کی خبر ہوتی جبکہ دائن کو سیاطرت سے دوزخ کی آگ کھیرے کی اور) بیرادک واس آگ کونداین سائے سے روک سکیں گے اور اینے يحصب اورندان كى كوى حايت كريكا ديني اكراس مصيبت كاعلم ودياتوايسى باتين ندبنات اوربيرة دنیایی می منداب نادی فرماتش کریسے میں سو بیرصرود تہیں کران کی فرماتش کے موافق عذاب نا ا آجادے بلکہ دوآگ د تو ، ان کو ایک مسا یکی سوائ کو برخواس کردے کی بھرندا س کے بٹانے كى اُن كو قدرت موكى اور مذان كو مهات دى جائے كى اور (اگروه توں كہیں كہ اگر بير عذباب آخرت ميں موعود مونے کی وجہسے دنیامیں نہیں ہوتا تواجھا دنیامیں اسکاکوی منونہ تو دکھلادو تو گو بقاعدہ

ک

مناظه منونه و کصلانا صرور نهی سیکن تبرعاً نمونهٔ کایتریمی دیاجاتا ہے دہ بیرکہ) آپ سے بہلے جو بمنغبر کرزے بی اُن کے ساتھ بھی دکفار کی طوٹ سے ہمسنح کیا گیا سوجی لوگوں نے اُن سے سخر کیا تھا اُن يدوه عذاب دا تع بوكياجس كے سائق وه استهزار كرتے تھے ذكر عذاب كہاں ہے بس اس معلى بوا كەكفرىوچىپ منداپ ہے بس اگر دنياميں وقوع منہو توآ نزت ميں ہوگا اور يەنھى اُن سے) كہديجة ذكه دنیامیں جوتم عذاہ بحفوظ ہوسویہ حفاظت میں حضرت رحمان ہی کررہا ہے اس میں تھی اُسی کا احسان اورولالت على التوحيد ہے اور اگرتم اس كوسليم بين كرتے تو محصر بتلاؤى كه وه كون ہے ورات اور دن میں رحان دے عذاب، سے تمعاری حفاظت کرتا ہو داور اس صفحون کا ملم تقضایہ تف کا توحید کے قائل ہوجاتے مگروہ ابھی قائل نہ ہوئے) بلکہ وہ توگ (ابھی پرستور) اپنے دب زحقیقی کے ذكر دتوحيد كے قبول كرنے سے دوكر دال دى بي ديال ہم مَنْ يَكَ كُو كَرُه كے مصداق كى توشيح كے لئے تصریحاً دریا قت کرتے ہیں کہ کیا اس کے یاس ہما رہے سواا درالیسے معبود ہیں کہ دعدائے کورسے اُن کی حفاظت کرلیتے ہوں (وہ بیجارے ان کی تو کیا حفاظت کرتے اُن کی بیجار کی ودر ماندگی کی توجیالت پر کھی وہ خود اپنی حفاظت کی قدرت بہیں رکھتے دسٹلا اُن کو کوئ توڑنے میوڑنے لگے تو مدا فعت بھی نہیں المسكة كقوله تعالى وَإِنْ تَيسُلُهُ أَهُمُ الدَّيَّابُ الْح بس منه ده أن كم معبود ان كى حفاظت كرسكة إيى الم منه بهارے مقابلین کوی اُن کا ساتھ اے سکتا ہے دا در بر لوگ با دجودان دلائل ساطعہ سے جوحق کو قبول نہیں کرتے تو یہ دجرنہیں کر دعویٰ یا دلیل میں کھ خلا ہے بلکہ داصل دجراس کی یہ ہے کہ میں نے ان کوا وراُن کے باب دادوں کو ر دُنیا کا)خوب سامان دیا یہاں تک کہ اُن بر داسی حاکمیں ' ایک عرصته دراز گزرگیاد کدیشتهائے پشت سے عیش ازام کرتے از ہے ہیں ہی کھا کھا کے غسرانے لكه ادرا بمحين يتفراكمين مطلب يهكران بي مين خلل غفلت كالميمين با دجود منتهات تشريين تكوینیه کے اتنی غفلت بھی ندمونا چاہتے جینا نجہ ایک امر مُنتِبّہ كا ذكركما جا ماہے وہ بیركه) كيا اُك كو ب نظر بہیں آتا کہ ہم دان کی، زمین کو (بذراجہ فتو حات اسلامیہ سے) ہرجہادطون سے برابر گھٹاتے جلے جلتے بیں سوکیا بیرلوگ (بیرتو قع رکھتے ہیں کہ رشول الشرصلے الشرعلی اور مؤمنین پر) غالب آویں کے دکیو مکر قرائن عادیہ اور دلائل تنزیبیہ تفق ہیں اُن مے مغلوب ادراہل حق کے غالب ہوتے جانے برتا دفتیکه شلمان اطاعیت فدا و ندی سے تھر ند موثریں اور حابت اسلام مرحیوثریں بس اسس امرمیں تأ مل کرنا بھی تبنیہ کے لئے کا فی ہے اگراس بریمی عناددجہالت سے و فوع عذاب کی فراتش كرين تو) آب كهديجي كرمين توصرت دى كے ذراجه سے تم كو دراتا بول رعذاب كا آنامير ي ے باہرہے) اور داکھ پرطریقیہ دعوت الی الحق کا اور بیرانذار کافی ہے مگر) یہ بہرےجبوقت وحق كى طوف مبلائے مالے كے واسط عذائے ورائے ماتے بس سنتے ہى نہيں وا دوطراق وضوح

ك

INA

بحادث القرآن حب

سُورة الانبيار ١٧٤ ١٧٢

یں تا ل ہی نہیں کرتے بلکہ دہی مرغی کی ایک شاقک عذاب ہی مانگے جاتے ہیں) اور دکیفیت عالی ہمتی کی یہ ہے کہ) اگران کو آیکے دب مے عذاب کا آیک جھون کا بھی ذرا لگجا وسے قو (سادی بہادری سے ہوجا وسے اور) یوں کہنے لگیں کہ ہائے ہماری بیخی دکیسی ہمارے ساھنے آئی) واقعی ہم خطا وار تھے دبس اس ہمت پر عذاب کی فرمائش ہے واقعی اُن کی اس شرادت کا تو یہی مقتصنا تھا کہ دُنیا ہی فیصلہ کر دینے مگر ہم ہرت می محتوں سے دُنیا ہیں سزائے ہوعود دینا نہیں چاہتے بلکہ اُخرت کیا ہما ورکسا کے اور سب کے اعمال کا وزن کر بھا ہے اور دوہاں فیا مت کے دور ہم میزان عدل فائم کریں کے داور سب کے اعمال کا وزن کر بھی ہوت کے داور سب کے باریخی ہو تو ہم اُس کو دوہاں کو اور اُس کا اور ہم صاب لینے والے کا فی ہیں تو ہم اُس کو دوہاں کا حضر کردیں کے داور اس کا بھی وزن کریں گے اور ہم صاب لینے والے کا فی ہیں دہمارے دیا سی وزن اور صاب کے بعد بھی سرائے مناسب کی ضرورت نہ دہے گی بلائمی پر سب فیصلہ دہمارے دیا ہی وزن کریں گے اور ہم صاب لینے والے کا فی ہیں ہوجا ویکا ایس وہاں وگوں کی مشراد توں کی بھی سزائے مناسب کا فی جاری کردی جا دے گی ہیں اور کے کہا دی کا فی جاری کردی جا دے گی۔

معارف ومسائل

وَمَا جَعَدُالِ بَنَتُم وَنِي فَعِيلَ الْمُعُلِّلُ مَا اللهَ آيات مِن كَفَاد وَسَرَمِي عَلَا الله وَعُود الأَدَهِ اللهُ عَقيد دن فَى جَبِرَصِمْرَت مِن عَلَى وَفِيرَا فَو فَدا فَكَا مَرْ فَي يَا فِرْسَتُون ا دَدَيَ كُو فِدا تعالَى فَا دلا دَكِما كَيا اللهُ كُمُ اللهُ فَي عَلَى مِنْ اللهَ كُمُ اللهُ فَي عَلَى مِن اللهُ فَي اللهُ وَاللهُ وَلِي وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَلِمُ وَلَا اللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَلِلهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَلِي اللهُ وَاللهُ وَاللهُ

16

موت كياجيزي إسماد فرمايا حُل نَفْس وَآثِفَةُ الْمَوْن ، لينى برنس وتكامزة كالنوالة

یہاں مُرا دہرنفس سے نفوس ارضیعنی زمینی جا ندار ہیں ۔ان سب کو موت آنالازی ہے نفوس ملاکھ اسیں داخل نہیں، اسیں اختلات ہے کہ قیامت کے دوز فرشتوں کو بھی موت آنے گی یا نہیں ہ بعض حضرات نے فرمایا کہ ایک لحظہ کے لئے توسب پرموت طادی ہوجاد بگی خواہ انسان اورنفوس ارضیہ ہوں یا فرسٹ اورنفوس ارضیہ ہوں یا فرسٹ اورنفوس سماویہ ۔ بعض حضرات نے فرمایا کہ فرشتے اورجنت کے حود و غلمان موت سے مستغنی ہیں۔ والشرائم (رویج المعانی) اورموت کی حقیقت جہور علمار کے نزدیک فرح کا جبوع نفری کا جبوع میں جو انسان سے سے بھل جانا ہے اورد و ح خود ایک ہم فرزانی تعلیمت ذی حیات متح کے کانام ہے جو انسان سے بھرک کا بام ہے جو انسان سے بھرک کے اس کوسو دلائل سے تابت کیا ہے (گروج المعانی)

نفظ فَذَ إِنْقَةُ الْمُونِ سے اشارہ اسطوف پایا جا کہ جرنفس موت کی فاص کی استادہ اسطوف پایا جا کہ جرنفس موت کی فاص کی استادہ اسطوف پایا جا کہ جزاہے اور پہ ظاہر ہے کہ رُو ح کا جیسا اتصال بدن کے ساتھ ہے اس کے کلفے کے وقت تکلیف اور الم کا احساس اطبعی ہے رہا بعض اہل اللہ کا یہ معاملہ کہ اُن کو موت سے لذت وراحت حاصل ہوتی ہے کہ دنیا کی تنگیوں سے نجات ہوئ اور مجبوب کہ بری ہوئی ہے کہ دنیا کی تنگیوں سے نجات ہوئ اور مجبوب کہ بری راحت اور طرح کی لذّت ہے جو مفارقت بدن کی طبی محبوب کہ بری منافی نہیں کیونکہ جب کوئ بڑی واحت اور بڑا فائدہ سا سے ہوتا ہے تواش کے سکیف کے منافی نہیں کیونکہ جب کوئ بڑی واحت اور بڑا فائدہ سا سے ہوتا ہے تواش کے لئے چھوٹی تکلیف بر دامشت کر نااتسان ہوجاتا ہے اس حنی کے لئی طرح سے جو مفارق سے خم ورنج اور میں ہوجاتا ہے اس حنی کے لئی طرح سے میں شوند ہم سے خم جہ استا دہ تو ہر دور ما بین اندر آ بایہ ما براویہ ما

اورمولانا رومی تے سرمایا م

درنج داحت شربی طابشہ بزرگ ، پر گردگلہ تو تیائے بیشی گرک درکیا۔ تو تیائے بیشی گرک درنیای برتکلیف وراحت آزمائش ہے و تیٹ کو نسٹی بالنشائی والفت کے فردیدہ انسان کی آزمائش ہے و تیٹ کو نسٹی مراد ہر فعلا ف طبع چیز ہے جیسے بھاری کرنج وغم ، افقروفاقہ اور خیرسے اسکے ہالمقابل ہر مرغوب طبع چیز ہے جیسے صحت و عافیت ، خوشی دراحت، غنام و ہمائی فیرہ میدونوں طرح کی چیز ہی اس دنیا میں انسان کی آزمائش کے لئے آتی ہیں کہ شریعی فلاٹ طبع انمور پرصبر کر کے اسکاحت اداکر نا اور خیروں پزشکر کرکے اسکاحت اداکر نا ہر فعل فیاٹ میں مرغو بنا طرچیز و نیزشکر کرکے اسکاحت اداکر نا ہر فیاٹ شریع ہے کہ کون اس پر ثابت قدم دہتا ہے کون بنہیں دہتا۔ اور ہزرگوں نے فرمایا کہ حقوق شکر ہر فیات قدم دہنا برصفر سے انسان کو نکلیف پرصبر کر نا آنا بھادی ہیں ہوتا جنتا فیاش عشرت اور آزام دواحت میں اسکاحت شکل ہے ۔ انسان کو نکلیف پرصبر کر نا آنا بھادی ہیں ہوتا جنتا فیش عشرت اور آزام دواحت میں اسکاحت شکل اور کی گرا داکر نے پر ثابت قدمی دہنا ہوتی ہے اس بنا پرحضر سے

متادف القرآن جسندشم

فاروق عظم نفرمايا:

ثبلین آیالمتراء فصبریا دبلینا بالشراء فلونصیر (دُرَح المعانی)

يعنى بم كليفون من مبتلاكة على أس برقو بم في مبركريا تيكن جبيادت المعنى من من المائة المعنى المركزيا تيكن جبيادت المعنى من من المركزية المائة المن المركزية المركزية

پر ثابت قدم ندره سکے۔

جلدبازی مذہوم اخیاتی الانسکان مِن عِجَیْل ، عِلی بین عِجلت اور جلدی کے ہے بی حقیقت کسی چیسنر کو انسکان مذہوم ہے قرائن کریم میں دو مری جگری اس کو انسانی اسکے وقت سے پہلے طلب کرنا ہے اور پر وصعت فی نفسہ مذہوم ہے قرائن کریم میں دو مری جگری اس کو انسانی کرودی کے طور پر ذکر فرمایا ہے وکاک الانسکان بجگری آبینی انسان بڑا جلد بازے ۔ حضرت موئی علایہ ام جب کو وطور پر اپنی قوم سے آگے بڑھ کرحی تعالی کی بازگاہ میں حاصر ہوئے تو وہاں بھی اس عجلت پر بقاب ہوا۔ اور انبیار وصلی اس عجلت پر بقاب ہوا۔ اور انبیار وصلی اس کے بالاے میں جو مسادعت اور انسابقت نی الخرات کو بطور مرح کے ذکر کیاگیا ہے وہ جلد بازی اور عجلت کے مفہوم میں داخل بنہیں کیکونکہ وہ وقت سے پہلے کسی جیز کی طلب نہیں بلکہ قت پر کھیڑ جیرات د حسات کی کوشش ہے والائن گا مگری۔

اورخیاق الدِنسان کی خیکی کا مطلب بیرہے کہ انسان کی طبیعت بین جی طرح کچھ دوسری کمز دریاں رکھ رکھی ہیں۔ انہیں سے ایک کمز دری مجلت کی بھی ہے اور جو چیز طبیعت اور جبلت میں داخل ہوتی ہے عرب اس کو اسی عنوان سے تعبیر کرتے ہیں کہ تیخص اُس چیز سے بیداکیا گیا جیسے سے عزاج میں غضہ نما لب ہوگا تو کہا جائے گا کہ یہ

اغضركا بنارداآدى --

مَّدُودِ يَكُورُ أَيْرِي المعين آيات سے مُرادوہ مِجْرات ادر مالات بين جورشول المترسط الشرطير وسلم المعرب اور كے صدق و حقانيت برشها دت ديتے بين د قرابي جيد غروه براغير مي تشانياں تَفَظِ طور پر فا برجو نين ، اور المجام كاراً ن سلما فون كا غلب برب كى آنكھوں نے ديكو لياجي كور بہتے زيا ده ضعيف و ذليل مجھاجا آيا تھا۔ قيامت ميں وزن اعمال الله و تفق الموازيق الموازيق

ها طاابوالفاسم لا لکانی کے اپنی صن میں حضرت اس سے دوایت بی ہے کہ رسول مترسے انترعکیے م نے فربایا کہ میزان پرا یک فرشتہ مقرر ہو گا اور ہرانسان کو اس میزان کے سامنے لایا جائیںگا۔ اگر آگئی کیوں کا پلہ بھاری ہوگیا آو فرشتہ منا دی کر بھاجس کو تمام اہل مشرشیں گئے کہ فلاٹ خض کا میاب ہوگیا اسہمی اسکو محروی نہیں ہوگی ، اور اگر نیکیوں کا پلہ ہکا دیا تو یہ فرشتہ منا دی کر بھاکہ فلان خض تھی اور محسروم ہوگیا اب محمدی کا میاب با مراد نہیں ہوگا۔ اور جا نظ ندکور نے حضرت حذیفہ ہوسے روایت کیا ہے کہ میہ فرشتہ جو میزان پرتھ کے

الدكاهزية جرال اين ال دقطبي)

صلا الشرعتي اورا برقى اورا برى نے حضرتِ صداقة عائشة است روایت کیا ہے اضوں نے کہاکہ بی نے موال اللہ صلاحات کے دوری آپ این اہل واولا وکو یا در کھیں گے توفر مایا کہ قیات میں مقام توایسے ہونگے کہ اُن میں کوئ کسی کو یا در کر بھی آپ این ایک وہ وقت جب میزان عدل کے سامنے وزن اعلا کے لئے حاصر ہوں گے جب مک نیزی معلوم بنا ہوجائے کہ اسکا پلڈنیکیوں کا بھا ری ہوایا لکا رہا کسی کوکسی کی یا و مذا و میں اور و مرامقام وہ ہے جب نام کا اعمال اُدلئے جا دیں گے جب کے میاست ہوائے کہ اسکا پلڈنیکیوں کا بھا ری ہوائے کہ اسکا پلڈنیکیوں کا بھا دی ہوائے کہ اسکا پلڈنیکیوں کا بھا دی ہوائے کہ اسکا پلڈنیکیوں کا بھا دی ہوائے کہ اسکا پلڈنیکی کے بندی میں آباد جو غذائے کی علامت کی یا بائیں ہا تھ یا گیشت کی طوف آباد جو غذائے کی علامت کی یا دیم کوئی کی کویا و نہ کر بھا (منظام دی)

ر طرف اشارہ معلق ہوتا ہے کہ فرقان تورات کے علاقہ کوئ چیز ہے والشراعلم

كى صفتين بين قرطبى نے اسى كو ترجيح دى ہےكيو بكدالفرقان كے بعد داؤكے ذريعہ فاصله كرنے ہے كس

سوَّدة الانبيار ٢١ : ٣ يم 191 5010121 نجادد بولے توہمایے یاس لایا ہے ہی بات يمركم والا أن كو مكرف الكرة لکے کس کے کیا یہ کام كرشايداس كى طرف ديوع كري طِلِينَ ﴿ قَالُوْ اللَّهِ T(617-0-11) وہ یونے ہم نے شنا ہے ایک جوان بنوں کر کھے کہا کرتاہے شايد يولانس يمريدكيات اشك اگر ده يو لخ سوال سے پوچھ لو يحرأ وندع الصاف الصاف

ي

سؤرة الانبسار ام اور وہ سے ہماری بندگی میں گے روسے

قىلام تۇھىسىر

اورج نے اس دارمانہ موسوی) سے پہلے اہراہیم رطیبالسلام کوان کی دشان کے مناسب ہو تی ہے عطافرمائ تھی اور ہم اُن رکے کمالات علمیہ طیابیہ کو خوب جانتے سے دفیق دہ ہڑے کا مل سے اُن کا دہ وقت یاد کرنے کے قابل ہے جبکہ اُتھوں نے اپنے باپ سے اور اپنی برادری سے دااُن کو بُت پری بری می مشخول دی کھو کری فرمایا کہ کیا (واہمیات) مورتیں ہیں جن دکی عبادت) پرتم ہے ہیں ہے ہودی پر پرگز قابل عبادت بنیں) وہ کوگ (جواب میں) کہنے گئے کہ ہم نے اپنے بڑوں کوان کی عبادت کرتے ہوئے دی کھا ہے ، داوروہ کوگ ما قبل ہے اس سے محلوم ہوتا ہے کہ بیہ دورتیں الائق عبادت کے ہیں) ابراہ ہم (علیاسلام) نے داوروہ کوگ ما قبل ہے اپ دا دے (ان کولائق عبادت کے ہیں) ابراہ ہم (علیاسلام) نے رائی خود ان ہی کے پاس ان کی معبود برت کی کوئی دلیل اور سر زنبیں ہے وہ قواس کے ضلال ہیں ہیں اورتی انبوں کی تقلید کرتے ہو جربے دلیل بیٹ ہوت ادہا م کے پیچھے چلنے دلے ہیں اسلیے تم ضلال ہیں ہیں اورتم الیوں کی تقلید کرتے ہو جربے دلیل بیٹ ہوت ادہا م کے پیچھے چلنے دلے ہیں اسلیے تم ضلال ہیں ہیں اورتم الیوں کی تقلید کرتے ہو جربے دلیل بیٹ ہوت ادہا م کے پیچھے چلنے دلے ہیں اسلیے تم ضلال ہیں ہیں اورتم الیوں کی تقلید کرتے ہو جربے دلیل بیٹ ہوت ادہا م کے پیچھے چلنے دلے ہیں اسلیے تم ضلال ہیں ہیں اورتم الیوں کی تقلید کرتے ہو جربے دلیل بیٹ ہوت ادہا م کے پیچھے چلنے دلے ہیں اسلیے تم ضلال ہیں ہو

معادف القران جسيله

چونکه اُن لوگوں نے ایسی بات شنی ندیمتی نہایت مسجب ہوکر) وہ لوگ کہنے گئے کہ کیاتم (اینے نز دیک) تی تا و سجھ کرے ہما دسے ستا ہے بیش کر ہے ہو یا دیوں ہی ول کی کرہے ہو، ابراہیم (علیالسلام) نے فرمایا کہ نہیں دول کی بنیں ملکرتی بات ہے اور صرف میرے ہی نزدیکنیں ملد واقع یں بی تی بات ہی ہے کہ سعبادت مے قابل بہیں) بلکہ تھادا رب (حصیقی جولائق عبادت ہے) وہ ہے جو تمام اسمانوں کا اور زمین کا رہے جس نے (علادہ تربیت کے) اُن سب راسما ہوں اور زمین اور اُن میں جو مخلوق ہے جیس لیصنام بھی اُخلی سب، کومیسداکیاا درمین اس (دعویٰ) بر دلیل بھی رکھتا ہوں دعقاری طرح کورانہ تقلیدسے کا مہنیں کرتا) ا در فداکی میں تحقادے ان بتوں کی گت بنا دُل گاجب تم دان تے یاسے) علے جا اُسے دَ ماکہ ان کا عاجز اور در ما نده مونا زیا ده مشاهر سی آعاد سے ، اُن توگوں نے سیجھ کر کدید اکیلے بھار مے نخالف کاردوا كياكر يكتة بين كي التفات ذكيا الوكا ورجل كئة) تو رأن كے جلے جانے مے بعد) اتفوں نے اُن بُتوں كو (تُبرُ وغیرہ سے توڑ پیٹھارکر) حکر الے مکر ایا بجزان کے ایک بڑے کت کے دجو جنے میں یا اُن توکوں کی نظے میں عمر في ين براتهاكه اس كوجهور دياجس سے ايك فيم كااستهزار مقصود تفاكه ايك كے سالم اور دومروں محقطع ويريد سے اين مؤتا ہے كہ كہيں أسى نے توسب كونہيں توڑا، بس ابتداء تو ايهام ہے كھرجب وہ لوک قطع درُرید کرنے والے کی تحقیق کریں گئے اور اُس بڑھے بُت پراحتمال بھی نہ کریں گئے توان کی طرف سے اُس تے بجز کا بھی اعتراف ہوجا دیکاا در حجت اور لازم تر ہوجا دیگی ۔ بس انتہارٌ یہ الزام دا فحام ہے بینی لاجھ آ كرنا ہے اور مقصود مشترك نبات مجزہے ، مبضح انكار اور ايك كا اُن كے اقرار سے ، غرض ايك كواش كحت سے چیوڈ کرسب کو توڑدیا) کہ شاید وہ توگ ابراہیم کی طرف (دریا فت کرنے کے طوریر) رجوع کری (ادر بحرده تقریر حوای مکر ربیری احقاق حق کرسکیں یون ده نوگ جو ثبت نماندیں آئے تو ثبتوں کی بُری گُتُ بن دیجی آبس میں کہنے گئے کہ یہ رہے ادبی کا کام) ہارے بنوں کے ساتھ کس نے کیا ہے اس کوئٹ ک نہیں کہ اُس نے بڑا ہی غضب کیا دیہ بات ایسے لوگوں نے اُوھی جن کواس قول کی اطلاع نہ تھی قالتی لَا يَكِينُ فَي اللهِ الوجريك وه اسوقت موجود نه بول مح كيو بكه اس مناظره ك وقت تمام قوم كالمجتمع بونا صرور نهبين اوريا موجود بهول محرشنا نهبروا وربعضون نے شن ليا بهو، كذا في الدرا لمنتورعن ابن معود تحواً منه) بعضوں نے کہا (جن کو اس قول کا علم تھا) کہ ہم نے ایک نوجوان آ دمی کوجس کوا براہیم كرك يُحادا جانا به ان بون كادبُرائ كيسانه) تذكره كرتے سنا به ريهر، وه دسب، توك ديا جنهو نے اول استفسار کیا تھا) ہوئے کہ (جب یہ بات ہے) تواچھااس کوسب آ دمیوں کے سامنے حاصر كرة تاكه (شايد وه اقراد كركے اور) وہ لوگ داسكے اقرار كے) كو اہ ہوجائيں ديھراتمام حجت كے بعد سزادی جائے جس یر کوئی ملامت نہ کرسکے ، غراض سب کے رویر ودہ آئے ادر اُک ہے) اُک لوگوں نے كهاكه كيا بمارے بتول كيسا تھ تم نے يہ حركت كى ہے اے ابراہيم ، أكفول نے دجواب ميں انسرماياك

رتم یہ احتمال کیوں نہیں فرض کرتے کہ یہ حرکت میں نے انہیں کی ، بلکہ اُن کے اُس بڑے دکرو) نے کا داو جب اس ہمیرمیں فاعل ہو نیکا احتمال ہو سکتا ہے تو ان صغار میں ناطق ہو نیکا احتمال ہی ہوگا) سوان رہی) ہے بوچھرلو (نا) اگر یہ بولئے ہوں (ادرا اگر بڑے بُت کا فاعل اس عمل کا ہو نا ادر دو سرے بُتوں میں بولئے کی طاقت ہو تا باطل ہے تو عجز ان کا محقار بن دیک مجھیا بھراعتماد النوبیت کی کیا دجگی اس پر وہ لوگ ایسنے بی میں سوچے پھر (آئیس میں) ہفتے گئے کہ حقیقت میں ہم ہی لوگ ناحق بر موداور اورا برائج میں ہوئے کا ایسنا عاجز ہو وہ کیا معبود ہوگا) پھر (سرمندگی کے مارے) اپنے سرول کو تھکا لیا حق بر بروہ کو ایسنا عاجز ہو وہ کیا معبود ہوگا) پھر (سرمندگی کے مارے) اپنے سرول کو تھکا لیا رابراہیم علیہ السلام سے نہا میت منحلوبانہ ہج میں ہوئے کہ یہ بُت رکھی ہوئے کہ ہوئے کہ اورائی ہو رہ کو کہ کا اس کا براہیم تم کو تو معلوم ہی ہوگئ اسوقت) ابراہیم تم کو تو معلوم ہی ہوگئ اسوقت) ابراہیم تم کو معبادت کرتے ہوجو تم کو نہ پھونی اور اس سے ناعلیت بمیری نفی بدرجۂ ادلی ہوگئ اسوقت) ابراہیم (طلیا اسلام ب نے دخوب خبر لی اور) فر بایا کہ دافس جب یہ ایسے بین کی تعبادت کرتے ہوجو تم کو نہ پھونی اور اُن پر ربھی جن کو تم خدا کے سوالو ہے تہ تو کیا تھا کہ اُن تم کی تربی کو تم خدا کے سوالو ہوئے ہوگیا تم از اس سے کہ توڑنے بھوٹر نے سے افرائو ہوئی اگر اُن تا مت تھوٹی اور اُن تا ہوئی جن کو تا کہ بیکا ما اُن ہی کا ہے اور تھریکا کو تھا ان کو تا بت ہوگیا کہ یہ کام اُن ہی کا ہے اور تھریکا کھر تواب بن نہ آیا تو اُن تھا م تقتون کے کہ کے کے ک

چو جخت نماند جفا جو نے را این بہرفاش درہم کشر دُونے را

عل

پیسلا ہوتے ہیں اور دوسرے لوگ ہی اس سے متنفع ہوسکتے ہیں ادردینی ہی کہ مکر ترت انہیار ملہم السلام دہاں ہوئے بن کے سٹرائح کی برکت دُور دُور عالم میں ہیں بیٹی بیٹی اُنھوں نے ملکت مکیطون با ذن اہلی ہجرت فرمائی) اور (ہجرت کے بعد) ہم نے اُن کور کی ربیٹا) اور لیفقو ب ہوتا عطا کیا اور ہم نے اُن کور کی کا مصدات عصمت ہو بشریت ان سب (باپ بیٹے ہوتے) کو (اعلیٰ درجہ کا) نیک کیا (اعلیٰ درجہ کی کی کا مصدات عصمت ہو بشریت میں خواص نبوت ہے ہی مُراد ہو ہے کہ اُن سب کو بنی بنایا) اور ہم نے اُن (سب) کو مقتدا ابنایا (بھوکہ ہوا ترم فیوا اور کو کہ مناصب نبوت ہے) کہ ہما ہے تھم ہو کہا اور دہ (حصوصاً) نماز کی یا بندی کا اور دُوہ اور اُرکھ کی اور دہ (حضوات) ہماری (خوب) عبادت کیا کرتے تھے ہیں صالحین میں کمال نبوت کی طرف اور اُرکھ کی اُرک کی بیا نہوت کی طرف اور اُرکھ کی اُرک کی ہوا تھی طرح بجالا تے تھے ہیں صالحین میں کمال نبوت کی طرف اور اُرکھ کی کوف اور اُرکھ کی کی میں درسروں کی ہدایت و تربیت کی طرف اور کا گواگا اُن کا اُن کی ہوا ہوت اور اُرکھ کی کوف اور اُرکھ کی کی کی کے اور اور کی کو گوا اور کو کا فید ہے ۔

میں دوسروں کی ہدایت و تربیت کی طرف افراد کا فید ہے ۔

معارف ومسائل

کیونکہ ہاتھ کاشنے کاسبب اسکاعل ہے۔

حضرت ابراہیم علیالتلام نے علی طور پریمی بنوں کے تورٹے کو بڑے ہُت کی طسرت منسوب كيا تقاجيهاكه ردايات ميں ہے كہ جس تبريا كلها ڑے سے أن كے بت توڑے تھے بير كلها ڈابڑے بُست كے مؤید صیریائس کے ہاتھ میں رکھدیا تھاکہ دیکھنے والے کو یہ خیال بیدا ہوکہ اُس نے ہی یہ کام کیا ہے اور تولاً بهي أسكى طوف منسوب فرمايا تويداك اسنا دمجازي ب جيب عربي كامشهورمقول المبئت الربيع البقلة اس كى معرد ف مثال ہے دىعنى موسم دين كى بارش نے كھيتى اكائ ہے) كداكر جيداً كلفے دالا درحقيقت حق تعالیٰ ہے مگراسے ایک ظاہری سبب کیطرف نسوب کر دیا گیا ہے اور اسکو کوئ جھوٹ نہیں کہدسکتا اسى طرح حضرت ابرائهم عليالسلام كابرك بت كى طوث اس فعل كوعملًا اور تولًا منسوب كردينا جهو ط ہرگز نہیں ، البتہ ہبت سی مصالح دینیہ کے لئے یہ توریہ اختیار فرمایا ادنیں ایک صلحت تو یہی تھی کہ د كيهف دالوں كواسطرت توجه موجائے كه شايداس برك بت كواس يرفصه آگيا مؤكر مير إساته عبادت میں ان جھوٹے بتوں کو کیوں شرکی کیاجاتا ہے۔ اگریہ خیال اُن کے دلوں میں بیدا ہو تو توحید حق کا کا ست کھُل جا آ ہے کہ جب ایک بڑا بُت اپنے ساتھ جھو تے بتوں کی ششرکت گوارا نہیں کر تا تو رب العالمین ان عقروں کی شرکت اینے ساتھ کیے گوالا کرے۔

دوسرے يه كدان كويد خيال اسوقت بيدا مونا قرين عقل ہے كد من كويم خدا اور مختاركل كہتے ہے اگریدایے بی وقت تو کوئ اُن کے توڑنے پر کیسے قادر ہوتا۔ تیسرے یہ کداگراس فعل کو دہ بڑے بُت کی طرف منسوب کردیں توجو ثبت بیر کام کرسکے کہ دوسرے بتوں کو توڑ دے اسمیں گومائی کی طاقت بھی ہونی جائیے اس كيّ فرمايا فَشَنَّا وْهُوْ إِنْ كَانُوْ ا يَنْطِلقُونَ ، فلا صديه به كرحضرت ابرا تيم عليه لسلام ك قول مذكوركو بلاتاديل كے اپنے ظاہرير دكھ كريد كهاجائے كدا براہيم عليه السلام نے اس فعل كو بڑے بُت كى طرف منسوب فرمایا ا دربیر استادمجازی کے طور پرفر مایا تو اس میں کوئ جھوٹ ا درخلات واقعہ کا شبہ

بنیں دہتا صرف ایک میم کا توریہ ہے۔

عديث مين حضرت ابرا سيم علميالسلام كي ايك سوال اب بيره جامًا سيح كم صحع احاد بينه مين خود طوت بين جهوط منسوب كرف كحقيقت وسول الشرصل الشرمكي لم في فرمايا ب ان ابواهديد

عليمالتلامرلم يكنب غيريثلاث ورواه البخارى ومسلم اليني حضرت ابراجيم عليالسلام نے تمبھی جھوٹ ننہیں بولا بجز تین حکیمہ ں کے بھران تبینوں کی تفصیل اسی حدیث میں اس طرح بیان فرمائ کہ ان میں سے دوجھوٹ تو خالص النتر کے لئے ہوئے گئے ایک میں جو اس آیت میں بل فَعَلَا مُكِیْرُهُمُّدُ فرمایا ہے، دوسراعید کے روز برادری سے یہ عذر کرناکہ اِنی تقیم میں بیار موں اور تمیسرا اپنی زوجہ کی حفاظت کے لئے بولاگیا) وہ سے کہ حضرت ابراہیم علیابسلام اپنی اہلیہ محترمہ حضرت سارہ کیسا تھ سفرس

تقالیک سیستی پرگز رمواجهان کا رئیس ظالم برکارتھا جب شخص کے ساتھ اسکی بیوی کو دیکھتا تو بیوی کو پیرا بیتاا در اُس سے بدکاری کرتا مگر بیرمعاملہ اُس صورت میں نہ کرتا تھا جبکہ کوئی مبٹی اپنے بایہ ساتھ یا بہن اپنے بھائی کیساتھ ہو۔حضرت ابراہیم علیالسلام کے اس بستی میں مع اہلیہ کے پہنچنے کی مخبا اس ظالم برکار کے سامنے کر دی گئی تواس نے حضرت سارہ کو گر نتا دکر کے بلوالیا۔ بکڑنے والوں نے ا براہیم علیہ السلام سے پوچھاکہ بیعورت رشتہ میں تم سے کیا تعلق کھتی ہے ابرا نہیم علیالسلام نے ظالم لخوون سے بچینے کے لئے پیرفر ما دیاکہ بیمبیری ہن ہے (یہی وہ چیز ہے جس کور، بٹ میں تعبیر سے جھوٹ سے عبيركياكياب مركزاسك با وجود وديك كي ادرابرا بيم عليالسلام ني حضرت ساره كوبهي تبلادياك^ي فے تم کوا بنی بہن کہا ہے تم بھی اسکے خلاف نہ کہناا ور وجہ یہ ہے کہ اسلامی رشتہ سے تم میری بہن ہوکنوکھ اسوقت اس زمین میں ہم دوری سلمان میں اور اسلامی اخوت کا تعلق رکھتے ہیں۔ ابراہ ہم علیالسلام کو مقابلے پر قدرت منتھی ۔انشرے سامنے الحاح وزاری کے لئے نماز پڑھنامشرہ ع کردیا حضرت سارہ ک کے پاس بہنجیں یہ ظالم بڑی نیت سے ان کی طرف بڑھا تو قدرت نے اس کوا یا ایج و معذود کر دیا س براس نے حضرت سارہ سے درخواست کی کتم ڈیماکر ددکہ میری بیرمعندوری دُور ہوجا دے میں تھیں کھے مذکہونگا۔ان کی دُما سے اللہ تعالیٰ نے پھر اسکوضح سالم کر دیا مگراً سنے عہد بھی کی اور کھرٹری ت سے اُن پر ہاتھ ڈاٹیا جیا ہا بھرا مشر نے اُس کی ساتھرد ہی معاملہ کیا اسی طرح تین مرتبہ ا میش آیا تواسن حضرت ساره کو دالیس کر دیا (بی خلاصهٔ نمون سدیث کا ہے) ہی رعال اس حدیث میں حد ابراميم عليابسلام كيطرف تين جھوٹ كى نسبت صراحة كى كئى ہے جوشان نبوت وعصمت كنجلاف ہے محرّ اسکاجواب خود اسی حدیث کے اندر موجود ہے وہ سے کہ درصل انہیں سے ایک بھی تقبقی معنی جھوٹ مذتنا میر توربیرتھا جوظلم سے بچینے سے لئے جا نزوحاال ہوتا ہے وہ جھوٹ سے حکم میں نہیں ہوتا اسکی دلیل خود عدیث مذکور میں یہ ہے کہ ابراہیم علیاسلام فے حضرت سارہ سے کہاتھا کہ میں نے تممیں اپنی بہن تبلایا ہے تم سے یو جھا جائے تو تم بھی مجھے بھائی تبلانا ا در بہن کہنے کیوجہی اُن کو تبلا دی کہ ہم دو اور اسلامی برا در ک كاعتبارے بهن بھائ بي اس كانام توريه بكرالفاظ ايے بولے جائيں بن كے دوفقوم ہو كيں ، شفنے والاأس سے ایک مفہوم سمجھ اور ہولئے والے کی نیت دوسرے مفہوم کی ہوا درطلم سے بجنے کے لئے یہ تدبیرتوریکی باتفاق نقهار جائزے بیشیوں کے تقتیہ سے بالکل مختلف چیز ہے۔ تقتیمی صریح جھوٹ بولاجاتا ہے اور اسپر عمل می کیاجاتا ہے توریہ میں صریح جھوٹ نہیں ہوتا بلکہ میں سے سے مسلکم بول رہاہے وہ مالکل مح اور یکے ہوتے ہیں جیسے اسلامی برا دری کے لحاظ سے بھائی بہن ہونا۔ یہ وجرتو خود عدميث مذكور كالفاط مي صراحة مذكور بي سي معلوم مواكه يدد وحقيقت كذب ندى ا بلكه ايك توريه تفا ميسك اسي طرح كى توجيه يهله دو نون كلامون مين موسى بها بن نُعَلَهُ كَبِيْرُهُمْ

معادت القرآن جس لدشتم

می توجیا بھی اویر مسمح کئی ہے کہ آمیں بطورانسناد مجازی اس فعل کو بڑے بت میطرت منسور ى طرح إنى سَقِيَةٌ كا نفط ب كيونك مقيم كالفظ جس طرح ظاهرى طورير بمادك معفي آيا بالسيطرح رنجيده وعملين اور صحل جونے كے معنے ميں بھى بولا جاتا ہے ابراہيم علىالسلام نے اسى دوسرے معنے لحاظت إنى سُقِيمٌ فرما يا تما محاطبول نے اس كو بيارى كے معنے ميں مجھا اور اسى مديث ميں جو يدالفاظ آئے ہیں کدان تین کذیات میں دوالٹر کی ذات کے لئے تھے پنجود قریبہ قویدا سکا ہے کہ یہ کوئ گناہ كاكام نه تفادر نه كمناه كاكام الترك ليحرف كاكوى مطلب بى بنيس بوسكما ادركناه كاكام بهفاهي موسكما بعجبكم وه حقيقة كذب فهو بكلاليا كلام ويجيك دوسنى ويسكت بدل وايك كذب اوردوسرا محقية صدیث کذبات ابراجیم علیدالسلام مرزا قادیانی اور کچھ دوسر مے ستشرقین سے مغلوب مسلمانوں نے اس دریت کو با وجود صحع الت در نے کے اسلے علط اور باطسل لهدياكهاس سے حضرت خليل الشركسطرف جموث كى نسبت ہوتى ہے اور سند كے سارے را ويوں كو جھوٹاکہدینااس سے بہتر ہے کہ خلیل اللہ کو جھوٹا قرا ر دیا جائے کیونکہ وہ قران کے خلاف ہے اور تھیر اس سے ایک کلبیر قاعدہ بیر نیکال لیاکہ جو حدیثِ قرآن کیخلات ہر خواہ دہ کتنیٰ ہی قوی ا در صحع ادر معتب اسانیدسے ثابت ہو وہ غلط قرار دیجائے بیربات اپنی جگہ تو بالکل بیجے اورساری اُم سے زویک بطور فرص محال محستم ب مكرعلها رأمت نے تمام ذخيره احادیث ميں اپنی عمر سي صرف كر كے ایک ب حدث کوچھان لیا ہے جس حدیث کا ثبوت توی اور صبح اسانید سے ہوگیا اُن میں ایک بھی ایسی نہیں موسکتی که حبکو قرات کنجلات کها جانستے مبلکہ وہ اپنی کم نہمی یا کج نہمی کا نیتجہ ہوتا ہے کہ میں حدیث کو ز و اور باطل كرناجا بااسكوقران سط مكرا ديا اوريه كهركر فارغ بوكئے كه بير عديث خلات قرآن مونے كے بب غیر معتبر ہے جیساکہ اسی حدمیث میں آپ دیکھ چکے ہیں کہ انفاظ کذبات سے توریبه تمراد ہونا خ^{ود} حدیث کے اندرموجد ہے رہا یہ معاملہ کہ بھرحدیث میں تو ریب کو کذبات کے نفظ سے کیوں تعبیر کیا كيا توأس كى وجه ويى ب جوحضرت آدم عليالسلام كى تقول اور نغرش كوعهى اور غوى كالفاظ سے تعبیر کرنے کی ابھی سورہ ظلم میں موئی علیالسلام کے قصتہ میں گزر کی ہے کہ مقربان بارگاہ حق تعا کے لئے ادفیٰ کر دری اور محض رخصت اور جا تر برعل کرلیناا ورعز بیت کو چھور دینا بھی قابل موافدہ سجهاجاتا ہے اورانسی چیزوں پر قرائ میں حق تعالیٰ کاعتباب انبیار سے بارے یں مکترت منقول ہے حدیث شفاعت جومشهور ومحروف ہے کہ محشر میں ساری نخلوق جمع ہو کرصاب جلد ہو کیکے شعباق ا نبيار سي شفاعت مح طالب بو محك - آدم عليه السلام سي كيكر فاتم الانبيار سي بهاي كم تما كا نبيار کے پاس بہنجیں گے ہر پینمبرا ہے کسی قصور اور کو تاہی کا ذکر کرے شفاعت کی ہمت نہ کر پیگا، اخر یں سب خاتم الانبیارعلیا سلام کی خدمت یں حاصر ہو بھے اور آئی اس شفاعت کبری کے لئے کھرے ہونگے۔اس صدمیت میں حضرت ابرا ہیم خلیل اللہ ان کلمات کو جوبطور توریہ کے کہے گئے سے حقیقہ گذب نہ سے سح ہی نجیبرانہ عزیمت کیفلاف سے اپنا تصور اور کو ماہی قرار دیر مذرکر دیں گے۔ ہی کو ہا کی سطون اشارہ کرنے کے سند مدیث میں ان کو ملفظ کذبات تعبیر کر دیا گیا جسکا رسول اللہ صلے اللہ علیہ کو حق محت اور آپ کی حدیث میں ان کو ملفظ کن بات تعبیر کر دیا گیا جسکا رسول اللہ صلے اللہ علیہ کو حق محت اور آپ کی حدیث دوایت کرنے اور بیان کرنے کی حدیث ہیں بھی حق ہے مگر اپنی طون سے کوئ محضرت ابراہیم کے بارے میں گوں کے کہ انھوں نے جھوٹ بولا یہ جائز نہیں جیسا کہ حضرت آدم علیہ لام محت کے تعقد کے ساتھ سورہ لللہ کی تفسیر میں قرطبی اور مجر محبول کے والدسے بیان ہوچکا ہے کہ قران یا حدیث میں جواسطرح کے الفاظ کسی جنجیس کے بیں آئ کا ذکر بطور تلاوت قرآن یا تعلیم قرآن یا دوایت حدیث کریٹ کے تو کیا جا سکتا ہے خود اپنی طون سے اُن الفاظ کا کسی جنجیس کرنا ہے اور نہ ہے جو کسی حدیث کے اگر نہیں۔

مدیث فرکودیں ایک اہم ہدایت الله کا ذرائیا ہے مدیث میں حضرت ابراہیم علیالتلام کے بارے بین جن کذباتِ اور اخلاص عمل کی یا دی کا جیان الله کا ذرائیا ہے مدیث میں ان میں سے پہلے دو کے بارے بی تو بدا آیک الله کا دراخلاص عمل کی یا دی کے بارے بی تو بدا گا کہ الله کی الله کا دراخلاص عمل کی اُس کوا دائر کے لئے بہیں فرطیا حالا تکہ بیوی کی اگر دی حفاظت بھی میں دین ہے اس پر تفسیر قرطبی میں قاصی ابو بکر بن عربی سے ایک بڑا بھتہ تقل کیا ہے جس کے متعلق ابن عربی نے فرمایا کہ شیلی ارد اد لیاد کی کمر توڑ دینے دالی بات ہے دہ یہ کرا بھی تھا ، انتی سی غرض دین ہی کا تھا گراسیں کچھ اپنا حظاف سے اور برائی کی فہرست سے الگر کی کا بھی تھا ، انتی سی غرض دینوی شامل ہوجانے کی بنا پر اس کو فی الله اور بلائی کی فہرست سے الگر کی اگر جہادی یا مصمت کی حفاظت کا کا بھی تھا ، انتی سی غرض دینوی شامل ہوجانے کی بنا پر اس کو فی الله اور بلائی کی مصمت کی حفاظت کا اگر جہادی یا مسی سے ہوتا تو بلاش بھی انتی میں شامل ہوتا ہی اخلاص کا می کی عظمت شان کا مقام مسب سے بلند ہے اُس کے لئے اتن سا حظاف من ماں ہوتا بھی اخلاص کا می کی عظمت شان کا مقام مسب سے بلند ہے اُس کے لئے اتن سا حظاف می ماں ہوتا بھی اخلاص کا می کی عظمت شان کا مقام مسب سے بلند ہے اُس کے لئے اتن سا حظاف میں شامل ہوتا بھی اضاف کا می کی عظمت شان کا مقام مسب سے بلند ہے اُس کے لئے اتن سا حظاف می ماں ہوتا بھی انظاف کا مل کے منافی سمجھا گیا۔ واسٹر اعلی و قفنا الله للا خلاص فی گن علی ۔

حضرت ابراہیم طبیہ اسلام پر نا دِنمرود اجو کوگ مجزات ادر خوادق عادات کے منکر ہیں اُنھوں نے کے گزاد بن جانے کی حقیقت تواسی عجیب وغریب مخربیات کی ہیں۔ بات یہ ہے کہ فلف کا یہ صنابطہ کہ جو چیز کسی چیز کے لئے لازم ذات ہووہ اُس سے سی وقت جُدا نہیں ہو سکتی نودایک باطل اور بے دلیل صنابطہ ہے حقیقت یہ ہے کہ اس دُنیا ہیں اور تمام مخلوقات میں کوئی چیز کسی کے لازم ذات مہنیں بلکہ صرف عادہ الشریہ جاری ہے کہ آگ کے لئے حوارت اور جلا مالازم ہے ، بالی کے لئے تھنڈا کرنا اور بھی نالازم ہے ، بالی کے لئے تھنڈا مرز اور بھی نالازم ہے ۔ مگر یہ لازم صرف عادی ہو عقلی نہیں کیو تکہ فلاسفہ بھی اسے عقلی ہو کی کوئ معقول دلیل بنیں بین کیو تکہ فلاسفہ بھی اسے عقلی ہو کی کوئ معقول دلیل بنیں بین بین کیو تکہ فلاسفہ بھی اسے عقلی ہو کی کوئ

ئسى عادت كوبدلنا چاہتے ہيں بدل ديتے ہيں اُسے بدلنے ميں كوئ عقلی محال لازم نہيں 1 تا جب الشرنتاك عاب تواك بجمان اور شندار ني كاكام رن التي اورياني جلانيكا حالانكه اك ابني حقيقت ين آك ہی ہوتی ہے اور یانی بھی یانی ہی ہوتا ہے مگر کسی خاص فردیا جماعت کے حق میں مجکم خدا و ندی وہ اپنی خاصیت چھوڈ دیتی ہے ۔ انبیار علیہم السلام کی نبوت سے ثبوت میں جو مجزات حق تعالے ظاہر فرماتے ہیں ان سب كا حاصل ميى بردّ ما ہے اسلنے الله تعالیٰ نے اس اگر كوسم دیدیا كہ شفندى برد جا دہ شفندى بوتى ا در اگر بر دا کے ساتھ وَسُلاماً کا نفط نہ ہوتا تو آگ برت کی طرح ٹھنٹڑی ہوکرسب با بذا بن جاتی ۔ اور قوم نوج جياني مين دوبي هي أن كم بارك مين قرال في فرمايا أغرِفُوا فَأَدْخِلُوْ ا فَالدَارًا ، ليسنى يه نوک یا نی میں غرق ہوکرآگ میں داخل ہوگئے۔ حَرِّقُومٌ ، بعنی پوری برا دری اور منرو د نے بیڈیسلہ کرلیا کہ ان کوآگ میں جلا دیا جائے۔ تاریخی روایات میں ہے کہ ایک مہینہ تا۔ سارے شہر کے لوگ اس کا کے لئے لکڑی وغیرہ سوختہ کا سامان جمع کرتے رہے بھراسیں آگ لگاکرسات دن تک سکو دھونکتے ا در بھڑ کاتے رہے بہاں تک کہ اُسے شعلے فضائ آسمان میں استے ادیجے ہوگئے کہ اگر کوئ پرندہ اُسیر نزرے توجل جائے۔اسوقت ارا دہ کیا کہ ایراسیم علیہ السلام کواسیس ڈالاجائے تو فکر ہوئ کہ ڈالیس کیے اُسے پاس تک جاناکسی کے بس میں نہیں تھا شیطان ان کو نجنیق دگو بیا ، میں رکھ کر بھینکنے کی زکیب بتلائ جبر قت اللہ کے خلیل نجنیق کے ذریعیراس آگ کے ہمندرمیں کھینکے جارہے تھے توسب فرشتے بلکہ زمین واسمان اور اُن کی مخلو قات سب جنے اُٹھے کہ یارب آینے خلیل پرکیا گزر رہی ہے حق تقالے نے ان مب کو ابراہیم کی مدد کرنے کی ازت دیدی۔فرشتوں نے مدد کرنے کے لئے حضرت ابراہیم سے لديافت كيا توا برايم عليالتلام نيجواب دياكه مجها الله تعالى كافي ب ده مبرا حال ديمهدر اب-جبرتنل امین نے عرض کیا کہ آپ کومیری سرد کی ضرورت ہے تو میں خدمت انجام دُول،جوابدیا له ماجت تو ب گرات كيون بنهي ملكه ايندب كيون - (مظهري)

قُلْنَا يْنَا رُحُونِيْ بُوْدًا قَسَلَامًا عَنَى إِبْرُهِيْمَ ، أُوير كَرْرِجِكا كِيرَاك كَ حضرت ابراسيم علیالسلام بربردوسلام ہونے کی بیصورت میں مکن ہے کہ آگ آگ ہی ند دہی ہو بلکہ ہوا میں تبدیل ہوگئی ہو مگرظا ہر ہے ہے کہ آگ اپنی حقیقت میں آگ ہی رہی اور حضرت ابراہیم علیالسلام کے آس یاس کے علادہ دومری جیزوں کو جلاتی رہی ملکہ حضرت ابراہیم علیار سلام کوجن رسیوں یں با ندھکر الاكسين والأكياتهاأن رسيول كوبهي آك بي في جلاكر ختم كيا مكر حضرت ابراسيم عليالسلام ك بدن

مُنَادِكَ مُك كوى آئے نہيں آئ دكم أبعض لودايات)

تاریخی د دایات میں ہے کہ حضرت ابرا ہیم علیا نسلام اس آگ میں سات روز ایسے اور دہ فرمایا کرتے سقے کہ جھے عربی ہی ایسی راحت نہیں ملی حبتنی ان سات دنوں میں حاصل تھی (صطروی)

بن بشروالخطيب وابن عساكوعن الحسن مرفؤهاكذا في الروح) بلاشيمه وه لوگ برسے بدذات بدكار عقے اور ایم نے لوط كوا پئى رحمت میں (لینى جن بندوں ير رحمت ہوتى ہے ان برى)د اخل كيا (كيونكد) بلاشمه ده برك (درجرك) نيكول ميں سے تق و بركے درجركے نيك سے موادم معصور ب و جونی کی خصوصیت ہے)۔

معارف ومسائل

حضرت بوط علیہ اسلام کوجس سے منجات دینے کا ذکران آیات میں آیا ہے اُس بنی کا نام مُدُدُم تھا اسے تابعے سات بستیاں اور تھیں جن کوجبر سُل نے اُکٹ کرند و بالاکرڈالا تھا صرف ایک بی باتی چھوڑ دی تھی جس میں لوط علیہ اسلام مع اپنے متعلقین مومنین کے دہ سکیں (قالدًا بن عبّاس - قبطی) تعمیل المخبر کی نے خبائث خبیشر کی جمع ہے ۔ بہت سی خبیث اور کہ زی عادتوں کو خبائث کہا جاتا ہے ۔ بہاں ان کی سب سے بڑی خبیث اور گذری عادت جس سے بھی جانور ہمی پر بیز کرتے ہیں لواطت تھی ، لینی مرد کا مرد کے ساتھ شہوت پوری کرنا ۔ بہاں اسی ایک عادت کو اسے بڑے ہڑم جونے کے سب خبائث کہریا گیا ہوتو یہ ہی بعید بنہیں جیسا کہ بعض مفسرین نے فر مایا ہے اود اس کے علاوہ دوسری خبیث عاد تیں اُن میں ہونا بھی دوایات میں فرکورہے جبسیاکہ فلاصر تفسیری بحوالہ دوح المعانی گزر جیکا ہے اس محافظ سے جموعہ کو خبائث کہنا تو ظاہر بری ہے قالا اُن گا

و مؤوساً إذْ نَادَى مِنْ قَبَلْ فَاسْجَبَنَا لَهُ فَنَجَيْنَا وُ اَهْلَهُ مِنَ اور وزع كوجب اس نے بِكار اس سے پہلے ہم تبول كر لي ہم نے اسى دُما سو بجاديا استواد اسكا تعرف اور كو الكرك ب الْعَظِيمُونَ وَ نَصَرُنْهُ مِنَ الْقَوْمُ اللّذِينَ كُنَّ بُو الْمِالْيَةِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ ال

التَّهُورِ عَلَيْ الْوَا فَوْ مُرسُولًا فَاكْنُوا فَوْ مُرسُولًا فَاكْنُو الْمُولِلُولِ الْمُكُولُولُولِ الْمُ الْمُرادِي بِمَ نَهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ

قلاصتر لفسير

ادر نوح دطالیسا کے قصر کا تذکرہ کیے جبکہ اس (آمانہ ابراہیمی) سے بیہ انھوں نے دافترتعالی سے) دعاتی رکمہ ان کا فروں سے میرا بدلہ لے بیج ہموہم نے اُن کی دُعا قبول کی اوراُن کواوراُن کواوراُن کے معتبین کو بڑے ہماری فی سے نجات دی دیونم کفار کی مکذیب اور اُسکے ساتھ طرح کو ایڈائیں بہنچا سے میٹین آنا تھا) اور نجا مطرح دی کہ ہم نے ایسے لوگوں سے ان کا بدلہ لیا جنھوں نے ہمارے کھوں کو (جوکہ صفر فرح علیا سلام لائے تھے) جھوٹا تبلایا تھا بلاشہد وہ لوگ بہت بڑے تھے اسلے بہنے اُن سب کوغرق کردیا۔

معارف ومسائل

وَيُوْحَكُلُ ذَنَادَى مِنْ قَبُلُ ، من قبل سمراوا براسيم ولوط عيبها السلام سيديم وناب

معادت القرآن جسكدهم سؤرة الانبيار ٢١ ١٢١٨ 4-0 جن كاذكراويركى آيات مين آيا ہے اور لؤح عليا لسلام كى حبن ندار كا ذكراس جگه مجملاً آياہے اسكا بیان سُوَدَة نوج میں یہ ہے کہ ہور علیا سلام نے قوم کے لئے بردُعاکی سَ بَ لَاتَنْ رَعَلَی الْاَدْضِينَ الْسَفِي فِي اللَّهِ عَلَيْنَ دَيَّالًا ، مِنِي السه برورد كار روئ زمين يركافرون ميكسي بسن والے كو مذج جوڑ اورايك جگه يه بے كرجب توح عليا لسلام كى قوم نے كسى طرح ان كاكونا مذا نا توانھوں نے اللہ تعالے کی بارگاہ میں عرض کیا ، اِنْ مَغْلُوبُ فَانْتَظِيرُ ، بِین میں مغلوب اور عاجز إلو حكام ول أيسى ان لوكول سا تقام ك ليحد -فَاسْتَجِنْنَالَةُ فَنَجَّيْنَاهُ وَآهُلَةً مِنَ الْكُوبِ الْعَظِيمِ وَكُربِ عَظْيم مصراديا توطوفان مين غرق دو ثاہے جیں بوری قوم مبتلا ہوئ؛ یا اس قوم کی ایزائیں مُزاد ہیں جو دہ طوفان سے پہلے حصرت وكاؤكر وسكيمن إذيحكمن في التحريث إذ تفشت فيلوعنه القوم اور داؤد اور سلیمان کو جب کے نیصل کرنے کھیٹی کا جھگڑا جب روندگئیں اس کورات یں ایک قوم کی کرماں وَكُنَّا لِحُكِيْهِ وَشِهِدِ بِنَ (٤٠) فَفَقَّمَنُهَا سُلَيْهُنَ وَكُلَّ اتَيْنَا حُكُمًا وَ ادر سائے تھاہما دے ان کا نیصلہ پھر سمجھا دیا ہم نے دہ فیصلہ بیان کو اور دونوں کو دیا تھاہم نے حکم التوسيخونامع داؤد الوجال يستبض والظيروكا وكتافعلين مجھ اور تابع کے ہم نے داؤد کے ساتھ پہاڑ، تیج پڑھاکرتے اور اُڑتے جاہز اور بیرب کھے ہم نے وَعَلَّمْنَهُ صَنْعَاتَ لَبُو إِن كُو لِنَجْصِ اللَّهِ لِنَجْصِ اللَّهُ مِنْ اللَّهِ اللَّهُ وَ فَهَلْ آنَ ادر اسکوسکھلایا ہم نے بنانا ایک تھارالباس کہ بچاؤ ہوئم کو تھاری روائ میں سو کھھ شكرون ﴿ وَ لِسُلِّيمُنَ الرِّيحَ عَاصِفَةً تَجْرِي بِآمْرِة إِلَى الْوَجْ اور سلیمان کے تابع کی دوا زورسے چلنے والی کہ جلتی اسے حکم سے اس زمین کی طسرت يْنَ بْرَكْنَا فِيهَا وَكُتَّا بِكُلِّ شَيْءٍ غِلْمِينَ ١٥٥ وَمِنَ الشَّيْطِينَ؟ ں پرکت دی ہے ہے اور ہم کو سب چیز کی تعب ہے ا در تا بع کئے کتنے شیطان يَغُوْمُونَ لَهُ وَيَعْمَلُونَ عَمَلُادُونَ خَلَادُونَ ذَلِكَ وَكُتَّا لَهُمْ حَفِظِينَ عزط لگاتے اسے واسط اور بہت سے کام بناتے اسے سوائے اور ہم نے ان کو تھام رکھا تھا ادرداؤد ادر سلیمان رعلیهما التلام کے قصبہ کا تذکرہ کیجئے جبکہ دونوں دحضرات کسی کھیت کے بارہ میں رجبیں غلّہ تھایا انگور کے درخت تھے کذا فی الدالمنتور) فیصلہ کرنے گئے جبکہ اس رکیست ہیں کھے لوگوں

K

) كرماي دات كے وقت جايڑي (اور اُسكوچيكئيس) ادريم اس فيصله كوجو (مقدمه والے) لوگوں مصنعلق موا تها دیمهم می مقصویم نے اس فیصله (کی آشان صورت) کی بچهشلیمان کو دبدی - اور د نوں ہم نے دونوں (ہی) کو حکمت اور علم عطافر ما یا تھا د نعنی داؤد علیات ام کافیصلہ مجی خلاف مترع نہ تها صورت مقدمه کی بیتنی کرجیقد رکھیت کا نقصان ہوا تھااس کی لاگت بجریوں کی قیمت سے برابر مقى - دا وُدعلياتلام نيصنمان مين كهيت داك كووه بكريان دلوادين ادراصل قالون شرع كايمي مقدقنا تفاجس مرعى يا مدعا عليه كى رصاكى شرط نبين مرحجة كالسيس مكرى والول كا باكل بى نقصان موتا تقااس كئے سلیمان علید سلام نے بطور مصالحت مے جوکہ مو قوت تھی جانبین کی رصامندی برمیصور حبمیں دونوں کی مہولت اور رعایت تھی تجویز فرمائ کرچندر دز کے لئے بکریاں تو کھیت والے کو دی جادیں لدائع دوده وغیره سے اپناگز دکرے اور مکری دالوں کو وہ کھیت شیرد کیا جادے کہ اس کی خدمت البياشي وغيره سے كريں جب كھيت بہلى حالت يرائجاوے كھيت اور كرياں اينے اپنے مالكول ديدى جادی کذانی الددالمنتورعن مرة وابن سود ومسروق وابن عبکس و مجابد وقتاده والزهری کیس ں سے معلوم ہوگیا کہ دونوں نیصلوں میں کوئ تعارض نہیں کہ ایک کی صحت دومے کی عدم صحت کو مقتصنی و اسلنے گار اُنتینا کھنگا و تعلیما برها دیاگیا) اور زیبان تک تو کرامتِ عامر کا ذکر مقیاجو ددنوں حصرات میں مشتر کھی آگے دونوں حصرات کی خاص خاص کرامتوں کابیان ہے ہم نے دادُد العسائقة ما بع كرديا تقايمها رو ل كوكر دان كي سبع كي سائق وه (مجي) سبع كيارته مقدادر داسی طرح ، پرندوں کوہی رجیسا سور مسامی ہے باجبال اَقِبْ مَعَهُ وَالطَّايْر) اور د کوئ اس بات پرتعب مذکرے کیو مکدان کاموں کے) کرنے والے ہم تھے (اور ہماری قدرت کاعظیم موناظا ہرہے بھران مجزات بیں تعجب کیاہے) ادرہم نے ان کوزرہ د بنانے) کی صنعت تم لوگوں کے رنفع کے داسط سکھلای راینی ایک وہ (زرہ) تم کور لڑائ میں) ایک دوسرے کی زدسے بیائے (اور اس نفع عظیم کامقتضایہ ہے کہتم کے کرد) سوتم (اس نعمت کا) ہے کرو کے بھی (یا نہیں) اور ہم نے سلیمان (عدیاب لام) کا تیز ہواکو تا الع بنا دیا تھاکہ دہ ان کے حکم سے اس سرز میں کی طرف کو جاتی ب میں ہم نے برکت کر رکھی ہے د مراد ملک شام ہے جو اِن کامسکن تھاکذا فی الدرعن السدی دیدل طبیر عارة بيت المقدس بين جب ملك شام سے كہيں چلےجاتے اور مجرآتے توبيرآ نا اوراس طرح جانا بھی مواك ذريعه سے موتا تھاجيا درمنثورس بروايت وقصح حاكم حضرت ابن عباس رو سے اسكى كيفيت مروی ہے کہ سیمان علیالسلام مع اعیان ملک سے کرسیوں پر مبتیے جاتے بھیر ہواکو بلاکڑ حکم دیتے وہ ب کو انتظاکر تھوڑی دیرمیں ایک ایک ماہ کی مسافت قطع کرتی) ادرہم ہرچیز کو جانتے ہیں دیما ک علم میں سلیمان کو بیرچیزیں وینے میں حکمت تھی اس لئے عطافر مائ) اور نعضے تعیف شیطان دیسی

ماريث القرآن جر سورة الاسيساران:

جن) ایسے تھے کہ سلیمان (علیاسلام) کے لئے (دریادُں میں) غوطے لگاتے تھے (تاکہ موتی زیکالکرائے یاس لادین) اور ده اور کام بھی اس کے علاوہ (سلیمان کے لئے) کیا کرتے ہتے اور (کو دہ جن برطے سركن ادرمشرير تصفح ان كم منبها لنه واليم تفي داس ليهٔ وه چوَّل نہيں رَبِيَّة تقے)

معارف ومسائل

تَفَشَّتُ فِيْهِ مَنْهُ الْقُوْمِ ، لفظ نفش كَ مِنْ عَلَى النت كا عَساد سي بين كه رات ك وقت كوى جالوركسى مے كھيت يرجا براك اور نقصان بہنجائے -

خَفَهَمْنْهُا سُلَيْمِنَ ، فهمنها كي ضمير نظام رمقدمه ادراس كي فيصله كى طرف راجع م ادر معنی یہ ہیں کہ جوفیصلہ النٹر کے نز دیک بسند ہیرہ تھا النٹر تعالیٰ نے دہ حضرت سیماُن کو سمجھا دیا۔ کسس مقدمه اورفیصله کی صورت او پر خلاصه تفسیرس آچکی ہے جس سے معلوم ہوتا ہے کہ حضرت دا دُد عليه السلام كا فيصله مجى ازدوم قانون شرعى غلط نبيس تقا كرجو فيصله الترتعالي فيصلمان عليلها كو تجهلياً اسي فريقين كى رعايت اورُصلحت تقى اسلة الله تعالى كے نز ديك وه پيند بده قرار دياگيا۔ انا بغوی نے حضرت ابن عباس اور قتا دہ اور زہری سے اس دافند کی روایت اسطرے کی ہے کہ در تحق حضرت داؤد عليالسلام كيني متمين حاصر موت انين أيك فص كريون والا دوسرا تعينى والا تفا تعينى والدني والدني والے يربيد دعوىٰ كياكا سى بحرياں رات كوچيوط كرميرے كھيت ميں كھش كنين اوركھيت كو بالكل صاف كرديا بجهين جيورا (غالباً مرعا عليه في اسكا اقرار كرايا برگااور بجريون كي يُوري قيمت اسكے منبائع شده كھيت كئي ي معرار وكى اسليم عضرت داود في يفصله ساديا كركون والااينى سارى بريال كهيت والعكوديب ر کیونکہ جوجیزیں قیمت ہی کے ذرامیہ لی ا در دیجاتی ہیں جبحوس فقہاریں ذمات القیم کہا جاتا ہے وہ اگرکسی نے ضائع کردی تواسکا ضمان قمیت بی کے حساب سے دیا جاتا ہے کردن کی قبیت جو تکہ صنا کے سٹرہ کھیتی کی خمیت کے مساوی تھی اسلئے یہ ضابطہ کا فیصلہ فر مایا گیا) یہ دونوں مدعی اور مدعا علیہ حضرت داؤد علیالسلام کی عدالت سے دابس ہوئے تو د دروا زے پران کے صاحبزادے ، حضرت سلیمان علىيالسلام سے ملاقات بوئي أنھوں نے دریا ذت کیا کہ تمقارے مقدمہ کا کیا فیصلہ بوا ؟ ان لوگوں نے بیان کر دیا توحضرت سلیمان علیالسلام نے فرمایا کہ اگراس مقدمہ کا فیصلہ میں کرتا تو اسکے علاوہ کھھاور ہوتا جو فریقین کے لئے مفیداور نافع ہوتا۔ پھرخود والدما جدحضرت داوّد علیال ام کی فدمت میں حاضر ہوکر یہی مات عرض کی حضرت داؤد علیہ اسلام نے تاکید کے ساتھ درمافت کیا كه ده كيا فيصله ہے جو دولوں كے لئے اس فيصله سے بہترہے تو حضرت سليمان عليالسلام نے نسر ماياك ات بكريان توسب كهيت والے كو ديدين كه ده أن كے دور صاوراون دغيره سے فائده أعمانات اور کھیت کی زمین جربوں دالے کے شیرد کر دیں کہ وہ اسمیں کاشت کرکے کھیت اگائے ۔جب

فیصلے سے وہ مض سے خلاف ہموا ہمو دُب تو جاتا ہے مگران دولوں میں بغض و عداوت کا بیج قائم ہوجا آہ جو دوسلما اول میں بنیں ہوٹا چاہئے بخلاف مصالحت کی صورت کے کہ اسس سے دلوں کی منافرت بھی دُور ہوجا تی ہے دا زمعین الحکام)

مجابر تحاس تول يربيه معامله قاصني كي فيصله كو تورث اور بدلنے كانہيں رہا بلك فريقين كوجو منایاتها ده انبی گئے بھی نه سے کانمیں ایک صورت مصالحت کی نیکل آئ اور وہ وو یوں اسپرداحنی ہوگئے۔ دوجبهد اكرايينا بيناجتها دسے دومتفناد اس موقع ير قرطبي نے بري تفصيل سے اور دوسرے مفسرن فيصكري توكياأن مي سيمرا يك صواب ور في مفتل يا مختريد بحث بهي كي يحكه برمجهة وتبيشه مصيب ورست ہے یا کسی ایک کو غلط کہا جائے۔ ہی ہوتا ہے اور دومتضاد اجتہا د مول تو دوبوں کوحق مجھا جائے گایا اُن میں سے ایک فیصلہ کو خطار اور غلط قرار دیا جائے گا۔ اس قدیم زمانے سے علماء کے ا قوال مختلف بیں۔ آبیت مذکورہ سے د دانوں جماعتوں نے استدلال کیا ہے جو حضرات یہ کہتے ہی دونو اجتهادى بالكريم تضاد ہوں اُن كاسرلال آيت كے آخرى جلے سے جبيں فرمايا وَكُلَّا اللَّهُ السَّفَا اُحُكُما وَعِلْنا - اس مين حضرت داوُدُ اورحضرت سيمان دونوں كو تكرت اورعلم عطاكرنے كاارشاد ب حضرت داؤد علياسلام يركوي عناب نبين ہے نه ان كويركهاكياكه أن سفلطي بركئي اس سيمعلوم بواكه دا دُد على إلسلام كا فيصله تمجي حتى تهذا ا درسليمان على إلسلام كا فيصله يمي ، البنة حضرت سليمان على إلسلام كے ﴾ فیصله کو فریقین کے لئے اصلح ہونے کی بنا پر ترجع دیدی گئی۔ ا درجو حد زات پہ فرماتے ہیں کہ اختلاب اجتهادى كرواقع مين عن ايكطرف وتاب دوسراغلط وتاب الكاات لال اسى آيت كريباع المي بين ففته نهاسلمان كاسيخضيص كريح صرت سلمان كياريمين فرمايا ب كريم في الكوحق فيصد مجهاد ال تابت وتاب كردا وُدعلاليسلام كافيصلين سرتها كوده بوجه اينا جبها د كياسين مندوريون إدران کوئی مواخدہ سربو۔ بیرمجش اصول فقہ کی کتابوں میں بڑی تفصیل سے آئی ہے وہاں دھی جاسمتی ہ يهال صرف اتناهمجولينا كافي ہے كہ حدیث بین دسول الشریسك الله عكیبہ لم نے فرمایا ہے كہ حستخص ا جہادکیاا در کوئ حکم دینی اصول اجتہاد کے ماتحت بیا*ن کیا۔اگراسکا اجتہا دصح*ے ہوا تو اُس کو دوا جر ملیں گے ایک اجتہا دکرنے کی محنت کا دوسراصح وسواب کم یک بہنچنے کا دراکری اجتہاد حیح نہوا أس سے خطا ہوگئی تو بھراسکوایک اجراجہا دکی محنت کا ملے گا دوسرا ابر جوہال کم جیج تک مہینے کا تقا ده ندمك كا (بيرمديث اكثر مستندكتب حديث مي منفذل ہے) اس مديث سے اس اختلاب علماركي حقيقت مجيى واصنح موجاتي ہے كه درحقيقت بيراختلاث ايك نزاع نفظى حبيباہے كيو كهرحق دوان طرف مؤنيكا حاصل يرب كراجتها ديس خطاكرنے والے مجتبدا دراسے متبعين كے لئے مجي اجتهاد حق و مجع ہے اسپرعل کرنے سے اُن کی نجات ہوجا میگی خواہ یہ اجتہاد اپنی ذات میں خطارہی ہو گرامیر

سورة الاغيار ٢٠٢١ على كرنے والوں كوكوئ كناه نہيں اورجن حصرات نے بيفر مايا ہے كدحق ان دونوں بيں ايك ہى ہے دوسرا غلطاورخطاب اسكاعاصل معى اس سے زيادہ نہيں كمال مرّادحق تعالىٰ اورمطلوب فدا وندى تك نه ہنچے کیدجہ سے اس مجتہدے تواب میں کمی آجائے گی اور بیکی اسوجہ سے ہے کہ اسکااجتہاد حق بات تکنے پہنچے کیدجہ سے اس مجتہدے تواب میں کمی آجائے گی اور بیکی اسوجہ سے ہے کہ اسکااجتہاد حق بات تکنے بہنجائیں بیطلب کا بھی نہیں ہے کہ جہر خاطی رکوئ الامت ہوگی یا اسے متبدین کو گنا ہمکار کہا جائے گا۔ يرقر طبي مين اس مقام بران تمام مهاحت كوبورى تفصيل سے لكھا ہے اہلِ علم وہاں و كيھ سكتے ہيں -يستافها كركسي كم جالوردوك آدمي حضرت داؤد علياسلام كفيمله سے توبية ابت بولك جان يامال كونفضان منبي ويق فيصلكيام وناجاء كرجا اورك مالك برضمان آئے كا اكريد واقعہ داتين ېرواېرونكىن يەصرورى نېيى كە دا دُ دعلىيالسلام كى سترىيت كاجوفىصلە بودى سترىيت محمدىيەمىن رہے اس گئے اس سنلہ میں ائمہ مجہزین کا ختلات ہے۔ امام شافعی کامسلک یہ ہے کہ آگر رات کے وقت سی کے جا اور سی دوسر ہے کے کھیت میں داخل ہو کرنقصان پہنچاویں توجالوز مے مالک پیضان آئیگا اور اگر دن میں ایسا ہو توضمان نہیں آئے گا اُن کا استرلال حضرت داوُد ^{وا} کے فیصلہ سے جی ہوسکتا ہے گر شریعیت محدید کے اصول کے تحت اُتھوں نے ایک حدیث سے استدل فر ما یا ہے جو مو طاامام مالک میں مرسلاً منقول ہے کہ حصرت برا دین عارب رہ کی ناقد ایک شخص کے باغ میں داخل ہوئی اوراسکو تقصان بینجا دیا تو رسول الشر<u>صلے الشرعکتی</u>م نے بیڈیصلہ فرمایا کہ باغوں د تھیتوں کی حفاظت رات میں ایکے مالکوں کے ذمہرہے اور ان کی حفاظت کے باوجود اگر رات کوسی ہے جا بورنقصان بہنجا دیں توجا ہور کے مالک پرضمان ہے ا در امام عظم ابوحنیفہ اور فقہا رکوفہ کامسلکہ یہ ہے کہ جبوقت جانوروں کے ساتھ ان کا جرائے والا یا حفاظت کرنے والا کوئ آدمی موجود ہوائی نے غفلت کی اور جا بؤروں نے کسی کے باغ یا کھیت کو نقصان پہنچا دیاس صور تمیں تو جا اور کے ما يرضمان آيا ہے خواه بيرمعامله رات مين ديا دن ميں ادراگر مالک يا محافظ جالؤر دن كيسا تھ نہو جانور خود ہی نیکل گئے ادریسی کے کھیبت کو نقصان پہنچا دیا تو جا اور کے مالک پرصنمان نہیں معاملہ دان الد رات کا اسیں بھی برابر ہے اما م عظم رہ کی دلیل وہ حدیث ہے جو بخاری وسلم اور تمام محدثین نے روایت کی ہے کہ رسول التہ صلے اللہ علیہ تم نے فرما یا جوج البھم ناء جبکار لعبی جانور جوکسی کو نقصنا برہنے کے وہ قابل مواخدہ نہیں بعین جا بور کے مالک پراسکا ضمان نہیں ہے د بیشر کھیکہ جا بور کا مالک یا محا فظا کے ساتھ نہ ہوجیسا کہ دوسرے دلائل سے تابت ہے) اس صدیث میں دن رات کی تفریق کے بغیرعسام قانون شرعی بیقراد دیا کیا ہے کہ اگرجا اور کے مالک نے خودایے قصد وارا دے سے سی کے کھیت میں نہیں جھوڑا، جا اور مھاک کر عیلا گیا تو اسکے نعضان کا ضمان جا بؤر کے مالک برینہیں ہوگا۔ اور حضر ا براربن عاذب مے واقعہ کی روایت کی سندس نقها رحنضیر نے کلام کیا ہے اور فرمایا کہ اس کو

سورة الانبيار ۲:۲۱ تعجين كى عديثِ مذكور كے مقابلے میں حجت نہیں قرار دیا جاسكتا۔ وانٹر سحانہ و تعالیٰ اعلم ببيارُون اورير ندون كي سبيح وَسَحَوْنَا مَعَ دَاوْدَ الْحِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرُ وَكُنَّا فَعِلَيْنَ ، حضرت دا دُد عليالتلام كوحن تعالى في ظاهرى كمالات ميست يمكمال حُسن صَوْت كالجمي عطافر ما يا تقا، جب وه ورثر صقے تھے تو یر ندے ہوا میں تھہرنے لگتے تھے اور اُن کے ساتھ سبعے کرنے لگتے تھے اسی طرح یہاڑ اور مرتجرد مدرسے بینے کی آواز مکلنے لگتی تھی جوش آوازی کا کمال توظاہری کمالات میں سے تھااور پر ندول او يهارون كالسبيع مين شركب بوجانا بتسخير فعدا دندى بطور مجره كے تقا اور مجرہ كے لئے يہ تھى عزورى نہيں ك يرندون اوريبالأون مين حيات ومتعور بهو ملك بطور حجزه برغير ذي ستعورس مجي ستعورب ابوسكتاب اسے علادہ تحقیق میں ہے کہ یہاروں اور متھروں میں بھی حیات و شعور بقدران کی حیثیت کے موجود ہے صحابه كرام ميں حضرت ابومونی اشعری بہت خوش آدا زیجھے ایک ردز دہ قرائن پڑھ ہے تھے سُول ا صلے اللہ عکمیے کم کاکزران کی طرف ہوا تو ایب اُن کی تلادت شننے کے لئے تھی گئے اور شنتے رہے تھیہ فرمایاکدان کوانشرتعالی نے خوش آوازی حضرت داؤد علیالسلام کی عطافرمای سے جب ابوموسی رخ كومعلوم بواكه الخضرت صلى التسرعكت مأن كي تلادت شن رہے تھے توعرض كياكه اگر مجھے آپ كائسنام جوجآنا تومیں اور زیادہ سنوار کر طر<u>صنے کی کوشش کر</u> نا (ابن کتابر) ن ابره اس سے معلوم ہواکہ تلاوتِ قرآن میں حسن صُوْت اوراچھا ابھے سے دلکشی پیراہوا یک درجهین مطلوم محبوب ہے بیشر طبیکہ انجکل کے قرار کی طرح اسیں غلونہ ہو کہ صرف آوازہی سنوار نے ا در توگوں کو تیمانے کی فکررہ جائے تلاوت کا اصل مقصدی عائب ہوجائے دَاللّٰمُ اعْلَمَ زره بنا بكى صنعت حضرت داؤد عليالسلام حرعكمنه مستعة كبي س ككر افظ لبي لغت كومنجانب الله عط كى تنى - اعتبار سے الله بين سے ہر چيز كو كہا جا تا ہے جو انسان ا وڑھ کریا گلے میں ڈال کراستعال کرے مرا داس جگہ آہنی زرہ ہے جو جنگ ہیں حفاظت کے لئے بینی جاتی ہے دوسری آیت میں ہے وَالْتَالْمُالْحَدِیْنَ تعنی ہم نے اُن کے لئے اوہے کونرم کر دیا تفاخواہ اسطرح كه لويا أن كے ہاتھ ميں آكرخود بخود نرم بو باتا بوكه أس كوجس طرح موڑي مرط جائے اور باريك یا موٹاکرنا چاہی تو ہوجائے جیسے موم ہوتا ہے یااس طرح کہ اُن کو آگ میں بھیلاکر نرم کرنے کی تدبیر تلادی جوسب لوہے کے کارفالوں میں آج استعال کی جاتی ہے۔ الیی صنعت میں سے لوگوں کوفائدہ | اس آیت میں زرہ سازی کی صنعت داؤد علیہ لسلام کوسکھانے منتج مطلوب اورفعل انبیار ہے کے ذکر کے ساتھ اُس کی حکمت بھی بیرتبلای ہے کہ لیڈنے ایکٹو مِّنْ ابْالِسِکُوْ، لینی تاکہ یہ زرہ تھیں جنگ کے وقت تیز تلوا دکے خطرہ سے محفوظ ا کھ سے بیرا یک الیی حزودت ہے کہ جس سے اہل دین اور اہل دنیاسب کو کام ٹرتا ہے اسلے اس صنعت سے

سُورة الإنبياد ٢١ : ١٨ عادت القرآن حب سكھانے كوالترتعا لانے اینا ایک انعام قرار دیا ہے اس سے معلوم ہوا كدس صنعت كے ذرايب لوگوں کی صرورتیں بوری موں اسکا سیکھنا سکھانا داخل تواہیج بشرطیکہ نیت خدمتِ خلق کی ہو، صرا محائ بي مقصد شرو حضرات انبيا عليهم السلام سيختلف قسم كي صنعتون كاعمل كرنا منقول ب حضرت آدم عليالسلام سي يوني الوفي كاشيخ كا - رسول الشرصك الشرعكية لم ني ارشاد فرا ياكر جونعتكار ا پنی صنعت میں نیت بیک بعنی خدمت خلق کی رکھے اُس کی مثال اُم موسیٰ کی سی ہوجاتی ہے کہ اُنھوں نے اپنے ہی بچیر کو دو دھ پلایا اور معا دصر فرعون کیطریث سے مفت میں ملا۔ اسی طرح خدمتِ حساق کی نیت سے صنعت کاری کرنے والے کو ایٹا مقصد تواب خدمتِ خلق توحا صل ہوگاہی صنعت کا نفع دنیوی مزید بران اسکو ملیگا برحدمیت حضرت مولی علیاسلام کے قصتری متوره ظارمی گزری ہے۔ حضرت سيهان عديد سلام كيلئة بهوا حضرت حسن بصري مصنقول به كرج بصضرت سليمان كايراقع ريسي آياك ى تىنچىرادراس مەنتىلقەمسائىل كەكىرى كھوروں مەمئائدىين شغول جو كرعصرى غاز فوت بوگئى تواپنى اس غفلت يلافسوس مواا دريه كلوش جواس غفلت كاسبب سنه تصفي الكوم بكاركر كي حيورديا اليؤمكه أن كايه على التنوى رصّا جوى كيك بهوا تفااسك الترتعالي في الكو كهورون بهراور تيزر فتارسوا دى مواكى عطا فرمادى اس وافته كى تفضيل اوراس مصقلقه آيات كى تفسيرت بين آئے كى انشار الشرتعالى -وَلِسُلَمْ كَانَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً ، يه جمله سابقه سَخُونَامَعَ دَاوُدَ يرعطف بِيني عبي التُرتِعَا نے حضرت داؤد علیالسلام کے لئے پہاڑوں اور پر ندوں کومبخر کردیا تھا جو اُن کی آواز کے ساتھ ببع كياكرتے تھے اسى طرح حضرت سليمان عليالسلام كے لئے ہواكو سنحركر ديا تھاجس برسوار ہوك وه جهان جائة بهت جلد اتساني سے پہنے جاتے تھے اس جگہ بیدا مرقابل لحاظ ہے کہ تسخیر دادُد عللیم میں تو نفظ مع استعمال فربایا کہ اُن کے ساتھ پہاڑوں پرند دن کوسنج کر دیا تھا اور بہاں حرف لام کے ساتھ فرمایاکہ ہواکوسلیمان علیار اسلام کے لئے مسخر کر دیا تقا اسمیں نطیف اشارہ اس بالکیطرف سے كردونوں تسخيروں ميں فرق تھا،داؤد على السلام جب تلاوت كرتے تو يہا الداور يرند مے تو دېجود د كور بنے كرنے للقيقة أن مح يم كم منظرية رہتے تھے اور حضرت سليمان عليالسلام كے لئے ہوا كوان مے علم كے ابع بنادياكياكه حبب جابين حبوقت جاهين حبطون جانا جاهي مواكوهكم ديدياأ سن ببنجاديا مجرحهال أترنا عابي وبال آمار ديا بحرجب والس علي كاحكم بوا والس بهنيا ديا- (روج عن البيضاوي) تفسيرابن كثير مي تخت سليمان عليابسلام جو أبوا يرحلنا تقااش كى كيفيت بير بيان كى بيح كرسايما على لسلام نے لكوى كا يك بہت برا وسيع تحنت بنوا يا تقاجس برخود مع اعيان سلطنت اور مع ك كراور آلات حرب كيسب سواد موجات بهر بواكوهكم دية وه اس عظيم الشان دبيع وعريض تخت كوا ين كا ندهول ير أنهاكرجهال كا حكم بوتا د بال جاكراً ثار ديتي تقى - بيرواي تخت صبح

سے دد بہرتک آیک بہینہ کی مسافت طے کرتا تھا ادر دد پہرسے شام کک آیک جہینہ کی بینی

آیک دن میں دوبہینوں کی مسافت ہوا کے ذریعہ طے ہوجاتی تھی۔ ابن آبی حاتم فی حضرت سعید

بن جبرسے نقل کیا ہے کہ اس تخت بایا نی پر چھو لاکھر کرسیاں رکھی جاتی تھیں جبیس سلیمان علیات الم

کے ساتھ اہل ایمان انسان سوار ہوتے تھے ادر ان کے چھے اہل ایمان جن بیسطے تھے بھر پر ندول کو کم

ہوتا کہ دہ اس پورے تحت پر سایہ کر لین تاکہ آفت ہی تبیش سے تکیف نہو بھر جا کو تکم دیاجا تھا

وہ اس ظیم الشان مجمع کو اٹھا کر جہاں کا تھم ہوتا ہینچا دی تعیش سے تکیف نہو بھر جا کو تکم دیاجا تھا

وہ اس ظیم الشان مجمع کو اٹھا کر جہاں کا تھم ہوتا ہینچا دی تعیش سے تکیف نہو کے اندر کے ذکروشکری ہوا کو تھے دائیں بائیں کچھ نہ دیکھتے تھے ادر اپنے عمل سے آوا ضع کا اظہار فراتے تھے دائی کنیان مشغول رہتے تھے دائیں بائیں کچھ نہ دیکھتے تھے ادر اپنے عمل سے آوا ضع کا اظہار فراتے تھے دائی کنیان مشغول رہتے تھے دائیں بائیں کچھ نہ دیکھتے تھے ادر اپنے عمل سے آوا ضع کا اظہار فراتے تھے دائی کنیان مشغول رہتے تھے دائیں بائیں کی گئی ہے جس کے مضفے فرم بہوا کے ہیں جس سے نہ غباراً واسے نہ ذون اس طرح اس ہواکی صفت و ذائی ہو کہ قالم رہ بہنچا تھا ۔

میں تا طرکے کہ کو کئی نقصان نہ بہنچا تھا ۔

پریدا ہوجنا نچہ اس کا یہ جال بیان کیا گیا ہے کہ جس فضا سی یہ تحت دوانہ ہوتا تھا دہاں کسی مسافت طے کرمے کئی نقصان نہ بہنچا تھا ۔

پرید انہ دیا نچہ اس کا یہ حال بیان کیا گیا ہے کہ جس فضا سی یہ تحت دوانہ ہوتا تھا دہاں کسی مسافت طے کرمے کئی نقصان نہ بہنچا تھا ۔

پرید کو بھی کوئی نقصان نہ بہنچا تھا ۔

پرید دے کو بھی کوئی نقصان نہ بہنچا تھا ۔

میلمان علیال ام کیلئے اور میں النظیلطین عن یکنو مون کا کا کیفی کون عمالا دون کا دایا کے استعمال علیال اسلام کے لئے مسخسر کردیا شیاطین جن بین ہے نے سیمان علیال الام کے لئے مسخسر کردیا شیاطین جن بین ہے ایسے گوگوں کوجو دریا دُں میں غوط رکھا کرسیمان علیال الام کے لئے جوا ہرات مکال کر لائے تھے اور اسے علاقہ و دم سرے کام بھی کرتے تھے جن میں سے بعض کا ذکر دوسری آیا ت میں آیا ہے ۔ یعمون کا دکر دوسری آیا ت میں آیا ہے ۔ یعمون کا دکر دوسری آیا ت میں آیا ہے ۔ یعمون کا دکر دوسری آیا ت میں آیا ہے ۔ مثان نداد مکانات اور مورتیں اور بیتھر کے برائے بین بیا ہے جو حوض کی طرح کام دیں اُن سے سیمان کی بیٹے مواج ان سے میمان کے بیٹے ہوئے بیس بین بین ہوعقل و شعور رکھتے ہیں اور انسان کی بیٹے مورت ہیں جوعقل و شعور رکھتے ہیں اور انسان کی طرح اسکام مشرع کے مکلف ہیں جوعقل و شعور رکھتے ہیں اور انسان کی طرح اسکام مشرع کے مکلف ہیں۔ اِس لاع کے لئے اصل نقط جن یا جنا ت استعمال ہوتا ہے ان کے میکام میں کار و میں ان کوستیا طین کہا جاتا ہے جاتا ہو ہے کہ حضرت سیمان علیالام میں جوا یان جون کی مربی کا فر دہیں ان کوستیا طین کہا جاتا ہے خاا ہر ہے کہ حضرت سیمان علیالام میں جوا یان جو کی مربی کی دونے مور کون ہوں یا کا فر امرکم موسین تو تنجی کے بغیر بھی ہیں جو میں اور کی صروت سیمان علیالام کی تعمیل ایک ذوبی کی دیا تھیں کہ در تیا ہیں کی خوادہ موں ہوں یا کا فر امرکم موسین تو تنجی کے بغیر بھی ہیں جو ایکام کی تعمیل کی درت نہیں۔ کی دیے تھی بین کی تعمیل کی مربی کی درت نہیں۔ کی ان کی تعمیل کی تعمیل کی درت نہیں۔ کی دیا تعمیل کی مربی کی درت نہیں۔

معادون القرآن جث لدشتم

اسكے تبیری صرف شیاطین لینی كفار جنات كا ذكر فرمایا كه ده با دجود این كفر دسر کشی كے زبردسی حفرت میلیان كے تابط فرمان رہتے مقے الدشاید اسى لئے آیت كے آخر میں بیچ لدبڑھایا گیا كہ بم بى اُن كے محافظ عقے در نہ كفا دجنات سے تو ہرد قت بیٹ طرہ تفاكہ دہ كوئ نقصان بہن او بین محر حفاظ برہ و تدن كا اسلام كوئى كرند نہ بہنجا سے تو ہم دو تدن کا محرد الله الله کوئى كرند نہ بہنجا سے تھے د

ایک تطیفه احضرت داود علیاتسلام کے لئے توش تعالی نے سب سے زیادہ سخت ادرکتیف اجسام کوسخ فرمایاجن میں بہاڑ اور دوہاجیسی سخت چیزیں شامل ہیں ، اسکے بالمقابل سیمان علیابسلام کیلئے ایسے اجرام تعلیم کیلئے ایسے اجرام تعلیم کیلئے کے ایسے اجرام تعلیم کیلئے میں ہوتا واضح کیا گیا ہے (نفسیارک برلاوازی) کا ملہ کا میرسم کی مخلوفات پر حاوی ہوتا واضح کیا گیا ہے (نفسیارک برلاوازی)

وَا يَتُوْبِ اِذْ نَاذَى رَبِّكَا إِنِي مُسَنِى النَّرُّو اَنْتَ اَرْحَوْ الرَّحِوِ اِنَ عَلَى النَّرِي وَانْتَ اَرْحَوْ الرَّحِوِ اِنَى الْمُ الْمُورِ وَانْتَ اَرْحَوْ الرَّحِو اِنْ اللهِ اللهِ وَالْوَالِ فَي اللهِ وَاللهِ وَالل

فلاصر تفسير

اوراتیب رعلیاسلام) کے قضے کا تذکرہ کیجے جب کہ انھوں نے درمض شدیدیں مبتلام ویکے بعدی اپنے دب کو پُکاداکہ جُھ کو یہ کلیف جہنے دہی ہے اور آپ سب مہر بالؤں سے زیا وہ مہر بان ہیں (توابئی مہر بانی سے میری یہ کلیف دُور کر دیجئے) توہم نے اُن کی دُعا قبول کی اور اُن کوج تکلیف تھی اُس کودُور کر دیا اور د بغیرائن کی درخواست کے) جسے اُن کا کہنہ دلینی اولا دجو اُن سے خائب ہوگئے تھے دی اللہ کا کہنہ دلینی اولا دجو اُن سے خائب ہوگئے تھے دی اولا کی اور اُن کوج تکلیف تھے دی اُن کے باس آگئے اللہ میں کہ افسان کے باس آگئے بابی معنی کہ استے ہی اور پیلے تھی دائل عکومہ کہ افی ضرح المنان) اور اسکے ساتھ (گنتی میں) اُن کے برابر اور بھی دید کیے خاہ خود اپنی سب اُن کے برابر اور بھی دید کیے خاہ خود اپنی سب سے یا اولا دی اولا دی دولا دی دالوں کے لئے ایک یا دگار دہنے کے سبب سے اور عباوت کرنے والوں کے لئے ایک یا دگار دہنے کے سبب سے اور عباوت کرنے والوں کے لئے ایک یا دگار دہنے کے سبب سے ۔

معارف ومسائل

قصة اقد ب مليالتلام حضرت اقد بعليالسلام كے قصة بين امرائي روابات براى طويل بين انتين سے جن اور خوات مى خوات الدى الله مى الله

میں موجود ہیں اورزیادہ نرائج کو ایات ہیں حافظ ابن کنیزنے اس قصتے کی تفصیل میکھی ہے کہ

ايوب عليالسلام كوحق تعالى في ابتدايل مال و دولت اورجائدًا دا ورشا ندار مكانات اورسواريا اورا ولا داورشم دخدم ببت کچھ عطافر مایا تھا بھرالٹہ تعالیٰ نے ان کو سیفیرا نہ آز مائش میں مبتلاکیا یہ سب چیزی آنے ہاتھ سے بکل گئی اور بدن میں بھی اسی سخت بیاری لگ کئی جیسے جذام ہوتا ہے کہ بدن کا کوئ حصد بجز زبان اورقلب کے اس بیاری سے نہ بیا وہ اس حالت میں زبان وقلب کو اللہ کی یا دمیں مشغول رکھتے اور مشکرا واکرتے رہتے تھے۔ اس شرید بماری کی وجہ سے سب عزیز دں ، و دستوں اور يروسيون في الله كوالك، كرك أبا دى سے باہرا ك كوڑا كيره ولك كى جكرير والديا - كوئ أن كے باس منه جاتما تقاصرت أن كى بيزى ان كى خبرگرى كرتى تهى جوحضرت يوسف عليه السلام كى مبيتى ياليوتى تقى حبكا نام کتیا بنت میشاا بن بوسف علیالسلام تبلایاجانا ہے دابن کثیر، مال دجا نُداد توسیختم ہوجیکا تھا ان کی زوجہ محرتمہ محنت مزدوری کرکے اپنے اور اُن کے لئے رزق اور صروریات فراہم کرتی اورائی فدیت كرتى تقين - ايوب علىيالسلام كايرابتلا، دامتحان كوئ حيرت وتعجب كى جيز نہيں ، نبى كرىم صلے الله عكية لم كا ارشاد كهاشة التاس بلاء الانبياء ثقالقالحون ثقرالامثل فالامثل العني سب سازياده سخت بلائي اورآ زماكشين انبيارعليهم السلام كوبيش آتى بين ان كے بعد و دمرے صالحين كو درجه بررجه-اور ایک روایت میں ہے کہ سرانسان کا اجلار اور از ماکش اس کی دینی صلابت اور صفوطی كے اندازے پر ہوتا ہے جو دین میں جتنا زیا دہ ضبوط ہوتا ہے اُشیٰ اس کی آر ماکش وا بتلا، زیا دہ ہوتی ہی (تاكداسى مقدارسے اسكے درجات اللركے نزديك بلند بوں) حضرت ايوب على السلام كوش ال فے زمرہ انبیار عیبی السلام میں دینی صلابت ادر صبر کا ایک انتیاری مقام عطافر مایا تھا رجیے دادد علية لسلام كوت كركا ايسانهي امتياز ديا كيامقا) مصائب وشدا مُدير صبر مين حضرت ايوب عليالسلام ضرب المثل ہیں۔ یزید بن میسرہ فراتے ہیں کہ جب الشر تعالیٰ نے ایوب علیالسلام کو مال واولاد وغیرہ عدہ حضرت اتوب علیانسلام کی بھاری کے بار ہے ہیں اس روایت کی اصلی دضاحت معار ف الفر آن جلد نور یصفح نمر ۲۲ ۵ يرسوره صائے ذيل س ملاحظ فرمائيس - محدثقي عثماني ١١٨ /١٢ ٢١٥ هـ -

سورة الانبيار ٢١: ١٨ سپ دُنیای نعمتوں سے خالی کرکے آزمائش فرمائ توانھوں نے فارغ ہوکرالشرکی یا دا درعبادت میں اور زیاده محنت شروع کردی اورانشر تعالی سے عرض کیاکہ اے میرے پر در دی کاریس تیراشکرا داکر تا ہوں کہ تھے نے مجھے مال جائد اور دولتِ وُنیا اور اولاد عطافر مائ جس کی محبت میرے دل سے ایک ایک جزور پرجھاگئی محراس ریمی سے را داکرتا ہوں کہ تو نے مجھے ان سب چیزوں سے فانغ اور فالی کر دیا اور اب میرے اورائے درمیان مائل ہونے والی کوئ چیزیاتی ندری -حافظاین کشیریه مذکوره روایات نقل کرنے کے بعد لکھتے ہیں کہ دہر بن منبرے طویل دوایات منقول بین جن میں غرابت یائ جاتی ہے اورطویل بین اسلئے ہم نے ان کو چھوڑ دیا ہے۔ حضرت ایوب علیبالسلام کی حضرت ایوب علیبالسلام اس شدید بلار بین کرسب مال دجانداد دُعاصبر کے خلاف بہیں اور دُولت دُنیا سے الگ ہوکرایسی جہانی بیاری میں مبتلا ہوئے كرتوك ياس آتے ہوئے كھرائيں، بستى سے باہراكيك كوڑے كچرے كى جگہ برسات سال چندماه یڑے رہے تھی جزع وفرع یا تسکایت کاکوئ کالمنربان پر نہیں آیا۔ نیک بی بی لیا زوجہ محترمہ نے وض می کیاکدات کی تکلیف بهت بره همکئی ہے استرسے دُعاکیجئے کہ یہ تکلیف دُور ہوجائے توفرایا نے سترسال میح تندرست اللہ کی بے شمار لنمت وودلت میں گزار سے ہیں کیااسکے مقابلے ين سات سال مجي مصيبت كرو نيشكل بين - بينيبرانه عزم و ضبط اورصبرو ثبات كايه عالم تفاكه وعاكر في يحي بتت نه كرتے تفے كركهيں صبر كنجلات نه بهوجائے (حالا تكه الترتعالے = دُعاكر نااورا پنی احتیاج و تکلیف بیش كرنا بےصبری میں داخل نہیں) بالآخر كوئ ايساسبينيز آیاجیں نے ان کو دُعاکر نے برمجبور کر دیا اور جیساکہ اُویر لکھا کیا ہے کیماء دُعاء ، کا کا کوئی بے صبری منهين تقى حق تعالى ف الله محمال صبر مراية كلام بين مهر شبت فرمادى ہے فرمايا [قَاوَجَ لُ مَا الله عَمَا إِلاّ اس سبب كے بيان بين روايات بہت مختلف اورطوبل بين اس لئے ان كوچھورا جاتا ہے -ا بن ا بی حاتم نے حضرت عبدالشر بن عباس است د دایت کیا ہے کہ د جب ابوب علیالسّلام كى دُما قبول دوى اور أن كو علم بهواكه زمين براير الكائي بيبان سے صاف يا فى كا چينم يھي نے گاأس غسل سيجة ادراسكاياني سيئة توبيرسارا روك جلاجائيكا يصفرت ابوب في السيح مطابق كيا تمام بدن جو زخوں چور تقااور بجزید یوں کے مجھ مزرہا تھا اس تیہ کے یافی سے سل کرتے می سارابدن کھال اور مال کیا کی ا بني اصلى حالت يراكئة توى الله تعالى نے أن كے لئے جنت كا أيك لباس بھيجاريا وہ زميب تن فرمايا ا در اس کوڑے کیے ہے سے الگ ہوکرایک کوشیس مبھے گئے۔ زوج محترمہ حسب عادت اسی خبر کری کے الحائ توان كوابن جكرينه باكررون لكى - ايوب على الداسلام جواك كوشهي بيطي وي عقوان كو بہیں بہجانا کہ حالت بدل بچی تقی ، اڑھیں سے یُوجیدا کہ اسے خدا کے بندے دکیا بھیں معلوم ہے کہ)

PIZ

سورة الانبيار ١٦: ٢٨

معارف القرآن جسك

ابن سعودرہ نے فرمایاکہ حضرت ایوب علیہ اسلام کے سات ارائے سات کو کیاں تقیں اس ابتلار کے زمانے میں یہ سب مرکئے تنفے، جب اللہ نے ان کو عافیت دی تو ان کو بھی دوبارہ زندہ کر دیا ادرائی اہلیہ سے بنی اولاد بھی اتنی ہی اور بہا اہر گئی جس کو قراق میں حَقِیْ کَاهُمُ مَّامَّ مُر مایا ہے۔ تعلی لے کہا کہ یہ قول ظاہر آیت قراق کے ساتھ اقرب ہے۔ (قطبی)

ر بین حضرات نے فرمایا کہ نئی اولا دخودا پنے سے اُتنی ہی بل گئی حبتی پہلے تھی اوراُن کے مثل اولا دسے مرادا ولا دکی اولا دہے واللہ کا عالمے

و المعين و إذرنس و ذاكفن كالمعنى الطهرين في و

فلاصتريس

ادر المحلم الهدين اور فروالكفل (كے قصته) كا تذكره كيجيئے يہسب (احكام الهدين ليبيراور شكو بينيريه) نما بت قدم رہنے والے توكوں ميں سے تنفے اور ہم نے ان دسب كوا بنى رحمت (خاصه) ميں داخِل كرليا تفا بينيك يہ دسب كمال صلاحيت والوں ميں تنفے -

معَارف ومسَائِل

FIA

سورة الابنيار ٢١ : ٨٨

معارف القرآن جر لدشم

فرما ياكدان كانام ان دونوں بينجير كيسا تھ شامل كركے ذكركرنے سے ظاہر يہى ہے كدير هي كوئ الشركے نى اور يىغىبر يقى كونىن دومىرى دوايات سے يولام ،وتا ہے كدية زمرة انبياريس نہيں تقے بلكه ايك مرد صالح اوليادالتدي سے تھے۔امام تفسير ابن جرير نے اپني سندكىيا تھ مجاہر سے نقل كيا ہے كہ حضرت يسكم رجن كانبي دييغير بونا قران مي مركور مهر، جب بوره اورصفيف بوكئة تواداده كياكرسي كواينا غليقه بنادیں جوائ کی زندگی میں وہ سب کام ان کی طوف سے کر ہے جونبی کے فرائض میں داخل ہیں۔ اس مقصد كے لئے حضرت يسئے عليال ام في اينے سب صحابہ كو جمع كياكه مي اينا خليف سب أنا عابتا موں سے لئے تین مشرطیں ہیں جو شخص ان شرائط کا جامع ہواس کو خلیفہ بنا ڈن گا۔ وہ بی کرمیں يەجى كەدە بمىشەردۇرە دكفتا بىوادر بېيشەراتكوعبادت بىن بىدار رىتا بىدا در كىمى غصىرىنى كرتا بورجى بىر ایک ایسا غیرمعرد و شخص کھڑا ہواجس کولوگ حقیر ذلیل تھے تھے اور کہا کہ میں اس کام کے لئے حاصر موں -حصرت نیئے نے دریا فت کیا کہ کیاتم ہمشہ دورہ اکھتے ہوا در ہمیشہ شب بیداری کرتے ہو اور مھی غصتہ نہیں کرتے۔ اس محض نے عرض کی پیشک میں ان تین چیزوں کا عامل ہوں عصرت لينغ ذكوشايد كجيرا سحقول براعتما د نه بوااسك أس ر وزاسكو زُ دكر ديا بيمرسي و وسرے دوزاسيطرح مجمع سے خطاب فسسر مایا اور سب حاصرین ساکت رہے اور بہی خص بھے۔ رکھڑا ہوگیا اُس وقت حضرت يسئ في ان كواينا فليفه نامز دكر ديا - شيطان ني به ديمهاكه ذوالكفلُ الين كامياب وكم توایناعوان شیاطین سے کہا کہ جاؤکسی طرح استخص برا ٹر ڈالوکہ یہ کوئ ایسا کام کر بیٹے جس سے يمنصب اسكاسلب موجائ - اعوان شيطان نے غدركرديا -كدده مارے قابومين آيوالانہي شیطان ابلیس نے کہاکہ اچھاتم اس کو تجھ پر تھے وڑو دیں اُس سے نمٹ لوں گا) جھنرت دالکفال اینے اقرار كے مطابق دن بھرروزہ رکھتے اور رات بھر جاگتے تھے صرف دو بیر کو قبیلولہ کرتے تھے و قبیلولہ دو بیر کے سونے کو کیتے ہیں) شیطان میں دو پیر کوان کے قیاولہ کے وقت آیا اور دروازہ پر دستا۔ دی پیر بیدار ہو گئے اور اُد چھاکون ہے کہنے لگاکہ میں بوڑھا مطاوم ہوں ، انسوں نے در وازہ کھولدیا۔ اُس نے اندر پہنچگرایک افسانہ کہنا شروع کر دیا کہ میری برا دری کا جھے سے چگڑا ہے آٹھوں نے جھ پر یہ ظلم کیا و فطلم کیا، ایک طویل داستان مشروع کردی بیانتک کردو بهر کے سونے کا دقت ختم ہوگیا۔ حضرت ذوالكفل نے فرما ياكر جب ميں باہراؤں توميرے ياس آجاؤين مخفاراحق ولواؤل كا -حضرة في والكفل الم ترشر بعيث للن اورا بني محلس عدالت بين أسكا أسطا وكرت مس محراسكونهي يا يا -الكاروز مجرجب وه عدالت مين فيصله مقدمات كالتع بميضة تداس بورص كانتظاركرت باوريه نه آیا۔ جب دو پہرکو پھرتعلولہ کے لئے گئیرس گئے تو تیجنس آیا اور دروا زہ کو شنا شروع کیا۔ انھوں نے مجربوجهاكون بب بجواب دياكه أيك ظلوم بورها به أنهول في يردر وازه كعولديا ادرفرماياكه كب

كِل

رت القران ج

یں نے کل تم سے نہیں کہا تھا کہ جب ہیں اپنی مجلس ہیں جھیوں تو تم اجا و رہم نہ کل آئے نہ اس جے ہے اے کا اسے کہا کہ حضرت میرے فحالف بڑے جبیت ہوگ ہیں جب انھوں نے دیکھا کہ آب بی مجلس ہیں جیٹے ہیں اور ہیں حاصر ہو گا تو آپ اُن کو میراحق دینے برعجور کریں گے تو اُنھوں نے اُسوقت اقراد کولیا کہ ہم تیراحق لیتے ہیں ، بھر جب آپ مجلس سے اُنھے کئے تو اُنکار کر دیا ۔ اُنھوں نے بھراسکو بھی فرمایا کہ اب جا وُجب ہی مجلس میں جھے وہ میری اُن کے بیاس ہیں جھے وہ ہم کا سونا بھی دہ گیا اور وہ با ہم محلس میں جھے وہ میری اُن کے اوراس بوڑھے کا اُنظار کرتے ہیں واگھے روز بھی دو بہر کا شار کیا وہ بنہیں یا پھر جب تیسرے دورد وہم کا وقت ہوا اور نین کو تنسر اون ہوگیا تھا نیند کا غلبہ تھا) تو گھرمیں آگر گھر دالو کو اب مقرد کیا کہ کوئش خص در وار نے پر دیتک نہ دے سے ۔ یہ بوڑھا پھر شیسرے دور بر بہنچا اور در دوا اُن میں کہا نہ تو گھرمیں آگر گھر در داران ویک نے بہنچا ور در کھا کہ بینے خص گھرکے اندر ہے اور در کھا کہ بینے خصرت ڈواکلفل نے بہنچاں لیا کہ بھوں کیا کہ بہنچاں لیا کہ بہنچاں کیا کہ بہنچاں لیا کہ بہنچاں لیا کہ بہنچاں لیا کہ بہنچاں لیا کہ بھوں کیا کیا کہ بھوں کیا کہ بھوں کیا کہ بھوں کیا کیا کہ بھوں کیا کہ بھو

شیطان ہے اور فرمایا کہ کیا تو خدا کا دہمن ابلیس ہے؟ اس نے افراد کیا کہ ہاں ، اور کہنے لگا کہ تو نے مجھے میری ہر تدبیر میں تھ کا دیا کہمی میرے جال میں نہیں آیا ، اب میں نے یہ کوشش کی کہ تجھے کسی طرح غصتہ دلا دوں تاکہ تو اپنے اس افراد میں جھوٹا ہوجائے جو کیئے نبی کے ساتھ کیا ہے ، اس لئے میں نے بیرسب سرکتیں کیں ۔ بیروا قدہ تھا جس کی وجہ سے اُن کو ذواکوفل کا خطا ہ

دیا گیا ای کیونکه دوالکفل محمعنی بن ایساسخص جواین عهدا در دمه داری کو بورا کرے احضرت

دوالکفل این اس عہد پر بورے اُترے۔ (۱بن کھیں) منداحدیں ایک دوایت اور مجی ہے مگر اسیں دوالکفل کے بجائے الکفل کا نام آیا ہے۔ اسی لئے ابن کشیر نے اُس روایت کونقل کرکے کہا کہ یہ کوئ دوسراشخص کفل نامی ہے وہ ذوافل

جنکاذکراس آیت میں آیا ہے دہ نہیں۔ دوایت یہ ہے:۔

حضرت عبدالله بن عرا فراتے ہیں کہ میں نے دسول الله صلے الله علیہ مسایک مدین اسٹی ہے اور ایک دو مرتبہ ہیں بلکہ مات مرتبہ سے زا کرشنی ہے دہ یہ کہ آپ نے فرما یا کہ کونسل بنی ہے اور ایک کا ایک غض تھا جو کسی گنا ہ سے پر ہمز نہ کرتا تھا ، اُسکے پاس ایک عورت آگ اُسنے اسکو ما تھ دینا در گذیاں) دیں اور فعل حوام پر اسکو راضی کر لیا ۔ جب وہ مباشرت کے لئے بیٹھ کیا تو بیعورت کا نینے اور رونے لگی اُس نے کہا کہ رونے کی کیا بات ہے کیا میں فی تم پر کوئ جبر اور ذبر دسی کی ہے ۔ اس نے کہا نہیں جبر تو نہیں کیا ، لیکن یہ ایساگنا ہ ہے جو بی نے کہا کہ وہ خوس مراسوقت مجھا بنی ضرورت نے جبور کر دیا اس لئے اسپر آبادہ ہوگئی یہ سکر وہ خص نہیں کیا اور اسوقت مجھا بنی ضرورت نے جبور کر دیا اس لئے اسپر آبادہ ہوگئی یہ سکر وہ خص

سورة الانسار ٢١ : ٨٨

ايمان والولك

معادت القرآن جسي لدشتم

اسی حالت میں عورت سے الگ ہو کرکھڑا ہوگیا اور کہا کہ جا دُیہ دیناد بھی بھادے ہیں اور اہے کفل بھی کوئی گنا ہ نہیں کر بگا، آنفاق میہ ہواکہ اسی رات میں کفل کا استقال ہوگیا اور میں اسکے در واز یرغیبے یہ تحریک میں ہوئی دیجھی گئی غفل دلاہ ٹلکوفل مینی ادلتہ نے کوفل کو نجشدیا ہے۔

۔ ابن کشیرنے میہ روایت منداحد کی نقل کرنے کے بعد کہا ہے کہ اس کو صحاح سِتّہ میں سے کسی نے روایت نابت بھی ہے تواسمیں کسی نے روایت نابت بھی ہے تواسمیں ذکر کفل کا نہیں ، یہ کوئی دومسرا شخص معلوم ہوتا ہے قرائلاً اُٹا اُٹاکھ اُٹھ کے ذوالکفل کا نہیں ، یہ کوئی دومسرا شخص معلوم ہوتا ہے قرائلاً اُٹا اُٹاکھ اُٹھ کے اُٹھ کا نہیں ، یہ کوئی دومسرا شخص معلوم ہوتا ہے قرائلاً اُٹاکھ کے

فلاصه کلام برہے کہ ذواکلفل مضرت کیئے ہی کے فلیفہ اور ولی صالح تھے اُن کے فاص محبوب اعمال کی بنا پرہوسکتا ہے کہ اُن کا ذکراس آیت میں بزمرہ انبیار کر دیا گیا اور اسبیں بھی کوئ بعد نہیں معادم ہو تاکہ منٹر نوع میں بیرحضرت کیئے کے فلیفہی ہوں بھرحق تعالیے نے ان کو منصب نبوت عطا فرما دیا ہو دلالان سے کان کا دکتا گئے آئے گئے

وَذَالنُّوْنِ إِذَ ذَهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ أَنْ لَنْ نَقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادَى فِي وَالنَّوْنِ إِذَ ذَهَبَ مؤر بِهر بَهِمَادَ بَم مَ بَرْسَين عَلَى اللَّهِ بَهِر بَهِمَ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الْمُؤْمِنَ الظّهِ الْمُنْ الظّهِ الْمُنْ الظّهِ الْمُنْ الظّهِ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّ

فلاصترنسير

محص لی ہم نے اسکی فریاداور بجادیااسکواس کھٹے سے اور کونہی ہم بجادیت ہیں

اور ایس از ایس

معادف القرائ جسيلة شتم والمستعدد

عُرض قُرعه برِاتفاق ہوا تب بھی ان ہی کانام نوکلا، آخرائی کو دریا میں ڈالدیا اور فدا کے کہ ہے اندایک مجھی نے نوکل لیا، اخرجۂ ابن ابی حاتم عن ابن عباس کذا نی الدرالمنظور) پس اُنھوں نے اندھیروں میں کیکارا (ایک اندھیرائیس کے قائم مقام، یا بقیسرال درھیرازات کا، دو مرا دریا کے پانی کا دونوں گہرے اندھیرے جو بہت کا ندھرو کے قائم مقام، یا بقیسرال درھیرازات کا، قالد ابن مسعود رہ کا فی الدرالمنظور، غرض ان تا رکیپول میں درعا کی اگر آگیکے سواکوئی معبود ہمیں رہے توجیدہے) آپ سب نقائص سے ہاگ ہیں (یہ تنزیہ ہم) میں جینک قصور حالہ ہوں (یہ استعفار ہے جب سے مقصود یہ ہے کہ میراقصور معاف کرکے اس شدت میں جیات دی اجماقت ہور کی اور اُن کو اس گھٹن سے نجات دی (جمکا تھتہ سور کہ سے خات دی کو جمکا تھتہ سور کہ معافات میں فذہوں کو ایک اور اُن کو اس گھٹن سے نجات دی (جمکا تھتہ سور کہ کرب اور غم سے نجات دیا کہ تو ہوں کہ جیندے غم میں دکھنا مصلحت شہوں ۔

معارف ومسائل

و ذاالت و مصرت بوس بن متى عليه اسلام كاقصة قرال كريم في سوره بوس بهوره البياد مي النون الميس وره البيار الميس ال كااصل نام ذكر فرمايا ہي دالنون الميس الله كا اصل نام ذكر فرمايا ہے كہيں ذر النون يا صاحب الحوت كالقاب سے ذكر كيا كيا ہے - نون ا درحوت دونوں كے مصنے مجھلى كي بيں افروالنون اور صماحب الحوت كا ترجم ہے تھلى والا ، حضرت يونس عليه اسلام كو تبقد مرا اللى چند دوز بطرن ماہى ميں دہنے كا واقعہ غريم بيش آيا تھا اس كى مناسبت سے ان كو ذوالنون بى كہا جا آئى اور صماحب الحوت كے الفاظ سے بھى تعبير كيا گيا ۔

قصہ رئونس علیالسلام الفسیرابن کشیر میں ہے کہ رئونس علیالسلام کو علاقہ موصل کی ایک ہی ایک نیونی کے لوگوں کی ہدا ہے کہ بھیجا گیا تھا۔ رئونس علیہ السلام نے ان کو ایمان وعلی صالح کی دعوت دی ، اُنھوں نے تمرّدا ورسمشی سے کام لیا۔ یونس علیہ السلام ان سے نا دا صن ہو کر ب تی سے نکل کئے اور اُن کو کہد یا کہ تین دل کے اندر کھارے اوپر عذاب آجا سے گا۔ گیونس علیالسلام سبتی چھوکر کرنیکل گئے توان کو نکر ہوئی کہ اب عذاب آہی جا کیگا داور لعبض دوایات سے معلوم ہوتا ہے کہ عذاب کے عذاب کے معون آثاد کا اُن کو مشاہدہ تھی ہوگیا) تو اُنھوں نے اپنے مشرک دکفرسے تو ہی اور سبتی کے عذاب کے معون آثاد کا اُن کو مشاہدہ تھی ہوگیا) تو اُنھوں نے اپنے مشرک دکفرسے تو ہی اور سبتی کے مسب مردعورت اور بی کو مشاہدہ تھی ہوگیا) تو اُن کے بیٹوں کو اور اُن کے بیٹوں کو کھی ساتھ لے گئے اور ایک کے اور ایک کر دیا اور سب نے گریہ و زاری کرنا شروع کی اور ایک کے اور ایک کر دیا اور الحاج و زاری کر قبول کرلیا الگ کر دیا گیا تھا الگ شور د غل کیا جق تو اللے نے اُن کی تی ہوا ور اور الحاج و زاری کو قبول کرلیا الگ کر دیا گیا تھا الگ شور د غل کیا جق تو تو الے نے اُن کی تی ہوا ور اور الحاج و زاری کوقبول کرلیا الگ کر دیا گیا تھا الگ شور د غل کیا جق تو الے نے اُن کی تی ہوا ور اور الحاج و زاری کوقبول کرلیا الگ کر دیا گیا تھا الگ شور د غل کیا جق تو اور کیا گیا تھا الگ خور کو کرائی کو قبول کرلیا

سورة الانبيار ١٦:٨٨

ادر عداب أن معيما ديا-ا د حرحصرت يوس عليدستام اس أتظارس رسيحكم توم يرعداك رباء ده بلاك ہوگئی ہوگی جب اُن كويىر پيتر جلاكر عذاب نہيں آيا در قوم سے سالم اپنی جگہ ہے تو (ان كو يه فكرلاحق موى كداب مين حجوظ مجها جا دَل كا، اور بعض روايات مين بهكداك كي قوم مين يدر جاری می کرسی کاجھوٹا ہونا تابت ہوجائے تواس کو قتل کردیا جاتا تھا (مظھری) اس حضرت ئیونس علیابسلام کوا بنی جان کا بھی خطرہ لاحق ہوگیا تو) ٹیونس علیہ السلام نے اپنی قوم میں ہی جانے سے بجائے کسی دوسری جگہ کو ، جرت کرنیکے کے قصد سے سفرافتیا رکیا داستہ میں دریا تھ اسكويادكرنے كے لئے ايك شتى بيں سوادم وسے - اتفاق سے شتى ايسے گرداب ميں تعينى كرعنے رق مونے کا خطرہ لاحق ہوگیا ملاحوں نے یہ طے کیاکہ شی می کوارلوگوں میں سے ایک کو دریا میں الدیا جائے تو باتی توک غرقابی سے مفوظ رہ سکیں گے۔اس کام مے لئے کشتی والوں کے نام پر قرعہ ا ندازى كى كنى اتفاق سے قرعه حضرت يونس على السلام سے نام يزيكل آيا دكشتى والے شايداكى بزرگی سے واقعت تھے) ان کودریا میں ڈالنے سے انکارکیا اور دوبارہ قرعمر ڈالا پھر بھی اسمیں نا بونس عديد بسلام كأليكلاء ان كو بهرسي "ما مل موا توتيسري مرتبه قرعه دالا بهربهي أنفين كانام ليكل آيا ـ اسى قرعه اندازى كا ذكر قرآن كريم بين دوسرى جكه ان الفاظ سے آيا ہے فسيا هُ هَ فَكَانَ مِنَ الْمُنُّ حَصِنْیْنَ تعِنی قرعه اندازی کی گئی تو تونس علیالسلام ہی اس قرعه میں تنعین ہوئے۔ اس وقت يُونس على السلام كفرا من الموكمة ادرا بين غير ضرورى كيراك أنادكرا بين أب كودرياس والديا أدهر حق تعالا نے بحراخضرے ایک مجھلی کو سم دیا وہ دریاؤں کو چیرتی بھاڑتی فوراً بہاں ہنے محتى دكما قالدا بن سعودرة) اوريُونس عليه السّلام كواين اندر لي ليا - الله تعالى في محيلي كويه بدايت فر مادی تقی که مذان کے گوشت کو کوئ نقصان بہنچے مذہری کو بیرتیری فذا نہیں بلکہ تیرا پیٹ جیند ر دز کے گئے ان کا قید فانہ ہے دیہا تک پر دافقر دایت ابن کثیر میں ہے ، جزان کامات کے جو توسین میں لئے گئے ہیں وہ دومری کتابوں سے لئے ہوئے ہیں) قر آن کریم کے اشارات اور بعض تصريجات سے آنا معادم ہوتا ہے كرحضرت يونس على السلام كا بغيرالله تعالى كے صريح كم كے اپنی قوم كوجهود كزيك جانا المترتعا المكنزديك نايندم وااسى يرعتاب نازل مواا وردرياس مير فحفيلي

کے پیٹے میں رہنے کی ہو بت آئی۔ حضرت گویس علیہ اسلام نے جو قوم کو مین دن کے اندر عذاب آجانے سے ڈرایا تھا ظاہر ہے ہے کہ بیدا پنی رائے سے نہیں ملکہ وحی الہٰی سے ہوا تھا اور اسوقت قوم کو چیوڈرکران سے الگ ہوجانا بھی جو قدیم عادت انبیار علیہ ماسلام کی ہے ظاہر ہیہ ہے کہ میجمی مجکم خدا وندی ہوا ہوگا یہا تنک کوئی بات لغزش کی موجبِ عماب نہیں تھی مگر جب توم کی تجی تو بہ اورالی اے وزاری کو انتر تعالیٰ نے قبول

معارف القرآن جسكرتم

تفسیر قرطبی میں قشیری سے بھی نقل کیا کہ ظاہر ہیہ ہے کہ بیصورتِ غضب ہونس علیا سلام کی اُسو قت بیش آئ جبکہ قوم سے عداب ہٹ گیا ان کو یہ بیند مزتفا ، اور مجھای کے بیٹ میں چندروز رہنا بھی کوئ تعذیب نہیں بلکہ تا دیب سے طور پر تھا جیسے ا ہیے نابا لغ بچوں پر زجر و تبنیہ تعذیب نہیں ہوتی تا دیب ہوتی ہے تاکہ آئندہ وہ احتیاط ہر میں (خطبی) واقعہ مجھے لینے کے بعد آیا تِ مذکورہ سے

الفاظ کی تفسیر دیکھنے

فَدُهُبَ مُغَافِدًا ، بعنی چلے گئے غضہ ہیں آگر ، ظاہر ہے کہ مُراداس سے اپنی توم پرغصتہ ہے حضرت ابن عباس من سے بیمی منقول ہے اورجن حضرات نے مغانساً کا مفعول رَبِّ کو قراد دیا ہے ان کی مُراد بھی مغانسا اربہ ہے بعنی ا پنے دب کے لئے غضتہ ہیں بھر کر جلد تیے اور کھا دفج ارسے ادلار کے لئے غضتہ کرنا عین علامتِ ایمان ہے دکڑا فی الفرطبی والبحرالمحیط)

فظن آن بی نیف دعایجہ ، نفظ نقبی رسی باعتبار لغت ایک احمال ہے کہ مصدر قدرت اور قابورہ با سکیں گے ظاہر ہے کہ مصدر قدرت اور قابورہ با سکیں گے ظاہر ہے کہ بیت ہو تھے ہے ہونگے اُنھوں نے گمان کر لیا کہ ہم اُن پر قدرت اور قابورہ با سکیں گے ظاہر ہے کہ بیت کہ بیت کمی ہیں ہوسکتا کیونکہ ایسا بھی اکفر مربح کے سعنے اس لیے بہان معنے قطعاً نہیں ہوسکتا ہوئی مسلمان سے بھی اسکا گمان نہیں ہوسکتا کیونکہ ایسا بھی اکا کہ مسلم التنظیم کی اسکا گمان ہوسکت کہ بید مصدر قدر سے شتق ہوئی کے سعنے سنگی کرنے کے بیس جیسے قران کریم ہیں ہے اکدہ گئی بشکا الائن قراد نمی کہ اور سکت کر دیتا ہے جس پر چاہے ۔ اللہ تعالی وسعت کر دیتا ہے درق میں جس کے لئے چاہے اور سکت کے دیتا ہے جس پر چاہے ۔ انگہ تفسیر میں سے عطار ، سعید بن جبیر ،حسن بصری ، اور بہت سے علمار نے بیم معنے اس آیت ایک تمین اور مرا داک میت کی بہ قراری کہ حضرت پونش علیالسلام کو اپنے قیاس داجہا دسے یہ ایس لئے ہیں اور مرا داک میت کی بہ قراری کہ حضرت پونش علیالسلام کو اپنے قیاس داجہا دسے یہ گمان تھاکہ ان حالات میں اپنی قرم کو جھوڑ کر کہیں چلے جانے کے بالے ہیں جھورکوئ سکی نہیں کیا گیا ۔ گمان تھاکہ ان حالات میں اپنی قرم کو جھوڑ کر کہیں جلے جانے کے بالے ہیں جھورکوئ سکی نہیں کیا گیا ۔ گمان تھاکہ ان حالات میں اپنی قرم کو جھوڑ کر کہیں جلے جانے کے بالے ہیں جھورکوئ سکی نہیں کیا گیا ۔ گمان تھاکہ ان حالات میں اپنی قرم کو جھوڑ کر کہیں جلے جانے کے بالے ہیں جھورکوئ سکی نہیں کیا گیا ۔

سورة الانبيار ٢١: ٩٠: معادت القران جسكد ا در تعیسراا حتمال پیجی ہے کہ میر نفظ قتل کی بمعنے تقدیر ہے شتق ہے ہی کے معنے قصناء ا در فیصلہ دیے کے بین تو معنے آتیت کے بیر ہو جھے کہ حضرت یونس علیالسلام کو بیر کمان ہوگیا کہ اس معاملہ میں جھ کر کوئ گرفت اور مواخذہ نہیں ہوگا۔ ایم تیفسیرس سے قتادہ اور مجا ہداور فرآ رنے اسی معنے كواختياركيا ہے- بهرحال پہلے معنے كا تواس جگه كوئ احتمال نہيں دوسرے يا تعيسر بے معنے ہوسكتے مِن وعاريات علياسلام برحض كے لئے ہر | و كن لك شنجى المدوني بين ، بين جس طرح بم نے زمانے میں ہرمقصد کے لئے مقبول ہے گونس علیالسلام کوغم اور مصیبت سے نجات دی مسلم بهرب مؤمنین کیسا تھے تھی بہی معاملہ کرتے ہیں جبکہ وہ صدق واخلاص کیسا تھ ہماری طرف متوجہ موں اور ہم سے بناہ ما تکیں - حدیث میں ہے کہ رشول الترصلے الشرعکی نے فرمایا کہ ذوالنون علی وه دُعاجوا تفول كے لطن مائى كے اندركى تفى يىنى لاّ الله الله كانت شبطنك الله كانت منته الظَّلِمِينَ ، جومسلمان الين كسي مقصد كے لئے ان كلمات كيساتھ دُعاكر جيجاانشرتغاليٰ اس كو قبول فرما دیکے درواہ احد والترمذی والحاکم و محد من حدیث سعدین ابی وقاص - ازمظهری) وَزَكْرِ بَيْلَاذُ نَادَى رَبِّهُ رَبِّ لَا نَنَ رُنِي فَنِ وَالْوَالِهِ الْوَالِهِ الْمِنْ وَهُمْ وركريا كوجب يحاراأس في ايب رب كوء الدرب من جيولاتو مجد كو أكيلا اور تؤس سب سي بهتر سُنِيْنَالَةُ وَوَهِبْنَالَةُ بَيْنِي وَآصَلِينَالَةُ زَوْجَهُ التَّهُ وَحَكَالَةً وَوَجَهُ التَّهُ وَكَانُونَ

بهر بمنے شن لی اسکی ڈینا اور بجشااس کو یکیلی اور اجھا کر دیا اس کی عورت کو رِعُوْنَ فِي لَيْ يَرْانِ وَيَنْ عُوْنَنَا رَغَيًا وَكَانَا وَكَانُوْ النَاخْشِعِينَ اور لکارتے تھے ہم کو توقع ساور ڈور سے ہمارے آگے عاج يصلايون بير

اورزكريا (على السلام كے قصر) كائذكرہ كيجئے جب كرانھوں نے اپنے رب كو پيگاراكدا -میرے رب جھ کولا دارف نہ رکھیو ریعنی مجھ کوفر زند دیجئے جومیرا دارف ہو) ادر (بون توس وارتوں سے بہترد مینی حقیقی دارث الیہ ہی ہیں داسلئے فرزند کھی دارث حقیقی ند ہو گا ملکہ ایک قت وہ تھی فنا ہوجا دیگالیکن اس ظاہری وارث سے بعض دینی فوائدا ورمنافع خال ہوجائیں کے اسليّة اسكى طلب مستم في الكي دُعا قبول كرلى اوريم في الكويجيني (فرزند) عطا فرمايا اورائكي خاطرس ان کی بی بی کو بھی رجو با بخو تھیں) اولا دے قابل کردیا پیسب را نبیار حبکااس سورت میں ذکر ہواہے ا يكارونين دورته تصر ادرأميد و جميساته بادي عبادت كياكرته تصاور بهارسامني و برميض.

معادف القران حسارت شم

سورة الانبيار ٢١: ١٩

معارف ومسائل

حضرت ذكريا عليالسلام كى خوا بيش تقى كدا يك فرزند دا رث عطا بواس كى دُعاماً حَيْ مُركما تقري يهجى عرض كردياكه أنت خابرا كؤاديث كرميلا مله يانه مله برحال مين آب تو بهتر دارت بي بير سيخيرانه دعايت ادب كرانبيارعليهم السلام كى صل توجرحق تعالے كى طرف و دنا چا سے غيرالتر كيطرف ان کی توجہ ہو تھی تواصل مرکز سے مذہبیتے یادے۔

يَنْ عُونَنَا رَغَبًا وَ رَهَبًا ، وه رغبت وخوت بعني راحت اورتكليف كي برحالت بيراتيلا كوليكارتي اوراسكي يمعني محى موسكة بين كه ده اين عبادت و دُعاك قت أميدويم دونول کے درمیان رہتے ہیں الشرتعالیٰ سے قبول اور تواب کی اُمید بھی رہتی ہے اور اینے کٹ اوول اور كوتاميول كى د جرك خوف كفى (قطبي)

وَالَّذِيَّ أَحْصَنَتُ فَرْحَهَا فَنَفَخْنَا فِيهُمَا مِنْ رُّوْرِمِنَا وَجَعَلْنُهَا وَ اور وہ مؤرت جس نے قابومیں رکھی اپنی شہوت مچھر پھو تکدی ہم نے اُس عورت میں اپنی روح اور کیا اسکو اور

البنعا إيد للعالمان (9) اسے میٹ کو نشانی جہان والوں کے داسط

ادران بی بی دمریم کے قصم کا بھی تذکرہ سیجئے جندوں نے اپنے ناموس کو (مردوں سے) بچایا د زبکاح سے بھی اور ناجا نزسے بھی) بھر ہم نے اُن میں (بواسطہ جبر سُل علیالسلام) این دخے بھوک --دی د حب سے اُن کو بے شوہر کے حمل رہ گیا) اور یہنے ان کو اور اُن کے فرز ند (علیلی علیابسلام) کو دُنیا جهان دالوں کے لئے دابی قدرتِ کا ملہ کی منشائی بنادیا دکہ اُن کو دیکھنا سمجھیں کہ اللہ تعالیٰ ہرجیزی قا در ہے دہ بغیر باب کے بھی اولاد بیداکر سکتا کا در اخیر مال اور باپ کے بھی جبیباکہ آدم علیالسلام)۔

اِنَ هَانِ ﴾ أُمَّنَّكُو أُمِّنَةً وَاحِدَةً عِلَا آنَارَ فِكُو فَاعْبِلُ وَنِ ﴿ ادرس بول رب محقار اسوميري بند كى كرو نَقَطَّعُوْ آ أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَكُلُّ الْبَنَارِجِعُونَ ﴿ فَالْ الْبَنَارِجِعُونَ ﴿ وَهُ فَمَنْ يَعْمَر

مرادے ایکومے بانٹ بیا توگوں نے آپسیں اپناکام سبہمائے پاس پھرائیں گے سو جو کوئ کرے کھ

سورة الانبيار ١٦: ٥٠ ادر ده د کمتا بوایان سواکارت شکری کے اسکی سی کو ادر ہم اس کو مقرد ود چکا برسی برس کو غادت کر دیا ہم E 9.6 121 7.63 المولدت جاس لکی دہ چایس اع بے خرد ہاں سے ایس ، بداع ایدس مے دوز خ اور جو بالد يح بالد بح باد اورسادے اس س 2200 جن کے اک کو د بال چلاتا ہے اور وہ اسمیں کھ ت ے أس كا آب اور وہ اے . ى ك مزول الحكارة تتلقهما ليسن آئين كان كو جس دن اہم لیرے اے دیں آسمان کوجیسے پیٹے ہی طوار بنایا تقاہم نے بہلی بار، پھراسکو دہرای کے، دعدہ ضرور ہوچکا ہے مربیم اور ہم نے کامدیا ہے زبورس نفیجت کے بیچے کہ آخرزمین یرمالک ہونگ

کِ

معادت القرآن جر سورة الانبيارا ٢: ٥٠ ربطآيات بيان مك انبيارعليهم التلام كيفصص ادر داقعات ادرأن كيضمن مين بهت سأصلى اور فروعی مسائل کا بیان تقاء اُ تصول مثلاً توحید درسالت ادر عقیدهٔ آخرت ، سب انبیارعلیهمالتلام میں اُصول مشترک میں جو اُن کی دعوت کی بنیا دے جبیا کہ داقعاتِ مذکورہ میں ان حضرات کی سر كوششول كامحور توحيدين سبحانه وتعالى كالمضمون تقاء الكي آيات مين بطوز يتجرقصص توحيد كاا اورسرک کی نرمت کابیان ہے۔ ا ب تو و اور جوانبیارعلیهم لسلام کا طریقه وعقیده توحید کامعلوم به و چکا ہے) بیر تحصارا طرلقیہ ہے د جس پرتم کورمہنا واجب ہے) کہ دہ ایک ہی طرنقیہ ہے دجبیں کسی بی ادر کسی مشریعیت کو اختلات نہیں ہوا) ادر (حاصل اس طرلقہ کا پہ ہے کہ) میں تحقاد ارب ہوں تو تم میری عبا دت کیا كرداور دوكول كوجابئة تفاكه جب بيرتابت بوجكاكه تمام انبيار اورتمام أسماني كتابي اورشوبيتي اسی طریقیہ کی داعی ہیں تو وہ بھی اسی طریقتہ پراستے مگر ایسا نہ کیا بلکہ) ان ٹوگوں نے اپنے دین ہی اختلات بيداكرليا رمكراس كى سزا دىكىسى كىكىوىكى سب بمارى ياس آنے والے بين (اور آنے کے بعد ہرانک کواسے علی کا بدلہ ملیکا) توجو تنص نیک کام کرتا ہو گااور وہ ایمان والا بھی ہوگا تواس كى محنت أكادت جانے والى نہيں ا درہم اسكولكھ فيتے ہیں رجبمیں بھول اورخطا كا امكان نہيں رہتا اُس لکھے بریئے کے مطابق اس کو تواب ملیگا) اور (ہم نے جو یہ کہا ہے کہ سب کے سب ہمادے یاس آ نیوالے ہیں اسیم مسکرین بہتجہ کرتے ہیں کہ دنیائی اتنی عرکز رکی ہے اب مک توالیسا ہوا نہیں کہ مردے زندہ ہوئے ہوں ان کا حساب ہوا ہو، ان کا یہ جھا سلنے غلط ہے کہ الشركى طرف لوشنے كے لئے ايك دن قيامت كامقردہے أس سے پہلے كوئ بہيں أوثنا ، يبي وجرب كم) ہم جن سبتیوں كو (عذاب ياموت سے) فئاكر يحكى بى ان كے لئے بير بات رباشناع شرعی) ناحکن ہے کہ وہ (دُنیامیں حساب کتاب کے لئے) پھر لؤٹ کرآدیں رمگر یہ نہ لوشنا دائمی نہیں بلکہ وقت موعود تعنی قیامت تک ہے پیمان تک کرجب روہ وقت مُوعور البَّجیگا جس کا بتدائ سامان سے جوگاکہ) یا جوج ما جوج د جنکااب سد ذوالقرنین کے ذریعیہ راستہ رُکا ہوا ہے وہ) کھولد کیے جاویں گے اور وہ (انتہائ کٹرت کے سبب) ہر ملبندی وشیلہ اور يبار) = بكلة ومعسلوم) يونكداور والشركيطرت لوشة كاسجا دعده) نزويك آينجا

کِل

سورة الانبيار ٢١: ٥ ہوگا توبس پھر کیکا یک بیر حالت ہوجائے کی کہ مسکروں کی ٹیگا ہیں تھی کی بھٹی رہ جا دیں گی (اور ده يوں منتے نظر آويں كے) مائے ہمارى كم بنى ہم اس سے غفلت ميں تھے (بھر كھير سوتيكر ہيں كے اسكوعفلت توجب كها جاسكنا كركسي نے جنين آگاه نه كيا بوتا) بلكه (حقيقت يہ ہے هم بی قصور دار تنفے دعاصل بیر بهواکہ جو توگ قیامت میں دوبارہ زندہ دو نے کے منکر تنفے وہ بھی اسوقت اسکے قائل ہوجا ویں گے الا گھے مشرکین سے لئے وعیدہے) بلاشیصرتم اور مبکوتم شرا مے سوایوج رہے ہوسے بنی میں جھو تکے جا وگے (اور) تم سب اسیس داخل ہوگے (اسیس وہ انبیار اورفرشتے دا جل نہیں ہوسکتے جن کو و نیایں بعض مشرکس نے خدااور معبود بنالیا تھا کیو مکدائن میں ب ما نع شرعي وجود به كرده السيح مشحق نهين اور شران كالهين كوي قصور به آي آيت بي إن الذين سبقت لهم سي اس جدود فع كياكيا بداوريه بات مجصفى بهكر) اكرويه مقارب عبود) واقعی معود مروتے ، تواس رجہنم س سوں جاتے اور (اجانا بھی ایساکر جندروزہ نہیں عکمہ) - رعابدین اور معبودین) اسمین بهیشه کورین گے داور) اُن کا اسمین شوروغل بهو گااوروہاں (ایسے شور دغل میں کمسی کی کوئی بات منیں گے بھی نہیں دیر تو دوزخیوں کاحال دااور) جن کے لئے ہماری طر سے بھلائ مقدر ہو یک ہے داوراسکاظہوران کے اعال وافعال بیں ہوا) وہ لوگ اس ر دوز خ سے داسقدر) دُور رکھے جاوی کے کہ اس آہے کی نہشنیں کے دکیو کہ بیر توک جند میر ہو بھے اور حبت دور خ میں بڑا بعد ہے) اور وہ توک اپنی جی جانی چیزوں میں ہمیشاریں گے (اور) ان کو بڑی کھیراہٹ ریعنی قیامت میں زندہ ہونے اور محشر کے ہدلناک مناظر دیکھیے کیجالت عمرس ند ڈالے کی اور رقبر سے تکلتے ہی ، فرشتے ان کا استقبال کری کے داور کہیں گے) یہ ہے تہادا ده دن حبكاتم سے وعده كيا جانا تھا ديراكرام كامعامله اوربشارت اُن كے لئے زيادہ خوشي وسترت كاسبب بوجاً ميكاا وراكركسي ردايت سے بيرتا بت بوجائے كرقيامت كے بول اورخوت سے كوئ مستنى ننېيى سىب كوپېش ائىرگا توجونكە نېك بندول كەلئے اسكازما نەبىپەتىقلىل بۇگااسلىنے دە كالعدم برادر) وہ دن دیجی) یاد کرنے کے قابل ہے جس دوزہم د نفخہ ادلیٰ کے بعد) آسمانوں کواسطرے لیدیٹ دیگے جس طرح المصرموك مضاين كاكا غذليديك ديا جاتا ہے (بيمريين كي بعد دواه معدوم فض كرديا جائے یا نفخہ "انبیر مک اسی حالت پر رہے دونوں باتیں ممکن ہیں اور) ہم نے جس طسرح اقل بار پیداکر بیکے وقت (ہر چیزی) ابتداری مقی اسی طرح (اکسانی سے) اس کو دوبارہ بیداکردیکے يه بهادے ذمرہ عدہ ہے ہم صرور (اسكو يول) كري كے اور داويرجونيك بندول سے تواف نعمت كا ومده مواجه وه بهت قديم اور مؤكد وعده به جنيانيهم (سب آساني) كنابول ميس كورح محفوظ ريس لکھنے کے بعد کھے چین کہ اس زمین (جنت) کے ماک میرے نیک بندے ہو بچے (قدامت اس

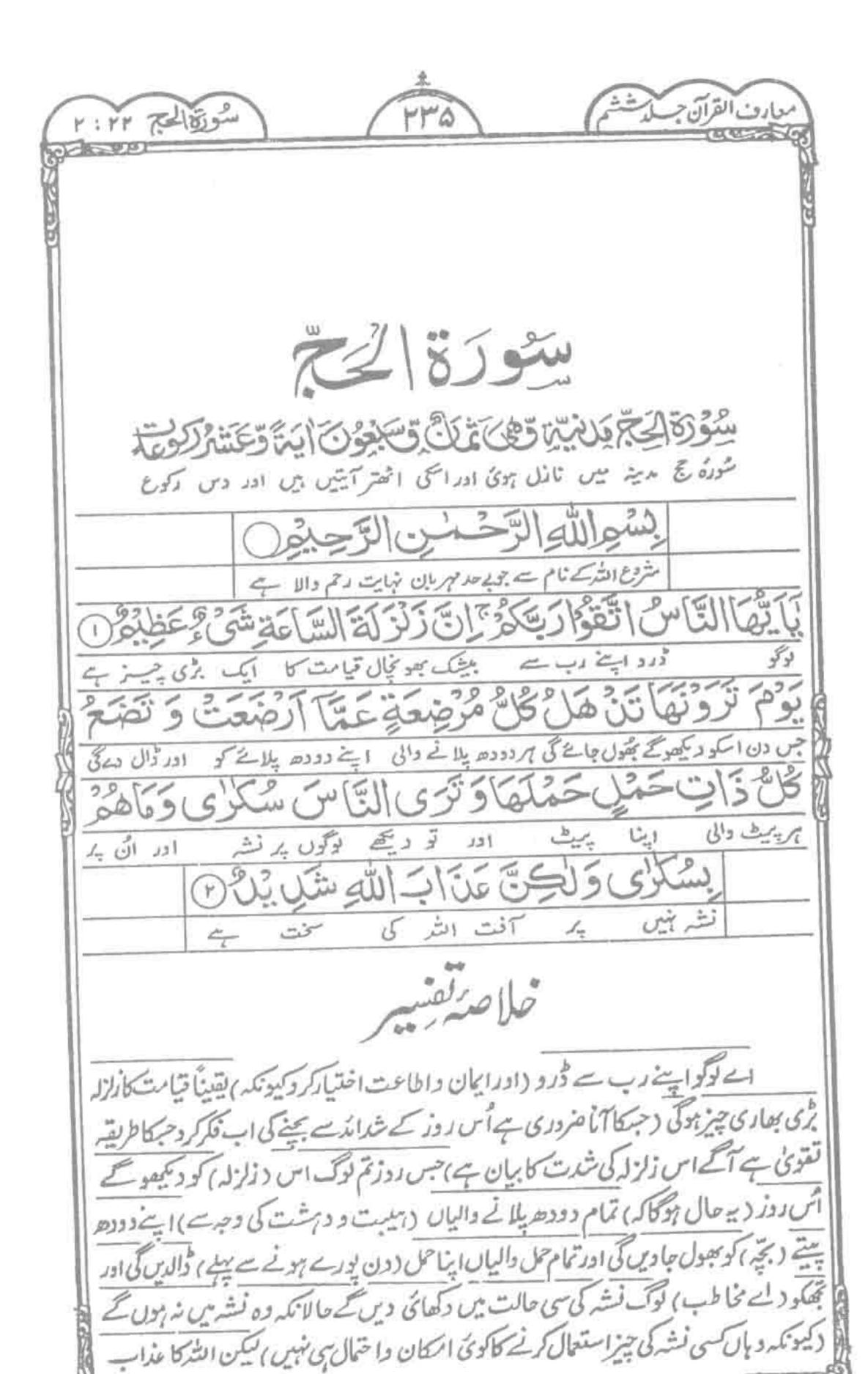
مكارف ومسائل وَحَوَامٌ عَلَىٰ قَوْيَةٍ ٱهْلَكُنْهَا أَنَّهُو لَا يَرْجِعُوْنَ ، اس جَدَلْفظ حرام بَعن متنع شرعي كَ جسكا ترجمه فلاصيفسيرس نامكن سيحكياكيا ہے اور لاَ يَرْجِعُونَ مِن اكثر حضرات مفسرين كے نزديكم ون لآذائد مهاور من آیت کے بیرین کہ جو سبتی اور اسے آدی ہمنے بلاک کردیتے ہیں آسے لئے محال ہے کہ وہ بھم توث كرُدنيامين آجائين اوربعض حضرات مفسرن نے نفظ حرام كواس جگرمجنی واجب قرارد كيرلاكو اينے معروف معنی نفی کے لئے رکھلہا درمفہوم آیت کا پرکھلے کہ داجہ اس تی بڑے ہی نے بنداہے ملاک تدیا، كروه دنياس بنين نوشي كے (خطبی) آيت كا مطلب يہ ہےكه مرفے كے بعد توبر كا دروا زه بند بروجا آہے۔ اگر کوی دنیامیں آگر عمل صالح کرنا جاء تو اسکاموقع بنیں ملیگا، اب توصرف روز قیامت کی زندگی جگی حَتَّا إِذَا فَيَتِحَتُ بِأَجُوْجُ وَمَا جُوْجُ وَهُمْ رَمِّنْ كُلِّ حَلَى إِ بَسْسِلُوْنَ ، لَفَظ حتى سابق مضمون پرتفریج و ترتیب میطرت اشاره کرتا ہے - آیت سابقہ میں پیرکہا گیا تھا کہ جو لوگ کفر پر حکے ہیر اک کا دوبارہ دنیایی زندہ ہو کر کوٹنا نامکن ہے اس عدم امکان کی انتہا یہ تبلای گئی کہ دوبارہ زندہ ہوکرکوٹنا نامکن اُسوقت تک ہےجبتک کہ بیرواقعہ پاجوج ما جوج کا بیش مذا جائے جو قیامت کی قريى علامت به جيساكه مي صفرت حذلفيرة سے روايت سے كريم جيد صحاب ايد دورانيم يكه مذاكره كريس تقد رسول الشرصيط الشرعكية المشركية المشارون لائة ادريا فت فرماياكه كيا مذاكره محقا رب درميا جادی ہے م فیع طن کیا کہ تیامت کا ذکر کر رہے ہیں آیے فرما یا کہ قیامت اسوقت تک فائم نے وگی جب تكفيس علامتيں آس سے پہلے ظاہر نہ ہوجائیں ۔ان دس علامتونیں خروج یا جوج ما جوج کا بھی کوزمایا آيت بي يأجوج مأجوج كے لئے لفظ فيتحت اليني كھولنا استعال فرمايا كيا ہے ب كے ظاہري معنے يہى ہیں کہ اسوقت سے پہلے دی سندش اور رکاوٹ میں دہیں گے قرب قیامت کے وقت جب لندہ قا كواك كالكلنا منظور وكاتويد بندش داست سي بالدى جاديكى . اور ظابر قران كرى سه يركه ليكاد ط ستر ذوالقرنين ميجوقرب قيامت مين حمم برجادے كى خواه اس سے بيديمى وه توط يكى بومكران كے كتے بالكل داستهمواراتسى وقت موكا يسورة كهف بين يأجوج مأجوج ادرستر ذوالقرنين كے كا قوع ادر دوسر مے متعلقہ مسأئل پرتفضیلی بحث ہو تکی ہے وہاں دیکھ لیاجا وے ۔ ران كُل حَل بيد يُنسِلُون ، لفظ حَل براوي جي ما يك كها جاما ہے وہ برا مي بهار بول يا جھوتے چھوٹے ٹیلے۔ سورہ کہف میں جہاں یا جوج ماجوج کے محل وقوع پر گفت کی گئی ہواس معلوم موجيكا ہے كدان كى جكہ دنيا كے شمالى بہاڑوں كے بيجے ہے اس كئے زرج كے وقت اسى طوت

سورة الانبيار ٢١: ٥٠ سے پہاڑوں میلوں سے اُمنٹر تے ہوئے نظراً بیں گے۔ إِنَّاكُوْ وَمَا تَعَبُّلُ وْنَ مِنْ دُوْنِ اللَّهِ حَصِبَ بَصَانَتُ مَ اور مُقارِكُ مِن وَجُزِ اللّ سے سب سے سب جہنم کا ایندھن نبیں گے۔ اس آیت میں تمام معبوداتِ باطلیحن کی ناجاً زیر تین كفارك مختلف كرومول في وثيامي كى سب كاجهتمين داخل مونابيان فرما ياكيا ہے اس يرييث موسكما كم ناجا زعبادت توحضرت مستقادر غزنيراً در فرشتوں كى بھى كى تنى ہے توسى جہتم ميں جانيك کیامطلب موگا داسکاجوا حضرت ابن عباس نے دیا ہے آن کی روایت تفسیر قرطبی یا مطرح ہے کہ ابن عباس نے فرمایا کہ قرآن کی ایک تیت ایسی ہے ہیں توک شبہات کرتے ہیں مگر عجبیا تفاق ہے كراسى متفلق لوك مجھ سے سوال نہيں كرتے، معلوم نہيں كرشبهات كاجواب ان لوكوں كومعلوم بردكيا ہر اسلئے سوال نہیں کرتے یا انھیں شبراورجواب کیطرف اکتفات ہی نہیں ہوا۔ لوگوں نے عرض کیا دہ کیا کر آت نے فرمایا کہ وہ آیت اِنتگورکما تعبُّک وُن الآیة ہےجب بیر آیت نا زل ہوی تو کفار قریش کوسخت الزدى ناكوار مواا در كېنے لگے كاسيں تو ہمار مے ميودوں كى سخت تو بين كى كئى ہے بيروك دعالم إلى كتاب ابن الر سے یاس گئے اوراس کی شکایت کی اُس نے کہا کہ اگریس وہاں موجود ہوتا توان کواسکا جواب دتیا۔ ان الوكوں نے پوچھاكدات كياجواب ديتے، اسے كہاكديں ان سے كہتاكدنصارى حضرت مسے على السلام كى اور مہود حضرت عزیرعلیالسلام کی عبادت کرتے ہیں اُن کے بادے میں آئے کیا کہیں گے دکیا معا ذالتہ ا و صحیح بنتم میں جائیں گے کفار قریش بیسنکر اڑے خوش ہوئے کہ واقعی یہ بات توالیسی ہے کہ محمد المستی عليهم اسكاكوى جوابنين ويستحة ، اس يوالترتعالى نے يه آيت نازل فرماى جوا كے آتى ہے إت الَّذِينَ سَبَقَتْ لَهُ مُ مِنَّا الْحُسْنَى الْوَلِيْكَ عَنْهَا مُبْعَلُ وْنَ ، لِعِيْ جِن لُولُوں كے لئے بمارى طرا بھلای اور اچھانیتی مقدر ہوجیکا ہے وہ اس جہتم سے بہت دور رہیں گے۔ اوراسى ابن الربعرى كصتعلق قرات كى يه آيت نا زل بوى وَكُنَّا خَبِرِت أَبُن مُرْكِيرَ مَثْلًا إِذَا حَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّ دُنَ البين جب ابن زبعرى نے حضرت ابن مريم كى شال بيش كى توا يكى قوم سے لوك قرىش خوشى سے شور مجانے كھے۔ لا يَخْذُ مُهُمُ الْفَنَاعُ الْآكَ يَدُ ، حضرت ابن عباسُ في فرماياك فرع اكسب سيمُراوصوركا لفي تأنيه م صرب مرد زره ورسام العلام العراب الوسك العن حضرات ني نفخ أو اللي كو فرع اكبرقرار ديائ - ابن عربي كاقول يه م كنفات تين بو تك يهلا نفي نفي فرع بدكاجس سادى دنياكے توك كھيراأ تھيں كے اس كويبال فرع اكبركياكيا ہے۔ دوسرا نفخ نفخ صعق ہوگاجس سے سب مرجابیں کے اور فنا ہوجائیں گے، تنیسرانفی نفی بعث ہوگاجس سے سبمردے زندہ موجائيں كے اس كى شهادت ميں مسند ابولعلى اور بيقى بعبد بن حميد، ابوات خے، ابن جسرير طبرى

できず

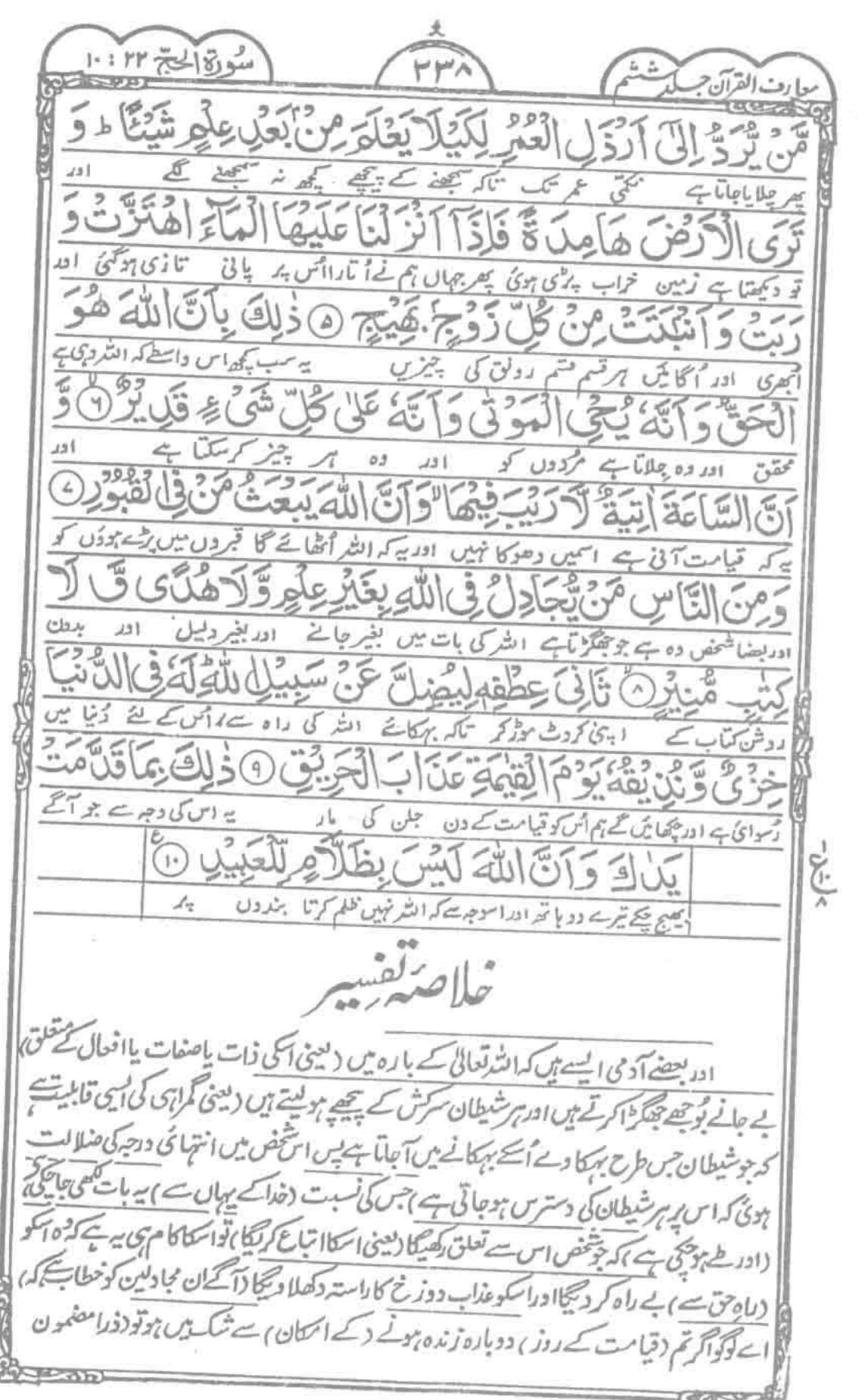
سؤرة الانبيار ١٢: ١٢ ں بناکر) مہیں جیما مگر دنیا جہاں کے لوگوں پر داین) مہر بابی کرتے کے لئے دوہ ہم یری ہے کہ لوگ رسول سے ان مصنامین کو قبول کریں اور ہدایت کے تمرات عال کریں اور جو قبو وه اُسكا قصورہے اس سے اس صفمون كى صحت ميں كوئ فرق نہيں يُرتا) آپ ان لوگوں سے کلام کے محرر) قرما دیجئے کرمیرے یاس تو (موحدین اورمشرکین کے باہی اختلات کے بالے یں) یہ دی آئ ہے کہ تمقادا معبود ایک ہی معبود ہے تو راس کی حقانیت تا بٹ ہوجا نے کے بعد) اب بھی تم ما نتے ہودیا نہیں بعثی اب تو مان بو) بھر بھی اگر ہے لوگ دا سکے قبول کرنے سے سرتانی کریں تو آئے ربطورا تمام جبت کے ، فرما دیجیئے کہیں تم کو نہایت واضح اطلاع کر حیکا ہوں رجیمیں ڈرتہ برا برخفاد پوشید کی تهیں رہی توحیدا در حقانیت اسلام کی اطلاع مھی اور اسکے انکار پر حوسزاملیگی وہ بھی صاف صہ بیان ہوجی ہے اب نہ مجھ پرتبلیغ حق کی کوئی ڈمیرداری باقی رہی نہ تھا راکوئی عذر باقی رہا) اور آگر ت ہوئیں تم کواسوجہ سے جھم ہوکہ جومنزا تبلائ گئی ہے وہ بل کیوں نہیں جاتی تو سمھ فوکہ سزا کا منا تو لیسی ہے ت يس بينهي جانتاكيس دسزا كاتم سے دعره بوا ہے آيا وه قريب دوا قع بونيوالي ہے) يا دُوردواز (زمانے میں داقع ہونے والی) ہے دالبتراسکا واقع ہونا ضروری ہے کیونکد) الشرتعالی کو رہھا ہوی بات کی بھی خبرہے اور جوتم دل میں رکھتے ہواس کی بھی خبرہے ومعو تحيين مذربهنا بيرتاخ رسي لمحت ہاں اتناکہ سکتا ہوں کہ) شاید (بہتا خیرعداب) تہادے تننبهٔ درایمان کے آدیں) اور ایک وقت دمحدود بعنی موت کے وقت) فائدہ بہنچانا ج و د كه خوب غفلت بره اورعذاب برهتا جلاجائے - بهلامعالمه تعنی امتحان دحمت ہے اورد در معامله بعنی عمر دراز ادر آس کی مهولتین دینا بیعقوبت وسزای، اور حب ان مب مضایین سے ہدایت منہوی تقی پینمبر دصلی الشرعکی میں نے دیا ذن الہی) کہاکہ اسمبرے دب رہما ہے اور ہماری قوم کے درمیان) نیصلہ کرد یجئے (جو کہ ہمیشہ) حق کے موافق (ہواکرتا ہے مطلب یہ ہے كرعلى فيصله فرما ديجية كمسلمانون سے جو فتح و نصرت كے د عدے بين وه واقع كرد يجية تاكه أن بر ادرزیا ده جست تمام بهوجائے) اور (دسول استرصلے الله عکی لمے نے کفارسے بیرسی فرمایاکہ) ہمارا رب بڑا مہر مان ہے جس سے اُن باتوں کے مقابلے میں مد دچاہی جائے جوتم بنایا کرتے بور کرسلما جلدنىيت ونابود برد جادي گے بعني تم اسى مجربان رہے تھا اے مقابلہ بي مرد چاہتے ہيں)۔ معارف ومسائل حَمَّا أَرْسَلْنَكَ لِالْاَرْحَمَةُ لِلْعَلَمِينَ ، عالمين عالم كى جمع بي سارى مخلوقات

سورة الانبيارام: ١١٢ بعارف القرآن ج انسان، جن، حيوانات، نبانات، جا دات جي دا فيل بي - رسول الشرصلي الشرعكيدم كاان سيجيزول سے لئے رحمت رونااس طرح ہے کہ تمام کا نات کی حقیقی روح اللّٰہ کا ذکرا دراس کی عبادت ہے۔ یہی وجبر بے کہ جس وقت زمین سے یہ روح وکل جائے گی اور زمین برکوئ الله الله وہ کا توان سب چیزوں کی موت بینی قیامت اجائی اورجب ذکران الدعیادت کا ان سب چیزوں کی راح ہونا معلوم ہوگیا تورشول انشرصلے انشر علیہ کم کاان سب چیزوں کے لئے رحمت ہونا خود مجود ظاہر ہو گیا، كيونكهاس ونيايي قيامت تك ذكراللراورعبادت آب ى كورم قدم ادرتعليمات سيرقائم إسى لئة رسى الشرصك الشرعكية لم في فرط يلها نارعة هَلاَة بين الشرى طون سيجيم بوى رحمت بول ا خرجها بن عساكرعن بي هريرة) ا درحضرت ابن عمره سي د وايت سي كدر شول الشرصال الترعليم نے فرمایا اناس محة هدل تذبوفع قوم و خفض خین العین میں الله کی جیجی بردی رحمت بون ماکه (الله م ان والى ايك قوم كوست رىلندكر دون اور دوسرى قوم (جوالله كاحكم ماننے والى نہيل مكو) بت كردون (ابن كتابر) اس سے عدم ہواکہ کفروٹنرک کومٹانے کیلئے کفار کو بیت کرنا اوران کے مقابلے میں جہاد کرنا بھی عین رحمت سے میں سے ذریعی سرکشوں کو بوش آکرایمان اور عمل صالح کا یابند م وجانے کی اُسید الكي ما يحتى ب حَلاث سيحًا نهو وتعالى اعْلَمُ * تق تفني يسينو وقر الكنبك المرون الحمد كالتاليج والعشري ين ذِي الحجة المُحرام سنوسلن من الهجرة التنبوية قبل العشاء وَلِما لِحَبَّدُ اوّلاً وأخرًا وظاهرًا وباطنًا وهوالمرجو لانتها الباق وما ذلك عليه بعنزيز رَتِّنَاتَقْتِلْ مِنَّاانَّكَ إِنْكَ السَّمِيعُ العليمُ



سوزة الحجة ١١٢: ٢ بعارف القرآن ج ہی سخت چیز ہے (جس تمیخوت کی وجہسے اُن کی حالت نشہ دالے کی سی ہوجا دے گی)۔ معارف ومسايل خصوصیا سورت اس سورت کے یا مدنی ہو نے میں مفسرین کا اختلاف ہے حضرت ابن عبا ی سے دونوں مداتیں منقول میں جبرورفسری کا قول یہ ہے کہ بیسورت آیا ن مکیداور مرنتیرے مخلوط سورت ہے۔ قرطبی نے اس کواضع قرار دیا ہے۔ نیز فرمایاکہ اس سورت کے عجا تب سے يد بات ہے كداس كى آيات كانزول بعض كارات يى، بعض كا دن ميں، بعض كاسفريں بعين كاحضرى، بعن كالمكري، بعن كالديندي، بعض كاجنك وجهادك وقت اور بعض كالمحوا می حالت میں ہوا ہے اور اس میں تعین تعین ناسخ ہیں اور تعین منسوح ، تعیض تحکم ہیں تعین نتا ہے کیونکہ تمام اصناف تنزیل پرشتل ہے۔ يَا يَهُا النَّاسُ النَّعَوُّا رَبِيكُوْ ، يه آيت بني رئيم صلى الشّرعكتيكم بربحالتِ سفرنا ذل بوي تواكيك بلندا وازساس كى تلادت مشروع فرمائ - رفقار سفرصحاب كرام أشخضرت صلى الشرعكي أوازم أ المحمع بوكة -آت نصحابه كرام كوخطاب كركے فرما يا كه زلزله قيامت جسكا ذكراس آيت بس كات جانتے ہیں کس دن میں ہوگا صحابہ کرام نے عوض کیا الله اور رسول ہی زیادہ جانتے ہیں۔ آپ نے فرمایا کہ بیروہ دن ہوگا جس میں اللہ تغالی آدم علیالسلام سے خطاب کرمے فرما دیں گے کہ جہنم میں جانے والوں کو اُٹھائے۔ آ دم علیاسلام دریافت کریں سے کدوہ جہتم میں جانے والے کون نوگ بی تو عمم دو گاکه براید بزار میں نوسوننا نوے ، اور فرمایا کریبی وه وقت مو گاکه زول اور خوف سے بچے بوڑھے ہوجا دیں مے اور مل دالی عور توں کا حمل ساقط ہوجا و بیجا۔ صحابۃ کرام میسنکہ سہم کئے اور فیرچھنے لکے بھر یا رسول منتہم میں سے وہ کون ہوگا جو نجات یا سے تو فرمایا کہم بے فکہ ر ہوجہتم میں جانے والا یا جوج ما جوج میں سے ایک ہزار اور تم میں سے ایک ہوگا۔ بیضمون عظم وغیرہ کی روایات میں ابوسعید خدری رم سے مروی ہے اور تعبض روایات میں سے کہ اُس روزتم ایس دو مخاوتوں کے ساتھ ہوگے کہ وہ جب سی جاعث کے ساتھ ہوں تو دہی تعدا دمیں غالب اکثر رہیں گئے۔ ایک باجوج ماجوج اوردوکے اہلیں اورائی ذریت اورا ولاد آدم میں سے دولوگ بہلے مرحكے میں داسلتے نوسو ننانو سے میں بڑی تعدا دانھیں کی ہوگی) تفسیر قرطبی دغیرہ میں بیرب دمایا زلزلرقیامت کب بوگا قیامت قائم ہونے اور توگوں کے دوبارہ زندہ رونے کے بعدیااس سے پہلے، بعض نے فرمایا کہ یہ قیامت سے بیلے اسی دنیا میں ہوگا اور قیامت کی آخری علامت میں

44% 10: 17 75-1835 شار ہوگاجس كا ذكر قران كريم كى بہت كى آيتون ميں آيا ہے - إذا زُلْوِلَتِ الْآرُعَنُ زِلْوَالْهَا - ق مُحِلَتِ الْاَرْضُ وَالْجِهَالُ فَنُكَتَّنَا وَكَتَّرُ قَاحِلَةً - إِذَا رُجَّتِ الْاَرْضُ رَجًّا وغيره-اور ببخ حضرات نے حدیث مرکورس اوم علیات الم کوخطاب کرنے کا ذکر ہے اس سے کستدلال کرتے ہوئے بیقرار دیا ہے کہ زلزلہ حشرونشر اور دوبارہ زندہ ہونے کے بعد بڑگا۔ اور حقیقت یہ ہے لە دوبۇل يى كوئى منافات نېيى - قىيامت سى يىلى داز دېږنا بھى آيات قرآن ادرا حا دېيۋە تىجىر سے مَّا بِينَ اور حشر دِنشر کے بعد ہوتا اس صربتِ مَرکور سے ثنا بت ہے قاللُّامُ اَعْلَمُ -اس زلزلرقیامت کی جوکیفیت آگے آیت میں ذکر کی گئے ہے کہ تمام حمل دالی عورتوں کے حمل ساقِط ہوجادیں کے اور دورھ پلانے والی عورتیں اینے دورھ پیتے بیچے کو بھول جادیں گی ۔اگریہ زلزلراسي دنيامين قبل القيامتر سيتوايسا واقعربين أفيمين كوى اشكال نهي اور اكرحشرونش قیامت کے بعد ہے توانس کی توجیر میں ہوگی کہ جوعورت اس دنیامیں حالت حمل میں مری ہے دیا كے روزاسى حالت ميں اسكا حشر ہوگا۔ اور جو دو دھ ملانيح زمانے ميں مركنى ہے وہ اسى طسرح ادر بعضے وگ وہ ایس جو جھاراتے ایس الشرکی بات س الحجری سے جس کے حق میں لکھدیا گیا ہے کہ جو کوئ اسکا رفیق ہوسو وہ اسکوہمائے ر کا بھرجب تک کہ پہنچواین جوانی کے زور کو اور کوئ تم یں سے قبصنہ رابیا جاتا ہے اور کوئ تم س



بارث القرآن جر سورة الحج ٢٢: . آئدہ میں غور کرلو تاکہ شک فع ہوجاف اور وہ میر کمریم نے راحل باری تم کومٹی سے بنایا رکیو تکہ عذاج نطفه نبتا ہے اوّل عناصر سے بیدا ہوتی ہے ہیں ایک جرز دمٹی بھی ہے) بھرنطفہ سے رجو کہ عذا سے بیدا روتا ہے) بھرخون کے اوتھوٹے سے دکہ نطفر میں فلظت اور سرخی آنے سے عال ہوتا ہے) بھر اوئی سے د کہ علقہ بیں بختی آجانے سے حاصل ہوتا ہے) کہ ربعنی پوری ہوتی ہے دکا سمیں پورے اعضار بنجاتے ہیں ادر دلیجنی) ا دهوری بھی دیروتی ہے کہ بعض اعضارنا قص رہ جاتے ہیں بیراسطرح کی ساخت اورتر میب ا در تفادت سے اسلئے بنایا ، تاکہ ہم تھا اسے سامنے (اپنی قدرت) ظاہر کردیں داور اسی سے ظاہر ہے ک وه دوباره بیداکرنے پرمی قادر ہے) اور (تم اس مندن کا پر ہے جس اور زیادہ قدرت ظاہر وہی ہے كهى بهم رمال كے) رحم میں بنطفہ) كوجا ہے ہیں ایک مرت معین دلینی وضع عمل كے وقت ألك فيما رکھتے میں (اورجس کو کھیرا مانہیں چاہتے ہیں وہاں اسقاط ہوجا آہے) پھرداس مدت معینہ کے بعد) عَمَّمُ كُو بَحِيِّهِ بِنَاكِرِ (مال كے بیٹ سے) باہرلاتے ہیں بھر (اسكے بعد تین میں ہوجاتی ہیں ایک تسم پیر کہ تھ ں سے بعن کو جوانی تک مہلت دیتے ہیں) تاکہ تم اپنی بھری جوانی رکی عمر) تک بہنے جاؤادر بیضے میں وہ بھی ہیں جو د جوانی سے پہلے ہی ، مطاقے ہیں (یہ دوسری ہم ہوئ) اور بیصنے تم میں وہ ہیں جو بھی ر د مین زیاده بر طایے) تک بینجادیے جاتے ہیں جبکا اثریہ ہے کہ ایک چیز سے باخبر ہو کر کھر لیجہ د جاتے بیں رجیسا اکثر اوڑھوں کو دیکھاکہ ابھی ایک بات بتلائ اورابھی بھر لوچھے کہے ہیں ۔ یہ رى قىم دى پېرسىيا جوال بھى اىلترتعالى كى قدرت عظيمه كى نشاشياں ہيں ايك ستدلال توبيرتھا) اور ود مراات دلال ہے کہ) اے مخاطب تو زمین کو دیکھتا ہے کہ خشک (یری) ہے بھرجیتے اس يرياني برساتے بي تو وہ أبحرتي ہے اور تي سے اور برسم ريعن قسم مي خوشفانبامات أكاني ہے رسويري دليل ب قدرت كالمركي آك استدلال كوادرواضح كرنے كے لئے تصرفات مذكورہ كى علت اور حکمت کابیان فرماتے ہیں مینی) یہ رجو کچھا دیر دونوں استدلا لوں سے شمن میں اشیار مذکورہ کا ایجاد و اظهار مذکور موایسب) اس سبب سے مواکد الله تعالی می سی کامل ہے (یہ تواسکاکال ذاتی ہے) اور وہ آی ہے جانوں میں جان ڈالتا ہے (یہ اسکا کمال فعلی ہے) اور وی ہرجیے قادر ہے دیراسکا کمال وسفی ہے اور بہتیوں اُنمور ملکراُنمور مذکورہ کی علّت بین کیونکہ اگر کمالات ثلاث ين سايك عيم غير محقق موتا توايجاد فه يا ياجاما جنانجه ظاهر س) اور د نيزاس سبه مواكم قيا آنیوالی ہے اُس میں ذرا شبھتہیں اور النشریقانی (قبیامت میں) قبر والوں کو دوبارہ بیدا کر سکا رہا تھور مذكوره كى حكمت بين ينيم نے وہ تصرفات مذكورہ اس كئے ظاہر كئے كہ اس منجلدا در حكمتوں كے ايك تحكمت ادرغايت بيهى كهم كوقيامت كالاناا درمر ددن كوزنده كرنا منظور تفاتوان تصرفات سے ان كا مكان توكون يرظا بر درجا ديكا بس ايجاد اشيار مذكوره كي تين علتين اور د ديمنين مذكور وي القراق جرات المستورة المستورة

ادرسبب بالمعنی الاتم سب کوعاً ہوا اسلئے پاک اللّٰما کی باءِ سبیبة سب پر داخل ہوگئی) ادر (بہانک و مجاد لین کی گراہی ادرائس کے درمیں اسرالال پر کورتھا آگے ان کا اصلال ۔ یعنی دوسروں کو گراہ کر نا۔ اور دونون صلال داصلال کا وبال عظیم مذکور ہوتا ہے) بعضے آدی ایسے ہوتے بین کہ اسٹر تعالیٰ کے بارہ یں (بعنی اسکی ذات یا صفات یا فعال کے مقدم میں) بدون واقفیت (یعنی علم ضروری) اور بدون دمیل (فینی علم اسدولا کی عقلی) ادر بدون میں دوشن کتاب (مینی علم استدلائی نظی کے داور دوسرے محقق کا بنا علم اسدولا کی عقلی) ادر بدون میں دوشن کتاب (مینی علم استدلائی نظی) کے داور دوسرے محقق کا بنا کہ و تعلی کہ بینی دین ت کے دواہ کر دیں ایسے تھی کہ نظری ہو جنا نئے بیضے گراہ ان کے دواہ کر دیں ایسے تھی کہ بینی دین ت کے دواہ کر دیں ایسے تھی میں دوس کی کو بینی کہ بینے کہ اور قبیل کر بینی کی دوں ہم اس کو جلی کی کا عفاج ہو گئی داور اُس سے کہا جاد بیکا کہ بینے ہا تھی اور تی بین دوں پر تھی کو بلا جُرم سنا ہوئین دی گئی ۔

معارف ومسائل

قرمن النّاس مَنْ يُجَادِلُ فِي اللّهِ بِعَايْدِ عِلْمِو، يه آيت نظربن مارث كے بار ہيں نازل الموى جوبڑا جھكر الو تھا، فرشتوں كوفداتمانى كى بيٹياں اور قرائ كو پھلے لوگوں كے افسانے كہار تا تھا اور قيامت اور دوبارہ زندہ ہو نيكا منكرتھا (كن الاالاالات الى حاتم عن الى مالك مظهري) اور قيامت اور دوبارہ زندہ ہو نيكا منكرتھا (كن الاالاالات الى حاتم عن الى مالك مظهري) نزول آيت كا اگر جبر ايك فاص تحص كے بار ہيں ہوا مرحكم اس كاسب كے لئے عام ہے بن اس طرح كى بُرى خصلتيں يائى جائيں۔

یں اس طرح کی بری صلتیں بیای جایں۔

الطن ما در میں تخلیق انسانی کے افرا گا تحکقہ کو تھی ہے۔

الطن ما در میں تخلیق انسانی کے افرا گا تحکیم کو تعلق در جات کا بیان ہے۔ اس کی تفصیل میں بخیر بخداری در جات کا بیان ہے۔ اس کی تفصیل میں بخیر بخیر الشرابی معدد مناسے روایت ہے کہ رسول الشرصال المسلوم کی ایک صدیت میں ہے جو حضرت عبد الشرابی معدد مناسے روایت ہے کہ رسول الشرصال تعلیم کے ایک فرمایا۔ اور دہ ہجے بولنے ولے اور سیخے بھے جانبوالے ہیں کہ انسان کا مادہ چالیس دور بہائے میں جو مصفولیت کے فرمایا۔ اور دہ ہجے بولنے ولے اور سیخے بھے جانبوالے ہیں کہ انسان کا مادہ چالیس دور بہت میں جو مصفولیت کے ایک فرشتہ بھیجا جاتا ہے جو ایمیں وہ مضفولین کو شت بھیجا جاتا ہے جو ایمیں وہ بھوئی کے کو شت بھیجا جاتا ہے جو ایمیں وہ بھوئی کے در سرے اور کی سے اور باتیں اس کے بعد اللہ تعلق کی اور میں کہ اس کی محکوم کی اسمالہ وہ در سرے درق کرتا ہے، تیسرے بمل کیا کیا کر بھیجا ہے کا دیشتی اور بدنج ہے ہوگا یا سعید و خش نصیب (قطبی)

معادت القرأن جر

الله وتقالحج ٢٢٠٠٠

دوسری ایک روایت پرجس کوابن ابی حاتم او را پن جریر نے حضرت عبدالشرین سوّد بی سے روایت کیا ہے اسمیں رہی ہے کہ نطخہ حب کئی دورسے گزر نے کے بعد مصنفہ گوشت بنجابا ہے تواسوقت وہ فرشتہ جو ہرانسان کی تخلیق پر ما مورہے وہ اسٹرتعالی سے دریا فت کرتا ہے یکا دیتہ گونگہ آد غیر بحث لفتہ او غیر بحث لفتہ دیسے اس مصنفہ سے انسان کا بیداکر نا آنچے نزدی مقدرہے یا نہیں) اگرالشہ تعالی کی طون سے بیہ جواب مانا ہے کہ یہ غیر خلقہ ہے تورہم اسکو سا قطار دیتا ہے تخلیق کے دوسرے مراتب تک نہیں بہنچیاا درا گر تھم ہو الکہ یہ خلقہ کہ تو بھر فرشتہ سوال کرتا ہے کہ لوٹ کا ہے یا لوٹی ، اورشقی ہے یا سعید اوراس کی عمر کیا ہے ادراس کا عمل کی سا ہے ادراس کا عمل کے ساتھ اور کہاں مرسی از دیس جیزیں اُسی وقت فرستہ کو تبلادی جاتی ہیں (۱ دن کھیور) مخلقہ و غیر مخلقہ کی تیفسے حضرت ابن عباس رہ سے جیزیں اُسی مقول ہے (خطہی)

عُنَّقَةَ قَنَادُرِ عُنَادِ اللهُ ا

فلاصُدُ تفسير مُدكود مين اسى تفسير كولياكيا ہے والشربحانہ وتعالیٰ علم -

المنظمة المنظ

ہر توت مکل نہ ہوجائے جوجوانی کے وقت میں ہوتی ہے۔

آدُذُكِ الْعُنْدِي بِينَى وه عرض میں انسان کے عقل و شعورا ورحواس میں خلل آنے گئے۔ نبی کریم کا آئے میں انسان کے عقل و شعورا ورحواس میں خلل آنے گئے۔ نبی کریم کا آئے میں ہے وابیت سعدرہ انسقول ہے کہ رسول النہ صلے النہ علیے مسب و لا و حسب ویل انسان فی ہے۔ نسائ میں ہر وابیت سعدرہ انسقول ہے کہ رسول النہ صلے النہ علیے کہ یا دکرا دیتے تھے وہ دُعا ایس ہے کا اللہ عمر کرنے آئے وُڈُ بِلگ مِن الْبُحْوِلِ وَ آعُودُ بِلگ مِن الْبُحُورِ بِلگ مِن الْبُحُورِ بِلگ مِن الْبُحُورِ بِلگ مِن الْبُحُورِ بلگ مِن اللّهُ مِن اللّهُ مُن اللّهُ مِن الللّهُ مِن اللّهُ مِن الللّهُ مِن الللّهُ مِن اللّهُ مِن الللّهُ مِن الللّهُ مِن الللّهُ مِن اللّهُ مِن الللّهُ مِن اللّهُ مُن اللّهُ مِن اللّهُ مِن اللّهُ مِن اللّهُ مِن اللّهُ مِن اللّهُ مِن اللّهُ مُن اللّهُ مُن اللّه

معارف القرآن جسلات المراق الحراق الخراف المراق الخراق الخراق الخراق الخراق الخراق الخراق المراق الخراق المراق الخراق المراق الم

فلا صر توسير

اور معبن آومی استری عبادت (ایسے طور پر) گرنام (جیسے کوئ کسی چیز کے) کنارہ پر (کھڑا ہو اور موقع پار جیلدیے پر تیا دہو) بھر آگر اس کوکوئ (دُنیوی) نفع بہنج گیا تو اس کی وجہ سے (ظاہری) قرار پالیا اور آگرائس پر مجھوآ زیائش ہوگئی تومنھ اٹھا کر (کفر کیطوٹ) چلدیا (جس سے) دُنیا و آخر سے دو فون کو کھو بٹھا بہی ہے کھلا نقصان ردُنیا کا نقصان تو دُنیا وی آڈیائش جو سی مصیبت سے ہوگی دہ فال ہرہی ہے اور آخرت کا نقصان یہ ہوا کہ اسلام اور) خداکو چھوڈ گرائسی چیزی عبادت کرنے لگا ہو (استفرا عاجز اور بے بس برکہ) نقصان یہ ہوا کہ اسلام اور) خداکو چھوڈ گرائسی چیزی عبادت کرنے لگا ہو (استفرا عاجز اور بے بس برکہ) نقصان یہ ہوا کہ کا دور کو تو نفتے پنہیا کہ کی کوئ قدرت نہیں - ظاہر ہے کہ قادر طابق کو چھوڈ کر ایسی بے بس چیز کوا ختیا در کرنا خسارہ ہی خمارہ ہے) یہ انتہا درجہ کی گرائی ہے (صرف بینی) چھوڈ کر ایسی بیارت سے کوئ نفع نہ ہنچ کیکوئ شررا در نقصان ہے کیونکہ) وہ ایسے کی عبادت کر دہا ہے کہ اسکا غررات سے کوئ نفع نہ ہنچ کیکوئ اور آقا بنا لو یا دوست اور ساتھی بنا توکی حال اُس سے بکھ طرح کسی حال کی کے کام مذا ہے کہ اسکا مولی اور آقا بنا لو یا دوست اور ساتھی بنا توکی حال اُس سے بکھ نفع نہیں)۔

معارف ومسائل

کرمن التّالِی مَنْ یَعَیْلُ اللّه عَلیْ حَرْدِن ، بخاری اور این ابی حاتم فے حضرت ابن عباسُ اسے دوایت کیاہے کہ جب رسُول الله صلے الله علیہ وسلم ہجرت کر کے مدینہ طیبہ بین تقیم ہوگئے و بعض السے لوگ بھی آگر مسلمان ہوجاتے تھے (جن کے دل میں ایمان کی نجیتگی نہیں تھی) آگر اسلام الانیکے بعد اسکی اولاد اور مال میں ترقی ہوگئی تو کہنا تھا کہ یہ دین اچھاہے اور اگر اسکے خلاف ہوا تو کہنا تھا کہ یہ بُرادین ہے اور مال میں ترقی ہوگئی تو کہنا تھا کہ یہ بُرادین ہے اور مالی میں توگ ایمان کے ایک کنارہ پر کھڑے ہیں۔ اگر السے ہوگئی تو کہنا ور مالی وسامان مِل گیا تواسلام برجم گئے اور اگر دہ بطور آزمائش کسی ان کو ایمان کے بعد دنیوی واحت اور مال وسامان مِل گیا تواسلام برجم گئے اور اگر دہ بطور آزمائش کسی تکلیف ویر دنیتیا نی میں مبتلا ہوگئے تو دین سے پھر گئے۔

النّ الله يُنْ خِلُ الّذِينَ امْنُوْ اوَعَلَوْ السّلِيلَ حِلَّوْ الْحَجْرِي مِنْ اللهِ اللهُ ال

فالم وتفسير

معارف ومسائل

مَنْ كَانَ يَظُنُّ ، عاصل يه بيكراسلام كاراسته روكن والعمعاندجويه جابتين كرالتُرتعالى

سُورَة الحجة ٢٢ : ١٨ معارف القراق حب ایت دسول اور ایسے دین کی مرد مذکرے اُن کو سمجھنا چاہیے کہ بیر توجیجی ہوسکتا ہے جبکہ حا ذاللہ اسخضرت صلى الشرعكتيم مص منصب بوت سلب موجائ اور آب يروحي آنا منقطع بوجائے كيومكالت لا جس کونبوت ورسالت سپرد فرمانا ہے ا دراسکو دی الہٰی سے نواز ما ہے اُسکی مدر تو دنیا واکٹرت میں کرنے كاأس كبطرف سے بخية عهد ب اور عقالاً بھي اسكے خلاف نه مونا چاہئے تو جوعف آپ كى اور آپ كے ين كى ترتى كوردكنا چامتنا ہے اسكواكر اسكے قبصنہ میں ہو توالیسی تدبیر کرنا چاہئے كہ پینصب نبوت سلب ہوجائے اور وی النی منقطع ہوجائے۔اس ضمون کو ایک فرض محال کے عنوان سے اس طسرح تعبيركيا ہے كہ دسول الشرصك الشرعكية لم سے وحى كومنقطع كرنسكا كام كرنا چاہتا ہے توكسى طسدح اسمان بروہنچے وہاں جاکراس سلہ وی کونتم کردے - اور ظاہرہے کہ مذکسی کا اسطرح آسمان برجانا مکن نه النيرتعالي سيقطع وحي كوكهنا عكن تو بيرجب تدبيركوي كاركرنهي تواسلام وايمان كے خلاف غیظ دغضب کاکیا نتیجہ ؟ بیرتفسیر بعبینہ در ترمنتورسی ابن زیدسے روایت کی ہے اورمیرے نز دیکتے ب سے بہتر اور صاف تفسیر ہے (بیان القوان مع ستھیل) . قرطبی نے اسی تفسیر کو ابوجعفر نحاس سے نقل کر کے فسر مایا کہ بیرسب سے ا ابن عبكس رن سي اس تفسير كو نقل كيا ہے - اور تعبض حصرات نے اس آئيت كى تفسير يہ كى ہےكہ سمار سے مراد اینے مکان کی جھت ہے اور مراد آیت کی بیرہے کہ اگر کسی معاند جاہل کی خواہش ہی ہے كراللرتعالى اينے رسول اور اسكے دين كى مد د مذكرے اور وہ اسلام كے خلات غيظ و ہے توسمجھ کے کداسکی بیمرا د تو کبھی بوری نہ ہوگی اس احتفانہ غیظ وغضب کا تو علاج بہی ہے کہ حیمت عدہ کرتا ہے جو کوی اسمان میں ہے ادر جو کوی زمین میں ہے سورع اور جاند וכנ בנכים Ily 131

ڪِ

سُورة الحجة ٢٢: ١٨ سعادت القرآن حس تَتِيْرُ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَنَ الْبُ وَ مَنْ يَهِنِ اللَّهُ فَمَالَهُ مِنْ تُكْرِمِ ادرجي كو المتر دليل كرے أے كوى جيس عرت دين والا اور بہت بیں کہ اُل پر تھرچکا عذاب إِنَّ اللَّهُ يَفْعَلُ مَا يَشَا وَ ﴿

اسمیں کوئی شیصینیں کیمشلمان اور پہوداورصابئین اور تصاری اور مجوس اور شرکس، انشرتعالیٰ ان ب سے درمیان میں قیامت سے روز (علی) فیصلہ کردیگا دکرمسلمانوں کوجنت میں اورسب احسام كافروں كوجہم ميں داخل كرميكا) بيشك الشرتعاليٰ ہرچيزے وافق ہے۔ ا مناطب كيا بخدكوبه مات معادم نہيں كرائٹر تعالے كے سامنے (اپنی اپنی حالت مے منان ب عابره ی کرتے ہیں جو کہ اسمانوں میں ہیں اور جوز مین میں ہیں اور سورج اور جا نداور ستارے اور بہاڑاور درخت اورجویائے اور دتمام مخلوقات کے مطبع و فرما نبردار ہونے کے با وجودانسان ع جو خاص درجہ کی عقل میں رکھتا ہے وہ سب کے سب مطبع وفر ما نبردارنہیں بلکہ) بہت سے (تو) آدى بھی دا طاعت اور عاجن کرتے ہیں) اور بہت سے ایسے ہی جن پر عذاب کا استحقاق تا بت موكيا ہے اور ديج يہ ہے كہ عن كوفدا ذيل كرے وكم أسكو بدايت كى توفيق بنموى كس كاكوى عزت دینے والانہیں (اور) اللہ تعالی (کواختیارہے اپنی حکمت سے) جوچاہے کرے۔

معارف ومساير

بهلى آيت مين تمام اقوام عالم مؤمنين اوركفار بيحركفار ميختلف العقائد كرو دوں محتصل بيا ا دشاد فر مایا ہے کہ انشرتعالی ان سب کا فیصلے فرما دیکے اور وہ ہراکی سے ظاہر و باطن سے باخبر ہیں۔ فیصلہ کیا ہوگا اسکا ذکر بار بارقر آن میں آچکاہے کہ مُومنین صالحین کے لئے ابدی اور لازوال راحب اور كفار كے لئے دائى عذاب - دوسرى آيت ميں تمام مخلوقات نواه زنده ذى دفح ورل يا جمادات نباتات سب كاحق تعالى كے لئے مطبع اور فرما نبردار بونا بھؤان بجدہ بيان فرماكر بني نوع انسان كى دا قسمیں بیان فرمائ ہیں۔ ایک مطبع و فرما نبر دارسجدہ میں سب سے ساتھ مشر تک 1 ور دومرا میکن باغی بحدہ مے خوت - اور تا ہے فرمان ہونے کو سجدہ کرنے سے تعبیر کما گیا ہے جسکا ترجمہ خلاصتین سیس عاجزی كونے سے كيا ہے تاكہ مخلوقات كى ہر بؤع اور ہرقسم سے بيرہ كوشامل ہوجائے كيو بكرانميں سے ہرائي كالبحده أسيح مناسب حال بوتاب انسان كالبحده زمين يربينياني د تھنے كانام ہے دوسرى مخلوقاً

سورة الحيج ٢٢:١٨ كالبحده إين اپنى خدمت جس كے لئے اُن كو پيداكيا كيا ہے اسكوانجام نينے كا ا در خدمت كاحق ا داكر نيكا مام ہے تما مخلوقات كے مطبع وفرما نبرواد | تمام كأنبات ونحلوقات كالبينے خالق كے زيرتكم اور تا بع مشيت مؤما كيك تو تکوین اورتقدری طور برغیرا ختیاری ہے سے کوئ می مخلوق مومن یا کافرزنده یا مرده بهجا دات یا نباتا ت مستثنی نہیں اس جیشیت ہیں سب کے سب کیساں طود پرجق تعاظے مے ذریکم وشیت ہیں۔ جہان کالوی ورہ یا پہاڑائس سے اون وشیت سے بغیرکوی اوفی حرکت بہنیں کرسکتا دوسرى اطاعت دفرما نبردارى اختيارى مي كركوى مخلوق ايين قصدو اختيار سے الله تعالیٰ کے احکام كى اطاعت كرے اسميں تُوْن وكا فركا فرق ہوتا ہے كہ تُون اطاعت شعار فرما نبردا دہوتا ہے كا قسم اس سے خوف اور منکر ہوتا ہے۔ اس آئیت میں جو تکرُون و کافر کافرق بیان فرمایا ہے بیر قرمیا اسکاہے براسين بحده اورفرما نبر دارى سے تمواد صرف تكونني و تقديرى اطاعت نہيں ملکر احتيارى اور الأدى أطآ ے۔اسمیں پیٹیمے رنزکیا جائے کہ اختیاری اورا لا دی اطاعت توصرت ذوی العقول انسان اور جن فجرج

یں پیچتی ہے۔ حیوانات، نباتات، جا دات میں عقل وشعوری بہیں تو بھرقصد وا داوہ کہاں او

اطاعت اختیاری سی و کیوبکہ قرآن کرم کی بے شا دنصوص اور تصریحات سے یہ بات تا بت ہے

کرعقل دشنوراورقصدوا دا دہ سے کوئ تھی مخلوق خالی نہیں ، تمی مبنٹی کافرق ہے۔ انسان اور جن کو

ا منزتها لا في عقل وشعور كاليك كالل درجرعطافرمايا سي ادراسي ليتمان كواحكام امروبني كالمكلمة

بنایاکیا ہے ان محسوایا تی مخلوقات میں سے ہر اور ع اور ہرصنف کواس صنف کی ضروریات

دوسرے مبرس شامات ہیں ، تیسرے میں جا دات ہیں۔ حید انات کا عقل وشعور توعام طور بر

محسوس كياجاتاب نباتات كاعفل ومشحوكمي فداساغور وتحقيق كرني والابهجان ليتاب كيكن جما دات

كاعقل دشتود انناكم اور تخفی ہے كہ عسام انسان اس كونہيں پہچيان سكتے ۔ سكر اُن كے خسالت و

مالک فيخبردي ہے كه وه بھي عقل وشور اور قصد والا دے كے مالک بي - قران كريم نے أكسمان و

رسین کے بارے می فرمایا ہے قالتا اکتینا طائیقیات ، بین جب النز تعالیٰ نے اسمان وزین کو حکم

دیاکتم کوہمارے تا لع فرمان رہنا ہے ا بنی خوشی سے فرما نبردادی اضتیاد کرد ورنہ جبراً اور حکماً تا لع دنہا

ہی ہے تواسمان وزین نے عرض کیاکہ ہم اینے اوا دے اور ویشی سے اطاعت و فرما نبر داری قبول کرتے ہیں

اور دوسرى جكر بهار كي تفرول كم متعلق قران كريم كا رشاد ب وَ إنَّ مِنْهَاكماً يَعْبِيطُ مِنْ خَشْيَةِ اللهِ ،

النى مين بقراليين جوالترتعالى كخشيت وخوت معمامه اديرس فيج المهك جاتي اسى طرح

احادیث کشره میں بہاردں کی باہم گفت گوا در دوسری مخلوقات میں عقل وشعور کی شہا دتیں مجثرت

المتى بير-اس لخاس آيت من س اطاعت وفرما نبردادى كوسيده كے نفظ سے تعبركيا كيا ہے ،

ارث القرال ج

اِس سے اطاعتِ اختیاری دارادی مُرادہِ ادر معنے آیت کے یہ ہیں کہ نوع انسان کے علاوہ (جن کے ضمن میں جِنّات بھی داخل ایں باقی تمام مختلوقات اپنے تصدو اختیار سے الله تفالی کی با ایکاہ ہیں بجدہ میز مینی تابع فرمان ہیں صرف انسان اور جن ایسے ہیں جنس دوجھتے ہوگئے ایک مُون ومطبع بجدہ گزار دوسرے کافروٹا فرمان بجدہ سے خوت جن کو اللہ فرنے ذریل کر دیا ہے کہ انکوبجدہ کی توفیق نہیں کنٹی مکالماہ اُنداہُ اُنداہُ

هان ان تحقه الخت محكوا في الدي الذي الكافية الكوري الكوري

والم وتوسير

ستمری بات کی اور یای اس تعربیقوں والے کی داہ

رحن کا ذکراوپرآیت اِنَّ النَّنِیُنَ اْمَنُوْ اسی ہواہے) یہ دوفریق ہیں (ایک مومن دوسرا کافر۔ بھرکافر گردہ کی کئی تسمیں ہیں۔ بہود، نصاری، صابئین، جوس اور تب پرست) جنھوں نے اپنے رب کے بارے میں رہتے تا دا اور کھی مباحثۃ بھی) باہم اختلاف کیا راس اختلاف کا فیصلہ قیامت میں اس طرح ہوگاکہ) جو لوگ کا فر منتے اُن کے ربینے کے لئے ہا گاگ کے براے تنطع کئے

FY FIELISTON FINA

معادت القرآن جسيلة تشم

جادی کے دیسی آگ آئ کے ورکے بدن پر اسطاح محیط ہوگی جیبے نیاس) اورائ کے سرکے آویہ سے شیر کرم یانی چھوڑاجا ویکا جس سے اُن کیمیٹ کی چیزیں دیبی آئیں) اور کھالیں سب کل جادی گی، شیر کرم یانی چھوڑاجا ویکا جس سے آئیں اور کھالیں سب کل جادی گی، اور اُن کے اندر کے سب اجزار اُن عضار کُل جاویں کے کھا ویر بہے گاجس سے کھال کل جاوے گی) اور ان کے (مالے کے لئے) وہے کے گرز ہونے کہ (اور اس مصیب سے کہی بخات نہ ہوگی) وہ لوگ جب (دوڑ خیس) کھٹے گھٹے (گھراجا ہنے گئے واور) اس سے باہر زیکلنا چاہیں گئے تو پھر اسی میں دھکیل دینے جا ویں گئے اور کہا جادیکا کہ جلنے کاعذا اور) اس سے باہر زیکلنا چاہیں گئے تو پھر اسی میں دھکیل دینے جا ویں گئے اور کہا جادیکا کہ جلنے کاعذا ورہمی نیکلنا نصیب نہ ہوگا اور) اوٹر تفاط آئ تو گوں کو جوایمان لائے اور اسمیشہ کے لئے کہا کہ جادی کے اور پوشاک آئ کی دہاں رہی ہوگی اور (بیب اُن کو دہاں سونے کے نگل اور موتی پہنا نے جادیں گئے اور پوشاک آئ کی دہاں رہی ہوگی اور (بیب اُن کو دہاں سونے کے نگل اور موتی پر بایت ہوگی کھی جو لائٹ تھر ہے (دہ راستہ اسلام ہے)۔ انعاد آئان کو اس (غدا) کے دستہ کی ہدایت ہوگی تھی جو لائٹ تھر ہے (دہ راستہ اسلام ہے)۔

معارف ومسائل

کے کنگل مال فیٹیمت میں سلمانوں کے پاس آئیں گے دہ تھیں دیے جائیں گے اور حب فاروق افلا کے ذرائی کا فیا اور میں اور میں کا ملک فیجے ہوا اور ایران کے بیر کنگل دوسرے اموال فیٹیمت کیسا تھا کے توسراقد بن لاک نے مطالبہ کیااڈ ان کو دید تنے گئے ۔ فلاصہ یہ ہے کہ جیسے سر براج پہنیا عام مرّدوں کا دواج بنیں، شاہی اعزاز ہے اسی طرح ہا تھوں میں کنگل کھی شاہی اعزاز ہم جے جاتے ہیں اسلخا ہل جنت کوکنگل کٹنائے جائیں گے ۔ کنگل کے مقال میں کو یہ ہے کہ وہ سونے کے ہوں گے اور جائیں گئے ۔ کنگل کٹنائے مورہ کو دھر میں پرکنگل جائیں ہے گئے ہیں اس لئے حضرات مفسرین نے فرما یا کہ اہل جنت کے ہاتھوں میں تین طرح کے کنگل بینہائے جائیں گے ایک سونے کا ، دوسرا چا ندی کا تیسرا ہو تیو کا جیسا کہ اس آئیت میں موتیوں کا بھی ذکر موجود ہے۔ (قبطی)

رستی کے پڑے مردوں کے لئے حرام میں است ندکورہ میں ہے کہ اہل جنت کا لباس رستیم کا ہوگا مراد یہ ہے کہ اُن سے تمام ملبوسات اور فرش اور پر نے دغیرہ رستیم کے ہونگے جو دنیا میں سہے ذیادہ بہتر لباس مجھا جاتا ہے اور حبت کا رشیم ظاہر ہے کہ دنیا کے رستیم سے صرف نام کی شرکت دکھتا ہم ور نہ اُس کی عمر گی اور بہتری کو اس سے کوئی مناسبت نہیں ۔

امام نسائی اور بزارا ورجیقی نے بسند جبیر حصرت عبدالله بن عمر رہ سے یہ روایت نقل کی ہے کہ
رسول اللہ صلے اللہ عکیہ م نے فرمایا کہ اہل جبت کا رہیں لبکس جنت کے بھلوں میں سے سکے گااور
حضرت جا بر رم کی ایک روایت میں ہے کہ جبت میں ایک ورخت ایسا موگا حس سے دہشم بدا ہوگا
اہل جبت کالباس اُسی سے تیار ہوگا (مظھری)

عديث من امام نسائ في حضرت ابوبريرة أسدوايت كياب كرني كيم صلالتُرعك لم في الم الله عليهم في مايا:

بوشخص بینی کیرا دنیا میں بینے گا وہ آخرت بین بینے گا ادرجو دنیا میں شراب ہے گا وہ آخرت کی شراب سے محردم رہے گا ا درجو دنیا میں سونے جاندی کے برتوں میں و کھائے) ہے گا وہ آخرت میں سونے چا ندی کے بر تنونین کھائیگا ۔ پھرد شول اطار صلے ادار عکی ہے فرایا کہ یہ مینوں چیزیں اہل جنت سے لئے محصوص ہیں ۔ من البن الحريد في الله نيالم يلبش الأخرة ومن شريب الخمر في الله نيالم بيشريها في الأخرة ومن شريب في أنية النه هب و الفضة لمريش رب في في أنية النه هب و الفضة لمريش رب فيها في الأخرة فم قال المنظمة المريش رب فيها في الأخرة فم قال المنظمة المريش عليه وسلم لباس الهل المحتدة وأنية الهل المحتدة المحتدة وأنية الهل المحتدة وأنية وأنية

(ازقرطي بحوالدنسان)

مرادیہ ہے کہ میں فے دنیا میں بیر کام کئے اور تو بنہیں کی وہ جنت کی ال بین چیزوں سے محروم ہے کہ میں خیروں سے محروم ہے کہ میں داخل بھی ہو جائے جیسا کہ حضرت عبداللہ بن محروم کی روایت میں ہے کہ درسول ادلیہ صلے اللہ عکی ہے فرما یک حس شخص نے دنیا میں سنراب بی ، پھرائس سے تو بہ نہیں کی کہ درسول ادلیہ صلے اللہ عکیہ ہم نے فرما یک حس شخص نے دنیا میں سنراب بی ، پھرائس سے تو بہ نہیں کی

معادف القرآن جر لمدشم

ا درج کوئ اس میں ربینی ترم متر بعین میں اللم کے ساتھ کوئ بے دینی کا کام کرنے کا ادا دہ کر بیگا تو ہم اُس شخص کو عذاب در دناک چکھا دیں گئے ۔

مكارف ومسأئل

پھی آیت میں مؤمنین اور کفاد کے ووفری کی باہی نحاصمت کا فررتھا اس نخاصمت کی آیہ۔

فاص صورت اس آیت میں بیان کی گئی ہے کہ ان میں بعض ایسے کفاد بھی ہیں جو خود گراہی ہو ہے ہوئے
ہیں وومروں کو بھی الشر کے داستہ پر چلنے سے دوکتے ہیں۔ ایسے ہی کو کو لے دسول الشر صدالسنہ علیہ کم
اوران کے صحابہ کو جبکہ وہ عمرہ کا اترام با ذھر کر جم شریف ہیں وافل ہونا چلہتے سقے سجورتام ہیں افل ہونے ہوئے سے دوکہ یا طالانکہ سجورتام اور ترم شریف کا وہ حصتہ جس سے لوگوں کی عبادت عمرہ و جی کا تعلق ان کی بلک میں وافل بہیں تھا جس کی بنار پر ان کو مزاحمت اور مداخلت کا کو کی حق ہنچیا، بلکہ ہم
میب وگوں کے لئے کیساں ہے جہاں باسٹندگان ترم اور باہر کے سافراور شہری اور پر دلیں سبرار ہیں۔ آگے اُن کی سزاکا ذکر ہے کہ جوشف سجورتام دینی پورے ترم شریف) میں کو ک
سبرار ہیں۔ آگے اُن کی سزاکا ذکر ہے کہ جوشف سجورتام دینی پورے ترم شریف) میں کو ک
کام کرنا ، اسکو عذاب در د ناک چکھایا جائے گا خصوصاً جبکہ اس بے دینی کے کام کے ساتھ فلوث دین کام کرنا ، اسکو عذاب در د ناک چکھایا جائے گا خصوصاً جبکہ اس بے دینی کے کام کے ساتھ فلا ہوا ہو جب میں طاہوا ہو جب کے ان کی حسائق وہ کفر و نشرک میں بھی سبلا شے۔
اوراگر جبہر خلاف دین کام خصوصاً مشرک کفر ہر حکم ہم زیانے میں تام اور انہائی جرم وگئا ہونے اور ورکس میں جو میں کام میں جو بیاں کے ای دوسر کے میں کام کرم گئی بی بیاں جرم گئی ہو گئی ہو جائے ہوں کے میں کام کرم گئی ہو جائے ہو اسکے موجب عذاب ہے می جو جب عذاب ہے حکم جو ایسے کام حرم محرم کے اندر کرے اُس کا جسم وگئی ہو جو کا کہ میں موجب عذاب ہے می جو جو ایسے کام حرم محرم کے اندر کرے اُس کا جسم وگئی ہو جو آگ ہو اسکو کی تخصیص کرکے بیان کیا گئی ہو جائے ہیں کہ کے اندر کرے اُس کا جسم وگئی ہو گئی ہو گئی ہو کہ کی کی کی کے کہ کی کہ کی کام کرم کی کی کی کی کرم کے اندر کرے اُس کا جسم وگئی ہو گئی ہو گئی ہو کہ کی کی کرم کی خصوصاً کو کرم کی تخصیص کرکے بیان کیا گئی ہو ہو کی کو گئی ہو گئی کرک ہو کہ کو کی کو کرم کی تخصیص کرک میان کیا گئی ہو گئی گئی ہو کہ کی کو کرم کرن کا کی کی کرم کی تخصیص کی کرم کی کی کرم کی کی کرم کی کو کی کرم کی کو کرم کی کو کرم کرم کرم کی کی کرم کی کو کرم کرم کی کو کرم کی کو کرم کی کو کرم کی کو کرم کی کرم کی کو کرم کی کو کرم کی کو کرم کی کرم کی کو کرم کی کرم کی کرم کی کرم کی کرم کی ک

يَصُدُّونَ عَنْ سَيِيلِ اللهِ ،سبيل الله سمراداسلام بصف آيت كيبين كرياوك

خود تواسلام سے دُور ہیں ہی دوسروں کو بھی اسلام سے روکتے ہیں۔
وَالْسَنْ جِبِ الْحَوَّا هِر ، یہ اُن کا دوسراگذاہ ہے کہ وہ سنما نوں کو سجارتمام میں داخل ہونے
سے روکتے ہیں۔ سجارتمام اصل میں اُس بجد کا نام ہے جو بہت الشرکے گر دبنائ ہوئ ہوئ ہے ادر پرتم مکم
کا ایک ہم جزرہے لیکن بعض مرتبہ سجارتمام بول کر قوراتر م مکہ بھی تمراد لیا جاتا ہے جیسے خود اسی واقعہ
یعنی مسلانوں کو عمرہ کے لئے حرم میں داخل ہونے سے روکتے کی جوصورت بیش آئ وہ بہی تھی کہ کھالا
کہ نے آپ کو صرف مسجد میں جانے سے نہیں بلکہ حدود حرم ملّریں داخل ہونے سے روک دیا تھا جو
احادیث صحیحہ سے ثابت ہے اور قرائ کریم ظاس داقعہ میں مسجدتمام کا نفظ بھنے مطلق حرم استحال

عارف القرال جسكة سُولِقًا لِحَيْجُ ٢٢: ٢٥ فرمايات وصَكَ وَكُوعَنِ الْعَسْجِيلِ الْحَرَامِ -تغسير درمننثورمين اس جكم مسجد حرام كى تفسيرس بُوراحرم مُراد ، بونا حضرت ابن عبائل سے روایت حرم مكرمين سب مسلما يؤل كے اتنى بات يرتمام أتمت اور ائترفقها ركا تفاق ہے كرمسيرحسرام او مسادی حق کا مطلب رم شریف کہ کے وہ تمام حضی بن سے افعال ج کا تعاق ہے جیسے صفا مرده کے درمیان کا میدان میں میں حی ہوتی ہے اور منی کا بور امیدان اسی طرح عرفات کا بدورا ميدان اور مزد لفه كايورا ميدان بيرب زميني سب دنيا كے سلمان كے لئے وقف عام بن كسى شخص کی ذاتی ملکیت ان پر مرسی موی ہے نہ ہو کتی ہے اِن کے علاوہ مکد کرمہ کے عام مکانات اور باقی حرم کی زمینیں ان مے متعلق بھی تعین ائمیہ فقتها، کا بہی قول ہے کہ وہ بھی وقعت عام ہیں۔ ان كافروخت كرناياكرايدديناحام ببرسلان برجكه تفيرست برعيدة في دوسر فقياركا نحتادسكة ب كرمكه كم مكامات ولكفياص وكن أي فريد دفر وخت ادرا مكوكرايه يردينا جائز ب حضرت فاردق عظمة سے ثابت ہے کہ اتفوں نےصفوان بن اُمیرکا مکان مکہ حرمہیں خرید کراس کو مجرموں کے لئے قيدخانه بناياتها إمام عظم ابوحنيفوس اسمين روايتين منقدل بين ايك يهد قول محمطابق دركسرى دوسرے قول کے مطابق اور فتولی دوسرے قول برہے ۔ کذافی روح المعانی ۔ بیر بجت کت فقہ میں مفصل مذکورہے مگواس آیت میں حرم کے جن حصوں سے روکنے کا ذکر ہے وہ حصے بہر حال سے تزديك وقفف عام بين ال سادوكمناحوام ب آيت ندكوده ساسى كى حمت ثابت بدقى بو- والشاعلم وَمَنْ يُرِدْ فِيْهِ بِإِلْحَادِ بِظُلْهِم الحادك من لعنت من سير الت عبد ما الحكام اس جگرالحادے مرادمجاہر و قتا وہ کے نز دیک کفر وٹسرک ہے مگر دوسرے مفترین نے اسکواینے عام معضي قرار ديا ہے جي بركناه اور الله ورسول كى نافر مانى داخل ہے يہاں تك اپنے فادم كو محالی دینا بڑاکہنا بھی ۔اور اسی معنے کے لحاظ سے حضرت عطار نے فرمایا کہ حرم میں الحاد سے مراد اسمين بغيراح ام ك داخل دوجانا يا ممنوعات حرم مين سيكسى ممنوع چيز كاا دّىكابكرنا ، جيسے حرم كاشكار مارنا يا أمكا درخت كالنا وغيره-ادرجو چيزي شريعية مين ممنوع ناجائزين وه جي جگه گناه اور موجب عذاب بی ترم کی تخصیص اس بنار پر کی گئی کرجس طیع حرم مکدین تکی کا خواب بهت بڑھ جانا ہے اسی طبح کمناه کا عذاب می بہت بڑھ جانا ہے (قالہ مجامد) اور حضرت عبد الله بن معود اسے کہ کی ایک تفسیر پیرنجی منقول ہے کہ حرم کے علاوہ دوسری گھوں میں محض گناہ کا ادا دہ کرنے سے گناہیں لکھا جاتا جب مک عمل مذکر سے اور حرم میں صرف ا را دہ مخینۃ کرلینے پر تھی گنا ہ ککھا جاتا ہے۔ قرطبی لے یبی تنسیرا بن عمر فاسے بی نقل کی ہے ا دراس تفسیر کو سیج کہا ہے ۔ حضرت عبداللہ بن عمر و فرج کے لئے جاتے تو دو جیمے لگاتے تھے ایک حرم کے اندر دوسرا باہر۔ حرم میں اگرا پینے اہل وعیال یا فدام

rg:rr 7521502 FOR

معارف القرآن جر لدشتم الاحتقاق

وستعلقین میں کسی کوکسی بات پرسرزنش اور عناب کرنا ہوتا توجم سے باہر والے خیمے میں جاکر ہے کام سرتے تقے دوگوں نے مصلحت دریا فت کی تو فرمایا ہم سے یہ بیان کیا جاتا تھا کہ انسان جوعنا ہے نادہی سے وقت محلا واللہ یا بلی واللہ کے الفاظ ہولتا ہے یہ جی الحاد فی الحوم میں وافل ہے (مظہری)

وَإِذِ بَوْ أَنَّ الْآ الْمِ الْمِ الْمُ مُكَانَ الْبَيْتِ اَنَ لَا تَشْرُلُهُ إِنَّ شَيْعًا قَلَا اللهِ اللهُ ال

فالصرتفسير

اور (اس قصد کا مذکرہ مجھے) جب کہ ہم ہے اہرا ہم دعلیہ السلام) کو فائد کسبہ کی جگہ ہتا ادر کے کہ ہتا اور داس قصد کا مذکرہ مجھے) جب کہ ہم ہے اہرا ہم دورا صل اس مکان کو عبادت کے لئے تیاد کروا در اس عبادت میں میرے ساتھ کئی چیز کو شریک مذکر نا (یہ درا صل ان کے بعد سے لوگوں کو شنا نا تھا اور ہنا دہیت الشرکے ساتھ شرک کی ممالعت کی ایک خاص دجہ یہ بھی ہے کہ مبیت الشرکیطون نما ڈاوں اسکا طواف کرنے سے سی جاہل کو پیشجھ مذہوجائے کہ ہی معبود ہے) اور میرے گھر کو طواف کرنے الوں اسکا طواف کرنے ہے کہ اور کو مع و تعجد کرنے والوں کے داسطے (ظاہری اور باطنی نجاسات بعنی کفرو شرک سے) پاک دکھنا (یہ بھی درا صل دوسروں ہی کو شنا نا تھا اہرا ہی علیال سے تواس کے داسلے (ظاہری اور باطنی نجاسات بعنی کفرو شرک سے) پاک دکھنا (یہ بھی درا صل دوسروں ہی کو شنا نا تھا اہرا ہی علیالشلام سے تواس کے

FOO

٣٩: ٢٢ جَعَ ١٥١٥

معادف القرائ جساد ششم

فلاف کاا حمّال ہی شمقا) اور (اہراہیم علیہ اسلام سے یہ ہی کہا گیا کہ) لوگوں میں جج (کے فرہ گور نے)
کاا ملان کردو (اس اعلان سے) لوگ بہتا رہے پاس (یعن بھاری) اونٹیوں پر بھی جج کہ دور دراز راستے
چھا ہیں گے بیادہ ہی اور (طولِ سفری و جسے ڈبلی ہوجانے والی) اونٹیوں پر بھی جکہ دور دراز راستے
سے بیٹی ہوں گی (اور وہ لوگ اس لئے ادیں گے) تاکہ اپنے (اپنے وینی اور ڈنیوی) فوائد کیلئے ماہر
ہوجاویں (دینی فوائد تو معلی و مشہور ہیں ڈیٹوی فوائد بھی اگر مقصود منہ ہوں شلاً خرید وفر و خرست اور
قربانی کا گوشت وغیرہ تو بیٹی کوئی فرائو ہمیں) اور (اس لئے اکویں گے) تاکہ ایتام مقروہ میں (جو
قربانی کا گوشت وغیرہ تو بیٹی کوئی فرائد ہمیں) اور (اس لئے اکویں گے) تاکہ ایتام مقروہ میں (جو
پر نہی کے ایتام دسویں سے بارھویں ڈی الحج ہمیں۔ بیں) اُن مخصوص جو پاؤں پر (بینی قربانی کے جافولد
پر فربا کے ایتام دسویں سے بارھویں ڈی الحج ہمیں۔ اِن (قربانی کے) جافولد کے اور اپنے کے اور اپنے کہ اپنا میں جو خدا افتا کے ایس مرضر الیں) اور اپنے واجبات کو تواہ ویا ہے کہ اپنا میں جو خدا کو اور اپنی کے داجب بیں اُن سب کو ٹورا کریں اور اپنے داج ہات کو تواہ ویا ہی نظا میں جو باؤں سب کو ٹورا کریں اور اپنے کہ اپنا میں مور واجب کرلی ہویا بلا نزر جوا فعال جے کے داجب بیں اُن سب کو ٹورا کریں اور اپنے دورا کریا اور اپنے کہ اپنا میادہ اس معلومات بیں) اس ماموں و مورا کو انسان کی کو اورا کی کا طواف کریں دیطوات نوائر کی اور اپنی دورا کو داخل کے کہ داجب بیں اُن سب کو ٹورا کریں اور اپنی ایس امون و محفود کو گورا کرینی بیت اسٹری کا طواف کریں دیطوات نوائر کریں دیا مقتورہ کو ایک کو کو کو کورا کورا کریں دیا کریا ہو کورا کریں دیا کورا کریں دین بیت اسٹری کا طواف کریں دیلو کورا کورا کریں کورا کورا کریں دیا کورا کریا کورا کریں کورا کورا کریں دیا کورا کریا کورا کریں کورا کورا کریں کورا کریا کورا کریں کورا کریا کورا کریا

معارف ومسائل

اس سے پہلی آیت میں سے جوام اور رم سے روکنے والوں پر عذاب شرید کی وعیدائی ہے آگے اس کی مناسبت سے بہت الشرکے فاص فضائل اور عظمت کا بیان ہے جس سے اُن کے خاص فضائل اور عظمت کا بیان ہے جس سے اُن کے خاص فضائل اور دنیا دہ واضح ہوجائے۔

بناربیت استری ابتدا دیا جمع معنے میں آتا ہے۔ معنے آیت کے بیر ہیں کہ بیات قابل ذکر اور بیادر کھنے اور رہنے کا مکان دیے کے معنے میں آتا ہے۔ معنے آیت کے بیر ہیں کہ یہ بات قابل ذکر اور بیادر کھنے کی ہے کہ ہمنے (براہیم علیہ اسلام کوائس جگہ کا ٹھکانا دیا جہاں بیت اللہ ہے۔ اسمیں اشارہ ہے کہ حضرت ابراہیم علیہ اسلام بیلے اس زمین پر آباد دنہ تھے جیسا کہ دوایات سے ثابت ہے کہ اُن کو کہ کک مشام سے بچرت کرا کر بیاں لایا گیا تھا۔ اور مکان البیت میں اسطون اشارہ ہے کہ بربت اللہ حضرت اور کھان البیت میں اسطون اشارہ ہے کہ بربت اللہ حضرت اور محالیات اللہ علیہ اسلام اور اُن کے بعد کے انہی اور اُن کے بعد کے انہیا ربیت اللہ کے دمین لا خواف کرتے تھے۔ حضرت فوج علیہ اسلام کے طوفان کے دفت بہت اللہ کی تعمیراً مقالی کئے تھی کا طواف کرتے تھے۔ حضرت فوج علیہ استلام کے طوفان کے دفت بہت اللہ کی تعمیراً مقالی گئی تھی بینا در انکو کھی بنیا دیں اور انکی معین جگہ موجود تھی۔ حضرت ابرائیم علیہ السلام کو بیبیں لاکر ٹھمرایا گیا اور انکو کھی بنیا دیں اور انکی معین جگہ موجود تھی۔ حضرت ابرائیم علیہ السلام کو بیبیں لاکر ٹھمرایا گیا اور انکو کھی بنیا دیں اور انکی معین جگہ موجود تھی۔ حضرت ابرائیم علیہ السلام کو بیبیں لاکر ٹھمرایا گیا اور انکو کھی بنیا دیں اور انکی معین جگہ موجود تھی۔ حضرت ابرائیم علیہ السلام کو بیبیں لاکر ٹھمرایا گیا اور انکی معین جگہ موجود تھی۔ حضرت ابرائیم علیہ السلام کو بیبیں لاکر ٹھمرایا گیا اور انکو دیمیں

معادت القران جسكد

آگے آیت میں اُس تا نیر کا ذکرہے جو اہراہیم علیالسلام کے اعلان کو تمام انسانوں تک شچان اللہ بہنچانے سے قیامت سک کے لئے قائم ہوگئی وہ یہ ہے یا ٹوٹھ کے دیکا گڑ و تکا کوٹل حکارہ یہ تائین رٹ کُٹِل فَجَہ ہونے اور کا اور سواری سے کئے تا ہونے کوٹی ہا دور دواری سے کئے دی ہونے کوٹی ہا دور دواری سے کئے دارے بھی دور دوار ملکوں سے آئی کے جس سے آئی سرا رہاں بھی لاغر ہوجائیں گی چنانچا ہوقت سے آئے تک کہ ہزاد ہاسال گزر چکے ہیں بہت ادلتہ کی طرف جے کے لئے آئیوالوں کی بیم کیفیت ہے ۔ بعد میں آئے دالے صب انبیاداوراُن کی اُستیں بھی اس کی پا بندرہی اور میلی علیالسلام کے بعد جوطویل دور جا ہلیت کا کھڑ وا ہے اسمیں بھی عرب کے باشندے آئر جی ٹرت پرسی کی بلادیں جتلا ہوگئے تھے بھر کے کے ادکان کے گڑ وا ہے اسمیں بھی عرب کے باشندے آئر جی ٹرت پرسی کی بلادیں جتلا ہوگئے تھے بھر کے کے ادکان کے

ائسى طرح يا بند تقصص طرح ابلا بهم عليالسلام سيمنفول و مأتور چلاا تا مقاله ليشه ك في المنافع كه في التي يك يه حاصري دور دراز سفر طي كرك ا پينهي منافع كيك ہے

قران میں منافع کو بصیغهٔ نکرہ لاکراسکے عمق کیطرٹ اشارہ کردیا ہے جیں دینی منافع تومبیثمار ہیں ہی وندی منافع بھی بہت مشاہدہ میں آتے ہیں کم اذکم اتنی بات خود قابل تعج فیصیرت ہے کہ رجے کے مقا یر عموماً بڑی رقم خرج ہوتی ہے جو لعض کوک اری عم عنت کرتے تھوڑی تھوڑی بچاکر جمع کرتے ہیں اور بہا بمك قت خرية كرد التي بينكن سارى دُنياكى تاييخ بين كويُ الك انتحابيها نهين تبايا جاسكنا كركوي تحف عج یا عمره میں خریج کرنگی وجرسے فقیر و محتاج موکیا ہو۔ اسکے سوا دوسر سے کا موثلاً بیاہ شادی کی رسموں البي دركان تعمير كرنيس فرح كرم بزارون آدى محتاج و نقر بونيوالي برهي نظرات بي -الترتعالي في سفرج وعمره ميں ميخصوصيت بھي ركھي ہے كداس سے كوئي شخص دنيوي فقر دفاقتر ميں مثلانہيں ہوتا بلكه تعض د وایات بین ہے کہ حج وعمرہ میں خرچ کرنا ا فلاس و مختاجی کو دور کر دیتا ہے غور کیا جائے تواسكا بھی مشاہرہ عموماً پایا جائيگاا در جے کے دہنی منافع تؤ ہرت ہیں آئیں سے ایک ہی کھید کم نہیں وحضرت ابد ہرارہ رفز کی حدیث میں ہے کہ رسول الله صلاالله عکی مفرمایا کہ حسینے ف اللہ کے لئے جے کیا ادراسیں بے حیائ کی باتوں سے اور گیاہ کے کا سوں سے بخیاد ہاتو وہ جے سے ایسی حالمیں دایس آئيگاكه كويايداين مان كے بيٹ سے آج برآمر زوا ہے بيني جيسے ابتدار ولادت ميں بجير بے كناه معصوم موتا ہے بیری ایساہی موجائیگا۔ دواہ البخاری دیسلم (مظاوی) بیت انتر کے یکس جمع بونواك محاج كافكاك فالدة توادير مذكور بواكدوه ايسندين اورد نيوى منافع اور فوائد كا مشابده كرلس - دوسرا فائده برتبلا باكماكه و يَنْ حَرُوااسْوَاللَّهِ فِي آيّامٍ مَتْعُلُوْمني عَلْ مَا دَنَ اللَّهُمُّ مِّن الْجَيْمَةِ الْأَنْفَاجِ اللَّي تَك وه اللَّه كانام ذكركري ايا معلومات ين أن جويايطانورو إيرجواللرنان كوعطافرط بي- اسي سب يهلى بات تويد بهكد فرياني كالوشت اوراش س عاصل ہو نیوالے فوائد پر نظر نہ ہونی چاہئے بلکا صل چیز التار تعالیٰ کا ذکر ہے جوان داؤں میں قربان

شوري الحبّ ٢٩: ٢٢ معادف القرآن جسكدشم سے الفاظ ندر ادانہ کرے ۔ تفسیر طری یں اس جگہ ندر اور منت کے احکام و مسائل بڑی ففیل سے جمح رد ني بس جواين جله بهت ايم بي محريها الله يك كنها من نهي -ايك سوال اورجواب اس آيت سي يبلي عال تج تسرياني اورا حرام كهولن وغيره كا ذكر إداب اوراك بھی طوا ف زیارت کا بیان ہے درمیان بی ایفا زندر کا ذکر کس مناسبت سے ہوا جبکا لفائے نزر ایک ستقل مي يه عج مين موياح كے بغير اورج م شريف مين مويا با بركسي ملك مين -جواب يهب كداكرجير الفارندرايك تقل محم شرعى بهاتيام ج ادرا فعال عج ياحرم كيساته محصوص منہیں میکن اسکاذ کر بیاں افعال عج کے ضمن میں مثاید اسوجہ سے ہے کہ انسان جب عج کے لئے ممکنا ہے تو دل كا داعيم وتا ب كراس سفرس زيادة زياد فيك كام اورعبا دات اداكر اليس ببت ي فيزول کی نذریجی کرلتیا ہے خصوصاً جالؤروں کی قربانی کی نذر کرنے کا توعام دواج ہے حضرت ابن عباس نے بہان زرسے مراد قربانی ہی کی نذر قراد دی ہے -اود ایک مناسبت ندر کی احکام جے سے بہی ہے كرحبطرح نذرا دوسم سے انسان يربهت سى چيزى جواس شرع كى رُوسے وا جب بيني قير واجب بوجاتى بین-اوربهت سی چیزس جواصل احکام کی روسے حرام ناجاً نرنهیں کھیں وہ استحض برناجاً زوح ام موجاتی ہیں۔ اجرام کے تمام احکام تقریب آ ہے ہی ہیں کہ سے ہوئے کیڑے ، خوشبو کا استعمال بال مؤمدٌ مَا مَ نَاخِن تراشنا وغيره في نفسه كوئ ناجائز كام نه تصفيرات احرام باندهكر ميسكم اين اویرجرام کرلئے۔اسی طرح مج کے دوسرے اعمال دا فعال جو فرص توعمرس ایک ہی مرتبہ ہوتے ہیں گر بعدس في وعره مح المقاحرام بانده كريرسب كام استح لئة فرض بروجاتي بي - أى لفة حضرت عكرة نے اس جگہ ندور کی تفسیر میں بی فرمایا کہ اس سے مواجب جے مراد ہیں جو جے کی وجہ سے اسلازم مو کئے ہیں۔ وَ لَيُطَوِّ وَوَا بِالْبَيْتِ الْعَلِيْقِ ، يهال طواف عصراد طواف ريارت معجد وسوي تايخ ذى الجيكورى جمره اور قرمانى كے بعد كياجاتا ہے بيطوات عج كا دوسرا دكن اور فرض ہے بيلا دكن وقوت عرفات ہے جواس سے بہلے اوا ہوجاتا ہے۔ طوات زیارت پراحرام کے سب احکام کمل ہو کر دوا احسرام كفل جآما ہے در دى ذلك عن ابن عياس ومجاہد والضحاك جماعة بل فال الطبرى وال لمسيتم لهُ لا خلا بين الميّا ولين في انهُ طوات الإفاضير ويكون ذكك يوم النخراز روح المعاني) بَيْنِ عَنِيقَ، بِيْ التُّركانَا م بِيَ عَتَيق اسليَّ سِي رعنيق ك معن آزا و كم بين اور رسول مشرصلا ملته عكيهم ني فرما ياكه المنترني الين كفركانام بيت عتيق اسكة ركها بيه كدا لله تعالى ني اسكو كفار وجبا بره كے غلبها ورقيضه سه آذادكر وياب دروان الترونى وصدولا الموصحة ابن جووالطبوان وغايم ازروع المعان كسى كافرى مجال نهي كداسيرقبضه ياغلب كرسك - اصحاب فيل كاوا تعداسيرشا بدس والشرام يفسيرطهرى الين اس موقع برطوات محمفصل احكام وسائل جمع كويسي بين جوببت أيم قابل ديد بين - والشراعلم

سورة الحيج ٢٢: ٣٣ مَنْ يُعَظِّمُ حُرُمْتِ اللهِ فَهُوَ خَيْرًا لَهُ عِنْ رَبِّهُ وَ ن بح ادرجو كوئ برائ ركے الله كى حرمتوں كى سودہ بہتر ہے اسكے لئے اپنے رب كے باس اور حلال اير آیک الله کی طرف کے جو کرنہ کدا سے ساتھ شریب بناکرادر ب ور بحية رويو جموتي بات ور يرا اسمان سے بھرا يحكة بين اسكوارشة ولا مردار جوار ماجا والا الدر مكان ين يرش يح ادرجوكوكادب ركيداللدكام للى چيرون كا سودہ دل کی بر ایر کاری کی مات ہے مہارے داسطے جو باوں میں فائدے ہی ایک مقرر وس يهسر أن كوبهنينا اس قديم

یہ بات تو ہوچی رجوجے کے مفصوص احکام سے اور اب دو کے عام احکام جن میں جے اور علاقہ جے کے دوسرے مسائل بھی ہیں سنوکہ) جوشفص الشرتعالی کے محترم احکام کی وقعت کر بیگا سولیہ اسکے حق میں استحدب مے نزدیک بہترہے (احکام کی وقعت کرنے میں بریمی داخل ہے کہ اُن علم می حاصل کرے اور يري كران يرعمل كاابتهام كرے- اوراحكام خدا دندى كى وقعت كااسكے لئے مبتر بونااس لئے ہے كدوه عذاب سے منجات اور دائمی راحت کاسامان؟) اور ہائج فسوص جو یا دُن کو باستثنائ اُن (معفیعن) کے جوتم كويره كرمسنا دي كفي ريين سوره انعام وغيره كى آيت قُلُ لَا آجِكُ فِيكَا أَدْتِي إِلَى مُعَوَّمًا میں حوام جا بؤروں کی تفصیل بتلا دی گئی ہے ایک سوا دوسرے جو بائے ہمقااے لئے علال رو یا کیا ہے (اس حكري ما بور ول مے حلال مؤسكا ذكراس لئے كياكياكه حالت اجرام ميں شكاركى مالفت سے سے کو اجرام کی حالت میں عام جویائے جانوروں کی جانعت کا شیمے مذہروجائے اورجب دین و دُنیاکی معلای احکام ضلاوندی کی تعظیم مین خصر ہے) توئم لوگ گندگی سے بینی بتوں سے تمارہ سن ہو ركيو كمه بتون كو خداك سائق مشر مك كرنا تو حكم الهى سے كفلى بغاوت ہے اس جگر شرك سے بجينے

FIF

ارف القرآن جسا

سورة الحجر ١٢٠:٣٣

كى بدايت خاص طوديراس لئے كى كئى كەشتركين مكداينے ج بين جوتلبيديريطة تقے آسيس الاشريكا هو لك ملادية منفي ين الشركاكوي مشرك بجر أن بول منهي بعد ودواسى الشركي) اور جونى بات سے بچتے دمود (خواہ وہ عقائد کا جھو طے ہوجیئے سرکس کا عنقاد شرک یا دوسری سم کا جھوط) اس طوے كه التركيطرون بحفك رم واستحسا تقد ركسي كوتبر مك مت تقهرا و اورجوشخص الترك سائق مشرك كرما ب تو (اُس كى حالت السيى بوكى جيسے) كويا وہ أسمان سے كريرا بھر برندوں نے اُس كى بوٹمياں بذيح ليس مااسكو مواتے کسی دُور درا زجگہ نیچا کر بیا ہے ہیا ہے ہی (جو بطور قاعدہ کلیہ سے تھی) ہو بھی اور (اب ایک ضروری بات قربانی کے جالوروں محتقلق اورش لوکہ) جوشص دین خدا دندی کے ان (مذکورہ) یادگادوں كايۇرا لحاظ ركھے كاتو أسكايه لحاظ ركھنا دل كے ساتھ فداسے ڈرنے سے حاصل ہوتا ہے رہادكا ولك كالاركضة مراداحكام الليمى يابندى مي حقر كاني كمتعلق بي خواه ذرع سقبل محاحكام بون يا ذبح كے دقت من جياأس يرا مشركا نام لينايا بعد ذبح كے بدن جيسے اسكاكھا نايا نہ كھا نا كرجن كا كھانا جس كے لئے حلال ہے وہ كھائے جس كا كھانا جس كے لئے حلال نہيں وہ نہ كھائے۔ان احكام يس كيم توسيع على ذكرك جا يحيك اوركي بين كم) تم كوان سي ايك معين وقت مك فوا مرحاصل كرنا جائزے دینی جب تک وہ قواعد مشرعیہ کے مطابق ہری نہ بنائے جا دیں توان سے دودھیا سوار بادردادی وغیرہ کافائدہ اٹھانا جائز ہے حکر حب اُن کوسبت التدادر جے یا عمرہ کے لئے مری بنا دیا تو کھران سے کوئ نفع اعمانا جا کر بہیں) پھر دینی بدی بننے کے بعد) اسکے ذیج صلال مین كاموقع بيت عنيق كة ربيب (مراد بولاحم بيني وم سيابرذ بح فركري)-

معارف ومسائل

قَاجُتَيْنِوُ الرَّجْسَ مِنَ الْأَوْتَانِ ، رجس كے معنے ناپاك اور گندگى كئي اور اوثان وشن كى جمع ہے بُت كے معنے میں ۔ بُتوں كونجاست اس لئے قرار دیاكہ وہ انسان كے باطن كومِشرك

کی نجاست سے محردیتے ہیں۔

ق اجْتَوْبُوْ الْکُوْدِ، فول دَودِ مُرادِ عَهو شہر من خلاف جو کچھ ہے وہ باطل اور جھوٹ ہے ، حق کے خلاف جو کچھ ہے وہ باطل اور جھوٹ ہیں داخل ہے داخل ہے داخل ہے اسر خواہ عقائدہ فاسرہ تمرک د کفر ہوں یا معاملا ہیں اور شہادت ہیں جھوٹ پولنا ہو۔ دسکول الشرصلے الشر عکی کیم نے فرمایا کہ سب بمیرہ گنا ہوں ہیں ہے بڑے کہیں ویکنا ہیں النظر کے ساتھ کئی کو شرک کو شہر کیا اور والدین کی نا فرما نی کرنا اور جھوٹی گواہی دینا اور عام باتول میں جھوٹ بولنا۔ دسکول الشرصلے الشرعکی ہے آخری لفظ وَ فَوَلُ الزَّوْرِ کو باربار فرمایا (دو تھا بعنادی) وَمَنْ یَعْدَ فِلْکُورُ وَلِهُ اللهِ اللهِ اللهِ عَلَى مَنْ علامت کے ہیں جو چنین کو من خاص مذہب یا جماعت کی علامت کے ہیں جو چنین اسلام اُن خاص مذہب یا جماعت کی علامات خاص بھی جاتی ہوں دہ اُس کے شعائر کہلاتے ہیں شعائر اسلام اُن خاص احتام کانا م ہے جو عرف میں سلمان ہونے کی علامت سمجھے جاتے ہیں۔ ج کے اسلام اُن خاص احتام کانا م ہے جو عرف میں سلمان ہونے کی علامت سمجھے جاتے ہیں۔ ج کے اکثرا حکام الیسے ہی ہیں۔

مِنْ تَتَقَوِی الْقُلُونِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ الل

اور قائم سكف والے تماذ كاور مارا ويا ووا سے والے آس کو جو ان یر یرے ے واسط اسیں مطلایہ سو پڑھوات بر نام الشر کا وَلادِمَا وُهَا وَلَجِنْ يَنَالُهُ التَّقَوٰى مِنكُوْرَكُنْ لِكَ سَخَرَهَا ادران کالود سین اس کو بہنچتا ہے عہارے دل کا دب اس طرح ان کوس میں کردیا لكُو لِتُكَوِّلِتُكَوِّلِتُكَ عَلَى مَا هَالْ لَكُوْ وَ كِيْفِرِ الْمُحْسِنِينَ ﴿ متهادے کہ انشری بڑائ برطواس بات پر کہم کوراہ بھائ اوربشارت سُنادے نیکی والوں کو ادر اور بروقرباني كاحرم مين ذ ع كرف كاحكم باس سے كوئ يد نه جھ كم مقصود الى تعظيم حرم کی ہے بلکہ اصل مقدد اللہ بن کی تعظیم اور اسے ساتھ تقرب ہے اور ندبوح اور مذبح اسکاایک اكراور درايير ب اورتضيص معين مكتول كى وجرس ب اوراكر يتخضيصات مقصود الى موتيل توكسى شريعيت مين منه بدلمتين محرّان كايدلنا ربناظا هرب البنة تقرب الى الشرحو السل مقصود تفاوه سب شرائع میں محفوظ دیا چنا بخیر) ہم نے (جنن اہل شرائع گزرے ہیں ان میں سے) ہراً مت کے لئے قرباني كرنااس غرض سے مقرد كيا تفاكه وه ال محضوص جو يالوں برانشر كا نام ليں جو اس نے الكوعطا

فرمایاتها دیس کی مقصودیه تام لیناتها) سو (اس سے بیات بکل آئ کد) محقادامعبود (حقیقی) ایک بی فداہے رجیکا ذکر کرے سب کو تقرب کا حکم ہوتا دیا) توتم ہمرتن اس کے ہو کر دہور یعنی موحد فالص دمود اسى مكان وغيره كومعظم بالذات بحصف سے درة برابر شرك كاشائبراين على سرمونے دو اور داے محرصلی الترعکت مجدوک ہماری استعلیم برعل کریں) آپ دایسے احکام الہیر کے سامنے) کرد بحف کا دینے دالوں کو رجست وغیرہ کی) خوتخبری شنا دیجیے جو راس توحیدخالص کی برکت سے) ایسے ہی جب (ان كے سامنے) اللزركے احكام وصفات اوروعدہ وعيد) كا ذكركيا جاتا ہے توان كے ل دوجا بیں اورجوا ن صیبتوں کیکہ اُٹ پر بڑتی ہیں صبر کرتے ہیں اورجو نماز کی یابندی کرتے ہیں اورجو کچھ ہم نے اُٹ کا دیاہے اُس میں سے (بقدر مم اور توفیق کے) خرج کرتے ہیں دیعنی توحید خالص الیبی بابرکت چیز ہے کہ اسكى بدولت كمالات نفسانيه وبدنية ماليه بيدا موحاتين) اور (اسى طرح اوير وتعظيم شعائرالله النوايي بعض أشفاعات كالممنوع برونامعلوم بهواب اس مصيى ان قربابيون مصفكم بالذات بوقے كاشبهم نه کیاجا دے کیونکہ اس سے بھی اصل وسی اللہ نقالی کی ادراسکے دین کی تفظیم ہے اور میتخصیصات اسكاايك طريق ہے سين) قر ماني كے اونظ اور كائے كو (اوراسى طرح بحرى بھيركويمى) ہم فے اللہ (كے دین) کی یادگار بناما ہے ذکہ اسے متعلق احکام کے علم ادرعمل سے اللّٰرکی عظمت اور دین کی وہ ظاہر ہوتی ہے کہ اسکے نا مزد چیز سے منتفع ہوئے میں مالک مجازی کی دائے قابل اعتباد نہ دہے جس سے اس کی بیری عبرت اور مالک حقیقی کی معبو دیت ظاہر ہوتی ہے اور اس حکمت دینی کے علاده) ان جانوروں میں عمرانے واور میں فائد سے بین دمشلاً دیوی فائدہ کھانا اور کھلانا اور اخروی فائدہ تواب ہے) سو رجب اس میں پیمین بن تو) تم ان پر کھڑے کرے (ذیح کرتے وقت) الشركانام لياكرو (بهصرف أونول كے اعتبار سے فرما ياكر ان كا كھڑے كركے ذبح كرنابوج اتمانی ذبح وخ وج روح محبیر سے میں اس سے تو آخروی فائدہ لینی تواب حاصل ہوا اور نیز الشرى عظمت ظاہر بوئ كراسكے نام يرايك جان قربان بهوئ حس سے أسكا خالق اورا سكا مخلوق ہونا ظاہر کر دیاگیا ، بس جب وہ رکسی کروٹ کے بل گریس داور ٹھنٹے ہوجادیں) تو تم خود بھی کھا دُاور بے سوال اور سوالی مختاج) کو (جو کہ بائس فقیر کی دوسیں ہیں) بھی کھانے کو دو-ذكه يه دُنيوى فائده مي ساور) ہم نے ان جا نوروں كواس طرح بہار ب زير كم كرديا كه تم با دجود تمهاا صعف ادر اللي وت كاس طرح اس فرح اسك ذرح يرقادر وكك تاكم داس سخیرر انشر تغالی کا) مشکر کرو (پیجکت مطلق ذرع میں ہے۔ قطع نظراس کی قربانی ہونے کے ا در آ کے ذریح کی تحضیصات کے مقصود بالذات مذہونے کو ایک عقلی قاعد سے سے بیان فرماتے ہیں کہ دیکھوظا ہر بات ہے کہ) اللہ تعالی کے پاس نہ اُن کا گوشت پہنچنا ہے اور نہ اُن کا خون ، وسکین اسکے پاس عہادا آفوی کی کرنیت تقرب داخلاص اسکے شعبوں میں سے ہے البستہ) بینجیا ہے۔

ریس دہی تعظیم المبنی کی مقصود میت ثابت ہو گئی اور عبیا ادیر گذاری سنٹ دنی آلا میں سنے کی ایک عام کئی مقصود میت ثابت ہو گئی اور عبیا ادیر گذاری سنٹ دنی آلا میں سنے کئی ایک عام کئی تعلیم المنی ہوئے کی خصوصیت سے تطع نظر کرنے کے اعتبار سے بیان ہوئی تھی آگے تسنیر کی ایک فاص حکمت بعینی بلی اظر قربانی ہونے کے ادشاد فرماتے ہیں کہ) اسی طرح اللہ تعالی نے ان جانوروں کو تمہادا زیج کم کردیا گئم (اللہ کی راہ میں ان کو قربانی کرکے) اس بات پراللہ کی بڑائی (بباین) کرد کہ اس نے تم کو (اس طرح قربانی کرنے کی) تو فیق دی (در مذاکر تو فیق الہی رہبر مذہوتی تو یا تو ذرئے کہ اس نے تم کو (اس طرح قربانی کرنے کی) تو فیق دی (در مذاکر تو فیق الہی رہبر مذہوتی تو یا تو ذرئے کہ اس نے جمومی اللہ میکنی اخلاص دانوں کو فوشخری شناد یکنے (اس سے پہلے فوشخری اخلاص کے شعبور کرتھی یہ خاص اخلاص پرتھی یہ خاص اخلاص پرتھی یہ خاص اخلاص پرتھی۔

معارف ومسائل

وَلِكُلِّ أُمَّةَ جَعَلْنَامَنْسَكًا لفظ مَنْسَك اور نُسُك ،عسرى زبان كاعتبارت كئى معنے كے التے بولاج اتا ہے ۔ ايك معنى جا اوركى قربا نى كے دوسرے معنے تمام افعال ج سے اور تسیر مے عنی مطلقاً عباد ہے ہیں قران کریم میں مختلف مواقع پر میفظان تین معنے میں استعمال مواهد - يهان مينون معظ مراو ، وسكت بي اسى لئة ائد تفسيري مجايد وغيره في اس جكه مُنك كو قربانى كے معنظيں بيا ہے۔ اس ير معند آيت كے يہ بونك كد قربانى كا حكم جواس المت كے لوگوں كودياكيا ہے كوئ نيا تھم نہيں۔ پھيلى سب أمتوں كے بھى ذمه قربانى كى عبادت لكائ كئى تقى۔ اور قتادہ نے دوسرے معنے میں بیاہے جس پر مراد آیت کی یہ ہوگی کہ افعال حج جیسے اس میت برعائد كن كن كن بيكي أمتون يركمى عج فرض كياكيا تقا-ابن عسرفه في تتيسر عد معن لتي بي اس اعتبارے مرادائیت کی یہ بردگی کہ ہم نے اللہ کی عبادت گزاری سے تھیلی اُمتوں پرسی فون ی تھی طریقہ عبادت میں کھے کھوفرق سب امتوں میں دہاہے مگراصل عباد سب می شرک ہی ہے و كيتيرا كمينيتان لفظ خبن عرى زبان سي بيت زمين كمعنى من آيا بي اى ك خيبيت أس مفق كذكها ماما مع واست أب كوحقير مجم واسى لئ حضرت قتاده ومجار في فنبتين كا ترجمه مواضعين سے كيا ہے۔ عمرو بن اوس فراتے بين كه مخبتين وہ لوك بيں جو لوكوں يرظ لم نہیں کرتے اور اکر کوئ اُن برظام کرے تو اُس سے بدلہ نہیں لیتے۔ سفیان نے فر مایاکہ یہ وہ آدک بیں جواللہ کی قضار قلقد مریر راحت و کلفت فراخی اور نظی ہرحال میں راحنی رہتے ہیں۔ وَجِلَتْ قُالُونُهُمْ ا وجل كاصلى معناس فون دسيبت كي بي جوكسى عظمت كى بنار

سُورَة الحَيْجُ ٢٢: ٢١ معارث القرآن ج إِنَّ اللَّهَ يُـنَا فِعُ عَنِ الَّذِينَ أَمَنُوا اللَّهِ اللهُ لَا يَحُتُ كُلَّ الشر سو خوسش بنیں آیا کوئ الله دشمنوں کو ہشادے گا ایمان دالوں سے حَوَّالِ كَفُوْرِ رَا بلاشیصرانشرتعالی (ان مشرکین کے غلبہ اور ایڈ اررسانی کی قدرت کو) ایمان والوں سے د عنقر سیم شاد می از کر کھر جج د غیرہ سے دوکہ ہی نہ سکیں گئے ، جنیک اللہ تعالی کسی د غاباز کفر کر نوالے كونيين جابتا د بكلالي توكون سے نادا ص ب اسلتما نجام كادان توكوں كومفاوب اور مومنين تخلصين كو معارف ومسائل غالب كرك كا)-سابقة آيات بي اسكا ذكر تفاكه شركين نے دسول الترصلے الله عكيد م اور آيكے صحابم كوجوعم وكا اجرام بانده كرمك كرمه محقريب مقام حديبيري بن عج عقرم شريف ووسجدهام مين جافي ادريم اداكرنے سے روكديا تقااس آيت بين سايانون كواس وعدہ كيسا تقسلي دى كئى ہے كدا مشرتعالي عنقريب ان شکین کی اس قوت کو توڑ دیکا جس کے ذریعہ وہ مسلمانوں پرظلم کرتے ہیں بیروا قعیر سند ہجری میں یا آيا تقا اسكے بعد مصلسل كفا دمشركين كى طاقت كمزور اور بهت پست بوتى عِلى كنى بيان مك كرم مر مرمه فتح بوكما- الحي آيات بين اس كي تفصيل آني ي ي-وما الله وكول كو جن سے كافر المنة وي اسواسط كمان ورظام وا اور مردسے اور عمادت فاتے اور مسجد سجن س نام برها جا اورانشرمقرد مددكر بكااسى جومدكر بكااسى بيشك الله زيردست ب زور والا

177

41: Mr 7521850m ن إِنْ الْ مَكَ مَنْ الْمُورِفِ الْوَرْضِ آقًا مُوا الصَّلَّوٰ وَأَتَوْ الرَّوْوَ دہ اوگ کہ اگر ہم اُن کو قدرت دیں ملک یں تو دہ قائم رکھیں نماز اور دین آکوہ اور مَرُوا بِالْمَعْرُونِ وَنَهَوْاعِنَ الْمُنْكُرُ وَلِلَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُولِ ١٠ علم كرين بھے كام كا اور منع كرين برائ سے اور اللہ كے اختيار ميں ہے آخ بركا كا ذكواب تك بصالح كقارس وطفى مانعت تقى تبين اب، الطف كى ان يوكوں كواجا زت دمدى تشی جن سے دکافروں کی طرف سے) لڑائ کی جاتی ہے اس وجہ سے کہ اُن پر (بہت) علم کیا گیا ہے ریه علّت میصشردعیت جهادی) اور (اس حالتِ ا ذن ین سلما نون کی قلت اور کفار کی کثرت برنظر عركرنا جائي كيونكرى بلاشيه الشرتعالى ال ك عالب كردية يراورى قدرت ركفتا ب (آكان لى مظلوميت كابيان ہے كه) جو (بيجارے) اپنے گھروں سے بے وجہ زِكا لے كئے تحص اتنى بات يركدوه توں كہتے ہيں كہ ہمارا رب الشرب (ليني عقيده توحيد يركفا ركايہ تمام ترغيط وغضه تھا کہ ان کواسقدر پر میشان کیا کہ دطن جھٹور ٹا پڑا آگے جہادی حکمت ہے) اور آگریہ بات نہ وتی کہ الشرتعالي (بعيشه سے) توكوں كاايك دوسرے ركے بائق سے زور نہ كھشوا مّا رہتا ركيني اہل حق كو ا بن باطل يروقتاً فوقتاً غالب مذكرتا دميتا) تو (اینه اینه زمالون مین) نصاری محفلوت خانے اورعبادت خانے اور مهود کے عبادت خانے اور دمسلمانوں کی ، وہ بحد من حن میں انٹرکا ٹا بکثرت لیاجآنا ہے۔ سب منہدم (اورمنعدم) ہوگئے ہوتے دا کے اخلاص فی الجہاد پرغلبہ کی بشارت وی اور بیشک انشرتعالی آی مدد کرسی جوکدانشر دے دین کی مدد کرسی اسے اونے میں خالص نیت اعلاء كلمة التركيم من مبينك للدتعالي قوت والا (اور) غلبه والاب (ده ص كوچا ہے قوت وغلب دے سكتاب آك ان كى فعنيات ہے) يولوك ايسے بين كواكر بم ان كو دُنيا مين حكومت ويدين تويم

> رب گابکه ممکن ہے کہ اسکا عکس ہوجادے جنانچہ ہدا)۔ معارف ومسکائل

كفادكىيا تقرجها وكايبهلا تحكم الموكرمة بي شلان بركفار كونطا لم كايبال ففاكد كوئ دفنا لى منها الفاكد كوئ

لوگ خود می نمازی یابندی کریں اور زکوٰۃ دیں اور (دوسروں کومی) نیک کا موں کے کرنے

كوكبيں اور برے كاموں سے منع كريں اورسب كاموں كا انجام توخداہى كے اختياديں ہے

دىسى سلانوں كى موجودہ حالت دىكيم كريہ كوئى كيونكر كہرسكتا ہے كدا نخسام بھى ان كايبى

عادت القرآن جسكة سورة الحية ٢٢: مطلب آیت کا پہ ہے کہ اگر کفارسے قتال وجها دکے احکام مزاتے توکسی زمانے میکسی ندب وملت كے لئے امن كى جكرم بوتى - مولى عديدسلام كے ذمانے بين حكوات اور عيلى عدايسلا محة زماني ب صوامع اوربيع اورخاتم الابنيارصلى الشرعكية لم كه ذ ما في سحدي وهادي جاتين ورطي فلفائ راشين كحق ين قرال اكتن في إن مُكَنَّفُهُ فِي الْوَرْضِ ١١ س آيت ين الذين كى يېشىن كوى ادرائسس كا ظهود صفت ب أن لوكول كى تن كا ذكراس سے يہا آيت يال ن الفا الله الله يُن أَخْرِيحُوا مِنْ دِيمَارِهِم بِعَايُرِ حَقّ ، لينى وه توك بن كوأن كم ول سے ظلماً بغيرسى حق کے پکالدیا گیا۔ ان توگوں کے بالے میں اس آیت میں سے فرمایا گیا ہے کہ بیرا لیے لوگ ہیں کہ اگر ان كوزمين مين حكومت واقتداد ديديا جائے تو يه لوگ اپنے اقتدار كو ان كا مول ميں صرف كريجي کہ نمازیں قائم کریں اور زکوۃ اواکریں اور نیک کاموں کی طرب لوگوں کو دعوت دیں بڑے کاموں سے روكين- اوريها ويرمعادم بويكا كهيدايات بجرت مدينه كوراً بعداس وقعت نا زل موي بي جبك مسلانوں کوکسی میں میں مکومت وا قترار حاصل نہیں تھا گرحق تعالے نے اُن کے باریمیں بہلے ىى بىخبردىدى كەجب أن كواقتدا دِ حكومت ملے گاتو يەدىن كى ندكورە ا ہم فدمات انجام دىر كے اسى لئے حضرت عثمان غنى من نے فرمايا ثناء قبل بلاء ، لينى الله تعالىٰ كايدا رمثا وعلى كے دجودي أتف يبليائس محمل كرفي والول كى مدح وثناء المهد - بيمرانظر تعالى كى اس خبركاجس كا وقدع ليقينى تفااس دنيامين وتوع اس طرح بواكه جادول خلفا كراشدين ادربها برس الذنت أخيط لهمصداق صحح تنقع بيمرانشرتعالي نے أرمفين كوسب سے پہلے زمين كى مكنت و قدرت بعيني حكومت و سلطنت عطافر مائ ادر قران کی پیشین گوئ کے مطابق اُن کے اعمال وکر دار اور کارناموں نے دُنیا کو د کھلادیاکہ انھوں نے اپنے اقتدار کو اسی کام میں ہتال کیا کہ نا ذیں قائم کیں زکوہ کا نظام صنبوط كيا الي كامول كورواج ديا برے كامول كا راستربندكيا۔ اسى لئے علمار نے شرما یا کہ بیرایت اس کی دلیل ہے کہ خلفا پر داش دین سب کے سب اسی بشارت كمصماق بي اورجو نظام خلافت أن كے ذما فيس قائم بهوا وي وصح اور عين الله تعالى كادادك اوررضا اوريشكي خبرك مطابق ب روج المعان يه تواس آيت كيشان نزول كا دا تعاتى يباد ب تيكن يذطا بريكدالفافظ قران جب عام بون تووكسى فاص داقعمين خصرتين بوت أن كاحكم عام بوتا ہے۔اسى كئ ائم رتفسيري سيضاك نے مسرمایاکداس آبیت میں اُن توکوں کے لئے ہدایت بھی ہے جن کوالٹر تعالیٰ مکک وسلطنت عطا فرمادين كدوه ايضا قندادين بيركام انجام دين جوخلفاء لأشدين نيايين وقت مين انجام ديتے تقے۔ (ترطی می توشی)



عادف القرآن جسلد

ان توكوں سے پہلے توم مؤكر اورعاد وتمثود اور قوم ابراہيم اور قوم لوكط اور ابل مُرّين تعي (اينے اپنے ابنے عليهم السلام كى) يمكز بب ترجيح بي اودموى (عليه السلام) كويمي كاذب قرار ديا كيا (مكر بكذب يحيد) یں نے ان کافردن کو رچندروز عمیات دی جیسے آج کے منکروں کو مہلت دے رکھی ہے کھ میں نے ان کو (عذاب میں کیلا لیا تو (دیکھو) میراعذاب کیسا ہوا -غرص کمتنی سبتیاں ہیں جبکو ہمنے (غذاب سے) بلاک کیاجن کی بیرحالت تھی کہ وہ نافر مانی کرتی تھیں تو (اب ان کی بیرکیفیت ہے کہ وه این چهتوں بر کری بڑی ہیں (مینی و بران ہی کیونکه عادة اول جھت گراکر تی ہے بھے۔ روبواری آبره تی بین) اور (اس طرح ال بستیول مین) بهت سے بیکار کنوی (جو پہلے آباد مقے) بہت سے پختہ قلی حوزے کے محل (جوائب شکستہ ہوگئے بیسب ان سبتیوں کے ساتھ تماہ ہوئے لیں اس طرح و قت موعود براس زمانے کے لوگ بھی عذاب میں برائے جا دیں گے) تو کیا یہ (شن کر) لوگ ملک میں چلے کھر مے بہیں جس سے اُن کے دل ایسے موجا دیں کہ ان سے مجھنے لکیں باان کے کان ایسے موجادیا كران سے سننے لكيں بات بير ہے كه (ند شجھنے والوں كى كھے) آئكھيں اندھی نہيں ہوجايا كرتيں بلكه ول جو مینوں میں ہیں دہ اندھے ہوجاتے ہیں (ان موجودہ مسکرین کے بھی دل اندھے ہوگئے درنہ کچھیلی امتوں کے حالات سے سبق سکھ لیتے) اور یہ بوگ (نبوت میں شبر ڈالنے کے لئے) آیسے عذاب کا تقاضا کرتے ہیں (اور عذاب کے جلدی نہ آنے سے بیر دلیل مکراتے ہیں کہ عذاب آنیوالائی ہیں) حالا تکہ التنہ تعالی تھی ایٹا وعدہ خلاف نہ کر بیچا (مینی وعدہ کے وقت صرور غذاب واقع ہوگا) او ی کے رب کے ماس کا یک دن رجس میں عذاب واقع ہو کا بعنی قیامت کا دن اینے امتعاد یا استدادین ایمزار سال کی برابر ہے تم توگوں کی شار کے مطابق (توبیر بڑے بیو قوت میں کہ اسی مصیبت کا تقاضاکرتے ہیں) اور (جواب مذکور کاخلاصہ تیم شن توکہ) بہت می بستیاں ہی جن کویس نے مہلت دی تقی اور وہ نافر مائی کرتی تختیں محدری نے اُن کو (عذاب میں) میرالیا اور سب ومیری بی طوت کوشنا ہوگا (اُسوقت یُوری سزاملے گی) اور آپ (بیسی) کہدیئے کہ اے لوكوي تو تحقادے ليے ايك صاحت ورانے والا بول دعذاب واقع كرنے مذكر تيمين سرا والى منبي س میں نے اسکا دعوٰی کیا ہے) توجولوگ (اس ڈرکوسٹر) ایمان ہے آئے اورا چھے کام کرنے لگے ان کے لئے مغفرت ادرعزت کی روزی (لینی جنت) ہے اور جو لوگ ہماری آیتوں کے متعلق (ایکے انکارا ورابطال کی) كوسش كرتيم بين د بني كواورابل ايان كو بهرانه (يني عاجز كرني كيك ايسي لوك دوزخي (دين والح) إلى -

معارف ومسائل

ذین کی سیروسیا حت اگر عبرت وبصیرت علی میران می الکور بیدار و الحالی کورش فنگون کم فافوت اس آیت میں ماصل کرنے کے لئے ہو تو مطلوب بنی ہے کا فاکٹر بیسیرو الحالی کورش فنگون کم فاکوب اس آیت میں

سورة الحاجة ٢٢ : ٥٥ ایک ہزارسال سے بچیاس ہزارسال تک اختلاف آفاق کے اعتبارے ہوجی طبح وزیامیں مقال دیز ف حركت كهين دولا بي سي كيس حائلي كهين رحوى اوراسى وجرس خطا ستوارير ايك دات دن جوسيس فنظ کا ہوتا ہے اور عرض معین (قطب شمالی) پر امکیال کا اور ان دولؤں کے درمیان مختلف مقادیر ير مختلف بوتا چلاجاما ب اى طبع عمن بوكه اول تمس كى حركت جومعدل كيسا تفريح بطور فرق عادت د اعجازاسقدر مست بهدجائے كه ايك افق يرايك بزارسال كادن بردا درجوافق اس سے بياس حصتے مِثّام وا موآسير ي سراد برس كاموا ور درميان من ى سبت متفاوت مور والشّائم (بيك القنان) سوجب لگاغیال با ندھنے نیطان نے بلادیا اُسے خیال میں مجھر اللہ مثا دیتا ہے شیطان کاملایا ہوا مجھر یکی کر دیتا ہے اپنی الدائل مب خبر اكتاب حكمتول والا الواسط كرجو يحمد شيطان لي ملايا اس سعاي ن بن في في في المراجعة مركز و القاسية في المراج الطالمين بو کے دل یں دوگیں اور جن کے دل سخت بیں اور فالفت يس دور جايد اور اسواسط کرمعلی کرلیں وہ لوگ جن کو جھرملی ہے کہ میں محقیق ہے سے بتك فيوفرمنوابه فتُخبِت لَهُ قُلُوبُهُمُ وَلَا اللهَ لَهَا لَهُ لَهَا لَهُ لَهَا لِللهَ لَهَا لِ رب كى طرفت جمراس يريفين لا بن اورزم موجائي أسكاك ول ان كا اور الله محماك والاب يفين لا مماط مستقيم ٥٠ و لا يز سيدهى ادر منکروں کو ہمیشہ رہے گا اسمیں لانے والوں کو يهة مِنْهُ حَتَّى تَارِيبُهُمُ السَّاعَةُ بَغَتَةً أَوْ يَارِبَيْهُمْ عَنَابُ جب تك آ بيني ال برقياست بخرى مين يا آبين ال برافت اليد دن كى مِ عَقِيْمِ ﴿ اللَّهُ مَا لَكُ يَوْ مَبِينِ لِللَّهِ مِحْكُو بَيْنَهُمْ وَ فَا لَيْ إِنَّ اللَّهُ ا جیں داہ بیں فلاص کی ساج اسدن انشر کا ہے ان میں فیصلہ کرے گا سوچو یعین لاتے وعملوا الشلحت في حنت التعيم التعيم التاني والمن في التاني كفروا وكنانوا اور کیں بھلائیاں نبت کے باغوں میں ہیں اورجو منکر بوئے اورجھٹلائیں تاری بالبينا فأوليك تهم عن الشيم بن و سو اُن کے لئے ہے ذکت کا عذاب

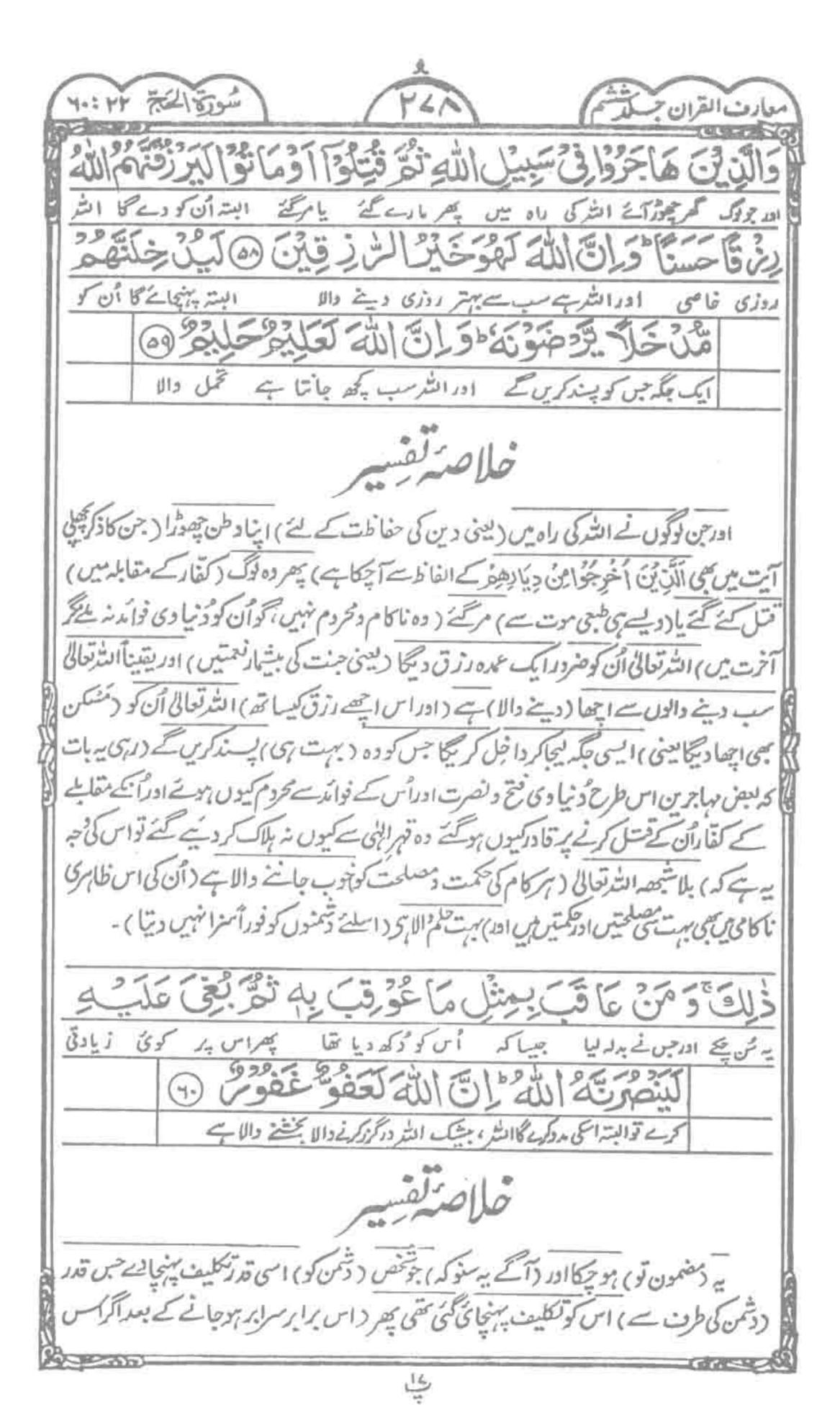
12 : FT 702 1820 PZY

معادف القرآن جسلاششم

فلاصتيفيير

اور (اے محرصلی الشرعکتیم میر لوگ جوشیطان کے اعواء سے آسے محادکہ کرتے ہیں یہ کوئ نئى بات نہيں بكه) ہم نے آپ سے قبل كوى رسول اوركوى نبى ايسانہيں بھيجا جس كويہ قصة پیش نہ آیا ہدکہ جب اس نے (اللہ تعالیٰ کے احکام میں سے) کچھ بڑھا (شبہی) شیطان نے اسحيرهفين وكفارك قلوب مين شيهم (ادراعرّاض) دالا (ادركفارابني شبهات ادر اعتراضات كويش كرك انبيار سے مجادله كياكرتے جيسا دوسرى آيات بي ارشادم وكُذٰلِكَ جَعَلْنَا يَكُلِ نَبِيٌّ عَكُ وَّا شَيْطِيْنَ الْوِ سِّ وَالْجِنِّ يُوْجِي بَصُّهُ مُ إِلَى بَعُضٍ ذُخُرُفَ الْفَوْلِ غَى وُلَا وَإِنَّ الشَّيْطِينَ لَيُوْحُونَ إِنَّ أَوُلِيًا مُعْمِدُ لِيُجَادِلُوكُمُ بِمِراللَّهِ تَعَالَى شيطان كَ ذَاكِ مِنْ شبهات کور جوامات قاطعہ و دلائل واصحہ سے) نیست دنا بود کر دیتا ہے (جیسا کہ ظاہر ہے کہ جوا مستحے کے بعداعتراض دفع ہرجاتا ہے) بھرالٹرتعالیٰ اپنی آیات (کےمضامین) کویادہ مبوط كرديتا ہے ذكووہ في نفسها بھي شحكم تقين كين اعتراضات كے جواہے اس انتحكام كا زيادہ ظرفة وكيا) ادرالترتعالي (ان اعتراضات محمتعلق) حويظم والاس (اور ان مح جواب محتعليمين) خوج محمت والا ہے (اور بیرسارا قصراس لئے بیان کیا ہے) تاکہ الشرتعالی شیطان کے دلالے مدے شبہات کوا یسے توگوں کے لئے آز مائش زکا ذریعہ) بنا دے جن کے دل میں ڈسکا) مرض ا درجن کے دل (بالکلی) سخت ہیں رکہ دہ شک سے بڑھ کر ماطل کا بفتین کئے ہوئے ہیں، سوان کی آنر ما تش ہوتی ہے کہ دیکھیں بعدجواب کے اب بھی شبہات کا تباع کرتے ہیں یاجواب كو تجه كرحت كو قبول كرتے ہيں) اور واقعي (يد) ظالم توك (يدى ايل شك يھي اور ايل يقين بالباطل بھی) بڑی مخالفت میں ہیں دکہ حق کو با وجود واضع ہونے محص عناد سے سبب قبول نہیں کرتے شیطا كو وسوسه ولا لن كا تصرف تواس لئة دياكما تقاكه آزمائش بوع اور (ان شبهات كا جوب يجرو نؤرٍ ہایت سے ابطال اس لئے ہوتا ہے) تاکہ جن لوگوں کو فہم (یجے) عطا ہوا ہے وہ (ان اجوبہ افر ہرایت سے)اس امرکازیادہ نقین کرلیں کہ یہ (جونی نے بڑھا ہے دہ)آب کے رب کی طوت سے حق ہے سوایان برزیادہ قائم ہوجاوی بھر (زیادہ یقین کی برکت سے) اس (برعل کرنے) کی طون اُل کے دل اور می جھک جا دیں اور واقعی ان ایمان والوں کو انٹر تعالیٰ ہی راہ راست د کھلانا ہ (مي كيونكران كوبدايت بنه مديد توايان والول كى كيفيت بوى) اور (ره كية) كافر لوك مود) الميشاس (براهے موسے علم) كيطرف سے شك ہى ميں رہيں گے (جوان كے دل ميں شيطان نے ڈالا تھا) یہا تک کدائن پر دفعتہ تیامت آجادے (جس کی ہول بی کافی بوگوغذاب

ي



44: LL 450 1 150 1

معادف القرآن جسالة شيم وي المنطقة الشرك المارية براية شخص

وشمن کی طرف سے) اس شخص پر زیادتی کی جادے تو اللہ تعالیٰ اس شخص کی صرور امرا دکر سکیا میشک انتراکیا مہت معاف کرنے والا بہرت مغفرت کرنے والا ہے۔

معارف ومسائل

خُرِكُ بِاَنَّ اللَّهُ يُوْرِجُ النِّيْلُ فِي النَّهَارِ وَبُوْرِجُ النَّهَارَ فِي لَيْلِ عِ الله والطّ مَدارِكِ بِيتَا بِهِ رَاتَ مَو رَنْ مِينَ اللهُ هُوَ الْحَقِّ وَاَنَّ اللهُ هُوَ الْحَقِّ وَاَنَّ وَانَ الله صَنِيا مِي مَعْمِيمٌ ابْصِيرُ ﴿ وَلِكَ بِالنَّ اللهُ هُوَ الْحَقُ وَاَنَّ وَاللهُ مُوَ الْحَقُ وَاَنَّ اللهُ هُوَ الْحَقُ وَاَنَّ اللهُ هُوَ الْحَقُ وَاَنَّ اللهُ هُو الْحَقُ اللهُ مُؤَالِحُقُ وَاَنَّ اللهُ مُو اللهُ مِن اللهِ وَبِي بِهِ اللهِ مِن اللهِ وَبِي بِهِ اللهِ مِن اللهِ مِن اللهِ مِن اللهُ مُؤَالْحُقُ الْحَلِي اللهُ اللهُ وَاللهُ اللهُ اللهُ وَاللهُ اللهُ وَاللهُ اللهُ ال

لله كطيف خبير الله مافي السَّمان السَّمان وَعَافِي الْأَرْضِ وَ معك الشرعاتا ك يهيى تدبيري فيرداد ك السي كا بي ويك ب آسان ادد زمين مين ادد الله تعني الخيين ﴿ آلَهُ مَن الله سَخْرَكُ مُ الله مَا الله سَخْرَكُمُ مَا تونے نہ و یکھا کہ اللے نے میں میں کر دیا تہادے جو الشردي ہے ہے بروا تقریقوں والا الرَّرْضِ وَالْفُلْكَ تَجُرِي فِلْلَبَحْرِيا مُرِوَ وَيُنْسِكُ السَّمَ بھے ہے زمین میں اور کشتی کوچیلی ہے دریابیں اسے کم سے ادر کھام د کھتا ہے آسمان کو نَ تَقَعَ عَلَى الْأَرْضِ الرّبِاذِيهُ إِنَّ الله بِالنَّاسِ لَوَ وَتُرْجِيمُ فَ سے کہ اور میں اور سی بر سرا اسے ملے سے بیشک النار او کوں بر زی کرنے والا مہر بان ہے بیشک انسان دراسی نے تم کو جلایا بھر مارتا ہے بھر زندہ کرے گا

یہ (موسنین کا غالب کردیا) کہ الشرتعالی (کی قدرت بڑی کامل ہے وہ) دات (کے جزان) كودن ميں اور دن (كے اجزار) كورات ميں داخل كرديتا ہے (يه كائناتي أنقلاب أيك قوم كو دوسرى يرغالب كرنيولك أنقلاب رياده عجيب س) اوراس سب كدالشر تعالے (ان سب کے اقوال داحوال کو) خوب سُننے والاا ورخوب دسکھنے والاہے (وہ کفار کے ظلم اور مُومنین کی مظلومیت كوشنتاد مكيفتا ہے اس لئے وہ سب حالات سے باخبر بھی ہے اور قوت و تدرت بھی اُس كى سب سے بڑی جی جی میں میں ہوگیا کمزوروں کو غالب کرنے کا) اور دنیز) یہ (نصرت) اس سب دیقینی ہے کہ (اسمیں ماقت کی مجال نہیں جواسیں اللہ تعالی مزاحمت کرے کیونکہ) اللہ ی استى يى كامل سے اور جن چيزول كى الشركے سوايد لوگ عيا دت كرا سے يون وه باكل بى ليمرايى -وكه ده خودا پين د جود مين محتاج بهي بين كمز در مين ده كياالتركي مزاحت كرسكتن بين) اور الشرى عالیشان سب سے بڑا ہے داس میں غور کرنے سے توحید کا حق ہونااوٹرک کا باطل ہونا ہرشخص سمحرساتا ہے اس کے ملادہ کیا تھ کوخیر نہیں کہ اللہ تعالی نے اسمان سے یافی برسایاجی سے زمین رسبز بوگئ ديه ي الترتعالى بهت مهر بان سب با توں كى خبر ديكھنے والا ہے (اسكنے بندُن کی صرور توں مرمطلع ہوکان سے مناسب مہر بانی فرماتا ہے) سب اُسی کا جو کھھ اسمانوں میں ہے اور جو کھے زمین میں ہے اور بیشک النار تعالے ہی ایسا ہے جو کسی کا محتاج مہیں ہرطرح کی تعریف مے لائن ہے (اور اے مخاطب) کیا تجھ کو خبر نہیں کہ اللہ تعالیٰ نے تم لوگوں مے کام میں لگار کھاج

PAN

السورة الحية ٢٢:٠٠

معادف القرآك جب لدشتم

زمین کی چیزدن کو اور کشتی کو (بھی) کہ وہ دریا میں اُسے کھم سے میتی ہے اور دہی آسمانوں کو زمین پر گرفے سے مقامے ہوئے ہے ہاں گر میر کہ اُسی کا گھم ہوجا و سے (تو یہ سب کچھ ہوسکتا ہوا وربندل کے گئاہ اور بُرے اعمال اگر چیا ایسا گھم ہوجانے کے مقتصنی ہیں گر بھر بھی جو ایسا گھم نہیں دیتا تو دجہ یہ ہے کہ) بالیقین ادلٹر تعالیٰ کوگوں پر بڑی شفقت اور رحمت فرانے والا ہے اور وہی ہے جی نے تم کو زندہ کر ہے گا تم کو زندگی دی پھر (وقت موعود پر) تم کو موت دیگا پھر (قیا مت بیں) تم کو زندہ کر ہے گا (ان انعامات و احسانات کا تقاضا تھا کہ لوگ تو حید اور اللہ کے شکر کو اختیا اکر تے گی واقعی انسان ہے بڑانا سے کر کہ اب بھی کفر ونٹر ک سے با زنہیں آتا۔ مراد سب نسان نہیں بشکہ دہی جو اس ناش کری میں مشلا ہوں)۔

معارف ومسأئل

سیخترکنگونگاری الاتی جن بهینی زمین کی سب چیز وں کوانسان کا سخر بنا دیا بسخر بنا نے کے فاہری اور عام صفے بیں بھی مجھے مبلتے ہیں کہ وہ اس سے کم کے تابع چلے۔ اس مصفے کے لحاظ سے بہاں تیں بھی و کتا ہو کہ ذمین کے بہاڑا اور در زر کے برند سے اور ہزار وں چیزی انسان کے کم کے تابع تو نہیں جیلی اگر کسی چیز کوکسی تخص کی خدمت میں لگا دینا جو ہر و قت یہ خدمت انجام دی کے لیے بیٹی درحقیقت اس کے لئے تسخیر ہی ہے۔ اس کے لئے تیہاں ترج تسخیر کا کام میں لگا و بینے سے کیا گیا ہے۔ اللہ تعالی اس کے لئے تسخیر ہی ہے۔ اس لئے یہاں ترج تسخیر کا کام میں لگا و بینے سے کیا گیا ہے۔ اللہ تعالی کی قدرت میں بیٹی ویک اسکا فیچ بڑو دانسا کے قدرت میں مضر مرتبی محتالات اور دوسر اسکے خلا میں نوائی ہیں ایک نسان حق میں مضر مرتبی کی دوسری طوت موڑ نے کا تھم دیتا اور دوسر ااسکے خلا میں تو انجام بجر فسا دی کیا ہوتا۔ وریا کو اپنیا گرنے کیا جوالی فائدہ تھا دہ انسان کو پہنچا دیا۔ وریا کو ایک فائدہ تھا دہ انسان کو پہنچا دیا۔

لِكُلِّ الْمَا فِي جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُوْ نَاسِكُوْ ہُ فَلَا بُنَازِعْتَكَ فِلْ لَا مُرْدَادًا مَنْسَكًا هُو نَاسِكُوْ ہُ فَلَا بُنَازِعْتَكَ فِي فَلْ لَا مُرْدَادَ مِنْ اللهِ مِنْ اللهُ مِنْ اللهِ مِنْ اللهِ مِنْ اللهُ مِنْ اللهِ مِنْ اللهُ مِنْ اللهُ مُنْ اللهُ مُنْ اللهُ مُنْ اللهُ مِنْ اللهُ مِنْ اللهُ مِنْ اللهُ مِنْ اللهِ مُنْ اللهُ مِنْ اللهِ مِنْ اللهُ مِنْ اللهِ مُنْ اللهِ مِنْ اللهِ مُنْ اللهُ اللهُ مُنْ اللهُ مُنْ اللهُ مُنْ اللهُ مُنْ اللهُ مُنْ اللهُ اللهُ مُنْ اللهُ مُنْ اللهُ مُنْ اللهُ اللهُ مُنْ اللهُ مُنْ اللهُ ا

کا

سارت القرآن جريشم المحكم المحكم المولا الله يعلم ما في الله يعلم الله الله يعلم الله الله يعلم الله يعلم الله يعلم الله يعلم الله الله يعلم الله يعلم

فلاصتهفير

معارف ومسأيل

المُثِلِّ الْمُنَةِ جَعَلْنَا مَنْسَكًا ، يَنِي ضَمون تقريباً النفين الفاظ كسائق اسى مورت كي آيت علامًا مِن كُرُ رجِكامِ عُكَرَ وَلِيْ جَدُ لَفظ مَنْسَكَ وصف ادر مُراد مين فرق ہے ۔ وہان نسك اور منسك ور منسك عند لائن كر مصف من احتام في العام على المنظم والله والسلع وہان واد وير النفي وادر ليكي منظم واسلع السكو علف كر كے نہيں بيا من احتام و بيا الله الله على الله واد وير النفي وه ہے جو فلا حدة تفسير مين ليا كيا ہے كہ بعض كفا دمناما نواست الله كي الله الله والله الله والله الله والله وال

FAPT TOTAL PAPER

وصحه والبيه في الشعب عن على بن حسن و ابن عباس الها نزلت بسبب ول الخز اعيين - رُوح المعانيّ) تو يهال منسك محمعنى طريقة ذبح كے بونظے اور حاصل جواب كايہ بوگاكہ اللہ تعالیٰ نے ہرا يك أمت اوّ مشربعیت کے لئے ذبیجہ کے احکام الگ الگ رکھے ہیں۔ بنی کریم صلے الشرعکی استربعیت ایک ا مشرلعیت ہے اسکے احکام کا معاد صندسی بہلی مشریعیت کے احکام سے کرنا بھی جائز نہیں جہ جائیکہ تم أس كامعاد صنه خالص این رائے اور خیال باطل سے رہے ہدلینی مرد ارجا اور كا حلال نہ ہونا تواس مت دمشرىدىت كىسائد مخصوص نهبى سب يجيلى شرىديتول مين عيى حرام ريا ہے تو تمادا يہ قول تو ياكل بى بياد اس بے بنیاد خیال کی بنا پرصاحب شریعیت بی سے مجادلہ اور معارضہ کرنا حاقت ہی حاقت ہے دہکنا بین فی دوح المعانی مسنی الایتر) - اورجهورمفسرین نے اس جگر نفظ منسک عام احکام ستر بعیت مے مصفے میں لیا ہے کیونکا صل کفت میں مُنسک کے معنی ایک معین جگہ کے ہی جوکسی خاص علی خیریا مثر لے لئے مقرد ہوا وراسی لئے احکام مجے کو مناسک لیج کہاجاتا ہے کہانیں خاص خاص مقامات خاص کا واعال کے لئے مقردیں (ابن کتابر) اور قاموس میں نفظ نسک کے معنی عبادت کے لکھے ہیں قراق میں أدينا متناسك اسى مصفے مے لئے آيا ہے مناسك سے مراد عبادت كے احكام مشرعية ہي حضرت ابن عياما سے بیدد دسری تفسیر بھی روایت کی گئے ہے۔ ابن جرین ابن کشیر، قرطبی، رُوح المعانی وغیرہ میں اسی منی عام کی تفسیر کو اختیاد کیا گیا ہے اور آیت کا سیاق وسباق بھی اسی کا قرینہ ہے کہ مذک سے مراد شرایت ا وراسے احکام عام ہیں اور آیت کا مفہوم یہ ہے کہ مشرکین اور نحالفین اسلام چوشریعیت محدیثے احکا يں جدال اور تفكر الے كرتے من اور بنيا ديہ و تى ہے كرا كے آبائ ندہ بي ده احكام مذكتے تو وه سن ليك بيهاي سي متربعيت وكتاب نئ شريعيت وكما كل معار مجاد لارنا باطل بي كيونكه الشرتعالي في مرآمت كو سے دقت بیں ایک خاص تشریعیت اور کتا ہے ی ہے جسکاا تباع اُس اُم ن پراُسوقت تک درست تھا جب تک کوئ دوسری اُمت اور دوسری مشرعیت التارتعالیٰ کیطرٹ سے مذا آگئی -اور جدمے مسری مشراحیت آگئی تواتباع اس جدید شریعت کارنا ہے آگرائسکاکوئ حکم بہلی شریعیوں کے نحالف ہے تو بہلے حکم کومنوخ اوداسكوناسخ بجهاجاً ميكاس لنة اس صاحب منزيعين سيكسى كومجا دلها درمنا زعت كى اجازت نهين يحكى . آيت كأخرى الفاظ فلاتينًا نِعُنَّك فِي الْأَهُمِ كامِي عالى بِهَ مُرجوده زمانه مِن جبكه فاتم الانبيار صلى الترعكيم ایک میتنان شریعیت میکرا گئے تو کسی کواسکاحق نہیں کہ اُن کی شریعیت سے احکام میں جدال ادر نزاع پر اکر ہے اس سے بیمجی معلوم بود کیا کہ بہای تفسیرا دراس دوسری تفسیری در حقیقت کوی اختلاف بہین ہوسکتاری كرآيت كانزول كسى فاص نزاع ورباره ذبائح كسبب إدابو كرآيت عام الفاظ تمام احكام مشرعيه يرشتل بي ادرا عنبار عموم لفظ كا بوتا بي حصوص مورد كا نهيل بونا - توحاصل دويون تفسيرون كايمي الاجائے گاکہ جب اللہ تعالیٰ نے ہرائمت کو الگ الگ سٹریست دی ہے بن میں احکام ہز 'نیرختلف بھی

سورة الحيج ٢٢:٣١ معادث القرآن جم ہوتے ہیں تو کسی بچھلی شریعت برعل کرنے والے کو نئی شریعیت سے معارضہ اور نزاع کاکوئ حق نہیں بكراً سيراس في شريعيت كالتباع واجها الله التي التي آخراتيت من فراياكيا، أدُع إلى سَ بِنكَ إِنَّكَ و كفاني هُنَّى مَّسْتَقِيمِ، بيني آب ان توكوں كى حير سيكو ئيوں اور نزاع وجدال سے متا نز منر اول بلكرم إبر ا بين منصبي فريضيه دعوت الى الحق مين مشغول ربي كيو ككداب حق ا در صراط مستقيم بربي آيك مخالف دات سے سے ہوئے ہیں۔ ایک شبصه کاجواب اس سے بیر بات بھی واضع ہو گئی کہ شرابیت محدید کے بزول کے بعد کسی بہای شریعیت ہے ا يان ركھنے دالے مثلاً يہودى نصراني وغيرہ كويہ كہنے كاحق نہيں كہ خود قران نے ہمانے لئے اس آيت ميں يہ كبركناتش دى بى كرېر شرىعيت الشرىكى يوف سى باسلىكاكر ز مائداسلام يى يى بىم شراييت موسوي ماعيسويدرعل كرتے رہي توسلمانوں كوسم سے اختلاف ندكرناچا سے كيو مكه آيت بين سرائمت كومشرييت خاصدنين كاذكر كرنے كے بعد يورى دنيا كے لوكوں كو يہ كم كھى ديدياكيا ہے كمشراعيث محديد كے قائم بوجانے سے بعد دہ اس شریعیت کی خیالفت نہ کریں میں نہیں فرمایا کہ مسلمان اُن کی سابقہ شریعیت کے سی کھے کے خلات مذبوليس اوراس آيت مح بعدكى آيات سے بيضمون اور زياده واضح بهوجاما سيحبي شريعيت اسلام مے خلاف مجادلہ کرنے والوں کو تنبیری کئی ہے کہ اللہ تعالی محقاری ان حرکتوں کو خوب جا تاہے وبى وسى التى سنرا ديكا - قران جَادَلُولَةَ فَقُلِ اللهُ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمُلُونَ . ن وَنَ مِنْ دُونِ اللهِ عَالَمْ يُعْتِرِ لَيْ يَعْدِلْ يَهِ سُلَطْنًا وَعَالَيْنَ اس بير كوجس جيز كي سندنيل أنادى أسف اورجس كي اورجب سنائے اُن کو ہمادی ان درجو برصے بین ایک یاس ماری آیتیں تو کہم میں تم کو بتلاؤں ایک بیزاس سے برتر ے ہے اسکادعرہ کردیا ہے اللہ نے سنکروں کو اوروہ بہت بڑی ہے پھرجانے کی جگہ مُ حَمِّرَ مِنْ أَنْ فَأَلْسَمِّعُو الْمَا وَاللَّهُ إِلَّهُ اللَّهُ إِنَّ اللَّهُ إِنَّ مَنْ عُوْلَ ایک مشل کی ہے سواس پرکان رکھو

معارف القرائن جمل المنظم المرائع المنظم الم

فلامترتفسير

اوریہ (مشرک) توک الشرتعالی کے سواالیسی چیزوں کی عبادت کرتے ہیں جن رکےجوازعباد) يران تراف الله المن المن المن كتاب من المان المان كالمان كالمان كالوي والمان كالمان كالموي والماس اور (قیامت یں) جب (ان کوشرک پرسزا ہونے گئے گی تو) ان ظالموں کا کوئ مرد کا رہنہو گا رہ تولاً کہ ایکے فعل کے استنسان پر کوئ حجت بیش کرسکتے نہ عملاً کہ اُن کو عداب سے بچاہے) اور (ان توکوں کو اسی گراہی اوراہل حق سے عنادر کھنے میں یہا تھے۔ فکو ہے کہ) جب ان کوکوں کے سامنے ہاری آتیں (متعلق توحید وغیرہ کے) جوکہ (ایسے مصنامین میں) خوب واضح ہیں داہل حق کی زبان سے) پڑھ کر مُنائی جاتی ہیں توتم کافسروں کے چہروں میں دبوجہ ناگواری باطنی کے) بڑے آثار دیکھتے ہو (جیسے پھر سے پرئل پڑجانا - ناک پڑھ جانا - تیبور بدل جانا اور ان آثار سے ایسا معلوم ہوتا ہو کہ قریب ہے کہ اس توکوں برداب، حلہ كربتينيں (كے) جوہماري اسين ان كے سامنے برتھ اسے ہيں معنى حله كاشبهر بهشير بهوتا سے اور كاه كاه اس حكه كاتفق بهي بدا ہے ہيں بيكا دون استمرار كے اعتبالات فرمایا) آپ (ان شركين سے) كھنے كر رتم كوج يه آيات قرآئنيشنكر ناگوادى وي تو) كيا يس تم كواس (قران) سے دیمی زیادہ ناگواد چیز تبلا دوں وہ دوزخ ہے دکر) اسکاالٹر تعالے سے کافروں سے وعدہ کیا ہے اور وہ بڑا تھکا ناہے دلینی قران سے ناگوا دی کا نیتے بناگوار دوزخ ہے اس ناگوا دی کا توغيظ سے غصنب سے انتقام سے مجھ تدارک بھی کر لیتے ہو مگراس ناگواری کاکیاعلاج کر و گے جو دونے سے ہوگی ۔ آگے ایک بدیبی دلیل سے سرک کا ابطال ہے کہ) اے لوگو ایک عجیب بات بیان کی جاتی ہے اس کو کان لگاکرشنو (وہ یہ ہے کہ) اس میں کوئ شیصر بنیں کہ جن کی تم لوگ فراکوچیورکر عبادت كرتے موده ايك (ا دفي) كھى كوتو بيداكر ہى بنيں سكتے كوسب كے سے بھى دكيوں نه) جمع موجاوی اور دبیداکرناتو برای بات ہے وہ تواہیے عاجز ہیں کہ اگران سے تھی کچھ (ایکے پڑھاد میں سے) چھین مے جائے تواس کورتو) اس سے چھڑا (ہی) نہیں سکتے الیسا عابد بھی لیراورالیسا

بصيران يعلم ما بين أيل محموفا خلفهم والى الله ترجع

الْ مُورْكِ يَا يَبْهَا الَّذِينَ الْمَنْوالِ كَعُوا وَالشَّجُلُ وَا وَاعْبِلُ وَالْكِوْ

وَافْعَلُوا الْحَيْرَ لَعَلَّكُمْ تَقُلِحُونَ ﴿ وَجَالِمِلُ وَالْمَالِيَ حَقَّ

مِلَة آبِيكُمْ إِبْرُهِيمَ وَهُوَسَتُمْ كُوالْمُسْلِمِينَ هُ مِنْ قَبُلُ وَفِي

وین تخارے باب ابراہیم کا آسی نے نام رکھا تخارا سلمان پہلے سے اور کس

مارت القراق بر الرّسول شهيكا عليكي و تكور النه كالم على الرّسول الرّسول شهيكا عليكي و تكور النه كالم على الرّس على الرّس على الرّس على الرّس على الرّس على الله على الله المرّم بو بناء والم و بناء والم المرّس و الرّس و الرّس و المرّس و ا

فلاصة تفسير

الشرتعالي ذكوا فتنيار ہے رسالت كے لئے جس كو جاستا ہے) منتخب كرليتا ہے فرشتوں ميں كرجن فرشتوں توجا ہے) احکام (اللبینبیوں کے یاس) بہنجائے والے (مقرر فرمادیتا ہے) اور (اسی طسرح آدمیوں میں سے بھی حب کو چاہے عائمہ ناس کے لئے احکام پنجائے دالے مقر رکر دیتا ہے بعنی رکتا کا مدارا صطفار خدا و ندی پر ہے اسمیں کھے ملکیت بعنی فرشتہ ہونے کی خصوصیت نہیں بککہ جس طسر ح ملیت کے ساتھ رسالت جمع ہو تھتی ہے جس کومشرکین بھی مانتے ہیں جنانجے فرشتوں کے رشول جونے کی دہ خود تجویز کرتے تھے اسی طرح بشرت کیسا تھ بھی دہ جمع ہو تھی ہے رہا یہ کدا صطفاکسی ایک خاص کیسا تھ کیوں واقع برواتوظا برى سبب تواسكا خصوصيات احوال ان رُسُل كي بن اور بري نقيني بات كرالترتعالي وب سننے والاخوب دیکھنے والا ہے (بینی) وہ اُن (سب فرشنوں اورا کہ میوں) کی آئرہ اور گزشتہ مالتوں كو (خوب) جانتاہے (تومالت موجوده كو بدرجداً ولى جائے گاغرض سب احوال مموعة مبصره اس كومعلوم بي ان مي تعبين كاحال تقتضي اس اصطفاكا بهوكيا) اور دحقيقي سبب اسكايه بي كهي تمام كا مون كامدار التترى يرب (اليني وه ماكت تقل بالذات وفاعل فتارب اسكاا داده مرج بالذات ب اس ادادہ کے لئے کسی مرج کی صرورت نہیں ، بس سبب حقیقی ادا دہ ضا وندی ہے اور اسکا سبب یوجھٹا انو وهوصى تولدتعالى لابستل عَمَّا يَفْعَلُ ، بعنى الشرقوالي سراسيح كسفيل كاسبيك يافت كريكاكسى كوحق نهيل ـ دأكي فتم سورت براول فروع ومشراكع كابيان بادرملة ابراييم براستقامت كاحكم دياكيا بحاور الحى ترغيب كے لئے بعض صابين ارشاد فرمائين) اے ايمان والو رتم اُصول كے قبول كرنے كے بعدفروع كالمجى يابندى ركفو خصوصا تمازكى ، يستم ، دكوع كياكروا ورسجركياكروا ور (عو مآدير فروع ميى كالاكر) ايت رب كى عيادت كياكرد اورنيك كام كياكرو-أميد (يعنى وعده) بي كمم فلاح ياؤكاددان كاكام من توب كوشش كاكر دجب اكوشش كرنيكاحي بهاست فم كوردوسرى أُ متون سے) متنازفر مایا (جیساکہ آیت جَعَلْنُگُوْ أُمَّةٌ قُسَطًا وغیرہ میں مرکورہے) اورتم پر دین

100 ×

شورة الحج ١٦٠٠ سادف القران ج يك يتم ي الما الما الما الما والوعي الله ما الما كالم كالم كوا مركيا كياب كدا حكام كي يُون بالدور برواور ميرى ملت ابرايسي بهي بتم ايسة باب ابرايهم في ملت يرقائم رمواس في بتها رالقب سلمان ركف مها اوراس (قراق) میں جی میں ایک انتقالے لئے رسول النیر گواہ ہوں اور (اس شہادت رسول کے قبل) تم (ایک بڑے مقدمہ میں جن میں ایک فراق حضرات انبیار ہو نگے اور فرنق تافی ان کی مخالف تو میں ہونگی ان مخالف) توكون محمقابلمين كواه برد اور رسول كى شهادت سے تحقارى شهادت كى تصديق مواور حضرات انبیارعلیم اسلام محتی میں فیصلہ و) سو (جمارے احکام کی یُوری بجاآوری کردائیں) م توگ (خصوصیت کیسائم) نمازی یابندی رکھواور زکوۃ دیتے رمزواور (بقیم احکام میں بھی) الشری کو مضبوط كيراك رجود فيني عزم وبهت كيسا تقدين كاحكام بجالاؤ انجيرا بشركى رضا وعدم رضااورا بيثنس صلت ومضرت كى طوف النفات مت كرو) وه بها ما كارساز به سوكيسا إيها كارسا ز ب اور سااچھامدگارہے۔ معَارِف ومسَائِل سُورُه جَحَ كَاسِجِرُهُ ثَلَادِ سَ لِيَ النَّهِ اللَّذِينَ أَصَنُّو الدِّكَعُوا وَاعْجُلُ وَا وَاعْبُلُ وَالنَّكُو استُورُهُ عَيْمِي ایک آیت تو پہلے گزر دی ہے جس پر سجد ہ تلاوت کرناباتفاق واجب ہے۔ اس آیت پرجو بہاں فذكور بي يجدة كلادت كے وجوب ميں ائمركا اختلاف ہے - امام اظم ابوطنيفه، امام مالك مسفيان تورى وهمجم التركيز ديك اس آيت برسجدة تلاوت واجب بنين كيو مكاسين مجده كا ذكر دكوع وغيره كبيسا تفاياج ص سے نماز کا سجدہ مُراد ہونا ظاہر ہے جیسے قاشیجی ٹ قاؤلکوی منع التاکیعین میں سیا اتفاق ہو كه بحدهٔ نماز مُراد ہے اس كی تلاوت كرنے سے بحدهٔ تلادت واجب نہيں برد تااسی طرح آيتِ مذكوره ير تھی سيرة تلادت واجب بنبي- امام شافعي امام احكرد غيره كے نزديك اس آيت بر تھي مجرة ملاوت داجب ہے اُن کی دلیل ایک پیٹ ہے جہیں یہ ارشاد ہے کہ سُورہ نج کو د دسری سورتوں پر یہ فضیات عاصِل ہے کداسمیں دو مجدہ تلاوت ہیں۔ امام عظم ابوعنیفہ رو کے نز دیک اس روایت کے ثبوت میں كلام ہے تيفسيل اس كى كتب فقہ وحديث ميں دھيى جاسكتى ہے۔ وَجَاهِنُ وَإِنْ اللَّهِ حَتَّى مِنْهَادِة م الفط جها داور مجا برمسى مقصدكي تصيل مين اين يورى طا خرج كرنے اور اسكے لئے مشقت بر داشت كرنے كے معنے ين آتا ہے - كفاركىيا تھ قتال ين مجى سلسكان ابينے قول فعل ادر ہرطرع كى امكانى طاقت خريح كرتے بي اسلنے اسكو بھى جهاد كہا جاتا ہے اور حقّ جھادے مرا داسين يولاافلاص النتريسية مونا يجسيكسى دنيوى نام وننوديا مال فنيمت كى طبع كاشائبرندم و-حضرت ابن عباس روز نے فرمایا کہ حق بھاد یہ ہے کہ جہادی اپنی گوری طاقت فریح کرے اور ا من الامت كرنے والے كى الامت يركان نہ لكائے۔ اور لیبن حضرات مفسرین نے اس جگہ جہاد کے منی

عام عبادات اوداح کام الہیہ کی تعمیل میں اپنی یُوری طاقت یُورے اخلاص کیسا تھ خرچ کرنے صحاك ادر مقال في فرما ياكه مراد آيت كى يبهدك اعلوالله حق علا اعبد وي حق عبا کرد انترکے لئے جبیباکہ اسکاحق ہے اورعیادت کر والترکی جبیباکہ اُسکاحق ہے۔ اورحضرت ع بارك في فرماياكم بهان جهاد مصرادا ينف ادراسكي بيجانوا مشات كے مقابله ميں جهاد) جہاد ہے۔ امام بغوی دغیرہ نے اس قول کی تائید میں ایک حدیث بھی حصرت جا ہر بن عبداللہ ۔ تعلى ہے كہ ايك مرتبص ايركوام كى ايك جماعت جوجها دكفار كے لئے كئى ہوى كتى دائيس آئى تو الحضر مجاهداة العبد لهواله رواله البيه عي وقال هذا اسناد فيه ضعف العين تم توك نوب والي آئے جھوتے جہاد سے بڑے جہاد کیطرٹ نعنی اینے نفس کی خواہشات بیجا کے مقابلہ کا جہا دا س جادی ہے۔اس دوایت کو بہتی نے دوایت کیا ہے گرکہاہے کہ اسکا اساد میں صنعف ہے۔ ف الذه ا تضير طبري من اس دوسرى تفسير كواختياد كرك اس آيت سے يوسئلد كوكالا ب كر صحابة ك بب مقابلة كفادسي جهاد كررب تضفوا بشات نضائي ك مقابله كاجها د تواسوقت بھي جاري تھ مر حدیث میں اسکو والیبی کے بعد ذکر کیا ہے اسمیں اشارہ بہہے کہ ا ہوار نفس کے مقابلہ کا جہا رجيه ميدان كارزارمين بمي جاري تفامكرعادة يه جهادينخ كامل كي هجت پرموتون اسك وهجم هُوَاجْتَبُكُون حضرت واثله ابن اسقع رصى الشرعند كى روايت ى منتخب أمت ہے كر دشول الله صلے الله عكية لم نے فر ما ياكه حق تعالى نے تمام بني اسماعيل میں کنانہ کا نتخاب فرمایا، پھر کتا نہ میں سے قریش کا بھر قریش میں سے بنی ہاشم کا بھر بنی ہا میں سے میرا انتخاب فرمایا - (دواہ مسلم - مظھری)

وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُوْ فِي النِّينِي مِنْ سَحَرَجِ المِينِي الشَّرْتَعَالَىٰ نَوْيِنَ كَمِعَاملَهُ مِينَ مَ بِرُويُ عَلَىٰ الْبَيْرِي عَلَىٰ الشَّرْتَعَالَىٰ فَرَعَا عِلَم اللَّهِ مِينَ السِياكُويُ الْمَيْنِ جَعِ وَتَو بِهِ سِي معاف شَهُ بُوسِكَ اور عَذَابِ اَخْرَت سِي خُلاصى كَى كُوئُ صورت شَرْئِكَ يَحْلُلُ مَيْنِ الْمِينَ عَلَىٰ اللَّهِ مِعْلَىٰ اللَّهِ مِعْلَىٰ اللَّهِ مِينَ عَلَىٰ اللَّهُ مِينَ عَلَىٰ اللَّهِ مِينَ مِينَ عَلَىٰ اللَّهُ مِينَ مِينَ مِينَ عَلَىٰ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِينَ عَلَىٰ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِينَ عَلَىٰ اللَّهُ اللَّهُ مِينَ عَلَىٰ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ اللَّهُ مِنْ مُنْ اللَّهُ الْمُعْلِيلُ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ اللْمُنْ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ

يسورة الحج ٢٢: بارمث القرآل ج تو وہ دنیا کے ہرکام میں ہوتی ہے تعلیم حاصل کرنے بھرملازمت، تجارت وصنعت میں سیکسی مختیں بر داشت کرتا بڑتی میں مگراس کی وجہ سے بیر نہیں کہاجا سکتا کہ بیر کام بڑے بخت وشدید ہیں۔ ماحول کے غلطا در مخالف ہونے یا ملک وشہر میں اُسکا رواج نہ ہونے کے سبب جوکسی عمل میں دسٹواری پیش آئے وہ عل کی سنگی اور تشدد نہیں کہلائے گی - کرنے والے کواس لئے بھاری معلیم ہوتی ہے کہ ماحول میں کوئ اُسکا ساتھ دینے والانہیں جب ملک میں روٹی کھانے پیکا نے کی عادت نه دو و بان رونی حاصل کرناکسقدر دستوار دو حاتا ہے وہ سب جانتے ہیں مگراسے یا وجود بینبین کہا جاسکتا کہ روٹی یکانا بڑاسخت کام ہے۔ ادر حضرت قاصی شنار الشرره نے تفسیرطهری میں فرمایاکددین میں سی ند ہونے کا بیمطلب سجی بوسكتاب كدالله تعالى في اس أمت كوساري أمتون مين سيدايين المية منتخب فرماليا بهاسكي برکت سے اس اُ مّت سے توگوں کو دین کی راہ میں بڑی سے بڑی مشقت اُٹھانا بھی آسان بلکہ لذیز موجاتا ہے۔ محنت سے داحت طنے لکتی ہے خصوصاً جب دل میں حلاوت ایمان بیدا ہوجائے توسادے بھادی کام بھی ملکے تھلکے محسوس ہونے لگتے ہیں۔ حدیث صحیح میں حضرت اس روز سے ر وايت كررسول الشرصال الشرعكيم في فرمايا جعلت فرج عين فى المتلاة لينى تمازمين بمرى آ كلمون كى شفت كردى كى يح- (دوايما سى والنساق والحاكم وصحيح) مِلَةَ أَنِيكُو إِنْ فِيهِ مِنْ الله الله الله الله الله الله عليالسلام كى - يخطا في اصلا مُومنین قریش کوہے جو اہراہیم علیالسلام کی نسل میں ہیں بھرسب لوگ قریش کے تابع ہوکرار فضیلت میں شامل ہوجاتے ہیں جیسے مدیث میں ہے الناس تبع لقریش فی طان االشائ المهم تبع لمسلمهم وكافرهم تبع لكافرهم دواله البخاري ومسلم رمظهى) فينى سب توك اس دين میں قریش کے تابع بیں، مسلمان مسلمان قریش کے تابع اور کافرنوگ کافر قریش کے تابع ہیں - اور بعض حضرات نے فرمایا آبیت کھ إنوه أي كا خطاب سب أمت كمسلما فول كوب اورابراميم على السلام كاان سب سم لئة باب مونااس اعتباد سے بے كه حضرت نبى كريم صلے الله عكية لم أمت كے دوحانی باب ہیں جيساكہ از داج مطرات ادبات المونين ہیں ا درنبي كري صلالله عكيم كاحضرت ابرابيم علياسلام كى اولادين بوناظام رومعروف ب- -هُوَسَمْ اللَّهُ المُسْلِمِينَ مِنْ فَكِلُّ وَفِي هَا مَا ، يَعَى حضرت الرابيم بي في آمت ممدياد تمام ابلِ ايمان كانام قران سيهيا مُسْرِم جوري سادر فود قران يري عيه عيها كذارا بيم كي دُعاقران كريم ين يه منقول هم رَبِّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِنْ كُرِّيِّنِنَا أُمَّةً مُّسْلِمَةً لَكَ - اورقران مين جو ابل ایمان کانام شرام رکھا گیا ہے اس کے رکھنے دالے اگرجید براہ داست ابراہیم علیالسلام نہیں

الثورة المؤمنون ١١:١١ المورة المؤمنون ١١:١١

معارف القرآن جس لدشتم

سورة المؤمنون

يُسِوَةُ المِهُ وَمِنُونَ مَكِنَتِ رَّوْهُ فَا تَنَّ الْكَانَ الْعَلَيْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُنْ الْمُن سوره مومون مندس أثرى اور أس كى ايك سو المعاره آيتين بين اور چھ دَكُونَا

السرائة التركم التركم

وتعدلارم

فضائل دخصوصیا سُوره مَوْمنون مسندا حدید حضرت فاروق عظم عرب خطاب کی روایت ہے۔
امنی آواذ موری کی رسول الشرصلے الشرعکی میں حضرت فاروق عظم عرب خال کی روایت ہے۔
الیسی آواذ موتی علی جیے شہد کی تھیوں کی آواز موتی ہے ۔ ایک روز آپکے قریب ایسی ہی آواز سُنی گئ آو ہم
الیسی آواذ موتی علی جیے شہد کی تھیوں کی آواز موتی ہے ۔ ایک روز آپکے قریب ایسی ہی آواز سُنی گئ آو ہم
علیم ہرگئے کہ فار ہ آئی ہوئی وحی شن لیس - جب وحی کی فاص کیفیت سے فراغت ہوئی آواز مُنی آواز کھنے
صلے الشرعکی میں قبلہ اُرخ ہوکر مبھی گئے اور یہ کو عاکم نے گئے آلا ہوگئے زُدُ فاؤلا تنفقہ نُنا کو اگر مُنا وَلا جُھُنا
کم اللہ علی اللہ می میں اللہ آئی اللہ آئی اللہ اللہ میں اللہ آئی اللہ آئی رواز ہیں دوسروں پر ترزج دے
ہم پر دومروں کو ترجیح نہ دے اور ہم سے راضی ہوا در ہمیں ہی ا بنی رصا سے راضی کر دے اسکے
بعد فر مایا کہ مجھ پراسوقت دس آئیل سے نازل ہوئی ہیں کہ جو صن آن پر پورا پورا عل کرے تو وہ (سیدھا)
جم نیت میں جا میگا۔ سیمر سے دس آئیل سے نازل ہوئی ہیں پڑھ کرسنا کے دائن کو این کھیں
اورنسائی نے کتاب التفسیر میں نے برین با بنوس سے نقل کیا ہے کہ آنھوں نے حضرت عائشہ
اورنسائی نے کتاب التفسیر میں نے برین با بنوس سے نقل کیا ہے کہ آنھوں نے حضرت عائشہ

اورنسائی نے کتاب التفسیر میں نزید بن با بنوس سے نقل کیا ہے کہ آنھوں نے حضرت عائشہ صدیقیہ رضی الشرعنہا سے سوال کیا کہ رسول الشرصلے الشرعکتی کا تحاق کیسااور کیا تھا ، اُنھوں نے فرطا ایپ کا فکل مینی طبعی عادت وہ تھی جو قرائ میں ہے اس کے بعد یہ دن آیتیں تلاوت کر کے فرما یا کہ بس بہی فکل وعادت تھی رسول الشرصلے الشرعکتی تھی کی دابن کتابی

فلاصتيفيير

معارف ومسائل

فلا کیا چیزے اور کہاں اور کیے طبی ہے اُن اُفلہ اُلْمُوْمِوْنی ، نفظ فَلاَ ح قران وسنت میں بکرت استعال ہوا ہے افاق آفامت بیں پانچ وقت ہرسان کو فلاح کی طون وعوت دی جا تھ کے صفے یہ بی کہ ہرمراد ماصل ہوا ور ہر تکلیف دُور ہو (قاموس) یہ نفظ جتنا مختصر ہے اتنا ہی حباح ایسا ہے کہ کوئ انسان اس سے زیادہ کسی چیز کی خواہش کرہی نہیں سکتا ۔ اور یہ ظاہر ہے کہ کمل فلاح کہ ایک مراد میں ایسی نہ رہے جو بُوری نہ ہوا ور ایک بی تکلیف ایسی نہ رہے جو بُوری نہ ہوا ور ایک بی تکلیف ایسی نہ رہے جو دُور و ہو، یہ دُنیا میں کہ ایک مراد میں ایسی نہ رہے جو بُوری نہ ہوا ہے دُنیا کا سب سے بڑا باد شاہ ہفت آفلیم ہویا سب سے بڑا رہو تھ اور ہی جو نواہش مرد ہو ایس سے بڑا باد شاہ ہفت آفلیم ہویا سب سے بڑا رہو تھ اور ہو خواہش مرد تھا در ہو خواہش موسی ہیں اور ہو بھی ہوں اور ہو خواہش میں بیرا ہو بلا تا خیر پوری ہو جائے۔ اگر اور بھی کچھ نہیں تو ہر نعمت کے لئے زوال اور فنا کا کھٹکا اور ہر تکلیف کے واقع ہوجا نیکا خطرہ ، اس سے کون فالی ہوسکتا ہے ؟

ملاصہ بیہ ہے کہ کامل وکھل فلاح توصرف جنت ہی میں بل سی ہے ونیا اُسکی جگہ ہی نہیں ۔ البتہ اکثری حالات کے اعتباد سے فلاح بعنی بامراد ہونااور تکلیھوں سے بخات یا نایہ دنیا ہی بھی الله تعالی این بندوں کو عطا فراتے ہیں۔ آیات ندکورہ میں الله تعالی نے فلاح بانیکا وعدہ ال مُؤسنین سے کیا ہے جنیں وہ سات صفات موجود ہوں جن کا ذکران آیات کے اندرآیا ہے۔ یہ فلاح عام اور شامل جسمیں آخرت کی کا مل خلاح بھی داخل ہوا ور دونیا میں جنقدر فلاح حاصل ہونا مکن ہے وہ بھی۔ مہاں ایک سول یہ بیدا ہوسکتا ہے کہ صفات مذکور کے حامل مؤمنین کو آخرت کی کا مل فلاح ملن ا

یہاں ایک سُوال یہ چیوا ہوسختا ہے کہ صفات مذاور کے حابل سوسین اوا حریث ی کا مل سی مانت توسجھ میں آتا ہے سکین دنیا میں فلاح تو بطا ہر کفا دفجار کا حصہ بنی ہوئ ہے اور ہر زرانے کے ابنیا، اوراُن کے بعد صلحاراً مت عموماً تکلیفوں میں مبتلا دہے ہیں پڑھ جو اب اسکا ظاہر ہے کہ ڈیٹا میں کمل فلاح کا تو وعدہ بنیں کہ کوئی تکلیف بیش ہی نہ آوے بلکہ کچھ نہ کچھ تکلیف تو یہاں پر صالح وسقی کو بھی اور ہر کافر فاجر کو بھی بیش آنا ناگڑ برہے اور میں حال حصولِ مُراد کا ہے کہ کچھ نہ کچھ یہ مقصد کھی ہرانسان کو خواہ وہ صالحے وسقی ہوخواہ کا فرو بد کا رہو حاصل ہوتا ہی ہے۔ پھران دو اوں میں فلاح یا نے والاکس کو کہاجائے تو اسکا اعتبار عواقب اور انجام برہے۔

دُنیا کا تجربه اور مشاہرہ شاہد ہے کہ جواہلِ صلاح ان سات اوصاف کے حامل اور اُن منظمت اور اُن پر قائم ہیں گو دنیا میں وقتی تکلیف اُن کو بھی بیش آ جائے سگر انجام کا راُن کی تکلیف جسلہ دُور ہوتی ہے اور مُراد شال ہوجاتی ہے ساری دُنیا اُن کی عزت کرنے پر مجبور ہوتی ہے اور دُنیا بیں نیک نام اُنھیں کا باتی رہتا ہے۔ جننا دُنیا کے حالات کا غور وانصاف سے مطالعہ کیا جائیگا ہر دُور ہر

ا نا نے ہرخطہ میں اسکی شہاد تیں ملتی جلی جائیں گی۔ مومن کامل کے وہ سات ا وصاوت جن پر | سب سے پہلا وصف تو مومن ہوناہے مگر وہ ایک

مؤمن کامل کے وہ سات اوصاف جن پر اسب سے پہلا وصف ہو تومن ہونا ہے مؤردہ ایک ببیاد^ی آیاتِ مُدکورہ میں فلاح دُنیا واخرت کا دعد ہر آیاتِ مُدکورہ میں فلاح دُنیا واخرت کا دعد ہر

جويبال بيّان كن كن تحكة بين بين -

اول نماز مین محضوع ، خشوع کے گفوی مصف سکون کے ہیں اصطلاح سرعین خشوع یہ ہے کہ قلب میں بھی سکون ہو یہ نی غیراد شرکے خیال کو تلب میں بالقصد حاضر مذکرے اور اعضاء بدن ہی بھی سکون ہوکہ عبث اور فضول حرکتیں مذکرے (بیان القان) خصوصاً وہ حرکتیں جن سے رسول ہم صفالتہ مکتی کم نے نما زمیں منع فر مایا ہے اور فقہا رنے آن کو محروم اور نماز کے عنوان سے جمع کردیا کہ تفسیم فلم کی میں خشوع کی ہی تعرفیت حضرت عمرو بن دینا رہے نقل کی ہے اور دوسرے بزرگوں سے جوخشوع کی تعرفیت میں مختلف چیزیں نقل کی ہے اور دوسرے بزرگوں سے جوخشوع کی تعرفیت میں مختلف چیزین نقل کی ہی دو دراصل اسی کون قلب و جوارح کی تفصیلات ہیں۔ مثلاً حضرت مجا ہو ہے فر مایا کہ نظرا در اواز کو بیست رکھنے کا نام خشوع ہے۔ حضرت علی رم نے فر مایا کہ وا بی مائیں التفات بین گوشہ چیم سے در کیھنے سے بجیا خشوع ہے حضرت عطاء نے فر مایا کہ بدن کے کسی حصتہ سے کھیل مذکر نا حضوع ہے۔ حدیث ہیں حضرت عطاء نے فر مایا کہ بدن کے کسی حصتہ سے کھیل مذکر نا حضوع ہے۔ حدیث ہیں حضرت عطاء نے فر مایا کہ بدن کے کسی حصتہ سے کھیل مذکر نا حضوع ہے۔ حدیث ہیں حضرت عطاء نے فر مایا کہ بدن کے کسی حصتہ سے کھیل مذکر نا حضوع ہے۔ حدیث ہیں حضرت عطاء نے فر مایا کہ بدن کے کسی حصتہ سے کھیل مذکر نا حضوع ہے۔ حدیث ہیں حضرت

JA

معادت القرآن جسكد

اوداسپر دوشبر کیا جاما ہے کہ یہ آیت کی ہے محد میں زکوہ فرض نہ ہوئی تقی ہجرت مدینہ کے بعد فرض ہوئی اسكاجواب ابن كثيروغيره مفترين كيطرف سيرب كدركاة كى فرضيت كترېي ميں بو كي تقى سورة مزل جوبالاتفاق كى ب اسمير ميى أفيتم والصّافيَّة كيساته انتواالرَّكُونَة كا ذكر موجود ب مكرسركارى طوريراً ك وصول كرف كاعام أتنظام اورنصابات وغيره كى تفضيلات مدمينه طيته جانے كے بعد جارى ہوئيں۔ جن توگوں نے ذکورہ کو مدنی احکام میں شارکیا ہے انکا یہی مشار ہے۔ اورجن حصرات نے فرضیت زكوة كومرميندمنوره مينحف كيدكا حكم قرار دياب أنفول نياس حكه زكوة كالمضمون عالم نفوى معنى مي اینے نفس کو ماک کرنا قرار دیا ہے خلاصتیف سیرس بھی ہی لیا گیا ہے اس معنے کا قرینہ اس آیت يں يركبي ہے كہ عام طور يرقران كريم ميں جهان ذكوة فرض كا ذكراً يا ہے تواس كو إِبتاً عالب وا يَوْنُونَ الرَّحَوْقَ اور أَسُواالرَّحَوْقَ كَعنوان سيبان كياكيا، يهان عنوان بدكرللزَّكوْة فَاعِلُونَ فرمانا اسكا قربینہ ہے كديميال زكادة كے دوا صطلاحي معنے مراد تنہيں اسكے علاوہ فاعلون كاتے تكلف تعلق فعل عيمة ما سيا ورزكوة اصطلاحي فعل نبي ملكه ايك حصه مال سي اس حصه مال كيك فاعلون كهنا بغيرتا ديل كے بنبين بومكما - اگرايت بين زكوة كے معنى اصطلاحی ذكوة كے لئے جاوي تو اسكافرض بونا الدفومن كي لية لازم بونا كفلا بهوا معامله بها ود اكر مراد زكوة ستزكيفس معنی این نفس کور ذائل سے پاک کرنا تو وہ مجی فرض ہی ہے کیونکہ سرک - ریا - مجبر حسد بغض حرص - مخل جن سنفس كوياك كرنا تزكيه كهلانا ب يرسب جيزي جرام ادر كناه كبيره بي نفس كو ان سے پاک کرنا فرض ہے۔

چوہ اوصت مشرمگاہوں کی حفاظت حرام سے دَالَّذِیْنَ هُاہُولُؤُہُ ہِوْ لِحَالَادہ سے اَلْدَیْنَ هُاہُولُولُہُ ہِولُول کے علادہ سب اَلْدَا ہِول کے علادہ سب کے علادہ سب ایک مشرمگاہوں کی حفاظت کرتے ہیں ان دونوں کے ساتھ شرعی صنابطہ کے مطابق شہو شانس پوری کرنے علادہ اور شرعی صنابطہ کے مطابق شہو شانس پوری کرنے علادہ اور سے علادہ اور سے ساتھ شرعی صنابطہ کے مطابق شہو شانس پوری کرنے علادہ اور سے سے میں ناجا نر طریقے پرشہوت وانی میں جتلا نہیں ہوتے اس آیت کے حتم پرادشا فرمایا فرایا فرا تھ کو فرودت کو صرودت کے درجہ سے سکین دینے والوں پرکوی ملامت نہیں اشارہ ہے کہ اس ضرودت کو صرودت کے درجہ میں رکھنا ہے مقصر زندگی بنانا نہیں۔ اسکا درجہ آتنا ہی ہے کہ والیسا کرے وہ قابل ملامت نہیں میں دیا۔

والتراعلم -

فَكُنِ الْبُنَعَىٰ وَدَّاءَ ذَلِكَ فَأُولِيْكَ هُو الْعَلَىٰ وَنَ اللّهِ مَنْ الْعَلَىٰ وَنَ اللّهِ مِنَا وَمَ الوَيْرِي الْبُنِي كَيِساتُه شَرَى قاعدے معطابق قضارشہوت كے علاوہ اوركوي بھى صورت شہوت بوراكرنے كى حلال نہيں اسميں زنامجى داخل ہے اورجوعورت سُرْعاً اُس يرحرام ہے اُس سے بكاح

بمن حکم زنا ہے ادراین بردی بالونڈی سے حض و نفاس کیجالت میں یاغیرفطری طور برجاع کرنا بھی ہیں خل بج يعنى سى مرد يا رهے سے ياكسى جا بوز سے شہوت بورى كرنا بھى - اور جمهور كنزد كيك سُرتم فنا وباليد تعينى این با تقدست فی شاریج کرلینا بھی آئیں وافل ہے۔ دا زنقندیدینیان القنان- قطبی جو هیط دنیادہ يانجوان وصف المانت كاحق اداكر الحاكل في هُور لا مَانْتِهِمُ وعَفْيَهُمْ ذَاعُونَ تفظامانت مے لغوی معنے ہرائس چیزکو مثال ہیں جس کی ذمتہ داری کسٹی خص نے اُٹھائ ہو ادرائسپراعتما دو بھرو کیا گیا ہو۔ اس کی قسمیں جے تکہ مبینیار ہیں اسی لئے با وجود مصدر مونے کے اسکو بصیغہ جمع لا یا گیا کے تاكه امانت كى سيقيمول كوشامل موجائے خواه وه حقوق الشرسي تعلق مول ياحقوق العباد سے حقوق الله مصفحاق امانات نمام شرعی فرائض واجبات کا اداکر ناا در تمام محرقا و محرومات سے پر ہیر کرنا ہے اور حقوق العباد سے تعلق امانات میں مالی امانت کا داخل ہونا تومعروف وشہورہے کرکسی خص نے کسی کے یاس اینا کوئ مال امانت کے طور پر لکھ دیا بیرا کی امانت ہے اس کی حفاظت اسے واپس کرنے تک اس کی ذمہ داری ہے۔اسکے علادہ سی نے کوئ داری بات سی سے کہی وہ بھی انگی امانت ہے بغیرا ذن شرعی کے کسی کاراز ظاہر کرناا مانت میں خیانہ ہے مزدور، ملازم كوجوكا م شيردكيا كيا أسك لئے جننا وقت خرج كرنا باہم طے ہوگيا اسيں اسكام كوتورا كرفي كاحق اداكرناا ورمز دورى ملازمت كے لئے جننا وقت مقرر ہے أسكواسى كام ميں لكانا مجى امانت سے كام كى جورى يا وقت كى جورى خيانت ہے اس سے علوم ہواكم امانت كى خفاظت اوراسكاحق اداكرنا براجام نفظ م سيب ندكوره تفضيلات أسمين داخل بين -چھٹا وصف عہدیوراکر نا ہے۔ عہدایک تو وہ معاہدہ ہے جو دوطوت سے سی معاملے۔ سيسكين لازم قرارد ياجائ أسكا يوراكرنا فرض ادراسك خلات كرنا غدرا در دهوكا بيجد حام ہے۔ دوسرا دہ جس کو وعدہ کہتے ہیں تعنی مکیطرفہ صورت سے کوئ شخص سے می چیز کے دینے کایاکسی کام کے کرنے کا دعدہ کر ہے۔اسکایوراکرنا بھی شرعاً لازم وواجب موجانا ہے۔ مدیث میں ہے العداع دین معنی وعدہ ایک فیم کا قرض ہے۔ جیسے قرض کی ادائی واجہے ايسيى وعده كاليوراكرنا واجب ب بلاعذ دخرعى استح خلاث كرناكناه سے فرق دونوں فسموں میں یہ ہے کہ بہاق مے پورا کرنے برد وسراآدمی اُس کو بذرابعہ عدالت بھی مجبور کرسکتا ہو کیطرفہ وعده كو يوراكر في من من بنديعه عدالت مجبور نهين كياجاسكتا - ديا نظر أسكايوراكرنا بهي واجب ادر بلاعدر شرعی خلات کرناگناه ہے۔ سَاتُوان وصِعَ مَا رَيْمَ فَطَت ہے وَالَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَوْر تِهِمْ يَحَافِظُونَ ، نماز کی محافظت سے مرادائس کی بابندی کرنا اور ہرائک نما زکواسکے وقت مستخب میں ا واکرنا ہے

(كذا فشره ابن سودرة - رقع) يهال صلوات كانفط جمع اسك لاياكياب كدمرا داس سيائخ وقت كى نماذين بين جن كولين اين وقت مستخب بين بابندى سے اداكرنا مقصود ب ادر شروع بين جهامقصور بالذكر خشوع مقا د بال نفظ مفرد لايا كياكه مطلقاً جنس نماذ خواه فرص بويا داجب ، منت بويا نفل سب كى دوح خشوع به غوركيا جائے توان سات اوصات مذكوره بين تمام حقوق الله اور حقوق الله اور حقوق الله اور اس بر ادر أن سے متعلقہ احكام آجاتے بين جو خص ان او صادت كے ساتھ متقصف بوجائے ادر أس بر جماد بوجائے ادر أس بر جماد بوجائے ادر أس بر جماد بوجائے ادر أس كا سے ده مون كال فلاح دنيا والح خرت كاستون كے ساتھ متقصف بوجائے ادر أس بر

یہ بات قابلِ نظرہے کہ ان سات ادساف کوشر وع مجی نمازے کیا گیا ادر ختم ہی نمازہ کیا گیا ادر ختم ہی نماز کرکیا گیا اس میں اشارہ ہے کہ اگر نماذ کو نماذ کی طرح یا بندی ادر آدابِ نمازکیسا تقدا داکیا جائے تو باتی اُدصاف اسمیں خود مجود پیدا ہوتے جلے جائی گے دالتہ علم

اوُلِیْكَ هُمُّواْلُواْدِرِ فُوْنَ هِ الَّذِینَ یُرِحُونَ الْفِیْ دُوْسَ الوسابِ مُرکورہ کے حامل ہوگوں کو اس آیت میں جنت الفرددس کا وارث فرمایا ہے لفظ وارث میں اشارہ اسطرت ہے کہ جبطرے مورث کا مال اسکے وارث کو بہنچیا قطعی اور لازی ہے اسی طرح ان اوصات والوں کا جنت میں داخلہ تینی ہے اور فَنَ اَفْلَحَ کے بعدا وساف مُنفِین بُورے ذَرکر نے کے بعد اس جمعے میں اسس طرف بھی اشارہ ہے کہ فلاح کا مل اورا صلی فلاح کی جگہ جنت ہی ہے۔

وَلَقَلُ حَلَقُنَا الْرِنْمَانَ مِنَ سُلَكِ مِنْ طِينِ ﴿ فَكُونَكُ الْكُولُونَ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللللّهُ الللللّهُ الللللّهُ الللللّهُ اللّهُ الللللّهُ الللللّهُ اللّهُ ا

فَاسْكَتَهُ فِي الْأَرْضِ فَيْ وَإِنَّا عَلَىٰ ذَهَا إِلَىٰ الْكُرُضِ فَي فَالْحِرَانَا عَلَىٰ ذَهَا إِلَىٰ الْمُؤْنَ فَ فَ ادرہم اس کو لے جائیں تو ایجا سکتے ہیں كُوبِهِ جَنَّيْنِ مِنْ تَحِيلِ وَ آعْنَا بِ لَكُو فِيهَا فَوَالِدُ كَتِيرَةٌ وَا اور المور کے عنبانے واسط امنی میوے اس بہت اور النی میں ے واسط اس سے باغ مجور لُون ﴿ وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُورِ سَيْنَاءُ نَنْنُكُ عَالِيُّاهُ اور وہ درخت جو نکلتا ہے سینا پہاڑے کے اگتا ہے وَصِيْحِ لِلْأَرْكِلِينَ ﴿ وَإِنَّ لَكُوْ فِي الْرَنْعَامُ لَعِيْرَةً وَنُسْقِيدًا اور رونی ڈوی کو ایک اے والوں کے واسط اور عمبارے لئے جو یا یوں میں دھیان کرنے کی بات ہے پلاتے بن جم کم تِمَا فِي بُطُورِهَا وَلَكُورِ فِيهُمَا مَنَا فِعُ كَيْنِيرَةٌ قَوْمِنْهَا تَأْكُونَ ﴿ ان کے بیٹ کی چیزے اور بہارے لئے اکن میں بہت فائدے ہیں اور بعضوں کو کھاتے ہو وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكُ تُتَحْمَلُونَ شَ اوران بار ادر کشتیوں بر لدے بھے رتے ہو

(ادل بان ہے ایجاد انسان کا) اور ہم نے انسان کوئی کے خلاصہ (لینی غذا) سے بنایا ربینی اوّل مٹی ہوتی ہے کھراس سے بڈرایور نباتات کے غذا حاصل ہوتی ہے) بھرہم نے اس کو نطفہ سے بنایا جو کہ (ایک مترت معتینہ تک) ایک محفوظ منفام (بعنی رحم) میں ریا (اور وہ غذاسے حاکل ہوا تھا) مجرہم نے اس نطفہ کوخون کا لوتھ ابنایا بھرہم نے اس خون کے لوتھ کے کو اگوشت کی) بوٹی بنا دیا بھر بہنے اس بوٹی (کے بعض اجزار) کو ہٹریاں بنا دیا بھرہم نے ان ہٹریوں برگوشت جدهادیا دجی سے وہ بڑیاں ڈھک گئیں محصر (ان سب القلایات کے بعد) ہم نے راسیں ردح ڈوال کر) اُس کوایک دوسری دولری مخلوق بنا دیا (جوحالات سابقہ سے بہایت، ی متمائز ومتبائن ہے کیو مکہ اس سے پہلے سب انقلابات ایک جماد ہے جان ہیں ہورہے تھے اور اب به ایک ذی حیات زنده انسان بن کیا) سوکسی شان ہے الله کی جوتمام صنّاعوں سے بڑھکر ہو رکیونکه دوسرے صنّاع تو اللہ کی بیرا کی ہوئی چیزوں میں جوڑ توڑ کر کے ہی بنا سکتے ہیں زندگی بيداكرنا بدنعاص الشري كأكام سے اور لطفر بر خركوره انقلابات كى تفصيل اسى ترمتيب كيساتھ فلاين وغیرہ کتب طبید میں مھی مذکورہے آگے انسان کے آخری انجام فنا کا بیان ہے) پیمرتم بعد اس د تمام تصریحبیب کے ضرور ہی مرنے والے مور آگے بان ہے اعادہ کا لینی کھرتم قیامت

مے روز دوبارہ زندہ کئے جاؤگے (اورس طرح ہم نے تم کو ابتدارٌ وجود عطافر ما یا اسی طرح تماری بقاً كاسامان بھى كياكە) بېنے بھا دے اوپرسات آسمان رجن بيں ملائكہ سے آمدو رفت كيلئے راہيں ہيں ₎ بنائے (کہ اس سے بھاری مجی بعض کھیٹ متعلق ہیں) اور ہم مخلوق (کی مسلحتوں) سے بے خبر مذہبے۔ ر عبر مخلوق كومصالح دحكم كى دعايت كركے بنايا) اور بم نے (انسان كى بقار اورنشو ونما كے ليے) آشمان سے (مناسب) مقدار کے ساتھ یانی برسایا بھر پہنے اسکو (مدت تک) زمین میں تھہرا یا د حِنَا نِحَهِ کِھ مانی توزمین کے ادیر رہتا ہے اور کھھا ندراً ترجانا ہے جو و قتّا فو قتّانکلتارہتا ہے) اور ہم (جس طرح اس محیرسانے برقا در ہیں اسی طرح) اس دیانی) کے معددم کرفینے بر (بھی) تا در ہیں (خواہ ہواکی طرف تحیل کر کے خواہ اتنی دُور زمین کی گہرائ میں اتنا دکر کہ آلات کے درایہ سے نہ کال سكو كريمنے باقى ركھا) بھر سمنے اس (ياتى) كے ذريعہ سے باغ بيراكئے تعجوروں كے اور الكوروں كے تخصارے داسطے اُن (کھجوروں انگوروں) میں بکٹرت میوسے جی ایں (جبکہ ان کو تا زہ تا زہ کھیا یا جادے تومیوہ تجھاجاتاہے) ادر ان میں سے رجو بچارخشک کرکے رکھ لیاجاتاہے اسکو بطور غذ تے) کھاتے بھی مواور (اسی یانی سے) ایک (زیتون کا) درخت بھی (ہم نے بیداکیا) جو کہ طور میں ر بھڑت) بیدا ہوتا ہے جو آگتا ہے تیل لئے ہوئے اور کھانے والوں کے لئے سالن لئے ہوئے ر تعین اُس محصل سے دولؤں فوائدحا دسل ہوتے ہیں خوا ہ روش کرنے کے اور ماکش کرنے کے کام میں لاُوُخُواه اُسمیں روٹی ڈیوکر کھاؤ یہ سامان مذکور یا بی اور نباتات سے تھا) اور (آگے حیوانات کے ذربیرانسان محمنافع اور آسانیول کا بیان ہے کہ عظا دے کئے مواشی بیں ربھی عور کرنے کا موقع ہے کہ ہم تم کواُن کے تجوت میں کی چیز العینی دودھ) بینے کو دیتے ہیں اور بھیارے لیے انہیں ا در تھی بہت سے فائد سے ہیں رکہ ان سے بال اورا دن کام آتی ہے) ادر (نیز) انہیں سے بعض کو تھاتے میں ہواور اُن رسی جو مادر داری کے قابل ہیں اُن) یراور شتی برکدے کدے تھرتے (بھی) ہو۔

معارف ومسائل

یکھیلی آیات میں انسان کی فلاح گذنیا و آخرت کاطراقیہ اللہ تعالی کی عبادت اور اُسکے احکام کی تعمیل میں اپنے فلا مرو باطن کو بیاک رکھنے اور تمام انسانوں کے حقوق اواکرنے سے بیان کیا گیا تف ا آیاتِ مذکور میں اسلامی شانه کی قدرتِ کا ملہ اور بنی بزع انسان کی تحکیق میں اُسکے منطام رضاص کا ذکر ہے جی سے واضح ہوجائے کہ انسان جبکوعقل وستعور ہو وہ اس کے سواکوئ دوسرا راستہ اختیاد کر ہی بنیں ہے تا ہے۔

وَكَفَنْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ سُلَاكَةٍ مِنْ طِينٍ، سُلالهم بعن ظلاصه الدطين، سُكِل مِنْ،

سُورَة المُوسِون ٣٢:٢٣ جس کے معنے یہ بیں کہ زمین کی مٹی کے خاص اجزا ریکال کرائس سے انسان کو بیداکیا گیا۔ انسان کی لیت کی ابتدار حضرت آدم علیاسلام سے اور اُن کی تخلیق اس می کے خلاصہ سے ہوئ اس لئے ابتدائی تخلیق کو منى كيطرت منسدب كيا كيا السح بعداياب انسان كانطفرد وسرے انسان كى تخليق كاسبب بنا- أكلى أتيت مين اسى كابئيان مُعْرَجَعَلْنْ وُلْطَفَةً السفرطايات مطلب يرب كما بتدائ تخليق ملى سيروى پھرآگےسلسلیجلیق اسی مٹی مےجز ر لطبیت بعین نطفہ سے جاری کر دی گئی جمہور فسسرین نے آئیت ندكوره كى تفسيريهي كلهى ہے اور بيمي كہاجاسكتا ہے كەشلاكتىر من طین سےمراد بھی نطفہ انسانی ہوكہو بك وہ نیذارسے پریا ہوتا ہے اور نیذاء انسانی مٹی سے نبتی ہے۔ والشرعلم تخلیق انسانی کے سات مدادج | آیاتِ نرکورہ میں انسان کی تخلیق کی سات وَ وروَکر کئے گئے ہیں۔ ب سے پہلے سلالیم من طین، دوسرے درجری نطفر، تیسر ہے میں علقہ، چوستے میں مضفریا نجی یں عظام تعنی بڑیاں ، مجھٹے دور میں ہڑیوں ریر گوشت حرشانا - ساتواں دور تحمیل تخلیق کا ہے لینی يُدح يُقومكنا -ايك لطيفه عجبيبه ازحضرت ابن عباس التنسير وطبي سي اس جگه حصرت عبدانشرين عباس رخ ے اس آیت سے استدلال کرمے آیا عجب لطیفہ شب قدر کی تعیین میں نقل کیا ہے وہ یہ ہے کہ حضرت فاروق عظم رم في ايك مرتبه اكابر صحابه ك مجمع سے سوال كياكه شب قدر دمضان كى كوننى مّاریخ میں ہے وسب نے جواب میں صرف اتناکہاکہ اللہ اللہ اعلم کوئی تعیین میان نہیں کی حضرت ابن عباس روز ان سب میں جھیو تے تھے اُن سے خطاب فرمایا کہ آپ کیا کہتے ہیں تو ابن عباس رہ کے فر ما یاکد امیرالمؤمنین ادنتر تعالی نے آسمان سات پیدا کئے، زمینیں سات پیداکیں، انسان کی خلیق سات درجات میں فرمائ - انسان کی غذار سات چیزیں بنائیں اسلئے میری تمجیمیں توبداً ما م كرشب قدرستا سبوي شب بهوكى - فاردق انظم من في يعجب استدلال مسن كم اکابرصحابہ سے فرما باکہ آپ سے وہ بات نہ ہوئی جو اس لاکے نے کی جس کے سرکے بال بھی ا بھی کمل نہیں ہوئے۔ یہ حدیث طویل ابن ابی شیبہ کے شندمیں ہے۔ حضرت ابن عیاس نے مخلیق انسانی کے سات درجات سے مراد وہی لیا ہے جواس آئیت میں ہے اور انسان کی غذار کی سات چيزىي سور مُ عبس كى آيت بين بين فَأَنْبَتْنَا فِهُا حَبَّا قَعِيْبًا قَعَمْبًا قَرْيْبُونَا قَعْلًا قَ حَكَ إِنَّ عُلْبًا وَفَا كِهَةً وَآبًا ، اس آيت بين آهُ جيزي ندكور بين بيلي سات انسان كي فذا ادرآخری ات یہ جالوروں کی عذاہے - (قطبی) بيرتخليق انسا في برجوسات دور كزرتي بي قرآن كريم كى بلاغت ديجيف كدان سب كدامك بى انداز سے بيان نہيں فر مايا بلكركہيں آيك دورسے دوسرے دورتك انقلاب كو نقط مشق

سورة المؤمينون ٢٢: ٣٣

سے تبیرکیا ہے جو تراخی بعنی کچھ دیرسے ہونے پر دلالت کرتا ہے کہیں اس انقلاب کا ذکر حرف فارسے
کیا ہے جو بلا نا خیر ہونے پر دلالت کرتا ہے اسیں اشا دہ اس ترتیب کی طون ہے جو ایک انقلاب
سے دوسرے انقلاب کے درمیان فطرۃ ہوتی ہے کہ بیض انقلابات انسانی عقل کے لحاظ ہے ہے
مشکل اور بہت دیرطلب ہوتے ہیں۔ بعض اسے دیرطلب نہیں ہوتے چنا بخر قران کریم فرابدائی
مین دُدرکو نفظ نفتہ کیسا تھ میان کیا ہے اوّل سلالہ طبین پھراس کو نطفہ کی صورتیں تبدیل کرنا۔اسکو
نفظ نفتہ سے فرمایا فی تقریح کہ نفافہ کہ سے نفذاکا پیدا ہونا پھر غذاکا برد و بدن ہونا پھراسیں
سے جز رخاص کا نطفہ کی صورت ہیں تبدیل ہونا انسانی تیاس کی دوسے بڑا وقت جا ہتا ہے۔
اسی طرح اسے بعد تیسرا درجہ نطفہ کا گوشت کے کمڑے کی شکل میں تبدیل ہونا بیمی ایک فیل فقت
مضغہ سے ہڑیاں اور ہڑیوں پر گوشت چڑھانا ان سب کا تھوڑی تھوڑی ہوتہ ہیں ہوجانا مستبعد نیں
معلوم ہوتا آتے ان تینوں کو جوت فارسے بیان فریایا ہے ۔ پھرا تری کو درجو نفخ رفح اور زندگی ہیدا
معلوم ہوتا آتے ان تینوں کو جوت فارسے بیان فریایا ہے ۔ پھرا تری کو درجو نفخ رفح اور زندگی ہیدا
معلوم ہوتا آتے ان تینوں کو جوت فارسے بیان فریایا ہے ۔ پھرا تری کو درجو نفخ رفح اور زندگی ہیدا
معلوم ہوتا آتے ان تینوں کو جوت فارسے بیان کو بلیا ہے ۔ پھرا تری کو درجو نفخ رفح اور زندگی ہیدا
معلوم ہوتا آتے اس کو بھی نفظ نشم سے تعبیر فریا کے کو ان کی کو درجو نفخ رفح اور دریا ت پیدا کرنا قیا
معلوم ہوتا تھی نفظ نشم سے تعبیر فریا کے کو کری درج جاد میں دُوح اور دریا ت پیدا کرنا قیا

فلاصہ بیر ہے کہ ایک دُور سے دوسرے دُور کیطرف اُلقلاب جن صور توں میں اِس اِئی اِعقل د قیاس کے مطابق دیم طلب اور مرت کا کام تھا دہاں نفظ شخم سے اس کی طرف اسٹارہ کر دیا گیا اور جہاں عام انسانی قیاس کی دُوسے نریا دہ مدت در کا رہیں تھی وہاں حرف فا رسے تعبیرکرے اس کی طرف اشادہ کر دیا گیا۔ اسلے اس پر اُس جدیث سے شبھہ نہیں ہوسکتا جس میں یہ بنیان فرمایا ہے کہ ہردُور سے دومرے دُور تک منقلب ہنیں چالیس جالیس دن صرف ہوتے ہیں بین فرمایا ہے کہ ہردُور سے دومرے دُور تک منقلب ہنیں چالیس جالیس دن صرف ہوتے ہیں میں بیان فرمایا کی قدرت کا ملہ کا کام ہے جوانسانی قیاس کے تا بع نہیں۔

جس کو اطبار اور فلاسفه رقیح کہنتے ہیں ۔ اُس کی تخلیق بھی تمام اعضار انسانی کی تحلیق کے بعد ہوتی آ اسلة اسكونفظ ثقري تعبيرفرما ياس - اور روح حقيقى جسكا تعلق عالم ارواح سے بي و بي سے لاكر اس دُورِ جيواني كے ساتھ اسكاكوئ وابطرحق تعالىٰ اپنى قدرت سے بىيدافر ما ديتے ہيں جي حقيقت کا پہچاناانسان کے بس کانہیں اِس رفیع حقیقی کی تخلیق توتمام انسایوں کی تخلیق سے بہت ہیلے ہو المفيل دول كوحق تعالى في ازل مين جمع كرم أكست وكتيكوفر ما يا اورسب في بني كي نفظ والتنطاخ کی دیومیت کا قرار کیا - ہاں اسکا تعلق جبم انسانی کے ساتھ تخلیق اعضار انسانی کے بعد ہوتا ہے۔ اس جگه نفج روح سے اگر میمراد لیجائے کہ روح جیوانی کیساتھ دوح حقیقی کا تعلق اسوقت قائم فر مایا گیا تو یہ بھی مکن ہے۔ اور درحقیقت حیاتِ انسان اسی ڈوج حقیقی سے حلق ہے جب اس کا تعلق روحِ جدانی کے ساتھ ہوجایا ہے تو انسان زیرہ کہلاتا ہے جب منقطع ہوجانا بی تو انسان مُردہ کہلاتا ہے

وه روح حیوانی سی ایناعل جیوردی ہے۔

فَتَا رُكَ اللَّهُ آخْسَنُ الْخَالِقِينَ ، خلق وتخليق كيصى معني معني كسى جيز كوا أسرنو نغيرسى ما دّه سابقه كے پيداكرنا ہے جوحق تعالی جل شانه كی مخصوص صفت ہے اس معنے مے اعتبار سے خالق فرخ الترتعالي بي ميكوي دوسراتخص فرشة مويا انسان كسى ادني جيز كاخانق نهين بوسكتا ليكري يمي یہ تفظِ خلق و تخلیق صنعت کے معنی میں جی استعمال کیا جاتا ہے اور صنعت کی حقیقت اس سے زائد ہنیں کہ اللہ حل نتاتۂ نے جومواد اور عناصراس جہان میں اپنی قدرت کا ملہ سے پیدا فرماد نے ہیں انکو جوڑ توڑ کرایک دوسرے کے ساتھ مرکب کرے ایک نئی چیز بنا دی جائے بیہ کام ہرانسان کرسکتا ہج اوراسی معنے سمے لحاظ ہے سی انسان کو تھی ہی خاص چیز کا خالق کہدیا جاتا ہے۔ خود قرآن کریم نے فرمايا تَعْلُقُونَ إِفْكًا اور حصرت على على السلام كم بالسه من فرمايا إِنْ أَخُلُقُ لَكُمْ مِنْ الطَّيْنِ كَفَيْتَةِ الطَّيْرِ النَّمَام مواقع بين نفظ خلق مجازى طور برصنعت كم معفي بولاكيا ہے-اسى طرح بيال نفظ خيالمقين بصيغه جمع اسى لئة لاياكيا بهدكه عام انسان جماين صنعت كرى كے اعتباد سے اینے كوكسى چیز كا خالق سمجھتے ہیں اگران كو مجازاً خالق كہا بھى جائے تواللہ تغالے ان سب خالقوں معین صنعت گروں میں سہے بہتر صنعت کرنے والے ہیں۔ والتعظم

ثُمَّ إِنَّا اللَّهُ مَعْنَ لَى لِلْكَ كَمِينَ وْنَ عَلَيْ مَيْنَ مَنْ مَنْ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّا اللَّهُ اللّ ذكر تفاءاب د دائيوں ميں أسح معادليني انجام كار كا ذكرہے - آبت مذكورة مين فرماياكہ بيرتم سب اس دنیامیں آنے اور رہنے کے بعد وت سے دوجار ہونے والے ہوجس سے کوئ سنتی بنی ہوسکتا۔ پھرفرمایاکہ تُحَوَّاتِکُونِوم الْقِلْمَة تَبْعَثُونَ، بعنی مرنے کے بعد محرقیامت کے روزتم زنده كرك أنهائ جاؤك تاكه تها دساء عال كاحساب كيراصلي تهكا فيجنت يا دوزخ تك

بہنچادیاجائے۔ یہ انسان کاانجام ہوا ، آگے آغاز دانجام بینی مبراً ومعاد کے درمیانی حالات اوران میں انسان پرحق تعالیٰ کے احسانات و انعامات کی تھوڑری تیفصیل ہے جس کو اگلی آیت میں آسمان کی تخلیق کے ذکر سے شروع فرمایا ہے۔

وَكَفَانُ خَكَفُنَا فَوْفَكُو مِسَنِعُ طَوَّا إِنِيَ ، طَوَلُونَ ، طُرِلِقِة كَى جَمِع ہے اس كوبمنى طبقہ بھى ا لميا جاسكتا ہے جس كے معضيہ ہوں گے كہ تہ برتہ سات آسمان بھا دے اُدپر بنائے گئے اور طرابقہ ہے ۔ كے معنے مشہور داستہ كے ہيں ۔ يہ معنے بھى ہوسكتے ہيں كہ يہ سب آسمان فرشتوں كى گرز دگا ہيں ہيں جو احكام كيكر زمين پرآتے جاتے ہيں ۔

کُر مَا کُٹُ کَا عُیْنِ الْمُحَنِّی غُفِلِینَ آمین تبلایا کہم نے انسان کو صرف بیداکر کے نہیں جھوڑد یا اور اُس سے نما فل نہیں ہو سکتے بلکہ اُس کے نشود نما را ور رہا مُش و آسامَش کے ساما ن تھی نہتا گئے۔ جس کی ابتدارات مانوں کی تخلیق سے ہوئ بھرات مان سے بارش برساکر انسان کے لئے غذا اور اسکی اسٹان کا سامان بھالوں مجھولوں سے پیداکیا جس کا ذکر ہورکی آیت میں اسطرح فرمایا۔

وَ٢ نُوَلْنَا مِنَ السَّمَّاءُ مَا يَرُ بِفَنَ لِهِ فَاسْجَتُهُ فِي الْوَرْضِ عِلْ وَلِمَّا عَلْ وَهَا يِدِيهِ لَقْلِ رُوْنَ انسانوں کوآب دسّانی کا اس آیت میں آسمان سے یائی برسانے کے ذکرے ساتھ آیک قید بقت می قدرتی عجید فی غرب نظام کی بڑھاکراس طون اٹنارہ کر دیا کہ انسان ایسا ضعیف الخلفت ہے محرجو چیزی اس تمے لئے مدارِ زندگی ہیں اگر دہ مقدارِ مقدّر سے زائد ہوجا دیں تو وہی اس مجیلئے دیال جان اور عذاب بن جاتی بین بیا نی صبیری چیز جس کے بغیر کوئی انسان وحیوان زندہ نہیں رہ سکتا اگر ضرور سے زیادہ برس جائے تو طوفان آجا تا ہے ادر انسان اور اسکے سامان کے لئے دبال و عذاب بخاتا ہے اس لئے اسمان سے یانی برسانا بھی ایک خاص ہما نے سے ہوتا ہے جوانسان کی صرورت یوری کردے ادرطوفان كى صورت اختيار مذكرے بجران فاص مقامات كے بن يرانترتعالى كى حكمت كالقاصابى محسى وجه مصطوفان منظار ميكاميب موجائے - اس كے بعد براغور طلب مسئلہ بير تفاكه ياني اگر ر دزانه کی ضرورت کاروزانه برسا کرے تو بھی انسان صیبت بیں آجائے روز کی بارش اس کے کا دوبار ا در مزاج کے خلاف ہے ۔ اور اگر سال بھریا جھ مہینے یا تین ہینے کی صرورت کایاتی ایک د فعد برسایاجائے اور لوگوں کو مم موکد این این کوشریانی کا چھ مہینے کے لئے جمع کر کے رکھوا وراستعال كرت دموتو برانسان كيا اكثرانسان مجي لتينا ياني كے جمع ركھنے كا نظام كيسے كري اور كسي طهرح برشي حوصنون اور گراهوں ميں بھرلينے كا أنتظام بھى كريس توجندر وزكے بعديديا في سرح الميكا جسكا يينا بلكها ستعمال كرنا بهى ومتوادم وجائ كالسلئ قدرت حق جل شانه في اسكانظام يه بناياكه بإني جس وقت برمتا ہے اسوقت وقتی طور پرجتنے درخت اور زمینیں سیرا ہی کے قابل ہیں وہ سیرا بہ ہوجاتے ہی

بھرزمین کے مختلف تالا بوں ،حوصوں اور قدرتی گڑہ ھوں میں یہ یانی جمع رہتا ہے ہیں کوانسان اورجالؤر صرودت کے دقت استعمال کرتے ہیں مگرظا ہرہی یہ یا نی چندر وزمین ختم ہوجا آہے۔ د انمی طور پر روز انہ انسان كوتازه يافى كس طسرح بيني جوبر خطف كے باشندوں كوبل سكے واسكانظام قدرت في يہبتاياكم پانی کابہت بڑا حصہ برف می صورت میں ایک بحر منجد بناکر بہاڈوں کے سروں یرائسی یاک صاف فضاريس دكهد ياجهان فه كردوغباركى رسائ مذكسى آدى اورجا اذركى اورس مين فرسرت كامكان بح ندا سے نایاک یا خراب مونے کی کوئ صورت سے پھر سے رک کا یاتی آہستہ آہستہ رس رس کر بہاؤں کی دگوں کے ذریعیہ زمین کے اندر بھیلتا ہے اور یہ قدرتی یائب لائن بوری زمین کے گوشہر گوشہیں بہنے جاتی ہے جہاں سے کچے توجشے خود کھوٹ رکھتے ہیں اور ندی نالے اور نہروں کی شکل میں زمین يربين لكتي ين د مازه بنازه جارى ماني كرد رون انسانون جانور ول كوسيراب كرتاب ادر كهيي بيارى رن سے بہنے والا یاتی زمین کی بتریں اُ رکزنیجے نیچے بہتارہتا ہے اور اُس کو کنواں کھود کر ہرجگ بكالاجاسكية وقال كريم كى آيت مدكوره مين اس يور انظام كوايك لفظ فَاسْكَتْ في الْاَرْفِي سے بیان فرما دیا ہے آخر میں اسطرت بھی اشارہ کر دیا کہ زمین کی تنہ سے جدیا نی کنووں کے ذرابعہ و کالاجامات بریمی قدرت کیطون سے آسانی ہے کہ بہت زیادہ کہرای میں نہیں ملکہ تھوڈی کہرای س يه ياني ركها كبام ورزيه مي ممكن تفا بلكه ياني كي طبعي خاصيت كا تقاضا يبي تفاكه بدياني زمين كي گہرائی میں اُتر تا چلا جاتا ،جہاں تک انسان کی رسائ مکن نہیں ۔اسی ضمون کو آیٹ کے آخ جملهين ارشاد فرمايا قبل قاعلى ذهاب يه لقي رُوْن -

آگے بائی کے ذریعہ بیدا ہونے والی فاص فاص چیزوں کوعرب کے مزاج و نداق کے مطابات اکر فرمایا کہ مجھورا درا مگور کے با فات اُس سے بیدا ہوئ اور دوسرے بیاوں کو ایک عام نفظ سی جمع کرکے ذکر فرمایا کہ کو فرق کو گئے گئے گئے گئے اُن با فات میں بھارے لئے جو اُن گور کے جمع کرکے ذکر فرمایا کہ کو فرق کو گئے گئے گئے اور شوقیہ طور پر بھی کھا تے ہوا در اُن ہیں علاوہ ہر اور قسم کے بیمل بیدا کئے جن کو ہم محص تفریحی اور شوقیہ طور پر بھی کھا تے ہوا در اُن میں سے بعض بھاوں کا ذخیرہ کرکے بھاری ستقل عذا بھی اُن سے تیار ہوتی ہے قیمنی اُن کا ڈکر فرمایا کیون کو مرفوں کا بھی مطلب ہے ۔ آگے فصوصیت سے ذیتون اور اُنے میں کے بیدا کر نے کا ذکر فرمایا کیون کو در فت کوہ طور پر زیادہ بیدا ہوتے ہیں اسلے اسکی طون است کر دی گئی وَ مُن جو کہ ہم مِن طون رِسْن کی صرور یا مثلاً بدن کی مانش اور چاغ میں طلاح جس میں کوہ طور واقع ہے ۔ آریتون کا تیل تیل کی صرور یا مثلاً بدن کی مانش اور چاغ میں طلاح جس میں کوہ طور واقع ہے ۔ آریتون کا در فت کے لئے کوہ طور کی فصوصیت یہ ہے کہ یہ در فت سب کے بیدا تر تیون کے در فت کے لئے کوہ طور کی فصوصیت یہ ہے کہ یہ در فت سب کہ یہ در فت سب

سورتخ المؤمنون ۲۳:۳

معادف القرآن جسيلة شم

سے پہلے کوہ طور ہی پربیدا ہواہے اور بعض نے کہاکہ طوفان نوح کے بعدسب سے بہلا درخت جوزمین پراگا ہے وہ ڈیتون تھا۔ (صطھری)

اس کے بعدائی جمتوں کا ذکر فرما میاجواد شرتعالیٰ نے جا بذروں جو بیابوں کے ذریعیہ انسان کو عطا فرمائ تاكدانسان أكن سے عبرت چل كرسے اور حق تعالى كى قدرت كا ملدا در دہمت كاملد براستدلال كرك توصيد وعبادت مين متنفول موداس كنة قرمايا قطاعً تكوُّر في الدُّنْ عَاجَ كَتِهِ بَرَعَ السَّامَ المعنى تقالي لتح جویایہ جا بوروں میں ایک عبرت ونسیحت ہے آگے اس کے کی تفصیل اسطرح تبلای نششف یکٹر يِّعْمَا فِي يُطُونِهُمَا ، كه ان جالوروں كے بيط ميں ہم نے تھا دے لئے ياكيزہ وودھ تياد كيا جو انسا کی بہترین غذا ہے اور تھر فرمایا کہ صرف د و دھری نہیں ، ان جا بور دں میں تھا رے گئے بہت سے ربشار) منافع اور فوائد بي دَلكُوفِيها مَنَافِعُ كَيْنِيْنَ فَيْ عَور كروتو جانوروں كے بيم كاليك ا كمين وأرال أوال انسان محكام آيا ہے اور اُس انسان كى معيشت كے لئے بيٹما وسم كے سامان تیاد ہوتے ہیں۔ جانوروں کے پال، ہڑی، آئیں، پھے اور سمی اجزار سے انسان اپنی معيشت كے كتينے سامان بنا آبا اور تيار كرتا ہے اسكا شمار تھى شكل ہے ان ببتيما رمنا فع كے علاوہ ا یک بڑا تفع سے کے کہ ان میں سے وجا اور حلال ہیں اُن کا کوشت بھی انسان کی بہترین غلا ہے وَصِنْهَا تَا كُونَ - آخر مين ان جالؤرون كاايك اور طليم فائده ذكركيا كياكم أن يرسوار معي حق بهواه باد بردادی کا بھی ان سے کام بیتے ہو۔ اس آخری فائدہ میں جو نکہ جانوروں سے ساتھ وریا میں چلنے والی کشتیاں تھی تمریب ہیں کہ سوادی اور باربرداری کا بڑا کام ان سے بھلا ہے اس لئے تستيوں كو ہى اس كے ساتھ وكرونسرماديا۔ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلُكِ تُحْمَلُونَ ، فلك ليسم نتیوں ہی کے کم میں وہ کام سواریاں بھی ہیں جو بہیوں کے ذریعیہ طلنے والی ہیں -

وَلَقَانُ ٱرْسَلْنَا نُوْحَالِكَ قَوْمِهِ فَقَالَ لِفَوْرِمِ اعْبُلُ وَاللّهُ مَالَكُونُ الرّهِ اللّهُ مَالَكُونُ الرّهِ عَنِي رَواللّهُ مَالَكُونُ الرّهِ عَنِي رَواللّهُ مَالَكُونُ اللّهُ عَنِي اللّهُ عَنْ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللللّهُ اللّهُ الللللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللللللللللّهُ اللّهُ اللللللّ

N.

سُورِي المؤمنون ١٢٠٠ تو کہہ سٹکرانٹر کا جس نے چھڑایا ہم اور کہراے رب آنار بھو کو برکت کا اس میں شانیاں ہیں أناد لخ والا

فالصرتيسير

(اس سے پہلی آیتوں میں انسان کی تلیق اوراس کی بقا، دائسائٹ کے لئے مختلف قسم کے سان پیداکر نے کا ذکر تھا آگے اُس کی روحانی تربیت اور دین فلاح کا جو انظام فرمایا اُسکاذکری اوریم نے ہوئے و دعلیا ستالام کو اُن کی قوم کی طرف پیٹی برکر کے بھیجا سوائٹھوں نے دا پنی قوم کی طرف پیٹی برکر کے بھیجا سوائٹھوں نے دا پنی قوم کے فرمایا کہ اُن کی توم کی عبا دت کیا کر و اُسکے سواکوئ محقالہ نے لئے معبود بنا نے کے لائق اپنی داور جب یہ ایک بات ثابت ہے تو) پھرکیا تم (دوسروں کے معبود بنانے سے) ڈورتے بہیں ہو پس دورے ملیا لسلام کی یہ بات شن کر) اُن کی قوم میں جو کا فررئیں تھے (علیا سے) کورتے کہنے گئے کہ پیٹی تھی کہ بیٹی تھی کہ بیٹی میں بوکا فررئیں تھے (علیا سے) کہنے گئے کہ پیٹی تھی کہ بیٹی تھی کہ بیٹی میں بوکا داسول وغیرہ) نہیں ہے داس دعوے سے) آئی کا دا صل مطلب یہ ہے کہ تم سے برتر ہو کر رہے (بینی اسکا مقصد محق این جاہ و عزت ہے) اوراگرائٹ کی درسول بھی بیا نظور ہو تا تو داس کام سے لئے) فرشتوں کو بھی با

معارت القرآن مبسكة سوركا المؤمنون ٢٣٠ (لیں دعویٰ ان کاغلطہے اسی طرح ان کی دعوت کرنا توحید کسطوت سے دوسری علطی ہے کیونکہ) نے بیربات (کداورکسی کومعبود مت قرار دو) ایسے پہلے بڑوں میں دمبھی) نہیں تنی بس پر ایک آدمی ہے جس کو جنون ہوگیا ہے (اس داسط ساری و نیا کے خلات باتیں کرتا ہے کہ میں رسول ہوں اوڑمبود ایک ہے) سمایک وقت نماس دلینی اسکے مرنے کے دقت کا کساس دکی حالت کا ادر انتظار کر بور آخرایک دقت پر بینچاختم ،د جا دیگا اورسب یاپ کٹ جا ویگا) نوح علالبرلا نے دائن کے ایمان لانے سے مایوس ہو کر حبّاب باری تعالیٰ میں) عرصٰ کیاکہ اے میرے ربّ (اُن سے) میرا بدلہ ہے بوجہ اسکے کہ اتھوں نے مجھ کو حوشلا یا ہے بس ہم نے (اُن کی دُعا قبول کی اور) ان کے پیاس حکم بھیجالہ تم کشتی تیاد کرلو ہماری گڑا نی میں اور ہما رہے کم سے دکداب طوفان آوے گااور تم اور مُؤمنین اسکے ذرابعہ سے محفوظ رم وگے) بھرجس وقت ہما راحکم (عذاب کا قرب) آپنجے اور (علامت ایکی پیر ہے کہ) زمین سے یانی أبلنا مشروع ہوجا دے تو (اُسوقت) ہرقسم (کے جانونا) میں سے رجوکہ انسان کے کارآمد ہیں اور یانی میں زندہ نہیں رہیجے ، جیسا بھیڑ بجری اگائے بیل ا دنش گهوژاگرها دغیره) ایک ایک زا در ایک ایک ما ده بینی دو دو مدر اس دکشتی میش افل ر لوا در اینے گھر دا لوں کو تھی ر موار کرلو) باستنا راسے جس بران میں سے دغرق ہذیکا) یکم ناف ہو چکا ہے رمینی آیکے اہل وعیال میں جو کا فرہوا سکو مت سواد کرو) اور (بیس کو کہ عذاب آنے روقت) مجھ سے کا فرد ریزی نجات کے بارے میں کے گفتگو مت کرنا دکیو کی وہ س ت كرب خدا كاجس نے م كو كافر لوگول سے دليني اُن كے افعال سے اور اُن كے دمال سے نجات دی ادر دجب بعد فرد ہوئے طوفان کے کشتی سے زمین پر آنے لگو تو) ہوں کہنا کہ ا ہے میرے دب مجھے کو (زمین میر) برکت کا آتا رنا اُتا رہ و بینی اطبینان ظاہری وباطنی کے ساتھرکھیو) ادرآپ سب (اینےیاس بطور مهانی کے) آتا رفے دالوں سے اچھے ہیں ربینی ، اور توگ جو مهمان کو اُ تارلیتے ہیں وہ اپنے بہمان کی مقصد برا ری اور مصائر سے بنیات پر فردت مني رفضة أي كوان سب جيزول ير قدرت س) اس (داقعه مذكوره) بس (ابل عقل کے لئے ہمادی قدرت کی ، بہت سی نشا نیاں ہیں اور ہم (یہ نشانیاں معلوم کراکرا پنے بندوں کو) آذ ماتے ہیں ذکہ دیجیس کہ کون ان سے نفع اُٹھانا ہے کون نہیں آٹھانا ، اور نشانيان يهزي - رسول بهيمنا، ايمان داردل كو بجالبنا، كا فردن كو ملاك كردينا دفعة طوفان بيداكر دينا بمشتى كومحفوظ ركهنا وغيره وغيره)-丛



معارف القرآن جس لاشتنم

معارف ومسائل

ق کار الگانونی من من من استور ، اس فاص عگر کوبھی کہا جانا ہے جود وٹی بکا نے کیلئے بنائ جاتی ہوا اور بہی معنے معروف ومشہور ہیں ۔ دو سرے معنے میں تقور بوری زمین کے لئے بھی بولا جانا ہے۔ فلاص ترجم کیا گیا ہے ۔ اور بعض حضرات نے اس سے ایک فاص مقور دوٹی پکانے والا مُرادلیا ہے جو کوفہ کی سچر میں اور بعض کے نز دیک ملک شام میں سی جبگہ مقور دوٹی پکانے والا مُرادلیا ہے جو کوفہ کی سچر میں اور بعض کے نز دیک ملک شام میں سی جبگہ مقا۔ اس تنور سے بانی اُ بلنے لگنا حضرت نوح علیا سلام کے لئے طوفان کی علامت پر سے راددگی کی مقامیل مقام دوران کے طوفان کی علامت پر سے راددگی کی مقامیل مقی (مظہری) حضرت نوح علیا سلام اور اُن کے طوفان اورشنی کا واقعہ بچھیلی سور تونمیں نفصیل سے گزر دیکا ہے)۔

المُعَا أَنْمَا أَنَا مِنَ يَعَلِيهُمْ قَوْنَا الْحَرِينَ ﴿ قَلَ الْحَرِينَ ﴿ قَلَ الْحَرِينَ اللَّهُ وَكُلُّ بھر پیدائی ہم نے اُن سے بیجھے ایک جماعت اور کھر بھیجا ہم نے ان میں ایک رسول مِنْهُمْ آنِ اعْبُلُ والله عَالِكُمْ مِنْ اللهِ عَابِرُهُ " اَقَلَا تَتَعَوُّنَ ﴿ وَهِ اللهِ عَابِرُهُ " اَقَلَا تَتَعَوُّنَ اللهِ عَالِمَ اللهِ عَابِرُهُ " اَقَلَا تَتَعَوُّنَ اللهِ عَابِرُهُ " الله عَالَى اللهُ عَالَى اللهُ عَالَى اللهُ عَالِمُ اللهِ عَالِمُ اللهِ عَالِمُ اللهُ عَلَيْهُ وَاللهُ عَالَى اللهُ عَالَى اللهُ عَالَى اللهُ عَالَى اللهُ عَالِمُ اللهُ عَالِمُ اللهُ عَالَى اللهُ عَالِمُ اللهُ عَلَيْهُ اللهُ عَالَى اللهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَى اللهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهُ عَلَى اللهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهُ عَلَى اللهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهُ اللهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ وَاللَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْكُ وَاللَّهُ عَلَيْهُ عَلَّا عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهِ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَّهُ عَلَيْهُ عَالْمُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَّا عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلَيْهُ عَلِي عَلَيْهُ عَلَيْكُوا عَلَيْهِ عَلِي عَلِي عَلِي عَلَيْكُوا عَلِي عَلِي عَلَيْكُوا عَلَيْكُوا عَلَيْكُولُ عَلْمُ عَلِي عَلَي ائن میں کا کہ بندگی کروانشری کوئی نہیں تھادا حاکم اس کے سوائے پھرکیا ہم ڈرتے نہیں المال المكر من قويد الذين كفي واكت بُول بلقاء الأجوة و المرار أس كي قوم كے جو كا مشر سق اور جھلاتے سے آخت كى ملاقات كو اور ٢ تُوفَنْهُمْ فِي الْجَيْوَةِ اللَّهُ نَيَا مَا هَلَ اللَّهُ مِنَا اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنَا اللَّهُ مِنَا اللَّهُ مِنَا اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مِنْ اللَّهُ مُنْ اللّلْهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّالِمُ اللَّهُ مُنْ اللَّا لِلَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُلْمُلْمُ اللَّهُ مُلْمُ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْلِمُ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُ مُنْ اللَّهُو م دیا تھا اُک کوئم نے دُنیا کی زندگی میں اور کھے نہیں یہ ایک آدی ہے جیسے تم یا نده لایا ہے اللہ پر جھوٹ اور اس کو یم ہیں ماتنے

د ي

سُورَجُ المؤمِنون ١٠٢٣ اولا اے رب میری مرد کرکہ اکفوں نے جھے کو مجھٹلایا فرمایا اب تھوڑے دنوں میں صبح کورہ جائی کے يمريكوا ال كو يعنكها أري بهم كرديا بم ك أن كو كورا قَعْنَ اللَّقَوْمِ الطَّلِينَ سو دُور ہوجایں بيمر (قوم نور كے بعد) ہم نے دوسراكر ده بيراكيا دمراد عاد ہے يا متود) بيمرائم نے انس ايك بینمبرکو بھیجا جواگن ہی میں کے تھے د مراد ہود علیالسلام یا صالح علیہ السّلام ہیں ، اُن پینمبر نے ا کہ تم لوگ الشری کی عبادت کرواس کے سوائمہادا اورکوئ معبود (حقیقی) نہیں، کیاتم (شرک) ود تے میں ہو واور وائ تیم کی بات منکر) ان کی قوم میں سے جوزئیں تھے جنہوں نے دخلا در دول کے ساتھ) تفرکیا تھا ا دواخرت مے آنے کو جھٹلایا تھا اور ہم نے اُن کو دنیوی زندگائی میں عیش بھی دیا تھا کہنے لگے کہ لبس یہ تو محماری طسرح ایک (محولی)آدی ہیں (جنانجے۔) یہ وہی کھاتے ہیں جوئم کھاتے بداوردی بتے بیں جو تم بیتے ہوا ور رجب یہ تھا رے ہی جیے بشر بی تو) اگرتم اینے جیسے ایک رمعولی) لمنے لگو تو بیشک تم (عقل کے) گھا تے میں ہو (بعینی بڑی بے و توفی ہے) کیا یہ ہتا ہے کہ حب تم مرحا وُ کے اور (مرکر)مٹی اور ٹڈیاں ہوجا وُ کے (خیانجہ جب اجزار لحميه فاك موجات مين تو لديال بيكوشت ره جاتي بي يصر بعد مندم وه سي فاك وات ہیں تو پیجف کہتاہے کہ جب اس حالت پر بہنے جاؤگے) نود بھر دو بارہ زندہ کرکے زمین سے کالے جاؤك (تو بھلااليا سخض كہيں قابل اطاعت دا تباع ہوسكتا ہے ادر) بہت ہى بعيدا در بہت ہی بعید ہے جو بات تم سے ہی جاتی ہے بس زندگی تو یہی ہماری دُنیوی زندگی ہے کہ ہم میں کوئ مرتا ہے ادر کوئی پیدا ہوتا ہے اور ہم دوبارہ زندہ فکنے جادیں کے بس برایک ایسا سخف ہے جوالترير حميوث باندهتا ہے دكم اس لے مجھ كورسكول بناكر بھيجا ہے اوركوى دوسرامعبود نہيں اور قیامت آدے گی) اور ہم توہر گزاس کو ستجانہ تمجھیں گے۔ بیٹیر نے دُعالیٰ کہ اے میرے رب میرا بدلہ ہے اس دجہ سے کہ انفوں نے مجھ کو تھٹالایا ، ارشاد ہواکہ بہ لوگ عنقر سے بیشمان ہو سے جِنائي ان كوايك خت أواز في (يا سخت عذاب في) موافق وعده برحق كے ذكر كبيكي عني ميان) آپکڑا (جس سے وہ سب ہلاک ہوگئے) میر (بلاک کرنے کے بعد) سمنے ان کونس و خاشاک (کی طرح بامال) كرديا سوفداكي مادكافر توكول ير-

丛

معارف ومسائل

ان هی الایجی الای الان الان ایک انده و تحقیات مان می دینده و این اس دنیای دندی ایس دنیای دندی ایس دنیای دندی ایس دنیای دندی اس دنیای دندی ایس مرنا جینااسی دنیا کا ہے اور بھر دوبارہ زندہ ہونا نہیں) بہی قول مام کفار کا ہے جو قیامت کے منکر ہیں ۔ یہ انکار جوزبان سے کرتے ہیں وہ تو کھکے کا فر ایس بی بیکن افسوس اور بہت فکر کی چیزیہ ہے کہ اب بہت سے سلمانوں میں بی علی طور پر لیے نکار اور تی اس می میں می میں میں بی میں میں بی دھایا اس میں میں ہوتا ہے کہ آخرت اور قیامت کے حساب میطرف بھی دھایا اور تی اس میں ہوتا اللہ ایمان کو اس مصیبت سے نجات عطافر ماویں ۔

نُحْرَ اَنَشَا فَا مِنَ اَنْعُورِهِمْ فَنُ وَنَّا اَحْرِيْنَ شَى مَا نَسَيْنِ فَرْكُونَ الْمَنْ عِيمَ الدرنة آكَ باع كوى قرم المَّهِ المَّهِ الدرنة آكَ باع كوى قرم المَكان المُكان المَكان المُكان ا

سادن القران جرائي من المنظم ا

فلاصتهفسير

پھران (عادیا تمود) کے (ہلاک ہونے کے) بعد ہضا در اُمتوں کو بیداکیا (جوکہ کاذیب اُرسول کے سبب وہ ہی ہلاک ہوئے اور اُن کے ہلاک ہونے کا بین داس مقررتی) کوئ اُمت (ان اُمتوں میں سے) اپنی داس مقررتی کے ہلاک ہونے اُن کہ میں مقررتی کے کوئ اُمت (ان اُمتوں میں سے) اپنی داس مقربی مقربی مقربی کے کئے خوض وہ اُمتیں اور مذر (اس مذت سے) وہ کوگ پیچے ہے ہے ہے ہے ہے ہے ہیں وقت پر ہلاک کے کئے خوض وہ اُمتیں اول پیدائی گئیں) پھر (اُن کے پاس) ہم نے اپنے پیٹیم دوں کو کے بعد دیجے کے بعد ایک کا اور باندھ دیا اور ہم نے اُن کی کہا نیاں جو ملایا سوم نے دیجی ہلاک کرنے میں) ایک کے بعد ایک کا اور باندھ دیا اور ہم نے اُن کی کہا نیاں براور اور اُن کی مادان کوگوں پرچو (انبیا رکے بچھائی ہا ووں ہلا اِسلام کو اپنے احکام اور گھی دیل (یعنی بچوہ مرکجہ کہ دیل بوتے) کی مادان کوگوں پرچو (انبیا رکے بچھائی ہا ووں ہلا اِسلام کو اپنے احکام اور گھی دیل (یعنی بچوہ مرکجہ کہ دیل بوتے) ورائی کی صورت بوتے) ہونا بھی معلوم ہے) سوائی کوگوں نے (اُن کی تصدیق واطاعت سے) کئیر کیا اور وہ کوگ تھے ہو ہونا بھی معلوم ہے) سوائی کوگوں نے (اُن کی تصدیق واطاعت سے) کئیر کیا اور وہ کوگ تھے ہی متائم (یعنی بیلے می سوائی کوگوں نے (اُن کی تصدیق واطاعت سے) کئیر کیا ہم ایسون کو کہ ہے کہ کہ کیا ہم ایسے دونوں ہا ہم) کہنے کے کہ کیا ہم ایسے دونوں ہی ہی ہونوں کی برحوج ہاری طرح کے آدی ہیں (انہیں کوئی بات انتیا زکی نہیں) ایمان کے آدی داور اُن کی

معارف القران جميلات

المؤون ١٣٠٠ ٢٥٥



معارف القرآن جسار ششم

فلاصتنفسير

ہم نے جن طرح تم کو اپنی تعمقوں کے استعمال کی اجازت دی اورعبادے کا حکم دیا اسی طرح مغيرون كواوران ك واسط سے أن كي أمتون كو مج كم دياكه) اے بيغمبرد! تم (اور تھارى امين نفيس چیزی کھاؤ کرکہ خدا کی فعمت میں) اور دکھا کوٹ کرا داکر دکہ) نیک کام کرد (معینی عبا دت اور) میں کاب مے کئے بدیے کاموں کوخوب جاتا ہوں رتوعبادت اور بیک کا موں بران کی جز ااور مقرات عطا کردں گا) اور (بہنے ان سے بیمی کیا کہ جوطریقہ تھیں ابھی بتایا گیا ہے) یہ ہے تھادا طریقہ (جس بریم کوچلنا اورہنا داجب، که ده ایک ی طرفقه اسب انبیاراوران کی اُمتوں کا کسی شرفعیت میں بیطرفقه نبیل بدلا) اور (حاصل اُس طرفقيركايه ہےكه) ميں بخفارا رب بوں تم مجھے درتے ربو رفيني ميرے احكام كى خالفت مذكر دكيو مكدرب مونے كى حيثيت سے محقارا خالق د مالك مهى مدن اور منعم مويى حيثيت مے تم کو بیشار تعمیر میں و تیابوں، ان سب چیزوں کا تقاضا اطاعت و فرما نبرداری می سو راسکا نیتجہ تو يه بوناتها كرسب ايك بى طريقير مذكوره ير رہتے مكراسيان كيا بلكم) أن توكوں سے ايت دين ايناطريق الگ الگ کرے اختلاف پیدا کرلیا ہر گردہ کے یاس جودین (بینی اینا بنایا ہواطریقیہ) ہے دہ آسی يركن اوزوش م راس كاطل بونے كے با وجود اسى كوحق بحصام، توات الى كو اسى جهالت يى ايك فاص وقدت مك رسن ديجة ريجة (ليني أن كى جهالت برآب عم ند كيجة جب مقرر وقت أكل دت کا آجاد کیا توسیہ حقیقت کھل جا دے گی اور اب جو نو ری طور بران بر عذاب نہیں آیا تو) کیا (اس سے) یہ لوگ یوں گیان کردہے ہیں کہ ہم ان کوجو کچھ مال د اولا د دیتے ہیں تو ہم ان کوجلدی جلدی فا مُرے بهنجاد ہے ہیں (بدیات ہر گرز نہیں) ملکہ بدلوک (اس ڈھیل دینے کی وجر) نہیں جانے (لینی یہ ڈھیل تو اُن کو بطور استدراج کے دی جاری ہےجوانجام کاران کے لئے اور زیادہ عذاب کاسبب بے گی کیونکہ ہماری مہلت اور ڈھیل دینے سے بیدا ورمغرور ہوکرسرکشی اور کنا ہوں میں زیادتی کرس ادرعذاب زياده موكا)-

معارف ومسائل

علمار نے فرمایا کہ ان دونوں حکموں کو ایک ساتھ لانے میں اس طوف اشارہ ہے کہ حلال ف ذاکا علی صالح میں بڑا دخل ہے جب نفذاحلال ہوتی ہے تو نیک عمال کی تو فیق خود بخود ہونے لگئی ہے اور فنداحرام ہوتو نیک کا الا دہ کرنے کے باوجود بھی اسمیں ششکلات حائل ہوجاتی ہیں ۔ حدیث میں ہے کہ تعجم نوگ کیے باوجود بھی اسمیں ششکلات حائل ہوجاتی ہیں ۔ حدیث میں ہے کہ تعجم نوگ کیے باوجود ہی اور غبار آلو درہتے ہیں بھرال شرکے سامنے دُعا کے لئے ہاتھ بھیلاتے کہ تعجم نوگ کیے باوجود ہی اور غبار آلو درہتے ہیں بھرال شرکے سامنے دُعا کے لئے ہاتھ بھیلاتے ہیں اور یا دہ بی بیابھی ، باس بھی جوام ہوتیاں ہیں اور یا دہ بی بیابھی ، باس بھی جوام ہوتیاں ہوتا ہے بینا بھی ، باس بھی جوام ہوتیاں ہوتا ہے بینا بھی ، باس بھی جوام ہوتیاں ہوتا ہے دور جوامی کو نفذا رہاتی ہے ایسے تو گوں کی دُعا کہاں قبول ہوگئی ہے۔ (قطبی)

اس سے معلوم ہوا کہ عبادت اور و عاکمے قبول ہوئے میں حلال کھانے کو بڑا دخل ہے جب غذا حلال منر ہوتوعبادت اور دُ عاکی مقبولیت کا بھی استحقاق نہیں رہتا ۔

اِنَّ الَّذِي اَنِي هُوْرِمِن خَشْيَةٍ رَبِيهِهُ مُّشَفِقُون ﴿ وَالَّذِينَ هُوْ اللَّهِ اِنْ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ ال

مادن القرآن ملائش المؤتون ما التواق قاویم هو وجلة التي كونون ١٢:٢٣ و التوريون ما التواق قاویم هو وجلة التي كونور التورون هو التورون ما التواق قاویم هو وجلة التي كونور التي در تورون كردن كونور كونور

اس میں کوئ شک بہیں کہ جو ہوگ اپنے دب کی ہیبت سے ڈرتے دہتے ہیں اورجو ہوگ اپنے دب کی آیتوں پر ایمان دکھتے ہیں اورجو ہوگ اپنے دب کے ساتھ سٹرک بہیں کرتے اورجو ہوگ (اللہ کی راہ میں) ویتے ہیں جو پکھر دیتے ہیں اور (باوجوداللہ کی راہ میں ویٹ اور فرج کرنے کے) ان کے دل اسس سے موشد وہ رہتے ہیں کہ وہ اپنے دب کے پاس جائے والے ہیں (دیکھتے دہ اور کھیے دہ اور اسس سے موشد وہ رہتے ہیں کہ وہ اپنے دب کے پاس جائے والے ہیں (دیکھتے دہ اور کھیے دہ اور ان صدقات کا کیا عمرہ فلا ہم ہو کہ ہیں ایسانہ ہو کہ بید دینا حکم کے موافق نہ ہو مثلاً ال حلال نہ ہو یا نیت اللہ کے حاص نہ کہ فائس ہو تا میاں کا حزام ہو نیا ہمیں معلوم نہ ہو تو اُن اس پر موافذہ ہوئے گئے توجن ہوگوں میں یہ صفات ہوں) یہ لوگ اپنے فائد سے جلدی جلدی حاصل کر رہے ہیں اور وہ اُن کی طوف دوڑر رہے ہیں اور (یہ اعمال فائد سے جلدی حاصل کر رہے ہیں اور وہ اُن کی طوف دوڑر رہے ہیں اور (یہ اعمال مذکورہ کی کوئیں کہتے واس کی وسعت سے زیادہ کا مرف کوئیں کہتے واس کے بیسے موان ہیں اور اس کے ساتھ اُن کا اچھا انجام اور تمرہ تھی ہوئی کہتے واس کے بیسے کام اس کا مرفوظ) ہے جو کھیک ٹھیک (سب کا حال) کوئون کہ ہم کوئیں کہتے واس کے بیسے کام اس کی مرفوظ) ہے جو کھیک ٹھیک (سب کا حال) کا محفوظ) ہے جو کھیک ٹھیک (سب کا حال) کا محفوظ) ہے جو کھیک ٹھیک (سب کا حال) کا محفوظ) ہے جو کھیک ٹھیک (سب کا حال) کی تو کھی کے اس کی کھوٹوں پر ذرا ظلم نہ ہوگا ۔

معارف ومسائل

قَالَانِ فِنَ مُنْ قُونُ مَمَا اَتُوا وَ قُلُونِ مُنْ وَجِلَةً أَن لفظ بَوْنُون البتاء سے شتق ہے ہِ م کے معنے دینے اور خریج کرنے کے ایم اس لئے اس کی تفسیر صدقات کے ساتھ کی گئی ہوا در صفرت صدایقہ عاکشہ رہ سے ایک قرارت اس یا تون ما اُنو بھی منقول ہے بینی عل کرتے ہیں جو کچھ کرتے ہیں

سُورَة المؤمنون ١٦٠٠ ٤ عادف القرآن جسلد اس میں صدقات نمار دوزه اور تمام بیک کام شامل موجاتے ہیں اور شہور قرارت پر اکرچیر ذکر میاں صدقات مى كا بوكا مكرمراد بهر حال عام اعمال صالحه بين جيساكه ايك حديث سي ثابت ب حضرت عائشه رم فرماتی این کدیں نے اس آمیت کا مطلب دشول الشرصلے الشرعکی ہم سے دریا فت کیاکہ بیکام کرکے درنے دا الوك ده إي جومشراب ينت يا جورى كرتے بين ؟ انخضرت صلى الله عليهم نے فرمايا، اے صديق كى مثى یہ بات بنیں بلکہ یہ وہ لوگ ہیں جو دوڑے رکھتے اور نمازی بڑھتے ہیں اورصدقات دیتے ہیں اس کے با وجوداس سے ڈرتے رہے ہی کہ شاید ہمار سے بیمل الشرکے نزدیک (ہماری سی کوتاہی کے سبب) قبول نه بول ایسے می لوگ بیک کا موں میں مسارعت ا درمسابقت کیا کرتے ہی (دوالا احد) والتوفذی وابن ماجد - مظهری) اور حضرت حس بصری رو فراتے ہیں کہم نے ایسے لوگ دیکھے ہیں جو نیک عمل كرك اتن درت تصريم راعل كرك بي اتنا بني درت (فطه) الْحَلِيْكَ يُسَادِعُونَ فِي الْحَنَيْزِتِ وَهُوْرِلَهَا سَبِفُونَ، مسارعت في الخيرات سيمراديب كرجيب عام لوك دُنيا كے منافع كے چيجھے دُوڑتے اور دوسروں سے آگے بڑھنے كى فكرس رہتے ہيں يہ حصرات دین مے فوائدیں ایساہی علی کرتے ہیں!سی لئے وہ دین کے کاموں میں دوسروں واکے رہتے ہی بَلْ قُلُوبُهُمْ فِي عَنْ عَنْ فِي عَنْ فِنَ اوَلَهُمْ آعَمَالُ مِنْ دُونِ ذَلِكَ مِنْ لوی بنیں آئی کے دل بیہوش ہیں اس طرف سے اور اُن کوالدکام لگ دہے ہیں اسکے سوائے کہ وہ اُن ک اغمِلُون ﴿ حَتَى الْمَا آخَنَ نَا مُنْزَرِفِهُمْ بِالْعَنَ الِسِلْوَاهُمْ يها نتك كرجب بيمرين كريم ان كي آسوده نوگون كو آفت بيس تيهي ده لكيس كي ے " کیر کرے ایک قصتہ کو کو چھوڑ کر سے گئے سو کیا اٹھوں نے دھیان نہیں کیا اس کا اس ہے اُن کے پاس ایسی چیز جو شائی تھی اسے پہلے باب داددس کے باس یا بہجانا بنیں اضوں اپنے میٹا الانواع

سووه اسكواً وميا سجعتي يا كيت بين اس كو سُودا ب، كوى نبين وه تولايا بي الكياس أي بات

سُورَةُ المؤمنون ٢٤:٢٧ ورائيس بيتون كويكى بات يرى لكتى ب اور اكريتيارب يط الناكى توى بر توخراب، وجايل کوی بنیں ہم نے پہنچای ہے آن کو آن کی تصبیحت زمين اور وكوى ال سي ووہ اپن تفیعت کودھیاں بنیں کتے یا تو ان سے مانگاہے کے محصول سومحصول ترے دب کا بہتر ہے اور تو تو النا ہے ال کو سیری راہ ادر ده ج مرددزی دے دالا نس مانے آزت منهمة وكشفنا ما ومة من عبر للجواف ر ہم ال بدر تم كري اور كھول ديں جو تكليت بہترى ان كوتو بھى برابر كے ديں كے ابنى مشرارت بي اور ہم نے بحرا مقاآن کو آفت میں بھرشماجن کی اینے رب سے آئے 2199 2 2 101 مربها منک کم جب کعو لدین ایم آن بر دردازه ایک شكى بيرادا هُمُ فِيْهِ مُنْالِسُونَ عَ آفت کا تب اُس یں اُن کی اَس لائے گ (یہ تواویر مؤمنین کی حالت سی مگر کفار ایسے نہیں ہیں) بلکہ (برعکس) ان کفار کے قلوب اس دین کیطرف سے رجسکا ذکر بایٹ تر بھٹومیں ہے) جالت (اورشک) میں (دو ہے بو سے بی رجنکام ادريسي معليم بوجيكافنانهم في غيرتي اوراس رجهانت دانكار) كے علاوہ ان توكوں كے اور سجى ديرك ار مے خبیث اعلی میں جن کوامید اس) کرتے دہتے ہیں (یہ لوگ شرک ادر اعمال سیئر سے برابر تو کردیں گے) یہا تک کرجب ہم اُن کے خوشیال ہوگوں کو زجن کے باس مال دودات اور نوکر چاکرسب کھری عذاب ربعدالوت) میں دھر پھڑیں کے زاور غرب غربار توکس گئتی میں ہیں اور وہ تو عذاہے کیا بھاؤ كريجكة بين، غرمن ميركد حبب الن سب يرمنداب نازل بوكا) تو نوراً جِلاَ المُثِّين كِي (ا درساراا كارد اسكبار

جس کے اب عا دی ہیں کا فور ہوجا دیکا اسوقت اُن سے کہا جا دے گاکہ) اب مت جِلّا وُ کہ کوئ فاُما ؟ نہیں کیو تکہ) ہماری طرف سے متھاری مطلق مر دیتہ ہوگی رکیو تکریہ دارالجزا، ہے دارالعل نہیں ہے جس میں عِلَانااور ماجن يكرنامفيد بوجو دارالهل مقااس مين تو مقادايه حال تقاكه) ميري آيتي في كويره يراه كر (دسُول كى ذبان سے) سُنائ جاياكرتى عقيں توتم أسلتے ياؤں بھاكتے تھے كبر كرتے بوئے قران كامشغلہ بناتے ہوئے (اس قران کی شان) میں بیرودہ بھتے ہوئے دکہ کوئ اس کو تحرکتها تھاکوئ شعر کہنا تھا اور مشغلہ کا یمی مطلب ہے لیں تم نے دارالعمل میں جبیا کیا آج دارالجزار میں دیسائھ تو۔ اور بدلوگ جوقران کی اورصاحب قرآن کی تکذیب کرسے ہیں تواسکاکیا سبسے کیا ان توگوں نے اس کلام (اللی) يں غورنبيں كيا (جس سے اسكا عجانظا ہر موجانا اور يرايان لے آتے) يا (تكذيب كى يہ وجہ ہے كہ)ان کے یاس کوئ ایسی چیزائ ہے جوان کے پہلے بڑوں کے یاس نہیں آئ تھی (مُراداس سے احکام اللہ کا ا ناہے جو کوئ نئی بات نہیں، ہمیشہ سے انبیار علیج السلام سے ذراحیران کی اُمتوں کو ہی احکام دیے جاتے دے بی مقولہ تعالی مَا کُنٹ بِدُ عَامِن الرسُل ، نس مَلذیب کی بید وجر بھی باطل تھمیری اور بید دو وجہ توقران كے متعنى بيں۔ آگے صاحب قران كے متعلق فرماتے بين ينى) يا (وجه تكذيب كى بيہ ہے كه) يہ نوک اینے دسکول (کی صفتِ دیانت وصدق امانت) سے واقعث نہ تھے اسوحہ سے اُن کے منکر ہیں ، (بینی یہ وجھی باطل ہے کیونکہ آپ کے صدق و دیانت پرسپ کا آنفاق تھا) یا (یہ وجہہے کہ) ا يبرلوك (نعود بالله) آب كي نسبت جنون مح قائل بي (سوآب كااعلى درج كا صاحب عقل ال صاحب الرائے ، وتا بھی ظاہرہے سووا قع میں ان میں سے کوئ وجیمی معقول تہیں) بلکہ (مہلی وجہ يه الميك بروسول ان كياس حق بات كيرائي اوران بي النزلوك عن بات سانفرت ركفت بي (نس يه تمام تروجه بي كذيب كي اورعدم ا تباع حق كي اوريه يوك اس دين حق كا اتباع توكياكرتي يه تو اوراً لٹا برچاہتے ہیں کہ وہ دین حق ہی ان سے خیالات کے تابع کردیا جا وے اور جومضامین قران ہی ان كے خلاف بيں اُن كو خادرج يا ترميم كر ديا جادے كفوله تعالى فى سور أيونس قَالَ الّذِيْنَ لَا بَدُيْحُونَ لِقَا مُنَا النِّبِ بِقُلْهِ عَلِيهِ فِلْأَا وَبُدِّيلُهُ) اور ﴿ بِفرضِ مِمَالَ ﴾ أكر (ايساا مروا قع موحانا) اور دينِ حق ائن كے خيالات مح تابع (اوزبوافق) ہوجا تا تو (تمام عالم مي كفر وسرك بھيل جا آبا اوراسكا اثربيہ و تا كهتق تعالئ كاغضب تمام عالم بيمتوجه بوجآنا وراسكا مقتضا يدئقاكه بمتمام آسمان اورزمين اورجو انببن دآباد) ہیں سب تباہ ہوجاتے رجبیا قیامت میں تمام انسانوں میں گراہی عام ہوجانے کے سبب الشرتعالي كاغضب مجي مب برعام بوكا اورغضب اللي عام بونے سے سب كى بلاكت بھى عام بوكى إلى ا قل توکسی امرکاحق برونامقتضی ہے اُس کے وجوب قبول کو گو ٹافع بھی نہرہوا ور اُسکا قبول مرکزا خود عیب ہے مگران توکوں میں صرف یہی ایک عیب بنیں کرحق سے کرا ہت ہو) ملکاس سے بڑھ کر

معادف القرآن جسك

د دسراعیب اور بھی ہے کہ حق کا اتباع جو اتھیں سے نفع کاسامان ہے اُس سے دُور بھا گتے ہیں بس ہم نے اُن کے ماس اُن کی نصیحت (اور نفع) کی بات بھیجی سویہ لوگ اپنی نفیعت سے بھی روگر دا تی زتے ہیں یا (علاوہ وجوہِ مذکورہ کے ال کی تلذیب کی یہ وجہ ہے کہ ان کو پیشجھ ہوا ہوکہ) آب ان سے کھے آمدی چاہتے ہیں تو (بیر بھی غلط ہے کیو کہ جب آپ جانتے ہیں کہ) آمدی تو آگے رہے کی سب سيبترك اور وه سب رينے والوں سے الجفام (توات توكوں سے كيوں مانگنے بين) اور (فلاصدان کی حالت کا یہ ہےکہ) آپ تو ان کوسیدھے دسنہ کی طرف رجس کواً دیرجن کہا ہے) بلاہے بين اوران توكون كى جوكم آخرت يرايان نہيں ركھتے به حالت ہے كماس (سيدھے) دستہ سے مشاجا تيب د مطلب بیرکر حق مونا اور تنقیم بوزنا اور ناقع مونها بیرب مقتصنیات ایمان کے جمع بیں اورجو وجو ہائے ما نع موسمتی تقیس وه کوی موجود تهیں ، بھرابیان نه لانااشد درجبری جہالت اورصندالت ہے) اور (ان کی تساوت وعناد کی بیرحالت ہے کہ جس طرح بیرنوک آبات شرعیہ سے متنا ٹرنہیں ہوتے اسی طرح آیاتِ قهر پیرمصائب وبلیّات سے بھی متاً ٹرنہیں ہوتے گؤمصیبت کے دقت طبعی طوررہم نومبکارتے ہی ہیں لیکن وہ دفع الوقتی ہوتی ہے جنانچہ) اگر ہم ان پرمهر بانی فرما دیں ا ور ان پرجو بیف ہے اُس کوہم دُور بھی کردیں تو وہ لوگ (بھر) این گراہی میں بھیلتے ہوئے اصرار کرتے بین زادر وه تول و قرار جومصیبت بین کئے تھے سے جتم ہوجا وین کفولہ تعالیٰ اِخَاصَتَ الْانْسَانَ الضَّرُوعَانَا الح وقوله تعالى إِفَا تُكِبُوا فِ الْفُلْكِ الحز) اور (شابداسكابه به كربعض ا ذفات) مم في ان کو گرفتار عداب بھی کیا ہے سوال لوگوں نے مذایت رب کے سامنے (بورے طوریر) فردتنی کی ادرنه عاجزي اختياركي ركبين جب عين مصيبت بين اورمصيبت بهي ايسيخت حب كوعذاب کہا جا سکے جیسے قحط جو مکرمیں حضور کی انشرعکت کی بددُعا سے ہوا تھا اُنھوں نے عاج ی اخت بیار نہیں کی توبعد زوال مصیبت کے تو بدرجرُاولیٰ اُن سے اسکی تو قع نہیں گران کی سیاری بے روا وبیاکی ان مصائب تک ہے من کے عادی ہو چکے ہیں) یہاننگ کہم جب ان پر بخت عاراب کا دردازه کھولدیں گے (جوکہ فوق العادة موخواه دنیابی میں کہ کوئ غیبی قبراً براے بالبرالوت کہ صروری داقع بوگا) تواسوقت بالکل جیرت ز ده ره جا دبیگے (کدید کیا موکیا اورسب نشهرن موجاد کیا)

معارف ومسائل

عَمَیٰ ، ایسے گہر سے بائی کو کہتے ہیں ہیں آدمی ڈوب جائے اور جواسیں داخل ہونے والے کو این عَمَیٰ ، ایسے گہر سے بائی کو کہتے ہیں ہیں آدمی ڈوب جائے اور جواسیں داخل ہونے والے کو این این این این این کے این کے این کے این کے این کے این کے این کی مشرکان جہالت کوغمرہ کہا گیا ہے جس میں اُن کے دل ڈوبے ہوئے اور جھیے ہوئے ہیں کہسی

معادت القرآن جسلدتهم

طون سے اُن کو روشنی کی کرن جہیں جہنجتی -

وَلَهُوْ اَعَدُرُ اللّهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ الله

ومسلم)- (قطبی ومظهری)

مشتگاردین یه سیسرا گفترون ، اس میں لفظ به کی ضمیراکشر مفترین نے وم کی کی ارات الله مفترین نے وم کی کی ارات الله اور کی چواگر ہے اور کہیں مذکور نہیں مگر ور سے قریش مکہ کا گہرات اقداس پران کا نا ذا تنا معروف و مشہور تفاکہ ذکر کرنے کی صرورت نہیں ۔ اور مستحاس کے یہ ہیں کہ قریش مکہ کا الشہری آئیس می ورف و مشہور تفاکہ ذکر کرنے کی صرورت نہیں ۔ اور مستحاس کے یہ ہیں کہ قریش مکہ کا الشہری آئیس می خور میں کا مکتبرا ورنا از تھا۔ اور مستحاص می خور کہ بیان کا مکتبرا ورنا از تھا۔ اور مستحاص می خور کہ بیان کہا کرتے تھاس کے لفظ سمرقصہ کہانی کے معنے میں استعمال ہوئے لگا اور ما مرتب کہ ہوا جاتا ہے یہ نفظ اگر چہر مفرد ہے مگر معنی میں جو کے لئے بھی ہو اجاتا ہے! سی حکم سامر می خور کہ باتا ہوئے کہا استحال ہوا ہے۔ مشرکین کا ایک حال ہو آ یا ہوا البیہ سے الکا تکا بیا ہوا تھا ۔ ومسرا حال ہو بیان فرما یا کہ یہ توگ ہے اصل اگر بیا ہوا تھا ۔ دوسرا حال ہو بیان فرما یا کہ یہ توگ ہے اصل اگر بین ہوا جاتا ہے کہ عادی ہیں ان کو انشرکی آیات سے دلی جی نہیں۔ بین ان کو انشرکی آیات سے دلی جی نہیں۔ کہ بینیا و تھے کہا نیوں میں شخول رہنے کے عادی ہیں ان کو انشرکی آیات سے دلی جی نہیں۔ کہ بینیا و تھے کہا نیوں میں شخول رہنے کے عادی ہیں ان کو انشرکی گائی گلوچ کے عادی ہیں۔ ان کو انشرکین کا بیان کیا گلوچ کے تا دی ہیں ان کو انشرکی گائی گلوچ کے عادی ہیں۔ ورشول کو اس اور گائی گلوچ کے عادی ہیں۔ ورشول نگلی گلوپ کے عادی ہیں۔ ورشول نگلی کی تورٹ کی کی کو نیا کہ میں کو نیا کہ کو بیا کہ کی کو نہیں۔

LA

الاس المورة المؤمنون ١٠٠٠ ع.

معارف القرآن جسلدهم

عشارکے بعدقضتہ گوئ کی ارات کو افسانہ گوئ کا مشغلہ عرب و عجم میں قدیم سے چلاآ باہ اوراس میں بہت مافعت اوراس میں بہت مافعت اوراس میں بہت مفاسدا ور وقت کی اضاعت تھی۔ نبی کریم صط الشرعکت ہم نے اس کوسم کو مثانے کے لئے عشار سے پہلے سونے کو اورعشار کے بعد فضول قصتہ گوئ کو منع فرمایا ۔ حکمت بہتی کہ عشار کی اندر پر انسان کے اعمال یو مین جم وور ہے ہیں جو وال معرکے گنا ہوں کا بھی کفا دہ ہوسکتا ہے۔ یہی کشس کا آخری علی اس دن کا ہوتو بہتر ہے اگر بعد عشار فصنول قصتہ گوئ میں لگ گیا تو او لا بینو و فعل عبت اور کردہ کا اس کے علاوہ اسے ضمن میں فیسیت مجھوٹ اور دوسرے طرح کے گنا ہوں کا از لکاب ہوتا ہے اوراکیک

برلانجام اسكايه به كردات كو ديريم جاكے كا توضيح كوسورے نہيں اُٹھ سے كا اسى لئے حضرت فادون عظم ا

جب سی کوعشار کے بعدفضول قصتوں میں شغول د تکھتے تو تنبیہ فراتے کتے اور تعبن کو سنرا بھی دیتے تھے اور فرماتے کہ جلد سوجا وُشنا ید آخر رات ہیں تہجد کی توفیق ہوجائے ۔(قطبی)

ام کے گئے یعوفی کے آئے کے فوٹ کے گئی ان کے انکار کی ایک دجہ یہ ہوکتی تھی کہ جو تحف دعوت حق اور دعوائے بنوت کیکر آ یا ہے یہ ہیں باہر سے آیا ہوتا تاکہ یہ لوگ اسکے نام ونسب اور عادات و طحصال اور کر دارسے واقعت بنہ ہوتے تو یہ کہر سے تھے کہ ہم اس مدعی کے حالات سے واقعت بنہ اس کو کیسے بنی ورسول مان کرا پٹا مقتدا بنا ایس ۔ مگر یہاں تو یہ با تے گئی ہوئ ہے کہ دسٹول الٹر صلحال اللہ علیہ کم ویش ہی کے اعلی نسب میں اسی تنہر مگہ میں پیدا ہوئے اور بچین سے لیکر جوائی اور مابعد کا ساواز مان اور گئیں لوگوں کے سامنے گؤ وا۔ آپ کا کوئی عمل کوئی عادت ان سے جیبی ہوئی ہنہیں تھی اور دعوائے نبوت سے پہلے میک سادے کفار کہ آپ کو صادق وابین کہا کرتے تھے آئے کر دارو

عارف القسرآن جلد

عمل پرکسی نے بھی تمبھی کوئی شبھہ ظا ہر منہیں کیا تھا تواب ان کا بیر عذر تھی نہیں جیل سکتا کہ وہ ابھ

وَلَقَانُ آخَنَ نَهُمْ يِالْمَنَ إِنِ فَمَا اسْتَكَا نُوْ الِرَزِيْهِمْ وَمَا يَتَفَرَّعُونَ ، اس سيبلى آتیت میں مشرکین کے بارے میں یہ کہا گیا تھاکہ یہ لوگ جو عذا ب میں مبتلا ہونے کے وقت التّرہے یا رشول سے فرما د کرتے ہیں اگر ہم ان کی فریاد بررحم کھا کرعذا ب ہٹا دیں تو اُن کی جبتی شرارت دسرتنی کا عالم میہ ہے کہ عذا ہے نجات یا بیکے بعد تعیرا بنی سرکتنی اور نا فرمانی میں شغول ہوجا میں کے اس آیت میں اُن کے ایک اسی طرح کے واقعہ کا بیان ہے کہ ان کو ایک عذاب ہی میراکب الگر عذاب سے بدعا رہنی کریم صلی التر عکتی کمی نجات یا ہے کے بعد تھی یہ التّر کے سا منے نہیں جھے ادر رام اینے کفرد تمرک پرچے رہے۔

ابل مكتربر قحط كاعذاب اور إسبيه على موجيكا ب كررسول الترصل الترعكي م ابل مكر تعط كاعذا رشول الشرصلے الشرعكت لم مستطير نے كى دُعاكى تقى إس كى دجه سے يہ سخت تحطيس مبتلا بوتے اور كى دُعاسے اس كا دفع بونا مردار وغيره كھانے يرمجبور بوكئے . به ديكھ كرا بوشفيان رسول الله صلے الله

مکتیے تم کیخدمت میں مدمینہ طبیعہ جا حز ہوئے اور کہنے لگے کہ ئیں آٹ کوا لٹند کی قسم دیتیا ہوں اور صلہ رحمٰی کی ياآت يهنين كماكه مين ابل عالم ك لئة رحمت بناكريسجاكيا مون أأتي فرمايا مبيك كها ب اور دا تعری یوں ہے۔ ابوشفیان نے کہا کہ آیا نے اپنی قوم کے بڑوں کو تو برر کے معرکہ میں تاوارے نتسل کر دیا اورجواب رہ گئے ہیں اُن کو بھوک سے قسل کرنہے ہیں الشرسے دُ عاکیجے کہ یہ عذاب سے ہے جائے دشول الترصلے الترعکی کے مافرمائ یہ عداب آسی وقت حتم ہوگیا اسی پر يرآيت مُركوره نازل مُوي وَلَقِنَ آخَنَ نَهُمْ يِالْمَنَ ابِ ثَمَا السَّتَكَا عُوْ الرَيْقِمُ -

اس آیت میں بیدارشاد ہے کہ عذاب میں مبتلا ہونے بھراس سے نجات یانے کے بعد تھی یہ لوك اینے رب مے سامنے نہیں مجھے جنانجہ واقعہ ہی تفاکہ رسول الله صلے اللہ عکمی می دُعا سے قحط رفع بھی ہوگیا مگرمشرکین مکہ این شرک د کفرراً سی طرح جے رہے - (مظہری دغیری)

سى ئے بنادیے اور اسی نے کم کو بھیلا رکھا ہے زمین میں اور مارتا اورامی کاکام ہے بدلنا اور و ای ہے جلاتا



ر کدارام بھی بر تواور دین کا بھی اوراک کرونسین) تم توگ بہت ہی کم شکر کرتے ہور کیونکہ الح ت کریے تھا کہ اس منتم سے بیٹ دیدہ دین کو قبول کرتے اور دوبارہ قیامت میں زنرہ کرنے کا انکار نذكرتے) اور وہ ابسا ہے میں نے تم كو زمين ميں بھيلاركھا ہے ا درتم سب (قيامت ميں) اسى ك یاس لائے جا دیکے (اُسوقت اس کفران منعت کی حقیقت معلوم ہوگی) اور وہ ایسا ہے جو جلا آہے اور مادتا ہے اور اسی کے اختیار میں ہے رات اور دن کا گھٹنا بڑھنا سوکیاتم داننی بات بہیں سمجھتے کہ مید ولائیل قدرت توحیدا درقیامت میں دوسری زندگی دونوں پر دال ہیں گر) بھرتھی مانتے نہیں، بلکہ بیم وسی می بات کہتے ہیں جوا گلے (کافر) لوگ کہتے چلے آئے ہیں ربینی) ٹوں کہتے ہیر لیا ہم جب مرجا دیں گئے اور ہم مٹی اور ٹہریاں رہ جا دیں گے تو کیا ہم دوبارہ زندہ کئے جا دیں گے اسكاتو ہم سے اور (ہم سے) پہلے ہما دے بڑوں سے دعدہ اور اچلاآیا ہے یہ کھر تھی مہیں محض بے ن باتیں ہیں جو اگلوں سے منقول ہوتی جلی آتی ہیں (چؤ کلماس قول سے آلکا برقدرت لازم آتا ہے اور ا سے مثل انکار بعث سے انکار توحیر کا بھی ہوتا ہے اس لئے اس تول مےجواب میں اثبات قدرت مے ساتھ اثبات توحید کا بھی ارشا دہے دینی) آپ (جواب میں) یہ کہدیجئے کہ (احیصا بیتبلاؤ كر) يد زمين اور جواس پر رہتے ہيكس كى بلك ہيں اگر تم كو كھ خبرہ - وہ صرور سي كہيں كے ك منتر کے بیں (تو) ان سے کہنے کہ بھر کسوں نہیں غور کرتے (کہ فدرت علی البعث اور توحید دونوں کے کا تبوت وج اوے اور) آب بیمی کہتے کہ (اچھا یہ بتاؤکہ) ان سات آسما اوں کا مالک اور عالیتان عرش کامالک کون ہے (اسکا بھی) وہ صرور بھی جواب دیں گے کہ بیر بھی رسید التركاب آب (اسوقت) كين كريم (اس سے) كيوں نہيں درتے دكراس كى قدرت اور أيات بعث كاألكادكرتے مواور) آب (ال سے) يہى كہنے كر (اجدا) وه كون محس كے ہاتھ بيكام جنوں كا ختيار ب اوروه (جن كو جا متا ب) يناه ديباب اورا كحمقابد مي كوي كسى كويناه نهيل في سکتااگریم کو کھے خبرہے (تب بھی جواب میں) وہ صرور بہی کہیں گے کہ بیرسیصفتیں کھی النٹرہی کی بين آب (اسوقت) كيني كه ميريم كوكسيا خبط مرور باسي زكه ان سب مقدمات كوما نتي داور تيجير كو كرتوحيداور قيامت كاعتقاد ہے نہيں مانتے بيرتوا سدلال تفامقصود يران كے جواب ميں اكم الكيم مقدمه كى وليل ليني إنْ هاناً إلا آساط يُوالْ قَدْ لِينَ الْهِ كا ابطال مينيني بيجولِن كو بتلایا جارہا ہے کہ قیامت آؤے کی اور مردے زندہ ہو بگے یہ اساطیرالا ولین نہیں ہے) بلکہ ہم نے ال کویچی بات بہنجائ ہے اور نقیناً پر (خودہی) جھوٹے ہیں ﴿ پہانتک مکالمنحم ہوجیکا اور توحيدولجث دونون تابت موكم كران دونون سئلول مين جو كدتو حيدكا مسئله زياده بهماالة اورحقیقت میں مسلد قیامت و آخرت کا بھی مبنی اور محل کلام بھی زیا وہ تھااس لئے تہمّہُ تفریر

THY2

سُورَةِ المؤمنون ١٣٣٠ ...

میں اس کومستقلاً ارشاد فرماتے ہیں کہ) اللہ تقالی نے کسی کوا ولا دقرار نہیں دیا (جیسا مشرکین ملائکہ کی نسبت کہتے تھے) اور شائس کے ساتھ کوئی اور فداہیے، آگر الیہ اموتا تو ہر فدا ابنی مخلوق کو (تقسیم کرکے) جُداکرلیتیا اور (بھر گونیا کے با دشاہوں کی عادت کے مطابق دوسرے کی مخلوقات چھینے کے لئے) ایک دوسرے پرچڑھائ کرتا (بھر مخلوق کی تباہی کی تو کیا انتہا ہے لیکن نظام عالم برستورقائم کرتا و بھر مخلوق کی تباہی کی تو کیا انتہا ہے لیکن نظام عالم برستورقائم کی اس سے ثابت ہواکہ) الشرتقالی ان (مکردہ) باتوں سے پاک ہے جو یہ لوگ (اسی نسبت) ہمیان کرتے ہیں مواکہ اللہ مسب پوشیدہ اور آشکا داکا، غرض ان لوگوں کے مشرک سے دہ بالاتر (اور منزی)

معارف ومسائل

وَهُوَ يَجِيدُ وَ لَا يَجِي اُدُعَلَيْهِ ، بينى التَّدَتُوالَى جَس كو چِاہے عذاب اور مصيبت النج و تكليف سے بناہ ديدے اور يہ مى مجال نہيں كہ اسكے مقابلہ بركسى كو بناہ ديمراً س كے عذاب و لكليف سے بحالے۔ يہ بات دُنيا كے اعتباد سے بھی جے ہے كہ اللہ تعالی جس كوكوئ نفع بہنچانا چاہے اسكوكوئ روك بنيس سكتا اور جس كوكوئ تكليف و عذاب دينا چاہے اُس سے كوئ ، بچا نہيں سكتا - اور آخرت كے عتباد سے بھی میضمون ہے ہے كہ جس كو وہ عذا ب میں مبتلاكر سے اُس كوكوئ ، بچا نہ سكے گاا ور حكومت اور اور احت دیگااُس كوكوئ دوك نہ سے گا (فتطبی) اور داحت دیگااُس كوكوئ دوك نہ سے گا (فتطبی)

قُلُ رَّتِ إِمَّا الْرِيْ وَى مَا يُوْعَلُونَ ﴿ وَالْ اللَّهِ وَالْمَا اللَّهِ وَاللَّهِ وَاللَّهُ وَاللْلِلْ اللللْلِي الللْلِي اللللْلِي الللْلِي اللللْلِي الل

11

معارف القران جمار المستقر المستقر المستقرة المؤونون ١٠٠٠١ المستقرة المؤونون ١٠٠٠١ المستقرة المؤونون ١٠٠٠١ المستقرة المستقرقة المستقرة المستقرة المستقرة المستقرة المستقرة المستقرة المستقرقة المستقرة المستقرة المستقرة المستقرة المستقرة المستقرة المستقرقة المستقرة المستقرة المستقرقة المستقرة المستقرقة المستقرة المستقرة المستقرة المستقرة المستقرة المستقرة المستقرقة المستقرة المستقرة المستقرة المستقرة المستقرة المستقرة المستقرقة المستقرقة المستقرقة المستقرقة المستقرقة المستقرقة المستقرقة

وللصريفيس

آپ دحق تعالیٰ سے) دُعا کیجئے کہ اے میرے رہب عذاب کاان کافروں سے وعدہ کیاجارہا ہے رجيباا دير إذا فَتَعَنّا عَدَيْهُ وسي معلوم بوا) اكرات مجدكو دكها دي (مثلاً يه كه وه عذاب نيرميري زندگی میں اس طور سے آؤے کہ میں تھی دیکھوں کیونکہ اس عذاب موعود کا کوئ وقت خاص بہت تبلایا تیاہے جنانچہ آیتِ مذکورہ بھی مہم ہے جس بیاحتمال مذکور بھی ہے غرض اگرانسیا ہوا) تو اے میرے رب مجھ کو ان طالم لوگوں میں شامل نہ کیجئے اورہم اس بات بر کہجوان سے وعدہ کر ہے ہیں آبکومی دکھلا دیں قادر ہیں (باتی جب مک اُن میر غداب نه آوے) آپ (ان کیساتھ بیمعاملہ رکھنے که) ان کی بری کادفعیہ اليے برتاؤے كرديا كيج جوبہت بى اچھا (اورزم) برد (اورائنى ذات كے لئے بدلدند ليج بكك بمارے حوالدكرد ما تعجئي بم خوب جانتے ہيں جو تجھ يہ (آپ كي نسبت) كها كرتے ہيں اور (اگر آ يكو بمقان ابشرت غیطانجایا کرے تو)آبے کوں دُعاکیا کیجئے کہ اےمیرے دب میں آپ کی بنا ہ مانگنا ہوں شیطا لؤ کے دسوم سے (جومفضی موجا ویں کسی ایسے امر میطر ن جو خلا ٹ مصلحت ہو کو خلا ب شریعیت نہ ہو) اور ا سے میرے رہیں آئے کی بناہ ما مگتا ہوں اس سے کہ سٹیطان میرے یاس تھی آدیں (اور وسوسرڈالنا تو در كذاريس اس سے وہ غيظ جاتا رہے گا ۔ بيركفارائيخ كفروالكارمعادم بازنبيں آتے) يہاتك جب انیں سے سی د کے سری پر موت آ دکھڑی ہو) تی ہے (اور آخرت کا معائنہ ہونے لگتا ہے) اُسوقت (آ مکھیں کھلتی ہیں اور اینے جہل و کفریر نادم ہو کر) کہتا ہے کہ اے میرے رب (مجھ سے موت کو ٹالدیجے اور) مجھ کو (دُنیامیں) بھر دالیں بھیجائے تاکہ میں (دُنیا) کو بیں جھوڑ آیا ہوں اُسیں (بھرحاکر) نیک کام کردن د لینی تصدیق وطاعت حق تعالی اس درخواست کورد فرماتے ہیں کہ) ہرگز (ایسا) نہیں (جوگا) یہ (اسکی) ایک بات ہی بات سے حبکویہ کے جارہا ہے (اور بوری ہونے والی نہیں) اور (وجداس كى يە بےكم) ان لوگوں كے آگے ايك (جيز) آ (دكى آنے والى) ب وكر جيكاآنا صرورى، اور وہی و نیامیں واپس آنے سے مانع ہے مراد اس سے موت ہے کہ اسکا و قوع بھی و قت مقدر يرضرورى م وَكُنُ يَتُوَخِوَكُلْنُهُ نَفُسًا إِذَاجِكَاءً حَلَقَالًا ورموت كے بعد ونيا ميں توكرانا جي) قیامت کے دن تک رفانون اللی کے فلات : ۱۰

معارف ومسائل

قُلُ دُنِي المَّا وَ وَوَلَ آيَةِ مَا يُوْعَدُونَ ٥ دَبِ قَلَ تَجْعَلَى فَى الْقَوْمِ الظّلِمِينَ ٥ مطلب إن دونول آيتون كايد ہے كر قرائ كريم كى بہت كى آيتوں يمن شركين وكفا دير عذاب كى عيد مذكور ہے جو عام ہے قيامت ميں تو اسكا و توع تعلى ادرفقينى ہے دُ نيا بين ہونيكا بھى احتال ہو كھريہ عذاب اگر دُنيا بين ان پر داقع ہو تو اسمين بيدا حتال ہو ہے كر آنخصرت على الله عليہ وقم كے زمانہ كے بعدائے اور يہ جى احتال ہے كر آنخصرت على الله عليه م كے زمانے بعدائے اور يہ جى احتال ہو ہوئے ہو تو اسمين الله عليه م كے زمانے بين آئي ہى كے سامنے اُن برالله كاكوكى عذا آتجا كے اور يہ جى احتال ہو ہوئے ہيں آئي ہى الله عليه م كو نيا وى لكليف مين متا تر ہوتے ہيں گو آخت ميں انكوكوكى مذاب عذاب كا اخرصرف طالموں مذاب نہ ہو بلکہ اس دُنيا كى لكليف پر جو اُن كو پہنچتى ہے اجر بھی ہے ۔ قر آن كريم كا ارشا دہ ہے [قَعَافُوفَنَهُ اِللهُ وَاللهُ اللهُ مَن اللّهُ مَن اللّهُ مَن اللّهُ مَن اللّهُ اللّهُ مَن اللّهُ مِن اللّهُ مَن اللّهُ مَن اللّهُ مِن اللّهُ مَن اللّهُ مِن اللّهُ مَن اللّهُ مِن اللّهُ مَن اللّهُ مَن اللّهُ مَن اللّهُ مِن اللّهُ مَن اللّهُ مَا مَن اللّهُ مَن اللّهُ مَن

ان آیات میں رسول الله صلے الله علیہ کم کہ یہ دُعا تلقین فرمائی گئی ہے کہ یاالله اگران لوگوں پر آپ کا عذاب میرے سامنے اور مبرے دیکھتے ہوئے ہی آنا ہے تو مجھے ان ظالموں کیساتھ نہ رکھنے رسول اللہ صلے اللہ عکیہ کم معصوم اور عذاب ہی سے محفوظ ہونا اگر جہر آپ کے لئے بقینی تھا گر کھر بھی اس دُعاکی تلقین اس لئے فرمائ گئی کہ آپ ہر حال میں اپنے دب کو یا در کھیں ائس سے فریا دکھیں ائس سے فریا در کھیں ائس سے فریا دکرتے دہیں تاکہ آپ کا اجر بڑھے ۔ (قبطی)

دُمَا عَلَىٰ آنَ مَوْ يَدِكَ مَا نَعِنُ هُوْ لَقَلِ دُوْنَ ، مِنِي بِهِم كواسِ بِرِوُرَى قدرت ہے كہ بم آپ كے سامنے بى آپ كوان بر عذاب آ ا ہوا دكھلاد بى بعض فسترین نے فرما ياكہ آگر جہاس اُست بر آئخصرت صلى الله عكيبُهم كى بركت سے عذا عِلْم منہ آنيكا وعدہ الله تعالى كيطوف ہو حكام دَماكات الله الله عند به مؤرد الله من الله كور الله الله من الله كر نبوالے نہيں كہ آب ان كے اندر موجود ہو كيكن خاص خاص لوگوں برخاص حالات ميں عذائي نيا ہى بيس آ جانا اسكے منافی نہيں -اس آيت ميں عبيا كدفرما يا ہے كہ ہم اس پر قادر ہيں كہ آپ كوهمى ان كا عذائي كھلا ديں وہ اہل كم برقعطا ور محبوك كاعذاب بھرغز وہ بدر ہيں مسلما فوں كى تاوار كا عذاب آئيكے سامنے ہى ان بر براجيكا تھا (قطبى)

 کفار ومشرکین سے اُن کے مظالم کے مقابلے میں عفود درگز رہی کرتے دہنا، اُن پر ہا تھ نہ اُٹھانا، یہ کھم آیاتِ جہاد میں بھی اس شرن فلق کے بہت سے مظاہر اُتی رکھے گئے کہ عورت کو مثل نہ کیا جائے، بھی کو فتل نہ کیا جائے جو نہ ہی توگہ سلمانوں کے مقابلے پر حبی کہ عورت کو مثل نہ کیا جائے ، بھی کو فتل نہ کیا جائے اورجس کو بھی فتل کریں تو اُس کا مُشَلَدُ نہ مقابلے پر حبی فتل کریں تو اُس کا مُشَلَدُ نہ بنادیں کہ ناک کان دغیرہ کا طالبیں، وغیرو کا میں اوکام مکارم الا فلاق ۔ اسی لئے بعد کی آیت میں آئے خضرت میں انسٹر مکتیم کو شیطان اورائے و ساوس سے بناہ با نکھے کی دُ عا تلقین کی گئی کہ عین مینا فقت کے فلا فت کوئی چیز شیطان کے قتال میں بھی آپ کی طوت سے عدل وانصا مت اور مکارم افلاق کے خلا مت کوئی چیز شیطان کے خصتہ دلا نے سے صا در نہ ہونے یا گے وہ دُ دعا یہ ہے ؛۔

وَقُوْلُ وَيَّ الْمُوْدُ وِلِكَ مِنْ هَمَزْتِ الشَّيطِيْنِ ٥ وَ اَعُوْدُ وِلِكَ دَتِ اَنْ يَجْعُرُونِ السَّيطِيْنِ ٥ وَ اَعُودُ وِلِكَ دَتِ اَنْ يَجْعُرُونِ اللَّهِ الْفَطْ هَمْوَكَ مِعْنَ وَهَكَا وِنِ الدَّرِ الْمَنْ عَلَيْهِ اللَّهِ وَعِقَامِ وَمِعْ اللَّهِ وَعِقَامِ وَمِنْ اللَّهِ وَعِقَامِ وَمِنْ اللَّهِ وَعِنْ اللَّهِ وَعِقَامِ وَمِنْ اللَّهِ وَعِقَامِ وَمِنْ اللَّهِ وَعِقَامِ وَمِنْ اللَّهِ وَعِقَامِ وَمِنْ اللَّهِ اللَّهِ السَّامِ وَمِنْ اللَّهِ وَعِقَامِ وَمِنْ اللَّهِ وَعِقَامِ وَمِنْ اللَّهِ وَعِقَامِ وَمِنْ اللَّهِ وَعِنْ اللَّهِ اللَّهِ السَّامِ وَمِنْ اللَّهِ السَّامِ وَعِقَامِ وَمِنْ السَّامِ وَمِنْ السَّامِ وَعِنْ اللَّهِ السَّامِ وَمِنْ اللَّهِ السَّامِ وَمِنْ السَّامِ وَعِنْ السَّامِ وَعِقَامِ وَمِنْ السَّامِ وَمِنْ السَّامِ وَمِنْ السَّامِ وَعِنْ السَّامِ وَمِنْ السَّامِ وَمِنْ السَّامِ وَعِنْ السَّامِ وَعِنْ السَّامِ وَمِنْ السَّامِ وَمِنْ السَّامِ وَمِنْ السَّامِ وَعِنْ السَّامِ وَمِنْ السَّامِ وَمِنْ السَّلَمُ وَاللَّهِ وَمِنْ السَّلَمُ وَالْمُنْ الْمَالِمُ السَّلَمُ وَالْمَالِي السَّلَمُ وَالْمُنْ الْمَنْ الْمَالِمُ وَمِنْ الْمَالِمُ الْمِلِي الْمَالِمُ الْمَالِمُ الْمَالِمُ الْمَالِمُ الْمَالِمُ الْم

آئ بین خود فرد می میم میں حضرت جابر بن عبدالنظر دستی النظر عندسے دوایت کی ایک بین خود فرایا کہ استخصرت سے النظر علیہ میں معادے یاس کہ استخصرت سلی النظر علیہ میں الم میں ہر حال میں محقا دے یاس اس کہ استخصرت سلی النظر علیہ میں اور غلط کا موں کا دسوسہ دل میں ڈالتا رہتا ہے (فتطبی)

اسی سے بناہ مانگئے کے لئے بیر دُعا تلفتین فرمائ گئی ہے۔

سری ارجی و تقت کا فریس موت کے وقت کا فریر جب آخرت کا عدائیا منے آنے لگاہے تووہ تمکناکر تا ہے کہ کاش میں بھر و نیا میں کوٹ جا دُں اور نیک کل کرکے اس منداہے نجات ماکر کو۔ ابن جریر نے بروایت ابن جریج تھل کیا ہے کہ رشول امٹر صلے امٹر عکیہ م نے فرما یا کہوت سے وقت مومن جب رحمت کے فہر شنے اور رحمت کے سامان سامنے دیجھنے لگتا ہے تو سادن القرآن بحد الله و المؤلفة المؤلفة و المؤلفة المؤلفة و المؤلفة المؤلف

خلاصتهيير

پھرجب (فیامت کاروز ہوگادر) صُور کھیڈنکا جادیکا آور ایسی ہول وہیبت میں گرفتار
ہونگے کہ) اُن میں (جو) باہمی رشتے ناتے (سے) اُس روز (وہ بی گویا) نہ رہیں گے (لینی کوئ کسی ک
ہمدردی نہ کر بیگا جیسے اجنبی اچنبی ہوتے ہیں) اور نہ کوئ کسی کو یُوجِے گا (کہ بھائی تم کس حالت میں
ہو، غرض نہ رشتہ نا ناکام آدیگا نہ دوسی اور تعارف، پس وہاں کام کی چیز ایک ایمان ہوگا جس
کی عام شنا خت کے لئے کہ سب پرظا ہر ہو جا دے ایک ترا زوکھڑی کی جادیگی اور اس سے اعمال عقالہ کا وزن ہوگا) سومی خض کا پلہ (ایمان کا) بھا ری ہوگا (بینی وہ مومن ہوگا) توا ہے لوگ
کا میاب (بینی نجات پانیولے) ہونگے (ادر نہ کور ہول وہ بیت کے حالات کہ نہ کسی کا رشتہ کام آوے
مذوری اور نہ کو گئے گئے کہ موال میں ہو، یہ ان کوئین کو پیش نہ آئیں گے لقولہ تعالی لائے فرٹھو گھڑے
مذوری اور نہ کو گئے گئے کہ موال میں ہو، یہ ان کوئیش نہ آئیں گے لقولہ تعالی لائے فرٹھ گئے گئے دہیں گے ان کے جہرول کو (اس جہم کی) آگ
آلفن ہا گا گا گورک کیا در آس (جہم میں میں ان کے میں ہمیشہ کے لئے دہیں گے ان کے جہرول کو (اس جہم کی) آگ
ارشاد فریا دیں گئے کہ کہ کیوں کیا میری آئیس (ڈینا میں) تم کو پڑھ کرشنا کی نہیں جایا کہ تھیں ،
ارشاد فریا دیں گئے کہ کیوں کیا میری آئیس (ڈینا میں) تم کو پڑھ کوٹسنا کی نہیں جایا کری تھیں ،
ارشاد فریا دیں گئے کہ کیوں کیا میری آئیس (ڈینا میں) تم کو پڑھ کوٹسنا کی نہیں جایا کری تھیں ،
اورتم اُن کوٹھ للا یا کرتے تھے (یہ اُسکی سرا بل رہی ہے) دہ کہیں گئے کہ اے ہما رے ہما رے دب

ہاری برخبی نے ہم کو (ہمارے ہاتھوں) گھیرلیا تھااور (بیشک) ہم گمراہ لوگ تھے (لینی ہم جُرم کاافرار اوراس برندامت ومعذرت کا ظهار کرکے درخواست کرتے ہیں کہ) اے ہما رے رب م کواس دجتم ے ١١ب أكال ويجئے (اور ووبارہ رُنيا ميں بيجد يجئے لقوله تعالى في التق البحاق فأرْجِعْنَا نَعْمَلُ صالحاً) بيمراكريم دوباده (ايما) كرس توجم بينك يؤرك قصور واربي (أسوقت مكونوب منزاد يجية اوراب جيور ويجية) ارشاد موكاكراسي دجهنم ميں راندے موسئے براے رمواور تجدے بات مت كرد (فيني ميم نهين منظور كرتے ، كياتم كو يا دنهيں رہاكه) ميرے بندوں ميں ايك كروه (ایمانداروں کا) تھا جو (بیچارہے ہم سے) عرض کیا کرتے تھے کہ اے ہما دے پرور دگارہم ایمان ہے آئے سوہم کونجشر کیئے اورہم پردھمت فرمائے اور آب سب رھم کرنے والوں سے بڑھ کر رخم کرنے والے بیں سوتم سے (محض اس بات برجو برطرح قابل قدر تھی) ان کا مذاق مقرد کیا تھا (اور) بیا تک (امتکامشغلہ کیا) کہ ان کے مشغلہ نے تم کو ہماری یا دبھی تُھلا دی اورتم اُن سے بنی کیا کرتے تھے (سو ان كاتوكيه نه بكرا چندروزكي كلفت تقي كه صبركرنا براجيكا ينتجه ملاكه) مي نے اُن كو آج اُن كے صبركا میر بدلد دیا ، کدوی کا میاب بروئے (اور تم اس ناکا می میں گرفتا ر بوئے مطلب جواب کا بیٹواکتھارا قصوراس فابل نہیں کرمسزا کے وقت اقراد کرنے سے معات کردیا جا دیے کیو بکتم نے ایسا معاملہ کر جس سے ہمار سے حقوق کا بھی اتلات مواا ورحقوق العباد کا بھی۔ اور عباد تھی کیسے ہمار سے مفبول درموب ﴾ جويم سيخصوصيبت خاصته كھتے تھے كيونكه ان كوسخريه بنانے بي اُن كى ابندائد اضاعة حق العبدہے اور تكذبيب حق جو منشا سخريد كاب كدا ضاعة حق الشرب دونول لازم آئے بس اس كى سنزاكے لئے دوام اورتمام ہى مناسب ہے اور مومنین کو اُن کے سامنے جنت کی تعمقوں سے کا میاب کرنا یہ بھی ایک سزاہے تھا دیلئے کیونکہ اعداری کامیا بی سے روحانی ایزا ہوتی ہے بیر توجواب ہوگیا اُن کی درخواستوں کا آگے تنبیہ ہے اكن كے بطلان اعتقاد ومشرب برتاكه ذكت برذكت وحسرت برحسرت مونے سےعقوب بي شرت ہو،اسلتے) ارشاد ہو گاکہ (اجھا یہ تبلائر) تم برسوں کے شارسے کس قدر مدت زمین میں رہے ہوگے د چونکه دماں کے بول وہدیت سے اُن کے بوش وحواس کم بوجی موبیکے اور اُسدن کاطول بھی میش نظر ہوگا) وہ جواب دیں گے کہ (برس کے ، بہت رے ہو بھے تن) ایک دن یا ایک ن سے میں کم ہم دہے موجکے (اور یے یہ ہے کہ ہم کو یاد نہیں) سو کینے والوں سے (یعنی فرشنوں سے كما عال داعارسب كاحساب كرتے تھے) يُوجد ليجة ، ارشاد ہوگاكه (يوم اور معض يوم تو غلط ہے مگرا تناتو تھا رے اقرار سے جو کہ میچے بھی ہے تابت ہوگیا کہ) تم روٹیا ہیں) مقدر دی کا مرت رہے (میکن) کیا خوب ہوتاکہ تم (یہ بات اُسو قت) سمجھتے ہوتے (کہ دُنیا کی بقانا قابل اعتبار ہے ا در استے سواا ور کوئ دا رالقرار ہے مگر دہاں تو بقار کو ڈنیا ہی میں خصر مجھ ااور

اس عالم کا انکادکرتے ہے کہ گؤگلائ بھی الآخیکا شنالا ٹینکا کہ کا نتخی بیبنع ٹونین ، اوراب چونلطی طاہر ہوئی اور سیحے تو بیکار ، اور فلطی اعتقاد پر ترمنبیہ کے بعد آگے بھراس اعتقاد پر ذہرہے ، جوبطور فلا صفحون فرد قراد داو بڑم کے ہے کہ) ہاں تو کیا تم نے یہ خیال کیا مقاکہ ہم نے تم کویوں ہی مہمل (فالی از حکمت) بیراکر دیا ہے اور یہ (خیال کیا تھا) کہ تم ہما رہ پاس منہیں لائے جا دیگے دمطلب یہ کہ جب ہم نے آیات میں جن کا صدق دلائل سیحے سے تا بت ہے قیامت اور امیل عال کے بدلے کہ فیردی تی تو معلوم ہوگیا تھا کہ محلفین کی تخلیق کی حکمتوں میں سے ایک حکمت یہ بھی ہے کہ اسکا مسئوکر ہونا کہت اور ایمال عال کے بدلے کی خبردی تی تو معلوم ہوگیا تھا کہ محلفین کی تحکمت میں سے ایک حکمت یہ بھی ہے کہ اسکا مسئوکر ہونا کہت بارا امرش کر و تھا)۔

معارف ومسائل

فَإِذَا نَفِخَ فِي الطَّوْرِ، فَكَرَّ أَنْسَابَ بَيْنَهُوْ، قيامت كروزصور دومرتبه عَيْوْنكا جاككا نفخه أولى بعينى يهيغ صوركا بيرا تزبيو كاكرسادا عالم زمين وأشمان اورجواسح ورميان ہے فنا ہوجاً بيكا ا در نفخد انبرسے بھرسارے مردے زندہ ہو کرکھڑے ہوجائی کے قران کریم کی آیت نفر نفخ فیاجے فیاہے أُنْحُونَ فَا وَالْمُوقِيمَامُ عَبَيْنَظُرُونَ مِن اس كى تصريح موجود ہے۔ اس آيت مين صوركانفي ادكے مُرادب یا نفخ ثانیر، اس میں اختلات ہے -حضرت ابن عباس عبر وایت ابن جبرٌ منفذل ہے كداس أبيت مين ممراد تفخذ الحرلي ہے اور حضرت عبدالشرين مسعود رمز نے فرما يا اور بروايت عطأ يمي با حضرت ابن عباس رخ سے بھی منقول ہے کہ مرا داس جگہ نفخہ ٹانیہ ہے۔ تفسیر نظہری ہیں اسکو صحح قرار دیاہے۔حضرت عبدالطری مسعود کا قول یہ ہے کہ قیامت کے روز ایک ایک بندے مرد وعودت كومخشركے ميدان ميں لايا جائے گااور تمام اولين وآخرين كے اس بھرے جمع كے اسے کھڑاکیا جائے گا پھراں ٹرتعالی کا ایک منا دی یہ ندا رکر بھاکہ تیجف فلاں بن فلاں ہے آگریسی کا کوئ حق اسے ذیرہے توسامنے آجاتے اس سے اپناحق دصول کرنے۔ یہ وہ وقت ہوگا کہ بیٹیا اسپرخوش ہو گاکہ میراحق باب سے دیرنکل آیا، اور باب کا کوئ حق بیٹے پر ہوا تو باب خوش ہو گاکہ کسس سے و حُدُولَ كروْ بْگالای طبع میاں بیوی اور بھائی بہن جس کا جسیر کوئ حق ہوگا بیر منا دی شکرائس سے وصول کرنے ہے! کا دہ اورخوش ہوگا، مہی وہ وقت ہے جس کے متعلق اس آیت مذکورہ میں آیا ہے فاک آنسا کے تیکھٹے، مین اُسوقت با بی سی رفتے اور قرابتیں کام نہ آئیں گی کوئی سی يردهم مذكر بيكاء برشخص كواين اين فكرلكى بوكى سيمضمون اس آيت كاب يوقع كيفي المنوع ا مِنْ آخِيْدِ وَ أُمِّهِ وَآبِيْدِ وَمَا حِبَينِهِ وَبَينِيْدِ ، سِنى وه دن مِن مِن برانسان اينهاى سے، ماں اور باب سے ، بیوی اور اولادسے دُور بھا گےگا -

مطلب یہ ہے کہ دوسرے پتے بعنی سینات و معاصی کے پتے میں کوئی وزن ہی نہ ہوگا وہ خالی نظرائے گا۔
اور کفّا رکا پتہ ہلکا ہو ٹیکا مطلب یہ ہے کہ بیکیوں کے پتہ ہیں کوئی وزن ہی نہ ہوگا باکل خالی جیسا ہرکا اور کفّا کے لئے گئے ہوئے گؤٹھ الْقِیلَمْ وَزُن ہی نہ ہوگا واور میں ادشا دہے فکہ فقیع کم گھڑے ہوئے القیلی کا مواا ور میں کا تعیاست کے ون کوئی وزن ہی قائم نہ کریں گے۔ یہ حال تو مُوسنین کا ملین کا ہوا اور من سے گنا ہور دہ ہوگا۔ وسینات کے پتہ ہیں آئ کے وقت سینات کے پتہ ہیں آئ کے وقت سینات کے پتہ ہیں آئ کے دان ہوگا۔ ووسری طون کفار ہیں جن کے نیک عال بھی شرطا بیان ہوجد مذہو نے کی میں ہوئے ان کا ذکر اس مذہو نے کے میں مواحد میں ہوئے ان کا ذکر اس اختیار کیا گیا ہونے کا اور سینات کے پتہ ہیں بھی اعمال ہونگے ان کا ذکر اس کا تیت ہیں صراحہ نہیں کیا گیا بلکہ عوماً قرائ کریم میں شہرگا اسلما اول کی سزا وجز اسے سکوت ہی اختیار کیا گیا ہونے کا اور میں گئے وہ کہ نے والی کے زمانے میں جتنے مؤمنین صحابہ کرائم کتھے اختیار کیا گیا ہوئے کے اور اس کے دور اس کی دور اس کیا ہوں گئے اور اس کی دور اس کی دور اس کے دور اس کے دور اس کی کئی اقوائے تو ہو کر کی گور ہو کہ میرہ گنا اور سے پاک ہی دہے اور اگراکسی سے کوئی وہ موجبی گیا توائے تو ہو کر کی وہ ہر سے معاف ہوگیا۔ (منظ ہوں)

قران جیدی ایک آیت خکار ایک کومنتان می ایک کورایا که قربای که ایسے دوران کوکول کا ذکرہے جیکے نیک ایساں ملے مجلے ہیں۔ اُن کے منتعلق حصرت ابن عباس نے فربایا کہ قیامت کے دوران کوکول کا حساب اس طرح ہوگا کہ جس شخص کی نیکیاں اُسکے گنا ہوں سے بڑھ جائیں نواہ ایک ہی مقدارسے بڑھے وہ جست میں جائیگا اور جس شخص کے سیئات اور گناہ کی مقدارسے بڑھے وہ جست میں جائیگا اور جس شخص کے سیئات اور گناہ کی مقدارسے بڑھے وہ دور خ میں جائیگا گراسس مومن گنہگاد کا دور خ میں وافلہ طہیرادر پاک کرنے کے لئے ہوگا جیسے لوہ ہا، سونے دغیرہ کواگئی میں دافلہ کم میں اور ڈ میں جائیگا گا جب والی کہ ایک کرنے کے لئے ہوگا جیسے لوہ ہا، سونے دغیرہ کوا گیا جب قران کرنے دائی اسکا گا ورحض ت ابن عبائی اور جنت میں دافل ہونے کے قابل ہوجا دیگا اور جنت میں دافل ہونے کہ ایک کرایک دائے کرا ہر کئی گئی تو بی تھی ہوگا تو بیت کے دائی کا منتظر رہے گا اور بالا تراکو بھی جنت اور ایک کے دائی کے دائی کے دائی کا منتظر رہے گا اور بالا تراکو بھی جنت اور ایک کے دائی کا درجات کے در میان کی میزان کا منتظر رہے گا اور بالا تراکو بھی جنت میں دافلہ ہو با میں کا درجات کے در میان کی میزان کا منتظر رہے گا اور بالا تراکو بھی جنت ہیں دافلہ ہی جائے کا دربالا تراکو بھی جنت ہے میں دافلہ ہی جائے کا دربالا تراکو بھی جنت ہے در میان کا منتظر رہے گا اور بالا تراکو بھی جنت ہے میں دافلہ ہی جائے کا دربالا تراکو بھی جنت ہے میں دائی کی در درخ اور جنت کے در میان کی میزان کا منتظر رہے گا اور بالا تراکو بھی جنت کے در میان کی کا منتظر رہے گا اور بالا تراکو بھی جنت ہو میں در خواد کی در درخ اور داور دائی در در خواد کی در میان کی در میان کی در درخ در درخ در درخ در در خواد کی در میان کی در درخ در خواد کی در در خواد کی در میان کی در درخ در خواد کی در در خواد کی د

ابن عباس کے اس قول میں کفار کا ڈکرٹہیں صرف مؤمنین گنہ گاروں کا ذکر ہے۔ وزین اعمال کی کیفیت البض دوایات صربیت سے معلوم ہوتا ہے کہ خود انسان مؤمن و کا فسسر کہ میزان مدل میں دکھ کر آولا جائے گا۔ کافر کاکوئی وزن نہ ہوگاخواہ وہ کتناہی فریہ اور موٹا ہو۔

(بخادی و سلم من صریف ابی ہر پر قربن) اور بیض دوایات صدیف سے علوم ہوتا ہے کہ کیا کے نام کا کے نام کا کھا کہ کا کے نام کا کہ کہ کہ کا کے دران اور حاکم نے میصندون حضرت عبدالشر بن عمر نئے دوایت کیا ہے۔ اور بعض دوایات سے بیم حاوم ہوتا ہے کہ ہرانسان کے اعمال جو دُنیا میں بے دران بح ہم ماعواض ہوتے ہیں محترمیں ان کو جسم کر کے میزان عمل میں رکھا جائیگا وہ تو نے جائیں گے۔ طرافی و غیرہ نے یہ روایت این عبک ن رسول الترصی التر علیہ میں ایک و خیرہ کے۔ ان سرب وایا ت حق کے الفا فااور میں تھنے مرافرانی و غیرہ نے یہ روایت این عبک ن رسول الترصی التر علیہ میں ایک حدیث ہوتے کہ اس آخری تول کی تا سید کے الفا فااور میں تھنے مرافران کی میں کہ کہ کہ اس اس کو بھی اسکا کہ ہے کہ قیامت کے دورایک گئی اس کی جمرائی ہے کہ ایک و ایک و ایک و ایک اس کو بھی اسکا کہ ہے کہ قیامت کے دورایک گئی ہے کہ کہ ایک و ایک و ایک و ایک و ایک و ایک ہوئی اس کو بھی اسکا کہ ہے تو یہ کہا درائیگا۔

میرایک چیزائی و ایک جائی ہو بادل کی طرح ہوگی اس کو بھی اسکا حدیث ت کے بقہ میں رکھ دیا جی تھر ہے دورایک کی ہوئی ہوئی ہوئی اس کو بھی اسکا کہ میں تراعلم ہے جو تولوگ کو سے کہا جائی گا کہ می تیرا علم ہے جو تولوگ کو سے اس کو بھی ایک کہ یہ تیرا علم ہے جو تولوگ کو سے کہا جائی گا کہ می تیرا علم ہے جو تولوگ کو سے اس کو بھی اسکا کہ کہ یہ تیرا علم ہے جو تولوگ کو سے اس کو بھی اسکا کہ کہا کہ یہ تیرا علم ہے جو تولوگ کو سے اس کو بھی کی کہ بیں کو خون اور علماری روشنا کی دوشنا کی دوشن

وزن اعمال کی کیفیت سے متعلق تینوق می کی روایات نقل کرنے کے بعد نفسینظیری میں فرمایاکہ اسمیں کوئی بُعد نہیں کہ خود انسان اور اسکے اعمال کوجہانی شکل میں تولا جائے یااسکے ٹامٹراعمال کو اسکے ساتھ رکھ کر تولاجائے اس لئے ان تینوں روایتوں میں کوئی تعارض اور اختلاف نہیں۔

وَهُوْدُونِ مَا كَلِوْمَ اللّهِ عَلَىٰ كَلِوْنَ مَ كَالِمَ لَهُ لَفْتَ مِن اُسَ تَحْفَ كُو كَهَا جَامَا ہِے مِن کے دونوں ہونشا سے دانتوں کو مذبحیها میں ایک اوپر رہے دوسرا نیچے دانت نکلے ہوئے نظرا میں جونہا یت بدصورت ہے جہتم میں تہمی کا اوپر کا ہوف اُوپر چڑھ جا کی گا اور نیچ کا ہونٹ نیچے لئے۔ جا کیگا دانت کھنے پیکے نظرا دیں گے میں میں کی ہوئی کا بہا فری کلام ہوگاجی کے جواب میں کی ہوجا کیگا کہ ہم سے کلام مذکر و بھر دہ کسی سے کچھ کلام نہ کرسکیں کے جانور دن کی طرح ایک دو کے کی طرف بھو کی ہے۔ اور ہی فوٹو یہ و نیم رہ نے کو برب کو ہے سے نقل کیا ہے کہ قرائی میں اہل جہتم کی ہانے دونوائی اُس کے بور کے جواب دیا گیا اور یا نجویں کے جواب میں گم ہوگیا کہ تھو کہ کو گئی ہیں اُن میں سے چار کا جواب دیا گیا اور یا نجویں کے جواب میں گم ہوگیا کہ تھو کو آپ نہمی آن کا اس کے بعد کچھر مذبول سکیں گے۔ (مظہری)

معارف القرائ برششم المحتل الرائد القرائ التوري التوري التوريق التوري التوري التوري التوريق ال

خلا مرتفسير

(ادریدسپ مضامین جب معلی ہو چکے) سو (اس سے یہ کا ل طور پر نابت ہوگیا کہ) انٹرتعالی بہت ہی مالیشان ہے جو کہ بادشاہ (ہے ادر با دشاہ بی) حقیقی ہے اس کے سواکوئی بھی لائن عباد تا بہیں (اور دہ) عرش عظیم کا مالک ہے اور جو تحف (اس امر پر دلائل قائم ہونے کے بعد) اللہ تعالی کے ساتھ کسی ادر معبود کی بھی عبادت کرے کہ جس (کے معبود ہونے) پر اسکے پاس کوئی بھی دلیل بہیں سواسکا صاب اس کے دب کے یہاں ہوگا (جبکا نیتجہ لازی یہ ہے کہ) یقیناً کا فردں کو فعلائ نے ہوگا (جبکا نیتجہ لازی یہ ہے کہ) یقیناً کا فردں کو فعلائ نے ہوگا (جب حق تعالیٰ کی یہ شان ہے تو) آپ (اور دو کے لوگ بدرجہ ادلی اُوں کہا کریں کہ اسے میرے دب (میری خطابین) معاف کر اور (ہر حالت میں بھی پر) دیم کر (معاش میں بھی ، تو فیق طامات میں بی ، نجا ہے آخرت میں بھی ، عطامے جست میں بھی) او کو سرب دیم کرنے دالوں سے بڑھو کر رحم کرنے دالا ہے۔

معارف ومسائل

JA,

سُورَةِ المُؤمِنون ١٨: ١١ قبصندين ميرى جان ہے اگر كوى آدى جويقين ركھنے والا جوبير آئيس بہاڑ پر بڑھ دے تو بيہاڑا بي جگه سے سے سکتا ہے (قطبی ومظہری) رب اغفِيْ وَارْحَهُ مِهال اغص اور الرحود ولذن كامفعول ذكرنهي كياكياكه كيامعات وي اوركس چيز مررح كري اس سے اشار ه عمري كى طون ہے كہ دُعاء مغفرت شامل ہے ہرمضراد لكليف ده چيزك ازاله كو اور دُعار رحمت شامل ہے ہر مُراد اور محبوب چيز كے حاصل ہونے كو۔ كيو كم في مضرت ادر جلب منفعت جوانساني زندگي اور أسك مقاصد كا خلاصه بي دونول اسميل شائل وكن ومنظهري) اور رسول الشرصال الشرعكية كودعا منفرت ورحمت كي تلقين ما وجود يك أتي معصوم اود مرحوم ي بين دوال أتت كوسكها تحيين كالمحين اس دعا كالتنااية ما مرناجا بيراقطي إِنَّ لَا يُعْلِلُ الْكُلِفِي وْنَ مُومنون كَى ابتدا قَنْ آفْلَةَ الْمُوْمِنُونَ سِيرِويُ مَتَى الْد انتها لا يُفْلِحُ إِلْكُفِي وْنَ يركى كُنُى رَضِ معلوم بواكه فلاح يعنى عمل كاميابي مومنين ي كاحصية كقاراس سے محروم إين ب تَمَّتَ يُسُورُونُ الْمُوفِينُونِ فِي عَمَانِيمَ إِيَّا مِنْ الرَّالِ لِيُحْرِّمِ لِلْ السَّالِة وَذِلا فَيْ يَوْم عَاشِوْرَاء يَوْم الاشْنِينَ وَلِلْه الْحَمْنُ اوّلِه وَأَخِرَة وَايَاهُ إِينَ أَلُ التوفيق الانتكام الباق كما يجي في ويرفينا لا وان يتنقبل مين وعجعله ذمخوا لاخوت وهوالمستعان



mr.

سُورَةِ النُّور ٧٠٢٧

معارف القرآن جسكدهم

سورة البور

مَوْدَةُ البَوْرِيْنِ مِنْ اللَّهِ وَالْمِنْ الْمُولِيَّةُ الْكُلِّحُ وَلِيْنَا لِمُنْ اللَّهِ وَالْمُنْ اللَّ سُورة وُرَد بين بين ناذل وى الداس كى جِنْسُمْ آيتين اور لا ركوع اين

يرايك سورت ہے كرہم في أتارى اور ذمر برلاذم كى اور أتارى اليس باتيں صاف ید کاری کرنے دالی عورت اورمرد سومارد برایک کو دونوں سے جَلْ وَ وَلَا تَاخُنُ كُوْرِهِمَا رَأْفَةُ فِي دِيْنِ اللّهِ إِن كُنْ تُوْرُمِنُو اور شر آدے کم کو ان پر ترس الشر کے حکم چلائے میں اگر مم یقین ر لله واليوم الرخو وليشهل عن ابهما طايفة من المؤمنان الشريداور و يجيد دن بد اور ديكيس أن كا مادنا بكه لوك موره بور کی بعین خصوصیا اس سورت میں زیادہ تراحکام عقت کی حفاظت اورسترو حجاب مے متعلق ہی اوراً سى كى تكميل سے المتے حدِ زنا كا بيان آيا - تجھائي سُورت بعيني مُقْوِمِ بنون مين سُلا اوْں كى فلاح وُنياو آخرت كوجن أوصات يرموتوت وكعاكيا ہے أن ميں ايك اہم وصف سترم تكا ہوں كى حفاظت تقى جو خلاصه ہے ایواب عقت کا۔ اس سورت میں عقت کے اہتمام کے لئے متعلقہ احکام ذکرکے گئے این، اسی لئے عور توں کو اس سورت کی تعلیم کی خصوصی برایات آئ ہیں۔ حضرت فاروق عظم وخ نے اہل کوفہ کے نام اینے آیک فرمان میں تحریر فرمایا عقموا نساء کھ ميورة النور، نعني ايني عورتول كوسورة بزرى تعليم دد -

بعادت القرآن جسلد سُورةُ النّور ٢٣: خوداس سُورت كى تمهيدين الفاظ سے كى كئى ہے كہ سُورَةً كَا نُزَلْنْهَا وَفَرَ صَٰنْهَا ، يہجى اس سورت کے فاص استمام کی طرف اشارہ ہے۔ یہ ایک سورت ہے جس (کے الفاظ) کو رجھی ہم (ہی) نے نازل کیا ہے اور اس رکے معانی یعنی احکام) کو (بھی) ہم (ہی) نے مقرر کیا ہے (خواہ وہ فرض و داجب ہوں یا مند وقیمستے ہے) ا دریم نے (ان احکام پر دلالت کرنے کے لئے) اس (سورت) میں صاف صاف آیتیں نازل کی ہی تاكمة مجھود اورعل كرو) زناكرنے والى عورت اور زناكرنے والا مرد (وونوں كا حكم يہ ہےكہ) ان ميں سے ہرایکے تودیہ عاددادتم اوکوں کو ان دونوں پر انٹر تعالیٰ کے معاملہ میں ذرا رحم مذا ناجا ہیے دکارحم کھاکر چھوٹردو یا سزامیں کمی کردد) اگرتم اللہ ریاور قیامت کے دن برایمان رکھتے ہواور دواؤں کی مسزاکے وقت مسلما لذل کی ایک جماعت کوحا صر رہنا جاہئے د تاکہ اُن کی رُسوای ہو اور دعیفے شننے والوں كوعبرت إو) -معارف ومسائل اس سورت کی پہلی آیت تو بطور تمہید کے بحرس سے اسکے احکام کا خاص اہتمام بیان کرنامقصور ہو اوراحكام مين سب سے يہلے ذناكى سزاكاذكر جومقصود سورت عفت اور أس كے لئے نگا ہوں ك كى حفاظت ببغيراجازت كسى كے كوميں جانے اور نظركرنے كى مانعت كے احكام آھے آنبوالے ہيں زناكا ازبكاب ان تمام احتبياطول كوتوز كرعفت كے خلاف انتہائ حدير بېنجيناا دراحكام اللہيہ كي کھلی بغاوت ہے۔ اسی کئے اسلام میں انسانی جرائم پرجوسز ائیں (حدود) قرآن بی متعین کردی گئ ہیں زناکی سنرا بھی ان تمام جرائم کی سنراسے اشدا در زیا دہ ہے زنا خود ایک بہت بڑا جُرم ہے کے علاوہ ایسے ساتھ سیکڑوں جرائم لیکر آتا ہے اور اُسکے نتائج پوری انسانیت کی تباہی ہے۔ دُنیا میں جینے قتل د غار مگری کے واقعات بیش آتے ہی تھیت کی جائے توان میں مبتیر کا سبب کوئ عورت ا ودائس سے حرام تعلق ہوتا ہے اس لئے شروع سورت میں اس انتہائ جم و بے حیائ کا قلع تمے کے نے کے لئے اس کی عدمشرعی مثلاثی گئی ہے۔ ز ناایک جُرم عظیم اوربہت سے جرائم کرائ کریم اور احادیث متواترہ نے جارجرائم کی سنزا اوراً سکا طریقیہ كالمجرُ مرب اسلة اسلام مين المس كى خودمتعين كرديا ہے كسى قاضى يا اميركى دائے يربني فيولا الله مزابعی سب سے بڑی رکھی گئی ہے متعینہ سزاؤں کو اصطلاح سرع میں حدود کہا جاتا ہے ایک علاؤ با قی جرائم کی سنراکو اس طرح متعین نہیں کیا گیا بلکہ اسمیریا قاصنی مجرم کی حالت اورجرم کی حیثیت اور ماحول وغیرہ کے مجموعہ پر نظر کر سے جندر مرادیے کو انسدا دہڑم کے لئے کافی سجھے وہ مزادے سکتا ہے اسی مزادُں کو شراحیت کی اصطلاح میں تعزیرات کہا جاتا ہے۔ صلا نظر جائے ہیں۔ جو ری ۔ ڈاکہ کئی پاکدا من عورت پر تہمت رکھنا۔ سٹرائٹ بینیا اور ڈزناکٹر نا ۔ انہیں سے ہر حرم اپنی جگہ بڑا سخت اور دُنیا کے امن وامان کو ہرباد کرنے والا اور بہت سی خرابیوں کا مجموعہ ہے تین ان سب میں بھی زناکے عواقب اور نتا کی مرحیے دنیا کے نظام انسانیت کو تباہ وہر با دکرنے والے ہیں وہ شایکری دو کے جُرم میں نہیں۔ اور نتا کی مرحیے دنیا کے نظام انسانیت کو تباہ وہر با دکرنے والے ہیں وہ شایکری دو کے جُرم میں نہیں۔ انسان کو سالامال و جا مُداد اور اپنا سب مجھ قربان کر دینا اتنا مشکل نہیں جننا اپنے حرم کی عفت پر ہا تھ ڈالگ وہ ایک وہ با کہ دینا میں دو زمرہ یہ واقعات بیش آتے رہتے ہیں کہ جن لوگوں کے حرم پر ہا تھ ڈالگ ہے وہ اپنی جان کی پروا کے بغیر زانی کے قتل دفا کے در ہے ہوتے ہیں اور بیجوش انتقام ساول بی جاتھ ڈالگ ہے وہ اپنی جان کی پروا کے بغیر زانی کے قتل دفا کے در ہے ہوتے ہیں اور بیجوش انتقام ساول بی جاتھ ڈالگ ہے وہ اپنی جان کی پروا کے بغیر زانی کے قتل دفا کے در ہے ہوتے ہیں اور بیجوش انتقام ساول بی جاتھ ڈالگ ہے وہ اپنی جان کی پروا کی دیتا ہے۔

رو) حس قوم میں زنا عام ہوجائے وہاں کا نسب محفوظ نہیں رہتا۔ مال بہن بیٹی دغیرہ جن منے دیکاح حرام ہے جب یہ رشتے بھی غائب ہوگئے توابنی بیٹی اور بہن بھی ٹیکاح میں آسکتی ہے جو

ازناسے می زیادہ اشرقیم ہے۔

(۱۲) غورکیا جائے تو دنیا میں جہاں کہیں بدائی اورفتہ و ضاد ہوتا ہے اسکا بیشتر سبب عورت اور اس سے کم مال ہوتا ہے۔ جو قانون عورت اور دولت کی حفاظت صح افدان میں کرسے ان کو ایک مقررہ صدود سے با ہر نہ بخطف دے وہ می فالون امن عالم کاضامن ہوسکتا ہے۔ یہ جگر زنا کے الم مفاسدا ورخرابیاں جمع کرنے اورفف ل سے بیان کرنے کی ہیں۔ انسانی محاشرہ کے لئے اسکا تباولاری معلوم ہونے کے لئے اتنا ہمی کافی ہے اس لئے اسلام نے زنا کی سزاکو دوسرے سات جائم کی شراوں سے اسٹ رقراد دیا ہے وہ مرزایت ندکورہ میں اسطرے بیان کی کئی ہے القرافیة کو القراف فا جُولُدو اُکُنی میں اسطرے بیان کی کئی ہے القرافیة کو القراف فا جُولُدو اُکُنی میں اسطرے بیان کی کئی ہے القرافیة کو القراف فا جُولُدو اُکُنی میں اسلام نے زنا کی سزاکو دوسرے سات جائم کی شراوں کے واحد کی میں ایک کا بعد میں لایا گیا ہے سزاد دلوں فاطب کرکے کم لیدیا و مرزان کا بادر میں لایا گیا ہے سزاد دلوں میان ہے کو ایک ہے کہ اکثر تو صرف مردوں کو مخاطب کرکے کم لیدیا و میان ہے مورین ہیں اُن کا علیوں ذکرنے کی ضرورت ہی ہیں تھی جائی ہے مار اسٹر تعلی کی کہ جو احکام بیان کے گئے ہیں عورتیں بھی اُن کے میں میں میں میں میں میں میں میں کہتے ہیں عورتیں بھی اُن کے دکر کو بھی ذکر رجال کے تمن میں میں میں کہتے ہیں جو اور کی کہتے ہیں کو ایک ہے وہ وہ کی مردوں ہی کہتے ہیں جو اور کی کہتے ہیں جو اور کا میں میں میں میں میں کو رکھ کی کہتے ہیں جو دی کہتے ہیں جو دی کہتے ہیں جو دی کہتے ہیں جو دی کہتے ہیں کہتے ہیں جو دی کہتے ہیں کہتے ہیں کہتے ہیں جو دی کہتے کہتے ہیں کہتے ہیں جو دی کہتے ہیں جو دی کہتے کہتے ہیں جو دی کہتے ہیں جو دی کہتے کہتے ہیں کہتے ہیں کہتے کہتے ہیں کہتے کہتے ہیں کہتے ہیں جو دی کہتے ہیں کہتے کہتے کہتے ہیں کہتے کہتے کہتے کہتے کہتے کہتے ہیں کہتے کہتے ہیں کہتے کہتے ہیں کو دی کہتے ہیں کہتے کہتے کہتے کہتے کہتے ہیں کہتے کہتے ہیں کہتے ہیں کہتے ہیں کہتے کہتے ہیں کہتے کہتے ہیں کہتے کہتے کہتے کہتے ہیں کہتے کہتے ہیں کہتے کہتے کہتے ہیں کہتے کہتے کہتے ہیں کہتے ہیں کہتے کہتے کہتے ہیں کہتے کہتے کہتے ہیں کہتے کہتے کہتے کہتے کہتے کہتے ہیں کہتے کہتے ہیں کہتے کہتے ہیں کہتے کہتے ہیں کہتے کہ

المه ارتدادي مراكو الكراكة فقياء نه صرودكي تعداد بان بحل بان كي مد - تحديقي عمّاني ١١٢١١ه

ستورة المتوريم: الصَّالُوعَ وَأُمِّينَ النَّ كُوعَ اورجهال مردوعورت دولؤل بي كاذكر كرنا موتاب توترسيطيني يوني له مرد کا ذکرمقدم عورت کا بعد میں ہوتا ہے - چوری کی مزابی اسی ضابطہ وفیہ تھمیطابق اکستّنا سِ قَ وَلِلسَّارِقِعَةُ فَأَقَطَعُوْ أَكِيْلِ يَهُمَا فَرِما يَا سِيحِين مِينِ مردجور كومقدم اورعورت كوموخر ذكركميا بح مَكرمزائ زنایں اقل توعورت کے ذکر مے منی آجانے پراکسفا نہیں کیا گیا بلکہ صراحة ذکر مناسب مجھاگیا درے عورت كا ذكر مردير مقدم كركے بيان كياكيا - اسميں بہت سى كمتيں ہيں اوّل توعورت صفيف الخلقة ا درطبعی طور پر قابل رحم مجھی جاتی ہے اگراسکا صراحة و کرنہوتا توکسی کو پیٹبھیم دسکتا تھا کہ شا پرعورت س سنا مصشنیٰ ہے۔ اورعورت کا ذکر مقدم اس کئے کیا گیا کہ فعل زناایک ایسی ہے جیائ ہے جسکاصدورعورت کیطرف سے ہوناانتہائ بیا کی اور بے پروائ سے ہوسکتا ہے کیو تکہ قدرت نے اس کے مزاج مين فطرى طوريرا يك حياء اور ايني عفت كى حفاظت كاجذبه قويه و دليت فرمايا ہے اور اُسكى حفاظت کے لئے بڑے سامان جمع فرمائے ہیں کس کی طرف سے اس فعل کا صدور برنسبت مرد کے زیادہ اشده بخلات چور کے کدمردکوانشر تعالی نے کسب اور کمائ کی قوت دی ہے۔ اپنی ضروریات اپنے على سے حاصل كرنے محدواقع اسكے لئے فراہم كئے بين يہ اُن كوجيور كرجورى كرنے يرا ترائے يمرد كے لئے براعادا ورعیب ہے۔عورت کے چونکہ یہ حالات بہنیں ہیں اگرائس سے چوری کا صدور ہوجائے تو مردکینسبت سے ابون اور کم ورجہے۔ فَاجْمِلِكُ وَالْفُظْ جَلْلُ كُورُا مارنے كے معنى بن آيا ہے وہ جلد مے تق ہے كيونكه كورُا عمومًا چمراے سے بنایا جاتا ہے۔ بعض حضرات مفترین نے فرمایا کانفظ جَلُد سے تعبیر تحفظی اسطوٹ اشارہ ک كديبركوژوں يا دُرّوں كى صرب اس حدثك رہنى جاہيئے كه اسكاا ثرانسان كى كھال تك رہے كوشت تک نه پہنچے۔خود رسول انٹرصلے انٹر عکتیہ کم نے کوڑے لگانے کی سنزایں اسی توسط و اعتدال کی تلفین عَلاً فرمائ بيك كدكورًا منهب سخت موص سے كوشت تك أو صرحات اور منهبت زم موكد أس سيكوئ خاص تکلیف، یمن من بہنچے اس جگه اکثر حضرات مفترین نے بدر دایات صریف سنداود الفاظ کیشا کھی ہی سوکوڑوں کی ندکورہ سزا صرف غیر | یہ بات یادر کھنے کی ہے کہ زناکی سنزاکے احکام بتدریج آئے ہیں شادى شرده مرده عورت كيلة مخصوص كا درخفت سے خدت كى طوف برا سے گئے ہيں جيے شراب كى مُرمت شادی شده لوکوی سزاستگساری ہے میں بھی اسی طرح کی تدیج خود قرآن میں مذکور ہے جس کی تفصیل بہلے كزر يكى بدنياى مزاكاست يهلا علم تو ده تفاجو سوره نساركى آيات نمبره١، ١٩، ين مذكور به ده يرب. وَالْمِي يَاتِيْنَ أَلْفَاحِشَةُ مِنْ نِسَائِكُ مُ ا درجو کوئی بدکاری کرے مقاری عور توں میں سے تو گواہ فَاسْتَشْهِ لُ وَاعَلَيْهِنَ ارْبِعِ الْمِنْكُوفِوْنَ عَلَيْهِا لَا الْعِنْدُ وَالْتُعِدُمُ لاو اُن برجاد مردایوں میں سے پھراگر دہ گواہی دنوس تو فَأَمْسِكُوهُ فَي إِلْمِيكُونِ حَتَّى يَتُوكُمُنَّ الْمُؤْتَ بندركهوان عورتول كو كمرون مي بهاتك كدا تها ال كو

وت یا مقرر دے اللہ تعالی اُن کے لئے کوی داہ - ادرجوم درس تم میں دہی مرکاری تو اُن کوایڈا دو مجھراگر وہ توہر کسی ادرا پنی اصلاح كريس توان كاخيال جيور دو- بيشك الشرتعاك توبرقبول كرف والامهر بان ---

أَوْ يَجُعِلَ اللَّهُ لَهُنَّ سَبِيلًا ٥ وَالَّانَ الْبِ يَأْتِيَا فِهَا مِنْكُوْ فَالْدُوْكُمَا فَإِنْ تَابِا وَأَصْلَحَا فَأَعْضِوْ اعْنَهُ آاِنَّ اللَّهُ كَانَ تَوَابًا لَّهِ اللَّهِ اللَّهُ كَانَ تَوَابًا لَّرِجِيِّمًا (سورة يشار)

إن دو نون آيتون كي عمل تفسيراور صروري بيان سورة بنيارين آچكام - يهان اس كفاسكاا عاده كياكيام كدزناكى سنراكا بتدائ دورسامن آجائے -إن آيتول ميں ايك تو ثبوت زناكا فاصطريقير چارمردوں كى شهادت كے ساتھ ہونا بئان فرمایا ہے ۔ دوسرے زنائى سنزاعورت كے لئے گھرمیں قيدر كھنا اوردونو مے متے ایدا بینجیانا مذکور ہے اور ساتھ اسیں یہ می بان کر دیا گیا ہے کہ سزا زنا کا بیکم آخری نہیں آئندہ

اور كي كم آيوالا إ أَرْ عَبِعَلَ اللَّهُ لَهُ تَ سَبِيلًا كَاللَّهُ مَا يَهِ عَلَى اللَّهُ لَهُ تَ سَبِيلًا كا يرى فهوم -مذكوره سنرامين عورتوں كو گفسر ميں قيدركھنا أسوقت كافي قرار دياكيا اور دونوں كوايذا دينے كي سنرا کافی قرار دی گئی مگراس ایزاا ور تکلیف کی کوئی خاص صورت خاص مقدار ا در حد بئیان نہیں فرمائی ہج بلكه الفافط قراتن مصعلوم وترماسي كدزناكي ابتدائ سزا صرف تعزيري تقى جس كي مقدا أمشر بعيت سي متعین نہیں ہوئ ملکہ قاضی یا امیر کی صوابدید پر موقوت تقی کے س لئے ایڈا دینے کا مبہم نفظ اخت بیار ا فرما يكيا مكرسا تهنى أدُيجُعَلَ الله كَفَيْنَ سَبِيلًا فرماكراس طوف اشاره كردياكه يه موسكتا بحراتنده ان مجرموں سے بئے سنرا کا کوئ اورطریقیہ جاری کیاجائے۔جب شور ہونو کی آبیت مرکورہ نازل ہوئ توحضرت عبدالله بن عبك ن في فرماياكه سؤده نسارمين جو دعده كياكيا تصاآد يُجَعُلَ لله كَالْهُ كَاهُنَ سَبِيدُلّا معنی سے تنا اللہ تعالی استھ لئے کوئی اور سبیل تبا دیے توسورہ بور کی اس آبیت نے وہ سبیل تبلا دی تی

سوكور كارنے كى سزاعورت مرد دونوں كيلئے متعين فرمادى داسكے ساتھ ہى حضرت ابن عباس الل نے سو کوڑے مارنے کی سزاکو غیرشا دی شدہ مرد وعورت کے لئے محصوص قرار دے کر فرمایا -يعنى الرّج مرلتيب والجلل للبكر اليني ومبيل اورمنزائ زناكي تعيين يركوشا وى شره

كياجائ اورغيرشا دى شده محسوكورك اوناسزاب-

(صحع بخارى تماب التفسير فيه ١٥٥) مرد وعورت سے يه كناه سرزد بوتوان كوستكسادكر كے ختم

ظاہرہے کہ سورہ نوری مذکورہ آیت میں تو بغیری تفصیل کے سزائے زنا سو کوڑے ہونا مذکورہے۔ اس بھی کاغیرشادی شرو مودوعورت سے ساتھ مخصوص ہونا اور شادی شدہ کے لئے رجم بعنی سنگسادی كى سنرا موناان كوكسى دومرى دليل حديث سيمعلوم بهوا بوگا اور وه عاريث صحيسكم ومستداحد سنن نسائی، ابوداؤد، ترندی اوراین ماجرمیں حضرت عبادہ ابن صامت کی دوایت سے اس طرح آئ ہے كروسول الشرصلے الشرعكيم نے فرمايا:- مجھ سے کم مال کر تو مجھ سے علم عال کر تو کہ اللہ تعالی نے ذائی مرد وعورت کے لئے وہ سیل جسکا وعدہ سورہ نساری آیت مرد وعورت کے لئے وہ سیل جسکا وعدہ سورہ نساری آیت میں ہوا تھا اب ورہ تورسی فربادی ہے وہ یہ کے غیرشادی مرد وعورت کے لئے سوکوڑے اور سال بھر طبا وطنی اور شادی شرہ مرد وعورت کے لئے سوکوڑے اور سال بھر طبا وطنی اور شادی ۔
شرہ مرد وعورت کے لئے سوکوڑے اور سنگسا دی ۔

خن واعتی خن واعتی قل جعل الله المهای اسپیلا البکر بالبکر حبله ما ثنه و تغریب م مبیلا البکر بالبکر حبله ما ثنه و تغریب م والنیت بالنیت جلل ما ثنه والتجبور

غیرشادی شده مردوعورت کی سزاسوکوڑے جوآیت بزرمیں مذکورہ ماس حدیث میں اُس کے ماعقائيك مزييسزا كاذكرب كدمردكوسال بجرك لئ جلا وطن بني كرديا جائے اسمين فقها كا ختلان کہ بیرسال بھرکی جلا وطنی کی سنرا مرد زانی کوسوکوڑوں کی طرح لازی ہے یا قاضی کی صوا بدید بریوتو وہے كرده حزورت مجعة توسال مجرك لئے چلا وطن مي كردے -امام عظم ابوحنيفررو كے نزديك بي آخسرى صورت صحیح ہے بعنی حاکم کی رائے برموقوت ہے۔ دوسری بات اس حدیث میں یہ ہے کہ متا دی شدہ مرد وعورت کے لئے سنگسادی سے پہلے سوکوڑوں کی سنراجی ہے مگردوسری دوایات حدسیہ اور بنى كريم صلى المترعكية لم اوراكثر خلفار رابتدين كے تعالى سے تابت يہ ہے كہ يہ دونوں نرائي جمع نہیں ہوں گی۔ شادی شیرہ پر صرف سزائے سنگساری جاری کی جائے گی۔ اس حدیث میں خاص طوريريه بات قابل نظريج كررسول الشرصلى التعليبه وللم نياس مين أويَجْعَلَ اللهُ كَانَ سَبِيلًا ى تفسيرفسى مائ ہے ۔ اور تفسير ميں جو بات مشۇزگا بۇركى آيت بى مذكور ہے تعینی سوكور ہے لگانا - اس بر تجهرمزید چیزون کااصافه بھی ہے ا دّل سوکوڑے کی سنزا کاغیر شادی شدہ مردوعوں کے لئے محضوص ہونا، دوسرے سال بھر کی جلا وطنی کا اصّافہ تنیسرے شادی شدہ مردوعورت کے لئے دہم وسکساری کا محم - ظاہرہے کہ اسیس سورہ بورکی آیت پرجن چیزوں کی زیادتی دسول ا صلے اللہ عکیہ کم فرط ی وہ بھی وجی اللی اور حکم ریّاتی ہی سے تفی اِن هُوکِلَةٌ وَتُحَى مَنْوَى ، اور سِنجبراور ان سے براہ راست سننے والوں کے حق میں وہ وی جولصورت قران تلاوت کی جاتی ہے اوروہ وی جس كى ملادت منہيں ہوتى دونوں برابر ہيں ۔خود رسول الله صلے الله عليہ لم نے صحابة كرام كے تجمع عام ك سائت اس يرعل فرمايا- ماعز اور غامديه يرسزائ رجم و سنگسادى جادى فرمائ -جوتم كتب صريت مين اسمانيد صحيحه كيسائه مذكور ہے اورحصة ت ابدير روة اور زيد من خالد حين كى دوايت يوس یں بوکہ ایم نے برشادی شدہ مرف نے جوایک شادی شدہ عورت کا ملازم تھا اس کیسا تھ زناکیا ۔ زانی لڑکے کا باب اس كوكيكر المخضرت صلے الله عكية لم كى حدمت ميں حاضر ہوا۔ واقعہ اقراد سے ثابت ہوگي تو وسول الشرصيف الشرعكية لم في فرمايا لا قضين بينكما بكتاب الله ، ليني مين تم وون كمعالم كا فيصله كتاب الشرك مطابق كرذ تكا- بيحرية كم صادر فرما ياكه زاني لا كاجوغير شادى شده تفااسكو

معادف القرآق جسيلاشهم

مسوکوڑے لکا نے جادی اورعورت شادی شدہ محقی اُس کورتم دستگسا دکرنے کے لئے حضرت اُنگیس فا کو تھم فر مایا اُنھوں نے خودعورت سے بیان لیا اُس نے اعتراف کرلیا تو اس پر بجم نم کریم صلالت مکتیم رقم وسنگسادی کی سنزا جادی ہوگ (۱.ن کنیں

اس مدیق میں دسول انٹر صلے انٹر عکیہ لم نے ایک کو سوکوڑ ہے لگانے کی دوسرے کوسنگساد کرنے کی سزادی اور دوفوں سزاؤں کو قضار بھتا ب التہ فربایا ، حالا بحد آیت سور کہ نور میں صرف کوٹروں کی سنراکا ذکر ہے ، سنگسا ری کی سنرا تذکور نہیں ۔ وجہ دہی ہے کہ دسول الٹر صلے الشر عکیہ کم کوجوہس آیت کی بھل تفسیر ترسی ارتفاعی کی میڈر بعہ دی الٹر تعالی نے تبلا دیا تھا وہ ساراکتاب الشری کے میں ہے گواسیں سے بعض حصر کتاب الشری مذکور اور متلو بہیں ۔ میجے بخاری دلم غیرہ کتب مدیث میں ہے گواسیں سے بعض حصر کا خطبہ بروایت ابن عبائ من مذکور احر سے بھی میا کے الفاظ یہ ہیں۔ مدیث میں حضرت فارون غیرہ کا خطبہ بروایت ابن عبائ من مذکور ہے جی مسلم کے الفاظ یہ ہیں۔

حضرت عمر بن خطائي في فرما يا جبكه وه رسول المنطسالية قال عمرين خطاب وهوجالس على منبر عكييهم مح منبرر تشريف وكفته تقد الترتعالي في مجد ريسول الله صلاالله عليه ويسلم إن الله بعث صلے اللہ عکتی کم اوق کسیا تھ مبیجا اور آپ برکتا ہا ذل فرمای عجدا صدالله عليه وسلوبالحق واتزل عليه توجو كيركتاب الشرس آب يرتازل مطأاسيل يتوريم مي الكتاب فكان عاانزل الله عليمأية الوجم جس كوبهم نے بڑھا ، يا دكيا اور تجها الميرر شول الشرصنے الشر قرأناها وعيناها وعقدناها فجروسول عكيلم نحصى رحم كياا درتم نياكي بعدوتم كياءاب مجهي الله صلى الله عليته المروديمنا بعل فاختى خطره ہے کہ زیا نہ گزر نے پر کوئ یوں نہ کہنے لگے کہ ہم رجما ان طال بالناس نوان ان يقول قائل مانجولاتيم فى كتاب للله تعالى فيضلوا الكم كتاب الشرس منهي ياتے تدوه أيك بي فريض جيوروين ے مراہ ہوجاوی جوالشرف نازل کیا ہے اور مجھ لوکردم بتزكيفهم انزلها الله وإن الرعم في كا كلم ت ب الشرسي حق ہے أس تحف يرج مردد الا كتابليش حق على وينا ذا إحصي عور توں میں سے مصن ہو تعنی شادی شدہ میکا سے زنار الزيعال النساء اذاقامت البينة او مشرعى شهادت قائم دوجائة ياحمل ادراعتران بإياجائة كان الحبل والاعتراد مم صبح ٢٦)

یه روایت صبح بخاری بین مجی زیا در تفضیل کیسائی مذکور ہے (بخاری <u>۹۰۰۱</u> جلد) اورنسائ میں ہس روایت سے بعض الفاظ ہے ہیں ۔

> انا لا بخدمن الرجوران الله على الله عليه وسلو الله الاوان وسول الله عدالله عليه وسلو تعارجورورجهنا بعده ولولاان يفول اللو ان عم زاد فى كتاب الله ما ليرفي لكتبت

زناکی سزا میں ہم مشرعی حیثیت سے رجم کرنے پر مجبور ہیں کیونکہ دہ ادشری عدود میں سے ایک عد ہے تحوب مجھ لوکم دسول الشرصلے الشرع کشیے کم نے خود رجم کیاا درہم نے آپ کے بعد بھی رجم کیا۔ اور اگر بین خطرہ نہ ہو تاکہ کہنے والے ہیں کے عمر نے کتاب اللہ میں اپنی طرف سے کچھ بڑھا دیا ہے تو میں قرآن کے کسی گوشہ میں بھی اسکو کھھ دیتا ۔ اور عمر بن خطا گواہ ہے عبدالرحمن بن عوف گفاہ ہیں اور فلاں فلال حی اب گواہ ہیں کہ رسول النہ مصلے اللہ مکیٹی کم نے دجم کیا اور آئے کے بعد ہم نے رجم کیا ۔

فى ناحية المصحف وشهد عرين الحنطاب وعبد الرحمن بن عوث وفيلان فلان ال رسول الله صف الله عليم رحم و ورجمنا بعد الحديث (ابن مير)

حضرت فادوق اعظم من کے اس خطبہ سے بظاہر یہ نما بت ہوتا ہے کہ کم رہم کی کوئ ستقل آیت ہے جے استوں ہوتا ہے کہ کہ مرتم کی کوئ ستقل آیت ہے جے استوں ہوت کا دوق ہونے استوں نور کا ایت کے استفاظ منہیں بتلائے کہ کیا سختے۔ اور مذیبہ فرمایا کہ اگروہ اس آیت بور کے علاوہ کوئ مستقل آیت ہے تو قران میں کیوں ہنیں اور کیوں کا لاقت اور نہیں کی تلاوت ہیں کیا کہ اگر مجھے یہ خطرہ مذہ و ناکہ لوگ مجھے پر کا الرام کی تو میں اس آیت کو قران کے حاشیر پر کھھ دنیا ۔ کما دواہ النسائ

خلاصتہ کلام یہ ہے کہ سور اُولوکی آبیت مذکورہ بیں جو زانیہ اور زانی کی سسزا سوکوڑے لگانا مذکو یہ رسول الترصلے اللہ عکیہ لم کی محمل تشریح و تصریح کی بنا برغیرشادی شدہ نوگوں کے لئے محضوص سے

سُورة النُّور ٢٢: ٣ ادر شادی شده کی سنزارجم سے پیتفسیل اگر چیالفاظ آیت میں مذکور نہیں مگر حیں ذاتِ افدنس پر يه آيت نازل موئ خودان كى طون ناقابل النتكس وضاحت كيساته يفصيل ندكور ب اورصر زمانى تعليم ادشادى نهين مبكدمتعدد باراس تفضيل يعل عيى صحابركرام مح مجمع كم سامنية تابت سيداورب تبوت ہم تک تواتر سے دربعہ بہنجا ہوا ہے اس لئے شا دی شدہ مردوعورت پرسزائے رجم کا حکم درحقیقت کتاب الله ی کا حکم اورائسی ... کی طرح قطعی اور تقینی ہے اس کوئوں سی کہاجاسکتاہ ومنرائ وجم كتاب اللز كاحكم ہے اور بيري كها جاسكتا ہے كەمزائے وحم سنتِ متواترہ سے طعی التبوت جبيها كه حضرت على رن سي الفاظ منقول بين كه رجم كالتحاصية تناست وادرحاصل دونون كالبك بي ایک ضردری تنبیه اس مقام پرجهان جهان شادی شده اور غیرشادی شده کے الفاظ احقرنے کھے ہیں ان الفاظ کو ایک آسان تعبیر کی حیثیت سے لکھا گباہے۔ جملی الفاظ محصن اورغیر محصن ، یا شیت اور کرے حدیث میں آئے ہیں ۔اور محصن کی مشرعی تعربی اصل میں یہ ہے کہ حیں مخص ز بها حصح کیسا تھا بنی زوجہ سے میک شرت کرلی ہوا در دہ عاقل بھی ہو۔ مراد احکام بیں سب تجرسي مفہوم ہے تعبیري مہولت کے لئے شادی شره کا نفظ لکھا جاتا ہے۔ شرائے زنا بیں تدایج | مذکورہ بالا روایات حدیث اور آیات قرائن میں غور کرنے سے علوم ہوتا ہے ہے تین درجے کے ابتدارٌ زنا کی سزا ہلکی رکھی گئی کہ قاصی یا امیرا پنی صوا بدیدیر ک جُرَم مے مرتکب مردوعورت کو ایزا پہنچائے، اور عورت کو گھے میں مقیّر رکھا جائے، جیسے ر شورهٔ نسارمین اسکا حکم آیا ہے۔ دوسرا دُور وہ ہے جسکا حکم سورهٔ نورکی اس آیت میں آیا ہے کہ دونوں کو سوسو کوڑے لگائے جاوی تیبسرا درجہ وہ ہے جورشول الترصلے التار علیہ نے آیتِ ندکورہ نا ذل ہونے کے بعد ارشاد فر مایا کہ سوکوڑوں کی سنزا براُن کوکوں کے لئے اکتفاکیا جائے جو شادی شدہ نہ ہوں اور شادی شدہ مردوعورت اس کے مرحکب ہوں تو ای مزارجم دسکساری اسلامی قانون میں جس جم کی مزاسخت ہے اسے جساکہ اور بیان کیا کیا ہے کہ ڈناکی سزااسلام میں ب شوت کے لئے سٹرانط بھی سخت رکھی گئی ہیں جرائم کی سٹرا دُں سے زیادہ سخت ہے۔اس کے ساتھ اسلامی قانون میں اس مے نبوت سے لئے مشرالط بھی بہت سخت رکھی کئی ہیں جن بیں درا بھی کمی رہے یا شیمیدا وجائے تو زناکی انتہائ سزاجس کو حدکہا جاتا ہے وہ معاف ہوجاتی ہے صرف تعزیری سزایقدرهٔ م باتی ره جاتی ہے۔ تمام معاملات میں دو مردیا ایک مرد ادر دوعور توں کی شہاد ثبوت سے لئے کانی بوجاتی ہے سکر حتر زنا جاری کرنے کے لئے چارمرد گوا ہوں کی مینی شہا دے میں بیں کوئ التیکس نه موشرط صروری ہے جیسا کہ شور ہ نیساری آیت میں کرز جیکا ہے۔ دوسری احتیاطا درشترت إس شهادت ميں يہ ہے كه اكر شهادت زناكى كوئ شرط مفقة د ہونے كى بنا پرشهادت دركى كئى تو

يهم شهادت دين والوں كى خيرتبيں - أن ير قذب بينى زناكى حُجُونى تنهمت كاجُرم قائم بوكر حدِّ قذف أسى كورث لكائ جان كى صورت ميں جارى كيجاتى ہے۔ اس كئ ذرا سائنھ مرد نے كى صورتميں كوئ شخص اس کی شہا دت پرافدام نہیں کرسکتا۔البتہ جس صورت میں صریح زنا کا ثبوت منہ وگڑ شہا ڈ سے دو مرد وعودت کا غیرمشرع حالت میں دیکھٹا تابت ہوجائے تو قاصی اُن کے جرم کی حیثیت مے مطابق تعزیری مزاکوڑے لگانے دغیرہ کی جاری کرسکتا ہے میزائے زنا اوراس کی شرائط دغیرہ مع مفصل احكام كمتب فقرمين مذكور بن وبال ديه جاسكة بي -

محتی دیلجانو کے سافعال بیج کام میکر کور کری و کے ساتھ یا جانوز کے ساتھ بیفعل کرے تو وہ زیا میں وہل ہی یا نہیں اوراً س کی سنراجھی سنرائے زناہے یا کھھ اور اس کی تفصیل سورہ نسار کی تفسیس گزر کھی ہے كه آكرچه تغت اودا صطلاح مين بيرفعل زينا نهين كهلاتا اوراسي ليئة اس بيرعترزنا كااطلاق نهين موتا سراس کی سزامی این سختی میں زنا کی سنزاسے کم بہیں۔صحابہ کرام نے ایسے تحص کوزندہ جلاد

کی سترا دی ہے۔

لَا تَأْخُلُ كُوْرِ وَهِمَا رَأْفَ فِي فِي اللَّهِ ، سزائے زنا جو تكر بہت سخت ہے اور كس كا احتمال ہے کہسٹرا جاری کرنیوالوں کوان پر رحم آجائے سڑاکو جھوڑ بیٹیس یا کم کردیں اس لئے کس کے سائق يركم مجى دياكياكه دين كے اس اہم فريفيدكى ادأيى ميس مجرموں ير رحم اور ترس كھاناجاز نہيں۔ ادافت ورحمت اورعفدوكرم برجكه محود ب محر مجرمون يردهم كهاني كانتيجه سارى خلق خدا كے ساتھ بے دھی ہے اس التے ممنوع وناجارہے -

وَلْيَشْهُانُ عَنَ ابَهُما طَايِفَة عِلْمِنَ الْمُؤْمِنِينَ العِينَ مزائح زِنا جارى كرنے كے وقت مسلمالون کی ایک جماعت کو حاصر رہنا چاہئے۔اسلام میں سب سزاؤں اورجھیوصاً صدور کوننظرماً يرجارى كردين كاطريقه رائح ب ناكه ويجهن والون كوعبرت بهدسكراي جماعت كواسمين حاضروموجود

رہے کا حکم بیکھی سرائے زناکی خصوصیت ہے۔

اسلام میں ابتدار جرائم کی مردہ بوشی کا حکم ہے | نواحش اور بے حیائ کی روک تھام کے لئے شریعیت ليكن جب معاملينهاوت سے تابت بوجائے تو يور اسلام نے دور دور تك يہرے بيان اے بين عور توں جرمونی بوری رسوای می عین محمت قرار دی تی ہے یر رو لازم کردیا گیا۔ مردوں کو نظر نیجی رکھنے کا محم دیاگیا۔ زیور کی آواز یا عورت کے گانے کی آواز کو نمنوع قرار دیاگیاکہ وہ بے حیائ کے لئے محرک میں اس کے ساتھ ہی جب شخص سے ان معاملات میں کو تاہی دیکھی جائے اسکو خلوت میں توسمجھانے کا تحكم ہے مگراس کو رُسوا کرنے کی اجازت نہیں لیکن جونف ان تمام سٹرعی احتیاطوں کو توڑ کراس درجہ میں بيني كياكماسكام مشرعي شهادت سے تابت موكيا تواب اسكى يرده يوشى دوسرے توكوں كى جرأت برهانے ٠٠٠٠ استورة المتور ١٠٠٠٠

معادف القشرآن جسالد شم

کا موجب ہوسی ہے اسلے ابتک جنناا ہتما م پر دہ پوٹی کا شریعیت نے کیا تھا اب آمنا ہی اہتما م آگی تعفیٰ کی اسرویت نے کیا تھا اب آمنا ہی اہتما م آگی تعفیٰ کی اور دُسوای کا کیا جاتا ہے اسی گئے ذنا کی سنزاکو صرف منظرِ عام پرجا دی کرنے پر کفایت نہیں فر مائی بگر منالو کی ایک جاعت کو اسمیں حاصرا ورشر کیا ہے کا حکم دیا گیا۔

الزّان لا يَعْنَكُمُ الرّزانية أوْمُشْرِكَةً وْوَالزّانِيةُ لَا يَعْنَكُمُ اللّهِ الرّيَالِيةِ لَا يَعْنَكُمُ اللّهُ بالمرد نهيں بِكاعَانَ عَرْعُورَت بِكَارِكِ يَا شَرِكُ وَالْيَاكِ الدِ بِلَادِ عُورِت سِنِكُاع نِمْيِهِ رَبّا عَر

فالصريفيير

(زناایی گذی چیزے که اس سے انسان کی طبیعت کا مزاج ہی بگرا جاتا ہے اُس کی رغبت
بری ہی چیزوں کی طوف ہو جاتی ہے ایسے آدمی کیطوف وغبت بھی کسی ایسے ہی خبیت النفس کی بوتی ہو جسکا افلاتی مزاج بگرا چیزوائی (اپنے زائی اور راغب الی الزنا ہو بی حیث النفس کی بوتی ہی کاح بھی اس کے ساتھ نہیں کرتا بجر زانیہ یا مشرکہ بحورت کے اور (اسی طرح) زانیہ کے ساتھ بھی راس کے انسانہ اور انسی طرح) زانی یا مشرک کے اور ایسانہ انسانہ کی رائیں کے اور ایسانہ کی دانی یا مشرک کے اور ایسانہ کی رائی یا مشرک کے اور ایسانہ کی کاح جوزانیہ کے زانیہ ہونے کی چیئیت کیسا تھ ہوجسکا میتجہ آئدہ بھی اسکا مبتلائے زنا دہنا ہے یا کسی مشرک عورت کیساتھ ہوں سلمانوں پرحمام (اور موجب گناہ) کیا گیا ہے (گوصوت و عدم صحت میں دونوں میں فرق ہو کہ زانیہ بجیٹیت زانیہ سے کوئی نکاح کرہی لے توگناہ ہونے کے با وجود (پیکاح منفقدا ورضیح ہوجا دیکا اور مشرکہ سے زیکاح کیا تو نا جائز وگناہ ہونے کے علاوہ وہ نکاح ہی نہیں منفقدا ورضیح ہوجا دیکا اور مشرکہ سے زیکاح کیا تو نا جائز وگناہ ہونے کے علاوہ وہ نکاح ہی نہیں منفقدا ورضیح ہوجا دیکا اور مشرکہ سے زیکاح کیا تو نا جائز وگناہ ہونے کے علاوہ وہ نکاح ہی نہیں ہوگا جگہ باطل ہوگا)۔

معَارف ومسَائِل

زنا کے متعلق دوسر کھی ہیں ہیں کا مقابواس سے بہای آیت میں بیان ہو چکا ایہ دوسر کی ا زانی اورزانیہ کے ساتھ زیکا ح کرنے سے متعلق ہے اِسکے ساتھ مشرک مردیا مشرک عورت سے نکاح کا بھی ا عکم ذکر کیا گیا ہے۔ اس آیت کی تفسیر میں ایم تفسیر کے اقوال بہت مختلف ہیں ان سب میں بہل اور اسلم تفسیر وہی معلوم ہوتی ہوتی ہوتی ہوتی و خلاصة بنیں بین انقوسین کی وضاحتوں کے ذرایعہ میان کیا گیا ہے۔ فلاصدا سکایہ ہے کہ آیت کا مشروع حصتہ کوئ حکم شرعی مہیں بلکہ ایک عام مشاہدہ اور تجربہ کا میان ہج

سُحَدِجُ النَّورِ ٣٢: " جهين زنا كافعل فببيث بوناا دراسح الزات كي دُور رس مضرتون كا ذكر ہے -مطلب آيت كا يہ ہے كه زما ا يك اخلاتي زهر ہے اسكے زہر ملے اثرات سے انسان كا اخلاتي مزاج ہى بگر عبالہے أسے بھلے بُرے کی تمیر نہیں دہنی ملکرٹرائ اور خیاشت ہی مرغوب ہوجاتی ہے حلال حرام کی بحث نہیں رہتی۔ اور جوعور أس كويبنداتى بهاسكا الليقصوداس سيزناكرناا دركسس كو زناكارى يرراضى كرنا بوتاب اكرزنا كے اراد كى ميں ناكام ہوجا دے تو مجورى سے نكاح پر راضى ہوتا ہے مگر زبكاح كو دل سے پسند بنين كرماكيو مكه فيكاح كيجومقاصدين كها دمى عفيف بوكريس اودا دلا دصالح بيداكرك اوراسك لئ بيدى مصحقوق نفقة وغيره كالمميشه كے لئے يا بندم دجادے بيراليتي فس كو د بال معلوم ہوتے بيں اور حو كم اليے مخص کو در دال نکاح سے کوئ غرض ہی نہیں اسلتے آگی رغبت صرف مسلمان عور توں ہی کی طرف نہیں ملک مشرك عورتوں كيطرف بھى بوتى ہے اورشرك عورت أكرا بينے مذہب كى دجہ سے ياكسى برا درى كى رسم كى وجرت بكاح كى مشرط لكائے تو مجبوراً وہ أس سے بكاح يريمي تيا رم وجاتا ہے اس كى اسكو كھے مجث ای نہیں کہ بیزیکاح طلال اور معج ہوگا پاکشر ما باطل میرے گا۔اس لئےاس پر بیر بات صادق آگئی کماکی جس عورت كيطرت مهلى دغبت موكى أكروه مسلمان ہے تو زانيركبيرون دغبت بيوگى خوا ہ يہلے سے زناكى مادى ہویا اسی کے ساتھ زناکر کے زانیہ کہلائے یا بھر کسی شرک عورت کیطرف دغبت ہوگی جس کے ساتھ نبکاح بھى ذنائى كے علم ميں ہے يعنى وئے آيت كے بياح بلے كينى الزّان لا يَنكِح إلَّا ذَانِيَةُ أَوْمُنْسِ كَةً -اسى طرح جوعورت زناكى خوگر مرد اوراس سے توبر منہيں كرتى تو سيح مُومن مسلمان جنكامقصوالى رنکاح ادر زکاح کے مشرعی فوامد و مقاصد ہیں وہ ایسی عورت سے متو قع نہیں اسلئے ان کو اسی عورت کی طرف اصلی دغبت بہیں ہوسکتی خصوصاً جبکہ یہجی معلوم ہوکہ بیعورت زیکا ح کے بعد کھی بنی بری عادتِ زنا ندچیورے کی ۔ ہاں ایسی عورت کی طرف رغبت یا تو زانی کو ہر گی حبکا مسلی مقصداین خواہش بوری کرناہے نیکاح مقصود نہیں۔ اسیں اگردہ زانیکسی اینی ویندی مصلحت سے اس کے ساته ملنے کے لئے نکاح کی شرط لگادے توبا دل ناخواستہ نبکاح کوئمی گواد اکر لیتاہے یا کھے۔ السي عورت كے نيكاح يروة تحض راضي ور تا ہے جومشرك بوء اور جونكم مشرك سے لكاح بھى ترما زنائى ہے اس لئے اسميں دوچيزى جمع ہوگئيں كەمشرك بھى ہے اور زانى بھى - يدمعنے بي آيت ك دوسر عبل ك ين والرّانية لا يَنْكِهُ آل الدّران اوْ مُشْرِك . ندکوره تفییرسے یہ بات واضح ہوگئی کہ اس آیت میں زانی اور زانیہ سے مُراد وہ ہیں جو

ندکورہ تفسیرسے یہ بات دائنے ہوگئی کہ اس آیت میں زانی اور زانیہ سے مُراد وہ ہیں جو زنا سے تو بہ مذکریں اور اپنی اس بُری عادت پر قائم رہیں۔ اوراگران میں سے کوئی مرد خانہ داری پااولاد کی صلحت سے کسی پاکدا من شریف عورت سے نکاح کرنے با ایسی عورت کسی نیکے دہے بکاح کرنے تواس آبت سے اس زبکاح کی نفی لازم نہیں تی ۔ یہ نکاح منتر عا درست ہوجائے گا۔

جهدد فقتها يرامست امام عظم ابوحنيف ، ماك ، شافعي دغيره رحمهم الشركايبي ندم بيج ادرصحابيرام ا يسے نكاح كرانے كے واقعات ثابت بن تفسير بن تشري حصرت ابن عباش كا بھي بي فتوى تقل كيا كر ابديها آيت كاآخرى جمله ومحويم ذيك على المهومينين ،اسيس ببض مضرات مفتري و ذالك كااثناره زناكى طرون قرار دیا ہے تو معنے جملے كے بيہ وكئے كەجب زناايسا نعبيث فعل ہے تو زنا مُومنين يرح ام كرديا كيا - اس تفسير برمعين من توكوى اشكال منبي ربتها كيكن ذلك سے زنا مرا دلينا سياتِ آیت سے سے قدر بعید صرور ہے اسلنے و وسرے نفسرین نے ڈلاف کا اشادہ زیکاح زانی وزانسیہ اور شرک وشرکه میطون قرار دیا ہے اِس صورت بین شرکہ سے مسلمان مرد کا زکاح اور مشرک پی کسک عورت كافيكاح حرام بوناتو دوسرى نصوص قرات سيجي نابت باورتام أمت كے نزديا جائى مشلهب اورزاني مردس ياكدامن عورت كالإكاح يا زانيه عورت سيعقيف مرد كالإكاح حرام موناجو اس جملے سے مشتفاد ہوگا دہ اس صورت کیسا تھ محضوص ہے کہ عفیف مرد زانیہ عورت سے زیکا ح کر کے اس كوزنات مدروكے بلك نوكاح كے بعدى اس كى زناكارى برداعنى رہے كيو بكراس صورت يس يہ د تو ثیب ہو تی جو مشرعاً حمام ہے۔ای طرح کوئ مشراب یا کدامن عورت زنا کے خوکر شخص سے بہا ح کرے اورنكاح كے بعد معى اسكى زناكارى برراضى رہے يہ مي حوام ہے بيعنى ال كوكول كا يفعل حسرام اور ا گناه بمبره ب میکن اس سے بدلازم بنیں آیا کہ اُن کا باہمی زِکا حصے نہ ہو کیا طل ہوجائے۔ نفظ حرام شریعیت کی اصطلاح میں دو معنے کے لئے استعال ہوتا ہے ایک میر وہ گنا ہے اسکاکر نے والا آخرت مي ستي منزاب اور دنيايي على بالكل باطل كالعدم باسبركوي شرعي تمره احكام دنياكا ي انسين موكا جيكسى مشرك عورت سے يا جوعورتين بميندكے لئے حوام بين انين سكى سے زكا سے كرايا تو يہ نا عظیم می ہے اور ایسا زِیکاح مشرعاً کا امارم ہے زنا میں اور اسمیں کوئ فرق نہیں۔ دوسرے بیر کفعل حرام معنى كناه موجب سزام مكردنياس اس نعل كے كھ تمرات رہتے ہي معاملہ صحيح موجاتا ہے جيسے سى عورت كو د حوكه د كيريا اغواكر كم ايا بحرشرى قامد كيطابي دوكوا بول كرسا من اسكى مرضى سے ويحاج كربيا تويفعل تو ناجاً نزوح ام تقامكر نيكاح تصح وكيا اولاد ثنابت النسب م د كى اسى طرح زانيه ادرزانی کانکاح جبکداک کامقصودالی زنابی بو، زیکاح محض کسی و نیوی سی کرتے بول اور زنا سے تورینہیں کرتے ایسانکاح حرام ہے مگر دنیوی احرکام میں باطل کا لعدم نہیں۔ نکاح کے نمرات سترعیہ تفقد مهر ثيوت فسانيد ميراث سب جاري مول ك- اس طرح نفظ حدّم اس آيت ين مشركه محتى ي ملے معنے سے اعتبار سے اور زانی اور زانی کے حق میں دوسرے معنے کے اعتبار سے محمے وردوست بوگيا - اس تفسيري آيت كومنسوخ كهنے كى طرورت ندرى جيساكد معض حضرات مفسري تے فرمايا ہے والتنسجانه وتعالى اعلم -

معارف القرآن جرائي من من المنظم المن المنظم المن المنظم ا

خلاصترفيسير

اورچوک (زناکی) جمت لگائی بادا من عورتوں کو (جن کا زانیہ وناکسی دلیل یا قریبہ سنزعیہ
سے ثابت نہیں) اور پھر جادگواہ (اپنے دعوے پر) مذلا سکیں توالیے لوگوں کو اُسٹی دُرے لگا وُاور
اُن کی کوئ گواہی کیمی قبول مت کرو (بیر بھی تہمت لگانے کی سے اہی کا جز ہے کہ وہ ہمیشہ کے لئے
مردودالشہادت ہوگئے یہ تو دنیا کی سے اکا ذکر تھا) اور یہ لوگ (آخرت میں بھی سنزا کے ستحق ہیں
کیمونکہ) فاستی ہیں لیکن جو لوگ اس کے بعد (فدا کے ساسنے) تو بہ کرلیں دکیونکہ تہمت لگانے میں
اُنھوں نے المنترکی نا فرمانی کی اور حق الشرکو صالح کیا) اور (جس پر تہمت لگائی تھی اُس سے معاف
کواکر بھی) اپنی (حالت کی) اصلاح کرلیں دکیونکہ اسکاحق صالح کیا تھا) تو الشر تعالی صرفہ کو الشر تعالی صرفہ کیا گار جب
مغفرت کر نبوالا رحمت کر نبوالا ہے (بعنی ہی تو بہ کرنے سے مذاب آخرت معاف ہوجائے گا اگر چہ
شہادت کا مقبول نہ ہونا جو دُنیوی سزامتی وہ باتی رہے گی کیونکہ وہ حدِشرعی کا جز ہے اور ثہوتہ کرئے سے عداتہ وہ حدِشرعی کا جز ہے اور ثہوتہ کرئے ہے حدیثرعی صاقع نہیں ہوتی)۔

معارف ومسائل

زنائے تعلق تیسرا حکم جھوٹی تہمت جیسا کہ بہتے بیان کیا گیا ہے کہ ذیا ہو تکہ سارے جوائم سے ذیا ہو تا اور اُسی صرف ہونا اور اُسی صرف میں بگاڑا ورفساد کا ذریعی اسی سے اسلام نے دو مرسے سب جوائم سے ذیا دہ سخت رکھی ہے۔ اس لئے عدل دانصا می کا تفاضا تھا کہ اس معاملہ کے تبوت کو بڑی اہمیت دی جائے بغیر شرعی شوت کے کوئ کسی ردیا عورت پر ذیا کا الزام بھیت کے تبوت کو بڑی کہ میکانصاب جا دم درگوا ہ انگانے کی جاکت نہ کرے اس لئے ستر بعیت اسلام نے بغیر شبوت شرعی کے جسکانصاب جا دم درگوا ہ عادل ہونا ہے اگر کوئ کسی پر تبہت صریح زناکی دگائے تواس تبہت دگانے کو بھی مشد بدائم قرار دیا ادر اس جُرم پر بھی جدِ مشرعی استی کوڑے مقرد کی جسکالازی اثریہ ہوگا کہ سی خض پر زناکا الزام کوئ

شورة النور ٢٣: منص أسى دفت لكانے كى جرأت كرے كا جبكاس فاس نعل خبيث كوخود ا بني آئكھ سے د مكيھا يجاود صرف اتنا ہی نہیں بلکراس کو بیلقین ہوکہ میرے ساتھ اور تین مُردوں نے دیمھا ہے اور وہ گواہی دیں گے بیونکہ آگردوسرے گواہ ہیں بہیں با جارے کم ہیں یا اُن کے گواہی دینے ہیں شور ہو تواکیلا تیخص گواهی دیجرتهمت زنا کی سنرا کاستحق بنناکسی حال گوارا نه کرلیگا -ایک شبصہ اورجواب | رہا بیمعاملہ کہ جب زناکی شہادت کے لئے ایسی کڑی سنرطیں لگادی کی بی توجر مو كولفلي حييثى مل كمئي مذمسي كومتنها دت كى جرأت موكى مذبهبي تبوت شرعى بهم بينيج كا مذاليس مجرم بيني موسكين كي ميكر بيرخيال اس كئے غلط ہے كه زناكى عدشرعى بعنى سوكوڑے يا رجم وسنگسارى كى سنزا دين يهيئة توييشرطين بي تبيكن دوغير مرد دعورت كويجا قابل اعتراض حالت بين يا بيميائ كي باین کرتے موتے دیکھراس کی شہادت دینے رکوئ یا بندی نہیں اورانسے تمام اُمورجوزنا کے تقدما ہوتے ہیں پرمین شرعاً قابلِ سزائے بڑم ہیں تسکین حدِشرعی کی سنزا بنیں ملکہ تعزیری سزا قاصی یا حکم کی صوابد بر تسمیطابی کوڑے لگانے کی دی جاتی ہے۔اسلتے جستیف نے دومرد وعورت کوزنا میں مبتلا د عیمه انگرد دسرے گواه نہیں بی توصر کے زنا کے الفاظ سے توشہا دت نہ دیے گر ہے جابا نہ اختسلاط کی گؤاہی دے سکتا ہے اور حاکم قاصنی اس پرتعزیری سزابعد میوت بڑم جاری کرسکتا ہے۔ محصنت کون ہیں | یرنفظ احصان سے شت ہے اصطلاح سٹرع میں احصان کی دولیس ہیل مک وہ جسکا حدِ زنامیں اعتبار کیا گیا ہے۔وہ یہ کہ جس پر زناکا ثبوت ہوجا و سے وہ عاقل بالغ آزاد مسلمان ہوا درکسی عورت کیسائھ نکاح صحیح کر حیکا ہوا در اُس سے مباشرت بھی ہو حی ہو تواس پر زائے دہم وستگساری جاری ہوگی۔ دوسری قسم وہ ہے جسکااعتبار حد فذت بعنی تہمتِ زنامیں کیا تیا ہے وہ یہ ہے کہ مین خص برز نا کا الزام لگایا گیا ہے وہ عاقل بالغ آزادمسلمان بواورعفیف، ہو یعنی میلے بھی اس پر زناکا بوت نہ ہوا ہو۔ اس آیت میں بی مصنے محصینت سے بی (جصاص) مسئل - أيت والنمس عام معروف عادت كيطابق باأس واقعه كى وجه سے جوشان نزول اس اتيت كا بي تهمت زنااوراً سى منزا كاذكراس طرح كداكيا بي كنتهت لكاني ول يرو دول اور جس يرتبيت لكائ كئي وه ياكدامن عورت بهو مكر حكم شرى اشتراك علت محسب سے عام ب كوى عورت دومرى عورت يرياكسى مرديريا مردسى دوسرے مرد بر تنهمت أن الكا كے اور شوت مشرعی موجود شرمو تو بیرسب مجی اسی منرائے مشرعی کے ستحق ہو بگے د جصاص وہدا ہیں) مستلد - بد مدستری جو تبمت زنایر ذکر کی گئی ہے صرف اسی تنهت کیشا تحصوص ہے۔ دورے ا جرم می تنهمت سیخص برنگای جائے تو بیہ حدِشرعی اُس برجاری نہیں ہوگی۔ ہاں تعزیری مزاحا کا كى صوابديد محمطا بن برجيم كى تهمت يددى جاسكتى ہے۔ الفاظ قران ميں اكرجي صراحة ال

کا تہمتِ اُرنا کے ساتھ محضوص ہونا ذکر نہیں گرچارگوا ہوں کی شہا دے کا ذکر اس خصوصیت کی دلیل ہے کیونکہ چارگواہ کی مشرط صرف نبوتِ زنا ہی کے لئے محضوص ہے۔ (جصاص ہدا یہ) مسئلہ۔ حد قذف میں جو بمدحق العبدینی جس رتہمت لگائ گئی ہے اسکاحق بھی شامل ہوا سلئے

مسئلہ۔ حد ورف میں چو مکری العبر تعنی جس پر پہمت لگائی گئی ہے اسکاحق بھی شامل ہوا سکتے میر حد بھی جاری کیجائے گی جبکہ مقدد و ت بعنی جس پر تہمت لگائی گئی وہ حد جاری کرنسکا مطالبہ بھی کرے ورنہ حد ساقط ہوجائے گی دہدایہ ، مخلاف حرز زنا کے کہ وہ خالص حق الشرہے اس لئے کوئ مطالبہ مے

یا نذکرے حدِ زناجرم ثابت ہو نے برجاری کی جائے گی۔

مادث القرآن جر

وَلاَ تَفْتُ وَالْهِمُوْتُهُا وَقَا الْهِمُوتُهُا وَقَا الْهِكَا اللهِ اللهُ اللهِ المَا اللهِ اللهِ المَا اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ المَا المَا اللهِ المَا اللهِ المَال

11

منكابيان آگے آنا ہے)

معَارِف ومسَائِل

زنا کے متعلقات میں ابغان اور ملاعنت کے مصنے ایک دوسرے پرلعنت اور غضب اللی کی بددعا چوتھا تھم لِنکان کا ہے کرنے کے ہیں۔اصطلاح سٹرع میں میاں اور بیوی دو اوں کوچیدخاص قسمیں دینے کودخان کہاجاتا ہے جیس کی صورت یہ ہے کہ جب کوئ ستوہرا پنی بیوی پر زنا کا الزام لگافے یا اپنے یے کو کہے کہ بیرمیرے نطفہ سے نہیں ہے اور بیعورت جس پرالزام لگایاگیا ہے اُس کو جھوٹا تبلا دے اوراس کا مطالب کرے کہ مجھ پر چھوتی ہمت لگائ ہے اس لئے شوہر پر ہمت زناکی سنزااتی کوڑے جاری کیجا دے تواسوقت شوہر سے مطالب کیا جا و بیکا کہ الزام زنا پر جارگواہ بیش کرے۔ اگراس نے گواہ بیش کردئے توعورت پرحترِ زنالگائی جا دے گی ۔ اوراگر وہ جارگوا ہ نہ لاسکا تو ان دولؤں میں لعان کرایا جا دیگا. لینی اول مردسے کہا جاویگا کہ وہ جارمرتبران الفاظ سے جو قران میں مذکور ہیں بیرشہا دت دے کہیں اس الزام ميس سي الديانيوي مرتبريد كه كداكرمين جوث بوت مون تومجه يراد شركي معنت مو اكرشو ہران الفاظ كے كہنے سے دُكے تواس كو قيدكرديا جائے كاكہ يا تواسينے جُول ہونے كا ا قرار کردیا مذکوره الفاظ کے ساتھ پانج مرتبہ فیسیں کھاؤ اور جب تک وہ ان دونوں میں سے کوئ كام نذكرے أس كو قيدركھا جائے گا۔ اگراس نے اپنے جھوٹے ہو نيكا قراركرليا تواس برجد فذن بعنى تهمتِ زناكى سشرعى سزا جارى موكى اوراكرالفاظ مذكوره كيسائقه پايخ مرتنجسين كھاليں توجيم استح بعد عورت سے اُن الفاظ میں یا رہے تسمیں لی جا دیں گی جو قرآن میں عورت سے لئے مذکور ہیں اگر دہ قسم کھانے سے الکاد کرے تواس کو آسوقت تک قیدر کھاجا دے گا جب تک کدوہ یا توسنو ہر کی تصدیق كرساور البينجرم زناكا قرادكري تواس برحترزنا جارى كردى جاوس اوريا بهرالفاظ مذكوره كبيماته یا یخ قسیں کھا دے۔ اگر وہ الفاظ مذکورہ سے سیس کھانے پر راضی ہوجا دے اور قسمیں کھا لے تداب ر لحان أورا بوكياجس كينيتيمس ونياكى سنراس دوان عي كي كير أخرت كامعامله الله تعالى كومعسام ى سے كدان ميں سے كون حجوظ سے حجموظ كو آخرت ميں سزالے كى ، كى دنيا ميں بھى حب دو میاں بیوی بن لیمان کا معاملہ جوگیا تو یہ ایک دوسرے بریمیشہ کے لئے حرام ہوجاتے ہی شوہرکو چاہے کداسکوطلاق دے کرا زادکرف - اگر دہ طلاق منردے تو حاکم ان دو نون میں تفریق کرسکتاہے جو تجکیم طلاق بردگی - بهرحال اب ان دو دن کا آیس میں دویارہ زیکا سے تھی تھی نہیں ہوسکتا سا رلعًا ن كى نيفضيل كتب فقريس مذكور ہے۔

ربخان کا قا بن سشراییت اسلام میں شو ہر کے جذبات و نفسیات کی رعایت کی بنا پرناف ر مواہے کیونکہ سی خض برالزام زنا لگانے کا قانون جو بہلی آیات میں گزر دیکا ہے اُس کی اُدسے میزوں کا کدا درام نرنا لگانے والا چارگواه عینی پیش کرے اورجویہ نذکر کے توالی اسی پرتہمت زنا کی صحباری کی جا دیے گا۔ عام آدمی کے لئے تو یہ کان ہے کہ جب چارگواہ میسر خربوں تو وہ الزام زنالگانے سے ما تو ہے تاکہ تہمت زنا کی مزاسے محفوظ اوہ سے تکین شو ہر کے لئے یہ معاملہ مہت سکیں ہے جب اُس نے اپنی آئی سے دیکھ لیااورگواہ موجود نہیں اگر وہ بولے تو تہمت زنا کی سزا پائے اور نہ بولے توساری عمر خون کے گھونٹ پیتارہ اوراس کی زندگی و بال ہوجائے اس لئے شوہر کے معاملہ کو عام قانون کا انگ کرکے اسکامت تقل قانون بنا دیا گیا اس سے مدیمی معنوم ہوگیا کہ لوخان صوف میاں بودی کے معاملہ میں ہوسکتا ہے دوسروں کا حکم وہی ہے جو پہلی آیات میں گر دچکا ہے۔ کتب حدیث بیں اس جگہ دو واقعے ذکر کئے گئے ہیں انمیں سے آیات لیان کر دونوں کو شان نزول توار دیا ہو۔ حافظ ابن جمر اس کا قوالہ خوالی کی ایک کرنے اس کا خوالہ دو اور کی گئے ہیں انمیں سے آیات لیان کر دونوں کو شان نزول قوالہ دو اور کو شان نزول کو شان نزول کو شان نزول کو شان کا قوالہ ہو جائے گئے ۔ ایک افتار میں دونوں کو شان نزول کو اس کا قوار دیا ہے۔ حافظ ابن جمر اس کا قوار دیا ہے۔ ان کی توجیہ ذیا دہ صاف ہے جو آگے آجائے گئے۔ ایک افتار میال بن اُمیتر اور اُن کی بوی کا ہے جو چھے بخاری میں بر دایت ابن عباس من مذکور ہے اور اس دا قعہ کا اجدا کی حصہ اور آن کی بوی کا ہے جو چھے بخاری میں بر دایت ابن عباس من مذکور ہے اور اس دا قعہ کا اجدا کی حصہ اور آن کی بوی کا ہے جو چھے بخاری میں بر دایت ابن عباس من مذکور ہے اور اس دا قعہ کا اجدا کی حصہ اور آن کی بوی کا ہے جو چھے بخاری میں بر دایت ابن عباس من مذکور ہے اور اس دا قعہ کا اجدا کی حصہ کے اسکان کی دوارت سے مسئدا حمیس اسطرح آیا ہے۔

حضرت ابن عبائ فراتے ہیں کہ جب قراق کرم میں حرقادت کے اکام کی آیات نازل ہوئیں ایسی قرالات فی کو مٹون کا فیٹھ کا انداز میں کہ جب قراق کرم میں حرقادت کا بخوا کا فیٹھ کا اندازم کیا ٹیٹا ہے کہ یا تواس الزام پرچادگواہ بیش جس میں عور سے بر زناکا الزام لگا نیوا ہے مرد پر لازم کیا گیا ہے کہ یا تواس الزام پرچادگواہ بیش کر سے فواس کو جو اور جوالیا مذکر سے فواس کو جو الدہمیشہ کے لئے مرد و داانتہا دہ ہوئے کی سنا جاری کی جائے گی۔ یہ آیات کو النظر صلے اللہ علیہ اللہ علیہ کا دور ہوئی الدہمیشہ سعد بن عبا دہ دور نے در سول اللہ صلے اللہ علیہ مرکو سعد بن عبادہ دور نے در سول اللہ صلے اللہ علیہ مرکو سعد بن عبادہ دور نے در سول اللہ صلے اللہ علیہ مرکو سعد بن عبادہ کو میں اللہ علیہ کا اللہ علیہ کا اللہ علیہ کی تواس عبادہ کو سعد بن عبادہ کو مطاب کر کے فرمایا کہ آپ سن در ہوئی کہ آپ کے سرداد کیا بات کہ مرکز بات سے اس کلام کی وجہ کہر سے ہیں۔ وگوں نے عوض کیا یا در سول اللہ المرک بات کی بات کی کا آپ کے سرداد کیا بات کہر ہے ہوں ان کی سات ہوئی کہ ایک اللہ المرک بات کو میا میں در کھوں کہ خور مردا کہر جر بات کو اللہ کی طرف سے نازل ہوئی کی کو اس مال میں در کھوں کہ غیر مردا کہر جر جھا ہوا کہ مرکز ہو ایک کہر میں جار کہ ہیں اسکو دہاں ڈوانٹوں اور دہاں سے ہٹا دوں بلکہ میرے لئے یہ جائز ہیں ہوگا کہ میں اسکو دہاں ڈوانٹوں اور دہاں سے ہٹا دوں بلکہ میرے لئے یہ جائز ہیں ہوگا کہ میں اسکو دہاں ڈوانٹوں اور دہاں سے ہٹا دوں بلکہ میرے لئے یہ جائز ہیں ہوگا کہ میں اسکو دہاں ڈوانٹوں اور دہاں سے ہٹا دوں بلکہ میرے لئے یہ جائز ہیں ہوگا کہ میں جادات کو کالے دورات دورات کی کورات سے انکوں اور دہاں ہوگا کہ میں اسکو دہاں ڈوانٹوں اور دہاں سے ہٹا دوں بلکہ میرے لئے کہر کی کورات سے انکوں کو کورات سے کہ کار کورات کے کہر کی کورات کورات کی کورات کی کورات کی کورات کورات

گواہوں کو جمع کروں وہ اینا کام کرے بھاگ جائے (حضرت سنگر کے الفاظ اس جگہ مختلف فیقول میں ا خلاصہ سب کا ایک ہی ہے۔ قرطبی)

ابولی نے بی روایت حضرت انس سے بی نقل کی ہے اُس میں بر بھی ہے کہ جب آیات رہاں از لہوی تو آسمصرت صلے اللہ علیہ م نے ہلال ابن اُسٹی کو بشارت دی کہ اللہ نقائی نے محصاری شکل کا حل نا ذل فرما دیا ۔ ہلال بن اُسٹی کہ میں اللہ تعالیٰ سے اسی کی اُسپر لگائے ہوئے تھا ۔ اب رسول اللہ صلال اللہ میں کہ میں اللہ تعالیٰ سے اسی کی اُسپر لگائے ہوئے تو بہوی سے معاملہ صلے اللہ ملک بھوٹی ہے جو اللہ اللہ میں کوئی ہے جو داللہ کے معاملہ میں اسٹر تعالیٰ ہے اس کے معاملہ کے موسلے اسٹر ملک ہے۔ آنحضرت صلے اللہ میں کوئی ہے جو داللہ کی معلیہ میں ہوئی ہے جو داللہ کے معلیہ میں کوئی ہے جو داللہ کے معاملہ میں کوئی ہے جو داللہ کے معاملہ کوئی ایک جھوٹا ہے کہا تم میں کوئی ہے جو داللہ کے معاملہ کے دیا کہ نا ذرائی میں کوئی ہے جو داللہ کے معاملہ کے دیا کہ نا ذرائی میں کوئی ہے جو داللہ کے معاملہ کے دیا کہ نا ذرائی اسٹر میں کہا گیا ہے کہا کہ کہا ہی کہ کہا گیا ہے کہا ہی کہا ہے کہا کہا کہ کہا ہے کہا گیا ہے کہا گیا ہے کہا ہے کہا گیا ہے کہا ہے کہا گیا ہے کہا ہے کہا ہے کہا کہا ہے کہا گیا ہے کہا ہوئے کہا ہے کہا ہوئی کہا ہے کہا ہے کہا گیا ہے کہا ہے کہا گیا ہے کہا ہے کہا ہے کہا ہے کہا ہوئی کہا ہوئی کہا ہے کہا

كالمنبرآ ياحس كے الفاظ قرآنی بيرين كر اكرمس حبوط بُوننا ہوں تو مجھ مرالتركى لعنت ہو۔ اس وقت مخضرت صلى الشرعكية لم في تاكيد كطوري بلال بن أميّة سے فرما ياكه د تكيمو بلال فداسے ڈر د كيوكم المرا اخرت مے عداب سے بلی ہے اور اللہ کا عداب توکوں کی دی دوی سزامے ہیں یا کون کا اوريه بانجوين شهادت آخرى شهادت باسى يرفعيله وناب منظر بلال بن أمتيه في عرض كياكه بي قيم بهبكتا ہوں كدانته تعالى مجھے اس شہادت برآخرت كا عدائيس ديں كے دكيو بكه بالكل ي شهاد ہي جبیاکہ التر کے رسول مجھے ونیا میں حد فذف کی سزانہیں دیں گے اور بھریہ یانجویں شہا دت کے الفافاادا کردئیے -اس کے بعد آیئے ہلال کی بوی سے اسی طرح کی جا رشہا دات یا جا توسیس لیں اس نے بھی ج دفعهمين قرآئ الفاظ كم مطابق بيشها دت دى كهميرا شوهر حجواله - جب يانخوي شها دن كالمبرآيا تورشول الترصل الشرعكتيهم في فرمايا ذرا تهرو، بهراس عورت سيفرمايا كه خداس لا وكريه يا يجوي شہادت آخری بات ہے اور خدا کا عذاب لوگوں کے عداب بینی زناکی حرشرعی سے کہیں زیادہ مختے مستكردة مسم كما نے سے جھے لئے ، كچھ ديراسى كينست بيں رہى مگر كھرا خرميں كہا كدؤالله ميں اپنى توم محورُسوانهين كرفظي اورپانچومي مثها دت بهي ان نفظوں كيسا تھ ا داكر دى كه اگرميرا شوہرسجا بحرته مجھ ى خداكا غضب برد - بىرلىكان كى كارروائ عمل بوكنى تورسُول الشرصلے الشرعكيد م فيان دويو میاں بیوی میں تفریق کردی تعنی ان کا زِکاح توردیا ادر یفیصلهٔ فرمایاکه اس عل سے جو بحیریہ ﴾ بوده اس عورت كا بجيركهلا من كا باب كيطرت منسوب نهيركيا جائے كامكر بنے كومطعون نبى مذ كياجا في النتى وتفسيظرى بحاله مسنداحين ابن عباس ا

بهائ عويم تفاجسكالكاح بهي عاهم بن عدى كى جيازا دبهن خوار سي دا تفا- عويمرون في ايك رور د مکھاکدان کی بیوی خولہ شرکب بن سحار کیساتھ مبتلا ہے اور بہتر کی بن سمار سبی عام کا ججازا دبھا تفا-عويم أن يه وا تعدا كرعام بن عدى سعبيان كيا، عاصمٌ ني إنا رلترو إنّا النيرراجِعون يرها اور اتكے روز جمعین آنخصرت صلی النشر عکتیام كی خدمت میں تھرجا صر ہوئے اورع ص كياكہ يا رمول لنش صلے الشرعكيہ م بچھلے جمعہ ميں ميں نے آب سے جوسوال كيا تفاا نسوس ہے كرميں خود اسيس مبلا ہوكيا بونكرمير ابن ابل بريت مين ايك السا واقعيميتن أكبا - بغوي في ان دونون كوحا صركرنے اور كھر ں میں لعان کرانیکا دا تعہ بڑی تفضیل سے بیان کیا ہے (مظہری) اور محیمین میں اسکا خلاصہ خرت سہل این سعدساعدی کی روایت سے یہ مذکور ہے کہ عویم عجلانی روز نے دشول الشرصلے الشہ عکمیے ہم سے عرص کیاکہ یاد شول انٹراگر کوئ شخص اپنی بوی کیسا تھے سی غیرمرد کو دیکھے تو کیا وہ اس کو قتل کر دے جس مے نیتجہ میں لوگ اس کو قستل کریں گے یا بھر وہ کیا کرے ۔ رسول انٹر صلے انٹر عکیا کم نے فرما یا کہ التشر تعالی نے بخفارے اور بخفاری بیوی کے معاطے میں حکم نازل فرما دیا ہے۔ جاؤ بیوی کو لیکر آؤ۔ حضرت سهل بن معكرٌ داوی حدمیث فر ماتے ہیں کدان دولوں کو ُبلاکر دسُول الشرصلے الله عکیہ کم نے سجہ مے اندرلِحَان کرایا (حب کی صورت واقعہ سابقہ میں بیان ہوچکی ہے) جب و دیوں طوٹ سے پانچوں ا شها دات پوری موکر لعنان حتم موا توعو مرعبلائی نے کہایا رسول الله ، اگرمیں اب اسکو بوی بناکردکھو اتو گویامیں نے اس برجھوٹا الزام لگایا ہے اسلئے میں اسے تین طلاق دیتا ہوں (مظہری بجالیجین) ان دوان واقعوں میں سے ہرا کی میں یہ مذکورہے کہ آیات لئان اسے بارے میں نا ذل ہوئی ہی حافظابن مجرادر بیخ الاسلاً انودی نے دونوں میں تطبیق کی بیصورت بیان کی ہے کہ ایسا معلوم ہوتا ہو کہ پہلاوا قعہ ہلال بن اُمنیکہ کا تھا اور آیات لِعَان کا نزول اُسی وا قعہ کے بارے میں ہوا اسے بعد عوميرة كوايسانى واقعريش آكيا اور أنهول نے آنحضرت صلى الله عكيهم سے عرض كيا الكوبلال بن أمية كامعامله سابقه معلوم نه وكاتورسول الشرصيا الشرمكية لم ف أن كوتبلاياكه متفادس معامله كا فیصلہ یہ ہے اور قرمیز اسکایہ ہے کہ ہلال بن اُمیۃ رہ کے واقعہ میں توالفاظ حدیث کے یہ جی فاذل جيديثيل ، اورعوير رخ ك واقعيمي الفاظيم بي قد انزل الله فيك حيكامفهوم يه بردسكتاب كه الترتعالي في متمار واقعه جيسايك واقعمين اسكاحكم نازل فرماديا ووالسرعلم (مظهوى) مست کے :جب دومیاں بوی کے درمیان حاکم کے سامنے لیکان موجا دے تو بیعورت اس رد يريميشرك لئے حمام مروجاتی ہے جلسے حرمت دضاعت ابدى ہوتی ہے - حديث ين رسول الله صلے الشرعکييم كا ارشاد ہے المتلاعنان لا بجمعان ابلًا ، حرمت توبعان ہونے سفایت موجاتی ہے تیکن عورت کو دوسر تے خص سے بعد عدت لیکا حکر ناامام عظم الا کے نز دیک جب جائز ستورخ النتولا ١٦٠:٢١ معادت القرآن جسر ہوگا جبکہ مرد طلاق دید سے یا زبان سے کہدے کہ میں نے اس کوجیور دیا اور اگرمر د ایسانہ کرے تو حاکم

قاضى ان دو يون ميں تفريق كا حكم كر ديكاوه بھى تحكم طلاق موجائے گا بھرعدت طلاق تين حض بورے مونے کے بعدعورت آزاد ہوگی اور دوسرے سیخص سے بکاح کرسکے کی (مظھری وغیری)

مستله: جب لنان بوجيكاس كے بعداس عل سے جو بختر بيدًا بوده أسكے شو بركيطرت شوب نہيں مِنةً كَا بَكِيراً سَ كَي نسبت أس كَي مان كيطرف كي جا ديكي - رشول الشرصلے الشوعكية لم نے بلال بن أستر اور عوىمرعجلانى دونوں كے معاملات ميں سى فيصله فرمايا -

مسئله، بعان كے بعد اكرجيد ان ميں جو جھوٹا ہے أسكا عذاب آخرت يہلے سے زيا دہ بڑھ كيا مگر دُنیا کی سنزااس سے ساقط ہوگئی۔ اسی طبح دنیا میں اُس کو زانیہ اور بچے کو ولدالز ناکہنا بھی کسی کے لئے جا تز نہیں ہوگا۔ ہلال ابن آمنیہ کے معاملہ میں رسول اللہ صلے اللہ عکیہ لم نے فیصلہ میں ت بمى فرايا ـ وقصى بان لا تُرُفى كا ولا ها -

إِنَّ الَّذِينَ جَاءِ وُيِ الْرِفَكِ عُصَدَةً مِّنكُو لَا تَحْسَبُومُ شَكَّالُك متعين مين آيك جماعت اين مم اسكونه مجمو أرا اين حق مير جو ہوگ لائے میں بہطوفان خَيْرُ لَكُو لِكُلِّ الْمُرِئُ مِنْهُمُ قَا الْنَسْبُ مِنَ بلاید بہترہ تمہا دے حق میں ہر آدی کے سے اُن میں سے وہ ہے جتنا اُسے گناہ کیا یا ن كبرة مِنْهِ وَلَهُ عَنَ الْ عَظِيمُ ١٠٠ لَوْ لَرَ إِذْ سَمِعَهُوهُ كيون يرجب تم في الكوتنا عقا حيال كيا أتمايا كالرابوجواسة واسط براعداب ودتا ايمان والع مردون اورايمان والى عورتون في اين لوكون يرعملا خيال اوركها بدونا يد صريح طوفان ب كيون نرلائے وہ اس بات ير چار شابد بيمرجب نرلائے شاہد له عَلَيْكُ وَ اور اگر مد ہوتا اللہ کا فضل تم پر اور اس کی رجمت نیا اور آخسرت میں تو تم بر براتی اس برجار نے میں کوئ آفت ، ای بنے لکے تم اسکواین زبالاں پر اور بولنے لکے اپنے سف سے میں چیزی مم کو خیسہ ہیں

سُورَة النول س اوركيون شر جبائم كالمكوسة مقا الشرتو باك ب يه تو برا بهنان ہوتا ہم کو ہنیں لائق کہ منہ ہر لائیں یہ یا ت متدتم كوسجهاما ب كد بجرية كروايسا كام سمعي اگر تم ایمان د کست او اور کھو تاہ برکاری کا ایمان واوں میں آن کے لئے عذاب ہے دردناک ا در اگر نه جو آما الند ادر الشرجاتات ادر تم بنين عانة 0... فضل عم بدر اوراس كى د حمت اور يدكه الشرار ىكدندوالا ب مهربان توكيا كومن وال ايسان اورجوكوى يط كا قد ول يرشيطان تبطان کے 1- 020 أَمْرُ بِالْفَحَشَّاءِ وَالْمُنَكِّرُ وَلَوْلَا فَضَلُ اللهِ عَلَيْكُوْ سووہ تو ہی بہلا سے گا ہے حیای اور بڑی بات اور اگر نہ ہوتا اللے کا فضل سم بر توسرسنورتا تم میں ایک شخص تھی سمجی کر دیکن اسٹر سنوار تا م محصنتا جانتا ہے اور فتم نر کھائیں بڑے درجہ والے تم میں سے اور کشائش والے اس نقرُ بي وَالْمُسْكِينَ وَالْمُهِمِ بِينَ فَي سَبِيرُ ادر محتاجوں کو اور وطن چھوڑ نے دالوں کو انشر کی داہ اور چاہیے کہ معاف کریں اور در گزر کریں ، کیائم ہنیں جاہتے کہ انٹرئم کو معاف کرے ادرالٹر بجھے والا ہے نَ اللَّهُ يَنْ يَرْمُونَ جو لاگ عيب مكاتے بين حفاظت دايوں بے خبر ايمان دايوں كو الكويمثكاد

٨

م النصوا

سُوْرَة السُولا ١٠٢٠٢ معارف القرآن ج اور آن کے لیے ہے بڑا عزاب اور یاوں ، ج کھ وہ کے سے ك كوالشراك كاستراج بعلبية اورجان ليس كيكران ويى بي بيحا كد الا لندوں کے داسط اور محترے واسطے کندیوں کے اور سخریاں پی سختروں کے واسطے طِيتِنَ أُولَيْكَ مُبَرِّءُ وْنَ مِمَّا يَفْوُلُونَ لَهُومُمَّعَعُمُ وَقَوْرِنَ فَأَ تقریوں کے وہ لوگ بے تعلق ہیں ان باتوں سے جو یہ کہتے ہیں ایکے واسط تجشش ہے اور دوزی ہے عرف کی رُلِطِ آياتُ جيها كربيل بيان مُوجِكا ہے كر شقورةُ نؤرُ كا بيشتر حصّہ أن احكام سيتعلق بي وعفت عصمت کی حفاظت کے لئے جاری کئے گئے ہیں۔ اُسکے بالمقابل عفت وعصمت پر دست اندازی اور ا كى خلات درزى كى دُنيوى منرا بين ادرأن يرَاخرت كا د بالعظيم ذكركيا كيا ہے۔ اس لسلة ميں بيلے حقر زنا مصرصة قذف ا در مصربات كابئان آجكام - حدِقذف كصمن بيكسي باكدا من عورت يرحب كك جاركوا موں كى ستها دت نه بوز ناكا الزام لكا نا كتا عظيم قرار ديا ہے اورابساكر نے والے كيلئے عرفت مترعى استی توزے کیا نے کی جاری فرمائ ہے ۔ بیسئلہ عام مسلمان پاکدامن عورتوں میں علق تھا۔ادر جونکہ سلنه بجری میں بعض منافقین نے ام المؤنین حضرتِ صدلقہ عائشہ فرانسی تہمت گھڑی تھی، اور تقليدا بعض مسلمان بھي أسكا تذكره كرنے لگے تھے بير معاملہ عام مسلمان ياكدا من عور تو ل محيعاملہ سے بہیں زیادہ اشر تھا۔ اس لئے قرائ کریم نے حضرت صدیقہ عائشہ ان برارت اور یا کی سے بہانیں اس جكردس آينيس مركورالصدر نا زل فرما مين جنب حضرت صنّدلقيرى برارت وزايت كاا علان اوراك كے معامله میں جن تو گوں نے افتر ار دہبتان میں سے طرح کا حصتہ لیا تھا ان سب کو تنبیہا در دنیا واخر يس أن كے ويال كابيان ہے۔ يہ بہتان بندى كا داقعة قرآن وحديث ميں دافعه إفك كے نام سے شهور ہے ۔ اِفک کہتے ہی مرتزیق مے جھوٹ دافترا دبہتان کو۔ ان آیات کی تفسیر تجھے میں قصته افك محمعلوم بونے كوبرا وفل م اسلة مناسب كه يهد فحق طور يربيق قتربال كرديا جادك قصه إفك بهتمان اصحیحین اور دوسری كتب صدیث میں بیه دا قدغیر حمولی طویل تفضیل كبیا كا ذكركیا حياً أمكا مختصر بمان بير به كرجب رسول الشرصلة الشرعكية لم غز وهُ بن لمصطلق مين حبكوغ وهُ مرسيع بھی کہاجانا ہے سالند ہجری میں تنشریف کے گئے توا بہات المؤمنین میں سے حضرت صدیقیر عائشہ

上してつ

سائه تھیں مصرت عائشہ خ کا ونسے میران کا مودج (بردہ دارشفدف) ہوتا تھا اور چونکہ کے است احكام يرده كے نازل ہو چيكے تھے تومعول بير تھاكەصدىقىرعاڭشەش پينے مودج ميں سوار ہوجا بي ميھرلوگ أس بودج كواً تفاكرا دنث ير د كعدية سق عزده س فراغت اور مد بينه طبيبه كي طرف وايسي بي ايك ر دزیرقصه میش آیا که ایک منزل میں قافله تھیراآخرشب میں کوچ سے کھے پہلے اعلان کیا گیا کہ قافلہ روانہ ہونے والا ہے تاکہ لوگ اپنی اپنی ضرور توں سے فالغ ہوکر تیار ہوجاویں ۔حضرت صدرتے عائشہ واک تصارعاجت کی صرورت تھی آس سے فراغت کے لئے جنگل کیطرت چلی گئیں وہاں اتفاق سے اُن کا ہار توٹ کر گرگیااس کی تلاش میں اُن کو دیر لگ ٹئ ۔جب دایس اپنی جگہ بہنجیس تو د کھاکہ قافلہ ر دانز ہوجیکا ہے اُن کے اونٹ کا قصتہ یہ ہواکہ جب کویٹے ہونے لگا توعادت کے مطابق حضرت صدلقيه عاكشة وخ كابودج يتجه كراونث يرسوادكردياكيا كهصرت صدلقيره السيس موجودين أتفاليق بهى كجه شبه اسلة منه مواكه أسوقت حضرت صديقير الي عمركم ادربدن مين نحيف تقين كسي كويه المدازه ای منر دواکه دورج خالی بے چنانچه اونط کو بانک دیاگیا۔حضرت صدیقیرہ نے اپنی عگہ واپس کو قافلہ لو مذیایا توبڑی دانشمندی اور و قار و استقلال سے کام لیاکہ قافلہ کے سیجھے و رنے یاا د ھراُ دھر تلا^س رنے کے بجائے اپنی جگہ جا در اوڑھ کر مبٹھ کئیں اور خیال کیا کہ جب آنخضرت صلے اللہ عکت م اور رفقار تو میں مادم ہوگا کہ میں ہو دج میں نہیں ہوں تو مجھے تلاش کرنے کے لئے یہاں جنہیں گے ، اگر میں ادھراَدھ ہیں اور کئی توان کو تلاش میں سک ہوگی اسلے اپنی جگہ پر جا در میں لیٹ کر مبیطے رہیں۔ آخر را سے کا وقت تها نيند كاغليه جوا وين ليط كرآ تكه لگ كني.

 تفنيرُدر منتورس بحوالدابن مردوية صرت ابن عباس كايبي تول نقل كياب كذا عاتمااى عبك المناع عبدك المان المناع المن عبدك النها المن المن أبي حسنان وسطح وحمنه -

قلاص تركفسير

بڑھے فصوصاً متہم حضرات کی برارہ کے لئے نص طعی آئ اور آئدہ کھی سلمانوں کے حق میں خیرے كداليه مصيبت زده اس داقعه سنسلى حاجس كياكري كيرس كمقاد انوكوى ضرر ندموا البنة ان چرجا کرنے دالوں کا صرر جو اکہ) ان میں سے ہڑفس کو حتنا کسی نے کھے کیا تھا گناہ ہوا (مثلاً ذبان سے کہنے والوں کو زیا دہ گناہ ا درش کرخا موش رہ جانے والوں کو یا دل سے برگانی کرنے والوں کوا^ں کے موافق گناہ ہوا) اور ان میں جس نے اس ربہتان ، میں سب سے بڑا حصتہ لیا د کہ اسکو اختراع كيا مُراد اس سے عبداللرين اُبي منانق ہے) اس كو (سب سے بڑھكر) سخت مسزا موكى (مراداس سے جہنم ہے جس کا استحقاق پہلے سے بوجہ کفرو نفاق وعداوتِ رسُول کے بھی تھا اب اور زیا وہ سزا کا شحق موكيا، يرتوغم زود كصرركي نفي اوربهتان باندهن والول محضرر كااشات تفا آكے انين جو مؤمنین تھے اُن کونا صحانہ ملامت ہے کہ) جب تم لوگوں نے یہ بات شنی تھی تومسلمان مردو دجن یں حتان و منظم بھی آگئے) اورسلمان عورتوں نے (جن بیں جمند تھی آگئیں) ایسے آپس والوں کیا تھ ر مینی حصرت صدیقیرم اوران صحابی کے ساتھ دل سے) گمان نیک کیوں نئر کیااور (زبان سے) پہلو مه کها که میریج جهوث ہے جبیبا کہ اُدرِمنتور میں ابو ابوٹ ا دراُن کی زوجہ کا بہی قول مردی ہے۔اس میں بہتان با ندھنے والوں کے ساتھ وہ بھی شامل ہیں جو سنکر خاموش اسے یا شک میں بڑا گئے ان سب پر بھی ملامت ہے جن میں عام مومنین ومومنات بھی داخل ہوگئے۔آگے اس تہت کو دَد کرنے اور انیک گمان رکھنے کے وجوب کی وجہ ارشا رہے کہ) یہ (بہتان لگانے والے) توگ اس (اپنے قول) يرجاد كواه كيوں شراائے (جوكم اثباتِ زناكے لئے مشرط ہے) سوجس حالت بيں بيرلوك كواه (موافق قاعدہ کے) نہیں لائے توبس انشر کے زریک (جو قالون ہے اس کے اعتبار سے) بیر جھوتے ہیں (ایکے بہتان لگانے والوں میں جومومن تھے اُن ریمی رحمت کا ذکرہے) اور اُلے حسّان وُسطے وحَمُنهُ عَمَّ يران تعالى كافضل وكرم منهوتا دُنيامين ربهي كه تؤبه كي مهلت دي) ادرآخرت مين (بهي كه توبه كي توفیق دی اوراس کو قبول بھی کرلیا اگرید مذہوتا) توجس شفل میں تم رطے تھے اسمیں تم یرسحنت عذابے اقع ہوتا رجیسا عبدالشن اُبئی کو بوجہ عدم تو یہ کے ہوگا گوا سوقت مہلت دُنیا بیل سکو مجى ديدى كئى مكر جموعه دارين ميں رحمت نہيں ہے ا در اس سے معلوم ہو كياكہ صحابہ مقبول لتو اوریاک ہوکرآخت میں مرحوم ہیں اور علیکم میں خطاب مؤمنین کو ہونے کا قرینہ اولاً اور کی آيت ميں يه ادشاد ہے ظنّ المُؤُمِنُونَ ثنا نبافِل الْحِزَةِ فرمانا كم منافق تو آخرت بين جہنم كے درك اسفل ميني بخيل طبقه كالمستى ب ده نقيناً عبحدم فى الأخرى بنيس بوسكما - تالتأ آك لَعِظُمْ الْكُلِي فَصَلُ اللهِ عَلَيْكُوسِ طِرا في في ابن عباسُ كا قول نقل كيا يري مسطحا وحمدة وحسّا نا - كذا فى الدرا لمنتور سينى لؤكا فضَّلُ الله م عَلَيْكُمْ ك مناطب صرف ين موس بي - سينى استورة التور ٢٢:٢٢

معادت القرآن جسلدهم

مِسَطَعُ ، حَمَنةً ، حسّان - آگے اسکابیان ہے کہ مُومنین پراگراللّٰہ کا خاص بھٹل مذہوتا کہ اُنکو تو ہہ کی تو دى اور توبر ميى كرلى توجوكام أعفول في كيا تقاوه اين ذات بين عذاب فطيم كاموحب تقافرمايا) جبكتم اس وجهوط بات كواين زبانون سينقل درنقل كرب عقد اوراين سالسي بات لہرہے تقے جس کی تم کو دکسی دلیل سے مطلق خبر نہیں (اورالیسی خبرکے نا قل کا کا ذب ہونا فَأُولَلِكَ عِنْلَاللَّهِ عِمُ لَكُنِهُونَ مِن بيان موجِكام، اورتم السكوبلي بالمجري تقيم الأنكروه الترك نز دیک بہت بھاری بات ربعنی موجب گنام ظلیم کھی داول توکسی پاکدا من عورت پرز ناکی تہمت خود بڑی معصیت ہے محصر وہ تھی کون ، ازواج مطہرات میں سے کہ اُن پرتہمت لگا ناجنا ہے سولِ مقبول صلی الشرعکتی کمی ایزار کاسبب بنا بس اسمیں بہت سے اسباب معصیت کے جمع بھے) اور تم نے جب اس دمات کو داوّل اُسنا تھا تو یُوں کیوں نہ کہاکہ ہم کو زیبا نہیں کہ ایسی بات اُسنہ سے بهی کالیں۔معاذات پر توبڑا بہتان ہے (جیساکہ بعض صحابہ نے اسی طرح کہا تھا جیسا کہ سعد بن معاذ وزیدین حارشه دایی ایوب سے اسی طرح کا قول منقول ہے اور زائد کی نفی نہیں ہے مکن ہے او بہتوں نے کہا ہو مطلب سے کہ قاذفین اور ساکتین سب کویچی کہنا جیا ہے تھا۔ یہا تک تو ماضی پر ملامت متى استقبل كے لئے نصيحت ہے جوكہ صل مقصود ہے ملامت كاليس ارشاد بركيم) اللہ تنظم تم كونفسيت كرتاب كه كيرايسي حركت مت كرنا اكرتم ايمان والي بواور الترتعالي تم سے صاف صاف احكام بيان كرتا ہے رحبين تصيحت اور حرّفد ف اور قبول توبہ جو اور بذكور موجيح بين سب داخل ہیں) اور ایشر تعالیٰ بڑا جاننے والا حکمت دالا ہے (متہارے دل کی ندامت کاحال مجى اس كومعلوم ہے اس لئے توبہ قبول كرلى ا درسياست كى حكمت بھى خوب جانتا ہے اس لئے توبہ ساستُر ونامين سزادى كنى عان فتك ابن عباس واله فاللار- يها تك تزول برارة سينسل تهمت كانذكره كرف والون كاذكر تفا-آك ان كاذكر بي جو قرال مين نزول برارة ك بعدهي باز شاؤیں اورظا ہرہے ایساشخص ہے ایمان می بوگا بس ارشاد ہے) جو لوگ ربعد نزول ان آیات مے میں) چاہتے ہیں (یعنی اسکی کوشش علی کرتے ہیں) کہ بے دیائ کی بات کا مسلما ہوں میں جرچا ہو۔ ربینی پرخبرشائع ہوکدان سلمانوں میں ہے حیائ کی بات ہے - حاصل مطلب سے کہ جو لوگ ان حضرات مقدسین کیطون زناکی نسبت کرتے ہیں ہائن کے لئے دُنیا داخرت میں سزائے در دناک (مقرر) ہے اور داس امریسزا کا تعجب مت کر دکیونکہ) اللے تعالی جانتا ہے دکہ کون مصیت كس درجه كى بي اورتم راكى حقيقت يورى نهين جانة (دواه فالدّرعن ابن عباسي ، آكے ان وگوں کو خطاب ہے جنموں نے توبر کی اوراس برآخرت کے عذاب عظیم سے محفوظ ہوگئے)اور (اے ما سُمِين ﴾ آگريد بات نه به دتي كهتم برايشرتعالي كافضل دكرم ہے دحس نے تم كو توفيق تو به كى دى) اور

7

يه كذالله براشفيق برازهم ہے رجس نے تھارى توبہ قبول كرلى) توتم بھى (اس وعيدسے) نہ بحيتے (آگے مسلما بؤن کواپنی رحمت سے بلاتخصیص اس مصیت مذکورہ کئے تمام معاصی سے احترا زر کھنے کا امراور تزكيير بالتوبه كى تصريح بي جوارتهام كے داسط بعنوانات فتلفه محررے ارشاد فرماتے ہيں كه اے ايمان والوتم شیطان کے قدم بقدم مت چلو (یعنی اس کے اغوار واصلال برعمل مت کرو) اور پی خص شیطا کے قدم بقدم جلتا ہے تو وہ (ہمیشہ ہرشخص کو) بے حیائ اور نا محقول ہی کام کرنے کو کھے گا (جیااں واقعة إنك مين تم نے ديكھ ليا) اور (شيطان كے قدم بقدم جل جلنے كے اوركناه سميط لينے كے بعد اس کے دیال دصررسے بوکہ ثابت ہوری جیکا تھا نجات دید نیا یہ تھی ہمارا ہی نصل تھا در نہ اگر تم یہ الترتعالیٰ کا فضل وکرم نہ ہوتا توتم میں سے کوئ تھی بھی (تو بہرکے) پاک صاحت نہ ہوتا (یا تو تو بہ کی توفیق ہی ند جوتی جیسا منافقین کونہ ہوئ اور یا توبہ قبول نہ کی جاتی ، کیونکہ ہم کرکوئ چیز واجب توہے نہیں) دلیکن اللہ تعالی جس کو چاہتا ہے (تو بہ کی توفیق دے کرے) یا کے صاف کردیتا ہے (اوربعد توبہ سے اپنے فضل سے دمدہ قبولیت کا بھی فرمالیا ہے) ا در انشر تعالیٰ سب کچھ منتا سب کچھ جأتیا ؟ (میں بھاری توبیش لی اور بخفاری ندامت جان لی اس لئے فضل فرما دیا ۔ آگے اسکابیان ہے کہ بعد نزول آیات برارة کیعض صحاب نے جنیں ابو برصدیق رہ بھی ہیں ، دواہ ابناری اور دوسرے صحاب بھی ہیں۔ کذا فی الدرا لمنتورعن ابن عباس) شدّت غیظ سی سے کھالی کہ حس حس نے مہر جاکیا ہ جن میں حاجتمند تھی تھے اُن کواب سے سے سی مالی امدا دینہ دیں گے۔ ایٹر تعالیٰ اُن کی عفو تفصیہ اورا مدا دجا دی کر دینے کے لئے ارشاد فرماتے ہیں) اورجو لوگ تم میں دنی بزرگ اور ذیوی) وسعت الے بی ای برا کو اورمساکین کواور انشرکی را میں بجرت والوں کو دینے سے سم نہ کھا بیٹھیں (بینی اس سم کے مقتضى يرقائم منررين ملكه تور والين بيطلب ورنه قسم توروي يحيى سقى العين ان صفات كالصفى ے امداد کرنا خصوصاً جس میں کوئ سبب امدا د کرنے کا دو جاسے حضرت مشطح من کہ وہ حضرت ابو بحرانا کے نزدیک کے دشتہ دارتھی ہیں اور سکین اور مہاجرتھی ہیں ، آگے ترغیب کے لئے فرماتے ہیں کہ ادرجائے ک يرمان ويادر كري كياتم بربات مير المي المين المراه تعالى تهاك الماتها التي ورمان كرد مدر سوتم يهي ايف قصوروا رول كو معاف كردو) بيشك الشرتعالى عفورور حيم ب رسوتم كويمي تخلق باخلاق الهيته جاسك كم منافقين كى وعيدكى تفصيل كي جبكااوير إنَّ اللَّذِينَ يَحِبُونَ الْحِ بين اجمالًا وَكُرِتِهَا يَعِنى) جولوك (بعد نزول آیات کے بدکاری کی جمت لگاتے ہیں ان ورتوں کوجو یاکدامن ہیں (اور) الیبی باتوں (کے کرنے اوراسے ادادے) سے (مجمی محض) بے خبر میں (ادر) ایمان والیاں میں (ادرجن کی براء قصی فسران سے تابت ہو جلی ہے اور جمع لانا اسلنے ہے کہ سب ازواج مطرات کو شامل ہوجا اے کہ الطبیّات سے سب کی طہارت تابت ہے اور ظاہر ہے کہ ایے لوگ جوالی طہرات کو تنہم کریں کا فراور

سورة النور ٢٠٢٣: ٢

ىعاد ٹ القرآن جب كد ششم

منافق ہی ہو سکتے ہیں) ان پر دنیاا در آخرت میں لعنت کی جاتی ہے (یعنی غدا تعالیٰ کی رحمتِ خاصہ سے دارین میں بوجہ تفرکے دُور ہونگے) اور ان کو (آخرت میں) بڑا عذاب ہوگا جس روز ان کیخلا ت ان کی زبانیں گواہی دیں گی اور اُن کے ہاتھ اوران کے یاؤں بھی (گواہی دیں گے) ان کا مول کی جو ر بیلوگ کیا کرتے تھے (مثلاً زبان کہے گی کہ اس نے میرے ذریعہ سے فلاں فلاں کفر کی بات بی-اور ہاتھ یا دُن کہیں گے کہ اس نے ترقیج کفریات کے لئے یون نگا یو کی اس روزانشر تعالیٰ اُن کو اُلکا داجبی بدلد بورا بورا و بیجا ور (اس روز تھیک ٹھیک) ان کومعلوم ہوگا کہ انٹریسی تھیک فیصلہ کرنے والا (اور) بات (کی حقیقت) کو کھول دینے والا ہے (لیعنی اب تو بوجبر کفر کے اس بات کا عققا د آنکو کماحقہ نہیں گرقیامت کے روزمعلوم ہوجا و بیگاا در میعلوم کرکے بالکل نجات سے ما یوس ہوجا بی گے، کیونکہ ان کے مناسب فیصلہ عذاب ابدی ہے یہ آئیس غیر تائیس کے بائے میں ہیں جونز دل آیات برارت کے علیہ بھی اعتقادتہت سے با زمنہیں آئے۔ تائبین کو فضن کی مدین وَرُحَمَنَ عیں مرحوم دارین فرمایا اورغیرمائین كولَعِنُوْ ابين طعون وارين فرمايا- تا مُبين كولمستكُوفِ عَا أَفَضَتُم فِيهِ عَنَ ابُ عَظِيمٌ مِن عَراب محفوظ بتلاياتهاا ورغيرتا بنين كولَهُ وعِنَا بشِعَظِ بُورِين ونيزاس سقبل وَالَّذِي تُوكِّي كِبْرَةُ الْحُ مِين مبتلا ك عذاب بتلایا - تانبین کے لئے إِنَّ اللهُ عَفُورِ تَرْجِیْ مِیں بشارت عفو دغفران بعنی ستر معصیت کی فرمائ تقى اورغيرتا ئبين كے لئے تشنّه كى اور يۇ فتى همر ميں وعيد عدم عفوا ورفضيحت كى فرمائ- تائبين كومَّا ذَكِّي مِنْكُوْلَا بِين طاهر تبلايا تفاغيرًا نبين كو الكي آيت ميں خبيث فرمايا جس مين صمون برآري استدلال كركے قصته كوختم فرمایا ہے بعنی به قاعدہ كليہ ہے كه) گندى عورتيں گندے مردوں كے لائتى وتى ہیں اور گندے مرد گندی عورتوں کے لائق ہوتے ہیں اور تقری عورتیں ستھرے مرووں کے لائق ہوتی ہیں اور ستھرے مرد ستھری عور توں کے لائق ہوتے ہیں دایک مقدمہ تو یہ ہوا اور دوسرا مقدم خروریا سے ہے کہ جناب رسُول الشرصلے اللہ عکمیے تم کو ہر چیز آپ کے لائق ا در مناسب ہی دی گئی ہے اور دہ شخصری ہی چیزیں ہیں توضرور اس مقدمہ صرور سے اعتبار سے آپ کی بی بی تھری ہیں ادراُن کے شخص مے ہونے سے اس تہمت خاص سے حضرت صفوان کا منزہ ہونا بھی لازم آیا اسی لئے آگے فراتے ہیں کہ) یہ اس بات سے پاک ہیں جو یہ (منافق) بکتے پھرتے ہیں ان (حصرات) کے لئے داخرت میں) مغفرت اورعزت کی روزی رتعنی جنت) ہے۔

مكارف ومسائل

مضرت صداقيه عائشه واكتفوى فضائل استول الشرصل الشرعكيدم ك ويتمنون في المي فلات ابنى كمالات ا در قصة وافك كا مجه بقت سارى بى تدبير س صرف كردُ اليس اوركيكوا يذابي نجانے كى

اس سفرے واپس آنے کے بعد حضرت صدائقہ خاہے گھر طور کا موں میں شغول ہوگئیں ان کو کھر خبر خبر ہیں تھی کہ منیا فقین نے اُن کے بالے میں کیا خبر ہیں اُڑا کی ہیں۔ صبحے بخاری کی د دایت بیں خود حضرت صدائقہ کا بمیان یہ ہے کہ سفرے واپسی کے بعد کچھ میری طبیعت خراب ہوگئی اور سب سے بڑی و جبر طبیعت خراب ہونے کی ہم ہوگئی کہ میں دسول التہ صلے التہ عکیہ مکا وہ اُن کے میں دسول التہ صلے التہ عکیہ مکا وہ اُن کے میں کرم اپنے ساتھ منہ دیکھیتی تھی جو ہمیشہ سے محول تھا بلکہ اس عوصہ میں آپ کا محاملہ بدر ہا کہ گھرس تشریف لاتے اور سالام کرتے بھر گوچھے لیتے کیا صال ہے اور دا پس تشریف لیجا تے تھے۔ مجھے جو تکہ اس کے درسول التہ صلے التہ تھے۔ مجھے جو تکہ اس کے درسول التہ صلے التہ تھے۔ مجھے جو تکہ اس کے درسول التہ صلے التہ میں کیا خبر شنہ ورکیجا در ہی ہے اس لئے درسول التہ صلے التہ میں کیا خبر شنہ ورکیجا در ہی ہے اس لئے درسول التہ صلے التہ میں کیا خبر شنہ ورکیجا در ہی ہے اس لئے درسول التہ صلے التہ میں کیا خبر شنہ ورکیجا در سے اس لئے درسول التہ صلے التہ میں کیا خبر شنہ ورکیجا در ہی ہے اس لئے درسول التہ صلے التہ میں کیا خبر شنہ ورکیجا در ہی ہے اس لئے درسول التہ صلے التہ میں کیا خبر شنہ ورکیجا در کی ہے اس لئے درسول التہ صلے اللہ میں کیا خبر شنہ ورکیجا در کی ہے اس لئے درسول التہ صلے التہ میں کیا خبر شنہ ورکیجا در کی ہے اس لئے درسول التہ صلے التہ میں کیا خبر شنہ ورکیجا در کی ہورٹ کا میں کیا خبر شنہ ورکیجا در کی ہوں کیا کہ میں کیا خبر شنہ ورکیا در کی ہورٹ کیا کیا کہ میں کیا خبر شنہ ورکیجا در کیا در کیا کہ میں کیا خبر کا کھورٹ کیا کہ میں کیا خبر کیا کہ میں کیا خبر کا کھورٹ کیا کہ کو کھورٹ کیا کہ کو کو کہ کورٹ کر کے کہ کورٹ کیا کہ کیا کہ کورٹ کیا کہ کورٹ کیا کہ کورٹ کے کہ کورٹ کیا کہ کیا کہ کورٹ کیا کہ کیا کہ کورٹ کیا کہ کورٹ کیا کہ کورٹ کیا کہ کورٹ کیا کہ کیا کہ کورٹ کی کورٹ کیا کہ کورٹ

وريخ النور م سے اس طرز عل کا راز مجھ پر نہ گھاتیا تھا۔ میں اسی غم میں گھکنے لگی۔ ایک روز اپنی کمروری کی وجہ سے مُطح صمًا بي والده أمِّ منطح كو سائق كبير مين نے قضار حاجت كے لئے باہر جانسكا ادا دہ كيا كيوكة وقت گھروں میں بہت الخلار بنانے کا دواج نہ تھا۔جب میں قضار حاجت سے فارغ ہوکم كفركبطرت آیے لگی توام منطح كایا دل اُن كی بڑی جا درمیں الجھا اور بیگریڑیں۔اسوقت آنكی زبان سے سیکلہ پیکلا تعیسی مشکلے لیا سیکلمہ ہے جوعرب میں بردُعا کے لئے استعال ہوتا ہے اسمیں مال کی زبان سے اینے بیٹے مشطے کے لئے بد دُعا کا کلمین کرص یقیرعائشین کو تعجب ہوا۔ ان سے فرمایا کہ بیریت يْرى بات ہے تم ايک نيک آ د مي کويُراکهتي ۽ وجو غز وهُ بدر کا منتر بک تقاليني ان کا بيٹائسط، اپر ائم منطح نے تعجب سے کہا کہ بیٹی کیا تم کو خبر نہیں کہ مشطح تمیرا بٹیا کیا کہتا بھرتا ہے - میں نے پوچھا وہ کیا کہتا ہے تب اُن کی والدہ نے مجھے بیرسارا دا قعہ اہلِ افک کی جلائ ہوئی تہمت کاا ورسطح کا آمیں مشر مک بهونا بیان کیا -صدلقهٔ فرماتی بی که بیشنکرمیرا مرض دوگنا مهوگیا-جب میں گھرس دالیس آئ اورحب معمول رشول الترصلے الشرعكية لم تشريف لائے سلام كيا اور مزاج يُرسى فرما ئ توصيفيًّا نے آنخصرت صلی النٹر عکتیے کم سے اجازت طلب کی کہ اینے والدین کے گھر چلی جا دُں۔ آپ نے اجازت دمدی ۔ منشار بیرتھاکہ والدین سے اس معاملہ کی تحقیق کریں۔ میں نے جاکر والدہ سے یُو چھا، انھوں تی دی که تم جبیی عورتوں کے دشمن ہواکرتے ہیں اورایسی چیزیں شہور کیا کرتے ہیں تم اسکے غم میں نہ پر کو د بخود معامله صاف ہوجا و بگا۔ میں نے کہا ہشتی ان انٹر! لوگوں میں اسکا چرجا ہوجیکا میں ے صبر کردں ۔ یں ساری دات روتی رہی، نه میراآ نسوتھا نه آ تکھ لگی۔ دوسری طرف رشدل الشرصل الشرعكي لم في جواس خرك تصليف سيخت عمكين تق اوراس عرصه بي اس متعلق کوئ وی بھی آپ پر نہ آئ تھی اسلئے حضرت علی کرم اللئر وج ئرا دراُسامہ بن زیر جود ونوں کھ مے ہی آ دمی تخفے ان سے شورہ لیا کہ ایسی حالت بیں مجھے کیا کرنا چاہتے - معشرت اُسامہ بن ڈیڈنے تو کھل رعوض کیا کہ جہا تھا۔ ہما داعلم ہے ہیں عائت و کے بالے میں کوئ بدگا فی نہیں۔ انجی کوئ بات اليي نهين سي بدگاني كي داه بيدا بو -آب ان افوا بول كي كھ برواه نه كري -حضرت على كرم الشروجية ني دات كوغم واصطراب سے بجانے كے لئے) بيمشوره دياكه الشرقعالي نے آپ يركيف كى نبين فرمائ أكرا فواموں كى بنارير عائت من كيطرف سے كچھ تلدّر طبعي ہوگياہے توعورتين اورببت بين - اورآب كايد مكدراسطرح بعي رفع بوسكما ب كربريره رخ جو صدلقه عائشهاكي

丛

نيز ہيں اُن سے انکے حالات کی تحقیق فریا لیجئے۔ چنانخیر رشول انٹر صلے انٹر عکتیہ کم نے بریراہ سے

يُوجِيدُ في اي بريره رم نے عرض كياكہ اور توكوئ بات عيب كى مجھے ان بين نظر نہيں آئ بجز

اسے کہ نوعمر لط کی ہیں تعیض او قات آٹا گوندھ کررکھدیتی ہیں خود سوجاتی ہیں جری آکر آٹا

کھاجاتی ہے (اسکے بعد حدیث میں رسول الشرصلے الشرعکی کا خطبہ ینا اور برمبر نبرتهمت کھڑنے والوں اور افواہ بھیلانے والوں کی شکایت کا ذکرفر مانا اورطویل قصته مذکورہے ۔آگے کا مخصر قصته یہ ہے کہ) صدلقیہ فو ماتی ہیں کہ بچھے یہ سارا دن میسر دوسری دات بھی سلسل رفتے ہوئے گزری کے والدین تھی میرے یاس آگئے تھے وہ ڈراسے تھے کہ رونے سے میراکلیجہ کیسط جا بیگا میرے والدین ميريياس بيضيمون تقح كدرشول لترصدان عليكم تشرب لاكاور يمياس مبقوكة اورجي يرققه جلاتهااس سيبلي آيمير بياس اكرنه بيقي تخف بيمراك ايك فقرخط بنشهاد يرهاا ورفرمايا المعائشه مجھے تھالے بادمیں میہ باتیں بہتی ہیں۔ اگرتم بڑی ہوتو صر درالسات کیں بڑی کردینے رابینی بران کا اظہار بذربعيدوي فرما دينيكے) اوراكرتم سے كوئ لغوش بوگئى ہے توا دلتر سے تو بھاستغفار كروكيو كدبث رہ جب اینے گناه کا اعتراف کرکے تؤیر کرنتیا ہے توانشر تعالیٰ اسکی توبہ قبول فرمالیتے بن جریشول انٹر صلے امتر عکتیے کم نے اپنا کلام تورافر مالیا تومیرے آنسو بالکل خشک ہوگئے،میری آبکھوں یں ایک قطرہ نر رہا۔ میں نے اینے والدابو برصدتی اسے کہاکہ آب رشول استر صلے استرعکتی ہم کی بات کا جواب ديجة ـ ابو بحرام في عذر كياكمس كياكه مكتابون - بيمس في بن دالده سے كهاكد آب جواب دیجے اضوں نے بھی عذر کردیا کہ میں کیا کہرسکتی ہوں ۔اب مجبور ہو کر تھھے ہی بولنا بڑا اس ایک لم عمر ره کی تقی ا ب تک قران تھی زیا دہ نہیں پڑھ تکی تقی ۔ اسوقت اس رنج و تم اورانتهای صدمه كى حالت ميں جبكه اچھ اچھے عقلار كو تھى كوئى معقول كلام كرنا آسان نہيں ہؤنا حصر صديقة منك جو مجحة قرمايا وه آيك عجيث غربي عافلانه فاصلانه كلام ب اسحالها فالعبينه -UZ 6250

والله لقدى عم فت لقد سمعتمر هذا الحديث حتى استقع فى انفسكم وصدة توبيه ولئن قلت لكم الى بريشة والله يعلم الى بريشة لا تصدقونى وكلان اعترفت لكم با هم والله يعلم الى منه بريشة لتصد قونى والله لا اجدى ولكو مثلا الاكما قال ابويوسف فصبر مثلا الاكما قال ابويوسف فصبر مثلا الاكما قال ابويوسف فصبر مميل والله المستعان على ما تصفون

بخدا بھے معلوم ہوگیا ہے کہ آپ نے اس بات کو سنا در سنے رہے

یہا تک کہ آپ کے دل میں جیاہ گئی اور آپ نے اسی (علا) تصابی

کردی - اب اگر میں بیکہتی ہوں کہ بی اس سے بُری ہوں جیساکہ

اسٹر جا تا ہے کہ اقع میں بُری ہوں تو آپ میری تصدیق فرکر نظے

ادر اگر میں ایسے کام کا عزاف کر لوں جس سے میرائری ہونا اختراف کر اور احتراب بیں اپنے اور جا تھی کوئ مثال بجر اسکے مہیں یاتی جو یوسف علیات لام کے دالد میتی در اللہ اس می المیان میں میں صبر میرائی فقیا در آپ ہوں اور النٹر سے اس معالم میں میر میرائی فقیا در کر تا ہوں اور النٹر سے اس معالم میں مدر طلب کرتا ہوں جو تم بیان کر دہے ہو۔

صدلقدرة فرماتی ہیں کا شی بات کر کے میں الگ اپنے بستر پر جاکر لیٹ گئی اور فرمایا کہ مجھے لیتی تھا کہ جبیا کہ میں نی الواقع بڑی ہوں اللہ تعالی میری برارت کا اظہار بذریعہ وجی حرور فرما ویں گے بیسی یہ وجہا وخیال بھی مذبھا کہ میرے معاطی میں قرآن کی آیات نا زل ہونگی جو ہیشہ تلاوت کی جا ونگی کیونکہ میں اپنیا مقام اس سے بہت کم محسوس کرتی تھی۔ ہاں یہ خیال تھا کہ خالباً آپ کو خواب میں مسیسری برارت فا ہم کردیجا وے گئی ۔ صدیقہ منظ فرماتی ہی کہ رسول اللہ وسے اللہ علیہ ما بینی اس محلس سے بھی ہیں اس محسوس سے بوئ جو نز ول جی کے وقت ہوا کرتی تھی جو اکون میں ہی کوئ ہنیں اُٹھ تھا کہ آپ پر وہ کیفیت طاری ہوئ جو نز ول جی کے وطف تھا کہ آپ پر وہ کیفیت طاری ہوئ جو نز ول جی کے وقت ہوا کرتی تھی جب یہ کیفیت دفح ہوئ تو رسول اوٹر صلے اللہ علیہ ہم میں آپ کی بیشا نی مبارک سے بیملا کلم جو جب یہ کیفیت دفح ہوئ تو رسول اوٹر صلے اللہ علیہ میں آپ کی بیشا نی مبارک سے بیملا کلم جو خوب یہ کیفیت دفح ہوئ تو رسول اوٹر صلے اللہ علیہ میں آپ کی بیشا نی مبارک سے بیملا کلم جو فرمایا وہ یہ تھا ابد شری بیا عاشدہ اما اللہ فقل ابدا کہ اس میا میں اس معاملہ میں اوٹر کے سوائس کا احسان ما نتی ہوں نہ کھڑی ہوں گی میں صاحب سے بیملا کی میں اس معاملہ میں اوٹر کے سوائس کا احسان ما نتی ہوں نہ کھڑی ہوں گی میں اسے درسی کیا کہ اس میں اس معاملہ میں اوٹر کے سوائسی کا احسان ما نتی ہوں نہ کھڑی ہوں گی میں اسے درسی کی شکر گزار ہوں کہ اُس نے تو بھی بری فرمایا ۔

حضرت صدیقیدم کی امام بغوی نے افعیں آیات کی تفسیر میں فر مایا ہے کہ حضرت صدیقیہ عائشہ رہ ا چسٹ رخصوصیات کی چینر خصوصیات الیبی ہیں جو اِن کے علاوہ کسی دوسری عورت کو نصیب نہیں ہوئیں اور صدیقیہ عائشہ م مجھی (بطور تحدیث بالنجہ تر) ان جیزوں کو فحز کے ساتھ بیان فرمایا کرتی تھیں ا ایک سے کہ رسُول الشرصلے الشرعکی کے بڑکاح میں آفے سے پہلے جبرئیل امین ایک بیٹی کیڑے میں میری افعور کرکی آنخصرت صلے الشرعکی کے باس آئے اور فرمایا کہ یہ تھا دی زوجہ ہے (رداہ التر فدی عائشہ) اور بعض دوایات میں ہے کہ جبرئیل اُ مین این ہتھیلی میں بیصورت کیکر تشریف لائے تھے۔

دوسوی میرکد دستول استرصلے استرعکی کے دواری کے سواکسی کنوادی کو گئے ہے بہتا ہے اسکی کیا۔

میں کیا۔ شیسوی میرکد رسول استرصلے استرعکی کی وفات اُنکی کو دیں ہوگ ۔ چوتھی میرکہ بیت عائشہ میر ہی تاہیں میں آپ مدفون ہوئے۔ پاپنچو ہیں میرکہ آپ براسوقت بھی وی نازل ہوتی محتی جبکہ آپ حضرت صدیقے روز کے ساتھ ایک لحاف میں ہوتے تھے دوسری کسی بی بی کو میخصوصیت حاصل مذتھی ۔ چھٹی میرکہ اُنہا مان سے اُن کی برارت نازل ہوئ ۔ سکا تو بین میرکہ کو میں اور صدیقے ہیں اور صدیقے ہیں اور اُن میں سے ہیں جن سے دُ نہا ہی میں مغفرت کا اور رز ق کریم کا الشر تعالیٰ نے وعدہ فرالیا ہی۔ (مظہوی)

مصرت سدیقی این فقیها ندا درعالمانه تحقیقات ا در فاصلانه تقریر کود مکھکر جضرت مولی بن الحدیم نے فریا بیاکہ میں نے صدیقیہ عائشہ اسے زیادہ قصیح وبلیغ نہیں دیکھا۔ (دوالا اللامین ی) سُوْرَةُ النَّورِ ٢٧:٢٧

تفسیر قرطبی میں نقل کیا ہے کہ بوسف علیہ اسلام پر ہمت لگائ گئ توالٹر تعالی نے ایک جھوٹے بھی کے گوگویائ دیکراس کی شہادت سے اُن کی برارت ظاہر فرمائ اور حضرت مریم عیبہاا اسلام پر ہمت لگائ گئی توالٹر تعالیٰ نے اُنکے فرز ندعیلی علیہ اسلام کی شہادت سے اُن کو بُری کیا اور حضرت صداحیہ عائشہ ہم پر ہمت لگائ گئی توالٹر تعالیٰ نے آئ کریم کی دمن آیات نا ذل کرکے اُن کی برارت کا اعلان کیا، جس نے اُن کے فضل وعزت کو اور بڑھا دیا ۔

آیاتِ مذکورہ کی اجمالی تفسیر خلاصۂ تفسیر کے عنوان میں آ بیکی ہے اب آیات کے خاص خساص جملوں سے تعلق کچھ میاحث ہیں وہ دیکھئے ۔

لَا يَحْسَبُونَ وَ شَكَالُكُونَ ، بِهِ خطاب بنى كريم على الشرعكية لم اور صديقه عاكسة في اور صفوالنَّاور تمام مُومنين كو بحب مِن كواس افواه كى اشاعت سے صدمہ بہنچا - اور معنے يہ بي كه اس واقعہ كوات بُرا شبجين كيونكه الشرتعالے نے قرائ ميں برارت نازل فرماكران كا اعزازا ور براُھا ديا اور جن لوگوں نے بير مركات كى تقين اُن كى وعيد شديد نازل فرما دى جو قيامت كى محرالوں مي برُھى

واتى-

عارت القرآن جسكتشم سُوُرَة النويد ٢٧: ٢٧ يكُلُّ الْمُرِينُ يِّنَهُ فَي قَا الْنُسَبَ مِنَ الْهِ تَنْحِيَّ ، تعين بوكوں نے اس بہتان بیں جتناحت لیا اُسی مقدار سے اسکاکناہ کھاگیا ہے اور اُسی تناسب سے اُس کوعذاب ہوگا۔جس نے پنجبرگھری اور علتی کی جسکا ذکرائے آیا ہے وہ سب سے زیادہ عذاب کا مستی ہے، جس نے خبر سنکرتا ئید کی وہ اس سے کم اجس نے شکارسکوت کیا وہ اُس سے کم . وَالْيَانَ تُولَىٰ كِبْرُةُ مِنْهُمْ لَهُ عَنَ ابْ عَظِيمُ الْفَاكِيرِ بَسِرَا لَكَافَ كَ مِعْدِرُ لِهِ كَا بین مُرادیہ ہے جس نے اس تہمت میں بڑا کام کیا لینی اسکو گھڑا اور جلتا کیا اسکے لئے غذا عظیم ہو مراداس سے عبدالسری آئی منافق ہے (رواہ البغوی وغیرہ) كُوْلَا إِذْ سَمِعْنَكُونَ ظَنَّ الْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنْتُ بِالْفُيْمِمْ خَيْرًا " وَقَالُوا ها نَآ إِنْكُ مَيْدِينَ ، تعنى ايساكيون منه واكر حب تم في اس تهمت كى خبرسنى تقى تومسلمان مردادرسلما عورتیں اینے بارے میں تعنی اینے مسلمان بھائ بہن کے بارے میں نیک گمان کرتے اور کہر بنے کہ یہ کھلاجھوٹ ہے۔ اس آبیت میں کئی چیزین فابل غور ہیں اوّل یہ کہ با نَفْسِهِ مُورِ کے لفظ سے قران كريم نے بيدا شاره كياكہ جومسلمان سى دوسرے سلمان كوبد نام درسواكرتا ہے دہ درحقيقت اپنے اسيرى ورسواكرتا بي كيونكه اسلام كرشة نے سبكوايك بنا ديا ہے - قرآن كريم نے اليے متام كا مواقع مين بيراشاره استعال فرمايا سي جيباايك جكدفرما يا لَاتَكُينُ ذَا أَنفُسَكُولِينَ عيب نه لكا دُ ا پینے آپ کو۔ تمراد اس سے بیر ہے کہ سی بھائی مسلمان مرد یا عورت کو۔ دوسری جگہ فرمایا لَا تَفْتُكُوْلاً أنْهُ سَكُوُ، اینے آپ کو قتل نه کر دیمرا در دہی ہے کہ کسی بھائ مسلمان کوفتل نه کر ویتبیسری جگه فرمایا وَلَا تَعْزُجُوْلَا أَنْفُسَكُمْ مِنْ دِيَا رِكُوْ، لِينَ نه زِكالوابينة آب كوابينة كفرون سے - يہاں جي سي سال بهائ كواسك كفرس بكالنا مُرَادب - جوسى تكه فريايا فَسَلِّمُواعَلَى أَنْفُسِكُو، بعين ابنا أَبُوسِلاً ا کر د- مُرا د ویری بھائ مشلمان کوسلام کرنا ہے ۔ پیرسب آیات قرآن پینمنی ہوایت دیتی ہیں کہ أيك مسلمان جو دومسر كسي تعبى سلمان برعيب لكانا يا اسكوا ينا ونفضان بينجا تا سي حفيقت کے اعتبار سے خود اپنے کو عیب دار کرتا ہے اور خود نقصان و سکلین اُٹھانا ہے کیو تکہاس کا انجام يُورى قوم كى رُسواى اور بدنا ي موتى ب بقول سعدى ك چواز قومے کے بے دائشی کرد ی نہرکہ رامنزلت ماندنہ مِنہ را قران کی اسی تعلیم کا نزینها کہ جب مسلمان اُ بھر ہے تو بوری توم کے ساتھ اُ بھر ہے ، اُن کا ہر فرد أبحرا-اوراس كے جھوڑ نے كانتيجراج أنكھوں سے ديكھا جارہا ہے كہ سب كرے اور ہر فرد كرا. دوسرى مات اس آيت ميس يه قابل نظريك كم مقام كا تفاضايه تفاكم كولاً إذْ سِم عَهُودُ وَ ظَنْنَاقُهُ ا فَانْفُسِكُو خَيْرًا بصيف خطاب كها عامًا عبساك شروع مين سمعقوة بصيفه خطاب آيا ب مير

معار و القرآن جبلد شم

قرآن کریم نے اس مخضر علیے کو چھو دکر اس جگہ طرز بدلاکہ صیغہ خطاب بعینی فَلنَکُنْتُمْ کے کابے کُظُنَّ الْمُوْفِقِ وَکُنَّ الْمُوْفِقِ وَکُنَّ الْمُوْفِقِ وَکُولَ سِے سرز دیموا وہ اس فعل کی حد مرایا۔ اسیس ملکا سااشارہ اس بات کی طرف ہے کہ بیفن اوگوں سے سرز دیموا وہ اس فعل کی حد تک مؤمنوں کہلانے کے سیحی مہنیں کیو مکدا بھان کا تقاصا بیر تھا کہ ایک سلمان دوسرے سلمان سے محسن طن قائم کہ گھتا۔

تیسری بات به قابل نظر ہے کہ اس آیت کے آخری جلے د قالو الفائ آلاف کی تھیں بہ تعلیم دی گئی ہے کہ تنقاضا ایمان کا یہ تھا کہ مسلمان اس خبر کوشنے ہی کہدیے کہ یہ گھلاجھوٹ ہے اس سے ثابت ہواکہ کسی سلمان کے بالے میں جب ککسی گناہ یا عیب کا عمکسی دلیل خبر عی سے نہ ہوجائے اُس قصائی اُس کے ساتھ نیک گمان رکھنا اور بلاکسی دلیل کے عیب وگناہ کی بات اُس کی طرف منسوب کرنے کو جھوٹ قرار دینا عین تقاضائے ایمان ہے ۔

مسمئلہ ۔ اس سے ثابت ہوا کہ ہرسلمان مردہ عورت کے ساتھ اچھا گمان رکھنا واجب مسمئلہ ۔ اس سے ثابت ہوا کہ ہرسلمان مردہ عورت کے ساتھ اچھا گمان رکھنا واجب جب مکسی دلیل شرعی کے اُس جب کے ملاحث ثابت نہ ہو جائے ۔ اور ہو شخص بلا دلیل سفری کے اُس جب کا برائزام لگا تا ہے اُس کی بات کورد کر ناا در چھوٹا قرار دینا بھی واجب ہے کیو کہ وہ محض ایک غیبت اور سمان کو بلا دج اُرسواکر ناہے ۔ (مظہری)

نورلام میکا فرق علیت با کربعت شهک آن فادگویا توا بالشهک این فاد کیزیا عنداراته بین اورلام میک ایسی خرش و کرنوالوں کے بارہ بین الله میک الله بی خرش و کرنوالوں کے بارہ بین مسلمانوں کو چاہئے تھا کہ اُن کی بات کو چلتا کرنے ہے بجائے اُن سے مطالبہ دلیل کا کرتے اور چونکہ نہمت نہ ناکے معالمے بین دلیل شرعی چارگواموں کے بغیرقائم نہیں ہوتی اسلے اُن سے مطالبہ بیرنا چاہئے کہ تم جو کچھ کو ہرہے ہوائس پر چارگوام مین کردیا زبان بند کرد - دو تمرے جلامی فر مایا کہ جب وہ چارگوا مین کردیا زبان بند کرد - دو تمریح جلامی فر مایا کہ جب وہ چارگوا مین کردیا دبان بند کرد - دو تمریح جلامی فر مایا کہ جب وہ چارگوا مین کردیا دبان بند کرد - دو تمریح جلامی فر مایا

یہاں یہ بات غورطلب ہے کہ ایسا ہونا کچھ بغیر نہیں کہ ایک خص نے اپنی آنکھ سے ایک واقعہ دیکھا گراسکواس پر دوسرے گواہ نہیں ملے تواگر شخص اہتے جہتم دید واقعہ کو بیان کر ہا کہ تواس کو جھوٹا کیسے کہا جاسکتا ہے خصوصاً الشرکے نزدیہ جھوٹا کہنا توکسی طرح سجھ ہی ہیں نہیں آتا کیونکہ اسٹر تعالیٰ کو توسب واقعات کے حقائق معلوم ہیں اور یہ واقعہ وجود میں آتا بھی معلوم ہے تو وہ عندا نشر حجوث بولنے والا کیسے قرار پایا ۔ اس کے دوجواب ہیں اول یہ کہیا بالی عندانشر سے مراد مکم الشراور قالون الہی ہے بینی پیض قالون الہی اور حکم فداوندی کی دوسے جھوٹا قرار دیا جا میگا اور اسپر حقر قذف جاری کی جائے گی کیونکہ حکم رتبانی یہ تھا کہ جب چارگواہ بھوٹا قرار دیا جا میگا اور اسپر حقر قذف جاری کی جائے گی کیونکہ حکم رتبانی یہ تھا کہ جب چارگواہ بنہ دیا تو واقعہ و بیکھنے کے با وجود اس کو بیان نہ کر وا ورجو بغیر چارگواہوں کے بیان کرے گا وہ

اِذْ تَلَقُوْنَهُ بِا لَیسنَتِکُوْ، تَلَقَّی کامفہوم یہ ہے کہ ایک دوسرے سے بات بُوجھے اور نقل ازے، یہاں بات کوشنکر ہے دلیل اور بلاتحقیق آگے جلتی کر دینا مراد ہے۔

وَتَخْتُ بُوْنَكَ هَيِّتُنَا فَيْ وَهُوَيَعَنُكَ اللهِ عَظِيْوَ اللهِ عَظِيْوَ اللهِ عَنِي تَمْ تُواس كُومِ مُولى بات خيال كرتے تفقے كر ہم في جنسيا اُسنا ديسا دوسرے سے نقل كر ديا مگر دہ استر كنز ديك بہت بر اُلناہ تفاكہ بالا لا اور بے تحقيق اليسى بات كو چلتا كرديا جس سے دوسر في سلمان كوسخت ايذا ہو، اُس كى رُسُوائ اور اُلكے لئے ذندگى دُو بھر ہوجائے۔

دَكُوْلَةُ الْهُ سَمِعُ مُمُوْفَ قُلْتُوْمُ الْبُكُوُنُ لَنَاكَ مُنَاكَ لَمُ وَالْهِ اللهِ اللهُ الله

ایک شیرا درجواب اگرکسی کویہ شبہ ہوکہ جیسے کسی واقعہ کا صدق بغیر دسیل سے معلیم نہیں جہال کے اسکا زبان سے پرکالٹا اور چرچاکرنا نا جائز قراد پایا اسی طرح کسی کلام کا کا ذب ہونا بھی تو بغیر دسیل کے نیابت نہیں ہوتا کھی تو بغیر دسیل کے نیابت نہیں ہوتا کہ اسکو بہتا ای ظیم کہدیا جائے ۔جواب بہ ہے کہ ہر سلمان کوگنا ہوں سے پاک صاف جھنا اصل مشرعی ہے جو دلیل سے نابت ہے اسکے خلاف جو بات بغیر دلیل کے کہی جائے اسکے خلاف جو بات بغیر دلیل کے کہی جائے اسکے خلاف جو بات بغیر دلیل کے کہی جائے اسکے خلاف جو بات بغیر دلیل کے کہی جائے کہا تھا کہ ایک موردت نہیں ۔ صرف اتناکا فی ہے کہ ایک مؤرن سالمان

سورة النولا ١٠٢٣ ب القرآن جسله ر بغیرسی دلیل شرعی کے الزام لکایا کیاہے لہذایہ بہتان ہے -إِنَّ الَّذِينَ يُحِبُّونَ آنُ تَشِيْبُحُ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِينَ آمَنُوْ الْهُمُوعَنَ الَّ الْدِينَ الثُّه نَيَّا وَالْاَحِيْدَةِ وَمُ اس آيت مِن بِحرانُ لوكوں كى ندمت اورانُ پرُدنيا دَاخرت كے عذاب كى دعيدً جنھوں نے اس تہمت میں سی طرح کا حصر لیا ۔ اس آیت میں بیر بات زیادہ ہے کہ جو توک ایسی خسسری مشهوركرتيين كوياوه به جاست بي كرمسلانون مين بركارى اورفواحش يسيل جائي -انسداد فواحش كاقرآني نظام اورايك قران كيم في فواحش كے انسداد كايه خاص نظام بنايا ہےكه اہم تدبیرس کے نظرانداز کرنے کانتجب اول تواس می خبرکہیں شہور نے یا دے اور شہرت آج كل فوامش كى كرزت ہے - إلى تو تو بيوت مشرى كے ساتھ ہوتاكہ أس شہرت كيساتھ ہى مجمع عام میں حدّن نااس برجاری کرے اُس شہرت ہی کوسب انسداد بنا دیاجا ہے۔ اورجہال تبوت مشرعی ندم و وہاں اس طرح کی بے حیائ کی خبروں کو جلتا کر دینا اور شہرت دینا جبکا سے ساتھ کوئ منرانہیں طبعی طور پرلوگوں کے دلوں سے بے حیائ اور فواحش کی نفرت کم کردینے اور حبسرائم پرا قدام كرنے اور شائع كرنے كاموجب ہوتى ہے جبكامشا ہدہ آجكل كے اخبارات ميں روزانہ ہوتا ہے كہ آ ا طرح كى خبرى برر وزبراخبارمين نشر بوتى رتبى بي - نوجوان مرد ادرعورتين أن كو ديجيت رستين دوناندائسی خبردں کے سامنے آنے اور اُس کیسی خاص سزاکے مرتب نہ ہونے کالاز می اور ایسی اُڑ يه مخله المسكر د ميس و من و من المعني و من المنافظر الله المنافظر الله المناسب المنافظر الله المناسب المنافظر المناسب المنافظ المناسب المنافظر المناسب المنافظ المناسب المنافظ المناسب المنافظ المناسب المنافظ المناسب المنافظ بداکرنے کاموجب موتا ہے۔ ای لئے قرآن علیم نے ایسی خبروں کی تشہیر کی اجازت صرف اکس صورت میں دی ہے جبکہ وہ ثبوت شرعی کے ساتھ ہواسے نیچر میں خبر کے ساتھ ہی اس بے حیای کی ہوگناک یا داش بھی دیکھنے شننے والوں کے سامنے آجائے ۔اورجہاں ثبوت اور سزانہ ہوتو اسی خبرول كى اشاعت كو قران نے سلمانون ميں فواحش يھيلانے كا ذريعة قرار ديا ہے - كاش سلمان اس مغوركري - اس آيت مي السي خبري بلا نبوت مشهوركرنے والوں بردنيا و آخرت دونوں مي عذاباليم وذيكا ذكري - آخرت كاعذاب توظا برب كد قيامت ك بعدم وكاجسكا يهال مشابده بنیں ہوسکتا مگر ڈنیا کا غداب تو مشاہدہ میں آ نا جاہیے سوحن توگوں پرحتہ قدن رہمت کی سزا) جاری کردی کئی اُن پر تو دُنیا کا عزاب آہی گیا۔ اور اگر کوئ شخص سشرائطا جرار حدموجود نہے دنے كى دجه سے حدِّ قذت سے بِح بْكلاتووه دنيا بين بھي في الجله ستى غذائع في آايت كے مصداق كيلئے بيمي كافي ہو۔ وَلَا يَأْتَلِ أُو لُوا الْفَفَنْلِ مِنْكُوْ وَالسَّعَدَ آنْ يُؤْتُوْآ الْولِى الْقُرْبِي وَالْمَسْكِينَ وَالْمُهُ وِينَ فِي سَبِيلِ لِلْمِي وَلِيَعْفُوا وَلِيَصَفَحُوا مَا لَا نَصِبُونَ آنَ يَغْفِرَاللهُ لَكُو وَاللَّهُ عَفُورٌ رُحِيْم

معادف القرآن جسائد شنم

صحابیکرام کوالی اخلاق کی تعلیم حرات کے آنگی ، اشتلاء کے معط قسم کھانے کے ہیں۔ حصرت صدیم ہے بہتے جن پر رشول الشرصلے الشر میں سے منطح رہ اور حسان مبتلا ہوگئے ہتے جن پر رشول الشرصلے الشر ملکیے ہمنے کے واقعہ میں سمانوں میں سے منطح رہ اور حسان مبتلا ہوگئے ہتے جن پر رشول الشرصلے الشر ملکی ہے کہ نے نز دل آیات برا رہ کے بعد حدِ قد ف جاری فرمای میں سے آور مسا دقہ نصیب صحابی غزوہ کو بدر کے مشرکا رمیں سے ہیں مگر ایک نفزش ہوگئی جس سے آور ہر صا دقہ نصیب ہوگ اور حق تعالی نے جس طرح حضرت صدر گھے کی برا رہ نا ذل فرما دی اسی طرح ال مؤمنین کی آور جبول کرنے اور معاف کرنے کا بھی اعلان فرما دیا۔

آور جبول کرنے اور معاف کرنے کا بھی اعلان فرما دیا۔

مِنْظِی، خضرت صدیق اکبر کے عزیز ہمی تھا در مفلس ہی ۔ حضرت صدیق اکبر اُن کی مالی
مد د فرمایا کرتے تھے۔ جب واقعہ اِنکسیں اُن کی گونہ شرکت نابت ہوی تو صدیقہ انکے الدی فقت میردی اور بیٹی کو ایساسخت صدر مہ بہنجانے کیوجہ سطیعی طور پر منطق ہے د نج بیدا ہو گیا اُد
تم کھا بیٹھے کہ آئٹ رہ ان کی کوئ مالی مدد نہیں کریں گے۔ یہ ظاہرہ کہ کسی خاص فقیر
کی مالی مدد کر کا کسی خاص مالی ان برعلی النقیبین واجب نہیں، اور جس کی مالی مدد کوئ کرتا ہے
اگر وہ اُس کور دک لے تو گئناہ کی کوئ وجہنہیں میر صحابۂ کرام کی جاعت کوئ تعالیٰ دُنیا
سے لئے ایک مثنالی محاضرہ بنانے والے تھے اس لئے ایک طوف جن لوگوں سے لغزش ایموں ان کو بی تو بداور آئدہ اصلاح حال کی نعمت سے نوازا۔ دوسری طرف جن بزدگوں
افر جسی ایسے غریب فقیر کی مد دیرک کرنے کی تسم کھالی اُن کو علی اخلاق افراد اور کردیا جائی اخلاق کی تعنی ماس آبیت میں دی گئی کہ اُن کو بیسے غریب فقیر کی مد دیرک کرنے کی تسم کھالی اُن کو عالی نیا ہوا ہے۔ آئکی
مالی امداد سے دستکش ہو جانا اُن کے مقام بند کے منا سبنہیں جس طرح انظر تعالیٰ نیا اُن کو معان کو معان کے معام لینا چاہئے۔

چو کی حضرت منظی مالی امدا دکر ناکوئ سنزی واج بیضرت صدیق کی در منہیں تھا اسی گئے قرارِ کریم نے عنوان لیفتیا دفر مایاکہ اہل علم فونسل جن کو اللہ نے دین کمالات عطافر طئے ہیں اور جن کو اللہ کی داہ میں خریج کرنے کی وسعت و گنجا کش بھی ہے اسکو ایسی تسم نہیں کھانی جاہئے۔ آہت ہیں دونفظ اول العنونسل اور دالسعة اسی معنے کے لئے آئے ہیں۔

اس آیت کے آخری جملے میں جوارشا دہواکہ اُلا تنجبی و اُن یُتغفِی اُلاہ کُو ہوں کے اُن یُتغفِی اُلاہ کُو ہوں کے ا کیاتم یہ پند نہیں کرتے کہ اللہ تعالیٰ محقادے گناہ معات فرمانے توصد لیے اکبرہ انے فوراً کہا۔ واللہ اتی احت ان یغفہ اللہ فی (رواہ اِنیجان) مینی بخدا میں صرور چا ہتا ہوں کہ اللہ تعالیٰ میری مغفرت فرمانے اور فوراً حضرت مِسُطِح کی مالی اور جاری فرمادی اور یہ فی طیا اِس مجھی ہے اور او بہند منہ وی کی ایک اور دہوگی دیا دی اور کی میں اور اور بند سورة التورس ٢٠: ٢١

معارت القرآن جسكتشم

یہ وہ مکارم اخلاق ہیں جن سے صحابہ کرام کی تربیت کی گئی ہے۔ سیجے بخاری میں حضرت میں ین عمره اسے دوایت سے کہ رسول انشرصلے انشر عکی کم نے فرمایا

ليس الواصل بالمكافى ولأكن الواصل يعنى صارتمي كرنے والا وہ نہيں جورشة داروں كے صرف احظ کا بدلہ کردے بلکا صل صلہ دخی کرنے والا وہ ہے کہ دشتہ وادوں (ازمظهری) کے قطع تعلق کرنے کے باد جود تیعلق قائم رکھے۔

الذى اذا قطعت رحمه وصلها -

إِنَّ الَّذِينَ يَنْ يَوْمُونَ الْمُحْصَنْتِ الْغَفِلْتِ الْمُؤْمِنْتِ لَعِنْوًا فِى النَّ ثَيَّا وَالْاَحْوَكَا وَلَهُ هُوْ عَنَ الْحِعَظِيْدُ ، اس آيت ميں بطا ہر محرر وہضمون بيان ہوا ہے جو اس سے پہلے آيات قذف مين آجِكاب وَالنِّينِ فِي يَوْمُونَ الْمُخْصَنْتِ ثُمَّرَ لَعْ يَا نُوَّا بِٱلْفِعَةِ شُهُكَا أَءُ فَاجْلِدُوهُم تَمْنِينَ جَلْنَ ﴾ وَلَا تَقْبُلُوا لَهُ وَشَهَاءَ وَ أَبَدُاهِ وَأُولِيكَ هُمُ الْفُسِقُونَ و إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ بَعُي ذَلِكَ وَ أَصْلَحُوا ، فَإِنَّ اللَّمَ عَفُورٌ رَّحِيْهِم سَكِن درحقيقت ان دونون مِن ا كي برا فرق ہے كيونكه آيات حرقدت كے آخر ميں توبه كرنے والوں كااستثناء اور أسح لئے معفرت کا د عدہ ہے -اس آیت میں ایسانہیں بلکہ و نیا و آخرت کی لعنت اور عذا بعظیم بلااستثنار مذکورہ اس سے معلوم بوتا ہے کہ اس آیت کا تعلق ان لوگوں سے ہے جفوں نے حضرت صدلیقہ عائشہ ہم بر المترت لگای اور مجرأس سے توبہ نہیں کی ایہا تک کر قران میں اُن کی برارت نا زل ہوسکے بعد مجی وہ ا پناس افتراریر قائم اور تنجت کا چرچا کرنے میں شغول رہے ۔ ظا ہرہے کہ بیر کام کسی سلمان سے عکن بنہیں-اور جومسلمان تھی نصوص قران کا ایسا خلات کرے دہسلمان بنہیں رہ سکتا۔ اس لئے بیر مضمون أن منا فقين كم بالمعين آيا بي بخون في آيات بلات صديقه نا ذل بوف مع بعد بهي اس مشغلهٔ تنبهت کونهیں جھوڑااُن کے کا فرمنانق ہونے میں کوئ شک وشبہیں تیائیوں کیلئے ایشرتعا في فضل منته ورحمته؛ فرياكه مرحوم دارين قرار ديا اور ميفول نے تو بهنہيں كى اُن كو اس آيت ميں ملحون ونیا وآفرت فرمایا - تائین کوعذاب سے نجات کی بشارت دی اورغیرتائین کے لئے عذاب عظیم کی وعيد فرمائي - تا نبين كويات الله عَفْوَرُ ترجينية فرماكرمغفرت كي بشارت دى اورغيرتا بُهين كواكلي أتيت يَوْحَ تَشْهُلُ عَلَيْهِ مُن موانى شرو نے كى وعيد فرماى دكذاذكرة سبتى ى فى بيان القال ن ا یک ہم تنبیہ | حضرت صدیقہ عاکت مڑنے رتبمت کے قصنیہ میں جو بعض سلمان بھی مشر کی موگئے من يقضيها سوقت كانقاجب تك آيات برارت قرائ مين نازل نهين بوي تقين - آيا ت برارت نازل دونے کے بعد جوشف حضرت صدیقیر عائشہ منا پرتیمت سکائے وہ بلاشیر کا ف منکر ا قران ہے جیسا کہ شیعوں کے بعض فرقے اور بعض ا فراد اسیں مبتلا یائے جاتے ہیں اُن کے کا فرہونے میں كوئ شك شبركرنے كى بھى كنيائش نہيں دہ باجاع أتست كافر ہيں -

FAP

سُورَة النّور ١٢٠:

معارف القرآن جسأد ششم

آلَخَتِيدُ فَتُ لِلْحَيِيدُ فِي وَالْحَجِيدُ وَ الْحَجَيدُ وَ الْحَجَيدُ وَ الْحَجَيدُ وَ الطَّيِبِيدُ وَ الطَّيبِيدُ وَ الطَّيبِيدُ وَ الطَّيبِيدُ وَ الطَّيبِيدُ وَ الطَّيبِيدُ وَ الطَّيبِيدِ وَالطَّيبِيدِ وَ الطَّيبِيدِ وَالطَّيبِيدِ وَالطَّيبِيدِ وَالطَّيبِيدِ وَالطَّيبِيدِ وَالطَّيبِيدِ وَالطَّيبِيدِ وَالطَّيبِيدِ وَالطَّيبِيدِ وَالطَّيبِيدِ وَالطَّيبِ وَالطَّيبِيدِ وَالطَّيبِيبِ وَالطَّيبِيبِيدِ وَالطَّيبِيدِ وَالطَّيبِيبِ وَالطَّيبِيبِيدِ وَالْمُعْتِيبِ وَالطَّيبِيبِ وَالطَّيبِيبِ وَالطَّيبِيبِ وَالطَّيبِيبِ وَالطَّيبِيبِ وَال

عورتوں کے لائق ہوتے ہیں۔

اس آخری آیت میں اقبل تو عام ضابطہ یہ تبلادیا گیا کہ ادلتہ تعالی نے طبائع میں طبعی علو پر جوڈ رکھا ہے۔ گندی اور بدکا رعور تیں برکا رمُر دوں کی طرف اور گندے بدکا دمردگندی برگا عور توں کیطرف دغبت کیا کرتے ہیں۔ اسی طرح پاک صاف عور توں کی دغبت پاکصا ن مُردوں کی طرف ہوتی ہے اور باک صاف مُردوں کی دغبت پاک صاف عور توں کبطرف ہوا کرتی ہے۔ اور ہرا کیا بنی دغبت کیمطابق اپنا جو از تلاش کرتا ہے ادر قدر تہ اُسکو وہی بلجا تا ہے۔

اس مام عادت کلیداور صنابطه سے داضح ہوگیاکدا نبیار علیهم السلام جو و نیامیں پاکی اور صفای ظاہری و باطنی میں مثالی شخصیت ہوتے ہیں اس لئے اللہ تعالیٰ اُن کواز واج بھی اُنکے مناسب عطافر طقے ہیں۔ اس سے علوم ہواکہ رسول اللہ صلے اللہ عکمیہ م جو تام انبیار کے مرازی اُن کواز دلج مطہرات بھی اللہ تعالیٰ نے پاکی اور صفای ظاہری ادر اخلاتی برتری میں آئے۔ ہی

سورة التوريم ١٩:١٢ معارت القرآن جسكة ى مناسب شان عطا فرمائ ہیں۔ اور صدیقے عاکشہ اُ اُن سب میں ممتاز ہیں۔ اُن کے بارے میں شک و شبهه دین کرسکتا ہے حس کوخود رسول الشرصلے الشرعکتی کم ایان ندم و -اورحضرت مؤے حضرت لوط علیجاانسلام کی بیبیوں کے بارے یں جو قرائی کیم میں اُن کا کافر ہونا مذکورہے تو اُنکے متعلق بھی یہ تنابت ہے کہ کافر ہونے سے با وجود فسق وفجور میں مبتلا نہیں تقین حضرت ابن عباک نے فرمایا ما بغت احمراً فی فظر، بعبی کسی نی کی عورت نے کہی زنا نہیں کیا (وکر فی الدرالمنشور) اس مے علوم ہواکہ کسی نبی کی بیوی کا فر ہوجائے اسکا تو امکان ہے گر برکار فاحشہ ہوجائے ہے مكن نهيس كيونكه بدكارى طبعى طور مرموجب نفرت عوام ب كفرطبعي نفرت كاموجين وبال القران الدِّينَ امَنُوا لَا يَنْ خُلُوا بِيُونًا عَايَرَ بِبُونِيكُوْ حَتَّ نَسْنَا لِسُو مت بعایا کروکسی گھرمیں ایے گھر کے سوائے جب تک بول جال ندکم تَهْلِهَا وَلِكُوْ خَيْرٌ لِكُوْ لَعَكُو لَعَكُو تَنَ كُ الم كراد ان كرواون بريد بهترب بتهادے حق ميں نَ لَمُ تَجِدُ وَاقِيْهَا آحَدًا فَلَا تَنْخُلُوْهَا حَتَىٰ يُؤْذَنَ لَ نَ قِيْلَ لَكُ الْرَجِعُو الْمَارْجِعُو الْمُورَ وَكُلُ لَكُورُ وَاللَّهُ مَا تَعْمَلُونَ ا كريم كوجواب ملے كه بھرجاد تو بھرجاد اسيں خوب حفرانى ہے بہاہے كئے اور النٹرجويم كرتے ہوائس كو عَلَيْهُ ﴿ لَهِ اللَّهِ عَلَيْكُونُ جُنَاحُ أَنْ تَنْ خُلُوا لِيُوْتًا غَيْرَمَسْكُوْنَةِ جانتا ہے ہیں گناہ تم براسیں کہ جاؤائی گھروں میں جہاں کوئ ہنیں بستا، فِيهَا مَنَاعُ لِكُ عُوْ وَاللَّهُ يَعَكُمُ مَا نَبُكُ وَنَ وَمَا تَكُتُمُونَ وَمَا تَكُتُمُونَ فَ اس میں کھے جیز ہو بہاری اورائٹر کومعلوم ہے جوئم ظاہر کرنے ہو اور جو جھیاتے ہو علم پنجم استعیدان اورآدابط قات با بمیسی کے سور و نور کے مفردع ہی سے فواحش اور بیمیائ کی روکھام كقسرس دخل وفي سيبياجازت عالى كا الصيفان سيتعلق جرائم كى سنراؤن كاذكراور بدليل مسى يرتبهت لكاني تدمت كابئان تها آكے أنهى فواحش كے انسداد اورعفّت وعصمت كے تفظ کے لئے ایسے احکام دیے گئے ہیں جن سے ایسے حالات ہی بیدانہ موں جہاں سے بیمیافی کوراستہ لے

JA

ا نبی احکام میں سے استیزان کے مسائل واحکام ہیں کہ سی تنص کے مکان میں بغیراً س کی اجازت

کے داخل ہونا یا اندر جھا نکنا عمنوع کر دیا گیاجسیں ایک حکمت پھی ہے کہ غیرمحرم عور توں پرنظر نہ یڑے۔ آیات مذکورہ میں مختلف تسم کے مرکانات کے مختلف احکام بیان کئے گئے ہیں۔

مكانات كى چارسى بى - ايك خاص اين رسن كامكان جبيركى دوسرے كے آنے كا ا حتمال منہیں ۔ دوسرے وہ مکان جبیں کوئ اور تھی رہتا ہو خواہ وہ اینے محارم ہی کیوں نہو یاکسی اور کے اسمیں آجا نے کا احتمال ہو۔ تنیسری سم وہ مرکان سبیکسی کا بالفعل رہنا ما نہ دوبؤں کا احتمال ہو۔ چوکھی قسم وہ مرکان جوکسی خاص بخص کی رہاکش کے لئے محصوص مذہوجیسے بجده مدرسه وخانقاه وغيره عام لوكون كے أسفاع اور آمدورفت كى حكيميں - انتين قسم اول كا عكم توظا ہرتھاكہ اسميں جانے كے ليے كسى سے اجازت لينے كى صرودت نہيں اسلے اُسكا ذكر ان آیات میں صراحة نہیں کیا گیا باقی تین مسموں کے مکانات کے احکام اگلی آیتوں میں بیان فراتے ہیں کہاے ایمان والوقم اینے (خاص رہنے کے) کھروں کے سوا دوسرے کھروں میں رجنمیں دوسرے توگ رہے ہوں خواہ وہ اٹن کی ملک ہوں یا کسی سے عاریۃ رہنے کو لے لئے ہوں یا رایه پر لیخ بهون) داخل مت بروجب تک اجازت حاصل نه کرلو (ادر اجازت لینے سے پیلے، ان كے رہنے والوں كوسلام مذكر او لينى اول باہرسے سلام كركے مجيران سے بوجيوكه ك ہمیں اندرآ کے کی احازت ہے اور بغیراجازت کئے ولیے ہی م ۔ احازت لینے کواین مثنان کے خلاف مجھیں میں واقع میں) بیری تھا ا جا زنت بیکرجا ؤ اور بیریات تم کواس لئے نتائی) تاکہ تم خیال رکھو (اور اس پرعمل اس ميں بڑي جمتيں ہيں۔ يہ مم ہوا مركانات كى قسم دوم كا) بھراگران كھروں ميں تم كوكوئ آدمی معلوم نه بهو د خواه واقع میں وہاں کوئی ہویا نه بهری تو د بھی) ان گھروں میں نہ جاؤجب تک تم کواجازت نه دی جانے زکیونکہ اوّل تو بیر احتمال ہے کہ اُس میں کوئی آ دمی موجود ہو اکردیجھیں علوم نہیں۔ اور واقع میں کوئ موجود نہ ہو تو دوسر سے کے خالی مکان میں بھی بلااجازت کھش جانا، دوسرے کی ملک بیں اُس کی اجازت کے بغیرتصرف کرنا ہے جونا جائز ہے۔ یہ لم ہواقسم سوم کا) اور اگر (اجازت طلب کرتے کے وقت) تم سے بیکبدیا جا دے کہ (اس وقت) بوط جازتوتم نوط آیا کر دیری بات تہارے لئے بہتر ہے (اس بات سے کہ وہیں جم جادّ كرميمي تويا بركلير كے كيونكم اسير اسى ذلت اور دوسرے يربلا دجہ دياؤ ڈال كرتكليف بهنجانا ب اور سی مسلمان کو ایزار دینا حرام سے) اور الشر تعالیٰ کوئتھا رسے سب اعال کی خبری واكرخلاف علم كرو كي سزايا وكه ادريبي حكم أس صورت كابير كد كفروالوں ني اكرجيد توظ عانے کو کہا نہیں مگر کوئ بولا بھی نہیں۔ ایسی حالت میں تین مرتبہ استیذان اس احتیاط FAR

سوري النور ۲۹:۲۳

معارف القرآن جسلة شم

پر کربیاجاد کے مثاید میں امر جہ بری مرتبہ کی جب کوئ جواب نہ آوے تولوٹ آنا چاہئے جیساکہ مدیث میں اسکی تصریح موجود ہے) اور تم کوالیے مکانات میں (بغیر خاص اجازت کے) لیے مکانات میں کناہ نہ ہوگا جن میں رگھرکے طور پر) کوئ نہ رہتا ہو (ا در) اُن میں متھاری برت ہو (بعین ان سکانات کے برتنے اور استخال کرنے کا تمھیں حق ہو، یہ کم ہے تسم جہادم کا جور فاو عام کے مکانات ہیں اور جن سے عام لوگوں کے منافع متعلق ہیں۔ تو وہاں جانے کی عادة عنام اجازت ہوتا پوشیرہ کرتے ہوا سٹر تعالی سب جانتا ہے۔ اجازت ہوگا کی موروث خوالانرم ہے)۔ (اس لئے ہر حال میں تقوی اور تو وٹ خوالانرم ہے)۔

معارف ومسائل

قرانى آداب معاشرت كاليك يم باب ا نسوس به كاشرييت اسلام في تدراس معامل كا كسى كى مُلاقات كوچا دُ توبيلے اجازت يو اہتمام فرماياكه قران حكيم ميں اس كےمفصل احكام نازل بغيراجا زت كسى كے كفريس داخل نم او الدرسكول الله صلى الله عكيد م في الله قول ول سے اُس کی بڑی تاکیدونسرمائ ، آتنا ہی آجکل سلمان اس سے غافل ہو گئے۔ لکھے پڑھے نیک لوك يمى شاس كوكوى كناه مجھتے ہيں شاس يرعل كرنے في فكركرتے ہيں - دُنياكى دوسرى بہزب ا توموں نے اس کوا ختیار کرکے اپنے معاشرہ کو درست کرلیا گرشلمان ہی اسمیں سے سیھیے نظراتے بیں-اسلامی احکام میں سب سے پہلے شستی اس کھم میں شروع ہوی میرحال ستیزا فران كريم كا ده واجد التعميل حكم سے كه اسمين ذراسي ستى اور تبديلى كوهي حضرت ابن عياس أنكارايت قرآن کے شدید الفاظ سے تعبیر فرمارے ہیں اوراب تو لوگوں نے واقعی ان احکام کوابسانظرانا كرديا ہے كدكويا أن كے نرديك يه قران كے احكام بى نہيں - انابليروا تا الميرواجعون استدیدان کی حکمتیں اودمصالح مہمہ حق تعالیٰ جل شانہ نے ہرانسان کو جو اسکے رہنے کی جگہ عط فرمائ خواه ماتكانه به ياكليه وغيره يربيرحال أسكا كفراسكا سكن ب اورسكن كي اصلغون سكون وراحت ب قرآن عزيز في جمال اين اس نعمت كرا نابيركا ذكرفر ما يا ب اسمين عياس طوت اشارہ ہے فرمایا جَعَلَ مُکُمُ مِّنُ البِیُونِیکُوسِکَنَا ، بینی الشرنے تھا رے کھروں سے متقارے لئے سکون وراحت کا سامان دیا۔ اور بیسکون وراحت جبی یاتی رہ سکتا ہے کہ انسان دوسر ہے سی شخف کی مراخلت کے بغیرانے گھرمیں اپنی صرورت کیمطابق آزا دی سے کا ا در آزام کرسکے۔ اسکی آزادی میں خلل ڈانیا گھر کی اصل مسلحت کو فوت کرنا ہے جو بڑی ایذار و " کلیف ہے - اسلام نے کسی کو بھی ناحق تکلیف پہنچانا حرام قرار دیا ہے - استیزان کے حکام

سورة التوريم ١: ٩: عادف القرآن جسلة مذجاؤ-أسن پھرعوض كيا يارسول الشرمين تو ہروقت اُن كى خدمت بير، رہتا ہوں آئے فرمايا بهى اجازت لئة بغير كفرس منه جاؤكيا تمقين بيربات يسندسي كداين والده كوشكى ومكيفواست كهاك بنیں - فرمایا اسی لئے استنیذان کرنا چاہئے کیونکہ بیراحتمال ہے کہ وہ گھرمیں کسی صرورت سے ست کھو ہے ہوئے ہوں۔(مظہری) اس مديث سے يد كھى تابت بواكداكيت قران ميں جو غالد بين تاكي ايا بواسيں بين سے مرادوه بين اور كورين جن مين انسان تنها خو دسي رستا بو- والدين ابهن بهائ وغيره أس مين نه بول -سملہ جب گھرمیں صرف اپنی بیوی رہتی ہوائسیں داخِل ہونے کے لئے اگر جیاستیزان واجب بنين كرمستب اورطري سنت بهب كه وبإل مين عائب بغبرك اطلاع كاندرنه جلئ بلكه داخل بن سے پہلے اسے یاوں کی آہٹ سے یا کھنکا رسے سی طرح پہلے با خبرکردے کھر داخل ہو حضرت عبدالنون سعود و فن كى زوجه محترمه فرماتى بين كرعبدالشرب على بابرس كفرس آتے تقے تد در وازه بين كفتكار كرميليا ين آنے سے باخبر کرمیتے تھے تاکہ وہ ہیں سی ایسی حالین نہ دکھیں جوانکولیندنہ ہوراین کشیر بحوالمان جریر دقال اسناده صحیح) ادراس درتین استیندان کا داجب نه بونیا اس مصحلوم بوتیا ہے که ابن جریج تیج ضرت عطار سادیافت کیاکہ کیاای شخص کواپنی بیوی کے پاس جانیکے وقت بھی استیذان صروری ہے انفول

فرمایاکنهیں-این شیرتے اس ایت کونقل کیے فرمایا ہے کہ اس سے مرا دیہی ہے کہ واجب نہیں کی سخب اوراً دلی دہال سی ہے-

امام بخارى نے الادب لفق میں حضرت ابوہررہ سے دوایت کیا ہے کہ اُنھوں نے فرمایا رجو تحص سلام سے پہلے استیازان کرے اسکوا جازت نہ دو دکیونکہ اُسے مسنون طریقیر کو جھوڑ دیا ا (رقىح المعانیٰ) اورابو دا وُد کی جابیت میں ہے کہ جی عامرے ایکشخص نے رشول ایشہ صلے افتہ عکیہ کم سے اسطرے استیذان کیا کہ باہرسے کہا آ آلج کیا میں گھٹس جاؤں ۔ آپ نے اپنے خادم سے فرماياكه ييحص استثيران كاطريقه نهبى جأنتا بابرحاكراسكوط لقيرسكهملاؤ كدثون كهير الستلاه عليكم أأدخل بعنى كيامين داخل موسكتامون -ابهي يه فادم بالبرنبين كيا مقاكه أسف خود حنور مے کلمات شن لئے اور اسطرے کہا انسلام علیکم اُاُ دخل - تو آپ نے اندرا نے کی اجازت دیدی (این کثیر) اور بهیتی تے شعب الایمان میں حضرت جا بررہ سے روایت کیا ہے کہ رسول مشول منتسلیا عكتيكم نے فرمايا لا تأذ بوالمن لحديب لأباكتك هر مينى جوشخس يبلے سلام نه كرے اسكواندر آنے كى اجازت شردو (مطاهدی) اس وافته میں رسول الشرصل الشرعائير الم نے دواصلاحیں فرمائیں۔ ايد، يه كم يهل سلام كرنا جائية - دوسر عيك أس في أد خل ك بجائ أبح كا نفظ استعال يا تقليه ثامناسب تفاكيونكه المح ولوج سي شتق بي يحيد من سن سن يما يحكم بين المسن الكري يهندير الفاظ كے خلات تھا۔ بہرجال ان روایات سے بیمعلوم ہواكہ آیت قران میں جوسلام كرنے كا ربتاد ہے برسلام استیزان ہے جوا جازت حاصل کرلئے کے لئے با سرسے کیا جاتا ہے تاکہ اندر بوسخص ہے وہ منوجہ برج جائے اور جوالفاظ اجازت طلب کرنے کے لئے کیے گا وہ شن ہے۔ ہونے کے وقت حسب محمول دوبارہ سلام کرے۔ سئلہ: پہلے سلام اور کھیرداخل ہوئے کی اجازت کینے کا جو بیان اور احا دیث سے تا ہے بهوااسمين بهبترييه ہے کہ اجازت لينے والاخود اپنا نام ليکرا جازت طلب کرے جبيباکہ حضر فاردق عظم كاعل تقاكداً تفول نے آنخضرت صلى الشرعكية لم كے دروازہ يرآكر بيرالف اظ كرے. السبلام على سرك لله السلام عليكم أبدخ ع بعنى سلام ك بعدكها كد كياعمر فأل بوسكتاب (رواه قاسم بن اصبغ وابن عبدالبرفي التمهيدعن ابن عباس عن عمر منا– ابن كثير) اور يحيح سلم مي بج کر حضرت ابو موشی استعری روز حضرت عمر روز کے پاس کیے تو استیذان کے لئے برالفا ط فرما ہے۔ التكام عديكم وظال ابومتى السلام عليتكم وطان الانشعري (فنطبي) السيريمي بيل اينا ألى ابؤلو بْلایا پیرمزید وضاحت کے لئے اشعری کا ذکر کیا۔ اور بیراسلے کہ جب تک آدمی اجازت لیسے ولك كويهجا فيهبي توجواب دينے ميں تشويش ہوگى - اس تشويش سے بھی نحاطب كو بجايا جا ہے -ا منکه: اوراس معامله میں سب سے برا دہ طریقہ ہے جو تعین توک کرتے ہیں کہ باہر سے اندا داخل ہونے کی اجازت مانگی ایٹانا م ظاہر نہیں کیا۔ اندرسے مخاطب نے یُوجھاکون صا

سوري النورس، 9: 1 سعارت القرائن جس توجواب میں یہ کہدیا کہ میں ہوں، کیو نکہ یہ مخاطب کی بات کا جوا نہیں ، جس کے اوّل آوازے نہیں بہانا وہ میں کے نفظ سے کیا بہجانے گا۔ خطیب بندا دی نے اینے جا میے بیں علی بن عاصم داسطی سے نقل کیا ہے کہ وہ بصرہ گئے توحضرت مغيره ابن شعب كى ملاقات كوحاضر بهوك - دروازه يردسك ي حضرت مغيره را نے اندرسے یو جھاکون ہے توجواب دیا آنا (بینی میں ہوں) توحضرت مغیرہ نے فسرمایاکہ میرے دوستوں میں تو کوئ بھی ایسا نہیں جسکانام آنا ہو بھریام رسٹرلیٹ لائے اوران کو حدمث منائ كهايك روزحضرت جابرين عبدالشرخ المخضرت صلى الشرعكتيم كى خدمت مين حاصر موت اوراجازت لینے کے لئے دروازہ پر دستائ ی - آنخصرت صلی اللہ علیہ کم نے اندر سے یوجھا کون صاحب ہیں جنوجا برم نے بی نفظ کہدیا آنا مینی میں ہدں۔ آپ نے بطور زجرو تنبیر کے فر انا انا ميني انا اناكهنے سے كيا حاصل ہے اس سے كوئي بہجانا نہيں جانا۔ ستله: اس سے بھی زیادہ ٹرا پہ طریقہ ہے جو آجکل بہت سے کہ مے پڑھے لوگ بھی استعال کرتے ہی كه در داره پر دستك دى جب اندرسے يُوجيا كياكه كون صاحب بن تو غاموش كھراہے ہيں كوئى جواب ى نہیں جیتے۔ یہ مخاطب کوتشوں میں ڈالنے اور ایزا بہنجانے کا بدترین طریقیہ ہے جس سے اس صلحت می توت ہوجاتی ہے۔ ه دوایات مذکوره سے پیچی تابت بواکه استیذان کا یه طریقه تھی جائزے که دروازه پردستک دبدى جائے بشرطيك ساتھ ہى اينانام جى ظاہر كركے تبلاد ياجائے كە فلال شخص ملنا جا ہتا ہے ستله وبسين أكردستك ببوتوانتي زورس منه دي كرمس سيسنن والأكهرا أين مكرمتوسطا ندا ز سے دیے جس سے اندر تک آواز تو جلی جائے لیکن کوئ سختی ظاہر منہ ہو جو لوگ رشول اللہ صلے اللہ عکت کے دروازہ پر دستک دیتے تھے توان کی عادت بیتھی کہ ناخنوں سے در دازہ پر دستک شیتے "كارحضورصليان عليه لم كو تكليف نه مو (رداه الخطيب على معه - قرطبي) جوعض استيذان مع مقصد لوسمجه لمصر كالمس ساستيناس بيليني مخاطب كوما نؤس كرك اجازت حاصل كرنا وه خود بخودان ب جیزوں کی رعابت کو ضروری سمجھے گاجن چیزوں سے نحاطب کو تکلیف ہوائس سے بحیگا- اینا نامظاہرکے اور دستک دے تومتوسط اندازسے دے یہ سب چیزی اُس میں شال ہیں۔ نبيروري أجكل اكثر لوكول كوتواستيذان كى طوف كوى توجرى باتى بنين ربى جو صريح ترک داجب کاگناہ ہے اورجولوگ استیذان کرنا جا ہیں اورسنون طریقیہ کے مطابق باہرسے يهيسلام كري مجيرا بينانام بتلاكراجازت لين- أن كے لئے اس زمانے ميں بعض دشوارياں بُون بهی بیش آتی بین که عموماً مخاطب حسب اجازت لیتا ہے وہ در وازہ سے دور ہے۔ وہاں سی سلام کی آفاذا در اجازت لینے کے الفاظ بہنجنا مسکل ہیں اسکے یہ مجھ لینا چاہئے کہ مہل داجب
یہ بات ہے کہ بغیراجازت کے گھریں داخل نہ ہو۔ اجازت لینے کے طریقے ہمرز وانے ادر ہرگاک میں
مختلف ہوسکتے ہیں۔ اُن میں سے ایک طریقہ در دازہ پر دستک دینے کا توخود روایاتِ حدیث سے
شابت ہے اسی طبح جولوگ اپنے در وازوں پر گھنٹی کے بعدا بنا نام بھی ایسی آوازسے طاہر کروے
استیذان کی ا دائیگی کے لئے کافی ہے یہ شرطیکہ گھنٹی کے بعدا بنا نام بھی ایسی آوازسے طاہر کروے
جس کو مخاطب میں لے۔ اسکے علاوہ اور کوئی طریقہ جوکسی جگہ رائے ہواسکا استعال کرلینا بھی جائز ہو
استیزان اسپیں بہت اچھی طرح پورا ہوجاتا ہے کہ اجازت دینے دالے کو اجازت چاہئے والے
استیزان اسپیں بہت اچھی طرح پورا ہوجاتا ہے کہ اجازت دینے دالے کو اجازت چاہئے والے
کا پورا نام و بیترا پنی جگہ بیٹھے ہوئے بغیرسی سکلیف کے معلوم ہوجاتا ہے اس لئے اسکواختیار
کر لینے میں کوئی مضائقہ بہنیں۔

مسكنام بالگرسی مف نے کسی مف سے استیان کیا اور اُسے جواب یں کہر یا کہ اسوقت ملاقات مہیں ہوگئی کوٹ جائے نواس سے بُرا نہ مانیا چاہئے کیونکہ ہر خف کے حالات اور اُسے مقتضیا مختلف ہوتے ہیں بعض وقت وہ مجبور ہوتا ہے با ہر نہیں آسکتا نہ آ بکوا نہ رُبلاسکتا ہوتو ہیں مختلف ہوتے ہیں بعض وقت وہ مجبور ہوتا ہے ۔ آیت نہ کورہ میں بہی ہدایت ہے دَرانُ قبل کھ می اُرتے محوّا فارڈ جو محوّا فورا کرنا چاہئے ۔ آیت نہ کورہ میں بہی ہدایت ہے درانُ قبل کھ می اُرتی کھ م اُرتی کھ می اُرا بات کہا جائے کہ اسوقت کوٹ جائی تو ایک کونو شد کی سے لوٹ آنا چاہئے اس سے بُرا مانیا یا وہیں جم کر بیٹے جانا دونوں چیزی درست نہیں اس کونو وشد کی سے لوٹ آنا چاہئے اس سے بُرا مانیا یا وہیں جم کر بیٹے جانا دونوں چیزی درست نہیں بعض حضرات سلف سے منقول ہے کہ وہ فراتے تھے کہ میں عمر بھراس تمنا میں رہا کہ کہی کے پاس جاکر استینان کر دوں اور وہ مجھے یہ جواب دے کہ کوٹ جاؤ تو میں اس کی قرائی کی تعبیل کا تواجا صل استینان کر دوں اور وہ مجھے یہ جواب دے کہ کوٹ جاؤ تو میں اس کی قرائی کی تعبیل کا تواجا صل کر دوں مگر بچیب اتفاق ہے کہ مجھے کہ بھی یہ لعمت نصیب نہ ہوئی ۔

مسئلہ ، شربیت اسلام نے شن محاضرت کے آواب سکھانے اورسب کو ایذا قریحیفے ہے۔

بچانے کا دوطرفہ معتدل نظام قائم فرمایا ہے اس آیت میں جس طرح آ نیوالے کو یہ ہدایت دی گئی ہم کہ آگراستیڈان کرنے برآپ کو اجازت نہ ہے اور کہا جائے کہ اسوقت کوٹ جا و تو کہنے والے کو معاود استحقوا ورخوشد کی کیسا تھ والیس کوٹ جا و بڑا نہ ما لؤ اسی طرح ایک حدیث میں اسکا دو مرا رُخ اس طرح آیا ہے کہ رسول الشرصلے الشرعکی ہے مفرایا ات لئی رائے علیا ہے کہ رسول الشرصلے الشرعکی ہے مفرایا ات لئی رائے علیا ہے حقا ایسی جو تحف آئے اسکا بھی آئے اسکا بھی آئے اسکا بھی آئے ہے کہ اسکو اینے یاس بلا دُیا با ہم آئم کم اسکو اینے یاس بلا دُیا با ہم آئم کم اسکو اینے یاس بلا دُیا با ہم آئم کم اسکو اینے یاس بلا دُیا با ہم آئم کم اسکو اینے باس بلا دُیا با ہم آئم کم اسکو اینے باس بلا دُیا با ہم آئم کم دروازے برجا کراستیزان کہا اور اندر سے کوئی جواب مذا یا تو شدنت

عارف القرآن جم لدشم

کے مطابق با ہر تشریف لا دیکے تو ملاقات ہوجاً یکی یہ ہیں داخل نہیں بلکہ عین ادہے نیجود قرآن کرکے فیصلے اللہ علیہ لیم جب گھریں ہوں تو اُن کوآواز دیکر بلانا ادب بیخلا منہ جب بلکہ تو کوں کو چاہیے کہ اُنظار کریں جبوقت آبیا ہی ضرورت کیمطابق باہر تشریف بلانا ادب بیغلا منہ جب بلکہ تو کوں کو چاہیے کہ اُنظار کریں جبوقت آبیا ہی ضرورت کیمطابق باہر تشریف لا دیں اُسوقت ملاقات کریں۔ آبیت یہ ہے وَکواَ تَنَّهُ مُنَ کَرُواْ حَتَّی تَنْحُرُ ہَ اِلْدِیْفِیمُولَکُانَ حَدُیُواْ لَنْهِمُولَالَ اُن حَدُیُواْ لَنْهُمُ مُن کَرُوْا وَلَا اِللّٰ مِن کَریا اِللّٰ ہِمِن اوقات کی انصاری جابی کے دروازہ پر اور کے دو ہر اُنظار کی مشقت گوارا کر تا تھا۔ (جیجہ جنادی)

مانے کے لئے اجازت مانگا تو وہ صرور مجھے اجازت دید ہے سے میں اسکو خلا ب اور اگر میں اُن سے مانے کے لئے اجازت مانگا تو وہ صرور مجھتا تھا اُسلے کے انتظار کی مشقت گوارا کر تا تھا۔ (جیجہ جنادی)

لَيْسَ عَلَيْكُمْ بُحْنَاحُ أَنْ تَنْ خُلُوا بُيُونَا عَيْرَمَتْكُونَة فِيهُمَامَتَاعُ تَكُونُونَ فَعُ مِنَاع كُلُون معنی سی چیز کے برشنے استعمال کرنے اور اُس سے فائدہ اُٹھانے کے ہیں اور جس چیز سے ف ایّدہ أتظايا حائے اسکوبھی متاع کہا جاتا ہے اس آیت میں متاع کے تغوی عنی ہی قراد ہیں جبکا ترجمہ بُرُت سے کیا گیا ہے بعنی برتے کا استحقاق - حضرت صدلی اکبر سے روایت ہے کہ جب استیذان کی آیات مذکورہ نا زل ہوئین بغیرا جازت کے سی مکان میں دا فل موجی مانعت ہے توصدیق اکرٹنے ر شول الشرصال الشرعكية لم مساع ض كماكريا رسول للراء اس مانعت كے بعد قرنس كے تجارت بيش ر منگے کیونکہ محماور مدمینہ سے ملاشام تک ایسے تجادتی سفر ہوتے ہیں اوراس راستہ میں جابحاا کے افرخاتے بنے ہوتے بین دوران سفروہ لوگ قیام کرتے ہیں۔ انہیں کوئ مستقل سنے والا نہیر ہونا تو دہاں استیزان کی کیا صورت ہو گی اجازت سے حال کیجائیگی ۔ اسپر آبیتِ مذکورہ نازل کی (رواه ابن ابی حاتم منظیری) اس شان زول کے واقعہ سے حلوم ہواکہ آبیت میں بیوت غیرسکونہ سے مُراد وه مكانات اور مقامات بين جوسى خاص فرديا قوم كے لئے خصوصی طور پر رہائٹ گا ہ نہيں ملکہ افرا دقوم كوعام اجازت وبال جاني تهمير ني ادراستعال كرنے كى ہے جيسے ده مسافر خانے جو شهرون اور مبلكلون مين اسى غرض كے لئے بنائے گئے ہون اور باشتراكط معرس ، خالقابين ، دىنى مدارس بهسيتال، أو الخامة، ريلو سے استيش، بهوائ جهازوں سے ستقرادر فومی تفريحات سيائے جو مكانات بنائے كئے ہوں غرض رفاہ عام كے سب ا دار ساسى ثم بيں ہيں وہاں شخص ملاا جازجا سكتا ہ مُلَم، وفاهِ عام كادارون مين جس مقام يراسح ما تكان يا متوليان كيطوف داخله ك لنة كجيم شرائطا وريا بنديان ون أسكى يا بندى شرعًا واجه المنظم مثلًا ربلو سے استيش يراكر بغيرطيط فأم مے جانے کی اجازت نہیں جو تولیٹ فارخ کے صاصل کرنا ضروری ہے ایکی خلاف ورزی ناجا ترہے ايرودوم (بواى الدي عصر حصر مانيكي كالبطوت اجازت نه بو ويال بغيراجازت

معارف القرآن جسيلة شم

مے جانا مشرعاً جا مُرتہیں۔

ممن مکی و اسی طرح مساجد مدادس مدخانقا ہوں یہ بیتا ہوں و غیرہ میں جو کرے وہاں کے منتظین یا دوسرے ہوگوں کی رہائش کے لئے مخصوص ہوں جیسے مساجد مدادس اورخانقا ہو کے خاص حجرے یا ریاوے ، ایرڈروم اورسیتا اوں کے دفا تراور مخصوص کمرے جو مرتضیوں یا دوسردں ہوگوں کی رہائش گاہ ہیں وہ بیوت غیرسکونہ کے کم میں نہیں، بلکہ سکونہ کے کم میں انہیں بغیراجانت جانا شرعاً ممنوع اور گناہ ہے۔

استيذان سيتعلق جند دوك اكل

جيكه يبهمام موجيكاكماستيذان كاحكام شرعيه كااصل مقصد توكول كي إندادساني سے بحینااورشن معاشرت کے آواب سکھانا ہے اشتراک ملتے مسائل ذیل کام کھی کوم بور ثيليفون سيمتعلق بعض مسائل المسسستك بيستضف كواليسے وقت شيليفون یر مخاطب کرناچوعا دقة اُس کے سونے یا دوسری صروریات میں یا نما زمین شغول ہؤئیا دست موبلاصرورت شدیده جائز نہیں کیونکہ اسمیں تھی دہی ایزارسانی ہے جوکسی کے گھرس بغ اجازت داخل ہونے اوراس کی آزادی میں خلل ڈلسے ہوتی ہے۔ ے تلہ جبن شخص سے تیلیقون بریات جبت اکثر کرنا ہو تو مناسب یہ ہے کہ اُس سے در مافت كرلياجائ كراب كوشليفون بربات كريمين كس قت مهدلت موتى ب عيراس كى یا بندی کرے مسکلہ: شلیفون براگر کوی طویل بات کرنا ہو تو پہلے مخاطب دریافت رلياجات كهآب كوذراسي فرصت بهونومين ابني بات عرض كرد ل كيونكه اكثرابيه تشبيفون كى كلنتى آنے برآ دمى طبعاً مجبور ہوتا ہے كہ فوراً معلوم كرہے كہ كون كباكہنا جا ہتا ہے اس صرورت سے و کسی بھی حال میں اور است ضروری کا میں ہو اسکو جھوڑ کو شیلیفون أعُمانات - كوى بے رحم آدى أسوقت لبى بات كرنے لكے توسخت مكليف محسوس إوتى ہے -سئلہ: میص ہوگ شیلیفون کی گھنٹی بجتی رہتی برادر کوئ پر دا مہیں کرتے نہ ٹوجھتے ہیں کہ کون ہے کیا کہنا چاہتا ہے یاسلامی اخلاق کے خلاف اور بات کرنے والے کی حق تلفی ہے جيسے مديث يس آيا ہے ان دورا عليك حقا بيني جوخص آب كى ملاقات كو آئے أس كا مرحق ہے کہ اس سے بات کرو اور بلاصرورت ملاقات سے انکا رہ کرواسی طیع جو آ دمی يليفون يرآب بات كرنا جا متاب اسكاحق بحكرآب اسكوجواب دي -ستله بمسى محے مكان بر ملاقات مے ليئے جاؤا در اجازت حاصل كرنے كے لئے كھڑے

ر ف القرآل ج المؤرة النور ١٣٠: ہو تو گھرکے اندر مذحیفائکو کیونکہ استیان کی مصلحت تو یہی ہے کہ دوسراآ دمی جو چیزائے بیظام نہیں کرناچا ہتا آبکو آگی اطلاع ہنونی جاہئے اگر پہلے ہی گھرمی جھا تک کرد مکھ لیا تومیصلحت فوت ہوجا دلگی حدیث میں ای سخت مانعت آئی ہے (رواہ البخاری دلم عن مہل بن سعدالساعدی) رسول اللہ صلاحظ علیہ کم کی عادتِ سٹرلیٹ پرتھی کہ کسی کے یاس جاتے اور اجازت حاصل کرنے کے لئے کھڑے ہوتے فحدد وازے کے بالمال کرے ہوئے کے بجائے دائیں ما مائیں کھڑے ہو کراستینان فواتے تھے دوازہ کے بالمقابل کھٹرے ہونیہے اسلے اجتناب فرماتے کہ اوّل تواس زمانے میں در وا ذوں پر بردے ہہت کم تھے اوريرده مجى موتومواس كفل جأيكا احتمال ببرحال ب دمظهري) كله جن مكالؤل مين داخل بوناآيات مذكوره مين بغيرا جازت كے ممنوع قرار دياہے يہ عام عالات میں ہے اگرا تفاقاً کوئ حادثہ آگ لگنے یا مکان منہدم ہونیکا پیش آجائے تواجا زے لئے بغیر سی جاسکتے ہیں اور امراد کے لئے جانا چاہئے۔ (مظہری) سُلہ جِنْ صَلَى كُسى نَے بلاكر بھيجا ہے اگر وہ اسكے قاصد كيسا تھيئ آگيا تواب اسكوا جازت لينے كى نسرورت نہیں قاصد کاآنا ہی اجازت ہے۔ ہاں آگراسوقت نہ آیا کھھ دیر کے بعد پہنچا توا جازت لینا ضرفری رسول الشيصك الشرعكييم في فرمايا اخادى احداكه فياء مع التسول فأن ذلك لخاذ ن العين جو ادَى بلاياجائے اور وہ قاصركىياتھ كى آجائے توہى اسكے لئے اندرانيكى اجازت بورداه ابوداؤد مظهى ہدے ایمان والوں کو یک دلعیں دری این آ تلعیں اور عمامے دہی ایس ا وركبدك إيمان والبول کھلی چیز ہے اس سے اور ڈال لیں اپنی اوڑھنی اپنے کریبان نتهري الرابعة لتهري أو الما يمتى أو الماء بعد لته اور مذکھولیں ابنا سنتگار محمایت فاو ندکے آگے یاایت باب کے یاایت فاوند کے باب یا این بیٹے کے بااین فادند کے بیٹے کے بااین بھائ کے یا پنے

مارت القرآن جمارت القرآن جمارت القرآن جمارت القرآن جمارت القرآن جمارت القرآن جمارت القرارت ال

فلاصركفسير

شم عورتوں مے میدہ کے حکام آیے شامان مردوں سے کہدیئے کہ اپنی نگا ہیں سی رکھیں دلینی جی عضو كيطر ونه طلقاً و كيمنانا جائز ہے أس الكل منر ديكيميں اور سيكوفي نفستر كيمينا جائز ہے محرشہوت سے جائز نبین اسکوشهوت سنته دمکیمین اوراینی سنرمگایون کی حفاظت کرین د بعنی ناجائز محل مین شهوش رانی شری حس میں زنا اور لواطت سب داخل ہے) یہ اُن کے لئے زیادہ صفائ کی بات ہےداور اسكے خلاف میں آلود کی ہے زنایا مقدمتہ زنامیں) بیشک الشرتعالیٰ کوسب خبرہے جو کچھ لوگ کیا کرتے بين ريس خلاف كرنے ولا منزاياتي كے ستحق ہونگے) اور (اسى طرح) مسلمان عور توں سے كما يجيج ، (وه بھی) اپنی نگابیں بیجی رکھیں دیعنی جس عضو کیطوٹ مطلقاً دیجھٹا ناجا کزہے اسکو بالکل د مجھیں اور حبکوفی نف نے مجھنا جائز ہے مگر شہوت سے جائز نہیں اس کوشہوت سے مذر مجھیں) اور نی سترمكا بهوں كى حفاظت كري (لعيني ناجائز محل ميں شہوت دانی مذكر ميں جس بين زناور سخاق سناخل بي اوراین زمیت (کے مواقع) کوظا ہر مذکری (زمیت سے تمراد زبور جیسے کنگی ، چوڑی ، خلخال ، با زونبد طوق ، جھومر، یکی، بالیاں دغیرہ اوران کے مواقع سے مُراد ہاتھ، ینڈلی، بازو، گردن ، سربسینہ کان العینی ان سب مواقع کوسب سے جیمیائے رکھیں ملجا ظان دو استثنا دُں کے جو آگے آتے ہیں ا ورجب ان مواقع كواجانب سے يوشيره ركھنا داجب ہے جن كا ظاہر كرنا محارم كے دور دجاً زے جبیاآگے آناہے تواورمواتع داعضا رجوبدن کے رہ گئے جیسے بیٹت وسکم وغیرہ حبکا کھوٹنا محارم كے د وبروسى جائز بنيں ان كا يوستىدە ركھنابدلالة النص داجب بوكيا - حاصل بينواكدسس یا کوں تک تمام بدن اینا پوست پره رکھیں۔ دواستشنار جن کا ذکرا ویر آیا ہے اُن میں سے بہلااستشار مواقع صرورت مے لحاظ سے ہے کہ روز مرت کے کام کاج میں جن اعضار کے کھو لئے کی صرورت

ہوتی ہے اُن کوسنٹی قرار دیاگیا اُس کی تفصیل یہ ہے) مگرجواس (موقع زیزت) میں موزغالباً کھلانی) رہتاہے (جن کے جیسا نے میں ہر د قت حرج ہے مراداس موقع زینت سے جرہ ادر ا تھ كى تھيليال اور استح قول كے مطابق دونوں قدم بھى كيونكرجيرہ تو قدرتى طور ير مجمع زميت ہے اور ىغىن زمنيتىن قصداً بھى اسمىں كى جاتى ہيں مثل سرمة غيرہ اور تصيلياں اور الكلياں المكو تھے تھے مبندی کاموقع ہے اور قدمین بھی چھیتوں اور مہندی کاموقع ہے بیں ان مواقع کو اس صرورت سے تنتني فرمايا ہے كہ ان كوكھو لے بغير كام كاج نہيں ہوسكتا اور عاقظهر كى تفسير وجہر اور كفين كيساتھ صریف میں آئ ہے اور قدمین کو فقہار نے اس رقباس کرتے اس میں شامی قرار دیا ہے) اور : خصوصاً سراورسینه ده هکنے کابهت التفام کریں اور) اینے دویتے (جوسر ڈھا نکنے کے لئے ہیں) این سینوں برڈالے رہاکری رکوسینہ فیص سے ڈھک جاتا ہے لیکن اکثر قمیص میں اسنے سے گریبان کھلار ہتا ہے اور سینہ کی ہیئت تمیس کے با وجود ظاہر ہوتی ہے اسلے اہتمام کی صرورت رموی آگے دوسرااستثنار بیان کیا جالہ ہے جن میں محرم مردوں وغیرہ کویر دہ کے علم مذکور سے ستنی ک قیام) اوراین زمیت (مے مواقع مذکوره) کو دسی یر) ظاہر نم ہونے دیں مگراسے ستوہروں بر ا این محادم پر تعنی) اینے باپ پر یا اینے شوہر کے باپ پریا اپنے بیٹوں پریا اپنے شوہر کے بیٹور ااسے (حقیقی دعلاتی داخیانی) بھا بیوں بر رنہ کہ چیا زاد ماموں زا د وغیرہ بھائیوں بر) اسے (مذکورہ) بھائیوں کے مبیوں بریااین رحقیقی وعلاتی داخیاتی) بہنوں کے بیٹوں بر (مذکر جازا خاله زاد مېنول کی اولادىر) يااين (كينى دىن كى شركب) عورتولىر (مطلب يەكەسلمان عورتول يركيونك كافرعورتون كاحكم شل اجنبى مردك سيدواة الدرعن طاوس ومجابدوعطاء وسعيد بنابيب وابراسيم) يا اين لونديون ير (مطلقاً كوده كافرى مول كيونكم د غلام كاعكم ابوحنيفي كزديك مثل اجنبي مرد كے ہے اس سے بھي يرده واجب بيدواه في الدرعن طاؤس و تحايد وعطاء وسديد بن المسيث إبراميم) ياان مردول يرجو (محض كهانے يينے كے واسطى طفيلى (كے طور ير رستے) يوں اوران کو دبوجہ حواس درست نہ ہو نے کے عور توں کیطرف) درا توجہ نہ ہور تا بعین کے قسیص اس لئے ہے کہ اسوقت ایسے ہی لوگ موجو دیتھے کڈا ٹی الدرعن ابن عباسس اور اسی حکم میں ہے برمسلوب العقل بس مدار حكم كاسلب جواس برب منه كر تا باح اور طفيلي موفي يرسكراس وقت وه تا لع ایسے بی عقد اس لئے تا مع کا ذکر کر دیا گیا لقول ابن عیکس مع فی الدر مغفل فے عقلہ احمق لا بكترت للنسار اورج مجهد ركهتا بهوتو وه بهرحال اجنبي مروس كوبورثها ياحصي مامجرت ای کیوں شہرواس سے بردہ واجب یا ایسے لاکوں برجوعورتوں کے بردہ کی باتوں سے ا بھی واقف نہیں ہوئے (مراد دہ بچے ہیں جو ابھی بلوغ کے قریبی سنھے اور انھیں شہوت

عارف القرآن جم لدشم

کی کی خبر بہیں ہیں ان سب کے سامنے وجہ وگفین و قدمین کے علا وہ زمیت کے مواقع مذکورہ کا فاہر کرنا بھی جائز ہے بینی سراور سینہ اور شوہر کے روبر کسی جگہ کا بھی اخفار واجب نہیں گو فامن بدن کو و کیھنا خلاف اولی ہے - قالت سبیں تناام الموصد بن عنائشہ رہ ما عصلہ لعرار منہ ولیو برومی خلاف الموضع اور حری فالمشکونة وروی بقی بن عنال وابن عدی عن این عباس موفوعا اذاب مح احرکم زوجتہ اوجا ریبتہ فلا بنظوالی فزیما فان ذلك بور دنسا العلی قال ابن صلاح جبد الاسنا دکناف الجامع الصغیری اور زیرف کا پہانتک استمام رکھیں کہ جلے میں) اپنے پاوں زور سے رکھیں کہ ان کا مخفی زور معلوم ہوجا وے رہی تروی آواز فرائی کے مائے کی ہوتی تم سب غیر خرموں کے کان تک پہنچے) اور سلما آور تم سے جوان احرکام میں کو تا ہی ہوگئی ہوتی تم سب غیر محرموں کے کان تک پہنچے) اور سلما آور تم سے جوان احرکام میں کو تا ہی ہوگئی ہوتی تم سب فیر ترون کی کان تک بہنچے) اور سلما آور ور در معصیت مانے قلاح کامل ہوجانی ہے ۔

معارف ومسائل

السداد نواحش ورخفاظت عصمت کا عورتوں کے لئے ججاب اور پردہ کے احکام کی پہلی آیات وہ ایک اہم باب بردہ نسواں ہیں جو سورہ احتاب میں ام المؤمنین حصرت زینب بنت جس رہ کے بی کریم صلے ادشر علیہ کم کے عقد زبکاح میں آنے کے وقت ناذل ہوئی جس کی بایئ بعض حضرات نے سلند ہجری اور بعض نے سعہ ہجری تبلای ہے تفسیرابی کشیر اور نیل الاوطار بیس صدیجری کو ترجیح دی ہے اور راح المحانی میں حضرت انس اسے دوایت نقل کی ہے کہ بیس صدیجری کو ترجیح دی ہے اور راح المحانی میں حضرت انس اسے کہ بہلی آیت جا اسی موقع پر ناذل ہوئی ۔ ادر سورہ لزرگی یہ آیات قصتہ افک کیسا محق ناذل ہوئی ہیں جو غروہ بنی اصطلق یا مربیع سے والیہ میں بیش آیا یہ غزوہ سلنہ ہجری میں ہواہا سے عروہ کا میں ہواہا سے معلوم ہوا کہ سورہ لزرگی آیات پردہ و ججاب نزول کے اعتباد سے بعد میں کئی ہیں سورہ احزاب کی آیات ناذل ہوئیں، اسلئے ججاب اور بردہ کی پوری بحث سے متاز اس ہوئی اسلئے ججاب اور بردہ کی پوری بحث تو افشارات کی تفسیر کھی جاتی ہوتہ ہیں ۔ یہاں صرف ان آیات کی تفسیر کھی جاتی ہیں ۔ یہاں صرف ان آیات کی تفسیر کھی جاتی ہیں ۔ یہاں صرف ان آیات کی تفسیر کھی جاتی ہوتہ ہیں ۔ یہاں صرف ان آیات کی تفسیر کھی جاتی ہی جو سورہ نور میں آئی ہیں ۔

قُلْ لِلْمُوْمِينِيْنَ يَعْطُونُ أَبِمُ الْمِنَ أَبُمُ الْمِعْدُ وَبَحُفَظُوْ الْمُنْ وَجَعُمُو فَلِكَ أَذَى لَهُمُو إِنَّ اللهُ حَبِيْرُ فِي مِن يَصْنَعُونَ ، يغضوا، غض سے شق ہے جس محمدی کم کرنے اور لیت کرنے کے ہیں دراغیب کگاہ بیست اور نیجی رکھنے سے مُراد بِگاہ کو اُن چیزوں سے پھیرلینا ہی سورة النور ١٠٢٠

جن کی طرف دیکھنا منزعاً ممنوع و ناجا زہے۔ ابن شیر۔ ابن حبان نے مہی تعنسیر فرمای ہے اس میں غیرمح م عورت کیطرت بڑی نیت سے دیکھنا تحریماً اور بغیرکسی نیت کے دیکھنا کراہمۃ وہل ہے ا درکسی عورت یا مرد کے سترسترعی برنظر ڈالنا بھی اس داخل ہے (موا صنع صرورت جیسے علاج معالجہ وغیرہ اس سے سنتی ہیں کسی کاراز معلوم کرنے کے لئے اُس کے گھرمیں جھا ککنا اور تمام وہ کا جن

میں نگاہ کے استعال کرنے کو شریعیت نے ممنوع قرار دیا ہے اسیں داخل ہیں۔

وَيَخْفَظُوا افْوَدْ جَعُكُورُ مُشْرِمِكا بهول كى حفاظت سے مُرادير بيد كرنفس كى خواہش بوراكينے کی جتنی نا جائز صورتیں ہیں اُن سب سے اپنی مترمگا ہوں کو محفوظ رکھیں۔ اسمیں زناء لواطت اور دو عور توں کا باہمی سی اق جس سے متہوت بوری ہوجائے ، ہاتھ سے متہوت بوری کرنا یہ سب نا جائز دحرام چیزی داخل ہیں۔ مراداس آئیت کی نا جائز دحرام شہوت رانی ا درائس کے تمام مقدمات كوممنوع كرنا ہے جن میں سے ابتدااور انتہا كو تصريحاً بیان فرما دیا باتی درمیانی مقدمات سب اسمیں داخل مو گئے۔ فقنہ شہوت کا سب سے پہلا سبب اور مقدم فیکاہ دانا اور دیکھناہے اورآخری نتیجہ زناہے ان دونوں کو صراحة وکرکے حرام کردیاگیا اُن کے درمیانی حرام مقدمات مثلاً بالتين سننا- بالتوركانا وغيره يبسب صمناً أسكة

ابن كتير في حضرت عبيرة سنقل كما كركل ما عصى الله به فهوكبيدة وقد ذكر الطمافيين يعينى جس چيز سے بھي الشركے حكم كي مخالفت ہوتي موسب كبيرہ ہي ہيں ليكن آيت ميں ان كے دوطرف ابتدا وانتهاركو ذكركر دياكيا-ابتدارنظ أنفاكر ديجينا اور انتها زناہے ۔طبرانی نے حضرت عبدالشربن معود روز سے روایت کیا ہے کہ رسول اسٹر صلے الشرعکی کے فرمایا ۔

نظرا ك زہر ملا تيرشيطان كے تيرون ميں سے ہے جوشخص با دجود دل کے تقاضے کے اپنی نظر کھیر لے توہیں اسے مبلے اسكوا بسائينة ايمان دونكاجسكي لذت وه اينة قلب مين

النظم عمون سمام ابليس مسموم من نزكها عنا فتي ابد لته ايمانا بجد حلاوته فى قلبم زازابن كتين

بعادت القران جسكة

اور سي المرتبع المين حضرت جريرين عبدالتذبي المساروايت ب كرانهون في المخضرت سلى الشرعليدو لم سے روایت کیا اگر ملا ارا دہ اچا تک سی غیر محرم عورت بزنظر بڑجائے تو کیا کرنا جاہئے ۔ آنحضرت صلى الشرعكية لم نعظم دياكه اين نظراً شطرت سے پھيرلو (ابن كثير) حضرت على كرم النثر وجہہ، كى صدیث میں جو یہ آیا ہے کہ بہلی نظر تو معامن ہے دوسری گناہ ہے اسکامطاب بھی بہی ہے کہ بہلی نظر جوبلاا داده اچانک پڑجائے وہ غیراختیاری ہونے کے سبب معات ہے در مبالقصد ہے کی نظریمی معاف نہیں۔

Nun بےریش اواکوں کیطرف قصداً ابن کثیر نے لکھاہے کہ بہت سے اسلامِت اُمت کسی امرد (بے یہ نظر کرنا بھی اسی کے میں ہے اوا کے کیطرت دکھتے رہنے سے بڑی بختی کے ساتھ منع فرماتے تھے اوربہت سے علمارتے اس کو حوام قرار دیا ہے (غالباً برائس صورت میں ہے جبکہ بڑی نیے۔ اور نفس كى خوابش كيسا تف نظر كيجائے والسراعلم-ش) غير مح م كى طهرت تظركرنا | وَقُلْ لِلْمُؤْمِنْتِ يَغْصَّصْ مِنْ آبْصَادِهِنَ اللَّذِينَ اللَّذِينَ السلويل حرام ہے اس کی تفصیل آئیت کے ابتدائ حصر میں تو دہی تم ہے جواس سے پہلی آئیت میں مردول كودياكيا كه اين نظرس بيت ركفين لعني زگاه بيرلس مرودن كي مين عورتين هي داخلين مكران كا ذكرعليجده تاكيد كے لئے كياكيا ہے - اس معلوم ہواكدعور توں كو اپنے محادم كے سواكسي فرد لو د مجینا حرام ہے بہت سے علمار کا قول یہ ہے کہ غیرمحرم مرد کو د مکیمنا عورت کے لئے مطلقاً حرام ہے خواہ شہوت اور بڑی نیت سے دیکھے یا بغیرسی نیت و شہوت کے دونوں مورتیں حرام ہی اور اسپر ففرت أع سائة كى حدث سے استدلال كيا ہے بس من كور ہے كدا يك روزاً م سلمه اور ميمون دونوں آنخصرت صلى الشرعكييم مح مساته تنفين إجانك عبدالشّرابن أم مكتوم نابينا صحابي آكته اوريه واقعب مرحكا تجاب نازل بونے محبعد بیس ما تھا تورسول استر جسلے الشرعکت می دونوں کو عکم دیاکہ ان سے يُدورو-أمِّ ماية فيعون كياكه يارسول الشروة تو نابيناي نه تمين و كيوسكت بين نه تمين ا بهجا نتے ہیں۔ رشول انٹرصلے انٹر عکیہ کم نے فرمایا تم تو نا بینا نہیں ہو، تم توان کو دیکیھر ہی تاد (رواه الوداود والترفدي وقال الترفدي حديث حس صحيح) اور دوسر عصف فقهار نے كهاكه بغير شہوت کے غیرمرد کو دیکھنے میں عورت کے لئے مضا کفتہ نہیں۔ان کا استدلال صدیقہ عاکث ہوا کی اس حدیث سے ہے بیں مذکورہے کہ سجد نبوی کے احاطہ میں کچھ حیشی نوجوان عید کے روز اپنا سيابها وتكهيل وكهارب كقيد رسكول الترصلي الترعكية لم اسكو ويجيف لكداور صدلقه عاكث رافي ات كا را مين كفرا بوكران كاكعيل د كيهاا درانسوقت يك ديميتي ربن حبب تك كه خود بي اكس ہے اکنا گئیں۔ دیول انٹرصلی انٹرعلیہ وسلم نے اس سے نہیں روکا۔ اوراس پریسب کا اتفاق ہے کہ نظر شہوت توحرام معا وربلاشموت تظرارنا بحى خلاف ولى مدا ورايك عورت كود دسرى عورت كرمواضع سنركود يجفا بغير خاص صرورتوں محدیجی اسی آیت مے الفاظ سے حرام ہے کیونکہ جیسا او بربیان ہوجیکا ہے کہ موضع سنریعنی مرد ول كاناف سے مشنوں كا ورغورتوں كاكل بدن بجز جيره اور شھيليوں ہے، بيروضع ستر ہيں اُن كا چھيا نا العصية فرض ب مذكوتي مرد د دمر مرد كاسترد يح سكتاب مذكوتي عورت ومرى عورت استردي سكت اورمردلمى عورت كاياعورت كمي وكامتر ديجه ببدار جداولى حرام بدا ورآيت مذكوره مرحكم غض بجريح له يعنى تنام نا محرموں سے و محدم كا حكم آئے آربا ہے . (محتدثقى عمَّان والاله)

خلاف ہے کیونکہ آیت کا مطلب جوا و پر بیان ہو چکا ہوائیں ہرائیسی چیز نظر نسبت رکھنا اور ہمالینا مراد ہے بس کی طرف دیکھنے کوسٹرع میں ممنوع کیا گیا ہے اسمیں عورت کے لئے عورت کا ستر دیکھنا ہی

وَلا يَبُنِي يْنَ زِنْ يَنْتَهُنَّ إِلَّامَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ عِمْمُ هِنَّ عَلْ جُيُوْرِهِنَّ وَكُلْيَدُنِّ الانسان اليا آب كو مزين اورخوش منظر بنائے وه عده كير الي بوسكت بين ، أور كھى - يہ چیزی جبکے کسی عورت کے بدن برنہ ہوں علیجدہ ہوں تو با تفاق اُمّت اُن کا دیکھنامُردوں کے لئے حلال ہے جیسے بازارمیں بکنے والے زنانہ کیڑے اور زبور کہ اُن کے دیکھنے میں کوئ مضائف نہیں اس لئے جمہورمفسرین نے اس آیت میں زینت سے مرادمحل زیزت تھی وہ اعضارجن میں زمینت کی چیزی زیور وغیرہ بہنی جاتی ہیں وہ مُراد گئے ہیں اور معنی آیت کے یہ ہیں کہ عورتوں ير واجب كروه اين زميت معين مواقع زبيت كوظا برنه كرك (كذا في الوح) اس آيت بي جوعودت كے لئے اظہارِ زمینت كوحرام قرار دیا ہے آگے اس حكم سے دواستنار بیان فرمائے گئے ا يك منظور كما عتبار سے ہے تعنی حیں كی طرف د مكھا جائے د وسرا ناظر بعینی د مکھنے والو بحا عنبیا احكام يرده سے استنار البيلاستنار ماظهر مِنها كا ہے بيني عورت كے لئے اپني زميت كى سی چیز کو مر دوں کے سامنے ظاہر کر ناجا نز نہیں بجز اس چیزوں کے جو تود بخو د ظاہر ہوہی جاتی ہیں معینی کام کاج اور تقل و حرکت کے وقت جو چیزی عادۃ کھیل ہی جاتی ہیں اور عادۃ اُ کھیلانا کل ہے وہ تنشیٰ ہیں اُن کے اظہار میں کوئ گئا ہ نہیں (ابن کثیر) مراداس سے کیا ہے اسمیں مصرت عبدالمشرين سعدوا ورعبدالشربن عباس كي تفسير ب مختلف بي حضرت عبدالشرين و د نے فرمایاکہ مَا ظَلَهُ وَمِنْهَا میں جس چیز کوستنٹی کیاگیاہے وہ اوپر کے کیڑے ہیں جیسے ترقع یالمبی جاور جوبرتع كے قائم مقام ہوتی ہے۔ بيكيات زين كے كياوں كو جيسا نے كے لئے استعال كئے جاتے ہيں تو مُراد آیت کی بیج و تکنی که زمیت کی تسی چیز کو ظاہر کرنا جا تز نہیں بجزان ادر کے کیڑوں کے حبکا چھیا نا بضردرت بالهز بحلفے کے وقت مکن نہیں جیسے ہر قع دغیرہ ۔ اور حضرت ابن عباسٌ نے فرمایا کہاس سے مراد چہرہ اور ہمیایاں بین کیو مکہ جب عورت سے صرورت سے باہر سکتے پر مجبور ہو تو نقل وس اورلین دین کے وقت چرے اور تضیلیول کو حیسانا مشکل ہے۔ اس لئے حضرت عبداللر بن مسعود کی تفسیم طیابتی توغیرمح مردوں کے سامنے عورت کو جہرہ ادر ہائفہ کھولنا بھی جا ٹر نہیں صرف ا دبیر محکیرے برقع وغیرہ کاا فہار بصرورت مستثنیٰ ہے ۔ اور حضرت ابن عباسٌ کی تفسیر کے مطابق چہرہ اور ہاتھوں کی تھیلیاں مجی غیرمحرموں کے سامنے کھولنا جائزہے اس لئے نقہاراً مت

معادف القرآن بر لدشتم

میں بھی اس سئلمیں اختلاف ہے کہ جیرہ اور جھیلیاں پُردے سے تنتی اور اُن کاغیرمحرموں کے سامنے کھولنا جا زہے یا نہیں چگراس پرسب کا اتفاق ہے کہ اگر جیرہ اور پیقیلیوں پرنظر والد سے فت کا ندمیتیہ ہوتو اُن کا دیکھٹا بھی جائز نہیں ا درعورت کواُن کا کھولنا بھی جائز نہیں اسیطرح اس پرسی سب کااتفاق ہے کہ سترعورت جو نماز میں اجاعاً اور خارج نماز علیٰ لاصح فرض ہے اُس سے چیرہ اور چھیلیاں شنی ہیں اگرا تکو کھول کرنما زیڑھی نونما زبا تفاق صبح و درست ہوجائے گی -تفاحني ببينيا وى اورخازن في اس آيت كي تفسيرس فرما باكه مقتصنا آيت كايه معلوم بيوتا ہے كه عودت کے لئے صل حکم یہ ہے کہ وہ اپنی زمینت کی کسی چیز کو کھی ظاہر بنہ ہونے دے بجر اُسکے جو نقل و حرکت اور کام کاج کرنے میں عادۃ کھل ہی جاتی ہیں انہیں بُرننے اور جادر کھی وجل ہیں اور جیرہ اور ہتھیلیاں تھی کہ جب عورت مسی مجبوری اور صرورت سے یا ہر تکلتی ہے تو ہر فنع جا در دغیرہ کا ظاہر مونا تومتعین ہی ہے لین دین کی ضرورت میں بعض ا دفات چہرہ اور ہاتھ کی ہتھیلیاں بھی کھل جاتی ہیں تو وه صی معامت بیں گناه نہیں۔ نیکن اس آیت سے بیکہیں تا بت نہیں که مرد دن کو جیراد ترجیساں د کھنا بھی بلاضرورت جا ترہے بلکم دوں کا تو وہی علم ہے کہ نگاہ بست رکھیں اگرعورت کہیں جيره اور ما تقد كهو لن يرجبور موجائ تومردول كولازم ب كربلا عذر شرعى اوليلا ضرور في اسكى طرف نه ديميس - اس توجيمي وونول دوايتي اورتفسيري جمع موجاتي بي -امام ماكك كامشبورنديب بھی میں ہے کو غیرمح معورت کے جہرہ اور جلیوں یزنظر کرنا بھی بغیر ضرورت مبیحہ کے جائز نہیں۔ اور زواجر میں ابن مجر کئی شافعی رو نے امام شافعی رو کا بھی ہی ندہب تقل کیا ہے کہ اگرجیدعورت کا چہرہ ادر جھیلیاں سترعورت کے فرض میں داخل نہیں ان کو کھول کر بھی نماز ہوجاتی ہے سگر غيرم مردول كوان كاد مكيمنا بلاحرورت شرعيه جائز نهيل-اوريه اويرمعلوم موحيكا بي كرجن نقهار نے چہرہ اور چھیلیوں کو دیکھنا جائز قرار دیا ہے وہ بھی اسپر تنفق ہیں کہ اگر فتنہ کا ندبیتہ موتوجیرہ وغیره دیمینائی نا جائز ہے اور یہ ظاہر ہے کہ حسن اور زمینت کا اصل مرکز انسان کا چہرہ ہے اور زمانہ فلتنہ وفسا داورغلبہ ہوی اورغفلت کا ہے اس لئے بجز مخصوص صرور توں کے مثلاً علاج معالجه یا کوئ خطرہ شدیدہ وغیرہ عورت کوغیر محادم کے سامنے تصداً جہرہ کھولنا بھی فمنوع بو ا در مُردوں کوائس کیطرف قصداً نظر کرنا بھی بغیر صرورت شرعیہ کے جائز نہیں ۔ آیت مرکوره میں زینت طاہرہ کے استفار کے بعد ارشاد ہے دیم فوبن بی فیر ہوت علی جيوري يعني أيل مادلياكري اين دويون كالياسينون يرفي خارى جمع اس كراية ا كبتة بي جوعورت سريراستعال كرے ادر أس سے گلاا درسينه بھي جيب جائے - جيوب جيب کی جمع ہے جس کے معنی ہیں گریبان - جو تکہ زبانہ قدیم سے گریبان سینزی پر ہونے کا معمول ہے

14

سُورة النور ١١٠٢٣

معادت القرآن جسكته

اس لئے جیوب کے جھیانے سے مرا دسینہ کا چھیا ما ہے مشردع آبت میں اظہار زمینت کی مانعت تھی اس تجا میں اخفار رمینت کی ناکیدا دراس کی ایک صورت کا بیان ہے جبی اس وجبر ایک ہم جا بلیت کا مثانا ہے زمان جالمیت می عورتیں دومیشر مربر دال کراسے دونوں کنا ہے۔ کینٹ برتھبور دینی تھیں تس سے کریا ن اورگلا اور سیناورکان کھا ہے تھے اس سے سلمان عورتوں کو حکم دیا گیا کہ وہ ایسا نہ کریں بلکہ دو ہے ہے دولوز يتے ايك دوسرے براك ليں ناكر بيسب اعضار جھي جائيں (رواه ابن ابي حائم عن ابي جبر ورس آنجو دس استثنار أن مرد دن كابيان كياكيا ہے بن سے تنزعًا برده نہيں جس كے دوسب ہيں اقبل توجن مرد دن كوستنى كياكيا ب أن سكسى فتنه كاخطره نهي وه محارم بين بن كى طبائع كوحق نعالى نے خِلقةٌ ايسا بنايا ہے كد ده ان عورتوں کی عصمت سے محافظ ہوتے ہیں اُن ہے خود کوئی فننہ کا اختمال نہیں ۔ دوسرے شرقت ایک جكرست سي كى ضرورت معى مهولت بداكرتني مفتقنى سے -بيجى يا در كھنا صرورى ہے كەشوسر كے مواد دمرے محارم كوجومتشى كياكيا ہے وہ احكام حجافي برده سے استنارہ سيسنزعورت سےاستنارنہيں عورت كاجو بدن منزمی داخل ہے جسکا کھولنا نما زمیں جائز نہیں اُس کا دیکھنا محام سے لئے بھی جائز نہیں۔ اس آیت میں آ تطاقتھے کے محرم مردوں کا اور جاردوسری اقسام کا بیردہ سے استثناء کیا گیا ہے وہ سورة احزاب كي آيت جونزول مي اس سے مقدم ہے اسمين صرف سات اقسام كا ذكر ہے يانح كا اضاف

شورہ نور کی آیت میں کیا گیاہے جو اس سے بعد نازل ہوئی ہے ۔

ننبيث إياديسي كاس حكيفظ محرم عأكم معنى من استعال مواسي بوشو سرم بقي شنمل ہے فقهار كي اصطلار ب محرم کی جوخاص تفسیرے کرجس سے جھی مکاح جائز نہ ہووہ یہاں مرادنہیں تیفصیل ان ہارہ منتذ نورى مذكورة أيت مي ب يرب -ست يهد شوم بيت بيدي كي يحتى الرجاعا المحفود ديكهنا خلاب ادلى بعضرت صديقة عائشة في فرط المال عنى ولالربت منايعني سرائي ميرفا عفوكود كمانين أي دوس کے لیے باہم ،حس من دادا ، رداداس داخل ہیں ۔ تنسیر سے شوسر کاباب ہے اسمیں تھی دا دا، بردا داسيداخل ہي ۔ حق تھے اپنے لا مے جوابن اولا ديں ہيں ، جا بجو بي شوسر سے لڑے جو کسي وسری بهوی سے بوں - مجھٹے لینے بھائی، اسمیں حقیقی کھی داخل ہیں اور یا پہتر کے بعنی علاتی اور ماں شرکے بعنی خیاتی بھی لیکن ماموں ،خالہ ما جیا ، تا با اور تھے تی سے لڑ سے جن کو عام عرف بیں بھائی کہا جاتا ہے وہ اسمیس داخل نهیں وہ غیرم ہیں۔ سیا تنویس بھائٹیوں سے لڑ کے بہال جی صرف تقیقی یا علاتی یا اخیافی بھائی کے لڑکے مُراد ہیں دوسر عرفی بھائیوں کو دیسے شامل نہیں۔ آ تھویں بہنوں کے دائے ہمیں بھی بہنوں حقیقی اور النا خیافی بہنی

العیهاں سے میں تفوش می تفصیل ہے جو بیان ہونے سے ریکئ ہے۔ وہ تفصیل سے کدعورت محرس کا وہ حصہ جونا ف اور تھٹتوں مے درمیان ہے نیز میٹ اور تمرمح مے لئے تھی دیکھنا جا کر بہیں - البتداس کے علاوہ برن کے دومرے حقے ، مثلاً مر ، کلائیاں بنٹرلی وعیرہ محرم سے سامنے کھولی جاسکتی ہے ،البتہ زمانہ ہو تکہ فتنے کا ہے ۔ اس لئے بلاصرورت کھولنے کی عا دت ڈالٹ ساسبنيس مشايراى وجد ي حضرت مصنف وحمد الشرعليد في نما ز كسترى كونحرم كاسترخرارد ياب والشراعلم ومحد تقى عنان والماله

مرا دہیں - ماموں زاد ججا زادہین داخل نہیں بہ آ کے قسمیں نومحام کی ہیں -

تونيقهم أو نساء يهن بين ابن عورتين حس سيمرا وسلمان عورتين بي كداأن كسام بھی وہ تمام اعضار کھولٹا جائز ہے جوایتے باب بیٹوں کے سامنے کھو لے جاسکتے ہیں اور بیرادیر لكھاجا چكاہے كہ بيراستثنارا حكام حجاب ويردہ سے بيء احكام سترسے نہيں - اس لئے جواعضار ا یک عورت این محرم مردوں کے سامنے نہیں کھول سکتی اُن کا کھولنا کسی شیلیان عورت کے سامنے تھی جائز نہیں۔علاج معالجہ وغیرہ کی ضرورتین سنتیٰ ہیں۔

ينسيانينين مسلمان عورتوں كى قيدسے بيمعلى بواكه كا ذمشرك عورتوں سے بيروه واجب، وه غيرهم مرددن محظمين بير-ابن كثير نے حضرت مجابد سے اس آيت كى تفسير ميں نقل كيا توكه اس ستعلوم بواكدمسلمان عورت كے ائر نہيں كركسى كافرعورت كے سامنے اسے اعضار كھولے كي ا حادیث میحرمیں ایسی روایات موجود ہیں جن میں کافرعور توں کا از واج مطہرات کے پاس جسانا تّابت ہے اسے اس سر ایم مجتہدین کا ختلات اور بیش نے کا فرعور توں کوشل غیرمحم مردو سے قرارديا ب معنى في اس معامله مين سلمان اوركافر دونون مي عورتون كاايك يح محم ركها ب كرأن سے بردہ نہیں ۔امام رازی نے فرباباکہ صل بات یہ ہے کہ نفظ نسکا بیجی میں توسیقی عورتی کم اورکافر ا داخل بین اورسلت صالحین سے جو کا فرعور توں سے پر دہ کرنے کی روایات منقول ہیں وہ استحباب) يرمىنى بين - رفيح المعانى مين مفتى بغدا د علامه آلوسى نياسى تول كو اختيار فرماكر كهاب -

هان االقول اوفق بالتاس اليوم فائل ايبي تول آجل لولائك مناسب اليه يونك اس ذمانے میں سیان عور توں کا کا فرعور توں سے بردہ تقریب نا ممکن ہوگیاہے۔

لايكاديبكن احتجاب المسلمات عن الناميات (دوج المعان)

وسويقهم آؤماً مَلكتُ أيما مُهُن بها عين وه جوان عورتول كم مكوك بول- ان الفاظ کے عموم میں تو غلام اور لوٹڈیال دولوں داخل ہیں تھین اکثر ائٹہ فقہار کے نز دیک اسس سے مراد صرف نوندیاں ہیں، غلام مرد اسس میں داخل نہیں۔ اُن سے عام محادم کی طرح یردہ واجی مصرت سعيد بن مسين في اين آخرى قول مين فرمايا لا يختر يكي أيتمالنوي فائن فا لانا ودون الناكوريين تم لوكيبي سوره بورك اس آيت سے مفالطميں ند براجا وكا وَكَا وَعَا مَلَكُ اَيْمَا نَهُنَ کے الفاظ عام ہیں۔ مرد غلاموں کوجی شامل ہیں میکن واقعالیا نہیں برآبت صرف عورتوں معنی كنيزول كے حق ميں ہے مرد غلام اسميں واخل نہيں -حضرت عبدالله بن مسعود جس بھرى، ابن يون نے فرمایاکہ غلام مرد کے لئے اپنی آقاعورت کے بال دیکھنا جائز نہیں (روح المعانی) باقی رہایہ ا سوال كدجب لفظ أَوْهَا مَلَكُتُ أَبِمَا مُنْهُنَّ سے صرف عورتیں لونڈ بال ہى مُراد ہیں تو وہ اس سے

سُورُة النور ١٢٠: ہے نفظ نساز بھت میں داخل ہیں ان کوعلیجدہ بیا*ن کرنے کی نشر درت کیا تھی اسکا جو*اب جسال ہ یہ دیا ہے کہ نفظ نساء محق این ظاہر کے اعتبار سے صرف سلمان عور توں کے لئے ہے ۔ اور مملوکہ باندیوں میں آگر کا فرجی ہوں نوان کو سنٹنی کرنے کے لئے یہ لفظ علیمدہ لا یا گیا ہے۔ كيارهوين م آيالتّبيين عَنْرِأُولِ الْإِنْ بَدَمِنَ الرِّجَالِ مِ حضرت ابن عباسً نے فرمایا کہ اس سے مُراد دہ مغفل اور برحواس قسم کے لوگ ہیں جن کوعور توں کی طرف کوئ رغبت و ولحييى من مود ١١ن كتيب اورميي ضمون ابن جرير في الوعبداللية ، ابن مجبر ابن عظيم عليه عيره سفاقل إسليّاس سيمراد ده مرد بين جوعور تو سيطرت نه كوي رغبت وشهوت ركھتے موں ، نه ائن کے اُوصا بُحُسن اور حالات سے کوئ دلجیری رکھتے ہوں کہ دوسرے توگوں سے بیان کر دیں بخلا بخنت قسم مے لوگوں کے جوعور توں کے اوصا ب نیاص ساتعلق رکھتے ہوں اُن سے بھی پڑہ داجیے جبیا کہ صدیقہ عائشہ خ کی حدیث بیں ہو کہ آیک مختنت از واج مطہرات سے یاس آیا کرتا تف اور مهات المؤمنين اسكو غينواولها أيتن بكذر من السيجال جواس آيت مين مذكور سے واحسل مجدكر س سے سامنے آجاتی تفتیں۔ رشول انشرصلے انشر عکتی کم نے جب اُس کو دیکیھا اورانس کی باتیں نیں تو گھروں میں داخل ہونے سے اسکوروک دیلالاج المعان) اسی لئے ابن حجر کی منے شرح منہاج میں فرمایا ہے کہ مر داکرجیہ عنین (نا مرد) یا مجبوب سے روہ واجب ہے۔ اس میں غیرادلی الازینز کے نفظ کیے اُس سے مرادیہ ہے کہ ایسے مقل بردواس لوگ جوطفیلی بن کر کھانے بینے کے لئے گھرد ن میں جلے جائين وصي الله المسكا وكرصرت اسلة كياكياكه اسوقت اليدم فقل قسم مح كيرمرد اليه بي تھے جوطفیلی بن کرکھانے پینے کے لئے گھروں میں جاتے تھے اصل مدار حکم کا ان محفظل مرحوا برونے برہے تا بع اورطفیلی بونے برنہیں - وَاللّٰهُ اعْلَقَ بارهوين م آوالظِفْلِ لَهُ يْنَ ج-اس عمرادده نابالغ يَجَين جواجي بلوغ ك قرب بھی تنہیں سنجے اور عور توں کے مخصوص حالات و صفات اور حرکات و سکنات سے مالکل بخبر بدن-اور جواد کاان آمورسے دلیسی لیتا ہو وہ مراہتی تینی قریب لبلوغ باس سے بردہ واجب سے (ابن کثیر) امام جصاص رو نے فرمایا کہ یہاں طفل سے مراد وہ بچے ہیں و مخصوص معاملات سے لحاظ سے عور توں اور مردوں میں کوئ اشیاز نہ کرتے ہوں (ذکرہ عن المجاہد) بردہ سے متثنات كابيان حتم موا-وَلَا يَعَمُ بِينَ بِالْجُلِهِيَّ لِيكُ لَمَ مَا يُخْفِينَ رِنْ فِينَ مِنْ رِنْ نَتِهِنَّ اللَّهِ عَورتول رِلازم رَ

14

14

سُوُرَة النّور ٢٣: ٢٣ N.6 يار من القرآن *جسكة* شم قران نے اظہار زمینت میں دہل قرار دے کرمنوع کیا ہے تو مزین ربکوں سے کا مدار برقعے ہیں کر . بمكانيا بدرجدا ولى ممنوع بهوگاا وراسي سے پيھي معلوم بهوا که عورت کا چېره اگرچيسترميس واخس ل نہیں مگروہ زمینت کاسب سے بڑا مرکز ہے اسلتے اسکا بھی غیرمحرموں سے چھیانا واجب ہے الآبضرورت (حضاص) وَتُوْبُوْآ اِلَّى الله جَمِيْعًا آيُّهُ الْمُوْمِينُونَ ، سِنى توبرروان الله الله الله كرسب كرسب اك مُومَن مِندو- اس آیت میں اوّل مُردوں کو نظریں بیت رکھنے کا حکم پھرعور توں کو ایساہی حکم بھرعورتوں کوغیرمحروں سے پر دہ کرنے کا حکم الگ الگ دینے کے بعداس جملے میں سب مرد وعورت كومشامل كرم بدايت كى كئى ہے كەشہوت نفسانى كامعاملہ دقيق ہے دوسروں كواسير اطلاع ہونا مشکل ہے سکر انٹر تعالیٰ برہر جھیا ہوااور کھلا ہوا کیساں ظاہر ہے اسلے اکر کسی ے احکام مذکورہ میں کی وقت کوئ کو تاہی ہوگئ ہو تواسیرلازم ہے کہ اس سے توبہ کرے گئیتہ برندامت کے ساتھ اللہ سے خفرت مانگے اور آئنرہ اُسے یاس جا بیکاعزم مصمم کرے۔ وأنكحو االايا مي منكرة والصلحين من عيادكم و واعالم اور بكاع كرود داندون كااية اندر اورجونيك يون عممادے علام نَ يَكُونُوْ افْقُرَاء يُغَنِهِمُ اللَّهُ مِنْ فَضِلْهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ ارده بوں کے مفلس اسٹران کوعنی کردے گا این فضل سے اور اللہ کشائش والا ہے عَلِيْرُ ۞ وَلَيَسْتَعُفِفِ الَّذِينَ لَا يَجِدُ وَنَ بِنَا كَا حَقَّ سب کھے جانتا ہے ، اور اپنے آپ کو تھاستے دہیں جن کو نہیں ملنا سامان زیکاے کا جب تک کہ يُغْبِيهُمُ اللَّهُ مِنْ فَصَلِهِ اللَّهُ مِنْ فَصَلِهِ اللَّهُ مِنْ فَصَلِّهِ اللَّهُ مِنْ فَصَلَّهِ مقدور دے اُن کوائٹر ایٹ فضل سے (احدادمیں سے) جو بے نبرکاح ہوں (خواہ مرد ہوں یا عورتیں اور بے نبکاح ہونا بھی م خواہ ابھی تک زیکا ح ہوا ہی مزہویا ہونے کے بعد بوی کی موت یا طلاق کے مبلے زیکا ح دہ گئے) تم أن كا نكاح كرد ماكر واور داسي طرح ، تمقارے غلام اور تو شروں میں جواس و نكاح) كے لائت بدن ديني حقوق زيكاح ا داكرسكة بدن ان كابعي (زيكاح كردياكرو محص ايني

مصلحت سے اُن کی خواہش بکاح کی مصلحت کو نوت نہ کیا کرو۔ اور احرار کے بکاح بنام

معادف القرآن جسكدشم

معارف ومسائل

ابیض احکام بڑکاح اپہے بیان ہو چکا ہے کہ سورہ نور میں زیا دہ تروہ احکام ہیں جن کا تعاق عفت وعصرت کی حفاظت اور فواحش و بے حیائ کی ددک تھام سے ہے۔ اس سلسلس نر نا اور اُسے ستعلقات کی شدید سراؤں کا ذکر کیا گیا بھر استیدنا ن کا ہجم عور توں کے پر دے کا مشر بھیت اسلام چونکہ ایک معتدل سفر بیت ہے۔ اس کے احکام سب ہی اعتدال پر اور انسان کے فطری جذبات و خواہشات کی رعایت کیساتھ تعدی اور حد سے نکلنے کی ممانعت کے اصو بر دائر ہیں اسلئے جب ایک طرف انسان کو نا جائز شہوت وائی سے ختی کیساتھ دو کا گیا تھ مفروری تھا کہ فطری جذبات و خواہشات کی رعایت کے ساتھ تعدی اور حد سے نکلنے کی ممانعت کے اصو مفروری تھا کہ فطری جذبات و خواہشات کی رعایت سے اسکا کوئ جائز ادر ہجے طریقہ ہی بہنا ایا جائے۔ اسکے علاوہ بھا رائس کا عقلی اور شرعی تقاضا بھی ہی ہے کہ کچھ حدود کے اندا در کرم دوعورت کے اختلاط کی کوئی صورت تجویز کی جائے۔ اسی کا نام قرآن وسنت کی اصطلاح میں نوکاح ہے۔ آیت ندکورہ میں استے متعلق حرہ عور تو نسے اولیاراور کینے دولائوں وسنت کی اصطلاح میں نوکاح ہے۔ آیت ندکورہ میں استے متعلق حرہ عور تو نسے اولیاراور کینے دولائوں الذیب کی وجہائی کہ وہائی کا نوکار کیا جی ہو ہمائی مرد وعورت کے لئے استعال کیا جاتا ہے جہائیکا حربے جاتا کیا ہویا ذوجین میں سے سی ایک ہوت سے یا طلاق معربی ہو جدہ ہو۔ خواہ اقل ہی سے براس مرد وعورت کے لئے استعال کیا جاتا ہے جہائیکا حرب میں سے سی ایک ہوت سے یا طلاق موجود شہو۔ خواہ اقل ہی سے براس حرب در خواہ اقل ہی سے براح مذکیا ہویا ذوجین میں سے سی ایک ہوت سے یا طلاق

معادف القرآن جسلد شئم

سے برکاح ختم ہو چکا ہو۔ ایسے مُرد دن وعور توں کے برکاح کے بنے اُن کے اولیار کو حکم دیا گیا ہے کہ دہ اُن سے برکاح کا تنظام کریں ۔

آیتِ ندکورہ کے طرفہ خطاب سے اسی بات تو باتفاق ائم فقہار تابت ہے کہ نجاح کا مسنون اور بہتر طرفقہ بہی ہے کہ خود ا بنا نکاح کرنے کے لئے کوئ مرد یا عورت بلا واسطہ اقدام کے بجائے اپنے ادلیار کے واسطے سے بہکام انجام دے اسی دین و گونیا کے بہت سے مصالے اور فوا مُد بیں ۔ خصوصاً لڑا کیوں کے معاملہ میں کہ لڑا کیاں اپنے نکاح کا معاملہ خود طے کریں، یہ ایک قسم کی بے حیائی بھی ہے اور اسمیں فواحق کے راستے گئل جا نیکا خطرہ بھی ۔ ای لئے بعض روایات مدیث میں عورتوں کو خود اپناز نکاح بلا واسطہ لی کرنے سے روکا بھی گیا ہے۔ بعض روایات مدیث اور بعض و دوسرے انگہ کے نز دیک بیگم ایک فاص سنت اور شرعی ہوایت امام اظم ابو حینی اور بعض و دوسرے انگہ کے نز دیک بیکھ ایک فاص سنت اور شرعی ہوایت کی چینہ سے اگر کوئی بارخ لڑکی اپنانیکاح بغیرا جائت دلی کے اپنے گفویس کرے تو نوکال صحیح کی چینہ سے اگر کوئی بارخ لڑکی اپنانیکاح بغیرا جائت دلی کے اپنے گفویس کرے تو نوکالے سے کا اگر جی فلا ہے۔ موالے گا اگر جی فلا ہے۔ شرق کی وجب بلامت ہوگی جبکہ اسے کسی مجبوری سے موجب ملامت ہوگی جبکہ اسے کسی مجبوری سے کا اگر جی فلا ہے۔ شرق کے کے دو جب ملامت ہوگی جبکہ اسے کسی مجبوری سے کا اگر جی فلا ہے۔ کا اگر جی فلا ہے۔ ساتھ کی جبکہ اسے کی جباری سے گا اگر جی فلا ہے۔ ساتھ کو کر جبار کا حدالے کا اگر جی فلا ہے۔ ساتھ کی جبارے کا اگر جی فلا ہے۔ ساتھ کی دو جب ملامت ہوگی جبکہ اسے کسی مجبوری سے کھوں سے گا اگر جی فلا ہے۔ ساتھ کی دو جب ساتھ ہوگی جبکہ اسے کسی جبوری سے کی دو جب میا میں جبارے کی جبار کے کو ایک کی ایک کی کے دو سے کا اگر جی فلا ہے۔ ساتھ کی کے دو کو جب میا میت ہوگی جبکہ اسے کی کا انگر جب فلا ہے۔ کا دو کر جب ساتھ کی دو جب میا میت ہوگی جبار کی کے دو کر کے کہ کے کہ کے کہ کی کے کہ کی کے کو کے کو کر کے کو کے کی کے کہ کے کو کے کہ کے کی کے کہ کے کہ کی کے کی کے کو کے کو کے کہ کے کہ کے کو کے کو کے کو کے کو کی کی کے کو کی کو کے کا اساتھ کی کو کے کی کے کو کے کو کے کے کو کے کی کے کو کے کی کے کو کے کو کی کو کے کو کو کے کو کے کو کے کو کو کی کو کے کو کے کو کے کو کے کو کے کو کے کو کو کے کو کے کو کے کو کے

اس پراقدام مذکیا ہو۔

LA

سُوْرَة النور ٢٢ نیت سے عبادت ہوجاتا ہے اور اشتغال بالعیادت اپنی ذات میں عبادت ہے اِسلے اہم شافعی عبادت كم التخطوت كرين كوزكاح سيضنل قراريسة بين - اورامام عظم الوحنيفر كزريد زکاح میں عبادت کا پہلو بنسبت دومرے مباحات کے غالب ہے احاد بی^{ش صی}حہ میں امس کو شنت المرسلين اوراين سنت قرار دے كرتاكيدات بكثرت آئ بي - أن روايات حدميث كے بجوعه سے اتنا واضح طور برثابت ہوتا ہے کہ بیکاح عام مباحات کی طرح مثباح ہمیں بکیشنتِ انبیار ہے حس کی تاکیدات بھی حدیث میں آئ ہیں صرف نیت کی وجہ سے عبادت کی حیثیت سمیں نہیں بلکرشنت انبیار ہونے کی حیثیت سے بھی ہے۔ اگر کوئ کیے کہ اس طرح نو کھانا بینا سونا بھی شنت ا نبیار ہے کہ سب نے ایساکیا ہے مگر جواب واضح ہے کہ ان چیزوں پرسب انبیار کاعمل ہونے کے باوجود بیسی نے نہیں کہا ندکسی حدیث میں آباکہ کھانا بیٹااور سوٹا تنت ابنیارہے بلکہ اس کوعام انسانی عادت کے تا بع ا نبیار کاعمل قرار دیا ہے بخلاٹ رنکاح کے کہ اسکو حراحة مُسنّت المرسلين اور اپني مُسنّت فرمايا ہے ۔ تفسيرنظېري ميں اس موقع برايك معتدل بات بيهي سے كەچۇتحض حالت اعتداا میں ہو کہ نہ غلیہ شہوت سے بجیور ومغلوب ہوا در نہ زیکاح کرنے سے سی گنا ہ میں مطانے کا ایسے رکھٹا ہو۔ بیخص آگر بیکوس کرے کہ نکاح کرنے کے باوجود نیکاح اور اہل وعیال العُكْرُتِ ذَكرالتُمُ اور توجرالى التُرك ما نَع نهي ، وكَي تواسح لي زُكاح افضا اور الحارأمت كاعام حال مي تقا- اوراكراسكا اندازه يه به كدنكاح اورابل وعيال مح مشاغل سكو دین ترتی ، کثرتِ ذکر دغیرہ سے روکدیں گے تو بحالتِ اعتدال اُسے لئے عبادت کے لئے خلوت کر سنی ا در ترک زکاح افصل ہے۔ قران کریم کی بہت ی آبات اس کی تعلیق پر شاہد ہیں اُن میں ایک بہرے آبا تھا الَّذِينَ أَمَنُو الدِّتُلِهِ كُورً أَمْوَالْكُورُ وَلَا آوْلَادُ كُورُ عَنْ ذِكْرِلْ لِلْهِ اللَّيْ يَهِ ايت بِكَدانسان ك مال داولادأس كوامشرتعالى مع ذكرت غافل كردين كاسبب مذبنين جارسي - والشرسجار تعالى علم-وَالمَّلِيجِينَ مِنْ عِبَادِكُوْ وَإِمَّا إِلَيْ وَهُ العِن التِي عَلا مون اور منزون مي جوصالح بون أن كن بكاح كرا دياكرد - بيخطاب أن كي آقاؤن ادرمالكون كوب اس جكد صالحين كالفظاية تنوى معنة بين أياب يعنى انمين يتخف بكاح كى صلاحيت واستطاعت دكفتا بهوامكا فيكاح كرا دين كالمسكم اسكے آقا وں كو ديا كيا ہے مرا داس صلاحيت سے وہى ہے كہ بوى كے حقوق زوجيت اور نفقه وہم مجل اداكرنے كے قابل ہوں - اور اگر صالحين كومعرد ف بينى تيك لوگوں كے معنے ميں ليا جائے تو مير أكى تخصیص بالذکراس وجہسے ہوگی کہ زیجائے کا اصل مقصد حرام سے بچنے کا وہ صالحین ہی میں ہو مکتا ہے بهرحال این غلاموں اور کنیزوں میں جو صلاحیت نکاح کی رکھنے دالے ہوں آنے نکاح

معادف القرآن جسلة شم

فلاصه بيه ہے که مير کلم آفاؤں کو اس لئے دیا گیا کہ وہ اجازت نبکاح دینے میں کو ناہی نہ کریں خود سے دور میں ہے کہ میر کلم آفاؤں کو اس لئے دیا گیا کہ وہ اجازت نبکاح دینے میں کو ناہی نہ کریں خود

نكاح كرانا انكے ذمه واجب موسر صرورى نہيں - والشام

اِنْ فِيكُوْ اَخْدَى اَنْ اَلْكُونِهِ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ الل

حضرت ابن عباس فی فرمایکداس آیت بیس من تعالی نے سب کا نون کا کرنی ترعیب وی ہے۔ اسیس آذا دادر غلام سب کو داخل فرمایا ہے۔ ادر نوکاح کرنے پر اُن سے غناکا وحدہ فرمایا ہے۔ ادر نوکاح کرنے پر اُن سے غناکا وحدہ فرمایا ہے۔ ادا بن کمشیر) اور ابن ابی حاتم نے حضرت صدیق اکبر رہ سے نقل کیا ہے کہ اُنھوں نے مسلما نوں کو خطاب کر کے فرمایا کہ تم نوکا کی کہ کم کی تعمیل کر و توالٹر تعالی نے جو وعدہ غِث او عطافر مانے کا کیا ہے وہ پورا فر ما دیں گے بھر یہ آیت پڑھی ۔ اِن بیکو فو فو کا فقع آئے کیفینو کھو اللّٰ اُن اور حضرت عبد اللّٰہ بن سعو در ہ نے فرمایا کہ تم نو ا چاہتے ہوتو نکا ح کر لو کیو مکہ اللّٰہ تعالی اور حضرت عبد اللّٰہ بن سعو در ہ نے فرمایا کہ تم نوا چاہتے ہوتو نکا ح کر لو کیو مکہ اللّٰہ تعالی نظر مانیک و حدہ این کم نیر کے دواہ ابن جرید ذکر البغوی عن عمرہ نموہ - ابن کمٹیر کی تعنی اللہ میں ہے کہ مگر یہ یا در ہے کہ نکاح کر نے دالے کی نیت اپنی عفت کی حفاظت اور اللّٰہ تعالی کی طوف سے اسی حال میں ہے جبکہ نوکا ح کرنے دالے کی نیت اپنی عفت کی حفاظت اور است یہ بواور کھر اللّٰہ تعالی کی طوف سے اسی حال میں ہے جبکہ نوکا ح کرنے دالے کی نیت اپنی عفت کی حفاظت اور است یہ بواور کھر اللّٰہ تعالی کی طوف سے الفاظ ہیں ۔

سور من المناور ١٠٠٠ المناور ١١٠٠ المناور ١١٠ المناور ١١٠٠ المناور ١١٠٠ المناور ١١٠٠ المناور ١١٠٠ المناور ١١٠

وَلْيَسْتَعْفِفِ اللَّهُ بِنَى لَا يَجِى وُنَ فِكَاحًا حَنَى يُعْنِيَهُمُ اللَّهُ مِنْ فَصَيْلَةً ، مِينِ جولوگ مال واسباب مے لحاظ سے نکاح پر قدرت نہیں رکھتے اور نکاح کرنے میں پیخطرہ ہے کہ بیوی کے حقوق ادا مذکر نے کی وجہسے گنہ کا رہوجا میں گے اُن کو چاہیئے کہ عفت اور صبر کیساتھ اسکاا تظام کریں کہ الشرتعالی اجنے فضل سے اُن کوغنی کرتے ۔ اور اس صبر کے لئے آیک تدبیر بھی حدیث میں کریں کہ الشرتعالی اجنے فضل سے اُن کوغنی کرتے ۔ اور اس صبر کے لئے آیک تدبیر بھی حدیث میں بہت بھی اور اس صبر کے لئے آیک تدبیر بھی حدیث میں بہت بھی اور اس میں کہ تو الشرتعالی اپنے فضل میں گئی ہے کہ کشرت سے دوڑے رکھا کریں ۔ اگروہ ایساکریں گے تو الشرتعالی اپنے فضل سے اُن کو اٹنے مالی وسائل عطافر مائیں گے جن سے زبخاح پر قدرت ہوجائے ۔

رت القران ج

فلاصرتيسير

اور بھقادے ملوکوں میں سے (غلام ہوں یالونڈیاں) جو مکاتب ہونے کے خواہاں ہوں تو (بہترہے کہ) اُن کو مکاتب بنا دیا کرو اگرائی میں بہتری (کآتار) یا و اورالٹرکے (دیئے ہوئے) اس الیں کو اُن کو مکاتب بنا دیا کرو دے دکھا ہے (تاکہ جلدی آزاد ہوسکیں) اورا بنی محلوکہ) اورا بنی محلوکہ اورا بنی محلوکہ کو دے دکھا ہے (تاکہ جلدی آزاد ہوسکیں) اورا بنی محلوکہ کو نڈیوں کو ذیا کر فیصوص جب وہ یاکدامن رہنا چاہیں (اور کھاری یہ ذیل حرکت) محض اسلے کہ دنیوی زندگی کا کچھ فائدہ (سینی مال ہم کو حاصل ہوجائے اور جو تحض اُن کو جو درکر کے جانے کے بعد (اُن کے لئے) بختے والا جو محبور کئے جانے کے بعد (اُن کے لئے) بختے والا مہر مان ہے۔

معارف ومسائل

پھیلی آیت میں ممکوک غلاموں اور اور لوٹڈیوں کو اگر زیکاح کرنے کی صرورت ہوتو آقا وُں کو ہدایت کو گئی تھی کدان کو نیکاح کی اجازت دیدینا چاہئے اپنی مصلحت کے لئے اُن کے طبعی مصالح کومؤخر

معادت القرآن جسلدهم

دری بدائن کے لئے ہفضل اور مہترہے۔ خلاصا سہدایت کا اپنے عموک غلاموں او نڈیوں کیسا تھے مختالہ اور اُئی تو تحلیف سے بچانا ہے اُسکی مناسبت ہے آیت مذکورہ میں ایک دوسری ہدایت ایک آفاؤ کے لئے یہ دوسری ہدایت ایک آفاؤ کے یہ دوسری ہوایت ایک آفاؤ کے یہ دوسری ہی ہے کہ اگر یہ علوک غلام یا فرنڈی آفاؤں سے معاملہ مکا تبت کا کرنا چاہیں توان کی اس خواہش کو بُوراکر دینا مجمل کو گھام یا فرنگ کے اُنے اور عامر فرار دیا ہے تعنی آفا کے ذمہ واجب تو نہیں کہ اپنے معلوک کو مکات بنا دیے کی سے ماصل کرے آپ محلوک کو مکات بنا دیے کہ آپ بچھ پر کچھ رقم مقرر کر دیں کہ دہ رقم میں اپنی محنت وکسب سے حاصل کرے آپ کو اوا کر دوں تومیں آزا دم وجاؤں اور آفا اسکو قبول کرے ، یا معاملہ بوکس ہو کہ آفا چاہے کہ اُس کا افار موجول کے درمیان کا اختیار نہیں رہنا جسوقت بھی غلام مجید نہ رقم کا کراسکو دید بی خود کو درائوں ہو جائے گا۔ اور خلام اسکو قبول کرنے ۔ اگرا قا اور ملوک کے درمیان ایک اختیار نہیں رہنا جسوقت بھی غلام مجید نہ رقم کماکر اسکو دید بی خود بخود آزاد م وجائے گا۔

یہ رقم جوبدل کتا بات کہلاتی ہیں شریعت نے اس کی کوئ حدمقرز نہیں فرمائ خواہ غلام کی قیمت کی برابر ہویاأس سے كم يازيا دہ بس برفريقين ميں بات طے ہوجائے وہ بدل كتا بت تھرے كا-اينے مملوك غلام يا بوندى كوممكاتب بنا دينے كى ہدايت اوراسكوستحب اورافضل قرار دينا شريعيت لمام كے أن بى احكام ميں سے ہے جن سے معلوم ہوتا ہے كہ سٹر بعیت اسلام كا مقتصلی بيہ ہے جولوك ترعى حيثيت سے غلام بين ان كى آزادى كے زيادہ سے زياده داستے كھولے جائيں - تمام كفارات میں اُن کے آزاد کرنے کے احکام دیے گئے ہیں۔ ویسے بھی علام آزاد کرنے میں بہت بڑے تواب کا وعدہ ہے میکا تبت کا معاملہ بھی اسی کا ایک راستہ ہے اس لئے اُس کی ترغیب وی گئی-البتہ اُس كے مع مقرط يدلكائ كئى كران عَليدُتُهُ فِينْ فَي خَيْلًا بِينى مَكَاتِ بِنابَاجِ ورست بُوگاجبكه تم ان میں بہتری کے آثار دیکھو۔ حضرت عبدالشرین عمرہ اوراکشرحضرات ایمہ نے کسس بہتری ہے مراد قوت کسب بتلائی ہے تیسی حس تفصیب یہ دیکھوکہ اگر اس کو مکاتب بنا دیا تو کما کر معیندر قم جمع کردسیگانس کو مکات بناؤورند جواس قابل ند ہواس کومکات بنا دینے سے غلام كى محنت يميى منائع مولى آقا كانقصان تهي موكا - اورصاحب بدايد نے قرماياكه خيراور بهتري سے مراد اس جگہ یہ ہے کہ اسکے آزاد ہونے سے مسلما بؤں کوکسی نقصان کے پہنچنے کا خطہرہ نہو مشلأي كره و كافر بهوا ورا بين كافر بهائيول كى مد دكرتا بهو-ا ورضيح بات يدب كرنفظ خيراس علكم دونوں چیزوں پرحاوی ہے کہ غلام میں قوت کسب بھی ہوا دراُس کی آزادی سے سمانوں کو کوئ خطره می شرمد (مظیری)

دُاْ تُحْوَهُمْ وَمِنْ مَّالِ اللّهِ اللّهِ فَا مَنْ كُوْ ، سِينَ حَبَّنَ كُرو ان بِراس مال میں سے جوالنار فی منظمیں دیا ہے۔ یہ خطاب سیا نوں کوعموماً اور آ قائوں کوخصوصاً کیا گیا ہے کہ جب اس خیلام کی آزادی کیک مقینہ دقم جمع کرے آقا کو دینے پر موقو ف ہے تومسلما نوں کو چاہئے کہ اسمیں اُس کی مدد کریں خاکوۃ کامال بھی اُن کو دے سکتے ہیں۔ اور آ قائوں کواسکی ترغیب ہے کہ خود مجمی آئی مالی امراد کریں یا بدل کتا بت میں ہے کہ خود مجمی آئی مالی امراد کریں یا بدل کتا بت میں جو تم مسلم کی ترغیب ہے کہ خود مجمی آئی مالی امراد کریں یا بدل کتا بت میں ہے کہ مرل کتا بت میں جو تم مسلم کی اُن کی تعلق میں سے تہائی چو تھائی بااس سے کم حسیب متطاعت کم کردیا کرتے تھے۔ رمنظم میں کم مسیب متطاعت کم کردیا کرتے تھے۔ رمنظم می میں معاشیات کا ایک تعلق میں میں میں ہے جال میں بھیش گئی ہے آئی کی علی تحقیقات اور خود موکر کا دائرہ صرف معاشیات ہی میک محدود، موکر کہ گیا ہے اور اسمیں بحث و تحقیق کے دور نے ایک ایک معمولی مسمولی مسیب میں اُن معاشیات کا ہے۔ معمولی مسیل میں میں میں میں میا ہے۔ معمولی مسیل کا دور نور موسی معاشیات کا ہے۔ اس فنون میں میں سے میرافن معاشیات کا ہے۔ مسادی کو میں میں میں میں میں میا ہے۔ مساسم معمولی مسیل کی معاشیات کا ہے۔

اس معامله میں آجکل عقلار و نیا کے دونظر ئیے زیادہ معرد دن ومشہور ہیں اور دونوں ہی ہم مقادم ہیں اُن کے تصادم نے اقوام کو نیامیں تصادم اور جنگ وجدال کے ایسے درواز نے کسولد کیے ہیں رہاری ونیا امن واطمینان سے محروم ہوگئی۔

IA,

ہرچیز کو تمام انسا نوں میں مشترک ادرسب کواس سے فائدہ اُٹھانے کا کیساں حقدار قرار دیا ہے ادر مہل نظریۂ اشتر اکیت کی بنیاد یہی ہے مگر بھرجب دیکھاکہ بیزنا قابل علی تصوّر ہے اس برکوئ نظام بہیں چلایا جاسکتا تو بھر کھیا سے بیار کو ملکیت سے لئے مستنٹی بھی کردیا ہے۔

قران کریم نے ان دولوں بیہودہ نظریوں پرردکرے اُصول یہ بنایا کہ کا نمات کی ہرجیز دراصل اسٹر تعالیٰ کی بلک ہے جو اُن کا خالق ہے۔ پھرائس نے اپنے نصنل دکرم سے انسان کو ایک فاص قانون کے تحت ملکیت عطافرمائ ہے جن چیزوں کا اس قانون کی رُدے وہ مالک بنا دیا گیا ہے اسمیں دو کر و کے تحت ملکیت عطافرمائ ہے جن چیزوں کا اس قانون کی رُدے وہ مالک بنا دیا گیا ہے اسمیں دو کر و کے تحت کے بعد تھی اسکو آزاد ملکیت بنہیں دی کے تحت طرح چاہے کہا کے اور جس طرح چاہے خربے کرے ملکہ دو اور طرف ایک عا دلانہ اور کھیا نہ قانون کے حس طرح چاہے کہا کے اور جس طرح چاہے خربے کرے ملکہ دو اور اور طرف ایک عا دلانہ اور کھیا نہ قانون کے دولوں طرف ایک عادلانہ اور فلاں جائم اور فلاں جگہ خربے کرنا حلال ہے اور فلاں جائم اور نولوں کے حقوق تھی لگا دیتے ہیں جن کو اور کی کی دولوں کے حقوق تھی لگا دیتے ہیں جن کو اور کی کا دیک ہیں جن کو اور کوگوں کے حقوق تھی لگا دیتے ہیں جن کو اور کی کا دیک ہیں جن کو اور کوگوں کے حقوق تھی لگا دیتے ہیں جن کو اور کی کا دیتے ہیں جن کو اور کوگوں کے حقوق تھی لگا دیتے ہیں جن کو اور کی کا دیک ہیں جن کو دے دولوں کی دولوں کے حقوق تھی لگا دیتے ہیں جن کو اور کوگوں کے حقوق تھی لگا دیتے ہیں جن کو اور کی کا دائی کا دیتے ہیں جن کو دولوں کے حقوق تھی لگا دیتے ہیں جن کو اور کوگوں کے حقوق تھی لگا دیتے ہیں جن کو دولوں کی دولوں کی دولوں کی دولوں کی دولوں کے حقوق تھی لگا دیتے ہیں جن کو دولوں کی دولوں کے حقوق تھی دولوں کی دے دولوں کی دولوں کی دولوں کے حقوق تھی دولوں کی دولوں کی دولوں کو دولوں کی دولوں کو دولوں کی دولوں کی دولوں کی دولوں کو دولوں کی دولوں ک

آیتِ مذکورہ اگرچہ ایک اور صحون کے لئے آئی ہے سر اسکے صحن میں اسی اہم معاشی سکے بیندا صول بھی آگئے ہیں الفاظ آیت پر نظر کیجے وَ الشو هُمُونُ مِنْ اللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ فَاللّٰهِ اللّٰهِ فَاللّٰهِ اللّٰهِ فَاللّٰهِ اللّٰهِ فَاللّٰهِ اللّٰهِ فَاللّٰهِ اللّٰهِ اللّٰهِ فَاللّٰهِ فَاللّٰهِ وَاللّٰهِ اللّٰهِ فَاللّٰهِ اللّٰهِ فَاللّٰهِ فَاللّٰهِ اللّٰهِ فَاللّٰهِ اللّٰهِ فَاللّٰهِ فَاللّٰهِ وَاللّٰهِ اللّٰهِ فَاللّٰهِ فَاللّٰهِ فَاللّٰهِ فَاللّٰهِ اللّٰهِ فَاللّٰهِ فَاللّٰهُ اللّٰهُ فَاللّٰهِ فَاللّٰهِ فَاللّٰهِ فَاللّٰهِ فَاللّٰهِ فَاللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ فَاللّٰهِ فَاللّٰهِ فَاللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ فَاللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰہُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰہُ اللّٰہُ اللّٰہُ اللّٰہُ اللّٰہُ الللّٰ اللّٰہُ الللّٰہُ اللّٰہُ اللّٰہُ اللّٰہُ الللّٰہُ اللّٰہُ الللّٰہُ اللّٰہُ الللّٰہُ اللّٰہُ الللّٰہُ اللّٰہُ الللّٰہُ اللّٰہُ اللّٰہُ اللّٰہُ اللّٰہُ اللّٰہُ اللّٰہُ اللّٰہُ اللّٰہُ ال

دوسراتکم اس آبیت میں ایک جاہمیت کی دسم مٹانے اور زنا و نواحش کے انسدا دکے گئے یہ دیا گیا۔ ہے دَلا ٹٹکڑھٹوا فَتَبَانِ کُوْ عَلَى الْبِخَاءِ ، بینی این نوٹدیوں کو اس برنجبور مذکرہ کہ وہ زناکاری کے دریعہ مال کم کرتھیں دیا کریں ۔ جاہلیت میں بہت سے توگ نوٹریوں کو اس کام کے لئے استعمال کرتے تھے۔ اسلام نے جب زنا پرسخت سنزائیں جاری کیں ، آزادا درغلام

معادت القرآن جسلاستم

سب کواسکایا بندگیا تو صروری تھا کہ جاہلیت کی اس دیم کو مٹانے کے لئے خاص احکام دے۔

راف اس کو کی فقت گئا، بعین جبکہ وہ تو ٹہ یاں زناسے بچنے اور یا کدامن دہنے کاادادہ کریں تو
مقادااُن کو مجبود کرتا ہڑی ہے حیائی اور ہے غیرتی کی بات ہے ۔ یہ الفاظ اگر جیب ورت سنرطائے ہیں
مگر باجاع اُمت درحقیقت مرادان سے سنرط نہیں کہ فوٹھیاں زناسے بخیا چاہیں تو اُن کو زنا پر مجبولہ
میں جیاا ور پاکدامنی زماخہ جا ہمیت میں نابود تھی ۔ اسلام سے احکام سے بعداُ تھوں نے تو ہمی ۔ اُسکے
میں جیاا ور پاکدامنی زماخہ جا ہمیت میں نابود تھی ۔ اسلام سے احکام سے بعداُ تھوں نے تو ہمی ۔ اُسکے
میں جیاا ور پاکدامنی زماخہ جا ہمیت میں نابود تھی ۔ اسلام سے احکام سے بعداُ تھوں نے تو ہمی ہور نہ
میں جیاا ور پاکدامنی زماخہ جا ہمیں اور تم اُسٹینے کرنا ہے کہ بڑی ہے نیم تی اور ہم مجبور نہ
کرو۔ اسمیں اسکے آقا وُں کو زجر و تعنیہ اور تشینے کرنا ہے کہ بڑی ہے غیرتی اور ہے جائ کی باشے
کہ فوٹریاں تو پاک ہے گا اوا دہ کریں اور تم اُسٹیس زنا پر مجبور کرو۔

1000

تاكه بدله دے أن كو الشرا كي بہتركا موں كا یں آلٹ جائیں گے ب ركاك اينا يات كلا المايير الدهيرے يين ايک يار اورہم نے رہم توگوں کی ہدایت کے واسطے اس سورت میں یا قرائن میں رسول مشرصالے مشرعلیم كة دابيرسى) مقاليه ياس كفك كفك احكام (علميم عليه) بصيح بين اورجولوك تم سي يليكريه ہیں ان کی ریا اُن جیسے اوگوں کی) میض حکایات اور (خداسے) ڈرنیوالوں کے لئے نصیحت کی ماتين (سيجي بن) الشرتعالي نور (بدايت) دين والاسي اسمانون دمين رسن والون) كااورزمين رمیں بہتے والوں کا ریعنی اہل آسمان وزمین میں جن کو ہدایت ہوئ ہے ان سب کوالشری نے ہدا۔

دی ہے اور مُراد اسمان ورمین سے کل عالم ہے ہیں جو مخلوقات اسمان و زمین سے باہرہے وہ جی خل

مولئ جلیے حاملان عرش) اُس کے بور (ہدایت) کی حالت عجبیالیں ہے جیسے دفرض کرد) ایک ق

(اور)أس مين ايك يراغ (ركها) با اور) وه يراغ (خود طاق مين نبين ركها بلكم) ايك قندين يا (ادر تنديل طاق مين ركها ساور) وه تنديل ايسا (صاف شفات جوسياكه ايم حكداد ہو (ادر) دہ جسراغ ایک نہایت مفید درخت (کے تیل) سے روش کیاجاتا ہے جو زیون کادرخت سے جورکسی آڑے) نہ یورب رئے ہادرنہ رکسی آڑے) یکیم رُخ ہے۔ د تعینی نه اس کی جانب سترقی میں سی درخت یا پہاڑی آڈ ہے کہ مشروع دن میں اُس پر د حوہ نہ ير اورنداس كى جانب غربي ميس كوى آر يهار الم كر آخر دن ميس أس ير دصوب مريط عبار كفا ميدان ميں ہے جہاں تمام دن وحوب رہتی ہے ایسے درخت کا دوغن بہت لطیف اورصاف اور روش ہوتا ہے اور) اسكاتيل (اسقدرصاف اورسلكنے والا ہے كه) اگراس كوا كر بجى ناحيوے تاہم ایسامعسادم ہوتا ہے کہ خود بخود جل اُسطے گا (اورجب آگ بھی لگ گئی تب تنی نورٌ علیٰ نُورِج ر معین ایک تواسمیں خود قابلیت تؤرکی اعلی درجر کی تقی بھراً دیرے فاعل بینی آگ بیسا تھا جتماع موكياا در كاجتماع بهي ان كيفيات كيساته كرجراغ قنديل مين ركها موس سے بالمشاہدہ جيك بره جاتی ہے اور میمروہ ایسے طاق میں رکھا ہوجوا یک طرف سے بند ہوا لیسے موقع پر شعاعیر ا یک حبکہ سمٹ کرمیرت تیزر وشتی موتی ہے اور پیرتیل بھی زیتون کا جوصات روشنی اور دھوا م ہونے میں شہورہے تو اسقدر تیزروشنی ہو گی جیسے بہت ی روشدنیاں جمع ہوگئی ہوں کسس کو وُدُعَكَىٰ بَوْرِ فِرمایا- پهان ثنال حتم ہوگئی۔ بیں اس طبع مُومن کے قلب میں انٹر تعالیٰ جب بذیہ ہدایت ڈالتا ہے توروز بروز اس کا نشراح قبول حق کے لئے بڑھتا چلاجاتا ہے اور ہروفت حکا يرعمل كرف كصلة تيار رمهتا ہے - كو بالفعل تعض احكام كاعلم تيمي مذہوا ہوكيونكم تدريجا حال ہوتا ہے جیسے ده دوغن زینون آگ لگنے سے بہلے ی دوشنی کے لئے مستعد تھا، موس مجمع علم حکام سے پہلے ہی اُن پڑعل کے لئے مستعدہ و ما ہے اورجب اُس کوعلم حاصل ہوتا ہے تو نور عل بعنی عل کے یختراداده کیساتھ بورعلم تھی مل جاتا ہے جس سے دہ فور اُنہی قبول کرلیتا ہے ہیں عمل وعلم حب مع ہور مؤلظ بورصا دق آجامًا با وريهنين موتاكه علم احكام ك بعد اسكوكيمة تأمل و تردّد موكه اكر موا فق نفس کے پایا تو قبول کرلیا در مذر دکردیا۔ اسی انشراح اور بذرکو دوسری آبیت میں ہے طرح بيان فرمايا ب أَفَعَنُ سَنَحَ اللهُ صَلْى كَ لِلْهِ سُلَاهِ فَهُوْعَكِل مُورِاتِن تَيْنِ ، تعيى صِنْ عَف كاسيب التنزف اسلام كے لئے كھولديا تو وہ اپنے رب كيطرف سے ايك تؤرير ہوتا ہے اور ايك جگه فرماياہے فَنْنَ يُدِدِ اللهُ أَنُ يَهُ لِي يَهُ يَشَرَحُ صَلْ لَكُ لِلْإِسْلَامِ - غُرَضَ وَربدايت الهيرى يرشال ب ادر)الشرتعالی این (اس) وز (برایت) تک جس کوچاستا ہے را و دنیا ہے (اور بہنیا دیتا ہے) اور د بدایت کی جوید شال دی گئی اسی طرح قرائ میں بہت م مثالیں بیان کی گئی ہیں تو اس معارف القرآن جسكترشم

سے بھی بوگوں کی ہدایت ہی مقصود ہے اس لئے) الشرتعالیٰ بوگوں (کی ہدایت) کے لئے (بیر) تمالی بیان فرماتا ہے د تاکہ مضامین عقلبے محسوس چیزوں کی طرح قریب الی انفہم ہوجا ویں) اورالشرتعاليٰ برجيزكو خوب جانع والاب واسلئ جومثال افاده قصود كيك كافي و اور حبي اغراص مثال مے بور مے مرعی ہوں اُسی کو اختیار کرتا ہے مطلب یہ کہ اسٹر تعالی مثالیں بیان کرتا ہے اور وہ مثال نهایت مناسب ہوتی ہے تاکہ توب ہدایت ہو-آ گے اہل ہدایت کا حال بیان فراتے بين كه وه اليه كوون مين (جارعبادت كرتے) بين فن كانسبت الشرتعاني في حكم ديا ہے ك ان كاا دب كياجا و سے اور اُن ميں الله كا نام ليا جا دے (مراد اُن كھروں سے بحديں ہيں اور الكا ا دب بير كه أن مين جَرْبُ و حالفن داخل نه مول اورانمين كوي تحبس چيز داخل نه كيجا فيه ، و مال غل نه مچایا جا دے۔ دُنیا کے کام اور ہاتیں کرنے کے لئے وہاں نہ ہیتیںں۔ بدبو کی چیز کھاکر آئیں نہ جا دیں وغیرفه کاش، غرض) اُن دُسجدوں) میں ایسے لوگ صبح وشام النٹر کی یا کی د نما زوں میں) بان تے ہیں جن کو انٹرکی یا د (بعینی بحاآوری احکام) سے (جبوقت مے متعلق چوکم ہو) اور (بالحضوص غاز بڑھنے سے اور زکوۃ دینے سے زکہ یہ احکام فرعیمیں سب سے اسم میں) ندخر یوغفلت میں ڈا لئے یاتی ہے اور مذفروخت (اور باوجود اطاعت وعبادت کے اُن کی حشیت کا بیرحال ہے کہ) وہ الیے دن دی دارد کیر) سے ڈرتے رہتے ہیں جس میں بہت سے دل اور آ عصیں اُلط جاویں گی رجد روسرى آيت مين بي يَوْتُون مَا التَّوَاقِ قَلْوَبُهُمُ وَجِلَةُ الْهُمُواكِ دَيْمُ مُرَاجِعُونَ ، لِين يه لوك لشر لی راہ میں خرج کرتے ہیں اور اسے باوجود اُن کے دل تیامت کی بازیرس سے ڈر لے دہتے ہیں اور مقصود اس ابل اور بدایت سے اوصات واعمال کا بیان فسرمانا ہے اور آگے ان کے انجام کا ذکرہے كه) انجيام (ان توكون كا) بيم توكاكه الشرتعالي انْ كوانَ كه اعمال كابهت بي اجِها بدله دبيجا ديين جنت) اور (علاوه جزاکے) ان کوایئے فضل سے اور تھی زیادہ دیگا (جزا وہ جبر کا وعرف صل مذكوريد ادرزيا ده ده جيكامفصل دعده نهين كونجل عنوالؤن سيروابو ، اورالشرتعالي جس چاہے بیٹار (معنی بہت کثرت سے) دے دیتا ہے دیس ان توگوں کوجنت بیل معطرے بیٹمار ديگا-يها تنك تو بدايت ادرابل بدايت كابيان تقاآك ضلالت ادرابل صلالت كاذكرب یعنی) اور چولوگ کافر (اور اہل صلال اور نور ہدایت سے دور) ہیں اُن کے اعمال (بوجہ کافروں کی دو میں ہونے کے دو مثالوں کے مشابریں کیو مکہ ایک میں تو وہ کھا رہیں جوا خرت اور قبیا مت کے قائل ہیں اور اپینے بیض اعمال پر معینی جو اُن کے گما ن کے مطابق کارِ ٹُواب اور حسنات ہیں فوقع جزا آخرت كى دكھتے ہيں - اور دوسرى تسم وہ كفار ہيں جوآخرت اور قيامت كے منكر ہيں تيسم اقل كفا كاعال تو) اليه بين عبيه ايك جيس ميدان مين جيكتا مواريت كربياسا (آدمى)أسكو (دورس)

یا نی خیال کرتا ہے دادراُس کی طرف دوڑتا ہے) بہا تنک کہ جب اسکے یاس آیا تو اُسکو دجو تھے رکھاتھا) کھے جی نہ یاما اور (غایت بیاس ، تھے منہایت یاس سے جوصیمانی اور روحانی صدمہ مہیجا اوراس سے ترہ بے ترہ بے کرمرگیا تو بوں کہنا جائے کہ بجلے یانی کے) قضارالہی تعنی موت کویا سوانشرتعالی نے اس دمی عمر) کا حساب اس توبرا برسرابر محیکا دیا (اور بیباق کر دیا بینی عمر کا خاتمه حردیا) اور انشر تعالیٰ د جس چیز کی میعاد آجاتی ہے اسکا) دم بھرمیں صاب د فیصل) کردتیا ا د اُس کو کچھ بجھٹرا نہیں کرنایٹ یا کہ دیر لگے اور میعاد سے کچھ کھی توقف وہ جادے بس بہضمون ايسا ہے جيسا دوسري حكمہ ارشا دہے إِنَّ اَجَلَ اللهِ إِذَا جَآ أَءُلَا بِوُحَوِّ وَوَلَهُ لَنُ يُتُوَجِّوُلِللهُ نَفُسٌ إِذَا جَنَاءًا جَلَفًا - حاصل اس مثال كايه مواكه جيه بياسا ريت كوظا هري جيك سهياني مجھ اسى طرح بيركا فراين اعمال كوظا هري صورت سيمقبول اور تتمزنانع آخرت سجها اورحبسياوه پاني بي تحظیج بیراعمال شرط قبول تعینی ایمان نه بهونے کے سبب مقبول اور نافع بہیں ہیں ا درجب وہاں جاکہ اس بیاسے کو حقیقت معلوم ہوئ اسی طرح اس کو آخرت میں بینجی حقیقت معلوم ہوگی اور حس طرح یہ پیاسااین توقع کےغلط ہونے سے حسرت واقسوس میں خائب ہوکرمرگیا اسی طرح بیرکا فربھی اپنی توقع کے غلط ہونے پراسو قت حسرت میں اور ہلاکتِ ابدی بعنی عقاب جہنم میں مبتلا ہوگا۔ ایک صبم کی مثال تو یہ موئ - آگے دوسری قسم کے کا فروں کے اعمال کی مثال ہے بعنی یادہ (اعمال باعتبار خصوصیت سکرین قیامت کے) ایسے ہیں جیسے بڑے کہرے مندر کے اندر ونی اندھیرے (جنکا ایک سبب دریا ہرای ہے اور مھریہ) کہ اس دسمندر کے الی طعی کو ایک بڑی موج نے ڈھا تک لیا ہو (مھروہ موج مجی الیلی مہیں بلکہ) اُس (موج) کے اویر دوسری موج (ہو پھر) اُس کے اویر باول (ہوجیں سے ستارہ وغیرہ کی روشی بھی نہ بہنچتی ہوغرض) او پر تلے بہت سے اندھیرے (ہی اندھیر ہے) ہیں کہ اگردایسی حالت میں کوئ آدمی دریا کی شیں) اینا ہاتھ لکا لے (اوراس کو دیکھنا جاہے) تو (دیکھنا تودركنار) ديكيف كااحمال مينين (اس مثال كاحاصل يهب كما يسكا فرجو آخرت اورقيامت مے اور اسمیں جزا، وسزای کے منکر ہیں اُن کے یاس دہی نور بھی نہیں جینے مم اول کے کافروں کے ياس ايك يمي اورخيالي بور تفا-كيو بكه أنهول نے بعض نيك عال اين آخرت كاسامان تجهائت مكر وه مشرط ايمان مذرونے محسب حقيقى بذر ندتھا ايك ہمى بور تھا۔ يہ لوگ جو منكرا خرت ہيں انھوں نے اینے اعتقاد وخیال کے مطابق بھی کوئ کام آخرت کے لئے کیا ہی نہیں جس کے اور کاان کو وہم و خيال برو - غرض اي ياس ظلمت بي ظلمت من طلمت من اوركا ديم وخيال جي نهيس وسكتا جياكه تدورياكي مثال ميں ہے۔ اور نظر نہ آنے ميں ہاتھ كى تحفيص شايدا سلتے كدانساني اعضار وجوارح بيں ہاتھ زديك ا ہے پھراس کو جینا نزدیک کرنا جا ہو نزدیک آجاتا ہے اور جب ہاتھ ہی نظر نہ آیا تو دوسرے اعضاء المرام المورة النور ١٢٣٠

معارف القرآن جسكنه

کامعالمہ ظاہری اور دائے ان کفار کے اندھیرے میں ہونے کی دجہ یہ بیان فرمائ ہے کہ بس کو الشر ہی افزر (ہدایت) نہ دے اُس کو رکہیں سے بی بور نہیں دمیشر آسکتا)

معارف ومسائل

آیتِ مذکورہ کو اہلِ علم آیتِ نور لکھتے ہیں کیو کا سمیں نورِ ایمان اور ظلمتِ کفر کو بڑی تفصیلی مثال سے جھایا گیاہے ۔

بوركى تعربيت المام غزالي في بيفرماى الظاهر بنفسه والمظهر لغيرى العني خودايني ذات سے ظاہراور روش ہو اور دوسری چیزوں کوظاہر د روش کرنے والا ہو۔ اور تفسیر طہری ہیں ہے كەنۇردىيال أس كىيفىيت كانام ہے جس كوانسان كى قوتتِ باصرە يہلے ادلاك كرتى ہے اور كھير أسكے ذرابعدان تمام چيزوں كا دراك كرتى ہے جو آئكھسے ديمي جاتى بي جيے آفتاب ادر چاندی شعاعیں اُن کے مقابل اجسام کثیفہ پر پڑ کرا قال اُس چیز کو روش کردیتی ہیں بھراُس سے شعایی منعكس جوكر دومسرى چيزوں كوروش كرتى بين - اس مصعليم جواكه نفظ بؤر كاايتے لغوى اور عرفى معنے محاعتبارسے حق تعالی جل شان کی ذات پراطلاق نہیں ہوسکتا کیو بکہ وہ ہم اور شیمانیات سب سے بری اور ورار الوری ہے۔ اسلنے آبیتِ مذکورہ میں جوحق تعالی کے لئے نفظ اور کا اطلا مواب استح معنے ما تفاق ائر تفسير منور تعنى روش كرنے دالے كے ہيں يا بھر صيغة مثبالغه كى طرح صاحب تؤركو نورس تعبير كردياكيا جيسه صاحب كرم كوكرم اورصاحب عدل كوعدل كهدياجآناج اور معنے آتیت کے وہ ہی جو خلاصۂ تفسیر میں آپ بڑھ چے ہیں کہ اللہ تعالی اور مجھے والے ہیں اسمان دزمین کو اوراسیس بسنے والی سب مخلوق کو- اور مراد اس بؤرسے نور ہرایت ہے- ابن کشیر رم فيحضرت ابن عباس ساسى تفسيرس نقل كيام الله هادى اهل المتملوت والارف يدأس كى ايك عجيب مثال م جياكه ابن جرر في حضرت أبئ بن كوي ساس كى تفسير نقل كياب هوالمؤص الذى جعل لله الدعان والقرأن في صديع فضرب الله مثله فقال الله مورالسماؤت والرحف في أبنوى نفس تُم ذِكم نورللون فقال مثل نورمن أمن به فكان أيّ بن كعب يقل هامثل نورمن اس به (ابن كثير)

نعینی بیر مثنال اُس مؤن کی ہے جس کے دل میں اسٹر تعالی نے ایمان اور قراآن کا فور ہدایت ڈالدیا ہے اس آیت میں پہلے تو الشر تعالے نے خود اپنے بذر کا ذکر فرمایا اللّٰ اُنوُرُالسَّمَاوِیَّ وَالاَحْنِی مِی بِحَرِقابِ اُنون کے بور کا ذکر فرما یا مثل بوری -اوراس آیت کی قرارت بھی حضرت ابی ابھی ب

سُورة التورس: ی مشل بوری مے بجائے مشل بور من امن بہ کی ہے اور سعیدین جُبُرُرہ نے ہی قرارت اورایہ کا پہی مقیرہ مصرت این عباس سے می روایت کیا ہے۔ ابن کشرنے بید دوایات نقل کرنے کے ہے کہ مَثُلُ بُورِج کی ضمیر کے متعلق ائد تعنبیرے دو قول ہیں-ایک یہ کہ جنمیرالطرتعالیٰ کی طون راجع ہے اور معنی آیت کے یہ ہیں کہ اللہ کا لؤر ہدایت جو مُؤمن کے قلب میں قطرۃ رکھا گیا ہے اس كى مثال يه به كوشكوة الم يه قول حضرت ابن عباس كا به دوسرا قول يه به كه يتيمه بى مؤمن كيطرت راجع بوجس برسياق كلام دلالت كرد باب-اس كنة حاصل اس شال كاييج كدمومن كاسيبندايك طاق كى مثال ہے اسميں اسكا دل ايك قنديل كى مثال ہے أمين بنهايت شفات روغین زیتون فطری لؤر بهابیت کی مثنال ہے جومُومن کی فطرت میں و دبیت رکھا گیا ہے۔ جسكا خاصة خود مخود مجود مجون كاب بيمرس طرح ردغن زيتون آك كے شعله سے روش و كرد درو كوروش كرنے لكمة ب اسى طبح فطرى نور بدايت جو فلب مُؤن ميں ركھا كيا ہے جب جي اللي اور اللي كے ساتھ اُسكا اتصال ہوجاتا ہے تو روشن ہوكرعا كم كوروش كرنے لگتا ہے اطور حضرات صحابہ و تأبعين نے جواس مثال كوقلب مُون كيسا تھ مخصوص فرما يا وہ بى غالباً اسلے ہے كہ فائدہ اس بور كا صرف مُومن ہی اُٹھانا ہے۔ در مزوہ فطری نور ہدایت جوابتدا رتخلیق کے وقت انسان کے قلب ہی رکھا جاآ او ده منومن کے ساتھ ہی مخصوص بہنیں ملکہ ہرانسان کی قطرت ادر جبات میں وہ لذر بدایت رکھا جاتا اسى كايدا تردنياكى ہرقوم ہرخطہ ہرمد مدب في مشرب كے توكوں ميں مشاہده كياجاتا ہے كه وہ خداكے وجود كوادرأس كى عظيم قدرت كو فطرة ما نتاب اس كى طرف رجوع كرتا ہے اس كے تصوّرا درامير میں خوا کسیمی ہی غلطیاں کرتا ہو مگر النٹر تعالیٰ کے نفس وجود کا ہرانسان فطرۃ قائل ہوتا ہے . بجز حید ما دہ پرست افراد کے جن کی فطرت سے ہوگئی ہے کہ دہ فداہی کے وجود کے منکر ہیں۔ ايك يميح حدميث سے اس عموم كى تائيد ہونى ہے جبيں يہ ارشاد ہے گئا مُولود يُولوكي الفيطري يعنى برميدا بوف والابحير فطرت يرسيدا بوتاب بصراسح مال بايد اسكو فطرت مے تقاضوں سے ہٹا کرغلط داستوں پر ڈالدیتے ہیں ۔ اس فطرت سے مراد ہرایت ایمان ہے۔ یہ ہرایت ایمان اوراسکا ورہرانسان کی بیدائش کے وقت اسیں رکھا جاتا ہے اوراسی نور ہدا بیت کی وجہ سے اُسمیں قبول حق کی صلاحیت ہوتی ہے۔جب ا نبیارا درا تھے نا بُول کے ذربيروي الني كاعلم ال كويني ياسي توده اسكوبهولت قبول كريسة بي بجزال ممسوخ الفطر توكوں محضوں نے أس فطرى اور كوابنى حركتوں سے مثابى دالا ہے - شايدى وجر ہے كەس أتيت كم مشرفع مين توعطام بوركوعام بيان فرمايا به جوتما كأسمان دالون اور زمين والون كوشا مل مُون كافرى بھى كوى تحقيص نہيں - اور آخر آيت ميں يہ فرمايا جَيْدُى لَدُن لِيُورِجْ عَن يَنْ اعْمِ

سُورَةِ النّور ١٠٠٠ : ٢٠٠ عارف القرآن جس يعنى الترتعالى اين نوركيطرف جس كوجا متا ب بدايت كرديبا ب بهان مشيت اللي كي قير اُس بؤر فطرت کے لئے نہیں جو ہرانسان میں رکھاہے بلکہ بؤر قرآن کے لئے ہے جو ہر شخص حاصل نہیں ہوتا بجز اُس خوش نصیب مے جس کوالٹر تعالیٰ کیطرف سے توفیق نصیب ہو۔ ور مزالہ ى كوشش تھى بلاتوقىق اللى ئېجار ملكى بعض ا د فات مضر بھى يراجا تى ہے ۔ اذالوبكين عون من الله للفتى بيد فاقل ما يجنى علي اجتهادك مینی اگراه شرکی طرف سے بندہ کی مدد مذہو تو اُس کی کوشش ہی اُس کوالٹ نقصان بینجا دیتی۔ بذرنبی رم سلی الشرعکتیلم اورامام بغوی نے ایک روایت نقل کی ہے کہ حضرت ابن عباس رمز نے عب احبار سے يوجها كداس آيت كى تفسيرس آب كيا كہتے ہيں مَثَلُ تَوْرِةٍ كَيِشْكُونَةِ الآية لعب احبار جوتورات والجبل كريرك عالم مسلمان تقع أنهون نے فرما ياكه بيرمثال رسول الله صلے اللہ علیہ مے قلب مبارک کی بیان کی گئے ہے۔مشکونی آبکا سینہ اور منجابجہ (قندیل)آپ کا قلب مبادك، اورمصيك (چراغ) بتوت ب- اوراس نور سوت كا فاصرير ب كرنيوت كا فها واعلان سے پہلے ہی اسمیں توگوں کے لئے روشی کاسامان ہے پھردی اللی اور اسے اعلان کااس ساتھ انصال موجاتا ہے توبیا بیانور ہوتا ہے کہسارے عالم کورٹین کرنے لگتاہے۔ نى كرى صلى الشرعكتيه لم ك اللهار نبوت وبعث بلكه آپ كى بيدائش سے جى بہلے جو بہت _ عجيب غرب واقعات عالم مين ليهيش آئے جوآپ كي نبوت كي بشارت دينے والے تقع حبكا صطلاً محدثين ميں ادباصات كہاجا يا ہے۔ كيونكه مجزات كالفظ تواس ممك أن دافعات كے لئے مفتوں كم جودعوائ نبوت كى تقديق كے لئے الله تعالى كيطرف سكسى يغيركے ہا تقرير جارى كئے جاتے ہيں۔ ادردعوائ نبوت سے بہلےجوات مے واقعات دنیاس ظاہروں ان کوار ہاصات کا نام دیا جاتا ہ اس طرح مح بهت سے واقعات عجبیہ جیج روایات سے تابت ہی جن کوشیخ جلال الدین موطی رحمایشر نے خصار ایس گاری میں اور ابنیم نے کا لائل لنبتوج میں اور دوسر سے علمار نے بھی اپنی متقل تنابوں میں جمع کر دیا ہے۔اسکا ایک کا فی حصہ اس جگہ تفسیر ظہری میں بھی نقل کر دیا ہے۔ روغن زيون كى يركات منتجوة ما بركة وينبون واس عربيون اوراس ورخت كالمبار اور نا فع ومفيدم ونا ثابت مونا ہے۔ علمار نے فرما یا ہے کہ اللہ تعالی نے اسمیں بیشمار مٹ افع اور فوائدر کھیں۔ اس کوچراغوں میں روشنی کے لئے بھی استعال کیا جاتا ہے ۔ اور اس کی روشنی ہر تیل کی دوشن سے زیادہ صاف شفاف ہوتی ہے اس کوروٹی کے ساتھ سالن کی جگہ بھی استعمال كياجاتا ہے۔ اس محصل كو بطور تفكر كے كھايا بھى جاتا ہے اور يہ ايساتيل ہے جس كے بكا لينے كيائے كى مشين يا چرخى دغيره كى صرورت نهيں خود بخود اسے بيل سے بيل آيا ہے۔ رسول السر<u>صلا</u> السّرعليم

معارف القرآن جسلة

نے فرمایا کر روعن زمیون کو کھا و بھی اور برن برمالسش بھی کرو کیو تکہ بینجرہ مبارکہ ہے (دواہ ابنوی والتررزي عن تمرون مرفوعاً -مظهري)

فَيْ يُعُونِ آذِنَ اللهُ أَنْ تُوقَعَ وَيُنْ كُرُ فِيكَ النَّمُ لَا يُسَرِّحُ لَهُ فِيكَا بِالْفُ لُ وَ وَ الْأَصَاكِ الآية ، سابقه آيت ميس حق تعالى نے قلب تموین ميں اپنا بؤر ہدايت ڈالد سے کی ايک ص مثال بیان فرمای محتی اور آخرسی بیرفرمایا تھاکہ اس بورسے فائدہ وہ ہی لوگ اُٹھاتے ہیں جنکوالٹر چاہتاا در توفیق دیتاہے۔ اس آیت میں ایسے مومنین کا مستقرا در محل بیان فرمایا گیا کہ ایسے موسنین کااصل مقام وستقرجهان ده اکثر اوقات خصوصاً یا نج نما زون کے اوقات میں دیکھے جاتے ہیں وہ بیوت بعنی مکانات ہیں جن کے لئے اللہ تعالیٰ کا حکم یہ ہے کہ اُن کو مبندو بالارکھا جائے ادر اُن میں انٹر کا نام ذکر کیا جائے اور ان بیوت و مکانات کی شان یہ ہے کہ اُن میں انٹر کے نام کی سبیع و تقدیس سع شام بعنی تمام او قات میں ایسے توک کرتے رہتے ہیں جن کی خاص صفات - 4 آگاتا - - S

اس تقرير كى بنار اسير ہے كە كوى تركىيەسى فى بېيۇت كانعلق آيت كے جملە تھيلى كاللەم كېيۇي كما يتفاد من ابن كثير وغيره كالمسري البض مصرات في اسكا تعلق لفظ يُسِتح عدد مے ما تھ کیا ہے جس پر آگے آنیوالا نفظ بیستجے دلالت کرتا ہے بیگر پہلاا حتمال نسقی کلام کے عتبار سے بہتر معلوم ہوتا ہے اور مطلب آیت کا یہ وگا کہ مثال سابق میں ایٹر نتانی کے جس اور ہدایت کا ذكر واب أس كے ملنے كى جكروہ بوت و مكانات بيں جہاں سے شام الشركانام لياجا تاہے -جهد دمفسری کے تزدیک ان بوت سے قرا د مساجد ہیں -

مساجدان والتركي كقربين أعي تغطيم داجت إ قرطبى ني اسي كوترج دى اور التدلال مين حفرت الساع ى بەحدىث يېشى كى كەرسىدل المارسىك المارىكى مايا .

من احت الله عن وجل فليحتنى ومن ﴿ جَرْحُفُ اللهُ تعالى المعتب ركهنا عِلْ الماسكوج إليّها بحد سے بحبت كرے - ادر جو مجھ سے بحبت ركھنا جائے أسكو جائے کے میرے صحابہ سے بحیث کرہے۔ ادر جو صحابہ سے محبت ركمناچل أسكوچا يك كرران سع بحت كرے - ادر وركان سے محبت رکھنا جاہے اسکوچاہئے کہ مسجدوں سے مجت کے كيونكه وه الله كري ، الله نان كانتظيم كاحكم يا ب ادر ان میں برکت رکھی ہے دہ جی یا برکت ہیں ادر ان کے رہے والے بھی بابرکت۔ وہ بھی الترکی حفاظت یں ہیں

احتنى فليحت اصحابى ومن الحصابي فليحت القرأن ومن احب القرأن فليحت المساجد فانهاافنية الله اذن الله فى رفعها وبارك فيها ميمونة ميمون اهلها عفوظة محقوظاهاهم في صلا تقمر والله عن وجل في حوا تجهم

همرفى المساحد والله من ومماثهم (قرطبی)

ا در اُن کے رہنے والے بھی حفاظت میں ۔ وہ توک اپنی نما زوں میں شغول ہوتے ہیں الشرتعالیٰ آن کے کام بناتے ادرحاجتی بدری کرتے ہیں دہ سجددن س فی توانسرات انے سیجے آن کی چیزوں کی حفاظت کرتے ہیں (قرطبی)

فع ساجد كم معن الذي الله ان الله ان الله الذي الذي الذي الذي المنتق المعنى اجازت دینے کے ہیں اور سرفع ، رفع سے ستی ہے جس کے معنے ملیند کرنے اور تعظیم کرنے کے ہیں معنی آیت مے سیبی کدانٹر تعالی نے اجازت دی ہے مجدوں کو بلند کرنے کی - اجازت دینے سے اوار اس کا کم کرنا ہے اور بلندکرنے سے مرًا واُن کی تعظیم کرنا - حضرت ابن عباسُ نے فرمایا کہ بلندکرنے کے لم میں التیر تعالیٰ نے سجدول میں تغو کام کرنے اور لغو کلام کرنیے منع فر مایا ہے (ابن کشیر) عكرمة مجالهوا مرتفنسير ني فرما ياكه سرخع سے مرا دسجد كا بنا نا ہے جيسے بنا ركعبہ كے سنا قران مين آيا ہے قداد يُرْفع لم بُره يُو الْفقواعِلَ مِنَ الْبَيْتِ كراسين رفع قواعد سے مرًا دینا رقواعدہے اور حضرت حس بصری کے فرمایا کہ رفع مساجد سےمرا دمساجر کی تعظیم احترام ادران كونجاستون ادركندي جيزون سے ياك كفنا ہے جبيباكه حديث ميں آيا ہے كەسجىرى جب كوئ نجاست لائ جافسے تومسجداً سے اس طرح مثنی ہے جیسے انسان کی کھال آگ سے حضرت ابوسعید خدری ف فواتے ہیں کہ رشول النہ صلے امنہ عکتیہ کم نے فر ما یا کہ حیث خص نے سجد میں سے نایا کی اور ایزا کی چیز کوز کالبرما

الشرِّلعاليُ أسح لئة جنّت مين كَفر بنا دين كه - رواه ابن ماجه - اور حضرت صديقة عا كَشِر رمَ فرما تي بين كدرون صلے الشرعکی لیے الم نے بین محم دیاکہ ہم اینے گھروں میں دہمی سجدیں (مینی نماز پڑھنے کی مخصوص کھیں) بنا بیں اوراُن كوياك صاف ركھنے كاابتمام كريں - (قطبي)

ادر المان بدست كد نفظ فو فع مين محدول كابنانا بهى دخل سها دران كي عليم وتكريم ادرياك ركه تا بهى - ياك صاف ركھنے ميں يہي داخل ہے كہ سرنجاست اور كندگى سے ياك كھيں - اور يہي دخل ك كدأن كوبر بدنوكي چيزے ياك كيس - اسى كئة رسول الشرصل الشرعكية لم فيلسن يا برياز كهاكر بغير شرصان كتة بوائع مبحد مين آنبيه منع فرمايا ہے جوعام كتب حديث بين معروث ہے۔ سِكرٹ ، حُقّہ ، يان كاتمباكو کھاکڑسجدمیں جانا بھی استحکمیں ہے مسیحہ میں گئے کا تیل جلانا جمیں بدیو ہوتی ہے وہ بھی اس کھم میں ہے۔ صحیح سلمیں حضرت فاردق عظم رہ سے روایت ہے فرمایا کہ میں نے دیکھا ہے کہ رسکول مشرصاتے عكيهم بتعض تحمد سالهن يا بياذكي بديونحوس فرماته تصاسكوسجد سے زيكال كربقنع ميں جي يتحق اور فراتے سے کر حبکوس بیاز کھاناہی ہو تو اسکوخوب بھی طرح لیکاکر کھائے کہ اُن کی بربو ماری جائے جیسرا فقبار نے اس صدیث سے استدلال کرے فرمایا کہ جس شخص کو کوئ ایسی بیماری ہوکہ اسکے پاس کھڑے

روت القران ج سُورَة التور ٢٣: ٥٠ ہونے والوں کواس سے تکلیف مینجے اس کو تھی سے مشایا جاسکتا ہے اس کو خود جا سنے کہ جب تک الیں باری میں ہے نماز گھرمیں بڑھے۔ رفع مسايحال كامفهوم جمهور صحابة تابعين كزديكي سي كمسجدي بنائ جائي ادراأن كو ہراری چیزسے پاک صاف رکھا جائے۔ معض حضرات نے ہمین سجدوں کی ظاہری شان دسٹوکت اور جمری بكندى كوبجى وخل قرار ديا ہے اورات رلال كياہے كەحضرت عثمان غني نے سجد نبوى كى تعبيرسال كى كلارى سے شانداربنائ تفي اورحضرت عربن عبدالعزيز في سجد نبوي ميلقش و بركارادر تعميري خولصورتي كا كافي ابتمام فرمايا تقاادريه زماندا جله صحابه كالتفاكسي في أنجة اسفعل يرالكارنهبي كياادربعد كارشاره تے توسیدوں کی تعمیرات میں بڑے اموال خرج کئے ہیں۔ ولیدین عبدالملک نے ایٹ زمانہ خلافت يين دمشق كى جامع مبحد كى تعميرو تزيين يريويس علاستام كى سالاندائد نى سيتين گنازياده مال تريح كياتها أن كى بنائ ہوئ میسجد آج تك قائم ہے - اما م عظم ابوحنیف اسے نز دیک اگر نام و نمود اور شہرت تسليح نهزوا دلتدك نام اوراد نترك كفركي تغطيم كى نيت سے كدى شخص سجد كى نتمير شا ندار ليندو كلم خولفيور بنائے توکوئ مانعت نہیں بلکہ اسیر تواب کی ہے۔ مض ضنائل مسّاجد ابوداؤد فيحضرت ابواما منتهد دوايت كياب كه رسول الترصليان عكيهم في فرمايا وجيخف لين كفرس وضوكرك فرض نمازكم لئة مسجدكيطرت بكلا أسكا تواب استحض جد بانده كركهرس عج كمه لنخ بكلام واورجوهن نمازا شراق كمه لئة ابينة كهرسه وصوكرك مجد كبطرون جلاته اسكاتواب عمره كرف والے جبيا ہے ۔ اور ایک تماز کے بعد دوسری بشرطیکدان دو اوں کے درميّان کوئ کام یا کلام نہ کرے ، علیبین میں تکھی جاتی ہے۔ اور حضرت بربیرہ رمزے روایت کیا ہے کہ سول انت صلے اللہ عکتیے لم نے فرمایا کہ جو لوگ ا ندھیرے میں سیاحد کوجاتے ہیں اُن کو قیامت کے روز مکمل فی كى بشارت مُناديجة (دوا المسلم) ادريع كم مين حضرت ابو بريره سے روايت بے كدر سول الد صلاالد عليهم في قرباياكه مردكي تمازجاعت كے ساتھ اواكرناء كھرميں يا دُكان ميں نمازير اسنے كى نسبت بيس سے زائد درج افضل ہے ادر پاسلے کہ جب ی تحض وصور سے ادر اچھی طی (سنت کے مطابق) وصور سے بحر سید کو صرف نماز کی نیت سے چلے اور کوئ غرض مزرو قوہر قدم براسکا مرتبرایک درجد طبند و جاتا ہے اور ایک گنا و معاف رحاتا بہاتک کہ دہ سحد میں بنتے جائے۔ بھرجیت کے جاعت کے انتظار میں بیٹھارے گا اسکونمازی کا تواب ملیا رہے گا اور فرشتے اسے لئے ہے وعاکرتے رہیں گے کہ یا اللہ، اسپر رحمت نازل فرما اور آئی مخفرت فرما، جب مك كدوكس كوايذانه بينجاب ادراسكا وضونه أواله - اورحضرت كم بن تميزوضى الترعندس روایت ہے کہ دسول الترصل التر علیہ کم نے فرمایاکہ دنیامیں مہمانوں کی طرح رہوا در سجدوں کواپ ا

گھر بنا داور اپنے دِائِل کورقت کی عادت ڈالو (بینی رقیق القلب نرم دل بنو) اور (الشرکی نعموں میں)
کھرت سے نفکر وغور کیا کر واور کمبٹرت (اسٹر کے خوف سے) رویا کرد- ایسا نہ ہو کہ خواہشات و نیا تھیں اس حال سے ختلف کردیں کہ تم گھروں کی ففنول تعمیرات میں لگ جا کوجنیں رہنا بھی نہ ہوا ورصر ور شے زیادہ مال جمع کرنے کی فکر میں لگ جا کو اور ستقبل کے لئے ایسی فضول تمنا دُں میں بنالا ہوجا کہ جو بائے ہوئے اور حضرت ابوالدر دار رہ نے لینے میٹے کونسیمت فرمائی کہ تھا او گھر سجد ہونا چاہئے کیونکہ میں نے رسول اسٹر اور حضرت ابوالدر دار رہ نے لینے میٹے کونسیمت فرمائی کہ تھا اور سے در کور کمٹر تو وکرکے درایدی اسٹر صلا الشر عکیہ میں اس میں ہوگیا ۔ اور کھر بنا لیا ، الشر تو لگا سے کر رہے کا ضامن ہوگیا ۔ اور ابوصادق از دی نے شخص بی الجماب کو خط کھا کہ سجد دن کولائم بکر کو کیو کہ مجھے بیر روایت بہنچی ہے کہ مساجد ہی انبیاء کی میان تھیں ۔

ادرایک مدسی میں ہے کہ رسول الشرصال الشرعکي لم نے فرمایا کہ آخرزماني مي ايسے لوگ وبلك جوسجدوں میں آکر جگہ جلقے بناکر بہیم جا دیں گے اور دہاں دنیا ہی کی اور اسکی مجت کی باتین میگے تم ایسے توگوں کے ساتھ نہ بیٹے کیو مکہ اللہ تعالی کو ایسے سجد میں آنے دالوں کی ضرورت نہیں۔ ادر حضرت سعیدین سیت نے فر مایا کہ جو تحض سجد میں سیھا گویا وہ اینے رب کی محلس سی بھیا ہو اس كئے أسكے وقعہ ہے كہ زبان سے سوائے كلئر نفيركے اوركوئ كلمه ندنكا لے - (قرطبی) مساجد کے بندرہ آواب علمار نے آواب مساجدی بندرہ چیزوں کا ذکرفر مایا ہے۔ اوّل بیک مسجد ين ينجي يراكر كه يوكون كوبيها ويجه توان كوسلام كرے اوركوى ندم وتو السّلام عليه عباد الله الصالحان كر اللين يرأس صورت ميں ہے جبكم سجد كے حاضرين تفلى تمازيا ثلادت وسيحي مين شغول نه مون ورنداسكوسلام كرنا درست بنين من ووسك يدكسجدي واخل موكر ينطيف بهد دورکعت تحییتر البحد کی بڑھے ربیمی جب ہے کہ اسوقت نماز بڑھنا مکروہ نہ ہو، مثلاً عین آفتاب كے طلوع باغروب بااستوارنصف النہاركا وقت نہو-١٢ش) تكبیت بركمسجد میں خريد وفرد مذكرے - يجو تقے بير كد دہال تير تلوار مذبكا كے - يا پنجوس بير كسجرس اپني كم شده چنز تلاش كرنے كا علا نذكرك بين يكم ميرس أواز بلندنه كرك - ساتؤي يدكه وبال ونياكى باتين نزكرك آهوي ر سجد میں جیھنے کی جگر میں سے جھکڑانہ کرے - دویق یہ کہ جہاں صعت میں بوری جگہ نہ ہو دہا لگھی تھے لوگوں برسکی بیدا نرمے - دسویں یہ کمسی ناز برطنے والے کے آگے سے نظررے گیارھویں كمسجد مين تعوكف ماك صاف كرف سيريبزكرا - بالتقوي ايني الكليان فيغائ تاتهون یہ کہ اینے بدن کے سی مصنبہ سے میں نہرے ۔ چود ھوی نجاسات سے پاک صاف رہے اورکسی جھوٹے بیتے یا مجنون کوساتھ ند مے جائے۔ بینل دھویں بہ کہ وہاں کثرت سے ذکراد للر مین شغول رہے۔

ارف القرآن جسكة سُورَة النور ٢٠:٠٠ زطبی نے یہ بندرہ آ داب لکھنے کے بعد فرمایا ہے کہ جس نے بیہ کام کرلئے اُس نے سجد کاحق ادا کر دیا اور سحداً سے لئے حرز دامان کی حکمین کئی ۔ احقرف مساجد كے آواب واحكام ايك تقل دساله جام آواب (كمسكا جار مي جمع كرفيكي جن كوضرورت يو أسكامطالعه قرمائين -جومكانات، ذكران بعليم قرآن النسير بحرميط مين الوحيان نے فرمايا كه في بيكونت كالفظ قرآن ميام ب تعلیم دین کے لئے مخصوص بول وہ جس طرح ساجد اسیں داخل بس اسی طرح وہ مکانات جو خاص معلیم قرآن بھی مساجب رہے تھم میں ہیں۔ العلیم دین یا وعظا دنصیحت یا ذکروشغل کے لئے بنائے گئے ہوں جلسے ملاس اورخانقا ہیں، وہ بھی اس محم میں داخل ہیں اُن کا بھی ادب احترام لازم ہے۔ أذِنَ اللَّهُ أَنْ يَعْمِين نفظ علارتفسيركا تفاق بكراس جكر اذن بحض أمروهم بي الرَّسوال بير اذن كى خاص حكست إيدا وتاب كريير لفظ اذن كاس جكد لا في سي كيا صلحت بروح المعانى ميں ايک لطيف صلحت بيربيان کی ہے کہ اسميں مؤمنين صالحين کو اس ا دب کی تعليم و ترغيب دیناہے کہ دہ اللہ تعالیٰ موضی عال کرنے کے ہر کام کے لئے ایسے متعدادر تیار ہونے جا سیس کرے کی ضرورت نزبرك صرف استح منتظر مول كهربهب اس كام كى اجازت ملے توہم بيه حادث عال كري يُنْ حَرِّيْ فِي الشَّكُ ، يهان اللَّه كانام ذكر كرني برقهم كا ذكر شامل بي يبيع وتميروغيره بهی بفلی نماز بهی تلاوت فران وعظافه بیحت بقلیم علم دین ، اورعلوم دینبیر سے سیسیاغل سیرو خل ہیں۔ رِجَالٌ الله عَلْمِيْ عِلْمُ مِنْ اللهُ عَلَى اللهُ عَلَى عَلَى اللهِ ، اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ عَلَى عَاص صفات بیان کی گئی ہیں جوانشرتعالی کے بور ہدایت کے قاص مور داور سجدوں کو آیا در کھنے والے ہیں اسمیں نفظ سرجال کی تجییرس اسطرت اشارہ ہے کہ مساجد کی حاصری درصل مُردوں کے لئے ہے ورتو تکی نمازان کے گھروں میں افصل ہے۔ منداحدادر بيقى مين حضرت أم سلمة كى حديث بكدر مول دلا صداداله عكسيلم في فرمايا به خدد مساجدنالنساء قعر بیوتین، نعین عورتوں کی بہترین ساجدانکے گھروں کے ننگ تاریک گوشے ہیں۔ کس آئیت میں منومنین صالحین کی بیصفت بیان کی ہے کہ ان کو تجارت اور بین کامشغلہ ادیثر کی یا د سے خاف ل نہيں كرتا-نفظ تجارت ميں يونكه بسے بھى دہل ہے اسك بعض مقسّرين نے مقابله كيوجر سے اس جگه تجارت سے مراد خربیاری اور بیج سے مراد فروخت کرنالیا ہے اور بعض نے تجارت کو اپنے منہ می علم یں دکھا ہے لینی لین دین خرید و فروخت کے معاملات ربھر سے کوالگ کرکے بہان کرنے کی حکمت ہے بتلائ ہے کہ معاملات سجارت توایک سیع مفہوم ہے جس کے فوائد و منافع کہجی مرتوں میں و صُول بردتے ہی اور سی چیز کو فروخت کردینے اور قبیت سے نفع کے نقد وصول کرلینے کا فائدہ فوری اور

حارف القرآن جسكدهم سورة النور ٢٣٠: ٥ کافرومنکر دوسم کے بھتے اس لئے ان کی د د مثنا ہیں بیان کی گئیں جن کی تفصیل خلاصر تفسیر سیر على ب- دويون شاليس بيان فرطاف ك بعدارشاد فرمايا دَعَنْ تَرْ يَجْعَلِ اللهُ لَهُ تَوْرًا فَهَا لَهُ رمن بچور، برجلہ کفارکے بارے میں ایسا ہی ہے جیسا مُومنین کے بارے میں بیرارشا د ہوا تھا يَهُ فِي يَ اللَّهُ لِلنَّوْ يُرِيِّ مَنْ يَتَشَاءُ و كَفَا رَكَ لِنَهُ اس جمله مِين نور بدايت سے محروى كا ذكر ہے كه انھو نے احکام الہیدسے انحسرات کرکے ایٹا فطری وزبھی فناکر لیا اب جبکہ انٹیرکے نور ہدایت سے خروم ہو گئے تو ہور کہاں سے آئے۔ اس آیت سے بیمجی معلی ہواکہ کوئی تحض تحض اسباعلم و بصیرت جمع ہونے سے عالم مید ہیں ہوتا بلکہ وہ صرف الشرتعالیٰ کی عطاسے ہوتا ہے۔ یہی وجہ ہے کہ بہت سے آدمی جو ڈنیا کے كاموں میں بالكل نا واقت بے خبر بھے جاتے ہیں آخت كے معاملہ میں وہ بڑے بسط عقلت ثابت ہوتے ہیں۔ اس طرح اسے برعکس بہت سے آدمی جو دنیا کے کاموں میں بڑے ماہر اورمبعر محقق مانے جاتے ہیں مرافرت کے معاملہ میں بڑے بے و تون جابل تا بت ہوتے ہی دمظہری) كَدُتْوَ أَنَّ اللَّهُ يُسِيِّحُ لَهُ مَنْ فِي السَّمَوْتِ وَالْحَيْنِ وَالْحَيْرُ طُلَّقَيْنِ یا تونے نہ دیکھاکہ الشرکی یا د کرتے ہیں جو کوئ ہیں آسمان و زمین میں اور اُڑتے جا بور بر کھولے ہوئے رایک نے جان رکھی ہے ا بی طرح کی بندگی اور یاد ، اورائٹر کو معلوم ہے جو بچھ کرتے ہیں ا درانشر کی حكومت ب آسمان اور زمين مين اور التربي تك يهرجانا ب توفي د كيها كرالتربانك يُزْرِي سَحَايًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بِينَهُ ثُمَّ يَجْعَلُهُ زُكَامًا فَاتَّرَى لآنا ہے بادل کو بھران کو ملا دیتا ہے ہمران کو رکھتا ہے تذیر تہ بھرتو دیکھے مین نوکل ہے کسر نَ خِلْلَهُ وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ حِبَالِ فِيهَا مِنْ ابْدَو فِيصِيدً کے نے سے اور اُ تارا ہے آسمان سے اسمیں جو بہاڑ ہیں اولوں کے پھروہ ڈاتا ہے جس نَ يَسَالُهُ وَيَصِرُفِهُ عَنْ مَنْ يَشَالُوا يَكُادُسَنَا بَرْفِهُ بَنْ هَبْ بَالْرَيْمَ یاہے اور بچاویا ہے جس سے جا ہے اس کی بجلی کی کوند لے جائے آ تکھوں کو نُقَلُّ اللَّهُ الَّذِلَ وَالنَّهَارَوِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَعِبْرَةً لِلْوَلِي لَا يُمَا انشریداتا ہے دات اور دن کو اسمیں دھیان کرنے کی جگہ ہے آ مکھ والوں الله يحكن كل د الته قرن قاع فينهم في الله على بطيه و ا ادر انشرفے بنایا ہر پھرنے والے کو ایک یانی سے بھر کوئ ہے کہ جلتا ہے اپنے پیٹ پر اور

سورة التور ٢٠: ٥٨ رُنْ تَتَمْتُونُ عَلَى رِجْلَتُنْ وَمِنْهُمْ مِنْ تَيْشِيْ عَلَى أَرْبُعُ اورکوی ہے کہ چلتا ہے جار بر الله ما يَشَاءُ إِنَّ الله عَلى كُلِّ شَيْءٍ قَلِ يُرُقَ (اے ناطب) کیا تجھ کو (ولائل اورمشاہرہ سے) معلوم نہیں ہواکہ اللہ کی یا کی سیان کمتے ہی ب جو کیماسمانوں اور زمین میں (مخلوفات) ہیں (خواہ قالاً جو تبض مخلوقات میں مشاہر میں ک خواہ حالاً جو کل مخلوقات میں مرلالت عقل معلق ہے) اور (بالحضوص) برند (میمی) جو رُسِيلا مُعْدِي (أراع عصرتے) ہيں ذكه ان كى دلالت على وجودالصافع ادرزيا ده عجيب ہےكه با وجودان كے تقلِ اجهام کے پھرفضار میں رکے ہوئے ہیں اور)سب (برندوں) کواینی اپنی دُعا (ادرالتجارالترسے) اوراتی سیح (و تقارس کاطریقه الهام سے) معلوم ہے اور (باوجودان دلائل کے بھڑمی بعضے تو حبید کو انہیں مانتے تو) الشرتعالی کوان تو گوں کے سب نعال کا پُورا علم ہے داس انکار واعراض بران کوسنرا دیگا) اوران می کی حکومت ہے آسمانوں اور زمین میں راب بھی) اور (انتهامیں) الشری کیطرف (سب ا کو) أوط كرجانا ہے (اسوقت بھی حاكمانہ تصرف اُسى کا ہوگا جنانچہ حکومت كاايک اثر بيان كياجا باد وه يدكدا معناطب كيا تجه كوبيربات معلوم منهيل كدالله تعالى (ايك) با دل كو (دوسر بادل كي طوت) جلتا کرتاہے (اور) بھرائس با دل (کے مجوعہ) کو باہم ملادیتا ہے کھراسکو تہ بہتہ کرتا ہے میصر تو بارش کو د کیمتا ہے کہ اُس ربادل) کے بیج میں سے بیل رایک کر) آئی ہے اور اس بادل لعنی اسے برا مے مصوں میں سے اور اے برساتا ہے بھر اُن کوجی رکی جان پر بامال) برجامتا ہے گرانا ب دکداسکانفضان دوجانا ب) اورس سے جاستا ہے اُس کو شادتیا ہے (اور اُس کے جان مال کو بچالیتا ہے اور) اُس یا دل دیس سے بجلی ہی پیدا ہوتی ہے اورائیسی حیکدار کہ اس یا دل) کی بجلی كى حك كى بد حالت ہے كہ ايسا معلوم ہوتا ہے كہ گو يا اُس نے اب بينائى كو اُ حك ليا (بيرهجي الترتعالی ى كے تصرفات ميں سے ہے اور) الشرنتا لے رات اور دن كوبدليّا رہتا ہے (يہ مجى نجالة صرفات البيہ ے ہے) اس (سب مجموعہ) میں اہل دانش کے لئے کمسئندلال (کاموقع) ہے (جس میضمون توحيداور صفحون لد مكال الملوت والارص رياستد لال كرتے ہيں) اور الشرد ہى كابيتصرت ميى ہے كدأس) فيرطيف والعجاندادكو (برى مويا بحرى) يانى سے بيداكيا مي بيران (جاندرون) ميں بعض تو وه (جانور) بي جواب يرف كربل جلية بي رجيد سانب محيلي) ادر بعض أن مين وه بي جودو

حارف القرآن جبلة

سورة النور ٢٠: ٥٢

بُیروں پر جلتے ہیں (جیسے انسان اور پر ندے جبکہ ہوا میں نہ ہوں) اور بعضے اُن میں وہ ہیں جوچار (بیروں) برجلتے ہیں (جیسے مواشی ، اسی طرح بعضے ذیا دہ پرجبی اصل یہ ہے کہ) اللہ تعالیٰ جو چاہتا ہے بنا آ ہے۔ بدیک اللہ تعالیٰ ہرجیز پر بورا قا در ہے (اُس کو کھے می شکل نہیں)۔

معارف ومسائل

کُلُ قَلْ عَلَمَ حَلَا قَدُ وَ اللّهِ اللّهِ وَ اللّهِ اللّهِ عَلَى اللّهِ عَلَى اللّهِ اللهِ الدائك درميان كى برعنوق اور برجيزات الله الله تعالى تبيح و تقديس كرنے ميں مشغول ہے ۔ اس تبيع كامفوم مصرت سفيان رہ في ہر بيان فرمايا كہ الله تعالى في دنيا كى بر جيزات مان ، ذمين أفتاب ماہتا ، اور كل سيّا ہے اور شار ہے اور زمين كے عناصراً كہ ، بيا فى ، ملى ، ہوا سب كو فاص فاص كاموں اور كل سيّا ہے اور شار ہے اور زمين كے عناصراً كہ ، بيا فى ، ملى ، ہوا سب كو فاص فاص كاموں كے لئے بيدا فرمايا ہے وہ برابراً سبرلكا ہوا ہے اُس سے سرمو فلاف بنيں كرتا ۔ اسى اطاعت و انقيادكوان چيزوں كى تبييح فرمايا ہے مصل بيہ ہے كہ اُن كى تبييح فرمايا ہے مصل بيہ كران كى تبييح فرمايا ہے مقالى بنيں۔ اُن كى تبييح فرمايا ہول رہی ہے كہ بيرانشوالى كو باكے برتر سمي كران كا طاعت ميں گلے ہوئے ہیں۔

ز مخشری اور دو مرے مفسری نے فریایک اسیس کی کوگ بُدر بنیں کہ اللہ تعالیٰ نے ہرایک چیز کے
اندراتنا فہم و شعور رکھا ہوجیں سے دہ اپنے فائی و مالک کو پہچانے اور اسیس بھی کوئ بُعد بنہیں کہ انگوکسی
فاص می گویائ عطا فرمائی ہواور فاص تنم کی تیجے و عبادت اُن کوسکھا دی ہوجییں وہ شغول ہے ہو
فاص می بی بیلے کی گویائ عطا فرمائی ہواور فاص تنم کی تیجے و عبادت اُن کوسکھا دی ہوجییں وہ شغول ہے ہو
ساری مخلوق گلی ہوئ ہے گر ہرایک کی نماز اور شیح کا طریقہ اور صورت مختلف ہے۔ فرضتوں کا اور
ساری مخلوق گلی ہوئ ہے گر ہرایک کی نماز اور شیح کا طریقہ اور صورت مختلف ہے۔ فرضتوں کا اور
طریقی ہانسان کا دوسرا اور نباتات کسی اور طرح سے عبادت نماز و سیح اداکر تے ہیں جما دات کسی
اور طریقی سے ۔ قران کریم کی ایک دوسری آیت سے بھی اسی شعون کی تا کید ہوتی ہے جس میں اور شادہ
اغطی گل شی شی شخطی کہ کو تھو کہ کی ایک دوسری آیت سے بھی اسی شعون کی تا کید ہوتی ہے جس میں اور شادہ
معلوم ہے کہ دہ ہر وقت حق تعالی کی اطاعت میں گلی ہوئ ا بنی مفوضہ ڈیوٹی کو بُوراکر رہی ہے اس کے
علاوہ اسی اپنی ضروریات نہ ذری کے متعلق میں اسکوائسی ہدایت دیدی ہے کہ بڑے بڑے بڑے عقلار کی
عقل جیران ہوجاتی ہے۔ اپنے دہنے سے کے لئے کیسے گھونسلے اور بِل وغیرہ بنا تے ہیں اور اپنی
عقل جیران ہوجاتی ہے۔ اپنے دہنے دیئے کیسے کیسے گھونسلے اور بِل وغیرہ بنا تے ہیں اور اپنی
عقل جیران ہوجاتی ہے۔ اپنے دہنے دیئے کیسے کھونسلے اور بِل وغیرہ بنا تے ہیں اور اپنی

مِنَ الشَّمَّاءِ مِنْ جِنَالِ فِنِهُمَا، بِهِال سماء سے مُراد بادل ہے اور جبال سے مُراد بڑے بڑے ہے۔ بادل ہیں اور بَوَد اولے کوکہا جاتا ہے۔ سُورَة النور٢٢: ٧٥ لَقِلَ الْزُلِنَا اللَّهِ مُبَيِّنَتِ وَاللَّهُ يَهُدِي يُحْزِينَ إِلَى صِرَاطِ مُسْتَقِيِّهِ اعم في أنادي آيتي كهول كعول كرتبلافي ادر التكريطات حيل كوچا ي سيدهي يَقَوُلُونَ امْتَابِاللّهِ وَبِالرَّسُولِ وَاطْعُنَا ثُمَّ يَتُوكُ فَلَ فَرِيْقُ مِنْهُمْ اور لوگ کہتے ہیں ہم نے مانا اللہ کو اور رسول کو اور حکمیں آگئے بھر کھر جاتا ہے ایک فرقد انہیں سے صِيَّاتِكُ ذَيِكُ وَمَا او لَبْكَ بِالْمُؤْمِنِينَ ﴿ وَمَا او لَبْكَ إِللَّهُ وَمِنِينَ ﴾ وَإِذَا دُعُوْالِكَ للهِ اور وہ لوگ ہیں مانے والے اور جب اُل کو ملاتے التواور الله ليك كُورَيْنَ مِنْ إِذَا فَرِيْنَ مِنْهُ وَمُعْرِضُونَ ﴿ وَإِنْ يَكُنُ رسول کی طرف کدا نیس تضیر میکائیے جہی ایک فرقہ کے لوگ آئیں مند موڑتے ہیں۔ اور اگر اُن کو لَّهُ وَالْحَقُّ يَأْتُوْ آلِلِيْرِ مُنْ عِينِينَ ﴿ آفِى قُلُونِهِمْ مَّتَوَضَّ آمِ مجھ بہنچتا ہو تو چلے آئیں اُس کی طرف بول کر کر کیا اُن کے دوں میں روگ ہے ارْتَابُوْآ آمْ يَحَافُونَ آنَ يَجْمُعَ اللهُ عَلَيْهُمُ وَرَسُو لَهُ عَلَيْهُمُ وَرَسُو لَهُ عَلَيْهُ دھو کے ان اور اس کا ورتے وں کہ بے انصافی کرے گاأن بران اور اس کارشول بھے ہیں وہی ہوگ الله الظَّامُون شَراعًا كَانَ قُولَ المُوْتِمِينِينَ إِذَا دُعُوْلَ إِلَى بانصاف ہیں ایمان والوں کی بات ہی تھی کہ جب بلائے آن کو كى طوت فيصله كرنے كو ان ميں توكييں ہم نے ش ليا اور حكم مان يا اور وہ لوگ كراہنى كا بھلا ہے ن يُطِع الله ورسولة ويخشر الله ويتقنه فاولله في الفالنون اورجو كوئ حكم بريط الترك اوراسكور ول كاور در تائيه الشراء اوريكريك أس مودى وك بين مرادكو برنيخ وال ورتسیں کھاتے ہی اوٹری اپنی تاکید کی سمیں کہ اگر تو حکم کرے توسب کھ چھوڑ کرنیک جائیں ، تو کہ تفسِّمُوا مَ طَاعَةُ مُعَرُوفَةً ﴿ إِنَّ اللَّهَ خَبِينًا بِمَا تَعْمَ عمرداری چاہئے جودستورے، البترالشر کو خبر ہے جو م کرتے مالؤال كل اورحكم مالؤ رسول كا بحراكرتم من بجيرو كي تواسكا ذمه بهج يوجو الجرارا تُكُونِيًا حُبِّلَتُهُو وَإِنْ تَطِيعُونُ تَهْتَلُ وَالْوَعَاعَلَى الرَّسُوا اور بخادا ذمه بي جوبوجه م برركها اور اگراش كاكها مانو تو راه يادًا اور منعام لاغ لاكاذمة نهر

معارف القرآن جب لدم

الآ الْبَلْغُ الْمُبِينَى @ عرر بينا كمول كر

خسلاصير

ہم نے (حق کے) بھانے والے والل (بدایت عام کے لئے) نا زل فرمائے ہیں اور (ان عام میں سے) جس كوالشرچا بهتا ہے داہ داست كبيطوت (خاص) بدايت فرما تا ہے ذكہ وہ ألو بسيت كے حقوق علم يعني عقائد صحیحها درحقوق علیه بینی طاعت کو بجالا تا ہے ور نه بہت سے محروم ہی ہے ہیں) اور بیرمنا نق لوگ۔ (زبان سے) دعویٰ تؤکرتے بیں کہم الشرر اور رشول برایان ہے آئے اور (خداور مؤل کا) حکم (دل سے) مانا بھراسے بعد (جب عل کرمے اینا دعویٰ تابت کرنیکا وقت آیا تو) امنیں کا ایک گروہ (جوبہت زمادہ کریج غدا در شول کے بھے سے سرتابی کرتا ہے (اسوقت سے دھورت مراد ہے کہ جب اسے ذہر کسی کا حق جابتا موادر صاحب حق اس منانق سے درخواست كرے كم جلو جناب رسول الله صلحالله عكيم كے ياس مقدمه لے جلیں اس موقع پر بیسرتانی کرتے ہیں کیو تکہ جانتے ہیں کہ آپکے اجلاس میں جب حق ثابت به وجا و بیجا تواسی میم موافق ایت فیصله کریں مے جیسا عنقریب آیت دَادُادُ عُوا میں اس موقع کا بھی بیان آیا ہے اور تخصیص ایک فریق کی باوجود مکہ تمام منافقتین ایسے پی تھے اسلتے ہے کہ غرب بعسر بار کو با دجود کراہت قلبی کےصاف الکار کرنے کی جرآت وہمت نہیں ہواکرتی بیر کام دی لوگ کرتے ہیں جنکو بكهروجابت اورقوت حاصل بو) اوربيرتوك بالكل ايمان نهيں ركھتے (يعنی دل ميں توكسيمنا فق کے بھی ایمان نہیں مگران کا تو وہ ظاہری ملمع شدہ ایمان بھی مذرہا جسیااس آیت میں ہے وَ لَقَلُ قَالْوَا كَلِمَةَ الكُفْنِي وَكَفَرُ وُابَعْنَ إِسْلَا فِهِمْ اوراس آيت ميس ب فَنْ كَفَرْ ثُوْ يَعِنَ إِنْهَا وَكُوْ اور بیان اس حکم عدولی کابیر ہے کہ) یہ توگ جب الله اورائے رشول کیطوت اس غرض سے بلائے جاتے میں کرد سول رصلے اللہ علیہ می ایکے داوران کے خصوم کے) درمیان میں فیصلہ کردی توان میں کاایک گروہ (وہاں حاصر ، و نے سے) پہلوشی کرتا ہے (اور ٹالیا ہے اور بیڈ بلانا اگر جیر رشول ہی کیطرف ہے سرحونكهات كافيصله عجم ندا دندى كي بنار برم وتاب اس لئة الترتعالى كيطر وبي نسبت كردى كني غرض جب ان کے ذر ترکسی کاحق جامِتا ہے تب توانکی یہ حالت ہوتی ہے) اور اگر (اتفاق سے) ان کا حق دكسى دومرے كے ذمتہ ہو) توسرتسليم عمركئے ہوئے (بيے سكاف آسكے بلانے ير) آپ سے يكس علے آتے ہیں دکیر سکہ اطبینان ہونا ہے کہ وہاں حق کا قیصلہ وگا اسمیں ہما دا فائدہ ہے -آگےان کوکو كاعراض اورحا صرفيونے كى وجراسباب جينداحمالات كے طور بربيان كركے اورسياحتمالات كى لفى اورايك اختمال كا شبات ہے) آيا (اس اعراض كاسب يہ ہے كه) ابكے دلوں ميں وكفر

لیقینیکا) مرض ہے (بینی ان کواسکالیتین ہے کہ آپ الشر کے رشول نہیں) یا بر (بوت کی طونے میں پڑے ہیں دکررشول نہونے کا یقین تو نہیں گررشول ہونیکا بھی یقین نہیں) یا انکویا ندلیشہ لدانشرادراسكار شول ان برللم كرنے لكيں (اوران كے ذمتہ جوحتى ہے اس سے زائد دلاديں ہووا تعب يركدان اسباب ميں سے كوئ بھی سبب بنيں (ہے) بلكر (صلی سبب يہ ہے كر) يہ توگ (ان مقدمات میں) برسرظلم (ہوتے) ہیں راسلنے حضور نبوی میں مقدمہ لانا بیند نہیں کرتے کہم ہارجادیج اورباتی اسباب سابقه سب شفی بین عسلانون رکی شان اوران کا قول توجیب انکورکسی مقدمین التراوراسك رسول كيطرف يلايا حامات يه بحكروه (خوشى خوشى) كبديت بي كريم خراكالام) ش لیاادر (اس کو) مان لیا (ادر پیمرفوراً چلے جاتے ہیں یہ سے علامت اس کی ایوں کا آمتا ادراً طعنا كہنا دنیا میں سی صادق ہے) ادرائيے (ئى) توگ (آخرت میں سی) فلاح يائيں كے اور (ہمارے بیان کا تو قاعدہ کلیہ ہے کہ) جو تفض الله اور اسے رسول کا کہنا مانے اور الله سے ڈرے اور اسکی مخالفت سے بچے بس ایسے لوک بامراد ہوں گے اور (نیزان منافقین کی طالعے كه) ده توك براز در لكارسين كهاياكرتين كه والشرزيم ايسفرما نبردارين كه) در آيا كورايين بكو تهم دیں دکہ گھر باہرسب چیوڑ دو) تو وہ العین ہم) ابھی (سب چیوڑ چھاڑ) نیکل کھڑے ہوں آپ (ان سے) كبديج كرس ميں نه كھاؤ (محقارى) فرمانبردارى كى حقيقت معلوم ہے دكيونكه) الترتعالي متمارے اعمال کی یوری خبرر کھتا ہے (اوراس نے مجھ کو تبلا دیا ہے۔ جیساکہ دوسری جگدا درات دہے قُلْ لَا تَعْتَنِ مَ وُالِّنَ مَنْوُمِنَ لَكُمْ قِلْ نَبَا نَاللَّهُ مِنْ أَخْبَا لِكُمْ أُول آب (ان سے) كِيتُ كر التي بنانے سے کام نہیں جیلتا کام کروئینی) الشرکی اطاعت کرد اور رسول کی اطاعت کرد (آگے الشرتعالی ابتمام شان صفون مے واسطے خود ان لوگوں کوخطاب فرما ہا ہے کہ رسول کے اس کہنے کے اور تبلیغ کے بدر محراكرتم لوك (اطاعت سے) روكردانی كروكے تو بھے ركھوكہ (دسول كاكوئ صررتبين كيونكم)دسول كے ذرق بى تبلغ د كاكام) ہے جبكان پر بار ركھا گيا ہے (جس كو وہ كر بي اورسبكروش ہو گئے) اور بھانے ذمتہ وہ (اطاعت کا کام) ہے جبکاتم پر بار رکھاگیا ہے (جس کوتم نہیں بجالاتے لیس بخفاراتی ضرر بروگا) اوراگر (روگردانی نه کی بلکه) تشخدان کی اطاعت کرلی (جوعین اطاعت لنگر مى كى ہے) توراہ يرجالكو كے اور (برحال) رشول كے ذمته صرف صاف طور ير بينجادينا ہے داكے تم سے بازیرس ہوگی کہ قبول کیا یا نہیں)۔

معارف ومسائل

يرآيات ايك خاص واقعيس نازل موى بير - طبرى وغيره فيد واقعاس طح بيان كيا بحكومنانقين

میں ہے ایک شخص بیشرنامی تھا اسے اور ایک بیہودی کے درمیان ایک بین کے مقان جھگڑاا در حصومت تی۔

یہودی نے اسکو کہا کہ جیون تھا اسے ہی رسول سے ہم فیصلہ کرالیں عگر بیشر رُمنافق ناحق پر تھا یہ جا تا تھا کہ انحضرت صلے اللہ عکیہ کے جائے ہے ہوا تی نے معالمہ کریں گے اور میں ہارجا و کیا۔ اسے اس سے انکار

عیا اور اسمحضرت صلے افتہ علیہ ہم کے بجائے کو ب بن اسٹرٹ بہودی کے باس مقدمہ لیجائے کو کہا۔ اس پر سے

کیا اور اسمحضرت صلے افتہ علیہ ہم کے بجائے کو ب بن اسٹرٹ بہودی کے باس مقدمہ لیجائے کو کہا۔ اس پر سے

آیات نا ڈل ہوئی ۔ اور آیت آئی قدی کے گورش کا لا بتر میں جوان کے دِلوں میں کفر نقیق کا مرض یا بوت

میں شک ہونے کی فعی کی گئی ہے اس کی مُراد میہ ہے کہ یہ کو بقیق یا شک ان کے در بار نبوی میں مقدمہ

لانے سے گورن کرنے کا سبب بنیں اگر چر کفروشک کا ہونا منا فقین میں ثابت اور واضح ہے گرمقدمہ نہ لا نا

اصل میں اس سبب سے ہے کہ وہ جانے ہیں کہ حق کا فیصلہ ہوگا توہم ہا رجا میں گو گھڑ الفائز ڈوڈن فورو فلاح کے لئے چاوشرطیں کو می بھیا جا اللہ کو دیشوں کہ والی جا رہیں کہ وہ ہا مواداور دیں وہ کہ با مراداور دیں وہ نہ بی ہیں ہے کہ جوان چار چیزوں کے بابند ہیں وہ ہی با مراداور دیں وہ نیا میں کا میاب ہیں۔

دُنیا میں کا میاب ہیں۔

مراد القرآن جرات من المنوا من المنوا من المنوا من المنور القرآن المنور القرآن المنور القرآن المنور المنور

فلاصتفيير

(اے مجبوعہ اُمت) تم میں جونوگ ایمان لاویں اور نمیے علی کریں (لینی اللہ کے ہیے ہوئے نور ہائے کا کا مل اتباع کریں) اُن سے اللہ تعالیٰ دعدہ فرمانا ہے کہ اُن کو (اس اتباع کی برکت سے) ذہی ہی جون اور عطافر بادیکی ایسے بیلے (اہل ہدایت) لوگوں کو محت دی تقی (شلاً بی کسرائیل کوفر عوں اور اُس کی قوم قبطیوں پر غالب کیا پھر ملک اُس میں عالقہ جسبی بہا درقوم پر اُن کو غلبہ عطافر با یا اور (مقصود اس حکومت دینے سے یہ بہوگا کہ) جس دین کو شام کی حکومت کا اُن کے لئے پیند کیا ہے (بعنی اسلام جیسا کہ دوسری آئیت میں ہے دُجِنیت کہ کے گئے اُس کوائی کے (نفع آخرت کے) گئے قوت دیکا اور (اُن کوجود مُمنوں سطبی خوف کا اُن کے اپندگیا ہے (نفع آخرت کے) گئے قوت دیکا اور (اُن کوجود مُمنوں سطبی خوف کا اُن کے اس خوف کے بعدائی کو امن سے بدل دیکا بشر طبیکہ میری عبادت کرتے دہیں (اور) میرے ساتھ اُن کے اس خوف کے بعدائی کو امن سے بدل دیکا بشر طبیکہ میری عبادت کرتے دہیں (اور) میرے ساتھ کو یہ کہی گئی میری عبادت کرتے دہیں (اور) میرے ساتھ کو یہ کہی ہو کہ دیا ہیں بعنی یہ وعدہ اللہ تعالی کا مشروط ہے دین پر اپری طرح ثابت قدم دہنے کہیں تھے۔ اور یہ وعدہ تو دُنیا میں ہے اور آخرت میں ایمان اور عمل صالح کی بیت جو جزا کے غلیم اور دائی واحت کا دعدہ ہے وہ اسکے علاوہ ہے) اور جوشی بعد زطہوں اس (وعدہ)

MMA

سُوْرَة التور٣٧: ١٥

معارف ومسائل

شان زول قرطبی نے ابوالعالیہ سے نقل کیاہے کہ رسول الند صلے النظر عکی کے اوراعلان و مے بعد دس سال مکہ تحرمہ میں اسے توہر وقت کفار ومشرکین کے خوٹ میں رہے بھر پیجرت مدینہ کا حکم ہوا تو بہاں جی مشرکین کے علوں سے ہروقت کے خطرہ میں نہے کسی خص نے آنخصرت صلی الشرعامية الم سے عرض کیایا رسول النتر بھی ہم برالیا وقت بھی آیر گاکہ ہم ہتھیا رکھول کرا من واطبینان کے ساتھ رہ كين - رسول الشرصل الشرعلية لم نے فرمايا كه بہت جلداليها وقت آنے دالا ہے - اس يريه آيات "ما زل ہوئیں رقرطبی و بحر) حضرت عبداللترین عباس رہ نے فرمایاکدان آیات میں اللترتعالی کا دعدہ جواسے أمّت محديد سے أبحد وجود ميں آنے سے پہلے ہى تورات وانجيل ميں فرمايا مقا-(بحرميط) الشرتعالى نے رسول الشرصلے الشرعكيم سے بين جيزوں كا دعده فرما ياكدا كي اُرت كو زمين كے خلفا را در حکمون بنایا جائیگا اور الشرکے بیندیده دین اسلام کوغالب کیا جائیگا اور سلمایون کو آنی قوت وشوكت دى جائے كى كدائن كو دشمنول كاكوى خوت شرب كا - الشرتعالى قے اینا يہ وعده اس طبع يُحدا فرما ديا كنزود آنحصرت صلے الله عكية لم كے عهدميا اكسين مكنه، خيبر، بحرين اور يوراجزيرة العرب ا در ایرانکک بمن آنخضرت صلی استرعکی می کے ذریعہ فتح ہوا اور ہجرکے بوسیوں سے ادر ملک شام مح مبعن اطرات سے آپ نے جزیہ وصول فرمایا- اور شاہ روم برقل نے اور مشاہ مصرو اسكندربيرمقوتس اورشابإن عمان اوريا دشاه حبسته سخاشي وغيره ني أسخضرت صلى الشرعكية كوبدايا بصبح ادرات كي تعظيم وتكريم كي - بيمرات كي د فات كے بعد حضرت صديق اكبر ابو كرا خلیضہ وی تو دفات کے بعد جو کھے فلتے ہیدا ہو گئے تھے اُن کو ضم کیا اور بلا دفارس ادر بلادشام ومصر کی طرف اسلامی گئے بھیجے اور کھیں اور دمشق آپ ہی کے زمانے میں فتح ہوئے اور دوسرے ملکوں کے بھی بعض حصتے فتح ہوئے۔

حضرت صدری اکترالهام فرمایا۔ عمر بن خطاب خلیفه موٹ تو انسوں نے نظام خلافت ایساسنیما خطاب کو خلیفہ بنا نیکا الهام فرمایا۔ عمر بن خطاب خلیفه موٹ تو انھوں نے نظام خلافت ایساسنیما کہ اسمان نے انبیا علیم اسلام کے بعدا بیا نظام کہ بیں نہ دیکھا تھا۔ اُن کے ذمانے میں ملک شام کورا فتح ہوگیا اسی طبع پورا نگاک مصراور ملک فارس کا اکثر حصہ۔ اُنھیں کے ذمانے میں قیصر درکسری کی قیصری اور کسروی کا فائمہ ہوا۔ اسکے بعد خلافت عمان کا وقت آیا تو اسلامی فتو حات کا وارک مشارق و مفارب کے سبع ہوگیا۔ بلا دمغرب، اندلس اور قبرص کک اور شرق اقصلی میں بلادجین مشارق و مفارب کے سبع ہوگیا۔ بلادم مغرب، اندلس اور قبرص کک اور شرق اقصلی میں بلادجین کی مشارق و مفارب می سندی بورسول الله صلح الله می فتو مایا تھا کہ مجھے پوری زمین کے مشارق و مفارب سمیٹ کرد کھائے گئے ہیں اور میری اُمری اُمری اُمری اُمری اُمری اُمری اُمری اُمری کی جو مجھے دکھائے گئے ہیں۔ اللہ توالی نے میری اُمری کی مشارق کی مشاری کشیرے لیا گیا ہے)۔ میری اُمرت کی حکومت اُن تمام علاقوں تک پہنچے گی جو مجھے دکھائے گئے ہیں۔ اللہ توالی نے میری اُمرت کی حکومت اُن تمام علاقوں تک پہنچے گی جو مجھے دکھائے گئے ہیں۔ اللہ توالی نے میری اُمرت کی حکومت اُن تمام علاقوں تک پہنچے گی جو مجھے دکھائے گئے ہیں۔ اللہ توالی نے میری اُمرت کی حکومت اُن تمام علاقوں تک پہنچے گی جو مجھے دکھائے گئے ہیں۔ اللہ توالی نے میری اُمرت کی حکومت اُن تمام علاقوں تک پہنچے گی جو مجھے دکھائے گئے ہیں۔ اللہ توالی نے سبح کی جو مجھے دکھائے گئے ہیں۔ اللہ توالی کے ایک کی جو مجھے دکھائے گئے ہیں۔ اللہ توالی ہے ۔

اورایک حدیث میں جو یہ آیا ہے کہ خلافت میرے بعتر ہیں سال ہے گی اس کی تمراد خلافتِ را شدہ ہے جو بالکل نبی کریم صلی الشرعکتی ہم سے نعتیق قدم پر قائم رہی اور حضرت علی تمرتضی تک چلی کیو تکہ بیٹیس ال کی تدت حضرت علی کرم الشروجیہ کے زیانے تک یوری ہوئ ۔

ابن کی روز نے اس جگہ صیح مسلم کی یہ حدیث بھی نقل کی ہے کہ حضرت جا بربن سمرہ روز فراتے ہیں کہ یہ اس لیے رسول اللہ صلے اللہ عکیہ ہے کہ آئی نے فرمایا کہ سیری اُمّت کا کام چیتا دہر گیا جبتک ہارہ فلیفہ دہیں گے۔ ابن کی شرنے اس کو نقل کر کے فرمایا کہ سے حدیث بارہ فلیفہ عادل اس اُمّت ہیں ہونے کی خبردے دہی ہے جبکا و قوع ضروری ہے۔ لیکن یہ صروری ہنیں کہ وہ سب کے سبشلسل اور متصل ہی ہوں بلکہ ہوسکتا ہے کہ کچھ و تعفوں کے بعد ہوں۔ انہیں سے چارتو کیے بعد دیگرے ہو تھے جو فلفاء داشرین سے پھر کچھ و تعفر کے بعد حضرت عرش عبدالعزیز ہوئے اُن کے بعد ہی مختلف زبانوں میں ایسے فلیفہ ہوتے رہے اور تاقیامت رہیں گے آخری خلیفہ حضرت مہدی ہوئے۔ دوافض نے جن بارہ خلفاء کو متعین کیا ہے اس کی کوئ دسیل حدیث میں نہیں بلکہ انہیں سے بیض تو وہ ہیں جو کا خلافت سے کوئ تعلق ہی نہیں دہا۔ اور یہ بھی ضروری نہیں کہ اس دعدہ کا مرادا یمان و علی صالح براستقامت اور فرانے میں امن و سکون و نہیا کا کیساں ہو۔ بلکہ اس دعدہ کا مرادا یمان و علی صالح براستقامت اور کھی اتباع پر ہے اسے درجات کے اختلات سے حکومت کی نوعیت و قوت میں بھی فرق و اختلات کیا اتباع پر ہے اسے درجات کے اختلات سے حکومت کی نوعیت و قوت میں بھی فرق و اختلات کیا اتباع پر ہے اسے درجات کے اختلات سے حکومت کی نوعیت و قوت میں بھی فرق و اختلات کیا اتباع پر ہے اسکام کی چودہ سوسالہ تاریخ اس پر شاہد ہے کہ ختلات فران اور مختلف ملکوں میں

MMI

عارف القرآن جسكت

سُوْرَةِ النّور ١٤:٢٨

جب اورجہاں کوئ مسلمان عادل اورصالح بادشاہ ہوا ہے اس کوا بے عمل وصلاح کے ہمانے برر اس دعدہ الہير کاحضہ بلا ہے جبيا کہ قرآن کريم ميں دوسری جگہ فرمايا ہے إِنَّ حِذْبَ اللَّهِ الْفَالْبِحُوْنَ يعنی النَّر کی جاعث ہی فالب رہے گی ۔

آست بذکورہ سے خلفار را شدین کی ایم آست رسول انٹر علیے انٹر کا ٹیو تا میں ہے کہ وکہ جو بیش گوئ اس آست میں فرمائ گئی تھی وہ بالکل اُسی طرح پوری ہوئ ۔ اسی طرح پر آست حضرات خلفار را شدین کی خلافت کے حق وصح اور مقبول عندا نظر ہوئے کہ بھی دنس ہے کیو کہ اس آست میں انٹر تعالی نے جو دعدہ اپنے رسول اور اسکی اُست سے فرمایا تھا اُسرکا پُورا بُورا ظہور اِنفین حضرات کے ذمانے میں ہوا ۔ اگران حضرات کی خلافت کو حق وصح منہ مانا جائے جیسے دوافعن کا خیال ہے تو پھر قران کا ہر وعدہ ہی کہیں پُولا بین ہوا ۔ اور دوافعن کا بیک ہمنا کہ بیر وعدہ حضرت مہدی کے زمانے میں پورا ہوگا ایک مضحکہ خیر جینے سے اسکاحا صل تو میں ہوا کہ چودہ سو برس تو پوری اُست ذلت وخواری میں دہو کی اُد قرب تیا مت میں جو چٹر روز کے لئے اُن کو حکو مت ملے گی دہی تھومت اس وعدہ سے مراد ہے معا ذائٹہ ۔ حقیقت یہ ہے کہ یہ وعدہ افٹار تعالی نے جن شرائی ایمائی علیا کی بنیاد پر کیا تھا دہ شرائی ا

MMP

عادف القرآن جسكة

سوري النور ٢٠:٢٣

آئیس بھائی بھائی تھے ایک دوسرے کو قتل کرنے گئے۔ یَنوی نے اپنی منزے ما تھ حضرت عبداللہ با مسلام کا بیخطبہ بھائی تھا نے طبہ کے لفاظ پی مسلام کا بیخطبہ بھائی کیا ہے جوانھوں نے حضرت عثمان رما کے خلاف ہم کا میخطبہ بھائے ہوئے حفاظت میں اُسوقت سے شنول تھے جب سے کدر سُول اولئہ صلے اولئہ میں تشریف فرما ہوئے اور آج تک پیلسلہ جاری تھا۔ فدا کی تسم اگر تم نے فتمان کو قت کر دیا تو یہ فرشتے واپس چلے جاویں گے اور کھی کوچی نہ کوٹیں گئے۔ فدا کی تسم اگر تم نے فتمان کو قت کر دیا تو یہ فرشتے واپس چلے جاویں گے اور کھی کوچی نہ کوٹیں گئے۔ فدا کی قسم تم میں سے جوشخص ان کو قت کر دیگا دہ اولئہ کے سامنے دست بڑ میرہ حاصر ہوگا اُس کے ہا تھ نہ ہموں گئے۔ اور کھی جو کہ اسٹر کی تلوا دا بتک میان میں تھی، فدا کی تسم اگر وہ تلوا رہیان میں نہ جا دیگی کیو تک میان میں تھی، فدا کی تب قال کیا جا تا ہے تو اکٹس کے سے تک آئی تو بھی میان میں نہ جا دیگی کیو تک خیفہ کوقت کیا جا تا ہے تو بینیتیں ہزادا دی

چنانچیتن عثمان غنی را سے جو باہمی خوزیزی کا سلساد شرع مواتھا اُمت میں چیتیا ہی رہا ہے۔ اور جیسے الشرتعالیٰ کی نعمتِ استخلاف اور استحکام دین کی نحالفت اور نامشکری قاتلانِ عثمان نے کی تقی اُن کے بعدر وافیض اور خوارج کی جاعثوں نے ضلفار راشرین کی نحالفت میں گروہ بنا لئے۔ اسی سلسلے میں حضرت حیین بن علی خوک شہادت کاعظیم حادثہ بیش آیا۔ نسہ اللالاہ اله لایة وشکر ناجمتہ

ارد التراق التورس التو

قلاصة تفسير

اے ایمان والو (بھارہے ماس آئے کے لئے) بھارے ملوکوں کو اور جوتم میں صریبوع کونہیں سنجے اُن کوتین وقتوں میں اجازت لیٹا جا ہے (ایک تو) نماز صبح سے پہلے اور (دوسرے) جب دو بر کور سونے فیلنے کیلئے) این (زائد) کیڑے آبار دیاکرتے ہوا در (تیسرے) نمازعشار کے بعدیہ تین وقت تمقارے پردے کے ہیں (مینی بیراو قات چو تکہ عام عادت کے مطابق تخلیہ اورا زام کے ہیں) جسين آدمي بيكلفي سے رمنا چا متاہے اور تنهائ ميكسي وقت اعضائے مستورہ بھي كفل جاتے ہيں ، يا ى صرورت سے كھولے جاتے ہيں اسلتے اپنے مكوك علاموں لوٹدليوں كو اور اپنے نايا لنے بچونكومجھا وہ كه بساطلاع اوربغيراحازت لئے موسے ان اوقات ميں تھالے ياس ندآيا كرس اور) ان اوقات كے علاده نه ﴿ توبلاا جازت آنے دینے اور منع نه کرنے بیں)تم یرکوئ الزام ہے اور نه ﴿ بلاا جازت جلے آنے میں) اُن یر کھوالزام ہے دکیونکہ) وہ بکٹرت تھارے یاس آتے جاتے ہے ہی کوئ کسی کے یاس اور کوئ کسی کے یاس رئیس ہروقت اجازت لینے بین سکلیف ہے اور جو بکہ ثیرقت پر دھے بنين بين اسلتے ان مين اپنے اعضا رمستورہ كو چھيائے ركھنا كچھشكل نہيں) اسى طبح الله تعالی تم سے 0 يضاحكام صاف ميان كرتاب اورالشرتعالي جانن والاحكمت والاب اور جوقت تمين سے (مین احمارس کے) وہ اراکے (جن کا اُوریکم آیا ہے) حدّ بلوغ کویہ بنجیس ربعنی بالغ یا قریب بلوع موجاوین ، توان کو بھی اسی طرح ا جازت لیٹا جا ہے جیساان سے انگلے (بینی ان سے بڑی ترکے) توك اجازت ليتي إسى طح الشرتعالي تم سے اين احكام صاف صاف بيان كرتا ہى اورائشر تعالى جا نندالا تحكت والاي وادر (ايك بات يه جاننا جائية كريرده كے احكام بي شرت فلتنه كے وت يرميني وجهال فلته كا عادة احتمال نهوشلا جو) بڑی بورجی عورتیں جنکو رکھی کے بکاح (میں آنے) کی اُمیرنہ رہی ہو رامینی وہ محل میت الله وقالتور ١٠:٢٣ الله وقالتور ١٠:٢٣

معارف القرائ جسالة شم الماري والقرائ جسالة شم

نہیں دہیں یہ تفسیرہے بڑی پوڑھی ہونے کی اُن کواس بات میں کوئ گناہ نہیں کہ وہ اپنے (نائد)

کیڑے دجس سے چہرہ وغیرہ چھپا رہتا ہے غیر محرم کے روبر دمجی) اُ بَار رکھیں بشرطیکہ زینت

(کے مواقع) کا افہار نہ کریں دجن کا ظاہر کر ناغیر محرم کے سائے با لکل ناجا کر ہے بیں مُراداس سے
چہرہ ہتھیلیاں اور لقبول بعض دونوں قدم بھی ، بخلاٹ جوان عورت کے کہ بوجہ احتمال فقنہ اسکے
چہرہ وغیرہ کا بھی پردہ ضروری ہے اور (اگرجہ بڑی بوڑھی عورتوں کے لئے فیرمح موں کے سائے
چہرہ کھولنے کی اجازت ہے سکین) اس سے بھی احتیاط رکھیں تواشے لئے اور زیا دہ بہتی ہورکر کی خے ہرہ کو دورت کے کا مرتب باب مقصود ہے)
اور الشر تعالی مب کچھ شنہ میں مشہور ہے دو سرے بالکل ہی بے بردگی کا سرتب باب مقصود ہے)
اور الشر تعالی مب کچھ شنہ اسب کچھ جا تیا ہے۔

معَارِف ومسَائِل

ستروع سورت میں یہ بیان ہو جیکا ہے کہ سورہ نور کے بیشترا حکام بے حیای اور فواحش کے انسلاد كے لئے آئے ہیں اور ایفیں كى مناسبت سے كھوا حكام آواب معكشرت اور ملاقات باہمى مے بھی بیان ہوئے ہیں۔ مجھ ور توں تے برائے کے احکام بیان کئے گئے۔ ا قارب ومحارم كے لئے خاص آداب معاشرت اورملاقات با بمى كے آداب اس سے بہلے اس سور ا وقات مين أستيذان كافت كم أيت ٢٤- ٢٨- ٢٩ مين احكام استيذان كي عنوان سيبيا ہوئے ہیں کہسی سے ملاقات کو جاو تو بغیراجا زت لئے اُسکے گھرمیں داخل نہ ہو۔ گھرز نانہو بامردا آنے دالا مرد ہو یاعورت سب کے لئے کسی کے گھرمیں جانے سے پہلے ا جازت کو واجب قرار دیا گیاہے عگریدا حکام استیزان اجانب کے لئے تھے جو باہر سے ملاقات کے لئے آئے ہوں۔ آیات مذکوره میں ایک دوسرے استیزان کے احکام کا بیان ہے جنکا تعلق اُن ا قارب ورخارم سے ہے جو عموماً ایک گھرمیں رہتے اور ہروقت آتے جاتے رہتے ہیں ۔ اور ان سے عور توں کا بردہ بھی نہیں ایسے اوگوں کے اسے بھی اگرچہ کھرس داخل جنے کے وقت اسکا حکم ہے کدا طلاع کرکے یا کم از کم قدموں کی آہٹ کو ذرا تیز کرے یا کھانس کھنکار کر گھرمیں داخل ہوں اوریہ استیزان ایسے اقارب کے بئے وا جب بنین تغب ہے میں کو ترک کرنا عمروہ تنزیری ہے تفسیر طہری میں ہے خسن ادا دالذخو فى بيت نفسه وفيد عومانة بكولا له النحول فيكن غير استين ان تنزيها الاختال دونبوليكم منهن عربانة وهواحتال ضعيف ومقتفناه التنزه (مظهري) بيهم توكم سي داخل مونے سے بہلے کا تھا کیل کھرمیں داخل ہو کر تھے ریہ سب ایک جگہ ایک دوسرے کے سامنے رہتے ہی اور ایک دو کے کے پاس آتے جاتے رہے ہیں اُن کے لئے تین خاص اوقات میں جو انسان کے خلو MMO

سورة التورس : - ٢

میں رہنے کے افغات ہیں ایک اوراستیذان کا حکم ان آیات میں دیا گیا ہے وہ ہم ن اوفات میں کی نماز سے پہلے اور دو بہرکو آلام کرنے کے وقت اور عشار کی نماز کے بعد کے اوفات ہیں مان میں محادم اورا قارب کو بہاں حک کہ سمجھدار نابا نغ بیتوں اور عمور کو نڈیوں کو بھی اس استیذان کا بائیہ کیا گیا ہے کہ ان تین اوقات فلوت میں انمیں سے بھی کوئ کسی کی خلو لگا ہ میں بغیرا جا زت کے شہائے کیونکہ ایسے اوقات میں ہم السمان آزا دیے تکلف رہنا چاہتا ہے زائد کیڑے بی آبار دیتا ہے اور کسمی ابنی بیوی کے ساتھ ہے تکلف اختلاط میں شخول ہوتا ہے اِن اوقات میں کوئ ہوشیار بچہ یا گھر کی کوئ کورت یا اپنی اولا دمیں سے کوئ بغیرا جا زت کے اندر آجائے تو لبا اوقات وہ ایسی حالت میں پائیگا جس کے ظاہر ہونے سے انسان شربانا ہے اسکو بخت تکلیف پہنچے گی اور کم از کم الکی بے لکھنی اورا کام میں خلل پڑنا تو ظاہر ہی ہے اس لئے آیا ہے اسکو بخت تکلیف پہنچے گی اور کم از کم اسکی بے لئے اورا کام آئے ہیں کوئ کسی کے پاس بغیرا جا زت کے نہ جائے ۔ ان اوکام کے این کہ ایک میں گورہ میں اُن کے لئے خصوصی میں اُن کے لئے خصوصی میں اُن کے لئے خصوصی میں کہا میں ہیں ہونے اورا کام کے بیاں بغیرا جا زت کے نہ جائے ۔ ان اورا کام کے بیاں کہ کے بیا س بغیرا جا زت کے نہ جائے ۔ ان اورا کام کی کے بیاس بغیرا جا زت کے نہ جائے ۔ ان اورا کام کی کے بعد بھر رہ بھی فرمایا کہ

لکین قلیکاڈ وکر قلیفی رُجُنا می بعد کھی ، لینی ان وقتوں کے علاوہ کوئ مضائقہ بنیں کہ ایک دوسرے کے پاس بلاا جازت جایا کریں کیونکہ وہ اوقات عموماً مرشحض کے کام کلج میں شغول ہونے اور اعضائ مستورہ کو جھیا ہے رہنے کے ہیں جنیں عادۃ اُدی بیوی کیسا تھا فتالاط

المحى نبس كرما -

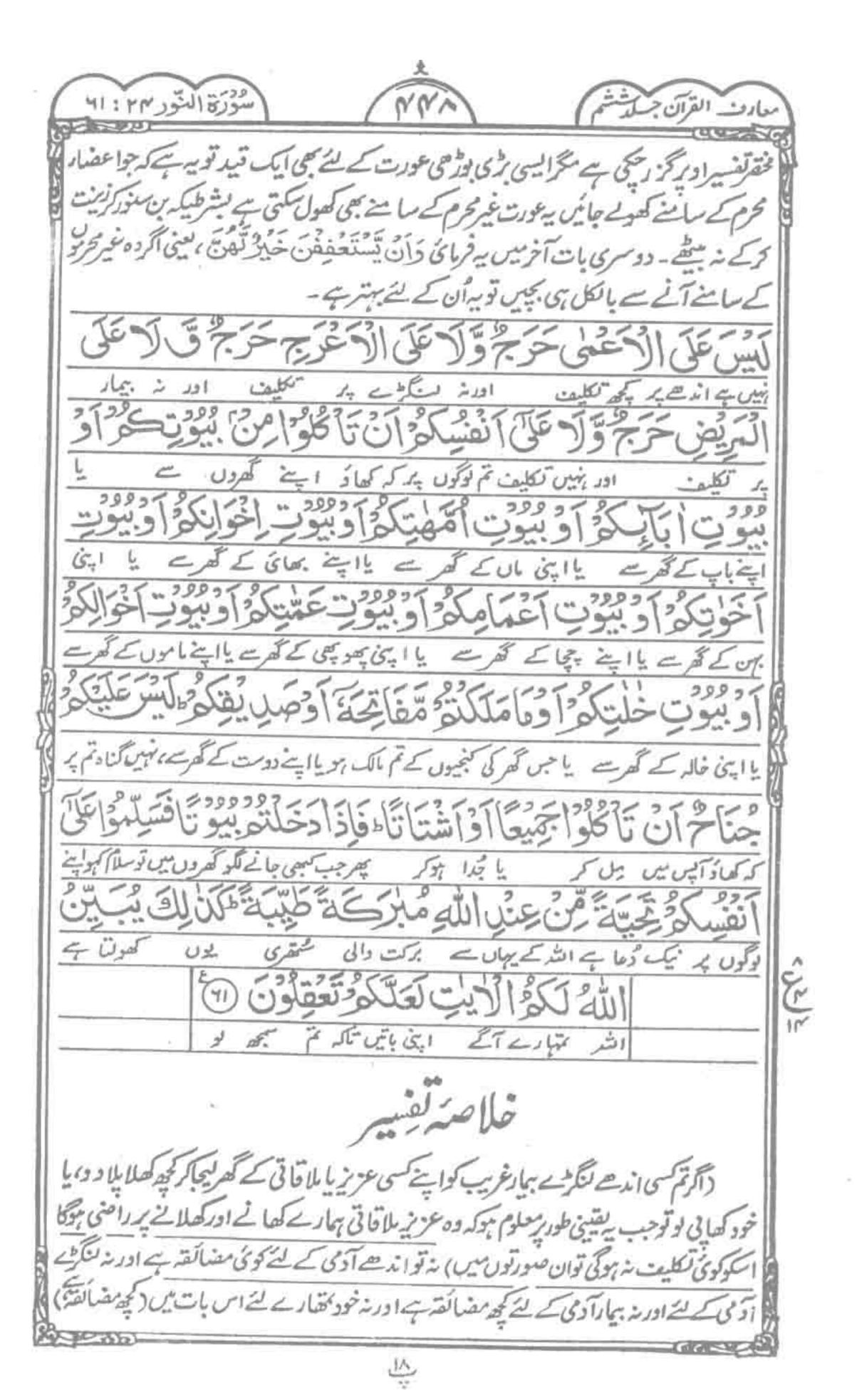
عادف القرآن جر

معارف القرآن جر کششم الموس محکول غلام جو بالغ ہو وہ تو مشرعاً اجبنی غیر محرم کے حکم میں ہے ۔ اس کی آ قاا در مالک عورت کو بھی اس سے بردہ کرنا واجب جبیباکہ بہلے بیان کیاجا جبکا ہے اس کے بہاں اس نفظ سے مُراد کو ٹریاں یا ممکوک غلام جو بالغ نہ ہو وہ ہے جو ہر دفت گھری اس کے بہاں اس نفظ سے مُراد کو ٹریاں یا ممکوک غلام جو بالغ نہ ہو وہ ہے جو ہر دفت گھری

آئے جانے کے عادی ہیں۔

مستدا ہے اسمیں عالی و فقہا رکا اختلاف ہے کہ بیر فاص استیان افادب کے لئے مواجہ ہے اور ہے اور ہے ہے کہ بیر فاص استیان افادب کے لئے واجہ ہے باسخوج ہوگیا۔ جمہور فقہا رکز دیک بہتے ہے ہوں ہوگیا۔ جمہور فقہا رکز دیک بہتے ہے ہوں ہوگیا۔ جمہور فقہا رکز دیک بہتے ہے ہوں ہوتے ہوں کے اسطے بھی (خطبی) بہتے ہوں ہوتے ہوں کے اسطے بھی (خطبی) کیکن یہ ظام آدمی فلوت جا ہم اسکے وجوب کی علت اور وجہ وہ ہے جوا دیر بیان ہوتی ہے کہ ان تین ا ذفات میں عام آدمی فلوت جا ہم ہا ہوتا ہے احضا کی معنورہ بھی فلا ہوتے ہیں۔ اگر کچھ لوگ سکی احتماط کر لیس کہ ان اوقات میں بھی اعضا کی معنورہ بھی فلا ہوتے ہیں۔ اگر کچھ لوگ سکی احتماط کر لیس کہ ان اوقات میں بھی اعضا کی متولا ہوتا ہے احضا کی متولا ہوتا ہے اور ہوتے ہوتا احتمال اور ہوتے ہوتا ہے اور ہوتے ہوتا ہے اور ہوتے ہوتا ہم ہوتے ہوتے ہم ہوتے ہم ہوتے ہوتے ہم ہوتے ہم ہوتے ہم ہوتے ہوتے ہوتے ہم ہوتے ہوتے ہم ہوتے ہوتے ہوتے ہم ہوتے ہوتے ہم ہوتے ہوتے ہم ہوتے ہم ہوتے ہوتے ہوتے ہم ہوتے ہوتے ہم ہوتے ہوتے ہوتے ہم ہوتے ہوتے ہم ہوتے ہم ہوتے ہم ہوتے ہم ہوتے ہم ہوتے ہم ہوتے ہوتے ہم ہم ہوتے ہم ہم ہوتے ہم ہوتے ہم ہوتے ہم ہوتے ہم ہم ہوتے ہم ہم ہوتے ہم ہوتے ہم ہوتے ہم ہوتے ہم ہوتے ہم ہوتے ہم ہم ہو

كرنے دالے لوكوں كا يھ عذر سيان كرديا-



سُوْرَةُ النّور ١٢: ٢١

کہ (خواہ خودیا تم مع اُن معدورین کے سب) اپنے گھروں سے (جن میں بی بی - اولاد کے گھر بھی اُسکے) کھانا کھالو یا (اُن گھروں میں جنکا ذکرا گے آتا ہے کھالو، بینی نہ تم کوخود کھائے میں گناہ ہے اور نہ اُن معذورین کو کھا گھی ۔ اسی طرح محقارے کھلا دینے سے اُن معذورین کو کھی کھا لینے میں کوئ گٹناہ خیب اور وہ گھریہ ہیں ۔ مثلاً) اپنے باپ کے گھرسے (کھالو کھلادو) یا اپنی مادُن کے گھر سے یا اپنی بھوتی یا اپنے بھائیوں کے گھروں سے یا اپنی بھوتی کھروں سے یا اپنی خالاوں کے گھروں سے یا اُن گھروں سے یا اُن گھروں سے یا اُن گھروں سے بیا اُن گھروں سے کھرا سے معالی کھروں سے بیا اُن گھروں سے بیا اُن گھروں سے کہ کھروں سے کہ کھروں سے اُن گھروں سے بیا اُن گھروں سے کہ کھروں سے کہ کھروں سے اُن گھروں سے بیا اُن گھروں سے کہ کھروں سے کہ کھروں ہے کہ کھروں کے گھروں سے کہ کھروں کے گھروں کے کھروں کے کھروں کے کھروں کے کھروں کے کہ کھروں کے کھروں کے کھروں کے کہ کھروں کے کہ کھروں کے کھروں کے کہ کھروں کے اور (بوج اسپر ٹواب طیخ کے کہ کھروں کے کہ کھروں کے اسی طرح النٹر تعالیٰ تم سے دلینے) احتکام بیان فرمانا ہے تاکہ مسجھو (اور کھل کرو) ۔ اسی طرح النٹر تعالیٰ تم سے دلینے) احتکام بیان فرمانا ہے تاکہ مسجھو (اور کھل کرو) ۔

معارف ومسائل

گھروں میں دخل ہونے کے بین کے ایکی آیتوں میں کے گھریں داخل ہونے سے پہلے استیزان معنی احکام اور آ دابِ معاشرت کرنے کا حکم آیا ہے۔ اس آیت میں وہ احکام وا داخیکوریں

جواجازت طنے پرگھرمیں جانے کے بورستی یا واجب ہیں۔ اس آبت کا مفہوم اوراسمیں مذکورہ
احکام کو سیجھنے کے لئے پہلے ال حالات کو حلوم کر لینا منا سہ جن ہیں یہ آبت نازل ہوئی ہے۔

قرآن کریم اوررسول الشیصطا دشرعکیہ کمی ما تعلیمات میں حقوق العبادی حفاظت ورعایت کے لئے
جہنی کا کیدات آئی ہیں اُن سے کوئ مسلمان بے غیرنہیں کسی دوسرے کے مال میں بغیرا سکی اجازت کے
کوئ تصرف کرنے پہنوت وعیدی آئی ہیں۔ دوسری طون الٹر تعالی نے اپنے آخری رسول صلا الٹر عکیہ کی صحبت کے لئے الیے خوش نقیدی کہ بی اورائے کہ فوش کو اُلے اور ہر حکم کی تعمیل میں ابنی پوری تو آنائی صرف کرتے تھے قرآئی تعلیمات بیگل اورائے ساتھ ڈٹول کے
مسلم اسٹر عکیہ کم کی تعمیل میں ابنی پوری تو آنائی صرف کرتے تھے قرآئی تعلیمات بیگل اورائے ساتھ ڈٹول کی اُلی مونی کرتے تھے کہ اُلی تعلیمات میں اور کے مالی میں اُن کی مرضی دا جازت کے بغیرا دفی قسم کا تصرف
گوارانہ ہونا کسی کو او دفی سی تعکلیف بہنچانے سے پر ہیڑ کرنا اورائسمیں تقوی کے اعلی معیاد پر
قائم ہونا سی کو او دفی سی تعکلیف بہنچانے سے پر ہیڑ کرنا اورائسمیں تقوی کے اعلی معیاد پر
قائم ہونا سی کو او دفی سی تعکلیف بہنچانے سے پر ہیڑ کرنا اورائسمیں تقوی کے اعلی معیاد پر
قائم ہونا سی کو او جہ سے آبیت فرکورہ کے احتکام نازل ہوئے۔ حضرات مفسرین نے پر سی جو اقعات

معارف القرآن جسكتشم

بھے ہی کسی نے انمیں سے سے کوشان نزول قرار دیا کسی نے کسی دوسرے واقعہ کو محرصی بات یہ ہے ان اقوال میں کوئی تضاد نہیں، یر مجوعهٔ دا قعات ہی اس آیت کا شان نزدل ہے۔ واقعات یہ ہیں۔ (1) امام بنوئ نے حضرت سعیدین جبراور صناك ئر تفسیر سے نقل کیا ہے کہ دنیا کی عرف عام اد اكثر توكوں كى طبائع كاحال بير ہے كەنتكرا ہے اندھے اور ہمارا دى كىيا تھ مبھو كركھا نيسے تھن كرتے ہے اور نابیند کرتے ہیں حضرات صحابیس سے جوالیسے معذور تھے اُن کو بیرخیال ہواکہ ہم کسی تعییا تھے کھالے میں شر کانچ نکے توشا پراسکو تکلیف ہواسکتے ہے لوگ تندرست آدمیوں کیسا تھ کھانیمیں سرکت گزیز کرنے لگے نیپزنا مبنیا آدمی کو بیر بھی فکر پروی کہ جب جند آدمی کھانیمیں شریک ہوں تو نقاضائے ما ومرقت يرسي كركوئ متر كيفوسر ساز ماوه شركهائ سب كوبرا برحصه ملے اور ميں ثابتيا توقي تی وجہ سے اسکاا ندازہ نہیں کرسکتا حمل ہو کہیں دوسروں سے زیا دہ کھا اوں اسمیں دوسروں کی حق تلفي موكى - لنگرشے آدمى نے خيال كياكم عام تندرست كوكوں كي طبع بيھ منہيں سختا دوآدى كى عكرلتيا بون كهاني يردومرون كسيائه ببيقونكا تومكن بي أنكونكي ا وركليف بيش آئے، أي اس غايت اختياط ين ظاهر به كنه خود الكوسطى اور كليف سين في تقى السلط بيرايت نازل موى جس بي أن كو دوسردن كبيسا تقريلكر كهاني اجازت اورايسي دقيق احتياط كوجهوار نيركي تلفين فرمائ جس سنگی میں بڑجا میں۔ اور لغوی نے بروایت این جربر حضرت این عباس سے ایک دوسرا دافعہ تقل کیا ہے جو واقعہ مذکورہ کا دوسرائے ہے وہ یہ کہ قرآن کریم کی جب بیاآیت نازل ہوئ لانتا اُگاؤْاَامُخَالِکم بَنْيَكُورٌ بِإِنْسَاطِلِ، مِعنى مُركِها وَأيك دوسرك كامال ناحق طورير-تولوگوں كوا ندھ، منگر الماريولو مے ساتھ ملکر کھانے میں بیرتر قد بیش آنے لگا کہ ہمار تو عادۃ کم کھاتاہے، نابینا کو کھانے کی چیزوں ہی بیامتیاز بنين بولاكدكونسى چيز عده ب منگراے كو اپن نشست بوار ندم و نے كے سبب كھانے ميں تكلف ہو تاہے تو عكن بے كربيد لوگ كم كھائيں ہمائے ياس زيادہ آجائے توان كى حق تلفى ہوئ كيو تكمشترك كھانيميں سكل حصّه مسادی دونا چاہئے۔ اس پر بیآت نازل دی جسی اس تعمق اور نکلف میں پڑنے ہے اُن کو آزاد كردياكياكەسب بلكركھاؤمعمولى كمىبىشى كى فكرنەكرد-اورسىيدىن سىپتى نے فرماياكەشلان جېسى جهاد وغزوه كم لئة جات تواين كهرول كى تنجيال ان معذورول كي سيرد كردية تق ادريه كهديت تقى كد كلم میں جو کھیے ہے وہ تم لوگ کھایی سکتے ہو مگر ہے لوگ اس احتیاط کی بنا بران کے گھروں میں سے کچھ نے کھاتے كه شايدان كى منشا كيخلاف خرج موجائے اسپريه آيت نا ذل بوي مسند ترادي بسندي محترت عائشة سيحيى ميئ منمون نقل كيا م كرجب ول الشرصال الشرعك عرده مين تشريف يجاتے توعام صحافيكي دلي خوارش بيم وتي تقي كرسب أيلي رفاقت مين شر كيب جها ديرون اورا بينه مركا نون كي كنجيال ان غرب معدودین محسیرد کردیتے تھے اور اُن کو اجازت دیتے تھے کہ ہمانے ہیجھے آپ ہمارے گھروئیں جو کھے ہے

سورت النورس: كاآيا ہے دینی اینے دوست كے گھرسے بھی كھائے بينے ميں كوئ حرج نہيں ۔ یہ حارث بن عمرو كے اقتدم كوايت كفراوركفروالون كى ميكراني سيردكري، جب حارث والس آئے تو د مكھاكدمالك بن زير بہت صنعيد زود إوا الما الما وجد دريافت كرني يا تفول نے كهاكيس نے آكے كفرسے كھ كھانا آتے سخص مناسبي اس آیت کے نزول کا سیب ہوئے ہیں۔ مله: جيساكه اوير بيان بوجيكا ہے كہ جن گھروں ميں سے بغيراحازت خاص كے كھا لے بينے لی اجازت اس آیت میں دی گئی ہے اسکی بٹار اس برہے کہ عرب کی عام عادت کیمطابق ایسے فریبی رشتر داردن میں کزی مکلف بالکل نر تھا ایک درسرے کے گھرسے کھے کھاتے میتے تو گھرولے کو کسی ن تكلیف یا ناگواری نه بوتی تفی بلکه ده اس سے خوش بوتا تھا۔ اسی طرح اس سے بھی که ده اپنے سے ى معذور بيارسكين كوبھى كھلاك - ان سب جيزونسى كوصراحةً اجازت مُرى ہؤ گرعادةً اجازت كفى اس علّتِ جوا زست مّا بت ہواکہ جس زمانے یا جس مقام ہیں ایسار واج نہوا در مالک کی اجازت مشکوکہ م ووہاں بغیرصر سے اجازت مالک کے کھانا بینا حرام ہے۔جیساکہ آجکل عام طور ریزیہ عادت رہی ن اسلئے آجکل عام طور براس اجازت برعل کرناجا کر نہیں بجز اسکے کہ کسی دوست عزیز کے متعلق کسی کو يفينى طورير بيرثابت موجائ كه وه اسك كهاني ييني يا دوسرون كوكهلاني بلاني سيكوى تكليف يا ناكوارى محسوش كريكا ملكنوش بوكا توفاص اسح كهرس كهاني يسناس اس آيت كيفتفني يرعل جائز ہے۔ ستله: مذكوره بيان سے يه مين ثابت موكياكه يه كهنا يح بنين كه يكم ابتداراسلام مين تقابير منسوخ ہوگیا بلکہ حکم اول سے آج تک جاری ہے البند شرطاسی مالک کی اجازت کا یقین ہے جب يرنبوتوده مقتصنا في آيت مين داخل بي نبين - (مظهري) ستله واسي طيح اس سے بيري ثابت ہوگيا كہ يہ كم صرف ال محضوص رشته داروں ہى بين تحصرت بلكدد وسريضض كم بارسيس أكربير بقين مؤكدات كارت كهاني بين اور كهلاني بلاخ كى اجازت ہے ده اس سے خوش بوگا اسكوكوئ تكليف نديہ ہے گى تواسكا بھى بىچ كى تواسكا بھى بىچ كى ہے (مظھوى احكام مذكوره كاتعلق أن كامون سيجوسى كركمين باجازت داخل مونے كے بعدجائز ياستحب ان كامون مين رامستلكها في يعيف كاتفاأس كويسك ذكرفر ما ديا-



سورة النورس) کیے کام برجمع ہوتے ہیں جس کے لئے مجمع کیا گیا ہے (اور اتفاقاً و ہاں سے کہیں جا سکے عنرور پر باجاتے (اے پیغیبر) جولوگ آپ سے دالیے مواقع پر)اجازت لیتے ہیں بس وہی التربیان عے رشول برایان رکھتے ہیں را کے ایسے توگوں کواجازت دینے کا بیان ہے) توجب بیر اہل بمان لوگ (ایسے دواقع پر) اینے کسی کام کے لئے آپ سے (جانے کی) اجازت طلب کریں توائیں آپ بس کے لئے (مناسب بھیں اوراجازت دیٹا) جا ہیں اجازت دید ماکریں (اورجس کو مناسب مذ مجھیں اجازت نہ دیں کیونکہ ہیں ہوسکتا ہے کہ اجازت طلب کرنے والے اُس کام کو بنروری سمجھتے بهدن جس محے گئے اجازت طلب کرنے ہیں اور وہ واقع میں عزوری ندہویا عنروری موگراسکے جانے ہے اُس سے بڑا کوئ صرر پیدا ہونیکا خطرہ ہواسلے اجازت وعدم اجازت کا فیصلہ آنخصرت عالته عکتیم کی صوابد مدیر حصور و باگیا) اور (ا جازت دیکر بھی) آپ اُن کے لئے اللہ تعالے سے مغفرت کی دُماکیا کیجئے دکیونکہ اُن کا یہ رخصت جاہنا اگرجہ قوی عذرہی کیوجہ سے ہو مگرا سمیں دنیا . دین برمقدم رکھنے کی صورت تو لازم آئی ہے جمیں ایک کو تا ہی کا شائبہ ہے اِسکے لئے آپ کی دُعیارِ غفرت در کارم - دوسرے بیر بھی مکن ہے کہ اجازت جائے والے نے جس مذرو صرورت کو توی بحدكراجازت لى ہے اسمیں اُس سے خطار اجتہا دی ہوئی ہو کہ غیر دری کو ضرور سمجھ لیا اور پیخطار جہا الیسی جوکہ فدراغور و تاکل سے رفع ہوسکتی ہوتھ الیسی صورتمیں غور د فکر کی کمی بھی ایک کو تاہی مساستغفار كى صرورت موى علا شبهه الترتعالي تخشفه والامهر بان ب (چومكداك كي نيت اليهي تقي سلتے ایسے دفائق پر مواخذہ نہیں فرما تا ہم توگ رسول (صلے الشرعکیہ کم میلائے کو (جیق کسی املامی ضرورت کے لئے تنکوچے کریں) ابیا (معمولی ملانا) مت مجھوجیساتم میں ایک درکے کو ملالیتا (كه جاب آيا يا أنه آيا بھرآ كرتھى حب تك جاما مبتھا جب جابا أنھ كر بے اجازت جلديا۔ رسول كا بلاناايسانهين ملكه أيح اس علم كي تعميل واجب بيدادر بحاجازت وايس جاناحرام اور اكركوي بلا جا ذست جيسلا كيا تويه توممكن سيحكه رشول الشرصلےالتدعكتية لم سے أسكاجانا مخفي رہ جاھے كئين یہ باد رکھوکہ)اوٹٹرتعالی اُن توگوں کو (خوب جا تیا ہے جو (دوسرے کی) آڑیں ہوکرتم میں سے مجلسر نبوى ي كهسك جاتے بي توجولوك الشرك علم كى رجوبواسطه رسول صلے الله عكيلم بينجاي كف كرتے بيں أن كواس سے درنا جا ہيے كدان برردنيا ميں) كوئ آفت آن بڑے باأن برزا خرت ي کوئ در دناک عذاب نازل ہوجامے (اور بیرسی مکن بحکہ دنیا وآخرت دو بوں میں عذاب ہو اوربیمی) یا در کھو کہ جو کھو آسمانوں میں اور زمین ہے سب خدای کا ہے اللہ آخالے اُس حالت کو مجی جا تیا ہے بیں پرتم (اب) ہو اوراس دن کو بھی جس میں سب اُسکے یاس (دویا رہ زندہ کرکے)

丛

سوري التورس، ٢٣ فبْلاد سِكَا جُو كِيهِ أَيْمُول مُعِكِياتُهَا (اور تُصّاري موجوده حالت ادرروز تبامت ي كي يحضيص نبين) الترتعاك (تو)سب يحفرجاتاب نى كرى جلى النزعكنية كم كى بحب خصوصاً كايات مذكورين ووحكم ويُسكِّر بين - يهلايد كرجب شول الم ا در عام معاشرت محیفض آ داف احکام صلے اللہ عکیہ لم کوکوں کوسی دینی جہا د وغیرہ کے لئے جمع كرين تومقسقنائے ايمان پہ ہے كەسب جمع ہوجا دين ادر كھراك كى محبس سے بغيراك كى اجا زت مهٔ جائیں۔کوئی صرورت بیش آئے توحصنورصلے اسٹرعکتی ہے اجازت حاصل کرلیں اوراسی کھنے صليانة عكتيهم كويه بدايت سيحكه كوئ خاص حرج اورصرونت ننهو تواجازت ديدياكري إسي ضمن میں اُن منا نقین کی ندمت ہے جو اس لقا صٰائے ایمان کے خلاف بدنا می سے بچنے کے لئے حاصر تو موجاتے ہیں محر مھرسی کی آڑ لیکرھیے سے کھسک جاتے ہیں۔ بیرآیت غزوهٔ احزاب کے موقع برنازل دی ہے جبکہ شرکین عرب اور دوسری جاعتوں کے متىده محاذ نے مكيبا ركى مدمنير برحكركيا تفار يسول الشرصليا ولله عكي منے بمبشورہ صحابہ أن كے حملے سے بحاؤ كيليخندق كعودى تقى اسى ليئاس جهاد كوغز وهُ خندق يمي كهاجانا ہے بيغزوه تول شنجري بن إدار وظ بيهقى اورابن اسحاق كى روايت بين ب كداسوقت رسول كريم صلے الله عكيد م بزات خودا ورتما صحاب خندق کھونے میں مصروب کار مختے محرمنا نقین اول تو آنے ہیں تی کرتے اور کھرآ کر بھی حمولی س كوكية ادديهر تحيير سے غائب موجاتے تقے اسكے خلات تونين سے سبحت كيسا تھ لگے ہتے ادركوى بجورى اورضرور بين أتى تواتخضرت صلى الأعكيم ساعاذت كياطاتية تصاسيرية أيت نازل يدى (مظهرى) ا يك سوال وجواب اس آيت سے بيعلوم ہوتا ہے كہ انخضرت صلا الله عليه لم كى مجلس سے بغيراً يكى اجازت کے حلاجانا حرام ہے حالا نکہ حالہ کرام کے بیٹیاردا قعات ہیں بنیں وہ آیکی محلس میں ہوتے او بمرحب جاست حلي جاتے تھے اجازت لينا ضروري نہ سجھتے تھے۔جواب مير سے کہ بير عام بحلسوں محم نهين بلداموقت كالمحبب رشول لشرصلا لشرعك ليلم فيا تكوسي ضردرت سے جمع كيا بهو جيساكه واقع خندق مين بواتقا-اس تفصيص كيطرف خود آيت كے لفظ عَلى المريح الميم ميں اشاره موجود ہے-امرعًا في سي كيا مُرادب السين اقوال مختلف بين مرداضع بات يه بي كدا فرجام سيمراد وه كا جس کے لئے رسول اللہ صلے اللہ علیہ کم توگوں کو جمع کرنا ضروری تجھیں اورکسی خاص کام کے لئے جمع فرمادين جيے غزوهُ احراب ميں خندق كھود نے كاكام تھا (قرطبى منظيرى) يتيكم انتحضرت صلى الشرعكية لم كى ما تفاق فقها رجو نكه يتكم ايك بنى اوراسلامى ضرورت كے لئے جارى كيا مجلس كے ماتھ مخصوص كيا عام كيا ہے اورائيسى صرورتي برزمانے ميں ہوكتى إي اسلے انخضرت

سُورَة النور ٢٠: مواسكاا دراسي السي على كالجعي يهي هم بهكده وه سب كوجع بونيكا عكم دي تواسي تق ا در دالیس جانا بغیر اجا زت نا جا زہے (قرطبی منظیری ۔ بیان انقران) ا دریہ کا ہرہے کہ خو د آتھ کھر، صلطالته عكتيهم كى مجلس كے لئے يہم زيا دہ مؤكد اوراسكى مخالفت كھلى شقا دت ہے جيسے منا نفتين صادر ہدئ ۔ اور اسلامی آ د اب معکشرت کے لحاظ سے بیٹھ باہمی اجتماعات اور عام مجلسوں کے تتحب ا دُرستحسن صرور ہے کہ حب مسلمان سی محلس میں سی اجتماعی معاملہ میں غور نے یا علی کرنے کے لئے جمع ہوئے ہوں توجب جانا ہو میر مجلس سے اجازت لیکرجائیں۔ دوسرا محكم آخرى آيت بين بير د باكيا ب لا بينكادُ ادْعَاءُ الرَسُوْلِ بَيْنِكُوْ الآيَ ى ايك تفسيرتو وه ہے جوا ويرخلاصهُ تفسير ميں بيان كى گئى ہے كە دُمناً ﷺ الرَّسُولِ سے مرادرتُو والشرعکتيهم کالوگوں کوملانا ہے (جونحوی قاعدہ سے اضافت الی انفاعل ہے) ادر معنی آیت ت صلے اللہ عکتیہ کم حب تو کوں کو ملائیں تواسکو عام توگوں کے بلا نے خیارے نہ تھے ہرجاباہے۔ آبیت کے میاق دمیاق سے پیفسیرزیا دہ مناسبت رکھتی ہےاسی لئے القرآن میں اسکواختیارکیا ہے۔ اوراس کی ایک دوسری تف این کشیرا در قرطبی وغیرہ نے بیلقل کی ہے کہ دُعاءً السَّسول سے مُرا دلوگوں کا موصى كام كے لئے بيكارنا اور تبلانا ہے (جو تحوى تركيب ميں اضافت الى المفعول ہوكى)۔ اس تفسیری بنادیر معنی آیت کے بیم و ننگے کہ جب تم رسول الشرصالي الشرعکتیرم کوکسی صرورت سے بلاکہ یا مخاطب مرو توعام لوگوں کی طرح آکے نام لیکریا ہے تا نہوکہ بے ادبی ہے بلکہ تعظیمی لقا كے ساتھ ياس فول الله يا نبحل لله وغيره كهاكرد -اسكاعال دسول الشرصيا الشرعكية لم كى تغطيم وتوقير كالمسلمانون برواجب بهونااور سرايسي جيز سے بحیا ہے جوا دب کے خلاف ہو باجس غضرت صلاالترعكيهم كوتكليف مينج بيهم ايساروكا جيسورة جرات بين اسي طرح كريمكم ويبي كنيان مثلاً لَا يَجْهَةُ الدَّ بِالْقُولِ كِي هُمِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضِ العِنى جب أنخصرت صلاالله عكيه سے بات کرو توا دب کی رعایت رکھو ، ضرورت سے زیادہ اویجی آوازسے یا تیں مذکر وجیسے لوگ آبس میں کیا کرتے ہیں اور مثلاً یہ کہ حب آپ گھر میں تشریف رکھتے ہوں تو باہرسے آواز دیجر نہ بلا وُ بلكه آيك بالهرتشريفِ لأبيكا منطار كروانَ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ قَدْلَاءِ الْحَجْرُاتِ بيل ي كابيانَ عَ تنبيه اس دوسري تفسيرس ايك عام ادب بزرگون اوربراون كا بهي معلوم بهواكا بين زرگون رُدن وأن كانام كے كريكارنا اور بلانا كادبی سيعظيمي لقب سے مخاطب كرنا جاہئے .



بڑی مالی شان ذات ہے جس نے یہ فیصلہ کی کتاب (بینی قرآن) اپنے فاص بندے (محمل النوعلیم) پرنازل فرمائی تاکہ وہ تمام "دنیا جہان دالوں کے لئے (ایمان نہلانے کی صورت میں عذاب لئی سے) ڈرانے دالا مور، ایسی ذات جس کے لئے اسما نوں اور زمین کی حکومت حاصل ہے اوراس نے کسی کو (اپنی) اولاد

معارف القرآن جسائد شم

قرار نہیں دیا اور نہ کوئ اُسکا متر کیے ہے حکومت میں اور اُس نے ہر چیز کو پیداکیا بھرسپ کا الگ الگ الگ اندا ذرکھا (کہسی چیز کے آثار و خواس کھے جی کسی کے کھے جی اور ان مشرکین نے فداکو چھڑ کرا در لیے معبود قرار دے لئے جی جو رکسی طرح معبود ہدنے کے قابل نہیں کیونکہ وہ کسی چیز کے خالق نہیں اور بلکہ وہ خود محلوق جی اور خود اپنے لئے نہ کسی نفقعان (کے رفع کرنے) کا اختیار رکھتے ہیں اور نہ کسی نفع رکے عاصل کرنے) کا اور نہ کسی کے مرنے کا اختیار رکھتے ہیں (کہسی جا ندار کی جان نوکال سکیں) اور نہ کسی کے جینے کا (اختیار رکھتے ہیں کہسی ہے جان میں جان ڈال دیں) اور نہ کسی کو (قیامت میں) در دربارہ زنرہ کرنے کا (اختیار رکھتے ہیں کہسی ہے جان میں جان ڈال دیں) اور نہ کسی کو (قیامت میں) در دربارہ زنرہ کرنے کا (اختیار رکھتے ہیں کہسی ہے جان میں جان ڈال دیں) اور نہ کسی کو دقیامت میں)

معارف ومسائل

خصوصیات سورت اید بیوری سورت جمهور مفسری کے نزدیک تی ہے۔ حضرت ابن عبّان و قتادہ نے تین اَیّتوں کے متحد اور بعض حضرات نے پیجی کہا آگا کہ بیٹری آبیوں کے متحد اور بعض حضرات نے پیجی کہا آگا کہ بیٹری آبیوں کے مصابین کا قساری کو کہا کہ کہ بیٹرورت مدنی ہے اور اسمیں بچھ آبیات محتی ہیں (قرطبی) اور خلاصہ اس سورت کے مصابین کا قساری کو کیم کی عظمت اور درسول اللہ حصلے اللہ عکمی خیوت ورسالت کی حقانیت کا بیان اور دشمنوں کیطرونہ

سے اسپر حواعراضات تھے اُن کا جواب ہے۔

تَکِارُلَقَ ، بُرکت سے تقیق ہے۔ برکت کے معنے خیر کی کثرت کے ہیں۔ ابن عب ش نے نسولیا کہ معنی آیت کے یہ بین کہ ہرخیرو برکت اللہ توائی کی طرف سے ہے۔ دفیقان ، قراآن کریم کالقب ہے تغوی معنے اسے تمیز اور قرق کرنے کے ہیں۔ قراق چونکہ اپنے واضح ارشا دات کے ذرایے ہی وباطل میں تمیز اور قرق برائے ہی واضح برا شارات کے ذرایے ہی وہا اللہ برا اللہ ب

ما دّه وغير كايك جيركوعدم سے وجود ميں لايا جائے وہ ين على مرد-

مخلوقات میں سے مراکب چیز اور تقدیر کامفہوم یہ ہے کہ جس چیزکو کھی ہیدا فرمایا اسکے اجزاء کی شا میں خیاص خاص محکتیں میں سب پیدا کئے جس کام کے لئے اس چیز کو پیدا کیا گیا ہے آسمان کی ساخت اسکے اجزاء ترکیبی آگی



ادریہ کافرنوگ (دسول النوصلے الله علیہ می نسبت) یوں کہتے ہیں کہ اس رسول کوکیا ہواکہ دہ (ہماری طرح) کھانا ربھی کھانا ہے اور (انظام معاش کے لئے ہماری ہی طرح) بازاروں ہیں جلتا پھرتا ہے (مطلب یہ ہے کہ دسول زیمینجبرانسان کے بجائے فرشتہ ہونا چاہئے جو کھانے

IA

٩:٢٥ الفرقان ٩:٢٥ الفرقان ٩:٢٥

معادف القرآن جسيد شنم وي احتيال

پینے دغیرہ کی ضروریات سے تعنیٰ ہوا در کم ا تنا تو ضروری ہونا چاہئے کہ رسول اگر خود فرشتہ

مہیں ہے تواسکا مصاحب مشیر کوئ فرشتہ ہونا چاہئے اسلئے کہا کہ) اس (رسول) کے پاس کوئ

فرشتہ کیوں نہیں جیجا گیا کہ وہ اسکے ساتھ رہ کر (لوگوں کو غذا بالہٰی ہے) ڈراتا (اوراگریہ جی منہوتا

تو کم از کم رسول کو اپنے کھانے پینے کی ضروریات سے توبے فکری ہوتی اس طح) کہ اسکے پاس (غیب
سے) کوئ خزانہ آب بڑتا یا ایکے پاس کوئ باغ ہوتا جس سے یہ کھایا دبیا) کرتا - اور (مسلانوں)

یہ نبوت کا دعویٰ کرتے ہیں کہ (جب انکے پاس نہ کوئ فرشتہ ہے نہ خزانہ نہ باغ ، اور کھر بھی

یہ نبوت کا دعویٰ کرتے ہیں تو معلوم ہوتا ہے کہ ان کی عقل میں فتورہے اسلئے) تم توگ آب کے

سلوبالعقل آدی کی راہ پر جل رہے ہو - دا سے میں صلالہ علیہ کم) دیکھئے تو یہ ٹوگ آپ کے

سلوبالعقل آدی کی راہ پر جل رہے ہو - دا سے می صلالہ علیہ کم) دیکھئے تو یہ ٹوگ آپ کے

سلوبالعقل آدی کی راہ پر جل رہے ہیں سو (ان خوا فات سے) وہ (بالکل) گراہ ہوگئے تھر

معارف ومسائل

کفارد مشرکین جوا مخضرت صلیا دین عکتیکم کی نبوت اور فران برا عنزاضات کیا کرتے تھے یہا سے اُن کے اعتراضات او بھر جوایات کا سلسلہ شروع ہو کر کچیے دُور تک چلاہے۔

پھکلا\ عُکَوْافِ مِن عَمَاکُرُوْانَ کُویَادَ اللَّی کِوْدِ مِن کِوانِی کِوْدِی سے نازُلَیا ہواکلام نہیں بلکہ آپ نے اس کو خودی جبوٹ گھر لیا ہے یا تجھلے لوگوں کے قصے بہود و نصاری و غیرہ سے شن کرا ہے صحابہ اسکا موالے ہیں اور جو کہ خوداً فی ہیں، نہ کومنا جانے ہیں نہ پڑھنا اسلے ان کیمے ہوئے قصوں کو صبح شام سُنے دہتے ہیں تاکہ وہ یا دہو جادیں بھر کوگوں کے سامے جاکر یہ کہریں کہ یا لئر کا کلا اس جو اصل میہ ہے کہ یہ کلام خودا سکا شاہدہ کہ اس کی ناڈل کر سوالی وہ ذات یا حق تعلی اس جو اس جو آسمانوں اور زمین کے سب خفیہ رازوں سے واقعت و باخریہ اس کے ناڈل کر سوالی وہ ذات یا حق تعلی کی ہے جو آسمانوں اور زمین کے سب خفیہ رازوں سے واقعت و باخریہ اس کے ناڈل کر سوالی وہ ذات یا حق تعلی کی ہے جو آسمانوں اور زمین کے سب خفیہ رازوں سے واقعت و باخریہ سے ۔ اسی لئے توان کو ایک کلام جو زبنایا اور ساری دنیا کو چیلئے کیا کہ اگر اسکوتم فوا کا کلام نہیں مانے کسی انسان کا کلا اسم جو زبنایا اور ساری کو دنیا کو چیلئے کیا کہ اگر اسکوتم فوا کا کلام نہیں مانے کسی انسان کا کلا اسم جو زبنایا دو اور میں ہوتو تم بھی انسان ہو اس جو اس جو اس کا کو گوری کے لئے کچھی شکل نہیں گرائی فول نے سے افران کے سے کو اس کا افراد اور کی است کی مقابلہ میں اُس کی و درس آسے کو اس کا افراد اور کو سے داختی اس کا افراد اور کی کہ خوران کی مشل کی سورت کھولات کی دوری آسٹ کھی اس کے دی کو تی کہ دوری آسٹ کھی اس کے دی کو تی اور کے دی کو تی اس کی سورت کھولات کو جو اس نکہ خرج کرنے کو تیارہ ہوگئے۔ یہ مختصری بات نہ کرکھے کہ قران کی مشل ایک سورت ککھولاتے کو جوان تک مقابلہ میں ایک سورت ککھولاتے کو تیارہ کو کی اس کے دی کو تی اس کی سورت ککھولاتے کو توان کی مشل ایک سورت ککھولاتے کو توان کی مشل ایک سورت ککھولاتے کو توان کی مشل ایک سورت ککھولاتے کو توان کو توان کو تی اس کو کو توان کی مشل ایک سورت ککھولاتے کو توان کی کو توان کی مشل ایک سورت ککھول کے کو توان کی مشل ایک سورت ککھول کے کو توان کی دوری آسکول کو توان کی دوری آس کی کو توان کی مشل ایک سورت ککھولاتے کو توان کی کو توان کی کو توان کی دوری آسکول کو توان کو کو توان کی کو توان کی دوری آسکول کو توان کی کو توان کی کو توان کی کو توان کی دوری آسکول کو توان کو کو توان کو کو توان کو توان کو توان کو توان کو توان کو توان کو کو توان کو کو توان کو توان

یه دلیل داخنج اس امرکی ہے کہ یہ کلام کسی انسان کا نہیں، ورنہ دوسرے انسان کھی ایسا کلام کھھ
سکتے ، صرف الشرتعالی علیم د نبیری کا ہے۔ علا وہ فصاحت وبلاغت کے اسکے تمام معانی و مضاین
میں ایسے علوم پرشتمل ہیں جو اس ذات کی طرف سے ہو سکتے ہیں جو ہرفا ہرو باطن کا جانے والا ہے داس
مضمون کی پوری تفضیل سورہ بقرہ میں اعجاز قران پر کھل بجث کی صورت ہیں بیان ہو کی ہے اس کو
منگا جن القال فی جلاا قال میں دیمے ہیں ،۔

دوسکا اغازاض یہ مقالہ اگریہ دسول ہوتے تو عام انسانوں کی طرح کھاتے پیتے نہیں بلکہ فرشتوں کی طرح کھانے پینے کی خردریات سے ستعنی اور الگ جوتے ۔ اور اگریہ بی نہ ہوتا تو کم اذکم ایکے پاس انٹر کیطون سے آنا خزانہ یا با فات ہوتے کہ ان کوا پہنے معاش کی فکر خر کر نا پڑتی ، بازاروں میں چانا پھر نا نہ پڑتا ۔ اس کے علاوہ ان کا انٹر کیطوٹ سے دسول ہو نا ہم کیسے مان لیس کہ اول تو یہ فرشتہ نہیں ، دو سرے کو کی فرشتہ بھی انکے ساتھ ان کے کام کی تصدیق کیا کرتا ، اسلئے ایسا معلوم ہوتا ہے کہ ان پرکسی ساتھ نہ میں رہتا جو اسکے ساتھ ان کے کلام کی تصدیق کیا کرتا ، اسلئے ایسا معلوم ہوتا ہے کہ ان پرکسی نے جادو کر دیا ہے جس سے ان کا دماغ چل گیا اور یہ اسی ہے سرویا بابیں کہتے ہیں۔ اسکاا جالی جو اب قب اس آیت بین دیاگیا ، اُڈھا گئی ہُون حَمَّر ہُوا الک الْا ہُونا اَن کو مان میں کہتے ہیں۔ اس آیت بین دیاگی آبات میں آبا ہے کہ میرسب گم اور ہوگئے اور اب ان کو دا و ملنے کی کوئ صورت نہ دہی نیفصیلی جو اب آگئی آبات میں آبا ہے۔

تبرك الذي ركت به أن عن المحمد الكارو بهت من المحدد الكارو المحتان تبحري المحدد الكارو المحتان المحدد الكارو الكارو الكارو الكارو الكارو الكارو المحدد المحدد الكارو المحدد الكارو المحدد الكارو المحدد الكارو المحدد المحدد المحدد الكارو المحدد الكارو المحدد المحدد المحدد الكارو المحدد المحد



المورة الفرقان ١٠:٠٥

معارف القرآن جسلاشم

(ملکہان باغوں کیسا تھ اور تھی مناسب جیزی دید ہے بن کی انھوں نے فر مائش تھی نہیں کی بعنی) آب باغوں میں ہے ہوں یا باہرہی ہوں جس سے اُن کی فرما نش اور بھی زیادہ تعمقوں کیساتھ یوری ہوجادے مطلب سرکہ جوجنت میں ملے گا آگرانٹر جاہے توات کو ونهايي مين ديدمه تبكن بعض حكمتون سينهين جاباا ورفي نفسه خروري تقانهين بين شبه محض بيهوده ان کفار کے ان شبہات مرکورہ کاسب بینہیں ہے کدان کوش کی طلائے فکر دی ہے اوراس دوران مين قبل تحفيق اليسيشيهات داقع بهو كئة بهول ملكه وجهاعتراضات كي محض شرارت اورطلب حق سے بیفکری ہے اور اس بیفکری اور مشرارت کا سبب یہ ہے کہ) یہ لوگ قیامت کو جھوٹ بھورے ہی (اس لئے فکرانجام نہیں ہے اور جوجی میں آیا ہے کرلیتے ہیں بک دیتے ہیں) اور (انجام اسکایہ وکا کہ مم نے ایسے خص د کی سنزا) کے لئے جو کہ قبیامت کو جھوٹا سمجھے دوزخ تیاد کر دکھی ہے د کیونکہ قیات لی مکذیب سے الشرور شول کی تکذیب لازم آتی ہے جو اصل سبب ہے دوزخ میں جانیکا اور اس دوز خى يكيفيت موكى كه) ده (دوزخ) ان كودورس ديكه كي تو (ديكيت مي غضبناك كراسفد جوش مارے کی کہ) وہ لوگ (دُورہی سے) اسکا جوش و خروش میں گے اور (بھر) جب وہ اس (دونیج ، حکمیں ہاتھ یا دُں جکو کر ڈالرئیے جا دیں کے تو دہاں موت ہی موت بیکاریں کے رحبہ تمیں عادت ہے کہ موت کو ملاتے اور اسی تمتا کرتے ہی اسوقت ان سے کہا حا و بگا کہ ملکہ ہت سی مونوں کو لکارو (کیونکہ موت کے بى ہے اور ہرمصیب کا مقتضا موت کا بکارنا ہے تو بیکارنا ہی کشر ہوااور ى كى كترت كوموت كى كترت كهاكيا). آپ (ان كوييصيبت مُناكر) كِيني كه (بيرتبلادُ كه) كيابي (مصیبت کی) حالت اچھی ہے (جوکہ مقتضای ہے تھارے کفردانکارکا) یا دہ بمیشہ کے دینے کی جنت (اچھی ہے) جسکا خداسے ڈرنے والوں سے (بینی اہل ایمان سے) وعدہ کیا گیا ہے کہ وہ ان کے لئے زان کی اطاعت کا)صلہ ہے اوران کا رآخری تھکا نا (اور) ان کو وہاں وہ سب چیزی ملیں تی جو کھے وہ چاہیں گے (اور) وہ (اسمیں) ہمیشہ رہیں گے (اے پینیسر) یہ ایک عام ک جو (بطورفضل وعنایت کے) آپ کے دب کے ذمتہ ہے اور فابل درخواست ہے (اور ظاہرہے لد حنت الخلدي بهتر ہے سواسميں تربيب کے بعد ترغيب ايمان کی ہوگئی) اور (وہ دن ان کو ياد دلائيكم) جس دوزالله تعالى ان (كافر) لوكون كو اورجن كووه لوك فدا كسوا يُوجة تفرجن نے اپنے اختیاد سے سی کو کمراہ نہیں کیا خواہ صرف بنت مراد ہوں الائکہ وغیرہم بھی) ان (سب) لوجي كريكا بيمر (ان معبودين سے ان عابدين كي رُسواي كے لئے) فرما و يكاكيا تم فيمبر ان بندو اور راوحق سے) گراه کیا تقایایہ رخودہی) راه رحق) سے گراه ہوگئے تقے (مطلب یہ کہ

JA,

سورة ألفرقاك ٢٠:٢٥ فالقران جسله انفوں نے تھاری عبادت جوواقع میں گراہی ہے تھارے امردرضا سے کی تقی جیساان اوگوں کا عم تماکه بیعبودین بهاری اس عبادت سے خوش بوتے ہیں اور خوش ہوکراں ٹرتعالی سے شفاعہ ترین کے یا اپنی رائے فاسد سے اختراع کرلی تھی) وہ (معبودین) عرض کریں گے کہ معاذاللہ مارى كيا مجال هي كرم آيكے سوااور كارسازوں كو (اپنے اعتقاد ميں) تجويز كري (عام اس سے كم وه كارسازيم بون يا جارے وااوركوئ و مطلب يد حب فدائ كواك مين خصر يجيت بي ويم شرك رنے کا ان کوامریا اس پر رضامندی کیوں ظاہر کرتے) ولکن (پنجودی گراہ ہوئے اور گراہ بھی ایسے نا معقول طورير وك كراسباب شكر كواتهون ني اسباب كفر بنايا چنانچير) آب نے (تو) ان كوا در ان محيرون كورخوب اسودكى دى رجسكامقنفى يديقاكرنعت دين داك كوبهجانت ادراس كا ت كردا طاعت كرتے محريد توك) يهان تك (شهوات و تلذذات مين نهك بوئے) كر (آب كى) یاد (بی) کو مُصلا بینے اور سراوک خود بی بر باد موسے رمطاب جواب کا ظاہر ہے کہ دو نول شقو بین اس شق كواختيادكياكم بينودي كمراه موتي مم فينهي كيا- ادراك كالمرابي كوا دلله كى برى تعميلان ير سبزول مونيكا ذكر كركم ساور زياده واضح كرديا -اسوقت الشرتعالى ال عابدين كولاجواب كرنے كے التعجواصل مقصور مقاسوال مذكورسے بيرفرما ويكا) لوئتھارے ان معبوروں نے توتم كوئتھارى (سد باتوں میں جھوٹادی محمرادیا (اور انھوں نے بھی تھاراسا تھے نہ دیا اور ترم نورے طور برقائم ہوگیا) سو (اب) تم نه توخود (عذاب كوا پنے او برسے) ال سكتے مواور نه دكسى دوسر كيطرت سے) مدد دئے جاسکتے ہو دعتی کے جن براورا بحروسرتھا وہ مجی صاحت جواب دے رہے ہیں اور کھاری صریح مخالفت کرمین) اورجو رجو عمین ظالم دلینی مشرک) موگام اس کوظرا عذائی کیمائین دادر گواسوقت مخاطبین سب شرک ہی ہو بھے مگراس طرح فرانے کی یہ دجہ ہے کہ ظام کامقت فی عذاب رونا بیان فرمانامقصود ہے) اور ہم نے آپ سے پہلے جتنے پیغیبر سے سے کھاتے تصادربا زاردن مين سي حلت بهرتے تف و مطاب بيركه نبوت واكل طعام وغيره مين شافي نہیں جنانچرجن کی نبوت دلائل سے تابت ہے گومعتر ضین اعتراف مذکری، ان سب سے اسکا صدورجوا ہے بس آپ برسی یہ اعراض علط ہے) اور (اے پینیبراوراے تابعین بینیبران کفا کے ایسے بیرود ۱۵ قوال سے مکین مت ہوکیونکہ) ہم نے تم (جموعہ کلفین) میں ایک کو دوسر کے مے ایج آڑماتش بنایا ہے دبیں اسی عادت مستمرہ کے موافق انبیار کوالیسی حالت پر بنایا کہ آ ك أزمانش موكد كون الحكے حالات بشريد برنظر كركے تكذيب كرنا ہے اور كون أن كے كما لات نبوت بر نظركم تصدين كرتا ب- وجب بربات معلوم بوكني تو) كياتم (اب يي) صبركروكر ديني كرناچاہيك) اور (يه بات تيني ہے كه) آپ كارب وب ديكيورباہے (تو وقت موعود يران كو

سزا دے گا، پھراپ کیوں ہم دغم میں داقع ہوں)۔

معارف ومسائل

سابقهآ بات میں کفّار ومشرکین کی طرف سے آئے تضرت بسلے اللہ عکیہ ہم کی نبوت و رسالت پرجوشبہا پیش کئے گئے تھے اور وہاں اُن کا اجمالی جواب دیا کیا تھا ان آیات میں اس کی کچھے تفصیل مذکورہے۔ جسکا حاصل میہ ہے کہم نے اپنی جہالت اور حقیقت شناسی سے دوری کی وجہ سے ایک بات بیہی ہے كراكريه النترك دسول موتے توان كے ياس بہت دولت كے فردائے بوتے بہت بڑى جائے داد اور باغات ہوتے تاکہ پیکسپ معاش سے تعنی رہتے اسکاجواب یہ دیا گیاکدایسا کردینا ہمارے لئے ا مشكل بنيس كم لين رسول كو دولت كفرد الى ديدي، ينكه رسي مكومت وسلطنت كا مالك بنا دیں۔ جبیساکداس سے پہلےحضرت داؤر اورسلبمان علیبما انسلام کوایسی دولت ادریُوری ڈنیا ير بي مثال حكومت عطافر ماكرايتي اس قدرت كامله كااظهاد سي كياجا جيكام مكرعاته فلق كي صلحت اورمبینیا دعمتوں کا تقاصا بیرہے کہ گروہ انبیار کوما ڈی اور دنیوی مال دوولت سے الگ ہی ركهاجائے ۔خصوصاً سيدالا بنيارصلے الله عكيہ كم كے لئے حق تعالیٰ كو يمى ليندہواكہ وہ عام غربيہ سلانؤں کی صفوت میں اوراً نہی جیسے حالات میں رہیں ا درخود رسول ایشرصلےانٹر عکیتے کم نے اپنے لئے اسی حالت کولیسند فرمایا ۔ جیساکہ شنداحلاور تریزی میں حضرت ابو اُمامہر مزسے دوایت ہے کہ رسول الشرصال التشر عليهم نے فرمايا كەميرے رب نے مجھ سے فرمايا كەمبى آپ كے لئے يور بالجارمك ادراسے پہاڑ دں کوسونا بنادیتا ہوں، تومیں نے عرض کیا نہیں، اے میرے پر در دگار مجھے توبیات كر مجھ ايك روزىيا بھرائ كھاناملے رجس يرالله كاكراداكروں) اور ايك روز بھوكار بول رأك برصبر کروں) اور حضرت عائشر رمز فرماتی ہیں کہ رشول الله صلاالله عکی لم نے فرمایا کہ اگر میں جا ہتا تو سولے کے بہاڑمیرے ساتھ کھراکرتے (مظہری)

خلاصه اسکایه ہےکہ انبیارعلیہ السّلام کا عام طور پرفقر دفاقہ میں رہنا اللّٰہ تعالیٰ کی ہزادہ کی ہوا ہوں گئے۔ اور عام انسا بؤں کی مصالح کی بِنار پرہے اوراسمیں بھی وہ اس حالت پرمجبور نہیں ہوتے اگر وہ چاہیں تو اللّٰہ تعساطے اُن کو بڑا مالدارصاحبِ جائیدا د بنا سکتے ہیں گڑائی کی ذات کوحق تعالیٰ نے ایسا بنایا ہم کہ وہ مال دد دلت سے کوئی ڈیمبیں ہمی نہیں رکھتے ، فقر د فاقہ ہی کو بین دکرتے ہیں۔

دوسری بات کفاد نے پہنی تھی کہ یہ بینجہ توقع تو عام انسانوں کی طرح کھاتے بیتے نہیں، اور کسب محاش کے لئے بازاروں میں نہ بھرتے اس اعتراض کی بنیا دہمت سے کفاد کا بہنے یال ہے کہ الفتر کا دستول انسان نہیں ہوسکتا ، فرشتہ ہی دسٹول ہوسکتا ہے ۔ جبر کا جواب قرائ کریم ہیں جا بجا آیا ہم

سورة الفرقال ۲۲:۲۵

MYZ

معادث القرآن جسيلاتهم

اتے (کہ اگر فرشتے آگریم سے کہیں کہ یہ رسُول ہیں) یا ہم اپنے دب کو دیکھ لیس (اور وہ خودہم ہے کہ ہے کہ یہ اسے (کہ اگر فرشتے آگریم سے کہیں کہ یہ رسُول ہیں جب ہم تصدیق کریں۔ اسے جواب میں اعتراق الی نے فرایا کہ) یہ کوگ اپنے دلوں میں اپنے کو ہم ت بڑا سمجھ مہیں (کہ اپنے آپ کو اس قابل بچھتے ہیں کہ فرشتے آگران سے خطاب کریں یا خود حق تعالی سے بم کلام ہوں) اور (بالخصوص اللّٰہ تعالی کے دینا میں دیکھنے اور اُس سے بم کلام ہوں) اور (بالخصوص اللّٰہ تعالی کے دینا میں دیکھنے اور اُس سے بم کلام ہونے کی فرمایش میں تو کوئ مشارک نے ہیں رکھونکہ ملائکہ اور انسان کی توبین فرمایش میں تو کوئ مشارک بینے بین مرکب ہمیں ہوگ خواکو دیکھنے کے لائق تو کیا ہوتے مگر فرشتے ان کو ایک روز دکھلائ کو ایک روز دکھلائ کے مذاب دیسے ہیں طرح یہ جا ہے ہیں طرح نہیں بلکہ اُن کے مذاب و مصیب اور پر بینی کا فروں) کے دوز میں گروشتوں کو دیکھیں گروشتوں کو جب سامان مذاب کیسا تھ آتا دیکھیں گروشگر کی بناہ ہے بناہ ہے۔

معارف ومسائل

وَقَالَ الْكُنْ فِي رَحْ يَوْجُونَ لِقَاءِي ، نفظ رجا كے عام مصنے سى مجبوب مرغوب بہد کی المسدے آتے ہیں اور کوجی بید نفظ بہت خوف کہی استعال ہونا ہے جبیب کدا بن الا نبا دی نے کتا بالا ضدا و میں کھا ہے اس جگہ بھی ہیں مصنے خوف کے زیادہ داختی ہیں ہینی وہ کوگ جو ہمارے سامنے بینتی سے نہیں فرز تے ۔ اسیں اشارہ اس بات کیطرف ہے کہ دوراز کا را درجا ہلانہ سوالات ا در فر ماکشوں کی جرأت اُسی شخص کو ہوگئی ہے جو آخرت کا بالکل منکر ہو۔ آخرت کے قائل پر آخرت کی فکر ایسی غالب ہونی ہے کہ اُس کوالیے سوال و جواب کی فرصت ہی نہیں ملتی ۔ آج کل جو تعلیم جدید کے انٹر سے اسلام ادرائے اُس کوالیے سوال و جواب کی فرصت ہی نہیں ملتی ۔ آج کل جو تعلیم جدید کے انٹر سے اسلام ادرائے احکام کے بالے میں بہت سے کوگ شبہات اور تجت و مباحنہ میں شغول نظرا تے ہیں یہ بی علامت احکام کے بالے میں بہت سے کوگ شبہات اور تجت و مباحنہ میں شغول نظرا تے ہیں یہ بی علامت اسکی ہوتی ہے کہ معاذ الشردل میں آخرت کا ستجا یہ بین نہیں ہے۔ اور یہ ہوتیا تو اس مسم کے نصنول سوالا

سُورة القرقان ۲۵: ا" حادث القرآن جب عذاب كے زماتھ دكھیں گے اور اُن سے معاف كرنے اور حبّت میں جانبی درخواست كريں گے يا تمنا ظام م على توفيت أي جواس كبس مع جوا عُنجوزًا العبى جنت كافرون يرام اور ممنوع ب دمنطيرى) وامري عمل فحملنه هياء منتوفران بينج أن كے كاموں برجواتھوں نے كئے تھے بھر ہم نے كرد الاأسكوفاك أرثى بدى عُمكانًا اور حوب سيحكر دويرك آرام كى ادر حس دل يهط جاء مادشایی اس دن ادر اتارے عاش وشت تار لگار ופניט נט اور سے ده دن كاط كا ف كها يكا كنه كاراين الم تقول كوك كا اسكاش كريس في يكرا بوتا رسول كے س ا عظرا بي ميري كاش كه شريرا موتاي فالله كودوست يُرْبَعُنَ إِذْ جَآءِ رِنْ عُوكَانَ الشَّيْطُنَّ جي كونفيدت سے جھ تك يہنے حكے كے يہ اور ب شيطان آدى كو وقت بر دنا دينے وَ قَالَ الرَّسُولُ لِيرَبِّرانَ قَوْرِي اتَّخَنْ وَاهْ مَا الْقُدْرَاتَ ادر كهار شول ن المسرك أرب ميرى قوم نے الله الله الله متران كور مه جورًا الله كان لك جَعَلْنَ الله عَلَى بَيِي عَلَى وَالْمِنَ الْجُورِينِ بھک بھک ادراسی طرح رکھے ہیں، تم نے ہر بنی کے لئے دہمی گنہ گا دوں میں سے وَكَفَىٰ بِي بِلْكَ هَادِيًا وَ نَصِيْرًا ١٠ اور کافی ہے نیزارب راہ د کھلائے کو اور مدد کرنے کو خ الصرتفسير ادرہم (اس روز)ان کے ریعنی کفار کے) ان رنیک) کا موں کی طوت جوکہ وہ (دُنیایی) مر <u>مجے ہتے</u> متوجہ ہوں گے سوان کو (علانبہ طوریر) ایسا (بریکار) کردیں گے جیسے پرلیثان غنبار

(كەسى كام نېبىي) تا، اسى طرح ان كىفار سے اعمال يركجه تواب نە ہوگاالېتە) اېل جنت كىس د د ز فيا مكاه مين هي الحصوري كاور آرامكاه مين هي خوب الحصير ونظر مرادمتقر اورمقيل مِنْت ہے بعینی جننت اُن کے لئے جائے قیام اور جائے آلام موگی اور اچھا موٹاا سکا ظاہرہے) الّہ میں روز اسمان ایک بدلی پرسے پھٹ جائے گا اور (اُس بدلی کے ساتھا تسمان سے) فسرتے (زمین یر) بجرات ا تارے جائیں گے (اوراسی وقت حق تعالی حساب وکتاب کے لئے بھی فرمادی کے اور) اس روز حقیقی حکومت رحضرت رحان رہی کی ہوگی د بینی حساب و کتامے جزا وسزامیں کسی کو دخل نہ ہو گاجیسا ڈنیامیں ظاہری تصرّف تھوڑا بہرت دومروں کے لتے بھی حاصل ہے) اور وہ (دن) کا فروں بربرا اسخت دن ہوگا رکیونکا بھے حساب کا انجام جہتم ى ہے) اور جن دوزظالم (بعنی كافرادى غايت حسرت سے) اپنے ہاتھ كاط كاك كھاوے گا (اور) کھے گاکیاا جھا ہوتا میں رشول کے ساتھ (دین کی) راہ پر لگ لیتا ہائے میری شامت ر ايسانه كيااور) كياا جهام وماكه مين فلان تخص كو دوست مربنامًا أس (كم نجت) في مجه كونسيحت أيم یجھے اس سے بہرکا دیا (اور مٹا دیا) اور شیطان توانسان کو (عین وقت پر) امراد کرنے سے جواب دیدیتا ہے (چنانچہ اُس کافر کی اس صرت کے وقت اُس نے کوئ ہمدر دی رز کی، گو کرنے سے بھی کھے منہ ہوتا صرف دنیا ہی میں بہر کا نے کو تھا) اور (اس دن) رسول د<u>صلے اللہ عکمی</u> محق تعالیٰ سے كافردن كى شكايت كے طوري كہيں گے كدا ہے مير ہے يرور د گارميرى داس قوم) نے اس قران كورجة واجب العمل تقا) بالكل نظرا مْدازكرركها تقا (ا درالتفات بي مُرَتِّ تَصْعَلْ تُودركنا روطلب بيركه خود كفّارى ائنى ضلالت كااقراركري كم اوررسول سى شهادت دير كمد كقوله تعالى وَجِمُّنَابِكَ عَلَىٰ هُوُلُا وَشَهِيْلُ اور شُوتِ جُرْم كى يمي دوصورتين معتادين ، اقرار اورشها دت اور دونوں كے اجتماع سے بیر شوت اور بھی مؤکد ہوجا و سگاا درسزایاب ہونگے) اور ہم اسی طرح مجرم توگوں میں سے ہرنی کے دشمن بناتے رہتے ہیں دیعنی پرلوگ جوانکار فرائ کرے آپ کی مخالفت کرہے ہیں کوئ ننی بات بنین حبکاغم کیاجادے) اور (جس کوبرایت دینامنظور ہواس کی) بدایت کرنے کواور (جوبرات نے محروم ہے استح مقابلہ میں آپ کی) مدد کرنے کو آپ کا رب کافی ہے۔

معارف ومسائل

خیر میشند کا کا ایس مینداگی، مشتم استقل جائے تیام کوکہا جانا ہے اور میندل تعلیم میندل کی میندل کے ایک مقبل کا در میندل کے تعلیم مقبل کا در میندل کے تعلیم مقبل کا در میندل کا در میندل کے تعلیم مقبل کا در میندل کے دور حق تعالی نصف النہار کے سے شایدا سلتے ہی مواہد کہ ایک حدیث میں کیا ہے کہ قیامت کے دور حق تعالی نصف النہار کے

دوست بنانے سے بیلے توب غور کرلیا کردکس کو دوست بناہے ہو

(دواه البخادي) حضرت ابن عباس فرماتے بین کدر شول الترصال التر علیم سے دریا فت کیا گیاکہ ہمار مے لبی دوسو

میں کون لوگ بہتریں تو آپ نے فرمایا ۔

وہ تحص جس كو و يكور خدايا دائے اورس كى كفتاكو سے مقاما علم برصادرس على كود كهدر آخت كى ياد تازه بد -

من ذكر بالله دويته وزادف علم منطقه وذكركم واللحوة على دواع اللزار ترطبى)

حَقَالَ الرَّسُولُ يُرَبِّ إِنَّ قَوْمِي النَّحَانُ وَالْهِنَ الْفَيْخِانَ هَا يَجُورًا ، سِنَ كَبِير كَرسُولُ فَم صلے الشرعکتی اےمیرے پر دردگارئیری قوم نے اس قران کو چور ومتردک کر دیاہے۔

آنحضرت صلی الشرعکی بیش کایت بارگاه حق تعالی میں قیامت کے روز ہوگی یا اسی و نیامیں آت نے بیش کایت فرمای ؟ اتمهٔ تفسیراس میں مختلف ہیں ، احتمال دونوں ہیں - اگلی آتیت بظاہر قربینہ اسكام كريش كايت آي في دنيا بي مين بيش قرمائ تقى جس كے جواب مين آي كوتستى دين كيك الكي آيت مين فرمايا وكن راك جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِي عَلَى الْمَا الْمُعْجِومِينَ ، لين اكراك وشمن قران کونہیں مانے توات کواس رصبر کرنا چاہئے کیونکا سنت اللہ بہشہ سے ہی رہی ہے کہ ہرنی کے يجه تجرم لوگ و تنمن مواكرتے بين اورا نبيا رعليهم استلام اس يرصير كرتے دہے إين -قران كوعلا ترك كرديا اس سے ظاہريہ ہے كہ قرآن كو مجور دمتروك كردينے سے مراد قسران كا بھی گٹ اوعظیم ہے۔ انکار ہے جو کفاری کا کام ہے میر تعین روایات میں یہ جی آیا ہے کہ

جومشلان قران برایمان تورکھتے ہیں مگرمذ اسکی تلاوت کی یابندی کرتے ہیں نداس بڑمل کرنیکی وہ بھی اس كم مين داخل بين حضرت النوخ فواتي كدرسول الشرصادة عكية لم في فرماياكه:-

من تعلّم الغرّان وعنى مصحف لمدينعاه معلينط المبنط المبرض ترقوان يرها كريم اكوبندكري كم ويعل كردياد اسك تلادت

فيدجاريوم القفة متعلقا بديقول بالب الغامين ان عبى ك هذا اتخذن همحدًا فا تفسين و

بيند-ذكره التعلى (رفي)

كى يا ندى كى نداسكا حكام ميں غوركما ، قيامت كے دور قرآن أسكے كليمي یرا برداآیکاادرانشرتعالی کی بارگاه مین کایت کر بچاکرایکے اس نبرہ کے مجته جيورويا بقااب آي ميرے اوراسے معاملہ كا فيصلة راويں ـ

معارت القرآن جي لدشتم الموري القرآن جي الموري الفرقان ١٥٠٠ ٢٣ الموري القرآن جي الموري الفرقان ١٥٠٠ ٢٣ الموري المو

خشكا صرتفيسير

اور کافرلوگ یُوں کہتے ہیں کہ ان دہنیبر) پر قرآن ایک ہی فعد کیوں نا ذل نہیں کیا گیا دمقصود اس اعتراض سے یہ ہے کہ اگر فعدا کا کلام ہوتا تو بتر ایج نا ذل کرنے کی کیا ضرد رہ تھی۔ اس بتدائیج نا ذل کرنے سے تو یہ بیٹے ہیں آگے اس عراض کا جا بھی کہ پیشجہ ہوتا ہے کہ محرصطا دلئے ملکی خود ہی سوپے کر تھوڑا تھوڑا بنا لیستے ہیں آگے اس عراض کا جا بھی کہ اس طرح د تدریجاً) اس لیے دہم نے نا ذل کیا) ہے تاکہ ہم اسکے ذریعہ آپھے دل کو قوی رکھیں اور داسی لیے ہم نے اس کو بہت معمرا تھم الیے د بنانچہ تبیین سال کے عصری آ ہستہ آ ہستہ بیُرا ہوا)۔

معارف ومسائل

یہ دہی سلسلہ تفار وسٹرکین کے اعتراضات وجوابات کا ہے جوشروع سورت سے چلاآ رہاہے۔ اس اعتراض کے جواشی قران کو بت رہے نازل کرنے کی ایک شمت یہاں یہ بیان فرمائ ہے کہ اسکے ڈرایدہ آپنے دل کو توی کو گفتا اتمان ہوگیا ، ایک شخیم کتاب بیک قت نازل ہوجاتی تو یہ آسائی نہ رہتی اور آسائی کے اقال یہ کہ یا در کھنا اتمان ہوگیا ، ایک شخیم کتاب بیک قت نازل ہوجاتی تو یہ آسائی نہ رہتی اور آسائی کے ساتھ کوئی ناگوار معاملہ کرتے تواسی و تو ت آپ کی تستی کے لئے قرائ میں آیت نا زل ہوجاتی ، اور اگر گورا قرائ ساتھ کوئی ناگوار معاملہ کرتے تواسی و قت آپ کی تستی کے لئے قرائ میں آیت نا زل ہوجاتی ، اور اگر گورا قرائ کی تارہ شہادت ہے معیت فعالون مقوم ہو جانا بھی عادۃ طروری نہیں تھا تھو یہ قالم فادندی بالائ گئی ہے نزولی تدریجی کے تکمت آمیں خصر نہیں و مری تھیتیں تھی ہیں نہیں سے بعض شور کہ بنی اسرائیل بالائی گئی ہے نزولی قدار کو تھا تھی تا تھی انتہ سے قوت قلب کا ۔ اور اس جگر جو تکمت تھو رہت قلب کی

وَلَا يَا تُوْدَكُ مِمْ مَنْ إِلَا حِمْنَاكُ بِالْحَقِيّ وَآحْسَنَ تَفْسِيرًا إِلَّ إِلَّا فِي الْحَقِيّ وَآحْسَنَ تَفْسِيرًا إِلَّ إِلَّا إِلَا إِلَى الْمُؤْلِقِيلِيلُونِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللللللّهُ اللللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ ا

خلاصتهيبر

ادريه لوك كيسا بى عجيب سوال آيك سامن بيش كري مكريم راس كا الهميك جواب اوروضاحت میں بڑھا ہواآپ کوعنایت رفیتے ہیں دیاکہ آپ نخالفین کوجواب دے سکیں۔ یہ نظاہر میان اُس تقویت فليك بي حيكا ذكراس سي بيلي آيت مين بوات كربتدايج نا ذل كرفيس ايك مكت آب كي دلجهي اورتفويت قلت كرجب كفاركبطوت مع كوى اعتراض آئے توائسى وقت الله تعالیٰ كى طرف سے جوائے ذل كردياجاً » یہ وہ لوگ بی جوایتے جہروں کے بل جہنم کی طوف لیجائے جاویں گے (مینی کسید طے کر) یہ لوگ جگہیں تھی برتري اورطرنقيدين مي ميت گراه بين - (بيران تك كرار رسالت ير وعيدا در قرآن يراعتراصات كيجواب تقے *ءا گھے اسکی تائید میں ز*یانہ ماصنی کے بعض دافعات نقل کئے گئے ہیں جن میں مسکرین دسالت کا انجسام اور عبرت الكيزحالات مذكورين اوراسمين فلم أتخصرت صلط ملته عكيهم كمص المتسلى اور تقويت فليك سامان ب كه يحصيك انبياركي الشرتعالي ني مرح مدد فرمائ اور تمنول يرغالب فرمايا وه آيك لئ يى وفي والاساي ين بهلاقصة حضرت موى على السلام كاذكركياكياكه) اورتجفيق م فيموى كوكتاب (ييني تورات) دى تفيام (اس كتاب ملف سے يہلے) يم فيان كے سائقران كے بھائ ہارون كوراً أن كا) معين (ومدد كار) بناياتھا يصريمية (دونوں كو) عم دياكه دونوں آدى أن توكوں كے ياس (برايت كرنے كے لئے) جا وجنهول بمارى (توحیدی) دلیادن کو مجھلایا ہے (مراداس سے فرعون اوراسی قوم ہے جنانجے یہ دو اون حضرات وہاں منتج اور مجعایا مگرانهوں نے مذمانا) سوہم نے اُن کو (اپنے قبرسے) بالکل ہی غارت کر دیا (مینی دریا -(2825 0 pm معارف ومسائل

آگی یک گن بول بالیون اس میں قوم فرعوں کے متعلق بدفر مایا ہے کہ اُنھوں نے ہماری آیات کی سے کے گئی بول بے کہ اُنھوں نے ہماری آیات کی سے کا لکنے بینی ہوئی تھی کے سے کے مالانکہ اسوقت تک تو دات حضرت مولی علیابسلام برنا ذل بھی نہیں ہوئی تھی کے سے اس مکذیب آیات تو رات کی تکذیب تو مراد نہیں ہوگئی ، بلکہ مراد آیا ت سے یا تو تو حید کے دلائل عقلیہ ب



نبوت سے انکارجہالت و گراہی کے سواکچھ نہیں۔ مگر دُنیا میں جو چاہیں خیال پکالیں گر قیامت ہیں ب حقیقت کھل جا دے گی) اے بیغمبرآپ نے استخف کی حالت بھی دہمیں جس نے اپناخسدا اپنی خواہش نفسانی کو بنا رکھا ہے سوکیا آپ اُس کی گرانی کرسکتے ہیں یا آپ خیال کرتے ہیں کہ ان میل کر شنتے یا سمجھتے ہیں (مطلب یہ کہ آپ ان کی ہدایت نہ ہونے سے مغموم نہوجئے کیو بکہ آپ ان رمسلط نہیں خوای

نخوا به مان کوراه برلا دیں اور نه بدایت کی ان سے توقع کیجئے کیونکہ نہ بیجق بات کوشنتے بیں نہ عقل برکہ غورکریں) یہ تومحض تو یا یوں کی طرح ہیں ذکہ وہ بات کو نہ شینتے ہیں نہ سمجھتے ہیں) بلکہ بیراُن سے بھی زیادہ

بے راہ ہیں دکیونکہ وہ احکام دین کے مکلت نہیں توان کا نہوم نہیں اور شرکلف ہیں جو کھی نہیں

سیم ان کی گرای کا نشام تھی بیان کردیاکہ سی شیرد دلیل سے ان کواشتیاه نہیں ہوا بلکا تیا عیوی اسکاری اورادی میں اس

مكارف ومسائل

قوم نوح علیات الم کے متعلق بید ارشاد کو انفوں نے رشولوں کو جھٹلا یا حالا تکہ پہلے دسول نہ اُن کے ذما نے میں سفقے نہ اُن مفوں نے جھٹلایا ، قو منشارا سکا بیہ ہے کہ اُنفوں نے حضرت نوح علیات الم کو جھٹلایا الم پی کے جھٹلانے کے کم میں ہے۔

چونکہ اُنسولِ وین سبا بغیار کے مشترک ہیں اسلے ایک کو جھٹلانا ہی کے جھٹلانے کے کم میں ہے۔

اضیاب التر میں ، گفت میں کچے کونوں کو کہتے ہیں۔ قرائ کریم اور سی جے حدیث میں ال کو کون کے تفصیلی حالات مذکور نہیں۔ اسرائیلی روایات مختلف ہیں۔ راج ہیہ ہے کہ قوم متود کے کچے باقیماندہ کو کھے جو کسی کو جہ کہ تو میں کہ کے فیاب کی کھفیت ہیں۔ واج کے تفصیلی خالوت کی کھفیت ہیں جو قرائ میں منصوص اور کسی جے حدیث میں بھی مذکور نہیں ۔ (بہانا لقائموں)

عمل میں منصوص اور کسی جے حدیث میں بھی مذکور نہیں ۔ (بہانا لقائموں)

خواہ شات کو مجود و بنا لیا ہی حضرت این عباس فرط تھیں کو گواسٹر عنواہ شات کا ہیرو ہو یہ کہا گیا ہے کہ اُس نے اپنی خواہ شات کا ہیرو ہو یہ کہا گیا ہے کہ اُس نے اپنی خواہ شات کو مجود و بنا لیا ہی حضرت این عباس فرط تھی ایک بھی ایک بہت ہے جس

الذير إلى ربك كيف من الظِلَّ وَلَوْشَاءَ لِحَلَّا الْكِلَّ الْفُرْجُعُلْدُ فيهنين ديكها ايت رب كيطرت كيد درازكيا سايركو اوراكر جايننا تواس كو تهر لكتنا بهريمة مقرركيا الشَّمُسَ عَلَيْهِ دَلِيْلًا صَّ ثُمَّ قَبَضْنَهُ اللَّيْنَا فَبَضًا يُسِيْرًا ١٠ وَهُوَالَّذِي اور دری ہے جس نے بمريب يايمفاسكوابى طرف المجارع سميك سورج کواسکا ماہ بتلانے والا لَ لَكُو النِّيلَ لِمَاسًا وَالنَّوْمُ سُمَانًا وَجَعَلَ النَّهَارَ نُشُورًا ١٠ بنادیا تھا اے واسطے رات کو اوڑ صنا اور نیند کو آرام اور دن کو بنا دیا اُکھ نکلنے کے لئے وَالَّذِي كَ آرُسُلَ الرِّيْحَ بُشْرًا بَيْنَ يَدَى دَحْمَتِهُ وَٱنْزَلْتَ وہی ہے حیں نے چلائیں وائی خوشخری لانے والیاں اسکی رحمت سے آگے اور اُتارا اہم السَّمَاءِ مَاءً طَهُوْرًا إِلَى لِنُحْتِي بِهِ بَلْنَا فَا تَبَيْنًا وَنُسْقِيهُ مِمَّا خَلَقْنُ أسمان سے بانی باک حاصل کرنے کا کرزندہ کردیں اُس سے مرے ہوئے دیس کو اور بلائیں اُسکواپنے پرداکئے ہو۔ آنعامًا وَآنَاسِي كَفِيرًا ﴿ وَلَقَدُ مَرَّفَنَا مُ بَيْنَهُمْ لِيَنَّ كُرُو بہت سے پو بایوں اور آدمیوں کو ادر طرح طرح سے تقتیمیا ہم نے اسکواکے بیج میں ادھیان رکھیں عَا بِنَ آكَ تُكُونُونَ التَّاسِ إِلَّ كُفُونُرًا ۞ وَكُوسِتُنَا لَبُعَثْنَا فِي كُلِّ فَرْيَةٍ مچھر مجھی بنیں رہتے بہت لوگ مرون ناشکری کئے اور اگر ایم جاہتے تو اُٹھاتے ہر بستی میں

سورة الفرقاك ٢٥: اوروری ہے جس نے برایا اور بنوسط مين الشرك يحصور كرده يبرجون بصلاكراك ہے کافر اپنے رب کیماوٹ سے پیٹھر بھیرا اور بھی کوہم نے بھیجا سری حوشی اور ڈرشنانے کے لئے م اس بد بھومزدوری مرجوکوئ جاہے کہ پڑے اے رب کی طرف أور بنیں مرتبا اور یا دکراسی خو بیال اور دہ کافی ہے ایت بندول عرش بد ده بری رحمت والاسو بوجراس جوای خبرد کفتا بد اورجب کینے ان سے محدہ کرو TELENB لَوَّ حَيْنَ قَالْوُا وَمَا الرَّحْنَ السَّحِلُ لِمَا تَأْمُوْنَا وَزَادَهُ وَنُفُوْرً کو کمیں رہمن کیا ہے کیا بحدہ کرنے لگیں بھرس کو تو فرائے اور بڑھ جا آہے ان کا بدکنا ك الذي جعل في السّماء بووجًا وجعل في السرجًا وقد المناق المناق بر ی برکت ہے ای بے بنائے اسمان میں بڑج اور رکھا اس میں جراغ راور جاند اُجالا کرنے والا وَهُوَالَّذِي جَعَلَ لِينَ وَالنَّهَارَخِلْفَةً لِّنَ أَرَادَ أَنَ يَنَّ كُنَّ أَوْ أَرَادَهُكُورًا اوروہی ہے جے بنائے وات اور دن بر لے سرلے اُس تحض کے داسطے کہ جاہے دھیان رکھن یا جاہے سے کر کرنا قلامت لفسي اے مخاطب کیا تونے اپنے پرور دگار (کی اس قدرت) پرنظر نہیں کی کہ اُسنے (جب اُفتاب اُفق با

المركام المرة الفرقان ١٢: ٢٥ الفرقان ١٢: ٢٥

معارث القرآن جسلد شم

سے طلوع کرتا ہے اسوقت کھڑی ہوئ چیزوں کے) سایہ کوکیؤ کر (دُور تک) بھیلایا ہے رکیونکھلور ہے وقت ہر چیز کا سایہ فمیا ہوتا ہے) اوراگروہ چاہتا تواس کوایک حالت پر پھہرایا ہوا رکھتا (بعنی آفتا مح باند برونے سے میں نہ گھٹتااس طرح پر کدانتنی دور تک آفتاب کی شعاعوں کو نہ آنے دیتا کیونکا نتاب كى شغاعوں كا زمين كے حصتوں برئېنجيا بارا د دُحق ہے نه كه بالاضطرار سكرتهم نے اپنى حكمت سے اسكوا يك مالت بربنبي ركها بلكهاس كو تجييلاً بهوا نباكر) بهرسمنة فت ابكو ديني أسكان كرتريب بموني ادريم اُفق سے بلند ہونے کو) اس (سابیر کی درازی وکو تاہی) پر (ایک ظاہری) علامت مقرد کیا (مطلب بر كهاكرجيه دوشني اوررسابيرا وراشكح كلفشنه برهيني كالماست حق تعالئ كاارا ده اورُشيت ہے، آفتاب ياكويُ دوسری چیز مؤثر حقیقی نہیں ہے مگراللہ تعالی نے دنیامیں بیدا ہونے والی چیزوں کے لئے کچوظاہری اسبا بناديبي اوراسباب كيساته أن كمسبيات كاايسا رابطه قائم كردياكرسبب كم تغير سفسبس تغیر موتا ہے) محصر (اس تعلق ظاہری کی وجہ سے) ہمنے اس (سایہ) کو اپنی طرف آہستہ آہستہ سمیٹ ليا رميني جُون جُون أفتاب ا ونياموا وه ساير زاكل اورمن وم بوتاكيا اورجو كالمسكاعات نامحض قدرتِ اللبيدسے بلا شركتِ غيرے ہے اور عام لوگوں كى رؤيت غائب موتے كے با وجود علم اللى سے غائب نہیں ہے اسلتے یہ فرمایا گیا کہ اپنی طرف سمیٹ لیا) اور وہ ایسا ہے جس نے تھا رے لئے آ کو پر دہ کی چیزاور نمبید کو راحت کی چیز شایااور دن کو راس اعتبار سے کہ سونامشا ہے موت کے اور دن كاوقت جاكن كاب كويا) زنده بونيكا وقت بنايا اور وه ايسام كهايني بالان رحمت سے پہلے ہوا دُن کو بھیجتیا ہے کہ وہ (بارش کی اُسید دلاکر دل کو) خوش کر دیتی ہیں اور ہم آسمان سے یائی برساتے ہیں جو باک صاف کرنے کی چیز ہے تاکہ اس کے ذریعیہ سے مردہ زمین میں جان ڈالدیں اورا پنی مخلوقات میں سے ہبت سے جاریا بوں اور بہت سے آ دمیوں کوسیراب کریں اور ہم اُس (یاتی) کو (بقدرصلحت) ان لوگوں کے درمیان تقیم کردیتے ہیں تاکہ لوگ غور کریں (کہ ب تصرفات کسی برطے قادر مے بیں کہ وہی ستحق عبادت ہے) سورجا ہئے تفاکہ عور کرکے اسکاحق ادا كرتے ديكن) اكثر لوگ بغير ناشكرى كئے نہ رہے (جس ميں سب سے بڑھ كركفروتسرك ہوليكن ات ان كى اور بالخصوص اكثرى تات كرى شكر يا ديكيم كرسعى فى التبليغ سے بهت نه باريك كرمين تنها إن سب سے سے عہدہ برآ ہولگا بلكه آب تنها ہى اینا كام كئے جائيے كيو كه آپ كوتنها ہى نبى بنانے سے خود ہمارا مقصود یہ ہے کہ آپ کا جراورقرب بڑھے) اور آگریم جاہتے تو (آپ کے علاوہ اسى زيانه ميں) ہرمبتی ميں ايك ايك بيغير بهيجديتے (اور تنهاآب برتمام كام مذ ڈالتے ليكن چو تك آب كااجر برها فا مقدد ہے اسلئے ہم نے ایسا نہیں کیا تواس طور پر اتنا كام آبے سے كرنا فداتا كى نغمت ہے) سو (اس نعمت كيك ريبين) آپ كافروں كى نوشى كا كام نہ ليجيئے (لعينى كافرتو

ñ

س سے خوش ہو تھے کہ تبلیع نہ ہو یا کمی ہوجائے اوران کی آزا دی سے تعرض نہ کیاجاوے) اور قران (میں جود لاکس حق کے مذکور ہیں جیسااسی مقام پر دلائل تو حید کے ارشاد ہوئے ہیں اُن) سے اُک کا زور شورسے مقابلہ میجئے (بعنی عام اور عمل دعوت و تبلیغ سیجئے ، بعنی سب سے کہتے اور بار بار کہنے اور ہمت توی رکھتے جبیباا ہے تک آپ کرتے رہے ہیں اس پر قائم رہئے۔ آگے تھر بیان ہے دلائل توحیر کا اور دہ ایسا ہے بی نے دو دریا وُں کو (صورة) ملایا جن میں ایک دکایاتی ، توشیر س تسکین تخش اور ایک رکایانی شور کنے ہے اور (با وجو داختالاط صوری کے حقیقة) اُن کے درمیان میں راین قدر سے) ایک حجاب اور (اختلاط حقیقی سے) ایک نع توی رکھدیا (جوخود خفی غیرمحسوس ہے مگر اُس کا اترانعنی انتیاز دونوں یانی کے مزہ میں محسوس اور مشاہر ہے۔ مرا دان دو دریا وں سے وہ مواقع ہیں جہاں شیری ندیاں اور نہری بہتے بہتے سندریں آگر گری ہیں وہاں باوجود اسے کداویر سے دونوں سطے ا يك معلوم موتا ہے تيكن قدرتِ اللهيم سے ان ميں ايك ليسي حدِّ فاصل ہے كہ ملتقیٰ کے ایک جانہ یا تی لیاجاوے تومشیری اور دوسری جانب سے جو کہ جانب آول سے بالکل قریبے یا تی لیاجا ہے تو کلخ- دنیامیں جہاں جس جگہ شیری یاتی کی نہریں جشمے مندر کے پانی میں گرتے ہیں وہال سکامشاہ^و کیاجانا ہے کہ میلوں دُور تک میٹھا اور کھا ری یا بی الگ الگ الگ جلتے ہیں، دائیں طرف میٹھا بائی*ں طرف* للخ کھاری یاا دیر نیچے شیری ا در تلخ یا نی الگ الگ بلیے جاتے ہیں رحضرت مولانا شبیر حدعثما نی ٹے اس سے تھے کھا تکہ بیّان القرآن میں دومعتبر سبنگا لی علمار کی شہادت نقل کی ہے کہ از کان سے جا لگام تک دریا کی شان بیرے کداس کی و دجانبین بالکل الگ الگ اورایک کاسیاه ،سیاه مین سمندر کی طرح طوفانی تلاطم ادر تموّج ہوتا ہے اور سفید بالکل ساکن ہتاہی نشتی سفیدمیں طبتی ہے اور دونوں ہے بیچ میں ایک دھاری سی برابر علی گئی ہے جو دونوں کا ملتقی ہے لوك كهته بين كدسفيديا في ميشها مي اورسياه كرا وا -اه - اور مجه سے بارسيال كے بعض طلبار في بيكان کیا که ضلع بادلیال میں دوندیاں ہیں جو ایک ہی دریا سے نکلی ہیں ، ایک کایا نی کھاری بالک*ا کرط* داا درایک كانهايت شيرى اورلذند ہے - يہاں گرات بيں را قم لحرد و خس جگد آجكل مقيم ہے (ڈا بھيل سملک فنلع سورت سمندروہاں سے تقریباً دس بارہ سیل کے فاصلے ہے۔ ا دھر کی ندیوں میں برابر مرد جزز (جوار بھاٹا) ہوتارہتا ہے بکٹرت ثقات نے بیان کیاکہ مدے وقت جب سمندر کایا نی ندی میں آجا آج توميق ياني كي سطح يركها ري ما ني بهت زور مسيره حانا بيسكن اسوقت بهي دونوں ياني مختلط نهبين موتے -اویر کھاری رہتا ہے نیچے میٹھا، جزر کے وقت اوبرے کھاری اُٹرجانا ہے اور میٹھا جو ل توں میشاباتی ره جاتا ہے والتر علم ، ان شوا ہد کو دیجتے ہوئے آیت کا مطلب بالکل اضح ہے بعنی خداکی قدرت و مجھو کہ کھاری اور میٹھے دونوں دریاؤں کے یاتی کہیں نہیں لجانے کے یا دجود تھی کس طرح ایک فیسے

سے متازرہے ہیں اوروہ ایسا ہے میں نے یاتی سے رسینی نطفرسے) آدمی کو بیداکیا بھراس کو خاندان والا اور سرال والابنايا رچنا مخيرياب دادا وغيره سترعى خاندان اور مال، نانى وغيره عرفى خاندان يرس جن سے بيدائش كرساته بي تعلقات بيدا موجاتي بهرشادى كم بعرشسرالى رشة بيدا موجاتي يرييل قدرت بھی ہے کہ نطفہ کیا چیز تھا بھراس کو کیسا بڑا دیا کہ وہ اشنی جلد خون والا ہو گیا اور نعمت بھی ہے کہ ان تعلقات پرتمدن اور امدا دبایمی کی تعمیرقائم ہے) اور (اسے تحاطب) تیرا پر وردگار بڑی قدرت والا آ اور (با وجود استحكر الشرتعالي اپني ذات وصفات مين ايساكا مل مي جيسابيان برواا وربير كما لامقتضي بين كداسى كى عبادت كى جاوم مركزى بر دمشرك ، توك (اليسے) خداكو جيور كران چيزوں كى عباد سة كرتے بي (جوعبادت كرنے ير) مذات كو كھ نفع بہنجاسكتى ہيں اور ند (درصورت عبادت ندكر نے كے) ائن كوكيد ضرر ببنجاسكتي بي اور كافرتها بيندب كالمخالف ہے ذكه أس كوچھور كردوسرے كى عباذكر تا ہے اور تفاری مخالفت معلیم کرمے آپ نہ تو اُن کے ایمان نہ لانے سے مگین موں کیو مکر، ہے آپ کو صرف اسكة بهيجا بيكر (ايمان والول كوجنت كي) خوتنجري سُنائين اور ذكا فرون كو دوزخ سے) دُرائين. (ان محايمان ندلانيسي آپ كاكيا نقضان سيء بهرآب كيون عم كرس اور ندآب أس مخالفت كومعادم كرمح فكرمين يزين كرجب بيحق تعالى محدفالف بن تومين جوحق تعالى كيطوف دعوت كرمامود اس دعوت کو بید لوک خیرخوای کت مجوی کے بلامیری خود غرصی پرمجمول کرے التفات بھی نہ کری گ اتوان کے کمان کی کیونکرانسلاح کیجا و سے ناکر مانع مرتفع موسواکرات کوان کا پی خیال قربندسے یازمانی لفت کو سے علوم ہو تو) آپ (جواب میں اتنا) کہدیجئے (اور مبلکہ ہوجائے) کرمیں تم سے اس (تبلیغ) یر کوئی معاوصه (مالی یا جاہی) نہیں ہا نگتا ہاں جوشخص کوں جاہے کہ اپنے رب تک (پہنچنے کا) رستر انعتيادكرك (توالبندي بير صرورجا منا مول جاسيكاس كومعاوض كبويا مركبوي) اور (مرأس كالفت كفاركو دريا فت كركے اُن كى صرر رسانی سے اندنشير كيجئے بلكہ تبليغ ميں) اُس حى لايمون يرتو كل ركھنے اور (اطمینان محسائد) اُس کی بینج و محمیر میں لگے رہنے اور (منه مخالفت من کر تعبیل عقوب کی اس خيال سے تمنا کيجئے که ان کا صرر دوسروں کو مذہ بنج جاو ہے کيونکه) دہ (خدا) اپنے بندو بھے كنابون سكافي (طورير) خردار سے (وہ جب مناسب سمجھ كاسزا ديديگا- ليس ان جلول ميں رسول الترصل الله عليهم سيحزن وفكرا ورخوف كو زائل قرمايا بها كي تونوسيركا بيان م) وه الساہے میں نے آسمان وزمین اورجو کھوائن کے درمیان میں ہے سب چھروز (کی مقدار) میں بدراكيا بيمرع شرير (جومشابه بيخت سلطنت كاس طرح) قائم (اورحلوه فرما) يوا (جوكه ا اس می شان مے لائق ہے بیکا بیان سور و اعراف کے دکوع مفتم کے شروع آیت میں گرد رحکا) وہ يرًا وبريان به سواس كى شاكى ما خن والے سے تُوجها جا سے ركه وه كيسا ہے كافر شرك كيا

معارث القرآن جسكة

سُورَة الفرتان ٢٢:٢٥

MAI

معارف ومسائل

ہزاروں سال سے بغیرسی اونی فرق مے جل رہے ہیں۔ آفت اور اس کی حرکت اور اس سے بید مرفي الدن وات اوردهوب جماوس فرنظر والوتوايسات كم نظام بيكر صديون بكر فرارون ل مين ايك منط بلكدا يك سيكند كافرق نهين آيا - نديمي آفت ب وما متناف غيره كي مشينري مين كوي فزورى آتى ہے، نه مجى ان كواصلاح ومرمت كى صرورت بوتى ہے جب كونيا وجود ميں آئ ايك اندازایک فتارسے ل رہے ہی صافیا کو ہزارسال بعد تک کی چیزدن کا وقت بتلایا جاسکتا ہے۔ سبب اورسبنب كاليمكم نظام جوحق تعالى قدرت كامله كاعجيب غربيب شابر كاراورأس كى قدرت كالمداور كمت بالغدك بربان قطى بالتحاشكامي فوكول وغفلت مي دالدياكران ی نظروں میں صرف یداسباب ظاہرہ ہی رہ کئے اور انہی اسباب کوتمام چیزوں اور ہا شرات کا خالتی و مالک مجھنے لکے مسبب الاسباب کی اصلی توت جوان اسباب کی بیداکرنے والی ہے وہ اسباب كے پر دوں بین ستور موکئی اسلئے انبیار علیهم السّلام اور آسمانی کتابیں انسان کو بار باراسس پر تنتيرتی ہي كد درانظر كوبلنداورتيز كرو،اساب كيردوں كے سجھے ديكھو كون اس نظام كوچلار ہا تاكر حقیقت تك داه یاد - اسى سلسلے سادشادات بیں جوآیات مذكوره میں آئے- آیت كَوْنِكِ إِلَى رَبِّكَ كَيْفَ مَنَ الظِّلَ مِن عَافَلِ انسان كواس يرتنب كياكيا بِحكم توروزانه و كيفت كرصبح كوهر چيز كاسايه جانب غرب دراز بهوتا ہے، بھروه كھٹنا شروع بوتا ہے بہاں تك ك نصف النهار محدوقت معدوم يا كالعام موجاتا سي كيرزوال كے بعديمي سايراسي تدريجي فتار مے ساتھ مشرق کی جانب میں بھیلنا شرع ہوتا ہے۔ ہرانسان اس دھوب اور جھاؤں کے نوائد ہرردوز حاصل کرتا ہے اور اس کی آنکھیں تھے تی ہی کہ بیرب کھے آفت بے طلوع ہونے تھے ملند مد فے پھرغوب کی طوف ماکل ہونے کے لازی نتائج و تمرات ہیں، تسکن آفتاب کے کرہ کی تخلیق بھے۔ أسكايك فاص نظام كے تحت باتى ركھنے كاكام كس نے كيا، يدا بكھوں سے نظر نہيں آ تا اس كيلئے دل کی آ محصی اوربسیرت درکار ہے۔

دن کا میں اور بیر میں ہی بصیرت انسان کو دینا مقصود ہے کہ بیرسایوں کابر هنا گھنا اگر جب میں افت ہے میں افت ہے متحال کے دینا مقصود ہے کہ بیرسایوں کابر هنا گھنا اگر جب متحال نظروں میں آفت ہے متحال ہے ہے گئے اس نظروں میں آفت ہے متحال ہے ہے گئے اس نظر میں آفت ہے متحال میں نظام کے اندرکس نے باقی رکھا ، جس کی قدرتِ کاملہ نے بہ نے بہا تی الما اور اسمی حرکت کو این طام کے اندرکس نے باقی رکھا ، جس کی قدرتِ کاملہ نے بہا میں کہ متوں کاعطا کرنے والا ہے اگر وہ مب کچھ کیا ہے وہ ہی در حقیقت اس دھوب چھاؤں کی نعمتوں کاعطا کرنے والا ہے اگر وہ مب کچھ کیا ہے وہ ہی در حقیقت اس دھوب چھاؤں کی نعمتوں کاعطا کرنے والا ہے اگر وہ

رث القرآن ح سُورَة الفرت ال جا ہتا تواس دھوپ چھاؤں کوا یک حالت پر قائم کر دیتا جہاں دھوپ ہے وہا سم بیشہ دھوپ رئتى، جهال چھاؤں ہے مہشہ چھاؤں رہتی مگراس کی حکمت نے انسانی صروریات و فوائد پر نظر رے ایسا نہیں کیا دکونٹ کا کچھک سکوت کا سے مطلب ہے۔ انسان كواسى حقيقت سے آگاه كرنے كے لئے سابير كے دايس نوشنے اور كھٹنے كو آيت مذكوره ين اس عنوان سے تعبير فرمايا سے كه قبضنا كالينا قَيْن يَسْالاً ، بيني يحرسا يه كويم نياين طوت سمیٹ لیا، بیرظاہرہے کہ حق تعالی جسم اورجیها نیت اورجہت اور تمت سے بالا ترہے، اسکی طرف سايركا سمننا، اسكامفهوم يبي سيكرأس كى قدرت كامله سے بيسب كام بوا۔ رات ين بيندا ورون مين كام كى إ دَهْ وَالنِّن يُ جَعَلَ لَكُو النَّيْلَ لِبَاسًا وَالنَّوْمَ سُبَاتًا وَعَوَالنَّ تخصیصا می بری محمت پرسنی بی النها دنشورا اس آیت بی رات کو بیاس کے نفظ سے تعبیر فرمایاکیس طرح دیاس انسان کے پورے بدن کاساتر ہے اس طرح دات ایک قدرتی پردہ کی چا در ہے جو بوری کائنات پر ڈالدی جاتی ہے۔ شیاتا، سبت سے شتق ہے سے کھال عنی نطع كرف كي سيات وه چيز سي سيسى دوسرى چيز كوقطع كياجائے۔ نيندكوا وشرتعالى تياليسى چيزېنايا سے كه دن بھركى محنتوں كا تكان اور كمزورى اس سے قطع إبوجاتي ب- افكارو خيالات منقطع بوكروماغ كوارام بلتاب اسك شيئات كاترجه راحت كيا جاتا ہے معنى آئيت كے يہ ہو كے كہ ہم نے دات كذا يك جيسانے دالى چيز بنايا بھراسيل نسان اورسارے جا تداروں پرسیدستط کردی جوان کے آرام دراحت کاسامان ہے۔ يهان كئ چيزين قابل غوري - اول يركه نيندكا راحت بونا بلكه راحت كي جان بونا تو ہر خص جانتا ہے مگرانسانی فطرت یہ ہے کہ دوشنی میں نیند آناشسکل ہوتا ہے اور آبھی جائے تو جلداً بمحصّل جاتى ہے۔ حق تعالیٰ نے نیند کے مناسب رات کو تا دیک بی بنایا اور شنڈا بھی سیطرے دات خود ایک نعمت سے اور نیزر دوسری نعمت ، اور تنیبری نعمت یہ ہے کہ سارے جہان کے انسانوں جانوروں کی نیندایا کے وقت رات میں جبری کردی ۔ دربنہ اگر ہرانسان کی نیند کے اوقات دوسرے انسان سختاف بوتے توجبوقت کھولوگ سوناجا ہتے دوسرے نوگ کاموں میں مصروف اور شخت كاسبب بسن رہتے - اسى طرح جب ووسروں كے سونے كى بارى آئى تو اسوقت كام كرنے والے چلنے محرتے دالے ان کی نیئد میں خلل انداز ہوتے۔ اس کے علاوہ ہرانسان کی ہزادوں حاجتیں دوسرے انسانوں سے دابستہ ہوتی ہیں باہمی تعاون وتناصرا در کاموں میں بھی شدید حرج ہوتا کہ حبی تف سے آب كوكام يوأسك ونيكاد قت ادرجب أسك جاكن كاد قت آبيكا تواسك و في وقت موكا -اگران مقاصد کی تھیل کے لئے کسی بین الاقوا می معاہدہ سے کام نیا جانا کر سنگ اپنے سونے کا

معارف القرآن جسلة شتم

توناپاکینی بوتااس پرمی سکا تفاق مے بشرکت با فی می نجاست کااثر ظاہر نہو اوراسکا دیگ والقہ بُومت فیر نہوں کے بھر اوراسکا دیگ والقہ بُومت فیر نہوں کے بھر اور نہا کہ بھر ہوں کا بختلاف اس کو بیانی کھے بھر ہوں کا اختلاف اس کو بیانی کھے بھر والے بی سے معلق تا میں کہ کے بیانی سے میں اور قرطی میں انجگہ بیائی سے معلق تا ما کہ مسائل تفسیل کہ بیان تھا کہ کہ کوروی اس سے بہاں تھا کہ نے کہ خوروت نہیں۔ مسائل تفسیل کہ بیان تھا کہ کہ کہ تھا اور بیسائل عام کے فقرین کھی کہ وروی اس سے بہاں تھا کہ خوروت نہیں۔ وکشیفی کہ جو ہے اور تعین کے کہ اسمان سے نازل کردہ یا بی سے اور تعین کہ میں اور بہت سے انسانوں کو بھی ۔ بہاں یہ بات قابل فور ہے کہ مسلوم میں اور سے کہ اسمان کو بھی ۔ بہاں یہ بات قابل فور ہے کہ مسلوم میں اور بہت سے انسانوں کو بھی ۔ بہاں یہ بات قابل فور ہے کہ مسلوم میں اور سے میں اور بہت سے انسانوں کو بھی اور بہت سے انسانوں سے میں اور ہوتے ہیں اس جا تھی ہے کہ اسمان ہی بھی اس بائی سے خوام اور الگ ہیں ۔ جواب یہ ہے کہ بہاں بہت سے انسانوں سے می وہ میکل کے انسان اس بیل کو بیا ہوتے ہیں بارش کے بائی پر جو تا ہے ۔ شہری آبا دی والے تو نہروں کے کہ در بہت کے انسانوں کو بھی کہ بہاں بہت سے انسانوں سے می وہ بھل کے در بہت کے انسان اس بیل کو بہت ہے انسانوں کو بھی کہ بہاں بہت سے انسانوں سے می کو میں اور کی کو بہت آبا وہ ہوتے ہیں بارش کے منتوز نہیں وہتے ۔ شہری آبا دی والے تو نہروں کے کہ در وہ کو بہت کہ بیاں بہت ہے انسانوں پر کو کو کہ کو رہ بہت کہ بیاں بارش کے منتوز نہیں وہتے ۔

و کفتان صرف اور بھیرتے دہتے ہیں۔ اس کا یہ ہے کہ بادش کوہم بدلتے اور پھیرتے دہتے ہیں ہیں ایک شہر میں کہیں دوسرے میں ۔ حضرت ابن عباس فرماتے ہیں کہ یہ جولوگوں میں شہرت ہوتی ہے کہ اس اسال بادش زیا دہ ہے اس سال کم ہے بیچھیقت کے اعتبارے سے بہیں بلکہ بادش کا پانی توہرسال الشرتعالی کی طوت سے کیساں نازل ہوتا ہے البتہ مجکم اللی یہ ہوتا دہتا ہے کہ اس کی مقدار کسی شہر ہے۔ میں زیادہ کردی میں کم کردی ۔ بعض او قات کمی کر کے کسی بیتی کے لوگوں کو سنرا دیا اور متنبہ کرنا ہوتا کی اور بعض او قات کی کر کے کسی بیتی کے لوگوں کو سنرا دیا اور متنبہ کرنا ہوتا کی اور بعض او قات نے بی بیانی جو فوالص و حمت ہے جو لوگ الشرقعالی کی اور بعض او قات کی کر کے سے اور برا بنا دیا جاتا ہے۔ اس کی عذا ہے اس کی عذا ہے اس کی عذا ہے ۔ و نا الص و حمت ہے جو لوگ الشرقعالی کی اور بنا فرمانی کرتے ہیں اُن کے لئے اس کو عذا ہے اور برا بنا دیا جاتا ہے ۔

جہاد بالقران معین قسران کی حجاد کا محکویہ بھاڈگا کیا گاگی گا ، یہ آیت کی ہے جبکہ حکام کفار
دعوت کو پھیلاناجہاد کبیرہ سے قتال وجنگ کے نازل نہیں ہوئے تقے اسی لئے پہاں جہاد کو
ہہ کے ساتھ مقید کیا گیا۔ بہ کی ضمیر قران کی طوف راجع ہے معنی آیت کے یہ بی کہ قران کے ذریعہ
مخالفین اسلام سے جہاد کر دبڑا جہا دہ قران کے ذریعہ اس جہاد کا حاصل استحاد کام کی تبلیغ اور خلق فور کو اور کو اس کی طوف توجہ دینے کی ہرکوشش ہے خواہ زبان سے ہویا قلم سے یا دومر مے طریقوں سے
اس سب کو بہاں جہاد کبیر فرمایا ہے۔

وَهُوَالَّيْنِى مُنْرَجَ الْبَعْتَ بِنِي هٰلنَا عَنْ بُ فَيُ النَّيْمَ الْبَعْلَ بَحُوجَتَلَ بَيْمَةً الْمُحَاجُ وَجَعَلَ بَيْمَةً الْمُحَاجُ وَجَعَلَ بَيْمَةً الْمُحَاجُ وَجَعَلَ بَيْمَةً الْمُحَاجُ وَجَعَلَ بَيْمَةً اللهُ اللهُ وَمِنْ اللهُ ال

معارث القرآن مبسلد شم

كوكهة بين جهان جانوراً ذادى سيطيس بجرس ا در جُرِي - عَنْ بُ مِيْطَ بِانْ كُوكها جا مَا جـ - فَسُّ اتْ خوش ذاكة اور توك گوار مِلْح تمكين أَجَاج تيزونلخ -

حق تعالی نے اپنے نفسل اور کمتِ بالغہ دنیا میں دوطرے کے دریا پیرا فرائے ہیں۔ ایک سب
سے بڑا بحر محیط حس کو ممندر کہتے ہیں اور زمین کے سب اطراف آئیں گھر ہے ہوئے ہیں ایک ہو تھائی کے
قریب حصہ ہے جواس سے گھلا ہو اہے آئیں ساری دنیا آباد ہے۔ یہ سب سے بڑا دریا ہتقاضات کہت
سخت کمین تلخ اور برم ہوہ ہے۔ زمین کے آباد حصے براسمان سے اُتا رہے ہوئے بائی کے چھے ، ندیاں
نہریں اور رائے ہوئے دریا ہیں یہ سب شطح قو گوار اور خوش ذاکھ ہیں۔ انسان کو اپنے بینے ادر بیاس مجا
ادر دور مرق کے استعمال میں ایسے ہی شیری پائی کی ضرورت ہے جوحی تعالی نے زمین کے آباد حصہ ہی کہ
ادر دور مرق کے استعمال میں ایسے ہی شیری پائی کی ضرورت ہے جوحی تعالی نے زمین کے آباد حصہ ہی کہ
مختلف صور توں میں مہتیا فرما دیا ہے۔ کیکن ہجر محیط سمندراگر میٹھا ہوتا تو میٹھے پائی کا خاصہ ہے کہ
مختلف صور توں میں مہتیا فرما دیا ہے۔ کیکن ہجر محیط سمندراگر میٹھا ہوتا تو میٹھے پائی کا خاصہ ہے کہ
ایادی ہی ہے جواسیں مرتے ہیں دہیں سڑتے اور مٹی ہوجا تے ہیں اور پوری زمین کے پائی اور اُس میں
ایادی ہی ہے جواسیں مرتے ہیں دہیں سڑتے اور مٹی ہوجا تے ہیں اور پوری ذرین کے پائی اور اُس میں
میں مرحی اُنا اور یہ مرات تو اس کی بر بوسے زمین والوں کو زمین پر رہنا مصیبت ہوجا تا۔ اسلام کمات میں موات نے اس کو اثنا سے دائی خوات کی ہیں۔ اگر ہے پائی میٹھا ہوتا تو دوجاد دن ہیں
خوا وی ہی اور خود اسی درسے دائی خوات میں والوں کو زمین پر رہنا مصیبت ہوجا تا۔ اسلام کمیت میں اور کو داا در تیز بنا دیا کہ دُنیا ہم کی گذرگیاں آئیں جا کہ کہ میں ہونے تو دہ بھی سڑنے نہیں بات کے دو کہ کی سڑنے نہیں بات کے دو کھی کور کی کور کی کور کی کور کی کور کور کی کور کی کور کی کی کے دو کھی کی کور کی کور کی کور کھی کور کور کی کے دو کھی کی کور کور کی کور کور کی کور کو

آیتِ فرکوره میں ایک تواس انعام واحسان کا ذکرہے کہ انسان کی ضرورت کا کی اظرفراکردویم کے دریا پیدا فرائے۔ دومرے اس قدرتِ کا ملہ کا کہ میں جگہ بیٹھے پانی کا دریا یا نہر ہمندر میں کرکرتے بیں اور میٹھا اور کڑوا دونوں پانی کیجا ہوجاتے ہیں دہاں یہ مشاہدہ کیا جاتا ہے کہ دونوں پانی میلوں ڈوری ل مطرح ساتھ لگے ہوئے چلتے ہیں کہ ایک طرف میٹھا، دوسری طرف کڑوا اور ایک دوسرے سے نہیں ملتے، حالا تکہ ان دونوں کے درمیان کوئ آڑھا کی نہیں ہوتی ۔

وَهُوَ النِّنِ مِ خَلَقَ مُنَ الْمُكَاءِ بَهُ مَنَ الْمُكَاءِ بَهُ وَ الْمُكَاءِ بَهُ وَالْبَعَ الْمُكَاءُ فَسَبَا وَيَهِ الْمَكَاءُ فَسَبَا وَيَهِ الْمَكَاءُ فَسَبَا وَيَهِ اللّهِ اللّهِ مِنْ اللّهُ اللّهِ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ ال

قُلُ مَا اَسْتُكُكُوْ عَلِقَدِ مِنْ اَنْجِيلًا مَنْ شَكَاءُ اَنْ يَتَعَيْضَ اللَّا مَنْ اللَّهِ اللَّهِ مَنْ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّلَّةُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّلْمُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللللْمُلِلْمُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّلْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللللْمُلْمُ ا

حارف القرآن حبيلة سُورَة الفرقان ٢٥: ٢٢ نہیں مانکتا، میرا فائدہ اسے سوانہیں کرجب کاجی جاہے ادلٹر کاراستدا ختیار کرنے۔ اور میر ظاہرہے كهريئ تنفص داه پر آجادے تو فائذہ اُسى كا ہے اس كوا پنا فائدہ قرار دنیا بیغیبرانہ شفعت بحیطوٹ اشارہ کہیں تھارے فائدہ ہی کواینا فائدہ مجتنا ہوں۔ بیرایسا ہے جیسے کوئ بوڑھا ضعیف باب اولاد کو کھے كهُم كِها وَبِيواور حُوشَ رَجُو، يبي ميراكهامًا بينااور خوش ربها ب- ادريه مي احتمال بهكه اسكواينافا مر اس لحاظ سے فرمایا بهو کدا سکا تواب آپ کو ملے گا جیسا کداحا دیت صیحہ میں آیا ہے کہ چوشخص سی کوئیک كامول كى بدايت كرتاب اوروه التحكيف كمطابق تيك كل كرے تواسى على كا تواب خود كرنے والے كو معى يُورايُورلط كا دراتنا مى تواب بدايت كرف دال تخص كو مجى ملے كل (مظهري) فَسْتُكُ بِهِ حَيْدِينًا ، بعني أسمانون زمينون كويبيداكرنا بحرايني شان محمطابق أن يرحلوه افروزم ب الشرر من كاكام ب اس كى تصديق وتحقيق مطلوب موتوكسى باخبرت يُوجِهد باخبرت مرادح تقالى یا جبرسُل امین ہیں اور بیراحتمال بھی ہے کہ اس سے مُراد کتب سابقہ کے علمار ہوں جن کوایے اپنے بیٹیوں کے دربیراس معاملہ کی اطلاع علی ہے۔ (مظہری) قَالُوْاوَمَا الرَّحْمِنُ لفظ رحمن عربي زبان كالفظ بهاس كمعنى سبعسرب جائة تقے سكريد نفظ وہ الشرتعالی كے لئے مذہو لئے تھے اسى لئے يہاں يرسوال كياكہ وحمل كون اوركيا ہے -تَلْرُكَ الَّذِي يُجَعَلَ فِي السَّكَاءِ بُرُوْجًا وَّجَعَلَ فِيهُمَا سِرَاجًا وَّقَدُوا مُّنِينًا ٥ وَهُوَ الذي جَعَلَ النِّيلَ وَالنَّهَارَ خِلْقَةً لِنَّنَّ آرَادَ آنَ يَنَّ حَرَّا وَ آرَادَ شَكُورًا ٥ مقصودان آیات سے انسان کویہ تبلانا ہے کہ ہم نے اسمان میں برطے براك ستار اورس وقمراورا كے زرىيد رات دن كانقلاب اور آئى تارىكى اور دوشنى اور زمين وآسمال كى تمام كأنات اسك يبلك ي كم غورو فكر فواك كواسين في تعاطى قدرت كالمه اور توحيد ك ولأل فراجم جول- اور مشكر كزارك لئے مشكر كے مواقع مليں توجس شخص كا وقت دنياميں ان دونوں چيزوں سے خالي گزرگيا اسكا وقت ضائع بوكيا اوراسكاراس المال مي فنا بوكيا اللهق إجعلنا من النّاكين الشّاكسين -ابن عربی فرطتے بی کریں نے شہید اکبرے منا ہے کہ بڑے قبن اور خسارہ میں ہے وہ آدمی عبی عرسا تھ سال برئ اسمیں سے آ دھا وقت تیس سال دات کوسو نے میں گز رگئے اور حیشا حضایونی دس سال دن کو اَدَام كرفي مِن كَرُوكِيا توما تُدْ مِن سے صرف بيں سال كام ميں لكے - قرائي حكيم نے اس جگہ بڑے بڑے متادہ ادرسیاروں اورفلکیات کا ذکر کرنے کے بعد یہ میں تبلاد یا کہ قران ان چیزوں کا ذکر بار بار اسلے کرتا ہے کہ تم ان كى تخليق اوران كى حركات أن سے بيدا مونے والے آثار ميں غور كركے ان كے بيداكرنے والے اور صلائے والے کو بہجانواد کوشکر گزاری میساتھ اسے یا دکرتے رہو۔ باتی رہا پرسئلہ کہ اجرام ساویداور فلکیات کی حقیقت ادر میت کیا ہے میر آسمانوں کے جرم کے اندرسمائے ہوئے ہی یا اُن سے باہر کی فضائی آسمانی میں ہیں ۔ [انسان محمعاش یامعاد کاکوئ مسئلاس سے دابستہ نہیں اوران کی حقیقت کامعلوم کرناانسان کے

سُورة الفرقان ٢٥ : ٢٢

لئے اتسان بھی نہیں جن لوگوں نے اپنی عمری اس کام ہیں صرف کی ہیں اسکے اقراد سے ثابت ہے کہ دہ بھی کو تطعی ادر آخری فیصله نہیں کرسے ادر جوفیصلے کئے دہ میں خود دوسرے حکماری مخالف تحقیقات نے مخدوش مجروح کرد ئے عاس مئے تفسیر قران میں اس سے زیادہ سی بحث میں پڑنا بھی کوئ قران کی صروری خدمت نہیں۔ ليكن اس زاف كم ما برين سائنس في مصنوعي سيادات أراف ادرجا ند تك يهنع جاف ادرو مال كي مثى یتھر، فاروں، بہاڑوں کے فوٹو فراہم کرنے میں بلاشھ جیرت انگیز کا رنا مے انجام دیے مگرافسوس ہے کہ قران حكيم ان چيزوں سے انسان كوس حقيقت شناسى كامبق دينا جامہتا ہے يہ توك بني تحقيقى كا وشوں مے غرورمیں مست ہوکرانس سے اور زیادہ وور ہوگئے اور عام ہوگوں کے ذہنوں کو بھی ٹری طرح اُلجھا دیا، کو ان چیزدں کو قرآن کے خلات بچھ کرمشاہدات کا ہی انکار کر دیتاہے کوئ قرآن کریم میں تا ویلات کرنے لكتاب اسلة صرورى معلوم بواكه بقدر صرورت تفصيل كرسا فقداس مستله كو داصنح كردياجائ يمورة حجرى آيت وَلَقَلُ جَعَلْنَا فِي الشَّمَاءِ بُرُونِجًا كَتِحت اسكا دعده بفي كياكيا تفاكه ستُورَةُ في ان بين آكى تفصيل تعمى جاديكي وه حسب ذيل ب والله الموفق

ستالى اورسيال كاشمانول كما ندري يابابر إجعَل فِل لسَّمَاءُ بُرُوجًا كم الفاظ سے بطام ريجها جاتا قدیم وجدیدهم بنیت نظریا ورقران کریم کارشارا که به بر وج تعنی سیارے اسمانوں کے اندر ہیں کیونکرون ستعلى وتاہے - اس طرح مستورق نوح يس ب العُ تَذَكِّ كَيْفَ خَاقَ اللهُ اَسْبُعَ سَمُوْتِ طِبُاقًا وَجَعَلَ الْقَدَ فِي يُورُا وَجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا أَسِي فَيَصَ كَيْمَيرسبع سمنوات كى طوف راجع بي جس سے ظاہراً يہى تھہوم ، وتا ہے كرچا نداسمانوں كے اندرہے يمين يہاں دو باتين قابل غور بين - اول توبيد كد قران كريم مين لفظ سهاء حس طرح استخطيم الشان اور وسم وكمان سے زائد وسعت رکھنے والی مخلوق کے لئے استعال ہوتا ہے بین قرآن کی تصریحات کے مطابق وروازے ہی اور در دازوں بر فرشتوں کے بہرے ہیں جو خاص خاص او قات میں کھولے جاتے ہیں اور جن کی تعداد قرال کھم نے سات بتلائ ہے اسی طرح یہ لفظ سماء ہر طبند چیزجو آسمان کی طرف ہو اُس پر کھی بولاجا آہی۔ آسمانُ زمین کے درمیان کی فضار اوراس سے آگے جس کو آجکل کی اصطلاح میں خلا پولتے ہیں برسب دوسرے معنى كما عتبار سے لفظ سماء كے فہوم ميں داخل ہيں - وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءُ طَهُوْلًا ، اوراسيطي کی دوسری آیتین خبی آسمان سے یا فی برسانے کا ذکرہان کو اکثر مفتسرین نے اسی دوسرے معنی پر محول فرمایا ہے کیونکہ عام مشاہدات سے بھی یہ ثابت ہے کہ بارش ان باد اوں سے برستی ہے جو آسمان کی بدندی سے کوئ نسبت نہیں رکھتے اورخود قرآن کریم نے بھی دوسری آیات میں با دلوں کیا ٹی برسانے ا كى تصريح فرماى ب ادشاد ب عَ آنْتُكُو آنْزَلْتُهُ وْ هُ مِنَ الْمُرْنِ الْمُرْنِ الْمُ نَحْنُ الْمُنْزِنُونَ آسى مزن، مزنة كى جمع بي جس ك معنى سفيد بادل ك آتے بين معنى يہ بين كدكيا بادش كوسفيد باداو

سے تم نے اُ تا دا ہے یا ہم نے۔ دومری جگہ ارشاد ہے دا گزگنارش المعقیم آت کے این کا تو تک بھرے میں معصولات کے معنی پانی سے مجرے ہوئے یا دل ہیں اور معنی آئیت کے یہ ہیں کہ ہم نے ہی پانی مجرے با دل ہیں اور معنی آئیت کے یہ ہیں کہ ہم نے ہی پائی مجرے با دلوں سے کثرت سے پانی برسایا۔ قرائ مجید کی ان واضح تصریحات اور عام مشاہدات کی بنار پرجن آیا ہے تر آئن ہیں بارش کا آشمان سے برسانا مذکور ہے اُن ہیں تھی اکثر مفسرین نے نفظ سماء کے بہی دو مرے معنی لئے ہیں بعین فضارا سمانی ۔

خلاصہ بیر ہے کہ جب قران کرم اور گفت کی تصریحات میطابق لفظ سی اعضائے اسمانی کے لئے بھی بولاجاتاب اورخودجرم أسمان كيلة بعى - تواليسى صورتين جن آيات مين كواكب اورستارات كيلية في الشَّيّاء كالفظامتعال واب أبح مفهوم من دونوں اختمال موجود بي كم يركواكب اورستار مے جرم أسمان كے الدر زول ما فضل الماني مين اسمانون كے نيے بول - اور دواحمانوں كے فيتے كوئ قطعى فيصلة قران فيطرت منسوب نہيں كياجا سكتا كرقران نے ستاروں اور ستاروں كواسمان كے اندر قرار ديا ہے يا اُن سے بالمرفضائة أسماني مين - بلكم الفاظ قران كاعتبارت دونون صورين على بي كأشات كى تحقيقات ادرتجرا اورمشابدے سے جوصورت می ثابت ہوجائے قران کی کوئ تصریح اسے منافی نہیں ہے۔ حقائق كؤنيها ورقران يهال ايك بات أصولي طور يرسمجد لينا صروري بهكه قران كريم كوئ فلسفه يا مهيئت كى كتاب بي حبيكا موصوع بحث حقائق كأنيات بإآسانوں اور شاروں كى بيئت وحركات وغيره كا بيان ہو مگراسے ساتھیں وہ آسمان وزمین اوراکے درمیان کی کا نبات کا ذکر بار بارکر تاہے اُنیں غوروں ک میطوف دعوت بھی دیتا ہے۔ قرآن کریم کی ان تمام آیات میں غور کرنے سے واضح طور پر بیر ثابت موجا آہے كة قران عزيزان حقائق كونيد كم سعلق انسان كوصرف وه جيزي تبلاناجام شاسيح بن كا تعلق اسكے عقيدے ا ودنظریے کی دریتی سے بویا اسکے دینی اور دنیوی مثافع اُن سے تعلق ہوں ۔ مثلاً قرآن کریم نے آسمان زمین اورستاروں،سیاروں کا اوران کی حرکات اور حرکات سے پیدا ہونے والے آثاد کا ذکر بار بارا یکے اس مقصد سے کیا ہے کہ انسان ان کی عجید غریب صنعت اور مافوق العادت آثاد کو دیکھ کر بیلین کے كربير چيزين خود بخود بريدا نہيں موكسين ان كو بيداكر في دالاكوئ سے برائكيم سے برا عليم اورسب سے براصاحب قدرت وقوت ہے۔ اور اس بقین کے لئے ہرگز اس کی ضرورت نہیں کہ آسما بوں کی اور فضائی مخلیجات اورستاروں ہتیاروں کے ماقرے کی حقیقت اور اُن کی صلی مبئیت وصورت اور اُن کے بورے نظام كى تورى كيفيت اس كومعلوم بويلكه اسكے لئے صرف اتنابى كافئ وجبكو برخص مشاہدہ سے ديكھتا اور تجيتاً كتمس دقمر اورد وسرب ستاروں كے بھی سامنے آئے اور بھی غائب ہوجانے سے نیز جاند کے گھٹنے بڑھنے سے اور دات دن کے انقلاب می مختلف موہموں اور مختلف خطوں میں دن دات کے کھٹنے بڑھنے کے عجیب و غرب نظام سے بیں ہزادوں سال سے بھی ایک منٹ ایک سینٹ کا فرق مہیں آیا ،ان سب اُمورسے

قران کریم کے تھا صفے کو پوداگر ناہے۔

بر صحیح بات یہ ہے کہ قرآن کریم بندان فلسفی اور سائسنی تحقیقات قدیمہ یا جدیرہ کیطوت ہوگوں

کو دعوت دیتا ہے بنہ اُن سے بحث کر ناہے اور بندائن کی خالفت کر تاہے ۔ قرآن کریم کا حکیما نہا اصور

اسلوب کا نمات و مخلوقات سے متعلقہ تمام فنون کے بارے میں بہی ہے کہ وہ ہرفن کی چیزوں سے شرف اُس کے قدد النہائی دینی یا دنیوی ضرورت سے تعلق ہے اور جس کو انسان اُس کی تعین اس کو اطبینان مجی ہوسکتا ہو فلفیا نہ دوراز کا

اشانی سے حاصل مجی کرسکتا ہے اور بس کے حصول پر تخیناً اس کو اطبینان مجی ہوسکتا ہو فلفیا نہ دوراز کا

بھی قطعی طور پریہ نہیں کہا جاسک کہ وہ ہی شیح ہیں بلکہ چیرانی اور شن کو کچھ حاصل کر لینے کے لید

انسان کو نہیں اُنہا نا ۔ کیو مکہ قرآن کی نظر میں انسان کی منزلِ مقصود ان تمام زمینی اورائسان کو کامنات انسان کو نہیں اور داس کے لئے ضروری ہے اور نہ اس پر ٹیر را عبورانسان کے بس میں ہے ۔ ہم

و خاوقات سے آگے اپنے خات کی مرضیات ہوئی کر حبنت کی دائمی نہتوں اور را حتوں کو حاصل کرنا گرجہ حقائق کا منات کی بحث نہا س کے لئے ضروری ہے اور نہ اس پر ٹیر را عبورانسان کے بس میں ہے ۔ ہم

و خاوقات سے آگے اپنے خات کی مرضیات ہوئی کر حبنت کی دائمی نہتوں اور داختوں کو حاصل کرنا گرجہ حقائق کی مرضیات ہوئی کا منات کی بحث نہا س کے لئے ضروری ہے اور نہ اس پر ٹیر را عبورانسان کے بس میں ہے ۔ ہم

رث القرآن جسله سورة الفرف ان ٢٥ اكتشافات اس كى داضح دليل بين كرسى نظريه اورتحقيق كويقيني ا درآخرى نهين كهاجاسكتا - انسا في صرورت سے تعلقہ تمام فنون ، کلکیات ، کا کتات فضاء ابروباداں ، خلاء طبقات الادض ، محرز مین بربردا مونے والى مخلوقات، جما دات، نباتات، حيوانات سے اور عام انسان اور انسانی علوم و فنون، تجار ، زيات صنعت وغيره ان سباي قران حكيم صرف أن كى أوح اورمشابدا تى حصد كواسقدرليتا بي عن سانك کی دینی یا دُنیوی صرورت متعلق ہے، دورا ز کارتحقیقات کی دلدل میں انسان کونہیں بھینسا یا البتہ کہیں ہیں سی خاص سے کے حاف اشارہ یا صراحت بھی یائ جاتی ہے۔ نفسيرقران مين صفى نظريات كى علمارا بل حق قديم وجديداس يرشفق بين كدان مسائل كي متعلق جو بات موافقت یا مخالفت کا میچ معیار فراتن کریم سے تقینی طور پر ثما بت ہے ماکر کوئی قدیم یا جدید نظریہ اکسس سے مختلف ہو تواس کی دجہ سے قرائی آیات میں تھینے تان اور تاویل جائز بہیں راس نظریہ ہی کو مغالطہ قرار ديا جائے گاء البيت جن مسائل ميں قرائي كريم كى كوئ تصريع موجود نہيں الفاظ قرائى يى دونوں معنے كى كنجات ہے دہاں اگرمشا ہدات اور تجربے سے سی ایک نظریہ کو قوت حاصل ہوجائے تو ایت قراق کو بھی ایک نظریہ کو قوت حاصل ہوجائے تو ایت قراق کو بھی ایک میں يرجُول كرلين من كوى مضائفة نهين - جيساسي آيت جَعَلَ فِل السَّمَا عِبُورُجًا مِن م كرقران كريم نے اس باده میں کوئ واضح فیصلہ بہیں دیا کہ شارے اسمال کے اندریں یا باہر فضائے اسمانی میں ہیں۔ انجل جبكه خلائ تجربات نے بیر تابت كردياكه ان ستيارات تك پېنجيا جاسكتا ہے تواس سے فيشاغورس نظريہ كى تائيد موكنى كدمتناد كاتسمالون مين بيوست ننهي كيونكه قراني كريم ادراحاديث صريحيا كى تصريحات كى رُوسے آسمان ایک ایسا حصار ہے میں دروازے ہیں اور دروا زوں پر فرشتوں کا بہرہ ہے اُن میں ہر مخص اخل بنیں ہوسکتا۔ اس مشاہرے اور تجربے کی بنار برآیت مذکورہ کا بیفہوم قرار دیا جا بھاکہ کواب كوفضائے أسماني ميں يداكيا كيا ہے اور يہ كوئ تاويل نہيں بكه دومفہوم ميں سے ايك كي تعيين ہے۔ لیکن اگر کوئ سرے سے اسمانوں کے وجود کا ارکار کرے جیسے بعض بہیت جدید دائے کہتے ہیں یا کوئی دعویٰ كرك كدراك وادر وائجازوں كے ذرائي آسمانوں كے اندر داخلہ وسكتا ہے تو ازر واخ آن كس دعو مے کو خلط قرار دیا جائے گا کیو مکہ قرآن کریم نے متعدد آیات میں یہ بات واضح طور پر نبلائ ہے کہ أسمالؤن مين درداز مين ادروه درداز عفاص خاص حالات مين كعدا على ان دردازون يرفرشتون كايېره مسلط سے-اسمانوں ميں داخل پرخص كاجب جا سے نہيں ہوسكتا، اس دعوے كى وحدسے أن أيات ين كوئ ماويل نبس كيا يك اور إس دعوے كو غلط قرار ديا جائے گا-اسى طبع جبكه قران كريم كى آيت كُل في فكلك يتسبيحون سے ستاروں كا حركت كرنا تابت، تواس

معامله میں بطلیموی نظریہ کو غلط قرار دیا جا کیگاجی گروسے ستا سے اسمان کے جرم میں پیوست ہی دہ خود حرکت نہیں کرتے بلکہ اسمان کی حرکت کے تا بع اُن کی حرکت ہوتی ہے۔ المورة الفرقان ١٢٠ ٢٢

معارف القرآن جسيلة

اس سے معلوم ہوا کہ قدیم مفتر سے میں سے جن کو گھر خلکیات کے تعلق بطلیموی نظریے کے معتقد کھے انھوں نے اُن آیاتِ قرآئی میں اویلات سے کام لیاجن سے بطالیموی نظریے نیات کو کی چیز بھی انگی تھی۔
اسی طرح آج کے بعض صففین جن آیات کو جدیہ سینیت کے نظریات سے مختلف بھی جی انہیں تا ویلات کرکے اُسے مطابق بنانے کی فکرکرتے ہیں ہید دونوں صورتیں درست نہیں سلف صالحین کے طریقے کیخلاف اور قابل تردید ہے۔ البتہ واقعہ بیم ہے کہ اسوقت تک ہمیئت جدید نے جونئی تحقیقات پیش کی بیان کی میں آتھا بول کے اسام قت تک ہمیئت میں معتقد گئے تھی تاک کو میں آتھا ہوں کے ایک کو میں تا ویلات کے دریے ہوجواتے ہیں ، معین لوگ اپنے قصور علم سے اُن کو آتی یا سنت کی بیان سنت کی بیان کو اسام تک دریے ہوجواتے ہیں ۔

رأيت كشيرا من تواعدها لا يعارض التصوص الواردة فى الكتاب والسنة على الها لوخالفت شبئا من ذلك لو يلتفت اليها ولو نورول التصوص الجاها ولا نورول التصوص المها ولو نورول التصوص المها ولو نورول التصوص المها المها ولو نورول التصوص المها المها ولو نورول المناها المناها

یں نے مہیئت جد ہیرہ کے بہت سے تواعد کو

دیکھاہے دہ قرآن دسنت کی نصوص کیخلات

ہیں۔ ادراسکے با وجود اگر دہ قرآن دسنت کی

سی نص کیخلاف ہو تو ہم اسکی طرف ٹرخ ہزر کیگے

ادرقرآن دسنت کی نصوص میں اس کیوجہ سے

تا ویل ہذکریں گئے کیو کا اسی تا ویل سلف کین

کے ندہب مقبول میں نہیں ہے بلکہ ہم اُسوقت یہ

ہیں گئے کیجو نظریہ قرآن دسنت کیخلاف اس میں

اختلاف نہیں اور انقراع میں کیکے کیو کا ایکٹر کے میں کیکے کیو کا ایکٹر کے کیو کیکٹر کے کیو کیکٹر کے کیو کیکٹر کے کیو کیکٹر کیکٹر کے کیو کیکٹر کیکٹر کے کیو کیکٹر کیکٹر کیکٹر کے کیو کیکٹر کے نہیں ہوتا کیکٹر کوکٹر کیکٹر کیکٹر

کوئی نیافن نہیں، ہزاروں سال ہیہے سے ان سائل پر تحقیقات کاسلسلہ جاری ہے۔مصر، شام اہند

19

خلاصة كلام يدبيح كه فلكيات ا درستارون بستيار ون كي حركات ا دربيئيات ميمتعلق مجث وتحقيق

MAM

مورة الفرقال ۲۱:۲۵

چین وغیرہ میں ان فنون کا چرچا قدیم زمانہ سے چلاآ رہا ہے۔حضرت سے علایاتنام کی نسوسال بیہے ہے۔ فن کا بڑا معلّم فیٹیا غورس گُزولہ جوا طالبہ کے مدرسہ کروتونا میں باقاعدہ اس کی تعلیم بینا تھا، اس کے بعد میلاڈسے علیابسلام سے تقریباً ایکسو چالیس سال پہلے اس فن کا دوسرا محقق تطبیموں رومی آیا اوراسی زئے میں ایک فیمے فلاسفر ہیں توقوں کی شہرت ہوئ جسے زا دیئے نایئے کے آلات ایجاد کئے۔

فيثاغورس اورطليموس محنظرمات بهيئت افلاك مصتعلق بالكل آيك دوس سينتفنا دعق بطليموس كواين زماني كى حكومت اورعوام كاتعاون حاصل بوا- اسكا نظريه اتنا بيهيلا كه فيثنا غورس كا نظرية كوشنه كمنامي ميں جايڙا۔ اور حب كوناني فلسفه كاعربي زبان ميں ترجمه بهدا تو بي بطبابيس كانظر به إن ت بوں میں متنقل ہواا دراہل علم میں عام طور سے مینی نظریہ جانا پہچانا کیا۔ بہت سے مفتسرین نے آیا۔ فرآنيري تفسيرس بحي يبي نظريه سامنے د کھکرکلام کيا۔ گياد ہويں صدى پجرى اور نيدر ہويں صدى عیسوی جی*ں اقوام توریب کی تر*قی کاآغا زہوا اور پور دبین محققین نے ان مسائل پر کام کرنا مشروع مسب سے پہلے کو پرنگ بھرچرمنی میں کیلرا درا طالبرس کلیلیو وغیرہ کے نام آتے ہی انھا باحث كاجائزه ليا، بيرسب اس يرمنفن موكئة كهمبيئت افلاك كيمتعلق لطليمونية غلطاؤنيثاغورس كانظريه صحع ب- الهاريوس صدى عليوى اورشرسوس صدى بحرى مي المحق نيوش فی شهرت دی - اس کی تحقیقات دا بجا دات نے اس کو مزید تقویت بہنجائ -اس-لہ وزنی چیزی اگر ہوا میں چیوڑی جائیں تو اُ بھے زمین پرا گرنے کا سب وہ نہیں میں تبلایا گیاہے کہ زمین کے وسط میں مرکز عالم ہے اور تمام وزنی چیزیں مرکز کی طوف نطرۃ رہوع کرتی ہیں بلکہ اُسے تبلایا کہ جنتے ستارے اور ستیا رات ہیں سب میں ایک جذب وکشش کا ما دہ ہے زمین بھی اسی طرح کا ایک ستارہ ہے اسمیں بھی شش ہے جس حد تک، زمین کی شش کا اثر رہتاہے دہا سے ہروزنی چیزومین پر آو بھی لیکن اگر کوئی چیزا سے کشش کے دائرہ سے یا ہزیکل جائے تو وہ کھے۔ تحينس آن كي -

مال میں دوسی اورامریکی ماہری نے قدیم اسلا می فلاسفر اوریان بیرونی کی تحقیقات کی امداد سے

راکٹ وغیرہ ایجا دکر کے اسکاعلی تجرب اور شاہدہ کرلیا کہ راکٹ جب اپنی شدید توت اور تیزرفتاری

کے سبب زمین کی ششش کو تو اگر اسکے دائرہ سے باہر لیکل گیا تو بھر یہ نیچے نہیں آتا بلکا پیصنوی

سیارے کی صورت افتیاد کر لیتیا اور اپنے مداد پر تی راکٹا تاہے ۔ بھران مصنوعی ستیا روں کا تجہ رب

کرتے کرتے اسکے ماہری سیارات تک بہنی کی تدبیری شروع کیں اور بالا خرجا ندیر بہنچ گئے میں

کی تصدیق اس ذمانے کے تمام ماہرین فن موافق و مخالف نے کی اور ابتک چا ندیر باد بارجانے ،

وہاں کے بیتھر، خاک غیرہ لانے اور اسکے فوٹو ہتا کر نیکا سلسلہ جاری ہے۔ دو سرے سیارات تک

سُورُة الفرق ال ١٢:٢٥ ذارف القرائنج مینینے کی بھی کوششیں مور ہی ہیں اور فلا نور دی خلاپیمائ کی مشقیں جاری ہیں -بیاری ا ان میں سے امریکن قلا بور و جان کلین جو کامیا ہی کے ساتھ فلا کاسفرکر کے واپس آیا اور آئی کامیا پراسے موافق و مخالف بھی۔ نے اعتماد کیا ، اسکا ایک بیان امر کید کے مشہور ما ہنا مرس بی رزشا انجسٹ ين ادراسكا از دوترهم امريكي ك اردومانام تسايريين مين مفقتل شائع بوا بيهان اسكان اقتتباسات مائنام سيرين سے نقل كئے جاتے ہي جن سے ہمارے زير بجث مسئلہ بركانى دوشى يرتى ہے جان گلین نے اپنے طویل مقالد میں فلائے عجائب کو سیان کرتے ہوئے لکھا ہے: مديبي وه ايك واحد شئ م جوخلامين فداك وجودير دلالت كرتى بدا دريركم كوئ طاقت ہے جوان سب کو مرکز ومحورے وابستر رکھتی ہے " آ کے لکھاہے کہ: "اس کے با وجود خلامیں پہلے ہی سے جوعل جاری ہے اسکود تھے ہوئے ہماری کوششیں انتهائ حقیری -سائنسی اصطلاحات و بیمانوں میں خلائ بیمائش نامکن ہے " المحردائ جهازى شين توت كاندكره كرك كلها يحكه: ودنيكن أيك بقيني اورغيرهس قوت كے بغيراسكااستعمال مي محدوداور بيمعني يوكرره جاتا ہے!سلے کہ جہاز کواینے مقصد کی تکمیل کے لئے تعیین رُخ کی حاجت ہوتی ہے ا دريكا قطب نماس ليا مانا ب- وه توت جوقطب نما كوتنحرك كفتى ببهايس تما حواس خمسه کے لئے ایک کھلاجیانی ہے اسے نہ ہم دیکھ سے ہیں نہ سن سے ہیں نہ چھوسكتے ہيں نہ جي سكتے ہيں نہ سو مكھ كتے ہيں حالا كذبتائج كافہوراسيرانے والات كرريا بوتا كي بيال كوى يوشيده توت ضرور موجود بي-ا كے سب سيروسفر كے نتيجہ مے طور راكفتا ہے: «عبيمائيت كے اُصول ونظريات كى حقيقت بھي شھيك يہى كچھ ہے۔ اگر ہم ان كو اينا رہنما بنائیں تو با وجو دیکہ ہما اے حواس ان کے ا دراک سے عاجز ہوتے ہیں کی اس رسنما قوت کے نتائج و تا تزات این اور اینے دوسرے بھائیوں کی زید تیوں میں کھیلی آ تھوں دعیس کے۔ یہی وجہ ہے کہم جانتے ہیں ادراس بنار پر کہتے ہیں کاس ين ايك رسماقوت موجود ب يدجي فلاد كمصافرون اورسيارات يركمند تفييكن والون كى كمائ كمح حاصلات جوآينا امريكى خلانورد كے بیان میں پڑھ لیں كه اس تمام تك و دُو كے نتیجہ میں را زِ كائنات اوراس كى حقیقت كك رمائ توكيام وقى بے صدو بے حساب سيارات دنجوم كى كردشوں كاادراك موكراور حيرافي بڑھكى۔

ما رث القسران جسكة سُورُة الفسرفان ١٤٠٥ سائنسی آلات سے آئی بیائش کے آما مکن ہوئے اور اپنی سب کوششوں کی اس سے مقابلہ میں حقارت كاا قرار داعترات كرنا برڑا -بس حجا جدل اتنى يات بوئ كه بيرب نظام كأننات ا درنجيم وستيارات خود مخود نهير، بلكسي عظيم اورغير كوس طاقت كے ذير فرمان جل يہ ہيں - يہي وہ بات ہے كوانبيار عليبهالتلام في يبلح قدم برعام انسانون كو تبلاد يا تھا اور قرانَ كريم كى بينياراً يات مين اسى چيز كا يقيرني لا لئے اسمان وزمین ، نجوم وسیارات وغیرہ کے حالات برغورو فکر کرنے کی تلقین کی گئی ہے۔ آب نے دیجیولیاکہ جس طرح زمین میں مبیھوکرا شمانی نصناؤں اور نجوم دستیا رات کی تحقیقات و مہینا يرفلفيانه بجثين كرفي والعان چيزون كى حقيقت تك نه بينج سكة اوربالآخرا سين عجزو بيسي كاعترا كيا-اسى طرح يبزرين سے لاكھوں ميل أوركا سفركز نبوالے ا درجا ند كے پتفرا در مثی اور وہا ل كے نوٹوں والے مجی حقیقت شناسی کے میدان میں مجھ اس سے آگے نہ بڑھ سکے ۔ ان تحقیقات انسان اورانسانیت کو کیا بخشا جهانت که نسانی جد وجهدا در فکری ارتقارا در ای مجویزای اورجيرت انكيز انكشافات كامعالمه ب وه اين جكه درست اورعام نظرون كاعتبار سقابل تحسين بھی ہے ميكن اگراس برغور كيا جائے كہ بے مصرت شعبدہ كرى اور تماشيني جس سے انہا اورانسانيت كاكوى معتديه فائده نهووه حكار وعقلار كاكام نهبى - دىكيمتا يه جايئي كهاسسو یجاس سال کی جدوجهداوراریوں کھر توں رو بیم جو بہت سے انسانوں کے مصاب دُور کرنے۔ سے کافی ہوتا اُس کو آگ کی تذرکر دیے اور جاند تک بہنے کر وہاں کی خاک اور سخفرسمیٹ لانے سے انسان اور انسانیت کو کیا قائدہ پہنجا۔ انسان کی بڑی بھاری تعدا دایسے ہوگوں کی ہے جوتھوک سے مرتے ہیں اُن کولیاس اورسر جھیانے تی جگہ میسر نہیں، کیااس جدوجہد نے ایکے افلاس ومصيبت كاكوئ حل نيكالا، ياا بحيها مراص دا فات سيصحت وعافيت كاكوى أتنظام كبيا یا ایکے لئے قلبی سکون وراحت کاکوئ سامان فراہم کیا، توبقین ہے کہسی کے پاس اسکاجواب بجز تفي كينين بوگا-یری وجہ ہے کہ قران وشدنت انسان کو ایسے لا تعینی مشغلے ہیں بہتلا کرنے سے گر مزکرتے ہیں اوركاكنات مالمي غوروفكراورتدبيركي دعوت صرف دويشيتون سدديتين بهاحيث جوال مقصود ہے ہے کہ ان آٹا رعجبیہ کو دیکھ کرمؤ ترحقیقی اوراس غیرمسوس قوت کا لیتین كرلين جواس سارم نظام كوچلارى ہے، أسى كا نام خداہے - دوسرے ان زميني اورائهاني مخلوقات میں الشرتعالی نے انسان کے فائدے کے لئے ہر صرورت کی چیز و دایوت فرمادی ہے انسان كاكام بيرب كراين عقل وشعورا ورجد وجهدسے كام ليكرائن چيزوں كوزمين كے خزائن ز کا ان اور استعمال کرنے کے طریقے سیکھ لے۔ یہلی حیثیت اصل مقصود ہے اور دوسری حیثیت ثانو رفع ضرورت کے لئے ہے اس لئے ضرورت سے زائد اسیں انہاک پیند یدہ نہیں اور کا ناتِ عالمیں غور دکا ور تدبر کی دونوں شینی انسان کے لئے آسان بھی بین میخ جز بھی ۔ اور ان دونوں شینیتوں کے نتائج میں قدیم وجد بدفلاسفہ کا کوئ اختلاف بھی نہیں ۔ ان کے سب اختلافات افلاک اور سیارات کی ہمیئت و حقیقت سے متعلق ہیں جن کو قراق نے بے ضرورت اور نا قابل حصول قرار دیکر نظر انداز کر دیا ہے ۔ علامہ بخیت مفتی مصر نے اپنی کتاب تو فیری کی حرکات اور حسابات سے تعلق ہے۔ دو سراعلی جو ان حسابات کو معلوم کرنے کے لئے آلاتِ قدیم وجدیدہ سے تعلق ہے تبیہ اطبعی ، جو افلاک سیارات کی ہمیئت و حقیقت سے تعلق ہے اور کھا ہے کہ پہلی دونوں تھوں میں ماہرین قدیم وجدید میل خوت الا تعام ہے۔ آلات اوراک میں بہت بڑا اختلاف ہونے کے با وجود نتائج پراکٹر آئمور میں سب کا لعدم ہے۔ آلات اوراک میں بہت بڑا اختلاف ہونے کے با وجود نتائج پراکٹر آئمور میں سب کا اتفاق ہے ان کا شدیدا ختلاف صرف تعیمری تسمیں ہے۔

غور نیج توانسانی ضرورت مح متعلق بھی بیکی دو تسمیں ہیں تیسری م دوراد کار بھی ہے اور مشکل بھی ۔اسی لئے قرائن وشنت اور عام انبیار علیہم السّلام کی تعلیمات نے انسان کو اس تیسری بحث میں نہیں اُلجھا یا ،اور بزرگان سلف نے بیصیحت فرمائ سے

زبان نازه کردن با قرار تو پیز نبینگنجی علّت از کار تو مهندس بسیجویداز رازِ شال پیز نداند که مجول کردی آغازِ شال مهندس بسیجویداز رازِ شال پیز نداند که مجول کردی آغازِ شال

صوفیائے کرام جونظرکشفی سے ان چیزوں کو دیکھتے ہیں ان کافیصلہ بھی انجام کا روہی ہجوئیے مدوری علد ارجمہ نے فرمایا ہے

ما فی صیبہ رہمہ میں استان کے اپنی کے میں اور کی سینے کہ قیم کے اپنی کے میں اور کی سینے کہ قیم کا انتخاب کے اپنی کے میں فرما ہاں ۔ استان کے میں فرما ہاں ۔ اپنی کے میں فرما ہاں ۔

سخن از مطرب و می گوی را زدهر کمتر جو پیز که سنکشود و نکشاید کبت این مقادا
اس تمام تفصیل کا حاصل بیر ہے کہ کا نمات افلاک نضاء اورکا نمات ارصنی میں غور و فکراس
حیثیت سے کہ اُن سے پریدا کرنے والے کے وجود اور توحید اور اس کی بے مثال علم وقدرت پراسترلال
کیا جاسکے عین مقصود قرآنی ہے اور قرآن جا بجا اس وعوت دے رہا ہے اور اس حیثیت سے کہ
ان چیزوں سے انسان کے معاشی مسائل کا تعلق ہے وہ میں صرورت کی صریک منشار قرآنی ہے اور
قرآن آئی طوف میں دعوت دیتا ہے گراس فرق کیساتھ کہ معاش اور معاشی صروریات کو مل مقصد
قرار دیجر اُسمیں انہائ کے کہاس موجودہ زندگی کو اسلی زندگی کی طری ایک سفر کا درجہ قرار دے کہ
اسکے مطابق اسمیں شغول ہو۔ اور تمیسری حیثیت چو کا انسانی ضرورت زائد میں ہے اور اسکا حصول می

مشکل ہے اُس میں عمر عزیز صرف کرنے سے گریکی طرف اشارہ کرتا ہے۔ یہاں سے بیٹی وہنے ہوگیا کہ
موجودہ سائنس کی جدید ترقیات و تحقیقات کو عین خشار قرآنی ہجمنا ہی غلط ہے جبیا کہ بعض تجدد پ ند
علمار نے لکھا ہے اور قرآن کو اُن کا مخالف کہنا بھی غلط ہے جبیا کہ بعض قدامت پ ندعار نے کہا ہے۔
حقیقت یہ کرکڑو گؤن ان چیزوں کے بیان کے لئے گیا ہے نہ یہ اسکامو ضوع بحث ہے نہ انسان کے لئے
اُن کا حاصل کرنا اسکان ہے نہ انسانی صروریات سے اسکاکوئ تعلق ہے۔ قرآن ان معاملات بیک کرتے
تجربات ومشاہدات سے کوئ چیز ثابت ہو جائے تواس کو قرآن کے منافی کہنا بھی چیجے نہیں۔ چاند کے اوپر
بہنچنا، رہنا بسنا اور وہاں کی معدنیات وغیرہ سے نفع اُٹھانا وغیرہ سب اسیں داخل ہیں ان ہیں سے
کوئی چیز شاہدہ اور تجربہ سے تابت ہو جائے تواسکے اُٹھانا کوئی و جہنہیں اور حب تک تابت نہو
خوا مخواہ اسکے تصورات با ندھنا اور اسی عرعز نرکے اوقات صرف کرنا بھی کوئی فیٹھندی نہیں۔ والسُّ

عِيادُ السَّوْلِ

و حباد الترخمين الدّين يمشون على الرّرْض هو ناقر إذ اخاطبهم و اور جب بات كرخ لكين المورند و برن كور و بالكرن كيدينون الرود على الرود الله الكرن كيدينون كري هو ناقر المرك على الكرن كيدينون كري هو المنظر الري المرك عدا عدا المرك عدا المرك عدا المرك عدا المرك المرك عدا المرك عدا المرك عدا المرك عدا المرك عدا المرك المرك المرك المرك المرك المرك عدا المرك المرك عدا المرك المرك عدا المرك المرك عدا المرك المرك

ورة الفرقيان ۲۵: ۷ قیامت کے دن اور بڑارہے گااسیں بدل دیگا انشر سو آن کو اور جو کوئ تو یہ کرے اور کرے کام نیک اورجونوك شامل بہيں ہوتے جھوٹے كام ميں اورجب كروتے مرآیا ہے التری طوٹ محرائے کی جگہ ا در وہ لوگ کرجب ان کو مجھاتے ان کے رب کی باش يىلى ياتوں يركى جائيں بزركان اور وہ اوگ جو کہتے ہیں اے رب دے بھور تاری عور توں کی ط ان کو ہدلہ ملے اولادى طوت سے آ كليرى شندك اوركر ام كو ير اينز كاروں كا بيشوا وتصوں کے جو کے اسلے کہ وہ تابت قدم رہے اور لینے آئیں گے ان کو دہاں ڈعاا ورسلام کہتے ہوئے فيتماطمسنت مستقرا ومقامان فال ما يعبؤابكوريد ان میں خوب جگر ہے تھم نے کی اور خوب جگر اپنے کی تو کہدیدواہ بنیں رکھتامبرارب محقادی كُوْلَادْعًا وَكُورٌ فَقَانَ كُنَّ بُنَّةٍ فَسَوْفَ يَحْوُنُ لِزَامًا فَ اكرام اس كون بكاراكرد سوئم تو جھالا بيك اب آ كے كو بوتى ہے ملے بھير

اور (حضرت) رحمٰن کے (فاص) بندے وہ ہیں جوزمین برعاج ی کے ساتھ طلتے ہیں رمطلب سے كدان محدمزاج ميں تواضع ہے تمام أمورميں ، اوراسي كا اثر چلتے ميں تھى ظاہر ہوتا ہے اور ضاص چال کی ہیئت بیان کرنا مقصود نہیں کیونکہ ماغ داری کے ساتھ زم زفتاری موجیب مے نہیا یہ توضع توان کاطرزخاص ایناعال میں ہے) در (دوسردں کے ساتھ ان کاطرزیہ ہے کہ) جب ان سے جہالت والے توگ (جہالت کی) بات (جیت) کرتے ہیں تو وہ نفع سڑکی بات کہتے ہیں

معارف القرآن جسلية

دمطلب يبركه اينے نفس كے لئے انتقام قولى يا فعلى نہيں ليتے اور جوخشونت تا ديب و اصلاح باست مشرعيه يااعلار كلمة الشرك لئة بهواس كي نفي مقصود نهيں) اور جو (الشركے ساتھ اپنا پيطرز رکھتے ہیں کہ) واتوں کو ایسے رب کے آگے سیرہ اور قیام (بعنی نماز) میں لگے رہتے ہیں اور جو (باوجود ادائے حقوق الشروحقوق العیاد کے الشرتعالیٰ سے اسقدر ڈرتے ہیں کہ) دُعائیں مانگتے ہیں کہ اے ہمارے پر در دکاریم سے جیتم کے عذاب کو دور رکھتے کیو کلہ اسکا عذاب بوری تباہی ہے، بیشک وہ يتم يُرا تُعكانا اوريُرامقام بيه (بيرتوان كى حالت طاعات بدنييس ب) اور (طاعات ماليين لكا يه طريقيه ہے کہ) وہ جب فرح کرنے لگتے ہيں تونہ فضول فري کرتے ہيں کر معصيت ميں عرف کرنے لکیں) اور شیعی کرتے ہیں و کہ طاعت صروریہ میں بھی خرح کی کوتا ہی کریں ، ا دراسرات میں وہ خرج بهى آكيا كربلاصرورت استطاعت سے زيادہ مياحات ميں ياطاعات غير صرور سيس خرج كري جبكا انجام اخرس بےصبری اوروس وبدنیتی مرکبونکہ بر آموز عصیت ہی اورجو چزمعصیت کاسب بے وه مجى محصيت ہے اس لئے وہ مجى محصيت ہى ميں فرج كرنا انجام كار ہوكيا۔ اسى طرح طاعات ضروريہ مين بالكل ترب نه كرنے كى ندمت كونقية واسے فهوم ہوگئى كيو كيجب خرج ميں كى كرنا جائز نہيں تو عدم انفاق توبدرجُ اولى ناجا مزجو كاليس بيشبيد ندر باكه خريت مين كمي كرنے كي تونفي اور نهي بوكئي تلين عدم الانفاق بالكليم كي نفي اورتهي نه يوي غرض وه انفاق مين افراط و تفريط دو نون سيمبرا بين اور ان كافرية كرنااس (افراط و تفريط) كيروك اعتال تهوتا ہے (اوربير حالت مذكوره توطاعات كى ادائے من تعلق تقی) اور جو (گناه سے بحینے میں بیرشان رکھتے ہیں) کہ ایشرتعالیٰ کبیہا تھے کسی اور معبو د کی رکستیژ نہیں کرتے (جومعصیت متعلق عقائد کے ہے) اور میں خص رکے قتل کرنے) کو اللہ تعالیٰ نے رقواعد مشرعيه كى روسى حرام فرمايا ہے اس كوقتل نہيں كرتے ہاں مگرحتى پر ديسى جب قتل كے وجوب يا اباحت کاکوئ سبب شرعی بایا جاوے اسوقت اور بات ہے) اور وہ زنا نہیں کرتے کہ بیت وزنا اعمال محمتعلقه گناموں میں سے ہیں) اور جو تحض ایسے کام کر بگا دکٹرک کرے یا مثرک کیسا توقتاں ناحق بھی کرسے یا زنا بھی کرے جیسے مشرکین کہ تھے) تومنرا سے اس کوسابقہ پڑیگاکہ قیامت ردزاسكا عذاب برهتا جلاحا أيكا رجبيها كفارك حق مين ووسرى آيات مين آياب ندُونًا هُمْ عَنَا بًا فُوْقَ الْعَنَىٰ ابِ اورده اس (عذاب) میں جمیشہ جیشہ زلیل (وخوار) ہوکر رہے گاڑ تاکہ عذاب جسمانی محسائقه ذلت کاعذاب روحانی بھی ہوا ورشدتِ عذاب بعینی تضاعت کیسا تھ مقدار کی زیادتی يعنى خلودهي مواورم إداس وَمَن يَفْعَلُ ذ لِكَ سَكَفاد ومشركين بِي بقرين ميفاعف ويخلد وبهاناً وآمن كيو بكموش كناب كارك لئ عذاب مين زيادتي اورخلود نه بو كا بلكه اسكاعذاب اس كوياك صاف كرنے كے لئے ہو گاندكدا بانت كے لئے ، اور اس كے لئے تجديدا يمان كى ضرورت نہيں صرف توب

كا في ب حبكاً كم بيان ب وَعَنْ تَابَ وَعَلَامُ نَيْرَقُوا بَنِ مُرَكُوره كم سواصيحين مين ابن عباسٌ سيرش نزدل می اسکایسی منقول ہے کہ شرکین کے بارے میں یہ آیت نازل ہوی) مگرجو (شرک معاصی سے) توبہ كرك اور داس توبرك قبول برونے كى مشرط ير بےكم) ايان دىجى كآدے اور نيك م كرتا رہے ديسنى صرورى طاعات كو بجالاتانيك توراس كوجهتم مين خلود توكيا جوتاجهتم سے ذرائعي سن فوكا بلك التالط ايسے لوگوں كے ذكر شتر كاموں د كو تحوكر كے ان كى جگر دائندہ بنيكياں عنايت فرمانيكا ريسى يونكر شت كفردكناه زمانة كفرك بعداسلام كى بركت سيمعاث وجوادي كے اور آئده بوجداعمال صالحه كے حسنات لكهى جاتى ربين كى اوران يرتواب مليكاس ليح جبتم سان كالجيمت نهوكا، بس إلااستنار مقطع ساد مَنْ نَابَ كَيْ خِيرِ فَأُولِيّاكَ الْحِ بِيهِ وَرُقْصُودِ بِالْحَكُم تَبِدِيلِ سِينًات بِالْحِسْات سِيحِومُجبوعَهُ إيمان و توب وعلى صالح يرمرتن اورجيتم كأك سي مفوظ رسنااسكالازى الرب اورجيتم من دخول بى نبين توفلود شرموناظا ہرہے، یا استفناء متصل ہواور عدم تعلود کے لئے تجموعہ ایمان و توب وعل صالح مشرط شرط شرفی مجموعه كيسا تحديدم خلود كايايا جانان آيت بين مذكور مواا ورصرت ايمان يرعدم خلود كامرت مجنا دوسرے دلائل سے ثابت ہو) اور (یہ محوسینات و ثبت حسنات اسلے ہواکہ) الشرتعالی عفولیے (اسلئے سیئات کو محوکر دیااور) دھم ہے (اسلئے حسنات کو قایم فرمایا۔ یہ تو تائے عن الکفر کا بیاتھا) اوردآ کے اُس مُون کاذکرہے جو گناہ سے تو یہ کرے تاکہ صمون تو یہ کا بورا ہوجائے ونیز مقبول بنا اے بقیر اوصاف کابیان ہے کہ وہ توگ ہیشہ طاعات کے یا بنداور سینات سے پرہزے عادی رہتے ہیں ملین اگراحیا تا صدور معصیت موجائے تو توبہ کر لیتے ہیں اس لئے تائین کا حال ارشا و فرمایا لینی جو تعن دجس معصیت سے توبیر تاہے ورنیک م کرتا ہے د نعنی آئندہ معصیت سے بختا ہے) تو وه د مجى عذا ب بجارم يكاكيونكه وه) الشرتعالي كيطرت خاص طورير رجوع كرديا ب ربيني خوف ا فلاص كيسا تقركة شرط توبيري كي يوعباد رجمان كے اوصات بيان فراتے بين نعنی) اور (ان ميں يہ بالتے كم) وه بيروده باتون مين رجيد لهو و لعب فلات شرع) شارل نهي موتداوراكر (الفاقاً بلانصد) بیبوده شغلوں کے پاس کو ہوکر گزری توسنجیر کی (وسٹرافت) کے ساتھ گزرجاتے ہیں دیعنی نداس کی طوت مشغول بروتے میں اور مذان کے آثارے گنا برگاروں کی تحقیرا درا بنا ترفع اور کمبرظا ہرموتا ہے) اور دہ ایسے بیں کہ جبو قت ان کو الشرے احکام کے ذریجہ جست کی جاتی ہے تو ان راحکام) بہر اند صير ورنهي كرتے دجی طح كافر قرال يرايك بنى بات بجدكر تماشے مطود يراور نيز اسيل عراضات يداكرنے كے لئے اسكے حقائق ومعارف سے اندھ بہرے ہوكر اندھا دھند لے ترتیب ہجوم كرانتے تقے جيساكم دوسرى جكة قرات كارشاد م كَادُوا يَكُونُون عَلَيْد لِبُلَّ دعلى معض التفاسير) سوعباد مركوري ايسانهين رقي، بلكعقل وفهم كے ساتھ قران پرمتوجها ورائس كيطوت دوار تے ہي حبكا تمره زياده ايان

0-1

سُورَة الفرق ال ١٢٥ ٤ ٢ ٤

معارف القرآن جسلدهم

وعل بالاحكام بين مقصورات بي اندهي بيرب و في كانفى كرناب مذكرة الن كيطوت شوق كما لق متوجّه وفي أس يركر في مكيونكه وه عين طلوب، واوراس سي كفّار ك التريمي قران يركرنا توثابت ہ دتا ہے مگر دہ مخالفت اور مزاحمت محطور ریا درا ندھے بہروں کی طرح تھا اسلنے وہ مذموم ہے) اوروہ کیے ہیں کہ (خود جلیے دین محاشق ہیں اسی طرح این اہل وعیال کے ایج بھی اسے ساعی اور داعی ہیں ، چنا نچیملی کوشش کے ساتھ حق تعالی سے بھی) دُعاکرتے رہتے ہیں کہ اسے ہما رسے پر درد کارہم کو ہماری ميبيول اوريهارى اولادى طرف سے آئكھوں كى ٹھنٹرک (مينى راحت)عطافر ما (معنى ان كو دميندار بنادے اور کم کو ہماری اس می دینداری میں کامیاب فرماکہ ان کو دینداری کی حالت میں دیکھکررا اورسردرم اور (تونے بم كوہمارے فاندان كاافسرتوبنايا بى ہے كرہمارى دُعايہ ہے كدان سب كو متقی کرکے) ہم کومتعیوں کا فسر بنادے (توصل مقصود افسری مانگنانہیں ہے کو اسی ہی قباحت نہیں مج مقام دلالت نہیں کڑما بلکم ل مقصود اسے خاندان کے تنقی ہونے کی درخواست ہے بعینی بجائے اس کے لہ ہم صرف خاندان کے افسر ہیں ہمکوشتی خاندان کا افسر بنا دیجئے، بیہانتک عبادر حمان کے ادصاف کا بیان تھاآگےان کی جزا ہے بینی) ایسے توگوں کو (بہشت بیں رہنے کو) بالاخا نے ملیں کے بوجہ اسکے (دین طاعت پر) ثابت قدم رہنے کے اور ان کواس (بہشت) میں (فرشتوں کی جانہے) بقار کی دُعااد للام ملیکا (ادر) اس (بهشت) میں دہ بهشه بهشه رہیں گے، وہ کیسااچھاٹھکا نادرمقا کو جیساجہ اءت مستقرّاً ومقاماً فرمایا ہے، اے بینجم جسلالتہ عکتی ہے) آپ (عام طور برکوکوں سے) کہدیجئے (احكام الهيكو) جمولًا تجفية موتوعنقريب بير حجولًا تجهنا كمقالك ليز) وبال (جان) موركريدب) كا، (خواه دنیامی جیسے واقعہ بررمی کفا ریرمصیت آئ یا آخرت میں اور وہ ظاہرہے)۔

معارف ومسائل

سُور و فرقان کے مبتی رمضایین رسُول النُّر صِلے النُّر عِکیتِیم کی رسالت و نبوت کے ثیوت اور کف ر و مشرکین جواس پراعتران کرتے ہے اُنکے جوابات پُر شمل سخے اُن اورا حکام کی نافرانی کرنے والوں پر عذاب وسزا کا بھی ذکر تھا۔ آخر سورت میں اپنے اُن محضوص اور مضبول بندوں کا ذکر فرط تے ہیں جبنکا رسالت پرایان جی کسل ہے اورائی کے عقائدًا عال، اخلاق، عادات سب اللہ ورسُول کی مرضی کے تابع اورا حکام مشرعیہ کے مطابق ہیں۔

قرائن كريم في ايسي مخضوص بندون كورعبار الرحين كالمتب عطافرمايا جوائ كاسب سے براً ا اعزازہے۔ يُوں توساري بي مخلوق مكوسني اورجبري طور برائلتر كي بندگي اوراسكي مشيت وا را د ه

تیسائی صفت بوآذ الجا کہ ایکی ہاؤی قائو اسکائی ایکی جہات والے اسکائی ایسی جہات والے اُنے خطاب کرتے ہیں قودہ کہتے ہیں ، سلام - ہماں جاہلوں کا ترجہ جہالت والوں سے کرکے یہ بات واصح کردی گئی ہے کہ مُراداس سے بے علم آدمی بہیں بلکہ وہ جو جہالت کے کام اور جابلانہ باتیں کرے خوا واقع میں وہ ذی علم بھی ہو۔ اور لفظ سلام سے مراد بباں عرفی سلام نہیں بلکہ سلامتی کی بات ہے۔ قرطبی نے نام سے نقل کیا ہے کہ اس جگرسلام سلیم سے ختن نہیں بلکہ اسکا می سے میں کہ معنی اور بیاں عرفی سلامتی کی بات ہے۔ گراوی سے نقل کیا ہے کہ جا ہلوں کے جواب میں وہ سلامتی کی بات کہتے ہیں جس سے دور رو ایسی سلامت رہنا۔ مُرادیہ ہے کہ جا ہلوں کے جواب میں وہ سلامتی کی بات کہتے ہیں جس سے دور رو کوا یذا نہ بہتے ہے اور یہ گنام گار نہ ہو ۔ یہی تفسیر حضرت نجا ہد، مقابل وغیرہ سے نقول ہے۔ (مظہری) معاملہ نہیں کرتے والوں سے یہ حضرات انتقامی معاملہ نہیں کرتے والوں سے دور کرتے ہیں ۔

چوگاتی مان مجده کرتے ہوئے اور قیام کرتے ہوئے گا قریبام ایسی وہ دات گزاد تے ہیں اپنے ارب کے سامنے مجدہ کرتے ہوئے اور قیام کرتے ہوئے۔ عبادت میں شب بیدادی کا ذکر خصوت سے اسلنے کیا گیا کہ بید و قت سونے ادام کرنے کا ہے اسمیں نماذ و عبادت کے لئے کھڑا ہونا فائن شت کے بھی ہے ادراسیں دیا و نمود کے خطرات بھی نہیں ہیں۔ سنشار یہ ہے کہ ان کا بیل و نہادا لئے کی گئی ہیں ہوئے ۔ میں شخول ہے دن کو قعلیم و تبلیغ اور جہاد فی سبیل لئے و غیرہ کے گا ہیں دات کو الٹر کے سامنے عباد گرا اور کہا کہ ان کا بیل و نہادا لئے کہ ان کا بیل و نہادا لئے کہ کا ذکر دار کی مدیث میں بڑی فضیلت آئی ہے۔ تر ندی نے حضرت ابو اماریخ سے دوایت کیا کہ رسول النہ میں اسکیل میں تبدیل کی بابندی کر دکھونکہ وہ تم سے پہلے تھی سب دول انٹر صلے النہ علیقی طرب کرنے دالی اور سیئات کا کھارہ ہے اور دہ الٹر تعالی سے تم کو قریب کرنے دالی اور سیئات کا کھارہ ہے وادر گنا ہوں سے دوکنے والی چیز ہے۔ (مظہری)

حضرت ابن عباس نے فرمایا کہ جس فض نے عشاد کے بعد دویا زیادہ رکھتیں بڑھ لیں وہ بھی اس کم میں داخل ہے کہ بنات الله سناجول وقائم کا (مظھری) افرخوی) اور صفرت عنمان غنی رخ سے دوایت ہے کہ رسول اللہ صلے اللہ علیہ م نے فرمایا کہ جس فض نے عشار کی نما زجاعت کبھا دا کرلی تو آدھی دات عبادت میں گزار نے کے کم میں ہوگیا اور جس نے صبح کی نما زجاعت اداکر لی دہ باتی آدھی دات میں عبادت میں گزار نے والا عمرہ اجائیگا (دواہ اجل فرسے کی نماز جاعت اداکر لی دہ باتی آدھی دات میں عبادت میں گزار نے والا عمرہ اجائیگا (دواہ اجل فرسے فرائی میں مصروف رہنے کے با دجود بے نوف ہوکہ زمین برادگاہ فیب وروز عبادت وطاعت میں مصروف رہنے کے با دجود بے نوف ہوکہ زمین بریٹ میں بادی ہو تھا کہ کہ میں موروف رہنے کے با دجود بے نوف ہوکہ زمین بریٹ کے اور دون عباد میں محروف رہنے تھی کہا کہ خوف اور آخرت کی فکر رکھتے ہیں جس کے لئے علی کوشش بھی جا دی رہتی ہوا درا اخراد اللہ تھی کے اور دون عباد میں ہی جا دی درائی کور اللہ تھی کے اور دون عباد میں ہی جا دی درائی کور اللہ تھی کے دون میں میں میں مصروف درائی کور دون میں میں میں میں میں میں میں میں میں کے لئے علی کوشش بھی جا دی درائی کور دائی تھی کور دون میں ہیں۔

ادر (قت آد کے معفی خرج میں نگی اور کبل کرنے کے ہیں۔ اصطلاح سنرع میں اسے معفیہ ہیں کہ جن کا موں میں الشدور شول نے فرچ کو نیکا حکم دیا ہے اُن ہیں خرج کرنے ہیں نگی برتنا (اور بالکل فرج نہ کرنا بررجہ اولی اسمیں داخل ہے) یہ نفسیر بھی حصرت ابن عباس ، قتادہ دغیر سے منقول ہے (مظہدی) آیت کا مفہوم یہ ہواکہ الشرکے مقبول بندوں کی صفت مال فرج کرنے میں یہ ہوتی ہے کہ اسراف اور اقتاد کے درمیان اعتدال اور میانہ دوی پرعمل کرتے ہیں۔ مول الشرصاف المشرطة ہم کا ارشا دہے مین فیقا الت جیل فقص کی فیق میعینی ہم اسراف اسراف اسراف المیں میانہ دوی اختیاد کرنے اسراف

مين بتلايونه بخل مين). (دواه الامام احداق الدرواء - ابن كتابر

عددة الفرق الفرق ال ١٥٠٥

معارف القرآن جب لدشتم

ایک دوسری حدمیث میں حضرت عبدالترین سعود سے روایت ہے کہ رسول الشر صلے التر علیہ م نے فرمایا مانال من اقتصال ، تعنی جو تخص خرج میں میاندروی اوراعتدال پر قائم رہتا ہے وہ میمی فقیرد محتاج نہیں ہو ملادواہ الامام احل - ابن کہ خیر

سکاتوبیصفت: قالدین کرین کوین عون منع الله الها اختر، بهلی چوصفات میں طاعت و فرما نبردادی کے اُصول آگئے ہیں اب معصیت و نا فرمانی کے اُصول مہم کا بیان ہے نبیں بہلی چیز عقیدہ سے متعلق ہے کہ یہ توگ اللہ کے ساتھ کسی اور کوعبادت میں شر کیے نہیں کرتے میں سے شرک کا سب سے بڑا گٹاہ ہونا معلوم ہوا۔

آگھوں اور دورج صفت: لا یقت کون النفش الآیہ ، یعلی گذاہوں میں سے برا ہے برا ہے اورت الکتا ہوں کا بیان ہے کہ اللہ کے مقبول بندے ان کے پاس نہیں جاتے ، کسی کوناحق قسل نہیں کرتے اور زنا کے پاس نہیں جاتے ۔ بیڈین عقیدہ اور عمل کے برائے گناہ بیان فرانے کے بعد آیت میں ارشاد ہو وَمَنْ یَقْعُولُ ذُلِکَ یَلْقَ اَنَّامًا ، بینی جو تفس ان ندکورہ گناہوں کا مرتکب ہوگا دہ اسکی سزا باسے گا۔ ابوعبیدہ نے اس جگہ نفظ اتمام کی تفسیر سزائے گناہ سے کی ہے ۔ اور بعض مفسرین نے فرمایا کہ اتمام ہم اور کا مرتکب میں دوایاتِ حدیث میں اکی شہادت اس کی ایک وایاتِ حدیث بھی اسکی شہادت اس کی ہے۔ اور بعض دوایاتِ حدیث بھی اسکی شہادت اس کی ہے۔ دوری کا مرتب بھی اسکی شہادت اس کی ہے۔ دوری کا مرتب بھی اسکی شہادت اس کی کا میں دوایاتِ حدیث بھی اسکی شہادت اس کی کا میں دوایاتِ حدیث بھی اسکی شہادت اس کی کا کہ ایک دادی کا میں دوایاتِ حدیث بھی اسکی شہادت اس کی کا میں دوایاتِ حدیث بھی اسکی شہادت اسکا کی ایک دانے دادی کا میں دوایاتِ حدیث بھی اسکی شہادت اسکا میں دوایاتِ حدیث بھی اسکی شہادت اسکا میں دوایاتِ حدیث بھی اسکی شہادت اسکا میں دوایاتِ حدیث بھی دوائی کا میں دوائی کا میں دوائی کا دوائی کی دوائی کا دوائی کی دوائی کا دوائی کا دوائی کا دوائی کا دوائی کا دوائی کی دوائی کا دوائی کا

اسکاس مذاب کا بیان ہے جو جرائم ذکورہ کے کرنے والوں برہوگا اور آیات کے سبان وسیاق سے

یہ بات متعیق ہے کہ یہ عذاب کفار کے لئے محضوص ہے جبھوں نے سترکے کفر بھی کیا اور اسکے ساتھ قتل ہو

زنا میں بھی مبتلا ہوئے کیکو کہ اول تو یہ نحق کہ العکن اب کے الفاظ مسلمان گناہ گا وں کے لئے

ہیں ہوسے کیے کہ ایک ایک گناہ برایک ہی سزاکا وعدہ قران و سنت میں منصوص ہے ہے اب اس اسلام عن کیفر

قضاعت بعثی کیفیت یا کمیت میں زیا دتی مؤمنین کے لئے نہیں ہوگی یہ کفار کی خصوصیت ہے کیفر

قضاعت بعثی کیفیت یا کمیت میں زیا دتی مؤمنین کے لئے نہیں ہوگی یہ کفار کی خصوصیت ہے کیفر

پرجو بغداب ہونا تھا اگر کفر کے ساتھ اور گناہ بھی کئے تو عذاب دوہرا ہوجا ویکا۔ ووسرے اس مذاب میں

پرجو بغداب ہونا تھا اگر کفر کے ساتھ اور گناہ بھی کئے تو عذاب دوہرا ہوجا ویکا۔ ووسرے اس مذاب میں

پرجو بغداب ہونا تھا اگر کفر کے ساتھ اور گناہ کھی گئے تو عذاب دوہرا ہوجا ویکا۔ ووسرے اس مذاب میں

ہمیشہ بہیشہ عذاب میں مہیں دہرا، شدید بھی ہوگا اور بھر ہے خذاب دائمی بھی دہے گا۔ آگے بہیاں کہ

گرا ایسے خت گرم جنکا عذاب بہاں مذکور ہوا ہواگر دہ تو ہو کرلی وایان الاکر نیک عمل کرنے لگیں تو التہ نوائل اسکونات کو حسنات سے بعینی گرائیوں کو بھلا کیوں سے شبدیل کر دیں گے۔مطلب یہ ہے کہ اسس التھ کو بیک کے بیات کے مطلب یہ ہے کہ اسس التو ہو برکہ کے بور کی کیو کہ کا تو برکہ نے برکہ کے برکہ کے برکہ کے برکہ کی کیو کہ شرک کھرسے تو ہو کہ کہ اسس التو برکہ کے برکہ کی کیو کہ شرک کی کو ساتھ وہ کرنے برکہ کو برکہ کے برکہ کے برکہ کو بیک کرنے برکہ کی کیو کہ شرک کی کو برکہ کے کہ اسس کے برکہ کی کیو کو برکہ کے برکہ کی کیو برکہ شرک کی کھرسے تو ہرکہ نے برکہ کے برکہ کو برکہ کے برکہ کی کیو برکہ کی کو برکہ کے برکہ کی کو برکہ کو برکہ کے برکہ کو برکہ کو برکہ کے برکہ کیک کے برکہ کے برکہ کے برکہ کے برکہ کے برکہ کو برکہ کے برکہ کے ب

سُورَة الفرقان ٢٥٠٤٤

الترتفالى كاوعده يه به كه بجالت بمرك كفر جين كناه كئه موں اسلام دا يمان قبول كر لينے سے ده كھلے مب گناه معاف موجاتے ہيں اسلئے كھلے ذمانے يں جوان كا نامدًا عال سيئات اور معاصى ہى سے لبريز تقااب ايمان لانے سے ده توسب معات ہو گئے آگے ان معاصى اور سيئات كى جگہ ايمان اور اسكے بعد كے اعمال صالحہ نے لے لى ميئات كو حسنات ميں تبديل كرنے كى يرتفسير حضرت ابن عبان حسن بصري كرنے كى يرتفسير حضرت ابن عبان حسن بصري كرنے كى يرتفسير حضرت ابن عبان حسن بصري كر منظورى)

ا بن کشیر نے اسکی ایک و سری تفسیر یہ بھی نقل کی ہے کہ انھوں نے جتنے گئاہ زیانہ کفر وجاہلیت میں کئے تھے، ایمان لانے کے بعدائن سب گناہوں کے بجائے نیکیاں لکھدی جا دیں گی ۔ اور وجہ اسکی یہ ہے کہ ایمان لانے کے بعد جب بھی ان لوگوں کو اپنے بچھلے گناہ یا دا دیں گے توائن پر نا دم ہوں گے اور توبہ کی تجدید کریں گے ان کے اس عمل سے وہ گناہ نیکیوں میں تبدیل ہوجا دیں گے، اس کی دلیل

میں بیض دوایاتِ حدیث بھی بیش فرمائ ہیں۔

وَ مَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا وَإِنَّ يَتُونُ إِلَى اللهِ مَتَابًا ، نظام يه اسى ضمون كالتراريج اس سے بیلے آیت میں آیا ہے الآ من تاب وا من وعِل عَمَلاً صَالِحًا - اور قرطبی نے قفال سے بیہ نقل كياسي كدية توبه ببلي توبه سيختناف اولالك تركيو عمد يهلامعامله كفار ومشركين كاتفاجوقتل و زنامیں بھی مبتلا ہوئے تھے، پھرا یمان لے آئے توان کی سیئات سنات سے بدل دی گئیں ماور بہا ملمان گنام گاروں کی توبہ کا ذکر ہے اِسی گئے بہلی توبہ کے ساتھ وامن تعینی اسکے ایمان لانے کا ذکر تها،اس دوسری توبهمیں وہ مذکورنہیں جس معلی ہوتا ہے کہ بہ توب اُک لوکوں کی ذکر کی گئی -چو پہلے سے مُومن ہی تھے مگر غفلت سے قتل وزنا میں مبتلا ہوگئے تو ایجے یا رے میں یہ آیت نازل ہو كرايسے توك اكر توبر ريينے مے بعد صرف زبانی توبر راكتفاند كريں بلكر آئدہ كے لئے اسے على وسى كے اوردرست بنالين توائن كاتوبركرنا ميح اور درست بحهاجا يكا-اى كق بطور شرط كے توبركرينے كے ابتدائ حال ذكركرنے كے بعداسى جزاريس كير ديتوب كاذكركرنا يح بوكياكيو كمشرط ميں حي توبدكا ذكرب وه صرف زباني توبه ب اورجزار بين جس توبه كاذكرب وه عمل صالح يرمرته يم مطلب يه بردكياكب نے توبير لي بھرا سے على سے بھي اُس توبير كا بنوت ديا تو ده صحح طور يرا التركيطرف رجوع كرفے دالا جمها جائيكا بخلات أسح جس نے تجھالے كناه سے توبہ تو كى مكر آئندہ على ميں اسكاكوى ثيق مذفراتهم كيا تواس كى توبيكويا توبيى بنين -خلاصئە مضمون اس آيت كايد بوكياكة جومسلمان غفلت سے الگناه میں متبلا ہوگیا بھرتو ہرکی اوراس توہ کے بعدایے علی کی بھی الیسی اصلاح کرنی کہ اسکے عل سے توبہ کا نبوت ملنے لگاتو یہ توبہ تھی عنداللہ مقبول ہو گی اور نظام راسکا فائدہ بھی وہی ہو گاجو بہلی ا آیت میں بتلایا کیا ہے کہ اسکے سیئات کو صنات سے بدل دیاجائے گا۔

شورة القرقان ۱۵:۵۵ الشرك مخصوص اورمقبول بندون كى خاص صفات كابيان اويرسے بود باتھا، درميان مي كناه ك بعدتوبر رکینے کے احکام کابیان آیا اسکے بعد باقی صفات کا بیان ہے۔ دسويرصيفت: حَالَيْ يَنْ لَا يَشْهَالُ دُنَ النَّيْ وُرَّ، بِيني بِهِ لُوك جَمُوطُ اور باطل كى مجلو میں شریک نہیں ہوتے ہے۔ سب سے بڑا جھوٹ اور باطل توشرک کفر ہے اُسکے بعد عام حبوث اور گناہ كے كام بي - مطلب آيت كا يہ سے كما وشر تعالى كم مقبول بند سے السي تحليد و ميں شركت سے تعبى گرز کرتے ہیں۔حضرت ابن عباس رخ نے فرمایا کہ اس سے مراد مشرکین کی عیدیں ادر میلے تھیلے ہیں۔ حضرت مجاہدا در محدین حنفنیہ نے فرمایا کہ اس سے مراد گانے بجانے کی محفلیں ہیں۔ عمر و بن قبیس نے فرمایا ر بے حیای اور نایے رجگ کی مخفلیں مُراد ہیں - زہری ، امام مالک نے فرمایا کہ شراب بینے پلانے کی نجلسیں مراد ہیں (۱بن کتابی) اور حقیقت یہ ہے کہ ان اقوال میں کو ی اختلا*ث نہیں ایہ س*اری ہی مجلسين مجلس زُوْد کی مصداق بین - النتر کے نیک بندوں کوالیسی محفاد ں بی سے پر ہیر کرنا جا ہے کیو ک لغود باطل کا بالقصد دیکھنا بھی اس کی منز کت کے کم میں ہے (مظہری) اور بیض مضرات مفسرت نے لا یک وقت الت و کر میں بیٹررون کوشہا دت بمعنے گواہی سے لیا ہے اور معنی آیت کے يه قرارديني كريد توك جهوني كوا بي بنبي ديت -جهوني كوا بي كاكناه كبيره اور وبالعظيم بوناقران سنت میں معروف ومشہور ہے۔ بخاری وسلم میں حصرت انس کی روایت ہے کہ رسول شرصان عكية م نے جموتی گوائي كواكبركيا ترفرمايا ہے -حضرت فار وقي عظم في فرماياكرجس من كاستعلق ثابت بروجائ كراست جهولي شهادت دي تواس كوچاليس كوروں كى سنرا دى جائے اوراسكا منھ كالاكر كے بازار يں بھرايا جائے اور رُسوا كياجات بصطويل زماني مك قيدس ركهاجائ -(رواه اين ابي شيد عبدالرواق - مطيرى) كيارهوبيصفت: وَلِذَا مَرُّوْ إِبَاللَّغَوْ مَرُّوْ آكِرَامًا ، تعين الرَّنواور بيروده جلسون ركهمي ال كالزراتفا قام وجائے تو وہ جیرگی اور شرافت كے ساتھ كزرجاتے ہی مطلب به بوكرالبي محل میں بہ لوگ جیں طرح بقصد وارا دوسٹر کیے نہیں ہوتے اسی طرح آگر کہیں اتفا فی طور پران کاکسی ایسی مجلس پر گرزی وجا دے تو اس فستی و فجور اور گنا ہ کی مجلس پر سے منزا فت کبیبا تھ گزر ہے جلے جاتے بير - بعني أن كماس فعل كومِرااورقابل نفرت جانت عين نه كنا بول بين بتلاكوكون كي تحقير كرتيب اورنه خوداينات كوأن سے افضل و مهتر سبھ كرتكبرس مبتلا بوتے بي -حصرت عبدالله ابن سعودرا كااتفاق سےايك دوزكسى بهيوده مغوملس برگز رېوكيا تو د مال تلمير كنبي گزرے جلے كئے۔ رسوال الترمكية مكويمعلوم بدا توفرما ياكه ابن سعود كريم بهوكئ اوريه آيت تلاوت فرمائ حبير بهوده مجلس سے کریموں شریفوں کی طرح گزرجانے کا حکم ہے (۱بن کٹبر)

معارف القرآن جسلدشم

پارھوبیصفت، والآن بی اِذاؤ کی وایابی در تھو کو دی بیخوا تا تھا کہ گاؤ کی اِن اِن کوانٹری آیات اور آخرت کی یاد دلائ جاتی ہے تو وہ اِن کوانٹری آیات اور آخرت کی یاد دلائ جاتی ہے تو وہ اِن کوانٹری آیات اور آخرت کی یاد دلائ جاتی ہے تو وہ اِن کا این بیار کی اِن کے ان کوانٹری آیات اور آخرت کی یاد دلائ جاتی ہے تو وہ اِن اِن اِن کی طرح المن کی طرح المن میں کرتے کہ اُنھوں کرتے ہیں اور اِن بی کو کے بی اور اِن بی کو کے کہ اُنھوں کو تے ہیں۔ فافل اور مخفل دو چیزی مذکور بی ایک آیات المهیم برگر بڑنا یعنی ان ہم کے ساتھ متوجہ ہونا یہ تو امر مجود و مقصود اور بہت بڑی ہے۔ دوسرے امر صحبہ ہوں کی طرح گرنا کہ قرائن کی آیات پر توجہ تو دیں گریا تو اُس برعل کرنے میں معاملا ایسا کری کہ کو بیا اُنھوں نے شرح کا اور دیکھا ہی تو ایس اور با آیا ہے قرائن پرعل ہی کریں میکرائن کو اُنسول صحیحہ اور تفسیر صحبا بُر و کے شاور دیکھا ہی توں کے تا بع کرے خلا عل کریں بیری ایک طرح کے میں ہے۔

آ بعیر جے موکر ہی گرنے کے کھم میں ہے۔

آندھے بہرے ہو کر می گرنے کے کھم میں ہے۔

ا حکام دین کا صرف مطالعہ کافی نہیں ملکا سلات | آیاتِ ندکورہ بین جین طیحاس امرکی سخت مذمت ہے کہ کی تفسیر مے مطابق سبھے کوعمل کونا ضہر دری ہے | آیاتِ الہید کی طرف توجہ ہی نہ دیں ،اندھے بہروں

ی هسیر مے تطابی بھر سی در است دوری ایاب ہویہ میں کریں گریے ہے ہے ہوں ہے۔ کا سا معاملہ کریں ، ای طیح ای بھی فارت کے کہ توجہ تو دیں اور کل بھی کریں گر ہے ہجھے لے بصیرتی کیساتھ اپنی دائے سے بسطے چاہیں علی کرنے لکیں ۔ این تثیر ؓ نے ابن عون سے نقل کیا ہے کہ انھوں نے فتر اشعبی سے گہر چھے کہ انھوں نے فتر اشعبی سے گہر چھے کا کر میں مجاب میں مین جہاں لوگ ہجدہ میں بڑے ہول اور مجھے معلوم مہیں کہ کیسا سجدہ ہے تو کھا میں جھی انکے ساتھ سجدہ میں شر کی ہو جادئ حضرت شعبی نے فرمایا نہیں ۔ موس کے سے یہ دوست بہیں ہے کہ ہے ہمجھے کسی کام میں لگ جائے بلکہ اُس پر لااڈم ہے کہ بصیرت کیسا تھ عمل کے یہ دوست بہیں ہے کہ ہے ہمجھے کسی کام میں لگ جائے بلکہ اُس پر لااڈم ہے کہ بصیرت کیسا تھ عمل کرے ۔ جب ہم فے وہ آئیت ہی ہ ہہیں انکے سجدہ کی جھی ہو ناچا تر نہیں ۔ کی حقیقت بھی معلوم نہیں تو اس طرح انکے ساتھ سجدہ میں شر کی ہونا چا تر نہیں ۔

اس زمانے میں بیر بات تو قابل شکر ہے کہ نوجوان اور نوتعلیم یا فدۃ طبقہ میں قرائی بڑھنے اورا سے سیجھنے کی طوف کچھ توجہ بیا ہوئ ہے اورا سے تحت وہ بطور خود قرائی کا ترجہ یا کسی کی تفسیر دیکھ کر قرائی کو خود سیجھنے کی کوشش کھی کرتے ہیں گر یہ کوشش بالکل بےا صول ہے! سلئے قرائی کو حی حے سیجھنے کے بچائے ہم منا لطوں نے سیکار ہوجاتے ہیں۔ اُصول کی بات یہ ہے کہ دُنیا کاکوئ معمولی سے جمولی نے مہم دنیا کاکوئ معمولی سے جمولی نوسی فری کرا ہے مطالعہ سے کسی کو معتد یہ نہیں حاصل ہوسی اجتماعی جا ہے استاد سے مذہ بڑھے معلوم نہیں قرائی اورعلوم قرائی ہی کو کیوں ایسا مجھ لیا گیا ہے کہ شبکا جی چاہے خود ترجہ دیکھ کو جو ہے ہے اسکی مراد شعین کرتے ۔ یہ بے اصول مطالعہ میں تا مل ہے اسٹا دکی رہنما ئی شامل نہو بھی کا یا تیا الہے برا مرکبے صرافی تھیم کے سامل ہو اسٹار تعالی ہم سرکبے صرافی تھیم

كى توفىق تختين .

تَكِرَهُولِصِفْت؛ وَالَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَاهُ بُنَامِنَ أَزُوَاجِنَاوَ ذُلِّهِ يَلْيَنَاقُعَ عَ آغيني وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ إِمَامًا ، اس بين ابن اولا داور ازواج كے لئے الله تعالیٰ سے به دُعاہِ کو كران كومير الني المحمول كي تعندك بناد ا-انكمول كي تمفيل بنا في سعم اد حضرت من بصري ى تفسير ميطابن بير بي كدان كوالشرى طاعت ين شغول ديجي بي ايك نسان سيلتي أنكهو ل كالي هندك، اوراگراولاد وا زواج کی طاہری صحت و عافیت اور خوشحالی سی سیس شابل کیجائے تو وہ بھی درست ہے۔ يهال اس دُعا سے اس طوت اشارہ ہے کہ اللہ کے تقبول بندے صرف اینے نفس کی اصلاح ادّ اعمال صالحه مرقناعت نهي كريسة بلكاين اولا داور بيبيول كي اصلاح اعمال داخلاق كي فكركر تين اوراسے لئے کوشش کرتے دہتے ہیں۔ ای کوشش میں سے ایک بیمبی ہے کہ اُن کی صلاحیت کے لئے الشرتعالى سے دُعاما مكتارہے - اس آيت كا كلے جملے ميں دُعاكا بير جزر مجى بور الجعنى الله مُتَّقِينَ اِمَلُمًا ، مِينى بَينَ فَقَى لُولُول كامام اور بيشوا بنا دے ، أمين نظام إلين لئے جاه ومنصب اور برائ عاسل كرنے كى دُعاہے جو دوسرى نصوص قرآن كى دُوسے منوع ہے جیسے قرآن كا ارشادہے تِلْكَ النَّارُ اللاجورة بخفكها لِلَّذِينَ لَا يُرِينُ وَنَ عُلَوًّا فِي الْآرُضِ وَلَا فَسَادًا ، يَسِيْ بِم فِي دالإَ أَفْرت كومُضوص كرركها ہے اُن لوگوں كے لئے جو زمين ميں اپنا عُكُوا در اِرائ نہيں جا ہتے اور مذر مين ميں فسا د ہريا كرناجا بتة بين-اسك بعض علمار نياس آيت كى تفسيرس فرما ياكر سرتحض اين ابل وعيال كاقارتي طور برامام وبيشوا بوتابي سے اسلئے اس دعا کا حاصل بين وکيا کہ بھارے اولا دا دراہل وعيال کو متقى بناديجة ادرجب ده مقى موجاوي كي توطبعي طور يرتيخص متقين كاامام دمينيواكهلابيكا جبكا حاصل بیہ ہے کہ بیباں اپنی برطائ کی دُعا نہیں بلکہ اولاد داز داج کے متنقی بنانے کی دُعا ہے۔ ادر حضرت ابراييم في في فرمايكماس وعارس اين لين كوى رياست وامامت اورسيشواى طلب رنامقصو نهين بلكم مقعدوداس دُعاكايد به كريس ايسابنا ديج كراوك بن وعل مين بهارى افتداركياكرس اور بهاد اعظم وعلى سے أن كو نفع بيني تاكم اسكا تواب يمين حال بو- اور حضرت محول شائ نے فرماياكم دُعاكامقصودايين ليخ تفوى كاليسااعلى مقام حاصل كرناس كد دُنيا كمتفي لوگوں كو بھي بھار عمل سے فائدہ پہنچے۔ قرطبی نے بیردونوں تول نقل کرنے کے بعد فرمایاکدان دونوں عال ایک ہی توکہ دیا دامامت كى طلب جودين كے لئے اور آخرت كے فائدہ كے لئے ہودہ مذموم بنيں بلكرجائز ہے - اور آیت لائیرنیکان عکوا میں اس ریاست واقتداری خواہش کی ندمت ہے جو دُنیوی عزت وجاہ كے لئے ہو۔ والشرام - بہال مك عِنادُ الرَّحان، لعني مُومنين كاملين كى اہم صفات كابيان الدورا بوكيا، آك أن كى جزارادر آخرت كے درجات كا ذكر ہے۔ مارت القرائ جملة شم المؤردة الفرقان 13: 22 المرادت القرائ و الفرقان 13: 22 المرادت القرائ و الفرقان 13: 22 المرادت القرائ و المرادت المؤردة المؤردة أن ال

اولیّل ی یجزوی الفیری تا مؤدی الفیری تا مؤدی کافوی حتی بالا فائد کے ہیں جبت میں مقربین فاص کے لئے ایسے فوفات ہو نگے جو حام اہلِ جنت کو ایسے نظراً میں گے جیسے زمین والے ستاروں کو د تکھتے ہیں۔ (دولاہ البح فاری و مسلم و فیدھا۔ مظہری) مسندا حمر ، بیہ بی ، تر مذی ، حاکم میں حضرت الو مالک الشعری سے دوایت ہے کہ در شول الشر صلے الشر عکتی کم نیا کہ جبت میں السے غرفے ہو نکے حبکا امدو فی محصد باہر سے اور سرو فی حصد اندر سے نظرا آنا ہوگا۔ توگوں نے پوچھا یا دسول الشر ، بیر غرفے کو توگوں کے لئے ہیں ، آیا نے فرما یا ، جو تحض ایسے کلام کو نرم اور باک دکھے اور ہر مسلمان کو سلام کرے اور دوگوں کو کھانا کھلائے، اور وات کو اسوقت تہجد کی نازیر ہے جب لوگ سور ہے ہوں (مظہری)

وَیْکَقُوْنَ فِیهُا یَخِیْنَةً وَسَلَما ، بعین جنّت کی دوسری نعمتوں کے ساتھ ان کو یہ اعزاز بھی حال ہوگا کہ فرشتے اُن کو مبارکبا دریں گے اور سلام کریں گے - یہا تنک ئومنین مخلصین کی خصوص عا دات و اعمال اوراُن کی جزار د ثواب کا ذکر تھا ، آخری آیت میں پھرکھا رومشرکین کو عذاب سے ڈوراکر سورت

ئۇختىم كىياكىيا ہے۔

المسترس المراب الماري المراب المراب المراب المرابي ال

تقريحمل لأى سيحانه و تفسير يكورة الفظان يوم الرحد لذالت عندس مفال لظفّى سلاست مع المتعارب التنبعة المسلامة و بالتمامي تقريعون الله وكرم الحزب التابع من الاحزاب التنبعة القال نية والله سيحانه و تعالى ارجو وإسأل اتم الباقى وما ذ لك على الله بعن يز م





دائع دینی قران) کی آیسی این (اور میر توک جواس برایمان نہیں لاتے تو آب اتناغم کیوں کرتے ہیں کہ معلوم ہوتا ہے کہ) شاید آپ اُن کے ایمان نہ لانے پر (تاست کرتے کرتے) اپنی جان دے دیر یکے (اصل بيہ كريه عالم ابتلار ہے اس ميں حق كے اثبات پر دہى دلائل قائم كئے جاتے ہيں جن كے بعد بھی ایمان لانا بندہ کے اختیارس رہتا ہے درنہ) آگر ہم (جبراً داضطرارً ان کوموس کرنا) جاہیں تو اُن يراعمان سے ايك (ايسى) بڑى نشانى نازل كردين كركمان كااختيارى بالكل سلب موجامے) بھران کی گردنیں اس نشانی رکے آنے) سے بیت ہوجا دیں (اور بالا ضطرار مومن بنجادیں کی ا يسامرنے سے آزمايش ماتى نه رہے كى اسلة ايسانهي كيا مانا اور معاملة جروا ختيار كے درمتيار مهايي اور (اُن کی یہ حالت ہے کہ) اُن کے پاس کوئ تازہ فہائش (حضرت) رحمان (عبل شانہ) کیوف سےایسی نہیں آتی میں سے یہ مے رُخی مذکر تے ہوں سو (اس بے رُخی کی بیانتک نویت بینجی کد) انھو فے در بن حق کی جھوٹا بتلادیا (جواعراص کا انتہائ درجہ ہے اور صرف اسے ابتدائ درجرای بالتفاتي براكتفاء نهي كيا اور مجر كذب هي خالي نهي كلداستزار كيماتق) سواب فقرب الك اس بات كى حقيقت معادم موجا ويكي حس كم ساته بداستهزاركياكرتے تقے ربعينى جب عذاب اللى كاموت كے وقت يا قيامت ميں معائمة ہوگا، اسوقت قرائ كے اور مافى القرائ بعنی عذا في عير مے حق ہو بیکا انکشاف ہوجاو کیا) کیا انھوں نے زمین کونہیں دیکھا (جوان سے بہت قریاف ہرو ا پیش نظرہے) کہ ہمنے اس میں کسقد رعمدہ عمرہ قسم کی بُوٹیاں اُکائ ہیں (جومثل جمیع مصنوعا كے اسے بنانے ولا مے وجود اور اس كى يكتائ اور كالى قدرت يردلالت كرتى بيل كم)كس مي (توجيرِ ذاتى وصفاتى وافعالى كى) آيك برى نشانى رعقلى) ہے (اوربيمئلة مجيعقلى ہے كدخدائى کے لئے کمالی ڈاتی وصفاتی سٹرط ہے اور کمال مرکور کے بوازم میں سے ہے کہ وہ خدائی میں اکبیلا ہی اور (با وجوداسے) ان میں کے اکثر لوگ ایمان نہیں لاتے (اور شرک کرتے ہیں، غرض مشرک کرتا أنكارِ بوت سيمي بره وربيء اس معلوم بواكدان محانا دفيان كي فطرت كوبا لكل مختل كرديا بھرالیوں کے پیچھے کیوں جان کھوئ جا وہے) اور (اگران کوسرک کے فرموم عنداللہ مو فے میں بیشبر موكم مي عذاب فوراً كيول نهي آجانا تواسكي وجربيه سيكر) بلاشبرات كارب (يا وجوداس ككر) فالب (اوركال القدرت) ہے (كراسے ساتھ مى) رقيم (يمى) ہے (اوراسى رحمتِ عامَّة نيا ميں كفارسيجي تعلق إسكااتري محدان كومهلت ويركهي ب وريزكفريقيداً ندموم ادر غداكا مقتصى ب

معارف ومسائل

كَتُلُكَ بَاخِعُ نَفْسَكَ الآية، باخِعُ بَخْعُ سِيضَتَق مِحِس كَعَنى يه بين كرد فَح كرتے وقع

popu

ریخاع تک بہنے جائے جو کردن کی ایک دک ہے۔ اوراس جگہ باخ سے مرادا پہنے آپ تو تکلیف اور تفت
یں ڈالنا ہے۔ علامہ سکری نے فرطایا کہ اس جیسے مقامات ہیں اگر جیصورت جلہ خبریہ کی ہے مرح حقیقہ اس سے مراد نہی اور مالعت کرنا ہے۔ مطلب یہ ہے کہ اے بیغیبر، اپنی قوم کے کفراوراسلام سے انحراف کے سبب اتنا دیج نہ کیجئے کہ جان کھکنے گئے۔ اس آیت سے ایک تو یہ علوم ہوا کہ سی کا فر
کے بادے میں اگر میں علوم بھی ہوجائے کہ اس کی تقدریو میں ایمان لان نہیں ہے تب بھی اس کو تبلیغ کرنے سے کہ کان انہیں جائے دوسرے یہ علوم ہوا کہ شقت میں اعتدال چاہئے اور جو تخص ہدایت نہائے اس کرنے یہ اس کرنے یادہ حزن وغم مذکریا جائے۔

وَإِذْ نَا ذَى رَبُّكَ مُوسَى آنِ النِّيَ الْقَوْمُ الْظِلِينَ ﴿ قَوْمُ فَرْعُونَ أَوْرَا الْمُولِينَ الْقَوْمُ الْظِلِينَ ﴿ وَهُ مَوْكُونَ ﴾ وَيُونِينَ الْمَوْدُونَ ﴾ وَيَضِينَ الْمَوْدُنَ ﴾ وَيَضِينَ الْمَوْدُنَ ﴿ وَهُ مَلِينَ الْمَوْدُنِ ﴾ وَيَضِينَ الرَبِينَ فَوْنَ اللَّهِ اللَّهُ الْمُودُنِ ﴾ وَيَضِينَ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ ال

سورة الشعبُرار٢٤: ٣ سوجادُ قرعوں کے پاس اور کہو ہم پیغام کے کر آئے ہیں پر ور دگار عالم کا ساتق تھا دے شنتے دیں ولاکیا ہیں بالا ہم نے بھے کو ایتا اندر اوکا سا بن كسرائيل كو این ده کروت ا در کرگیا تو ورد ہا تو ہم میں اپنی عمریس سے کئی برسس كياكيا توتقايس ف ده كام اورسيس تقايوك والا 121 تُ مِنْكُمُ لِمَّا خِفْتُكُ فَوَ هَبَ لِيُ زَرِقَيْ حُكُمًا وَجَعَا بها گامیں تم سے جب تمقادا ڈر دیکھا بھر بختا ہے کو میرے رب نے تھم اور جھیرایا جھ کو ب اوركيا وه احسان ہے جو تو جھ بر دكھتا ہے كہ غلام بنايا تو نے بنجائے والا كها يدوردكاراً سمان اور قرعون كيا معنى برورد كارعالم كا اولا ایے گرد دالوں سے رمين كا اور جو يحدا الك يح سين ب الريم يقين لها بروردگار بخارا اور برور دگار بهارے اسكا باب دادوں كا NY. 182192 جو تھادي طرف جيجا كيا 112. ژال دیا ایٹ عصا ، سواسی دقت دہ اژد یا ہوگیا صر تک

٣٣

مح لاصرتفسير

ادر (ان لوگوں سے اسوقت کا قصتہ ذکر کیجئے) جب آپ کے رب نے موسیٰ (علالسلام) کو پکادا (اور مریا) کہتم ان ظالم لوگوں کے بینی قوم فرعوں کے یاس جاد (اور اے بوی دیجیو) کیا یہ لوگ (ہمار عضایے) نہیں ڈرتے (بعنی ان کی حالت عجیب اورشنع ہے اسلے ان کی طوت تم کو بھیجا جاتا ہے) انھوں نے عرض کیا کہ الے میرے برور دگار، (میں اس ضرمت کے لئے حاضر ہوں لیکن اس خدمت کی تکمیل کے لئے ایک مدد گار جاہتا ہوں کیونکہ) مجھ کویدا ندانتیہ ہے کہ وہ مجھ کو (اپنی اوری بات کہتے سے پہلے ہی) جھٹلا نے لکیں اور رطبعی طوررالیے وقت میں) میراول تنگ ہونے لگتا ہے اورمیری زبان (اچھی طرح) منہیں علیتی اس لئے ہارون کے یاس (بھی دی) بھی کئے (اوران کو بوت عطافر ماد بھنے کہ اگر میری تکذیب کی جادے تووه تصدیق کرنے لگیں تاکہ دل شکفته اور زبان روان رہے اور اگرمیری زبان سی و قت بندم وجادے تو ده تقرير كرنے تكيں اور پر حنيد كه بيغوض دليے بي يا دون علياب لمام كو بلانبوت عطام ويئے سائھ ركھنے تطيعه ل بو ی تقی محرعطامے نبوت میں اور زیا دہ باکمل وجوہ لوری ہوئی) اور (ایک امریہ قابل عرض ہے کہ) ميرے ذمته أن لوكوں كا أيك جرم مجى م كدميرے با تقر سے ايك قبطى قتل موكيا تفاجسكا قصيبورة قصفر مين آويكا) سو (اسكنے) مجھ كو (ايك) بير اندلينير سے كه وه لوگ مجھ كو (قبل تبليغ رسالت) تال كروالين (تب بھی تبلیغ شرکزسکوں گا تو اس کی بھی کوئ تدبیر فرما دیجئے) ارشا د ہداکہ کیا مجال ہے (جوالیا کرسکیں ادرہم نے ہارون کو بھی سنتمبری دی، اب تبلیغ کے دونوں مانع مرتفع ہوگئے) سو (اب) تم دونوں میرے ا حكام كرجا و ركم الدون مي بي بوكت اور) بم (نصرت وامداد سے) تعالي ساتھ بي (اورجو كفتاكو متھاری اور ان لوگوں کی ہوگی اُس کو) سنتے ہیں سوتم دد نوں فرعون کے یاس جا دُاور (اس) سے کہوکتم رب العالمين محفرمتا ده بي (اور دعوت الى التوحيد كے ساتھ بير حكم بھى لائے بيں) كه تو بني اراك كو (ایت بريكار اور ظلم سے دیائ دے كران كے مهلى دطن ملک ام كنظرت) بمارے ساتھ جانے دے (خلاصداس دعوت كاحقوق التراورحقوق العباد مين ظلم وتعدّى كاترك كرناب، جنا بخيريد دونون حضرات كئے اور فرعون سے سب مضامين كهديے) فرعون (بيرسب باتيں ش كراة ل موسى على السلام کی طرف ان کو پیجیان کرمتوجہ مواا در) کہنے لگا کہ (ا ہاتم ہو) کیا ہم نے تم کو بچین میں پر درش نہیں بیاا درتم این (اس) عمرمیں برسول ہم میں رہاسہا کئے اور تم نے اپنی دہ حرکت بھی کی تنی جو کی مقى (لينى قبطى كوقتل كياتفا) اورتم برائ ناسياس بو (كرميراي كهايا، ميرايي آدمي قتل كيااور

شورة الشعرار ٢٧: بصر تحجر کو اینا تا بع بنانے آئے ہو، چاہئے تو یہ تفاکہ تم میرے سامنے دب کر رہتے ، مؤی (علایاسلام کے جواب دیاکہ (واقعی) اسوقت دہ حرکت میں کربیٹیاتھاادر مجھ سے ملطی ہوگئی تنفی (معینی عمراً میں نے قتل نہیں کیا ہائی کی ظالمانہ رُوش ہے اس کو روکنا مقصود تھا اتفاق سے وہ مرکبا) بھرجب مجھ و ڈرا گاتومیں تھارے ہاں سے مفرور ہوگیا، بھر مجھ کومیرے رب نے دانشمندی عطافر مائ اور مجھ کو سِنی دں میں شابل کر دیا (اور وہ دانشمندی اسی نبوت کے بوازم سے ہے۔ خلاصۂ جواب ہر ہے كەمىن بىغىبرى كى چىنىت سے آيا ہوں جس ميں دينے كى كوئ وجەنہيں اور بيغيبرى اس واقعة قتل خطار مے منافی نہیں کیو تکہ بیتن خطار مسا در ہوا تھا جو نبوت کی اہلیت وصلاحیت کے مثافی نہیں۔ به توجها بي اعرّ احن قتل كا) اور (رياا مسان جنلانا يرورش كاسو) وه ينهمت بيحبيكا تومجه يراحك ركمتا بيكر تو في السرائيل كوسخت ذلت (اوزطلم) مين دال ركها تها كد أنك راكول كوقتل كرتا تقاجس كے خوت سے میں صندوق میں رکھ كر درياميں والاكيا اور تيرے ہاتھ لگ كيا اور تيرى يرورش میں رہاتو اس پر دوش کی اصلی وجر توتیر انظلم ہی ہے توالیسی پر دوش کاکیا اصال جلاتا ہے مبکلاس سے تو تحصابی ناشائسة حرکات کویا دکر کے مشرمانا جاہئے) فرعون (اس بات پرلاجواب مواا درگفت کو کامپرلو بدل كرأس في كمياكد (حب كوتم) رُبُّ العالمين ركبته مولقوله تعالى إِنَّا رَسُّولُ رَبِّ الْعَالِمَانَ اس) كامانت (اورحقیقت) کیا ہے موسی (عدایت مام) نے جواب دیالہ وہ برور دکارہے آسمانوں اورزمین کااحدجو کھورمخلوقا ائ كدرميان ميں ہے اس دسب كالكرتم كوليتين (ماسل) كرنا مور تويہ يتربهت ہے كداس كاحقيقت كاادراك انسان منهي كرسكتان ليئرجب ان كاسوال بوگاصفات سيري جواب مليكا فرعون نے این ارد کرد (بیشف) دالوں سے کہاکتم لوگ (کھے) سنتے ہو (کرسوال کھے جواب کھے) موی (علام) نے فرمایا کہ وہ برور دگارہ تہادا ادتیہانے بہلے بزرگوں کا (اس جواب میں محرر تنبیہ ہے اس طلب کوریر مگر) فرعون (مذ مجها اور) كمين لكاكه بيمتها دارشول جو (بزعم خود) متهادى طرت رشول بوكرايا بي مجنون (معلوم جومًا) ہے۔موسی (عدیاسلام) نے فرمایاکہ وہ پروردگارہے مشرق اورمغرب کااورجو کجوان کے درمیان میں ہے اسکا بھی اگرتم کوعقل ہو (تواسی سے مان لو) فرعون (آخر مجبور ہوكر) كہنے لكاكداكر تم میرے مواکوئ اورمعبود تجویز کردگے توئم کوجیل خان میں دن گا۔ موسیٰ (علیاسلام) نے نسر مایاکیا اگر موئ میں صریح دلیل پیش کروں تب بھی (مذمانے گا) فرعون نے کہا اجھا تووہ دلیل بیش کرداگر تم سيخے مور، توموی (مدالات لام) نے اپنی لائھی ڈالدی تو د نعتہ ایک نمایاں اڑ دیا بن کیا (اور دو سرامجرہ دکھلانے کے لئے) ایٹا ہاتھ (گریبان میں دے کر) باہر نیکالاتو وہ دفعہ سب دیکھنے والوں کے روبرو ا بہت ہی جکتا ہوا ہو گیا دکداس کو بھی سب نے نظر حتی سے دعیما)۔

معارف ومسايل

اطاعت كے لئے معاون اسباب | قال رَبِّ الْنَ آخَاتُ أَنْ يُكُنِّ بُوْنِ ۞ وَيَضِيْقُ صَلَّ دِيْ كى طلب بهرَان جوى تهين وَلا يَسْطَلِقُ لِسَانِي فَآرُسِلْ الى هَارُقُ ٥ وَلَهُمُ عَلَى وَنُكُ فَاخَاتُ أَنْ يَكُونُ ١٠ ان آياتِ مباركه سے تابت بواكد كے بجالاتے ميں كھ السي جيئے ول كى درخواست كرناجوتعيل تحمين مدو كارثابت مون كوئ بهامذجوى نهين ب بلكه جائز ب جبياكه حصرت موسى على السلام نے محتم خداوندى باكرائس كى بجاآورى كومهل اورمفيد بحرنے كے لئے خدائے ذوالجلال سے درخواست كى - المبذا اس سے بنتیج برکالنا غلط موگا که حضرت موسلی علیاستام نے حکیم خدا دندی کو بلا تو قعت بسیروشیم قبول کیو مذكيا ؟ اورتوقت كيون فرمايا ؟ كيونكة حضرت موسى عليالسلام نے جو كي كياد بتعبيل يحمي كالسام س كيا-حضرت مولى على السلام ك إ قَالَ فَعَلْتُهَا الْذَاقَ آنَامِنَ المِثَا لِينَ ، فرعون كاس وال يركم تمنيا حق مين لفظ ضلال كامفهري موي أيك قبطي كوقت لكياتها، حصرت مؤي عليالسلام نے جوايا فرماياكهان مين نے قتل صرور كيا تھا ليكن وہ قتل ادادة اور قصد سے نہ تھا بلكه أس بطي كو اُس كى خطا يرمتننه كرنے مے گئے گھونسہ ما داجس سے دہ ہلاک ہوگیا ۔ خلاصہ بیر کہ موت کے منا فی قتل عمد ہے اور تیشل بلااراد کا إدواتها جومنا في نبوت نهين و على يرواكه بيبال ضلال "كامطلب" بي خبري " اوراس مرادطي كابلاا راده قتل بردجانا ہے۔ اس عنی كی تائيرحصرت قتا ده رم اور ابن زيد كى روايات سے بھی ہوتی ج كدوداصل عربي مين صلال كے كئى معنى آتے ہيں، اور ہر جگہ اسكامطلب كمرا ہى نہيں ہوتا - بہائ جي سكا ترجيه گراه "كرنا درست نبين-

خدل زوالجلال كى ذات وحقيقت كا قال فِنْ وَيُ وَمَا لَيْ الْخَارِينُ الْخَارِينَ اس آيتِ مبارك سيا علم انسان کے گئے نام کن ہے اواکہ خدائے ذوالجلال کی کننہ وحقیقت کا جاننا حمل نہیں کنوکھ فرعون كاسوال فدا تعالى كى حقيقت، ما يسبت ك تعلق تها حضرت موسى على السلام في بائم ما يسبت بارى تعالى تبلانے كے خدا تعالى كے اوصات بيان فرائے جس سے اشاره فريادياكہ خدا تعالى كى كندر اور

حقيقت كاادراك نامكن بهادرايساسوال بى كرنا بيجاب وكذافى المصح)

أَنْ آ زُسِلْ مَعَنَا بَيْنَ إِسْرَاءِ بِنَ ، بن امرأيل ملك شام ك باشند س تقد، وبإن جانا چاہتے تو فرعون ان کو جانے مذریتا تھا اس طرح چارسو سال سے وہ اسکی قید میں غلامی کی زندگی ہے كرام عقران كى تعدا د اسوقت بچھ لاكھ تيس بزارتھى عضرت مؤسى علىلام نے فرعون كو پيغام حق بينجا كے ساتھى، بى اسرائيل پرجوظلم أس نے كردكھا تھا أس سے بازانے اور أن كو آزاد جھور دینے كى بدا (فرمای (قطعی)

معارف القرآن جسي لدشتم

يغيبرانه مناظره كاليك نمونه ادمختلف الخيال شخصون ادرجاعتون مين نظرياتي بحث ومباحثه حبك مناظرے مؤثر آداب اصطلاح میں مناظرہ کہاجاتا ہے از مائذ قدیم سے رائع ہے سگرعام طور پرمناظره ایک بارجیت کا کھیل موکرره کیا ہے۔ تو کوں کی نظرمیں مناظرہ کا حاصل آنا ہی توکہ اپنی بات اونجي بوء جاب اس كي غلطي خود مجي معلوم بوجي بوء أس كو يح ادر توى تابت كرفيك دلائل اور ذبات كاسارا زورخ يكياجائ - اسى طرح مخالف كى كوى بات سيى ادر صح يميى موتوبير حال أدد يى كرنا اوراسى ترديدى يورى تواناى صرف كرنا ہے-اسلام بى نےاس كام بى خاص اعتدال پداکیا ہے اسکے اصول و تواعداور صدودمتعین کرکے اسکو ایک مفیدد مُوثر آلر تبلیغ داصلاح بنایا ہے۔ سيات مذكوره مين اسكاايك مختصرسانمونه ملاحظه فريائيه يحضرت موسى وبادون عليهجاالشلام نے جب فرعون جیسے جبار فکرائ کے مدعی کو اُس کے دریاد میں رعوتِ حق پہنچائ تو اُسنے مخالفا نہ جت كآغازاول دواليسي باتون سيريا جنكاتعلق حضرت موسى علىلالسلام كى ذات سے تھا۔ جيسا ہوئے بيار مخالف عموماً جب اصل بات محيواب بيرتا درنهبي موتاتو مخاطب كي ذاتي كمزوريان وهوندا ادرسيان میار تا ہے تاکہ وہ کچوشرمندہ موجائے اور لوگوں میں اُس کی بروااً کھٹر جائے، بیبال بھی فرعون نے دو باتي كهين - اقتل تويدكم بهمار اير ورده بهمار الكويس بكرجوان موسئ وريم في مياسانات يئے ہیں۔ تھاری کیا مجال ہے کہ ہمارے سامنے بولو۔ دوسری بات یہ ہے کتم نے ایک قبلی تحض کو بلاوہ قتل کرڈوالا ہے جو علاوہ طلم کے حق نا شناسی اور نام^ے کری بھی ہے کہ جس قوم میں ملے اور جوان ہوئے آسی ك آدمى كومار والا-اسك بالمقابل حضرت ويلى على السلام كابينجبرانه جواب ويصف كدا ول توجواب مي سوال کی ترتیب کوبدلا معین قبطی سے قتل کا قصر جو فرعون نے بعد میں بیان کیا تھا اُسکا جواب بیلے آیا۔ اورخانه برورده وف كاحسان كاذكر جو بيلي يا تقاأسكا جواب بعدي - اس ترتيب بدلي مين حكمت بيعلىم موتى ہے كه دا قعة بطي ميں ايك اپني كمزورى حزور دا قع بردئ تقي آنجل كے مناظروں كے طرز رتواليسي چيز کے ذکر ہی کو زلاملا دیاجا تاہے اور دوسری با توں كی طوٹ توجة، پھيرنگي كوشش كی جاتی ہے سر اللہ تعالیٰ کے رشول نے اُسی کے جواب کوا دلیت دی۔ اور جواب بھی فی الجلاعتراب کمروری كے ساتھ دیا۔ اسكى قطعاً پرواندكى كەمخالف توكىبى كے انھوں نے اپنى غلطى كااعتراف كرمے بارمان لى حضرت مولى على السلام نے استح جواب میں اسكا تواعزات كرلياكه اس قبتل ميں مجھ سے لطى اور خطابهو كئي مكرسائق اس حقيقت كوجمي وانشح كردياكه بيفلطي تصدرًا نهبي تقي ايك صفح اقدام تفساجو اتفاقاً غلط انجام يربيني كياكم مقصد توقيطي كواسرائيلي شخص يرظلم سدر وكناتها اسى قصد سے كسس كو ا يم صرب لكائ عنى اتفاقاً وه اسى سے مركبيا اسلئے بيفعل خطام و نے كے با وجود بهارے اصل معامليعني ا نبوت کے دعوے اوراس کی خفانیت پر کوئ اثر نہیں ڈوالیّا۔ تجھے اس غلطی پر تعنبہ ہواا در قانونی گرفت

معارف مران جبلد ششم

مے خوٹ سے شہر سے ٹیکل کیا۔ انٹر تعالیٰ نے بھر کرم فرمایاا ور نبوت درسالت سے م غور کیچیم کراسوقت دسمن کے مقابلہ میں موسی علیابسلام کا سیرھاصات جواب بیرتھا کہ مقتول فیط و دا جبالقتل من تحرق ، اسپرایسے الزامات لکاتے جس سے کا دا جاتھ ل ہونا آبابت ہوتا ۔ کوئی دو آدمی تکذیب کرنے والا بھی وہاں موجود نہ تھا جس سے تر دید کا اندلیتیہ ہوتا ، اوراس جگہ حضرت وی علالیت لا ميسواكوي دومراآدمي موتاتوا سكاجواب استح سوائجه فبوتا مكرد بال توخداتعالي كاايك ولوالعري رسول صدقِ مجتمع تعاجوی وصدق اورحقیقت کے اظہاری کواپنی فتح سمجھتا تھا۔ تیمن کے بھرمے دربار میل بنی خطا کااعترات بھی کرلیاا دراًس سے چونبوت ورسالت پرشبھہ ہوسکتا تھااسکا جوا بھی دیدیا۔ا سے بعديهلي بالتبعين خانه يرور ده م ويح احسان تبلانے كے جواب كيطوف توجہ فرمائ تواسكاس ظاہري حيا ی اسل حقیقت کیطرف توجهٔ دلادی که ذراسوچو، بین کهان اور دربارِفرعون کهان ۶ میری بر درش کهار غربي ہونیے سبب پرغور کرو تو بیر حقیقت کھیل جائے گی کہم جو بوری قوم بنی اسرائیل پر بیٹملا میا اسات للم توزْ رہے تھے کہ ایکے لے گنا معسوم لڑکوں کو قتل کر دیتے تھے، بظاہر تو تھا دے اس ظلم وتم سے بخے لئے میری والدہ نے مجھے دریا میں ڈالاا ور تھنے اتفاقی طور پرمیرا تا بوت دریا سے بکال کر گھرس رکھ ا ورحقیقة بیرانته تعالیٰ کا حکیمانه أنظارًا اور تھالئے کا میں سنرا تھی کہ س بیجے کے خطرہ سے بحینے کے ایر تا ميزادوں بحے قسل کر ڈالے تھے قدرت نے اُس بچے کو تھا رہے یا تھوں بلوایا۔ اب سوچو کہ یہ سری يرورش تخفادا كيااحسان تفاء اسي يبغيرا ندطرز حواب كايدا ترتوطبعي اورعقلي طوريرحا دنرين يرمزناي تهاكه بيرزدك كوئ بات بناك والي نهين، يح كسوا كيهن كهته، اسكے بعد جب جزات ديھے تواورزیا دہ آئی تصدیق ہوگئی۔ اور کو اقرار نہیں کیا مگر مرعوب اتنا ہوگیا کہ بیرصرت دوآ دمی جن کے آ کے بچھے کوئی تبیسرامدد گارنہیں، دربارسارا اُسکا،شہرادر کلک اُسکا، مگریہ خوٹ اس پرطاری ہے كرير دوآدمي بين ايناس ملك وملكت سي بكالرس ك_

یہ موتا ہے خدا دادر عب ادرصد ق وحق ادر سیائی کی ہیبت۔ حضرات انبیاء علیم التلام کے مجا دلات و منا ظرات بھی صدق وسیائی ادر مخاطب کی دینی خیرخواہی کے جذبات سے پر ہوتے ہیں۔ مجا دلات و منا ظرات بھی صدق وسیائی ادر مخاطب کی دینی خیرخواہی کے جذبات سے پر ہوتے ہیں۔ دہی دِلوں میں گھرکر تے ہیں اور بڑے بڑا ہے سرکشوں کو رام کر لیتے ہیں۔

دس سابے جادو کے زور سے، سواب کیا حکم دیتے ہو یو لے ڈھیل دے اسکواور اسکے بھائی کو

سورة الشعراء ٢٧:١٥ ہے آئیں سرے ہاس جو راجا دو کر ہو برطا وعدہ ہے ایک مقرر دن کے شاید ہم داہ قبول کرلیں جا دو گروں کی اکٹے ہوکے بھر ڈالیں اُنھوں نے اسی رسیاں اور لاٹھیاں اور بولے قرعون کے اقبال = بهر ڈالاموسی نے اپنا عصا بھر جمی وہ تکلے لگا جوسانگ انوں بولے ہم نے مان بیا جہان کے رب کو بھر اوندھے کرے جا دوکر سیدہ یں تٍ مُوْسَى وَ هُرُون @قَالَ امَنْتُمْ لَهُ قَبَلَ اَنَ اَذَنَ لَكُوْرَ عَلَى اَنَ اَذَنَ لَكُوْرَ اَ جورب ہے موسی اور بارون کا بولائم نے اس کومان لیا امیم میں نے حکم بہیں دیا تم تَّ كَلِينَ وَكُو الدِّي عَلَيْكُ السِّحْرَ فَلَسُوفَ تَعَكَمُونَ مُ لَا فَطَعَرَ قردوہ تھادا بڑا ہے جس نے تم کو سکھلایا جادو سواب معلوم بر ہو گے البت کا ہوں گا ب يك و ارتجلك من خلاف و لاو صلت كالم آخميان متمادے افغ اور دوسری طوت کے یاؤں ادر سولی بر چرماؤں گا تے سب قَالْوَالَاضَايُرَ وَإِنَّا إِلَى رَبِّنَا مُنْقِلِبُونَ ﴿ إِنَّا نَظْمَحُ أَنْ يَغْفِرُ یوے کھ ڈرائیں ہم کو اپنے رب کی طرف ہم جانا ہے ہم فوض رکھتے ہیں کہ بخشرے کہ دب ر ين اخطلاً الن كتا آق كالمؤمنين ٥ ہماراتفضیریں ہماری اسواسطے کہ ہم ہوئے بہلے قبول کرنے والے

73

FOS 4

المحال المحالة المحالة

معارف القرآن حبلاته

فخ لاصرتفسير

(حضرت موسیٰ علیاسلام کے چوبیہ عجزات ظاہر بو سے تو) فرعون نے اہلِ در بارسے جواسے آس یاس (میسے) تھے کہاکداس میں کوئ ک نہیں کہ یہ ڈاما ہرجادو کرہے اسکا (اصل) مطلب یہ ہے کہ ایت جادو (کے زور) سے (خود رئیس بروجادے اور) تم کو بھاری زمین سے باہر رہے (تاکہ بلامزا تمت غيرے اين قوم كوكررياست كرے) سوتم لوك كيا مشوره ديتے ہو ؟ درباريوں نے كہاكم آب اكواور ان كے بھائ كو (چندے) مہلت ديجة اور (اين ملك كے صدودكے) شہروں ميں وكرداوروں كو یعنی) چیراسیوں کو (حکمنامے دیکر) بھیجد بچیئے کہ وہ (سب شہروں سے)سب ماہرجادوگروں کو (تح رك) آب كے پاس لاكر حاصر كر ديں، غوض وہ جا دوگرائے معين دن كے خاص و قت يرجع كر لئے كئے (معين دن سے مراد يُوم الزينت ہے اور خاص وقت سے مراد وقت جاشت ہے جیسے مورہ ظلہ كے شریع رکاع موم میں مذکورہے ، لینی اسو قت کے قربیت مک سب لوگ جمع كرائے گئے اور فرعون كو جمع تونے فی اطلاع دیدی گئی) اور (فرعون کی جانب بطوراعلان عام کے) توگوں کو بیراشتہار دیا کیا گیک تم لوك (فلال موقع يرواقعه ديكھنے كے لئے)جمع ہوگے (مينی جمع ہوجاؤ) تاكدا كرجا دوكر غالب آجادی (جسیاکہ غالب توقع ہے) توہم انفیں کی راہ پر رہی ربینی دی راہ جس پر فرعون تھا اور دوسرو کو بھی اس پر رکھناچا ہتا تھا۔مطلب ہی کہ جمع ہوکر دشکھو ، اُنسیہ ہے کہ جا دو گرغالب رہیں گے توہم لوگوں کے طریق کاحق ہونا جحت سے ثابت ہوجائے گا) کھرجب وہ جا دوگر دفرعوں کی میشی میں) آئے تو فرعون سے کہنے لگے کہ اگر (موسی علیالسلام) پرہم غالب آگئے تو کیا ہمکوکوئی بڑاصلہ (اور انعام) ملے گا، فرعون نے کہا ہاں (انعام مالی بھی بڑا ملیگا) اور (مزیدبراک پیمرتبہ ملیگاکہ) تم آن صورت میں (ہما رہے) مقرب توگوں میں داخل ہوجاؤ کے رغرض اس گفتکو کے بعد عین موقعۂ مقابلہ يرآئ اور دوسرى طوت موسى على التلام تشريف لا مح ادر مقابلة شروع جوا ادر ماحرول في موسى على السلام سے عرض كياكه آپ ايناعصا پہلے دالئے گايا ہم داليں) موئى (على السّلام) نے اُن سے فرما ياكه تم كوچو يكه دُالنا (منظور) بهو (ميدان بي) دُالو،سوا نُقو*ل في*ايني رسّيال اور لانصيا دُاليس (جوجادد كا ترسيماني معلوم موتے تھے) اور كہنے لگے كه فرعون كے نصيب كى تسم بے شك ہم ہى غالب آدیں گے، بھرمولی (علیاتلام) نے (بحکیم خداد ندی) اینا عصا ڈالا، ڈوالنے کبیاتھیمی (از دہا بن كر) أيح تمامتر بين بنائے د صندے كو زنگلنا شرفع كردياسو (يد ديكھ كر) جادد كرد اليه مت أخ موتے کہ) سب بیره میں گر پڑے (اور سکار سکار کا کر) کہنے گئے کہ بم ایمان ہے آئے رتبالعالمین پر جوموسی اور ہارون (علیبهاالسلام) کا بھی رہے، (ونسریون بڑا گھرا یاکہ ہیں ایسانہوکہ ساری

المرة الشعرار ٢٩: ١٥ مورة الشعرار ٢٩: ١٥ مورة

معارث القرآن جسلد شم

رمایا ہی شان ہوجا و ہے تو ایک ضمون گھڑ کر تھہ ورت عماب سا ہروں سے کہنے لگا کہ ہاں تم موئی پرایان کے آئے بغیراسے کہ ہیں تم کوا جازت دوں ضرور (معلوم ہوتاہے کہ) یہ (جادو میں) تم سبکا اُستا دہے جب نے تم کو جادو کھایا ہے (اور تم اسکے شاگر د ہوا سلنے باہم خفیہ سازش کرلی ہے کہ تم کوں کرنا ہم کوں کریں گے بھراس طرح ہا رجیت ظاہر کریں گے تا کہ قبلیوں سے سلطنت کی کر بفراغ خاطس خود دیاست کر وکھولہ تعالی (راق ہان المشکو کو گھ کو تھو و فی المکی گئن تھ لیے تھو ہو جو اُلی گئن تھ لیے تھو ہو جو اُلی گئن تھ لیے تھو ہو جو اُلی گئن تھ لیے تھو ہو گئا کہ تا کہ اور عرب ہو کہ اُلی گئن تھ لیے تھو الیے مرف کے ہاتھ اور دور کی سے سواتے کو حقیقت معلوم ہوئی جاتی ہے (اور وہ یہ ہے کہ) میں تھا رے ایک طوف کے ہاتھ اور دور کی سے نو تھو ان کی کا اور تم مب کو گئی کو گئی گئی گئی کہ اور عبرت ہو) اُنھوں نے جو اِلی کہ کہ تھو ایس جا بہتی ہیں گئی ہیں اور عبرت ہو) اُنھوں نے جو اِلی کے بیاس جا بہتی ہیں گئی ہیں اور کی معا دن کر دے اسوجہ سے کہ تھو ایک کا ور تی ہیں کہ ہما را پر در دکھا دہاری خطاؤں کو معا دن کر دے اسوجہ سے کہ ہم دا س موقع پر حاصرین میں سے پہلے ایمان لائے (پس اس پر سینہ جو تھے جیسے آسے اور عبر بی اس کی بیٹ ہو سے ایمان لائی کے تھے جیسے آسے اور دور ان اور ہون اور بنی اسرائیل)

معارف ومسائل

آنفودا من آننور من المنافرة المنافرة المنافرة المنافرة النام في جادورون سيح المراب المنافرة المنافرة المنافرة النام في المالية الموده و كاوي المنافرة النام في المنافرة النام في المنافرة النام في المنافرة النام المنافرة النام المنافرة ال

روی فردی از ایک میں اور اور کے ایے بہنراز قسم ہے جو زمانہ جاہلیت میں دائج متنی افسوس کرشلمانوں میں بھی اب ایسی قسمیں دائج ہوگئی ہیں جو اس سے زیا دہ شنیع اور قبیح ہیں مثلاً
بادشاہ کی تسم، تیرے سرکی تسم، سیری ڈوارسی کی تسم یا تیرے باپ کی قبر کی تسم، اس تسم کی تسمین کھانا شرعاً
جائز نہیں، بلکہ ان کے متعلق میں کہنا غلط نہیں ہوگا کہ خدا کے نام کی جھوڈی قسم کھانے میں جو گرنا وغطیم ہے

ان اموں کی بی تعمیمی کناه میں اُس کے نہیں (کماف السام)

قَالُوَالَاحْمَدُ بُرَدُ النَّا النَّ رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ، بِين جب فرعون نے جا دوگروں کو قبولِ ايمان پر قتل کی اور ہاتھ باوں کا شنے اور کولی چڑھانے کی دھکی دی توجا دوگروں نے بڑی ہے پروائ سے بہجواب

فارث القرآن جسلد سورة الشعرار ۲۸:۲۷ دیاکہ تم جو کچھ کرسکتے ہوکر او - ہماراکوئ نُفضان نہیں ، ہم قتال تھی ہونگے تواپینے رب کے یاس جلے جا کینا جہاں آرام ہی آرام ہے۔ بہاں غور کرنے کی بات میں ہے کہ بیرجاد وگر جو عمر جو جاد وگری کے کفرمیں مبتلا، اُس پرمزید فرعون کے دعوائے خدائی کوماننے دالے اور اس کی پیتش کرنے دالے تھے۔حصرت موسیٰ علیال لام کا معجزہ دھیک ا پنی پوری قوم کے خلاف وعون جیسے ظالم جا ہر باد شاہ کے خلاف ایمان کا اعلان کردیں ہی ایک حیرت انگیز چیز تھی مگر بیمال توصرف ایمان کا علان ہی نہیں بلکہ ایمان کا دہ گہرا رنگ چڑھ جانے کا مظاہرہ ہے کہ قیامت و آخرت گویا انکے سامنے نظرا نے لگی۔ آخرت کی نعمتوں کامشاہرہ ہونے لگا کج جس کے مقابلے میں دنیا کی ہرسز ااور مصیبت سے بے نیاز ہوکر (فَا قُضِ مَا آنْتَ قَامِنِ) کہدیا بعنی جو نیراجی جا ہے کرائے ہم تو ایمان سے بھرنے والے نہیں۔ یہ بی در حقیقت حضرت موسی عالیتالم ای کامیحزہ ہے جومیجرہ عصاادر بدر بینارے کم نہیں، اسی طرح کے بہت سے واقعات ہمارے رسول محمصطفاصل الشرعكنيكم كم ما تقون طابر يوئي بين كدايك منظ بين ستربرس كا وا میں ایساا نقلاب آگیا کہ صرف مُومن ہی نہیں ہوگیا بلکہ غازی بن کرشہید ہونے کی تمنا کرنے لگا۔ وْحَيْنَا إِلَى مُولِنِي آنَ آسْرِ بِعِيادِي إِنَّ أَنْ الْمِرْ بِعِيادِي إِنَّ أَنْ مُولِنِي آنَ أَسْرِ بِعِيادِي إِنَّ أَنْ مُولِنِي بیا ہم نے اُن کو یا غوں اور چشموں سے اور خز اوں اور عمدہ ادر ہاتھ لگادیں ہم نے بہ چیزی بن اسرائیل کے ہم بیجھے یڑے انتحاسورج نطاعے ب مقابل ہوئیں دونوں فوجیں کہنے لگے موئی کے لوگ یکم تو یکوے کے ر كوننين، مير عدما تف ميرا رب ده جه كوراه تبلايكا بيم حكم بيها يم نه مولى كو

شورة الشعراء ٢٧: ٨٢ بعصاك البحر فانفكق فكان كل في في قالطود العظيم عصاسے دریا کو بحروریا پھٹ گیا تو ہوگئ ہر بھانک بسے بڑا بہاڑ دُ لَقَنَا الْحُوْرِينَ ﴿ وَانْجِينَا مُوْسَى وَمَنْ مَّعَدُ آجَمَعِينَا مُوْسَى وَمَنْ مَّعَدُ آجَمَعِينَ پاس بہنچادیا ہم نے اس جگہ دومروں کو اور بچادیا ہم نے موسیٰ کو اورجو ہوگ تقے اسے سب الله المُورِينَ الرَّحْوِينَ شَالِ اللهِ وَمَا كَانَ الْرَحْوَيْنَ شَالِ اللهِ وَمَا كَانَ الْرَحْوَ هُمُ بحر ڈیا دیا ہم نے اُن دوسروں کو اس چیزیں ایک نشانی ہے اور نہیں سے بہت لوگ اُن میں مُّوْمِينِينَ ﴿ وَإِنَّ رَبِّكَ لَهُ وَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيمُ ﴿ اور شرارب وہی ہے ذیروست رحم בוע مان وال اور (جب فرعون کو اس دافعہ سے جی ہرایت نہوی ادراس نے بنی اسرائیل کی آ زار دہی شرحیوری تی ہمنے موسی (علیہ سلام) کو کم بھیجا کہ میرے (ان) بندوں کو (بینی بنی اسرائیل کو) شباشب (مصرسے یا ہر) برکال لے جاؤ (اور فرعون کی جانے) تم توگوں کا تعاقب رہی یکیا جا ویکا (جنانجیروہ موافق تحکم كي بني اسرائيل كو كررات كو جلد ئي صبح بيرخبرشهور بوئ تو) فرعون نے (تعاقب كى تدبير كرنے كيائے ا جا بجاتس یاس کے)شہروں میں جیراسی دوڑادئے (اور یہ کہلا بھیجا) کہ یہ توک ربینی بی کسرًا سیل ہماری نسبت) تھوڑی سی جاعت ہے (ان کے مقابلہ سے کوئ اندلیثیہ مذکر ہے) اور اُنھوں نے (این کاروائ سے) ہم کوبہت غصر دلایا ہے (وہ کاروائ یہ ہے کہ خفیہ جالای سے کا گئے یا بیرکردیو مجى بادا بهت ساعاديت كربها في سے ليك غرض بم كوائمت بناكر كئے صروران كا تدارك كرنا جائيے) اور مي سب آيك بي جاعت (اور باقاعده نوج) بي، غرض (دوجار روز بين جب سامان اور فوج درست جوكيا تولادك كرك رئ أسرائيل مح تعاقب مين جلاا در ميز خبر نه تقى كداب تومنا نصيب وگا تواس صابے کویا) ہم فے اُن کو باغوں کادر جشموں سے اور خزانوں سے اور عمدہ مکانات سے برکال بابركيا (بم في انتحسائدتو) يُون كيااوران كي بعد بني اسرائيل كوان كامال بناديا (بيرهم مقترضة تقاآ گے تقدیم) غرض (ایک روز) سُورج نکلنے کے وقت اُن کو پیھے سے جالیا (یعنی قرمیب پنج اس وقت بن اسرائيل دريائے قلزم سے اُتر نے كى فكرس تھے كہ كيا ساما كري) بيم ويا فون جاعتين (ما ہم السی قریب موش کہ) آیک دوسرے کو دیکھنے لکیں توموئی (علالسلام) کے ہمراہی رکھیر کر) کہنے الے کہ (اسمویٰ) بس ہم توان کے ہاتھ آگئے، مونی (علیابستلام) نے فرمایا کہ ہرگز نہیں کیونکر پیر م بمراه میرا بردر دگار ہے وہ مجھ کو ابھی (دریائے سکانے کا) رستہ تبلاد سکا کیونکہ موسی علیالسلام کو

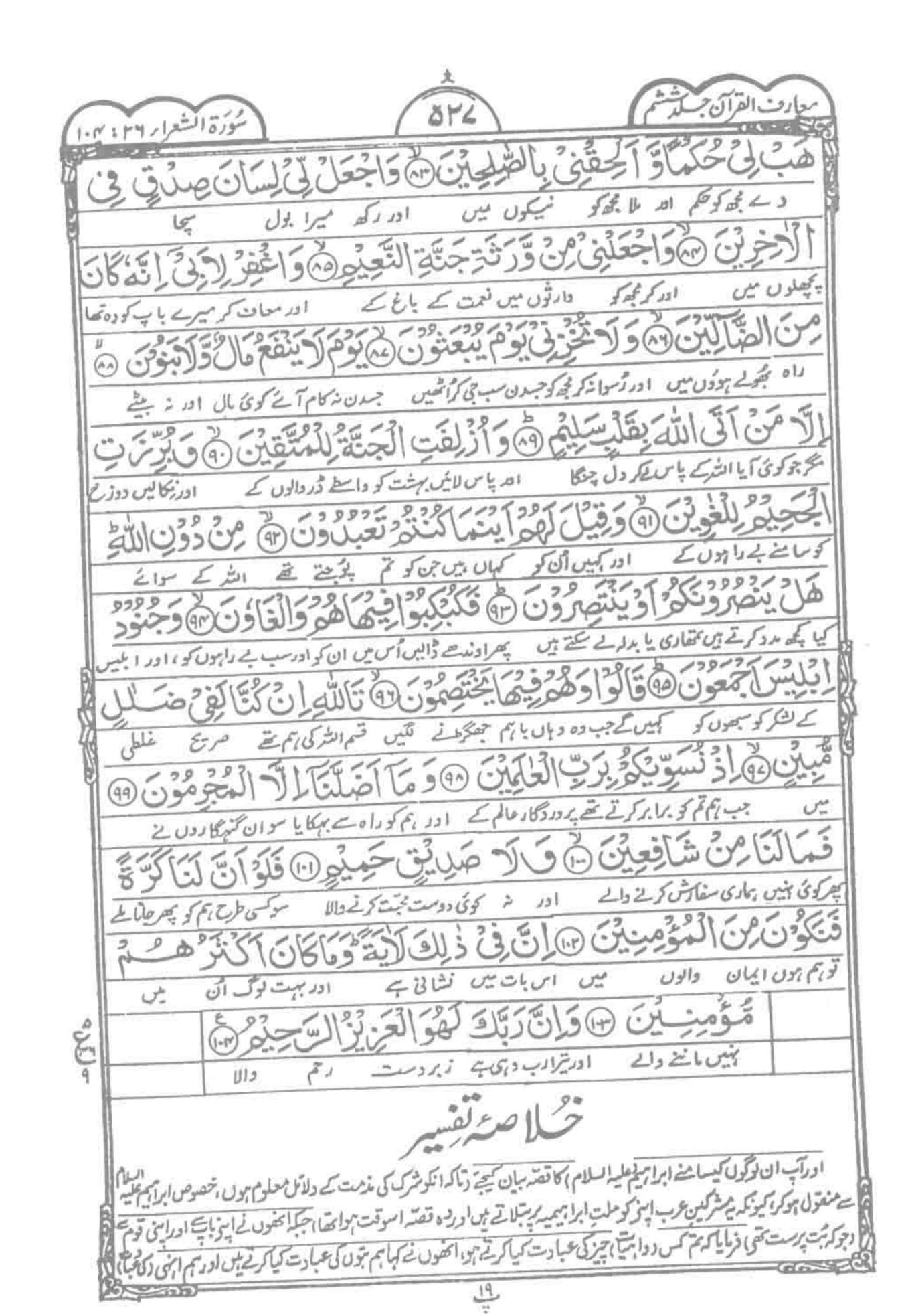
المرة الشراء ١٦١ م

ا روائی کے وقت ہی کہدیا گیا تھا کہ مند میں خاک استہ بیدا ہوجائیگا، فاخیوب کھٹے کی ڈیٹی ایکٹے پیشن کا تھنا گئے کہ درگا و کر ن ختنی ، گوختک ہونی کی بیفت اسوقت نہ تبلائی تھی اپس مرئی علاصلام اس عدفی برمطین تھے اور بنی امرائیل کیفیت کی ہونی نے مساور اسل کیفیت کی ہونی نے مساور اسل کیفیت کی ہونے مساور اسل کی ہونے کہ اور اسلام کی مساور کی ہونے کے قریب بینچا دیا رہی فرعون اور فرعونی بھی دریا کے نزدیک بینچ اور امن واطیعان سے پارموگئے اور ہم نے دو مرکز فرق کو بھی اس موقع کے قریب بینچا دیا رہی فرعون اور فرعونی بھی دریا کے نزدیک بینچ اور امن واطیعان سے پارموگئے اور ہم نے دو مرکز فرق کو بھی اس موقع کے قریب بینچا دیا رہی فرعون اور فرعونی بھی دریا کے نزدیک بینچ اور امن واطیعان سے پارموگئے اور اسلام کی موری کی مساور کی بھی اور اسلام کی موری کی مساور کی بھی اور اسلام کی موری کی مساور کی کھی اس موقع کے قریب بینچا دیا دریا کہ کا مام ہوا اور اسلام کی موری کی مساور کی موری کی کھی اس موری کی کہ کا موری کی کہ کا موری کی کھی اس کو کہ کہ کا موری کی کہ کا لفت اور اسلام کی موری کی کا کام مرائی کی کا فوری کی کھی کہ کا موری کی کہ کا دوری کی کہ کا موری کی کہ کا موری کی کھی کری بھی کہ کا موری کی کھی کہ کا موری کی کہ کا موری کی کہ کا موری کی کہ کا موری کی کہ کارور اسلام کی موری کی کہ کا موری کی کہ کا موری کی کہ کا موری کی کہ کارور کی ہے ، کی توجہ کی موری کی کہ کارور کی ہے ، کی توجہ کی موری کی کہ کو کارور کی کارور کی ہا کہ کو کہ کہ کی کہ کارور کی کارور کی کے کہ کی کارور کی کہ کو کو کہ کی کارور کی کے کہ کی کہ کی کارور کی کے کارور کی کارور کی کی کارور کارور کارور کارور کارور کی کارور کارو

معارف مسائل

. وَآدُوْرَ نُهُمَا ابْنِيَ السَّرَامِيْنَ اسَآمِيت مِين بِظاہر بِهِ تصريح ہو کہ قوم فرعون کی چیوڑی ہو تی الاک اورجا مُلا د ، با نیات وخزا آن المالك غرق فرعون مح معدمني امراتيل كوبنا دياكميا المين اسمين ايك تاريخي اشكال يه وكه خود قرآن كي متعدرآيات اسپر شايدين كه قوي وع ى بلاكت كے بعد بنى امرائيل مصركيطرف نہيں لوٹے ملكه اپنے اصلى وطن ارمن مقدس شام كيطرف واند ، توری، وہيں انكوا كے كافر قوم تجها و کے انکے شہر کو فتے کرنیکا حکم ملا، جسی تعمیس سے بنی امرائیس نے انکار کرد^ئیا اسپربطور عذا کے اس <u>کھلے</u> میدان میں جسیس بنی امرائیل فوجو تعے ایک قدر تی جیلخانہ بناریا کیا، کہ وہ اس میں آئی نوکن نہیں سے تھے ، اسی لی پیائی سال گذیرے اور اسی ادی تیمین ایجے دونوں نمیرو ر موساقها و ن علیهما السلام کی د فات ہوگئی اسکے بعد می کتب ایج سے یہ ثابت نہیں ہونا کہ کسیوفت بنی اسرائیل جہاعی اور تومی ور مصمصري اخل بوري وركة توم فرعون كي جائدا دوخزاتن بران كاقبصنه وابو تفيريح المعاني مي سودة شعراً كي اسخابيت كى يحت السكاد د جواب تمة تفسير صفرت من وتساده مع حواله سے نقل كتے ہيں ، حصرت من كاارشاد بركم آيب مذكور ميں بني امر آيل كو فرعونی متروکہ جاتبیراد کا وارث بنانے کا ذکر ہو گرمیے کہیں مذکور نہیں کہتے اقعہ طلک فرعون کے فورّا بعد موجا میں کا وادی تیہ کے واقعہ و جاليس بجياس ل ك بعديمي أكرده مصري داخل بوي بون توآيت ك مفهوم مين كوتي فرق نهيس آماً وبإيدا مركمة يايخ سے انكا اجماعي خال مصرتابت بنيين تويدا عرزاص السلة قابل التفات نهين بحكه أس النكريمايخ يهؤونصارى كالمجي بوى اكاذب بحولور بوجوكسي طح قابل اعتماد نہیں اسکی دیجر آبیت قرآن میں کوئی تا دیل کرنسکی صز درت نہیں ۔۔۔ حصزت قدّارہ نے فرمایا کہ اس اتعامی میں تعلق جینی آیات قرآن کریم کی متعلر سور تو ن مین آئی بین مثلاً سورة اعرآن آیت <u>۱۳۶۰ دین اور سورة قص</u>تص آیت م^{ین} اور سورة وخاآن کی آیا م الما ادرسوة شقارك آيت مذكور الاست ظاهرت اكرج ذبن اطرون جا آبي كربن امرائيل كوخا على عنا ورجا ما د کا مالک بنایا گیا تھا جو توج فرعوں کے ارجن مصریں چھوڑی تھیں جس کیلئے بنی اسرائیل کا مصرک بطرف توشنا ضردری ہی لیکن ان سب آیتول کے ایفاظ میں کم می اضح گنجائش موجرد کر کراد اُنے سے بوکہ بنی اسرائیل کواسی کے خزاتن اور ماغا وغیرہ کا مالک بنادیا گیاجہ طرح کے والما عاقوم فرعون محمياس مقويس سائري صروري نهيس كم وه ارجن مصراى مين بنجار عصل مول بلكم ارجن شام مي معي عاسل موسكة بين ا ك يمنون بهل امناعت من تكف سربكيا تقاطيح جديد كوقت آج ١٢ رشعبا ن هو تنام من تكها أثيا، جبكها حقر كي عراش سال يوز مونيين عنر أتعدر

وقف الازم



ورة الشعراء ٢٠: ار ف القران ج ا برج بشے رشی بن ابراہم رعلیالسلام افے فرمایا کہ پھھاری سنتے ہیں جبتم انکور اپنی عون صاحت کیونت المجاداكرت بويادم جوال ك عبادت كرتے بوتوكيا، يم كوكھ لفع بہنجاتے ہيں يا دائر تم انكى عبادت ترك كردد تو سياه يتمكو كيحه ضروبي السيخ مين ربعن استحقاق الورسيت كسيلة علما ورقدرت كاطرة توضروري مي ان لوگوں نے كہنا ہي دسيات توجيس كرميم يستقيدون يانفع وضرر سيجاسكة بهون اورائى عبادت كرنسي يدوجر نهين الكيمن ليغيرون كو اسبطرے کرتے دیجھا، واس تی می وبی کرتے ہیں) ایراسیم رعلیا ہسلام) نے فرمایا کہ مجلا بھنے ان رک حالت اکو رغور سے دیجھا بھی کتم عبا دے کیا کرتے ہوئم بھی اورتھھا اسے ٹرانے بڑے بھی کہ یہ رُحبودین) میرے راجی تمھاکے گئے ، باعث صررين دلين أكرا كاعباد كيجاد اخواه نعوذ بالترمين كرون يائم كرو تو بجز صرائك ادركوتي نتيجه بهان المكر بال رالعالمين دايسابى كدوه اين عابرين كادوست واوراسى عبادسرنا نع بى جنة بحكودا وراسيطرح سبكى سيداكيا، بحردمي مجعكود ميري صلحون مك ارمهاى كريا بوريعي عقل فهم ديبا برجس نفع د صرر كوسجها بو اورج محسكوكها قابلا تام واورجب مين مبارم وجا تام ول دجسكه بعد شفا م مصاتي مي تووي محبكه شفا في سيام اورجو مجبكو دو پر موت و سی ایم رقیامت کے دون امجھکوزندہ کرسکیااور سی مجھ کوس المیدی کدیری غلط کاری کو قیامت کے روزمیا لرديكا ديرتما مترصفا اسلة سناتين كه توم كوخرا تعالى عبادى يغبت بوكيوصفات بمال بيان فراتے فرماتے غلب و سے حق تعالیٰ سے مناجا کرنے لگے کہ الے میری بردر دگار مجھکو حکمت راجی جامعیت براجل اور اللہ میں زبارہ کمال ا أفر ما ركين كالفيري محت تو دقت عاسك بحي هال مي اور دراتب قرب من مجعكودا على درجه كے انبك لوكوں كم ا شامل فرما دمرادا بميار عاليشان بين اورميرا ذكرة تنده آينوالون مارى ركه وتاكهم كطرلقه يرحلين حب مين بھے کو زیادہ تواب ملے) اور مجھ کوجنت انعیم کے شخصین میں سے کر اور میرے باب (کو توفیق ایمان کی دیجر اس كى مففرت فرماكه ده كراه توكون بن ساورس درزسانى نده بوكرانفيس كراس دوز جوكورسواند كرندراكياس دن كربيض وافعات بأكدكا بيى ذكرفر ما ديا تاكرتوم شف اوراد ريسيني وه اليسايون موكا) جس دن مين كه (نجات كي لئ) شرمال كام آدبيكا شرادلاد مكر إل (اسكونجات موكى) جوالتركي د مفرد شرک سے کیا مل کے کراویگا اور (اس روز) خدا ترسوں (معنی ایمان والوں) کے لئے جنت نزدیک دیادی دکهاس کود تعیس اور معلی کرکے کہ ہم اسمیں جادیں گے خوش ہوں) اور ان گراہو دىسى كافروں) كے لئے دوزخ سامنے ظاہر كيجا ويكى ذكه أس كود تكھ كرغزدہ ہوں كہم اسيں جاويكے) اور (اس دور) ان رگراموں) سے کہاجا ویگاکہ وہ معبود کہاں گئے جن کی تم فدا کے سواعبادت کیا ارتے تھے کیا (اسوقت) وہ تھاراساتھ دے سے بیں یا اینا ہی بیاد کرسے ہیں بھر (یہ کہر) وہ (عابدين) اور كراه لوك اورالليس كان رسب كرسب دوزخ مين اونده مفود الديّع جاويك دبس ده بُت اور شیاطین نداینے کو بچاسکے نداینے عابدین کو) وہ کفاراس دونی می گفتگو کرتے و كُران معيودين سے) كہيں كے كہ بخرا ہے تك ہم صريح گراہى ميں تقے جيكم كورعبادت ين)

رب العالمين كربرابررتے تقے ادريم كوتوب ان بڑے مجر موں نے (جوكہ بائی صلالت تھے) گراہ كيا

مو (اب) مذكوئ بها واسفاوش ہے (كہ چھڑالے) اور نہ كوئ شخص دوست (كہ خالی دسوزی بہرے)

موكيا اچھا ہوتاكہ م كو (كرنياميں) بھروايس جانا ملنا كہ ہم سلمان ہوجاتے (يبائتك ابراہيم علايہ للم

كى تقرير ہوگئ آگے الترتعالی كا ارشاد ہے كہ) بيشك اس واقعہ (مناظرہ ابراہيم يہ نيزوا فقرئت)

ميں (بھی طالبان حق اور انجام اندليقوں كے لئے) ايك عبرت ہے (كہ مضامين مناظرہ ميں غور كرك قوميد كا اعتقاد كري اور انجام اندليقوں كے لئے) ايك عبرت ہے (كہ مضامين مناظرہ ميں غور كرك تو حيد كا اعتقاد كري اور واقعات قيامت سے ڈريں اور ايمان لاويں) اور (با وجود اس كے) ان (مشركين كم) ميں اکثر لوگ ايمان نہيں لئے بيشك آئيكارب بڑا زبر دست رحمت والا ہے (كہ عذاب و سكر ميک ميک ہے) ۔

مكارف ومسائل

قیامت که انسانوں میں ذکر خیر رکھنے کی رُما دار ہے۔ کالام نفع کے لئے ہے آیتہ کے معنی میں ہوئے کہ اے فعالیا ایت مبادکہ میں نسسان " سے مراد ذکر ہے ادر" کی "کالام نفع کے لئے ہے آیتہ کے معنی میں ہوئے کہ اے فعالیا مجھالیے پیند میدہ طریقے اور عمرہ فشا نیاں عطافر ماجس کی دو سرے لوگ قیامت تک بیر وی کریں، اور مجھے ذکر خیراور عمرہ صفت سے یا دکیا کریں (ابن کت برورود ہے المقابی) خداتعالی نے حضرت ابراہیم اور اپنے اور مجھے ذکر خیراور عمرہ صفت سے یا دکیا کریں (ابن کت برورود ہے المقابی) خداتا الی نے حضرت ابراہیم اور اپنے کی دُما تبول فرمائی ۔ یہودو فسا رئی اور شرکین کہ بھی ملتب ابراہیم کے خلاف کفر و تمرک ہے مگردہ آپ کو اس کی طوف منسوب کرتے ہیں ، اگر جیران کا طریقہ ملتب ابراہیم کے خلاف کفر و تمرک ہے مگردہ دعویٰ یہی کرتے ہیں کہم ملتب ابراہیمی پر ہونے کو اپنے دعویٰ یہی کرتے ہیں کہم ملتب ابراہیمی پر ہیں اور اُمتب محمد سے تب باطور پر بھی ملتب ابراہیمی پر ہونے کو اپنے اسے باعث فرسم حستی ہے۔

سورة الشعراء ٢٧:٧٩. معارف القرآن جسكة جن كوشب جاه كهاجا كے - قران و حدیث میں جہاں طلب جاه كونمنوع اور مذموم قرار دیا ہے آگ مراد دین و نیوی وجامت اوراس سے دنیوی منافع حاصل کرناہے۔ امام ترمذی ونسائ نے حضرت کعٹ بن مالک کی روایت سے بیان کیا کہ رسول الشرصال عليهم نے فرطاياكہ دو مجبوكے مجيزيّے حوكبريوں كے كلے ميں جھوڑ ديئے جادي وہ كبريوں كے ديوركواتنا نقصان نہیں سبنیاتے جتناد وخصلتیں انسان سے دین کونقنسان بہنیاتی ہیں۔ ایک مال کی مجت ووسرك البني عرب وجاه كى طلب (ورواة الطيران عن ابى سعيد الحددي والبزارعن الي هويق اورحضرت ابن عباس سے بسندضعیف دیلی نے بدروایت تقل کی ہے کہ جاہ و ثناکی عجبت انسان کواندها بهراكردي ي- ان تمام روايات سمراد وه حبة جاه ادرطاب ثناء بيجو دُنيوى مقاصد كم الممطاوب مویا جس کی خاطر دین میں مراہنت یا کسی گناہ کا اڑ سکاب کرنا پڑے اور جب بیصورت بنوتو طلب جاہ مْرِمِي مِنْ مِن مِدرث مِين خودرشول الشرصال الترعليم مع بيرة عامنقول ب (اللهرة اجعلن في عين عنوا دفى اعين النّاس كبيل نعيني يا الله مجهزو ابني رسكا ويس توجهولما اورحقير بنا ديجيجُ اور لوگوں كي نظ سين برابنا ديجة ميهان على توكون كي نظريين برابنا نيكامقصديد به كدلوك بيك عال مين سيري بيردى كري- اسى كف امام مالك في في ما يكر جو تخص واقع مين صالح اور نيك مو الوكون كي نظر مين نيك بننے كے لئے ديكارى فرك اسكے لئے لوگوں كيطون سے مدح و ثناكى محبت مذموم نہيں۔ ا بن عربی نے فرمایا کہ آیت مذکورہ سے تابت ہواکہ جس نیک عمل سے توگوں میں تعربیت ہوتی ہوآ تيك على كى طلك خوارش حاكز ب- اورامام غزالى رو نے فرما ياكد دنيا ميں عزت وجاه كى مجت ين شرطوں كے ساتھ جائزہ ہے۔ اول يہ كہ اس سے تقدود اينے آپ كو بڑا اور استے بالمقابل دوسرے كو جيولا یا حقیر قرار دینانه موملکه آخرت کے فائدہ کے لئے ہوکہ لوگ میر سمعتقد ہوکرنیک عال میں میسرا المباع كرس- دوسر يه كرجيوني ثناخواني مقصود نه بوكرجو صفت اينا ندريني بالوكون ساكى خوابش رکھے کہ وہ اس صفت میں اسکی تعرفیت کریں تبیہ ہے یہ کدا سکے حاصل کرنے کے لیے کسی گناه یا دین کے معاطمے میں مراہنت اختیار نہ کرنی بڑے۔ مشركين كم ين وعل معفرت مأزنيس كاغفر كان إن التي التي التي المثل آلين ، قران مجيد كاس فرمان ك بعددما كان لِلتَّبِيّ وَاللَّذِينَ امّنُوا آنَ يُسْتَعَنِّفُ وَاللَّهُ شَرِيكِيْنَ وَكُوْكَا لُؤْآ اولَ قُرُبُل مِنْ بَعْدِ مَا نَبَيْنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْفِ الْجَرِيمِ الْبَصِينَ الْبَصْفِي مِلْ لِيَتْ مِن الشَّفِي مَا يَضْفًا اور دُعا مُعفرت طلب كرنانا جاز اور حوام ب كيو مكرآيت مباركه كاترجمه بير بي كركسي في اورا ياندادس کے لئے یہ قطعاً جائز نہیں کہ وہ مشرکوں کے لئے مغفرت طلب کریں خواہ وہ ایکے رشتہ دارا در قریبی ہی ميون نرون جيكدان كاجنبي يونا بالكل داضي بوجكا بو-

جواب کاخلاصہ بیہ ہے کہ حضرت ابراہیم علیات الم نے اپنے باپ کے لئے انکی زندگی میں استعفاد اسے کی تقان کے بیت اور خیال سے کی تقی کہ اللہ در آبا عزت ان کوایمان لانے کی توفیق دے جس کے بعد معفرت بھینی ہے یا حفر ابراہیم علیا بسلام کا پیڈیال تھا کہ میرا با ہے خفیہ طور پرایمان کے آیا ہے اگر جہ اسکا اظہار اور اعلان مہیں کیا لیک جب حضرت ابراہیم علیا بسلام کو معلوم ہوگیا کہ میرا باب تو کفر پر مراہے تو انھوں نے اپنی پوری میزادی اور خرک برائ کا افلہار فرمایا ۔ (فادل کو) اس بات کی تحقیق کہ حضرت ابراہیم علیات ام کو باپ کا کفر اور خرک اپنے باپ کی ڈندگی میں معلوم ہوگیا تھا یا مرتے کے بعد یا قیا مت کے دور ہوگا ، اس کی پوری تفصیل سور کہ تو بہ میں فرکور ہے۔

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالَ وَلَا بَنُوْنَ ٥ إِلَّا مَنْ آقَ اللهُ إِنقَلْبِ سَلِيْمِ و مِينَ قيامت كُ أس دن میں حیں میں نہ کوئ مال سی کو فائدہ دیگا نہ اُس کی نربیذا ولا دبجز اُس شخص کے جوالت کے پیکس قلب لیم کیکر پہنچے۔ اس آیت کی تفسیر بعض حضرات نے استثناء کو استثنا عین نقطع قراد دکریہ کی ہے كه أس روزكسي كونه اسكامال كام آدبيكا نه اولاد ، بإن كام أبيكا توصرف ا بينا فلب ليم مبين سرك وكفر شرمد - اوراس جملے مثال میں مولی جیسے کوئ شخص زید مے تعلق سی سے بوجھے کرکیا زید کے یاسر مال ادرا دلادمجى ہے ده اسے جواب میں کہے اسکامال داولاد تو اسکا قلب ہم ہے۔ حبکامطلب یہ ہوتا ہے کہ مال واولا و تو کھے نہیں مگران سب کے بدلے اسکے یاس اینا قلب کیم موجود ہے۔خلاصتہوں آتیت کااس تفسیر میر میرجوتا ہے کہ مال بااولاد تو اُس روز کچھ کام نہ آئیں گے، کام صرف ایناایان اورعل صالح أيكا جس كوقلب ليم س تعبير رياكيا ب- اورشهور تفسيراكثر مفترين كزريك یہ ہے کہ استثنام متصل ہے اور معنے ہیں کہ مال اور اولا دقیامت کے روز کسی تحص کے کا نہ آئیں گے بجزأت فض مح حبكا فليبليم بي يعنى دويون باسكاحاصل بيهواكه بيسب جيزي قيامت مين يمي مفيدونا فع ووكتى بين مرصرون كون كمالئة نفع بخش ونكى كافركو كيد نفق ندي كى بهال ايك بات ية قابل نظريك داس جكه قران كريم في وَلَد بنكون فرمايا جس كم معت زينها ولاد كي بن عام اولاد كاذكر غالباً اس ليئن نبين كياكه الشد وقت مين كام آنے كى توقع دُنيا ين كى زينداولادلعنى لاكوں س ہو تھی ہے تو کیوں سے سی صیبت کے وقت اہماد طبنے کا تو بہاں بھی انتمال شا ذو نادرہی ہوتا ہے اسلة قيامت من بالتحضيص لروك كي غيزان بوسكاذكركاكاجن سي دُنيام توقع نفع كي ركهي جاتي تقي -

سورة الشعراء ٢٠١٠ معارف القرآن جسكد دوسرى بات يه به كة فلب مي كيفظى معن تندرست دل كيني - ابن عباس في في سايك اس سے مراد وہ قلہ جو کلے توحید کی گواہی دے اور سرک سے پاک ہو، یہی ضمون مجا پر سے جو کا میں جا پر سے جو کا میں بن سيب بعنوان مختلف منقول ہے۔ سعيد بن سيا نے فرماياكہ تندرست دل صرف دوئ كا مؤكماً، كافركادل بيار موتاب جيساكة رأن كاارشادب في قادي بيموري مال أو لا داورخانداني تعلقات آخرت مي آيتِ مُركوره كي شهورتف يميطابق معلوم مواكد انسان كامال فيا بهى بشرط ايمان نفع بينجي اسكة بين - كروز بهى أسكام أسكتاب بشرط يكره المان مو-اس كى صورت به م كاحب فنون اينامال الله كاراه اورنيك كامون مين فرج كيا تقايا كوئ صدقه جارب تحريم حجوزا تفاءاكراسكا خاتما يان يرموا مخشرين تؤمنين كي فهرست بين داخل مواتوبيان كاخريج كياموال اورصدقة جاريكا ثواب اس كوميدان عشراورميزان حساب يميى كام آدبيكا-اوراكر يشفف المان نهي تقایا خدا نخواسته مرنے سے پہلے ایمان سے نکل کیا تواب دنیا میں کیا ہواکوئ نیک علی اسے کا کا نہ آویکا اورا دلاد كاجي ميى معامله ہے كه اگر بيخص سابان ہے تو آخرت ين جي اس كوا ولاد كا فائدہ بہنے سكتا ہى اسطرح سے كم اسك بعداس كى اولا داسكے لئے دُعا من خرت كر بے يا ايصال تواب كرے أا در اس طسرت بھی کہ اُنے اولاد کونیاب بنانے کی کوشش کی تھی اسلتے اُن کے نیک عمل کا تواب اس کو تھی خود بخود طنار بإادرا يحائمه اعمال مين درج زوتا ربا-اوراس طرح بهي كهادلاد محشر مين اسكى شفاعت كرك بخشوا ليحبيباكه بعض روايات حديث مين السيئ شفاعت كزناا وراسكا قبول موزنا ثابتسي حصوصاً نابالغ اولاد كا- اسى طرح اولا دكومان بالصي بهى آخرت مين لبشرط ايمان يه نفع بينجي كاك اکر بیسلمان ہوئے مگران کے اعمال صالحہ ماں باپ کے درجے کونہیں بہنچے توالٹرتعالی اُن کے باب داداکی رعایت کرمے ان کومجی اُسی مقام بلندیں بہنیا دیں کے جوان کے باب داداکا مقالج قران كريم بين اس كى تصريح اس طرح نذكور بو ق آلحقن اربي ه و قريسي بم الاديس كاب نيك بندول كے ساتھ أن كى ذريت كو بھى -اس آيت كى ندكورالصدر شهورتفسيرسے صاوم بواكم قران حدیث میں جہاں تہیں یہ مذکورہے کہ قیامت میں خاندا فی تعلق کیچے کام ندآ دیکیااس کی ترادیہ ہج ك غيرون كوكام شاقد كا، بهانتك كه بيغيري اولاد ادر بيوى بي اكر مُومن نهي توان كي يغيري سان وقيامت مين كوى فائده نهين بيني كاجسياك حضرت نوح على التالم كيد بين اور لوط عاليها كى بوى اورا براہيم مدايت الام كے والدكامعاملہ ہے -آياتِ قرآن فَإِذَا نُفِحَ فِي لَهُوْدِ قَلْ آنْسَابَ بَيْنَهُ وْ اولِيَوْمَ يَفِيُّ الْمَرْءُ مِنْ آخِيْهِ وَأَيِّم وَآبِيْهِ) اور لَدِيَهُونِي وَالِنَّ عَنْ وَكِيمٍ) ان سب آیات کا یی فعرم بوسکتا ہے۔ وَاللّٰهُ اعْلَمْ

ف القران ملایا توس کی قوم نے سیفام لا کے والوں کو جب کہا اُن کو ایکے بھائی نوح نے سودروالشرس اور ميرا میں تمقادے داسطے بیغام لانے دالا ہوں معتبر بولے كيا ہم جھ كومان يس ماجانا اسكا جوكام ده كرد ب ي اور میں ہا بھتے والا رئیس ایمان لافروالوں کو میں تو اس سے درستا دیے والا الولے اکر تو تہ جھوڑے گا اليرى قوم نے تو مجھ كو جھٹلايا تَجِّنِي وَمَنْ مِّعِي مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۞ فَالْجَبَيْنَ وُمَنْ مِّعَدُوفِ بجلك مجهكو الدجومير اساته ديس ايمان داكے يهر بجاريا به في اسكوادرجواسكے ساتھ بخة الْفُلُكِ الْمَشْحُونِ ﴿ ثُمَّ آَعُونَا بَعَلُ الْبُقِينَ ﴿ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ اس لدى موى كمشى مين يحرف اديامة اسكة يجهان بافي رسي وول كو الستراس بات بين كَلْيَقَ وَمَا كَانَ كَتْنُوهُ هُوَ مُّ فَي مِنْ يَنَ @ وَلِنَّ رَبِّكَ لَهُ الْعَزِيْزَ الْرَّحِيْهُ نشائی ہے اوران یں بہت اوگ نہیں یں ماننے دالے اور شرا دب وہی ہے زبر وست رحم والا والمع علية قوم نوح نے پیغیبروں کو جھٹلایا (کیو کہ ایک پیغیبرکی کذیہ سب کی تکذیل وم آئی ہے) جبکہ اُن سے آسمی برا دری کے بھائی نوح (علیہ ستلام) نے فرمایا کہ کیا تم (خداہے) نہیں ڈرتے ؟ یس محقاد المانت دار پیغیبر ورں (کہ بعینہ بیغیام خداوندی بلاکی بینی پہنچا دبیتا ہوں) سو 4

اسكاقففى يربيكر) تم لوك الشرس دروادر براكهنا ما نواور نيز) يستسكوى (دُنيوى) صله (ميم) یں مانگنامیراصلہ توبس رہالعالمین کے ذمتہ ہے۔ در میری اس بے غرضی کا تقتی بھی ہے ہے ہ م الشراع در داورميراكيناما نو ـ وه توك كيف كالكركياء م تم كوما نين كم ، حالا نكه ر ذيل توك متفالي سائق ولئے ہیں (جن کی موافقت سے شرفا و کو عارآتی ہے اور نیز اکٹرا لیے کم حوصلہ کو کو کا مقصد نسى كے ساتھ لكتے سے تجھ مال ماجاہ حاصل كرنا ، وتا ہے ، ان كا دعواہے ايان بھى قابل اعتبار نہيں -) نوح دعلیابسلام) نے فرمایاکہ اُنکے دبیتیہ رانہ) کام سے مجھ کو کیا بحث (خواہ شریف ہوں یار ذیل ہو دین میں اس تفاوت کاکیاا تر رہا؟ بیراحتمال کرانکا ایمان دل سے نہیں سواس پر)ان سے ساہے کت آ لینا بس فدا کاکام ہے۔ کیا جوب ہو کہ تم اس کو مجھوا ور (ر ذالت بیشیہ لوگوں کو اینے ایمان کاما نے قرار دینے سے جواشارہ یہ درخواست نکلتی ہے کہ میں ان کواپنے پاس سے ڈورکروں تو)میں ایمانداروں كو دُوركرنے والا نہيں برن (خواہ تم ايمان لاؤيا نہ لاؤ ميراكوى ضررنہيں كيونكه) بي توصاف طور يرايك دُداني والارون داورتبيغ سيميرا فرض منصبي يُولا موجانًا بيء آكے اينا نفع و نقصان تم وك وكاري وه توك كين لك اكرتم (اس كيف شف) اے نوح باز نداؤ كے توصرور سنگسار كرديت جادك (غرض جب سالها سال اسطرح كزرك تب) نوح (علي سلام) نے دُعاكى كدا _ یرے پر در دکارمیری قوم جھ کو (برابر) جھٹلا رہی ہے سوآپ میرے اور ان کے درمیان ایک دعلی) فيصلكرد يجية (ميني ان كو بلاك كرد يجية) اور مجدكو اورجوا بما ندارمير ب ساته بي ان كور اسس ہلاکت سے) نجات دیجئے تو ہم نے (ان کی دُعا قبول کی اور) ان کو اور جوان کے ساتھ بھری ہوئ کشتی میں (سوار) عقے اُن کو نجات دی بھراسے بعدہم نے باقی توگوں کوغرق کر دیا کس (واقعہ) میں ربھی) بڑی عبرت ہے اور (باوجود اسکے) ان رکفارمکہ) میں سے اکثر توگ ایمان نہیں لاتے، بیک آپ کارب زبردست (اور) مہر بان ہے رکہ باوجود عذاب برقادر ہونے کے اُن کو مہلت دیے ہوئے ہے)۔

معارف ومسائل

طاعات پراُجرت بین کائم در ما آست کگوت قلبه در آجی اس آیت سے علوم ہوتا ہے تعلیم اور تبلیغ پراُجرت لین کا است نہیں ہے اسلتے سلف صالحین نے اُجرت لین کو حمام کہا ہے لیس من مناخرین نے اس کو بحالت مجبوری جائز قرار دیا ہے۔ اس کی پوری تفسیل آیت لا تشاقات اُلیانی تو تا گائی ہوگئی ہے۔ اس کی پوری تفسیل آیت لا تشاقات اُلیانی تو تکی ہے۔ واس جگہ فا تن تھ اُلیانی کو کھی گائی کے لئے اور یہ بنال نے کہ بنال نے کے لئے اور یہ بنال نے کے لئے اور یہ بنال نے کیا ہور یہ بنال نے کے لئے اور یہ بنال نے کے لئے اور یہ بنال نے کے لئے اور یہ بنال نے کہ بنائی کو کو کھوں کی کے لئے اور یہ بنال نے کی بنال نے کی کے اور یہ بنال نے کی بنال نے کی بنال نے کی بنال نے کو ایک کے لئے اور یہ بنال نے کی کے کہ بنال نے کی بنال نے کی ہنال نے

معادف القرآن مبدارششم

لائ کئی ہے کہ اطاعتِ رسُول اورخدا تعالی سے ڈرنے کے لئے صرف رسُول کی امانت و دیانت یا مرت تبلیخ دفیلیم پراُ جُرت نہ طلب کرنا ہی کافی تھا انکین ہیں رسٹول ہیں یہ سبصفتیں پائی جائیں ہی اطاعت اور اسکے خداسے ڈرزنا تو اور لازمی ہوجاتا ہے۔

شرافت ورزالت اعمال واخلاق المحاكات المحاكات المؤامن كك والبيتك الدرودة وقال والمعلني المحاكة والمعالدة والمعالدة والمحاكة والمحاكة والمعالدة والمحاكة والمح

معارف القراق جديث من الموسود القراق جديث المواحد المورة الشعراء ١٧١ : ١٦١ مسكورة عكين المواحد المورة الشعراء ١٢٠ : ١٦١ مسكورة عكين المواحد المورة ال

خ للصرتيسير

توم مادفے بیغیروں کو مجھلایا جبکہ اُن سے اُن کی (برادری کے) بھائ مود (علیاتلام) فے كباكه كياتم (خداسے) ڈرتے نہيں ہو؟ ميں تھارا امانت دار پيغيبر ہوں ، سوتم الشرسے ڈرو،اورميري الما كروا درمين تم سے اس (تبليغ) يركوئ صله نہيں ماتكتا، بس ميرا صله تورب الدالمين كے ذمتہ ہے،كياتم (علادة ترك كے تكبرد تفاخرميں بھي اس درجه مصردت بوكه) ہراُد تجے مقام پر ایک یا د گار (كے طور ا پرعارت) بناتے ہود تاکہ خوب اونچی نظرا و ہے) جس کو محض فصنول (بلا صرورت) بناتے ہوا در (اسکے علادہ جو رہنے کے مرکان ہیں جن کی ایک درجہ ضرورت بھی ہے اُن میں بھی بیغلوہے کہ بڑے بڑے کھ بناتے ور والانکہ اس سے میں آدام بل سختاہے علیے دنیامیں کم کو ہیشہ رہنا ہے (بعنی توسیع مکانا اورا ليے بلندمل اوراليسى صنبوطى اوراليسى يادكارتعميرات أسوقت مناسب تقين جيكينيا مين مينية ربهنا ہوتا، تو بیرخیال ہوتاکہ فراخ مکان بناؤ تاکہ آئندہ نسل میں گئی نہروکیود تکہ ہم تھی رہی گے اور وہ جی رہی ا در بلندیمی بناؤ تاکہ نیجے حکمہ ندرہے توادھررہے لکیں گے اور ضبوط بناؤ تاکہ ہماری عمرطویل کے لئے کافی ہو اور یادگاری بناؤ تاکہ کارے زندہ رہتے سے ہادا ذکر زندہ رہے ادراب توسب فضول ہے۔ بڑی برى يادكارين بني بي اور بنانيوالے كا نام كانين موت نے سبكانام مشادياكسى كاجلدى اوركسى كا ديرين) اور (اس كبرك سبب طبيعت مين ختى ادر بدر الى درجر ركفته موكر) جبكى يرداردكير كرف كلتة بوتو بالكل جابر (اورظالم) بن كردار وكيركرته بو (ان برُ افلاق كالسلة بيان كياكياكه يه برُ افلاق اكثرا يان اورا طاعت كى راه بين ركاوك بنتين سور چونكر شرك اوركز شد برُ اخلاق ا خداتعالی کی ناخوشی اور غلاب کاسب بی اسلنے) تم رکوچاہئے کہ) اللہ سے ڈرد اور (جو تکہیں مول میری اطلع) میری اطاعت کرداوراس (الله) سے درد دریعنی جس سے در نے کویس کہتا ہوں وہ

المرة التعاد ٢٧ : ١٣٠٠

معارف القرآن جب لدشتم

معارف ومسائل

شوَرَة الشعراء ٢٧: ٥٩ روايت سيمي موتى بيكر ان كل بناء ديال على صاحب للامالا الامالا يعنى للاما الابد منه (ابوداؤد) ى برتىمى احبتى يى مصيبت بيم وه عارت جو صرورى دو ده وبال نبي بيدح المعاني رغرض مح کے بیندعارت بنانا شریعت محدید میں مرمق اور تماہے -جب کہا ان کو اُن کے بھائ ينام لازداون كو اسی جہاں کے پا ملا الدوں كے ا اور تراشة بو اور تعبير رون يسجن كا كابها ملائم ب 151 اور اصلاح ہیں کرتے اوران میں بہت وگ بنیں والے

معارف القرآن جلاشم ١٥٩٥ عورَةُ الشعار ١٥٩١٩ المورة الشعار ١٥٩١٩٩ المورة المورة

خ لاصديفسير

قوم تمود نے (جی) پیٹیبروں کو چھٹلایا جبکہ آن سے اُن کے بھائ صالح (علیانسلام) نے فرمایا کیا تم (الشرس) نہیں ڈرتے، میں بھاراامات دار بیتمبر در استم الشرسے ڈروادرمیری اطاعت کرد اور میں تم سے اس پر کچھ صلینہیں جا ہتا ، بس میراصلہ تو رت امالمین کے ذمیرہے را درتم جو خوشحالی کیوجہ سے اس درجہ انشرسے غافل ہوتو) کیا تم کو ان ہی چیز دں میں بنگیری سے رہنے دیاجا دے گا جوہیاں (دُنیایں) موجود ہیں، نسینی باغوں میں اور شیموں میں ادران تھجو روں میں جن کے کیتے خوب کو ندہے بين الينى ال مجورون مين خوب كثرت سے ميل آيا ہے) اور كيا (اسى غفلت كيوجر سے) تم بہا رون توتراش تراش كراتراتے (اور فيزكرتے) بوئے مكانات بناتے بوسوالترسے درواورميراكبناما نواور أن حدود (بندگی) سے بحل جانے والوں کا کہنا مت مالؤجوسرزمین میں فسادکیا کرتے ہی اور رہبی اللح دكى بات) نہيں كرتے دمراد رؤسار كفار بي جو كمرائى ير لوگوں كوآباده كرتے تقے اور فساداد رمدم اصلاح سے بی مُرادی) ان لوگوں نے کہاکہ تم برتو کسی نے بڑا بھاری جادد کردیا ہے (جس سے عقل میں خرابی آگئی ہے کہ نبوت کا دعوی کرتے ہو حالا تکہ)تم بس ہاری طرح کے ایک ومعولی) آدمی ہو۔ (ادرآدی بی برتانہیں) سوکوئ مجزہ بیش کرد اگریم (دعویٰ بوت میں) سیتے ہو، صالح (علیالیلام) نے فرمایاکہ بیرایک اوٹنی ہے (جو بوجہ فلاٹ عادت بیدا ہونے کے بچرہ ہے جبیاکہ یارہ ہے کے حتم کے قریب گزرااور علاوہ اسکے کہ بیری رسالت پر دلیل ہے خود اسکے بھی کچھے قوق ہیں جنانجے ان میں سے ایک بیر ہے کہ) یا فی مینے کے لئے ایک باری ایک ہے اور ایک مقرر دن میں ایک باری تھاری (بعنی تھالے مواشی کی) اور (ایک یہ ہے کہ) اس کو بڑائ (اور سکیف دہی) کے ساتھ ہاتھ بھی مت لگانا البھی تم کو ایک بھاری دن کا عذاب آپکرا سواٹھوں نے (بدرسالت کی تصدیق کی بذارستی کے حقوق ا داکتے بلکہ) اس اونٹنی کو مار ڈالا، پھر (جب عذاب کے نشان ظاہر ہو سے تو اپنی حرکت یہ) بشیمان مروئے (مگرا دل تو عنداب د مجھ لینے کے وقت پشیمانی بیکار، دوسرے خالی طبعی بیشیمانی سے کیا م و تا ہے جب مک اختیاری تدارک بعین توب دایان ندم و) پھر داخر) عذاب نے ان کوا لیا ، بیشک اس (داقعه) مين برى عبرت ما در (بادجود اسكے) ان ركفاركم مين اكثر لوگ ايمان نبين لاتے ادر بينك آپ كارب براز بردست بهت مهر بان بهدكم باد جود قدرت كے مهلت ديتا ہے) ـ

سورة الشعراء ٢٧١:٥٤ معادت القرآن جسكة معارف ومسائل وتتنجةون من الجبال بيوتا فرهين، حضرت ابن عباس سه فارهين كي تفسيرطري تقول بح يعنى اتراني التكتركر في اليوسال في فرمايا، ادريبى امام داغب في تسكرى بيك فارهين مصنى حاذ قين بيعنى ما ہرين تحيين رموديه بے كه الله تعالى نے تم ير نيعت فرمائ كه تم كوايسى صنعت كارى كھلادىكى بياروں كومكانات بنانا تھااتے لئے آسان كرديا - حاصل يہ ہے كندات كانعامات كويادكرواور زيين يرفسادندكرد-مفيد يشيف فدائ انعامات بين بشرطيكم اس آيت سي ثابت وواكد عده من فيداتعالى كانعامات بين اور ان ورُك واصي المنعل فري ان سے نفع أنها ما از بيلين اكران سے كوئ كناه يا حرام فعل يا بلا ضرورت أن ميں انهاك لازم آتا ، و تو بيروه بيشيرافتياركر نانا جائز ہے جيسے كما بھى اس سے بہلى آیتوں میں بلا صرورت عارت کی بندی کی ندمت گردی ہے۔ كَتَابَتُ تَوْمُ لُوْطِ وِ الْمُرْسَلِينَ ﴿ الْحُوالَ لَهُ مُ آخُوهُمْ لُوْطًا لَا مُحْدًا خُوهُمْ لُوطًا لَا عشل یا لوط کی قوم نے بیغام لانے والوں کو جب کہا اُن کو اُن کے بھائ لوظ نے رِيْ لَكُورُ رَسُولُ آمِينَ ﴿ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَاطِيعُونِ ﴿ میں متھارے لئے پیغام لانے دالا ہوں معتبر سوڈرو الشرسے مَا ٱسْعَلَىٰهُ عَلَيْهِ مِنَ ٱجْرِقِ إِنْ ٱجْرِي الرَّ عَلَىٰ رَبِّ 183131- 151 اور چھوڑتے ہو جو بھالے وا اے دب فلاص كر يحم كو اورميرے كم والوںكوان كاموں ، ويرتے بي بھر ، بحاديا عرام برصا ده کی رہے والوں س سكوادرا سے كھروالوں كوسب كو

ن ﴿ وَ الْمُطْرِينَا عَلَيْهُ وَمُطَوًّا فَسَاءً مُطَوًّا ادر برسایا آن بر ایک برساد وی براد رساد عقاآن درائے بودن کا تَ فِي ذَلِكَ لَانَةً وَمَا كَانَ آكَ تَوْهُمُ مِّهُ مِينِينَ ﴿ وَمَا كَانَ آكَ تُوْهُمُ مِّهُ مِينِينَ ﴿ وَمَا البته اس بات میں نشانی ہے اور ان میں بہت وگ نہیں تھے مانے دالے رَ تَاكَ لَهُو الْعَرْيَزُ الرَّحِنُونَ قوط تُوط مُصر بھی) سِیمبروں کو چھٹلایا جبکہ اُن سے ان کے بھائی لوط (علیالشلام) نے فرمایاکہ کیا (الشرس) در قينبي مو و مين تهاراامانت داريعيبر بون اسوتم الشرسے در وادرميري اطا رو اورمیں تم سے اس پر کوئی صارفہیں جا ہتا ، نس میراصلہ تورت العالمین کے ذمتہ ہے ، کیا تمام کو نیا جہان والوں میں سے تم (یہ حرکت کرتے ہوکہ) مرووں سے بدفعلی کرتے ہوا در تھارے رہے جو تھالے نے بیبال براکی بین ان کونظرا نداز کئے رہتے ہور لینی اور کوی آدمی بھالے سوا برکت نہیں کرتا وربيزين ہے كماس كے بين موتے ميں كوشيھ ہے) بلكر (صل بات بير ہے كم) تم حد (انسانيت) رُّرُجا نے دائے لوگ ہو، وہ لوگ کہنے لگے کہ اے نُوط، اگرتم (جارے کہنے سُننے سے) بازنہیں آؤگے توضرور (بستى سے) تكالديّے جاؤگے، نوط (علايسلام) نے فرماياكہ (ين اس دھى يراية كہنے سے ن ركونكاكيدنكه) مين تمقارك اس كام مستخت نفرت ركفتا مون (توكيناكيسے جيوز دونگا، جب كسى طرح أن توكون في منه مانا ورعداب آنام وامعادم بواتو) توط (عدايدسلام) في دُعاكى كالصيف مجھ کواورمیرے (خاص) متعلقین کوان کے اس کام (کے دیال) سے (جوان پرانیوالاہے) نجات دے، سوچم نے ان کواور اس کے تعلقین کوسب کو نجات دی ہوائے ایک بڑھیا کے (مراداس کردچہ) لوط عليدسلام كى) كه ده (عذاب كاندر) ده جانے دالوں ميں ده كئى، يھر سمنے اورسب كو (جو لوظاوران محابل كے سوائقے بلاك كردياا دريم نے ان پرايك خاص مكا (ميني يتحدول كا)مينه برسایا، سوکیا برامینه تھا جوان لوگوں پرساجن کو (عداب اللی سے) ڈرایا گیا تھا ہے شک اس (داقعہ)میں (بھی)عبرت ہے اور (باوجوداس کے) ان (کفارِمکہ)میں اکثر ہوگ ایمان نہیں لاتے، اور بے شک آپ کا رب بڑی قدرت والا بڑی رحمت والا ہے کرکہ عذاب دے سختا تھا مگرامی تنین دیا)۔

بيل

سُورَة الشعاء ٢٩١: ١٩١ سئار ف القرآن حب معارف ومسائل غيرطرى معل اين بيوى سيجيى وام به اوتكن رون ما حكى تكور ربيكي وين أذواجكون منط مِنْ أَنَّ وَاجِهُمْ مِين حوث مِنْ اصطلاحي الفاظ مين بيانيهي موسكما بيديكا حاصل بير بوكاك بمقارى خوامش نفساني كے لئے جواللہ نے بیومان بیدا فرمائ ہیں تم اُن کو جیور کرایے ہم جنس مردوں کواپنی شہوت نفس كانشان بناتيموجو خباشونفس كى دليل بادريهي وسكتاب كروبيم وتتاسي ورار دیں تو اشارہ اسطوت بو گاکہ تھاری بیبوں کا جو مقام تھارے لئے بنایا گیااور جوام فطری ہے اسکو چھوڑ کو بیویوں سے فلافِ فطرت عل کرتے ہو جو کہ قطعاً حوام ہے۔ غرض اس دوسرے معنے کے لحاظ سے يدسنك مين ابت وكياكدابن زوجه سے خلاب فطرت على حرام ہے، حدیث بین رسول مشرصالالترعالية م اليشيخص يرلعنت فرمائ ب نعوذ بالترمند (كان افي الرويج) الا بجوزاني الغايدين، عجوز مراد حضرت لوط علياسلام ي بيوى ميجوكه توم كوط كس فعل سے راصنی مقی اور کافرہ تھی ۔ توط علیات کام کی سے کافر جوی اگر داقع میں بڑھیا تھی تواسے لئے تفظ عجوزات عال رناظام ري إ وراكر سيم كالطس برهيانه على تواس وعجوز ك نفط س شايداك تعبيركياكياكه بيغيبركى بيوى أمتت كے لئے مال كى جگہ ہوتى ہے جوعورت كشيرالادلاد ہواس كوبڑھياكهد سنا وَ وَمُطَوْدًا عَلَيْهِ مُ مُطَوًا وَ فَسَاءً مَطَمُ الْمُنْنَ لِينَ ، اس آيت عظم الدراء كراني بابندمتهام سے نيمے تھينكنے كى تعزير جائز ہے جيسے حفيد كامسلك كي كيونكہ قوم توطاسى طرح ہلاك كى ئى تى كەن كىستىوں كواويرا تھاڭرا ئىازىين يرىھىنىك دىياكىيا تھا-(شامى كتاب كەن 2) جب كها أن كوشعيب جھٹلایا بن کے رہنے والوں نے پیغام لانے دالوں کو سو دروالشرے اور سیرا کہا ماتو ے اس بر بھے بدلہ میرا بدلہ ہے اس بروددگاد عالم ترازو اور تولو سسيدهي ت يو نقصان د ين داك

لوگوں کو اُن کی چیزین اور مت دورو ملک میں البيتراس بات ميس نشاني ہے بنين مانخ والے اور تیرادب دی ہے أصحابُ لألكه نے (بھی جن كاذكر سورة تجركے اخير ميں گزرجيكا ہے) بينمبروں كو جھٹلايا، جبكه اُن سے عيب (علياتلام) في فرماياكه كياتم الشرس ورينهين بو؟ ين تهادامانتدار پنجبر بول سوتم الترس ڈرواورمیراکہنامانواورمیں تم سے اس رکوئ صلہ نہیں جاہتا ، بس میراصلہ تورب لعالمین کے ذتہ وتم لوگ پودانا پاکرد ادر (صاحب حق کا) نقضان مت کیاکرد اور (اسی طبح تولنے کی چیزوں میں) سیدی ترازد سے تولاکرو (مینی ڈنڈی ندماراکروند باٹوں میں فرق کیا کرو) اور لوگوں کااُن کی چیزوں میں نقصان مست عياكرو اورسرزمين عي فسادمت مياباكرواوراس (خداع قادر) كدوجس في كواور عما كلي مخلوقا و پیدائیا دہ توگ کہنے لگے کہ میں تم پر توکسی نے بڑا بھاری جا دو کر دیا ہے (جس سے عقل مختل ہوگئ ادر نبوّت كا دعوى كركے لگے) اورتم توقیض بھارى طرح ركے) ایك رحمولی) آدمی ہواورہم توتم كو حبور تے لوكوں ميں سے خيال كرتے ہيں، سواكرتم يوں ميں سے ہوتو ہم ير آسمان كاكوئ عكوا كرا دور ماكرہم كومعلوم موجاد ہے کہ دافعی تم بی تھے تھاری کنریہ ہم کویسزا ہوی شعیب (علیاسلام) بولے کہ (یں عذاب كالانے والا يا اسكى كيفيت كى تعيين كرنے والاكون موں) متھارے اعمال كوميرا رب (ى)

المام م المام

معادف القرآن جسلد شم

خوب جانتاہے (اوراس علی کا جومق تضاء ہے کہ کیا عذاب ہوا ورکب ہواس کو بھی دہی جانتاہ کا سکو اضتیار ہے) سووہ توگ (برابر) اُن کو جھٹلا یا کئے بھران کو سائبان کے واقعہ عذاب نے آبکڑا ہیں کہ وہ بڑے بخت دن کا عذاب تھا (اور) اس (واقعہ) میں ربھی) بڑی عبرت ہے اور (با وجوداس کے) ان کر تقارِمکہ) میں اکثر توگ ایمان نہیں لاتے اور بے شک آپ کا رب بڑی قدرت والا بڑی رحمت والا ہے کر کہ عذاب نا ذل کرسکتا ہے سکر مہات دے رکھی ہے)۔

معارف ومسائل

دَیْن نُونا بِالْقِسُطَاسِل لَمُشْتَقِیمُ ، قسطاس کو بعض حضرات نے رومی نفظ قرار دیا جس کے معضاماد وانعما ف کے بیں ، بعض نے عربی نفظ قسط سے ماخو ذقرار دیا ہجرق مطے کے معنے بھی انصاف کے بیں جراد بیج کہ تزاز داوراسی طبح دوسرے نا پسے تو لینے کے دسائل کوستقیم ادرسیدھے طور برِاستعمال کردجس میں کمی کا

حرو المراح من المرح من النباس النبياة هم المدينة المي الولول كا بين جيزون مين مراديه به كه معامده و كرم المجتمعة والنباس النبيات المراح من المرح المرح المرح المرح المرح المرح المرح المرح المرح المردور الرابية مقرره وقت مين جورى المراح وقت المركوى المان مردور الرابية مقرره وقت مين جورى المرتاع وقت المركوى المان المردور الرابية مقراه وقت مين جورى المرتاع المركزة المحتمدة عرفاد وق رصى المدعن المركزة المرح المركزة المردور المركزة المردور المركزة المركزة

ن واس م بادل کے نیج اس میں ایس میں ایک میں ایک کے اسکا دافتہ ہے کہ مقاب یوم انظلہ اجس کا ذکراس خداکا مجرم لینے پاؤں میلکرا آ آ ہے اسکا دافتہ ہے کہ حق تعالی نے اُن کی قوم پر خت گری مسلط فرمائی کہ نہ مکان کے اثر جین آ تا نہ باہر ، پھر اُنکے قریبی حبنگل میں ایک گہرا با دل میجد یا جیکے نیچے منظری ہوائتی اساری قوم گرمی سے پر دیشاں تھی سب دوڑ دوڑ کراس با دل کے نیچے جمع ہوگئے جب ساری قوم بادل کے نیچے جمع ہوگئے جب ساری میں بادل کے نیچے جمع ہوگئے جب ساری میں بادل کے نیچے جمع ہوگئے جب ساری میں بادل کے نیچے آگئی تواس بادل نے ان پر بانی کے بائے آگ برسادی جس سے ہوگئے میں کھنے ۔ دکانا

ردی می این عیاس - دوح)

000 سورة الشعراء ٢٦٤ ٢٢٢ اور یہ قرآن ہے آتا را ہوا 27/17/2010 6 6 200000 210 اور الراتا رتيهم يوكاب اسی طرح گفشا دیا ہم کے اس انکارکو گنبرگاروں بره هر مسناماً تو محى اس بر ليتين نه لاتے وہ نہائیں گے اسکو جب تک نہ دیکھ لیں گے ادل سي ان کو ان براجانك ادر خبر میمی شر باز بحلا ديكوتو اكر فائده بهيجان دين اُن کو ،رسوں میھر پہنچے اُن بر جس چیز کا اُن سے دعدہ تھا ۔ تو کیا کام آئے گا اُن کے مَّا كَا نُوْ الْمُنتَعُونَ فَي وَمَا آهُكَانَ الْمِن قَرْيَةٍ إِلَّاكُمَا جو یکھ فائدہ اٹھاتے رہے اور کوئ بنی ہیں غارت کی ہم فےجن کے اینین تھے ڈرشٹادیےوالے ذِكُرُى ﴿ وَمَا كُنَّا ظُلِمِينَ ﴿ وَمَا تَنَكَّرُكُ مِهِ الشَّيْهِ یاد دلانے کو اور ہمارا کام نہیں طام کرنا اور اس قرآن کو بنیں لے کر اُ ترے شیطان ان سے بن آئے اور نہ وہ کرسکیں اُن کو تو شننے کی جگہ سے دُور کر دیا ہے ت بادانٹر کے ساتھ دوسرامعبود یکھر تو براے عذاب میں ا در ڈرمشنا دے الْ وَرِينَ ﴿ وَاخْفِضَ جَنَا حَكَ لِمَنِ بے قریب کے دشتہ دادوں کو ادرا پنے باندو یہے رکھائن کے داسط جوترے ساتھ ہیں

المنطقة المنطقة

عارث القرآلج محر الرتيري نا فرماني كري توكيد سي داد ادن محاد ي ميں بلاؤں م كو ي بیشک دیری ہے شننے دالا جا شے دالا لا ڈالتے ایس سی ہوی یات شيطان ادرشاعروں کی بات برچلیں و ای جوبے داہ ای تو تے ہیں ہے وربہت ان میں جھوکے اور یہ کہ وہ کہتے ہیں اور یا دکی استرکی بہت اور بدلہ بیا آس وہ وک جویقین لائے اور کام کئے

ادرية قران رب العالمين كا بهيجا بواب اس كوامات دارفر شته كيكراً يا سي تريي قلب يرصاف عربی زبان میں ماکر آی (بھی شجلہ ڈرانے دالوں کے وجاوی ربینی حس طرح اور پینجبروں نے اپنی اُمت كواحكام اللهيد بينجائے آئے بھى يېنجائيں) اوراس (قرآن) كا ذكر بہلى اُستوں كى (آسمانی) تما يونيں (بيى) - درايايسى شان كاينيمبر دوگا درأس برايسا كلام نازل موگا چنانجيتفنسير حقاني كياس مقام محاحواشي مين جيْدبشارين كتب سابقتر تورات وأنبيل كي نقل كي بي- آگے اس مضمون حَلِيَّنا لَفِيُ وْتُولِلْاَدِّلِيْنَ كَى تُوسِّع بِيعِينَ كِيان تُوكُوں كے لئے (اس بِر) يہ بات دليل نہيں ہے كہ اسس (پیشین کوئ) کوعله ربنی اسرائیل جانتے ہیں (چنانجیان میں جو لوگ اسلام لے آئے ہیں وہ توعلی الاعلا اسكااعراف كرتي بي اورجواسلام نبي لائے دہ بھى خاص خاص لوگوں تے سامنے اسكا اقراد كرتے بي عيد ماره اول كرر بع مرآت كناه في نالتاس بالبرى تفسيرس اسكابيان آچكا ہے اور ان

اقرادكرنے دالوں كى تعدا د اوركثرت اس وقت اگر خبر دا حد تك يمي مان ليجافے تاہم قرائن كى وجہ سے معنو تواترها صل تھا ، اور یہ دلیل قائم کرنا اُن پڑھ عزیر ں کے لئے ہے درنہ لکھے پڑھے ہوگ خود ا صل کما ہے د کھھ سے تھے یا دراس سے سے لازم نہیں آتا کہ کتب سابقہ میں تحریف نہیں ہوئ اکیو تکہ با دجود تخریف کے البيے مضامين كا باتى رە جانا درزيا دە حجت ہے اور بيراحتمال كه بيمضامين ہى تحربيف كا نيتجيروں اسلتے غلط ہے کہ اپنے نفصان کے لئے کوئ تخریف نہیں کیا کرتا۔ یہ مضامین تو تخریف کرنے والوں کے لئے نقصان دِه بي جيساكة ظاہرہے۔ يہاں تک تو دعلى دَلِقَهُ دُسَّانِيْكَ كَى دونقلى دليليں بيان فرمائ بي معینی بہلی متا یوں میں ذکرا در بن کسراٹیل کا جانا کہ ان میں ہی نانی اوّل کی دلیل ہے اور آگے انکار کرنے والوں تے عناد کے بیان مضمن میں اسی وعوٰی کی عقلی دلیل کی طرف اشارہ ہے بعینی اعجاز قران مطلب يرب كريد لوك ايس معاندين كر) اكر (بالفرض) يم اس د قران كوكسي في د غيرع في يرنازل كريت يهرده عجى)ان كے سامنے اُس كو بار هريمي ديتا (اسكامنج زه جونا اور زيا ده ظاہر دوتا ہے كيونكر ميں يہ نازل ہوااس کوعربی زبان پر باکل قدرت نه ہوتی ، نیکن) یہ لوگ (بوجہ انتہائی صند کے) تب بھی اس کونہ ما سے راکے حضور کی تستی کے واسطے ان کے ایمان لائے سے ٹاأمیدی ولاتے ہیں تعین) ہمنے آی رح (شدت دا صراد کے ساتھ) اس ایمان نہ لانے کو ان نافر مالؤں کے دِلوں میں ڈال رکھا ہے (بیسنی غرمیں'اوراس پرمُصر بیں اوراس شدت و اصرارکیوجہ سے) بیلوگ اس (قرائ) برایمان نہ لا ویں گے سخت مذاب کو د مرنے کے دقت یا برزخ میں یا آخرت میں) نہ دیکھیں گے جواجانگ ا ما منے آگھڑا ہو گااور ان کو (پہلے سے) خبر بھی نہ ہو گی بھر (اسوقت جان کو بنے گی تو) کہیں گے کا کیا (کسی طور پر) ہم کو (کچھ) مہلت اِل کتی ہے (لیکن وہ وقت نہ مہلت کا ہے۔ نہوں ایمان کا اورو⁹ كفارا ليصمضايين وعيدوعذاب كي تكررا والكارعذاب كانقاضاكيا كرته يقد شلا كهته تق ربّنا عِينَ لَنَا فِظْنَا اور وَلِكَ كَانَ هَٰنَا هُوَالْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَا مُطِرْعَلَيْنَا رَجَارَةً ، لينى لا التر اگریه تیری طرف سے حق ہے تو ہم پر تغیروں کی بارش برسلاور مہلت کو، جو درحقیقت ڈھیل پوعذاب نه واقع ہونے کی دلیل تھیراتے تھے،آگے اسکا جواب ہے کہ) کیا (ہماری وعیدوں کوسنکر) یاوگ ہمارے مذاب کی تعجیل جا ہتے ہیں رجسکا منشاء انکارہے بینی باوجو دقیام دلیل بعینی ایک سچے بزرگ ئی خبر کے پیم بھی انکار کرتے ہیں ؟ رہا مہلت کو بناء انکار قرار دینا سویہ بخت غلطی ہے کیونکہ) اے مخاطب ذرا تبلا و تواکر ہم ان کو (چندسال تک) عیش میں رہنے دیں پھرجس (عذاب) کا اُن سے دعاؤ ہے وہ ان کے سرآبرا ہے توان کادہ میش کس کام آسکتا ہے (مینی بیمیش کی جومہلت دی گئی کس سے انتے مذاب میں کوئی خفت یا کمی نہیں ہو گئی) اور (مہلت دینا حکمت کی وجہ سے چندر وزیک خواه كم يازياده كيدان ي كيساته فاص نهي بلك أنم سابقة كومجي مهلتين ملي بين جناني عبني بستيان

(منحرین کی) ہم نے (عذاہے) غارت کی ہیں سبیل عیت کے داسط ڈرانے والے (بیغیر) آئے رجب نه ما نے تو عذاب نازل ہُوا) اورہم رصورۃ بھی) ظالم نہیں ہیں (مطلب یہ کہ مہلت دینے سے جو مقصود ہے تعنی جبت اور آکرنا اور عذر کوختم کرنا وہ سب کے لئے دیا ، سیمبروں کا آنا مجھانا خود میجی ایک مهلت بي دينا بي كريير بيمي بلاكت كاعداب آكر ربا-ان واقعات سيمهلت دينے كى حكمت يجي عادم بوك اور مهلت دين اور عداب من تضاد منهونا سي تابت بوكياا در صورة اس كي كماكيا كرحقيقة توكسي لت ير صي طلم نه موتا - آكے بيم مقصود اول معني مضمون وَإِنَّ كُنتُ نُونِيلُ كَ كَي طوث رجوع ہے - اور درميان ميں يہ مضاین منکرین کی حالت کے مناسب رو نے کیوجہ سے مذکور ہوئے تھے اور حاصل مضمون آئندہ آیات کا ان شبهات كاد فع كرنا بح جوقران كى حقانيت كصقاق مقيس ايك شبه توقران كا الشركا كلام الدكى طوث سے جیجا ہوا ما نے مراسلے تھا کہ عرب میں پہلے سے کا ہن ہوتے آئے تھے وہ بھی کھے فتلف قسم کے حلے لا و ترته نیود بالتراک کی نسبت بھی معضے گفار یہی کہتے تھے (کہاف الدماعن ابن زید) اور بخاری بیل کید عورت كا قول نقل كيا ہے جس زمانه ميں رسول الشرصلے الشرعكيم يروى نازل مو نے ميں كچھ ديم ہوى توا عورت نے کہاکہ آپ کو آیے شیطان نے حیور دیا ہے کیو مکہ کا ہنوں کو شیطان ہی کی تعلیم وہین سے کھے حال إدارتا تقاء اسكاجواب بكريدرة العالمين كانازل كيا دواب) اوراسوتياطين (جوكامون ماس آما كرتے تھے) كرنہيں آئے (كيونكم اسكے دومانع توى موجود ہيں ايك كى صنت شيطنت جس السبب) ير د قران) ان دى مالت كماناسبى نبيل دكيد كروان سب كاسب بدايت شیطان سب کاسب محرایی ہے نہ ان کوالیے مضامین کی آمد ہو تکتی ہے اور نہ الیے مضامین شاکے کونے سے ان کی غرص تعنی تخلوق کو گراہ کرنا پورا ہوسکتا ہے ایک نانع تو بیہوا) اور (دوسراما نع بیکدوہ) اس م قادر میں بنبیں کیونکہ وہ شیاطین (وی آسمانی) شننے سے روکدیئے گئے ہیں (جنانجہ کا ہنوں اور شسرکوں سے ا بحج جنّات نے اپنی ناکامی کا خود اعترات کیاجس کی اُتھوں نے اُوروں کو بھی خبردی پینا بخیر بخیاری میں اليسة قصة باب اسلام عمرة مين مذكور بين بسين مشيطانون كي تلقين كاسي طرح احتمال نه دلج-ا دراس جواب كا تورا ہونا ادر ایک دوسرے شبر کا جوائے تم شورت کے قریب آ ویکا درمیان میں تنزیل من اللے ہونے ہر بطورتفريع كيايمضمين بيلعينى جب اسكامنزل من الشرجونا ثابت بهيتواس كيعليم واجب العل ہوئی اور خیلہ اس کے اہم امراور عظم توحیدہے) سو (اے پیغیریم اسے وجوب کی ایک خاص طسریق سے تاکید کرتے ہیں کہ ہم آپ کو نخاطب بناکر کہتے ہیں کہ) تم فداکے ساتھ کسی اور معبود کی عبادت مت كرنا تهي تم كور زام و في لك (حالانكه آب من نعوذ بالترنه احتمال شِركا بي مذته زين كاسكر توكول كويه بات جتلانا مقصود ہے کہ جب غیران کی عبادت برآب کے لئے بھی سزا کا حکم ہے تواور بیجارے تو عس شمار میں ہیں؟ شرک سے ان کو کیسے منع نہ کیا جا دے اور شرک کرکے عذا ایسے کیو کر بجیں گے)اور

سورة الشعراء ۲۲: ۲۲۲

سكارت القرآن ج (اسی صمون سے) آپ (سب سے پہلے) اینے نز دیک کے کتنبہ کو ڈرائیے (خیانچہ آپ نے سب کو بیکا رکم جمع كيا اور سرك برعدًا باللي سے درايا جيسا حديثوں ميں ہے) اور دا كے اندار تعنى دعوت بوت كوقبول رنے والے اور زُد کرنے والوں کے ساتھ معاملہ کا طرز بتلاتے ہیں جینی) ان لوگوں کے ساتھ (توشفقانہ) فردتی سے پیش آشے جومسلما نوں میں داخِل ہو کرائے کی داہ پر حلیں (خواہ کننہ کے ہوں یاغیر کننہ کے اوراگریہ توگ (جن کوائپ نے ڈرایا ہے) آپ کاکہنا نہ مائیں (ادر کفر پر اڑے رہیں) تو آپ (صاحت) بديجية كهمين تحقاد سے افعال سے بیزار دوں (ان دو بوں امریعینی اِ خفیضٌ و قُلُ الوُمیں حب فی الشراد ر بغض فی الشرکی پوری تعلیم ہے اور تھجی ان مخالفین کیطرٹ سے ایذا اور نقصان دینے کاخطرہ نہ لائیے) ا در خلائے رضم پر توکل رکھنے جو آپ کوحس دقت کہ آپ (نماز کے لئے) کھڑے ہوتے ہیں ادر (نیز نماز شروع کرنے کے بعد) نمازیوں کے ساتھ آپ کی نشست و برخاست کو دیکھتا ہے (اور نماز کے علاق بھی وہ دیکھتا بھالتا ہے کیو مکر) دہ خوب سننے دالاخوب دیکھنے دالاہے (یس جب اسکو علم کھی مل ہے جیسے برالداور سمیع ، علیماس روال بن اوروه آب یرمهربان می سے جبیبا التحیماس روال اور اس كوسب قدرت ہے جيسا العزيز سے فہوم ہوتا ہے تو ضرور وہ لائتی توكل ہے وہ ال كوشر حقیقی سے بچاد میگاا درجومتوکل کوصرر مہنجتاہے وہ صرف ظاہر کے اعتبارے صنرر ہوتا ہے جس کے نحت میں ہزاروں منافع ہوتے ہیں جن کا تبھی دنیا میں بھی آخرت میں طہور ہوتا ہے آگے کہا نہے کے نبہ کے جواب کا تمتہ ہے کہا ہے بینمبر توگوں سے کہدیجے کہ) کیا میں تم کو بتلا دُن کس پرشیطان اُ ترا منو) ایستخصوں برا تراکرتے ہیں جو (پہلےسے) در وغ گفت ار بڑے بدکر دار ہوں اورجوز اخبا شیاطین مے وقت اُن شیطا اون کیطرف کان لگادیتے ہیں اور (لوگوں سے اُن چیزوں کے بیان کرنے كے وقت) وہ بكثرت جھوٹ بولتے ہيں (چنانچ سفلى عاملوں كواب بھي اسى حالت ميں د كھاجا ماب اور وجراس كى يه بى كرفائده لين والے اور فائده و بينے والے كے درميان مناسبت صرورى ب توشیطان کاشاگر دمجمی وه مو گاجو حجوشا در گنه گار بهوگا، نیز شیطان کبطرف قلب سے متوجر سی مو كد بغير تو خبرے استفاده نہيں ہو تا اور يونكه اكثر بيعلوم شيطاني نا تمام ہوتے ہيں اس ك ان كورنگين و باوقعت كرنے كيلئے كيمه حاشير هي طن و مخين سے چراها ناياتا ہے جوكد كہانت كے لئے عادة منروري بي اوريد سادى باتين بى كريم صلے الشرعكية لم من يونيكاكوى دُور كا بھي احتمال نہيسيں كيونكه آ ہے۔ كاسحت ابونا سب كومعلوم ب- آي كايرميز گارم ونا ادرشياطين ميغض ركھنے والام ونادشمن كو بھي سلم تفاا ورشور ومعروف تفاتو بهركها نت كااحتمال كهان رمل) اور (آكے شبرشاع بيت كا جواہے كه آپ شاء

مجى نبين بين جيب الفاركمية تق بل هوست اعظ يعني ال كمضابين خيالي غيردا تعي بي كومنظوم نهول

مویداحتمال اسلنے غلط ہے کہ)شاعرد ال کی داہ تو بے داہ لوگ جلارتے ہی (مرادراہ سے شرکوئ ہے

یعنی مضامین خیالی شاعراند نشر میں یا نظم میں کہنا ان توگوں کاطریقیہ ہے جومسکاتے تقیق سے دُور ہون آگے اس دعویٰ کی دضاحت ہے کہ) اے نخاطب کیاتم کومعلوم نہیں کہ وہ (شاعر) توگ (خیالی مضامین سے) ہرمیدان میں حیران و کمکریں مارتے تلاش مضامین میں) بھراکرتے ہیں اور (حبضمون بل جاتا ہے توجو تکہ اکثر خلاف واقعہ ہوتا ہے اسلے) ذبان سے وہ باتیں کہتے ہیں جو کرتے نہیں لا خیائی شاعروں کا ایک نمونہ لکھا جاتا ہے ہے

اے دشکم سیماتری دفتار کے قرباں ﴿ تھوکر سے مری لکش کئی بار جلادی ا مے بادِ صباہم تھے کیا یاد کریں گے : اُس گُل کی خبرتو نے کہی تم کو نزلادی 🗅 صبانے اسکے کوجہ سے اُڑاکر ﴿ خداجانے ہماری خاک کیا کی ، وغیرہ وغیرہ ،حتی کہ بھی کفریات بجنے لکتے ہیں۔ حاصل جواب کا یہ ہواکہ مضامین شعریہ کے لئے خیالی اور غیر تحقق ہونالازمی ہے اور مضامین قرائنيجين باب سے بھي تعلق بين سب سے سيخقيقي، غيرخيالي بين اسلتے آپ كوشاع كهنا سوائے جنوبي عرانہ مے اود کیا ہی جتی کہ اکثر چو تک نظم میں ا لیے ہی مضامین ہوا کرتے ہیں اسلے اللہ تعالیٰ نے حضور صلے الترعکیہ کم کونظم پر قدرت بھی نہیں دی اوراوپر جونکہ شعراء کی نرمت ارشاد ہوئی ہے *یں کے عموم میں بظاہر* سب نظم كني والمي أكني أكوان كي مضامين عين عكمت اور تقيق ون اسليم أكران كااستثنار فرطاتي كم) إل مرجولوك (ان شاعروں میں سے) ایمان لائے ادرا چھے اچھے کام کئے (بینی شرع کیولاٹ مذان کا قول ہے نہ نعل ، بینی اُن کے اشعار میں بیرو دہ مضامین بنہیں ہیں) اور اُنھوں نے (اینےاشعاریں) شرت سے الله کا ذکر مجیا (لینی تائید دین اور اشاعت علم میں ان کے اشعار ہیں کہ بیرسب ذکرالشریں داخل ہیں) اور داگرکسی شعرمیں بظاہر کوئ نا مناسمضمون بھی ہے جیسے کسی کی ہجوا در مذمت جونظام اخلاق مسنر کے خلاف ہے قواس کی وجر بھی یہ ہے کہ) اُنھوں نے بعداس سے کدان پرظلم ہو جیکا ہے (اسكا) بدلدليا (ب يعني كف اريافتات نے اول ان كوزباني تكليف بينجائ، مثلاً ان كى بيجوكى يادين کی توہین کی جوا بنی بجوسے بھی طرھر تج تکلیف کا سبب ہے، یاان کے مال کو یا جان کو ضرر بینجا یا العیسی يد توكمت شنی بن كيونكه انتقامي طور بر جوشعر كيے كئے بين أن مين بعض توممباح بين اور بعضے اطاعت وكار توابي اور (بيان مك رسالت كم يقلق شبهات كم جوابات بور ، وي اوركس ميل رسالت دلائل سے نابت ہو پی تھی اب آگے ان لوگوں کی وعید ہے جواس کے باوجود بحر نبوت سے ادر حضور صلے التر عکمیے کم و ایزاء بہنجاتے ہوئے بنی عنقریب ان توکوں کومعادم ہوجاد سے کا جنھوں نے (حقوق الشر، حقوق الرسول ياحقوق العبادمين على كرركها ب كسيى (بُرى اورُصيبت كي) جگرانكو كوظ كر جانا ب (مراداس سيمني ب) -

معادت القرآن جسالد ششم

معارف ومسائل

نَوْلَ بِيرَالتُوْحُ الْاَمِيْنُ ٥ عَلَى قَلْبِكَ يِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِيدِيْنَ ٥ بِلِسَانٍ عَرَبِيِّ عَلَي قراحَة كَفِي أَدُيُرُ الْاَقَادِيْنَ ٥ وَرَاحَة كَفِي أَدُيُرُ الْاَقَادِيْنَ ٥

آیات ندکوره میں بلیسکی عزیق میبین سے معلوم ہوتا ہے کہ قرات دیں ہے جوعربی زبان میں ہو کسی ضمون قرآن کا ترجہ خوا کسی زمان

قرآن أسك الفاظ دمعًا في كي مجوعه كاناً إ

میں ہودہ قرآق نہیں کہلاسے گا، اور اِن کھی گری لا تھی کے الفاظ ہے بظاہرا کے قلاف بیم حلوم ہوناہ کہ معانی قرآق جو کسی دوسری زبان میں ہی ہوں وہ ہی قرآن ہیں، کیونکہ اقدائی ضمیرظاہر بیہ ہے کہ قرآن کی طرف اچ ہو اور ڈیٹر، فربور کی جمعے ہیں کتاب ۔ صفح آبت کے یہ ہوئے کہ قرآن کو ہم سابقہ تحابون ہی ہے اور ڈیٹر، فربور نے کھی کتا ہوں ہی ہی تو اس اینہ تحابون ہی ہی اور بی ظاہر ہے تھی کتا ہیں تو وات انجیل ذبور وغیرہ عربی زبان میں نہیں تقییں تو صرف معانی قرآن کے انہیں فرکھ ہونے کو اس آبت میں کہا گیا ہے کہ قرآن کے تھی کتابوں میں بھی ہے ۔ اور حقیقت جس برجم ہورا آت کی عقیدہ ہے وہ یہ ہے کہ صرف مصنا بین قرآن کو بھی بیض او فات تو سعاً قرآن کہ دیا جاتا ہے کیو کہا اصل مقصود میں تحاب کا اسکے مضابین ہی ہوتے ہیں ۔ کتب اولین میں قرآن کا خرور ہونا بھی اسی حیثیت سے ہے کہ بعض مضابین قرآئے میں بھی خرکور ہیں ، اسکی تا گیر ہوست می دوایا ہے حد ہیں سے بھی ہوتی ہے ۔

معارف القرآن جسكية شم ويا الصفاق ويا المصفوق المارين المارين المارين المريد وكار

برسارے الفاظ قران ہی سے بین گراس عبارت کو کوئ قران نہیں کہرسکتا۔ اسی طیح صرف مٹ انی قران جوسی دوسری زبان میں میان کئے جائیں وہ بھی قران نہیں۔

نمازمیں ترجمہ قران بڑھنا اسی دجہ سے اُمت کا اس پراتفاق ہے کہ نماز میں فرض نا وت کی جگہ باجماع اُمرت ناجا نزہد قران کے الفاظ کا ترجمہ سی زبان فارسی، اُر دو، انگریزی میں پڑھ لینا

يدون اضطرار كے كافی نہيں۔ بعض ائر ہے جواسيں توشع كا قول منفول ہے اُن سے جی اپنے اس قول

مر در ما ماسم مرد الماسم الما

کے لکھا جائے تواسکواس زیان کا قران کہنا جائز نہیں۔جیسے آجکل بہت سے لوگ صرف اُرد د ترجمہ قران کو اُرد دو کا قران اور انگریزی کو انگریزی کا قران کہدیتے ہیں بیر ناجائز اور بے ادبی ہو۔قران کو بغیرمتن عربی کے کسی دوسری زبان میں بنام قران شائع کرنا اور اسکی خرید و فروخت سیناجائز ہو

اس سلمي بوري تفصيل احقرك رسائه في زير الاخوان عن تعيير رسيم الفتان " مين فركور - -

اَفْرَءُ يُتَ اِنْ مَّتَ فَهُمُ مُسِنِيْنَ ،اس آيت ميں اشارہ ہے کہ دُنيا ميں ہی کو عمر درا زملنا بھی الشرتعالی کی بڑی نعمت ہے کئیں جو لوگ اس نعمت کی ناص کری کریں ایمان مذلا بئی اُن کو عمر درا ذکی فا وہ ہلت کچھ کام مذا سے گئے۔ امام زہری ہونے نقل فرمایا ہے کہ حضرت عمرین عبدالعزیزرہ روز شبح کو اپنی داڑھی کچو کر اپنے نفس کو خطاب کر کے ہوآیت پڑھا کرتے تھے اَفْعُ یُتُ اِنْ مَّتَعَفٰہُ مُرالاً ہُو السّحی ان پرگریہ طاری ہو جاتما اور بیرا شعار پڑھتے تھے، تفاد لا یا مخصر سھو و غفلة ، ولیدلا فوج والو کی الله لازم ۔ فلا انت فی الا یقاظ یقظ ان حازم ، ولا انت فی الدقوم ناچ وسالھ ۔ و تسسی الله ماسوف تکوی غبت ، کن لا فی الدّ نیا تعبیش البھا تھر (ترجمہ) اے فریب خوردہ تیراسا دا دن غفلت میں اور رات نین رمیں صوف ہوتی ہے حالا نک ہوت تیرے لئے لا زمی ہے ۔ نہ تو میدا اور کوں میں ہو شیار مہدارہے اور مؤسونے والوں میں اپنی نجات پر مطمئن ہے ۔ تیری کوشش الیے لوگوں میں ہو شیار مہدارہے اور مؤسونے والوں میں سامنے آسگا ، دُنیا میں چویا نے جا لورا لیے ہی کامونین ہی چویا نے جا لورا لیے ہی

جیاکرتے ہیں۔ د گانین ڈعیش نیز تک الاکٹی پائی ،عشیرہ کے مصفے کنبہ اورخاندان اقربین کی تیدہ انہیں سے بھی قریبی رشتہ دار مُراد ہیں۔ یہاں یہ بات غورطلب ہے کہ رسُول الشرصلے الشرعکیہ لم پرتبلیخ رسالت اور انذار بوری اُمت کے لئے فرض ہے اس جگہ خاندان کے توگوں کی تحضیص میں کیا حکمت ہے ؟ غور کیا جائے تو اسمیں تبلیخ و دعوت کے اسکان اور مُوٹر بنا نے کا ایک خاص طرابقہ تبلایا گیا ہے جس کے آثار دُور رس ہیں۔ وہ یہ کہ اپنے کنبہ اور خاندان کے لوگ اپنے سے قریب ہونے کی بنا، پراسکے حقدار ہی ہیں دُور رس ہیں۔ وہ یہ کہ اپنے کنبہ اور خاندان کے لوگ اپنے سے قریب ہونے کی بنا، پراسکے حقدار ہی ہیں

كربرخيرا دراجهكام مين أن كو دوسرون سمقدم كياجات اوربا يمى تعلقات اور ذاتى واقفيت كى بناء یران میں کوئی جھوٹا دعو میار نہیں کھیے سکتا اور جس کی سیجائ اورا خلاقی برتری خاندان کے کو کو ل میں معرو التی یکی دعوت قبول کرلینا انتے لئے آسان بھی ہے۔ اور قریبی دشتہ دارجب سی اچھی تحریک کے حامی بن گئے توان کی اخوت وامداد مجی بخیتہ بنیا دیر قائم ہوتی ہے وہ خاندان حمبعیت کے اعتبار سے جی ایک تائیدوا خوت پر بجور بوتے میں اور جب قریبی رشته داروں، عزیزوں کا ایک طبحول حق دصداقت کی بنیا دوں پرتیار ہوگی تو روزمرہ کی زندگی میں ہرامک کو دین کے احکام برعل کرنے میں بہت مہولت ہوجاتی ہے اور بھر ایک مختصر سی طاقت تیار و کرد وسروں مک دعوت و تبلیغ کے پہنچا نے میں مرد ملتی ہے۔ قران کریم کی ایک دوسری آیت میں ہے قواانفسنگوفافیلیگونالا، مینی این آپ کوا دراین اہل وعیال کوہیم کی آگ سے بیا واس اہل وعیال کے جہنم سے بچانے کی ذمتہ داری خاندان کے ہر ہر فردیر ڈالدی گئی ہے جواصلاح اعمال واخلاق کا آنا اورسيدها راسته بهاورغوركيا جائے توكسى انسان كاخودا عال داخلاقِ صالحه كا يابند بهوناا در كيمراس برق ا ربهناا سوقت تك عادةً عمن نهين بوتا جبتك سكاما حول اسك لئة ساز گارند بين سادت كفرس اكرايك دي نماز ئى پورى يا بندى كرنا چاہے تواس يح نماذى كومجى اپنے حق كى ادائيگى ميں شسكلات حائل ہوگئى آجكل جوح ام چيز د سے بچنا دشوار ہوگیا اس کی وجہ بینہیں کہ فی الواقع اسکا جھوڑنا کوئی ٹرامشکل کام ہے بلکہ بیہ بیہے لہ سارا ماحول ساری برادری جب ایک گناہ میں مبتلا ہے تو اکیلے ایک آدمی کو بچنا د شوار ہر جاتا ہے۔ المخضرت صليالله عليهم برجب بيرآيت نازل دئ توآينة تمام خاندان كے توگوں كوجمح فرماكر بيغياج ق سنايا اسوقت اكرجيد توكون نے قبول حق سے الكاركيا مكر رفتہ رفتہ خاندان كے توكوں ميں اسلام دايمان داخسا ونا شرفع بروكيا اوراً يح جياحضرت تمزه كاسلام لا نيساسلام كوايك برسى قوت حاصل بوكئ -شعر كى تعربيت كالشُّعَرَّاءُ يَشِّيعُهُ مُوالْعًا وَنَ ، اصل تُفت ميں شعر براس كلام كوكها جاتا ہے جس ميں محض خیالی ا درغیر حقیقی مضامین بیان کئے گئے ہوں جس میں کوئ بحر، وزن ، ر د لیٹ ا در قافیہ کچھ مشرط نهبين افريمنطق مين بهي اليسي بي مضامين كوا دلهُ شعربيه اور قضايا شعربيه كهاجا تاسيها صطلاحي شعره غزل مين تعيى جو تكم عموماً خيالات كابهي غلب وتا جداسك اصطلاح متعرار مين كلام موزون مقفى كوشعركية كك يبض مفسرين في آياتِ قران بَلْ هُوَشَاعِرُ شَاعِرُ فَيْنُونَ ، شَاعِرُ تَتَوَيَّى مِن وغيره ميں شعرا صطلاح معنى مين مراد كاركباكه كفار مدخضور صليا لترعكم كووزن دار، قافيه داركلام لانے دالے كيت تقليل بعض في كماكم كفاركا مقصة منها، اسكة كه وه شعر كم طرز وطريق سے واقعت تقي، اور ظاہر سے كه قران اشعار كامجموعه بنهي اسكاقاً لل توايك عجى يهي نهيس بوسكتاجيه جائيكة فصط بليغ عرب ، بلكه كفارآب كوشاع شعر كے صلى معظ بعنی خیالی مضامین كے لحاظ سے كہتے تھے منفصد ان كا دراصل آيكو نعوذ باللہ ا المجصوناكهناتها كيونكه شعر بمبنى كذب جي استعال مؤتاب ا در شاعر كاذب كوكها جانا ہے ماسلے ادار كا ذب کو ا دلهٔ شعربی کہا جاتا ہے خلاصہ بیہ کہ جیسے موزوں اورُقفیٰ کلام کوشعرکہتے ہیں اسی طرح نطنی اور تخنینی کلاًا کو بھی شعرکہتے ہیں جو اہلِ منطق کی اصطلاح ہے ۔

وَالشُّعَرَاءِ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوُنَ ، اس آيت سي شغرك اصطلاحي اورمعروف معني مرادي -لعینی موزوں وقع فی کلام مہنے والے اس کی تائید فتح الباری کی روایت سے ہوتی ہے کہ حبب بدآیت نازل مِوى توحضرت عبدالشّرين دُوّاحة "، حسّان بن ثابتُ اوركعب بن مالكُ جوشعرارصحابه بي مشهود بي ُوقے موئ سركار دوعالم كى فعدمت مين حاصر جوئ اورعرض كيايا رسول الشرخدائ ذوالجلال في يرآيت نا ذل فرمائ سے اور ہم تھی شعر کہتے ہیں ، حضور علیالسلام نے فرمایاکہ آیت کے آخری حصر کوٹرھو مقصد يه تقاكم بمنهار سا الشعار بيوده اورغلط مقصد كم لئة نهين موت اسليم اس استثنار مين داخل م وجوا خرائيت مين مركور م اسليخ مفتري زبلياكا بترائ آيت بي مشركين شعرار مراد بين كيونكمراه لوك سرکش شیطان اور نا فرمان جنّ ان ہی کے اشعار کی اتباع کرتے تھے اور روایت کرتے تھے کیا نیخ ابکار مشربعیتِ اسلام میں مشعرو شاعری کا درجہ | آیاتِ مذکورہ کےشرفع سے شعر د شاعری کی سخت مذمت اور اسكاعندان مبغوض بهونا معادم بوتا بي كرافرسورت بين جواستنار مذكور بهاس سيتابت بواكه شعر مطلقاً برا نہیں بلک جب جس شعریں فدانقالی کا فرمانی بااللہ کے ذکر سے روکتا یا جھوٹ ناحق کسی انسان کی ندتمت اور توہین ہویا تحش کلام اور نواحش کے لئے تحرک ہووہ ندموم وسحروہ ہے۔ اورجواشعاران معاصى اور مكروبات سے ياك موں ان كوالله تعالى نے إلاّ الَّذِينَ الْمُنْوَا وَعَلِكُوا الطليختِ الآية كے ذربعير تنافي فرما ديا ہے! دربعض اشعار تو حكيمانه مضامين اور دعظ ونصيحت ير متمل ہونے کی وجہ سے طاعت و ثقاب میں واخل ہیں جبیا کہ عضرت ابی بن کعب کی روایت ہے که باق من الشعر حکمته العین معین مشعر حکمت دو تین (رواه ایجاری) حافظ این تجرنے فرمایا که حکمت مراد سجى مات بي جوحق كے مطابق و- ابن بطال نے فرمايا جس شعر ميں خداتعا لے كى وحدانيت ، اسکاذکر، اسلام سے الفت کا بران مودہ شعرم غومے محدد ہے اور صدیث ندکور میں ایساہی شعب مراد باوتس شعرمیں جھوٹ اور حش بیان ہو وہ مذموم ہے! س کی مزید تا ئیدمندرجہ ذیل دوایات سے ہوتی ہے دا عمر بن الشريدائي باب سے دوايت كرتے ہي كرحضور عليالسلام نے مجھ سے أسيد بن ابی الصّلت کے سوقافیہ تک اشعار منے د۲) مطوث فواتے ہیں کرمیں نے کوفہ سے بھو تک حضرت عمران بن صيرين كے ساتھ سفركيا اور ہرمنز ل پروہ شعر ساتھ عند س) طبرى نے كيار صحاباً وركبار نابعين مح متعلق كهاكه وه شعر كبيت تق سنت تق اورسنات مقد دس امام بخاري فرمات بي كرحضرت عاكشة شعر کہا کرتی تھیں۔ (۵) ابولعلی نے ابن عمر سے مرفوعاً روایت کیا ہے کہ شعرا کی کلام ہے اگر اسکا ضمو ا چھااورمفیدہے توشعراحیاہے اورمضمون ٹرایاکناه کا ہے توشعر ٹراہے (فتہ الملای)

حارت القرآن جسله سورة الشعرار ۲۲۷:۲۲ تفسيرقرطبي ميں ہے كە مدىينە سنورە كے فقتها رعشرہ جو اپنے علم و فضل ميں معرد وت ہيں اُن ہيں سے عبيدالشربن عتبيهن متعود دمغ ميشهور قادركلام شاعرته اور قاضى زبيربن بكارك اشعار ايك ستقل تخاصين جمع عقے۔ پھر قرطبی نے لکھا کہ ابوعمرو نے فرمایا ہے کہ اچھے مضامین پرشتمل اشعار کو اہل علم اور ا ہل عقل میں سے کوئی بڑا نہیں کہر تھا ، کیو تکہ اکا برصحابہ جو دین کے مقتدا ہیں ان میں کوئی تھی ایسا نہیں سے خود شعر نہ کہے ہوں یا دوسروں کے اشعار نہ بڑھے یا شنے ہوں اور است کیا ہو۔ جن روایات پی شعرشاعری کی مرمت زکورے ان سے قصود یہ ہے کہ شعریس آنا مصرف وارہیک موجائے کہ ذکرانشرعبا دت اور قران سے غافل موجائے ۔ امام بخاری نے اسکوایک تقل باب سی بان فرمایا ہے اور اس باب میں حضرت ابو ہرریم کی یہ روایت نقل کی ہے ۔ لان مُنتی بِجُوْثُ رَجُل فِیمُ يَرِيْرِ خَلِيْقِ نَ اَنْ بَيْرِ لَيْ مِنْ عَرًا، مِعِنى كوى آدى بيب سے اپنا بيط بھرے يہ اس سے بہتر ہے كواشعا سے پیٹ بھرے۔ امام بخاری فرماتے ہیں کہ میرے نزدیک اسے معنی یہ ہیں کہ شعرجب ذکرانشراورت آن اورعلم محاشتغال يرغالب أتجائه وراكر شعرمغلوب توجير فرانهي ب اسى طرح وه اشعارجو فحش مضامین یا توگوں پرطعن وتشینع یا دوسرے خلات مشرع مضامین پرشتل ہوں وہ باجماع آمّت حسرام و ناجائر ہیں اور یہ کھے شعر کیساتھ مخصوص نہیں جو نشر کلام ایسا ہواسکا بھی ہے کم ہے دقطبی) حضرت عمرت خطاب نے این گور زمدی بن نسار کو اُن کے عہدہ سے اسلے برخاست کر دیا کہ وہ مش الشعار كہتے تھے ۔حضرت عمر بن عبدالعزيز شنے عمرو بن رہيد اور ابوالا حوص كو اسى جرم ميں جلاوطن كرنے كاحكم ديا - عرو بن رسبير نے توبرلی وہ قبول کی گئی۔ (قطبی) فدا وآخرت سے غافل کردینے والا ہر الم اور فن ندوم ہے ابن ابی جمرہ نے فرمایا کہ بہت قافیہ بازی اور ہی ايساعلم وفن جودلول كوسخت كردما ورخدا تعالى ك ذكر سے انخرات واعراض كاسبب بيناوراعتقادا میں سے کوک وشبہات الروحانی بیماریاں بیراکرے اسکا بھی دہی تھے ہے جو ہذموم اشعار کا حکم ہے۔ اكثراتباع كرف والول كي كمراي اكتشعكا عربيت في ألفاؤن ، اس آيت بي شعرا رير يعيب لكا ما متبوع کی ترای کی علامت بوتی ہے گیا ہے کہ آنے متبعین گراہ ایں - یہاں سوال یہ بیدا ہوتا کو کہراہ تو ہوئے متبعین اُن کے فعل کا الزام متبوعین بینی شعرار پر کیسے عائد ہوا ؟ وجہ یہ. ہے کہ عموماً اتباع كرفے والوں كى كمرائى علامت إورنشانى موتى ب متبوع كى كمرائى كى سكن سيدى حضرت يحيم الامت تفانوى دجمة الشرعليه ني فرماياكه يحكم اسوقت ب جب تابع كى گراى ميں اس متبوع كے اتباع كادخل بومثلاً متبوع كوحبوط اورغيب سي بحيف بجانے كا المتمام نہيں ہے اس كى مجلس مين كس ا طرح كى باتين بوتى بين ده روك توك بنين كرناس سايان كويمي جعوط اورغيب كى عادت يركني ل تویه تا بع کاکن ه خود متبوع کے گناه کی علامت قرار دیا جا ئیگا لیکن اگر گمراہی متبوع کی ایک وجہ التعار٢٤:٢٢

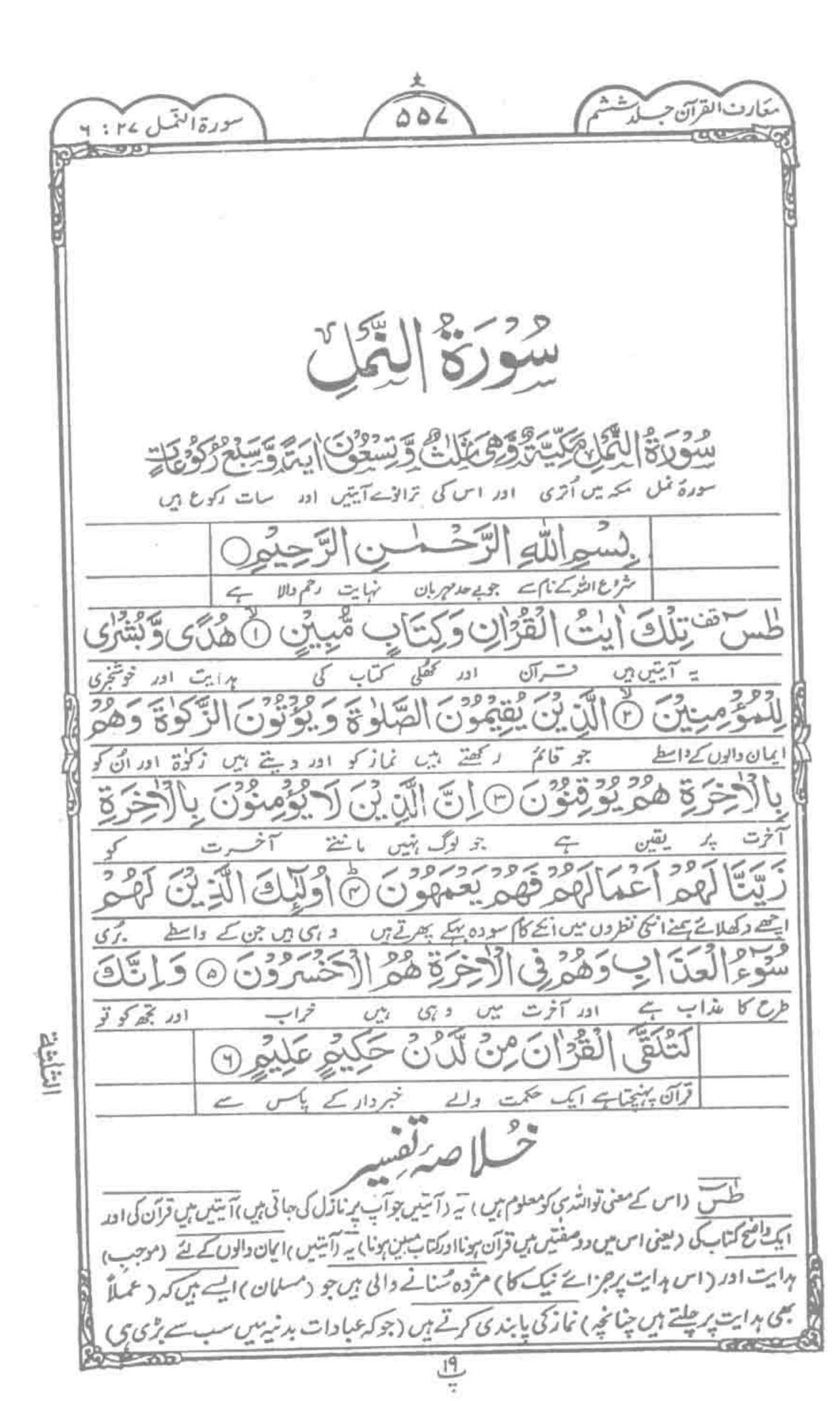
POO

معادف القرآن جر لذشم والمصف

سے اور ا تباع کسی دوسری دجہ سے ہوتو یہ تا بع کی گرا ہی متبوع کی گرا ہی کی علامت نہیں ہوگی۔ مثلاً ایک شخص عقائد ومسائل میں کسی عالم کا اتباع کرتا ہے اور اُن میں کوئ گرا ہی نہیں ، اعمال ا اخلاق میں اس عالم کا اتباع نہیں کرتا اُنجعیں میں یہ گراہ ہے تو اس کی علی اور اخلاتی گرا ہی اس عالم کی گراہی پر دلیل نہیں ہوگی۔ والٹر ہجانہ و تعالی الم

> تمتت سوراة الشعرًاء بعون الله وفضله لنصف الرّبيح الثاني ١٣٩١ه يوم الخديس وبتاوها الشاء الله تعالى سورة المتمل





السُّورُة البِّلَ ٢٤ ٢

معارف القرآن جس كذشم

اور دکوۃ دیے ہیں (جو کہ عبادات مالیہ میں سب سے بڑی ہے) اور (عفیدہ کے لحاظ سے بھی ہدایت یافتہ ہیں چنانچہ) وہ آخرت پر بُورایفین رکھتے ہیں (یہ توایمان والوں کی صفت ہے اور) جو لوگ آخرت پر ایمان ہیں دکھتے ہیں ہم نے اُن کے اعمال (بر) آئی نظر میں مرغوب کر کھے ہیں سو وہ (ایسے جہل مرکب ہیں حق سے دُور) بھٹلتے پھرتے ہیں (چنانچہ نہ اُنکے عقائد درست ہیں نہ اعمال ایسلئے وہ قرآن کو بھی نہیں مانتے توجیعے قرآن اہل ایمان کو بیشارت سُنا تا تھا مسکروں کو وعید ہی سُنا تا ہے کہ) یہ وہ لوگ ہیں جو کہ کے میں مرفے کے وقت بھی سخت عنداب (ہو نیوالا) ہے اور وہ لوگ آخرت میں (بھی سخت خسارہ میں ہی کے دوقت بھی اور گوید منظ بر اور نیوالا) ہے اور وہ لوگ آخرت میں (بھی سخت خسارہ میں ہی کے دوقت بھی اور گوید منظ بر اور نیوالا) ہے اور وہ لوگ آخرت میں (بھی سخت خسارہ میں ہی کے دوقت بھی ناور گوید منظ بر اس فعمت کے مرور میں ان کے اذکار سنے ملکین نہ ہوجے گا۔

معارف ومسائل

وَيَنَا لَهُمُ اَعُمَالَهُ عُوالَهُ وَ الْمِيْ وَلِكَ آخِتْ إِيانَ نَهِي لِلّهَ مِ فَ انْكَاعُولُ بِالْهِ الْمَعْلَمُ وَالْمَى مِن اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللهُ الل

موسی ده میں الشر موں زیردست حکمتوں والا

ادر ڈال دے لاعقی این

اور ڈالرے ہاتھ ایٹا ایے کریان میں 一つと (اسوقت كاقصر ذكر كيجية) جبكه (مدين سے آتے بدیے كوم طور كے قرب رات كوسسردى ے دقت پہنچے ا درمصر کی راہ بھی بھول گئے تھے تو) موٹی (علیاستلام) نے اپنے گھروالوں سے کہا کہ میں (طور کی طوت) آگ دیکھی ہے میں ایمی (جاکر) دہاں سے (یا توراستہ کی) کوئ خبر لاتا ہوں یا تصالیے یاس (وہاں سے) آگ کا شعلہ سی لکڑی وغیرہ میں لگا ہوالا تا ہوں تاکہ تم سینک لوسوجب اس (آگ) کے پاس پہنچے توان کو (منجانب اللہ) آداز دی گئی کہجواس آگ کے اندر ہیں (لیسنی فرشتے) آن ریمی برکت بواورجواس (آگ) کے پاس ہے (بیٹی موسی) اس پر مینی (رکت ہور پڑ عابطور تحية دسلام كے ہے جيسے ملاقاتی ايس ميں سلام كرتے ہيں ۔ چونكه مؤلى عليالسلام جانتے نہ تھے كدبير

19

تؤر انؤارالليه سے اسلے خودملام منہيں كريجے تومنجانب الشران كے أنس كے لئے سلام ارتشاد ہوا

اور فرشتوں كوملالينا شايداس لئے بوكر جس طرح فرشتوں كوسلام حق تعالىٰ كے قرب خاص كى علامت

ہوتی ہے بیسلام میں موئی علیا مسلام کو قرب خاص کی بشارت ہوگیا) اور (اس امر کے بتلا نے کے

لے کہ بیر بوز جو مشکل نار ہے خود حق تعالیٰ کی ذات نہیں ارشاد فرما دیاکہ) الترر العالمین (ربک)

صُورَة النَّمُ لَ ٢٤ : ١٦ جهات، مقدار اور حدبندی وغیره سے) پاک ہے (اوراس اورس سے چیزیں یائی جاتی ہیں، لیس سے اور وات خداد ندی نہیں اور مولی علیا اسلام آگراس سئلہ سے خالی الذین ہوں تواسی تعلیم ہے اور آگر دلائل عقليداد وفطرت عيحدى بنا پران كو بهلے سے علوم و تو زيادہ تجھانا ہے اسكے بعدادشا د مواكد اے موكى بات يه م كدين (جوكه بيكيف كلام كرد ما جون) الشرجون زيردست محكت والااور (الصحوى) تم اين عصا (زمین بر) ڈالدو (جنانجیرانهوں نے ڈالدیا تووہ اڑدہا بن کرلمرانے رکا) سوجب اُنھوں نے اس کواس طبح حرکت کرتے دیکھا جیسے سانب ہوتو دہ بیٹھے پھیرکر بھا گے اور چھیے مرکز بھی تو نہ دیکھا (ارشاد ہواکہ) اےموسی ڈرونہیں رکیونکہ ہم نے تم کو بینمبری دی ہے) اور ہمارے مضورمیں (مینی سِنمبری کا عز ازعطا ہونے کے وقت) سِنمبر (ایسی چیزوں سے جوکہ خود اسکی سِنمبری کی دلیل میسنی معجزات موں) نہیں ڈراکرتے (بینی تم کو بھی ڈرنا نہ جا ہیے) ہاں گر جس سے کوئ قصور (نغز مشر سرزد) موجادے (اور وہ اس نفزش کو بادکرے اور سے تومضاً کقر منہیں تیکن اس کی نسبت میں بناعدہ كراكرقصور موجاد ماور) بهم يرائ (موجانے) كے بيد بُرائ كى جگہ نيك كام كرے (توبركرے) توب (اسكومجى معاف كرديبا مول كيوكمين) مغفرت والارحمت والامون (يداسليخ فرمادياكه عصام معجزه منظمتن موجا نے کے بعد مجی ایٹا قصة قبطی کوقتل کرنے کا یاد کرکے پریشان موں اس لیٹاس سے می طنن فرمادیا تاکدوحشت جاتی رہے) اور (اے مؤی اس مجزہ عصا کے سوالیک مجزہ اور مجى عطا موتا ہے وہ يمكر) تم اينا ہا تھ كريان كے اندر لےجا وُ (ادر پھر پركالوتو) دہ بلاكسى عبب ليدني

سے بعی طاہ و اس کے دور سے باتی رہے) اور (اے موسی اس بحرہ و عصا کے سواایک بجرہ اور ایک علی علی ہوتا ہے وہ بیدکہ ہم اپنا ہا تھ کر بیان کے اندر لے جا دُر (اور پھر زکالوتو) دہ بلاکسی عبب لیدی بینی عطاہ و ناہے وہ بیدکہ ہم اپنا ہا تھ کر بیان کے اندر لے جا دُر (اور بید دونوں مجرئے اُن) نومجروں بینی مرض برص دغیرہ) کے (نہایت) دوشن ہو کر زبکے گا (اور بید دونوں مجرئے اُن) نومجروں بین بین رہے جا جا ہے بین جن کے ساتھ تم کو) فرعون اور اسی قوم کی طوف (بھیجا جا تاہے کیونکہ) دہ بڑے حدسے میں رہے جن کے ساتھ تم کو) فرعون اور اسی قوم کی طوف (بھیجا جا تاہے کیونکہ) مجرئے بہنچے (جو) مجرئے بہنچے (جو) مہایت واقع سے ایس جا تے ہو گئے بھروفت آ فوقت آ باقی دکھلائے ہات وہ ہوگی ابتدا کے دعوت بین در مجرئے جا دوہے اور (غضب تربہ تھا کہ طلامے کے اور موسی آورہ ہوگی (ان سب کو دیکھ کربھی) ہولے بھر کے جا دوہے اور (غضب تربہ تھا کہ طلامے کا دیکھر کے جا دوہے اور (غضب تربہ تھا کہ طلامے کا دیکھر کے جا دوہے اور (غضب تربہ تھا کہ طلامے کا دیکھر کے جا دوہے اور (غضب تربہ تھا کہ طلامے کے دیکھر کے جا دوہے اور خضب تربہ تھا کہ طلامے کا دیکھر کے جا دوہے اور خضب تربہ تھا کہ طلامے کا دیکھر کے جا دوہے اور خضب تربہ تھا کہ طلامے کیا کہ دیکھر کے جا دوہے اور خضب تربہ تھا کہ طلامے کا دوہ کا دیکھر کے جا دوہے اور خصب تربہ تھا کہ طلامے کے دیکھر کے جا دوہے اور خصب تربہ تھا کہ طلامے کے دیکھر کے جا دوہے اور خصب تربہ تھا کہ طلامے کے دیکھر کے دیکھر کے دیکھر کے دوہ کو دیکھر کے دیکھر کے

كى داەسےان (معجزات) كے (باكل) منكر موكنے صالانكه (اندرسے) أيح داوں فيان كايقين كرليا تفا

الْهُ قَالَ مُوسَى لِاتَعَلَمْ الْمِنَا أَنْسُنُ نَازًا السَّلِيَّةِ مُؤْمِّهُمَا بِحَبَيْدِ اَوْلَتِ بَكُوْ بِشِهَا بِقَبَسِ اَلْكُونَ الْمُعَلَّوْنَ اللهِ اللهُ اللهِ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ اللهُ اللهِ اللهُ اللهِ اللهُ الله

معارف القرآن جسكتشم

حاصل کرناکہ سردی کی دات تھی اس کے گئے آپ نے کو و طور کی طرف جانے کی سنی دکوشش کی لیکن سکے
ساتھ ہی اس مقصد سیں کا میا بی پر بھین اور دعوی کرنے کے بجائے ایسے الفاظ اختیار فرائے جس میں اپنی
بندگی اور حق تعالے سے اُمید ظاہر ہو تی ہے معلوم ہوا کہ ضروریات کے حصول کے لئے جد وجہد تو گل کے
منافی نہیں ۔ لیکن مجھ وسہ اپنی کو سشش کے بجائے الشر پر ہونا چاہئے اور آگ آپ کو دکھلائے جانے
میں بھی شاید یہی حکمت ہوکہ اس سے آپ کے دونوں مقصود بورے ہوسکتے تھے، راستہ کا بل جانا اور
آگ سے گری حاصل کرنا ۔ (کہنا فی المضع)

اس جگہ حضرت موسی علیہ ستالام نے اُفکنٹو اور نَصُطَلُونَ بَع کے صیفے بولے حالانکہ آپکے ساتھ صرف آپ کی بیوی بعینی حصرت شعیب علیہ استلام کی مبٹی تھیں انسکے لئے کفظ جمع استعمال فرمانا بطور اکرام کے ہوا جیسے معزز کوگوں میں کسی ایک فرد سے بھی خطاب ہو تا ہے توصیعہ جمع کا استعمال کیا جاتا ہج آنحصرت صلے استرعکتی کم سے بھی اپنی از داج مطہرات کے لئے صیفہ جمع استعمال فرمانا ددایا ہے۔ صربیث

تخفیص کیساتھ بیوی کا ذکر عام مجانس میں آیتِ مذکورہ میں فکال مختی الاہ تھی۔ فریایا گیا ہے نفظ اہل انکونی ایس کی کا درسرے اسرا دھی اور گھرکے دوسرے اسرا دھی اشامل ہوتے ہیں۔ اس مقام میں اگر جبہ حضرت موٹی علیہ نسلام کے ساتھ تنہا اہلیہ محرّمہ ہی تھیں ، کوی دوسرانہ تھا گر تعبیر میں یہ عام نفظ استعمال کرنے سے اسطوت اشارہ پایا گیا کہ مجانس میں اگر کوی شخص ابنی بیوی کا ذکر کرے تو عام نفظوں سے کرنا بہتر ہے جیسے ہمانے عرف میں کہا جاتا ہی میرک کھر والوں نے یہ کہا ہے۔

غَلَقَاجَاءَهَا نُوْدِى آنَ بُوْرِ لَا مَنْ فِي النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَاهُ وَسُبَحِٰى اللَّهِ رَبِّ الْعُلَمِينَ يَعْمُو شَى إِنَّهُ النَّا اللَّهُ الْعَرِيْزُ الْعَرِيمُ وَ النَّالِ اللَّهُ الْعَرِيزُ الْعَرِيمُ وَ النَّا

حضرت مولى طلياسلام كاك وكيفيف اور الراق كريم بي حضرت مولى علياسلام كايه واقد بهبت سى الك كاندرس ايك نداشف كى تحقيق - اسورتون بي مختلف عنوانات كي سائقه آيا ہے سورته نمل مذكوره آيات ميں اس سلسلے كے دوج في غورطلب بي - اوّل (بُوْدِلا مُن فِى التّادِ) دوسرا (إنّهُ أَنَا اللّهُ الْعَذِيْرُ الْحَيْدُ مُن فِى التّادِ) دوسرا (إنّهُ أَنَا اللّهُ الْعَذِيْرُ الْحَيْدُ مُن فِى التّادِ) دوسرا (إنّهُ أَنَا اللهُ الْعَذِيْرُ الْحَيْدُ مُن فِى التّادِ) دوسرا (إنّهُ أَنَا اللهُ اللهُ الْعَذِيْرُ الْحَيْدُ مُن فِى التّامُ اللهُ وَدُوى يَسْمُ اللّهُ اللّهُ اللهُ ا

معارف القرآن جسيششم

إِنِّي أَنَا اللّٰهُ زَبُّ الْعٰكِمِينَ) ان مينول مواقع مين عنوان تعبير الرحيختات سيم ترمضمون تقريباً ايك بي ده يه كرحضرت موسى علياستلام كواس رات بين كنى وجرسة كك كى ضرورت تقى حق تعالى في انكوكوه طاك ك أيك ورخت يراً ك وكعلائ - أس آك يا ورخت سيراً والشي كني إليّ أَنَا رَبُّكَ ، إِنَّ اَنَا اللهُ الْعَيْدِ الْحَكِيْمُ، إِنَّانُ أَنَا اللهُ لَا إِلهَ إِلَّا آلاً أَنَّ اللهُ وَإِنَّ أَنَّا اللهُ وَبَّ الْعَلَمُينَ ، يه وَمَكَّمَا مِهِ يُدار بار بار مدى بولى يولى ايك نفظ سيميى دوسر الفظ سے -اور آفاز سُنے كى جوكيفيت تفسير بجر عيط ميں الوحيال نے ادر دوج المعان مين آلوى نے نقل كى ہے دہ يہ ہے كہ يه آواز اس طرح شنى كهر جانے يحسان آدېي تقى حس كى كوئى جېت متعين نہيں ہو كتى تقى - اورشننا بھى ايك عجيب انداز سے ہواكہ صرف كان نہیں ملکہ ہاتھ یاؤں دغیرہ تمام اعضائے بدن اسکوس اسے تضیوایا بجرہ کی حیثیت رکھتی ہے۔ بيرايك فيسي آواز متى جوبلاكيف وبلاسمت من جاري تتى نيكن مبدا اسكاده آگ يا درخت تفاجس سے آگ کی شکل اُن کو دکھائی گئی۔ ایسے ہی مواقع عام طور پر لوگوں کے لئے مغالطے اور بت برتی کاسب بنجاتين اسلظ برعنوان مين ضمون توحيد كيطوث بدايت اورتنبيرسا تقسا تفك كنى ب زير بجث آيت میں نفظ مشجعان الله اسى تبنيه كے لئے بڑھا ياكيا ۔ سورة الله ميں لَا إله الله الله اورسورة قصص مي أنا اللَّامُ لِسُّا الْخَلَمِيْنَ اسْمُضْمُون كَيْ تَاكِيدَ كَ لِنْ لِاياكِيا ہے۔ استفصيل كا حاصل يہ ہے كہ بيراً ك كَيْسكل مضرت موسلی علیات الام کواسلنے دکھلائ گئی تھی کہ وہ اسوقت آگ اور روشنی کے حاجمند تھے درنہ اس كلام ربّا في اور ذاتِ ربّا في كا آك سياشجرهُ طور سيكوئ تعلق نرتها -آك الشرتعالي كي عسام مخلوقات كى طرح ايك مخلوق تقى اسى كئے ذير بحث آيات ميں جو سارشاد ہے آئ بُوْدِ لاَ مَنْ رِف التَّالِدُوَّمَنْ حَوْلَهَا، بينى مبارك ہے وہ جوآگ كے اندرہے اور وہ جواسے آس ياس ہے۔ استخ تفسيرس ائمة تفسير كيختلف اقوال بين بح تفصيل تفسير وح المعاني ميں ہے۔ ايک قول حضرت ابن عبا مجامد، عكرمه سينقول ميكرمتن في النّار سيمراد حضرت موسى على السلام بول كيو مكراً ك كوئ حقيقي الك تو تفي نهي جس بقعدمبا دكه بي حضرت موسى علي السلام بيني كئة تقد ده دُورس بورا أكم معلوم موتا تقال السلة موسى عليد المام اس آك ك اندر موئ اور من حولها سيمراد فرفت بي جواس ياس وبان موجود عقد اور معض مصارت نے استے برعكس بدفر ما ياكه مَن في النّادِس فرشت اور مَنْ حَوْلَهَا سے حضرت موئی علیا اسلام مرادیں تفسیر بیان القران کے خلاصہ تفسیر مذکور میں اسی کو اختیار کیا كيا ہے-آبات مذكورہ كا مجع مفہوم سجھنے كے لئے اتنابى كافى ہے-حصرت ابن عباس اورس بصرى بهال ابن جريره ابن ابي حاتم اولا بن مردديد وغيره فيحضرت ابن عباء كى ايك روايت اوراس كي تقيق حضرت حسن بصرى ورسعيد بن جُبئير من سے مَنْ فِي التَّالِي تف میں بیر روایت بھی نقل کی ہے کہ مَنْ فِی النّارِسے خود ذات حق سُبحانۂ و تعالی مراد ہے۔ یہ توظا ہر بحرکم

آگ ایک مخلوق ہے اورکسی مخلوق میں خالق کا حلول نہیں ہوسکتا۔ اس کئے اس روایت کا پیمغہوم تو ہو بنين سختاكه ذات حق سبحانه وتعالى في آگ سے اندرحلول فر ما يا تھا جيساكه بہت سے بُت پرست مشركين بتوں کے وجودیں ذات مق محصول کے قائل ہیں اور یہ توحید کے قطعاً خلاف ہے بلکم مراد ظہورہ جىساآئيندى جى چىزكود كىھاجا با ہے دہ آئينديں حلول كئے ہوئے نہيں ہوتى اس سے الگ ا درخارج ہوتی ہے۔ اور بیریسی ظاہرہے کہ میزطہور میں کو بحلی تھی کہاجاتا ہے خود ذات حق سبحانہ و تعالی کی تحیلی نهيئ في ورنه اكر ذات حق تعالى كامشابده موى عليالسلام في كرليا بوتا توبعدين التحاس سوال كي كوى وجرنهين دينى زبت أرني أنظر إليك (يين الصير الإورد كار مجصابي ذات باك دكهاكس و کیھے کوں) اور اسکے جواب میں عق تعالیٰ کی طون سے آئ ڈاکٹ کا ارشاد بھی بھے کوئی معنے نہ رکھتا ۔ کس معصادم بواكة حضرت ابن عباس كاس قول مين حق تعالى جلّ اللهود مرادير يعنى تحلّى جواّ كى صور يں ہوئي يس طرح حلول نہيں تھا اسى طرح تحلّى ذات بھى نہيں تقى بلكرنى تُوكِفِ الآية سے يہ نما بت وناكِ كه استام دنیایی تحلی ذاتی كاكوئ شخص مشاهده نهیں كرسكتا- بھراس ظهور د تحلی كاكیامفهوم بوگااسكا جواب بدب كربيتي مثالي تقى جوحضرات صوفيه كرام مير معردت ہے اس كى حقيقت كالمجھٹا توانسا مے لیے شکل ہے۔ بقدر حزورت تقریب الی الفہم کے لئے احقر نے اپنی کتیاب احکام القرآن زبان عربی سورة قصص میں اسمی مجھ تفصیل ملھی ہے اہل الم سین دیجھے ہیں عوام کی ضرورت کی چنر نہیں۔ الدَّمَنْ ظَلَمَ ثُمَّرِ بَكُ لَ حُسْنًا ابَعْلَ سُوَّةٍ فَإِنِّ غَفُوْدٌ وَحِيمُ اس سيها آيت میں موٹی علیات الم مے مجرق عصا کا ذکرہے بس یہ بھی ندکورہے کہ عصا جب سانب بن کیا توہوی خود می أس سے دُر كر بھاكنے لگے۔ آگے ہی مولی علیار سلام سے در سے معجزہ پر بیضاء كابيان ہے درمیان میں اس استفار کا ذکر کس کھے کیا گیا اور بیراستفاء منقطع ہے یا متصل اسمیں حضرا مفسر مے اقوال مختلف ہیں مجن حضرات نے استثناء کو منقطع قرار دیا ہے تو مضمون آیت کا بیہ و گاکہ پہلی آتيت ميں انبيا عليم انسلام يرخون نه ہؤتيكا ذكر تقابسبيل مذكرہ أن يوگوں كا بھي ذكركر دياجن پر خوت طاری دِناچا سے بعین دہ توگ جن سے کوئ خطا سرز د ہوئ پھر تو بہ کرکے نیکے علی ختیار کر لئے اليسة حضرات كى اكرجيد الشرتعالي خطامعات كرفيت بين مكرمعانى كے بعد بھي گناه كے بعض أثار باقي سن كااختمال بحاس سے يرحضرات بميشه خاكف رہتے ہيں ۔ اور اس استثناء كومتصل قرار دي توميخ آيت كے يہ جو تكے كم النتر كے رسول اور انہيں كرتے بجروائ كے جن سے كوئ خطا يبني كناه صغيره مرزد جوكيا جو بهرأس سے بی توبر کرلی ہو، تواس تو بہ سے بیرصغیرہ گناہ معات ہوجاتا ہے اور صبح تربیر ہے کہ انسیار عليهم السلام سيجولفزشين موى بي ده درحقيقت كناه بى ند تنفي نه صغيره ندكبيره ، البيته صورت كناه كى تقى اور درحقيقت ده اجتها دى خطائي ئى بىء اس منهون بين اشاره اس طوت يا يا كياكه حضرت دسي

سورة النمل ١٩:٢٤ GHP سے جوایک لغرش قبلی کے قتل کی ہوگئی وہ آگر جیہ اللہ تعالی نے معاف کر دی مگراسکا یہ اثراب بھی رہاکہ موسى علايسلاً رخوت طارى مُركيا الرسيلغزش نه موتي توبه وقتي خوت بعي نه موتيا - (فنطبي) وَلَقَلُ التَّيْنَا وَاؤَدُوسُلَيْمِنَ عِلْمًا ۚ وَقَالَا الْحَمُّنُ لِلَّهِ الَّذِنِ يَ دادُد اور سلیمان کو ایک علم اور بواے شکرادشرکا جس نے ہم کو ادریم نے دیا فَضَّلَنَا عَلَىٰ كَيْثِيْرِ مِنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ @ وَوَرِتَ سُكَيْمُرُ اور تائم مقام موا سليمان یردگی دی اینے بہت سے بدوں ایمان والوں یر دَاوْدَ وَقَالَ لَا يَهُمَا النَّاسُ عُلَّمْنَا مَنْطِقَ الطَّارُ وَأُوْتِيْنَا مِنْ اے لوگو ہم کو سکھای ہے بولی اُڑتے جا اور دی اور دیا ہم کو ہر چیخ داود کا ادر پرلا شَى عِرانَ هَانَ اللَّهُ الْفَضْلُ الْمُبِينُ ﴿ وَحُشِرُ لِسُكِّمُ اور جمع کئے گئے سیمان کے ایر فضيلت صريح 4 6% Sty فَوْدُهُ مِنَ الْحِنِّ وَالْرِيشِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوْزَعُونَ ﴿ حَتَّى إِذَ اور انسان ادراً الشق جالور پھراُن کی جماعتیں بٹائ جاتیں یہانک کہ جب ادِ النَّمُكِ قَالَتُ نَمْلَةً ثَا يَتُهَا النَّمْلُ ا وَخُلُوا منتجے بیونٹیوں کے میدان بر کہا ایک چیونٹی نے اے بیونٹو لنكون لا يخطمن و سكمري و جنوري وهي لا يشعرون نہ بیس ڈالے تم کو سلیمان اور اسکی نوجیں اور اُک کو تھی ہے سر ہو تبسّم ضاحكا مِنْ قورلها وقال رَبّ آوْزِغْنَ أَنْ آشُكُ مشکر کر ہن پڑا اس کی بات سے اور بولا اے میرے دب میری قسمت میں دے کرشکر يغمتك التي التي أنغمت على وعلى والدى و آن أغمل صالح روں ترے اصاف کا جو تونے کیا بھے ہد اور میرے ماں یاب بر اور یہ کہ کروں کام توضية وَآدُخِلْفَ بِرَحْمَتِكَ فِي عِبَادِكَ الصَّلِحِينَ ١٠ جوتو بیندکرے اور ملالے بھے کو اپنی رحمت سے اسے نیک بندوں اورتم نے داؤد (علیاسلام) ادرشیمان (علیاسلام) کو (مشربعیت ادریمرانی کا) علم عطافسرا اوران دوبن في (ادائ كرك لئ) كهاكمت م تعريض الترتعالي ك لئے سزادار بي جس في كو

اینے بہت سے ایمان والے بندوں پرفضیلت وی اور داؤد (علیات الم کی وفات کے بعدان) کے قائمٌ مقام سلیمان (علیالتلام) ہو ہے (یعنی ان کوسلطنت وغیرہ ملی) اوراً نھوں نے را کہا ریکے کیلئے اکهاً ہے تو گو! ہم کو پر ندوں کی بولی (سمجھنے) کی تعلیم کی گئی ہے (جو دوسرے یا دشا ہوں کوشال نہیں) ادریم کو (سامان سلطنت محمتعلق) برهم کی (ضروری) چیزین دی گئی بین (جید نوج ، نشکر، مال ، اور اَلاتِ جِنَّك وغيره) واقعى بير (التُديعَاليُ كا) كُفلا مُوافضل سِيراورسيها ن (عليداستلام كے ياس سامان طنت بھی عجیب وغربیب تفاچنا نجیران) کے لئے (جو) ان کا تشکر جمعے کیا گیا (تقاان میں) جن تھی (تقے) اور انسان می اور پر ندمے جی (جو کسی با دشاہ کے تا بع نہیں ہوئے) اور (کھر تھے بھی اس کش سے كه) ان كو (جلنے كے وقت) روكا جا (ياكم) تا تقا (تاكەمتفرق نه موجاويں يحقيے دالے تھى يہني جاويں یہ بات عادة نہایت کثرت میں ہوتی ہے کیو مکہ تھوڑ ہے مجمع میں توا گلاا دی خو دہی الیے وقت اُرک جاتا ہے اور بڑے بچے میں اگلوں کو بچھلوں کی خبر بھی نہیں ہوتی اسلے اسکا انتظام کرنا پڑتا ہے۔ ایکبا اینے لاؤلٹ کرکے ساتھ تشریف لئے جاتے تھے) پہا تک کہ جب دہ چیونٹیوں کے ایک میدان میں الم توایک چیونٹی نے (دوسری چیونٹیوں سے) کہا کہ اے چیونٹیو، اپنے اپنے سوراخوں میں جا کھکے و كهين كم كوسليمان اوراك كالشكر بيخبري مين كيل نه والعسوسليمان (عليابسلام ني اس كي بان شني اور) أس كى بات سے (متعجب بركركم اس تھو كے دجود يربي بوشيارى ادرا حتىياط) مسكراتے بوئے بنس برا سے اور (بر ویکھ کرکمیں اس کی بولی مجھ کیا جو کہ مجرہ ہونے کی دجہ سے ایک نعمت عظیمہ ہے اور احمتیں بھی یا دآ گئیں اور) کہنے لگے کہ اے میرے رب مجھ کواس بہنشگی دیجے کہ میں آپ کی اُن تعمول شکر کیا کروں جوائیے مجھ کو اور میرے مال باب کوعطافر مائ ہیں (تعینی ایمان اور علم سب کو اور نبوت خود كوادرا بين والد دادُد طلياسلام كو) ادر (أس يريمي بمينيكي ديدكر) بين بيك كام كياكر دن حبي آت خوش موں ربین عمل مقبول موکیونکه اگر حقیقت میں عمل نیک بردا در آدافی شرا نطاکی کمی کیوجہ سے مقبول نہودہ مقصود نہیں ہے) اور مجھ کو اپنی رحمت (فاصر) سے اپنے (اعلی درجہ کے) بیک بٹ ول (البيار) من داخل و كفي (معنى قرب كوتبدس تبديل مرتبيع)-

معارف ومسائل

و کقک انتینا داؤد و سکی ای علمی از طاهری کداس سے مُرادعلیم انبیاد ہیں جو نبوست و رسالت سے متعلق ہوتے ہیں۔ استے عموم میں دو سرے علوم دننون بھی شامل ہوں تو بعید نہیں جیسے حضرت داؤد علیہ اسلام کو زرہ سازی کی صنعت سکھا دی گئی تھی ۔ حضرت داؤداد رسلیمان علیہما اسلام زمرہ انبیاد میں ایک خاص احمیا زیر دکھتے ہیں کہ ان کو نبوت و رسالت کے ساتھ سلطنت بھی دی گئی تھی ادر اطنت

معارث القرآن جسلدهم

ین جی عقل و تتورکسی درجہیں ہوجودہے۔ البتان کی عقول اس درجہ کی نہیں کہ ان کو احکام شرع کا مکلفت ابنا جاتا اورانسان اورجبات کو عقل و شعور کا وہ کا مل درجہ عطام داہے جس کی بنار پر وہ الشر تعالے کے خاطب ہو جس بند وں میں زیادہ عقامند ہوا جاتی ہے فاطب ہو جس بند وں میں زیادہ عقامند ہوا جاتی ہے نے فرایا کہ بور سب پرند وں میں زیادہ عقامند ہوا جاتی ہے نے فرایا کہ جو کوئ دانہ اسکے قبضہ بن آنا ہوا سے دو فرایا کہ چیونی ڈوٹر کے اور تعالی کی توقیق شاقہ بڑی تیز ہے جو کوئ دانہ اسکے قبضہ بن آنا ہوا سے دو فرایا کہ جو کردی ہے دائے ہی غذا کا ذخیرہ جمعے کرتی ہے۔ (قطبی) فائدہ :۔ آیت میں طبی اور تعام حشرات الارض کی بولیاں سمانا کی گئی تھیں جبیا کہ آگئی آیت میں اور تعام جو برندہ سے دونر چیونٹی کی بولیاں سمانا میں برندہ کی کوئیاں دورت کی بولیاں اور تعام برخت اور تعام خطبی نے اپنی تعنیر میں اس مقام برخت احت برندوں کی بولیاں اور تعرب اور تعام بریز ندہ یہ بات کہد رہا ہے تعنصیل سے نقل کیا ہے اور تعربیاً اور تعربیاً اور تعربیاً اور تعربیاً ہوئی بولی جونوں کی بولیاں سریہ نہ کہد رہا ہے تعنصیل سے نقل کیا ہے اور تعربیاً ہوئی بولی ہوئی بولی کوئی بولیا کہ ایو برندہ کے بولیا کہ بولیاں کوئی بولیاں کھا کی کئی کوئیا ہوئی کوئیا ہے اور تعربیاً ہوئی نے ایک کہ دوئی ہوئی ہوئی کوئیا ہوئی کوئی ہوئی ہوئی کوئی ہوئی کوئی بولیا ہوئی ہوئی کوئیا ہوئی نہ ہوئی ہوئی کوئی ہوئی کوئی بولیا ہوئی ہوئی کوئی ہوئی کوئی نصیا ہوئی ہوئی ہوئی کوئی نصیحت کا جملہ ہے۔

وَاُوْتِیْنَامِنَ کُلِیَّ شَیْءَ، لفظ کُل اسل گفت کے اعتبادے کام افرادِ جبس کو عام ہو ہا ہو گرلسااو قا عموم کی مرکز کر اور ہو تاہے جیسا یہاں مراد اُن اسٹیار کاعموم ہے عموم کی مرکز ہو تاہے جیسا یہاں مراد اُن اسٹیار کاعموم ہے جن کی ملطنت و حکومت میں ضرورت ہوتی ہے در نہ ظاہر ہے کہ ہوائ جہاز، موٹر، ریل وغیرہ اُن کے پاس نہ تھے آت اُن وُنویْق ، و ذریع مسئیت ہے جس کے نفظی منے روکئے کے ہیں مطلب اس جگریہ ہے کہ بھے اس کی توفیق دید ہے کہ میں شکر نعت کو ہروقت ساتھ رکھوں اُس سے سی وقت جُرانہوں ، جرکا حال مرادمت اور پا بندی ہے ۔ اس سے بہلی آیت میں فہم وَنُورْدُونِیَ اسی سی میں آیا ہے کہ اُن کو کمٹرت کی دوسے انتشار سے بہائی آیت میں فہم وَنُورْدُونِیَ اسی سی میں آیا ہے کہ انکر کو کمٹرت کی دوسے انتشار سے بیا نے کہ انکر کو کمٹرت کی دوسے انتشار سے بیا نے کہ انکر کو کمٹرت کی دوسے انتشار سے بیا نے کہ انتظام کے لئے دوکا جاتا تھا۔

قَانَ آغَمَلَ حَمَالِكَ نَوْحِلْهِ ، يَهِال رَضَا بِحَنْ قَبُول ہے مِنْ يَهِ فَي التَّرْمُجِهُ اِلْسِكُ صَالَح کی توفیق دیج بُروایک نزدیم قبول ہو۔ رقع المعانی میں اس سے اس پراستدلال کیا ہے کہ کل صالح کے لئے قبولیت لازم بنیں ہے بلکہ قبولیت کچے شرائط پرموقوت ہوتی ہے ، اور فریا یاکہ صالح اور قبادل ہوتی نہ عقلاً کوئ لزوم ہے نہ سٹرعاً۔ اسی لئے ابنیا علیہ کا ستام کی سنت کے کہ اپنے اعمال صالحہ کے مقبول ہونے کی بھی وُعاکرتے تھے جیسے حضرت ابراہیم واسماعیل علیہ کا اسلام نے بیت اسٹری تعمیر کے وقت وُعافر مائی کہ بِنَا تفقیق نے اس معلوم ہواکہ وعلی بیک صوف اس کو کرکے بے فکر ہونا بنہیں جاسے ، الشرقالی سے بیمی وُما

علصائع اور تقبول ہونے کے باوجود جنت میں ایک ڈیوٹی ٹیکٹ کی فی عِبَادِ اِ الصلاحِیْنَ ہمل الع داخل ہونا بغیر نفسل خدا وندی کے نہیں ہوگا اور اسکے قبول ہونے کے باوجود جنت میں داخیسل ہونا خدا تعالیٰ کے نفسل وکرم ہی سے ہوگا۔ اسخصرت صلا اللہ عکمیہ مے فرمایا کہ کوئ شخص استے اعمال سے عمرہ

19

مَا تَعْلِمُونَ ﴿ اللّٰهُ لَا اللّٰهِ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهِ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰلّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ الللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ اللّٰهُ ال

جور کالیا ہے جیسی بدی چیز آسانوں میں ادر زمین میں اور جاتا ہے جو چھیاتے ہو اور

ام اب دیکھتے یں تو نے بوٹا ہے کے جا سرایہ خط

ادر ڈال دے اُن کی طرف بھران کے باس سے بط آ بھرد کھ دہ کیا جواب دیتے این

049

شورة التمل ٢٨: ٢٨

معارت القرآن جسكة شم

خ المصركفيير

(اورایک باربیقضد بواکه)سلیمان (علیالسلام) نے برندوں کی حاضری کی تو (بُربُرکونه دیجھا) فرمانے گئے کہ كيابات بيكدي بربركونهين ديكيمتاكياكهين غائب وكياب (اورجب علوم بواكه واقع بين غائب توفرمانے لكے كه) بين اس كو (غيرها ضرى ير) سخت سزا دُدن كا ياس كو ذبح كر ڈالون كا يا ده كوئ صاف دليل (اھ غیرعاصری کاعذر) میرے سامنے پیش کردے (تو خیر جیوڑ د ذبکا) تھوڑی دیر بعدوہ آگیا اور شایم کان (علیاتسلام سے) کہنے لگاکا لیسی بات معلوم کرے آیا موں جوائی کومعلوم نہیں ہوئی اور (اجمالی بیان اسکا يہ كى ين آيكے ياس قبيلة سباكى ايك ئيخة خبرلايا موں (جيكا تفصيلى بيان يہ ہے كه) بين نے ايك ورت او دیکھاکہ وہ ان توکوں پر با دشاہی کررہی ہے اور اس کو (با دشاہی کے لوازم میں سے) ہرشم کاسسامان حاص ہے اوراسے یاس ایک بڑا تحت ہے (اور ندی حالت اس سے کہ) میں نے اس (عورت) کواؤ اسی قوم کو دیکھاکہ وہ خدا (کی عبادت) کو چھوڑ کرآفتاب کو سجدہ کرتے ہیں اور شیطان نے اُن کے (ان) اعال دکفر کوانجی نظر میں مرغوب کر رکھا ہے (اوران اعال بدکو مزین کرنے کے سبب) انکوراہ دی) سردك دكها باسلة وه داه رحق) يرمنهن جلت كه اس خداكة بجده نبس كرت و دايسا قررت والايك اسمان اور زمین کی پوشیرہ چیزوں کو (جن میں سے بارش اور زمین کی نیانات بھی ہیں) باہرانا ہے اور (الساحان دالاسك،) تم توك (بعني تمام مخلوق) جو كير (دل بي) يوشيده ركفتي واورجو كير (زبا اورجم كے اعضارسى) ظاہركرتے ہووہ سب كوجا تا ہے (اسكنے) الشرى ايسا ہے كم اسكے مواكوى عبادت محلائق نہیں اور وہ عرش عظیم کامالک بوسلیمان (علایسلام) نے (بیش کر) فرمایا کہم بھی ديكه ليتين كه توسيح كہما ہے يا توجهو توں يس سے ہے (اچھا) ميراية خط لے جااور اسكوأن كے يكس والدينا يحر (دراوبان سے) مطحانا، محرد ميمناكة أيس مين كيا سوال وجواب كرتے بين (محدود بيا صلے آنا دہ توگ جو کھ کارردائ کرس کے اُس سے ترا یے جھوط معلی ہوجا دے گا)۔

معارف ومسائل

وَتَفَقَلُ الطَّلِيْرَ، تَفَقَّلُ كِفَظَى مِعَنَى مِنْ مِنْ كَيْ مَعَنَى مِنْ المِلِيْمِ المِلِيْمِ المِلِيْمِ المِلِيْمِ المَلِيْمِ اللَّهِ اللَّهُ اللَ

سورة ألتمل ٢٤: ٨٢ عكادف القرآن جسندشم غیرحاضر در شول الشرصلے الشرعکتیہ کم کی بھی عادت شریفیہ بیقی کہ صحابہ کرام کے حالات سے باخبر سے كااجتمام فرمات متضيج تخض غيرحاضر موتاآكر بيمار بستوعيادت كمصة تشريف ليحات تضيماردارى كرتے اور سى مكليت ميں بيتلا ہے تواسے لئے تد بيرفر ماتے تھے۔ حاكم كوابني رعيت كى اورمشائخ كوايين [آيت مذكوره سي تابت بهواكة حضرت سليمان علية شاكردولا درمررون في خركيرى صرورى و عايا كم برطبقه يرنظ د كفته ا درا يح مالات سائت با رہتے تھے کہ ہر ہر حوطیور س جھوٹااور کمزور کھی ہے اوراس کی تعداد کھی دنیا میں بسبت دوسر عظیور ہے وہ تھی حضرت سلیمان علیاسلام کی نظرسے او حصل نہیں ہوا، بلکہ خاص ہر ہر مصنعلق جوسوال آ فرمایااس کی ایک وجه به میمی ہوئتی ہے کہ وہ زمرہ طیوریں کم تعدا داور کمزورہے،اسلیے اپنی رعیتے نز وروں پر نظر رکھنے کا زیا وہ اہتمام فرما یا صحابۂ کرام میں حضرت فار وق عظمون نے اپنے زمانۂ خلافت میں اس سنت انبیار کو بوری طرح جاری کیا۔ را توں کو مدینہ منورہ کی گلیوں بین بھرتے تھے کہسب توکو مح حالات سے باخبر رہیں جس تحص کو سی صیبت و تکلیف میں گرفت ارباتے اُس کی امدا د فراتے تھے جس تعيبت سے دا قعات أسى سيرت ميں ندكور ہيں۔ وہ فرما ياكرتے تھے كيد اگر دريا مےفرات كے خمارہ ركسى بهرائي في سي مرى كے بي كو بيدا والا تواسكا بھي عمر سے سوال ہو كا- (قطبى) يد تقدوه الصول جهانها في ويحكم اني حوانبيا عليهم السلام ني لوكون كوسيكها سطة اور صحابة كرام رضوال عليهم جمعين نے اُن کوعملا جاری کرکے د کھلایا اور س تحتیجیاں بوری کم وغیر سلم رعایا امن واطبینان فی مبررتی تھی، اوران سے بعد زمین واسمان نے ایسے عد کے امن و تحون اور اطبینان کا پیسطر مہیں دیکھا۔ مَانِيَ لَا آدَى الْهُلُ هُلَ آمْرِكَانَ مِنَ الْفَارِيبِينَ ، سيمان عليه ستلام في فرمايا كرنجي كارد كياكه مين بريد كو تحت مين نبين و يكونتا -ا بيئ نفس كا محكسبه إيهال موقع توبير في التحاكم المركة كوكيا بموكياكه وه مجمع مين حاصر تنهي عنواك شايداسك بدلاكم بدئداورتمام طيوركامسخ بوناحق تعالى كابيك انعام خاص تقا- بدئركي غيرحاضرى يرا بتداء مين ينحوت ول مين بيدا به واكه شاير سيكسي قصور سيراس نعمت مين كمي آي كدا يك صنفطار كى لينى يُرَيُّهُ عَالَبُ بِولِيا اسلحُ اين نفس سيسوال كياكه ايساكيوں بروا وجيساكه مشارِع صوفيكام حول كرجب أن كوكسي نعمت مين كمي آئے باكوئ كليف ديريشاني لاحق بوتو وه استحے ازاله كيليے ما ذي امباب كيطون توجير في سربيليا بينفس كامحاسبر تي يقديم سالترتعالى كي حق شكريس ونسي كومايى موی جس کے سبب بیٹھ سے سے لے لی گئی۔ قرطبی نے اس جگہ بجوالہ ابن عسر فی ان برزگوں کا یہ ا حال نقل كيا ہے-19

اس ابتدائ محاسم نفائی خور و فکر کے بعد فربایا آخ کان مِن اُلفا آشِیْن اس جگرون آخ بمنے

دک ہے (فتطبی) معنے بین کہ یہ بات نہیں کہ ہُر ہُرکے دکھنے ہیں میری نظر نے خطار کی بلکہ وہ حاخر بنی یہ
طیور بیں سے ہُر ہُر کی خصیص حضرت عبداللہ ابن عباس سے سوال کیا گیا کہ تمام پر زوں ہیں ہور ہو تی فنیتی طیور بی سے ہُر ہُر کی وجہ اور ایک ایک ایسے مقام
میں قیام فرایا جہاں یا نی نہیں تھا اور اللہ توالی نے ہُر ہُر کو یہ فاصیت عطافر مای ہے کہ وہ زمین کے اڈر میں قیام فرایا جہاں یا فی ایسے مقام
کی چیزوں کو اور زمین کے اندر بہنے والے جینہوں کو دیکھ لیتا ہے مقصود حضرت سلیمان علیا سام کا یہ تھا
کی چیزوں کو اور زمین کے اندر بہنے والے جینہوں کو دیکھ لیتا ہے مقصود حضرت سلیمان علیا سام کا یہ تھا
کی چیزوں کو اور زمین کے اندر بہنے والے جینہوں کو دیکھ لیتا ہے مقصود حضرت سلیمان علیا سام کا یہ تھا
کی چیزوں کو اور زمین کے اندر بہنے والے جینہوں کو دیکھ لیتا ہے مقصود حضرت سلیمان علیا سام کا یہ تھا
کی چیزوں کو اور زمین کے اندر بہنے والے جینہ والے میں باقی کو کھود کر بانی کا فی
براس کا ہے ۔ ہُر ہُر کی اس نشانہ ہی کے بعد وہ جنّات کو کھم دیدسے کہ اس زمین کو کھود کر بانی نوکا لودہ
براس کا ہے اس پر حضرت ابن عباس نے تھے۔ ہُر ہُرا یہ تی تیز نظرا در بصیرت کے باد جو ڈسکاری کے جال ہیں جینس جاتا ہے اس پر حضرت ابن عباس نے خور بایا ۔

جانے دانوا س حقیقت کو پہچا توکہ ہد بدر مین کی گہرای کی چیزوں کو دیکھ کیتا مگرز مین کے اوپر بھیلا مواجال اُس کی نظرے اوجول اوجاتا ہے جس میں بھیس جاتا ہے۔

قف یا وقاف کیف بری الهده هد باطن الارض وهو لا یری الفخ حاین یقع فید (قطبی)

مقصدیہ ہے کہ حق تعالی نے جوامر تکلیف یا داحت کا کسی کے لئے مقدر کر دیا ہے تو تفتر راللی نافذ ہو کرد ہی ہے کوئ شخص اپنی فہم وبصیرت یا زور وزر رکی طاقت کے ذریعہ اُس سے نہیں نچے سکتا۔ کا ٹھی ہوئی ہوئی کوئی میں ایک ایک اُکٹ اُڈ بھی ہے کہ ابتدائی غور و کارکے بعدیہ حاکمانہ سیاست کا مظاہرہ ہے کہ غیر حاصر دہنے والے کوسے زادی جائے۔

جو جا افد کام میں سنی کرے اسکو احضرت سلیمان علیہ ستال سے سے حق تعالی نے جا توروں کو لہیں نزایہ مت متدل سنزا دینا جا گزیے اوری کردیا تھا جیسا عام اُمتوں کے لئے جا اوروں کو دی کرکے اسکے گوشت پوست وغیرہ سے فائدہ اُٹھانا اب بھی حلال ہے۔ اسی طرح پالتوجا اور گائے ہیں اگر دھا محصور اُلا اور نظے وغیرہ اپنے کام میں ستی کرے اُس کو تا دیب کے لئے بقد رِضرورت مازی معتدل مزا اب بھی جا زہیے ۔ دوسرے جا اوروں کو سنزا دینا ہماری شرویت میں ممنوع ہے۔ (وقطیی) اب بھی جا زہیے ۔ دوسرے جا اوروں کو سنزا دینا ہماری شرویت میں ممنوع ہے۔ (وقطیی) آٹ کی گذروہ آئے پسٹر کو بات نی غیر حاضری کا کوئی مقدر دوائع بیش کر دیا تو دواس سنزا سے محفوظ رہے گا۔ اسمیں اشارہ ہے کہ حاکم کو چاہئے کہ جن کوگوں سے کوئی قصور عمل میں مرز د ہوجائے اُن کو عذر بیش کرنے کا موقع دے ، عذرہ سمجھ تا بت ہدتو مزا کو معاف کرفے ۔

شورة النمل ٢٤: فالقرائن جسكة آحظت بِمَا لَوْ يَحْظِيهِ اللَّيْ يُهِ بِهِ فَا يَنْ يُهِ بِهِ فَا يَنْ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ الله عَلِيهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّمُلَّا اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّلْمُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللّ معادم نهي، معنى ين ايك السي خبرلايامون جسكاآب ويباعلم نهين تصا-نب تیاء علیبها اسلام | امام قرطبی نے فرمایا کہ اس سے دائع طور پر معلوم ہواکہ انبیاعلیهم ال عالم الغيب نہيں ہوتے عالم الغيب نہيں ہوتے جس سے اُن كو ہر جيز كاعلم ہوسكے . وَجِمْتُكُانَ مِنْ سَبَامِ بِنَبَرْ إِيْقِينِي، سَبَاء، يَن كاليك شرورشم حيكاليك نام مارب يمي ب کے اور کین کے درالحکومت صنعاء کے درمیان تین دن کی مسافت تھی -كيا چھوٹے آدمى كوية تى ہے كداپنے بڑوں | ہو ہوكى فدكورہ كفتنگو سے بعض لوگوں نے اس براستدلال كيا ہے سے سے کہ مجھے آپ سے زیادہ علم ہے کوئ شاکرداینے استادسے یا غیوالم عالم سے کہا تھا ہوکا مشلكاعلم مجصآب سے زيادہ ہے بشرطيكم اس كواس سلك كا دا قعى طور يكمل علم دوسروں سے نائد مو-مروح المعانى بين فرما ياكر بيطرز كفتاكوا بين مشاع اور برون كے سامنے خلاف اوب ہے اس واحتراز كرنا چاہئے۔اور تبریکر کے قول سے اس پراٹ رلال اس لئے نہیں ہوسکتا کراسنے بیر بات اپنے آپ کو مزاسے بچانے اور عذر کے قوی ہونے کے لئے ہی ہے ماکداسی غیرصاصری کا عذر ایوری طبح حضرت سلیمالیا العسامة آجائے اليي صرورت ميں ادب كى رعايت ركھتے ہوئے كوئى بات كيجائے تومضا كفتر نہيں -ا فِي وَجَنْ عُلِي الْمُوَاعَ تَمْدِيكُهُ وَ اللَّهِي مِينَ مِينَ مِي أَلِي عورت كوياياجو توم ساكى مالك ہے ہے۔ ان پرحکومت کرتی برداس عورت بینی ملکه سبا کانام ماییخ بین ملقتین بنت ستراحیل تبلایا گیا ہے۔ اور تعین روایات میں ہے کہ اس کی والدہ جنّات میں سے حریکانام بلحمہ بنت شیضان تبلایا جانا ہے (رواہ و ہمیب بن جریون الجلیل ابن احد- قرطبی) اوران کا دا دا میرا بد بورے ملک مین کا ایک عظیم انشان با دشاہ تھا جس كى اولاد ميں جاليس لوك موئے مرب كے سب كوك اور بادشاہ بنے -ان كے والدسواح نے ایک جبتیعورت سے برکاح کرلیاتھا اُسی کے بطن سے لقبس پیدا ہوی۔ جبتیہ سے برکاح کرنے کی مختلف دیوہ بال كى تى ايك يرب كريداين حكومت وسلطنت كيغودين لوكون سے كہتا تفاكر تم مين كوئ ميراكفونهين اسلئم مين بحاح بى نهر ذيكاكيونكه غيركفومين نبحاح مجصيب رمنهي السكانتيجه بيهمواكه يوكو نے استخار کا حالی جنبیغورت سے کرادیا (قطبی) شایدیہ اُسی فحرْ وغرور کانتیجہ تھاکہ اسنے انسانوں کوجو در كفو تقے حقیرو ذلیل مجھاا درا پنا کفوتسلیم نه کیا تو قدرت نے اسخالکاح ایک بسی عورت سے مقدر کر دیا جويداس كي كفوتتي شاس كي حبنس و قوم سيحتى -سیانسان فایکاح جنی عورت بوسکتابر اس معالمهی بیض توگوں نے تواس لیے شبرکیا برکہ جنات کو انسان كى طرح توالدة تناسل كالأنهين تجها-ابن عربي نيها پنى تفسيرس فرماياكه بدخيال باطل ہے. ا وا دست صحیحہ سے جتنات میں توالد و تناسل اور مردوعورت کی تمام وہ خصوصیات جوانسانونیں ہیں

سُورَة النَّسل ٢٤ : ٨٠ جنّات میں موجود ہونا تابت ہے۔ مدور السوال شرع حيثيت مي كركياعورت جنبية كسى انسان مردك لية نيكاح كر ك طلال ويحقي و سمیں فقہار کا اختلاف ہے ہہت حضرات نے جائز قرار دیا ہے، بعض نے غیر بن شارجالؤرد ں کے م وفي كي بنار برحمام فرمايا ہے إس مسئله كي تفصيل اكام المرجان في احكام الجان» بيس مذكورہے أسمير بعض ایسے واقعات بھی وکرکئے ہیں کرمسلمان مردسے سلمان جندیہ کا لیکاح ہواادراس سے اولادی ہو؟ يبال ييسكا إسلة زياده فابل بحث نبين كذكاح كرف والا لبقين كا والدسلمان بي تها اسكال س كوى استدلال جوازيا عدم جوازير نهي موسحتا- اورجو نكه شرع اسلام بين اولا دكى نسبت باب كى طرت م وتى ب اورطبتين كے والدانسان تھے اسلم طبقيس انسان ہى قراريائے كى - اسلم بعض روايات ميں جوحضرت سلیمان علیالتلام کابلقیس سے نرکاح کرنا مذکورہے، اگروہ روایت صحیح ہوتو بھی کس سے زيكاح جنتيه كاكوئ علم ثما بت منهي م و ماكيونكم لقبين حود جنبيه نه تصين اگرچير أن كى والده حبنيين و والساعلم اور نيكاح مسليمان عليالستلام مصتعلق مزيد بيان آكے آئيگا-بالسي عورت كابا دشاه موناياسي الصيح بخارى مين حضرت ابن عباسٌ كي روايت بحكه رسُول لهُ وم كالميروامام بوناحب تزهي صلان عكيهم كوحب بيخبر بنجي كدابل فارس ني ايخ ملك كا وشاه كسرى كى بينى كو بناديا ب توات نے فرمايا كن يُلْفُلِح فَقَوْمُ وَكُوْا ٱمْرَهُمْ اِمْرَاةً ، بعين وه قوم مجى فىلاح نذيائے كى حب تے اینے اقتدار كامالك عورت كو بنادیا۔ اسى لئے علماء اُتت اس نق بین کرسی عورت کوامامت وخلافت یا سلطنت و ح يسيرد نهين كيجاسحتي المكه نماز كيابا كى طرح امامت كرى بجى صرف مُردول كوسنرا دارى - د ما بنقيس كاملكرُ سبا بونا تواس سے كوئ مح مشرعی ثابت بنیں ہوسکتاجب تک بیشابت نہ ہوجائے کے حضرت سلیمان علیاب لام نے اس سوخود زيكاح كياادر بجراسكو حكومت وسلطنت يربر قراد ركها، اوركيسي صحح ردايت سے تابت نہيں جب بر احكام شرعيرس اعتما دكياجا سح قَ الْحَدْنِيْتُ مِنْ كُلِّ شَى عِنْ مُرَادِيهِ سِهِ كَرِسبِ صَرِورى سامان جَوْسى باد شاه وامير كو دركار به وتا الادایت زمانے معطابق بوسکتا ہے موجود تھا جو چیزی اُس زمانے میں ایجادی نہوی تھیں ال كاند بونااس آيت كے منافی نہيں ۔ و كهاعر في عظيم عرش كففي معية تخت سلطنت كي ير حضرت ابن عباس ف سے ایک روایت میں ہے کہ عرش مجتیں کاطول استی ہاتھ اورعرض جالیس ہاتھ اور بلندی بین ہاتھ تشى حبن يرموتى ادريا توت احمز زبرجدا خضر كاكام تفااور اسكے يائے موتيوں ادرجوا ہرات کے تھے ادر ير دے رئيم اور حرير كاندر باہر كے بعد ديكر سات مقفل عار توں ميں تفوظ تھا۔



معارف التراق جد الشف المركز في الديمة المركز الميك فا نظرى ما ذا تا محردين المركز التي والم المركز التي في الديمة المركز التيك فا نظرى ما ذا تا محردين المركز التيك في المنظرة المركز التيك والمركز التيك والتيك المركز التيك والمركز التيك والمركز التيك والمركز التيك والمركز التيك والتيك المركز التيك والمركز التيك والمركز التيك والمركز التيك والتيك والمركز التيك والتيك التيك والمركز التيك والمركز التيك والمركز التيك والمركز التيك والمركز التيك والمركز التيك والتيك والتي

خسالا صرتفسير

(سیبهان علیات ام فی اید از سے بی مفتاکو کر کے طفیس کے نام ایک خطاکھا جسکا صفحون آگے قران میں مذکور ہے اور اور اور کی اور کی کے جام ایا اور اکیلے یا مجلس میں طبقیس کے باس ڈالدیا)

مفتر نے (پڑھ کرا ہے سردادوں کو مشورہ کے لئے جمع کیااور) کہاکہ اے اہل دربار اسیرے باس ایک خط (جب کا صفحون منہایت) با وقعت (اور طبع الشان ہی) ڈالا کیا ہے (با وقعت اسلے کہا کہ حاکم اند مضمون ہے میں میں با وجود انہ ہائی اختصار کے اعلی درجہ کی بلاغت ہے اور) وہ سیمان کیطوت سے ہوا در آمیں ہے واقعی ہوئی ہی خور انہ ہائی اختصار کے اعلی درجہ کی بلاغت ہے اور) وہ سیمان کیطوت سے ہوا در آمیں ہے واقعی ہوئی ہی کہ انٹر الرحمان الرجم (اور اسے بعد ہے کہ) تم کو آر کے بعد ہے کہ اور میں کے بعد ہے کہ کہ اور میں کے مسامی عوام بھی والبستہ ہیں) میرے مقابلہ ہی کہ برت کو واور میرے باس تا بعد اور جو کے ہوئے آؤ۔ (مقصود تمام کو دعوت دینا ہے اور یہ کو کے سیمان علیا سام ان کو گوں کو نہ جانتے ہوں ، اور اکثر الیا ہوگا کے کہ برخے ہی وائوں کو نہ جانتے ہوں ، اور اکثر الیا ہوگا کہ کہ برخے جو ووں کو نہیں جانتے اور جھوٹے کے بعد تحقیق کر لیا ہوگا کے درخط کے مضمون کی اطلاع دینے کے بعد کے بعد کو کھی میں ۔

اور خط کے مضمون کی اطلاع دینے کے بعد) بلقیس نے (یہ) کہا کہ اے اہل دربار تم مجھوٹو میں کی اور اور کی میں کہ ایک اے اہل دربار تم مجھوٹو میں کی اور ایک کیا کہ اے اہل دربار تم مجھوٹو میں کی اور اور کو میں کی اور کا کو میں کو دیں کہا کہ اے اہل دربار تم مجھوٹو میں کی اور اور کو میں کہا کہ اے اہل دربار تم مجھوٹو میں کی اطلاع دینے کے بعد کے بعد کی بعد کی اور کو میں کیا کہ اے اہل دربار تم مجھوٹو میں کی اور کو میں کیا کہ اے اہل دربار تم مجھوٹو میں کی اور کو میں کیا کہ اے اہل دربار تم مجھوٹو کی کو کھوٹو میں کیا کہ ایک کیا کہ اے اہل دربار تم مجھوٹو کی کو کھوٹو میں کیا کہ اے اہل دربار تم مجھوٹو کی کو کھوٹو کی کو کھوٹو کی کھوٹو کی کو کھوٹو کھوٹو کی کھوٹو کی کو کھوٹو کیا کو کھوٹو کی کھوٹو کھوٹو کی کھوٹو کھوٹو کھوٹو کی کو کھوٹو کی کو کھوٹو کھوٹو کھوٹو کھوٹو کھوٹو کو کھوٹو کو کھوٹو کھوٹ

044

غارف القرآن ج

سُورُة النَّمْ ل ٢٤:٧٤

اس معاملہ میں دائے دو (کہ تھے کوسلیمان کے ساتھ کیا معاملہ کرناچاہتے) اور میں (کہجی) سی با لكے كديم (این ذات سے طرح سے حاصري ، اگر مقابلہ اور ارا نا طاقتوراوررط ارط الحام والعاين (اورآك) اختيارتم كوسيسوتم يي (مصلحت) ديكه لوجوكه (كو کرکے) حکم دینا ہو۔ بلقیس کہنے لگی کہ (میرے نزدیک اوٹنا تومصلحت نہیں کیونکہ سلیمان با دستاہ بين اور) با دشارون ركا قاعده به كروه) جب سيستي مين (مخالفانه طورير) داخل بوتين تواسيح تنهد دبالاكريسية بي اوراً نتح رہنے دالوں میں جوعزت دار بیں ان کو (ان کارور کھٹا نے کیلئے ڈلیل (وخوار) کیاکرتے ہیں اور (اُن سے لڑھائی کیجا دے توعمن برکہ ان ہی کوغلبہ مزد تو بھر) میہ کوگ بھی ما ہی کریں گے (تو بے صرورت پریشانی میں بڑنا خلاف مصلحت ہے لہٰذا جنگ کو توابھی ملتوی راجافے) اور (سردست یول مناسے کم) میں ان توگوں کے یاس کھے ہدیہ (کسی آدی کے ہاتھ بیجی بون) محصر دیکیموں تی کہ وہ مصح موسے (وہاں سے) کیا (جواب) ہے کرا تے ہی (اسوقہ د دباره غور کیا جا دیگا۔ جنانج بربون اور تحفول کاسامان درست ہوااور قاصدا سکوکیرر وانہ وا) ب ده قاصرتیکیان (علیاسلام) تصیاس پنجا(ادر تمام بدیے پیش کئے) توسیمان (علیاسلا) فرمایا کیاتم لوگ (بعنی میفتیں اور میفتیں والے) مال سے میری امداد کر (ناچاہ) تھے ہو (اسکتے برعيال عير) سو (مجھ رکھو کم) السر في حجھ دے رکھا ہے وہ ہے رکید تکہ تھارے یاس صرف دنیا ہے اورمیرے یاس دین تھی اور د بھی تم سے زیادہ، لہذا میں نوان چیزوں کا حریص مہیں زوں) ہاں م بی اسے ہدیے برقور مے وکے (للذاب برئے ہم شلیں گے) تم (ان کو لے کر) ان توگوں کے پاس لوط جاد (اگروہ اب مجی ایمان لے آوی تو درست درمنه) هم ان برایسی فوجیس مجیجتے ہیں کہ ان توگوں سے ان کا ذرامقابلہ نہ ہوسکے گا اور ہم ان کو وہاں سے ذلیل کرکے بکال دیں گے اوروہ (ذلت کیسا تھ پیشہ کے لئے) ماتحت (اوراسایا) ہوجا دیں گے (یہنیں کہ نکالنے کے بعدا زادی سے جھوڑ دیے جادی کہ جمال جاہی چلےجا دیں بلكيميشه كي ذلت ان كے لئے لازي بوجاد ہے) -

معَارِف ومسَائِل

قَالَتْ آیا بِنَهُا الْمَلَوَهُ الْمِلْ الْمَلَوَهُ الْمِلْ الْمَلَوَهُ الْمِلْ الْمُلَوَةُ الْمِلْ الْمُلَوَةُ الْمِلْ الْمُلَوَةُ الْمُلْوَةُ الْمُلَوَةُ الْمُلَوَةُ الْمُلَوَةُ الْمُلَوَةُ الْمُلَوَةُ الْمُلَوَةُ الْمُلَوَةُ الْمُلَوَةُ الْمُلَوَةُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللّهُ الللّهُ الللّهُ اللللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ

عارف القرائ جسلة

سے معلی ہواکہ حضرت سلیمان علایہ سلام نے خط پرا بنی مہر شبت فرمائی تھی۔ ہمارے رسمول صلے اولئے عکیے کہ جب ملوک عجم کی یہ عادت معلوم ہوئ کہ جس خط پر مہر نہ ہوائس کو نہیں پڑھتے تو آنحضرت صلے اولئے عکیے ہم نے بھی بادشا ہوں کے خطوط کے لئے مہر بنوائ اور قبصر دکساری وغیرہ کو جو خطوط تحریز فرط نے اُن پر مہر شبت نے بھی بادشا ہوں کے خطوط کا بھی یا جمل عادت فرمائ ۔ اس سے معلوم ہواکہ خط پر مہر کا گاما مکتوب الیہ کا بھی اگرام ہے اور اپنے خط کا بھی یا جمل عادت خطاکو لفافہ میں بند کر کے جیجنے کی ہوگئی ہے بیجی مہر کے قائم مقام ہے جس جگہ متوب الیہ کا اکرام منظور ہو، کھی انترب الی الشند ہے۔

حضرت ملیمان علیہ سسلام کا خطکس زبان بی تھا حضرت سیمان علیہ استلام گوع بی نہ تھے کین ع بی زبان جان اور جھنا آپ سے کوئ بعید بھی نہیں ۔ جبکہ آپ پر نہ وں تک کی زبان جانے تھے اور عربی زبان تو تمام زبان آنون افضل و استرف ہے لہٰذا ہو سکتا ہے کہ حضرت سیمان علیہ سسلام نے خطاع بی زبان میں لکھا ہو کیونکہ کمتوب الیہ (بلقیس) عربی لہنسان تھی اس نے خطاکو پر طھا بھی اور سمجھا بھی ۔ اور میر می مکن ہے کہ حضرت سیمان علیہ سلام نے خطاکو پر طھا بھی اور سمجھا بھی ۔ اور میر می مکن ہے کہ حضرت سیمان علیہ سلام نے خطابی ہو اور ملبقیس کے پاس حضرت سیمان علیہ سلام کی زبان کا ترجمان ہو جس نے برطھ کر خطاب نا اور سمجھا با ہو۔ (سرج س)

کاتب ابرنانام پیلے اسب سے پہلی ایک ہوایت تواس خطیں یہ ہے کہ خطکو حضرت سیمان علیار سلام

الکھے پھر کتوب لیہ کا نے اپنے نام سے شرد ع کیا، مکتوب الیہ کا نام کس طرح کھا قرآن کریم کے الفاظ
یں دہ فہ کور نہیں ۔ مگراتنی بات اس سے معلوم ہوئ کہ خط کھنے والے کے لئے شنتِ انبیاریہ ہے کیب
سے پہلے اپنانام لکھے میں ہیں ہمت سے فوائد ہیں مِثلاً خط برا ھنے سے پہلے ہی مکتوب الیہ کے علم میں
ایجائے کہیں کس کا خط بڑھ رہا ہوں تاکہ دہ اُسی ماحول میں خط کے مضمون کو برا سے اور غور کرے فاطب
کو یہ سکلیف فراٹھ افی برا کے کہ کا تب کا نام خط میں نلاش کرے کہ کس کا خط ہے کہاں سے آیا ہے۔
دوسول کریم صلے اللہ عکمیے کم حقاق مکا تیب نقول اور شائح شرہ عالم میں موجود ہیں اُن سب میں بھی
ایک نے بہی طریقہ اختیار فرمایا ہے کہ (من عملان عبد اللہ میں موجود ہیں اُن سب میں بھی
ایک نے بہی طریقہ اختیار فرمایا ہے کہ (من عملان عبد اللہ میں اُن سب میں تو ایٹ
یہاں ایک موال یہ بیا ہوسکتا ہے کہ جب کوئ بڑا آدی ایٹ جھوٹے کو خط کھے اسمیں تو ایٹ
یہاں ایک موال یہ بیا ہوسکتا ہے کہ جب کوئ بڑا آدی ایٹ جھوٹے کو خط کھے اسمیں تو ایٹ

سُورَة النمل ٢٤:٢٤ سلیمان علیالتلام کا نام لفافر مے اُدیر لکھا ہوا در اندرنسیم النفرسے شروع ہو، بلقیس لے جب اپنی قوم توخطات ناياتوحضرت سليمان عليالسلام كانام يملي ذكركرديا-تله: خطانولىيى كى السنت تويبى ہے كەسرخط كے شروع بين سے التوكيمي جائے، كيكن قرآن و يحانصوص داشا دات سے حضرات فقها ر نے بيرکليږ قا عدہ لکھاہے کہ جس جگاہيم النُّر يا النُّرتِ الیٰ کا كوى نام للهاجائے اگراش حكم أس كا غذك في ادبى سے خفوظ ركھنے كاكوى ابتمام نہيں بلكروه يراه كر والدماجا آب تواليسة خطوط اولاليسي چيزمين بسم الشرما الشرقالي كاكوئ نام لكه شاجا نزنهي كه ده اسطح اس بے ادبی کے گناہ کا شرکے ہوجائے گا۔ آجکل جوعمو ما ایک وسرے کوخطوط تھے جاتے ہیں انکاحال ب جانتے ہیں کہ نالیوں اور گندگیوں میں پر الے نظراتے ہیں،اس لئے مناسب یہ ہے کہ ا دائے شنت كے لئے ذبان سے ہم الله كہدائے رسى نہ الكھے۔ السي تحريب بين كوى آيت قرآني لكهي مودكيا يخط حضرت سليمان علياستلام فيطبقين كواسوقت كفيجاة سى كافسرت كے ہاتھ میں دینا جا ترہے جبکہ وہ شامان نہیں تھیں حالانکہ اس خطیں بستواللہ الوَّ حين الرَّجيبُوله ها بواتفاجس سيمعلوم بهواكدا يساكرنا جائز ہے - رسول كريم صلے الله عكية لم في چوخطوط ملوك عجم كو لکھے بين اور وه مشرك تھے ، ان بين ھي ديمن آياتِ قرآن مھي ہيں۔ وجہ دراصل ہے کہ قرآن کریم کا کسی کا فرکے ہاتھ میں دینا توجا زنہیں سکیں السی کوئ کتاب یا کا غذجی میں ئىضمون كے ضمن میں كوئ آیت آگئی ہے وہ عرف میں قرائ بنیں کہلانا اسلئے اسكا حكم بھی قرائ كالحم بنين بركاده مسى كافر تحيا تصين مي دي تحقيل ورب وضو كم ياته مي هي (عالمكري تنا الخطروالاباحة) خط محضر، جائع، بليغ اور حضرت سُليمان علياستلام كاس دالانامه كو د يميع توجيد سطرون ب مُوثِدًا مْدَارْمِين لَكُمَ مَنَا جِاسِينَ مُنَام إنهم اور صرورى مضامين تفي جمع كريسي اور بلاغت كااعلى معياريمي قائم ہے۔ کا فرکے مقابلے میں اپنی شام نہ شوکت کا اظہار ہی ہے۔ اسکے ساتھ حق تعالی کی صفات كمال كابيان ادرا سلام كى طرت دعوت يجى، ا در ترقع و تكتركى ندترت يمي - درحقيقت ينخط بحي اعجاز قرآني كاايك منونه سے حضرت قتا دو فراتے ہيں كه خطانونسي ميں تمام انبيارعليهم استلام كى سنت مجى دى ہے كہ تحريس طول بنو، سر طول بنو، سر طول بنو، سر ورى كوى مفترون جي كے محص بنيں - (دوج المعالان) الجم أمورين شوره كرناستن اسي قالت يا يقا الملك الفوي في الموع ما عنت قاطعة دومروں كى دائے سے فائدہ مجى عال آفرا حتى تشفیل ون ، افتونى ، فتوى سے شتق ہے سے بخدا واورلوكوفكي دليوى بحى بوتى بح معنى بيكسى خاص منكه كاجواب دينا - بهال شوره دينااور این رائے کا اظهاد کرنامحراد ہے۔ ملکہ بلقیس کو جب حضرت سلیمان علیارستلام کا خط پہنچا تواسنے ا بي الكان حكومت كوجم كرك اس دانعه كا ظهاركما ادر أن مصفوره طلب كماكه مجه كماكرنا

ON

حارف القرآن جر

سورة النمل ٢٤:٢٤

کھسونے کی انیٹیں تھیں کچھ جواہرات اورا کیا سو غلام اورا کیا سوکنیزیں تھیں مگر کنیز دل کو مردانہ آبا
میں اور غلاموں کو زنانہ لباس میں تھیجا تھا اور ساتھ ہی بلقیس کا ایک خطابھی تھا جس میں بیلمان کے
امتحان کے لئے کچھ سوالات بھی تھے ، تحقوں کے انتخاب میں بھی ان کاامتحان مطلوب تھا ۔ حضرت بیلمان کوحق تعالی نے استحقوں کی تعقوں کے انتخاب میں بھی ان کا متحان مطلوب تھا ۔ حضرت بیلمان کوحق تعالی نے استحقوں کی تعقوں کی تعقوں کا تعقوں کی تعقوں کا تعقوں کا فرش کر دیا جا کوحق تعالی نے استحقوں کی اینٹوں کا فرش کر دیا جا کوحق میں اور استہ میں دوطوفہ عجیب الخلقت جانوروں کو کھڑا کر دیا جائے جن کا بول و براز بھی سونے چا نذی کے
فرش بیر ہو۔ اسی طرح اپنے در باد کو فاص اہتمام سے مزین فربایا، دائیں بائیں چارچا ہزار سونے کی
فرش بیر ہو۔ اسی طرح اپنے در باد کو فاص اہتمام سے مزین فربایا، دائیں بائیں چارچا ہزار سونے کی
کورا ہال مزین کیا گیا۔ بلقیس کے ناصدوں نے جب سونے کی اینٹوں پر جانوروں کو کھڑا دیکھا تو اپنے
نی خفرسے شربا گئے۔ بعض دوایات میں ہے کہ اپنی سونے کی اینٹوں پر جانوروں کو کھڑا دیکھا تو اپنے
نی خدو طوفہ دکوش طیور کی صفیل تھیں، بھر جنات کی صفیں دیکھیں تو بحدم عوبہو کے کا گردیا بارتائی تیجوادہ تو تربیلی کے دیا جان کے تعقوالیں
کے سامنے حاصر ہوئے تو آئی خری میشیانی سے بیس آئے ، ان کی مہمانی کا اکرام کیا گرائ کے تحقوالیں
کے سامنے حاصر ہوئے تو آئی خری میشیانی سے بیس آئے ، ان کی مہمانی کا اکرام کیا گرائ کی تحقوالیں
کے دیئی ادر بلیقیس کے صب سوالات کے جوابات دیئے دائیں آئے ، ان کی مہمانی کا اکرام کیا گرائ کے تحقوالیں
کے دیئی ادر بلیقیس کے صب سوالات کے جوابات دیئے دائیں آئے ان کو کھوں

سورة النمل ١١:١٧ جيكه وه مشرك كافر تفاادر أمخصرت صلاالله عكيهم كى خدمت مين دوكهور اور دوجور يكرك كابديث كيا-آعي اسكابريه ية فرماكروايس كردياكم مشرك بدية بول نبين كرتے-اورعيا من بن حاد مجاشى نے آت كى خدمت ميں آيك بديہ بين كياتو آت نے أس سے سوال كياكم مسلمان بوأسنے كباكهنبي آني ان كا بديهي به كهرز وفرما دياكه مجصالة تعالى في مشركين محطايا لييف منع فرمايا ب اس كے بالمقابل بيروايات تھي موجود بين كررشول الله صلے الله عليہ لمے في بعض مشركيين كے برايا قبول فرمائے۔ایک دوایت میں ہے کہ ابوسفیان نے بحالت تمرک آپ کو ایک چڑا ہر بہیں جیماآسے تبول فرال ادر ايك رائ في الك مشيى حريكا بهت يحكمنا مواكيرا بدين شي كياء آفي قبول فرماليا-شمس الانمرواس كونقل كرك فراتين كرميرك زديك سبب بيه كقاكم الخضرت صلى التوعلية للم كو بعن كابديه رُوكردين أسح اسلام كى طوت ماكل بنوكى أمّيد تقى وبال رُوكر ديا اور تعبن كابديه قبول كرفيين استعمسلان موجاني أميرتني توقبول كرليا- (ازعدة القارى تناب الهبة) اورطفيس فيجود ديريه كونني موفى علامت قراد ديا اسكاسب برند تقاكهني كعلفهديه تبول كرنامشرك كاجأز نهي بلكرمب بيرتهاكه أسف ينابديه درحقيقت أيك رشوت كي حيثيت سے بھیجا تھاکہ اسکے ذریعہ وہ حضرت سلیمان علیہ اسلام کے جملے سے محفوظ رہے۔ المَا يَعَا الْمَاوَا الْحُكُو الْبِينَ بِعِرْضِهَا فَتُلَا الْحُكُو الْبَيْنِ الْمِينَ الْمُؤْلِقُ الْمُسْلِينَ أرعف تت من الجري أن الترك به فقر بولا ایک دیاد جنوں میں سے میں لائے دیا ہوں وہ تھے کو پہلے اس سے کہ تو اسلے اپنی جگہ سے بولا وہ شخص حیں کے یاس تھا اور میں اس بر زور آور ہوں معتب وے سومشکر کرے ایسے واسطے اور جو کوئ ٹامشکری کرے سومیرا رب بے بروا کو کوئ والا • بدل د کھلاؤاس عورت کے آگے اسے تخت کا ہم دیکیس بھے یا تی ہے یا ان اوگوں ای ہوتی ہوجن کو جھ

سُورَة النمل ١٠٢٤٣٨



معارف القرآن جر لله شم

فخ المام تفسير

(غرض ده قاصد این برایا کے کر دائیں گیاا ور سارا قعتہ ملبقیس سے بیان کیا تو حالات سے اسکو حضرت شليمان علليرستلام محظم ادرنبوت مح كمالات كالقين بوكياا درحاصر بو نے محے ارا دہ سے اپنے مكات جلی) سلیمان (علیانشلام کو دجی سے یا اورسی پر ندے دغیرہ کے ذریعیراسکا جلنا معلوم ہوا تو انھوں) نے (این دربار دالوں سے) فرمایا کہ اے دربار دالوتم میں کوئ ایسا ہے جو اُس رابقتیں) کا تحت پہلے اس کے كروه لوك مير ب ياس طيع موكر آوي حاصر كردے (سلين كي قيدا ظهار واقعه كے لئے سے كيونكه وه لوك اسى تصديه آدب تقے تخت كا شكانا غالباً اس غرض سے بے كه ده توك ميرام جره بحى د كيولي كيونكا تنابرا تخت اور کھواسکا ایسے خت بہروں میں اس طور کیا جا تک آجا ناکہ اطلاع سک ندم و عا دت بستر ہے سے باہر ہے اگر جنوں کی تسخیر مینی تا ہے ہو تے ہے ہوتب بھی جنوں کا خود بخود تا ہے ہوجانا بھی ایک مجزہ ہی ہے ادراكركسى دىي أمت كى كرامت كے ذريعه ب تو دلى كى كرامت كتى نى كامنجرة موتا ہے اور اكر بغيري اسطم كے ہے تو پھر مجرن و ناظاہرہے- بہر حال ہر طور يريم جرن اور نبوت كى دليل ہے لہذا مقصو ديم ہوگاك اندرونی کمالات کیساتھ ساتھ میر جرزہ کے تمالات بھی دیکھ لیں تاکہ ایمان داطمینان زیادہ ہو) آیک قوی مہل جن نے جواب دیں) عرض کیا کہ میں اس کوائے کی فدمت میں حاصر کر دوں گا پہلے اس کے کہ آئے اپنے اجلاس سے اکھیں اور رکووہ بہت بھاری ہے گئر) میں اس رکے لانے) پرطاقت رکھتا ہوں (اور کھ براقعیتی اورموتیوں سے مزین ہے محرین) امانت دار رکھی) ہوں داس میں کوئ خیانت نہ کر ذیگا) جے باس تماب د اللي بعني تورات كا يا اور وحي كي بهوئ كسي كتاب كاحس ميں الله كے ناموں كي تا شرات م وں اُس کا علم تھا (اقرب میہ ہے کہ اس سے خود سلیمان علایسلام مراد ہیں غوض) اُس رعلم دالے) نے (اس جن سے) کہاکہ (بس تجھ میں تواتی ہی قوت ہے اور) یں اس کو تیرے سامنے تیری آئکھ جهيكنے سے پہلے لاکھڑا كرسكتا ، وں دكيو تكم مجزه كى طاقت سے لا دُن گا، جنا بخيراً بينے حق تعالے سے وعالی دیسے ہی یا کسی اسم الہٰی کے ذریعے سے ادر شخت فوراً سامنے آمد جود ہوا) جب لیمان (علیہ م) فاس كواية دويرود كها ديكها تو (خوش بوكرت كرك طوري كبف لك كريمي بير يردد دكادكا ايكفنل ميكركدمير عائق سيم محرة ظاهركيا) تاكرده ميرى أزمائش كرك كرسي فكركرتا بول يا (خدانخواستر) نامشكرى كرتا بول اور ظاہر بے كم جوشفس كركرتا ہے وہ اين بى نفع كے لئے ككركرنا برانشرتعالی كاكوی نفع بنین) اور (اس طرح) جونام كركرتا بروه و هجي اينايي نقصال كرما ہے اللہ تعالی كاكوى نقصال نہيں كيو بكر) ميرادب غنى ہے كرى ہے (اس كے بعد) سلیمان (علیہ مسلام) نے (بلفتیں کی عقل آز مانے کے لئے) تکم دیاکہ اس (کی عقل آزمانے) کے

19

الما المال ١٤٠٤ الم

معادف القرآن جبلدهم

التے اسے تخت کی صورت بدل دو (جس کے بہت سے طریقے ہوسکتے ہیں مثلاً موتیوں کی عجمیں بدل دو
یا کسی اورطع)ہم دیکیمیں اس کو اسکا بیتہ لگتا ہے یا اسکا آئوفیں ہیں شار ہے جن کو (ایسی باتوں کا)
بیتہ نہیں لگتا (بہلی صورت میں معلوم ہوگا کہ وہ عقلمت ہے اورعقلمت سے من بات سمجھنے کی ڈیا دہ اُمبیرکہ
اورا سے حق کو بہما ننے کا اثر دُور تک بھی بینجیگا اور دوسری صورتیں اس بحق بہمچانے کی اُمبید کم ہے)۔

معارف ومسائل

بلقیس کی حاضری در بارسیمانی میں خوبی نے تاریخی روایات کے حوالہ سے ککھاہے کہ بلقیس کے حاسد خود بھی مرعوب مہم وت ہوکر والیس ہوئے اور حضرت سلیمان علیا سلام کا اعلانِ جنگ شنا دیا تو بلقیس نے ابنی قوم سے کہا کہ بیلے بھی میرایی خیال تھا کہ سلیمان گذیبا کے با دشام ہوں کی طرح با دشاہ نہیں بلکہ اللہ کہ بطرف سے کوئی خاص منصب بھی ان کو ملا ہے اور اللہ کے بادشام ہوں کی طرح بادشاہ نہیں بلکہ جس کی ہم میں ملاقت نہیں۔ یہ کہ کہ حضرت سلیمان علیا سلام کی خدمت میں حاصری کی تیادی سروح کو دی بارہ ہزار سروادوں کو اپنے ساتھ لیا جن کے تحت ایک ایک لاکھا نواج نفیل حضرت سلیمان علیا سلام کو حق تعالی نے ایسار عب و جلال عطافر بایا تھا کہ اُن کی مجلس میں کوئی ابتدار گفت گوئی جرات نہ کہا کہ تا تھا اور احضرت سلیمان علیا دستا تھا وار کے باتو حضرت سلیمان علیا دستا تھا کہ اُن کی مجلس میں کوئی ابتدار گفت گوئی جرات کیا کہ یہ کہا ہے ہوگوں نے جواب دیا: اینی اوٹ را ملکہ بلقیں اپنے ساتھ یوں کے ساتھ آرہی ہیں۔ کیا کہ یہ کیا ہے ہوگوں نے جواب دیا: اینی اوٹ را ملکہ بلقیں اپنے ساتھ یوں کے ساتھ آرہی ہیں۔ بعض روایات میں ہے کہ اسروقت وہ دربار شلیمانی سے ایک فریخ بینی تقریباً بین میں کے فاصلے پرسی کے اسروقت وہ دربار شلیمانی سے ایک فریخ بینی تقریباً بین میں کے فاصلے پرسی کے فی ایک کی فیمان علیا وسلیمان عاملے کی خواطب کرکے فرمایا :

له حضرت مصنّف الله بي فرط ذيا ہے كرياسرائيلي دوايات ملك بين ، جن پر بجرد سنبين كيا جاسكنا ، خاص طور سے بير وايت حداز عفار دور علامية لومي محد فرمانے مح مطابق جھوٹ سے زیادہ قریب ہے ۔ محدثقی ۔ 1ر1 ، ۲۳ ھ

سُورُةِ النمل ١٢٤: شانهٔ کی ہی قدرتِ کاملہ سے ہوسکتا ہے یہ اس کوحق تعالیٰ شانهٔ کی قدرت عظیمہ پر بقین کا۔ برا ذربيه بوسكتا تضاأس كيسائها س يرتعي يقين لازم تفاكهسيهان علليدستلام كوحق تعالي بي كبطرت سے كوي خاص منصبط بسل بحركه الكے باتھ برائسی فوق العادت چیزین ظاہر ہوجاتی ہیں (ذکرہ واختارہ ابت جریه) تَنْبُلَ أَنْ يَّا أَنْحُولِنْ مُسْلِمِينَ ، مُسْلِمِينَ ، مُسْلِمْ كَى جَمَع ہے بس كے لغوى عنى مطبع و فرما فبروا ر ہے ہیں - اصطلاح مشرع میں مومن کوسلم کہاجاتا ہے بیہاں بقول ابن عباس استحان عصفراد ہیں، لعين مطيع د فرما نبر دار كيونكه ملكة لقبين كااسلام لأما اسوقت مايت نهبي ملكه وه حضرت سليمان على ليسلاك كے ص صرور ناور مجيد كفتكو كرسيح ببدسهان موى م جبياك خود قران كريم كيا نيوالي الفاظ سے تابت مؤلا ہے. قَالَ اللَّذِي عِنْنَ كَا عِلْمَ مِنْ النَّكِينِ ، مِينَ كَهَا أُسْ خَصْ فِي سِ كَمِياسَ عَلَم عَمَاكَ بِسِ وَبِيكُون عُص تها ؟ الصحيحان أيك حمال تووه يجه و خلاصة فنسيرس لكها كيا بهكذ و حصرت سليمان عليابسلام مرادين بونكه تماليته كاسب زياده علما يفيس كوحاصل تفاء اس ورتمين ببرسا رامعا مله بطور بجزه كي بواودي مقصود تفا جبیں کو پیغیبرانہ اعجاز کا مشابر ہوجائے اور کوئ اشکال اس معلطے میں نہ رہے ۔ مگر اکثر انگ يرقتاده وغيره سے ابن جريہ نے نقل کيا ہے اور قرطبی نے اسی کوجمہور کا قول قرار دیا ہے کہ پیر س حضرت سلیمان علیاد شلام کے اصحاب ہیں سے تھا۔ ابن آئی نے اسکانام آجسٹ بن برخیا بتلایا، ادريبكه وه حضرت سليمان عليارسلام كاووست تفا-اورلعبس روايات كے اعتبار سے اُن كاخاله زاد بهائ بهي تقاجن كواسم فلم كاعلم تفاجسكا فاصربير بسه كداسكه ما تفالت تعالى سے جو تعيى دُعاكيائے قبول ہوتی ہے اور جو کھے مالنگا جائے الشر کیطرٹ سے عطاکر دیاجاتا ہے۔ اس سے بیرلازم نہیں آتا کہ بليمان عليابستلام كواسم عظم كاعلم نهبن تصاكيونكه بدكيه بعيدينهن كةحضرت سليمان عليالسلام مصلحت آمیں دکھی ہو کہ پیطیم کار نامہ ان کی آمنٹ کے سی آدمی کے ذریعی طاہر ہوجیں سیلیتیں پر ادر زياده الزبرك اسك بجلئ خوديعل كرنے كے اپنے اصحاب كوخطاب فرمايا ك بي كائي كائي كائي كائي كائي فصومالیم) اس صورت میں بیر داقعہ آصت بن برنخیا کی کرامت ہوگی ۔ بجزه ادركرامت بين فرق حقيقت يه بهكر حس طح معجزه مين اسباب طبعبيه كاكوى دخل منهي وتا بلكه وه براه داست عن تعالے كافعل م و تا ہے جيساكه قران كريم بي فرمايا ہى وَمَا سَفَيْتَ اِدْ تَصَيْتَ يَ نكي الله دفي اسى طرح كرامت بي هي اسباب طبعيه كاكوى دخل نهبي به تا برا و راست حق تعالى كى طرف سے كوئ كام ہوجاتا ہے۔ اور منجزہ اوركرا مت دونوں تود صاحب مجزہ وكرا من كے اختیارسی جی بنیں ہوتے۔ان دونوں میں فرق صرف اتنا ہے کہ ایسا کوئ خارق عادت کا اگر محصاحب ی نبی کے ہاتھ مرجو تومعجزہ کہلانا ہے غیرنی کے ذراجیا سکا ظہور ہو توکرا سے کہلاتی ہے اس دا قعرمیں اگریہ روایت صحیح ہے کہ بیعل حضرت سلیمان علیار سلام کے اسماب میں کا صف

عُورة النمل ١٥: ١٠ حادث القرآن جسكة بن برخیا کے دربعیہ واتو یہ اُن کی کرامت کہلائے گی ادر ہر دلی کے کمالات چو ککرانکے رسول میغیرے محمالات كاعكس اوراً نبى سيمت مقادم وتي بن اسليّاً مت كے اوليار اللّه كے ہا تقول حتى كرامتوں كا ظهور بوتار بهاب يسب رسول كمعجزات مين شار بوتي بن -تخت بلقيس كا واقعه كرامت تقى ياتصرف اشيخ اكبرمي الدين ابن عربي في اسكوا صف بن برخيا كاتصرف قراد دباب يتصرف اصطلاح مين خيال ونظرى طاقت استعال كرك جيرت انكيز كام صادر كرنے كے لئے انتعال ہوتا ہے سے لئے نبی یا ولی بلکے مسلمان ہوتا بھی مشرط نہیں، وہ سمرزم جبیا ایک علی ہے جد فیا مے کرام۔ اصلاح مريدين كے لئے مجمی اس كواستغال كيا ہے - ابن عربی نے فرمایا كدا نبيا رعليم السّلام حج نكرُ لفر و نے سے پر میز کوتے ہیں اسلتے مصرت ملیمان علیات الم نے بیرکام آصف بن برخیاسے لیا۔ مگر قرآن کر کا نے اس تصرف کوعِلْمُقِنَ الْکِتَابِ کا نتیجہ بتلایا ہواس سے زجیج اسکوہی ہوتی ہے کہیسی دُعایا اسم فلم كا الرعفا جسكا تصرف كوى واسط فهين وه كرامت بى كے مفہدم ميں واخل ہے۔ ر بايد شبكه ان كاير كهناكه أنا اليفيك به قبك أن يون تا اليك طوق الين الين يرتنت ا حصيكية مع يبليلا دونكا - بيرعلامت اس كى بي كه بيركام أن كے قصد داختيار سے بواجوعلات تصرت کی ہے کیو مکہ کرامت دلی کے اختیاری نہیں ہوتی تواسکا بہ جواب ہوسکتا ہے کہ محن محالتات الله نے ان کویہ اطلاع کر دی جوکہ تم ارا دہ کر دکے تو ہم میر کام اتنی جلدی کر دیں گے۔ یہ تقریر حضرت سیری تعيم الأمت مولانا استرف على تقانوى قدس سرّة كى سے جواحكا القران ميں سورة نمل كى تفسير كھفے كے قت مضرت نے ارشا د فرمائ تھی۔ا درتصرف کی حقیقت ا درائسکے احکام پرحضرت کا ایک لتصرت عربي زبان مين تقاجسكا أردو ترجياحقر ني كلها تقاوه تبرأ كاندشا كع بهوجكاب اور روک دیا اس کوان چیزول سے عل میں پھرجب دیکھا اس کو خیال کیا کہدہ یاتی ہے گہا اور کھولیں 19

خ لاصر توسير

(شیبمان علیدستلام نے بیرسیا مان کرد کھا تھا، پھر لبقتیں بینچی) سوجب بلقبیں آئ تواس سے د کھاکر) کہاگیا (خواہ سلیمان علبیسٹلام نے خود کہا ہو پاکسی سےکہادایا ہو) کہ کیا تھا را تحنت ایساہی ہو؟ دہ کہنے لگی کہ ہاں ہے تو دیسا ہی (بلقیس سے اس طور پراسلئے سوال کیا کہ ہیئت توبدلدی کئی بھی بنی صل کے اعتبارسے تو وی تخت تھا ا درصورت وہ نہ تھی۔ اسلے یوں نہیں کہا کہ کیا یہی تھا را تخت ہے بلکہ یہ کہاکہ ایسایی تھادا تخت ہے اور مقبیں اسکو بہجیان گئی اور اسکے بدل دینے کو بھی سمجھ کئی اسلئے جواب بھی مطابق سوال کے دیا) اور (بیمی کہاکہ) ہم کوگوں کوتواس دا تعہدے پہلے ہی (آپ کی نبوت کی) تحقیق ہو یکی ہے اور ہم (اُسی وقت سے ول سے) مطبع ہو چکے ہیں (جب قاصد سے آپ سے کمالات معام موئے تقے اس معجزہ کی چنداں حاجت مذبھی) اور (چونکہ اس معجزہ سے قبل تصدیق واعتقاد کرلینا کمال عقل كى دليل بي اسلط الشرتعالي استح عاقل بو نع تقرية فرات بي كه في الواقع وه تقي تجهدا دير چندروز تک جوایمان نه لای تووجه آمی بیرے که) اس کو (ایمان لانے سے) غیرالٹرکی عبادت نے دیجی اس کو عادت تھی) روک رکھا تھا (اور دہ عادت اسلنے پڑگئی تھی کہ) دہ کا فرقوم میں کی تھی رئیس جو سب کو د مکیما دی_کا آی کرنے لگی اور تومی عا دات اکثر او قات انسان کے سوچنے سمجھنے میں کرکا دیٹ بن جاتی ہیں گڑ چونكه هاقل تقى اسكة جب تبنيه كى كنى توسبحه كنى ما سيح بدرسيمان عليابسلام ني بير جا باكه علاوه اعجازوشان نبوت وكعلانے كے اس كوظا ہرى شان سلطنت بھى دكھلا دى جائے كارائے كو دنیا كے اعتبار سے عظیم ش مسجعے اسلنے ایک شیش محل بنواکراسکے صحن میں حوض بنوایا اور اس میں یانی اور مجھلیاں مجرکراسکوشیشہ سے ياف ديا-ادرشيشاليهاشفات تفاكه ظاهر نظريس نظرنه آيا تقااور ده حوض البيه موقع برتفاكه كس محل میں جانبوالے کولامحالہ اُس پرسے عبور کرنا پرطے ۔ جنانجہ اس تمام سامان کے بعد) ملفتیں سے كباكباكداس محل مين داخل برو رمكن ب دې محل قيام كه لئے تجويز كيا برو، غرض ده جليس داه مين حض آيا) نوجب اسکاصحن د مکیماتواس کویانی (سے بھراہوا) مجھاادر (چونکہ قرینہ سے یا یاب گیان کیااس لئے ا كے اندر كفتے كے لئے دامن أتھائے اور) اپنى دولؤں بنٹرلياں كھول ديں (اسوقت)مليما(علايمام) نے فرمایا کہ میر تو محل ہے جو (سب کا سب سے صحن)شیشوں سے بنایا گیا ہے (اور بیرحوص بھی شیشہ سے پٹما ہوا ہے۔ دامن اُٹھانے کی صرورت نہیں اسوقت) بلفیس کومعلوم ہوگیا کہ بہاں برد نہوی صنعت کاری کے عجائب بھی ایسے ہیں جو آج سک میں نے آئکھ سے نہیں دیکھے نوائ کے دلیں

سورة التمل ٢٤ : ٣٥ عادف القرآن جسكة ہرطے سے ملیان علیار شلام کی عظمت ہیں اہوی اور ہے ساختہ) کہنے لگی کدا سے میرے پر ورد کا رسی (ایک) اليانفس يرطلم كياتها (كشرك بي مبتلاتي) ادرمين (اب) سليمان (عليالسلام) كي ساتق (مين ال كے طریق ير) بوكر رب العالمين برايان لائ -

معارف ومسائل

ي المقتين ترتب الما علايتلا اليات مذكوره مين للقنس كا دا قداسي زحم بوكياكه وه حضرت سيمان علايسلا ك نكاح مين أكمى تقين كيس حاصر ووكر مشرف باسلام وكمنى التح بعدكيا حالات بين آئے ؟ قرآن كريم فياس سسكوت كيام - ينى وجهم كركسي فض فيجب عبدالشدا بن عَيَيْن سے يوجهاك كياحضرت سيمان علياسلام نے بلبتيں كے ساتھ بركاح كراياتھا تو أنفوں نے فرماياكہ اسكاملہ كسس پر ختم بوكيا أشكنت مَعَ سُينيًا نَ وَلَهُ رَبِ الْعَاكِينَ عطلب يه تَفَاكَةُ وَانَ في يبينَ مَكْ كَا عال بنان كيام اسكے بعد كامال تبلانا قران في جيور ديا تو يمين جي اسى تفتيش ميں يرف كى صرورت بني يا كرابن عساكرنے حضرت عكرمه سدروايت كياب كمداسح بعد ملبتين حضرت شليمان عليايت الام ك بيكاح بين آكمي ادراسكو التحمل يربر قرار رهدكرين وابس بهيريا - برجيني حضرت سيمان عليد سالم وبال تشريف ليجاتي ادر مين روزقيام فرماتي تق حضرت سليمان على إلسلام في السيح لئة يمن مين تين عمده محلّات اليه تيار كرا ديسي تصحب كي مثال و نظير نهي تقي - والترسيحانه وتعالي علم

وَلَقَنُ ٱرْسَلْنَا إِلَى ثَمُودً آخًا هُوْ صِلِيًا آنِ اعْبُنُ وَاللَّهُ فَإِذَا هُمْ اے میری قوم

مارف القران جداد شقم المحال المفل المفل المواد المال المواد المواد المور المفل المواد المور الم

خ لاصرتفيير

09-

سورة النمال ١٠١٢ ٥

عارف القرآن جسلاششم

نے (جوابیں) فرمایا کہ بخصاری (اس) شخوست رکا سبب)التر کے علم میں ہے (مینی تمصارا عمال تعفریه الترکومعلوم بین بیر خوابیان الن بی اعمال پر مرتب بین چینا نجیر ظاہر ہے کہ نااتفاتی مذہوم وہی ج جوى كے خلاف كرنے سے بوتواسكا الزام ايان والوں پر بنيں بوسكتا بلكم ابل كفر بر بردكا -بعض تفاسيرس بيكدان يرقحط مواتها اور تهار ميكفرى مصرت كيهدان شروري تكفيم نهين مدى) بلكتم ده توك بوكه (اس كفرى يدولت) عذاب مِن بتلا بوكن اور (يون تو كافراس قوم مين بهت مقے سکین سرغنہ) اس میتی (معنی جر) میں نوشخص تھے جو سرزمین (معنی سے باہر تک مجی) فسادكياكرتے تقے اور (ذرا) اصلاح مذكرتے تقے (يعنى بعض مفسد اليے ہوتے بي كر تي فسادكي كجه اصلاح كرني مكروه البير نديمقے بلكه خالص مفسد تقے چنانج رایک بادیہ فسا دکیاکہ) انھوں نے (ایک دوسرے سے کہاکہ آبس میں سب (اس بر) اللّٰری سم کھاؤ کہ ہم شب کے وقت صد اوران كم متعلقين (بيني ايمان والون) كوجاماري كے بھر (اگر تحقيق كي نوبت آئ تو) ہم اُن -دارث سے (جو خون کا دعویٰ کرمیکا) کہدیں گے کہ ان محصفاتین کے (اورخودان کے) مارے جانے میں موجود (بھی) نہ تھے (مار او دركنار) اور (ماكيد كے لئے يہ مي كبديں كے كم) ہم بالكل سے ہيں (اور کواه کوئ معائنه کا دو گانهیں بین بات دب دیاجادے کی) اور پیشوره کرکے) اتھوں نے لیک خفیہ تدبیری رکشب کے وقت اس کارروائ کے افغیلے) اورایک خفیہ مرسیمنے کی اوران کوجبری منہوی (دە يەكدايك بىمازىرسى ايك يىقران براط هك يا ادر دەسب دىان يى كىيت رسىدى بالكىموسى كذافى الدرا كمنتور) سود يجيئ اكى شارت كاكيا انجام مواكرتم ني ان كو (بطريق مذكور) اور (بيران كى رباتي) قوم كو (اسمانى عداب)سبكوغارت كرديا (حيكا تصروي آيات بي ب فَعَقَّعُ النَّاقَةَ الْيُفَا خَانَهُمُ الرَّحْفَةُ وَآخِنَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الْمَلِيحَةُ) ويدان عُروريان برش بين التَحْكُمُ مِيبِ (جوابل كمركوملات م سے سفریں طنے بیں) بلاشیراس (واقعہ) ہیں بڑی عبرت ہے وانشمندوں سے لئے اورہم نے ایمان اورتقی والول كوراس قتل سے ميى حبركامشوره مواتفااور عذاب قبرى سے ميى انجات دى -

معارف ومسائل

تِسْعُكُ دُهُ فِطْ لَفُظُ رَهُ فِطْ لَفُظُ رَهُ فَطَ الْمُعَانِ الْمُعَانِينَ اللّهِ مِنْ اللّهِ اللّهُ ال

عادف القرآن جسارست سورة المل ١٩٠٢٥ مطلب بير تقاكهم مسب مِل كردات كما ندهير بي ان يراودان كي تعلقين يرحها بي مادي، مرب كو بلاك كردي، بيمرانع خون كا دعوبدار دارت تحقيق ونفتيش ك الع كه الهوكا توجم يدكهدي كركتم نه توفيان ادى كونه مادا، نه ما رقيكسى كو ديكيها-اوريم اليناس قول بين اسلنے سيح و نظے كردات كا ندهيرك ين يرتعيين كركس فيكس كومادا بمين معدم بنين بوكى -اس بي ايك بات به قابل نظر ہے كه بير كفار اور ان ميں سے بي چيرہ بدمعاش جو فسا ديس معروب سقے بیرسارے کام تمرک کفراور قتل و غار گری کے کررہے ہی اور کوئ فکر نہیں ا مگران کو بھی بیرفکرلاحق م وى كريم جيوط مذبولين يا جهو تے قرار نه دينے جاوي - اس سے اندازه لگائي كرجيو شكيسا بڑا گناہ كدساد ب برائد برائم كے مرتكب بھى اپنى منزل فت نفس ا درعزت كى حفاظت كے لئے جھوط بولئے پر اقدام نه کرتے تھے۔ دوسری بات اس آیت میں یہ قابل غور ہے کہ میں خوان لوگوں نے حضرت صالح عليه السلام كا ولى قرار ديا ہے وہ تو آئنى ابل صالح يس شامل تھا اس كونتل كے ادادہ سے كيوں چھوڑ دیا۔ جواب بیر ہے کہ مکن ہے وہ ولی خاندانی اعتبارسے دلی ہو مگر کافر ہو کافروں کیساتھ ملاہوا ہو صالح علايسلام الداكن مصتعلقين كيفتل كے بعدوہ ان كے جون كا دعوى اسے نسبى تعلق كى بنار پر کرے۔ اور میمی ممکن ہے کہ وہ مسلمان ہی ہو مگر کوئی بڑا آؤی ہوجس کے قتل کرنے سے اپنی قوم ين اختلات وانتشار كانحطره بواسلة اسكوجيور ديا - دانشالم لِوْطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ آتَا نُوْنَ الْفَاحِشَةَ وَٱنْتُحْ ثَبُصِرُوا 3 19 كيركيا يُمّا يرسا وُ تَقَاأَنَ دُرا عُنْهِ وَنُ كَا 19

اورج عوال المسلم المحرون كا ما مرتے ہو حالانكة محداد ہو (كياس كى بُرائ بنہيں كيفتے ، آگے اس يحيائ كا ما مرتے ہو حالانكة محداد ہو (كياس كى بُرائ بنہيں كيفتے ، آگے اس يحيائ كا ميان ہو بينى كيا ہے الله كرتے ہو عورتوں كو جيور آر (اسمى كوئى وجربتيں ہوگئ) جوات كل مراس معاطعيں) تم (محض) جہالت كر رہے ہو (اس تقرير كا) اُن كى توم ہوئى ومن بوگئ الله والوں من برا بجرا المحكى كم ايس ميں كہنے كم يوط (علياسلام) كے توكوں كو (يعينى ان برائيان النيوالوں كو محان كى توم الله بينى الله بينى الله بينى كى تورائ كا الله و (كيونكه) يہ لوگ برائے كا كہ صاف بنتے ہيں سو (جسبم الله تك أو بيت بہنے كئى تو) ہم الله بين الله بينى الله بين الله بينى الله بينى الله بينى الله بينى الله بين الله بينى الله بينى الله بينى الله بين الله بينى الله بين الله بينى الله بين الله بين الله بينى الله بين الله الله بين الله الله الله الله الله الله بين الله بين الله بين الله بين الله بين الله الله الله الله

معارف ومسائل

اس قصتے کے متعلق قرآن میں متعد دجگہ خصوصاً سورہ اعراب میں صروری صابی بنیا ہو بھی ہیں دہاں دکھ لئے جاویں۔ قال نے میں گولاں ، انہیاء سابقین اوران کی اُمتوں کے کچے حالات اوران پر عذاب نے کے واقعات کا ذکر کرنے کے بعد رہ جلہ نبی کریم صلح الشرعکی کہ نحاطب کرنے فرمایا گیا ہے کہ آپ الشرتعالی کا میں کروائی گیا ہے۔ اور کہ آپ الشرت کو ڈنیا کے عذاب عام سے مامون کر دیا گیا ہے۔ اور انبیا رسابقین اورالشرکے برگزیدہ بندوں برسلام بھیجئے ،جمہور مفسرین نے اسی کو اختیاد کیا ہوا واقعی نے انبیا رسابقین اورالشرکے برگزیدہ بندوں برسلام بھیجئے ،جمہور مفسرین نے اسی کو اختیاد کیا ہوا واقعی نے اسکا محاطب بھی حضرت کو طعلیا لیت الم کو قرار دیا ہے۔ اس آیت میں الذی بین اختیافی کے الفاظ سے فاہر رہ ہے کہ انبیاء علیہ السلام مراد ہیں جیسا کہ ایک دو مری آیت میں ہے قرمت کو عنی انگر مسلم نیک اور حضرت ابن عباس سے مراد اس میں جاد رسکول الشرصیے الشرطیبے صحاب کیا ہے اور حضرت ابن عباس کو اختیاد کیا ہے (انر ج عب مرب حمید والبزار وا بن جریو وغیری)

19

حادف القرآن جسا سورة النمل ١٤: ١٢ اكرآيت مين الكن يُن اصطفى سے مراد صحابة كرام لئے جائي جيساكم ابن عباس كى دوايت ميں ہ تواس آیت سے غیرانبیا دیرسلام بھینے کے لئے اُنھیں علیاسلام کہنے کا جواز تما بت ہوتا ہی-اس کا کی يورى تحقيق سورة احزاب بي آيت صَلُواعلَيْهُ وَسَكِمُواكَى تفسيرين آئے كى انشارالله تعالى -ستله واس آنیت سے خطبہ کے آواب می ثابت ہوئے کہ وہ اللہ تعالی کی حمداورانبیار طبیحالتالام يردرود وسلام مسترقع موناجات - رسول الترصيال الترعيم ادرصحابركرام كة عام خطبات بي يي مهول دیا ہے بلکہ ہراہم کام کے شروع میں الشرتعالی کی حداور دسول الشرصلے الشرعکت کم میر درو دروسرلام ون وسحب سے (كن افي العج) وَيْ خَلَقَ السَّمَا لِي وَالْحَرْضَ وَ انْزَلَ لَكُورُ مِّنَ السَّمَا وَمَا يَوْ الْ لَكُورُ مِّنَ السَّمَا وَمَا يُؤَلُّ ادر أرمين ادر أناد ديا تفاد المائة آسمان سياني بيمرا كات بعد إِنْ ذَانَ مُعْجَدِهُ مَا كَانَ لَكُوْ أَنْ ثُنْكِلُتُوْ الشَّجُومَ الْحَيَالِكُ لَ هُوْ قَوْمُ يَعْدِ لُوْنَ ﴿ أَمَّنَ جَعَلَ الْأَرْضَ قَلَ اعترى كوى بين وه لوگ راه سے مطتے إلى بعلاكس فے بنایا زمين كو B. J. & 2/2 EU1 & 121 第一次多時代以前一天四月 میں بدوہ اب کوی اور حاکم ہے استر کے ساتھ کوی نہیں بہتوں کو ان یں صَيْءَ اللَّهِ مَّعَ اللَّهِ قَلْنَالُو مَّا تَنَ كُرُونَ ﴿ اب كوى عاكم ب الشرك ساتة تم بهت كم دهيان كرت بو بتانا م اندهروں میں جنگل سے اور دریا کے اور کون چلاناہے ہوائیں حوشجری لانے وابیاں اسک يهد ابكوى حاكم بهاد الترك سائق التربيت اويهاس سعبكو شرك بالتاتي

كَخَلَقَ ثُمَّ يُعِينُ لَا وَمَنَ يَرُوزُقُكُمُ وَمِنَ اللَّهَ کون برے سے بنایا ہے عمراس کو دُہرائے گا اور کون دوزی دیتا ہے تم کو آسمان سے اور زمین سے

وخسال صرتيفيير

(پچھلی آیت کے آخر میں فرمایا تھا تے اللہ محکولا آمتا کھٹٹر کے تن اللہ بہتر ہے یا وہ بت وغیرہ جن کو یہ لوگ المنٹر کاشر کے ٹھہاتے ہیں، پیشرکین کی بے وقوفی بلکہ کے فہمی بڑ تکمیرتھی، آگے توجید کے دلائل کا بیان ہے، اے تو کو یہ تبلاؤکہ) وہ ڈات (بہترہے) حس نے اسمان اور زمین کو بٹایا،اور اس نے اسمان سے یانی برسایا پھراسے ذریعہم نے رونق دار باغ اگائے (دریز) تم سے تو ممکن بنہ تفاكمة أن (باغوں) مے درختوں كوا كاسكو (بيستكراب بتلاؤكم) كيا الله كے ساتھ (شرك عبادت مونے کے لائق) کوئ اور معبود ہے (مگر مشرکین بھر بھی نہیں مانتے) بلکہ یہ الیے توگ ہیں کہ (دوسروکی) خدا کی برابر طهراتے ہیں (اچھاپھراور کمالات مسکر تبلاد کہ بیٹت بہتر ہیں) یا وہ ذات میں نے میں کو رمخلوق کی) قرادگاہ بنایا اور اسے درمیان درمیان نہریں بنائیں اوراس (زمین) کے (تھیر اِ نے کے) لئے بہاڑ بنا سے اور دو دریاؤں کے دومیان حرز فاصل بنائ (جیسا سورہ فرقان میں مَنْ الْبِحَوْيِنَ آجكا ہے يك كراب بتلاؤكم)كيا الله كے ساتھ (فدائ كامٹر كي ہونے كے لائق)كوى اور مبودى ومر مشركين نهي مانت) بلكه أن مين زياده توراجيم طرح) مجصته بهي نهي (اجها بهرادر كالات مشتکر تبلاد که میرست بهترین) یا ده ذات جو بیقرار آدمی کی دُعامنتا ہے جب ده اُس کو بیگار تا ہے ادر (اس کی) مصیبت کو دُود کر دیما ہے اور تم کو زمین میں صاحب تصرّت بناتا ہے (پیٹ نکراب تبلا کوکر كياالتدكے ساتھ (مشركيد عبادت بدنے كے لائق)كوى اورمعبود ہے دميری تم لوگ بہت ہى كم يا در تصتے برد (اچھا برور كمالات مشتكر شلاد كريت بہتر ہيں) يا وہ ذات جوتم كوشكى اور درماكى تاركىيوں ميں رسته سُوجه آنا ہے اور جو ہوا وُں كوبارش سے پہلے جوز بارش كى اُميد دلاكرداؤكو) خوش كرديتي مين (يرصنكراب بتلاك كياالشرك القراشركي عبادت وفي كالأن)كوى اورمعبود كج (ہرگرنہیں) بلکہ اللہ تعالی ان کے شرک سے برتر ہے (اچھا پھردوسرے کالات واحسانات اسک تبلاؤ که بینت بهترین یا وه ذات جو تخلوقات کواوّل بار بیداکرتا ہے کھراس کو دوبارہ بیدا كرديگااور جوآسمان اور زمين سے (ياني برساكراور نبائات بيكالكر) تم كور زق دتيا ہے (يا يم اب تبلاؤكم) كيا التركيسائق (متركب عبادت د نے كائق) كوئى اور معبود ہے (اور اگر وه پیشنکر تھی کہیں کہ ہاں اور معبود بھی مستحقِ عبادت ہیں تو) آپ کہیئے کہ (ایجھا) تم (ان کے استحقاقِ عبادت بير) ايني دليل بيش كرداكرتم (اس دعوى بير) سيخ برو-

090

سورة النمل ۲۲:۲۷

معادف القرآق جيله ششم

معارف ومسائل

آمَّن يُجِيبُ الْمُضْطَرُّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْءَ ، المُضْطَعُ ، اصْطرار عَتْنَ عِيسى صرورت سے مجبور فیلے قرار مونے کوا ضطرار کہا جاتا ہے! در وہ بھی ہوتا ہے جب اسکا کوئ یار و مردگار ا درسهادانه بود اسك مضطرو في من بي ونياك سهادون سي مايوس موكر خالص الترتف الى ى كوفريادان يجوك كى طوت متوجر مضطرى يقسيرشدى، ذوالنون مصرى مهل بن عبدالله وغيره سے نقول ہے (قطبی) رشول اللہ صلے اللہ علیہ تم نے ایسے خص سے لئے ان الفاظ سے دُعاکڑی ہدایت ذبائے ٱللَّهُ وَرَحْنَكَ ٱرْجُوْ وَلَا تَكِلُّونَ إِلْنَهْ مِنْ فَالْحِينِ وَآصِلِهُ لِى شَارِنَ كُلَّذَ لَكَ الْبَالْ آلْتَ ٱلْتَارَجَةِ) يا الترس تبرى وحمت كاأمتيد واربول اسلة مجه ايك لخطرك لئة بهي ميري ابية نفس كمي حواله خركيجة اور آب ی میرے سب کا مول کو درست کردیشے ای کے سواکوی معبور بہنی (قطبی) مضطرى دُعااخلاص كى بِناربرضرورتبول بوتى بي امام زطبى نے فرما ياكه الله تعالى فيصفطى دُعاقبول ترفے کا ذمیر کے لیا ہے اور اس آیت میں اسکاا علان بھی فرما دیا ہے جس کی اصل وجہ میہ ہے کہ وُنیا محسب سهادون سے مایوس اور علائق سے نقطع ہوکر صرف التر تعالیٰ ہی کو کارسار ہم اور عارف مرماية افلاس بهادرا دلترتعالى كزريك اخلاص كالرادرجرب وهبركسي بنره سرياياط اً وه مُومن بویا کا فر، اورمتقی بردیا فاسق فابر اسکے اخلاس کی برکت سے اسکی طرف رحمت من متوجہ ترد جاتی ہے جیساکہ تن تعالی نے کفار کا حال ذکر فرمایا ہے کہ جب بیرلوگ دریا میں ہوتے ہیں اور ى سب طرف سے موجوں كى نبييط ميں آجاتى ہے اور يہ كويا آئكھوں كے سامنے اپنى موت كو كفرا ديكيم ليتية بي اسوقت بيرلوك يورك اخلاص كے ساتھ الله كو يكارتے بي كراكر بين اس مصیبت سے آپ نجات دیدیں تو ہم سنگر گزار ہونگے بیکن جب اللہ تعالیٰ ان کی ڈعاقبول کرکے خصى يرك آتے ہيں توب ميشرك بي بتلا ، وجاتے بين دَعُواا لله محوّلوبين كة اليّ بن (الى قوله) فكتا تَجِلُ هُمْ إِلَى الْيَرِيِّا ذَاهُمْ يُشْرِكُ فِي ايك يح صريت مين رسول التُرْسِك الشُّر عليهُ مَ كاارشاد ب كرتين دُعائين صرور قبول وي بين حس مين سي شك كي گنيائش نهين، ايك منظام كي دُعا، دوسرے مسافر كى دُعا، تيسر عباب جواين اولا د كے لئے بر دُعاكرے - قرطبى نے اس حدیث كونقل كركے فرماياكدان تينوں دُمادُ ن میں بھی دہی صورت ہے جو دُعا مضطرمیں ادر رکھی گئی ہے کہ جب کوئ مظلوم دُنیا کے سہاروں ادر مددگاروں سے ماہیس ہوکر دفع ظلم کے لئے اللہ کو پیکارتا ہے وہ بھی مضطری ہوتا ہے اسی طرح مسافرهالتِ سفرمیں اینے خویش وعزیز اور بهرر دول عکساروں سے الگ بے سہارا ہوتا ہے۔ اسی طرح با پاولاد کے لئے اپنی فطرت اور بیدی شفقت کی بنار پر مبھی بر دعا نہیں کرسکتا بجز اسکے کہ اسکا

ئ

دل بالكل توط جائے اور اینے آپ کو صیبیت سے بچانے کے لئے اللہ کو بیکارے - امام حدیث آجری تحضرت ابوذر رض روايت سيفقل كياس كهنبى كريم صلى الشرعكي لم في فرماياكه حق تعالى كايار شادي ك ينظلوم كي دُعاكويهي رُ دنهي كرف كالرجيه وه سي كا فرك منه سي بو (فقطبي) الركسي ضطريا مظلوم يا مسافر دغيره كوتعبى ييحسوس بهوكه أنحى دُعا قبول نهبي بوئ توبدكمان ادر مايوس نه برد بعض ا د قات دُعا قبول تو بوجاتی ہے مرکسی حکمت وصلحت ربانی سے اسکاظرور دیریں ہوتا ہے۔ یا بھروہ اینے نفس کو مولے کہ اسکے اخلاص اور توجہ الی الشریں کمی کوتا ہی رہی ہے۔ والشام

المناعمة عن في الشهوت والدَرْضِ الناب الآوالله اور زمین س جھی دیوی جیزی سے النے فيرنين ركفتا جوكوى ب آسمان يَشْعُرُونَ آيًّا نَ يُبْعَثُونَ ﴿ بَلِ الْأِرَ لِوَعِلْمُهُمْ فِلَ الْجَعَ اُن کو خبر بنیں کب جلائے جائی کے بلکہ تھک کر گڑیا اُن کا فکر آخرت کے بارے المَهُ فِي شَاكِ مِنْهَا الْبَيْنَ هُوْ مِنْهَا عَبُونَ ﴿ وَقَالَ الَّهِ بِنَ سکے وہ اس سے اندھے ہیں ستكريس سياجب أم يدجائين مثى ادرجار عباب دادے كياتم كور مين سے تكاليس كے وعن تا من المحري و ا ما و تا من قصل ان مان آ کاہے اسکا ہم کواور ہارے باب دادوں کو پہلے سے کھم بھی ہیں جو تحقادی بیشه بر جانتے جی ہو بھنی وہ چیز جس کی جلدی کم

معارف القران جرائ من المنافع من المورد من المنافع الم

خ لاصرتفيير

البطاآیات اوپر بوت کے بعد توحید کا ذکر ہو جکا اسکے معادیدی قیامت اور آخرت کا ذکر ہے جگی طرف دلائل توحید میں اس قول سے اجمالی اشارہ بھی ہوا ہے (فُھ کی چیکی) اور چو نکہ کھا رائی تک نزیب کی ایک وجہ یہ بھی قراد نیتے تھے کہ قیامت کا معین وقت پُوچھے پر بھی نہیں جلایا جاتا اس سے ملام ہوتا ہے کہ قیامت کوئی چیز ہے ہی نہیں ۔ بعنی وہ عدم تعیین کو عدم وقوع کی دیس بناتے تھے اسلئے اس میں موں کو اس بات سے مشروع کیا ہے کہ علم غیب اللہ تعالی کے ساتھ محصوص ہے فرایا قُلُ کی بھی اس میں اُن کے شیمان کے شیمان کے شیمان کے ساتھ محصوص ہے فرایا قُلُ کی بھی اس میں اُن کے شیمان کے شیما جواب بھی ہوگیا) قیامت کی تعیین کا علم اللہ کے ساتھ محصوص ہے دران کے شیمان کے ساتھ محصوص ہے دران کے شیمان کے شیمان کے شیمان کے شیمان کے ایک انگاد پر تشخیری ہوگیا کہ بھراس انگاد پر آپ کی تھی ہے وکر کھوری کی جواس تہدید کے مساتھ اس کے وکر کھوری کی تعمیل کے متعلق اس کے ایک شیم کا جواب کے (فکی تھو کو کو کا کہ کو کو کی تعالی دیتے کو کی کھوری کیا گھوری کی تعالی دیتے کو کو کا کھوری کہا گھوری کی تعالی دیتے کو کا کھوری کہا ہے کہا تھوری ترجمہ سے ظاہر ہوگا ۔ جیسا تھر رہر ترجمہ سے ظاہر ہوگا ۔

(یه توگ بوقیامت کا وقت شبلانے سے استح عدم و قوع پر استرلال کرتے ہیں استے جوابیں)

اپ کہدیجے کہ (یہ استرلال فلط ہے کیونکہ اس سے زیا دہ سے زیا دہ آنا لازم آیا کہ مجھ سے اور تم سے اس تعیین کاعلم فائب رہا سواس میں اسی کی کیا تخصیص ہے غیب کی نسبت تو قاعدہ کتی ہے ہے ۔

یہ ہے کہ) جتنی مخلوقات آسمانوں اور زمین (پینی عالم) میں موجود ہیں (ان میں سے) کوئی بھی غیب کی بات نہیں جانتا ہج الشرتعالی کے اور (اسی وجہ سے) ان (مخلوقات) کو یہ خبر (سی) نہیں کہ دہ بر دوبارہ زندہ کئے جاویں گے (بعینی الشرتعالی کے اور اسی وجہ سے) ان (مخلوقات) کو یہ خبر (سی کی بہت کے کھ اور بارہ زندہ کئے جاویں گے (بعینی الشرتعالی کو تو بے تبلائے سیم نہیں ہوتا واقع ہوتے ہیں کہ سیم معلوم نہیں موتا واقع ہوتے ہیں کہ بات یہ ہو کہ سیم معلوم نہوا کہ کو اپنی میں کہ بات یہ ہو کہ الشرتعالی کو اپنی حکمت سے معمل منہ ہوئے سے یہ لازم نہیں آتا کہ دہ چیز موجود ہی نہیں ۔ بلکہ بات یہ ہو کہ الشرتعالی کو اپنی حکمت سے معمل منہ ہوئے سے یہ لازم نہیں آتا کہ دہ چیز موجود ہی نہیں ۔ بلکہ بات یہ ہو کہ الشرتعالی کو اپنی حکمت سے معمل منہ ہوئے سے یہ لازم نہیں دیا گیا مگر اس سے عدم و توزع کیسے لازم آگیا اور یہ مرم معلم استحدی نوس میں امر مشترک ہے تیکن ان کھا دمنگریں میں صرف بھی نہیں کہ دہ بالتعیین تیا ۔ بلا بالتعیین تیا تھا کہ دہ بی نہیں کہ دہ بالتعیین تیا تھا کہ دہ بی نہیں کہ دہ بالتعیین تیا ۔ بالتعیین تیا تھا کہ دہ بی نہیں کہ دہ بالتعیین تیا ۔

20: 12 divious 09A

معارف القرآن جسلاشهم والمصنف

كونهيں مانتے) بلكر اس سے بڑھ كريہ بات ہے كہ) آخرت كے بادے يں رخود) ال كارفض ع (یا لوقوع ہی) نیست ہوگیا (لینی خود اس کے دقوع ہی کاعلم نہیں جوتعیین کے علم نزموتے سے بھی اخدم) بلدراس سے بڑھ کر ہے کہ) ہولگ اس (کے وقوع) سے شک میں ہیں ، بلکہ راکس سے بڑھ کریے ہے کہ) یہ اس سے اندھے ہے ہوئے ہیں رہینی جیسے اندھے کو راستہ نظر نہیں آتا اسلئے مقصور تک بہنینا مستبعد ہے اسی طرح تصدیق بالآخرت کا جو ذریعہ ہے بعین دلائل صحیحہ یہ لوگ انتہائ عناد کیوجہ سے ان دلائل میں غور دنامل ہی نہیں کرتے اس لئے وہ دلائل ان کو نظر نہیں آتے جس مے طلوب تک پہنے جانے تی اُسید ہوتی بیس بیٹنک سے بھی بڑھ کرہے کیونکے شک والا بعض اوقات ولائل میں نظر کرے رفع شک کردیتا ہے اور بدنظر بھی نہیں کرتے) اور (کس نشنیع علی الکفار مے بعد آگے ان کا ایک انکاری قول نقل فرط تے ہیں کہ) یہ کا فریوں کہتے ہیں کہ کیا ہم لوگ جب (مركم) خاك موكنة اور (اسى طع) بهاد برشي توكيا (بيمر) بم (زنده كرك قبرون سے) بڑا اے جادیں گے اسکا توہم سے اور ہمارے بڑوں سے (محمد کی انتشر عکتیں کمے) ہیلے سے وعدہ بوتا چلاآیا ہے دکیونکہ تمام انبیار کا پہ تول شہور ہے تیکن نہ آج تک ہوا اور نرکسی نے بتلایا کہ ب ہوگا اس سے علوم ہوتا ہے کہ) یہ ہے سندیا تیں ہیں جو اگلوں سے نقل ہوتی جلی آئی ہیں آپ بديجة كه رجب اس سمامكان بر دلاكعقلبها وروقوع بردلاً بِي نقلبه جابجا با ديا رتم كو سُناديَّ ائے میں تو تم کو تکذیب سے باز آنا چاہئے در نہ جو اور مکذ بین کا حال مواہے کہ عداب میں گرفتا رمو کے دېي تنهادا حال پوگا-اگران کي حالت ميں کچھ شبه بوتو) تم زمين ميں جل بھر كر ديكيمو كه مجرمين كا انجام كيا محدا كيونكمان كے بلاكم بونے اور عذاب آنے كے آثار ابتك باقى تھے) اور داكريا دجود ان مواعظِ بلیغہ کے بھر مخالفت پر کمرب تدرین تو) آپ ان برغم ند کیجے اور جو کھو بیشرارتیں کردہے ہیں اس سے دل تنگ مذہر جنے کہ اور انبیار کے ساتھ تھی یہی معاملہ ہوا ہے) اور (فَالْ سِابُرُوالَةُ ين اور اسكامثال دوسرى آيات مين جوان كو دعيد عذاب سنائ جاتى ب توجو بمه دل مين تصديق بنیں اسلے) یہ توک بے باکانہ) ٹوں کہتے ہیں کہ یہ وعدہ (عذاب وقبرکا)کب ہوگا اگرتم سےمور تو بتلادی آب کہدیجیے کہ عجب بنہیں کرمیں عذاب کی تم حبلدی محادیہ واس میں سے کچھ تھا اسے میا مى آلگا بوادلاب تك جوديم بوري بي تواس كى دجريه بيك، آب كارب لوگول يردايا) یرافضل دکھتا ہے (اس دحمتِ عامر کی وجہسے قدر سے دہات دے رکھی ہے) ولیکن اکثرادی لا بات رہ سے رہنیں کرتے ذکہ تا خیر کوغینم تے جھیں اور اس مهلت میں عق کی طلب کریں اور کس کو تبول رئیں کہ عذاہے نجات ابدی حاصل ہوبلکہ بالعکس انکار اوربطوراستہزارہے جلدبازی کرتے ہی) ادر رید تاخیر حویکه جمعلوت ہے اس لئے بید نہ مجھیں کہ ان افعال کی بھی سزای نہوگی کیونکہ اپ

ي

099

ارف القرآن جسلة

سورة النمل ٢٤: ٥٤

سے دیب کوسب خبرہ ہے جو کچھ آئ کے دلوں میں مخفی ہے اور میں کو وہ علائیہ کرتے ہیں اور (میہ صرف علم غداوندی ہی کہ انسان اور ہیں نہیں بلکہ دفتر خداوندی میں لکھا ہوا ہے جس میں کچھ ان ہی کے افعال کی تحفیص نہیں بلکہ) اس مان اور زمین ہیں ایسی کوئ تخفی بجیز نہیں جو لوح محفوظ میں نہ ہو (اور و فتر خداوندی ہی گئی چیز میں محفوظ ہے اور جب مخفی چیز ہیں جن کوکوئ نہیں جا نتا اس میں موجود ہیں تو ظاہر جیزی تو بدرجۂ اولی موجود ہیں ۔ غوض انسا عالی محفوظ ہیں اور وہ اعال خود مزا کے مقتصفی بھی میں اور مزا کے واقع ہونے بر سب انبیاء علیہ مالیا کی دفتر ہیں بھی محفوظ ہیں اور وہ اعال خود مزا کے مقتصفی بھی میں اور مزا کے واقع ہونے بر سب انبیاء علیہ مالیا کی ہوئی اخبار سا دقہ بھی تفق ہیں ۔ بھر یہ بچھنے کی کیا گئیا اُسٹ ہے کہ مزا نہ ہوگی ، البتہ دیر ہونا حکن ہے جہا بچہ لعبض مزایئ ان سکرین کو دنیا ہیں بھی ہوئیں جیسے قبط آسان فی تو دنیا ہیں بھی ہوئیں جیسے قبط آسان فی تو تو تو ہوں گئے۔ اور کی و قبر و بر ذخ میں موں گئی جو کچھ دُور نہیں ، اور کچھ آخرت میں ہوں گئی۔ اور کچھ قبر و بر ذخ میں موں گئی جو کچھ دُور نہیں ، اور کچھ آخرت میں ہوں گئی۔

معارف ومسائل

قُلُ لَا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمَوْتِ وَالْاَرْضِ الْعَيْبُ اللهُ اللهُ ، رسُول الشرصاء الشرعية م کوحکم ہے کہ آپ کوکوں کو تبلادیں کہ حبتی مخلوق اسمانوں میں ہے جیسے فرشتے ادر حبتی مخلوق زمین میں ہے جیسے بنی آدم اور جبتات وغیرہ ان میں سے کوئی بھی غیب کو نہ بیں جانتا ہج والشر تعالیٰ کی مخصوص صفت ہے فی پوری وضاحت اور صراحت کے ساتھ یہ تبلایا ہے کہ علم غیب الشرتعالیٰ کی مخصوص صفت ہے حب میں کوئی فرشتہ یا نبی ورسول بھی سر کی نہیں ہوسکتا ۔ اس سئلہ کی صروری تفضیل سورہ انعام کی آئیت نمبر ۵۹ کے تحت صفحہ ۲۵۲ جادہ بر آپنی ہے ہے سے علاوہ اس موضوع پراحفر کا ایک مستقل رسالہ بنام کشف الرب عن علم الغیب احکام القرائ (عربی) کا جزور بنکر شائع ہو چکا ہے ۔ اللہ علم اس کی مراجعت فریا سکتے ہیں ۔

٢

سورة النمل ١٤٤ ٩ تَ مِلْ الْقُوْانَ يَقْصُّ عَلَى بَنِي الْمُرَاءِ يُلَ آكُونَ الَّذِي نَيْ بن اسرائیل کو بہت م يختلفون ﴿ وَإِنَّهُ لَهُنَّاى وَرَانَّهُ لَهُنَّاى وَرَحْمَةُ لِلنَّهُ وَمِنِينَ ﴾ اور بیشک ده بدایت ماوردشت بهایان دانول کے داسط Un 4 1 5/07 00 تك يَقْضَى بَنْ مُهُمْ بِعِكْمَةً وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ (فَتُوكَلُ عَ رب أن مين فيصله كريطًا ابني حكومت سے اور وائ ہے أبر دست سب كھ جلنے والا سوتو بھروسہ الشرير بيت تو ہے صحح

بينك يهقران بني اسرائيل يراكثر أن باتوں ركع حقيقت كوظا بركر تاہيج س ميں وہ اختلات كرتے بي اور وہ ايمانداروں كے لئے (خاص) ہدايت اور (خاص) رحمت ہے (ہدايت باعت با طاعات واعمال محاور رحمت یا عتبارتمرات و نتائج کے) پالیقین آپ کارپ اُن کے درمیان ایے محم سے (وہ علی) فیصلہ (قیامت کے دن) کر سکا (اُسوقت معلوم ہوجادیکا کہ دبن حق کیا تھا اور با ى)، توا يسے لوگوں بركياا فسوس كياجائے) اور وہ زبردست علم والاہے (برون اس كى متيت اے کوئی کسی کو صرر منہیں بہنچا سکتا) تواک التاریر تو کل رکھنے (التاری مدد صرور ہوگی کیونکہ)

مهَارف ومسائل

بهلى آمات مين حق تعالا كى قدرت كامكه كومختلف مثالوں سے ثابت كر كے بير مات ثابت كردى كئى بىك ترقيامت كا وقوع اوراسيس مردون كا دوباره زنده بونا عقلاً ممكن بي اسي كوئ عقلى أنسكال ننبي عقلى امكان تحسائقه اسكا صرور واقع دونابيرا نبيا عليهم الشلام اور اسمانی کتابوں کی نقل سے تابت ہے اور سی خبر کاصیح اور ثابت ہونااس برموقو ن ہے کہ اسكانا قل مخبراور روايت كرنے والاصادق اور ستيا ہو۔ اسلتے اس آيت بيں يہ بيان فرمايا ہے كه اسكا مخبرقران ہے اور اُسكا مخبرصادق ہونا نا قابلِ اَلكار ہے ، یہا نتک كه علمار بني كه اُسك جن مسكائل ميں باہم سخت اختلافات رکھتے تھے اور وہ حل نہرد تے تھے۔ قرآن حکیم نے اُن مسائل میں محاکمہ کرمے سے فیصلوں کی ہدایت فرمائ ہے اور بیزطاہرہے کہ علمار کے اختلافیں محاكمها ورفيصليكرف والاان سب علمار سے اعلم اور اعلیٰ ہونیا ضروری ہے اسليئة قرآن كا مخبوساد

سورة النمل ۲۲:۱۸ مارت القرآن جسكية موتا واضح بوگياء اسكے بعدرسول الله صلے الله عليه كم كاستى كے لئے ارشاد فرما يا كيا ہے كه آپ ان كى مخالفت سے تنگدل نمہوں ، اللہ تعالی خود آی کا فیصلہ کرنے والا ہے آی اللہ ریجروسہ رکھیں میونک الشرتعالي كي نصرت والدادي كيها ته إدراك كاطراق حق يرجونا يقيني ب-اتَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْنَ وَلَا نَسْمِعُ الصَّمِّ السُّمِّ اللَّهُ عَاءِ إِذَا وَلَوْ الْمُدَوِينَ فَ البته تو بنین سناسک مردون کو اور نبین سناسکتا بهرون کو این پیکار جب لویس وه بیشر پیمیر وَمَا آنْتَ وَهُلِى الْعُنِي عَنْ صَلِيَّهِ وَ إِنْ تُسْمِعُ إِلَّا مَنْ بَيْثُ مِنْ اور نہ تو د کھلا سے اندھوں کوجب دہ راہے بچلیں تو تو سناتا ہے اس کو جو یقین رکھتا ہو بالمنت فَهُمْ مُسْلِمُونَ ١٠ یماری باتوں بر ، سووہ علمبردار آپ مُردوں کونہیں مُنا سکتے اور مذہبروں کوا پنی آواز مُنا سکتے ہیں (خصوصاً) جبکہ وہ بیٹھ پھیرا طِدى اور سرات اندھوں كوان كى كراہى سے (بحاكر) رستردكھانے والے ہي، آت توصرف اُن ميكوشن سے ہیں جو ہماری آیتوں کا لیتین رکھتے ہیں (اور) کھروہ مانتے (بھی) ہیں۔ بعار الدر الكريم صلى المترعكي لم تمام انسانون كرساته جوشفقت بعدر دى كاجذب ركعت تقامكا تقاسناتها كرسب كوالتركابيفام سناكرج لتمس بجالين جولوك اس بيغيام كوتبول مذكرتي تواكيكوسخت صدمه بنحتا تقاادرآب السيخلين بوتے تقييسكى كى ادلاداسكى ئى خلات آك يى جارى بو اسلية قراق نے جا بجار شول الله وسلے الله عليه م كاستى كے لئے مختلف عنوانات اختيار فرائے ہيں - سابقہ آيات مين وَلا تَعْوَنْ عَلِيهُ فَو لَا تُكُنُّ فِي ضَيْتِي ، اسى الساركا ايك عنوان تقا - مذكور الصدر آيت مين بجى تستى كامضمون دومرك انداز سے بيان فرمايا ہے كه آپ كا كام پنيام حق كو بينجا دينے كا ده آپ يُوراكر يحي بي حن توكون في اس كو قبول نبي كيااسين آب كاكوى قصورا وركوتا بي نبين بس يرافي كري بكلهوه اپنى صلاحيت قبول بى كو كھو چكے ہيں - ان كے كم كرده صلاحيت مونے كو اس آيت بي قرال كريم نے تین مثالوں میں ثابت کیا ہے۔ اوّل یہ کہ ہے لوگ تبولِ عق کے معاملہ میں بالکل مُردہ لاش کی طرح ہیں جو كى بات شى كركوى فائده نبس أشھاسكتے - دومرے يہ كدان كى مثال أس بهرے آدمى كى ججو

r

1-P

سورة النمل ٢٤: ١٨

بہرا ہونے کے ساتھ بات مندنا بھی نہیں جاہتا بلکہ جب کوئ مُنانا جاہے تواس سے بیٹھ مؤرکر بھاگتا ہے۔ تیسرے یہ کمان کی مثال اندھوں کی سی ہے کہ کوئ ان کو را سسنہ دکھانا بھی جاہے تو دہ نہیں کھ سکتے ان تین مثالوں کا ذکر کرنے کے بعد آخر میں فرمایا۔

[ف نشریم الآ من یکوری بایدتا کا می و المین ایرای کا می ایرای کا می ایت ای و صرف الیسیمی توگوں کو سناسکتے ہیں جو الشرکی آیات پرایمان لائیں اور اطاعت تبول کریں ۔ اس پور کے ضمون میں یہ بات بالکل واضع ہے کہ اس جگر شننے شنانے سے مراد محدث کا نون میں آواز پہنچا نہیں بلکم واداس سے وہ سماع اور شنا ہے جو نفخ بخش ہو ۔ جو سماع نافع شہواس کو قرائ نے مقصد کے اعتبار سے عدم سماع سماع اور شنا ہے جو نفخ بخش ہو ۔ جو سماع نافع شہواس کو قرائ نے مقصد کے اعتبار سے عدم سماع اور شنا ہے جو نفخ بخش ہو ۔ جو سماع نافع شہواس کو قرائ کو کوئ کوئ ساسکتے ہیں جوایان لائیں۔
سام اور سمائی آخر آئیت میں یہ ارشاد کہ آپ تو صرف ان کوگوں کوئ شاسکتے ہیں جوایان لائیں۔
اگر اسمیں شنانے سے مراد محف اور کے کافن تک آواز پہنچانے اور اُن کے شننے جواب بنے کی تہادی فلاف واقع ہو جانا کیو فکہ کافروں کے کافن تک آواز پہنچانے اور اُن کے شننے جواب بنے کی تہادی فلاف واقع ہو جانا کیو فکہ کافروں کے کافن تک آواز پہنچانے اور اُن کے شننے جواب بنے کی تہادی فلاف واقع ہو جانا کیو فکہ کافروں کے کافن تک آواز پہنچانے اور اُن کے شننے جواب بنے کی تہادی فردہ کافروں کے کافن تک آب مردوں کو نہیں سے اس کے مورک نافع ہو کہ تھام نے کہ جبیبے مردے آگر کوئ بات حق کی مشن بھی لیں اور اسوقت وہ حق کو قبول کرنا بھی چاہیں تو یہ ان کے بعد برزرخ یا محتر میں تو سبھی کافر مسکرا بیان وعل صافی کی تمنا بئی کریں گے مگروہ کوئ کلام کے قبول ہونیکا وقت نہیں ۔ اس سے اس ایسان وعلی نافع ہوں کی گراہے کوئ کلام کے قبول ہونیکا وقت نہیں ۔ اس سے اس آئیت سے یہ بات نابت بنیں ہوتی کوئروں کوئی کلام کوئی سے تاب نابیں ؟

سئل سماع اموات یسئلکد مردکوئ کلام من تحقیق پنہیں اُن مسائل میں سے ہے بین خود صحابیراً ا کابا ہم اختلاف دیا ہے حضرت عبدالشرابی عرب اسماع موتی کو ثابت قراد دیتے ہیں اور حضرت ام المونین صدیقہ عالیت اس کی نفی کرتی ہیں۔ اس کے دوسر مے سحابہ و ثابعین میں بھی دوگر وہ ہو گئے بعض اثبات کے قائل ہیں بعض نفی کے۔ اور قرال کریم میں میضمون ایک تواسی موقع پرسورہ نمل میں آیا ہم دوسر سورہ روم میں تقریباً انہی الفاظ کے ساتھ دوسری آیت آئ ہے اور سورہ فاطر میں میضمون ان الفاظ سے آیا ہے وَصَاکَ اُنْتَ وَمُسْتَوَمِع اللّٰ فَی اِنْ فَاللّٰ کَا اَنْ فَی اِنْ وَلُوں کو نہیں سُنا سکتے ہو کہ قروں ہیں ہیں۔ ان تینوں آیتوں میں یہ بات قابل نظر ہے کہ ان میں سے سی میں بی یہ بہنی فر مایا کہ مردے میں نہیں سکتے بلکہ تینوں آیتوں میں نفی اس کی گئے ہے کہ آپ نہیں سُنا سکتے۔ مینوں آیتوں میں سی تعبیر عنوان کو اختیار کرنے سے اسطوٹ داضح اخارہ نکانا ہے کہ مردوں میں شینے کی صلاحیت تو ہو تھی ہو معارف آلقران جساله مستهم) المصطفاف مرائم ماختیارخود این کونهیں سنا سکتے۔ مرائم ماختیارخود این کونهیں سنا سکتے۔

اُن تینوں آیتوں کے بالمقابل ایک چوکھی آیت جوشہدار کے بارے بیں آئ ہے وہ یہ تابت کرتی ہو کہ شہدار کو اپنی قبروں میں ایک نماص قسم کی زندگی عطام وتی ہے اور اس زندگی کے مطابات رزق میمی انکو ملتا ہے اور اپنے بیما ندہ متعلقین کے متعلق بھی منجا نب اسٹران کو بشارت سنائی جاتی ہے آیہ۔ یہ ہے وَلَا شَحْفَ بَنَ الَّذِیْنَ قَلْسِلُوْ اِنْ سَبِینِ اللہ اَمْوَاتًا بَالُ اَحْیاء عَرِیدُو وَ مَنْ وَرَ

باتی ده سختا ہے ملکہ شہرار کے معاملہ میں اسکے وقوع کی شہادت بھی یہ آیت دے دہی ہے۔ رہا یہ

معاملہ کہ بیٹھ توشہیدوں کے ساتھ محضوص ہے دوسرے اموات کے لئے نہیں، سواسکاجواب بیہج کہ اس آبیشنے کم از کم اتنا تو تابت ہوگیا کہ مرنے کے بعد بھی روحِ انسانی میں شعور وا دلاک اور

اس دُنياكيسائقه علاقه باقى ره سختا ہے جن طرح الله تعالی نے مثیرار کو بیراعزاز نجشا ہے کہ ان کی

ادواع كاتعلق ابحے اجسا داورتبور كے ساتھ قائم رہتا ہے اسى طرح جب السُّرتَعالیٰ جاہی تودورے

اموات كويدموقع د مستحقة بي محضرت عبدالله بن عمره اجوسماع اموات كقائل بين انكاية قول

بھی ایک تیجے حدیث کی بنار پرہے جو حصرت عبداللہ بن عرضے اسناد سے کے ساتھ منقول ہے وہ بیرہے۔

مصححا عن ابن عمرين

اس سے بی بیز تابت ہواکہ جب کوئ شخص اپنے مُردہ سلمان بھائی کی قبر پر جاکرسلام کرتا ہے تو وہ مردہ اسکے سلام کوئسنتا ہے اور جواب دیتا ہے اور اُس کی صورت یہ ہوتی ہے کہ اللہ تعالی اُس وقت اس کی دُوح اس کونیا میں والیس بھیجدیتے ہیں۔ اس سے دوبا تیں ثابت ہوئیں اول یہ کہ مُردے مُن سکتے ہیں دوسر سے یہ کہ اُن کا سننا اور ہما دائر نانا ہمارے اختیاد میں بنیں البتہ الله تعالی جب چاہیں سنا دیں ، بیں دوسر سے یہ کہ اُن کا سننا اور ہما دائر نانا ہمارے اختیاد میں بنیں البتہ الله تعالی جب چاہیں سنا دیں ، جب نہ چاہیں نہ نشنائی مسلمان کے سلام کرنے کے وقت تواس حدیث نے بتلا دیا کہ حق تعالی مُردہ کی دوج واپس لاکر اسکو سلام سنا دیتے ہیں اور اس کو سلام کا جواب دینے کی بھی قدرت دیتے ہیں۔ باتی گئے مالات و کلمات کے متعلق کوئی قطبی فیصلہ بنہیں کیا جا سکتا کہ مُردہ ان کو شنے گایا نہیں ۔ اس کئے باتی حالات و کلمات کے معرفی وغیرہ کی تحقیق یہ ہے کہ انتی بات توا حا دیث سیجے اور قرآن کی آئیت مذکورہ سے ثابت ہے کہ معنی اوفات میں مُردے زندوں کا کلام شنتے ہیں کیکن یہ تابت نہیں کہ ہم مُردہ د

سے شننا ثابت ہے وہاں شننے برعقیدہ رکھاجائے اورجہاں ثابت نہیں وہاں دونوں احتمال ہیں اسلئے ندقطعی اثبات کی گنجائش ہے ندقطعی تھی می روالٹہ سبحانۂ و تعالی علم

ين نهين بلكه الشرتعالى من كوچاستے بين سنا ديتے بين إس كئے جن مواقع ميں حديث كى روايات صحيحه

اس مسئلہ کی محمل تحقیق میں احقرنے ایک تقل دسالہ بنام محمیل الجود سبماع اہلِ القبود کھھا ہر جواحکام القرائن سورہ روم حزب فامس میں بزبان عربی شائع ہوا ہے جس میں آیات ور وایات اور اقوال سلف و خلف اور شرح الصدور و غیرہ سے بہت واقعات دنحاظبا اہلِ قبور کے نقل کئے گئے ہیں۔ اہلِ علم وہاں دکھے سکتے ہیں عوام کے لئے یہاں اسکا صروری خلاصہ کھا گیا ہے۔

خ لاصترفسير

ادرجب وعده (قیامت کا) ان (نوگون) پربورا و نے کو ہوگا (بینی قیامت کا زمانہ قربے بنوگیا)
توہم اُن کے گئے زمین سے آیک رعجیب) جانوز لکالیں گے کہ وہ اُن سے بابتی کردگیا کہ دکافر) نوگ ہمادی دینی انٹرتعالی کی آئیوں پر (خصوصاً اُن آئیوں پرجوقیامت کے متعلق ہیں) یقین نہیں لاتے مقے درگراب قیامت آ بہنچی اُس کی علامتوں میں ایک علامت میرانطہ ورجی ہے)۔

معارف ومسائل

دابة الادض كيا بهادر منداح دمين حضرت خديفه واست بهكر دسول الشرف ا

مورة النمل ٢٠: ٢٨ عارف القرآن جسلد خروج يأجوج مأجوج (۵) نزول عيني عليالتلام (۲) د قبال (۹،۸،۷) تين خسوف، ايم غرب یں دوسرامشرق میں تمیسراج روة العرب میں ہوگا(۱۰) ایک آگ جو قعر عدن سے بحلے کی ادرسب لوگوں كوم ينكاكرميدان حشركيطرف كي أيكى حس مقام يرلوك دات كزاد في كائے تھم فيك يراك كى تُصرِحات كي يحران كو المحط كي (كلذا رواه مع وابل السنن من طرق وقال التر فدى عديث من على) اس صديث سے قرب قيامت مين زمين سے ايك ايسے جالؤر كا ليكانا تابت إداجو لوكوں يوباتيں كيے كا - اور انعظ داتية كى تنوين يں اس جالؤر كے عجيب الخلقت ہونے كى طوٹ بھى اشارہ يا يا كيا، اور يه مجى كه به جا اور عام جا اورون كى طرح توالدو تناسل كے طربق يربيدا نہيں ہو كا بلكه ا جانك زمين خيك كا اوربیربات بھی اسی حدیث سے بچھ میں آتی ہے کہ دابۃ الارض کا خردج بالکل آخری علامات ہی سے ہوگا جس کے بعد میت جلدتیامت آجائے ۔ ابن کتیر نے بچوالہ ابوداؤد طیانسی حضرت طلحین عمر ا يك طويل حديث بين روايت كياب كريد دابة الارض مكه محرمه بين كوه صفات بيك كا اور اين مرس متی جھاڑ تا ہوا مجد حرام میں جراسود اور مقام ابراہیم کے درمیان بہنے جا کرگا لوگ اس کو دیکھر بھا گئے لکیں کے ایک جاعت رہ جائے گی یہ دابہ اُن کے جبر دن کوستاروں کی طرح روش کردے گا-استح بعدوه زمين كيطرت بحك كاء بركافر كے جربے يركفر كانشان لكا ان كا اك كاس كى بيرسے بعاك نه سے کا مرموں وکافر کو بہجانے گارابن کثیر) ادرسلم بن تجاج فے حضرت عبدالله ابن عمران ردایت کیا ہے کرمیں نے رسول اللہ صلے اللہ علیہ مے ایک طریث سنی تھی جس کومیں کھی کھوتا ہیں وہ یہ ہے کہ دسول انشرصلے انشر عکی کے فرمایا کہ قیامت کی آخری علامات میں سے پہلے آفتا ہ كاطلوع مغرب كى طرف سے موكا اور آفتاب بلند ہونے كے بعد دابۃ الادض بحطے كا ان دونوں ملامو میں سے جو میں پہلے ہوجائے اسے فور اُبعد قیامت آجائے گی- دابن کتین شيخ جلال الدين محلى نے فرما يا كه خروج دابہ كے وقت امر بالمعروت اور نبى عن المنكر كے احكام منقطع ہوجائیں گے اور اسکے بعد کوئ کا فراسلام قبول نرکھے گا۔ میضمون بہت سی احادیث وآثار سے مستنبط و قبا ہے (مظری) ابن کثیر وغیرہ نے اس جگہ دابتہ الارض کی ہیئت اور کیفیات وحالات کے متعلق مختلف دوایات نقل کی ہیں جنیں سے اکثر قابل اعتما دنہیں اسلتے حبتنی بات قران کی آیات ا دراحا دیث صحیحہ سے ثابت ہے کہ بیرعجیب الخلفت حالؤر ہو گا۔ بغیرتوالد د تناسل کے زمین سے بیکے گا۔ اسکا خروج مکہ کرمہیں ہوگا بھرساری دنیا میں بھرسے گا۔ یہ کا فرد مومن كوبهجانے كا-ادرائن سے كلام كريكا ـ بس اتنى بات يرعقيده ركھا جائے ، زائدكيفيات و حالات كى محقیق فینیش شرصروری ہے شداس سے کھ فائدہ ہے۔ ر بإب معامله كدوا بنذالارض توكول سے كلام كھے كا اسكاكيا مطلب وبعض حضرات فرماياك

بيا

سورة ألتمل ١٠:٠٠ مُسكاكلام بيي بوكاجو قران مين مُركوري النّالات كَانْوَا بِالْبِينَ الدِّيْوَقِنُونَ ، يَهَارُ وه اللّه كلاف توكون كوسنام كارببت سي لوك آج سيبليها رى آيتون يرتقين نه ركفته تصاور مطلب يه مو كالداب ده وقت آكيا ہے كدائن سب كويقين موجائے كالكراسوقت كايقين سرعاً معتبرنہيں ہوكا-ادر حضرت ابن عبائل، حس بصرى، قتا در سيمنقول م ادرايك روايت حضرت على كرم الشروج رئ بھی ہے کہ بیر دانتہ توکوں سےخطاب اور کلام کرے گا جس طبے عام کلام ہوتا ہے۔ ١ بن کٹیں عَيْنَكُونَ كُلِّ أُمَّةٍ فَوْجًا رَحْنَ يُكُنِّ بُ بِالنِنَا فَهُمْ يُوزَعُو اورجس دن گھیر کالائن کے ہم ہرایک فرقدیں سے ایک جماعت جو جھٹلاتے تھے ہماری باتوں کو پھرا حَتَى إِذَا جَمَاءُوقَالَ آكَنَّ بِنَتْحَ بِاللِّينَ وَكَوْ يَجْيَطُوْ إِنْكَامِا بانتك كرجب حاصر موجائي فرما يكاكيون جفتلاياتم فيميرى بالون كوا ورندا يحكفين تقادى بحريس يابولو كُنْ وَتَعْمَلُونَ ﴿ وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ عَاظَلُمُوْ افْهُمُ لَا يَنْطَقُونَ ا در برا چی اک بربات اسواسط کراخون فشرارت کی تقی افره بر بربات اسواسط کراخون فے واآتاجعكنا اليل ليسكنو إفيه والتهار مبصرا ان ہنیں ویکھتے کہ ہم نے بنائ رات کہ اسیں جین حاصل کریں اور دن بنایا و مکھنے کو بن القو م بيومنون (١٠) و كوم بنف رقي نشانیاں وں اُن لوگوں کے لئے جو یقین کرتے ہیں۔ اورجبدن بھونکی جائے گی صور تو گھرا جا-جو کوئ ہے اسمال میں اور جو کوئ ہے زمین میں مگر جس کو انظر چا ہے ملے آئیں اسکے آگے عاج ی اور توریکھے بہاڑوں کو سکھے کہ وہ جم رہے ہیں اور وہ چلیں £ 3. £ 16 du 513

محسلات كفيسير

جس دن (قرول سے زندہ کرنے کے بعد) ہم ہرآمت میں سے (بعنی امم سالقہ میں سے بھی اوراک اُمّت یں سے بھی) ایک ایک گروہ اُن لوگوں کا (حساب کے لئے) جمع کریں کے جومیری آیوں کو جھٹلایا رتے تھے (پھراُن کوموقف کی طرف حساب کے لئے رواندکیا جا میگا اور جو مکہ سرکٹرت سے ہو مگاسکے) ان كو (طلنے ميں مجھيلوں سے اطلنے كے واسطے) روكا جائے گار تاكہ آگے يجھے نہ رہی سب ساتھ ہوكرموقف حساب كى طرف جليس - ممرا داس سے كثرت كابئان ہے كيونكه برطے مجمع ميں عادثة ايسا ، و تا ہے خواد ردک ٹوک ہویا ندہو) بیانتک کرجب (چلتے چلتے موقف میں) حاصر ہوجادیں کے تو (حسابشروع ہوگا اور)انته تعالیٰ اکث و فرماویگاکه کیاتمنے میری آیتوں کو جشلایا تھا حالا تکتم اُن کو اینے احاط علمی میں بھی بنیں لاتے رجے بعد غور کھنے کا موقع بلتا اورغور کرے اُس پر کھررائے قائم کرتے، مطلب سے کرشنتے ہی بلا تدبر و تفكر، ان كى تكذيب كردى او تكذيب ي يواكتفانهين كيا) بلكه (يا د توكر واسحے علاوه) اوركھي كيا کیا کام کرتے ہے (مثلاً انبیار کوا دراہل ایمان کو ایزائی دیں جو تکذیب سے بھی بڑھ کرہے۔ اس طرح ادر عقائدِ کفریہ ادرنسق وقجور میں مبتلا رہے) اور (اب وہ وقت ہے کہ)اُن پر (بوجہ قائم ہوجانے جُرم کے) گلا (عداب کا) بورا ہوگیا (مینی سزا کا استحقاق تابت ہوگیا) بوجداس کے کد (دُنیامیں) انھوں نے (بُری برسی) زیادتیان کی تقین (جن کاآج ظهور ثابت ہوگیا) سو (چونکه ثبوت توی ہے اسلئے) وہ لوگ عذر وغیرہ سے متعلق) بات بھی شرکت کیں گے (اور معض آیات بیں جوان کاعذر میش کرنا مذکورہے وہ ابتدار میں ہوگا بھربعید اقامت جبت کوئی بات نہ کہ سکیں گے۔اور بیر لوگ جوا مکانی قیامت کے مشکر ہیں تو حماقت محضہ ہے سیو بمکہ علاوہ دلائلِ ثقلبیرصا د قد کے اس پر دلیل عقلی تینی تو قائم ہے مثلاً) کیا انھوں نے اس رِنظر نہیں کی کہ بہنے رات بنائ تاکہ ہوگ اس میں آلام کریں (اور بیہ آرام مشابہ موت کے ہے) اور دان بنایاجس میں دعیمیں بھالیں رجو کہ موقوت ہے بیداری براور وہ مشابہ حیات بعدالموت کے ہے يسى) بلاشبراس (روزانه خوامے بيداري) ميں (ائڪان بعث ير اوران آيات کے حق بو فے يرجواس يردال بن) براى دليلين بن (كيونكه موت كي حقيقت يه ب كه روح كا تعلق جم س زائل بوطاع) ادرحیات ثانیه کی حقیقت یہ ہے کہ یہ علق بھرعود کرائے، ادر نیند کھی ایک جیثیت سے زوال ہے اس تعلق کا اکیونکه نیزمیں بیعلق ضعیف او حالات اور صنعف جھی اوتا ہے جبکہ اسکے مرات وجودین کوئ مرتبرزائل ہوجائے، اور بیداری اس زائل شدہ مرتبہ وجود کے عود کا نام ہے اس لئے دونوں میں تشابہ تام ہوگیا۔اور نیند کے بعد بیداری پر اللہ تعالیٰ کی قدرت روزانہ مشاہرہ میں آتی ہے توموت کے بعد زندگی بھی اُس کی نظیرہے وہ کیوں اللّٰہ کی قدرت سے خارج ہوگا،اور

2

عَنُ وَرَقَ الْمَثَالُ ٢٤٠٠ وَ الْمُثَالُ ٢٤٠ وَ الْمُثَالُ ٢٠٠ وَ الْمُثَالُ لِمُثَالُ ١٠٠ وَ الْمُثَالُ لِمُثَالُ الْمُثَالُ لِمُثَالُ الْمُثَالُ الْمُعِلَالُ الْمُثَالُ لَامِثُولُ الْمُثَالُ الْمُثَالُ لَامُعُلُ الْمُثَالُ ال

یہ دلیل عقلی ہرخض کے لئے عام ہے گر باعتبارا نتفاع کے) ان (ہی) لوگوں کے لئے (ہے) جوایمیان ر تھتے ہیں کیونکہ وہ غور وفکر کرتے ہیں، اور دوسرے ترتر نہیں کرتے اور کسی منتجہ پر بہنجینے کے لئے نظر و فکر خروری ہے اسلئے دوسرے اس سے منعقع نہیں ہوتے) اور (ایک واقعہ ہولناک اس خشر مذکور سے بہلے ہوگا جسکا آگے ذکرہے اُس کی ہیبت بھی یا درکھنے کے قابل ہے) جس دن صور میں مجھونک ماری جا دسے کی (ینفیرُ ادلی ہے اور حشر مُدکور نفخر "نامبیر کے بعد تقا) سوجتنے آسمان اور زمین میں (فرشتے اور ا دمی دغیرہ) ہیں سب گھبرا جا ویں گے (اور تھرمرجا دیں گے ادر جومر تھے ہیں ان کی روسیں بیہوسٹس موجاوي كى مكرحبى كو فداچا ہے (ده اس كھبراسك سے ادر موت سے مفوظ رہے گا۔ مُرادان مے حسب حدمیث مرفوع جبرتیل و میکائیل واسرافیل و ملک لوت و حاملان عرش ہیں بھران سب تی تھی ہدون اٹر تفخنہ دفعات ہو جا دیگئے۔ کذا فی الدرالمنتؤریسورۃ الزمر) اور (دُنیا بیں جیسے عاد ﷺ كدجس سع كهبرام ث اور در وقاب اس سع بهاك جاتے بين دبان الله تعالى سع كوئى بھاكت سع كا بلکہ)سب کے سب اسی کے سامنے دیے جھکے حاضر دہیں گے (بہانتک کہ زندہ آدمی مُردہ اورُجیے بہوش ہوجاویں گے) ادر (نفخہ کی پرتغییر د تا شیرجا نداروں میں ہو گی ادر آگے بے جان جیز دنمیں جؤتا تیر ہوگی اسکا بیّان ہے وہ بیرکہ اسے نخاطب تو (اسوقت) بہاڑوں کو الیبی حالت میں دیکھ رباب س سے (ان کے ظاہری ایک کام مے سبطادی انظریں) تجھ کو خیال ہوتا ہے کہ بدر ہمیشائوں ى رى يى كے اور سى اپنى جگہسے جنبش نہ كري كے حالانكه (اسوقت ان كى يہ حالت ہوكى كه) ود بادلوں کی طرح (مخلحل اور خفیف اور اجزاء منتشرہ ہوکر فضائے آسمانی بیں) اڑے اڑے مجر بیجے وكقولة تعالى وبنشت إلجيبال بنشافكانت هباء مثاثة مثاث اوراس يرتحه تعجب مرناحا سيكراي ثقيل ادر بخت چيز كايه حال كيسے و جاويگا، وجه يه كه) يه خدا كا كام و گاجس نے برجيز كو (مناسب اندازیر) بنارکھا ہے (اور ابتداء میں سی شئی میں کوئ مضبوطی مذبھی کیونکہ خود اس شئے کی ذات ہی منه تقى، ئير مضبوطي كى صفت تو بدرجهُ اولى نه تقى سوجيب اس نے معدوم سے موجود اور صنعيف سے توى بنايا اسى طبع اسكاعكس سبحى كرسكتا ہے كيو بكه قدرتِ ذاتيه كى نسبت تمام مقد درات كيسا تق يحال ہے، بالخصوص جو چيزي ايك دوسرے كى نظير اور مشابر بي ان مي توزيادہ واضح بي- إى طرح دوسرى مخلوقات توية اسكان وزمين وغيره مي تغير عليم بونا دوسرى آيات مين مذكورس ويهمكت الدَّعْنُ وَالْحِبَالُ فَلَكَّنَا دَكَّةً وَالْحِلَةً فَهِوْمَهُ إِن وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ وَانْشَقَّتِ السَّكَاءُ الْحَ يَصِرا سَكَا بعد تفخهُ ثانيه وكاحس سارواح موش مين آكرا بينا بدان من تعلق موجا وي كي اوربوراعالم شرير سے درست ہوجا دیکااورا ویرجو مشرکا ذکرتھا وہ اسی تفخیرتا نبیر کے بعد ہوگا۔ آگے ہال مقصولین فیامت میں جزار دسزا کا بیان ہے۔ بیس اوّل اسکی تمہید کے طور پرا رشا دے کہ) پیفتنی بات ہے

ف القراق ج

معادف القرآن جسكيرشث

4-9

سُورَةُ النَّمُ لَل ١٠٠٤٩

کدالٹرتعالی کو تھا دے سب افعال کی بُوری خبرہے (جوجزا، وسزا کی پہلی سرّط ہے اور دوسری شرائط کو اللہ تعالیم کا استفال دلائل سے ثابت ہیں، بیس مجازات کا تھی ہونا تواس سے ظاہر ہجاور بھر حجمہ یہ تقتی ہے و توع مجازات کو اس سے جزاء وسزا کا واقع ہونا تابت ہوگیا، تمہید کے بعدا کے اسکا و توع محا اسکے قانون اور طریقیہ کے بیان فراتے ہیں کہ) جو تفق بیجی (بعینی ایمان) لادیکا سو (وہ ایمیان لانے پر جس اجر کا سختی ہے) استخف کو اس (نیکی کے اجر فدکور) سے بہتر راجی بلے گا اور وہ لوگ بڑی گھیرائی سے اس دوزامن ہیں رہیں گے (جبیسا کہ سورہ انبیار ہیں ہے لائے جو تھی الفین کا الائے ہو الائی اور چو شخص بری (بعنی کفر ڈور) کا ویکی اتو وہ لوگ اور وہ لوگ اور میں گیا رہے جا ویں گے (اور اُن سے کہا جادے گا کہ) تم کو تو اُنہی اعمال کی سزاد یجار ہی ہے جو تم (دُنیا ہیں) کیا کرتے تھے (یہ عذاب بے دجہ نہیں)۔

معارف ومسائل

فی در کاما کی درج می کوگ ساتھ ہو جا دیں اور ادبین حضرات نے ورج کے حصر ہے کہ اگلے حصر ہم کو اوکا جا گیا تاکہ چیجے دہے ہوئے کوگ ساتھ ہو جا دیں اور ادبین حضرات نے وزع کے سنی بہاں دفع کے لئے ہیں بینی ان کو دھتے دے کرموقف کی طرف الایا جا کیکا وکٹے جی جی ایم اشارہ کو الشرفیالے کی آیات کی تکذیب خو دا یک بڑا جرم وگناہ ہے خصوصاً جبکہ سوچنے سمجھنے اور غور و فکر کرنے کی طسرت توجہ کئے بغیری تک تکذیب کرنے لگیں تو یہ مجم دوہ را ہو جانا ہے۔ اس سے حاج ہوا کہ جو لوگ غور و فکر کرنے کی طسرت کوجہ کے بغیری تک ذیب کرنے لگیں تو یہ مجم دوہ را ہو جانا ہے۔ اس سے حاج ہوا کہ جو لوگ غور و فکر ہونے کو مند یا سکیں آئن کی نظر دفکری کی طرف ہوئے تو الکا مجم کسی تقدر ہلکا ہوجاتا ہے آگر جب اولٹہ کے وجود اور تو حید وغیرہ کی تکذیب پھر بھی کھر و صفال اور دائمی عذا ب سے ہوجاتا ہے آگر جب اولٹہ کے وجود اور تو حید وغیرہ کی تکذیب پھر بھی کھر و صفال اور دائمی عذا ب سے رکھوٹی کی کوئی ہیں انہوں ہے اس سے اگر جب السند کے وجود اور تو حید وغیرہ کی تکذیب پھر بھی کھر و صفال اور دائمی عذا ب سے رکھوٹی کی کوئی ہیں انہوں ہوگئی نے السند کوئی السند کوئی السند کوئی السند کوئی السند کی خوات کے صفے گھرانے اور برلیت ان وربیت ان وربیت کے صفے گھرانے اور برلیت ان وربیت ان وربیت ان اور دربیت ان وربیت ان وربیا ہوگئی نے السند کوئی السند کوئی السند کوئی کی مدیر انے اور برلیت ان وربیت وربیت و می می می وربیت ان وربیت و بی وربیت و می کی وربیت و بی وربیت و بی

وَرَوْمَ مِینُفَحَ مِینَ المَّوْدِ دَفَقَرَاعَ مَنَ فِی السَّمَا اِنَّ المَّمَا اِنِ المَّمَا اِنَّ المَّمَا اِنَ المَّمَا اِنَ المَّمَا الْمَا الْمَالِمُ الْمَا الْمَا

مکارف القرآن جب لرشتم مکارف القرآن جب لرشتم ریہ تو تو حید کا تھم ہوا) اور (بھو کو) یہ (بھی تھم ملاہے) کہ میں (تم کو) قرآن بڑھ بڑھ کرمناوُں (بینی احکام الہیہ کی تبلیغ کروں جو نبوت کے بوازم ہیں سے ہے) مو (میری تبلیغ کے بعد) جو شخص راہ یرآ دیگا

معارفت وميال معارفت وميال

ربالسماوات والاوض ہے محکومہ کی تصبیص اس جگہ ای عظمت شان اورالد تھا کے زدیک مجرمہ ہے۔ الشرتعالی توربالعالمین اور
ربالسماوات والاوض ہے محکومہ کی تصبیص اس جگہ ای عظمت شان اورالد تھا کے زدیک مرم و محترم ہونے کا
اظہارہے ۔ لفظ حرم تو مح سے شنق ہے ایکے معنے مطلق احترام داکرام کے جائی اوراس احترام واکرام ہے اسے جو خاصل حکام مشرعیہ بحکرمہ اورا وہن حرم سے تعلق ہیں وہ بھی اسیں داخل ہیں مشلاً ہوتھی حرم میں
پناہ مے وہ ما مون ہو جاتا ہی ۔ حرم میں تی تی سے انتقام لینا اورقت کرتا جائز نہیں اوراوش حرم میں
نیاہ مے وہ ما مون ہو جاتا ہی ۔ حرم میں تی کا شاجائز نہیں مان ہی کا بیان آیت و تی دکھی کی کا تی اللہ میں کہ کہ تعدید کی اللہ تعدید کی تعدید کی اسے اس کی کا کہ کا تی اللہ تعدید کی کا تھی اللہ تعدید کی کا تھی کہ کہ کہ کہ کہ کہ کہ اسے ان حالات میں بھی سلسلاس تعدید کا اور ہوں کے اسے ان حالات میں بھی سلسلاس تعدید کا اور ہوں کے اور ہوں کے اور ہوں کے اور ہوں کے اسے ان حالات میں بھی سلسلاس تعدید کا اور ہوں کے اور ہوں کے اسے ان حالات میں بھی سلسلاس تعدید کا ورکھا ادر کی اسے ان حالات میں بھی سلسلاس تعدید کی اور کھا ادر اس جنگ کو کسل دور میں بھی تعدید کے تقریباً چا ایس صفیات کھے گئے۔

دھا ادر اس جنگ کو کسل دور میں بھی تعدید کے تقریباً چا ایس صفیات کھے گئے۔

سُورَةُ القَصَصَ

شروع الترك نام سے جو بے عد مهر بان نہایت رہم والا ہے لمبين ﴿ نَتُلُوا عَلَيْكُ مِنْ تُلُوا عَلَيْكَ مِنْ تَمَّا المرضي المناهمة يم سناتي بي ته كو مجها حوال فرعون كالمحقيقي ال لوكوں كے واسطجويقين كرتے ہيں فرعون عرف دبا تفا دیاں کے لوگوں کو کئی فرقے کمزود کرد کھا تھا ایک فرقہ کو ان یں ذیح کرتا تھا آن کے بیٹوں ادر زنده ركتاعقا أى عدرتون كو ادر ہم چاہتے ہیں ينشك وه تها خرابي دالنه والا میں اور کردیں آن کوسروالہ ان كري ان لوكول بديو كرور موت براك عق مك ردين أن كوقائمٌ مقام اور دکھا دیں اور جمادیں ال کو ملک نَ وَجُنُودَهُمَا مِنْهُ وَ قَاكَا نُوْ الْجُنْ رُوْنَ ﴿ وَ اَوْجَيْنَ اور باما ن كو اورا يحرف كرون كو الحكم القر معرس جير كا ال كو خطره عقا آنَ آرضِعِيْةِ قَازَاخِفْتِ عَلَيْهِ فَآلِفَيْهِ فَي وی کی ماں کو کداس کو دو دھ بلاتی رہ محصر جب بچھ کو ڈر ہواسکا تو ڈالدے اس کو دریا یں الانتخارن التاكاك التوه الدك وجاعلوه من المرسلين مذخطرہ کر اور نہ عملین ہو ہم کھر بہنچا دیں گےاسکویری طون اور کردیں گے اُس کو رسولوں سے

مورة القصص م یا استی بہن کو جیچھے جلی جا بھردیکھتی رہی اس کواجنبی ہوتے كَىٰ تَقَتَّرَ عَيْنُهَا وَلَاتَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْنَ اللَّهِ حَتَّىٰ وَلَكِنَّ کیطرف کو شفیری رہے اسی آ مکھ اور عملین نہ ہو اور جالے کہ الترکا وسرہ تھیک ہے الله في المنافق الله بهت لوگ بنیں طلستر (اس كمعنى الله ي كرمعلوم بين) يه (مضايين جواب يروى كروا تين) آب اضع (بینی قران) کی آیتیں ہیں (جن میں اس مقام بر) ہم آپ کوموسلی (علیالتلام) اور فرعون کا کچھ قصتہ معیک تھیک پڑھ کردینی نازل کرکے) سُناتے ہیں ان لوگوں کے دنفع کے) لیے جوکہ ایمان رکھتے ہیں ركيو مكرمقا صدقصص كيني عبرت اوران سينبوت يرات دلال وغيره يدموسين بي كيسا تقاضي خواه اسوقت مومن مول باا مان كا الاده ركھتے بوں اور اجال تواس قصته كا برہے كه) حسون

7.8

ورة القصص ١٨ و القران جلد مرزمین دمصر) میں بہت چڑھ گیا تھاا دراس نے دہاں کے باشندوں کو مختلف میں کررکھا تھا (اس طرح كة بطيون بيني مصرى توكون كومعزز بناركها تقااه رسبطيون بينى بني اسسرائيل كونسيت اورخوا اكرركها كقه جسكا آكے بيان ہے)كەن (باشندوں) ميں سے ايك جاعت رئينى بنى اسرائيل) كا زورگھٹاركھا تھ (اسطرع سے کہ)ان کے مبٹوں کو (جونئے بیدا ہوتے تھے جاماً دوں کے ہاتھوں) ذیح کرا تا تھا الدان کی عورتوں (مینی روکیوں) کوزندہ رہنے دیتا تھا (تاکہ ان سے خدمت کیجاوے و نیزان سے اندلیٹے تھا) واقعی وه برامفسد تها (غرض فرعون تواس خیال میں تھا) اور ہم کو مینظور تھاکہ جن کوگوں کا زمین (مصر) می زور گشایا جار با تقایم ان بر (دُنیوی و دینی) احسان کری اور (وه احسان بیرکه) ان کو (دین میں) بیشوابنادین اور (دنیامین) ان کو (اس ملک) مالک بنائی اور (مالک ہونے کے ساتھ) انکور ملک مجى بنائي تعنيى) زمين ميں ان كو حكومت ديں اور فرعون اور بامان اوران كے تا بعين كوان (بني النيك) کی جانب وہ (تاکوار) دافعات د کھلائیں جن سے وہ بحاد کررہے تھے (مراد اس سےزدال ملطنت و بلاكت ہے كداسى سے بحاد كرنے كے لئے بن اسرائيل كے بچوں كواكي تعبيرخواب كى بناريرجو فرعون نے و كيها تقاا ورنجوميون نے تعبير دى تقى قتل كرر باتقا دكن افى الدرالمنظور بس بمارے قضا، وقدر مے سامنے ان تو گوں کی تدبیر کچھے کام سزآئ، ہا جمال قصّہ کا ہوا) اور (تفصیل اس کی اول سے پیج ى جب موشى على بيتلام اسى ترامنوب زمانه ميں بيدا ہوئے تو) ہم نے موسى (على بستلام) كى دالدہ كو به تک ان کا اِخفا مکن مرد) تم ان کو دو ده پلاؤیم حرب تم کو ان کی نسبت (جا سوسو م طلع ہونے کا) اندلیشہ ہوتو (بے خوت وخطر) ان کو (صند وق میں رکھ کر) دریا (لینی نیل) میں والديااورندتو (غرق سے) اندلينيكر تااورند (مفارقت ير) عم كرنا (كيونكه) بم صروران كو كيم تفارے ہی ہاں دایس بہنچادیں کے ادر بھراہے وقت یر) ان کو بینجبر بنادیں کے (غوض وہ اس طسرح دوده بلاتى دين - پهرجب افتائے دار كاخوف بواتوصندوق مين بندكرك الترك نام يرنيلين جِمورٌ دیا، ایک کوی شاخ فرعون کے محل میں جاتی تھی یا تفریجاً فرعون کے متعلقین درماکی سیر کو تھلے عقے غرض وہ صندوق کنارے پر لگا) توفرعون کے توگوں نے موسیٰ (علیابسلام) کو البینی مع صندوق كے) اٹھاليا تاكہ وہ ان توگوں كے لئے دشمنی اور غم كا باعث بنيں، بلاشبہ فرعون اور ہامان اور ان كے تابعین (اس باره میں) بہت مجو کے ذکراینے دشمن کواینی نفل میں مالا) اور (حب وه صندوق سے و كالكرفرعون كي سامنے لائے كئے تو) فرعون كى بى بى د حضرت آسير) نے د فرعون) سے كهاكہ ب (بجیر)میریاورتیری ایکھوں کی شفتاک ہے دینی اس کو دیکھ کرجی خوش ہواکھے گاتو) اس کو قسال مت كروعجب نبين كدر برابوكر) مم كو كيم فائده بهنجاد كيام اس كوراينا) بينايي بناليل ور ان بوگوں کو دانجام کی خبر شریقی (کہ بید وہی بجتر ہے جس کے یا تھوں فرعون کی سلطنت غارت ہوگی)

TIZ)

معارف القران ج

سورة القصص ١٣:٣٨

اور (ادهرية قصم مواكم) موسى (علايسلام) كى والده كاول (خيالات مختلفه كي يجوم سے) بيقرار موكر (ادر بقراری میں اسی دسی نہیں ملک ایسی سخت بیقراری که) قریب تفاکه (غایت بیقراری سے) وہ مولی (علایستلام) کا حال (سب بر) ظاہر کردیتیں اگر ہم اُن کے دل کو اس غرض سے صنبوط نہ کئے ڈیم كريه (ہمارے دعدہ ير) يقين كئے (ببيلى) دہيں (غرض مشكل انفول نے دل كوسنبھالااور تد؟ شروع کی وہ بیرکہ) انھوں نے موسی (علیا بستلام) کی بہن (بینی اپنی بیٹی سے) کہا ذراموسی کاشراع تولگا سو (وه جلیں اور بیعلوم کرکے کہ صندوق محل میں کھلاہے محل میں پہنچیں، یا توان کی آمدور ہو کی پاکسی حیلہ سے بہنجیں ، اور) انھوں نے موئی (علیا بسلام) کو د ورسے دیکھا اوران لوگوں کو پنجے نہ تھی دکہ یہ ان کی بہن ہیں اور اس فکرمیں آئ ہیں) اور ہم نے پہلے ہی سے رائعینی جب سے سندوق ئے بیلے تھے) موسیٰ (علیالسلام) پر دو دھ بلائیوں کی بندش کر رکھی تھی (بینی سی کا دو دھ نہ لیتے تھے) سودہ (اس حال کو دیکھ کر موقع ماک کہنے لکیں کیا میں تم لوگوں کوکسی ایسے گھرانے کا بیتہ تباد جو تھارے گئے اس بچتر کی برورش کری اوروہ (اپنی جبتت کے موافق دل سے) اس کی خیرخواہی کی (ان لوگوں نے البیے وقت میں کہ دو دھ پلانے کی شکل پڑرہی تھی اس مشورہ کوغینیت ہجھاا درا ہیے لَّهُ الْحَكَ كَا بِيتر بِوحِيبًا انْفُول نِے اپنی والدہ کا بیتر تبلادیا جنانجیروہ ٹبلائی کئیں اور مؤلی علیالتسلام آئی گودیں دیتے گئے۔ جاتے ہی دودھ بینا شردع کردیا اوران لوگوں کی اجازت سے جین سے ایے تھر لے آئیں اور گاہے کا ہے جاکران کو د کھلاآتیں) غریش ہم نے موٹی (علیالسلام کو اس طرح) اسک والده محيياس (اينے دعده محموافق) واليس بہنجاديا تاكه (اين اولادكو دعيه كر) أنكي أيميس كفيدى مول اور تاکر فراق کے) تم میں شروی اور تاکہ (مرتبہ معاشہ میں) اس بات کو (اور زیا دو تھیں سائقه) حان لين كه النترتعالي كا وعده ستجالزتها) بي ليكن (افسوس كي بات بي كه) اكثر لوك اسكا) لقين بنين ركھتے (يه تعریض سے كفارير)۔

معَارِف ومسَائِل

سورہ قصص کی سور توں میں سب سے آخری سُورت ہے جو ہجرت کے دقت محد مکرمہ اور جحفہ
(دابغ) کے درمیان نا ڈل ہوئی یعبض روایات میں ہے کہ سفر ہجرت میں جب رہول اسٹر صلے اسر علیم کے درمیان نا ڈل ہوئی یعبض روایات میں ہے کہ سفر ہجرت میں جب رہول اسٹر صلے اسر علیم کے کہا کہ جھے لیسی رابع کے قریب بہنچے تو جبر سُیل امین تشریف لائے ادر دسول اسٹر تعلیم اسلے کہا کہ اسے کہا کہ اس محد صلے اسٹر عکیہ کے اور میں آئے ہورت قران میں آئے ہیں اس کے آخر میں آئے خورایا کہ ہاں صرور یا دا آتا ہے ۔ اس پر جبر سُیل امین نے یہ سورت قران مُنائی جس کے آخر میں آئے خصرت صلی انگلے میں ملکے کے موسلے اس کے دہ آیت یہ جو اِنَّ ملکے کہا کہ اس کی بیشا دہ این کے ایم کا دمکہ مرمہ فتح ہو کر آئے کے قبضہ میں آئے دہ آیت یہ جو اِنَّ ملکے کہا کہ واس کی بیشا دہ آئے کہ انجام کا دمکہ مکرمہ فتح ہو کر آئے کے قبضہ میں آئے دہ آیت یہ جو اِنَّ

P

ورة القصص لَّيْنِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُنْ نَكُولَةُ لِهَ إِلَى مَعَادٍ ، سورَهُ قصص مِين سبَّ يَهِلِ حَصْرَت موى ع کا قدتنه بہلے اجمال کے ساتھ بھر تھے تفصیل کے ساتھ بیان ہوا ہے۔نصف سورت تک ہوئی عدالہ كا قعتد فرعون محسائقدا ورآخر سورت مين قارون عائقة ذكر كماكيا ہے۔ حضرت موسى على بسلام كا قصته بورے قران ميں كہيں مختصر كہيں مفصل بار باد آيا ہے سورہ ، میں توانے اُس قصری تفصیل آئ ہے جوخصر علیالتلام کے ساتھ بیش آیا ، بھرسورہ ظلم میں بورے تھتہ کی تفصیل ہے اور ہی تفصیل سورہ تمل میں بھی کھھ آئ ہے تھرسورہ قصص میل سکا اعادہ تواہے ۔ سورہ ظامیں جہاں موسی علیہ ستلام کے لئے ارمٹ در آئی یہ آیا ہے کہ وَ فَتَنْ اَفَ فَتُوناً - حصرات محدثین امام نسائی وغیرہ نے اس بورے قصے کی عمل تفصیل وہاں تھی ہے احقر نے بھی ابن کشیر کے حوالہ سے پیچمل تفضیل سور ہُ ظاہمیں بیان کر دی ہے۔ اس قصتہ کے متعلقہ اجزاء کی تماع بختیں اور حزوری مسائل اور فوائد کھے سورہ کہفتیں یا تی سورہ ظاریب ذکر کردیتے گئے ہیں مسائل م كے لئے اُن كو ديكيمناكا في ہوگا يهال حرف الفاظ آيات كى مختصر تفسير راكتفاكيا جائے گا۔ وَيُرِينُ أَنْ ثَمْنَ عَلَى الَّذِينَ اسْتُصْعِفُوا فِي الْاَتْفِي وَجَعْمَهُمْ آيِسَةً الآية ، اس آيت میں تد ہر فرعونی کا بمقابلہ تقدر اللی کے نہ صرف خائب و خاسر ہونا بلکہ فرعون اور استحسب اصا دربار کوانتهائ بے و تون بلکہ اندھا بنانے کا ذکرہے کہ جس الاے کے متعلق خواب اورتعبیرخواب کی بنار پرفرعون کوخطرہ لاحق ہوا تھا اور جس کی بنار پر بنی اسرائیل کے لا تعداد نو زائیرہ لڑکوں کونیج ار النان جاری کیا تھا اس کوحق تعالے نے اسی فرعون کے گھر میں اسی کے باتھوں ہر ورش کرایا اور والده کے اطمینان کے لئے انہی کی گو دمیں حیرت انگیز طراقتہ پر بہنچا دیاا در فرعون سے رضا كا خرج جونعض دوايات مي ايك دينار دوزانه تبلاياكيا ہے مزيد دصول كياكيا - اور دودھيلانے كا يدمعاد ضدجو نكدايك كافرح بي سے اسكى رضا مندى كے ساتھ لياكيا ہے اسكے اسكے جوازير بھى كوى أسكال نہیں۔اور بالآخر جس خطرہ کے دُور كرنے كے لئے سارى قوم پر بيد نظالم ڈھائے تھے دہ اسى كے تھر کے اندرسے ایک شدید لاوا بن کر تھوٹا اور خواب کی تعبیرانٹر تعالے نے اس کو آسکو آسکوں سے کھادی وَفِي فِرْعَوْنَ وَهَامِنَ إِلَى مَا كَانُوْ ايَحُنْ رُوْنَ كَايِي مَا صل --وَكَوْ حَيْنًا إِلَى أُمِّرُهُولَكَى ، وحى كالفظاس جكر بغوى معنى مين استعال بواسي، وحى نوت مراد بہیں اسی تحقیق سورہ ظارمیں گزریجی ہے۔ وكتابكغ أشتاه واستوى اتبناه محكتا وعلما وكنايك نجزى اورجب بنع كيا اين زوريراورسنجل كيا دى بم ني اسكو حكت اور سمجه ادراسي طرح بم بدله دية بي ب

سورة القصص ١١:١٨ ادر آیا تہر کے اندر جس وقت ہے جب والے تھے وہاں کے لوگ یا کے اس میں دو مرد ارائے ہوئے یہ ایک اس کے رفیقوں یم اور یے ودسرالسے دہمنوں میں تَنَا ثَكُ الَّذِي ثُرِنَ شِيْعَتِهِ عَلَى الَّذِي ثِنْ عَلَيِّهِ " فَوَكَزَ فریادی اس سے اسنے جو تفااسے رفیقوں میں اسکی جو تفااسے دھمنوں میں سي فقضي عَلَيْكُ قَال شیطان کے کام اے والا حرع بولا اےمیرے رب میں نے بڑاکیا اپنی جان کا ، سو بخش فَقُنُ لَهُ مَا نَكُ هُو الْغَفُورُ السَّحِيْمُ ١ بیشک دائی ہے مجتے والا مہربان اے رب جیساتونے ففٹ ل 115 یا جھ یہ میں میں شہری شہو تکامرد کا دگتا ہادل کا 13 200 کل مرد ما می کتی اس سے آج مجم قَالَ آلَ مُدُي اللَّهِ اللَّهِ وَلَقَ مَا مُعْلَمُ مُن اللَّا اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ ب میں اور بہنی جاہاک LT121 3 1100 والا مرد دوڑا ہوا کہا اے بوی دربار والے بحد كومار والين مو بكل جا سين يزا بعلا جائة والا وول مر کلادیاں سے درتا

ب

فحسا المترفسير

ادرجب (پردرش یاکر) اپنی بھری جوانی (کی عمر) کو ہنچے اور (قوتِ جمانی بیعقلیہ سے) در^ت ہوگئے توہم نے ان کو حکمت اور علم عطافر مایا (بعنی نبوت سے پہلے ہی ہم لیم وعقل متعقیم میں سے س قبع میں امتیاز کرسکیں عنامیت فرمائ اور ہم نیکو کاروں کو بُوں ہی صلہ دیا کرتے ہیں ربعین علی سالے سے فیضان علمی میں ترقی و تی ہے۔ آمیں اشارہ ہے کہ فرعون کے مشرب کوموسکی علیالتسلام نے کہی اخت بیار نہ كيا تقا بلكه اس سنفورر ہے) اور (اسی زمانه كا ایک واقعہ بیرجواکد ایکیار) موسی (علایہ تشلام) شہر میں (بینی مصرمیں کذا فی الروح عن ابن اپنی کہیں یا ہرسے) ایسے وقت پہنچے کہ وہاں کے (اکثر) باتندے ی خبر را سورے) تھے (اکثر دوایات سے بروقت دو بہر کا معلق ہوتا ہے اور بعض دوایات سے یکھ رات گئے کا وقت معلوم ہوتا ہے گذا فی الدرالمنشور) تو انھوں نے وہاں دو آدمیوں کو لڑتے د کھا،ایک توان کی برا دری (بعنی بنی اسرائیل) میں کا تھا اور دوسراان کے نحالفین (لیسنی فرعون کے متعلقین ملازمین میں سے تھا (دونوں کسی بات پراکھ رہے تھے اور زیا دتی اکس فرعونی کی تھی) سووہ جوان کی برا دری کا تھا اس نے (جو) موسلی (علایہ بستام کو دیکھا تو ان) سے اسکے مقابله بن حورا بحك مخالفين مين سے تھامد دچاہى (موسى عليہ بسلام نے آول اسکو سمھایا جیاسیر بھی وہ بازنہ آیا) توموی (علیہ سلام) نے (تا دیباً دفع ظلم سینے) اس کودایک) گھونسا ماراسو اسکاکام بھی تمام کردیا ربینی اتفاق سے وہ مرین گیا) موسی (عدایاتلام اس خلاف توقع نیتج ے ہہت بچھتا ہے اور) کہنے لگے کہ یہ توشیطانی حرکت ہوئی بیٹیک شبیطان (بھی آدمی کا) کھٹ لا و تمن ہے کسی غلطی میں ڈالدیتا ہے (اور نادم ہوکر حتی تعالیٰ سے) عرض کیاکہ اسے میرے یرور دگار مجور سے قصور ہوگیا آپ معاف کردیجئے سوالٹر تعالئے نے معامت فرما دیا، بلاشبہ وہ غفور ترمیم ہے ر كوظهورا ورعلم اس معافى كاقطعى طورير وقت عطار نبوت كيهوا كما في انمل إلّا مَنْ كُلُّم ثُمَّ بَدَلَ حَسْنَا لِعُ مُنْ فِي غَانِي عَفَوْدُرَجِيمٌ، اوراس وقت خواه الهام سيمعلوم بيوكيا بهويا بالكل شرمعلوم بهوا بهر) موسلى (علياتلام) نے (توبين الماضي كے ساتھ مشقبل كے تعلق يرتھى) عرض كياكہ الے ميرے يروردكار جو مكرات مجور (براس العامات فرمائي وجكاذ كراطاس ب وكفر منتا عَلَيْكَ مَرَةُ أَحْرَى إِلَى قوله وَلا تَخْرُنُ) سو تبی میں مجرموں کی مدد نہ کرؤ گا (بیاں مجرمین سے مُراد وہ ہیں جو دو سرن سے گناه کاکام کرانا جا ہیں، کیو نگرناه کرانا کسی سے پہلی جرم ہے سی اسمیں شیطان بھی داخل ہوگیا

٢

TPN

سورة القنس ٢١:١٦

كروه كناه كرآبا كراوركناه كرنيوالا الحى مرد كرتا ہے خواہ عمراً يا خطارٌ جيسے اس آبت ميں ہے و كان الكاف على رنته ظهيراً اى للشيطان ، مطلب بير مواكه مين شيطان كاكهنا تهجى نرمالون گا معيني مواقع مختله خطا میں احتیاط و تیقظ سے کام بوزگا اور اصل مقصور اتناہی ہے مرکز شمول کھے کے لئے بحرین جمعے کاصیف لایاکیاکه اورون کومجی عام ہوجاد کے غرض اس اثنار میں اسکاچرچا ہوگیا مگر ، بجز اکسرائیلی کے کو واقف دازنه تفااورجو بكراسي كى حمايت ميں بير واقعه واتھا اس لئے اُسے افہار نہيں كيااسوجه سے کسی کواطلاع بنہوی مگر موسلی علیارتسلام کو اندلیتیہ ریا ، یہا نتک رات گرزری) پھرموسی علیاراسلام د شهر میں مسح ہوئی خوف اور وحشت کیجالت میں کہ اجانک در کیھتے کیا ہیں کہ ی وہی تحض میں کی گرشتہ میں ان سے امرا دجا ہی ہے وہ بھران کو (مدد کے لئے) پیکا دریا ہے کہ کہی اور الجھر اتھا) موی (علیالتلام یہ دیکھ کراورکل کی حالت باد کرے اس پر ناخوش ہوئے اور) ا سے فرمانے لکے بیٹیک تو صریح بدراہ (آدمی) ہے کہ روز لوگوں سے بڑاکر تاہے موسیٰ علیاتالا كو قرائن سے معلوم ہوا ہوگاكہ اس كى طرف سے بھى كوئ غصتہ ہوا ہے نسكِن زيادتی فرعونی كی د مکھراس کوروکنے کاادا دہ کیا) سوجب وئی (علیالسلام) نے اسپر یا تھ بڑھایا جو دونوں کا مخا تفا (مُراد فرعو فی ہے کہ وہ امرائیلی کا بھی مخالف تھاا درمونی علایت ام کا بھی کیو تکہ وہی علایسلا بنی اس ایس سے بی اور وہ لوگ سب بنی اسرائیل کے مخالف تھے گو یا بالتعیبین موسی عل رائيلى مذسمجها مبواوريا موسى علىبالسلام جينكه فرعون كيطرلقير سي تفور تصے بيرا مرمشهور مبوكه مواسلتے فرعون والے ان کے مخالف ہو گئے ہوں۔ بہرحال جب موسی عالیہ ستلام نے اس فرعونی يا اوراس سے يہلے اسرائيلى برخفا ہو يكے تقے تواس سے شايداً جمجه يردار وكيركر ينظ تو گهراكر) وه اسرائيلي كهنے لگاا ہے مؤی کیا دائج ، مجھ كوفتال كرناچا موجبيها كه كل ايك آدى كوفتل كريجيم و معلوم موتا ہے كه) بس تم دُنياميں اينا زور تقلاما جا ت بواور سلح (اور ملاب) كردانانهي جاست (يكلماس منسرعوتي ني شنا، قال كي تايش بورسي كي اتنا شراع لگ جانابہت ہے نوراً فرعون کو خبر پہنچا دی۔ فرعون اینے آدمی کے مارے جانے سے بریم تھا پیمن کرآشفنتہ ہوااور شاید اس سے اسکا وہ خواب کا اندلیشہ قوی ہوگیا ہوکہ کہیں وہ تخص يبى نهمو، خصوصاً اگرمونى علىيالسلام كا فرعو في طريقير كونا يسندكر نا بھى فرعون كومعلوم ہوتو کچھ مداوت اس سبب سے ہوگی اس بر بیر مزید ہوا بہر حال اس نے اپنے درباد یوں کومشورہ کے سے جمع کیا اور اخیررائے موٹی علیہ بشلام کو قتل کرنے کی قراریائ) اور (اس مجمع میں) ایک شخص (مولئی علیہ اسلام کے محب اور خیرخواہ تھے وہ) شہر کے اس) کنارے سے (جہال پہ شورہ ہورہا تھ موی علیالتلام کے یاس زدیک کی کلیوں سے) دوڑتے ہوئے آئے (اور) کہنے لگے کہ اے موسی

TPP

سورة والعقيص ١:٢٨

معارف القرآن جسكدشم

اہل دربار آپیے متعلق مشورہ کررہے ہیں کہ آپ کو قتل کر دیں سوآپ (بیہاں سے) چلد بجیج میں آپ کی خیرخواہی کررہا ہوں بس (بیشن کر) مولی (علیہ بسلام) دہاں سے رکسی طوف کو) ڈبکل گئے، خوف اور وحشت کی حالت میں (اور چونکہ راستہ معلوم نہ تھا دُعا کے طور پر) کہنے گئے کہ اے میرے پروردگا دنجھ کو ان ظالم کو گوں سے ، بچا لیجئے (اور امن کی جگہ پہنچا دیجئے)۔

معارف ومسائل

وکھا جگہ کہ ایک کا میں کے صفحت سے تدریجا توت و شدت کی انتیاں کے لفظی مصفے قوت و شدت کی انتہا رپر بہنج نیا ہے لینی انسان بجین کے صفحت سے تدریجا توت و شدت کی طون بڑھتا ہے ایک وقت ایسا آ ہے کہ اسکے وجود میں جتبی قوت و شدت آ سکتی تھی وہ پوری ہوجائے اسوقت کو اَشُدَ کہا جا آہے اور یہ زمین کختلف خطوں اور قومو کے مزاج کیا عقبار سے مختلف ہوتا ہے کسی کا اشد کا زمانہ جلد آجا ہے سی کا دیریں ۔ لیکن حصرت ابن عباس اور مجا ہد سے بردایت عبدابن تھی کہ بینتھوں ہے کہ اشد عمر کے تنتیس سال میں ہوتا ہو اس کو سرن کمال میں ہوتا ہے بعد جا ایک استون کا آب کہ جو ایک اس کے بعد جا ایک کو بری کہا کہ اسکا جو بیا گئی کہ دوری مشروع ہوجاتی ہے ۔ اس سے معلوم ہوا کہ عمر کا اشکر تعینتیں سال کی عمر سے سٹر و عے ہوکر جا ایک دوری مشروع ہوجاتی ہے ۔ اس سے معلوم ہوا کہ عمر کا اشکر تعینتیں سال کی عمر سے سٹر و عے ہوکر جا ایک دوری مشروع ہوجاتی ہے ۔ اس سے معلوم ہوا کہ عمر کا اشکر تعینتیں سال کی عمر سے سٹر و عے ہوکر جا ایک

ا ال تك ربتا ہے ۔ (مجع دقطبی)

آئیدنا فی حی آئی الہ بیش علی حی آئی اور نبوت و رسالت ہے اور علم سے مرادا حکام الہیں شرعیہ کا علم ہے۔ وَوَحَلَ الْمَدِ اِنْ اَنْ عَلَىٰ حِیْنِ عَفْلَةً قِنْ اَهْلِهَا ، المل بنة سے مراداکثر مفسر بن کے نزد کے شہر مصر ہے۔ اسمیں واض وف کے نفظ سے معافی ہوا کہ ہوئی علیاستالام مصر سے باہر کہیں گئے ہوئے تھے بھرا کے دوراس شہر میں ایسے وقت داخل مجے کہ جوعام توگوں کی غفلت کا وقت تھا۔ آگے قتل قبطی کے قصة میں اسکا بھی تذکرہ ہے کہ ہیہ وہ زمانہ نفا جب ہوئی علیاستالام نے اپنی نبوت و رسالت کا اور دین حق کا اظہار شرق کا دیا تھا اسی کے تیج میں کچھ توگ آئے مطبع و فرما نبروار ہوگئے تھے جو رسالت کا اور دین حق کا اظہار شرق کے ردیا تھا اسی کے تیج میں کچھ توگ آئے مطبع و فرما نبروار ہوگئے تھے جو اس کہ ہوئی شینی تھی ہوگ اسم قرائن سے اس دوایت کی تائید موق ہے جو ابن ہوتی ہے وابن ہی تو کو مون ان کا مخالف ہوگیا اور قت کا کا دارہ کھی کھی ہوئی سیکھا الا در دین حق کی اسکے دو خوان کی بوی صفر سے کہا ہوئی اسمال منہر میں سے باز آیا مگران کو شہر سے کا ان کا محام دیدیا ۔ اسکے بعد صفر سے کو کے اسکے بعد صفر سے کہا کے موجو کی تھی جھپ کر مصر شہر میں آئے تھے ، اور علی جائی خلائے کا حکم دیدیا ۔ اسکے بعد صفر سے کوئی خلائے کی آئی کو شہر سے کہا کہ کی جو بھی جھپ کر مصر شہر میں آئے تھے ، اور علی جائی خلائے آئی گرائی کو شہر سے کہا کہ کے در پیر کا دقت ہی جبکہ کوگ قبلولہ میں تھے ۔ (قبطی)

و القرآن جم سُورة القصص ١٠١٠ فَوَكَنَ كَا مُوْسَى، وكن كرمعية مُكَامار في كي فقضى عَلَيْم وقضاه اورقضى عليه كا بحاوره أسوقت بولاجا ما ہے جب سی خص کا بالکل کام تمام کردے اور فالرغ ہوجائے۔ اسی لیئے بیہاں اسے معنی قتل کردیے کے ہیں (مظھری) قَالَ رَبِّ إِنِي ظَلَمْتُ نَفْسِي فَأَغْفِرْ إِلَى فَغَفَرَ لَهُ ، اس آیت کاماصل یہ ہے کہ اس بلی کا كاقتل جوحضرت مؤتى عليبستلام سے بلاارا دہ صادر ہوگیا تھا مؤٹی علایہ ستلام نے اسکوسی اپنے منصد نبوت ورسالت اور بيغيبرانه عظت شان كافاس ايناكناه قرار في كران ترتعالي مصغفرت طلب كي التشرتعالے نے معامت فرما دیا ۔ بہاں بہلاسوال تو یہ پیدا ہوتا ہے کہ یقیطی کافر مشرعی اصطلاح کے لحاظه ايك حرفي كافرتها جبكا قتل عدا بهي مباح اورجائزتهاكيونكه نهيسي اسلامي حكومت كاذمي مذموني علليسلام سے اسکا کوئ معاہرہ تھا بھرمونی علیاسلام نے اسکوعلی شیطان اور گناہ کیوں قرار دیا ؟ اسكافتل توبظا برموجب جرودنا جامية تفاكدا يكسلان فظكر دبا تفااسكو بجاني كفي يقتل واقع موا جهاب بیر ہے کہ معاہدہ جیسے قولی اور تخرری مؤتا ہے جیسے عموماً اسلامی حکومتوں میں اہل ذمتہ سے معابده باكسي غيرسلم حكومت سيصلح كامعابره ادربيه معابره بأنفاق داجب إلحمل اوراكي خلاورزي غدراورعہد کئی کے سبب حوام ہوتی ہے اسی طرح معاہدہ علی بھی ایک قسم کامعاہدہ ہی ہوتا ہے اس تی تھی بابندی لازی اورخلات ورزی عہد کئی کے مراد ت ہے۔ معاہده علی کی صورت میہ ہے کہ حس جگہ مسلمان ا در کھے غیرسلمسی د دسری حکومت میں یا ہی ا من واطبینان کے ساتھ رہتے بستے ہوں ایک دوسرے برحکہ کرنا یا لوٹ مادکر ناطرفین سے عداری سمجھا عِلّا وتواس طرح كى معاشرت اورمعا ملات مجى آيات مكاعلى معابره وتي بن أعى خلات ورزى جأ زنهين أسكى دليل حضرت مغيره بن شعبة كى ده طويل حدث سيحس كوامام بخارى نے تنا البشروط ين فصل روايت كيا ہے اور واقعه اسكاية تفاكة حضرت مغيره ابن شعب قبل از اسلام اين أمارُ عليت ين ايك جماعت كفاد كما تقصصاحبت ادرمع كشرت ركفته تقديم الكوتسل كرك الحكاموال ير قبصه كرلياا دررشول الشرصال لشرعكيهم كيخدمت مين حاصر بوكرمسلمان موكئة ا درجو مال ان كوكون كا لیا تھا دہ رشول انٹرصلے انٹر عکتیے کم کی خدمت میں بیش کر دیا اس برآب نے ارشا د فرمایا ، امّا الاسلاهم فاقتبل وإمّا المال فلست منه في شيّ اورا بودادُد كى روايت بي اسكالفاظ يدبي، اما المال فمال غدى الاحاجة لنا فيه ، بعنى آب كااسلام توسيخة ول كرلياا وراب آيسلان بن مكريه مال ايسامال ہے جو غدر اور عبرتكني سے حاصل ہوا ہے اسليے ہيں اس مال كى كوئ حاجت نہيں۔ شارح بخادى حافظا بن حجر نے مثرح میں فرمایا کہ اس حدیث سے پیسئلہ برکلنا ہے کہ کفار کا مال حالتِ امن میں توط لینا طال نہیں کیو تکہ ایک سبتی کے رہنے والے یاایک ساتھ کام کرنے دالے بی مشرکین کے موال حبک اورجہاد کے وقت مغنوم وہ کے ہیں مشیر کین کے موالت میں حلال نہیں اسلنے ہوسلان کفالہ کے ساتھ دہتا مہتا ہو کہ کلی طور پر ایک ووسرے سے مامون کے ساتھ دہتا مہتا ہو کہ کلی طور پر ایک دوسرے سے مامون کے قوالی حالت میں حالت میں کے ذکا خون بہانا یا مال زبردی لینا فدر حوام ہے جب مک کد اُن کے اس علی معاہدہ سے دست بردا کی معالم دیں کے اس علی معاہدہ سے دست بردا کی اعلان شرکر دیے۔

الناموال المضركين ان كانت مغنومة عند القهرفلا يحل اخن هاعن الامن فافا كان الامن فافا كان الامن فافا كان الانهان مصاحبًا لهو فقل الانهاء واحل منه وصاحبه فسفك الدماء واخن المال مع ذلك عن رحوام كلا ان اخن المال مع ذلك عن رحوام كلا ان بينب اليهم على سواء

فلاصدیہ ہے کہ قبلی کا قتال اس علی معالم دہ کی بٹار پراگر با تقصد ہوتا توجائز نہیں تھا گر حضرت مولی علیار تلام نے اسکے قتل کا ادا دہ نہیں کیا تھا بلکہ اسرائیلی خض کوا کے فلم سے بجیانے کے لئے باتھ کی ضرب تکا ی جو عادة مسبب قتال نہیں ہوتی سکر قبطی اس صرب سے مرکبیا تو مولی علیا تسالام کو ایر سالم وارد سالم درجہ بھی کافی تھا یہ زیادتی میرے لئے درست نہ تھی ، ہواکہ اسکو دفع کرنے کے لئے اس صرب سے کم درجہ بھی کافی تھا یہ زیادتی میرے لئے درست نہ تھی ، اس لئے اسکو علی شیطان قراد دے کو اُس سے مفرت طلب فرمائ ۔

فُ الدُه التي على المُنة مجددالملة سيدى حضرت ولاناالشرف على تقانوى قدس مره كي محجوات المرابي على تقانوى قدس مره كي محجوات المرابي على تقانوى قدس مره كي محجوات المربان على تقانوه المحتل المناوه المربان على تقانوه المحتل المناوه المحتل المناوه المحترف من المناوه المحترف من المناوه المحترف من المناوه المحترف المناوة المرب المناوة المناوة المناوة المرب المناوة المنا

مرض كى شدت برى اور ۱۷ رجب كويرا أنتاب عالم غروب بوكيا اتالله واتااليه واجعون

ادر بعن حضرات مفسترین نے فرمایا کہ اگر جینجی کا قتل مباح تھا گرانبیار علیہ السلام مباحات میں بھی اہم معاملات میں اسوقت تک اقدام نہیں کرتے جب تک خصوصی طور پراللہ تعالی کیطرف اجازت و اشارہ نہ ملے ، اس موقع پر حضرت موئی عللیہ ستلام نے خصوصی اجازت کا انتظار کئے بغیریہ اقدام فرمایا تھا اسلے اپنی شان کے مطابق اس کو گناہ فرارہ کراستغفار کیا (کذاف الوقا دغیرہ دلا دجہ)

اسے ایک رہے ہوں کا سے مان کا تھا تھا تھا تھا کہ گوئ ظیفی بھل الدہ ہے ہوں کی اس مصرت مولی علیا سلام کی اس معزم شرک ہوں کیا کہ میں اشترہ کسی استرہ کسی استرہ کسی استرہ کسی استرہ کی مدونہ کرون گا۔ اس معلوم ہواکہ حضرت مولی علایت ام میں مدونہ کرون گا۔ اس معلوم ہواکہ حضرت مولی علایت ام نے جس اسرائیلی کی مدو کے لئے بیا قدام کی اتھا دوسرے واقعہ سے میہ بات نمایت ہوگئی تھی کہ وہ خود ہی جھگڑا او ہی جھگڑا او ای اسکی عادت ہے کہا تھا دوسرے واقعہ سے میہ بات نمایت ہوگئی تھی کہ وہ خود ہی جھگڑا او ہی جھگڑا او ای اسکی عادت ہے

اسك اس کوئرم قرارد سے کرائزه کسی ایسے خص کی مدد نہ کرنے کا عہد فرمایا ۔ اور حضرت ابن عباس اس سے گرمین کی تفسیر کافرین کے ساتھ منقول ہے اور قنا دہ نے بھی تقریباً ایسا ہی فرمایا ہے اس تفسیر کی بنار پر واقعہ یہ معلوم ہو تاہے کہ بیا اسرائیلی جس کی امداد موسی علایہ سلام نے کی تقی یہ بھی سلمان نہ تھا گر اس کو مظلوم سمجھ کرامداد فرمائی ۔ حضرت موسی علایات الم کے اس ارشاد سے دو مسلم ثنا ہت ہوئے ۔ مس سملے لہ اول یہ کہ مظلوم اگر جبہ کافریا فاسق ہی ہوائس کی امداد کرنا چاہئے ۔ دو مسرا مسئلہ یہ ثابت ہواکہ مس مسئلہ اولی مدور زباجاً نر نہیں ۔ علمار نے اس آیت سے استدلال فرماکر ظالم مسئلہ می ملازمت کو معی اور اس ایس سے متعدد میں اجاز قرار دیا ہے کہ وہ میں اور ان کے اس اور ان کے ختلف صورتیں ہیں اور ان کے اور اس پرسلف صالحین سے متعدد دولیات نقل کی ہیں دکھافی دوج المفان کھاریا فالموں کی امداد وا عانت کی مختلف صورتیں ہیں اور ان کے احکام القرآن میں بزبان عربی اسی آیت کے ذیل میں آل احکام کتب فقہ میں فقت کی نوشنے کہ مدی ہے اہل علم اس کو دیکھ کتے ہیں ۔ احقار نے اس کو دیکھ کتے ہیں ۔

وَلَمَّا نُوجَّهُ تِلْقَاءُ مَنْ بَنَ قَالَ عَلَى رَبِّنَ آنَ يَهُ لِ يَنِي سُوَّ مرین کی سیدھ یر بولا امیدہ کہ میرا رب لے جا ب ١٠٠ ولمّا ورد عَاءَ من بن وَجَلَ عَلَيْهِ أُمَّةً مِن البّا ادرجب بہنجا مرین کے یائی بر یا یا وہاں ایک جاعت کو توگوں يهمرأس بان بلاديا انت جا اوردل كو بهمريك كرا ياجهاؤل كيطوت ابولا لَيَّ مِنْ خَيْرِ فَقَيْرٌ ﴿ فَكَ إِنْ لَكُ الْحُلْ لَهُمَا تَمْشِي عَ ے میری طرف اچھی بیں اُسی کا محتاج اوں پھر آئ اسکے پاس ان دونوں میں سے ایک جلتی تھی بخياية قالت راق آرنى ين عود الوليجزي الق آجر ما سقيت بولى ميراباب بخوكو "بلاتا محكم بدليس داعت اسكاكر تؤني يلاد يا مالاعجانونو نَا وَلَلْمَا جَآءَ لَا وَقُصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ ۚ قَالَ لَا وَتَحَفَّى عَلَيْهِ الْقَصَصَ لَ قَالَ لَا تَحَفَّى عَلَيْهِ الْقَصَصَ لَ قَالَ لَا تَحَفّى عَلَيْهِ الْقَصَصَ لَ قَالَ لَا تَحَفَّى عَلَيْهِ الْقَصَصَ لَيْ قَالَ لَا تَحَفَّى عَلَيْهِ الْقَصَصَ لَ قَالَ لَا تَعْمَلُ عَلَيْهِ الْقَصَدِ فَي اللّهِ الْقَصَدِ فَي اللّهُ عَلَيْهِ الْقَصَلُ عَلَيْهِ الْقَصَدِ فَي اللّهُ اللّهُ وَقَتْ عَلَيْهِ الْقَصَدِ فَي اللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهِ الْقَصَدِ فَي اللّهُ اللّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ الْقَصَالُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهِ اللّهُ عَلَيْهِ عَلْهِ عَلَيْهِ عَلْ بمرجب بنجا اسكے ياس اور بان كياأس سے احوال كها مت در

سورة القصص ٢٨: ٢٨ مِينَ ﴿ قَالَتَ إِحْلَ بِهُمَا يَآبَتِ اسْتَ بولی ان دونوں میں سے ایک اے باب اس کو نوکر رکھے۔ تَلَحْرُتَ الْقُويِّ الْأَمِينَ تو ركفنا چاك ده كيد زور آور بواما تدار كهايي چايتا بون احدى النتق طنتان على أن تا کو ایک بیٹی اپنی ان دونوں میں سے اس شرط برکہ تو میری نوکری کرے کا تھ تممن عشم افير. عمراكر تو يورے كردے دى رس تو دہ ترى طوت سے ہے ادرسي بنيں جاہتاكہ تحص تو یا ہے گا بھے اگر انشرنے چاہ نیک بختوں IJŸ. كليف والول وَحَلَانَ فَضَيْتُ فَلَاعِلُ یہ وعدہ ہوچکا میرے اور ترے بیج جومنی مدت ان دونوں میں بوری کر دوں ، سوزیا دتی نہ ہو اورالشرير بحروسهاس جيركاجو بم

خ المصرتيس

اورجب وسی (علیا ستلام به دُعاکر کے ایک سمت کو تو کلاً علی الشرچا اور تبائید شیبی) مدین کی طرف مولئے (چوکلہ داستہ صلوم نہ تھا اسلئے تفویت و تو کل اور نفس کوت کین دینے کے لئے آپ ہی ایپ کہنے گئے کہ اُمتید ہے کہ میرارب مجھ کو رکسی مقام امن کا) سیرھارستہ چلا و بیکا (چنا نجیا لیے ایس اس کے بیٹی کو رکسی مقام امن کا) سیرھارستہ چلا و بیکا (چنا نجیا لیے ایس اس کے بیٹی کو رکسی مقام امن کا) سیرھارستہ چلا و بیکا (چنا نجیا لیے ایس کو اور اس کنویں سے کھینچ کھینچ کو اپنے مواشی کو) یا تی پلارہے سے اور ان کو گوئے کا ایک جمع دکھا جو (اس کنویں سے کھینچ کھینچ کو اپنے مواشی کو) یا تی پلارہے سے اور ان کو گوئے ایک طرف (الگ) دوعور تیں دکھیں کہ وہ (ا بین بجریاں) روکے کھڑی ہیں، موسی (علیا سلام) نے ایک طوف (الگ) دوعور تیں دولی کو لیے مواند را ان کا کہ اس وقت بک یا ٹی فیلارہے ہیں کہ دیم ہوگا ہیں کہ (ہمارا استمول یہ ہے کہ) ہم (اپنے جانورو کو) اسوقت بک یا ٹی فیلارہے ہیں) یا تی بلاکر کو بالوروں کو) مثا کرنے والا ہی نہیں اور کام ضروری ہے اس مجبوری کو ہم کو آنا بڑتا ہے) تیں (بیٹ کو) اور کو کام کرنے والا ہی نہیں اور کام ضروری ہے اس مجبوری کو ہم کو آنا بڑتا ہے) تیں (بیٹ کو) اور کو کوئ کام کرنے والا ہی نہیں اور کام ضروری ہے اس مجبوری کو ہم کو آنا بڑتا ہے) تیں (بیٹ کو کھیل کو آنا بڑتا ہے) تیں (بیٹ کو کھیل کو کسی کو آنا بڑتا ہے) تیں (بیٹ کو کھیل کو کھیل کو کہ کام کرنے والا ہی نہیں اور کام ضروری ہے اس مجبوری کو ہم کو آنا بڑتا ہے) تیں (بیٹ کو کھیل کو کھیل کو کہ کام کرنے والا ہی نہیں اور کام ضروری ہے اس مجبوری کو ہم کو آنا بڑتا ہے) تیں (بیٹ کو کھیل کو کھیل کو کھیل کو کھیل کو کھیل کو کھیل کے کھیل کو کھیل کی کو کھیل کی کی کھیل کی کھیل کو کھیل کی کھیل کی کھیل کی کھیل کی کھیل کو کھیل کو کھیل کے کہ کھیل کی کھیل کو کھیل کو کھیل کی کھیل کو کھیل کی کھیل کی کھیل کو کھیل

3

(FPZ)

ارو القرآن جسلة

سُورُة القعيص ٢٨: ٢٨

موسی (علیدستلام کورهم آیا اور انھوں نے) ان کے لئے یا نی (تھینے کرا بھے جانوروں کو) بلایا (اور جابیھے (خواہ کسی پہاڑ کا سایہ ہو یا کسی درخت کا) پھر (جناب باری میں) ڈعائی کہا ہے ہے ير ورد گار (استونت) جو نعمت يجيي ولليل پاکشير) آپ مجهد کوجسيدس ميں اسکا (سخت اس سفرمیں کھے کھانے بینے کو مذملاتھا جی تعالے نے اسکا بیرسامان کیا کہ وہ دونوں بیبیاں اپنے تھے۔ نوٹ کرکئیں تو باپ نے معمول سے جلدی آجا نے کی وجہ دریافت کی ، انھوں نے موسیٰ علیا بسلام کا بورا قصّه بیان کیا انھوں نے ایک لڑکی کو بھیجا کہ اُن کو بلالاؤ) موسیٰ (عللے بستلام) کے یاس ایک اً ی کہ مشرباتی ہوئی حلتی تھی رجو کہ اہل مشرف کی طبعی حالت ہے اور آکر کہنے لگی کہ میرے والڈی کو اللے تے رین تاکیم کواسکاصله دین جوشنے ہماری خاطر (ہمارے جا بؤروں کو) یا فی بلادیا تفاریہ ان صاحبزادی تواین دالد کی عادت سے حلوم موا ہوگا کہ احسان کی مکافات کیا کرتے ہونگے موسلی علیہ سلام ساتھ ببولئے گومقصو دموسی علایستلام کا بالیقین اپنی خدمت کا معاوصندلینا نه تھا، نیکن مقام امن اور سی رفیق شفیق مے صرور ما قنقنائے وقت جو مال تنقے، اور آگر تُھوک کی شدّت بھی اس جانے کا ایک جزوعلت ہوتومضالقہ نہیں اور اس کو آجرت سے کھے تعلق نہیں اور ضیا فت کی توات بھارہجی بالخصو ماجت کے وقت اورخصوصا کہ م دشریف آدمی سے کچھ ذلت نہیں جرحائیکہ ضیا فت کا قبول کرلینا، داه میں موسی علایس الم نے ان بی بی سے فرما یا کہم میرے بیجھے موجاؤیر ا ولا دابرا بهم سے موں ، اجنبيركو بے وجہ بے قصد د كيمنا بھى ليٹ رنہيں كرتا ، غرض اى طرح ان بزرک کے پاس پہنچے) سوجب اُن کے پاس پہنچے اوران سے تام حال بیان کیا تو اُنھوں نے رستی دى اور)كباكه (اب) اندليشه مذكره تم ظالم كوكون سے بيح آئے دكيونكه اس مقام برفرعون كى علمارى ند مقى كذا فى الروح ، ميس أيك لرظى نے كہاكداتا جان دات كوادى كى صرورت ہے اور يم سيانى موكنين اب تهرمين رمهنا مناسب سے تو) آب ان كو نوكر دكھ ليجے، كيونكه اچھا نوكرود يخص بح جومضبوط (موداور) امانت دار (بھی) مو (اوران مین دو نون صفتیں ہیں، جنا بخہ توت ابھے یا بی تھینینے سے اور امانت ان کے برتا دُسے ،خصوصاً راہ بین عورت کو پیچھے کر دینے سے ظاہر ہوتی تھی اور اینے باپ سے بھی بیان کیا تھا کسس یر) وہ (بزرگ موٹی علیالسلام سے) کہنے لگے مين جاستامون كدان دولا كيول مين سے ايك كو تھارے ساتھ ہيا ہ دوں اس شرط كدكتم أعمر میری توکری کرو (اور اس توکری کابدله و بی کاح ہے، حاصل یہ کہ آ کھ سال کی خدمت اس · کاح کام رہے) بھراگرتم دس سال اور ہے کر دو تو بہ تھاری طرف سے (احسان) ہے (بیسنی میری طرف سے جبر نہیں) اور میں (اس معاملہ میں) تم ریکوئ مشقت ڈالٹا نہیں جا ہتا دفینی

F-

(FIFA)

بارو القرآن جسلد

كورة القصص ١٦:٢٨

کام لینے اور وقت کی یا بندی وغیرہ معاملہ کی فروعات بین آسانی برتوں گااور) تم مجھ کوانشار الشرتعالی خوش معاملہ پاؤے کے موسلی (علیار ستلام رضا مند ہوگئے اور) کہنے لگے کہ (بس تو) ہیہ بات میر ساور آئے درسیان (بکٹی) ہوئی ، بین ان دونوں مدتوں میں سے جس (مدت) کو بھی بیر اکر دول مجھ پر کوئی جبزیو گااور ہم جو (معاملہ) کی بات جبیت کراہے ہیں ، الشر تعالی اسکاکوا ہ (کافی) ہر (اسکو حاصر نا فر سمجھ کرعہ دیوراکرنا جا ہیے)۔

مكارف ومسائل

الکہ اُن کی بکریاں دومر مے تو کوں کی بکریوں میں دُلُ نہ جائیں۔

الکہ اُن کی بکریاں دومر مے تو کوں کی بکریوں میں دُلُ نہ جائیں۔

الکہ اُن کا بخط بھٹا تھا کہ اُن کا کہ اُن کہ اُن کہ اُن کہ اللہ اللہ اسلام نے ان دو نوں شان اور حال کے معنے میں جبکہ وہ کوئی ہم کام ہو۔ معنے یہ ہیں کہ موئی علیہ السلام نے ان دو نوں عور توں سے بُوچ جھا کہ بھا الکیا حال ہے کہ تم اپنی بحریوں کور و کے کھڑی ہور دو مرے تو کوں کی طسرت کوئیں کے بیاس لاکر بانی نہیں بیاتیں ؟ ان دونوں نے یہ جوا ہے دیاکہ ہماری عادت یہی توکہ ہم مُردوں کوئیں کے بیاس لاکر بانی نہیں بیاتیں ؟ ان دونوں نے یہ جوا ہے دیاکہ ہماری عادت یہی توکہ ہم مُردوں

آئی مکافات کرناچاہئے اسلے اٹھیں لڑکیوں میں سے ایک کوائن کے بلانے کے لئے بھیجا۔ یہ حیائے ساتھ جیتی ہوئی بہنچی ۔ اس میں بھی اشارہ ہے کہ با دجود پردہ کے با قاعدہ احکام ناڈل نہ بھنے کے نیک عوری مردوں سے بے محابا خطاب مذکر تی تھیں فیرورت کی بنار پر یہ دہاں بہنچی تو حیا کے ساتھ بات کی بھی صورت بعض مفسرین نے یہ بیان کی ہے کہ اپنے چہرہ کوآشین سے چھپاکر گفتگو کی ۔ روایات تفسیری کے موٹی علایسلام اسکے ساتھ چلنے لگے تولوط کی سے کہا کہ تم میرے بیجھے جو جا و اور زبان سے مجھے راست مستعلق رہو ۔ مقصد رہ تھا کہ ان کی نظار کو کی بٹریٹ شایداسی سب سے لڑکی نے اپنے والدسے ان کے متعلق انہوا میں ہونے کا ذکر کیا ۔ ان لڑکیوں کے والد کون تھے اسمین مفسترین نے اختلاف نقل کیا ہو گاگر منظی سے تراق میں ہے دیالا مذکل کیا ہو گاگر شاہر یہی معلق ہوتا ہے کہ وہ شعیب علیا سلام تھے جیسا کہ قرائ میں ہے دیالا مذکل کا مذکل کو انہوں کے الدے ان کے اسمین شعبرین نے اختلاف نقل کیا ہو گاگر شاہری میں ہے دیالا مذکل کا مذکل کو کا فرائی موتا ہے کہ وہ شعیب علیا سلام تھے جیسا کہ قرائن میں ہے دیالا مذکل کو گاگر شاہری کا دو شعیب علیا سلام تھے جیسا کہ قرائن میں ہے دیالا مذکل کو گاگر شاہری کا دو شعیب علیا سلام تھے جیسا کہ قرائن میں ہے دیالا مذکل کو گاگر شاہری کا دو شعیب علیا سلام تھے جیسا کہ قرائن میں ہے دیالا مذکل کا گھر شاہری کا در قربی)

اِنَ اِن یَن عُولَ اَن کا عُولِ اَن بِهِی مِوسَلَ ہے کہ یہ لوطی خودہی اپنی طرف سے ان کو دعوت دیں گرانی انہیں کیا بلکہ اپنے والد کا بینیام سنایا کیوں کہ سی اجنبی مرد کوخود دعوت دینا حیا عُظاف تھا۔

اِن تَحَیْرَ هُنِ اسْتَا جُورُتَ الْفَوْیُ الْاَمْدِیْ کَا اللّٰهُ مِینُ شعیب علیہ بسلام کی ایک صاحبزادی نے اپنے دالد سے عوض کیا کہ آپ کو گھر کے کا موں کے لئے ملازم کی صرورت ہے آپ ان کو نوکر دکھ لیے گئے کیوں کہ ملازم میں دوصفتیں ہونا جا آئیں ایک کام کی قوت دصلاحیت دوسرے اما شدادی ۔

ایمیں ان کے چھڑ تھا کر بانی پلانے سے ان کی قوت وقدرت کا اور راکستہ میں لوگی کو اپنے چھے کردینے

- 45ライッラしいいこに

کوئی ملازمت یاعہدہ شہرد کرنے حضرت شعیب علیہ سلام کی صاحبزادی کی زبان پرالٹر تعالیٰ نے بڑی کوئی ملازمت یاعہدہ شہرد کرنے حضرت شعیب علیہ سلام کی صاحبزادی کی زبان پرالٹر تعالیٰ نے بڑی کام کی صلاحیت اور ڈگر ہوں کو تو د کھا جاتا ہے سرگر دیا نت اما نت کی طرف توجہ نہیں دی جاتی اسکانی تجرم کہ عام دفتر وں اور عہدوں کی کار روائی میں پوری کامیا بی کے بجائے رشوت خوری ، اقر بار پروری وغیرہ کی وجہسے قالون معطل موررہ گیاہے۔ کاش لوگ اس قرآنی ہدایت کی تعدر کریں تو سازانظام درست ہوجائے۔

قال اِن کی اُر فیک آئ اُن کی کی اے کئی اِنٹ تک ھائی ہوایت کی تعدر کریں تو سازانظام درست ہوجائے۔

شعیب علیہ ستام نے خود می اپنی طرف سے اپنی لڑکی کو ان کے بچاح میں دینے کا ارا دہ ظا ہرف سرایا۔

اس سے معلیم ہوا کہ لڑکیوں کے دلی کو جاہیے کہ کوئی مرد صالے لئے تو اسکا اُنظار نہ کرے کہ اسی کی طرف سے بچاح کے معالمہ کی تو کی ہے ہو، بکہ خود بھی بیش کرد بینا شدنت انبیار ہے جیسا کہ عمرین خطار بنا نے اپنی مصاحبزادی حضرت حفظ شکر کے بورہ ہوجا نے کے بعد از خود ہی صدیتی اکٹر اور عثمان غنی شب

سورة القصص ١٦٠٨ مارف القران جر إخْدَى ابْنَتَى طَتَانِي مِصْرت شعيب عليالتلام نے دونوں تو كيون ميں كسى كومعين مرك تفتگونہیں فرمائ بکلہ اس کومبہم رکھاکہ انمیں سے سی ایک کو آیکے نیکاح میں دینے کا ارا دہ ہے گرجونکہ بير گفتگو با قاعده عقد زيکاح کی گفتگونه تقی حبمیں ایجاب وقبول گواېوں کے سامنے ہونا مشرط بح بلام حاملا ئى گفتگونتى كە آپ كو آ تھرسال كى توكرى اس زِكاح كے عوض ميں منظور ہو تو ہم نِكاح كردي كے حضرت موى علىياسلام نے اس يرمعا بده كرليا-آكے يہ خود بخو د ظاہر ہے كہ با فاعدہ بِكاح كيا كيا ہوگا- ادر قران كرم عموماً قصّنهك أن اجزاركو ذكرنهي كرتاجن كاوقوع سياق وسياق سي ظاهراورلقيني موراس تحقیق کی بنار پر بیبال پیشجه نهیں ہوسکتا کہ زوجہ منکوجہ کومتعین کئے بغیز بکاے کیسے ہو گیا پاگوا ہوں النيركيسيم وكياد كذا في الاح دبيان القران) عَلَى آنْ تَأْجُرَيْنْ فَهَانِي حِجَيم ، يه آتُصال كى ملازمت وفدمت نِكاح كالهم قرار دياكب اس میں ائر فقهار کا اختلات ہے کہ شوہرا پنی بیوی کی خدمت و ملازمت کو اسکا مہر قرار دے سكتاب يانبين واس كي محل تحقيق مع دلائل كرز بان عربي احكام القرآن سورة قصص مين فقلل لكهدى كنى ب- انال علم دمال ديم الم الكي عوام ك النات المحد ليناكا في ب كداكر بدمعامله دم ركا متربعيت محدييرك لحاظ سے درست نہوتو ہوسكتا ہے كہشر بعبت شعیب علبالسلام بیں درم ادد شرائع انبیاری ایسے فردعی فرق مونا تصوص قطعیہ سے نابت ہے۔ امام عظم ابوحنیفرم سے ظاہر الروایت میں یہی صورت منقول ہے کہ خدمتِ زوجہ کو ہم بنایاجاسکتا محرامک روایت جس برعلمارمتاخرین نے فتوی دیاہے یہ ہے کہ خور بیوی کی خدمت کو بر بناما توسو برکی تکویم واحترام کے خلاف ہے سگر بیوی کاکوئ ایساکام جوگھرے باہرکیاجاناہے جیسے مواشی چرانیا یاکوئ تجارت کرنااگراسیس شرائطا جارہ کے مطابق مرت معین کردی گئی ہوجیا كداس واقعمري المدسال كى ترت معين ہے تواس كى صورت يہ ہوكى كداس برت كى ملازمت كى شنخاه جو بیری کے ذمہ لازم موتواس شخواه کومهر قرار دینا جائز ہے (ذکره فی البدائع عن نوا در ابن سامہ) ہاں ایک دوسرا سوال بیراں برہوتا ہے کہ بہر تو بوی کا حق ہے بیوی کے بایہ یا کسی عزیز کو بغیر ا جازت ز دجه مهركي رقم نقد مجي يه دى جائے تو مهرا دا نهيں ہوتا۔ اس دا قعديں اَنْ تَا جُوَىٰ كالفاظ اس برشا بدین که والدفے ان کوایت کام کے لئے ملازم رکھا تو ملازمت کاجومعا وصفہ ہے وہ والدکو ملا، تویہ زوجہ کا مہرکیسے بن گیا؟ اسکاجواب پر ہے کہ اولاً توبیعی ممکن ہے کہ بر برباں لڑکیوں ہی كى ملك موں اور به ملازمت كافائدہ اس حیثیت سے خود اردى كو بہنجا۔ دوسرے اگر باب بى كا کام انجام دیا اوراس کی شخواه والدکے ذمرلازم دی توبیرزرمبرلز کی کا ہوگیا روکی کا اجازت سے والدكوسى اسكااستعال درست يهان ظاہر كيكريد معاملدالأكى كا جازت سے واہے ـ



عَادِفَ القَالَ مِلَا الْمُعَلِّ الْحَافُ اَنْ الْكُلِّ الْوُنِ القَالَ اللهُ اللَّهُ الْحَافُ اَنْ الْكُلِّ الْوُنِ الْقَالَ اللهُ اللَّهُ الْحَافُ اَنْ الْكُلِّ الْوُنِ الْحَالَ اللهُ اللهُ

خشير

غرض جب موی (علیاتلام) اس مرت کو اوراکر چکے ادر (با جازت شعبیب علیابسلام کے) اپنی بی بی کوئے کر (مصرکو یا شام کو) روانه موسئے تو (ایک شب یں ایسااتفاق مواکر سردی تھی اور را ہی بھول گئے اسوقت) ان کو کوہ طور کی طرف سے ایک (روشنی بشکل) آگ د کھلائ دی ، اُنھوں نے ا پنے گھر دالوں سے کہاکہ تم (بہاں ہی) تھرے رہو، میں نے ایک آگ دیجی ہے (میں دباں تا ہوں)شایدیں تھارے یاس وہاںسے (رسترکی) کھے خبرلاؤں یاکوئ آگ کا (دیکتا ہوا) الگارا لے آدُن تاكہ تم سینک لوہ سووہ جب اس آگ کے یاس پہنچے تو ان كواس میدان کے دا ہنى جانب (جوكه موسى عليالتلام كي دامني جانسي عانسكاني) اس مبالك مقام مين ايك درخت مين سے آواز آئ كر ا ہے موئی میں دیب العالمین عوں اور بیر زمی آواز آئ کہ تم ایناعصا ڈالدو (جنانجیرا تھوں نے ڈالد با اوروه سانب بن کرچلنے لگا) سوانھوں نے جب اس کو لہرا یا ہوا دیکھا جیسا بتلاسانب (تیز) ہوتا ہے تولیشت پھیرکرمھا گے اور بیچھے موکر کھی نر دیکھا (حکم بواکہ) اسے موئی آگے آوا در ڈرومت دہرائے) اسىيى بدراوريه كوى درى بات نهي بلكه تهادا معجزه ب ادر دوسرا معجزه ادرعنايت بوتا بهكر) تم اینا با تھ گریبان کے اندر ڈالو (اور کھرنکالو) وہ بلاکسی مرض کے نہایت دوشن ہوکر نیکے گا اور (اگرمثل انقلاب عصا کے اس مجزہ سے می طبعاً خوت اور حیرت بیدا ہو تو) خوت (رفع کرنے) کے واسطے اپنا (وہ) ہاتھ (بھر) ایٹ گڑیان اور بغل) سے (بستورسابق) ملالینا (تاکہ وہ بھراسلی حالت برم وجلت اور محطبی خوت مجی شرمواکرے) سویہ (متقاری نبوت کی) دوسندی (اوربیس) بیں بخفارے دب کیموٹ سے فرعون اور استے سرداروں کے یاس جانے کے واسطے (حبکاتم کو حکم کیاجاتا ہے کیو بھی دہ بڑے نافرمان لوگ ہیں ، انفوں نے بوض کیا کہ اے میرے رب زیں جانے کے لئے حاضر ہوں مگرائے کی خاص امداد کی صرورت سے سونکے ہیں نے ان میں سے ایک دی کا خون كردياتها وبحوكواندنيشه بهكر ركبيل بيلي بى ده لوك بحوكوتتل كردي (تبليغ بحى نهوني ياد)

4

معارف القرآن جساله شتم

اور (دوسری بات یہ ہے کہ زبان بھی ذیادہ دواں نہیں ہے اور) میرے بھائی بادون کی ذبان بھے
سے زیادہ دواں ہے توان کو بھی میرا مددگار بناکر میرے ساتھ رسالت دیدیج کہ (دہ میری تقرید
کی تائیدادر) تصدیق (مفصل اور کمل طور سے) کریں گے (کیونکہ) بھے کو اندلیشہ ہے کہ دہ لوگ
(فرعون اوراسے درباری) میری تکذیب کریں (تو اسوقت مناظرہ کی صرورت ہوگی اور ذبانی مناظرہ
کے لئے عادةٌ وہ آدمی ذیادہ مفید ہوتا ہے جو دواں ذبان ہو) ارشادہ ہوا کہ (بہترہے) ہم ابھی تحقالے
بھائی کو بھا دا تو ت با دوبنائے دیتے ہیں (ایک درخواست تویہ نظور ہوئی) اور (دومری درخواسی کی منظور ہوئی) اور (دومری درخواسی کی منظوری اس طرح ہوئی کی ہم تم دونوں کو ایک فاص شوکت (دہیدیت) عطاکرتے ہیں جس کی منظوری اس طرح ہوئی کی ہم تم دونوں کو ایک فاص شوکت (دہیدیت) عطاکرتے ہیں جس کی منظوری اس طرح ہوئی کی ہم تم دونوں کو ایک فاص شوکت (دہیدیت) عطاکرتے ہیں جس کی منظوری بری منال بیرو ہوگا (ان ان کوگوں بری منال بیرو ہوگا (ان میں ہوگوں بری منال بیرو ہوگا (ان میں ہوگوں بری منال بیرو ہوگا (ان

فَکَتَا فَتَهَیٰی مُوسِی الْدَجِیلَ ، بینی جب حضرت موسی علیه استلام نے مَرتِ معیدنه ملازمت کی پوری کر دی جوا کھ سال لازمی اور دو سال اختیاری تقی سویبال سوال یہ ہے کہ موسی علیا سلام نے صوت آٹھ سال پورے کئے یا دس سال ۔ صبح بخاری ہیں ہے کہ حضرت ابن عباس شمسے یہ سوال کیا گیا تو ایخوں فے فرمایا کہ اُنھوں نے زیا دہ مّرت بینی دس سال پورے کئے کہ انبیارعلیم استلام کی بہی شان ہے کہ جو کچھ کہتے ہیں اس کو پورا کرتے ہیں ۔ رسول الشرصل الشرعکی کی عادت سرلفے بھی کہ حقدار کو اُسکے حق سے زائر اوا فرما تے ہتے اور اُمرت کواسی کی ہوا بت فرمائی ہے کہ ملازمت سا اُجرت اور فرمید وفرو ذرحت میں سا بلت اوما بینا دسے کام لیا جائے ۔

نيك ل سے جگہ جمى في البقعة الم الم يك كوه طور كاس مقام كوقرات كريم نے بُقْد مبادكه مترك موجاتى ہے فرمايا ہے اور ظاہر يہ ہے كہ اسكے مبادك مجد كاسبب يرتح بى فدا وندى ہے جو اس مقام پر نشبكل نا دكھائى دى گئى۔ اس سے علوم ہواكہ میں مقام میں كوئى نب عمل اہم داتع

سُورَةُ القصص ٢٨: ہوتا ہے وہ مقام می متبرک ہوجاتا ہے۔ وعظين اليمى خطابت اورفصاحت مطلوب هو أفق حُرمِين لِسَانًا ، اس معلوم بواكه وعظ وتبليغين فصاحت كلام ادرمقبول طرزخطابت محمود ادرمطاوسيج - الحي تحصيل مين كوشش مجيي مذموم بنبس -فَلَمَّا جَاءَ هُمْ مُّوسَى بِالْيِنَابِيِّنَا بِينَا إِلَّا مِنْ الْرُسِحُرُّ وَلَمَّا هَلَ لَآ الرَّسِحُرُّ جب بہنچاان کے باس موسی ہے کرہماری نشانیاں کھلی ہوئ ، اولے اور بکھر ہنیں یہ جا دو ہے مُّفَتُرَّى وَمَا سَمِعْنَا رَهُ أَنْ إِنَّ آيَا الْأَوَّ لِينَ ﴿ وَقَا شعاروا اورہم نے شنائیں یہ ایت اسکے باب دادوں میں وَسَى رَدِقَ ٱعْلَمُ بِمِنْ جَاءِ بِالْهُلْ يُ مِنْ عِنْ اوْ مَرَ يُ وئی نے میرا دب تو خوب جا تا ہے جو کوئ لایا ہے ہدایت کی بات اس کے پاس سے اورجس م تَكُونَ لَهُ عَامِيَةُ الدَّارِ إِنَّهُ لَا يُفِلِحُ الطَّلِمُونَ ﴿ وَقَالَا بیشک معلام ہوگا ہے انصافوں کا ا ے دربار والو جھ کو تومعلوم بنیں تھا ماکوی حاکم ہومیرے سوا ہان میرے داسط گادے کو بھر بنامیرے داسط ایک میل تاکہ میں جھا تک کر دیجہ اوں موسی مُوسى والي ترطَّعْنُ ومِنَ الْكِينِ وَاسْتَكُمْ مِنَ الْكِينِ وَاسْتَكُمْ وَاسْتَكُمْ وَاسْتَكُمْ وَا اور ميري أنكلسي تو اور برای کرنے لکے وہ اور کیا ہم فے ان کو بیشوا کہ بلاتے ہی دورخ اور سيع د کوري م دان پراس وثيامين يحشكار ادر قیامت کے دن اُن

303

المالة ال

معادف القرآن جسلد شقم

يخ لاصة تفسير

غرض جب ان توگوں کے باس موسی (علمیالسلام) جاری صریح دلیلیں مے کرآئے توان توگوں نے د معجزات دیکھرکن کہاکہ بیر تومحض ایک جا دو ہے کہ زخواہ مخواہ فداتعالیٰ پر) افتراکیا جاتا ہے کہ بیاکی جانب سے معجزات اور دلیل رسالت ہیں) اور سمنے ایسی بات بھی ننہیں سنی کہ ہمارے اسلے باب وا دوں کے وقت میں بھی ہوئی ہواورموئی (علیالسلام) نے (استحجابیں) فرمایاکہ (جب با وجو د دلائل صحیحہ قائم ہونے کے اوراسمیں کوئی شبرمفقول نہ نیکال سکتے کے بعد تھی نہیں مانتے تو بیہے و حرمی ہے اوراسکا اخیر جواب ہی ہےکہ) میرا رود گاراس عف کوخوب جانتا ہے جو سیحے دین اسے یاس سے اکرآیا ہواور جسكا انجام (بينى فائمة) اس عالم (دُنيا) سے اچھا ہونے والا ہے (اور) باليقين ظالم توك (جوكم بدآ اوردین سیح برمذ ہوں مجھی فلاح نہ یا ویں کے رکیونکہ ان کا انجام اچھانہوگا۔مطلب بیر کہ خداکوخوب معلى سيكريم مين اورتم بين كون ابل تبرى ب اوركون ظالم اوركون محمد دالعاقبت ب اوركون محرد عن الفلاح بس برا ميك عالت اور تمره كاجلدى مرفے كے ساتھ ہى ظهور موجادے كا البنبي مانے تم جالنى) اور (دلائل موسويه ديكيه كراور سن فرعون ركواندنيشه واكدكهبي بهار معتقدين ان كى طرف مأئل نه موجادین تولوگوں کو جمع کرمے) کہنے لگاا سے اہل دربار مجدکو تو تھارا ابینے سواکوئ فدامعلوم نہیں ہوتا (استحدید تلبیس کے اسطے اپنے وزیر سے کہاکہ اگر اس سے ان کوگوں کا اطمینان ندم و تو) اے ہا مان تم مارے کئے مٹی (کی انیٹیں بنواکران) کوآگ میں پزاوہ لگاکر بکواؤ بھر(ان بخترامنیوں سے) میسرے واسط ایک بازعارت بنواو تاکه رمین اس بر جرهد کر) موسی کے خداکو دعیموں بھالوں اور میں تو (اس دعویٰ میں کہ کوئ اور خداہے) موئی کو تھوٹائی تجھتا ہوں اور فرعون اور اسکے تابعین نے ناحق ڈنیا ين سراتها دكها تها اوريون تجدي تقي كما تكويها رب ياس توط كرآنا نهي ب توبم في واستكيرك منرایس) اس کو اوراسے تا بعین کو بکر ار ریاسی بھینک دیا (بینی غرق کر دیا) سود بھے ظالموں كاانجام كىيا بوا (اورموسى على السلام ك فول كاظهور بهوكيا مَنْ تَكُوْنَ لَدَ عَا فِبَدُّ النَّالِ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّامُونَ) اور يمنان توكون كوايسارُسين بنايا تقاجو (توكون كو) دوزخ كى طوت بلات ما دراى واسطى قيامت كے دوزرا يے بكس دهجاوي كے كمى الكاكوى سائق ندر كا اور (بر بوك دونوں عالمين خا و فاسرور نیانی ونیاین جی سمندا می تیجها منت لگادی اور قیامت دن جی برحال توکونین سے موجے۔

معارف ومسائل

فَا وَقِلْ إِنْ يُنْهَا مَنْ عَلَى السِّلِينِ، وْعُون نَهِ بِهِ اوْنِيابِن مِحل تياد كرنے كا اداده كيا

1.

سورة القصص ١٨ تواپنے دربر ہامان کو اسکی تیاری کے لئے پہلے بیٹکم ویاکہ ٹی کی اینٹوں کو کیکا کریجیتہ کیا جائے کیونکہ کچی انیٹول پر کوئ بڑی اوراو کچی بنیاد قائم نہیں ہوسکتی۔ تعبض حصرات نے فر مایا کہ فرعون کے اس واقعہ سے پہلے یخترا منیوں کی تعمیر کا رواج منرتھا سب سے پہلے فرعون نے یہ ایجاد کرائ - تاریخی روایات بی تو کہ ہاما ن نے اس محل کی تعمیر سلیتے بیجاس ہزار معارجمع کئے مزودراورلکڑی لوہے کا کا م کمنے والے اسکے علاوہ محقے ا در محل کوا تنااُد نجا بنایاکهاُس زمانے میں اس سے زیادہ ملند کوئ تعمیر نہیں تقی یے پیرجب بیه تیاری عمسّل ہوگئی توانٹر تعالی نے جبرئیل کو حکم دیا، اُنھوں نے ایک خربیں اس محل کے تین ٹکڑ ہے کرکے گرا دیا، ک یں فرعونی فوج کے ہزاروں آدی دب کرمرکتے (قطبی) وَجَعَلْنَاهُ ﴿ آَيِمَةَ يَّنَ عُوْنَ إِلَى التَّالِرِ، تعِنى فرعون ك درباديون كوالتُّرتعالى نے اسى قوم كابيثوا بناديا تفاكريه غلطكا دميثوااين قوم كواك بين جبتم كطوف دعوت ويدر يصفيها لااكترمفسرين نے آگ کیطرت دعوت دینے کو ایک استعارہ اور مجاز قرار دیا ہے کہ مرادیا ک سے وہ اعمال کفریے ہیں جنکا ليتجتبنم كى آك بي جانا تقا محراً متا ذمحترم نا درهٔ دوزگار حضرت مولاناستيد محدا بورشا هشميري قدس سرهٔ لی تحقیق تبعاً لابن عربی بیتھی کہ آخرت کی جزاعین عمل ہے۔ انسان کے عال جو دہ دُنیا می*ں کر*تا ہ*ی رِن*خ ب*عر محشر می این شکلیں بدلیں گے اور جو ہری صور تو ں میں نیک اعمال گل د گلز ار بن کر حبنت کی نعتیں ب*ن ﴾ جائيں كے اورا عمال كفروطلم آك اورساني بجيوؤں اورطرح طرح كے عذابوں كى شكل اختيار كرليں سے اسلير وتحف اس دنيايي سي كوكفر وظلم كطرف بلارباب وه حقيقة اس كوآك بي كيطرف بلارباب-اگرجیراس دنیایں اسکی شکل آگ کی نہیں مگرحقیقت اسکی آگ ہی ہے۔ اسی طبح آبت بیں کوئ مجاز بااستعاره نہیں، اپنی حقیقت پر محمول ہے ۔ یہ تحقیق اختیار کیجائے تو قرآن کی مے ٹارآیات میں محاز وہ بتحارہ كَالْكُلْفَ نَهِي كَرْنَايِّكُما مِثْلًا وَوَجَلُ وَلَمَا عَمِلُوا حَاضِرًا اور فَنَ يَعْمَلُ مِثْقَالَ ذَرَة خَبُرا يَوْ وَفِيره وَيَوْمَ الْفِيْمَةِ هُوْمِينَ الْمَقَبُونِ حِينَ، مَقْبُونِ حِينَ، مَقْبُونِ عِينَ، مقبوح كى جمع بيس كے سن بیں بگا الا ابوا۔ مرادیہ ہے کہ قبامت سے روزانکے جیرے سنح ہوکرسیاہ اور آ تھیں نیلی ہوجائیں گی۔ وَلَقَانُ أَتَيْنَا مُوسَى الكِنتُ مِنْ يَعَنِي مَا آهُلَكُنَا الْقُرُونَ الْوُلَى اور دی ہم نے موسیٰ کو کتاب بعداس کے کہ ہم غارت کر چکے بہلی جاعثوں بَصَاءِلاَ لِلنَّاسِ وَهُلَّاى وَّرَحْمَةً لَّكَلَّهُمْ يَتَنَكُّ وَنَ ﴿ وَهَا اللَّهِ اللَّهُ اللّ مجهانے والی توگوں کو اور راہ بتانے والی اور رحمت ساکہ وہ یاد - رکھیں كُنْنَ بِيَانِبِ الْغَرْرِبِي إِذْ قَضَيْنَا إِلَى مُوْسَى الْاَمْرُومَاكُنْتَ عندب کی طرف جبہم نے بھیجا موسیٰ کو

بي

سورة القصص ١٠٢٨ يْنَ ﴿ وَلِكِنَّا انْشَأَنَا قُرُونًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ میکن ہم نے پراکیں کئی جماعتیں بھر دراز ہوی اُن بر مدت نْتَ تَادِيًا فِي آهُلُ مِنْ بَنَ تَتَلُوْ إِعَلَيْهِمُ الْبِتَ الْوَلِي کہ ان کو ساتا ہماری آیس كُنْتُ بِحَالِبِ الطَّوْرِ إ طور کے کنارے جبیم کے آواز دی 121 رَّ بِلِكَ لِلتُنْكِنِ رَقَوْمًا مَّا ٱلثَهُومُ مِنْ يَكِرُ انعام ہے تیرے دب کا تاکہ تو ڈرشنادے اُن لوگوں کوجن کے پاس نہیں آیا کوئ ڈرشنا فالا J350000333 ائتی بات کے لئے کہ سجی آل پراے اُن پر آفت 150 لدَّى الدُّيَ الدُّيَ السُّولَ وَالْمَانِيَّةِ كا موں كى وجہ سے جن كو بھيج چكے ہيں اسكے بائقرہ توكہتے كليں اے رب ہمارے كيوں شركيبي ما ہمارے باس سى كوپتيام دے لَيْحَةً مِن إِنَ ﴿ فَلَمَّا حَاءَ هُو الْحَوْ بكفرجب والمبنى أن كوشميك بات وماك رعطے تری باتوں براور ہوتے ایمان والوں میں الورتى موسى من فبل قالواس والتعاهر المنتقرة کے دونوں جا دو رس آیس میں موانق اور کینے ا 35 6 6 (m) تو كبراب تم لاؤكوى كتاب الشرك ياس كى جوان دونوں لايس بهتر بوكه مين اس برجلون، اكر تم تو جان کے کہ وہ چلتے ہیں نری این خواہشوں پر اوراس سے قراہ زیادہ کون جو چالین خواہش پر بدون بيكالن داه نيس ديا بانصات لوكون كو ا دريم کے در کے راہ بتلائے الشرکے لْقَوْلَ لَعَالَهُمْ يَتَنَ كُرُونَ بعجة رب بين أن كوابية كلام "اكه وه وصيال مين لاين

^ کیل ۹

وخي المصرتينير

اور (رسالت كاسلسلخلق كے محتاج اصلاح مونے كے سبب بمیشہ سے جلاآیا ہے جنانجير) ہم ف موسی (علیات الم) کو (جن کا قصته بھی پڑھ چیے ہو) انگلی اُمتوں (بینی قوم نوح وعاد و بمؤد) کے بلاکہ محف كے بیچھے (جبكہ ان زمالوں كے انبياء كى تعليمات ناياب، وكئى تقين اور لوگ ہدايت كے سخت حاجمند تقے) متاب (بعنی تورات) دی تھی جو لوگوں کے دلینی بن اس کے کے دانشندیوں کاسب اور ہدایت اور رحمت می ماکدوہ (اس سے)تصیحت حاصل کریں (طالب حق کی اوّل فہم درست ہوتی ہے یہ بصيرت من بهراحكام قبول رتام يه برايي، بهرايت، بهر بدايت كاثمره بين قرب وقبول عنايت بوما یہ رحمت ہے) اور (اسی طرح جب یہ دُورہ می ختم ہو جیکا ادر لوگ بھر مختاج تجدید ہرایت ہوئے تو ا پنی سنت سمرہ کے موافق ہے آی کو رسول بنایا جس کے دلائل میں سے ایک بہی واقعہ موسویہ ی بیتین خبردینا ہے کیونکہ طعی خبر بینے کے لئے کوئ طریق علم کا صروری ہے اور وہ طریق منحصر ہے جا دی، أمور عقليه سيعقل مسويد واقعدامور عقليرس سيتوسينهن اورأمور لقليرس باستماع الماعلم جو کہ دوسراطریق ہے سومیر تھی بوجہ عدم مخالطت وعدم مدارست اہل اخبار کے متنفی ہے اور مااینا مشاہرہ جوکہ تبیراطریق ہے سواس کی تفی نہایت ہی اظہرہے جنانجے ظاہر ہے کہ) آپ (طور کے) مغرى جانب مين موجود نه تقي جبكتم ني موسلى (عليبالسلام) كو احكام دين تقريق (ميني توراة دي عي) اور (و ہال خاص تو کیا موجود روئے) آپ (تو) ان توگوں میں سے رکھی) نہ تھے جو راس زمانہ میں) موجود تھے (بیس اختمال مشاہرہ کا بھی مذر ہا) ونسکین (یا ت بیرکہ)ہم نے (مؤٹی علیالشلا تے بعد، بہت سی نسلیں پیراکیں بھران برز مانہ درازگر درگیا (جس سے بھرعلوم صحیحہ نایا ب موكئة اور يحركوك مختلج بدايت موسة اوركو درميان درميان انبيارعليهم استلام آياكة مكران مے علوم بھی اس طرح نایاب ہوئے اسلنے ہماری دحمن مقتقنی ہوئی کہم نے آپ کو وہی ورسالت سے مشرت فرمایا جو کہ جو تھاطریق ہے خبرتیبنی کا اور دوسرے طرق علم طنی کے ہیں جو مبحث ہی سے خارج ہے کیونکہ آپ کی بیخبریں بالکل تقینی اور قطعی ہیں حاصل ہے کہ علم نیٹنی کے جارط لقے ہی اور تین منتقی کیں چو تھامتعین اور سی مطلوب ہے) اور (جیسے آپ نے عطار توراہ کامشاہرہ نہیں کیااور بيح دنقيني خبرد سے رہے ہیں اسی طرح مولی عليبالسلام کے قيام مدین کا مشاہرہ نہیں فرمایا جنائیے ظام رہے کہ) آب اہل مدین میں جی قیام پذیر نہ تھے کہ آب (وہاں کے حالات دیکھ کران حالات كي ستعلق) بهاري آيتين (اينے) ان (معاصر) توگوں كو بڑھ پڑھ كرم ننارے يوں وليكن ہم ہى (آب کو) رسول بنانے دالے بیں ذکہ رسول بناکر یہ واقعات دحی سے تبلادیسے) اور (اسی طرح)

آپ طور کی جانب (غربی مذکور) میں اسوقت بھی موجود نہ تصحب ہم نے (موسی علیالسلام کو) ٹیکاد تها زيد نيمونسي إني أنَّا الله كُرُبُ العَلَم يُن وَأَنْ أَنْيَ عَصَاكِ " بَحَكُم ان كُوبُوت عِطَا بُولِيكَا وقت تھا) دلیکن (اسکا علم بھی اسی طمع حاصل ہواکہ) آپ اپنے دب کی دحمت سے نبی بنائے گئے تاكہ آپ ایسے توگوں كو ڈرائيں جن كے ياس آئے پہلےكوى ڈرانے دالا (نبى) نہيں آيا، كيا عجب ہے كالضيحت قبول كرلين وكيونكه حضورتسلى الشرعك يبلم كےمعاصرين بلك اسكے آباءا قربین نے بحکسی بی کونہیں تھا تَقَالُونِينَ مِرْ الْحُ بِالْحُسُوسِ تُوحِيدِ بِواسطر ان مَكْجِي بِينِي تَقَى بِينِ وَلَقَلُ بَعَثْنَا فِي كُلِ أُمَّةٍ رُسُولًا _ تعارض مدريا) اور (اكريدلوك درا تامل كرس توسيح التي بين كه ينغير الصيخ سے ماراكوى فائدة بين بلکدان ہی توگوں کا فائدہ ہے کہ بیرتوک محسن وقتح پرمطلع ہوکرعقوب سے بچ سکتے ہیں ورنہ جانگود كا قبح عقل سے دریافت ہوسکتا ہے اس پر غذاب بلاا رسال رسول بھی ہونا ممکن تھا تیکن اسوقت انکو ايك كونه حسرت موتى كدبائ اكررسول آجاما توسكوزيا ده عنبر موجامااوراس صيبت بين نه يرشقه رسُول می بھیجد با تاکہ اس حسرت سے بچناان کواتسان موور نداختمال تھاکہ) ہم رسول ندیمی بھیجنے آگر ہے بات نه ونی کدان بران محرواروں محسب رجوعقلاً قبیج بین) کوئ مصیب (دنیا یا آخرت میں) نازان تی رجس کی نسبت ان کوعقل کے یا فرشتے کے ذریعیر سے بقین ہوجا آکہ بیمزائے اعمال ہے) تو یہ کہنے لكتے كداے جارے يرورد كارات نے ہمارے ياس كوئى ينيركيوں ند بعيجا تاكد بم آيكے احكاكا اتباع كرتے اور (ان احكام اور رشول ير) ايمان لانے والوں ميں سے بوتے سو (اس امركامقىقنا توب تھا کہ رسول کے آئے کوغینیت سمجھتے اور اسکے دین حق کو قبول کرتے میکن ان کی یہ حالت ہوگ کہ) جب ہماری طوت سے ان توگوں کے یکس امری ریفنی رسول می اور دین می بہنچا تو واسی شبرنكا لنے محے لئے يوں كہنے لگے كہ ان كواليسى كتاب كيوں نہ ملى جبسيى موسى (عليه السلام) كوملى تقى (معنى قران داحدة مثل توراة كيون نه نازل بردا، آكے جواب سے كه) كيا جوكتاب وسى رعدارسال كوملى تقى استحقبل بيراوك استحمنكر نهيس موك رخياني ظاهر بهكهمشركين موسى عليابسلام اورتوراة کوبھی بنرمانتے تھے کیونکہ دہ سرے سے اصل نبوت ہی کے منکر تھے) یہ لوگ تو (قر اَن اور توراہ دواد كى نىبت) يُوں كہتے ہيں كە دونوں جا دو ہي جواكب دوسرے سے موافق ہيں (ساسلنے كہاكہ اُصولِ سرائع میں دونوں متفق میں) اور یُوں میں کہتے ہیں کہ ہم تو دونوں میں کسی کو نہیں مانتے (خواہ میں عبار ان كامقولم ودور خواه اسكاتوال سيلام آباد ودخواه ايك بي سائقد دونون كا أنكاركيا مويا مختلف قول جمع كن كلف بون تواس سے صاف معلق مقام علی مناس شبر كامنشار قصدایان بالقرآن بصورت تاش توراة كم نهي بله يرجي ايك حيله ادر شرارت مهراً كا س كاجواب ب ا مع وسلاد منز عليه لم اب كهد يجيّ كدا جها تو (علاده توراة وقران كم) تم كوى اورتما بالله

کے پاس کے آؤجو ہدایت کرنے میں ان وونوں سے بہتر ہو میں اسی کی بیروی کرنے لکوں گا، آ (اس دعوسي سيج بوركه منجون تظاهرًا، جس معقصودان دونون كما بول كانعود ادر غلط ہونا ہے۔ بینی مقصور تواتباع حق کا ہے بیں اگر کتب اللبیہ کوحق مانتے ہو توان کی پیروی كرد، قرآن كي تومطلقاً ادرتوراة كي توحيد وبشار ات محديثه مي إدراگران كوحق نهيں ما نتے توتم كوئ حق پیش کرد ادرا سرکاحق مونا تا بت کر دوحس کو ایری مونے سے اسلئے تعبیر کیا گیاہے کہ مقصود حق اسکادسیلهٔ ہدایت ہونا ہے۔ اگرفرضاً نابت کرددگے تومیں اسکی بیردی کرلوں گا، غرض بیرکہیں حق ثابت كردون توتم اسكاا تباع كرد، اوراكرتم حق ثابت كر دو تومين ا تباع كے لئے آمادہ موں اور دويك قضية شرطية مي محض حكم اتصال كابوتا سي اسلئه اتباع غيرت البيركا الشكال لازم تهين آيا مج (اس احتجاج كے بعد) اگريه بوگ آپ كا بير) كہنا (كه فَانْوَابِكِتَابِ النِي) مُرْكِين (اوزطابِرَةَ قد مَهُ كُرْسِكِينِ كُنْ كُلُونِ لِمُعْ فَاكُ لَمُ رَفَعْ كُواْ وَكُنْ تَفْعَكُوْلِا وَرِكِيمِ بِهِي آبِ كلا تباع مَهُ كرينٍ) توات سجھ لیجنے کہ (ان سوالات کا نشار کوئی کشتباہ و تر در وحق جوئی نہیں ہے بلکہ) یہ لوک محض پی نفسانی شوں پر جلتے ہیں (ان کانفس کہتا ہے کہ حس طح بن پڑے الکادہی کرنا چاہئے، بس یہ ایسا ہی رہے ہیں گوحتی بھی واضح ہوجا وہے) اورا یسے خس سے زیادہ کون گراہ ہوگا جوابنی نصنانی خواہن ب النتركويُ دليل (الشح ياس) مو (اور) الشرتعالي السيطالم لوكول (بوکہ وضوح حق کے بعد بدون کسی تنسک صحیح کے بھی ابنی کمراہی سے بازنہ آوسے) ہدا ہے سيخص كاخود قصدكرنا سايين كمراه رسن كاادر قصدك بعب خلتی فعل عا دت ہے الطرتعالیٰ کی اسلیے ایسائٹھن ہمبشہ گراہ رہتا ہے، یہا تنک توجواب الزامی تقاا تحاس قول كا تولدًا دُنِيَ مِنْ لَ عَا دُنِيَ مُوسىٰ) اور (آگے تنقی جواب ہے بیں قران کے فعۃ واحدة نانل منهون كى حكمت بيان فرماتين كر) ہم فياس كلام (بيني قران) كوان لوگوں كيلئے وقتا نو قتاً یک بعدد گرے بھیجا تاکہ بیادگ (باربار تازہ بتازہ سننے سے)نصیحت مانیں (بعنی ہم تو دفعة واحدة بصيخ يرسى قادرين مران ي ي مصلحت سے تعدراتھوڑا نازل كرتے بي بھراندھير ہے كر اینی بی مسلحت کی نخالفت کرتے ہیں)۔

معارف ومسائل

وَلَقَانُ أَنَيْنُا مُوْسَى الْكُنْبُ مِنْ بَعَلِيمًا الْفُلَكُنَّ الْفُرُونَ الْأَفْرِ الْأَفْرِ اللَّالِينِ ، قرونِ أولى سے اقوام نوح وجود وصالح و بوط عليهم استلام مراد ہيں جو مولى عليه استلام سے پيلائی مسرمشی کيوجہ سے ہلاک کی گئی تھيں ، اور بھائر، بھيرت کی جمع ہے جس کے بفظی معنے تو دائرت و

سورة القصص ١:٢٨ و القرآن ج بیش کے ہیں۔ مُراداس سے وہ نورہے جوانشر تعالے انسانوں کے طوب میں پیرا فراتے ہیں جن سے وہ حقالقِ اشیاء کو دیمی سکیس اور تق و باطل کا تنیاز کرسکیس ۔ (مظهری) بصار التاس مي الرلفظ اس مراد حضرت مولى على التلام ى امت بي ويات صاف وأس م من سے منے محاب تورا ق ہی مجموعار بھائر تھی۔اوراکر بفظ کاس سے تمام انسان مراد ہیں جن میں اُمتِ محديهي داخل بي توبيان سوال مد بيدا بوكاكداً تت محديد كاراني بي جوتورات موجود سے ود تحريفيات کے ذریعی سنے ہو بی ہے توان کے لئے اسکابصار کہنا کیسے درست ہوگا، اور بیر کہ اس سے توبید لازم آنا، كرمسلما نون كوهبي تورات سے فائده أثفانا جائيے حالا تكه حدیث میں بیرواقعد معروف برکہ حضرت فاردق عظم رمز في ايك مرتبه المخضرت صلى الشرعكي لم الكي اجازت طلب كى كدوه تورات بين ونسائح وغيره بي أكورٌ عين ماكم أيح علم مي ترتى مو، اس ير رسُول الشريسال الشرعك في غضيناك ذو كرف رايا اگراسوقت موسی علیالتالام بھی زندہ ہوتے توائی کو بھی میرای اتباع لازم ہوتا (جبکا حاصل بیمونا كه آب كوصرت ميرى تعليمات كو د مكيهذا جائية، تورات وانجيل كا د كيهذا آيك لئے درست نہيں اسگراسكے جواب بي سيكها جاسكما كم تورات كاجواسوقت ايل كتامج ياس نسخه تفا ده تحريف شده تفاا درزمانه ا بتداراسلام كانقاجس ميں نزول قران كاسلىدجارى تقاءاسوقت اسخضرت صلے الله عکمية م قراق كى كمل حفاظت كے بیش نظرا بنی احادیث لکھنے سے بھی تعین حضرات كوروكدیا تفاكرالیانہ لوگ قرآن عصائه احادیث کوجور دین ، ان حالات ین سی دوسری نسوخ شده آسمانی تما کلیرها يرهاناظام كراحتياط كفلات تقاءاس سيرلازم نهبى آئاكه مطلقاً تورات والجبل كمطالع اور پرھنے سے منع فرمایا گیاہے۔ ان کتابوں کے وہ حصے جور سول اللہ صلے اللہ عکمیے کم سے معلق بیشین گوئیوں پرشتل بیں الکامطالعہ کرنااور نقل کرناصحابۂ کرام سے تابت اور معروف، وشہوں ک حضرت عبداللدين سلام اوركعب احباراس معاملين سب سے زيا ده معروف ہيں، دوسرے صحابة كرام نے تھى ان يزيكيزين كيا۔اسلط حاصل آيت كابيم وجائے گاكد تورات والجيل ميں جو غیر محرف مضامین اب میمی موجود ہیں اور بلاشبر بصائر ہیں،ان سے استفادہ درست ہے گرفاہر که ان سے استفاده صرف ایسے ہی لوگ کرسکتے ہیں جو مُرقت اورغیر مُروت میں فرق کرسکیں اور بیج و غلطكو بهجان كيس وه علمار ما هرين بى موسكة بي ،عوام كويشك اس سے اجتناب اسكنے ضروری ہى ك وكسى مغالط مين نديرها ين اين اين كم ان تمام كتابون كالتي بين تي سات باطل كي آميزش ب كه عوام كوا تك مطالعه سے يربيزكرنا جا ہے علمار ما ہرين ديكيميں تومضا كقر بنہيں -لِنَدُنْذِ رَفِقَومًا مَا الله مُعْمِقِنْ نَيْنَ بَنِي بِهِال اس قوم سعرب مُراد بين جوحضرت العاعيل الله كى اولاد ميں بيں اور انكے بعد سے خاتم الانبيار صلے اللہ عليہ لم كے زیانے تك انمیں كوئى پینمب



مارون القرائن جملات من المراك المراك

تصدیق کی ہے جن کو تو دات و انجیل میں ان بشارتوں کا علم ہے۔ چنانچیر) جن کو کوں کو پہنے قسران سيلے (اسمانی) کتابي دي بي (اُن ميں جومنصف بي) ده اُس پرايان لاتے بيں-اورجب قران اُن کے سامنے پڑھا جاتا ہے تو کہتے ہیں ہم اس پرایمان لائے بے شک بیعق ہے (جو) ہمارے رب کی طرف سے نمازل ہوا ہے اور) ہم تواس (کے آنے) سے پہلے بھی (اپنی محتا یوں کی بشارتوں كى بنارير) ما نتے تھے (ابنزول كے بعد تجديد عبر كرتے ہيں۔ لعني ہم ان لوكوں كى طرح نہيں جوزول قران سے پہلے تواسی تصدیق کرتے تھے بلداسے آنے کے منتظرادر شائق تھے سکر جب قران آیا تواسکے منكر موكة (فَكَمَّا جَاءُهُمْ مَمَّا عَرَفُوْ لَفَقُ إِنهِ) اس سے صاف ظاہر دو كياكہ تورات و أجيل كى بشارتو كمصداق المخضرت صلحادالله عكيهم ي تقي جبياكه سورة شعرارك أخرس فرمايا ب أوَكَوْتِكُنْ لَهُوْ ايَّةَ أَنْ يَّعُنَهُ عُلَمُ قَالِبَيْ إِسْرَائِيْلَ - بِهِانَ بِمِن رسالتِ مُحَدِيهِ بِيعِلَا مِبْن اسرائيل كي شهادت کا بیان ہواآ گے مؤمنین اہٰنِ کتا ب کی فضیلت کا بیان ہے کہ) اُن توگوں کو اُن کی تنینی کیوجہ سے دور ا فواب ملے کا (کیونکہ وہ پہلی کتاب برایمان رکھنے کے شمن میں جی قرآن پرایمان رکھتے تھے اور بعد نزدل مے بھی اس پڑھائم رہے ادراس کی تجدید کی ، بیرتوا بھے اعتقاد ادر جزار کا بیان تھا آگے عمال وا فلاق کا ذکرہے کہ) اور وہ لوگ نیکی (اور محتل) سے بدی (اور اندار) کا دفعیر دیتے ہی اور محت جو کھوان کو دیا ہے اس میں سے (اللّٰر کی راه میں) فریح کرتے ہی اور (جن طبح یہ کوک علی ایناؤں برصررتے بن اسی طرح) جب سے (اپنے متعلق) کوئ نغوبات سنتے ہیں (جو قولی ایزاء ہے) تواس كورجى "مال جاتے بين اور (سلامت دوى كےطورير) كبديتے بين كدريم كھے جوا بنبن بيتے) ہمارا عمل تماريسا من آفيكا ورئتها راعل تمهار سامن (بهائ) يم توتم كوسلام كرتي بن (بم كو حفاظ معات ركور) م تيجولوكون سي الجهذا نبين عاسة -

معارف ومسائل

اَلَّذِينَ التَّيْنَ الْآيَدِ اللَّهِ الْكِرْبُ مِنْ فَتِيلِهِ هُلُمْ يِهِ يُؤْمِنُونَ ،اس آیت بی اُن اہل کما کِل وَکریِ جورسُول الشرصلے الله ملک بعثت ونبوت اور نزدلِ قران سے بہلے ہی تورات و انجیل کئی ی موی بشار توں کی بنا رہر نزدلِ قران اور رسُول الله بسلے الله علیہ می بعثت پر یقین رکھتے تھے بھر ای مبعوث موئے تو اپنے سابق یقین کی بناء پر ایمان ہے، آئے حضرت ابنِ عباس محرد ایج

ورة القصص ٢٨ کہ نجامتی بادشاہ حبشہ کے دریار ہوں میں سے جالیس آدمی مرمیز طبیبہ میں اسوقت حا صراحے جب بول الت*ار صلحالة عليه لم غزوهٔ خيبرس شغول تقع پير توگ بھي ج*ہا ديس شريب ہوگئے، تعب*ن كو* کھرزخم بھی لگے مگران میں سے کوئ مقتول بہیں ہوا۔ انھوں نے جب صحابۂ کرام کی معاشی ملکی کا حال دیکھا تو آیسے درخواست کی کہ ہم انٹر کے نشل سے مالدارا صحاب جائدا دہی ہم اینے ملک دابس حاکرصحابهٔ کرام کے لئے مال فراہم کرکے لائیں آپ اجازت دے دیں، اس پر یہ آیت نا زل ہوی، لَّن يْنَ أَنْيَنْهُ كُولْكِنْتُ مِنْ قَبْلِهِ هُمْ بِهِ يُؤْمِنُونَ (الى قولى) وَمِيْتَأْ دَنَى قَبْهُمُ يُنْفِقُونَ (افرجُ ابن مردویہ دانطبرانی فی الاوسط-منظیری) ا درحضرت سعید بن جبیر کی ر دابیت ہے کہ حضرت جعفر ما اپنے ساتھیوں کے ساتھ حب ہجرتِ مدینہ سے پہلے حبشہ گئے تھے اور نجا شی کے درباریں اسلام کی تعلیماً ببيش كبين تو نجاشي اور اسحے ابلِ دربارجوابلِ كتياب تھے اور تورات وانجيل بيں رسوالتوصالة عكييهم كى ببثارت اورعلامتين ويجهم ويختصان كے دلوں ميں اسى وقت الشرنے ايسان وُ الديا المطهوي) فط المين أمرت محديد كالمخسوص لقت إنا كُنّار من قبله مُسْلِمين ، لعني ان مصرات ابل تنا . ہے کے کہاکہ م تو قرآن کے نازل ہونے سے بہائی سلمان سے بالفظمسكم أكرابيخ لغوى معنفين لياجاك يعني مطبع وفرما نبردارتوبات صاف سي كمان كو جولقین قران اور نبی آخرالزمال پراین کتابول کی دجہ سے حاصل تھااس بینین کو نفظ اسلام اور ن سے تعبیر فرمایا کہ ہم تو پہلے می سے اس کو مانتے تھے۔ اور اگر لفظ مسلین اس جگہائس معنے ہی لیاجائے جس کے لحاظ سے اُمتِ محدید کا العتب ملین ہے تواس سے بیر ثابت ہوگا کہ اسالی اندائی لفظ صرف أمت محديد كے نفے فسوس نہيں ملکہ تمام انبيا بطليم التلام كا دين اسلام ہى تھا اور وہ سب ملمين بى عظم محرة ران كريم كى بعن آيات سے اسلام اور البين كا اس آمت كے لئے محضور لف ہدنامعادم ہونا ہے جبیباکہ حضرت ابراہیم علیاسلام کا قول خود قران نے نقل کیا ہو ھو مَتَاکُمُوم المسلمين ، اورعلامه بيوطي اسى خصوصيت كے قائل ہيں اورام صنمون براك كا ايك تقل رسالہ ہو الكنزدكياس آيت يكلين سمراديب كمام توبيلي ساسلام كوقبول كف كالأواور تبار تصے۔ اور آگرغور کیاجائے توان دونوں میں کوئ تعارض نہیں کہ اسلام تمام انبیاء علیہم السلام کے دمین كامشترك مجى مدادراس أمت كے ليے مخصوس لقب بھى كيونكه بير موسكتا ہے كداك لام اپنے معنی دصفی کے اعتبارے سب میں مشترک ہو مگر اسلم کا لقب صرف اس اُمّت کے مے مخصوص ہو بسيصدلين اورفاروق وغيره كالقابين جنكامصداق فاص اس أمت بي الوكردع ونيظ عنها ہیں، حالا تکہ اپنے معنے وسفی کے اعتبار سے دوسر صحصرات بھی صدیق اور فاروق ہوتے ہیں

بعارف القرآن جسك مورة القصص ١٦٠:٥٥ 784 واضح جواب يهب كدامته تنعالي كواختيار ہے كەسى خاص عمل كو دومرے اعمال سے فیفنل قرار دسيے اور اسكا اجريرها دے بهي كواس سوال كاحق نہيں ہے كه روزه كا تواب الشرتعالى نے اتنازياده كيون كرديا، ذكرة وصدقه كاكيون ابيها نه كيا ؟ بهوسكتا ب كه ياعال حبنكا ذكر آيات مذكورا ورجت بخارى ميں ہے انتزنعا لے مے نز ديك ان كا درجه دوسرے اعمال سے آيا۔ حيثيت ميں بڑھا ہوا ہو اس پریدانعام فرمایا-اور تعین اکا برعلهار نے جواسکا سبب ان توگوں کی دوہری شفت کو تسرار ديا ب ده بهي اين جامعتمل ب اوراسي آيت ك آخريس لفظ بِمُاصَارُوُلت اس يراستدلال مرد سكتا ہے كہ علت اس دوہرے اجركى اُن كامشفت يرصبركرنا ہے دا دشراعلى وَيَنْ رَءُونَ بِالْحَسَنَةِ السِّيقَةَ ، ليني يالوك برائ كو بعلائ ك ذرابيه دُوركرتي بي اس بُرَائ اور بھلائ کی تعبیریں ائمر تفسیر کے بہت سے اقوال ہیں یعبی نے فرمایا کہ بھلائ سے طاعت ادربرائ مصعصیت قراد ہے کیونکہ بھی بری کومٹا دیتی ہے جبیباکہ صریت ہی ہے کہ رسول ادلتہ صلے اللہ عکتیہ کم نے حضرت معاذبن جبل سے فرمایا آیڈیج الحسنة الشیقیة تنفی اینی بری اور کنا ہ مح بعثر بي كروتو وه كناه كومثاد سے كى -ادربعض حضرات نے فرما ياحسنہ سے مراد علم دعلم اور سيئة سے مراد جهل و عفلت سے بعنی بیر لوگ دوسروں کی جہالت کا جواب جہالت کے بجائے جامے و تر دباری سے دیتے ہیں اور درحقیقت ان اقوال میں کوئی تصاد نہیں کیونکہ نفظ حسنہ اور سینٹر تعینی عدالای اور يرائ كے الفاظان سب چيروں كوشامل بي -اس آتیت میں دواہم ہوایتیں ہیں | آول ہی کہ آگر کسی تحض سے کوئی گناہ خطا رسرز دیوجائے تو اسکا علاج يبرب كداسك بعدنبك على فكركرك تونيك على كأس كناه كاكفاره موجا بركا جب كدوث معاذر من کے حوالہ سے اور بیان ہوجیکا ہے۔ دوسرے یہ کہ جوشخص کسی کے ساتھ ظلم اور ٹرائ سے ييش آئے اگرجية قانون مشرع كى رُدسے اسكوا بناانتقام ليدينا جائز ہے سشر طبيكه انتقام برا برسرابر مو كرجتنا نقصان يألكليت اسكوبهنجائ بيءا تنابى بداين حريف كوبهنجا وسي كرا والي اورآسن یہ ہے کہ انتقام کے بحائے بُرائی کے بدلہ میں بھلائ اور طلم کے بدلہ میں احسان کرہے کہ بیراعلیٰ درجیہ مكارم اخلاق كاب اوردُنيا و آخرت مين اسكے منا فع بيشارين ـ قران كريم كي ايك دوسري آيت ين يه برايت بهت واضح الفاظير اس طرح آئ بياد فعَمْ بِالَّذِي وَعَدَ بِالَّذِي وَعَلَمْ اللَّذِي اللَّذِي اللَّذِي وَبَيْنَهُ عَلَاوَةٌ كَانَتُ وَلِنْ حَرِيجٌ بِعِنى بُرَائَ اوْرِالْم كواليه طريقه سے دفع كروجوكه بہتر ہے۔ (معنی طلم کے بدلہ میں احسان کرو) تو حیں شخص کے اور تھھارے در میان عدادت ہے وہ تھارا مخلص دوست بن جائےگا۔ سَلْمُ عَلَيْكُ وَلَا نَبُنْتُ فِي الْجِيمِلِينَ العِني ان لُوكُوں كى ايك عده خصلت يہ ہے كہ جب

مورة القصص ١٠١٠ بيسى جابل وهمن سے كنو بات سنتے ہيں تواسكا جواب دينے كے بجائے يہ كہديتے ہيں كہا داسلام اديم جابل اوكون سے أبھنا يستريني كرتے - امام جصاص نے فرماياكہ سلام كى دوسين بين ايك سلام تحية جوسلمان بابهم ايك دوسر بح كوكرتے ہيں، دوسراسلام مسالمت ومتأركت بعنی لينے دلين كويه كه يناكه بم تهارى مغوبات كاكوى أشقام تم سينهي ليتة ، بيبال سلام سيي دوك معن مُراد بين -يَّكَ لَا تَهَيِّي يُ مَنْ آخْبَيْنَ وَلَحِيَّ اللهَ يَهْدِي يُ مَنْ الشر راہ ير لاك جسكو يَشَاءُ وَهُوَ آعُكُمُ بِالْمُهْتَالِ بِينَ ١٩ چاہے اور وہی خوب جانتا ہے جو راہ بر کئی کے آتے جس کو جاہیں ہدایت نہیں کرسکتے بلکہ الشرجس کو جاہے ہدایت کر دیتا ہے (اور ہدایت كرنے كى قدرت توكسى كوكيا ہوتى الشركے سواكسى كواسكاعلم تك بھى نہيں كہ كون كون ہدا بہت یا نے دالا ہے بلکہ) ہدایت یا نے دالوں کاعلم اُسی کو ہے۔ لفظ ہدایت کئی معنوں کے لئے استعمال ہوتا ہے، ایک معنے صرف راستہ دکھا دینے کے ہیں، جس کے لئے صروری نہیں کہ حس کو راستہ دکھایا گیا وہ منزل قصود پر پہنچے اور ایک عنی ہدایت کے بیر بھی آتے ہیں کہسی کومنزل مقصود رہ بہنجا دیا جائے۔ پہلے معنے کے اعتبار سے تورشول الشرصار شر عكيهم بلكرتمام انبيار كابإدى مونااوربه بدايت أن كاختيارس موناظام سيكيونكه ببربايت ہی اُن کا فرض منصبی ہے اگراس کی اُن کو قدرت مذہو تو فریضہ رسالت و نبوت کیسے ا داکریں۔اس آتیت میں جو آپ کاہدایت پر قا درمذ ہوٹا بیان فرمایا ہے اس سے مراد دوسرے معضی ہوایت ہے، لینی مقصود پر بہنچا دینا ۔ اور مطلب میہ ہے کہ اپنی شبینے وتعلیم کے ذرابعیہ آئے سی کے دل میں ایمان دالدي اس كومون بنادير برات كاكام ننهي به توبراه راست حق تعالے كا ختيار مين كرورات ے معنی اوراً س کی اقسام کی محمل تحقیق سور أه بقره مے شروع میں گزر بھی ہے -صیم میں ہے کہ یہ انحضرت صلی الشرعکتی کے جیاا بوطالب کے بارے میں نازل ہوئ ہے كهات كى بڑى تمنا يہ تقى كه وه كسى طرح ا يمان قبول كريس اس يرا تخصرت صلى الشرعكية لم كوية تباما گيا

٢



جادیں کر کہ بے وطنی کی بھی مضرّت ہواورمعاش کی پرمیشانی الگ ہو، کین اس عذر کا بطلان ہی باکل ظاہرہے) کیا ہمنے ان کوا من دامان والے حرم میں جکہنیں دی جہال ہرقسم کے عیل کھیے جاتے آتے ہیں جو ہمارے پاس سے ربعنی ہماری قدرت اور رزاقی سے کھانے کو طلتے ہیں (بیس عرم ہونے کی وجے سب اخترام کرتے ہی مضرت کا بھی اندلینہ نہیں اور اس مضرت سے منتفی ہونے کی وجسر سے احتمال نوت منفعت رزق كا بھي نہيں، بس ان كوچاہئے تفاكداس حالت كوغنيمت سمجھتے اوراسكونيمت سمجھ کرقدر کرتے اورایمان ہے آتے ولیکن ان میں اکثر لوگ (اس کو) نہیں جانتے (یعنی اسکا خیال بنیں کرتے) اور (ایک سبب اُن کے ایمان نہ لانے کا یہ ہے کہ بیرا پنی خوش عیشی پرنا زال ہی کی بیر بھی حاقت ہے کیونکہ) ہم بہت می ایسی بستیاں ہلاک کر پھیے ہیں جوایتے سامان عیش پرنا ڈال تھے، سو (دیکھالو) یہ ایکے گھر (تھادی آ تکھوں کے سامنے بڑے) ہیں کہ ان کے بعد آیا دہی نہ و کے تھوی دير كے ليئے ذكر كرسى مسافر وار دصا دركا اوھر كو آلفا قا گزر برد جا و سے اور وہ تھوڑى ديروبال سستانے كوياتماشا ديجيف كومبير جادم ياشب كوره جافس) ادراخ كار (انكمان سب مانوں كے) ہم ہى مالك رے رکوئ ظاہری دارت بھی ان کا نہوا) اور (ایک شبحہ انکوبیہ وٹا ہے کہ اگران توکونکی بلاکت لسب كفرك ب توجم مرت سے تفركرتے آرہے بن مكوكيوں نہلاك كيا جيساكہ دوسرى آيتوں بس و كِفَوَّدُنَ مَتَى هٰذَا الْوَعْنُ الْحُ اوراس تَجِمَرُوجِهِ سے ایمان نہیں لاتے سواسکاطل یہ ہے کہ) آیک رہے تیوں کو (ادل ی بارس) بلاک بی کیار تاجیتک کد (بستیون) کے صدر مقام میں می بیٹیسرکون، جیج کے اور (بیغیبر کو جیجنے کے بعد میں فوراً) ہم ال سبتیوں کو ہلاکتہیں کرتے گراسی حالت میں کہ وہاں کے باشتہ بهتدى شرادت كرنے لكيس (يعنى ايك ت معتدبة مك باربارى تذكيرسة مذكر ظالح كرس تواس وقت بلاك كريسة بن چنامخيرجن سبيون كي بلاكت كاادير ذكر تفاده هي اسي قانون ميموافق بلاك توئين سو اسى قانون كرموافق تمها و عسائة عملدر آمر موريا باسكة نه رسول سي يبلي بلاك كيااور مذبعكر كول كے ابھى تك ہلاك كيا مكر ديدروزكرر نے دو۔ اكر تھا را بيرى عنادر ہا توسرا مورى كى جنانجير بدروغيره ي موى) اور (ايك جرايان ندلاني يربيك كرونيالقرب اسك مرغوب اورآخرت أدهاد باسك غير مرغوب، بس دنياكى رغبت سے دل خالى نہيں ہوتاكہ اسميں آخرت كى رغبت سماف كھراس ى تحسيل كاطريقية للاش كياجا و مع جوكه إيمان م سواكي نسبت بيش ركفوكه) جو كجهة تم كو ديا دلاياكيا ب وہ محض (چندروزہ) ڈینوی ذند کی کے برتنے کے لئے ہے اور یہیں کی (زیب و) زمیت ہے (کہ فاتمر عمر كے ساتھاسكا بھى فاتمر ہوجائيكا) اورجو (اجرو تواب) التركے ہاں ہے دہ بدرجهااس سے (كيفية بھى) بہترہ اور (كمية بھى) زيادہ (لينى بمينه) باتى رہنے والاب سوكياتم لوگ (اس تفاوت كويا اس تفاوت كے اقتقاركو) نہيں بحصة (غرض تمقارے اعذا داور اسباب ير

سورة القصص ١٠:٢٠

معارف القرآن جي لرششم

اصراد على الكفرسب محض بي بنياد ا در لغوين محجدا در ماتو)

معارف ومسائل

وَقَالُوْ ٱلمَانَ تَنْجِيعِ الْهُلُاي مَعَكَ نَنْخَطُّونُ مِنْ ٱرْضِنَا لَا يَعْنَى كَفَّارِ مَدُّ ما رَبُّ مِن عَمَّان و غیرہ نے اپنے ایمان نہ لانے کی ایک وجہ یہ بیان کی کہ اگر جہہم آپ کی تعلیمات کوحق مانتے ہیں منكر زمين خطره يدسه كداكرهم آب كي بدايات يزعل كرك آيك ساته وجادي توساراع بهارادتمن تجابيكا ادر بہیں ہاری زمین مکرسے اُ چک کے گا (ا خرجانسائ وغیر) قرائن کریم نے ایک اس عذر لنگ کے تین جواب وكياوليهم أوكوننكون لهُو تحريها إمانا يَنْجُني الني تشرك كل شيء الين أن كايم عذراسك باطل سيحكه الشرتعالي فيخصوصيت كيساتها بل مكهمي حفاظت كاليك قدرتي سامان بہلے سے بیکرر کھاہے کہ ارض مکہ کو حُرم بنادیا اور پورے عرب کے قیال کفرومشر کا ^{دی}اہی مداد تو^ں مے باد جود اس پر شفق مقے کہ زمین حرم مکہ بی قتل و قتال سخت حرام ہے ۔ حرم میں باپ کا قاتل بیٹے کو مِلْمَا تَوَا نَهَائُ جُوشِ أَ تَقَامُ کے با وجود کسی کی بیر مجال ن^{رکھی} کہ حرم کے اندر اینے دِنمُن کوفتا^{کہ} دے یا اُس سے کوئ انتقام لے ہے ، اسلتے ایمان لانے میں اُن کو بہ قطرہ محسوس کرناکسقد دجہالت ہے كرجس مالك نے اپنے وحم وكرم سے أبحے كفرومشرك كے با دجود اس زمین میں اس دے دكھاہے ا توايمان لانے كى صورت ميں دہ اُن كوكيے بلاك بونے دے كا يجني بن سلام نے فرماياكہ معنے آيت سے یہ بین کہم حم کی وجہ سے مأمون وتحفوظ تھے، میرادیا ہوارزق فراخی مےساتھ کھا رہے تھے اور عباد مبر بے سواد وسر ذبحی کرتے تھے اپنی اس حالت سے تو تھی بن خوت نہ ہوا اُلیا خوت اللّه ریرا بیان لانے سے ہوا۔ (دقطبی) آیتِ مذکورہ میں حرم ملے داودصعن بیان فرمائے ہیں ایک بیر کہ وہ جائے اس ہے۔ دومرے بیکه وہاں اطراب ونیاسے ہرچیزے تمرات لائے جاتے ہیں تاکہ سکے باشند ما بنی تمام صروریات آسانی سے یوری کرسکیں۔

عُرَمُ مَحَ مِيں ہِرجِيبِ زِكَ تُمَرات كا مَحَمَرِمَ جَنِ كُوالسُّرِتعالیٰ نے اپنے بیت کے لئے ساری دُنیا کی جع ہو تافاص آیات فدرت میں سے بچ کے اس کے تعرف فرمایا ایک ایسامقام ہے کہ وہاں دُنیا کی معیشت کی کوئی چیز آسانی سے بنہ ملتا چاہئے کیونکد گیروں ، چنا ، چا ول دغیرہ جو عام ان ان فلاہے ، ان چیز دن کی بیدا وار بھی وہاں نہ ہونے کے کم میں تقی ۔ پھل اور ترکاریوں وغیرہ کا فلاہے ، ان چیز دن کی بیدا وار بھی وہاں نہ ہونے کے کم میں تقی ۔ پھل اور ترکاریوں وغیرہ کا تو کہنا کیا ہے گر موسیم کے کے موقع پر مکہ کی دو تین لاکھ کی آبادی پر بارہ بندرہ لاکھ اسلانوں کا اضافہ ہرسال کے موقع پر مکہ کی دو تین لاکھ کی آبادی پر بارہ بندرہ لاکھ ان میں سے سے کہ کوکسی کوکسی

ز مالے میں غذائی ضروریات نه ملی موں بلکه رات دن محتمام او خات میں تیا رشدہ غذا ہروقت طتے رہے کا شاہدہ ہرشخص کرتا ہے۔ اور قران کریم کے لفظ (شیرات کل شی یو) میں غور کریں توبيرسوال ببدا بوتا ہے كہون عام ك اعتبار سے تمرات كا تعلق درختوں كے ساتھ ہے مقالاسكا تَصَاكِتُمُواتِ كُلِّ شَجِرْ فرمايا جا مَا اسْحَ بِجائِے ثُمُواتُ كُلِّ شَيْحُ فرماتے ہیں بعید نہیں کہ اشارہ اس طرت ہو کہ نفظ تمرات بہاں صرف بھلوں کے معنے میں نہیں بلکہ مطلقاً حاصل اور بیدا وار کے معنی ح طوں اور کا دخالوں کی مصنوعات بھی اُنکے تمرات ہیں، اس طبح حاصل اس آیت کا یہ ہو گاکھرم مكرمين صرف كھانے بينے ہى كى چيزيں جمع نہيں ہوں كى بلكہ تمام ضروريات زند كى جمع كردى جائيں كى جبكا كھلى أيكھوں مشاہدہ ہورہا ہے كہ شايد دنيا كے سى بھى ملك يس بيد بات نہوكہ مركك ا در سرخطے کی غذائیں اور وہاں کی مصنوعات اس افراط کے ساتھ وہاں ملتی ہوں جیسی محرکرمرس ملتی ہیں۔ بیہ تو کفارِ مکہ مے عذر کا ایک جواب ہوا کہ جس مالک نے تحقادی حالتِ کفر دستر ک میں تمیریہ انعامات برسائے کہ تھا دی زمین کو ہرخطرہ سے مأمون ومحفوظ کر دیا اور یا وجود کیجہ اس زمین میں کوئ چیز پیدا تہیں ہوتی، ساری دُنیائی پیدا داریباں لاکزیمے کردی تو ہتھا را پیر خطر کیسی بڑی جہالت ہے کہ خالق کا نات پرایمان لانے کی صورتیں تم سے پہنمتیں لب ہوجائیں گی۔ ميددوسراجواب اس عذركايه ب وكرة آهككت امن فريد بيطرت معينية ما المسير یہ تبلایا کیا ہے کہ دنیا کی دوسری کافر قوموں کے حالات پر نظر دالوکہ اُن کے کفرو تسرک کے و بال س طرح ان کی بستیاں تباہ ہوئیں اور مضبوط و تھکم قلعے اور حفاظتی سامان سنجاکسیں مل گئے تواصل خوت کی چیز کفروشرک ہے جو تباہی و بربادی کاسبب ہوتا ہے۔ تم کیسے بے خربے و تون ہوکہ کفرومشرک سے خطرہ محسوس بہیں کرتے ایمان سے خطرہ محسوس کرتے ہو۔ تسراجواب اس آيت يس دياكيا حَمَّا أَوْتِيْتُ وَيِّلِ اللَّهِ التَّبْيَاالَاتِم حس میں یہ بتلایاکہ اگر بالفرض ایمان لانے کے متیجہ میں تھیں کوئ تکلیف پہنچے ہی جائے تو دہ چنداوہ اورس طرح دُنیا کی عیش وعشرت مال و دولت سب چندر وزه متاع ہے سی کے یا سی ہیں بنیں رہتی، اسی طرح بہاں کی تکلیف تھی جندر وزہ ہے جلد حتم ہوجانے والی ہے اسلے عقامت کا كام بيه سيحكه فكرأس تكليف وراحت كى كرمع يائيدادا در يهيشه ربين والى بريميش يستروالي دولت ولنمت كيفاط حندر وزة كليف وشقت برداشت كرلينا بى عقلمندى كى دليل -كياكيا تقاءاب مك بھي اُن مين آبادي نہيں موئ جرو قدر تعليل كے - اس قدر تعليل سےمراد

الرمساكن اورمقامات فليلد لئ جاوي جيساكه زجاج كاتول ہے تومطلت بوكاكان تباه شره

FOR

سُورة القصص ٢٨: ٢٨

عشرت سے اپنی کیفیت کے اعتبار سے بھی بہت بہتر ہے کہ دنیا کی کوئ بڑی سے بڑی راحت
ولذت بھی اسکامقابلہ نہیں کرسکتی اور بھروہ ہمیشہ باتی رہنے والی بھی ہے بخلاف متابع دُنیا
کے کہ وہ کتنا ہی بہتر ہو مگر بالآخر فانی اور زائل ہے دالا ہے ، اور یہ ظاہر ہے کہ کوئ عقلمندا دمی
الیے عیش کو جو کم درجہ بھی ہو اور جیندر وزہ بھی اس عیش وارام پر ترجے نہیں ہے سکتا جو راحت و

لذت میں اس سے زیا دہ تھی ہدا در ہمیشرر ہنے والا تھی ہد-

ما روث القرآن جسكدسم

عقلمند کی تعربیت ہے کہ وہ و نیا کے صفرون المام شافنی رحمۃ اللترعلیہ نے فرمایا کہ اگرکوی شخص میں زیادہ منہمانے ہو بلکہ آفرت کی فکرمیں گئے اپنے مال وجائیدا دکے شعلق یہ وسیت کر کے مرحاً کہ میرا مال اُس شخص کو دیدیا جائے جوسب سے زیا دہ عقلمند ہو تو اس مال کے مصرف شرعی وہ لوگ ہو نگے جواد شرتعالی عبادت و طاعت میں مشغول ہوں ، کیو نکہ عقل کا تقاضا یہی ہواور و نیا داروں میں سے سے زیادہ عقل والا وہی ہے۔ یہی سئلہ فقہ حنفیہ کی مشہور کتا اُر قرضا رہا ہوں میں اسلام کے مشہور کتا اُر قرضا رہا ہوں ہے۔ یہی سئلہ فقہ حنفیہ کی مشہور کتا اُر قرضا رہا ہوں ہے۔ یہی سئلہ فقہ حنفیہ کی مشہور کتا اُر قرضا رہا ہوں ہے۔ یہی سئلہ فقہ حنفیہ کی مشہور کتا ہے۔ یہی سئلہ فقہ حنفیہ کی مشہور کتا ہوگئے۔

اَفْكُنُ وَ عَلَىٰ اَلْهُ وَعَلَىٰ الْحَسَاعُ فَهُو لَا فَيْلِمِ كَمْنَ مَّ مَّتَعَیٰ اَلْمُ مُسَاعً عِلَا اِیک عَنْ مِن مِن عِنْ اِیک عَنْ مِن مِن عِنْ اِیک عَنْ مِن مِن عِنْ اِیک عَنْ مِن مِن الله عَنْ مُن الله عَنْ الله عَنْ

خ الصرافشير

بھلادہ مخص جس سے ہم نے ایک بیندیدہ وعدہ کر رکھا ہے بھروہ مخص اکس (وعدہ کی چیز) کویائے والاب كيااس فض جيسا ہوسكتا ہے جس كوسم فے دُنيوى زندگى كاجند دوزه فائده دے ركھا ہے بھروه قیامت کے روزان توکوں میں ہوگا جو گرفتار کرکے لائیں جائی گے (مُراد پہلے شخص سے مُومن ہے جس سے جنت کا دعدہ ہے ادر دوسرے سے مراد کا فرجو مجم ہو کرائے گاا درجو تکہ شاع ڈنیا ہی ان توکوں کی مجھول کاسیب ہے اسلے اسی تصریح فرمادی ، ورندان دونوں کا برابر بہونا تو درصل اسوجہ سے ہے كدده كرفتاركرك ما منركئے جاوی كے بدجنت كى نعمتوں سے سرفراز ہونگے) اور (آگے اس تفادت اور کیفیت احصار کی تفصیل ہے کہ دہ دن قابل یاد کرنے کے ہے جس دن خدا تعالی ان کافرد مکو ربطور سزا ے) بیکاد کرکھے گاکہ وہ میرے سٹر میک کہاں ہیں جن کوتم (ہمادا سٹر میک) سمجھ کہے تھے (مراد اکس سے شیاطین ہیں کہ انہی کی اطاعت مطلقہ سے شرک کرتے تھے اس لئے ان کوشر کارکہا اسکوسکرشیاطین جن بر (توكون كوكراه كرنے كى وجه سے) خداكا فرموده (يعنى اتحقاق عذاب اس قول سے كه لاَه لَاثَانَ جَهُنَّهُ مِنَ الْحِنَّةِ وَالتَاسِ ثابت بوجِكا بوكا وه (بطور عدرك) بول النفيل ك كرا عاركبروردكا بیشک بے وہی توگ ہیں جن کوہم نے بہکایا (بیجواب کی تہدید ہے اس حکایت کی تصریح اسلے فرمای کئی کہن کی شفاعت کی ان کو اُمیر ہے وہ برعکس ایکے خلات شہادت دیں گے اور آگے جواب ہے كهم نے بهكایا توضر درتین) ہم نے اُن كو ويسا ہى (بلاجبر واكراہ) بهركایا جیسا ہم خود (بلاجبراكراہ) بهك مقر (بعنى حب طرح بهم خود اين افتيارك كراه بوئے كسى فيهي بجبور نہيں كيااسى طرح بهكوأن بي جايرانه تستط شقايها راكام صرف بهركاما تقايي اسكوا نفون ني اين رائ اورا ختيار سيقبول كرليا جيسا شورة ابراء يم ميس م ومَا كَانَ فِي عَلَيْكُونِينَ سُلُطَانِ الدَّانَ دَعُوتُكُمْ فَاسْتَجَامُ الْ الاية، مطلب يه به كم م مي فرم بين مكريه مي برى نبين) ا در م آيى ميني مين ايح (تعلقات) سے وست بردادی كرتے بين داوں يہ لوك (درحقيقت صرف) ہم كو (بن) نه يُوجع سے (يعنى

Y.

سُورة القصص ٢٨:٣

مئارف القرآن جس

جب یہ اینے اختیار سے بہتے ہیں تو پیخو دخوا ہش پرست ہوئے نہ کرصرٹ شیطان پرست ،مقصود اس سب حکایت سے بیہ ہے کہ جن کے بھروسے بیٹھے ہیں وہ قیاست کے روزان سے دست بردار جانبیگا اولاجب ودمشرکار اس طرح ان سے بیزاری و لے دخی کریں گے تواسوقت ان مشرکین سے کہاجا بیگا کہ (اب) این ان شرکار کو ملاوینا کنده ده (فرط حیرت سے بالاضطرار) ان کو پیکاری کے سودہ جواب بھی نہ دیں گے اور (اسوقت) برلوگ (این آئکھوں) سے عذاب کو دیکھیں گے، اسے کاش برلوگ دنیایں راہ راست پر ہوتے (تو پیصیبت منہ دیجھتے) اور میں دن ان کا فرد ں سے بیگار کر کوچھے گاکہ تم نے یغیروں کو کیاجواب دیا تھا اسواس روزان (کے ذہن) سے سارے مضامین کم ہوجا بی گے تووہ (خود بھی نہ بچھ سکیں گئے اور) آبس میں گوچھ یا جھ تھی نہ کرسکیں گئے البتہ جوشخص د کفر و شرک سے دنیا سى) توبركرے اور ايمان كے آئے اور تك كام كياكرے تواليے لوگ اُتيدہے كدرا فرت سي) فلاح یا نیوالوں سے ہونگے (اوران آفات سے مفوظ رہیں گے)۔

مئارف ومسائل

محشرين كفار وسنركين سے يهلاسوال شرك كينغلق وكاكرين شياطين وغيره كوتم بهادامشرك كهاكرتے تقے اوران كاكہامانتے تھے آج وہ كہاں ہيں ،كيا ود تھارى كھومرد كركتے ہيں ؟ استحجواب مین ظاہر یہ تھاکہ مشرکین بیجواب دیں کہ ماراکوئ قصور نہیں، ہم نے ازخود تسرک نہیں کیا ملکہ میں توان شیاطین نے بہرکایا تھا۔اسلے اللہ تعالی خودان شیاطین کی زبانوں سے کہلوا دیں سے کہرہم نے بهكايا صرورتها مكرمجبورتوهم ني نهبين كيا-اس لية مجسرم بم تني بين مرحم سيرى يهي نهين كيونكة سرطرح بم ف أن كوبهكايا تفااسك بالمقابل انبيار عليهم استلام اور أن ك نا نبول في انكو بدایت بھی تو کی تھی اور دلائل کے ساتھ ان برحق واضح کر دیا تھا ، اُتھوں نے اپنے اختیار سے نبیار کی بات نہ مانی ہماری مان لی تو یہ کیسے ہری ہوسکتے ہیں۔اس سےمعلیم ہواکہ جس شخص کے سامنے حق کے دلائل واضح موجود ہوں اور وہ حق کی طرف وعوت وبینے والوں کے بجائے گمراہ كرنے دالوں كى بات مان كر كمرابى ميں يرجائے تو يہ كوئ غدر محتبر تہيں -

وَرَيْكَ يَخْلُقُ مَا يَسْنَا فِو يَغْتَا رُفَّ مَا كَانَ لَهُمُ الْحِيرَةُ الْمَيْحُ اورتیا رب بیداکرتا ہے جو چاہ اور بیند کرے جس کو چا ہے اُن کے ہاتھ میں نہیں بیندکرنا اللہ الله وتعلى عمّا يُشْرِكُون ﴿ وَرَبُّكَ يَعُكُمُ مَا نَكِنَّ مِنْ وَرُهُمُ زالاب اورببت أدير ب اس جيزت كرمتركي اتيات بن، اورترا رب جاتا بي جوجهي باي انكسيول مين

4

٩٠ وهوالله لكاله الدهواله الحمن کھ کرظا ہرس کرتے ہیں، اور وری اسطرے سی کی بند کی بنیل سے سوا ا اسی کی تعریف ہے کھ حکے ہے اور اس کے یاس کھیرے جاؤگے۔ تو کہہ محركما مم بنين ديك ادرایی مهر بایی سے بادیے تھالے واسے رات اوردن كراسيس جين على كرد اور تلاش مي كرو كواسكا فصل

فح المصرتفسير

FOA

معادف القرآن جسكة

سورة القصص ٢٨

F09

سورة القصص ۲۸: ۲۸

ایک چیز کود دس ری چیزی یا ایک حق کو دوک کا حافظ این قیم نے اس آیت سے ایک ظیم الشان صابطه اخذ یون ضیلت کا معیاد صح اختیاد خدادندی ہی کیا ہے کہ دُنیا میں جوایک جگہ کو دوسری جگہ ہر یا ایک چیز کود وسری چیزی فضیلت کا معیاد میں جاتی ہے یہ اُس چیز کے کسٹ علی کا نیتج بہیں ہوتا بلکہ وہ بلا واسطہ خالق کا نمات سے استخاب واختیاد کا نیتج بہوتا ہے ۔ اُس نے سات اسمان بیدا کئے اُنمیں سے خالی کا نمات سے استخاب واختیاد کا نیتج بہوتا ہے ۔ اُس نے سات اسمان بیدا کئے اُنمیں سے مار علی کو دوسری براہ وجر سُل وہ میکائیل واس اُنسان بیدا کئے اُنمیں سے جنّت الفرود س کو دوسری سب جنتوں پر اور جبر سُل و میکائیل واسرا فیل وغیرہ خاص فرستوں کو دوسرے ساد کو العزم دوسرے انبیا بیا بیا بیا میلی ابراہیم اور جدیب می مصطفے صلے الشر عکی کے کو کوں پر بھر قرار شری کو دوسرے سب کی مصطفے صلے الشر عکی ہے کہ کو کوں پر بھر قرار شری کو دوسرے سب بی اور بی بھر اور اور سامنی کو دوسری سادی دُنیا کے کو کوں پر بھر قرار شری کو دوسری سادی دُنیا کے کو کوں پر بھر قرار شری کو دوسری سادی دُنیا کے کو کوں پر بھر قرار شری کے انتخاب واختیار کا امرا دوسرے اسلاب اُمت کو دوسروں پر فضیلت دینا ہے سب جی تعالی جانتا کی کا تخاب واختیار کا نمیتے ہیں ۔

اسی طرح زمین کے بہت سے مقامات کو دوسرے مقامات پر اور بہت و نوں اور داتوں کو دوسرے دون اور داتوں کو خون اور داتوں پر فضیلت دینا بیسب اُسی اختیارا ورانتخاب بی جن جن شانہ کا اگرہے غون افضیلیت دائوں اور داتوں پر فضیلت دینا بیسب اُسی اختیارا ورانتخاب بیت البتہ افضیلیت کا ایک افضیلیت و مفضولیت کا اصلاح دوسرا سیانیانی اعمال وافعال بھی ہوتے ہیں اور جن مقامات میں نیک اعمال کئے جا ویں دہ مقامات بھی ان اعمال صالحہ یا صالحین عباد کی سکونت سے متبرک ہوجاتے ہیں۔ فیضیلت کسب واختیارا ور علی صالح سے حاصل ہوگئی ہے۔ فلاصہ بیر ہے کہ ونیا میں مدار فضیلت دو چیزی ہیں ایک غیراضیا ہوتا ہے۔ علی صالح سے حاصل ہوگئی ہے۔ فلاصہ بیر ہے کہ ونیا میں مدار فضیلت دو چیزی ہیں ایک غیراضیا ہوتا ہے۔ عوصوت می تعالی کا اختیاب ہے دوسرا ختیاری ہوتا ہے۔ علامہ ابر قبی نے اور آخر میں صحابہ کرام میں سے خلفا درائرین میں صدرتی اگر انسک بعد علی مراضوع پر ہے جنا ارائرین کی بعد علی مراضوع پر ہے جنا ارائرین کی میں اس کو خوا ب ان کے بعد عثمان کا تحدید کرتا ہی ایک تقام دوسر سے خام القرائل سور میں اسے حضرت شاہ عبد العزیز دہلوی دھی الشر عنہ می ترتیب کو ان دو نوں معیا دوں سے تا بت کیا ہے حضرت شاہ عبد العزیز دہلوی دھی الشر عنہ می کرتیب کو ان دو نوں معیا دوں سے تا بت کیا ہے حضرت شاہ عبد العزیز دہلوی دھی اسٹونی المرائد والدی دہان میں اس موضوع پر ہے جنا ارکو وہ مرائری دہان میں اس موضوع پر ہے جنا ارکو کر دیا ہے ادرائدی مرائری میں مطالعہ فرمائیں۔ ترجی احقونے بنام معین اتفام القرائل سور انتحام القرائل سور کی مفضل کھریا ہے۔ اہل علم کے ذوق کی چیز ہے دہاں مطالعہ فرمائیں۔

ِ اَدَءَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللهُ عَلَيْكُمُ النَّكُ مَا اللهُ عَلَيْكُمُ النَّكُ مَا اللهُ وَمُا اللهُ عَلَيْكُ اللهِ عَلَيْكُ اللهِ عَلَيْكُ اللهِ عَلَيْكُ اللهِ عَلَيْكُ اللهِ عَلَيْكُمُ اللهِ عَلَيْكُمُ اللهِ عَلَيْكُمُ اللهِ عَلَيْكُمُ اللهِ عَلَيْ اللهُ عَلَيْكُمُ اللهِ عَلَيْكُمُ اللهِ عَلَيْكُمُ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلَيْكُمُ اللهُ عَلَيْكُمُ اللهُ عَلَيْكُمُ اللهُ عَلَيْ اللهُ عَلَيْكُمُ اللهُ عَلَيْكُولُ اللهُ عَلَيْكُمُ اللهُ عَلَيْكُ اللهُ عَلَيْكُمُ اللهُ اللهُ عَلَيْكُمُ اللهُ اللهُ عَلَيْكُمُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَيْكُمُ اللهُ الل

مورة القصص ٨٢:٢٨ ا در تسرک کا دعوٰی جھوٹا تھا) اور (دُنیامیں) جو کھے باتیں گھڑا کرتے تھے (آئج)کسی کا پتہ نہ رہے گا (كيونكه اعشاب عق كے لئے باطل كاغائب ہوجانالازم ہے)۔ ف الده اس سے پہلی آبت میں جوسوال مناذاً ایجنہ یہ میں کیا گیا اس میں کھارے انبیارکو جواب ديب مصتعلق بازيرس محى اوربها ل خود انبيار عليهم السلام مصشهادت دلوا فالمقصور بالمك سوال مين كوئ مكرار نهي -انَّ قَارُونَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوْسَى فَيْحَى عَلَيْهُمْ وَانتَيْنَهُ مِنَ موسی کی توم سے پھرمٹرارت کرنے لکان پر اور یم نے دیتے تھے اسکوفران قادون جو تھا آرات مفاتحة كتنو أيالعصية أولى الفوق وذكال كذفومة كراسى بخيال أتفافے سے تھے۔ جاتے كئى مرد زور آور جب كہا اس كواسى قوم نے وتَفْرَحُ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْفَي حِينَ ۞ وَابْتَخِ فِيمًا الله الشركو بنين بھاتے اترائے والے اورجو کھ کو اللہ التارالافخرة ولاتنس نصيبك من التُّ نياو آخسي یا ہے اس کالے بھلا کھر اور نہ بھول اینا حصر کونیا سے لله التيك ولا تبنيخ الفساء في الذي من التي الله لا يجي لشرف بھلائ کی بھو سے اور مت چاہ ترایی ڈالنی ملک سیں مُفْسِدِ يَنَ ۞ قَالَ إِنَّمَا أَوْتِينَتُكُ عَلَى عِلْمِ عِنْدِي ثُلَّ أَوَلَهُ يَعْكُمْ خرابي والمن وال

المُتُولِينَ اللّهُ اللهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ الللللّهُ اللّهُ الللللّهُ اللّهُ الل

٤

ا محرابی مقاری الشرکادیا تھا بہرہے انکے داسطے جو یقین لاسے اور کام

سارف القراق جدات المسلام و المسلام و بالرق القصص ۱۹۲۸ و بالرق الآرف القصص ۱۹۲۸ و بالرق الآرف القصص ۱۹۲۸ و بالرق الآرف القراق المسلام و بالرق الآرف القراق المسلام و بالرق الآرف القراق المسلام و بالمال المسلم و بالمال المسلم و بالمال و ب

خ المصرتيسير

قادون (کامال دیمه نوکه کفر د خلات کرنے سے اس کوکیا حزر پینجاا و داسکا مال و متاع کیکام اللہ اسکا مال د متاع بھی ہر با د ہوگیا، مختصرا سکا قصد پر ہے کہ دہ) موسی (علیہ الله کا پیچا دا د بھائی) تھا (کذافی الدر) سو وہ کشرت کی ہرا د دیمائی) تھا (کذافی الدر) سو وہ کشرت مال کی د جہسے) ان نوگوں کے متقابلہ میں تکہر کرنے لگا اور (بال کی اسکے یاس پیکٹرے تھی کہ) ہمنے اس کو استقد رخز انے دیتے تھے کہ اُن کی تنجیاں کئی کئی (ورا ور تحضوں کو گرا جا را کہ دیتے تھی کہ اُن کی تخیاں اس کرت سے تھیں نوظا ہرہے کہ خز انے ہہت ہی ہونگے اور شکر اسوقت کیا تھا) جبکہ اس کو اس کی برا دری نے (بجھانے کے طور پر) کہا کہ تو داس مال اور شکہ اس کو اسٹر نہیں کر نا اور (پر بھی کہا کہ) تجھ کو خوا اس کی برا دری نے (بجھانے کے طور پر) کہا کہ تو داس مال و حضرت پر) اثرا مت واقعی الشر تعالی الرائے والوں کو پیند نہیں کر نا اور (پر بھی کہا کہ) تجھ کو خوا اس میں عالم آخرت کی بہت کہ) جس طرح خوا تعالی نے تیرے ساتھ اس کے جتنا دھور کے مساتھ کہ اس کو بین نہیں کرنا اور (مطلب اِئر تنج وَ لا تنگش کا پر ہے کہ) جس طرح خوا تعالی نے تیرے ساتھ اس کے جتنا دھور کے ساتھ کی اور خوا تھی الشر تعالی کے تیرے ساتھ اس کی بین کہ ہوگی کہا کہ) جس طرح خوا تعالی کے تیرے ساتھ اس کے خوا میں موسی عالم آخرت کی کا بر اور خوا نیا کی انڈول کو پیند میں نوا دہونا ہوتا ہے کھور کی انڈول کو پیند میں نوا دہونا کی انڈول کیا ہوگی کی انڈول کی انڈول کیا ہوگی کا انڈول کیا ہوگی کا انڈول کی ایک کی انگار فرانس کے خوا کہ کیا ہوگی کا قادون (پر بھر تی کہ کہ کیا کہ کو کھور کیا ہوگی کا انداز کو ان کیا ہوگی کا قادون (پر بھر تی کہ کہ کو کھور کیا گوگی کہ کہ کیا کہ کیا گوگی کے دور کو کھور کیا گوگی کے دور کی کھور کیا گوگی کھور کیا گوگی کیا گوگی کے دور کیل کیا گوگی کے دور کیا کہ کیا گوگی کیا گوگی کیا گوگی کے دور کی کھور کیا گوگی کو کھور کیا گوگی کو کھور کیا گوگی کیا گوگی کے دور کی کھور کیا گوگی کیا گوگی کیا گوگی کے دور کو کھور کیا گوگی کیا گوگی کیا گوگی کیا گوگی کیا گوگی کے دور کیا گوگی کیا گوگی کیا گوگی کے دور کو کھور کیا گوگی کیا گوگی کیا گوگی کیا گوگی کیا گوگی کھور کیا گوگی کیا گوگی کھور کیا گوگی کھور کیا گوگی کیا گوگی کو کھور کیا گوگی کیا گوگی کی

معارف القرائ جملة على المعارف القرائ جملة على المعارف القصص ١٩٢٢٨ معارف القرائل المعارف القرائل المعارف القرائل المعارف القرائل المعارف القرائل المعارف المعا

اس سے میں نے بیسب جمع کیا ہے بھرمیرا تفاخر بیجانہیں اور نداس کوغیبی احسان کہا جا ہے اور منرسی کا اسمیں کھھ ہتھا ق ہوسکتا ہے آگے اللہ رتعالیٰ اسکے اس قول کور د فرماتے ہیں کہ کیا آس (قارون) کے (اخبار متواترہ سے) میر نہ جانا کہ استرتعالی اس سے پہلے اُمتوں ہی ہے ایسا و ہلاک کو حیکا ہے جو قوت (مالی) میں (بھی) اس سے کہیں بڑھے ہوئے تھے اور مجمع (بھی ہی سے اُن کا زیا دہ تقاادر رصرف میں نہیں کہ نس ہلاک ہو کر جھوٹ گئے ہوں بلکہ بوجہ اُن کے الانكاب جرم كفراد دانشرتعالى كويدج معلى سونے كے قيامت ميں بھى معذب ہونى عبياوي كا قاعدہ ہے كه) ابل فرم سے أن سے كنا ہوں كا رتحقيق كرنے كى غرض سے) سوال فركم تاملے كا ركبونكه الشرتعالى كويرسب على سيكوزج وتمنيه كالنفسوال بولقوله تعالى كنشأ كتهم أجَمْعِينَى ، مطلب بيركه الرقاد دن اسمضمون برنظر كرّما توانسي جهالت كي مات به كهناكيونكم يجيلى قومون كے حالاتِ عذاب سے الترتعالی كى قدرت كالمداور مؤاخذة اخروبير كأميركا محم الحاكمين م دنا ظاہر ہے، محرسی کو کیاحق ہے کہ اللہ کی تعمت کو اپنی ہنر سندی کا میتجہ تبلائے اور حقوق واجہ مانكادكرم) محر (ايكبارايسااتفاق بواكه) وه ايني آرانش (اورشان) سے اين برادري -اسے بکلا جو لوگ (اُس کی برا دری میں) دنیا کے طالب تھے (گو مُومن ہوں جیسااُن کے انگلے قول وُ بْیَکاتَ اللّٰهُ یَنبُسُطُ الْمَ اسے ظاہراً معلوم ہوتا ہے وہ نوک کہنے لگے کیا خوب ہوتا کہ کم کو بھی وہ ماز دمامان ملا بوتا جبیسا قار دن کوملا ہے دافعی وہ بڑا صاحب نصیب کے (یہ تمنا حرص کی تھی ، اس سے کا فرجونا لازم نہیں آتا ، جیسااب بھی بعضے آدمی با دجو دمسلمان ہونے کے شب روز دوسری قوموں کی ترقیاں دیکھ کرللجاتے ہیں اوراسی فکرمیں لگے رہتے ہیں) اور جن توگوں کو (دین کی فہم عطا مرئ مقى ده (ان حربصول سے) كہنے لكے الرسى تفارا ناس مورتم اس دُنيا يركيا جاتے ہو) الشرتعالي کے گھر کا تھاب (اس کونیوی کرد فرسے) ہزار درجہ بہتر ہے جوالیتے تف کو ملتا ہے کہ ایمان لا سےاور نیک علی کرنے اور (بھرا بیان وعمل صالح والوں میں سے بھی) وہ ﴿ تُوابِ کامل طوریر) ان بى توكون كو دياجانا ہے جو (دنياكى وص وطع سے) صبركرنے والے ہيں (يس تم توك يمان كى تكيل اور ال صالح كى تحصيل ميں لكوا ور حد مرشر عى كے اندر دنیا حاصل كر كے زائد كى وص وطع سے مبركرو) يهر بميناس قارون كواورا محل سرائي (اس كى شرارت بره جانے سے) رمين مين صنباديا سوکوئ الیسی جاعت نہ ہوئ جواس کو انٹر (کے غلاب) سے بچالیتی (گووہ بڑی جاعت والاتھا) اورىندده خودى اينے كو بچاسكا اوركل (يىنى يجيلے قريب زمانديں) جولوگ اس جيسے ہے كی تنا مررب عقے وہ (آج اسے خنے ف کو دیکھ کر) کہنے لگے بس جی یوں معلوم ہؤنا ہے کہ درزق کی فراخی

اور تنگی کا مدارخوش نصیبی یا برضیبی پرنہیں ہے بلکہ یہ تو محض حکمتِ تکوینیہ سے التّری کے قبضہ میں ہے بین التّری کے قبضہ میں ہے بین وں میں سے جس کو چا ہے زیادہ روزی دے دیتا ہے اور (حبکو جے) تنگی سے دینے لگتا ہے (یہ ہماری فلطی تھی کہ اس کوخوش نصیبی سمجھتے تھے ہماری تو ہہ ہے اور واقعی) اگر ہم پرا لتّرتعالی مهر بانی مذہ دتی تو ہم کو بھی دھنسا دیتا (کیونکہ مرص اور حب دُنیا کی معصیت کے ہم بھی مرتکب ہوئے تھے) بس جی معلوم ہواکہ کا فردن کو فلاح نہیں ہوتی (گوچندر و و مراح لوٹ لیس محکوم ہواکہ کا فردن کو فلاح نہیں ہوتی گوچندر و و مراح کوٹ

معارف ومسائل

سورہ قصص کے مشروع سے پہاں کے حضرت موسی علیات ام کا وہ قصتہ مذکور تھا جوائی کو فسر عون او اس کو خون کے ماتھ بینی آیا، پہاں الکا دوسرا قصتہ بیان ہوتا ہے جوا بینی برا دری کے آدی قارون کے سابحۃ بیش آیا اور مناسبت اسکی سابھہ آیتوں سے یہ ہے کہ بیجھلی آیت میں بیرا رشا وہوا تھ کہ وُنیا کی دولت و مال جو تھیں دیا جاتا ہے وہ جندر و زہ مناع ہے اس کی مجست میں گجانا وانشمندی بنیں ۔ وَمَا اَوْنِ مَنَّ اَعْ اَلْحَیْ اِللّٰ اَنْکَا اللّٰدِیّة ، قادون کے قصتہ میں بیہ بتالیا گیا ۔ اُن سے مال و دولت حاصل ہونے کے بعد اسٹو تعالیٰ کو اُن اللّٰدِیّة ، قادون کے قصتہ میں بیہ بتالیا گیا ۔ کہ اُسٹ مال و دولت حاصل ہونے کے بعد اسٹو تعالیٰ کو کھیلا دیا اسکے نشہ میں ست ہوکر التہ توالیٰ کا مات کری بھی کی اور مال پر جوحقوق و اجبہ الشر تعالیٰ کی خاصر میں آئی اوائی سے خون ہیں اُن کی اور مالی یو جو تقوق و اجبہ الشر تعالیٰ کی خاصر کی اور منسادیا گیا ۔

تِ

وہ اللہ تعالی کی طرف سے ہے مجھے اسمیں کھ دخل نہیں مگر وہ اس برطمین نہرااور حضرت

توان کی برادری کابھائ اور قریبی رشته دار موں میرااس سیادت وقیادت میں کوئ حصر کیوں

نهيں۔ جنامخيمولى على السلام سے اسكى شكايت كى جصرت مولى على السلام نے فرماياكه يہ جو كھے ہے

و نیاکا حق سرا اس کی تفسیرا کمٹر مفترین نے یہ کی ہے کہ اس سے مراد و دنیاکی عمرادرائیں کئے ہوئے دہ اعمال ہیں جو اس کو آخرت میں کام آویں جس میں صدفہ خیرات بھی داخول ہے اللہ دوسرے اعمال صالحہ بھی ۔حضرت ابن عباس اور جمہور مفترین سے بہی معنے منقول ہیں کمانی القرطی اس صورت میں دوسرا جملہ بیسے جملہ کی تاکید و نائید ہوگی ۔ بیلے جملے میں جو کہاگیا کہ جو کچھے اللہ نے دیا ہے بینی مال و دولت اور عمرو قوت وصحت و غیرہ ان سب سے وہ کام نے جو دارا فرت بی تی کم اس کے اور در حقیقت و نیاکا یہی حصر نیزاہے جو آفرت کا سامان بن جائے باتی دنیا تو دوسرے و کم اس کے اور در حقیقت و نیاکا یہی حصر نیزاہے جو آفرت کا سامان بن جائے باتی دنیا تو دوسرے و کھی منہ جھلاکہ کی کہ ہو کچھا اللہ نے اس کا میں سے اپنی آفرت کا سامان بی کم و کھو اس سے اپنی آفرت کا سامان بی کم و مگر اپنی ضروریات و نیاکو بھی نہ بھلاکہ کر سب صدفہ دیا ہے اس تفسیر پر نصیب و نیاس خیرات کرکے کرتھال بن جائو بلکہ بقدر صرورت اپنے لئے بھی رکھو۔ اس تفسیر پر نصیب و نیاسے مرادائس کی معاشی صروریات ہو تھی والٹر سیحانہ و تعالی اعلم ۔

الناران و الما المراق المراق

ادر علم مي توانشر تعالي بي كاديا مواتضا اسكاكوي دَا تي كمال نه تفا-

مارف القرآن حي سُورَة القصص ٢٨: ٣ کی مثال بیش فرمائ کرجب اُنھوں نے سکشی کی تو الٹرتعب لی کے عذا سے نے ان کو اجانک بيرو ليامال و دولت أن كے محصى كام ترايا-وَقَالَ الَّذِينَ أَوْتُوا الْعِلْمُ وَيُلِكُو الآية ، اس آيت ين، اللَّه يُنَ أُونُوا الْعِلْمَ اللَّه عني علمار كامقابله الكَّنِيْنَ يُرِينُكُ وْنَ الْحَبِوْقَ اللَّهُ نُيَا كَيُاكِيا بِحَبِمِين واضْح اشاره اسطون بي كمشاع دُنيا كالداده اوراس كومقصود بنانا ابل علم كاكام نهبي ابل علم كي نظر بميشه آخرت كے دائمي ف الده پر دہتی ہے، متاع دُنیاکو بقدر صرورت عاصل کرتے ہیں اور اُسی پر قناعت کرتے ہیں۔ تِلُكَ النَّا ارُ الْأَخِرَ الْمُخِرَةُ تَجْعَلُهَا لِلَّذِينَ لَا يُرِينُ وَنَ عُلُوًّا فِلْ لَارَ المحالات الم دين كے ده ان لوگوں كو جو نہيں چاہتے اپنى رائى ماك ميں وَلَا فَسَادًا وَالْعَاقِيَةُ لِلْمُتَّقِبَانَ ١٥٥ مَنْ جَآءِ بِالْحَسَنَةِ فَلَيْخَيْرُ اورنہ بگاڑ ڈانا اور عاقبت بھلی ہے ڈرنے والوں کی جو ہے آیا بھلای اسکوملنا ہے اس مِنْهَا ۚ وَمَنْ جَاءِ بِالسَّبِيَّةِ فَلَا يَجْزَى الَّن بَنَ عَمِلُوا السَّيَّاتِ ادر جوکوئ کے کہ آیا بڑائ سو بڑائیاں کرنے والے اُن کو وہی سنا لے کی الكما كانوايتمكون 25 03 8 3. يه عالم آخرت (جس ك ثواب كامقصود مونا أدير (فقوابُ الله حَيْدَ عِن بيان مواب) ام أنبي وكون ك النه خاص كرتے ميں جو دُنياميں نه برا بننا جا ہے ميں اور نه فساد كرنا (ليني نه كبر كرتے بيں جو باطني كناه ہے اور مذكوئ ظاہرى كناه ايساكرتے بين سے زمين ميں فساد بريابي اورصرف ان باطنی اورظا ہری بڑائیوں سے بحیا کافی نہیں بلکہ) نیک میتے متقی لوگوں کو ملتا ہے، (جو بُرايُوں سے اجتناب كماتھا عال صالحه كے مي يابند بوں اوركيفيت اعال برجز اردمزاكي بير او کی کہ) جو تحق (قیامت کے دن) نیکی لے کرافیے گائی کو اُس (کے مقتضا) سے بہتر (بدلہ) ملے کا دکیو کہ نیک عل کا اصل تفتضیٰ تو یہ ہے کہ اُس کی جیشیت کے موافق عوض ملے سگروہاں

أس سے زیادہ دیاجافے گاجس کا کم سے کم درجراس کی حیثیت سے دس گنا ہے) اور چوتحض بدی

كراك كاسوايس لوكوں كوجوبرى كاكام كرتے بي اتنابى بدله طے كاجتنا وه كرتے تف اين

التحمقتفني سيزياده بدلدمنزاكاندمليكا)-

THA

مورة القصص ٢٨:٨٨

معارف القرآن جسكد شم

معارف ومسائل

لِلِّنَ إِنَّىٰ لَا يُونِينُ وْنَ عُلُقًا إِنِي الْاَرْضِ وَلَا قَسَادًا الله اس آيت بن دار آخرت كى نجآ دفلاح كوصرف ان توكوں كے لئے مخصوص فرمايا كيا ہے جو زمين ميں مُعلّوا در فساد كا ادا دہ مذكري -عُلُوسے مراد مكبتر بے تعینی ایت آئے كو دوسروں سے بڑا بنا نے اور دوسروں كوحقر كرنے كى فسكر-اور فسادے مرا دلوگوں برظلم كرنا ہے (سفيان تورى) اور تعین مفترین نے فرمایا كه برمعصبيت فساد فی الارض ہے کیو مکہ گناہ کے دبال سے دنیا کی برکت میں کمی آتی ہے۔ اس آیت سے معلوم ہواکہ جولوك مكتراورظهم كايامطلق معصيت كااراده كري أن كا آخرت مي حصرنهي -فُ الدّه إِنكِيرِ مِن كَامُون اور دبال اس آيت ميں ذكركيا كيا وہ وہى ہے كہ لوگوں يرتفا خراور أنكى تحقیر مقصود ہو، ورنہ اینے لئے اچھے لیاس اچھی غذا اچھے مکان کا انتظام جب وہ دوسروں کے تفاخرے لئے نہ ہوندموم نہیں، جیساکہ عیج سلم کی ایک حدیث میں اس کی تضریح ہے۔ معصیت کا پختہ عزم مجی معصیت اس آیت میں علواور فساد کے ادادہ پر دار آخرت سے محروم مونے كى دعيدى اس معلى إواكدسى مصيت كايخته اداده جوع ومصمم كے درجرمين آجائے ده جى معصیت بی بے وک فی الوح) البنته اگر بھر وہ خدا کے خوٹ سے اس ارا دہ کو ترک کر دے تو گشاہ کی جگه تواب أسك نامنه اعال مين درج بوتا مها در الركسي غيراختياري مبب سے أس كناه يرفلا نه موی اورعل مذکبیامگراین کوشش گناه کے لئے بوری کی تووہ میمی محصیت اور گناه رکھا جا بیگا رکھا وَكُوه الغرالي من آخر آئيت مين فرما يا وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَقِبْنَ اسكاماصل يرب كرآخرت كى نجات اور فلاح کے لئے دو چیزوں علواورف اوساد ساجننا ہے لازم ہے اورتقوٰی تعینی اعمالی صالحی یابندی بعئ صرف ان دوچیزوں سے پر ہیز کرلینا کافی نہیں ملکہ جواعال ازروسے مشرع فرض واجیب الى يرعل كرنا بھى نجات آخرت كى تسرط ہے۔

اِنَّ الَّذِي فَرَضَ عَلَيْكَ الْفُرُانَ لَوَآدُ الْ اللهِ اللهِ مَعَادِّفُلُ لِرَقِّ الْعَلَمُ الْمُولِيَ الْفُرُانَ لَوَآدُ اللهِ بَعَدَ وَهِ مِيرِاربِ فَوْ مِي اللهُ اللهِ عَلَيْ وَاللهِ عَلَيْهِ اللهِ بَعَدَ وَهُ مِيرِاربِ فَوْ مِنْ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَيْ اللهِ عَلَيْهِ اللهِ عَلَيْ اللهِ اللهِ عَلَيْ اللهِ اللهُ ا

الله وَلا يَصُلُّ نَّكَ عَنَ اينَ اور شر او كر وه و كو كوروكدين الشرك عمول -بَعْنَ إِذَ أَنْزِلَتَ إِلَيْكَ وَادْعُ إِلَىٰ رَبُّكَ وَلَا تَكُونَىٰ مُ تری طرت اور ملاایندرب کی طرف اور مت ہو ٥ و لاتن عُ مَعَ اللهِ إ اورمت بكار الشرك سوائے دوسرا حاكم ، كسى كى بندگى نہيں الكے سوا كُلُّ شَكَّى عِ هَالِكُ إِلَّا وَيُهَدُ اللهِ الْحُكُمُ وَ إِلْيُعِ تُرْجَعُونَ اور امنی سیطرت بھرجاؤ کے مرجيزنا ہے سراسكامن أسىكامم (ادرآیکے ان نخالفین نے جوآب کورپشان کرمے ترک طن برمجبور کیا ہے کی اضطراری مفارقت کا آپ کو صدمه ب توات تستى ركھيں) جى خدا نے آپ ير قران (كاحكام يكل ادر اكى تبليغ) كوفرض كيا ہے (جومجوعاً دليل بها يكي نبوت كي وه آبكو (آيك) صلى دطن (يعني مكر) مين تصريبنجان كا (ادرأس وقت ات آزاداورغالب اورصاحب سطنت مونظ، اورائسي حالت مين اكردوسري جكرتيا كم اعتجوزكياتي ك بمصلحت دباختیا رمدتی سے سے سے منے نہیں ہوتا ، ادرباد جود آسے حقق نبوت کے جو بدلوگ آپ کو علطی بر ا در اینے کوئی پر سمجھتے ہیں تو) آپ (ان سے) فرما دیجئے کہ میرا رب خوب جانتا ہے کہ کون تجا دیں کر (منجا '۔ الش آیا ہے اور کون صریح کمراہی میں (مبتلا) ہے (لینی میرے تن بر مولے اور تھا دے باطل رور ك دلائل قطعية موجود بين مرح جب ان سے كام نہيں ليتے تو اخير جواب يبى ہے كہ خير، خداكومعلوم ہے وہ بتلا دےگا) اور (آپ کی بر دولت بوت محص خدا دا دہے حتی کہ خود) آپ کو (نبی مو نے کے قبل) به توقع نه تقی که آب بر بیرکتاب نازل کی جائے گی گر محض آ یکے در کی مهر بانی سے اسکا نزدل ہوا، سو آت دان توگوں کی فرافات کیطرف توجر ند کیجئے اور سی طرح ابتک ان سے الگ تھاگ رہے آئدہ مجى أى طع) ان كافرونكى درا مائيد مركيعية واورجب الشرك احكام آب يرنا زل موسيح توايسانبوني یا دے (جیسا ایک مین نہیں ہوئے ماما) کہ ہے لوگ آ کیوان احکام سے دوکدیں اوراک ریرستوں) اسے رب رکے دین کی طرف راو گوتکوی بلاتے رہتے اور رجس طیح ایٹک مشرکوں سے کوئ تعلق نہیں رہا، اسى طرح آئنده بميشر) الن سركونيس شابل نهوجيئ اور (حي طح ابتك سرك سے مصبی بي آى طرح

7

آئده بھی) الشرکے ساتھ کسی معبود کو نہ لیکا رٹا (ان آئیوں میں کفار ومشرکین کو آئی درخوا مو

سے نا اُمیدکرنا ہے اور رُوسے سخن اُن ہی کی طرف یے کہتم جوحضور صلے اسٹر عکیہ ہم سے دین میں

1A: MA COURT 1550 44.

معارف القرأن جسلاشم

معارف ومسائل

إِنَّ الَّذِي فَوَضَ عَلَيْكَ الْفُرُمُ أَنَ لَـرُاءُ لِكَ إِلَّى مَعَادٍ مِنْ وَرِتْ مِن بِرَايَات رُسُولُ لُسُر صلے الشرعكتيكم كي ستى اور اپنے فرلھندُ رسالت و نبوت ير يورى طرح فائم رہنے كى تاكبير كے لئے ہيں ، اور مناسبت اسى سابقرآيات سورت سے بيہ ہے كماس سورت ميں التر تعالى نے حضرت موسى علايستلا كا تفصيلي قصة فرعون اوراسى قوم كى وسمنى اور أس سيخوت كا ، بيمرابينے فصنل سے الكو قوم فرعون يرغالب تحية كأذكرفرمايا توافر شورت مين خاتم الانبيار صلط مشرعكتيهم كطايسة بم حالات كاخلاصه بيان فرمانياكه كفاد سحد في آيدريشان كيا، قسل كي فصوب بنائے، مسلمانوں كى زندگى محترين اجيرن كردى حجر حق تعالى في ابنى عادت قديم كعطابق آب كوسب برفت اورغلب فصيب فرمايا اور محرمر مهال كفاد ني آب كونكالاتها وه مير كمل طور را يح قبضي آيا - النِّ ي فَرَى عَلَيْكَ الْعُرُ انَ اجْرَات ياك فے آب برقران فرض کیا ہے دی اُسکی تلاوت اور تبلیغ اوراس برعل آب برفرض فرمایا ہے وہ ہی فا آت کو میرمعادیر نوات می معاد سے مراد مکہ حرمہ ہے جبیا کہ صحیح بخاری وغیرہ میں حضرت ابن عباس عماري يتفسير منقول ب مطلب يه به كما كرجيه عندر وزك لئة آب كواين اوطن عزيز خصوصاً م اوربيت الشرجية رئايرًا محرقران كانا ذل كرنے والا اور أسيرعل كوفرض كرنے والا خدا تعالی آخر کارات کو پیمر محرسی کوشاکر لائیگا- ائمهٔ تفسیرس سے مقاتل کی روایت ہے كررسول الشرصال الشرعكية لم بجرت كے وقت فار تورسے رات كے وقت رات كے وقت ربكے ا درمكر كردينه جانے دلا معروف داستہ کو چھوڑ کر دوسرے راستوں سے سفر کیا کیو مکہ وشمن تعاقب میں تقے۔جب مقام جحفہ مرجہ بہنچے جو مرمنہ طبیبہ کے داستہ کی خبہور منزل دا باخ کے قربیہے اور وہاں سے وہ محہ سے مرمنے کا معروف داستہ طجاتا ہے اسوقت محد محرمہ کے داستہ پر نظر ٹری توبیت الشراوروطن یا و

سکارونالقران جرکته الم المن به آیت کرنازل بوئے جس میں آپ کو بشارت دی گئی ہے کہ کر کرم المائی میں ایک کو بشارت دی گئی ہے کہ کر کرم المائی المین به آیت کے کرنازل بوئے جس میں آپ کو بشارت دی گئی ہے کہ کر کرم بہنجا دیا جا کی گاجو فتح سکہ کی بشارت تھی۔ اس کے حضرت ابن عبائ کی ایک دوایت میں ہو کہ بیمائیت جمنے میں نازل ہوئ ہج نہ کی جذر فرن ادر طبی اس کی بشارت تراک و دوبارہ مکہ کرم میں فاتحانہ واپسی کی بشارت میں کامیابی کا ذریعے رہے اس عنوان سے دی گئی ہے کہ جس ذات حق نے آپ پرتسرای فرفن میں کامیابی کا ذریعے رہے اس عنوان سے دی گئی ہے کہ جس ذات حق نے آپ پرتسرای فرفن میں کامیابی کا ذریعے رہے۔

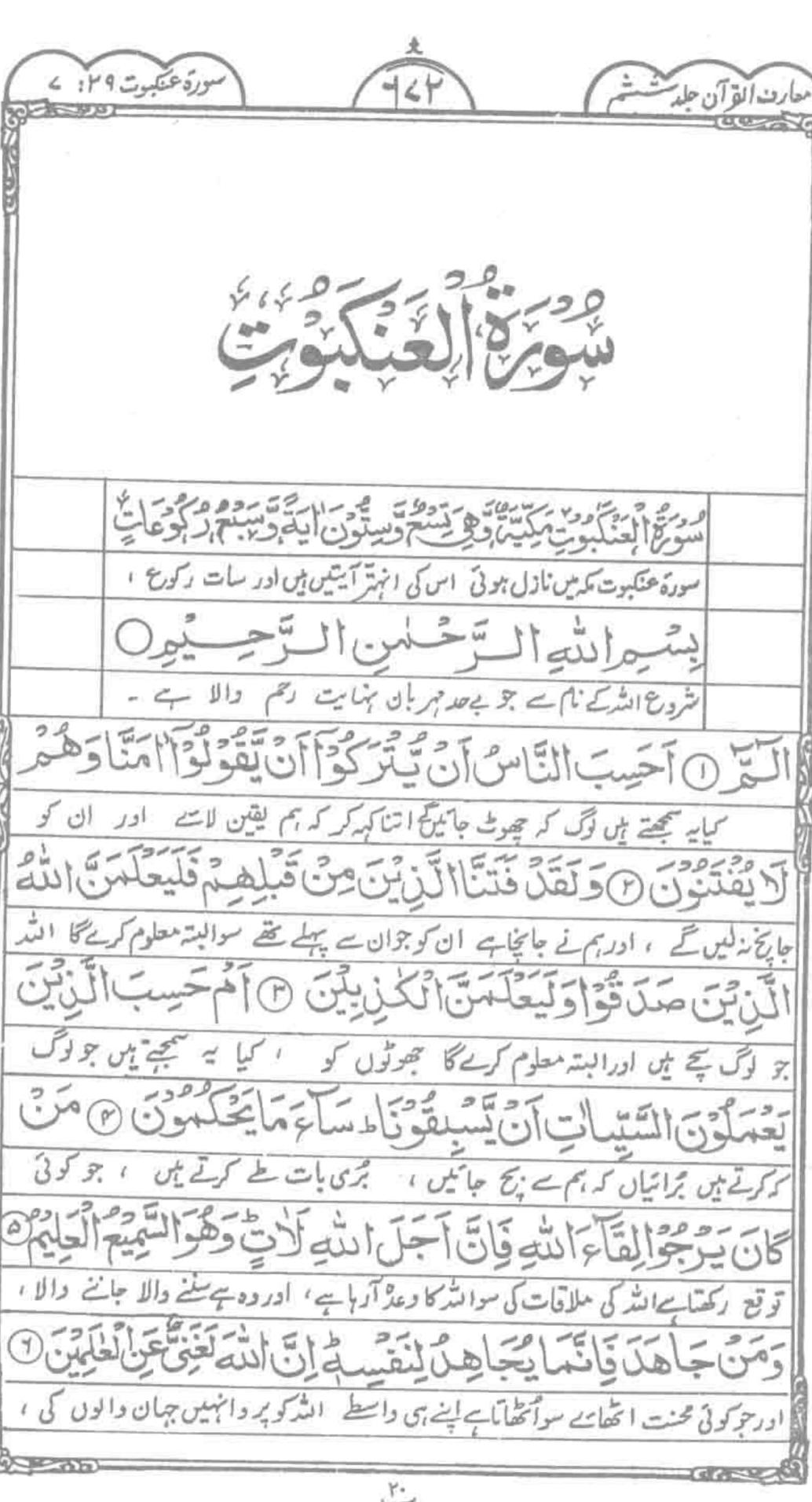
ین میں چین وروسی میں میں میں موروں سے دویا ہے کہ کہ میں میں اور اسٹیں اشارہ اسطرت بھی ہو کہ کیا ہے آپ کو ڈشمنوں پر غالب کرکے دوبارہ محرشکرمہ کوٹا کے گا ، اسٹیں اشارہ اسطرت بھی ہو کہ قرآن کی تلادت اور اُس پر عل ہی اس نصرتِ خدا و ندی اور فتح مبین کاسبیں ہوگی ۔

کُلُ شَی اِ هَالِكُ اِلاَ دَجُهَهُ اس آیت می دیجه سے مراد ذاتِ مق سے اندونعالی ہے۔ اور معض میں ذات مق سے اندونعالی کے سوا ہر چیز بلاک و فنا ہونے والی ہے۔ اور معض حضات مفترین نے فرمایا کہ دجہہ سے مراد وہ عمل ہے جو فعالص التر کے لئے کیا جائے، تو مطلب آیت کا یہ ہوگا کہ جوعمل التارتعالی کے لئے اخلاص کے ساتھ کیا جائے وہ ہی باتی رہنے والا ہے باتی سب

فانى ہے۔ والترسجان وتعالى الم -

الحکاریاتی سوره قصص آج و ذیقعده الوسلی کوالیے حالات میں تمام ہوئی کہ پاکستان
پرمہند دستان اور دو مری بڑی طاقتوں کے گھے جوڑسے شدیج ملہ ہوا اور چودہ روز کراچی پر
دوز اند بمباری ہوتی دہی، شہری آبادی کو جا بجاسخت نقصان پہنچا، سیکڑوں مسلمان
شہید اور مکانات منہدم ہوئے ، اور چودہ دن کی جنگ اس حادثہ بجا لکا ہ پڑھتم ہوئ
کومشرتی پاکستان باکستان سے کھے گیا اور تقریباً نوے ہزار باکستانی فورج نے ہاں جھو ہوگ ہوگ موکر ہتھیار ڈالدیے اور اسوقت تک و ہاں مسلمانوں کا قتل عام جاری ہے، ہرمسلمان
کا دل اس صدمہ سے پاش پاش اور دماغ ما کوف ہے، فائا دی دو آتا الیہ راجعون
کا دل اس صدمہ سے پاش پاش اور دماغ ما کوف ہے، فائا دیٹرو آتا الیہ راجعون
کا دل اس صدمہ سے پاش پاش اور دماغ ما کوف ہے، فائا دیٹرو آتا الیہ راجعون





سورة عنكبوت ٢٩: معارت القرآن جلدست والذين امتوا وعملوا الضلعت تنكفن تعنهم سيا عب اورجولک یقین لات اور کے بھلے کا ہم اُتادیں کے اُن برسے براتیاں انکی اور لَنَجْزِيْنَكُمُ أَحْسَنَ النَّنِي كَانُوْ آيَعُ مَلُوْنَ بدلہ دیں گے ان کو بہتر سے

التقر اس كے معنى توالله بى كومعلوم بين ، لعض مسلمان جوكفار كى ايزا ون سے تجراجاتے ہیں تو اکیاان توگوں نے بیرخیال کرد کھاہے کہ وہ اتنا کہنے میں چھوٹ جائیں گئے کہ ہم ایمیان ہے آسے اوران کو دانواع مصاتب سے اڑما یا دجائے گا، ربعنی ایسانہ ہو گا بلکہ اس قسم کے امتحانات بھی بیش آئیں گے اورہم تولالیے ہی واقعات سے ان لوگوں کو بھی آزما یکے ہیں جو ان سے سیلے دمسلمان، ہوگذرے ہیں رلین اورامتوں کے مسلمانوں بریمی بدمعا ملے گذری ہیں) سوداسی طرح ان کی آز کیش بھی کی جائے گی اور اس آز کیشس میں اللہ تعالیٰ ان لوگوں کو رظاہری علم سے)جان کردہوگاجو راہان کے دعویٰ میں سے تھے، اور جوٹوں کو بھی جان کررہوگا د جنا بخرجوصدق واعتقاد سے مسلمان ہوتے ہیں وہ ان امتحانات میں ثابت رہتے ہیں بلکہ اور زیارہ بختہ بروجاتے ہیں اور چر و فع الوقتی کے لئے مسلمان برجاتے ہیں وہ ایسے وقت میں اسلام کو جود بیطے ہیں۔ بین یہ ایک محمت ہے امتحال کی کیونکہ مخلص اور بخراص کے خلط ملط میں بہت سی معترتين ہوتی ہیں ہنحصوص ابتدائی حالات میں۔ پیمضمون تومسلما نوں سے متعلق ہواآ گے ان ایزل دینے دالے کفار کی نسبت فرماتے ہیں کہ ، ہاں کیاجو لوگ بڑے بڑے کام کررہے ہیں وہ یہ خت ال كرتے ہيں كہم سے كميس كى بھاكيں گے، ان كى يہ بخير بنايت ہى بہودہ ہے ديہ جامعة عند كے طور پر پختاجس میں کفار کی بدائجامی سناکرمسلمانوں کی ایک گوندتسلی کردی کدان ایزاق ل کا ان سے بدله لياجات كا،آ كے بيومسلانوں كى طوت روت سخن ہے كه بوشخص الله سے طنے كى اميد د كھتا ہو سو راس کوتوایے ایسے حواوث سے پریشان ہوناہی مذجاہے کیونکہ) النڈر کے ملنے) کا وہ معین وقت صرورى آنے والاہ رجس سے سادے عنم غلط ہوجائیں کے، كقولد تعالیٰ وَقَالُوالْكُمْدُ لِيْهِ الَّذِينَ آذُهَبَ عَنَا ٱلْحَزَنَ) اوروه سب كيم سنتاسب كيم حانتاب ونهكوني قول اس مع عفي مذكوني فعل ا بس لقار کے وقت تھاری سب طاعات تولیہ وفعلیہ کاصلہ دے کرسب غم دُورکر دے گا) اور ریا در کھوکہ ہم جوئم کو ترغیب سے دے رہے ہیں مشقق کے برداشت کرنے کی ،سواس می ظاہر

- TZM

سودة عنكبوت ٢٩: ٧

ادرسلم ہے کہ ہماری کوئی منفعت نہیں بلکہ ہوشخص محنت کرتا ہے وہ اپنے ہی دنفع کے الے محنت کرتا ہے دور مذہ خواتعالی کو رق ہم جہاں والوں بین کسی کی حاجت نہیں واس میں بھی نزغیہ ہم تعلی مشان کی کیونکہ اپنے نفع پر حمننبہ ہونے سے وہ فعل زیادہ آسان ہوجا آ ہے ہا ور روہ نفع ہو طاعت سے پہنچتا ہے اس کا بیان یہ ہے کہ ، جو لوگ ایمان لاتے ہیں اور نیک کام کرتے ہیں گان کے گذاہ ان سے دُور کر دیں گئے رجس میں معجن گذاہ جیسے کفر دہشرک توابیان سے زائل ہوجاتے ہیں، اور لعض گذاہ ان سے دُور کر دیں گئے رجس میں معجن گذاہ جیسے کفر دہشرک توابیان سے زائل ہوجاتے ہیں، اور لعض گذاہ تو بہ سے کہ اعمالِ صالح میں واخل ہے اور لعض گذاہ صرف حشات سے اور لعض گذاہ بعد قد لانے میزا کے بیان کفیرسب کو گاہ ہی اور ان کوان کے دان کا محال دایمان واعمالِ صالح کی گذاہ بعد قد لانے میزا کے بیان کفیرسب کو گاہ ہی اور اس تقاق سے) زیادہ انجھا بدلہ دیں گے ، اور اس اتنی ترغیبات پرطاعت اور مجا ہرہ پراستقامت کا اہتمام صرور دی ہے ، ذ

مكارف ومسائل

قره مُرِ لَا دُیفَ مَنْوَنَی ، فتنه سے مشتق ہی جس سے معنی آز مائٹ کے ہیں، اہل ایمان خصوصًا انہیا، وصلحاء کو دنیا میں مختلف قسم کی آزمالیٹوں سے گذر نا ہوتا ہے بچرانجام کا دفتے اول کا میابی ان کی ہوتی ہے، یہ آز بہشیں مخالف سے کی آزمالیٹوں سے گذر نا ہوتا ہے بچرانجام کا دفتے ایڈا وَل کا میابی ان کی ہوتی ہے، یہ آز بہشیں مخالف ان میں میں میں میں انداز کی میں میں میں میں کے اصحاب کو اکثر بیش آیا ہے، جس سے بے شاروا قعات سرت اور تاینج کی کتا بوں میں مذکور ہیں، اور سمی یہ آز بائٹ امراض اور دوسری قسم کی تحکیفوں سے ذریعہ ہوتی ہوئی جھنے سے ایو سطیس اللہ سے بیش آیا، اور لعب سے لئے یہ سب قسمیں جمع بھی کر دی جاتی ہیں۔

تنان نزول اس آبیت کا اگرجه از روئے روایات وہ صحابہ بیں جو ہجرتِ مدینہ کے وقت کا انداد لیا ہے۔ وقت کا انداد لیا ہوں کے مارد اوراد لیا ہوں کا مقول ستانے گئے ، گرم ادعام ہے ہر زمانے کے علماء وصلحاء اوراد لیا ہوا کو مختلف قسم کی آزمائشیں میش آتی ہیں، اور آئی رہیں گی ۔ اقرطبی)

فَلْیَعْلَمْ اللّهُ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللّهِ اللهِ اللهُ اللهُ

معارت القرآن جلدستستم

دوسردن برجمی ظاہر فرما دیں گے۔

ا و رحصزت سیدی پیچم الامت تھا نوی نے اپنے بینے مولانا محد بیچقوب صاحب سے اس کی توجہ پیچی نقل فرمائی ہے کہ بعض ا و قات عوام کے درجہ علم پر تنزل کر سے بھی کلام کیا جا تا ہے ، عام انسان مخلص اور مثافق میں فرق آز مایش ہی کے ذریعیہ معلوم کرتے ہیں ، ان سے مذاق کے مطابق حق تعالیٰ نے فرما یا کہ ان مختلف تسم سے امتحا تات کے ذریعہ ہم سے جان کر دہیں گے کہ کون مخلص کون نہیں ، حالانکہ اس کے علم میں بیرسب کچھا زل سے ہے ۔ والشّداعلم

وَوَصَّيْنَا الْاِئْمَانَ بِوَالِدَيْ فَيُ حُمْنَا وَلِائْمَانَ لِوَالِدَيْ فَيَالُونَ فَيْلُونَ الْمَالُونَ فَيْلُونَ الْمَانَ وَالْمَالُونَ الْمَالُونَ فَيْلُونَ الْمَالُونَ فَيْلُونَ الْمَالُونَ وَعَلِمُ الْمَالُونَ الْمَالُونَ الْمَالُونَ وَعَلِمُ الْمَالُونَ الْمَالُونَ الْمَالُونَ الْمَالُونَ الْمَالُونَ الْمَالُونَ الْمَالُونَ الْمَالُونَ وَعَلِمُ الْمَالُونَ الْمِلْلُونَ الْمَالُونَ الْمَالُونَ الْمَالُونَ الْمَالُونَ الْمَلْمُ الْمَلْمُ الْمِلْمُ الْمَالِيَ الْمَالِمُ الْمَلْمُونَ الْمَالِيْلُونَ الْمَالُونَ الْمَلْمُ الْمَلْمُ الْمَلْمُ الْمِلْمُ الْمُلْمِلُونَ الْمُلْمُ الْمِلْمُ الْمُلْمُ الْم

كَنْنُ خِكَنَّهُمْ فِي الصَّلِحِيْنَ () بهم ان كو داخل كرس كے نيك لوگوں يس-

خلاصةتفسير

اورہم نے انسان کو اپنے مال باپ کے ساتھ نیک سلوک کرنے کا حکم دیا ہے، اور آال کے ساتھ یہ بھی کہم دیا ہے کہ) اگروہ دونوں بچھ پراس بات کا زور ڈالیس کہ تو ایس جیز کو ہر ا شریک تھرلت جس دکے معبود ہونے) کی کوئی آھیے، دلسی تیرے پاسس نہیں ہے، ا داور ہر چیز ایسی ہی ہے کہ گل اسٹیا ہے نا قابل عبا دت ہونے پیر دلائل قائم ہیں) تو داسس باب ہیں) ان کا کہنا نہ ما نزاہم سب کو میرے پاس لوٹ کرآنا ہی سومیں تم کو تھا ایسے سب کا اور زئم میں) جو لوگ ایمان لاتے ہوں گے ہم ان کوئیک نزال دیے درجے میں دہو کہ مہشت ہی واضل کر دیں کے دا دراس طرح اعمال بدہران کے مناب

معارث القرآن جلد شنتم

وہ مزایات کا، اورجس نے اس کا عکس کیا ہوگا نیک جزایات گا، عامل یہ ہوا کہ واقعہ بالا میں مان ہو کی مافر مانی سے وسوسہ گناہ کا نہ کیا جائے ہے۔

متارف ومسائل

قرق میناالد نسان، دصیت کہتے ہیں کے کسی علی کا طرف بلانے کو جبکہ وہ بلانا نصیحت وخیرخواہی پرمبنی ہودمنظری،

بِحَالِمَا تَیْهِ مُحَدِّثًا، نفظ حُن مصدر ہری بعن خوبی، اس جگہ خوبی والے طرزِ علی کومبالغہ سے لئے حُن سے تعبیر کمیا ہے۔ مراد واضح ہے کہ النٹر تعالی نے انسان کو بیر وصیت فرمانی کہ ا بینے

والدين كے ساتھ اليحماسلوك كركے۔

قل تو المراق المنظمة المنظمة المنظمة المنظمة المنطقة المحاسلوك كرفى كوساتة المجاسلوك كرفى كوساتة المحاسلوك كرف كوساتة المحاري المنظمة المنظمة

یہ آبیت حصرت سعد میں ابی وقاص دونے بالے میں نازل ہوئی۔ یہ صحابہ کرام میں سے آن دنئی حصرات میں شامل ہیں جن کو آپ نے بیک وقت جنتی ہونے کی بشارت دی ہے ، جن کو عشرہ مبترہ کہا جاتا ہے۔ یہ اپنی والدہ کے بہت فرا بر دارادران کی راحت رسانی میں برطبے مستعد تھے۔ ان کی والدہ جمنہ بنت ابی سفیان کو جب یہ معسلوم ہوا کہ ان کے بیٹے سعب کہ مسلمان ہوگئے توامخوں نے بیٹے کو تنہیہ کی اور قسم کھالی کہ میں اس وقت تک مذکھانا کھا وک گی د بانی میوں گی جب مک کہتم بچوا بینے آبائی دین پر والیس آجا و یا میں اسی طرح محبوک ہیا س سے مرجاوی ، اور ساری دنیا میں ہیں شدے لئے یہ رسوائی تھالے سررہ کہتم اپنی مال کے قاتل ہو۔ رسلم، تریزی) اس آبیب قرآن نے صورت سٹھ کو ان کی بات باننے سے روک دیا۔

بنوی کی روایت میں ہے کہ حصارت سعد ضکی والدہ ایک دن رات اور بعض اقوال کے مطابق تین دن میں رات اپنی قسم سے مطابق مجھو کی بیا ہیں رہی یصارت سعار خاصر ہوئے ، مال کی مجت واطاعت اپنی جگہ بحقی، گرا دشر تعالیٰ سے فرمان کے سامنے کچھ رہ تھی، اس نے دالدہ کو خطاب کرکے کہا کہ آتا ں جان اگر محصار سے بدن میں تناور وحیں ہو تمیں اور ایک ایک کرکے محملی رہتی میں اس کو د بچھ کر بھی کہی ایشا د میں نہ چھوٹ تا، اب تم جا ہو کھا تہ ہیریا مرحاق بہر حال مسلمی رہتی میں اس کو د بچھ کر بھی کہی ایشا دمین نہ چھوٹ تا، اب تم جا ہو کھا تہ ہیریا مرحاق بہر حال



سورة عتكبوت ١٩٤٩

رن القرآن حبله

مكارف ومسائل

جهون باتیں بناتے تھے قیامت میں ان سے بازیرس زادر کھراس برسزا) صرور ہوگی ؛

نہ بہوتے مگرمہ لوگ ان کو مگراہ کرنے کے سبب اور زیا وہ بھاری ہوگتے) اور یہ لوگ جیلبی

و تکال آگئونین گفت قرآ مفاری طون سے اسلام کاراستہ روکئے اور سلمانوں کو بہکانے کی تدبیرس مختلف طریق ل سے ہوتی رہی ہیں ، کبھی زور وزر کی نیائش سے کبھی شکوک شہرات پیدا کرنے سے باس آ بیت ہیں بھی ان کی ایک ایسی ہی تدبیر مذکورہے ، کہ کفار مسلما نوں سے کہتے ہیں کہتم لوگ بلا وجہ عذابِ آخرت کے خوف سے ہمالے طریقے پر نہیں چلتے ، لوہم فروٹ اری لیتے ہیں کہ اگر تخفاری ہی بات بچی ہوئی کہ اس طریقہ پر چلنے کی وجہ سے آخرت ہیں عذاب ہوگا تو تحفالی گے جو کچھ عذاب ، تحلیف بہو پنے گی ہمیں بہو بچے گی تم برآئے تو تحفالی گے جو کچھ عذاب ، تحلیف بہو پنے گی ہمیں بہو بچے گی تم برآئے تا ہوں کا بوجھ ہم المحفالیں گے جو کچھ عذاب ، تحلیف بہو پنے گی ہمیں بہو بچے گی تم برآئے تا ہوں کا بوجھ ہم المحفالیں گے جو کچھ عذاب ، تحلیف بہو پنے گی ہمیں بہو پنے گی تم برآئے تا ہوں کا بوجھ ہم المحفالیں گے جو کچھ عذاب ، تحلیف بہو پنے گی ہمیں بہو پنے گی تم برآئے تا ہوں کی گ

اسى طرح كاليك شخص كا واقعه سورة بخم كة آخرى دكوع بين ذكر كيا كيابرا فنوع يشت الذي تي تولى قد الحفلي قيليد لكارة اكثرى، جس بين نزكور به كه ايك شخص كواس كه كا مسسر سائحقيول في يدكم كرد صوكا دياكه تم بمين كجه مال يهال ديد و قويهم قيامت اود آخرت دن تحمار عذاب كولين ذمه له كر محميس بجاوي كم ، اس في يجه دينا بهي مثر وع كرديا مجوبندكر ديا-

سورة عنكوت ١٠٩١٨ وَأَصَّا السَّفِينَةِ وَجَعَلَنْهَا آيَةً لِلْعَلَمِينَ ﴿ وَإِبْرَهِ ثِمَ أَذْقَالَ اورجباز دالوں کو اور دکھاہم نے جباز کونشانی جبان والول کے داسطے، اور ابراہم کو جب کہا لقومه اعب وااست واتقوى وليكم تعالى تكران كنتم تعلور اس نے اپنی قوم کو بندگی کر والند کی اور طحد نے رہوائے یہ بہتر ہو بھنا اسے جی بیں اگر بم سمجھ رکھتے ہو۔ اِنتَمَاتَعَبُنُ وَنَ مِنْ دُونِ اللهِ آوْتَانًا وَتَأَنَّا وَتَأَنَّا وَكُلَّا وَالْكَالَا اِنَّ م وہوجے ہو النرکے سوائے ہی بتوں کے کھال ادر بناتے ہو جھونی باتیں، بے شک الَّذِيْنَ تَعُيُّدُ وَنَ مِنْ دُوْنِ اللهِ لَا يَمْلِكُونَ لَكُمْرِ، زُعَّا جن کو تم پوجے ہو اللہ کے سواتے وہ مالک نہیں تھادی روزی کے فَالْبَغُواْعِنْ الله النَّالِيّ زُقَ وَاعْدُلُ وَلَا أَنْكُوْالَهُ إِلَّهِ السَّالِ اللَّهِ السَّالِ اللَّهِ السَّالُونَ اللَّهِ السَّالُونُ اللَّهِ السَّالُونُ اللَّهِ السَّالُونُ اللَّهِ السَّالُونُ اللَّهِ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ الللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّا اللّهُ اللَّهُ اللّهُ اللَّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّ سوئم ڈھونڈو انٹر کے بہال روزی اور اس کی بندگی کروا ور اس کاحق مانو اس کی طرت تُرْجَعُون ﴿ وَإِنْ تُكُنِّ بُوافَقَلَ كُنَّ بَ أُمَكُمْ مِنْ قَبُلِكُمْ ط ا برجاؤے۔ ادر اگر م مجٹلاؤے تو مجٹلا چے ہیں بہت فرقے مے سے بہلے ا وَمَا عَلَى الرَّ سُولُ إِلَّا الْكِرُ الْكِلَّةُ الْمُنْكِينَ ١٠٠ ادررسول کاذمہ توبس میں ہو پیغام بہنجا دینا کھول کر۔

خارصه تغسير

اورہم نے قوح دعلیہ اسلام) کوان کی قوم کی طوت دبینجبر بناکر) ہجاسو وہ ان میں بچکس سال کم ایک ہزار برس دہ توا در قوم کو مجھاتے دہے ، پھر دجب اس بربھی وہ لوگ ایمان نہ لات قو ہاں کو طوفان نے آ و بایا اور وہ بوٹ نظالم لوگ سخھ دکہ انتی مدت دراز کی فہاکشس سے بھی مشائر منہ ہوت کی چورا س طوفان کے بعد کی ہم نے ان کوا درکشتی والوں کو درجوان کے ساتھ سوار تھو اس طوفان سے ، پچالیا اور ہم نے اس واقعہ کو تیام جہان والوں سے لئے درجن کو تواتر سے ساتھ اس طوفان سے ، پچالیا اور ہم نے اس واقعہ کو تیام جہان والوں سے لئے درجن کو تواتر سے ساتھ خبر ہونے ، موجب عبرت بنایا در کہم نے اس واقعہ کو تیام جہان دالوں سے نے درجن کو تواتر سے ساتھ ابراہیم میں موجب عبرت بنایا درہم نے ابراہیم میں معلیہ اس کو تغیر برناکر ، جمیع اجبکہ انتقوں نے ابنی قوم سے دجو کہ تب پر ست سے کھی ابراہیم دیا دیار کی عبادت کر واور اس سے ڈور و دا در ڈورکر مثر کر بھوڈ دو) یہ مجھا اسے بہتراکر اور اس سے ڈور و دا در ڈورکر مثر کر بھوڈ دو) یہ مجھا اسے بہتراکر اس میں میں کہ میں کو دور اس سے ڈور و دا در ڈورکر مثر کر بھوڈ دو) یہ مجھا اسے بہتراکر اور اس سے ڈور و دا در ڈورکر مثر کر بھوڈ دو) یہ مجھا اسے کے بہتراکر اور اس سے ڈور و دا در ڈورکر مثر کر بھوڈ دو) یہ مجھا اسے بہتراکر اور اس سے ڈور و دا در دورکر مثر کر بھوڈ دو) یہ مجھا اسے دور کہ دور کر دورکر مثر کر بھوڈ دورا کی مجھا اسے کھورکی کیا دورکر کو کھورکی کے دورکر کو دورکر کورکر کور

TAN

عارف الفرآن حلد

سورة عنكوت ٢٩: ١٨

محارف ومسائل

ب

سارن القرآن جارث من المراح ال

خالصة تفسير

كياان لوكون كويه معلوم بنيس كه الشرتعالي كس طرح مخلوق كواوّل بارسيداكر تاب ، دعدم محصن سے وجو دمیں لانا ہے ، بھروہی اس کو دوبارہ بیداکرے گا، یہ النٹرکے نز دیک بہت ہی آسان کا ہے دبلکہ ابتدائی نظریں دو بارہ بیداکرنا اوّل آفرنیش سے زیادہ سہل بی گوقدرت زانتیہ کے اعتبار سے دونوں مساوی ہیں، ادر یہ لوگ امرادل لینی الشرتعالیٰ سے خالن کا تنات ہونے کا تواعز ان کرتے تے، لقوله تعالى وَ تَدَينْ سَا تُسَعَمُ مَنْ حَكَنَ الشَّمْوْتِ الرِّ اورامرْ الى يعيى دوباره پيداكر نااسيك ما ثل ہر داس کا داخل قدرت ہونا اور زیادہ واضح ہے،اس لئے آئے تم ٹر ڈا اس سے بھی تعلق ہیں ب اورزمایده استمام کے لئے آھے بھر پہی مضمون قدر سے تفاوت عنوان سے مشانے کے لی مصنود صلى الشرعليه والم كوادمثاد فرماتے بين كه)آب زان لوگولسے) كہتے كہتم لوگ ملك بين جلو كورد ادر دیجھوکہ حضر اتعب الی نے محضلوق کوکس طور پراوّل بار سیراکیا ہے، مجھرانشر مجھی بار مجھی بيداكرك كابيتك الثدم رجيزيرقا درب ريبلي عنوان بين أيك عقلى ستدلال سي اورد دمسرك عنوان میں حتی جس کا تعلق احوال کا تنات سے مشاہدہ سے ہے، یہ تو تمامیت کا اشات مقا اسے جزار کابیان ہے کہ بعد بعث کے بس کوچاہے گاعذاب دے گاریعن جواس کامسخی ہوگا) اورش پر چاہے رحمت فرادے گا، یعی جواس کا اہل ہوگا) اور واس تعذبیب ورحمت میں اور کسی کا دخل د بڑگا، کیونکہ) تم سب اس کے پاس لوٹ کرجا دیگے، زند کدا درکی کے پاس) اور داس کی تعذیب سے بچنے کی کوئی تدبیر جہیں ہے ہم مذریوں میں رجھب کرخد اکو) ہراستے ہودکہ اس کے ہاتھ بذاؤ) اور مذاسمان میں داویر) ورمزخدا کے سوائحقاراکوئی کارسانہ اور دیکوئی مددگار، دیس مذایی تدبیرسے بے سے مزدوسرے کی حایت ، اور رادیرج ہم نے کہا تھا یُعَیّر بُسمَنْ یَّسْنَامُ ،اب قاعرہُ علیہ سے اس کامصدان بتلاتے ہیں کہ جو لوگ خلاتعالیٰ کی آیتوں کے اور را الحضوص) اس کے سامنے جانے کے منکریں وہ لوگ وقیامت میں) میری دحمت سے ناامید ہوں گے دلینی اس دقت شاہدہ بوجائے گاکہم محل رحمت نہیں ہیں اور ہیں ہیں جن کوعذاب در دناک ہوگا۔

L

فَمَا كَانَجُوابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُو الْقَتْلُولُ الْوَحْرِقُولُو فَانْجِلُهُ بحرکھ جواب منہ نتا اس کی توم کا محریبی کہ بولے اس کو مارڈ الویا جلادو بھراس کو بجادیا، الله مِن النَّارِ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَا لِي اللَّهِ لِلسَّالِ لِقَوْمِ النَّهُ مِنْ وَنَ اللَّهُ اللَّهِ اللَّه لشرف آگ سے اس میں بڑی نشانیاں ہی ان لوگوں کیلے جولقین لاتے ہی ، ادرابراہیم بولا اِتَّمَا اتَّخَلَ تُسَمِّنَ دُونِ اللهِ } وَتَانًا " مَودَّة بَيْنِكُمُ فِالْحَلُوةِ جو کھیرات ممے نے اللہ کے سواسے بنوں کے تھان سودوسی کرکرآ ہی میں دنیاکی زندگائی س، محردن تامت کے منکر ہوجادگے ایک سے مُرْتَجَضًا ذَوْ مَا وْكُمُ النَّاصُ وَمَا تُكُمُ مِنْ تُصَلِّنَ فَعَ ایک کو ایک ، اور شمکا انتهارا آگ ہے اور کوتی نہیں تمهارا مددگار عَامَىٰ لَهُ لُوْظِيرِ وَقَالَ إِنَّ مُهَا جِرُ إِلَّىٰ مَنْ اللَّهُ الْحَرَاثِ اللَّهُ اللّ بحرمان لیا اس کو لوط نے اور وہ اولا میں تو وطن مجھورتا ہوں لیے رب کی طرت بینک ہی ہوند؟ حكت والا، اور ديا بم في اسكو اسحق اور ليعقوب ادر ركه دى اس كى اولاد سي التُبيَّة وَالْكِتْبَ وَالْتِينَا وَالْتِينَا وَالْتِينَا وَالْتَينَا وَالْتَيْنَاءِ وَإِنَّهُ فِي پیغمری ادر کتاب اور دیاہم نے اس کو اس کا تواب دنیایس، ادر الاخرة لين الصلحيان ١ آخرت میں البت تیکوں سے ہے۔ خاصة تعساد سودا ہراہم علیا سلام کی اس تقریر دلیڈیر کے بعد) ان کی قوم کا را خری اجواب بس يه مقاكردا بس مين كيف لك كران كويا توقتل كرطوالويا ان كوجلاد در دينا بخر حلان كاسانا سیا سوان نے ان کواس آگ سے بچالیا رجس کا قصة سورة انبیار نین گذر حکاس)

TAD

سورة عنكبوت ٢٩: ٣٧

بشک اس واقعه میں ان لوگوں کے لئے جو کہ ایمان رکھتے ہیں کئی نشا نبیاں ہیں دیعن یہ واقعہ کئی چىزدى كى دلىل مى الشركا قا در مېونا، ابراميم عليالسلام كانبى بېونا، كفرومترك كا باطل بېونا اس لتے یہ ایک ہی دلیل متعد دولائل کے قائم مقام ہوگتی اورایراہیم رعلیال الم) نے دوعظ میں بیریمی و نرمایا کرنتم نے جو خدا کو چھوڑ کر بتو ل کو د معبود) بخو بز کر د کھا ہے ، لبس یہ تمھا اے باہمی د نیا کے تعلقات کی وجے ہے رچنانچے مشاہدہ ہے کہ اکثر آدمی اپنے تعلقات اور دوستی اور تشرار عطراني برربهتا ہے اوراس وجہ سے حق بات میں غور نہیں کرتا ، اور حق کو سجھے کر بھی ڈرتا ہے کہ ب دوست اوررشنہ دار چھوط جا دیں گے) مجھر قیامت میں دمھارا بیرحال ہو گاکہ) متم میں ایک دد سے رکا مخالف ہوجا سے گا اور ایک دوسرے پرلعنت کرنے گا، رجیساکہ سورہ اعراف بیں ہو لَعَنْتُ أَخْتُهَا اورسورة مسبارس بي يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إلى بَعْضِ إِلْفَةُ لَ اورسورة بقره بين ب ا ذُ تُنبَرَّ أَ اللَّيْن يَنْ البُّعُول الح خلاصه بيه كم آج جن احباب واقارب كي وجه سي تم كرا ابي كواختيا کتے ہوتے ہو قیامت کے دوزیہی احباب تھالیے دشمن بن جائیں گے ، اور داگر متراس بت پرسی سے بازید آنے تو اتھا اٹھکا نا دوزخ ہوگا اور تھاراکوئی حایتی ند ہوگا سورا تنے وعظ و سے رہ بھی آنکی قوم نے نہ مانا) صرت لوط (علیالسلام) نے انکی تصدیق فراتی اورابراہیم رعلیالسلام) نے فرایکٹیں دیم اوگونیں نہیں رہا، ملکہ ینے پر در دگاری رہتلائی ہوئی جگہ کی ہطرت ترکب وطن کرکے حیلا جاؤں کا بیٹیک وہ زیر دست صحبت والاہے دوہ میری حفاظت کرے گا اور تھے کو اسس کا تمسرو دے گا) اور ہمنے ە بجرت کے بعد)ان کوانسخی زبیٹا) اور لعیقوب زیوتا ، عنایت فر مایا او رہے نے ان کی نسل میر نیوت اورکتاب دیے سلسلہ کو قائم رکھا اور ہم نے ان کا صلہ ان کو دنیا میں بھی دیا اور آخرت میں ابھی دہڑے درجے انکے بندوں میں ہوں گے داس صلیس مراد قرب دقبول ہے، کقولہ تعلیا فى البعترة لَقَين اصْطَفَيْنَاهُ فِي اللَّهُ نَيَّا الحِي -

مكارف ومسائل

٠.



حارث القرآن جله ولااے رب میری عردکر ان مثریہ نوگوں پر ، اور جب يَسُلُنَا إِبْرَهِيمَ بِالْبُشْرَى قَالُوٓ إِنَّا هُمُلِكُوْ أَهُلِ هُنِهِ الْقَايَةِ مجعیج ہوتے ابراہیم کے پاس خوش خری ہے کو ، اولے ہم کو غارت کرناہے اس بنی والوں کو اِنَّ آهٰكَهَا كَانُواظِلِهِ إِنَّ أَضَّالَ إِنَّ فِيهَا لُوْطَاءً قَالُوْا نَحْنُ آغَلَى إِنَّ فِيهَا لُوْطَاءً قَالُوْا نَحْنُ آغَلَى مُ بشک اس بی سے لوگ ہوں ہے ہیں گہنگار، بولا اس میں تو لوط بھی ہے وہ لولے ہے کو جو معلوم ہے مَنْ فِيهَا وَمِنْ لَنُنْجَيِّنَا لَهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا أَمْرَاتَهُ فَي كَانْتُ مِنَ الْغَبِيرَةِ جوكوني اس بي بم بجاليس اس كوادراس كے كلم والول كو كمراس كى عورت كرى د بجانے والول مي ورجب بہنچ ہلانے بھیج ہوت لوط کے پاس ناخوش ہوا ان کو دیکھ کراور تنگ ہوا دل میں اور وہ آو الا تَخَفَ وَلَا تَحْزَنَ تَعَالَا مُنَجُّوْكَ وَآهُلَكَ إِلَّا امْرَا تَكَ مت دراور عمر من کھا، ہم بچاکس کے مجھ کواور ترمے گھر کو گر عورت تیری كانت مِنَ الْغُبِرِينَ ﴿ إِنَّا مُنْزِلُونَ عَلَى آهُلُ هُذِيهِ الْقَرَّيْةِ رہ گئی رہ جانے والوں میں ، ہم کو اٹارتی ہے اس بستی والوں رِجْزَامِنَ السَّمَاء بِمَاكَا نُوْ المَقْسُقُونَ ﴿ وَلَقَلْ تَرَكُنَا مِنْهَا كَانُو المَقْسُقُونَ ﴿ وَلَقَلْ تَرَكُنَا مِنْهَا كَانُو المَقْسُقُونَ ﴿ وَلَقَلْ تَرَكُنَا مِنْهَا كَانُو المَقْسُقُونَ ﴿ وَلَقَلْ تَرَكُنَا مِنْهَا كَانُوا لَقَسْقُونَ ﴿ وَلَقَلْ تَرَكُنَا مِنْهَا كَانُوا لَيْقُسُقُونَ ﴿ وَلَقُلُ تَرَكُنَا مِنْهَا كَانُوا لَيْقُسُقُونَ ﴾ وقد المناه ال ایک آفت آسان سے اس بات پرکہ وہ تا فرمان ہورہ عظم، اور چھوڈ رکھاہم نے اس کا نشان اليَةُ بَيْنَةً لِقَوْرُمُ يَعْمِتُ وَنِ ١ نظرآ اہوا ہے دار دووں کے داسط، خالاصة تفسير ادرہم نے لوط رعلیہ السلام) کو سینچیر بناکر بھیجا جبکہ اہنوں نے اپنی قوم سے قرمایا كرمم اليى بے حيانى كاكام كرتے ہوكہ تم سے پہلے كسى نے دنيا جيان والول بيں بنيس كيا الميائم مردوں سے بڑا فعل کرتے ہو، روہ بے حیاتی کاکام بہی ہے) اور زاس کے علاوہ دوسری

<u>r.</u>

سورة عنكبوت ۲۹: ۵۳ رت القرآن حليرً ما معقول حركتين بحى كرتے ہو ، شلاب كم ، تم واكم والتے ہو دكذا في الدرعن ابن زيد) اور رغصند ہرکہ اپنی بھری محلس میں نام حقول حرکت کرتے ہو زاور معصیت کا اعلان بیخود ایک معصیت و جو عقلی ہے) سوان کی قوم کا را خری ہجواب بس سے تھا کہ ہم برانشر کا عذاب نے آؤ اگر بم راس بات میں ا سے ہودکہ میا فعال موجب عذاب ہیں، اوط رعلیاسلام، نے رعامی کہ اے میرے رب مجھ کوال مفسدتوكوں پرغالب وادران كوعذاب سے ہلاك) كردے اور زان كى دعار قبول ہونے كے بعد التدتعالى نے عذاب كى خردينے كے لئے فرشے معين فرماتے اور دوسراكام ان فرشتول كو يربتلايا كياكما برائيم عليه السلام كوالمحق عليه السلام ك توكدى بشارت دي جنائج ، الاك روہ) بھیج ہوت فرشے جب ابرا ہیم دعلیہ السلام، کے پاس دان کے فرز نداسخت کے تولدکی) بشادت ہے كرآ ہے تو دا شاہے كفت كوس جس كا مفصل بيان دوسرے موقع برہے قال فما خطی و آئیبا المرصد کون ای ان فرشتوں نے دابراہیم علیالسلام سے کہا کہ ہم اس ہی دالول رجی بن قوم اوط آبادہ) ہلاک کرنے والے ہی رکبونکم) وہاں سے باشند ہے بڑے ستر سر ہیں ، ابراہے مرعلیدا سے فرط یا کدوہاں تولوط اعلیا اسلام بھی موجو دیا ہیں ا دہاں عذار بیجاجات کران کوگر ندسینے گا) فرسٹنوں نے کہا کہ چوجو وہاں در ہتے ہیں ہم کوسب معلوم او ممان كواوران كے خاص متعلقين كورلين ان كے خاندان والوں كواور جومؤمن مول اس غذا سے ابچالیں سے راس طرح سے کہ نزول عذاب کے قبل ان کو لبتی سے باہر بھال لے جائیں گے) بجزاك كى بى بى كے كدوه عذاب ميں ره جانے والوں ميں سے ہوگى رجى كا ذكر سورة بود اورسورة تجرم گذر جا ہے، پر گفتگو تو ابراہ ہے علیا اسلام سے ہوئی اور ریجروہاں سے فارغ موكر، جب ہمانے وہ فرستانے بوط (عليال الم) كے ياس بہونتے تولوط (عليال الم) ان رمے آنے) کی وجہ سے داس لتے) مغموم ہوتے دکہ وہ بہت حسین جوا تو ل کی تشکل میں آتے تقے اور لوط علیہ استام نے ان کوآ دمی سمجھا اور اپنی قوم کی نامعقول حرکت کا خیال آیا) اور داس دجے ان رہے آنے سبب تنگ دل ہوتے اور رفرشنوں نے جو بیرحال دیکھا تو) وه فرشنے کہنے لکے راکب کسی بات کا) اندلیشہ مذکریں اور مذمخوم ہوں دہم آدمی نہیں ہیں بكه عذاب كے فرضتے ہيں ، تعولہ تعالی إِنّادُ سُلُ رَبّات اوراس عذاب سے ، ہم آپ توا ورآب کے خاص متعلقین کو بچالیں گے بجزاآ ہے کی بی ہی کے کہ وہ عذاب میں رہ جانے والول میں مو کی داورآب کوئے متعلقین کے اس سے بچاکر سم اس بھی کے ربقیم باشندوں پر ایک اسانی عذاب رایعی است باب طبعیه غیرادهنیه سے) ان کی برکار بول کی سسزایس نادل كرنے والے ميں رحنانج وہ لئى ألك دى كئى، اورغيبى تقرول سے سكبارى كيكى)

80

آدرہم نے اس بی کے کچھ طاہرنشان داب تک ، رہنے دیتے ہیں ان لوگوں دکی عبرت کے لئے ہو عقل دکھتے ہیں رجنا بخداہل کمرسفرشام ہیں ان ویران مقامات کو دیکھتے تھے اورجواہل عقل تھے وہ منتفع بھی ہوتے ہتھے کہ ڈوکرا بمان ہے آتے تھے)۔

معارف ومسائل

ق نوطگا اِ وَقَالَ لِقَوْمِهِ إِ تَنكُمُ لَتَا تَوْقَ الْفَاحِشَةَ ،اس جَمَّرِ صرت بوط عليال الم في ابن قوم كه يوگوں كه ين سخت گذا بوں كا ذكر كميا ہے، اوّ كل مردكى مردكے ساتھ بدفعلى، دو تر مرك قطع طريق ليعنى مسافروں بير داكه زنى، تيسَر ہے ابنى مجلسوں بيں اعلا نَا سب كے ساجے گذاہ كرنا۔ مسرآن كريم في اس تيسر ہے گذاہ كی تعبيين نہيں فرمائی، اس سے معلوم بواكم الرگذاہ جو ابنى وَان سے كميا جائے تو يہ دو مراستِقل گذاہ بوجاتا ہے دہ كوئى بيں گذاہ ہوجاتا ہے دہ كوئى ميں گذاہ بود بعض ابنى جو يہ جے بروائى سے كميا جائے تو يہ دو مراستِقل گذاہ بوجاتا ہے دہ كوئى سب كے مساحے كميا كرتے تھے، مشلاً رئے ہے ، اور تعبق حضرات نے فرما يا كہ جو ہے حيا ابنى مجالے ان كى المب ورتھى اس كو دہ كہيں جھے ہوگا رئے ، اور تعبق حضرات نے فرما يا كہ جو ہے حيائى ان كى العباد مان ترو دہ كہيں جھے ہوگر کرہے، اور تعبق حضرات نے فرما يا كہ جو ہے حيائى ان كى العباد مان ترو دہ كہيں جھے ہوگر کہ اور تعبق حضرات نے فرما يا كہ جو ہے حيائى ان كى العباد مان ترو دہ كہيں جھے ہوگر کہ بيں كام مجالے مان ميں ايك دو سرے كے ساحے كرتے تھے۔ العباد مان ترو

جن تین گذاہد ن کا اس آمیت میں ذکرہے ان سب میں اسٹ میہلا گذاہے ، جوان ہے ۔ پہلے دنیا میں کسی نے نہیں کیا تھا ، اور حبگل کے جانو ربھی اس سے ہر ہمیز کرتے ہیں ۔ باتفاق آ یہ گذاہ زناسے زیادہ شدیدہے رکذا فی الروح)

وَإِلَىٰ مَنْ يَنِ أَخَاهُمُ شُعَيْبًا الْ فَقَالَ لِفَوْمُ اعْبُنُ وَإِلَاْ مَ وَاللّهُ وَ اللّهُ اللهِ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ وَمُ اللهُ اله

سورة عنكبوت ٢٩: ٢٣ عارف القرآن طير ا ونرجے پڑے ، اور ہلاک کیا عاد کو اور بھود کو اور تم پر حال کھل چکا ہے ان کے گھروں سے وترتن لهم الشيطر أعمالهم نصتكه وترتن للبيد اور فرایشتہ کیا ان کو مشیطان نے ان کے کامول پر پیر روک دیا ان کو راہ سے اور نُوْ الْمُسْتَبْصِينَ ﴿ وَقَامُ وَنَ وَفِرْ عَوْنَ وَهَا مِنَ مَا وَلَقَالُ اور ہلاک کیا قارون اور فرعون اور ہامان کو اور ان کے الْمُتناب قَاسْتَكُبُوفَ إِنْ الْآيَمِ فِي الْآيَ الْآيَ مِن وَمَا كَانُوْ س پہنچا موسی کھی نشانیاں لے کر، محر بڑائ کرنے لگے ملک میں اور نہیں تقے المنتفقة منابن تنابة فينفه من آرسلنا ہے ، بھوسب کو بھڑا ہم نے اپنے اپنے گناہ پر ، محرکونی تھا کہ اس پرہم نے بھیجا عاصياء ومنهم من آخل تك الصيحة ومنهم مرتحة بقراد ہواسے اور کوئی کھاکہ اس کو پکرا چنگھاڑ نے، اور کوئی تھاکہ اس کو رھنساریا الكريض ومنهدة متن آغر قناء وماكان الله ليظلمه ہم نے زمین میں ، اور کوئی تحقا کہ اس کوڈ ما دیا ہم نے ، اور اسٹر ایسانہ تحقا کہ آن پرظلم کر وَلِكُنَّ كَانُو النَّفْسَهُ مُ يَظَلِّمُونَ ﴿ مَثَلُ الَّذَنُ مِنْ اتَّخَلَ برتے وہ ایناآپہی بڑا کرتے ، مثال ان ہوگوں کی جفول نے بیرطے مِنْ دُونِ اللهِ أَوْلِياءً كَمَثَلِ الْعَثَكِبُونِ فَ التَّخَلَ التَّخَلَ التَّخَلَ التَّخَلَ التَّخَلَ التَّ کو چیوال کر اور حماتتی جیے مکوسی کی مشال بتتاء وان آوهن البيوت لبيت العنكبوت لوكانوا ادر سب کرول یس بودا سومکوی کا گھ يَعْلَمُونَ ۞ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يَنْ عُونَ مِنْ دُوْنِهِ مِنْ ہے بوتی ، اللہ جانتا ہے جن جن کو دہ پکارتے ہی اس کے سواتے کوتی

سورة عنكبوت وس رث القرآن حلا الله المعالمة المعالمة المعالمة المستال المستل چر ہوءادر دہ أبردست بر محتول والا ، اور يہ شاليس بھلاتے ہيں ہم لوگول كے لِلنَّاسِ وَمَا يَعْقِلُهَ أَلْوالْعُلِمُ وَنَ ﴿ وَهِ مَا يَعْقِلُهُ أَلَّا الْعُلِمُ وَنَ صَالَّا اللَّهُ السَّمُوتِ واسطے ادران کو سیجے وہی ہیں جن کو سیجے ہے ، اللہ نے بناتے آسان الَحَقُّ النَّ فَي ذَلِكَ لَكُ اللَّهِ اور زمین جسے چاہتیں ا بھتیں لانے (Ir والول خارصة تعنيد اور مدین والوں کے پاس ہم نے ان دکی برادری) کے بھائی شعیب زعلیار کوسینچیر مبنا کربھیجا سوانحفول نے فرمایا کہ اسے میری قوم انٹر کی عبارت کرو (ا درمنٹرک چھیڑ^و و اورروز تیامت سے ڈروراوراس کے انکارسے بازا ق) اورسرزس میں فسادست بھیلاق دلين حقوق النُّر وحقوق العباد كوصًا تع مت كرو ،كيونكه به لوگ كفرومشرك كے سائھ كم ناتج ا ہم تولئے سے بھی خو گریتھے ،جس سے فساد تھیلنا ظاہرہے) سوان لوگوں نے شعیب دعلیار ال کو چھٹلایا ہیں زلزلہ نے ان کوآ بچڑا، بھروہ اپنے گھروں میں گھرکررہ گئے۔ اور ہم نے عارو تتودکوبھی زان کے عنا دوخلاف کی وجہسے ہلاک کیا، اوربہ ہلاک ہونائتے کوان کے رہنے سے مقامات سے نظر آرہاہے دکہ ان کی ویران سیستیوں کے کھنڈ دات ملک شام کوجاتے ہوئے تھا ہے راستہر ملتے ہیں) اور لھالت ان کی میتھی کہ شیطان نے ان کے اعمال رید) کوان کی نظر میں سخسن کرر کھا تھا اور راس ذریعہ سے) ان کورا ہ رحق سے روک رکھا تھا اور وہ لوگ

ددیے) ہوسٹیا رہتھے (محیون وبیو تو ت مذیحے ، گراس میکہ انحوں نے اپنی عقل سے کا خہدا) اورسم نے قارون اور فرعون اور ہامان کو بھی دان کے کفرے سبب، ہلاک کیا اوران رسوں)

کے پاس موسی رعلیہ السلام ا تھلی دلیلیں رحق کی اے کرآنے سے معران لوگوں نے زمین میں سرکمٹی کی اور بہالے دورائے) بھاگ مذہعے توسم نے دان یا بخول میں سے) ہرایک کو اس کے

سناه کی منزامیں میرالیا، سوان میں بعضوں برتوہم نے سخت ہتوا تھیجی دمراد اس قوم عادی ا

محارف ومسائل

ان آیات بین جن انبیار علیم اسلام اوران کی توحوں کے دا قعات اجمالاً بیان کے گئے
ہیں دہ بچیلی سور توں میں مفتل آچیے ہیں ، مثلاً شعیب علیہ السلام کا قصہ سورہ اعراف اور ہود
ہیں ، اسی طرح عاد دیمتود کا قصہ بجی اعراف اور ہود میں گذر بجکاہے ، اور قارون ، دنہ وی ایان کا قصتہ سورہ تصفی میں ابھی گذراہے۔

ق کا آئی امستقیری استیمارے شتی ہے، جوبھیرت سے معنی میں ہے ، اور سیم اور ہورت سے معنی میں ہے ، اور سیم بھتا ہونی مبحق مرادیہ ہے کہ یہ لوگ جو کفر وہٹرک پر اصراد کر کے عذاب میں اور ہلاکت میں مبستا است کے بیوٹو وٹ یا دیوائے نہ تھے ، دنیا کے کاموں میں بڑے مبحق اور ہوست یار تھے ، گر اُن کی عقل اور ہوست یاری اسی ما دی دنیا میں مقید ہو کر رہ گئی ۔ یہ نہ بچا ناکہ نیک و بر کی جزار کنرا کا کوئی دن آنا چاہئے ، جس میں شکل افسا ف ہو۔ کیونکہ دنیا میں تو اکثر نجرم ظالم دنداتے بھرتے کی اور مظلوم و مصیب نہ دہ مجبور ہو کر رہ جاتا ہے ۔ اسی انصاف کے دن کانام تیا مت اور اُنٹرت ہے ، اس کے معاملہ میں ان کی عقل ماری گئی۔

بی مضمون سورهٔ رقوم میں بھی آگے آنے والا ہے، یَفَدَمُون ظَا لِفِی اَّسِیَ الْحَیافِیُّ اللهٔ نیاق هشم عین اللاخیری هشم غیفاتی ، لینی په لوگ دنیا دی زندگی سے کاموں کو تو خوب جانتے ہیں گرآخرت سے غافیل ہیں۔

اوربعض ائر تفنسیرنے قرکانی استیت میں ٹین کے معنی بر بترلائے کہ بہ لوگ ایمان اور آخرت برجعی دل بی لفین رکھتے تھے اور اس کاحق ہونا خوب سمجھتے تھے ، گردنیوی اغران نے ان کو انخار برمجبود کردکھا کھا۔

قداقاً وهن البُريُوتِ بَبِيتُ الْعَنْكَبُوتِ ، عنبوت مُوْی کوکهاجا تاہے ،اسکی مختلف قبیں ہیں یعجوبال مراد نہیں، بلامراد وہ مکٹری ہے جوجالا تانتی ہے ،ا دراس میں حقق رہتی ہے ۔اس جائے کے ذریعہ محمی کوشکاد کرتی ہے ، یہ ظاہر ہے کہ جانور دن کی جتنی قسم کے گھونسلے اور گھر محروف ہیں ، یہ جلالے کے تار ان سب سے ذیا دہ کمروز ہیں کہ معولی ہوا سے بھی ٹوٹ سے ہیں ۔اس آئیت میں غیرالٹری ہیں ان سب سے ذیا دہ کمروز ہیں کہ معولی ہوا سے بھی ٹوٹ سے جی ۔اس آئیت میں غیرالٹری ہیں ان کا کرنے والوں اور ان پراعتماد کرنے والوں کی مثال کمڑی سے اس جائے ہے دی ہے کہ ہوا بوں کی مثال کمڑی سے اس جورسہ کرتے ہیں ان کا جورسہ ایسان سے جیسا یہ کمڑی ایسے جائے کے تاروں پر بھروسہ کرتے ہیں ان کا جورسہ ایسان سے جیسا یہ کمڑی اینے جائے کے تاروں پر بھروسہ کرتے ہیں ان کا جورسہ ایسان سے جیسا یہ کمڑی اینے جائے کے تاروں پر بھروسہ کرتے ہیں ان کا جورسہ ایسان سے جیسا یہ کمڑی ایسے جائے کے تاروں پر بھروسہ کرتے ہیں ۔

المجزع العادي والمستى ون

سارن الرآن مبرسط مع المحال المنت المحال المنت وا المحال ا

خالصة تفسير

محارف ومسائل

اُمتُنُ مَا اُوجِي إِلَيْكَ ، سابقه آیات میں چندا نبیار علیہ السلام اوران کی امتوں کا فیکر تھا ہیں ۔ فیکر تھا ہیں خدا بول کا بیان تھا ہیں فیکر تھا ہیں جند بڑے بڑے سرکٹ کفاد اوران برطرح طرح کے عذا بول کا بیان تھا ہیں میں دسول الشخصلی الشخصلی الشخصلی اور مؤمنین اقرت کے لئے تستی بھی ہے کہ انبیا رسابقین نے مخالفین کی کیسی کیسی کیسی ایزاؤں برصبر کیا ، اوراس کی تلقین بھی کہ تبلیخ ودعوت کے کام میں مخالفین کی کسی کسی ایزاؤں برصبر کیا ، اوراس کی تلقین بھی کہ تبلیخ ودعوت کے کام میں میں مارنا چا ہے۔

ا مختصرها مع نسحة بتلايا كياب ، جس برعمل كرنے سے بور سے دين برعمل كرتے سے رائے کھل جاتے ہیں، اوراس کی راہ میں جورکا ولیس عادہ میش آتی ہیں وہ دور موجاتی میں اس نسخ اسم کے دوجزویں ، ایک تلاوت وتران ، دوسرے منا زکی اقامت - اوراس جگہ اصل مقصود تومیم ہے کہ لوگوں کوان دونوں چیزوں کا یا بند کیا جاتے، لیکن ترغیب و تاکسید کے لتے ان دونوں جیسے وں کا حکم اوّلا خود نبی کرمے صلی الٹرعلیہ وسلم کو دیا گیاہے ، تاکہ امت کو اس برعمل کرنے کی زیا دہ ریجبت ہو، ا دررسول الشرصلی الشرعلیہ وسلم کی علی تعلیم سے ان کوخود عمل کرنامجی آسان ہوجاسے۔

ان میں تلاوت قرآن توسب کا مول کی دوح اوراصل بنیا دہے،اس کے بعد دوسری جیزا قامت صلاة ہے ،جن کوتمام دوسرے فرائض اوراعمال سے متناز کرے بیان کرنے کی ہے حكمت بحى بيان فسسرمادي كمنماز خودايني ذات مين بهي بهبت بزي ايم عبادت اوردين كاعمود ہے، اس کے ساتھ اس کا بیجی فائرہ ہے کہ جوشخص منازی اقامت کرنے تو نمازاس کو فحشام اور من كرسے روك دستى ہے فيشار ہرائيے بڑے فعل يا قول كوكہا جا ماہے جس كى بڑائى كھلى موتى اوداليى واضح موكه مرعقل دالا مُومن مويكا فراس كو براسجه عيدزنا، قتل ناحق، جوري الداكد وغيره، اورمن كروه قول وفعل سے جس كے حرام دناجا تز ہونے براہل مشرع كالقفاق ہداس لتے ائد فقهار کے اجہمادی اختلافات میں سی جانب کومن کر مہیں ہما جا سکتا د

فخشارا ورتمن كركے دولفظول ميں تمام جرائم اورظا ہرو ماطني كناه آگتے ،جوخود مجمي

فسادسى فساديين اوراعال صالحدين ست براى دكا وط بجى بين -النازكاتمام منابون استعدد مستندا حادث كي روس يهطلب سي كدا قامت صلاة مين بالخا ردك كالمطلب أنا برب كرجواس كواداكرتاب اس سي كناه جيوط جاتے بي لبشرطيك فتر خازير مهنانه بوابكه الفاظ قرآن كيعطابن اقامت صلؤة بور أقامت كي لفظي معنى سيرها كھواكرنے كے بيں جس ميں كسى طوف جھكا ؤند ہو۔ اس لتے اقا مست صلاۃ كافہوم يہ ہواكد نماز

سے تھا منطا ہری اور ماطنی آواب اُس طرح اواکرے جس طرح رسول الندصلی الندعليه وسلم نے على طور ميرا داكم يح بتلايا ، اورعم مجران كى زباني تلقين بهى فرماتے رہے كه مبرن اور كيڑے أور جائب منازي يممل طبارت بهي بهو، بحر مناز جاعت كالدرا امتمام بهي اور مناز كے تمام اعمال كو

سنت سے مطابی بنا نابھی بر توظاہری آداب ہوے۔ باطنی برکہ مسمل خشوع خصوع سے

اسطرح الشرك سائف كمرا بوكدكوما وهي تعالى سے عن ومعروض كررہا ہے۔اسطرح

اتامت صلوة كرنے والے كومنجانب الله خود بخود توفيق اعمال صالحه كى بھى بوتى ہے، اور سرطرح ے گنا ہوں سے بچنے کی بھی اور جو شخص ماز پڑسے سے با دجود گنا ہوں سے مذبحا تو سجھے لے کہ اس کی نمازسی میں قصور سے جیساکہ حضرت عرال می تحصین رصی الشرعنہ سے روایت ہے کہ رسول الشرصل الشرعليه وسلم سے درمافت كيا كياكم إنّ الصّلاّ تَنْهَا عَنِ الْفَحْنَاءِ وَالْمُنْكَو كاكيا مطلب بر، آب نے فرمايا من تر شنع كا صلات الفتح شاء والمنكر و لك صلوة كه روالاابن إلى حاتم يبسن لاعن عموان بن حصين والطبراني من حد ابی معادیة البی جن علی واس کی نمازنے فحشا را درسنگرسے مدروکا اس کی نماز کھے نہیں۔ اور حفرت عبدالشرب مسعود واسے روایت ہے کہ دسول انشر صلی الدعلیہ و کم نے فرمایا الاصلاة التن تم يطع الصلاة ررواه ابن جويوبسن ه) يعن التحقى كى نازين بن جس نے اپنی شاذکی اطاعت منکی اور شازکی اطاعت یہی ہو کہ فحشار اور من کرسے بازا جانے۔ ا در مصرت ابن عباس نے آبیت مذکورہ کی تفسیر میں فرما یا کہ جس شخص کی نازنے اس کو اعمال صالحه برعمل اورمن كرات سے بر بہزر آما وہ نہيں كيا تواليى نازاس كواللہ اور ا ترماوہ دور کردستی ہے۔

ابن کیڑنے ان بینوں روایتوں کو نقل کرکے ترجیح اس کو دی ہے کہ یہ احا دیث مروزع تہيں، بكاريمران من تحصين اور عبدالترين مسوراورابن عباس رضى الترعنهم كے اقوال ہن جو

ان حصرات نے اس آست کی تفسیرس ارشاد فرمات ہیں۔

ا در حصرت ابوہر مردم کی روایت ہے کہ ایک شخص آنجھزت صلی الشرعلیہ وسلم کی ضرمت میں حاصر ہوااور عوض کیا کہ فلاں آدمی رات کو ہجر میر ستاہے اور جب ہوجاتی ہے توجودی کرتا ہے،آپ نے فرمایا کہ عنوریب نماز اس کوجودی سے روک دے گی۔ دابن کشی بعض روایات میں بیر بھی ہے کہ اس مخفرت صلی اللہ علیہ و کم کے اس ارشار کے بعد دہ اینے حمناہ سے تاتب ہوگیا۔

ا بہاں بعض لوگ بہشبہ کیا کرتے ہیں کہ ہم بہت سے لوگوں کو دیکھتے ایک شبر کاجواب میں کہ نماز کے پابند ہونے کے باوجود بڑے بڑے گناموں میں ستالا

رہے ہیں جو بطاہراس آیت کے ارشاد کے خلات ہے۔

اس كے جواب بیں بعض حصراتے توبیافر ما یاكه آئیت سے اتنا معلوم ہوتا ہے كه نماز نازی کوگناہوں سے منع کرتی ہے ، لیکن یہ کیا صروری ہے کہ جس کوکسی کام سے منع کیا جا وہ اس سے بازیمی آجائے۔ آخر قرآن وحدیث سب لوگوں کو گناہ سے منع کرتے ہیں، 791

ت القرآن جلدت

سورة عنكبوت ١٠٤٩ ٥٥

بھر مہبت سے نوگ اس منع کرنے کی طرت توجہ نہیں دیتے ، اور گناہ سے باز نہیں آتے۔ خلاصۂ تفسیر مذکور میں میں توجیہ لی گئی ہے۔

وَلَا يُحَادِ لُوْ اَ اَكُونَا الْكِتْ اِلَّا إِلَّهِ الْوَالَّذِي اَ اَسْتُ الْكُوالَّذِي اَلَا الْكِنْ الْكُنْ الْكِنْ الْكِنْ الْكِنْ الْكِنْ الْكِنْ الْكِنْ الْكِنْ الْكُنْ الْكِنْ الْكِلْلْكُ الْكِلْلْكُ الْكُونِ الْكُلْلُولُونَ الْكُولُونَ الْكُولُونُ الْكُولُونَ الْكُولُونُ الْكُلُونُ الْكُولُونُ الْكُلُونُ الْكُلُونُ الْكُلُونُ الْلْلِلْلُونُ الْلِلْلُونُ الْلِلْلُونُ ال

المؤلاء من يُؤمِن به ومايجك باليتا الاانكفي میں اوران رمک والوں) میں بھی بیصنے ہیں کہ اس کولتے ہیں اور منکروہی ہیں ہماری باتوں جونا فرمان ہیں وَمَاكُنْتَ تَتَكُوْ الْمِنْ قَالُهُ مِنْ كِتُبُ وَلَا تَخُطُّهُ بِيَبِينِكُ إِذًا ورتوطِ متا منه اس سے پہلے کوئی کتاب اور م کامتا تھا اینے واسنے ہا تھ سے تب تو الْمُتَاكِ الْمُنْطِلُونَ ﴿ اللَّهِ اللَّهِ وَاللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ اللَّهُ ہتہ شبہ میں پڑنے سے جھولے ، بلکہ یہ زفرآن توآتیس ہیں صاف ان لوگوں کے سینوں میں جن کو وْتُوالْلُعِلُمُ وَمَا يَجْحَلُ بِالنِّيسَالِ لَا الظَّلِمُونَ ﴿ وَقَالُوْلَوْ لَا لی بوسیحد، ادر من کر نہیں ہاری باتوں میردہی جوبے انصات میں ادر کہتے ہیں تعهايك من تبه قل إنتما الديث عِنْ الله وانتم ریں اس پر کیجہ نشانیاں اس کے رہے تو کہہ نشانیاں توہیں اختیار میں انتشکے اور میں توہو نَانَنَ يُرُمِّينُونُ ﴿ أَوَلَمْ يَكُفِهِ مِنْ أَنَّا أَنْوَلْنَا عَلَى الْحَالِكُمْ يَكُفِهِ مِنْ أَنَّا أَنْوَلْنَا عَلَى الْحَالَقُلْكُتُبَ شادين والاموں كھول كر، كيا أن كو يكا في بنيس كرہم نے تحقة يرا تارى كتاب برهی جاتی ہے، بیٹک اس یں رحمت اک اور سجھانا اُن نوگوں کوجو مانے ہیں ، قُلْ كَفِي بِاللَّهِ بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ شَهِينًا الْهِيكُمْ مَافِي السَّمَاءِ وَ توكيم كافي ب الندمير اور محقار عن كاواه جانتا بوجو كي بوامان اور زمين الكرتهن والزنين المنوابا تباطل وكفر وابالثا أولاعك میں اور جو لوگ یقین لاتے ہی جھوط پر اور منکر ہوتے اللہ ، دہی ہی هُمُ الْخِيرُ وَنَ ﴿ وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَنَ الْجِلُ وَتَوْلَا آجَلُ نقصان پانے والے ، اور حدی مانگے ہیں تجھے آنت ، اور اگر نہ ہوتا ایک مسمى تتاء هم العن ال وتياتينهم بغتة وه م وعده مفترره توآجیخی آن پر آفت ، ادر البته آسے کی آن پر اچانک ادر ان کوجر لك

0 C

مارن القرآن جلاشنم المحيطة المحيطة المحيطة المحيطة المحيطة الكونة في المحيطة المحيطة المحيطة المحيطة المحيطة المحيطة المحيولة المحيولة المحيولة المحيولة المحيورة المحيورة المحيورة المحيورة المحيورة المحيورة المحيورة المحتورة ال

خالصة تفسير

آور دجب بغیرصلی انشرعلیه و ملم کی رسالت ثابت بر تواے میلانوں منکرین رسالت می سے جو اہل تناب ہیں ہم ان سے طریقة تکفتگو شلاتے ہیں ٔ اور ریشنصیص اس لئے کہ اوّل تو وہ بوجہ ابل علم ہونے کے بات کوسنتے ہیں او رسٹسرکسن توبات سننے سے پہلے ہی ایزار کے دریے ہوجائے ا میں، دو کے ابل علم کے ایمان ہے آنے سے وام کا ایمان زیادہ متوقع ہوجاتا ہے اور وہ طراقیہ ایہ کہ اس کتاب کے ساتھ ہجر مبذب طریقے کے مباحثہ مت کرد ہاں جوال میں زیادتی رس د توان کوجواب ترکی برترکی دینے کامصنا گفته نہیں ، گوافعنس جب بھی طریقیر احس بی ادر روہ مبذب طراقة يہ كامنتلاان سے) يوں كہوكہ سم اس كتاب يرتبى ايمان ركھتے ہيں جوہم ان الله بونی اودان کتابون بریمی دایمان رکھتے ہیں ،جوئتم برنازل ہوئیں، دکھیے کلہ مرادایمان کامنزل من الشدم بنا ہے، بیں جب ہماری تناب کامنز ل من لند بناتم ان کتب سے بھی ٹابت ہو انجر تم کوفرآن بریمی ایمان لانا جائے اور دبیمتم بھی کیم کرتے ہو کہ) ہما را اور محقارا معبود ایک سے كقوله تعالى إلى كليز سوّا يُرْتِينُنَا الخ جب توحيد منفق عليه واوراينے احبار وربهان كى اطاعت كى دجه سے نبي آخرالز مال برايان مذلانا خلاف توحيد ہے، توتم كو ہما ايے نبي برايان لانا جا ، ك رکقولہ تعالیٰ وَلَا يَجْنِ نَرَبُحُصْنَنَا الحِ) اور راس گفت کو کے ساتھ اینامسلمان ہونا تنبیہ کے لئے اور ہم تواس کی اطاعت کرتے ہیں داس میں عقائد داعمال سب آستے لینی اسی طرح تم کوجی جا جب رمقتصى موجود سے مقولہ تعالی قِالَ تُو لَوُ افْعُولُوالسَّهِ مُرَدًا بِا نَامُسَلِمُونَ اور رجى طرح بم نے سلے انبیار برکتابین ازل کیں اس طرح ہم نے آپ برکتاب نازل فرماتی رجس کی بنار بر عجادله بالاحسن كى تعليم كى كتى سوجن لوگوں كوہم نے كتاب دكى نا فع سمجھ ا دى ہے دہ آ

빞

سورة عنكبوت ٢٩:٥٥

رآب دالی اکتاب پرایان اے آتے ہیں واور ان سے مجادلہ کی بھی نوبت شاؤو ناور آتی ہے) اور ان دابل عرب منرک اوگونی کی تعین ایسے دمنصف ایس کداس کتاب پرایان ہے کہتے ہیں دخواہ خود بحد کرما! بن علم سے اسمال سے سندلال کرے) اور وصوح والائل کے بعد ، ہماری واس کتاب کی آئیوں سے بجز دصندی کا فرول سے اورکوئ منکر نہیں ہوتا داویرمجا دلہ کی تقریر دلسیل نفلی تفی ہے۔ خاص ابلِ نقل کو تخاطب تھاآگے دسلے علی ہوجس میں عام تخاطب ہو بھی آور رجو لوگ آگ کی نبوت کے منکر ہیں ان سے یاس کوئی منشار استنباہ بھی تونہیں ، کیونکہ ای اس کتاب ربعی قرآن سے پہلے دی کاب بڑھے ہوئے سے اور دیون کتاب لینے ہاتھ سے اکو سے بھو کہ ایسی حالت میں به ناحی مشناس وگ کیچیشبه نکلتے رکه به تکھے پڑھے آدمی ہیں آسیانی کتابیں دیکھ بھال کر ان کی در دسے مضامین سورے کرفرصت میں بلٹے کر لکھ لتے اور یا دکریے ہم توگوں کو سنا دیتے ہین أكرا ليسا ہوما تو مجھے تومنشار اشتباہ كا ہوما ،كوجب بھى يہنب كرنے والے مطل ہونے ،كيونكماعي إ قرآنی بھر بھی دلالت علی النبوّۃ کے لئے کافی تھا، لیکن اب تواشنا منشار اشتباہ بھی نہیں اس لے یہ کتاب محل ارتباب بہیں بلکہ یہ کتاب ربا وجود واحد ہونے سے جو تکہ ہر حصتہ اس کا تجزہ ہے، اور حصص کیٹر ہیں، اس لئے وہ تہنا کویا) خود مہست سی واضح دلیلیں ہیں ان لوگوں کے ذہن میں جن کوعلم عطا ہوا ہے اور رہا وجو دظہوراعجازے) ہماری آبتوں سے بس صندی ہوگ انکارے خاتے ہیں (در مذمنصف کو تو ذراست بہنیں رہنا جاہتے) اور بہوگ رہا وجوعطام مجزہ مسرآن کے محص براہ تعنت وعناد) ہوں کہتے ہیں کہ ان رسفیر) بران کے رب کے پاس سے رہاری فرمائشی نشانیاں کیوں نہیں نازل ہو ہیں، آپ یوں کہہ دیجے کہ وہ نشانیاں توخداکے قبضتر قدرت) میں ہیں اور دمیرے اختیار کی چیزی نہیں اس توصر و ایک صاف صاحت رعذاب اہمی سے ورانے والارایعی رسول ہوں دا وررسول ہونے برصیح دلیلیں رکھتا موں جن میں سے بڑی دلیل قرآن ہے ۔ مجرخاص لیل کی کیا صرورت ہی انحصوصًا جبکہ اس کے واقع مزمونے میں محمت بھی ہو۔ آ کے تسران کا اعظم فی الدلالة ہوفر ملتے میں اکسیا ردلالت على المسنبوة مين ال لوكول كوب بات كافى بنيس بونى كرہم نے آب بريك آب رمجز، نازل فرمانی ہے جوان کو رہمیشہ سنائی جاتی رہتی ہے، رکہ اگر ایک بارسنے سے اعجاز ظاہر مذہبو تو دوسری بارس ہوجانے یا اس کے بعد ہوجانے ، اور دوسرے معے ، است میں توب بات مجی سر موتی ، کیونکداس کاخارق ہونا دائمی مد ہونا جیسا ظاہرہے اور ایک ترجیح اس مجزہ میں میں کم ، بلاست اس کتاب میں رمیجزہ ہونے کے ساتھ ، ایمان لانے والے لوگوں سے اے بڑی رحمت اور تھ جت ہے ورحمت سے کہ تعلیم احکام کی ہے جو نفع محص ہے اور محب

71

معارف القرآن جلد ششتم الما الدرات معرف مرد المراد مرد مرد المرد ال

وترمیب سے ہے، اور یہ بات دو کے معجزات میں کب بردتی این ان ترجیجات سے تواس عنیمت سمجتے ،اورایمان ہے آتے ، اوراگراس وضوح دلائل کے بعد بھی ایمان نہ لائیں توآخری جواب کے طور ہر، آپ کہدیجے کہ رخیر کھاتی مت مانو، الندمیرے اور محقالے ورمیان (میری رسالت کاہواہ بس ہے اس کوسب جیز کی خبرہے جوآسان میں ہے اور زمین میں ہے اور ارجب میری دسالت اودانشد کاعلم محیط تابت بواتو هجولوگ ججونی باتوں پریفیس رکھتے ہیں اورالٹ دکی با توں سے منکر ہیں رجن میں رسالت بھی داخل ہے ، تووہ لوگ بڑے زبان کار ہیں رکعنی جب الشّركة ارشا ومصميري رسالت ثابت بي تواس كالكاركفر بالشّب، اورالشّر تعليكا لم تحیط ہے تو اس کو اس انکار و کفر کی بھی خبرہے، اور اللہ تعالیٰ کفر بریسز اسے خسارہ دیتے ہیں، بیں لامحالہ ایے نوگ خاس ہوں گے ، اور بیانوگ آئی سے عذاب دواقع ہونے کا) تقامت تے ہیں داور فور اعذاب مذات ہے آپ کی نبوت ورسالت میں سشبہ وا نکار کرتے ہیں) ادراگر دعلم الی میں عذاب آنے کے لئے امیعاد معین مرسوتی تو دان کے تقاصتہ کے ساتھ ہی الم عزاب آحيكا بوتااور رحب وه ميعاد آجا وي كى تناوه عزاب أن يروفعة آبيو يخ كا، اوران كو خبر بھی منہوگی داکتے ان لوگوں کی جیالت کے اظہار کے لئے ان کی جلد بازی کو مکرر ذکر کرکے عذاب كى ميعاد معتنى اوراس بين بيش آنے والے عذاب كا ذكر كرتے بين كم) يه توك آئے۔ عذاب کا تقاضا کرتے ہیں اور زعزاب کی صورت یہ کہ اس میں تھے شک نہیں کہ جہم ان کا فروں کو دجار دوں طرف سے انگھیر لے گاجی دن اُن پرعذاب ان کے اوپر سے اور ان کے ے گھیر ہے گا اور داس وقت ان سے احق تعالیٰ فرمائے گاکہ جو کچھ (دنیا میں اکرتے رہے و را ب اس کامرہ) چکھو

محارف ومسائل

تَلَا تُتَجَادِ لُوَ اَكَمُلَ الْكِتْ اِلَّا الَّذِي هِي آحَتْ إِلَّا اللَّنِ الْمَاكَةُ الْحِينَ الْمِلْ الْمِكَ الْمِلْ الْمِلْ الْمِلْ الْمِلْ الْمِلْ الْمِلْ الْمُلْورِ وَسَعْبَ اللهِ اللهِ اللهِ اللهُ اللّهُ اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ ال

ف القرآن حل لقی کے جواب میں خوش خلقی کا اور ظلم کے جواب میں انصاب کا مظاہرہ کریں جد اوتو تحصیں اس کاحق ہے ، لیکن صبر کرد توبیزیادہ بہتر ہے ا اس آیت میں اہل کتاب سے محادلہ میں جوہدایت طریقہ حسنہ کے ساتھ کرنے دی تمی ہے ہی سورہ تحل میں شہر کس کے متعلق بھی ہے ۔اس جگہ اہل کتا ہے تو ایمان ا در کهسلام کے قبول کرنے میں تحصیں کوئی ما بعے نہ ہو ناجا ہے ہوسا کہ فرا يا تُوْ لُوَّ المَنَّا بِالَّـنِي أَنْ إِلَى إِلَيْنَا فَأْنُولَ إِلَيْنَا فَأَنْوِلَ الصَّكُمُ العِيْ مُمْ إِلِى كَتَابُ لواینے قربیب کرنے کے لئے یہ کہو کہ ہم مسلمان تواس دحی پر بھی ایمان کھنے ہیں جو ہماری طرف بواسطہ ہمانے رسول کے جیجی گئی ہے ، اور اس دحی برکھی جھاری تھا رہے بیٹیرے ذراحیہ جیجی کئی ہے، اس لئے ہم سے مخالفت ان کتابوں پراجالی ایمان رکھتے ہیں باس معنی کہ جو کھھ انڈر تعالی نے ب مضاطین پر ہماراایمان ہی جن میں آمخصرت صلی الشدعلیہ کے عہدمارک میں بهى بهبت سخولفيات بهو يحيى تقيس اوراس وقت سے اب تك ان بس سخ لف كاسل ايول ك ب- ایمان صرفت ان مصناین تورات وانجیل برب جوالله کی طرف سے حصرت موسیٰی و عينى عليها التسلام بيرنازل ہوئے ہے، تحريف شدہ مصالين اس سے خاج ہيں۔ موجوده تورات دانجيل كتمطلفاً عصح بخارى مين حصرت إلوهر ريم كى روايت سے كما بل كتاب تصديق كي تجاكن مطلقاً مكذيب تورات والجيل كوان كم اصلى زبان عمراني من يرسيق عقد اور سلانوں کوان کا ترجمہ عزبی زبان میں سناتے تھے۔ رسول النرصلی الشرعلیہ وسلم نے اس کے متعلق مسلمانوں کو میر ہدایت دی کہ تم اہل تناب کی تصدیق کرونہ تکذیب کرو، ملک يول كموامَنَا بالَّذِن فَي ٱنْفِيلَ إِنْهِنَا وَٱنْوَلَ الْمَسْكُمْ الْعِين مِم اجِالاً اس وحي يرايان لا ت بیں جو تحقالے انبیار پرنازل ہوتی ہے ،ادرجو تفضیلات تم بتلاتے ہووہ ہمالیے نز دیک قابل اعتاد نهيس اس لي مماسي تصديق وتكزيك اجتناب كرتي بس

عارت القرآن علدست تفسيروں ميں جوعام مفسرين نے اہل كتاب كى دوايات نقل كى ہيں ان كا بھى يہى درج ہے۔ اور نقل کرنے کا منشار بھی صرف اس کی تا ریخی حیثیت کو واضح کرنا ہے، احکام حلال حرام كان سے ستنباط بنيس كيا جاسكتا، مَاكُنْتَ مَنْكُ ابنَ قَبْلِمِنْ كِتْ وَلَا تَحْظَفُ بِمَيْنِافِ إِذًا لَا ثَمَّاتِ الْمُنْكِطِلُونَ، لِين نزولِ قرآن سے پہلے سَآتِ كُونَى كَتَابِ بِيْرِ سِتَ سَقَى، ذ کھے لکھ سکتے تھے بلکہ آگ اُسی اُسی ستھے اگر ایسان ہوتا اور آپ سکھے پڑھے ہوتے تواہلِ باطل کے الت فسك ومشبه كي كنيكش محل الى كربدالزم لكات كرات في كابين تودات وكليل بڑھی ہیں یا نقل کی ہیں آئے جو کھے قرآن میں منسر ماتے ہیں وہ انہی پھیلی کتابوں کا اقتبا ہے، کوئی وجی اور تہوت ورسالت ہمیں ہے۔ بى كريم صلى الشرعليد وللم كاتمتى بمونا حق تعالى في رسول الشرصلى الشرعليد ولم كى نبوت ورسا آپ کی بڑی نصنیلت اور بڑا مجزور پرس طرح بہت سے واضح اور کھلے ہوتے معجزات طاہر فرمات ابنی میں سے ایک بیر بھی ہے کہ آت کو پہلے سے اُمّی رکھا، مذکیے لکھا ہوا میرہ سکتے تقے، ناخود کھے لکھ سکتے تھے، اور عرکے جانب سال اس حال میں تمام اہل مکہ کے سامنے كذرب _آب كا اختلاط ابل كتاب سے بھى تھى نہيں ہوا ، كه ان سے تھے شن ليتے كيونكم كم میں اہل تناب تھے ہی نہیں دیائیں سال ہونے پر سکا کے آپ کی زبان مبارک سے یسا کلام جاری ہونے لگا جوایئے مصنامین اورمعانی کے اعتبارے بھی معجزہ تھا، اور تفظی نصاحت و بلاعت کے اعتبارے بھی۔ بعض علمار نے میرثا بت کرنا جا ہاہے کہ آمیے کا اُنتی ہونا ابتدار میں تھا، بھواللہ تعا نے آئے کو لکھنا پڑ ہنا سکھا دیا تھا اور اس کی دلیل ہیں واقعۃ حد تیبیر کی ایک حدیث نقل رتے بن من من مرحب معابرة صلح لكهاكيا تواس من محتيج براللي ورسول اول لكها مقاءاس برمشركين مكهة اعراض كياكهم آي كورسول مانت توبي حكم الاي كيول موما،اس من آت كے نام كے ساتھ رسول الله كالفظ ہم قبول بنيں كرس كے - تھے ولے حصرت علی مرتصنی ستھے، آھے نے ان کوفر مایا کہ سے نفظ مطادو ، مصرت علی کرم الشروج، نے اور سے ہجود مہوکرالساکرنے سے انکارکیا تو دسول العُنصلی الشعلیہ وسلم نے کا غذیود اسنے ہاتھ میں لیا اور سے لفظ مطاکر سے لکھ دیا، من محت تمرین محبّد اللہ۔ اس روابیت میں ایکھے کی نسبت آمنصرت صلی الندعلیہ دسلم کی طرف کی گئے ہے جس لجه حضرات نے استرلال کیا ہے کہ آئے کھنا جانتے تھے ، مگریجے بات یہی ہے کہ کسی دوستر سے کھوانے کوچی عوت میں بی کہاجا تاہے کہ اس نے لکھا ﷺ جیسا کہ محاورات میں عام

سورة عنكوت ٢٩: ہے، اس کے عسلا وہ بیربھی امکان ہے کہ اس واقعہ میں بطور معجزہ آیے نام مسارک بھی تحقایر ها نهین کهلاسکتا، اس آن پژهاد رائمی بهی کهاجات گا،جب سکھنے کی عادت مذہوٰ ادر ست کا آت کی طرت منسوب کرناآت کی فضیلت کا اشبات ہنیں،غورکری تو ے بندو میرے جولیکن لاتے ہو میری زمین کشادہ ہی سوٹھ ہی کی بند مجلے کام ان کوہم جگہ دیں کے بہشت میں جرد کے سراريس ان يس، نوب تواب ملاكام والول مخفول نے صبر کیا اور اپنے دب ہر بھروسہ رکھا، اور کتنے جانور ہیں جو اکھا نہیں الاتتحيل برزقها التا أنثه يون قها وإيا كمرا وهوالتمية رکھتے اپنی روزی ، اللہ روزی دیتاہے ان کواور مے کو بھی ، اور وہی ہے سنتے والا الْعَلِيْمُ ۞ وَلَئِنَ سَالْتَهُ مُنْ خَلَقَ السَّبَالِينَ وَالْرَيْنَ جانے والا، اور اگر تو لوگوں سے پوچے کہ کس نے بنایا ہے آسمان اور زین کو وَسَخُوالِثُمْسَ وَالْقَهُولِيَ اللَّهُ وَلَنَّ اللَّهُ وَالْقَهُولُونَ اللَّهُ وَقَالَىٰ يُوفَالُونَ ١٠ اوركامين لكايا سورن اورجا ندكوتوكيس الشرفي ، محركهان سے ألث جاتے ہيں الله يبسط المي زق لمن يتناع من عباده و يقي رك الشريحسلاتاب روزى ص واسط جاب ابنے بندوں س اور ماب كرديتا بى جسكو جاب معارد القرآن مبد شغر المنظم ا

خارصة تفساير

اے میرے ایمان دار مبند و رجب یہ لوگ غاست عدا دت داختیار دمین برایذار میونجانے ہیں تو میاں رہنا کیاصرور) میری زمین فراح ہے، سودااً مهال ره كرعبادت بنيس كرسكة تو اوركهيس جليجاؤا دروبال جاكر بإخالص ميري بي عبادت کر د زکیونکه بهال ایل نثرک کا ز در ہے، توالیس عبا دے جو توحید محصق برشنی ہواور مشرک سے خالی ہو، بہال مشکل ہے، البتہ خدا کے ساتھ بخرخدا کی بھی عبادت ہو بیرمکن ہے تگروہ عبادت ہی نہیں اوراگر تم کو پھرت میں احباب داوطان کی مفار شاق معلوم ہوتو رہے بچھے لوکہ ایک رز ایک روز لیہ توہونا ہی ہے ، کیونکم) ہرشخص کو مو کا مزہ چکھنا روز در) ہے رآخر اس وقت سب جھوطیں گے اور) بھر تم سب کوہمارے ياس آناب داودنا و سرمان بوكر آنے مين خوت سزاكا ہے) اور ديد مفارقت اگر سارى رصاكے داسطے ہوتو ہمائے یاس سخنے کے بعداس دعدہ کے شحق بوجا و اوردہ وعدہ یہ ہے کہ ہولوگ ایمان لاتے اوراجھ عمل کتے رحن برعمل کرنا لبعض اوقات ہجرت يرموقون بوتاب توايي وقت مين بجرت بهي كى بهم ان كوحبت كم بالاخانون جدوس کے بجن کے نیچے سے نہرس حلتی ہوں گی، وہ ان میں ہمیشہ ہمیشہ رہی گے راوران نیک کام کرتے والول کا کیا انجھا اجرہے، جفوں نے رواقع شرہ مختبول مرجن میں ہجرت کی سختی ہجی داخل ہوگئی اصبر کیا، اور دوسرے ملک یا شہرس م چوشکالیت کا درگذارے کی مشکلات کا ندلیشہ کھا اس میں) دہ اپنے رب پرتوکل كياكرتے تخاور ل اگر بحرت ميں تم كوب وسوسہ بوكہ يردليں ميں كھالے كوكها ل سے

7-6-5

1-2

سورة عنكبوت ۲۹:۳۹

للے گا تو رہے بچھے لوکہ ہمبت سے جا نورالیہ ہیں جو اپنی غذا اٹھا کرنہیں رکھتے رایعی جمعے نہیں کرتے تو تعضر جمع بھی کرتے ہیں، مگر بہت سے نہیں بھی کرتے ، انڈسی ان کو دمعت ر ر ر دری پنج ہے اور پھ کو بھی رمعت دور دوزی بہنچا تا ہے خواہ تھ کہیں ہو پھرایسا وسوست مت لاؤ، بلامرا توی کرکے المتربر بھرد مسے رکھو) اور (وہ بھرد سے لائن ہے کیونکہ) وہ سب کچھ سنتاسب لجه جانتا ہے واسی طرح و دسری صفات میں کا بل ہے اور جو ایسا کا مل الصفات ہو دہ خود بحروسه کے قابل ہے) اور رتوحید فی الالوہیت کا جومینی ہے تعینی توحید فی التخلیق وہ تو ان لوگوں کے نز دیک بھی سلم ہے جنانچہ) اگرآب ان سے دریا فت کریں کہ ربھلا) وہ کون ر جس نے آسمان اور زمین کوسید اکیا اورجس نے سورح اورجا ند کو کام میں لگار کھا ہے ، نووہ نوگ میں کہیں گے کہ وہ النٹرہے کیر دجب توحید فی التخلیق کو مانتے ہیں تو توحی پر بالالوبسيت كم ماك مين اكدحرا لط على جارب بين زا درجبيا خالق التربي ب اسطح مترسی ر رازی بھی جنانچہ) وہ لینے ہنروں میں سے جس کے لئے بیا ہے روزی فراخ کر دیتا ہو اورجس کے لئے جاہے تنگ کر دیتا ہے، بیشک اللہ ہی سب چیز کے حال سے واقف ہی رجیسی مصلحت د سیحقتا ہے دلیبی ہی روزی دبتا ہے غرض رازق دہی تھمرا، اس لتے رزق کا ا ندیشہ ہجرت سے مانع مزہونا چاہتے) اور رحبیباکہ شخلیق کا تنات میں النٹر کی توحیدان سے نزدیک بھی سلم ہے، اسی طرح کا ثنات کے ہاقی رکھنے اوران کا نظام چلانے میں بھی توحیہ لیم کرتے میں چنانچہ اگر آپ ان سے دریافت کریں کہ وہ کون ہے جس نے آسمان سے یانی برسایا محصراس سے زمین کو بعداس کے کہ ختک رنا قابل نبات برطری تھی ترو تازہ رقابل نبات) کردیا تورجواب میں) وہ لوگ یہی کہیں گے کہ وہ بھی اللہ ہی ہے آپ کہتے كەللىدىندراتنا توا قراركياجى سے توحيد فى الالومىيت پراستدلال بھى بدىپى ہے، مكر يہ لوگ مانے بہيں) بلكہ راس سے بڑھ كريہ ہے كه) ان بن اكثر سجتے بھی نہيں ديد كس وحرسے کے عقل بہیں، بلکہ عقل سے کا بہیں لیتے اور غور نہیں کرتے، اس لیتے برہی تھی خفی رستاہے)۔

معارف ومسائل

شروع سورت سے بہاں بمک مسلما نوں کے ساتھ کفار کی عدا وت اور توحید ورکت سے مسلسل انکارا درحی اور اہلِ حق کی راہ میں طرح طرح کی رکا وٹوں کا بیان تھا، مذکورالصدر آیات میں مسلما نوں کے لئے ان کے شرسے بیخے اور حق کو شاتع کرنے اور حق وانصا م

빋

عارث القرآن جلد ستستر مو دنیا میں قائم کرنے کی ایک تدبیر کا بیان ہے جس کا اصطلامی نام ہجرت ہی کینی وہ وطن اور ملك جيد لردينا جن مين انسان خلاف حق بولنے اور كرنے برمجبور كيا جاتے۔ بجرت كے احكام ادراس كى داوس | إنَّ آرْجِنى قرابِعَة فَايَّاى فَاعْدُن وَنِ احق تعالى نے فرایاکه میری زمین بهت دیج به اس کے کسی کاید عدر يش أيوالي تسكوك شبهات كاازاله قابل سماعت بنهين كه فلال شهر ما فلال ملك بين كفارغالب مخص اس لية بهم الندكي توحيد اوراس کی عبادت سے مجبور سے۔ان کوچاہئے کہ اس سرزمین کوجبال وہ کفرومعصیت پر مجبور کے جائیں اللہ کے لئے جیوڑ دی، اور کوئی السی حکمہ تلاش کرس جبال آزادی سے المثدتعالى كے احكام بيخود بھي عمل كرسكيں اور دوسروں كو بھي تلقين كرسكيں ۔اسى كا نا وطن سے بجرت کر کے کسی دوسری جگہ جانے میں دوتسم کے خطرات انسان کوعادہ میش آیا کرتے ہیں بجواس کو ہوت سے ردکتے ہیں۔ پہلاخطرہ اپنی جان کا ہے کہ جب اس وطن کو چھوڑ کر کہیں جائیں گے تو میاں کے کفاراور طالم لوگ راہ میں حائل ہوں گے، اور مقا ومقاتل کے لئے آمادہ ہوں گے۔ نیزر سے میں مکن ہے کہ دوسرے کفارسے بھی مقابلہ کرنا ہے جس مين جان كاخطره ب- اس كاجواب أكلى آيت مين بدريا كياكم كفن فَدّ المقدّ المؤّت لینی ہر ایک جان چھنے والی ہے مزہ موت کا جس سے کسی کوکسی جگر کسی حال مفرنہیں اس لئے موت سے خوف اور کھراہ سٹ مؤمن کاکام نہیں ہونا جاہتے۔ وہ تو ہر تھی ہرصال میں بیشن ایکی ۔ اپنی جگہ میں کیسے ہی حفاظت کے سامان کرکے رہے ، کھر بھی آسکی اور بؤمن كابيجي عقيده ب كمالتركم معترركرده وقت سيلي موت بنيس الصحق إس ابنى جكر سنة يا بحرت كرك دوسرى جكرجاني بس موت كاخوف حائل ند بوناج است خصوصاً جكدا حكام البسيري اطاعت كرتت بوس موت آجانا دائمي داحتون اورنعتون كا زراجه بي جو ال كوآخرت من مليل كي جن كاذكر بعدكى دوآيتول من فرمايا بي وَآلَيْ يُنَ امْنُودا وَعَمِلُوا الصلخت تشبوهم من الْجَنَّةِ عُرَفًا الآية. دوسراخطرہ ہجرت کی راہ میں سیش آتا ہے کہ دوسرے وطن دوسرے ملک میں جاكررة ف كاكياسا مان بوگاء اسى جكه تو كيه آباني ميراث سے كيھ اپنى كمائي سے آدمي كوئي زين جائداد یاصنعت وجرفت و تجازت وغیرہ کے سامان کے رہتا ہے ، ہجرت کے وقت بیب توسيس حيوط جائيں كے ،آ كے كذاره كس طرح بوكا واس كاجواب بعد كى عين آبيون في اسطرح دیا کیاہے کہ متم ان عصل کر وہ سامانوں کورز ق کی علت اور کافی سبب قرار

2.9

سوركا يحفيوت ١٢:٢٩

رية بوريتهارى بجول ب، رزق دينه والادرحقيقت النرتعالي بروه جب جابملا تولغ ظاہری سامان کے بھی رزق سیخاد ستاہے، اور وہ منجاہے توسب سامان ہوتے بھی انسان درق سے محروم ہوسکتاہے۔ اس کے بیان کے لئے سہلے تو بہ فرمایا: وكايتن مِن دَايَة لا تَحْمِلُ رِنْ قَهَا اللهُ يَوْزُقُهَا وَلِيَاكُمْ اللهُ يَعْور كرد زمین پرجلنے دالے کتنے ہزاروں قسم کے جا تو رہیں جواپنے رزق جمع کرنے اور دیکھنے کاکوئی انظا نہیں کرتے مہتحصیل دزق کے سباب جمع کرنے کی کوئی منکر کرتے ہیں مگرانشہ تعالیٰ ان کو ر د زانه این فضل سے رزق مساکرتے ہیں علمار نے فرمایا ہے کہ علم جانورالیے ہی ہیں۔ ان می صرمن چیونٹی اورج ہا توایسے جا نور ہی جواپنی غذار کیلئے اپنے بلوں ہیں جمعے کرنے کی فکر کرتے ہیں۔جیونٹی مردی کی موسم میں باہر نہیں آتی، اس لئے گرجی کے ایام میں کھانے کا سامان ایخ بل میں جمح کرتی ہے۔ اور مشہورہ کریزندہ جانورول میں سے عقعق رکو ا) بھی اپنی غذالیہ تھونسلہ میں جمع کر تاہے مگر وہ رکھ کرمجئول جا آیا ہے۔ بہرحال دنیا کے تنام جانورجن کی ا نواع واصنا من کاشار بھی انسان سے شکل ہے، وہ بیشتر دہی ہیں جو آج اپنی غذار جال رنے سے بعد کل کے لئے مذغذا ، جہتا کرتے ہیں نداس سے اساب ان سے یاس موتے ہیں ۔ حدیث میں ہے کہ میر تدیے جانور صح کوانے گھونسلوں سے بھو کے بیکتے ہیں ،اور شام توسیط بھرہے والیں ہوتے ہیں ۔ نہ آن کی کوئی تھیتی باڑی ہے نہ کوئی جائدا دوڑ مین ، نہ کیسی وہ زندہ ہیں ہی سلسلہ جاری ہے۔

اس کے بعد کی آیات میں رزق کا اصلی ذرایے بتلایا ہے جوجی تعالیٰ کی عطار ہے ،
اور فر مایا ہے کہ خو دان مسئر دن کا فروں سے سوال کروکہ آسمان زمین کس نے بیدا کے ! اور شمس و قرکس کے تابع فرمان جل رہے ہیں ؟ بارش کون برسا تاہے ؟ بجراس بارش کے ذریع زمین سے نبا تا ت کون اُ گا تاہے ؟ تومنٹر کین بھی اس کا اقراد کریں گے کہ یہ سب کام ایک ذات حق تعالیٰ ہی کا ہے ۔ توان سے کہتے کہ پھر ہم اندر کے سواد وسرول کی بوجا یا شاور ان کوا بنا کا دسا ذکیا ہے جو اگلی آیات و کہ تی سنا گنتہ ہے می میں اسکا دسا ذکیا ہے تا کہ اس کا بیا ان ہے ۔ اگلی آیات و کہ تی سنا گنتہ ہے می میں اسکا بیا ان ہے ۔ اگر آئی ہے تھی اسکا بیا ان ہے ۔

تعلاصہ میہ ہے کہ بچرت سے روکنے والی دوسری فکر معاش کی ہے، وہ بھی انسا ن کی بھول ہے۔ معاش کا جہتا کر نااس سے یا اس سے جمع کر دہ اسساب سما مان سے

معارث القرآن مبلد سشستم

جمعہ بہن ہیں، دہ بلا داسطہ می تعالی عطام ہے۔ اس نے اس دطن میں یہ سامان ہجے قرا دیتے کھے وہ دد مری حکہ بھی سامان معاش دے سکتا ہے۔ اور بخرکسی سامان کے بھی صروریات معاش فراہم کرسکتا ہے۔ اس لئے یہ دو سرا خطوہ بھی ہجرت مانچ یہ ہونا چاہیے۔ بہرت کب فرصٰ یا (بجرت کے معنی اور تعرفیت اور اس کے نصائل و برکات سورہ نا اس بھرت ک بھرت کب فرصٰ یا (بجرت کے معنی اور تعرفیت اور اس کے نصائل و برکات سورہ نا اس سورت اور بس بوتی ہے۔ کی آیات بمنرے ہوتا ۱۰۰ میں اور شرعی احکام میں تبدیلی اسی سورت کی آئیت بمنرہ م کے محت میں معارف اور اس کی جلد دوم صفحہ میں تبدیلی اسی سورت کی آئیت بمنرہ م کے محت میں معارف اس مصنون وہاں بیان کرنے سے رہ گیا تھا وہ میں انکھا جا تا ہے مسلما فوں کو بشرط قدرت ہجرت کرنا فرضِ میں مسلما فوں کو بشرط قدرت ہجرت کرنا فرضِ میں مصارف کے جو ہجرت کرنا فرضِ میں مصارف کی مردو عورت مستنتی بہیس تھا، بجز ان تو گوں کے جو ہجرت پر مشر در سے محت ہوں۔ یہ در کہتے ہوں۔

جب کرمی دفتح ہوگیا تو ہجرت کا یہ حکم بھی منسوخ ہوگیا۔ کیونکہ اس وقت مکہ خودد ارالاسلام بن گیا تھا۔ رسول الٹرصلی الٹرعلیہ و کم نے اس وقت حکم جاری فرما دیا : کل هِ جَرَة کَمِ مَا لَفَتْنَج ، لِعِنَ فَتْح کہ کے بعد کہ سے ہجرت کرنے کی ضرورت

بهیں، کد کررسے ہجرت کا فرض ہونا بھر منسوخ ہونا دستران وسنت کی نصوص سے آبت ہوگیا، جوایک واقع جب زئیر تھا۔ فعہاءِ احمت نے اس واقعہ سے پیمائل مستنبط کئے ؛۔

همست کی آزادی نہ ہو،

ده کفر و مثرک یا احکام مشرعیہ کی خلاف ورزی پر مجبور ہو دہاں سے ہجرت کرکے کسی
ده کفرو شہریا ملک میں جہاں دہن پر عمل کی آزادی ہو جلاجا نا بشرطیکہ قدرت ہو و جب

دوسے رشہریا ملک میں جہاں دہن پر عمل کی آزادی ہو جہاں آزادی سے دین بڑعل

كرسك ده مشرعاً معذورب.

مسئل۔ : جس دارالکفرس عام احکام دینیہ برعمل کرنے کی آزادی ہو دہائے ہجرت فرض و داج تی بہیں، گرستخب بہرحال ہے ادراس میں دارالکفر ہونا بھی ضروری بہیں، دارالفسق جہاں احکام الہمیہ کی خلاف درزی اعلانا ہوتی ہواس کا بھی یہی حکم ہے۔ اگرچہ دہائے حکم ان کے مسلمان ہونے کی بنا دیراس کو دارالاسلام کہا جاتا ہو۔ یہ تفصیل حافظ ابن جو رہنے فتے الباری میں تحریر فرمائی ہے ادر تو اعرضفیہ میں کوئی جزاس کے منافی بہیں ۔ ادر مسئرا حرکی ایک روایت جو حضرت او بھی مولی ذہر ابن عوام اسے منافی بہیں ۔ ادر مسئرا حرکی ایک روایت جو حضرت او بھی مولی ذہر

> آئيلادُ بِلادُ اللهِ قَالُمِيادُ عِبَادُ اللهِ عَنَادُ اللهِ عَيْمَا اَصَبِّت عَبَادُ اللهِ عَنْدَا اَصَبِّت خَيْرًا فَإَ قِيمُ رَابِنَ مَثِيرٍ

" یعنی سب شہران کے شہر ہیں اور سب بندے اللہ کے بند سے ہیں ، اس ای جس مجل تحفالے لئے اسبا بنجر جمع ہوں وہاں اقامت کردہ

ادرابن حبوری نے اپنی مسند کے ساتھ حضرت سعید بن جبری سے نقل کیاہے کہ اسموں نے فرمایا کہ جب شہر میں معاصی اور فو آسٹ عام ہوں اس کو چور ڈرو۔اورام تعنیر حضرت عطاق نے فرمایا کہ جب تحصیں کسی شہریں معاصی کے لئے مجود کیا جائے تو دہا سے بھاگ کھڑے ہود کیا جائے تو دہا سے بھاگ کھڑے ہود رابن جربی طبری فی اتفسیس

وَمَاهُ إِنْ وَالْحَيْوَةُ النَّانَيْ الْآلِكُ لَهُو وَلَعِ الْحَالَ الْمَالَى الْمَالَى الْمَالَى الْمَالَى اللهُ وَلَا اللهُ اللهُ

سورهٔ عنگوت ۲۹: ۱۹ تتی میں پکارنے کے اللہ کو خالص اسی پر رکھ کراعتقاد مجرجب بچالایا ان آجے جاتے ہیں ان کے آس یاس سے سیا جھوٹ سر نعتین بنعته الله يكفر ون ٤٥ ومن رکھتے ہی اور انٹرکا احسان جیس مانتے ، اور اس سے زیادہ ہے انصات کون جو باند سے اللہ بر مجود یا جھلائے ہی بات کوجب اس مک پہنے، کیادورن هَمْ مَثَّى كِنْكُ عِنْ اللَّهِ مَثَّى إِنْ اللَّهِ مِنْ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّهِ اللَّ ين لين كي عكرينين منكروں كے لئے، اور جفول نے محنت كى ہما رہے واسطے لَنَهُ لَ يَنْهُ مُن يَنْهُ مُن لِمَا اللَّهُ وَإِنَّ اللَّهُ لَهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّهُ اللّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَّى اللَّهُ عَلَّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللّهُ عَلَى اللَّهُ عَلَّ اللَّهُ عَلَّى اللَّهُ عَلَّا عَلَى اللَّهُ عَلَّ اللَّهُ سمجھادی گےان کواین را ہیں ، ادر بیشک اسد ساتھ ہے نیکی والول کے خالصة تفسار اور روجدان کے غورن کرنے کی اہناک ہے مشاغل دتیا میں حالاتکہ) یہ دنیوی زندگی رجن کے بہتمام تراشغال ہیں فی نفسہ) پیجز کہو دلعب کے اور کیے بھی نہیں اور اصل زنرگی عالم آخرت دکی ہے د جنامجے دنیا کے فائی ہونے اور آخرت سے باقی ہونے

1

صنمون طاہر ہیں لیں فانی میں اس قدرا ہنراک کہ باقی کو بھول میں ڈال کا سے خود سے عقلی کی بات ہے) اگران کو اس کا دکا فی علم ہو یا توایسا نہ ک ادرا سان لے کتے جیسا کہ خود ان کوریٹ کیم سے کہ شخلین کا تنات ادر اس۔ رعبادت میں اس کومنفر دمانتے اور اس کا بھی تمجھی اظہار وا قرار کرتے ہے: نتی میں سوار ہوتے میں داور وہ کشتی زیر وزیر ہونے لکتی ہے) تو داس وقت احنا تقاد كرك الشربي كويكا رف لكت بين دكلين أبخيتنا مِنْ إِن كَانَ مَن السَّا كِرْسَ اللَّه اللَّهِ وَلِي میں خدانی اختیارات اور معبود بیت میں بھی توحید کاا قرارہے ، تگریہ حالت بوجہ امہماکہ کے دیریا ہمیں ہوتی ہے انجراس وقت توسب قول وا تشرار توحید کے ہوتھے اِس رنے لکتے ہیں،جس کا عصل یہ ہے کہ ہم نے جو تعمت (سجات دیجرہ) ان کو د کی نا متدری کرتے ہیں ا در یہ ہوگ دعقا مترستر کیہ داعمال فسقیہ ہیں ہواسے نف دادراب اس اہناک فی الدنیا کی دجہ سے کھے نظر منہیں آتا، سوایک مالع تو ان کو توجیسے الهُ أَن يَ مَعَلَكَ نُنتَخَطَّفَ مِنْ آرْ صِنا يِن الرَّمِ مسلمان برجا مِين توبمين وب كي لوگ مار دیں گے۔ حالانکہمشاہرہ سے ان کوخو د مغوبیت اس کی محلوم ہوسحتی ہے کیاان ہوگوں اس بات پرنظر نہیں کی کہم نے دان کے شہر مکر کڑا من والاحرم بنایا ہے اوران کے گردویس دیے مقامات میں رجو خابے حرم ہیں) توگوں کو زمارد صاف کران سے گھروت) بحالاجارباب ربحلات ال سے كرامن سے بیٹے ہيں اور بربات و دمحسوسات میں تو مرسیا سے گذر کر محسوسات میں بھی خلات کرتے اور خوت بلاکت کوایان لانے میں عذرمانع بتاتا بن اور) محردو صنوب من کے بعداس حاقت اور صند کا اکا رٹھ کا ناہے کہ) یہ لوگ جھوٹے معبود رون برتوايمان لاتے بين رحبي برايمان لانے کا کوئي مقتضي نہيں اور موانع بيت من اورالشدرج برایان لانے کے بیت مقتی اور دلائل مجرین اس کی نعمتول کی ناسٹ کری دلین الٹرکے ساتھ مترک اکرتے ہیں دکیو کا مٹرک سے بڑھ کرکی ناشکو بنيس كرنعت تخليق وترزيق والقارو تدبير دغيره توده عطا فراوك اورعبارت رقربے توابعیٰ جنت کے داستے منرورد کھادیں کے رجس سے دہ جنت میں جانبی کے کقولہ تعالی وَقَالُوا لَخَدُّ لِینْدِالَّذِی بَدُنْهُ الایته اور بیکیا دشرتعالیٰ دکی رضاور حمت الیے خلوص والوں کے ساتھ ہو رونیا میں بھی اور آخریت میں بھی) ۔ محتار ف و همسکیا سل

سابقه آیات مین کفار و مشرکیکی حیال مذکور موایم که آسان و زمین کی بلیکش بیش قمر کا نظام، بادش مازل کرنے اور آس نبا آ انگانے کا سادا تظامیر لوگ بھی الشرتعالی ہی کے قبصنہ میں ہو پرلفتین کھتے ہیں اسمیر کسی بہت وغیرہ کی شرکت نہیں مانتی، طرکھر کھی وہ خار میں ہو کو ٹررکی پھراتے ہیں اسکی دیجہ بینے کہ آگھ کھٹے کا یعنے قدیدی زمین بھڑت لوگ وہ ہیں ہو سیجھتے نہیں)۔

مناسب جرم کے ہوتی ہے۔ اس جیساجرم عظم ہے البی ہی منزابھی عظیم ہے۔ ادبراکا مال

جوابل كواد نف يرست يول) اور واب الك اصداد كابيان بحد) جولوگهاري داه مين شقيس برداشت كرتے بي مم الكواين

یہاں پیرواں بیدا ہو آہے کہ یہ لوگ جنون دیوانے تو ہیں ہوسٹیار ہے دارہیں،

دنیا کے بڑے بڑے کام خوب کرتے ہیں بھران کے بے سمجھ ہوجانے کی وجہ کیاہے ؟اس کا

جواب نزکورالصدرآیات میں سے پہلی آئیت ہیں یہ دیا گیا کہ ان کو دنیا اوراس کی ماد می

اور فافی لذّات وخوا ہفات کی مجت نے آخریت ا درانجیام میں غور و منکر

کرنے سے اندھا اور بے سمجھ بنا دیاہے، حالانکہ یہ دنیا کی زندگی لہوولحب لعنی وقت گذاری

کامشغلہ اور کھیل کے سواکھ ہنیں، اوراصلی زنرگی جوجاودانی ہے وہ آخریت کی زندگی ہو۔

تماهیٰ الْحَیْوَةُ النَّ مُیْکَا اِلَّ اَلْهُو وَ اَیْنَ النَّ الْمَالُونَ الْاَحْدِیَ اَلْهُ اللَّا الْمَالُونَ الْاَحْدِیْ اَلْمُ اللَّا اللَّا اللَّالِیْ اَلْدُیْلِیْ اَلْدُیْکَا اَلْدُیْلُونَ اَلْدُیْلُونَ اَلْدِیْلُ اِللَّا اللَّالِیْ اَلْدُیْلُونَ اَلْدُیْلُونَ اَلْدُیْلُونَ اَلْدُیْلُونَ اَلْدُیْلُونَ اَلْدُیْلُ اِلْدُیْلُونَ اَلْدُیْلُونَ اَلْدُیْلُونَ اَلْدُیْلُونَ اَلْدُیْلُونَ اَلْدُیْلُونَ اَلْدُیْلُ اِللَّالِیْ اَلْدُیْلُونَ اَلْدُیْلُ اِللَّالْمُ اِللَّالْمُ اِللَّالِیْلُونَ اللَّالِیْلُونَ اَلْدُیْلُ اِللَّالِیْلُونَ اَلْدُیْلُ اللَّالِیْلُونَ اللَّالِیْلُونَ اللَّالِیْلُونِ اللَّالِیْلُ اللَّالِیْلُ اللَّالِیْلُونَ اللَّالِیْلُ اللَّالِیْلُونَ اللَّالِیْلُ اللَّالِیْلُ اللَّالِیْلُ اللَّالِیْلُونَ اللَّالِیْلُونَ اللَّالِیْلُونَ اللَّالِیْلُ اللَّالِیْلُونَ اللَّالِیْلُ اللَّالِیْلُونَ اللَّالِیْلُونِ اللَّالِیْلُونِ اللَّالْکُیْلُونَ اللَّالِیْلُونُ اللَّالِیْلُونَ اللَّالِیْلُونُ کُلُونُ اللَّالِیْلُونُ اللَّالِیْلُونُ اللَّالِیْلُونُ اللَّالِیْلُونُ کُلُونُ اللَّالِیْلُونُ اللَّالِیْلُونُ کُلُونُ الْلُونُ الْلُونُ الْلُونُ الْلِیْلُونُ الْلُونُ الْلُونُ الْلَالِیْلُونُ الْلَالِیْلُونُ الْلَا

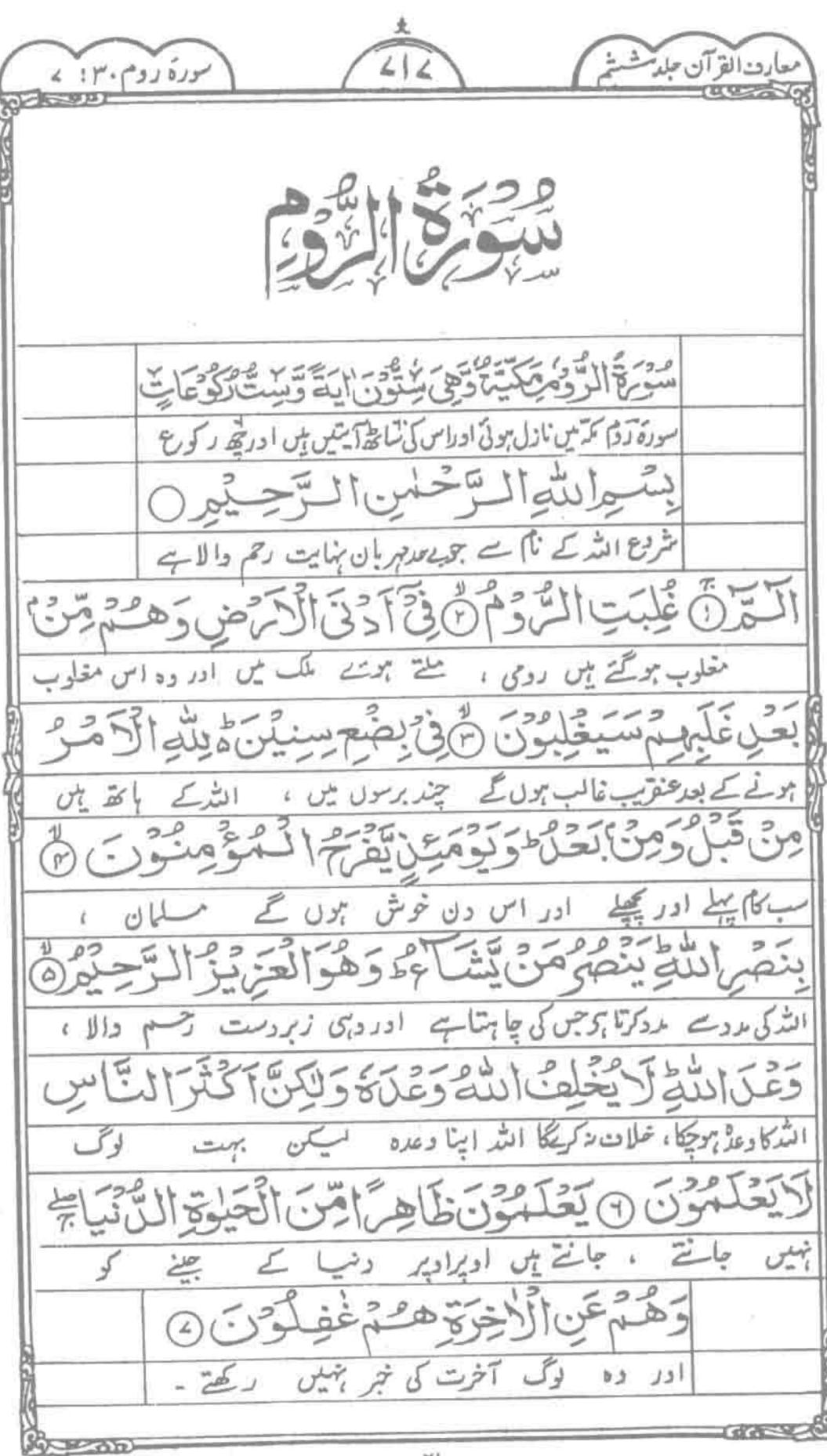
اس میں حیات دنیا کولہوولدب فرمایا ہے دمطلب یہ ہے کہ جیے کھیلوں کاکوئی تبات قراز ہیں ورکوئی بڑا مقصد ان سے حل نہیں ہوتاء مقودی دیر کے بعد سبتمات

ختم ہوجا تا ہے بہی حال اس دنیا کا ہے۔ اس کے بعد کی آبیت میں ان شرکین کا ایک اور بڑاحال یہ بتلایا گیا کہ جیسے یہ لوگ تخلیق کا کنات میں انڈر تعالیٰ کومنفر دمانے کے با دجو داس جہالت کے شکار ہیں کہ بتوں کو خدا فی کا ساجی بتاتے ہیں۔ اس سے زیا دہ عجب یہ ہے کہ جب ان پرکوئی بڑی مصیبت آبڑی ہوتو اس مصیبت کے وقت بھی ان کو ہے گھیں اور اقرار ہوتا ہے کہ اس میں کوئی بُت ہمارا مدرگار ہمیں بن سکتا ہے۔ اس کے بئے ہمارا مدرگار ہمیں بن سکتا ہے۔ اس کے بئے بطور مثال کے فرمایا کہ یہ لوگ جب دریا کے سفر میں ہوتے ہیں اور ڈو بنے کا خواہ موتا ہے، تو اس خطرہ کو خالئے کے لئے کہی بُت کو پکارتے ہیں اور الدّ تعالیٰ ہی کو پکارتے ہیں اور الدّ تعالیٰ ہی کو پکارتے ہیں اور الدّ تعالیٰ ان کے مضوا ور بیقرار ہوئے اور وقتی طور پر دنیا کے سالے سہار دی منقطع اور الدّ تعالیٰ ان کے مضاور پر دنیا کے سالے سہار دی منقطع ہونے کی بنار بران کی دعار قبول کرکے ان کو دنیا کے مہلک سے بجات دے دیتا ہے۔ گر ریظا لم جنے تک بی بہونے کرمطنت ہوجاتے ہیں تو بھر بتوں کو خدا کا مثر یک کہنے لگتے ہیں۔ آبیت جنے تک بی بہونے کے مطلب ہے۔

فا شکاکا:۔اس آبت سے معلوم ہوا کہ کا فربھی جن وقت اپنے آپ کو بے سہا دا جان کر صرف الشر تعالیٰ کو بیکار تاہے اور اس وقت یہ لفین کر تاہے کہ خدا کے سوامجھے آمسی بیت سے کوئی نہیں مجھڑا اسکتا، تو اسٹر تعالیٰ کا فرکی بھی دعا رقبول فرما لیستے ہیں۔ کیونکہ وہ مضطر ہج اورا لنٹر تعالیٰ نے مصنطر کی دعار قبول کرنے کا وعدہ فرمایا ہے د قرطبی وغیرہ)

ادرایک آئیت میں جو بیارشاد آیا ہے وَ مَادُعًا لَا الْفَعْمِ بِنَى اللَّهِ فَيْ مَنْ اللَّهِ فَيْ مَنْ لَا لَكُ یفنی کا فردن کی دُعار مَا قابلِ قبول ہے، یہ حال آخرت کا ہے، کہ دہاں کا فرعزاب سے رہائی کی دعار کرس کے تو قبول سن ہوگی۔

سودة عنكبوت ٢٩: ٩ رت القرآن جلدست مؤمن ہوں یک اسٹرسب کے سب حرم کا احرام کرتے ہیں۔ اس میں قبل و قبال کوحرام سجھ ہیں یحرم میں انسان توالسان وہاں سے شکار کو قتل کرنا اور وہاں سے درختوں کو کاشنا مجی کوئی جائز بہیں بھتنا، باہر کا کوئی آدمی حسرم میں داخل ہوجاتے تو وہ کبی قتل سے مامون موحاتا ہے۔ تو مکر مرمد کے بامشندوں کواسٹ لام قبول کرنے سے اپنی جانوں کاخطرہ بتلانا بھی ایک عذر لنگ ہے۔ وَالَّيْنِ يُنْ جَاهَلُ وَافِينَا لَنَهُ مُ يَنَّا كُنُونُ مِنْ اللَّهُ مُن مُنكنًا ، جِادك اصلى معنى دين من بيني آنے والی دکا و ٹوں کو د ورکرتے میں اپنی پوری تو انائی صرف کرتے کے ہیں، اس میں وہ رکائیں بھی داخل ہیں جو کفار و فجار کی طرف سے بیش آتی ہیں ، کفار سے جنگ و مقاتلہ اس کی اعلی فرد ہے، اور وہ رکا دلیں بھی داخل ہیں جواہنے نفس اور شیطان کی طرف سے بیش آتی ہیں۔ جہاد کی ان دونوں قیموں براس آمیت میں یہ وعدہ ہے کہ ہم جبا دکرنے والول کواسی داستول كوبدا بيت كردية بين يعن جن مواقع بين خيرد ششر ما حق وباطل يا نفع وصفر كرمي التياس بوتاب عقلمندانسان سوجياب كركس داه كواختيادكرون اليد واقع مين الشرتعا اپنی راہ میں جہاد کرنے والوں کو صبحے، سیدھی، بےخطر راہ بتا دیتے ہیں۔ بعنی ان کے قلوب کو أسى طوت مجيردية بين جن بين ان كے كئے خيرو يركت الد -علم بیمل کرتے سے اورحصرت ابوالدر دارمنے اس آبیت کی تفسیر می فرما یا کہ النڈ کی طرف سے علم میں زیادتی جوعلم لوگوں کو دیا گیاہے جو لوگ اپنے علم برعمل کرنے میں جہاد کرتے ہیں ہم ان پردوسے علوم بھی منکشف کردیتے ہیں جواب تک حاصل نہیں۔ اور فینسیل بن عیاص ہے۔ نے فرمایا کہ جو لوگ طلب علم میں کوسٹ ش کرتے ہیں ہم ان سے لئے علی بھی آسان کردیج ہیں۔ دمظري دالشيجانة تعالى اعلم: مرسوة العتكبوت



معارف القرآن حلد شتم

خارصة تفسير

التقر اس كے معنی الشركومعلوم میں) اہل روم ایک قرمیب کے موقع میں رایعنی ارص روم کے ایے مقام میں چوبنسبت فارس کے وب سے قربیب ترہے، مراداس ا ذرعا و بصرالی ہے، جوملک شام میں دوشہر ہیں کزافی القاموس، اور حکومت روم کے بخت میں ہوتے سے ارض روم میں داخل ہیں۔ اس موقع براہل روم اہل فارس کے مقابلہ میں) مغلوب ہوگئے رجس سے مشرکتن خوش ہوتے) اور وہ در وحی اپنے داس معلوب ہونے کے بعد عنقر سے دابل فارس مرود مرے مقابلہ میں تین سال سے لے کر توسال کے اندوا تدرغالب جاتیں ج دا در بہخلوب اورغالب ہوناسب نعراکی طرف سے ہے، کیونکہ مغلوب ہونے سے) پہلے بھی اختیارالندی کوتھا رجی سے مغلوب کردیا تھا) اور دمغلوب ہونے سے ایکھے بھی راتند ہی کواختیار ہے جس سے غالب کردے گا) اور اس روز ربینی جب اہلِ روم غالب آئیں گے، سلمان الشرتعالي كي اس امرا ديم خوش بول كر راس امراد سے يا توبيم ادب كدالسرتعالي مسلمانوں کوان کے قول میں ستجا اور غالب فرمادے گا۔ کیونکہ اس پیشینگوئی کومسلمانوں نے کفاربرظام کیااورا کفول نے تکذیب کی تواس کے وقوع سے مسلمانوں کی جیت ہوجگی ۔ اور ما بيمراد مي كرمسلمانون كومقا تله مين عنى غالب كرد كا يجنانج وه وقت جنك بدري منصور مونے کا تھا، اور ہرحال میں نصرت کا محل اہلِ اسسلام ہی ہیں، اور مسلمانوں کی حالت ظاہری مغلوبیت کی دیکھ کرہے بات مستبحد رنہ بھی جانے کہ یہ مغلوب کمان مقابلہ وقت كفاريم غالب آجائيں گے، كيونكه نصرت الله كے قبضے ميں ہے) وہ جس كوجا بى غالب كردييا ہے اوروہ زيروست ہے ركفاركوجب جاہے قولاً يا فعلاً مغلوب كراد ہے اور) رحم ربھی ہے دمسلاق ل کوجب جاہے فالب کردے) اللہ تعالی نے اس کا دعدہ فرایا ہی راور) النّرتعالي اين وعده كوخلاف نهيس فرما تا راس واسط يديشينگوتي ضرورواقع ہوگی دلین اکر اوگ دائٹر تعالی کے تصرفات کو انہیں جانتے ر بلکمصرف ظاہری اسباب كود يحكران اسباب يرحم لكاديت بس، اس لخ اس شينكوني بس استبعادكية بن حالا تكرمسبت الاسساب اور مالك اساب حق تعالى ب اس كواساب بركنا مجمى آسان ہے اوراسیاب کے خلاف مسبب کا داقع کرنا بھی آسان۔ ادر حس طرح بیشینگوئی کے واقع ہونے سے پہلے اسباب ظاہرہ نہ ہونے کی وج

اس کا انکارکرتے ہیں اسی طرح بیشین گوئی کو پوراہوتا ہوا دیکھ کر بھی اس کو ایک اتفاقی

الردة روم ٢٠٠٠

امرقراد دیتے ہیں، وعدة الهید کا فہور نہیں سمجھتے اس لئے لفظ لَا یَعْلَمُون میں یہ دونوں جَرِیہ آئین کا ان دوگوں کا انڈر تعالیٰ اور نبوت سے غافل وجاہل رہنا اس سبب سے ہے کہ) یہ لوگ صرف دنیوی زندگانی کی ظاہر دحالت اکوجانتے ہیں اور یہ لوگ آخرت سے رباکل ہی ، ہے خبر ہیں دکہ دہاں کیا ہوگا ، اس لئے ان کو دنیا ہیں مذاسباب عذاب سے بچنے کی فکر ہے مذاسباب سے بینے کی فکر ہے مذاسباب سے بینے کی فکر ہے مذاسباب سے بینے کی فکر ہے مذاسباب عذاب سے بینے کی فکر ہے مذاسباب عذاب سے بینے کی فکر ہے مذاسباب عذاب ایکان اور عمل صالے کی تلاش ہے)۔

محارف ومسائل

تصه نزول سورت اسورة عنكبوت اس آبيت يرختم بهوني سيحس بين حق تعالى نے اپنے داسته روم اورفادس کی جنگ میں جہا دومجا ہرہ کرنے والوں کے لئے لینے راستے کھول دینے اوران کے لے مقاصد میں کا میابی کی بشارت دی تھی سورہ روم کی ابتدارجس قصتہ سے ہوئی ہے وہ اسى نصرت البيدكا أيك مظرب ءاس سورت مي جو واقعه روم اور فأرس كى جنگ كاندكورى یہ دونوں کفارہی تھے،ان میں سے کسی کی فتح کسی کی شکست بطاہراسسلام اورمسلما نوں کے اے کوئی دلیے می چیز نہیں ، مگران دونوں کفار میں اہلِ فارس شرکین آتش برست تھے اور روم ونصارای ابل کتاب۔ اور ظاہرہے کہ دونول قسم کے کفار میں اہل کتاب سلانوں سے بتاً قرمیب ہیں کیونکہ مہمت سے اصول رہی آخرت برایان رسالت اور دسی برایمان ، ان کے ساتھ قدر مشترک ہے۔ اسی قدر مشترک سے رسول الند صلی المتدعلیہ ولم نے اپنے آگ متوب مین کا لیا جوروم کے بادشاہ کودعوت اسلام دینے کے لئے بھیجا تھا کہ تعا تو این اس کاسبب بناکہ اسخصرت سلی الشرعلیہ وسلم کے قیام مکر مرکب کے زمانہ میں فارس نے ر وم برحلہ کیا۔ حافظ ابن تجر دغیرہ کے قول کے مطابق ان کی بیجنگ ملک شام کے معت ا ا ذر عات اور بھڑی کے درمیان واقع ہوئی ۔اس جنگ کے دُوران میں شرکس کہ پی جاہتے تھے کہ فارس غالب آجائے، کیونکہ وہ بھی شرک وبت پرستی میں ان کے متر یک نخصے۔ اور مسلمان میرجائے تھے کہ دوم غالب آئیں، کیونکہ وہ دین و مزہمب کے اعتبارسے اسسلام کے ترب تھے۔ تمرم واید که اس وقت فارس روم برغالب آگتے ، بیبال تک که قسطنطنیہ مجى فيح كرليا، اوروہاں اپن عبادت كے لئے أيك آتكدہ تعمركيا۔ اوريوستے سڑی برویز کی آخری فتے تھی، اس کے بعداس کا دوال مشروع ہوا، اور پھرسلالول کے المحقول اسكاخاءته بولداد قرطبي

سورة روم ١٠٠٠ ٤ رث القرآن جلدمث اس دا قعه میزمشرکیین مکرنے خوسشیاں منائیں اورسلما نوں کو عار دلانی کرتم جس کوجیا ہے تھےوہ ہارگیا، اورجیساکہ روم اہل کتاب کو بمقابلة فارس شکست ہوتی ہمارے مقابلہ میں تم کو شكست بوكى اس مسلمانوں كورىخ بولدا بنجب رير، ابن إلى حاتم) حسران میں سورہ روم کی ابتدائی آیتیں اسی دا تعہ کے متعلق نازل ہوئیں جن میں بينين كونى اوربشارت دى كتى ہے كہ جندسال بعد كوروم فارس برغالب آجائيں كے۔ حصزت صدبق أكروا نےجب يه آيا كي سنين تو كمرك اطرا ف اورمشركس كے مجامع اوربازارس حاكراس كااعلان كياكه تحالي خوش مونے كاكوتى موقع نهيس حيدسال بين بھرردتم فارش برغالب آجائیں گے دمشرکین کہ میں سے آئی میں خلف نے مقابلہ کیا اور كهن لكا كديمة ججوط بولتے ہو، ايسانهيں ہوسكتا۔ صديق اكبر خنے فرما ياكہ خدا كے دشمرات جھوٹا ہے، اور میں تواس واقعہ بر مترط کرنے کو تبار ہوں کہ اگر تین سال کے اندر روم غالب المؤتودين وشنيان يتمبين وتكااوروه عالب الكية تودين ادشنيان تبيني نيابريتي رميعا القاركا تعاكمون قت قارم نہیں تھا) یہ کہہ کرصد ای اکرآ مخصزت صلی الشرعلیہ وسلم کی خدمت میں حاصر ہوتے ،اورا^س واقعه كاذكركياء آمخصرت صلى التدعليه وسلم في فرماياكمين في توتين سال كى مرست تعتن نہیں کی تھی کیونکرون رآن میل سے نے لفظ بضئے سِنین مذکورہ، جس کا اطلاق تین سے نوسال تک ہوسکتا ہے، تم جاؤ اورجس سے بیدمعا ہرہ ہواہے اس سے کمدوکس دس اوستیوں سے بجائے تنوکی مشرط کرتا ہول، مگر مترت تین سال سے بجائے نوسال اور اوراً في بن خلف اس نقرمعا بره برراصي بوكيلز ابن جرمريب نده عن مجا بدورو التر ندى عن إلى سعيد الخدري مو مينارين مكرم الأسلمي بتغيرليسير) روایات صدمیت سے معلوم بوتا ہے کہ بدوا قعہ بحرت سے یا کے سال پہلے بیش آیا کا اور بواے سات سال بونے برغ و قابر رکے وقت روم دوبارہ فارس برغالب آگتے اس دقت اُئی بین خلف مرحیکا تھا۔ صدیق اکبروز نے اس کے وار توں سے اپنی مشرط کے مطابق تناواوتشنیون کامطالبه کیا، انصول نے اوسطنیال دے دیں۔ بعص روایات میں ہے کہ ہجرت سے سیلے اکی من خلف کوجب انرلیشہ ہواکہ او بھی شاید بچرت کریے جلے جائیں تواس نے کہاکہ میں آپ کواس وقت تک رہ جیوٹو واگھ بتل آب کوئی کفیل بیش رز کرس، کرمیجا دمختن تک روم غالب رزان تونیا اوسنيان وه مجے ديدے كا حصرت صريق اكبرت اينصاحبرادعيدالر عن كواس كفيل بنادي

جب مشرط کے مطابق صدیق اکر و جیت کتے اور تناوا و نشنیاں اُن کو ہاتھ آئیں تو وہ ہے کردسول الندصلی اللہ علیہ و کم کی خدمت میں حاصر ہوتے۔ آت نے فرما یاکہ ان اوستنيول كوصدقه كرووراورابوليلي، ابن عساكرس حصرت برارنبي عادب كي روايت اس میں برالفاظ منقول میں هذا السَّحْتُ تَصَدَّ فَي به، برتوحرام ہے اس كوصروت

تمارلین بخواازروس نصوص شرآن حرام قطعی ہے۔ ہجرت مربیۃ کے بعد جں دقت منزا بحرام کی گئی اسی کے ساتھ قمار بھی حرام کر دیا گیا، اور ل استینطن میں میسراور ازلام توسے دقمار ، بی کی صورتیں ہیں جن کو حرام قرار دیا گیا ہو۔

اور میر دوطر فدلین دمین اور ہارجیت کی مترط چوحصرت صدین اکبر رصتی الشرعنہ نے آئی بن خلف کے سابھ مھرانی ہے بھی ایک قسم کا بتوا اور قبار ہی تھا، مگر میروا تعدیجے سے پہلے کا ہے جب قمار حرام نہیں تھا۔اس لئے اس واقعہ بیں جب بیہ قبار کامال آنخصریت

لى الشرعلية ولم كے ياس لاياكيا توكوتى مال حرام تہيں تھا۔

اس کے بیاں بیسوال بیدا ہوتا ہے کہ آئے نے اس کے صدقہ کر دینے کا حکے کہ فرمایا ،خصوصاً دوسری روایت میں جواس کے متعلق لفظ سنحیت آما ہے جس کے منت ے ہیں یہ کیسے درست بوگا ؟اس کا جواب حصرات فقتمار نے یہ دیا ہے کہ بیال أكرج اس وقت حلال تقامكر تمارك زربعيراكتساب مال اس وقت بهي رسول المنطا عليهو للم كوليسند مذبحاء اس لتے صديق اكبري كي شاك كے مناسب مدسجھ كران كوصدة كرنے كا يحمد دیا۔ اور بیا بسا ہی ہے كہ جيسے متراب حلال ہونے كے زمانے میں رسول لنڈ

صلى الشرعليه وسلم اورصد لق اكبرين في سجعي سيتعال نهيس فرماني _

ادر لفظ صحبت جو مجعن روایات میں آیاہے اوّل تو اس روایت کو محدثین نے منح تسلیم بہن کیا، اور اگر منتح بھی ماناجائے تو یہ لفظ بھی کئی معنی میں ستعال ہوتا ہے۔ جیسے بیعنے مزام مشہورہے، دوسرے معنی اس کے مروہ دنا ایسندبیرہ کے بھی آتے ہی۔ جيسا أيك حدميث مين رسول المدصلي الشرعلية ولم نے فرما يا كتب التحقيم شيخت التحت التحقيم مجھے لگاتے والے کی کمانی سخت ہے۔ بہاں جہور فقتار نے اس کے معنی تا ایسند برہ اور مکروہ کے لئے ہیں۔ اور امام راغب اصفہانی نے مفرد آت القرآن میں اور ابن اثیر نے بہاتہ میں مفظ سخت کے بیر مختلف معانی محاورات وب اوراحادیث نبویہ سے تابت سے ہیں۔

٢١,

معنوات فقمار کام کلام اس لئے بھی واجب القبول ہے کہ اگر واقع میں یہ مال حراکا تھا تو مترعی اصول کے مطابق یہ مال اسٹی خص کو واپس کر الازم کھا جس سے لیا تمیا ہے ' مال حرام کوصر قد کرنے کا حکم صرت اُن صور تول میں ہو تاہے جبکہ اس کا مالک معلوم ہو ایاس کو پہنچانا مشکل ہو، یا اس کو واپس کرنے میں کوئی اور مترعی قباحت ہو۔ والتد سے ان وقعالیٰ اعلم یو میڈی ڈیکٹر کی گئے ہے 'ا کہ ہو ہو تو می اسٹرے ، یعنی اس روز رجبکہ روم فارس ہر غالب آئیں سے مسلمان خوش ہوں سے المنڈ کی مر دسے نظیم عبارت کے اعتبار سے ظا

غالب آئیں گئے اسمیان خوش ہوں گے اللہ کی مردسے ۔ نظیم عبارت کے اعتبار سے ظام یہ ہے کہ بیہاں نصراور مردسے ردمیوں کی نصرت وامداد ہے ، دہ اگر جو کا فریخے گردو سے رحمقابل کی فر کے مقابل کا فرول کے اعتبار سے تفریس ملکے تھے ، اس لئے ان کی نصرت اللہ تعالیٰ کی فر سے ہونا کوئی المرستیور نہیں خصوصًا جبکہ ان کی نصرت سے سلما تول کو بھی خوشی کے ساتھ اور کھا دیے مقابلہ میں ان کی جیت بھی ہو۔

ادویہ بھی احتمال ہے کہ نصرت سے مراد بیہاں مسلمانوں کی نصرت ہوجود و دجہتے ہوئے دوجہتے ہوئے دورجہتے ہوئے در میوں کے غلبہ کو قرآن کی سچائی اوراسسلام کی حقانیت کی دلیل بناکر میش کیا تھا ، اس لئے رومیوں کے غلبہ درحقیقت مسلما نوں کی تھی ، دومیری وجہ نصرت سلمانین کی ریجھی ہوسکتی ہے کہ اس زمانے میں کفار کی بڑی طابقی مجھی ، دومیری وجہ نصرت محقیں ۔ النہ تعالیٰ نے ان کو باہم کھڑاکر دونوں کو کر دورکر دیا ،

إواتن المسلانون كي فتوحات كاليش خيم بني دكنوا في الروح)

رف القرآن حليه سوره روم ۱ سن ۱ فرمایا ہے ہیں میں لفظ نظا ہراکو تنزین کے ساتھ بھرہ لاکر قوا عدع بیت کی روسے اس طرف اش^ا ہے کہ درحقیقت یہ لوگ حیات طاہر کو بھی پورانہ میں جانتے، اس کے صرف ایک ری خوجا میں دوسرے رُخ سے غافل میں اور آخرت سے باککل ہی غافل وجایل ہیں۔ دنیا کے فنون معاش اگر آخرت ہے | قرآن کریم اقوام دنیا کے عبر تناک قیصتوں سے بھرا ہواہے ، غفلت کے ساتھ عصل ہول تو دہ احد مکاسب دنیا اور عیش دعشرت کے سامان جمع کرنے کوتی دانشندی نہیں میں بڑے نام آور تھے، کھران کا انجام برجھی دنیا ہی میں توگوں کے سامنے آیا، اور آخرت کا دائمی عذاب ان کا حصتہ بنا، اس لئے ان کو کوئی سمجھدار آدمى عقلاريا عمار بنيس كبرسكة انسوس بكرة جكل عقل ويحست كاساراا مخصاراسي ميس سجھ لیا گیا ہے کہ جو تنخص زیا رہ سے زیا رہ مال جمع کرے اور اپنی عیش وعشرت کا سا مان ب سے بہتر بنانے وہ سے بڑا عقلند کہلاتا ہے ، اگر چے اخلاق انسانیت سے بھی کورا ہو عقل و مترع كى روسے اس كوعقلن كہنا عقل كى توبين ہے ، قرآن كريم كى زبان ميں عقل والے صرف وہ لوگ ہیں جوالند کواورآخرت کو پہائیں، اس کے لئے عمل کرس۔ دنیا کی صرور مات کو بقدرصرودت ركهين، ايني تدكي كامقصرية بنائين آيت قرآن إنَّ في تَا يَتِ الْأُولِي الْكَ نْبَابِ الَّذِنْ يَنْ يَنْ كُورِينَ اللَّهَ قِيَامًا وَقَعُورَا الآية كايبي مفهوم ب-أنفسهم تعدما خكق الله أنست کیا دہیان نہیں کرتے اینے جی یں کرانٹرنے جو بنائے ، آسمان ان سے زیادہ تھے زور میں اور جوتا انخول نے زین 빞

معارت الغران مبدشتم المراكم المركم ا

خوالصة تغسير

کیارد لائل و قرع آخرت کے مین کر بھی ان کی نظر دنیا ہی پر مقصور رہی اور)
ایخوں نے اپنے دلوں میں بیغور نہیں کیا کہ انٹر تعالیٰ نے آسانوں اور زمین کواور ان
پیروں کوجوان کے در میان میں میں کسی بحکت ہی سے اور آیک میعا دمعیتی رہا کہ النے پیراکیا ہے دجیسا اس نے آیات میں خبر دی ہے کہ ان بحکوں میں سے آیک بحکت جزار در میان کے بیراکیا ہے دجیسا اس نے آیات میں خبر دی ہے کہ ان بحکوں میں سے آیک بحکت جزار در میان عقل سے اور ان کا دور عوج نقل یعنی قت آن سے اور اس نقل کاصد ق صفت اعجاز اور در میں کیان عقل سے اور ان کا دور عوج نقل یعنی قت آن سے اور اس نقل کاصد ق صفت اعجاز اور در میں کیا اور ان بہت سے آدمی اپنے رہ کے ملئے کے مشکر ہیں کہیا یہ لوگ و کہی گھرسے مہمین نکیلے اور ان بہت سے آدمی اپنے رہ کے ملئے کے مشکر ہیں کہیا یہ لوگ و کہی گھرسے مہمین نکیلے اور ان نہیں میں چلے بھر نے رہ نہیں ،جس میں دیکھتے بھالتے کہ جو دمشکر اور کسی کہا اور ان کے اور ان میں ان کا داخری ان اخری ان ایک اور ان کی یہ تھی کہ اور ان کو ان کے ان کو آب و کھا اور جست ان کی یہ تھی کہ اور ان کو ان کے سیخیر مجز نے لئے دو ان کو ان کو ان کو ان کو ان کے سیخیر مجز نے لئے دو ان کو ا

30-0-

ZYD

معارت القرآن جلد

سورة روم ۱۰۱۰

اظم کرتا وہ تو نودہی اپنی جانوں پرظم کردہے تھے دکہ انکارسپنیروں کا کرکے متحق ہلا کت ہوئے یہ توان کی حالت دنیا میں ہوئی اور) پھر دا خرت میں الیے وگوں کا انجام جفوں نے دایسا ، براکام دیعی رسل کا انکار) کمیا تھا بڑاہی ہوا دیحق اس دج سے کہ انحفول نے اللہ تعالیٰ کی آینوں کو دینی احکام داخبار کو) جھٹلایا تھا اور دیکندیب سے بڑھ کر ہے کہ ان کی ہنسی اڑل تے ۔ تھے دوہ انجام مزائے دوز خ ہے) -

معارف ومسائل

مذکورالصدر دونوں آیٹی مضمون سابق کا تنکلہ ادراس پر بطور شہادت کے ہیں کہ یہ لوگ دنیا کی چندروزہ جبک و مک اور فائی لذتوں میں لیے مست ہو گئے کہ اس کارخا کی حقیقت اورا منجام سے باکلی غافل ہو گئے، اگر یہ خود بھی ذراا پنے دل میں سوچتے اور خور کرتے توان پر ہے راز کا تناست منکشف ہو جا الک خالق کا کنات نے یہ آسمان وزمین ادران دو فوں کے درمیان کی مخلوقات کو فھنول اور بریکار پیدا نہیں کیا۔ ان کی تخلیق کا کوئی بڑا ان کے میداکورٹ میں کہ اللہ تعالیٰ کی ان بے شار نعمتوں کے ذرائعے مصدا ور بڑی محمت ہی اور درہ میں ہے کہ لوگ اللہ تعالیٰ کی ان بے شار نعمتوں کے ذرائعے راضی ہوتا ہے کن سے ناراض، تاکہ اس کی رضاج تی کا سامان کریں، اور ناراضی کے کاموں کی اور نہ بھی طام رہے کہ ان وو فوں قسموں کے کاموں کی کی چرائے و منزار بھی ہونا مزددی ہے، ورمذ نیک و مدار بھی ہونا مزددی ہے، ورمذ نیک و مدار بھی ہونا مزدی کے معمول میں کہ ہوا متا کہ ہو دار اور شرائے بھی ہونا مزدی کے معمول میں ہونا میں کہ ہونا مزدی کی ہوئے میں رکھنا عدل وا نصاف کے طلاف ہے ۔ اور یہ مجمول میں ہونا میں کہ ہونا میں انسان کو اس کے اچھے یا بڑے ہے جمل کی پورک جزار می بیشہ آدمی خوش خرسم اور کی محمول میں ہونا ہوں اور بڑے کا موں سے پر بہیس رکہ نے دالا مصائب اور تنگی کا شکاد درکھا جا آتا ہے، اور بڑے میا موں سے پر بہیس رکہ نے دالا مصائب اور تنگی کا شکاد درکھا جا آتا ہے، اور بڑے کا موں سے پر بہیس رکہ نے دالا مصائب اور تنگی کا شکاد درکھا جا آتا ہے، اور بڑے کا موں سے پر بہیس رکہ نے دالا مصائب اور تنگی کا شکاد درکھا جا آتا ہے۔

اس کے صروری ہے کہ کوئی ایسا وقت آئے جب یہ سب کا رضا مذختم ہوا دراچھے برے اعمال کا حساب ہو،ادرا ان پر جزار دہمزام تب ہو،جس کا نام قیامت اورآخرت ہے۔

خلاصہ یہ ہے کہ یہ لوگ آگر غور و فکر کرتے تو سہی آسمان در میں اوران کی مخلوقات
اس کی شہا دت ہے دستیں کہ یہ چیز س دائمی ہنیں، کچھ مزت کے لئے ہیں، اوران کے بعد دوسراعالم آنے والا ہے جو دائمی ہوگا۔ تم کورہ درآئیوں میں سے پہلی آئیت کا یہی حال ہی اوران کے ایس کر تراعالم آنے والا ہے جو دائمی ہوگا۔ تم کورہ درآئیوں میں سے پہلی آئیت کا یہی حال ہی اور آئی آفشہ مے الآئیت ، یہ صفون تو ایک عقلی استدلال کا ہے۔ اگلی آئیت ا

(T)

سورة روم ۱۳۰ ۱۹

میں دنیای محسوسات دمشا ہوات اور تحریات کو اس کی شہما دے میں بیش کیا گیاہے، اوراہل کھ کوخطاب کرکے فرما یاہے کہ:

حارف القرآن علدست

آقد کر گیا ہے۔ اور الک کے اسلام کو ایک ایسی زمین کے باشندے ہیں جہاں مزراعت ہے دوسنعت دہ سجارت کے مواقع اور دہند و بالاحسین تعمیرات، مگر ملک شام اور مین کے سفران دگوں کو لینے تجارتی مقاصد کے لئے بیش آتے ہیں کیاان سفروں میں ان دگوں نے لینے سے بہلی اقوام دنیا کے اسجام کا مشاہرہ ہمیں کیا جکو اللہ تعالیٰ نے زمین میں بڑے بڑے بڑے تھر فات کرنے کا سلیقہ دیا تھا کہ زمین کو کھودکراس سے بان نکا لٹا ادراس سے باغات اور کھیں توں کو سیراب کرنا اور چھے ہوئے معاون سے سونا چاندی اور دو مری قسم کی مصنوعات تمیارکرنا باغات اور کھی توں کو سیراب کرنا اور چھے ہوئے معاون سے سونا چاندی اور دو مری قسم کی مصنوعات تمیارکرنا ان کا وظیفہ ترزیدگی تھا اور یہ اپنے فرمانے کی متحدان قو میں تجھی جاتی تھیں ۔ مگرا تھوں نے اسی ان کا وظیفہ ترزیدگی تھا اور یہ اپنے فرمانے کی متحدان قو میں تجھی جاتی تھیں ۔ مگرا تھوں نے اسی مادی اور فائی عیش دعشرت میں مست ہو کر اللہ کو اور آخرت کو کھلادیا ۔ اللہ تعالیٰ نے مادی اور والا نے کے لئے اپنے سینی میں میں ہوئے ۔ جس بران کی بستیوں کے ویران ان کی دور کی میں اس مذا رات اس وقت تک سی میں ان برانٹر کی طرف دے رہے ہیں ۔ آیت کے آخر میں فرمایا کہ خود این جانوں برطلم کیا ہے کہ اسباب عذا ب جو کے دی ظلم ہوا ہے یا انتھوں نے خود ہی کہ کہ اسباب عذا ب جو کے لئے ۔

7

اس کے برنے کے پیچھے ، اور اسی طرح تم بکالے جادگے خالصة نفسار الشرتعالى خلق كواول ماريجى بيراكرتاب بيروسى دوباره بجى اس كوبيراكرك محرد سیدا ہونے کے بعد) اس کے یاس دحساب کتاب کے لئے اور سے اور کے اور جس روز قیامت قائم ہوگی رجس میں اعادہ مذکور ہونے دالاہے) اس روز مجرم راجی کافر) لوگ رباز برس کے وقت احرت زوہ رہ جائیں گے رایعیٰ کوئی معقول بات ان سے مزمن ترکی ادران کے رتراف ہوئے) متر یکول میں سے رجن کومٹر یکے عبادت بناتے تھے) ان کا كونى سفارشى منه وگا اور زاس وقت خور) يه لوگ رنجى اينے مشريكوں ميں سے منكر سوجانگے ذكرة والشررينا مما كنتا ممشركيتين) ادرجس روزقيامت قائم بهركي اس روز زعلاده واقعر نزكوره كے أيك وا تعرب بھى بوگاكم مختلف طرلقوں كے) سب آدمى عُراعُدا بوجائں كے

L

ZPA

سورهٔ دوم ۱۳۰ ۱۹

جی جولوگ ایمان لات سختے اور انفوں نے اچھے کام کے تھے وہ تور بہت کے مین مسرور میول کے ، اور جن لوگوں نے کفر کیا تھا ، اور ہماری آیتوں کو اور آخرت کے میث تنے کو پھٹلایا تھا وہ لوگ عذاب میں گرفتار ہوں کے رسمعنی ہیں جدا جدا ہونے کے ہجبہ ا یمان دعمل صالح کی فصنیلت تم کومعلوم ہوگئی سوئم انٹرکی تسبیح را عقاراً و قلبٌ بهي حين بين ايمان آكيا اورقولا ولسانًا بهي جن مين احتدار وديكرا ذكار آسكة اورعملا واركانًا بهى جن مين تيام عبادتين عمومًا اورنما زخصوصًا آسيس ،غرض تم الله كي تبيع بروقت كي كرو داورخصوصًا، شام كے دقت اور حتى كے وقت اور دانٹر كى تسبيح كرنے كا جو كلى ہوا ہے تو وہ واقع میں اس کاستحق بھی ہے، کیونکہ اتمام آسانوں اورزمین میں اسی کی حد ہوتی ہو دلعنى آسمان مين فرشتے اور زمين ميں بعض خهت بيار آادر لعص اصطرار آاس كى حدوثنا ركتے ين - كقوله تعالى قد إن مِن شَيْ إِلَّهُ يُسَبِّحُ بِحَدْنِ إِن جِب وه ايسا محود الصفات كالى الزات ہے تو تم کو بھی صروراس کی تبیعے کرنی جاہتے) اور بعد زوال ربھی سیے کیا کرد) اورظرك وقت ربهى تسبيح كياكروكه بيراوقات تحبة دنعمت وزيادت ظهورآثار قدرت ہے ہیں ان میں تحدید سب کی مناسب ہی بالخصوص نماز کے لئے میں اوقات مقریبیں ہینا جو متسابين مغرب وعشارة كتى اورغشى مين ظراورعصرد وتول داخل يخفي يمرظر صراحة ندكورى، اس كے صرف عصر وادره كئ اور صبح بھى تصريحًا مذكور سے داوراس كو دو باره سداکرناکیا مشکل ہے، کیونکہ اس کی ایسی قدرت ہوکہ) وہ جا نداد کو ہے جان سے با ہرلاتا ہو ادربے جان کو جان دارسے باہر لا تاہے زمثلاً نطفرا وربیضہ سے انسان اور بحیب اور انسان اور سرندہ سے نطقہ اور سیصنہ) اور زمین کواس کے مردہ زلینی خت کے ہور زندہ ربین تازہ دشاداب کرتا ہے اور اسی طرح تم لوگ رقیامت کے روز) قبرول سے "کالے حاق کے د

محارف ومسائل

فَهُ مُ مُ مِنْ مَنْ مَدَ مَنَةِ يَحْتَبَرُونَ ، يُجُرُّونَ ، جور سے شتن ہے ، جس کے معنی میرور اورخوشی کے ہیں۔ اوراس لفظ کے عوم میں ہرطرے کا مردر داخل ہے جو نعاتے جنت سے اہل جنت کو حاسل ہوگا۔ قرآن کر کیم میں اس کو بہاں بھی عام رکھا گیاہے۔ اس طرح دوسری جگہ یہ ادشا دہے فکر تعدیم نقش میں آئٹے فی کھنٹے میٹ فکر تا تعدیم کسی خص کو دنیا میں معلوم نہیں کہ اس کے لئے جنت میں آنکھول کی ٹھنٹرک زاور راحت وسرا

11

کے کیا کیا سامان مجمع ہیں۔ بھن مفترین تے جو خاص خاص سرور کی چیزوں کواس آبیت کے بخت میں ذکر کیا ہے وہ سب اسی اجمال میں داخل ہیں۔

فَسُبُخْقَ اللّهِ عِنْ تَعْمُونَ قَرِينَ تَصْبُحُونَ وَحِينَ تَصْبُحُونَ وَلَكُ الْحَمَّلُ فِي الشَّمُونِ وَوَيَ الْلَاَمُ صِورَ ہِے، اس كا فعل عن وون كو يہ اللّهُ مُعْمَدُ اللّهِ مِعْدر ہے، اس كا فعل عن وون كو يہ بَحْ اللّهُ مُعْمَدُ اللّهُ مُعْمَدُ اللّهُ مُعْمَدُ اللّهُ مُعْمَدُ اللّهُ مُعْمَدُ اللّهِ مَعْمَد اللّهِ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ الللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ اللّهُ

ادر ترتیب بیان میں جس طرح شام کوضی سے مقدم کر کے بیان کیا گیاہے، اسی
طرح دن کے آخری حصہ کوظہر برمقدم کر کے بیان کیا گیا ہے، شام بینی رات کو معتدم
کرنے کی وجہ یہ بھی ہے کہ اسلامی تایخ میں رات مقدم ہوتی ہے، اور تایخ غورب
آفناب سے بدلتی ہے۔ اور عشی بینی وقت عصر کوظر سے مقدم کرنے کی ایک وجہ یہ بھی
ہوسکتی ہے کہ عصر کا وقت عمومًا کا روبار کی مشخولست کا وقدت ہوتا ہے، اس میں کوئی دعا۔
تسبیح یا نماذ عادة مشکل ہے۔ اس لئے قرآن کر ہم میں صلاح و شطی جس کی تفسیر جہود
کے نز دیک نماذ عصر ہے، اس کی خصوصی تاکیر آئی ہے۔ تھا فی گلوا علی المصلو آئے است و تو

سورة روم ۲۰: ۵۲ حارب القرآن جلدسشير جین تنظرہ ن میں نماز ظرکا ذکر صریح موجود ہے۔اب صرف ایک نماز عشار رسی ،اس کے بوت من دوسرى آيت كاجله ارشا دفرما يا مِنْ بَعْنِ صَلاَةِ الْعِشَاءِ -ادر حصارت حسن بصری نے فریا یا کہ حیثن محسول میں شازمغرب و عشارد ونول آئی۔ ت عن ايرآيت حضرت ابران يم خليل الشرعلية لصالوة والسلام كي وه دعارب جن كى وجبس قرآن كرنم نے ان كو و فارعبد كا خطاب دياہے ، ارشاد فرما يا وَ إِسْرُهِ فِيمِ اللَّهِ فِي مَصْرِت ابرا بهيم عليه السّلام بيكلمات صبح شعم يُرْهِ الرّبِي تح جيساكدا ساندرصحوكے سائق حصرت معاذبن انس رضی الندعندسے روایت ہے ك مصرت ابرابهم عليله لسلام كى تعرليت وفاءع بدسے كرنے كاسبىب آن كى يە دُعارىخى -اورا بوداؤد، طرانی، ابن سنی وغیرہ نے حصرت ابن عباس سے روایت کیا ہے ک رسول الشرصلى الشرعليه وللم نے فتستجان الله حِيْنَ ثُمَنسُونَ وَحِيْنَ تُصْبِحُونَ وَلَهُ الْحَدْثُ فِي السَّلَوْتِ وَالْآرْمِضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ كُنْلَهِ رُوْنَ ، يُخْرِجُ الْحَقّ بن النبيَّت ويُخرجُ النبيّت مِن الْحِيِّ وَيُحَى الْاَرْضَ بَعْنَ مَوْتِهَا وَكَ ذَلِكَ تُختر جُونَ ،ان دوآ يتول مح متعلق فرما يا كرحس شخص نے صبح كوري كلمات ير صلح تودك ج میں اس کے عمل میں جو کوتا ہی ہوگی وہ ان کلمات کی برکت سے پوری کر دی جانے گی، اور جی نے تتا کے وقت میں کلیات پڑھ لئے تواس کے رات کے اعمال کی کوتا ہی اس کے ذریعے ادری کردی جاسے کی دروح) وَمِنْ الْمِنْ وراس کی نشا بیوں میں سے ہے کہ تم کو بنایا می سے بھر اب تم تَيْثُ وَنَ ﴿ وَمِنَ الْمِتِهِ أَنْ تَحَلَّقَ لَكُمْ مِنَ آنَفْسَ پس بھیلے پڑے ، ادراس کی نشا تیوں میں ہے یہ کہ بنا دیتے تھا اے واسطے تھا ری قد واحالتكنوا إلها وتجعل بينكم مودة والمحتلف جوڑے کہ جین سے رہوان کے یاس اور رکھا تمہائے بھے میں بیاداور مرانی، لايات لِقَوْمِ "يَتَفَكَّرُونَ ﴿ وَمِنْ أَيْتِهِ حَالَا اس بی بہت ہے کی باہمی ہیں ان کیلتے جود صیان کرتے ہیں ، اور اس کی نشا نیوں میں ہے۔

سورة روم . ١٠ ب قَالَامُ مِن وَانْحِيلًا فَ ٱلْسِنَيْكُمْ وَٱلْوَابَ سان اور زین کا بنانا اور طرح طرح کی بولیاں عمادی اور رنگ عَ فِي وَلِكَ لَا لِيتِ لِلَعْلِمِينَ ﴿ وَمِنَ الْمِيتِ مَنَامُكُمْ اس میں بہمت نشانیاں میں سمجنے والول کو ، اور اس کی نشانیوں میں ہے مخفارا المين والنهاي وابتغار كالمتفاع كمرض قضلة إن في ذيك القوم يستمعون ١٠٥٠ من البيه يريكم البر سے ہیں ان کو جو سنتے ہیں ، اور اس کی نشاینوں سے ہے سکر دکھلاتا ہوتم کو بھل فَا وَطَمْعًا وَيُنْوِلُ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَيْحَى بِدَ الرَّيْضِ وراميد كے لئے اور أتارتا ہے آسان سے بانى محر زندہ كرتا بواس زين كو المراق في ذيك الالت لقة الم يَعْقِلُون ١٠٠ وَمِنْ رہے ہے اس میں بہت ہے ہی ان کے لئے ہو سوچتے ہی ، ادراس کی نشانیوں سے یہ ہو کہ کھڑا ہے آسمان اور زین اس کے حکے سے میرجب پکارسگائم کو عَوَةً عَنَا الْمَرْضِ الْمُرْضِ الْمُ إِذَا آنْتُرْتَغُوجُونَ @ وَلَهُ مَنْ ایک بار زمین میں سے اسی وقت تم مکل پر و کے ، التمالت قالر ترض كالم تنفيتون و وهو الآن الی ہے آسمان اور زین میں سب اس کے کھے تابع ہیں ، اور وہی ہے ج نَ كُالْخَلَقَ ثُمَّ يُعِينُ كُو هُو آهُونَ عَلَيْهُ وَلَهُ الْمِثَارُ بهی بار بناتا به بحراس کو دُبرات گا اور وه آسان ب اس پر اور اس کی شان لإفي التكماني وَالْكَرْضَ وَهُوَ الْعَن يُوْ الْعَن يَنْ الْحَالِينِ فَالْكُونِ فَي الْتُعَالِقِ فَ سے اویرے آسان اور زین یں اور وہی ہر زبر دست حکوں والا۔

7 25 2

IL

الملك المرة دوم ١٠٠٠

معارف القرآن جلد شتم

خارصة تفسير

اوراسی کی دقدرت کی انشانیول میں سے ایک بدرامر) ہے کہ متم کومٹی سے بیدا کیا دیا تو اسطرے کہ آدم علیہ السلام مٹی سے بیدا ہوتے جشتل سخے تمام ڈرسٹ پرا دریا اس طرح كونطفه كى اصل غذله اوراس كى اصل عناصر بين جن بين جزد غالب بنى سے) مجر حقوليے ہی دوز بعد دکیا ہواکہ ، بم آ دمی بن کر دزمین پر) پھیلے ہوئے پھرتے دنظراتے ، ہوا دراسی کی رقدرت کی نشانیوں میں سے یہ دامر، ہے کہ اس نے تھارے دفائدے کے) واسطے تھاری جنس کی بیدیاں بنائیں داور وہ فائرہ یہ ہےکہ تاکہ تم کوان کے پاس آرام ملے اور تم میا بی بی میں مجبت اور میرر دی سیراکی، اس دامر مذکور) میں ربھی) ان لوگوں کے لئے زقدرت کی نشانیاں ہیں جوفکرسے کام لیتے ہیں رئیونکہ استدلال کے لئے فکر کی صرورت ہوا ورنشانیاں جمع اس لتے فرما یا کدا مر مذکود کئی امر مرشته اس اوراسی کی رقدرت کی نشانیول میں۔ اسمان اورزمین کابنانا ہے اور تھا انے لب وابجہ اور رنگتوں کا الگ الگ ہونا ہے۔ رلب وابحدے مرادیا اخات ہوں یا آواز وطرز گفت کو) اس رامر مذکور) میں ریجی انتمارد کے لئے زقدرت کی نشانیاں ہیں رمہاں بھی صیغة جمع لانے کی وہی توجیبہ مزرہو تی ہ اوراسی کی رقدرت کی نشانیوں میں سے محقارا سونا لیٹنا ہے رات میں اور دن میں رگورا موزیاده اور دن کو کم بنو) اوراس کی روزی کو تحصارا تلاش کرنا ہے ردن کو زیا ده اور را کو کم ، اسی لتے دوسری آیات میں نیند کورات کے ساتھ اور تلاشِ معاش کو دن کے سکتھ خاص کرکے بیان کیا گیاہے) اس دامر مذکور) میں ربھی) ان لوگوں کے لئے زقدرت کی) نشانیاں ہیں جو ردلیل کو توجہ ہے) سنتے ہیں اوراسی کی رقدرت کی نشانیوں میں سے یہ رامر) ہے کہ وہ تم کو ریادش کے وقت، بجلی رجیسی ہوئی) دکھلاتا ہے جس سے راسے گرنے کا کا در دی ہوتا ہے اور داس سے بارش کی المید بھی ہوتی ہے اور وہی آسمان یانی برساتاہے پھراس سے زمین کواس کے مروہ رتعنی خشک) موجاتے کے بعد زندہ ربعی ترومازه) کردیتا ہے اس رام زکور) میں ربھی ان لوگوں کے لئے رقدرت کی) نشانیاں بیں جوعقل رتا فع رکھتے ہیں) اوراسی کی رقدرت کی نشانیوں میں سے یہ رامر) ہے کہ آسمان اور زمین اس کے حکم دلین ادادہ) سے قائم ہیں راس میں بیان ہو كمان كے القابكا، اور اور تفلُّ التَّماوْتِ وَالْاَرْضِ مِن وَكُرْتِهَا ان كَا ابتدارِ آفرنيش كا ادرية تمام نظام عالم جو مذكور بهوا ، يعنى تحقارا سلسله توالدو تناسل كاجارى بونااور

11

ZPP

رت القرآن جل

سورة روم ۳۰: ۲۲

بإسم از دواج بهونا اورآسمان وزمين كابهيئت كترامتيه موجود وقائم بهونا اورزبانون اورزع كالختلات اورنسل ونهارك انقلاب مين خاص صلحتون كابه زنااور بارس كانزول زمین میں سے بلادے کا تو تم سے بارگی شکل بڑو کے داور دو سرانطام شروع ہوجا ہے گا م ہے) اور داویر دلائلِ قدرت سے معلوم ہوگیا ہوگا کہ بجتنے دفرشتے اور سان وعیرہ) آسان اور زمین میں موجود میں سب اسی کے رملوک) ہیں (اور)سب اسی ی^تا په ربعی مسخ قدرت) بین اور راس ثبوت داختصاص قدرت کامله سه به نام ہوگیاکہ) وہی ہے جواوّل بارسیداکر تاہے رچنا کئے بیرمخاطبین کے نز دیک بھی وسی دوبارہ پرداکرے گا رجیسا کہ دلائل مذکورہ کے ساتھ خبرصادی کے م حلوم ہوا) اور میہ ز د و بارہ بیراکرنا) اس کے نز دیک (باعتبار مخاطبین کے با دی النظر کے عادت غالبہ ہیں ہے کہ کسی چیز کو پہلی مار کے بنانے سے دوسمری باربنا ناسہل تر ہوتا ا درآسان ا در زمین میں اسی کی شان دستے) اعلیٰ ہے رکینی مترآسانوں میں کوئی ایسا ٹر ے اور من زمین میں کقولہ تعالیٰ وَ لَهُ الْبِحِرِیٰآءِ فِی السَّمَانِ وَ اَلْاَرْضِ) اور وہ اٹرا)زیر دونوں ظاہر ہیں، کیں وہ اپنی قدرت سے اعارہ کرے گا، اوراس اعادہ تخلیق میں جتنا توقف الاربائے اس میں محکت دصلحت ہے ، اس قدرت و محکت کے فہوت کے بعد فی الحال داقع سن ہونے سے ابکارکرنا جہل ہے)۔

مكارف ومسأئل

سورہ دوم کے متروع میں ردم دفارس کی جنگ کا ایک واقع مشانے کے بعد منکرین اور کفارکی گراہی اور حق بات کے سفتے سمجنے سے بے پر وائی کا سبب ان کا صرف دنیا کی فائی زندگی کو اپنا مقصد حیات بنا لینا اور آخرت کی طوف کوئی توجہ مذوبیا قرار دیا گیا تھا ، اس کے بعد تیا مت میں دوبارہ زندہ ہونے اور حساب کتاب اور جزار وہزا کے داقع ہونے پر جوسطی نظر والوں کو استبعاد ہوسکتا ہے ، اس کا جو اب مختلف ہیا وہ ا سے دیا گیا ہے ، پہلے خود اپنے نفس میں خور و فکر کی بھر گرد دبیش میں گذرہے والی اقوام

ورة روم ١٣٠٠ ف القرآن حلد سے حالات اوران کے انجام میں نظر کرنے کی دعوت دی گئی ۔ پھرحی تعالیٰ کی قدرت کا الم مطلق كاذكر فرطايا جس مين اس كاكوني مهيم ومشركيب تهدين ان سب شوابد و دلائل كالازمي تتيجه نيكا ہے کہ ستی عبادت صرف اس کی میکا ذات کو قراد دیا جاسے ۔اوراس نے جوایئے انبیار کے ست قائم ہوئے اور تمام او لین وآخرین کے دویا رہ زندہ ہوکر حساب کتا ہے جینت یا دوزخ میں جانے کی خبردی ہے اس براہمان لایا جائے۔ نرکورالصدر آیات میں اس قدرت کامله اوراس کے ساتھ حکمت بالغہ کے چھے منطا ہرآیاتِ قدرت کے عنوان یان فرمائے گئے ہیں بحوالنڈ تعالیٰ کی ہے مثال قدرت و تحکمت کی نشانیاں ہیں۔ بهلى أبيت قدررت وانسان عبيه امثرت المخلوقات اورحاكم كائنات كومطي سراكر ناہے جواس دنیا کے عناصر تركیب سے زیادہ ادنی درجر کا عنصر ہے جس میں س وحرکت اور شعور وا دراک کا کوئی شمته نظر نہیں آتا، سیونکه مشہور جارعنا صرآگ پانی ہوا، اور منی، میں سے مٹی کے سواا ورسب عنا صرمیں کھے مذکھے حرکت توہے ہٹی اس سے بھی محروم ہے ، قدرت نے تخلیق انسانی کے لئے اس کومنتخب فرمایا۔ البیس کی مراہی کابسب يهى بناكداس نے آگ كے عنصر كومٹى سے الشرف داعلى سمجھ كر مكبر اختىياركيا ،اورب بن بھاکہ مترافت اور مزر کی خانق د مالک کے ہاتھ میں ہے وہ جن کوچاہے بڑا بناسکتا ہی۔ ادرانسان کی شخلیق کا ا دہ میٹی ہونا حصرت آدم علیا اسلام سے اعتما ی تخلیق با نواسطہ آن ہی کی طرف نسوب کرنا کھے بعید نہیں ،اور بیری میکن ہے کہ عام انسان جوتوالدو تناسل سے سلسلہ سے نطفہ سے ذریعہ سیرا ہوتے ہیں ان ہی بھی تطف جن اجزار سے مرکب ہوتا ہے ان میں مرشی کا جز وغالب ہے۔ دومسری آئیتِ قارت ، یہ ہے کا نسان ہی کی جنس میں النڈ تعالیٰ نے عورتیں پیراکردی جومردوں کی بیباں بنیں، ایک ہی ما دہ سے ایک ہی جگر میں ایک ہی غذا سے سیدا ہونے دا ہے بیچن میں بیر دو مختلف قبسیں سیدا فرما دیں جن کے اعصار وجوارح ، صورت وسيرت، عادات واخلاق من نمايان تفاوت والمتيازيا ياحاتات والشيعال كى كمال قدرت ويحمت كے لئے يہ تخليق ہى كانی نشابی ہے۔اس كے بعد دعور تول كى اس خاص توع کی تخلیق کی محمت وصلحت به بیان فرمانی لِتَنْ تَکُنُو اَیْ اِیّنَان کو اس لتے بیداکیا گیا ہے کہ تھیں ان سے یاس بیون کرسکون ملے مردی جتنی صروریات عورت سے متعلق بیں ان سب میں غور کیجے توسیب کا عال سکون قلب اورراحت و 17

سوره روم ۳۰: ۲۲ اطينان شطے كا، قرآن كرىم نے ايك لفظ ميں ان سب كوجمع فرا ويا ہے۔ اس سے معلوم ہواکہ ازدواجی زندگی کے تمام کار وبارکا خلاصہ بئ جس تھوس سے موجود ہے وہ اپن تخلیق کے مقصد س کا میا بوادرجاب سب مجه بروه ازدواجى ذندكى كاظس ناكام ونامرادب اوربه محى ظا ہے کہا ہمی سکون قلب صرف اسی صورت سے حکن ہو کہ حرد و یحورت کے تعلق کی بنسے مترعی کاح اوراز دواج پرہو ہجن ممالک اورجن ٹوگوں نے اس کے خلاف صورتوں کورواج دیا اگرتفتیش کی جاہے توان کی زندگی کو کہیں پرسکون نہ یا ہیں۔ ل طرح وقتى خوات يورى كريين كا نام سكون نهيس بوسكتا ازدواجی زندگی کامقصد اس آیت نے مردو یورت کی از دواجی زندگی کامقعسرسکون قل سون بوس کے لتے اہمی قرار دیا ہے ، ادر بہ جب ہی میں ہے کہ طرفین ایک دوسرے کاحق الفت ومجتت اور رحمت سیجانیں اور او اکریں ، در منه حق طلبی کے جھکرا ہے خابھی سکون کو ہر ماج كردى كے اس ادائے حقوق كے لئے أيك صورت توريحتى كم اس حرورى ي کے توانین بنادینے اوراحکام مافذ کر دینے پراکتفار کیا جاتا، جیسے دوسرے لوگوں کے حقوق رمعامله میں ایسا ہی کیا گیا ہے، کہ ایک دوسرے کی حق تلفی کوحرام کرے اس برسخت دعیدس سنانی همین میزائین مسترد کی همین، ایثاد و سمدر دی کی نصیحت کی کتی لیکن مجربه سائحة خدا كانوت نه بهو، اسى لئے معامترتی معاطلات بیں احکام مترعیہ کے ساتھ ساتھ لوانے قرآن مين برحكم إتَّقُواالله ، وَاتْحَتَّوْا دِغْرِه كَ كلمات بطورْ تحليك لائ كي بن-مردوعورت کے باہمی معاملات کھے اس توعیت کے ہیں کہ ان کے حقوق باہمی تور اداكرانے برم كوتى قانون مادى مرسكتاہے مؤكوتى عدالت ان كايورااتصاف كرسكتى ہو اسى لئے خطبہ بكاح ميں رسول الشرصلى الشرعليہ ولم نے قرآن كريم كى وہ آيات انتخاب فرمانی بین جن میں تقوی اورخوت خدا و آخرت کی تلقین ہے کہ وہی درحقیقت زومین کے باہمی حقوق کا ضامن ہوسکتا ہے۔ اس برایک مزیدانعام حق تعالی نے یہ فرمایا کہ از دواجی حقوق کوصرف شرعی ادرقانوني بنيس ركها بكرطيعي اورنفساني بناديا يجس طرح مال باب اوراولاد كيابي فقوق کے ساتھ بھی ایسا ہی معاملہ قرمایا، کہ ان کے قاوب میں قطرۃ ایک البی محبت بیسرا فرمادى كه مال باب ابنى جان سے زيادہ اولادكى حفاظت كرنے بر مجبور ہيں۔ اوراسى

سورة روم ۱۳۰ ۲۲ بارت القرآن جلد طرح اولادکے قلوب میں بھی آیک قطری مجتت ماں باپ کی رکھ دی گئی ہے۔ یسی معاملہ زوجین متعلى بجى قرما ياكميا ـ اس كے لئے ارشاد قرما يا وَجَعَلَ بَيْ تَكُمْ مَوَدَّةً وَ تَحْمَدَ أَهُ يَدِي الشرتعالى نے زوجین کے درمیان صرحت مشرعی اور قانونی تعلق نہیں رکھا بلکہ ان کے دائو یں مورت اور رحمت ہوست کردی۔ وُرد اور مَوَدَّت کے لفظی معنی جاہنے سے ہیں جس منره مجتت والفت ہے۔ پہال حق تعالی نے دولفظ خہت پارفرات، ایک مودّت ووکسکے رجمت عملن ہے اس میں اشارہ اس طرف ہوکہ موڈے کا تعلق جوانی کے اس زمانے سے ہوجس میں سیط سرفدین کی تواہشات ایک دوسرے سے محبت والفت پرمجبور کرتی ہیں داور براصابے میں جب بہ حذبات ختم ہوجاتے ہیں توباہمی رحمت و ترجم طبعی ہوجا المب دک ذكره العشرطي عن البعض) اس کے بعد قرمایا اِن فی دلاف کا ایت تفقیم تنفکرون، مین اس من بہت نشانیاں ہیں ان لوگوں کے لتے جو غور وفکر کرتے ہیں، یہاں ذکر توایک نشانی کا کیا گیاہے اوراس کے آخریں اس کوآیات اور نشانیاں فرمایا، دج بہہے کہ از دواجی تعلق جن کا ذکر اس میں کیا گیااس سے مختلف میہاور ان سے اور ان سے حاس ہونے والے دینی اور دہیوی فوائد برنظر کی جائے توبیا کی بہیں بہت سی نشانیاں ہیں۔ سری آیت قدرت : آسان وزمین کی تخلیق اورا نسانوں کے مختلف ی زبانیں اورلک دہج کا مختلف ہونا اور مختلف طبقات کے رنگوں میں امتیاز ہونا وبعض سفيدين لعبص سياه بعص مرخ بعض زر داس مين آسان وزمين كي تخليق توقدر

مین ایست قررت بر آسمان و زمین کی تخلیق اورا نسانوں کے مختلف طبقات کے رنگوں میں امتیاز ہونا ہے،
کا زبانیں اورلب ولیج کا مختلف ہونا اور مختلف طبقات کے رنگوں میں امتیاز ہونا ہے،
کر بعض سفید ہیں بعض سیاہ بعض س خ بعض زر دیاس میں آسمان و زمین کی تخلیق تو قد تر کا عظیم شاہ کا رہے ہی، انسا نوں کی تربانیں مختلف ہونا بھی ایک بجے ب کرشمہ قدرت ہے۔
تربانوں کے اختلاف میں بغات کا اختلاف بھی داخل ہے ، بولی، فادسی، ہندی، ترکی،
انگریزی دغیرہ کمتنی مختلف زبانیں ہیں، ہو مختلف خطول میں رائج ہیں۔ اور ایک و درسے
انگریزی دغیرہ کمتنی مختلف ہیں کہ کوئی باہمی ربط و متنا سبت بھی معلم نہیں ہوتی۔ اوراس
اختلاف استیاد ہیں لب ولیج کا اختلاف بھی ربط و متنا سبت بھی معلم نہیں ہوتی۔ اوراس
اختلاف استیاد ہیں انسان ہیں اواز دوسری صنف سے پوری طرح بہیں ملتی، کچھ
مرد، عورت ، بیخی، توڑھے کی آواز دوسری صنف سے پوری طرح بہیں ملتی، کچھ
در کے مہتسیاد صرور رہتا ہے۔ حالا تکہ اس آواز کے آلات زبان، ہونے، تا لو، حسلق،
در کچمہتسیاد صرور درہتا ہے۔ حالا تکہ اس آواز کے آلات زبان، ہونے، تا لو، حسلق، میں مشترک اور کیساں ہیں۔ تبارک الشراحی الخالی المیں۔

L

اسی طرح الوان کا اختلاف ہے۔ کہ ایک ہی مال باب سے ایک ہی قسر کے

14

طالات میں دورہی مختلف دنگ کے بیدا ہوتے ہیں۔ یہ تو تخلیق وصنعت گری کا کمال تھا، آگے زمانیں اور لیج مختلف ہوتے ہیں۔ اسی طرح انسانوں کے رنگ مختلف ہونے میں کیا کیا تھا تیں م منتور ہیں ان کا بیان طویل ہے ۔ اور بہت سی بھتوں کا عمولی خور دفکر سے بھے لیناشکل بھی نہیں۔
اس آئیت قدرت میں متعدد جیزیں آسیان، زمین، اختلاب آئیا ان ا ادران کے ضمن میں اور بہت سی قدرت و حکمت کی نشانیاں ہیں، اور دہ ایس کھی ہوئی ہیں
کہ کسی جزیر یغور و فکر کی بھی صرورت نہیں، ہرآئی موں والا دیکھ سکتا ہے واس لئے اس کے ختم برارشا و فرایا اِن فی ڈیاف آلا ایت ہوئی ہیں، بینی اس میں بہت سی نشانیاں ہیں سے ہے رکھن والوں کے لئے۔

پوکھی آیت قررت ، انسانوں کاسونارات میں اور دن میں ،اسی طرح ان کی قلاش معاش ہے رات میں اور دن میں۔اس آیت میں تونیندکوجی فرات ونوں میں بیان فرایا کر اور تلاش معاش کو بھی، اور بعض دوسری آیات میں نینند کو صرف رات میں اور تلاش می کودن میں بتلا یاہے۔ وجربہ ہے کہ رات میں اصل کام نینند کا ہے، اور کیجے تلاش معاش کا بھی چلنا ہے، اور کیجے سوئے بھی چلنا ہے، اور دن میں اس سے برعکس اصل کام تلاستی معاش کا ہے، اور کیجے سوئے آرام کرنے کا بھی وقت ملتا ہے۔ اس لئے دو توں با تیں اپنی اپنی جگر ہی جی بیں یعضی فسری تا ویل کرکے اس آیت میں بھی نیند کورات سے ساتھ اور تلاش معاش کو دن کے ساتھ خضوص کیا ہے گراس کی صرورت نہیں۔

سوناا در تلاش معاش اس آیت سے ناہت ہوا کہ سونے کے دقت سونا اور جاگئے کے دور ترسونا اور جاگئے کے دور ترسونا اور جاگئے کے دور ترکی کے منافی نہیں السان کی فطرت بنائی گئی ہے، اور ان دونوں جیز دور کا حصل کرنا انسانی اسباب د کمالات کے تا بع نہیں، بلکہ در صفیقت یہ دونوں جیزی نظم عطابی جن جیسا کہ رات دن کا مشاہرہ ہے کہ بعض اوقات اینداور آوام کے سارے بہتر سامان جمح ہونے کے با د جود بیند نہیں آتی، بعض اوقات واکٹری گولیا کھی بیندلانے میں فیل ہوجاتی ہیں، اور جس کو ممالک جا ہمتا ہے کھلی زمین پر دھوپ اور کرمی میں میں نوطافر ما دیتا ہے۔

یمی حال تحبیل معاش کارات دن مشا بره مین آنا ہے کہ دو شخص کیسال علم د عقل دالے برابر کے مال دالے، برابر کی محنت دالے تحصیل معاش کا کیساں ہی کا کے کر بیٹھتے ہیں آیا ۔ ترقی کرجا تا ہے دو مراره جا تا ہے۔الشر تعالی نے دنیا کو عالم اسباب بڑی محمدت ومصلحت سے بنایا ہے۔اس لئے تلاسشِ معاش اسباب ہی کے ذرایعہ کرنا ہے۔ لازم ہے گرعقل کا کام پیرہے کہ حقیقت ثنناسی سے دور نہ ہوان اسباب کواسباب ہی سمجھے اوراصل رازق اسباب سے بنانے والے کو سمجھے۔

اس آیتِ قدرت کے ختم برا دشاد فرمایا آن فی ذیاف آلا بیتِ یقو میم آبین آبین اس بین بہت سی نشانیاں ہیں ان توگوں کے لئے جو بات کو دصیان دے کر سنتے ہیں " اس بی سننے پر مدار رکھنے کی دجہ شاید یہ ہو کہ دیکھنے ہیں تو نئیند خود بخو د آجاتی ہے جب آ ومی ذراآرام کی جگہ کرکے لیے جائے ۔ اس طرح معاش کا حصول محنت مزد وری تجادت دغیرہ سے ہوجا آ ہے ۔ اس لئے درستِ قدرت کی کا رسازی ظاہری نظروں سے مخفی دہتی ہے ، دہ الشرکا بیام کا نے والے انبیار بشلاتے ہیں ۔ اس لئے فرمایا کہ یہ نشا نیاں انبی کو کا رآمد ہوتی ہیں جو بات کو دھیان دے کرسنیں ، اور جب سمجھ میں آجائے ہے تو تسلیم کرلیں ، ہمٹ دھرمی اور جب سمجھ میں آجائے ہے تو تسلیم کرلیں ، ہمٹ دھرمی اور ب

پیاپی آیت قاررت یہ ہے کہ انٹر تعالیٰ انسانوں کو بجلی کا کوندنا دکھاتے ہیں جس میں اس نے گرنے اور نقصان بہو نجانے کا خطرہ بھی ہوتا ہے، اور اس کے بیچے بارت کی امید بھی اور بھی اور بھی اور کھی کی اس میں طرح طرح کے دوخت اور کھیل کھیول اگاتے ہیں۔ اس کے آخر میں فر مایا اِنَّ فِنْ ذَلِكَ لَذَا بِنَ تَقَوْدُ مِنَ تَعَمَّدُونَ ، لیعنی اس میں بہت سی نشانیاں ہی عقل والوں کے این فی فی اس میں بہت سی نشانیاں ہی عقل والوں کے لئے ، کیونکہ برق و با وال اور ان کے ذرایعہ حاصل ہونے والی نبا تات اور ان کے خور بھی سے بھی اجا اسکتا ہے۔

چھٹی آبیت قارات یہ ہے کہ آسمان دزین کا قیام النّدہی کے امرے ہے ،ادر جب اس کا امریم ہوگا کہ یہ نظام توڑ بھوڑ دیاجائے تو یہ سب مضبوط مستحکم جیزیں جن میں ہزار دن سال جل کر بھی کہیں کوئی نقصان یا خلل نہیں آتا ، دم سے دم میں ڈھے بھوٹ کر ختم ہوجا ہیں گی ،اور بھرالنّد تعالیٰ ہی سے امرسے دوبارہ سب مُردے زندہ ہو کر میدائی میں جمع موجائیں گے۔

بہ جیٹی آیتِ قدرت درحقیقت بہلی سب آیات کا ماحصل اور مقصد ہے، اس کے سبجھانے کے سے لئے اس سے بہلی ہانے آیت سبجھانے کے بعد کئی آیات تک سبجھانے کے لئے اس سے بہلی ہانے آیتیں بیان فرمانی ہیں ، اور اس کے بعد کئی آیات تک اسی مضمون کا ذکر فرمایا ہے۔

کے المت الکاعظ ، لفظ منتل بفتے میم دنی برایس جیزے لتے بولاجاتا ہے جو دوسرے سے مجھ ما نلت اور مناسبت رکھتی ہو بالکل اس حبیبی ہونا اس کے مفہوم میں

W-14-601010 داخل نہیں اسی لئے حق تعالیٰ کے لئے مثل ہونا تو وسر آن س کئی جگر آیا ہے ، ایک سیس ا دوسرے فرمایا مثل تُورِع كيشكؤة الكين اورشال سے تعالیٰ كوات ياك اور درارا لورار ہے۔ والشراعلم خَى بَالْكُورِ مِنْ أَنْفُسِكُمُ وَلَا يَنْ الْمُسْكُمُ وَهُلِ لَكُورِ مِنْ مَا مَلَكُتُ بتلائی تم کو ایک مثل تھالیے اندرسے دیکھو جو تھالیے ہا تھ کے يَمَا عَكُمْ مِنْ شُكَرًا عَ فِي مَا مَ زَقْنَكُمْ فَا تَهُمْ فَيْهِ سَوَ ان میں ہیں کوئی ساجھی تھالے ہادی دی ہوتی روزی میں کہتم سب اس میں ہرا براہم تَعَافُونَهُمْ كَخِيفَتِكُمْ أَنفُسَكُمْ أَنفُسَكُمْ الْكَانُولِكَ نَفْصُلُ الْآلِي لِيَ خطرہ رکھوان کا جیے تحطرہ رکھواپٹول کا ، یول کھول کر بیان کرتے ہیں ہم نشانیاں لَوْنَ ﴿ بَالَمَا تَبْعَ الَّذِينَ عَلَيْهِ أَلَّهُ وَأَوْهُوا وَهُوا ان توگوں کے لئے جو سمجتے ہیں ، بلکہ چلتے ہیں یہ ہے انصاب اپنی خواہشوں بر تَى تَعْمَى كَمَنَ آضَلَ اللَّهُ وَمَا لَهُ مُعْمَ بن سمجھ ، سوكون سمجھات جن كوالشرنے بھنكايا ، يْنَ ﴿ فَأَقِمْ وَجَهَكَ لِلنَّ يَنَ حَيْفًا طَ فِطْرَتَ مددگار ، سوتوسیرهاد که اینا محته دین پر ایک طرف کا بهوکر دبی تراش ائتى قطرانتاس على المركزة ترين لقات الله ذيك جی پر تراس او گوں کو بدلنا جیس اللہ کے بناتے ہوئے کو بہی تى نى ائقىيىر قى قى كاڭتوالتاس كۈكىقىدى سیرسا ، ولیکن اکثر لوگ نہیں منينين المنه واتقوه واقفواالصالع والأكاك سادوع بوکراس کی طرت ادراس ڈرتے رہو اور قائم رکھوناز اور مت L

سورة روم ۳۰:۳۰ حارت القران جلير مِنَ الْمُثْمَى كَيْنَ الْكُونِ الْأَنْيِنَ فَتَرَقُّوا دِيْنَهُمْ وَكَانُو اشِيعًا وَ شرک کرنے والوں میں ، جندول نے کہ بھوط ڈالی اپنے دین میں اور ہوگے ان میں بہت فرقے بحزب بسال يهم قرمحون وركوا است التاس فه مرفرتہ جو اس کے پاس ہو اس برغن ہے ، اورجب پہنچے لوگوں کو کچھ عَوْاَتَ تَهُمُ مُنْسِينَ الْمِيْهِ ثُمَّ إِذَا آذَا فَهُمْ مِنْهُ رَدُّ تو پکارس اپنے دب کواس کی طرف رجوع ہو کر پھرجہاں پچھائی ان کواپنی طرف سے کچھ ہر یا تی اذا فرني مِنهُ مُ يَعَمُ بِرَكِمْ مُ لَئِنَ كُونَ اللَّهُ اللَّهُ وَالْمَا أَتَيْهُ اس دقت ایک جاعت ان میں اپنے رب کا مشریک لکی بتانے ، کہ مشکر ہوجائیں ہا ہے دئتے ہوئے مَتَعُوا وتنه فَسُوفَ تَعْلَمُونَ ﴿ أَنْ لَنَاعَلَيْهُمْ سُلُطُانَ مومزے اڈا او اب آ کے جان لوگے ، کیا ہم نے ان پر آتا دی ہے کوئی سند مُبِهَا كَانْوَابِهِ يُشْرَكُونَ ﴿ وَالْأَوْالِدُ النَّالِثَالِسَ سووہ اول رہی ہے جو یہ مشریک بتاتے ہیں ، اورجب عجفائیں ہم لوگوں کو بچے جریانی اس پر محقولے نہیں سماتے ، اور اگر آیڑے اُن پر بچھ بڑائی اپنے ہا تھوں کے بقيم إذا هم تقنطون وا ولم توقائن الله يبشه مجھے ہوئے پر تو آس توڑ بیٹھیں ، کیانہیں دیھے کراللہ محسلادیا ہے نت زَقَ لِهِن يَتَاءُ وَيَقِي تُعالَى فِي اللَّهِ اللَّهِ فَاذْ لِكَ لَا لِي لِقَدَوْ روزی جس پر جاہے اور ماپ کر دیتا ہے جس کو جاہے اس میں نشانیاں ہیں ان لوگوں کو تُؤْمِنُونَ ﴿ فَالْتَ ذَا لُقُرْ إِنْ حَقَّهُ وَالْمِسْكِينَ فَابْنَ جولیتین دکھتے ہیں، سوتونے قرابت والے کو اس کاحق اور محتاج کو سَتَبِينَ لَ ذُلِكَ عَيْرُ لِلنَّ يَنْ يُنْ يُنْ يُنْ وَنُ وَجَهَ اللَّهِ وَ مافركو، يبهرك أن كے لئے جوما ستے بي اللہ كا مند اور

TI.

سوره روم . س: ۲۰۰ معارت القرآن حلير وی ہیں جن کا بھلا ہے ، اورجو دیتے ہو بیاج برکہ بڑہتا دے آموال الناس فلا يتربوا عن الله وما الته وما الته وم میں سودہ جیس براجتا اللہ سے بہاں اور جودیتے ہو یاک دل سے لُ وَنَ وَجُهَ اللَّهِ فَأُولِنَاكَ هُمُ أَلْمُضِعِفُونَ ١٩ رصامندی اللہ کی سویہ وہی ہیں جن کے دولے ہوئے ، دہی ہی جس نے سم کو بنایا بھرسم کوروزی دی بھرسم کو مارتا ہے محرسم کو جلامے گا هَلَمِنْ شُرِكًا عِكُمْ مِنْ يَفْعَلُ مِنْ ذِلِكُمْ مِنْ أَلِكُمْ مِنْ أَلِكُمْ مِنْ أَلِيكُمْ مِنْ كونى بي تحالي ستريكول بين جوكريك ال كامول بين سے ايك كام وہ نوالا ب وتعلايعتها ليشركون اور ہیت اوپر ہواس کہ مشریک بہتلاتے ہیں۔

تحالاصة تفسير

الحامة

خدا تعالیٰ کے مال نہیں، ملک تعین توان میں سے مخاوقاتِ البیہ کے مصنوع میں۔ پیمعبودین حق تعا کے خاص حی معبود سے میں کس طرح اس سے ساتھ متر بیک ہوسکتے ہیں اور ہم نے حیں طرح یہ دسل شافی کافی بطلان شرک کی بیان منسرمانی ، ہم اسی طرح سیحصداروں کے لئے دلائل صا صاف بیان کرتے رہتے ہیں زادر مقتصنایہ تھاکہ وہ لوگ حق کا اتباع اختیار کرلیتے اورسٹ ر جھوڑ دیتے مگروہ حق کا امتاع نہیں کرتے) بلکہ ان ظالموں نے بلا زمسی صیحے) دلیل دیجے ینے خیالات دفاسرہ اکا اتباع کر رکھاہے سوجس کو داس کی ہرمط دھرمی اورعنا دو اصرارعلی الباطل کی دجے ہے خدا دہی اگراہ کرے اس کو کون راہ برلاوے راس کا محذوربين ملكه رسول الشرصلي المتدعلية وسلم كونسلي دينا ہے كه آت عنم مذكرس آپ كاجوكا تحادہ آپ کر چیج، اور جب ان کر ابول کو عذاب ہونے لگے گاتن ان کا کوئی حائیتی مذہو گالاور

، اوپر کے مضمون سے توحید کی حقیقت واضح ہوگئی تو رمخاطبین میں سے ہر سرمضے جاتا ہے کہ ہم دا دمان ماطلہ سے یک سو ہوکر اینا رُے اس دین رحق ای طرف رکھو ب الشركي دي بوتي قابليت كالتاع كروجس رقابليت) يرالند تعا فطرۃ الٹرکا بہ ہے کہ الٹرتعالیٰ نے ہرشخص میں خلقۃ یہ استعداد رکھی ہے ورسمجینا جاہے تو وہ مجھ میں آجاتا ہے ، اوراس کے اتباع کامطلب یہ

سورة روم ، ۳: ۲۰

تعداد اورقابلیت سے کام لے ، اوراس کے مقتضا برعمل کرے عوض

کااتباع چاہتے اور) اللہ تعالیٰ کی اس ہیدا کی ہوئی چر کوجس پراس نے تام آدمیوں کو پیدا کیاہے بدلنا نہ چاہتے ہیں سیرحا درستہ) دین دکا) ہی ہے لیکن اکثر لوگ لاس

وج عدم تدمیر کے انہیں جانے راس لتے اس کا اتباع نہیں کرتے غوض اسم خدا کی ط رجوع ہو کر قطرت الہیم کا اتباع کر واور اس رکی نخالفت اور مخالفت کے عذاب) سے

ڈرد اور راسلام قبول کرکے) نمازی یا بندی کرو رجوتوحید کا علی اظہارہے) اور مثرک

كرف والول مين سعمت رموجن لوكول نے اپنے دين كو طلاح سكام الا راجنى حق توبيرايك تفااور باطل بهت بين اكفول نے حق كو چھوٹر ديا اور باطل كى فختلف را بين

اختیار کولیں، یہ مکودے شکودے کونا ہے کہ ایک نے ایک راہ لے لی و وسرے نے دوسری

ادر بہت سے دمختلف اگروہ ہوگئے زا دراگری ہر رہتے تو ایک گروہ ہوتے اور با وجود

اس کے کدان حق کے چھوڑنے والوں میں سب کے طریقے باطل ہیں، محر کھر بھی غایت جہل کے ان میں) ہر گردہ اینے اس طرافے پر نازاں ہیں جو اُن کے یاس ہے اور رجی توحید کی طر

ہم بلاتے ہیں باوجوداس کے انکاراورخلات کرنے کے اضطرار کے دقت عام طورام

ف القرآن حلد سوره روم ۲۰۰۰ م اس کا اظهار داخرا رجعی ہونے لکتا در وه پرچکه) هم جب (ان) لوگول کو کچه عناست سے معلوم ہوتا ہے کہ اس تتمہ میں اصل مقصود بہلا جلہ اِ ذَا اَ ذَ قَنَا النَّاسَ بِرَكُ اس میں ان کے مبتلات مترک ہونے کا سبب بدمست اور غافل ہونا مذکورہے، دوسرا جا محص تقابل کی مناسبت سے ذکر کر دیا ہے۔ کیونکہ ان و و تول حالتوں میں انتی بات ٹما بت ہوتی ہے کہ اس کا تعلق المدتعالی سے بہت کم اورضعیف ہے، ذرا ذراسی چیز اس تعلق کو فراموں لردیتی ہے۔آگے اس کی دوسری دلیل ہے کہ یہ لوگ جو نشرک کرتے ہیں تو) کیا ان کوٹیے لوگ بہیں کہ الشرتعالیٰ جس کوجاہے زیادہ روزی دیتاہے اور جس کوجاہے کم دنیاہے داور مشركين كے نز ديك نيستم بھي تھاكەرد زى كا گھٹانا برط ھانا اصل ميں خدا ہى كا كام ہى، لقولم تعالى وتنين سَاكُمُ مُن مَن تَوْلَ مِن السَّمَاءِ مَاءً فَاحْمَا بِهِ الْآمَ مَن الْاَتْمَاءُ مَوْتِهَا لَيَقُوْلَنَ الله الله الله والراين رامي توحيدى نشانيال بن ان لوگول كے لئے جو ایمان رکھتے ہیں ربعنی وہ سمجتے ہیں اور دوسرے بھی سمجھ سکتے ہیں کیونکہ جوشخص الیا قادر برگامسچی عبارت کا دہی بوگا) تھر رجب دلائل توحیدس معلوم ہواکہ زوای

لِيّ

لا وقبض الشرسي كى طرف سے ہے تو اس سے ایک بات اور بھی تما بہت ہوئی کہ تخل کرتا مزموم ہے، کیونکہ بخل کرتے سے جتنا رزق معتدر ہواس سے زیادہ نہیں مہل سکتا ، اس لئ نیک کاموں میں خویے کرنے سے بخل نہ کیا کر بلکہ) قرابت داد کو اس کاحق دیا کر اور داسی طبح مسكين اورمسافر كوبهى دان كے حقوق دياكرجن كى تفصيل دلائل شرعير سے معلوم ہے یہ ان توگوں کے لئے بہتر ہے والنڈ کی رصنا کے طالب ہیں اور ایسے ہی لوگ فلاح یائے والے ہیں اور دہم نے جو یہ تیدلگائی کہ سیمضمون بہترہے ان لوگوں کے لئے جوالنڈ کی رصّا کے طلب گار ہو ن دجراس کی بیرہے کہ ہما اسے نز دیک مطلق مال خرج کرد بیا موجب مشلاح نهيس ہو ملکه اس کا قانون بیہ ہے کہ ہو جیزئم ر دنیا کی غوض سے خرج ٹر دیکے مشلا تو تی جیز اس خوص سے کسی کون دو گھے کہ وہ لوگوں سلے مال میں رشا مس ہو کریعیٰ ان سے میلک و قبصنہ میں میبونے کر رخمطا اسے التے) زیادہ ہود کر آ) جادے رحبیا تو مۃ وعیرہ رسوم دنیو ہے مين اكثر اسى غوض سے ديا جاتا ہے كہ رہنے ص بھانے موقع بر كھيدا ورزا تد شامل كرے ديے كا توبیالند کے نز دیک نہیں بڑ ہتا رکیونکہ خدا کے نز دیک سیونجینا اور بڑ ہنا اس مال کے اتھ خاص ہے جوالندی خوشنوری کے لئے خرج کیاجائے جیسا آگے آتا ہے ، اور حدث میں بھی ہے کہ ایک بخرہ مقبولہ آخار میاڑے بھی زیا دہ بڑھ جا تاہے، اوراُس میں نیے نیت تقی نہیں، لہٰڈا مدمقبول ہوا نہ زا ترہوا) اورجو زکاۃ (دغیرہ) دوگےجس سے اللّٰہ کی رضا طلب كرتے ہوگے توالیے لوگ داینے دیتے ہوئے كو)خلا تعالیٰ سے باس برط صا ربیں گے رحبیا ابھی حدمیث کا صنمون گذرااور پیمضمون اللہ کی راہ میں خرج کرنے کا چونکارات تعالى كى صفت رزّاق ير دلالت كرنے كى وجرسے توحيدكى تاكىدكا ذرايع براس كتے يہتباً الكيا،اصل مقصود توحيد كابيان ہے،اسى لئے آ كے كھراسى توحيد كا ذكر ہے)۔ الشرسي ده ہےجی نے بم کو سداکیا تھرمتم کو رزق دیا بھوتم کوئوت دیتا ہے بھو رتباحت میں اسم كوجلات كا دان میں تعین المور تو مخاطبين كے اقراد سے ثابت ہیں ، ادر بعص دلائل سے، عرض کہ دہ ایسا قادر ہے، اب یہ بتلاؤکہ کہ تحصالے مشرکار میں بھی کو تی ایسا ہے جوان کا موں میں سے بچھ بھی کرسکے را در ظاہر ہے کہ کوئی بھی نہیں، اس لیے ٹابت ہوا کہ) وہ ان سے بھڑک سے یک اور بر ترہے راجنی اس کا کوئی سٹر کی نہیں ؟

معارت القرآن جلد ششتم

محارف ومسأتل

آیات ، رکورہ میں صغیون توحید کو مختلف سنواہدا در دلائل ادر مختلف عنوانات پی بہلایا گیا ہے جو ہرانسان کے دل میں اگرجائے ۔ پہلے ایک مثال سے بجھایا کہ تھا ہے غلام نوکر جو تھا ہے ہی جیسے انہاں ہیں مشکل وصورت ، ہاتھ یا وَل مقتصنیات طبعیہ سب چیزوں ہیں جھالے تشریک ہیں ، گرتم ان کواپنے افتدار واختیار میں اپنی برا بر نہیں بناتے کہ دہ بھی تھال^ک طرح ہوجا ہیں کمیا کرمیں جو جا ہیں کمیا کرمیں جو جا ہیں حسرے کرمی ، بالکل اپنی برا برتو کیا بناتے ان کواپنے مال و اختیار میں اوئی سی شرکت کا بھی جی نہیں دیتے ، جیسے کسی جب زوی اور معمولی شرکی کے اختیار میں اوئی سی شرکت کا بخلیوں آپ ڈرتے ہیں کہ اس کی مرض کے بغیب کوئی تصریب کرلیا تو دہ اعتراض کرے گا غلاموں فرکروں کو یہ درجہ بھی نہیں دیتے ، تو غور کر دکہ تمام مخلوقات جن میں فرشتے ، انسان اور دو سری کا تنات بھی داخل ہیں ، یہ سب الشرکی مخلوق اور اس کے بندے اور دو سری کا تنات بھی داخل ہیں ، یہ سب الشرکی مخلوق اور اس کے بندے اور علام ہیں ان کوئم الشرکے برا بریا اس کا مشرکیک کیسے لیتین کرتے ، دو۔ غلام ہیں ان کوئم الشرکے برا بریا اس کا مشرکیک کیسے لیتین کرتے ، دو۔

ا" دوسری آبیت میں اس پرتنبیہ ہے کہ یہ بات توسید ھی اورصاف ہے گرمخالف لوگ

این اہرار نفسان کے تابع ہو ترکوئی علم و تھے ت کی بات نہیں مانتے۔

تبسری آمیت میں آنخضرت میں النّرعلیہ وسلم کو با عام مخاطب کو حکم دیا ہے کہ جب مشرک کا نامعقول اور طلع عظیم ہونا ناہت ہوگیا تو آت سب خیالات مشرکا نہ کو جھوڑ کر اندامی منرہ میں دس اسال میں طاور بی تھے لیجتہ ذات نے تیجہ لیجہ للگا تین تحلیفاً ط

ابنارُخ صرف دين اسلام كي طرف بهيرليجية فَاقِيمْ وَجُهَكَ لِلِنَّ بَنِ حَنِيفَا الْمُ الْمُ اللَّهِ مَا اللَّهِ اللَّهِ مَا اللَّهِ اللَّهِ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللْهُ عَلَى اللْهُ عَلَى اللَّهُ عَلَى اللَّ

کا بیان ہے کہ وہ دین قطرت ہے ،اور نظر ہ اسلیکی ترکیب بخوی میں منصوب ہونے کی وجرمفترین نے مختلف اسھی ہیں کہ لفظ التیج بہال محذوفت ہے ، یا لفظ انتخبی ، بہرحال ہے

وجرمفترین نے مختلف بھی ہیں کہ لفظ اس میال محذوف ہے ، یا لفظ اسی بہرطان ہیں متعین ہے متعین ہے کہ دیا گیاہے اس کواس جلے میں متعین ہے کہ دین حنیف جس کا اتباع کا پہلے حملے میں حکم دیا گیاہے اس کواس جلے میں متعین ہے کہ دین حنیف اس کواس جلے میں متعین ہے کہ دین حنیف اس کواس جلے میں متعین ہے کہ دین حنیف اس کواس جلے میں متعین ہے کہ دین حنیف اس کواس جلے میں متعین ہے کہ دین حنیف اس کواس جلے میں متعین ہے کہ دین حنیف اس کواس جلے میں متعین ہے کہ دین حنیف کا جان کا اس کواس جلے میں متعین ہے کہ دین حنیف کے دین حنیف کا جان کی متعین ہے کہ دین حنیف کے دین حنیف کا جان کی متعین ہے کہ دین حنیف کے دین کے دین کے دین حنیف کے دین ک

فِطُرَةَ النَّرِقراد دیاہے اور معنی اس سے خود اسطے جلے بین بیر بتلائے کہ النُّر کی فطرت سے مراد یہ ہے کہ جن فطرت پرالنُّد نے لوگوں کو بیدا کیا ہے۔

فطرت سے کیام ادہر؟ اس معاملہ س مفترین کے متعدد اقوال منول ہیں نیس دوریا دہ ہوئیں

2M4

سورة روم ، ١٠٠٠ م

اول یہ کہ نظرت سے مراد اسلام ہے اور مطلب یہ ہم کہ انٹر تعالیٰ نے ہرانسان
اپنی فطرت اور جبتت کے اعتبار سے مسلمان ہیدا کیا ہے ۔اگراس کو گرد دہین اور ماحول میں
کوئی خراب کرنے والاخراب مذکر ہے تو ہر مہدا ہونے دالا بچہ مسلمان ہی ہوگا ۔ گرعادة ہوتا یہ
ہے کہ مال باپ اس کو بعض اوقات اسلام کے خلات چیزیں سکھادیتے ہیں ،جس کے سبب
وہ اسلام ہرقائم نہیں رہتا ۔ جیسا کہ سمجھین کی ایک حدیث میں فرکورہے ۔ قرطبی نے اسی
قدار کر جہد، سلمان کا قدار دیا ہے۔

قول كوجهورسلف كاقول مشرارديا --

د و مراقول میں ہی کہ فطرت سے مرا داستعدادہ یا بین تخلیق انسانی میں اللہ تھا گئے یہ خاص سے کہ ہرانسان میں لہنے خالق کو بہجانے اوراس کو ماننے کی صلاحیت داستعداد موجودہ جس کا افراسسلام کا قبول کرنا ہو تاہے، بنٹر طبیکہ اس ستعدا دسے کا لے۔ گر پہلے قول پر متعدّ دافت کالات میں ، اوّل یہ کہ خوداسی آیت میں یہ بھی آ گے فہ کورہ ہو آ کہ بہتے تی یہ بھی آ گے فہ کورہ و لا تنہ بی یہ یہ تی دافتہ کے فہ کو اور در ہمان خال اسٹر سے مراد دہی فطرة اللہ ہے جس کا اوپر ذکر ہوا آ کہ اس لئے معنی اس جلے کے یہ بین کہ اللہ کی اس فطرت کو کوئی متبدیل نہیں کر سکتا ، حسا لانکہ حدریث سیحین میں خودیہ یا تصرائی بنا دی جا ہیں جس میں تبدیلی منہ ہونا خوداسی آیت میں ذکورہ ہے تو حد مینے مذکور میں میہودی یا تصرائی بنا دی جی اگر فطرت کے معنی خوداس لام کے لئے جا کہیں جس میں تبدیلی منہ ہونا خوداسی آیت میں ذکورہ ہے تو حد مینے مذکور میں میہودی ، فصرائی بنانے کی متبدیلی منہ ہونا خوداسی آیت

تبدیلی توعام مشاہدہ ہے کہ ہر گاہمسلمانوں سے زیادہ کا فرطنے ہیں، اگراسسلام ایسی فطر ہے جس میں تندیلی مذہوسیح تو تھے۔ ریہ تندیلی کیسے اور کیول ؟

دوسمرے حصارت خصارعلیہ السلام نے جس لڑکے کو قبال کیا تھا اس کے متعلق سے حدیث میں ہے کہ اس لڑکے کی قطرت میں کفر تھا ، اس لئے خصارعلیہ السلام نے اس سو هقل کیا ، یہ حدیث بھی اس کے منافی ہے کہ ہرانسان سلام پر سیدا ہوتا ہو۔

تیسراشبہ یہ ہوکہ آگراسسلام کوئی ایسی چیز ہے جوانسان کی قطرت میں اس طرح رکھنٹا گیاہے جس کی تبدیلی برتھی اس کو قدرت نہیں تو دہ کوئی اختیاری فعل نہ ہوا بھواس پر آخرت کا تواب کیسا و کیونکہ نواب تو اختیاری عمل پر ملتاہے۔

چوتھامٹ بہ ہے کہ احاد بیت صحیحہ کے مطابق نفتہا۔ اُمت کے نز دیک ہجہ بالغ ہونے سے پہلے ماں باب سے ما لیع سمجھا جاتا ہے ، اگر ماں باپ کا فرہوں تو بہتے سی بھی فز قرار دیا جاسے گا۔ اس کی بجہز و تکفین اسسلامی طرز پر نہیں کی جاسے گی۔

مرسب شبهات ام توریشتی نے مشرح مضابع میں بیان سے ہیں۔ اوراسی بنام

ZMZ

بأرت القرآن حلدً

سورة ردم ۳۰:۰۸

امخوں نے دوسرے قول کو ترجے دی ہے کیونکہ اس خلقی ستحدا دکے متعلق یہ بھی چے ہے کہ
اس بیں کوئی تبدیلی ہنیں ہوسے تی ، جوشخص ماں باپ یا ہی دوسرے کے گراہ کرنے سے کا ویر
ہوگیا اس بین ہستعدادا ور قابلیت ہی تعنی اسلام کی حقابیت کے بیجانے کی ختم ہنیں ہوئی ۔
علام خصر کے واقعہ بیں اس کے کفر بر بیا ہونے سے بھی یہ لازم مہیں آتا کہ اس بیں حق کو
سیجے کی ہستعداد ہی مز دہی تھی اور چونکہ اس فدا داد ہستعداد وقا بلیت کا پہلے استعمال انسانہ
اپنے اختیار سے کرتا ہے ، اس لیے اس پر تواب عظیم کا مرتب ہونا بھی واضح ہوگیا ، اور ورت فیلی سی جویں ہیں جو یہ مذکور ہے کہ بیچے کے ماں باپ اس کو بیجو دی یا نصرانی بنا دیتے ہیں اس کا مفہوم بھی اس دو مرسے معنی کے اعتبار سے واضح اور صاف ہوگیا، کہ اگرچ اس میں ہتعداد والی تھی ، مگر عوار عن اور موافع جانے اور قابلیت فطری ہے جو اللہ خان ہوگئے اور اس طوف نہ جانے دیا۔ اور صفرات سلف سے اولی تھی ، مگر عوار عن اور موافع جانے ہو کہا تھول ہے بطاہم اس کی مراد بھی اصل ہلام نہیں ، بلکہ بہی ہتعداد اسلام اور جو بہلا قول منقول ہے بطاہم اس کی مراد بھی اصل ہلام نہیں ، بلکہ بہی ہتعداد اسلام اور اس کی قابلیت وصلاحیت ہے ۔ محدّ ن دھ ہوئی نے کمعات سرح مشکوۃ میں جہوں کے اس کی تاریخ میں مطلب بیان فر ما یا ہے۔
اس کی قابلیت وصلاحیت ہے ۔ محدّ ن دھ ہوئی نے کمعات سرح مشکوۃ میں جہوں کے قول کا یہی مطلب بیان فر ما یا ہے۔

اوراسی کی تائیداس مضمون سے ہوتی ہے جو حضرت شاہ آولی اللہ وہلوی رجمۃ الدعلیم فی سے جو حضرت شاہ آولی اللہ دیس بخریر فرما یا ہے ،جس کا حصل یہ ہے کہ جن تعالیٰ نے بے شار قسم کی مخلوقات مختلفت طبائع اور مزاج کی بنائی ہیں ، ہر مخلوق کی فطرت اور جبالت ہیں ایک خاص ما دّہ وکھ دیا ہے ،جس سے وہ مخلوق ابنی تخلین کے منشا کو پوراکر بھے تران کریمیں آغطیٰ کُلُّ شَکّی ﷺ خَلْفَتُهُ ثُنْم اَ هُوَلُ کُلُ مُنات نے کہی خاص مقصد کے لئے بدایت بھی دے دی ہو ، وہ خاص مقصد کے لئے بدایت بھی دے دی ہے ، وہ ماس کو اس مقصد کے لئے بدایت بھی دے دی ہے ، وہ بدایت بھی دے دی ہے اس کو اس مقصد کے لئے بدایت بھی دے دی ہے ہواں کو اس کو اس کو اس مقصد کے لئے بدایت بھی دے دی ہے کہ اور استعماد دہے جھتے ہیں کو بہجانے اور استعماد دہے بھراس کے دس کو اپنے بسیط میں محفوظ کرکے اپنے جھتے ہیں کو بہجانے اور استعماد درکھ دی ہے کہ دوہ اور استعماد درکھ دی ہے کہ دوہ ایس کو اس کی شکرگذاری ادراطاعت شعادی کرے ، اس کہ دوہ اپنے بسیدا کرنے والے کو بہجانے ، اس کی مشکرگذاری ادراطاعت شعادی کرے ، اس

کو تنبی بیل یخ آین احدی ، مذکورالصدرتقریرے اس جلے کا مطلب بھی واضح ہوتا کرا منٹر کی دی ہوئی فطرت یعنی تو بہجانے کی صلاحیت واستعداد میں کوئی تبدیلی نہیں کرسکتا۔ اس کو غلط ماحول کا فرتو بنا سختا ہے گراس کی استعداد قبول حق کو باکل فنا

سورهٔ روم ۱۳: ۲۰ رت القرآن علد اوراسى سے أس آئيت كامفہى بھى واضح بموجاتا ہے جس ميں ارشاد ہے قرمشا خَلَقْتُ الْحِنْ وَالْإِنْسَ (اللهِ يَعَبَّنُ وَنِ العِن بِم فِي اورانسان كواوركسي كام سے لتے ہمیں بیدا کیا، بجز اس کے کروہ ہماری عبادت کیا کریں۔ مطلب یہ ہے کہ ال کی فطرت میں ہم نے عبادت کی رغبت اور ستعدا در مکددی ہے، اگر وہ اس استعداد سے كام لين توبجز عبادت كے كوتى دوسراكام اس كے خلاف برگز سرزدند ہو۔ ا إلى باطل كي صحبت او دغلط آيت فركوره لَا تَتَبُرِينَ لِيَحَلَقِ النَّرِكاجِمَلِهِ ٱلرَّحِيرِ بصورت خبر سيليني ماحول سے الگ بہنا فرض کو اللہ کی اس قطرت کو کی بدل نہیں سکتا ہ لیکن اس میں ایک معنی آفر سے بھی ہیں، کہ بدلنا نہیں جا ہتے۔ اس لتے اس جلے سے بدی مجمی شنفاد ہواکہ انسا سوايسے اسباب سے بہت بر بہز کرنا چاہتے جو اس قبول حق کی استعبالد کومعطل با مکر ور سردیں۔اور دہ اسباب بیشتر غلط ماحول اور تری صحبت ہے، یااہلِ باطل کی کتابیں دیجھنیا جب كه خود اينے مذہب اسلام كا يورا عالم اورمبصر شہو۔ والشرسبحان وتعالى اعلم وَ اَقِيْهُ وَالصَّالِحَةَ وَلَا تَكُونُ فَوامِنَ النَّهُ شَرِينَ، يَجِيلُ آبت مِن السان كى فطرت كو قبول حق كے قابل اور مستعد بنانے كا ذكر تھا۔ اس آیت میں اوّل قبول حق كی صورت يربتلاتي كئي كرنماز قائم كرس كروه على طور برايمان واسسلام اوراطاعت مي كا المهارب اس كے بعد فرما یا دَلَا تَكُوْ فَوْامِنَ الْمُسْنَى كِيْنَ مِ يَعِيْ سُرَك كرنے والول میں شامل ند ہوجا وَجفوں نے اپنی فطرت اور قبول حق کی استعداد سے کام مذلیا ، آگے ان كراي كاذكرب :- ين الذِّن يْنَ فَرَّقُوْ الدِينَهُمْ وَكَانُوْ الشِيعَا، لِعِن يُمشركن وه لوك بس جفول نے دین فطرت اور دین حق میں تعت رہ بیداکردی، یا بیکروس فطرت سے مفارق ا درالگ ہوگئے،جن کا نتیجہ بیرہوا کہ وہ مختلف یا رشیوں میں سط گئے۔شیئی اسٹیعہ کی جمع ہے،ایسی جاعت جوکسی مقترار کی تیرو ہو،اس کوشیعہ کہتے ہیں۔مطلب بیرہے کہ درفطات توتوحيد مخاجن كااخريه بهونا جاسة مخفاكرسب انسان اس كواخشياد كرك ايك بهي قوم أيك ہی جاعب بنتے مگر انحوں نے اس توحید کو چھوٹوا، اور مختلف لوگوں کے خیالات کے تالج ہوگئ ادرانسانی خیالات اور را یول میں اختلات ایک طبعی امرہے، اس لتے ہرایک نے ایٹاایٹا ایک مذہب بنالیا اعوام ان سے سبب مختلف یا رشیول میں بط گئے، اور شیبطان نے ان کو ابنا يخطالات ومعتقدات كوى قراد ديني ايسالكادياكه كالشوزب بمالكاك خَرِيْ فَي اللَّهُ اللَّهُ اللَّهِ اللَّهُ الل

(P. P.) (2 P. 9)

دومروں کو علطی بربتاتی ہے ، حالا نکہ بیسب کے سب گراہی کے غلطرا ستول پریٹرے ہو ۔ رہیں

قائتِ وَالْمَا الْمُقَرِّ، اِلْ تَحقَّهُ وَالْمِسْكِيْنَ وَالْبَنَ السَّبِيْلِ، اس سے بہلی آبت مِن بربیان کیا گیا تھا کہ رزق کا معاملہ صرف الند کے ہاتھ میں ہے، وہ جس کے لئے چاہتا ہے رزق کو پھیلا دیٹا ہے اور زیا وہ کر دیتا ہے، اور جس کا چاہتا ہے رزق سمیٹ کر تنگئے دیتا ہے۔ اس سے معلوم ہواکہ کوئی شخص الند کے دیتے ہوئے رزق کو اس کے مصارف میں حضر پ کر ادہے تو اس سے اس میں کی نہیں آتی، اور اگر کوئی خرچ کرنے میں بخل کرے اور ہو کچھ اسپنے پاس ہے اس کو جمح کر کے محفوظ رکھنے کی کو میشنش کرے اس سے مال میں رسعت ہمیں ہوتی۔

اس معنمون کی مناسبت ہے آیت مذکو رہ میں رسول انڈ صلی انڈ علیہ دسلم کوا در بعقول حسن بھری ہم مخاطب انسان کوجس کوالنڈ نے مال ہیں وسعت دی ہویہ ہم ایت دکھی ہے کہ جو مال انڈ نے آپ کو دیاہے اس میں بخل نذکر و بلکہ اس کوان کے مصارف میں خوش دلی کے ساتھ ختری کر واس سے تھا ہے مال اور رزق میں کمی نہیں آنے گی۔ اور اس حکم کے ساتھ اس آیت میں مال کے چند مصارف بھی بہان کر دیتے ، ادّ ل ذوتی القربی دو مربے مسائین میں سے ان کو گوں کو دوا دران پرخری کود تیں میں میں اس کے جند محالے ہوتے مال میں جمال کے محطا کتے ہوتے مال میں سے ان کو گوں کو دوا دران پرخری کود اور ان پرخری کود اور ان پرخری کود اور ان پرخری کود کو دوا دران پرخری کود کو دوا دران پرخری کود کی ساتھ ہی میں میں تھا کہ کردیا کہ اور ساتھ ہی میں جند کی میں تھا ہے اور کی احسان میں خمال کے اور کرنا مقتضا کے مدل دان کو دیئے کے دقت ان پر کوئی احسان منہ جمالا دی کوئی احسان وا نعام نہیں ہے۔

اور ذوی القربی سے مراد ظاہر یہ کہ عام رسشتہ دارہیں، خواہ ذور عم تحرم ہول یا دوسرے رکما ہوتو ل الجم ہو من ہاور ہوت سے مراد بھی عام ہے خواہ حقوق واجبہ ہوں جوں جوں ہوں ہا ہوں جیسے ماں باب ،ادلاد اور دوسرے ذوی الارحام کے حقوق یا محص تبریع واحسان ہو جور شنتہ داروں کے ساتھ بہنست و دسروں کے بہت نیادہ تواب رکھتاہے بیمانتک محام تفسیر مجاہر تنے فرمایا کہ جب شخص کے ذوی الارحام رسشتہ دار محتاج ہوں وہ ان کو جھوٹ کر دوسروں ہوسروں ہوسروں کے بہت نیادہ تواب رکھتاہے بیمانتک جھوٹ کر دوسروں ہوسروں ہوسروں ہوں کہ خرایا کہ جب تعام میں اور کھی مذکر دوسروں ہوسروں ہوں کے اور دوی القربی کا حق صر کی المدادی میں ان کی خرای کی میں ان کی خرایا کہ خور ما یا کہ ذوی القربی کا حق اس شخص سے لئے جس کو اور تسلی دخیرہ جیساکہ حضرت جس تھوں کی احداد کرے اور جس کو یہ دسعت حاصل ہو ہے ہی کہ مال سے ان کی احداد کرے اور جس کو یہ دسعت حاصل ہو ہے کہ مال سے ان کی احداد کرے اور جس کو یہ دسعت حاصل ہو ہے کہ مال سے ان کی احداد کرے اور جس کو یہ دسعت حاصل ہو ہے کہ مال سے ان کی احداد کرے اور جس کو یہ دسعت حاصل ہو ہے کہ مال سے ان کی احداد کرے اور جس کو یہ دسعت حاصل ہو ہے کہ مال سے ان کی احداد کرے اور جس کو یہ دسعت حاصل ہو ہے کہ مال سے ان کی احداد کرے اور جس کو یہ دسعت حاصل ہو ہیں جس کے مال سے ان کی احداد کرے اور جس کو یہ دسعت حاصل ہو ہوں سے کہ مال سے ان کی احداد کرنے اور جس کو یہ دسعت حاصل ہو یہ جس کو مالے دست حاصل ہو یہ ہے کہ مال سے ان کی احداد کرنے اور جس کو یہ دست حاصل ہوں ہوں کی احداد کرنے اور جس کو یہ دست حاصل ہوں ہوں کی احداد کرنے اور جس کو یہ دست حاصل ہوں ہوں کی احداد کرنے اور جس کو یہ دوسروں کی کو دی اور کرنے اور جس کو یہ دوسروں کی کو دی اور کرنے اور جس کو یہ دوسروں کی کامی کی کامی کی کامی کی کو دی کو دی کی کو دی کو دی کی کو دی کی کو دی کی کو دی کی کو دی کو دی

سورة روم ، ١١٠ ١١٠ رت القرآن جلد مذہواس سے لتے جہانی خدمت اور زبانی ہمدر دی ہے د قرطبی ا زوى القربى ميكسين اورمسافر كاحق تبلاياكياب يبجى اسىطرح عام ب دسعت بهوتومالي امرائه بهوتوا تحصاسلوك. ومَنَا التَّيْتُونَ يَرِبًا يِنِدَبُوا فِي آمُوا لِهِ النَّاسِ، اس آيت بن ايك برى رسم کی اصلاح کی گئی ہے، جوعام خاندا تول اور اہلِ قرابت میں جلتی ہے۔ وہ یہ کہ عام طور پر کننبہ رشتہ سے لوگ جو کھے دومرے کو دیتے ہیں اس پر نظر دکھتے ہیں کہ وہ بھی ہما اے وقت میں کچھ دے گا بلهرسي طورمر كيمة زيا ده في كان خصوصًا بكاح ، شادي وغيره كي تقريبات مين جو كيهد مالياجآ ابرى اس کی بہی حیثیت ہوتی ہے جس کوعوت میں نوتہ کہتے ہیں۔اس آیت میں ہدایت کی گئی ہے كدابل قرابت كاجوحق ا واكرنے كا يحم بيلى آيت ميں ويا كيا ہے ان كوبيحق اس طرح ويا تجا کہ مذان پراحسان جتاہے اور مذکسی ہدنے پر نظر دکھے۔اورجس نے بدلے کی نیت سے دیا کران کا مال دومسرے عزمیز رسشتہ دارے مال میں شامل ہونے سے بعد کیجھ زیادتی ہے کردا ہے تت گا توالنڈ کے تر دیک اس کا کوئی درجہ اور تواب نہیں اور قرآن کریم نے اس زیادتی کے لفظ د السستعيركرك اس كى قباحت كى طرف اشاره كردياكه يدايك صورت سوكى ي مستكة : بديه اوربه دين والي كواس يرنظ ركه ناكداس كابدله طف كايرتوايك ببت مذموم حركت ہے ،جس كواس آيت ميں منع فرما يا كيا ہے ييكن بطور تو دجس شخص مجى جب اس كوموقع ملے اس كى مكافات كرے۔ رسول الشصلي الله عليه وسلم كى عادت تركيف ميى تقى كر يوشخص آي كوكوني بدرييش كريا توايين موقع يرآب بجي اس كوبديه ديت تقد دکذاردی عن عاتب رخ، قرطبی) یا ن اس مکافات کی صورت الیبی مزبنات که دوسراآدمی یحسوس کرے کہ بیمیرے بدیکا بدلہ دے دہاہے۔ ظَهَرَالْفَسَادُ فِي الْهِيرُوالْبَحْرِبِيمَاكَسَبَتَ آيُدِي كَالْتَ السِ مجیں بڑی ہو خوالی جنگل میں اور دریایی توگوں کے باتھ کی کمائی بين يقهم بعض النى عبد القائعة م يرجعون وكا چکھاناچاہتے ان کو کچھ مزہ ان کے کام کا تاکہ دہ پھرآئیں ، تو کہہ

T

سورة روم . ٣ : ٥٧ سيرواني الأتهن فانظروا كيف كان عابت الذين مر عَبْلُ وَكَانَ اكْتُرُهُمُ مُنْ مُنْ مُنْ مُنْ مُنْ مُنْ اللِّينَ ﴿ فَأَقِمْ وَيَعَلَقَ لِللِّن يُر کا بہت ان میں تھے مٹرک کرنے والے ، سوتو سیدھا دکھ اینامینہ سیدھی عَيْرِمِنَ قَبْلِ أَنْ يَا لِيَ يُومُ لِأُ مَرَدً لَهُ مِنَ اللَّهِ يَوْمَعُ راه پر اس سے پہلے کر آ پہنے وہ دن جب کو پھرنا ہمیں اللہ کی طرت سے اس دن صِّنَّ عُوْنَ ٣ مَنْ كَفَى فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ * وَمَنْ عَلَى صَالِحًا لوگ تجدا جدا ہوں گے ، جو منکر ہوا سواس پر برطے اس کا منکن ہونا اور جو کوئی کرنے تھلے کا فَلِا نَفْسِهِمْ يَمْ هَدُونَ ﴿ لِيَجْزِيَ الَّنْ يَنَ امْنُوْ ا وَعَمِلُو سووہ اپنی راہ سنوارتے ہیں ، تاکہ وہ بدلہ سے ان کوچو لقین لاے اور کام کے صَّلِحتِ مِنْ فَضَلِمُ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْحُونِ فَضَلِمُ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْحُونِ فَي مِنْ اینے فضل سے بے ٹیک اس کو بہیں بھاتے انکار والے

خالصةنفسير

رسترک و معصیت ایسی بُری بیزے کم اِن اور تری دلینی تام دنیا ایس اوگوں استرک و معصیت ایسی بُری بیزے کم اِن اَک الله تعالیٰ الله الله تع

Y!

سورة دوم ١٣٠٠ ٥١ ہ شبر کا جواب | احا دیث صحیحہ میں رسول انٹرصلی انٹرعلیہ وسلم کے بیرارشا دات بھی د جود ہیں کہ دنسیا مؤمن کے لئے جیل خاندا در کا فرکے لئے جنت ہے ، اور ہے کہ کا قشر کو اس کے نمیک اعمال کا بدلہ ونیا ہی میں بصورت مال و دولت وصحت و بے دیا جا تاہے، اود مؤمن کے اعمال کا بدلہ آخرت کے لئے محفوظ کر دیاجا تاہے، اور ریے کہ مؤمن کی مثال دنیا میں ایک نا ژک شاخ کی سی ہے، کہ ہوائیں اس کو کمجی ایک طرف کبھی و وسری طرف تجھکا دیتی ہیں، تبھی سیرہا کر دیتی ہیں بہاں تک کہ اسی حالت میں وہ دنیا سے رخصہ مُوجِاتًا ب، اوربيكم أشَدّ النَّاسِ بَلاءً الْأَنْبُيكَاء ثُمَّ الْكَامْتُلُ فَا تُؤَمُّثُلُ، لَعَيْ میں بلامیں سے زیادہ انبیاریر آئی ہیں پھرجو آن کے قریب ہو پھرجو آن کے قریب ہو" يرتمام احا دسي صيحر بظا براس آيت كے مصنمون سے مختلف بين ـ اور عام دنياك مشابرات بھی بہی بتلاتے ہیں کہ دنیا میں عام طور بر متومن سلمان سنگی اور کھیے میں اور کفار فجارعیش دعشرت میں رہتے ہیں۔اگرآئیت مذکورہ کے مطابق دنیا کے مصائب آدکلیفیں شاہوں کے سبب سے ہوتیں تو معامل رعکس ہوتا۔ اس کا جواب بیرہے کہ آبیت غرکورہ میں گنا ہول کومصاتب کا سبب حزور بتلایا ہے رعلتِ تا منته نہیں فرمایا کہ جب کسی پر کوئی مصیبت آنے تو گناہ ہی کے سیسے ہوگی کوئی مصیبیت آسے اس کا گنا ہرگار ہونا صروری ہوبلکہ علم اسباب کا جو دنیا میں دوسراسیب اس کے اٹرکے ظاہر ہونے سے مانع ہوجا تا ہے تواس سبب کا اٹر نطا ہر نہیں ہوتا، جیسے کوئی مہل یا تملیق دوار کے متعلق بیر کہے کہ اس سے اسہال ہوں گے، بیرایتی جگہ چے ہے، مگر بعض او قات سی دوسری دوار، غذاریا ہوا وغیرہ کے اثریا ہمال نہیں ہوتے ہجو دوائیں بخاراً تارینے کی ہیں تعبض اوقات ایسے عواحق بیش آجاتے ہیں کہ اك دوادًى كالترظام بنيس بوتا، خواب آورگوليال كف كريمى نست زمه بين آتى ـ جس کی ہزارول متالیں دنیامیں ہروقت مشاہرہ کی جاتی ہیں۔ اس لے عصل آیت کا یہ ہواکہ اصل خاصہ گنا ہوں کا یہ ہے کہ ان سے مصائب ا آفات آئیں، نیکن بعض او قات دوسرے کھے اسسباب اس کے منافی جمع ہوجاتے ہیں' جن کی وجرسے مصاسب کاظہور نہیں ہوتا، اور نعض صور توں میں بغرکسی گناہ ہے کوئی آفت ومصيبت آجانا بھى اس كے منافى نہيں كيو كر آيت ميں يرنہيں فرما ياكر افركنا کے کوئی تکلیف ومصیب کے کوئی میں ان بلکن وسکتا ہے کرکسی کوئی مصیب

معارت القرآن جلد ششتم

" افت کمیں دوسرے مبت بیش آجائے جیسے انبیار وا ولیار کوچومصیبتیں اور تکلیفیں بیش آتی ہیں ان کا سبب کوئی گناہ نہیں ہوتا بلکہ ان کی آزیش اور آزئیش کے ذریعہ ان کے درجات کی ترقی اس کا سبب ہوتی ہے۔

اس کے علاوہ فترآن کریم نے جن آفات و مصائب کو گنا ہوں کے سبب سے قراد دیا ہے۔ اس سے مراد وہ آفات و مصائب ہیں جو بوری دنیا پر یا بور سے شہر یا بستی پر عام ہوجا نیں، عام انسان او رجا فورا ان کے افر سے دہیے سکیس ۔ ایسی مصائب وآفات کا کا سبب عمو آلوگوں ہیں گنا ہوں کی کزت خصوصاً علانیہ گناہ کرنا ہی ہوتا ہے ۔ شخصی اور انفرادی تکلیف و مصیبت ہیں یہ ضابطہ نہیں بلکہ وہ کبھی کسی انسان کی آزماکش کرنے کے لئے بھی جبی جاتی ہے ، او رجب وہ اس آزماکش میں پور اا افر تاہے تو اس کے ورجا ہوں کے درجا ہوں کے درجا ہوں کے درجا ہوں کے افرادی طور برکسی خص کو مبتلا کے مصیب سے دیکھ کریے نہیں کہا جا اسکتا کہ وہ بہت گنا ہمگا رہے ۔ اس طرح کسی کوخوس عیش بحا فیدت دیکھ کریے نہیں کہا جا اسکتا کہ وہ بہت گنا ہمگا رہے ۔ اس طرح کسی کوخوس عیش بحا فیدت دیکھ کریے تا نہیں لگا یا جا سکتا کہ وہ برا انہا تھا دیکھ کریے تا نہیں رگا یا جا سکتا کہ وہ برا انہیک صالح بزرگ ہے ۔ البتہ عام مصائب و آفات جیسے قبط ، طوفان و مائی کہ وہ برا انہیک صالح بزرگ ہے ۔ البتہ عام مصائب و آفات جیسے قبط ، طوفان و مائی

ا مراض ، کرانی است یار صرورت ، جیزوں کی برکست م برط اسبیب نوگوں کے علائیہ گناہ اورسر کشتی ہوتی ہے۔

فاکن کا : ۔ صرت شاہ دلی النّدُرِیّ نے تجہ النّدالبا لغربیں فرمایا کہ اس دنیا ہے جہ سے خروست ریامصیبت وراحت ، مشقت وہولت کے اسباب دوطرح کے ہیں ۔
ایک ظاہری ، دومرے باطنی ، ظاہری اسباب تو دہی مادی اسباب ہیں جوعاً دنیا کی نظاہری اسباب انسانی اعجال اوران کی بناء پر نظریں اسباب سجھے جاتے ہیں اور باطنی اسباب انسانی اعجال اوران کی بناء پر فرشتوں کی امراد ونصرت با آن کی لعنت و نفرت ہیں ۔ جیسے دنیا ہیں بارس کے اسباب المن فلسفہ واہل تج بہ کی نظر میں ہمندرے استحفے دالے بخارات (مان سون) اور تھر اور پر کی بہوا ہیں بہونے کو ان کا منجمہ ہونا ، بھر آفتاب کی شعاعوں سے بچمل کر برس جانا اور پر کی بہوا ہیں بہونے کو ان کا منجمہ ہونا ، بھر آفتاب کی شعاعوں سے بچمل کر برس جانا ان دونوں ہیں کوئی تصاد نہیں ، ایک چیز کے اسباب متعدوم ہوسکتے ہیں ۔ اس لئے ہوں کو فرشتوں کا عمل بتلا یا گیاہے ۔ درحقیقت ان دونوں ہوسکتا ہے کہ ظاہری اسباب ہو بارش امیداور مزورت کے مطابق ہوا ورجہاں یہ دونوں اسباب جمع من ہوں ورجہاں یا دسش کے دوقوع میں اختلال رہے ۔

سورة روم ۲۰: ۵۲ حفزت شاه صاحب نے فرمایا کہ اسی طرح دنیا کے مصائب وآ فات کے کھے اس طبعیہ ما تربیر میں جونیک دید کونہیں سیجانتے ۔ آگ جلانے کے لئے ہے وہ بلا امتیازمتقی اورفاحبسر کے سب کوجلائے ہی گی بجزاس کے کسی خاص بسرمان کے ذرایعہ اس کواس عمل سے روک دیا جائے ، جیسے ناریزود ابراہیم علیہ السلام سے لئے ، تر دومسلام بنا دیجی، یانی وزنی چیزوں کوعرق کرنے کے لئے ہے وہ میں کام کرے گا، اسی طرح دوسرے عنا صرجو خاص خاص کاموں کے لئے بن اپنی مفوصہ خدمت میں تکے ہوتی ہی اسا سطیعیہ کسی ا نسان کے لیے راحت وہہولت کے سامان بھی فراہم کرنے ہیں ، اور کسی کے لئے مصیب ا منی اسباب ظاہرہ کی طرح مصاتب دآفات اور داحت وسہولت ہیں مؤفرانسان سے اپنے اعمال خیروسٹر بھی ہیں۔ جب و ونوں ظاہری اور باطنی اسباب کسی فسنسر دیا جاعت كى راحت وآرام ا درسهولت و نوش عيشى پرجمع بوجاتے ہيں تواس فرد ماجماعت كو دنیایس عیش دراحت محل طور برحاس موتی ہے جس کا مشاہرہ ہر شخص کرتا ہے۔اس کے بالمقابل جس فرديا جاعت سے لئے اسسبا ب طبعيه ما دّىيى مصيبت وآفت لارہے بول اوراس کے اعمال بھی مصیب وآ نت کے مقتضی ہول تواس کی مصیب فے آفت مجى محمل ہوتی ہے جس کا عام مشاہرہ ہوتا ہے۔ ا در تعبی اوقات ایسانجی ہوتا ہے کہ اس جحتے ہیں، گراس سے اعمالِ حسنه باطنی طور ررداحت دسکون کے مقتصنی ہیں الیسی صور میں براسیاب باطنہ اس کی ظاہری آفتوں کو دور کرنے یا کم کرنے میں صرف ہوجاتے ہیں اس کی عیش را حت محل طور برسامنے نہیں آتی۔ اسی طرح اس کے برعکس تعین اوق اسباب ما در عیش دارام کے مقتصی ہوتے ہیں مگراساب باطنیہ بعنی اس کے اعمال ترک

بہونے کی وجہ سے ان کا تفاضا مصیب وآفت لانے کا ہوتا ہے، تو ان متصادتقاضو^ل کی وجہسے نہ عیش وراحت بمثمل ہوتی ہے اور نہبت زیا رہ مصیبت و آفت ان کو

اسی طرح بعض او قات ما دی اسباب طبعیه کوکسی بڑنے درجہ کے نبی ورسول ادر ولی ومقبول کے لئے ناساز گار بناکراس کی آزئیٹ امتحان کے لئے بھی استِعمال کسیاجاتا ہے،اس تفصیل کو سمجھ لیاجا ہے تو آیات قرآن اور مذکورہ احا دست کا باہم ارتباط اور اتفاق واضح بهوحاتا ب تعارض وتصاد ك شبهات رفع بهوجات بي والتدسجان وتعالى علم (202)

سوره روم ۱۳۰۰ ۵۲

مصاتب کے وقت ابتلاء وامتحان مصائب وآفات کے ذریعیجن لوگوں کوان کے گذاہوں اسراء وعذاب میں منسرق ۔ ایک کچھ سزادی جاتی ہے ،اورجن نیک لوگوں کورفع درجا یا منزاء وعذاب میں منسرق ۔ ایک کچھ سزادی جاتی ہے،اورجن نیک لوگوں کورفع درجا باکھارۃ سینات کے لئے بطورا متحان مصائب میں مبتلا کیاجا تاہے، طاہری صورت ابتلاء کی ایک ہی سی مجوتی ہے، ان و ونول میں فرق کیسے بیچا ناجائے ؟اس کی بیچان حضر شاہ و کی الدین ہے کہ جو نیک لوگ بطورا بتلاء وامتحان کے گرفتار مصائب ہوئے ہیں الشر تعالی ان کے قلوب کو مطابق کر دیتے ہیں ،اور وہ ان مصائب و آفات پراہے ہی راضی ہوتے ہیں ،اور وہ ان مصائب و آفات پراہے ہی راضی ہوتے ہیں جو تے ہیں جو تے ہیں اس کی برایشن پر با وجود تکلیف محسوس کرنے کے داخی ہوتا ہے ، بلکہ اس کے لئے مال بھی خرچ کرتا ہے ،سفارشیں ہتیا کرتا ہے ۔ بخلا ف اُن گہ گار ی^ل ہوتا ہے ، بلکہ اس کے لئے مال بھی خرچ کرتا ہے ،سفارشیں ہتیا کرتا ہے ۔ بخلا ف اُن گہ گار ی^ل کے جو بطور مزار مبتلاء کے جاتے ہیں ان کی پرایشانی اور وجود کی حد نہیں رہتی ، بعض اوقات نامت کی مراہی کے تعرب کی جو بطور مزار مبتلاء کے جاتے ہیں ان کی پرایشانی اور وجود کی حد نہیں رہتی ، بعض اوقات نامت کی مراہی کی کے جو بطور منزاء میں بلکہ کھارت کو تک میں کے بیون خواتے ہیں ۔

سیدی بیم الاتمت تھا نوکی قدس تمرؤ نے ایک بہجان یہ بتلائی کہ جس مصیبت کے ساتھ انسان کو النڈ تعالیٰ کی طرف توجہ اپنے گنا ہوں پر تنبہ اور توبہ واستغفار کی رغبت زیادہ ہوجائے وہ علامت اس کی ہے کہ یہ قہر نہیں بلکہ جسسر اور عناست ہے ، اور جس کو یہ صورت نہ بنے بلکہ جزع و فرزع اور معاصی میں اور زیادہ اہنماک بڑھ جائے وہ علامت قبراتہی اور غذاب کی ہے۔ والنڈ اعلم

وَمِنْ الْمِيْتِ الْمُنْ الْمِيْتِ الْمُنْ الْمِيْ الْمِيْ الْمِيْلِيْ وَ الْمِيْلِيْ الْمِيْلِيْ الْمُنْ الْمُنْ الْمِيْلِيْ الْمُنْ الْمُنْ

لي

دت القرآ ل جلد ننگارتھ اور ی ہے ہم پر مرد ایمان چلاتا بی برائیس محر ده اتحاق بس بادل کو محریسلادتیا براس کوآسان برجر طرح جاری وَيَجْعَلُهُ كِسَفًا فَتَرَى الْوَدَقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلْلَهُ فَاذا أَصَابَ اور رکھا ہواس کو ہم بہتم کو تو دیکھے میں کو مکتابی اس کے بے میں سے محرجب اس کر بہنجا م ہےجس کو چاہتا ہولیتے بندول میں تب ہی وہ لگتے ہیں توسٹیاں کرتے الآل الشركت الله كيف يحى الاتم ف بعل من ودیکھالے اللہ کی ہر بانی کی نشانیاں کیونکر زندہ کرتا ہی زبین کو اس کے مرکتے بیکھے ، بینک دین بو تردون کوزنده ترفی دالا اور وه برجیز کرسکتا ہے، اور اگر ہم ت سلناريحافر آدم مُصَفَّى الظلوامِن بَعْن هَا لَكُوْ الْمِن بَعْن الْمُعْنَ وَرَدَ بجس ایک ہوا محرو سکھیں وہ تھیتی کہ کرز دیر گئی تولکیں اس کے سکھے ناشکری کرنے سوتوسنا بہیں سکتا مرّ دول کو اور بہیں شناسکتا بہروں کو پیجار ناجب کہ چھیریں مُنْ بِرِيْنَ ﴿ وَمَا أَنْتَ إِلَى الْعُلَى عَنَ صَلَاتِهِ مُ إِنْ تَنْمِيْ بیکھ دے کر ، اور نہ تو راہ مجھاتے اندھوں کوان کے بھٹکنے سے ، توتو مشنانے الرَّمَن يُوعِنُ بالنِّنَافَهُمُ مُسْلِمُونَ ﴿ اسی کوچو لقین لائے ہماری باتول پرسورہ مسلمان ہوتے ہیں

م الله

١٣٠٠ حورة روم ١٣٠٠ ٢٥٥

معارت القرآن جلد ششتم

تعارضة تفساير

ا درانشرتعالی کی رقدرت و وحدت و نعمت کی نشاینون میں سے ایک یہ رکھی ہے کہ وہ رمارش سے پہلے) ہوا دُن کو سمجیجا ہے کہ وہ دمارش کی خوش خبری دہتی ہیں ریس ان کا بھیجٹ ایک توجی خوش کرنے کے لئے ہوتاہ) اور دنیز اس واسطے تاکہ راس کے بعد بارش ہواوں تم کواپنی داس ، رحمت (بارش کامزہ میکھا دے ربینی بارش کے فوائدعنا بیت فرما دے ، اور دنیزاس واسطے ہوا بھیجتا ہے تاکہ داس سے ذریعے سے بادبانی اکشتیاں اس کے حکم سے جلیں اور تاکہ داس ہواکے ذریعہ سے بواسطہ کشتی دریا کے سفرسے) تم اس کی روزی تلاش کرد دلینی کشتیون کاچلنا ا درر د زی تلاش کرنا د د نون ارسال ریاح سے حاصل ہوتے ہیں اول بلا دا سطم اور ثانی بواسطة تشی سے اور تاکہ تم مشکر کر داور زان دلاک بالغراور نعمہ سابغه يربجى ييشركسن تعالى كى واست كريان كرتي بن العنى مثرك اورمخالفت رسول اور ایزار مؤمتین وغیره، توآب اس پرغمگین منهول، کیونکه مهم عنقریب ان سے انتقام لینے والے اوراس میں ان کو مفلوب اورائل تی کوغالب کرنے والے ہیں جلساکہ سہلے بھی ہوا ہے جنامجے ایم نے آپ سے پہلے بہت سے سینمیران کی قوموں کے پاس بھیجے اور دہ ان کے ں دلائل د شورت حق کے) لے کرآت رجس پر اجھنے ایمان لائے اور انعظے مذلائے ہو ن دمخالفتِ اہلِ حق ہیں ا دراس انتقام میں ہم نے ان کومغلوب اوراہلِ ایمان کوغاب كيا) اورايل ايمان كوغالب كرنا رحسب وعده وعارت) بهايد زمه تقاده وانتقام عذا البي تقا ادراس مين كفاركا بلاك بهونا يا ان كامغلوب بهوناس ا درمسلمانون كابح جانانك غالب آناب يغرض اسى طرح ان كفارس انتقام لياجات كا، خواه دنيا مين خواه بعدموت اور يمضمون تستى كابطور حبله معترحته كے تفاآكے ارسال ریاح کے بعضے آثار مذكورہ بالاجمال كى تفصييل ہے كە) النزايسا (قادر وحكيم دمنعم) ہے كروہ ہوائيں بجيجتا ہے كھروہ (موايد) بادوں کورجو کہ مجھی ان ہوا وں سے پہلے بخارات اٹھ کر بارل بن چکتے ہیں اور کہی دہ بخارا ا بنی ہواؤں سے بلند ہوکر باول بن جاتے ہی محروہ ہوائیں بادلوں کوان کی جگہ سے تعسنی فضائے آسمانی سے یازمین سے اتھاتی ہیں بھر اللہ تعالیٰ اس ربادل اکو د کبھی تو اجس طرح جا ہماہے آسان دلین فضائے آسانی میں تھیلادیتاہے ،اور در کبھی اس کو تکریے کے کارے كرديباب دبسط كامطلب يرب كرجمت كرك دورتك كصيلا ديناب اوركيف يَشَاء كا

11

سوره روم. ۳: ۳۵ طلب پیه کوکه بھی تھوڑی درور تک کبھی بہت ترور تک ادر کیئے اکا مطلب پیرکہ جستی نهيس بهوتا متفرق رمبتا ہے بچر د دونوں حالت ميں تم مين کو د سکھتے ہو کہ اس ابا دل ا کے اندرسے تکلتا ہی دمجتے بادل سے برسنا تو بکٹرت ہے اور لعبض موسموں میں اکثر بارشس متفرق برلیوں سے بھی ہوتی ہے) پھر رباول سے بھلنے کے بعد اجب وہ رمینے) اینے بندوں میں سے جسکو جا ہے ہیونجا دیتا ہے تو بس وہ خوشیاں کرنے لگتے ہیں اور وہ لوگ قبل اس کے کہ ان کے خوش ہونے سے پہلے اُن پربرسے دیا لکل ہی انا المید (ہورہ) تحقے ریعن ابھی ابھی ما امید تھے اور ابھی خوش ہوگتے۔ اور ایسا ہی مشاہرہ بھی ہے کہ انسان کی کیفیت ایسی حالت میں بہت جلدی جلدی بدل جاتی ہے) سور ذرا) رحمت النی ربین بارش سے آتار رتو) دیکھوکہ اسٹر تعالیٰ راس کے ذریعہ سے) زمین کواس کے مردہ ریعی خشک) بونے سے بعد کس طرح زندہ دلینی تروتازہ)کرتا ہے داور یہ بات نعمت ا ور دلیل وحدت بونے کے علاوہ اس کی بھی ولیل ہے کہ النٹر کومرنے کے بعد و وبارہ زنڈ كرتے ير يوري قدرت ہے۔اس سے معلوم ہوتا ہے كہ جن خدانے مروہ زمين كوزندہ كرديا ؟ مجے شک بہیں کہ وہی زخدا ، مردول کو زندہ کرنے والاہے دلیں عقلاً ممکن ہونے میں دونول برابرا ورقدرت ذاتی دونول سے ساتھ برابر اورمشاہرہ میں دونوں کامول کا سکساں ہونا یسب چیزیں اس استبعاد کو دفع کرنے والی ہیں کھرنے کے بعد محفرکیے زندہ ہول گے) اوروه برحب يزبر قدرت ركھنے والا ہے ربیمصنمون احیار مونی کا بمناسب حیات ارص علة معترصنه تھا) اور را کے بھر بارش دریاح کے متعلق مضمون ہے ہجں میں اہلِ غفلت کی ناست كرى كابيان ہے۔ يعن اہلِ غفلت ايسے حق ناستناس وناسياس بين كراتني بڑى برى نعمتوں کے بعد) اگر سم ان برا در (قسم کی) ہوا جلا ہیں بھر داس ہواسے) یہ لوگ کھیتی کوزشک اور) زرد دیجیس رکداس کی سبزی اور شادا بی جاتی رسی، توبیاس کے بعد نامشکری کرنے تیس دا در محیلی نعمتیں سب طاق نسسیال میں رکھ دیں) سو رجب ان کی غفلت اور ناسٹ کری پراقداً آ اس درج میں ہے تواس سے بیجی ثابت ہوا کہ سے بالکل ہی ہے حس میں توان کے عدم ایمان د عدم تدبّر برغم بھی بے کار ہی کیونکہ) آپ مرکدول کو رتق نہیں سُنا سے اور بہروں کو رکھی) آواز نهین سُنا سے ترخصوصًا) جب کہ بیٹے بھر کرحل دیں دکہ اشارہ کو بھی نہ دیکھیں) اور داک طرح)آب دالیے) اندھوں کو رجو کہ بصیر کا تنباع نہ کریں اُن کی بے راہی سے راہ پرنہیں لاسے ربینی یہ تو ماؤف الحواس والحیاوہ کے مشابہ ہیں،آیہ توبس ای کوسنا سے بین جو ہماری آیتوں کا بیشن مكت إلى داور) مجروه ما نورجي المن داورجديد لوك فردول برول اندهو كمت بن محران لوقع ايما مي ركفت اورم مي



معارف القرآن حبد شتم

محارف ومسائل

فَانْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِينَ آجُرَمُوا وَكَانَ حَقًّا عَكَيْنَا نَصْرًا لَهُ وَمِن لَنَ مُ ہم نے مجرموں کا فروں سے انتقام ہے لیا اور ہمارے ذمہ تھا کہ ہم مؤمنین کی مدد کرتے ، اس آیت سے معلوم ہوا کہ مومنین کی مدد کرنا النڈ تعالیٰ نے اپنے فصل سے اپنے ذمہ لے لیا ہی اس کا نقاضا بظاہر یہ تھاکہ سلمانوں کو تفارے مقابلہ میں بھی شکست نہ ہو، مالانکہ ہے واقعات اس کےخلات بھی ہوئے ہیں اور ہوتے رہنے ہیں۔اس کا جواب خو داسی آیت ہیں موجود ہے کہ مؤمنین سے مراو وہ مجاہرین فی سبسل النّہ ہیں جو خالص النّہ کے لئے کفار سے جنگ کرتے ہیں ایسے لوگول کاہی انتقام الشرتعالی مجرمین سے لیتے ہیں اوران کوغالب کرتے یں ہماں کہیں اس کے خلاف کوئی صورت بیش آتی ہے وہاں عمو یًا محاہدین کی کوئی لغزش کی مشکست کا سبلب بلتی ہے، جلے عزودہ اُتحد کے متعلق خود قرآن کرتم ہیں ہے اِڈیت سُنَزَتْهُ مُ الشَّيْظِ بِبَعْضِ مَا كَسَبُو اللَّهِ عَنْ شِيطان نِهِ ان لوكوں كولغزش دے دى ا اور فتح عطا فرماديتے مېں،جبكهان كواپنىغلطى رتنبة ہوجائے جيسانخ. وَهُ أَحَدَ وسرکشی کے عادی ہوں ، اور غلبہ کفار کے وقت بھی اپنے گنا ہوں سے تا سب مدہوں وہ اس دعره میں شامل نہیں' وہ نصرت اہمیہ کے منبحق نہیں ہیں۔ یوں النز تعالیٰ اپنی رحمت سے بغیر کئی ہتحقاق کے بھی نصرت وغلبہ عطا فرما دیتے ہیں،اس کی امیدر کھنا اور اس دعار ما مکنا ہرحال میں مفیدسی مفیدہے۔

قَاتَنَاقَ لَا تَسْتَمِعُ الْمُتُوقِينَ ، اس آيت كامفهوم بيه كرد ال ونهيس سناسخة رها يد معامله كرد و وندول كالام سنة رها يد معامله كرد و وندول كالام سنة بين يانهين ادرع مرد و وندول كالام سنة بين يانهين السمستله كي مختصر تحقيق معارقت القرآن سورة ممل كي تفسيرين گذر حكي ہے ، ادر محل تحقيق احقر كے مستبقل دسالہ بزبان عربی میں ہے جس كانا تم يحيل الحبوب ماع إلى القبول ہے ، ادر جواحكا القرآن بزبان عربی كے حزب فاس كاجز موكر شائع ہو جكا ہے ۔

- بنبنبنبنبنبنب

سورة روس ں دن قائم ہو کی قبا צו כט ں دن کا ندآنے کا آن گہنگاروں کو تصور ہے ، اور ہم نے بھلائی ہے آدمیوں کے واسطے اس مشرآن كالمُمْثَارُ وَلَوْنَ جِعْتَهُمْ بِالْهِ لِنَّهُ لِيَّالِيْنَ كَفَ مشل اورجو تو لائے ان کے پاس کونی آمیت تو صرور کمیں ٥٥ كن لك يَضِعُ الله عَالِقُلْوَر تے ہو ، یوں بر لگا دیتاہے اللہ ان کے دلوں پرجو سجھ المامران علاللوح والمستخفة النان المروقور نهیں رکھنے ، سوتو قائم رہ بیٹک الٹرکا وعرفھیک ہوا دراکھاڑنہ دیںتھ کودہ لوگ ولفین نہیں لاتے

9

24P

سوره روم. ۳:

35 5 DE

رت القرآن حلد

التدايسا ہے جس نے تم كونا تواني كى حالت ميں بنايا رمراداس سے ابتدائي كا بچین کی ہے) بھر راس نا توانی کے بعد توانانی راجتی جوانی عطاکی بھر راس) آوا نائی کے بعد ضعف اور بڑھایا کیا زاور) وہ جوچا ہتاہے بیدا کرتاہے اور وہ زہرتھ رف کو ہجانتے والا دادراس تعرّفت کے نافذ کرنے ہر) قدرت رکھنے والاہے رئیں جوالیسا قا در ہواس کو دوبارہ سیدا کرنا کیا مشکل ہے۔ یہ تو بیان تھا بُحث کے امکان کا) اور را گے اس کے وقوع کا با ہے بینی ہج*یں روز قیا مست ہوگی تحب*رم ربینی کا فر) لوگ روہاں کی ہول وہ بیب^{ے ہ}یریشا ہی کو د سچھ کر قبیا مت کی آمد کو غایت درجہ نا گوار سمجھ کس قسم کھا مبیقیس کے کہ ز قبامت ہمت جلدی آئتی اور) وہ لوگ رائین ہم لوگ عالم برزخ میں) ایک ساعت سے زیادہ ہنیں ر ربین جومیار قیامت کے آنے کی معترر تھی وہ بھی پوری مز ہونے یا لی کہ قیا بہنجی جیسا مشاہرہ کیاجا تاہے کہ اگر بھیانسی والے کی میعاد ایک ماہ مقرر کی جاسے تو جب جهینه گذر چیچ گا تواس کوایسا معلوم ہوگا کہ گویا جہینہ نہیں گذراا درمصیب جلدی آگتی بحق تعالی کاارشاد ہے کہ) اسی طرح یہ لوگ رونیا میں اُلٹے چلاکرتے تھے دلین حیں طرح بہاں آخرت میں قیامت کے قبل از وقت آجانے برقسیں کھانے لگے، سی طرح دنیاس قیامت کے دجودہی کے منکر تھے اردندانے برقسیں کھایا کرتے تھی ان کو حال ہے) وہ زان مجرمین کے جواب میں کہیں گے کہ رئم برزخ میں میعادسے نہیں رہے، تھارا یہ دیجویٰ غلط ہے بلکہ تم تو رمیحا د) نوسٹ تنہ خدا دندی کے موا نوخ قیامت کے دن تک رہے ، سوقیامت کادن یہی ہے ، رجومیعادمقرر تھی برزح میں رینے کی ولیکن دوجراس بات کی کہ قیامت کومیعا دسے پہلے آیا ہواہمجتے ہویہ ہے کہ تم رونیامیں قیامت کے وقوع کا)یفین دا وراعتقادی مذکرتے تھے رہلکہ تکذیب وانکار لياكرتے تھے اس انكاركے وبال ميں آج پرلشانی كاسا منا ہوا اس وجہ سے گھير اكر بيہ خیال ہواکہ ابھی تومیعاد پوری بھی نہیں ہوئی اور اگر تصدیق کرتے اور ایمان لے آتے تواس کے وقوع کوجلدی مذہبھتے بلکہ یوں جائے کہ اس سے بھی جلدی آجائے ،کیونکہ انسان جب اس سے کسی راحت دارام کا دعدہ ہو توطبعی طور براس کا جلدی آنا جا ہتا؟ ا در انتظار شاق ا در اس کی مرت طویل معلوم ہوا کرتی ہے۔ جنیسا صربیت میں بھی ہے

11

كافرقبرس كهتاب رب الاتقام السّاعة اورمؤمن كهتاب رب أقسم السّاعة، منین سے اس جواب سے بھی جو میہاں مذکورہے کہ مقام بر زخ کو انحوں يهمر تھے ہوتا ہے کہ وہ مشتاق تھے، اس لئے جاہتے تھے کہ جلد آجا ہے) غرض اس روز ظالموں دیعنی کا فروں کی بریشانی اورمصیبت کی بیرکیفیت ہوگی کہ ان ہرکوان کا رکسی كالمجهومًا سجا) عذر كرنا نفع منه ديه كا دريذاً ن سے خدا كي خفكى كا تدارك جا ہا جائے گا دليني الر کا موقع مذ دیاجائے گا کہ توبہ کرکے خدا کو راضی کرلیں) ا درہم نے لوگول رکی ہرایت) کے ے عمدہ دا ور بحبیب مصالین رصرورہ ، بیان کتے ہیں رجوا پنی بلاغت اور کمال کی وجہ سے ہتھنی اس کو ہیں کہ ان کا فروں کو ہداست ہوجاتی، تگران لوگوں نے غابیتِ عنا دسے ااوراس سے منتفع پذہرے) ادر دقرآن کی کیا شخصیص ہے ان توکوں کا عنا درج براه ها است كري اكر دوسرآن كے علاوہ ال معجزات سے جن كى يہ خود فرمائسز ب رایعنی سیخهرصلی الشرعلیه و هم اورمؤمنین جوآیات تشریعیه و تکونی یق کرتے ہیں) نرہے اہل باطل ہور سینمہر کوسحر کی جمت لگا کرصہ یق کرنے سے اہل باطل ہیں اوران لوگوں کے اس عنا دکے بالسه میں اصل بات بیہ ہے کہ ہجو لوگ رہا وجو دسمرر نشانیاں اور دلائل حق ظاہر ہو یقین مہیں کرتے داور شاس کے عال کرنے کی کوسٹسٹن کرتے ہیں) انٹرتعالیٰ ان کے دلول یر بوں ہی جبر کر دیا کرتا ہے رحبیسا کہ ان کے دلوں پر ہورہی ہے ، بیجی روزانہ استعبراد قبولِ حق كي مضمحل وضعيف بهوتي جاتي ہے، اس لتے انفتياد ميں ضعف اور عناديس قوتت بر سبی جاتی ہے اسورجب برایسے معاندین بیں توان کی مخالفت اورا غرام رسانی اور بر کلامی وغیره میرا آب صبر کیجتے بیشک الله تعالیٰ کا وعده رکه آخر میں یہ ناکام اوراہاج ق كامياب موں سے سياہے (ده وعده ضرور داقع بوكايس صبر ديخل تحور ہے ہى دن كرنا یرط تا ہے) اور رہ برلفتن لوگ آب کو لے برداشت نزکرنے یا تیں رایعتی ان کی طرف سے خواه کیسی بی بات بیش آن مگرانسا مر بهرکداب برداشت مذکرین ؛ بيا

270

سورة روم. ۳۰:۲۰

معارت القرآن جلد شتم

معارف ومسائل

اس سورت کابر احصہ منکرین قیا مت کے شہات کے ازالہ سے متعلق ہے جب کے خافی اندان کی قدرت مطلقہ کاملہ اور حکمت بالغہ کی بہت سی آیات اور نشا نیاں دکھلا کر غافل انسان کو خفلت سے بیدار کرنے کا سامان کیا گیا ہے۔ مذکورا لصدر بہلی آبیت میں ایک نے انداز سے اس مضمون کا اشبات ہے وہ یہ کہ انسان اپنی طبیعت سے حبلہ با زواقع ہوا ہے اور سامنے کی چیزوں میں لگ کرماصنی و مسقبل کو مجھلاد سے کاعا دی ہے، اور اس کی ہی عاد اس کو بہت سی مہلک فلطیوں میں مستقبل کو مجھلاد سے کاعا دی ہے، اور اس کی ہی عاد کی قوت اپنے شباب پر ہموتی ہے، یہ اپنی قوت کے نشہ میں کسی کو کیے تہیں ہجھتا، حد و دہر قائم رہنا اس کو دو کھر محلوم ہو تا ہے۔ اس کو مشنبہ کرنے کے لئے اس آبیت میں قوت وضعف رہنا اس کو دو کھر محلوم ہو تا ہے۔ اس کو مشنبہ کرنے کے لئے اس آبیت میں قوت وضعف کے اس کو ایک کے استدار سے انسانی وجو دکا ایک محل خاکہ بیش کیا گیا ہے جس میں دکھلا یا ہے کہ انسان کی ابتدار بھی کمز ور ہے ، اور انتہا رہی ، در میان میں بہت تعقیٰ د فوں سے لئے اس کو ایک کی ابتدار بھی کمز ور ہے ، اور انتہا رہی ، در میان میں بہت تعقیٰ د فوں سے لئے اس کو ایک ابتدار نے دالی کمز دری سے بھی غافل نہ ہو، بلکہ اپنی اس کمز وری کے مختلفت در جات کہ بیشہر اور آنے دالی کمز دری سے بھی غافل نہ ہو، بلکہ اپنی اس کمز وری کے مختلفت در جات کہ بیشہر اور آنے دالی کمز دری سے بھی غافل نہ ہو، بلکہ اپنی اس کمز وری کے مختلفت در جات کہ بھی است دی کھے جن سے گذر کر یہ قوت و سیاب تک یہو بخاہے ۔

خلفکھ میں ضعف ہیں انسان کو بہی سبن دیا گیا کہ اپنی اصل بنیا دکو دی کھی تار را اسل بنیا دکو دی کھی تار را سبنی مند علی میں ضعف ہیں مند علی ہے جان ہے جان ہے ضعور، ناپاک، گھنا وُلی چیزہے ہاں کھنا فئے قطرہ کو ایک خون بخری صورت میں میں غور کرکہ کس کی قدرت و محمت نے اس گھنا فئے قطرہ کو ایک خون بخری مورت میں کھرخون کو گوشت کی صورت میں بھراس گوشت کے اندر ہڈیاں بوست کرنے میں تبدیل کی میں بھراس کے اعتفاء و جواج کی نازک نازک میں بنائیں کہ یہ ایک جھوٹا سا و جو دالک علی بھرتی فی کھرتی فی کھرتی فی کھرتی فی کھرتی فی کہ ہوئی ہیں۔ میں بھرتی فی کھرتی اس کے وجو د میں خال میں یاس کی تخلیق و تکوین بھی کسی بڑے و درکشا ہے میں ہوئی یا در فو جسنے اسی تنگ و تاریک جگر میں بطن ما در میں خال یا تے ہوئے دور تب اور و در تبا رہوا۔

ثُمَّلِالسَّبِینِ کَیْسَرَیُ ، بچرا سُرْتعالیٰ نے ان کے ظہور کے لئے رہستہ آسان فرما دیا اس عالم میں آمے توان کی شان بہ تھی کہ آنحو بچکٹر مِین بھلون و مقاتیکٹر لَا تَعْلَمُونَ

سورة روم، ١٠٠٠ بْتَا، لِينْ تَهْدِينَ عِم ما درسے الله تعالى فان ماست بن كالاكهم كچونه جانتے تھے، اب ت نے تعلیم و تلقین کا سلسلہ شروع کیا، سے پہلا ہزرونے کا سکھلایاجی سے مال ب متوجة بوكراس كى يجوك بياس ا وربر وكليف كودود كرنے يرلگ جائيں - يحر مبونتول ، سوڑوں کو د باکر مال کی جھاتیوں سے دودھ تکا لنے کا ہنر سکھلایا ہیں سے وہ اپنی غدا۔ عال کر ہے یس کی مجال تھی جو اس لا ایعقل سے کویہ دونوں مہز سکھا دے جو اس کی نوجودہ ساز ضرورتوں کی کفالت کرتے ہیں، بجزاس قدرت کے جواس کی تخلیق کی مالک ہے۔ ابضعیف بحته ب ذرا بوالگ جاے تو میز مرده بوجات، ذرا سردی یا گرمی لگ جات تو بها ربوجات ىذابىنى كى صنرورت كومانك نسكتا ہے، ىذكى مىكلىفت كودود كرسكتا ہے - يہاں سے طلتے اورجوانی کے عالم تک اس کی تدریجی منازل تک غور کرتے جائیے تو قدرت حق جل شادہ ايسة ظيم شابركارسا من آت كالرعقل حيران ره جائے كي-ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ ضُعْفِ قَوَّةً ، اب يه قوت كى منزل مِن بهو يخ توزمِين آسان قلابے ملانے لگے، جا ندا در درم کے برکمٹ محینیکنے لگے، بحر درمراینے قبضے جانے لگے، اپنے مای وستقبل سے غافل ہوکر متن آشک مِنا اَقْدَع اَن اِسم سے زیارہ کون قوی ہوسکتا ہے) کے نعرے لگانے تھے۔ پہاں تک کہ اسی قرت سے نشہ میں اپنے بیداکرنے والے کو بھی مجتول کے ادراس کے احکام کی بیروی کو بھی ۔ مگر فقررت نے اس کو بیدار کرنے کے لئے نرمايا: - ثَمَّجَعَلَ مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ ضُعُفًا وَشَيْبَةً ، كَه غَافل إخوب مجملك مرير قوت تيري چندروزہ ہے۔ محصواسی ضعف کے عالم کی طرف اولتا ہے، اوراسی تدریج سے ضعف برابها سروع بوگاجس كا اثرايك وقت كے بعدستية بالول كى سفيدى كى صورت ظاہر ہوگا۔اور کھرسب ہی اعصنا ، وجواہے کی شکل وصورت میں تبدیلیاں لاتے گا۔ دنیا کی تا یخ اور دوسری تنایس نهیس خو داین وجودیس تشخی برتی اس محفی تخریر کویژه و تواس تفین سے سواکوتی چارہ کارندر بوگاکہ یک تھائے تا تا تا تا تھ تھ اٹھ اٹھی ٹیون کہ یہ سب كارسازى اس رب العزت كى سے دبيراكرتا ہے جوجا ہتا ہے، جس طرح جا ہتا ہے اورکم میں بھی سے بڑاہ اور فذرت میں بھی۔ کیا اس سے بعد بھی اس میں کچھٹ بہ کی تنجاکش وہی كه وه جيب چاہے ترووں كو دوباره بھى زنده كرسكتاہے۔ ا کے پھرمنگرین قیامت کی مغو کوئی اوران کی جہالت کابیان ہے، دَیَوْ ثُمْ تَفْتُو مُ السَّاعَةُ يُقْتِدِهُ الْمُجْرِمُونَ مَا لَبِنُوْ اغْيُرَسَاعَةٍ " يَين صِ روزقيامت قَاعَهُ وَكُلُّ ا توبدمنكرين قبامت اس وقت كے جولناك مناظر سے مرہوش جوكريق مي كالكين كي

ت القرآل جا سورة لدم ١٣٠ م توایک گھڑی سے زیادہ نہیں رہا بوكيونكه ان كى دنيا آدام وعيش سے گذرى تھى اوداب مصابت شديدہ انسان کی طبعی عادت ہے کہ راحت کے زمانے کو بہت مختصر بچھاکر تاہے اس لیے ہ كهاجائين محے كردنيابين تو ہمارا قيام بہت ہى مختصر ايك كھڑى كا كھا۔ ادرسيجي احتال ہے كماس قيام سے مراد قراد ربرزخ كا قيام بورا ورم بهوكهم توسيجه يخطي كم قبريعن عالم برزخ بن قيام بهت طويل بهوگا اور قيامت بهت زه ے بعدات کی، مرمعاملہ برعکس ہو گیا، کہ ہم برزخ میں تھوڑ ہے ہی دیر تھرنے بانے تھ رقبامت آجمی اور میجلدی آنا ان کواس بنا بر محسوس بوگا که قیامت میں ان کے لئے نی دراحت کی چرز تو تھی نہیں،مصیب ہی مصیب تھی۔اورا نسانی فطرت یہ بوک سيبت آنے كے وقت بچھى راحت كے زمانے كومبت مختصر سمجھنے لكتا ہے ادركافر و رجے قبر دبرزے میں بھی عذاب ہوگا گرقیامت کے عذاب کے مقابلہ میں وہ بھی جہتے بهت مختصر ایک گھڑی کا تھا۔ نی جھوٹ بول سے گا؟ اولیں کے کہ ہم تو دنیا میں یا قرمیں ایک گھڑی سے زیادہ ہیں رح ایک دومسری آیت بین شرکتین کا یہ قبل نزکورہے کہ وہ قسم کھاکا شرك بهيل تنصح والله وتبنا ما كنتا مشوكان وجرير ب كفيتري رب العالمين في عدالت قائم موكى وه سب كوازادى دين كے كه جوجا ہے بيان دے ، جھوط بولے یا سے بولے کیونکہ رب العرب کو ذاتی علم بھی پورا پورا ہے، اور عدالتی تحقیقات سے نیے وہ ان کے افراد کرنے مذکرنے کا محتاج ہنیں، جب انسان جھوٹ یو ہے گاتواس کے شمیر جبرلگادی جانے گی، ادر اس کے ہاتھ یاق را ور کھال قبال سے لی جاوے گی وہ سے مح سارا واقعربیان کردیں گے ،جس کے بعداس کو کوئی ججت باقى مذرب كى، آئية مَ نَحْتِم عَكَ آفْق اهِم وَيُكِنَّدُنَّا آيْنِي عِيمَ الأية كايئ طلب ہے۔ اور دستران کریم کی دوسمری آبیوں سے معلوم ہوتا ہے کہ محشر میں مختلف موا قف بول کے، ہر موقف کے حالات الگ ہیں۔ایک موقف وہ بھی ہوگا جس میں بخیرا ڈنو البى مسى كوبولنے كا اختيار نه بوگا اور وه صرت سے اور صحح بات بى بول سے گا، حجوث ير قدرت ىد بهوى، جليها ارساوس، لايتكلمون إلا مَنْ أخِن مَدُ الدَّمْنُ وَقَالَ

سورة روم ١٠٠٠ ارت القرآن حلد ترس كوتى ججوث مذبول سحكا اس مح برخلات قرمے سوال دجواب میں احادیث صحیحہ میں ندکور ہے کہجپ کا فرسے او جھاجا سے گاکہ تیرارب کون ہے اور جھرمصطفیٰ اصلی اللہ عليد الم كون مين و تووه كي كا، ها في ها ألا آدري، تينى بات بات من كيونين ما تنا اكرد مال حجوث بولن كا اختيار به وتا توكيا مشكل تها، كهه ديتاكهمبرارب الشريعي، اورتحد صلى الشرعليه ولم الشرك رسول بين - توب أيك عجيب بأت ب كدكا فرلوك الشرك سالمن توجهوث بولغ برقادر بهون اور فرمشتون کے سامنے جھوٹ سابول سیس کرغور کیا جا تو مجه تعجب كى بات نهيس، وجريه ب كه فرشته مذتوعالم الغيب بين، مذان كويداختيار ب كر با تقد يا وَل كي كوابي لي كواس مرجبت تهام كردي ، أكران ك سامن حجوط بولن كا اختیار ہوتا توسب کا فرفا جرعزاب قبرسے بے فکر ہوجاتے، مخلات الشرحل شاند کے که ده دلول مے حال سے بھی دا قف ہیں۔ اور اعضاء دجوارے کی شہادت سے اس کا جھو كھول دينے برقادر بھى ہیں۔ اس لئے محترس يہ آزادى دينا عدالتى انصاف ہيں كوئى خلل سيدا نهيس كرما والشراعلم سورة الروم مجانت في ليم السّبت ٢٨ رولقي الم الوساره